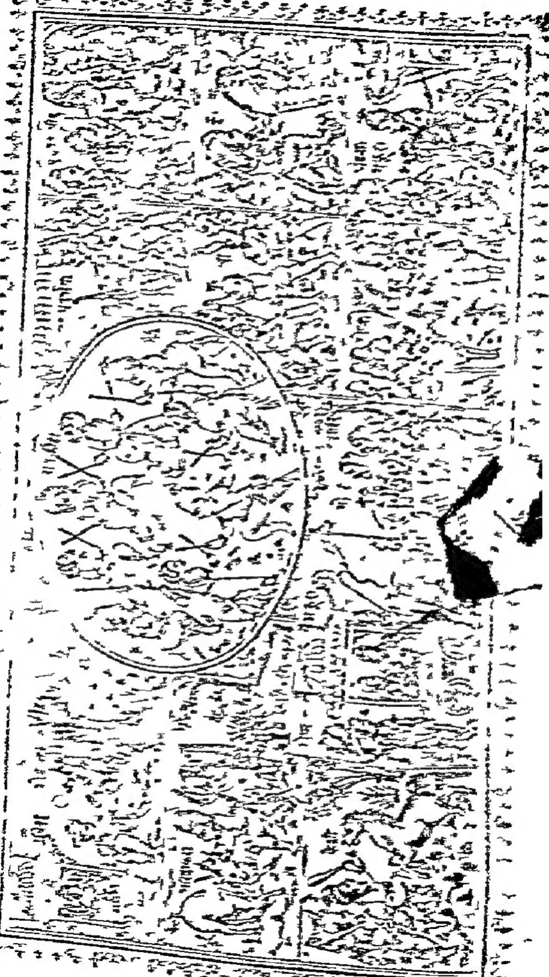
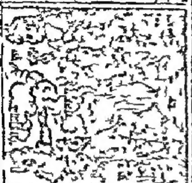













॥ श्रीहरिः ॥

श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र ।

न जाने क्यों हमारेदेशकेविद्वानोंकाध्यानइतिहासकी ओर तनिकभी न आया ? किजिसके कारण अनेकानेक प्रसिद्ध पुरुषोंके नामभी नहीं सुननेमें आते. सूरदासजीको हुए अभी कुछ बहुत दिन नहीं हुए परतु इतनेही थोडे कालमें भारतवर्षके एक इतने बडे प्रसिद्धकविके जीवन चरित्रका पता ठीक ठीक नहीलगता, यहाँतकयहाके लोगोकाध्यानइसओरकम था किसूरदासजीके थोडेही दिन पीछे गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी महाराजके पुत्र श्रीगोकुलनाथजीने जो चौरासी वैष्णवोकीवार्ता लिखी उसमेंभीसूरदासजीका चरित्र सुनासुनायाही लिखदिया,यदि उस समय थोडाभी परिश्रम किया जाता तो इनका पूरा पता लगजाता परतु खेद कि इधर तो किसीका ध्यानही न था ॥

सूरदासजीके विषयमे चौरासी वैष्णवोकी वार्तामे तथा पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजीने जो लिखा है वह और साहित्यलहरीमे बाबू रामदीनसिहने जो कुछ छापा है स्थानान्तरमें प्रकाशित कि[illegible] यहाँ हम केवल समयका निरूपण करते हैं ॥

सूरदासजीका समय निर्णय करना कुछ बहुत कठिन नही है क्योकि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके ये शिष्य थे ("श्रीवल्लभगुरु तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो" सू.सा.सा. ११०२) और श्रीगोसाईंजी (श्रीविट्ठलनाथजी) के समयमे ये मरे यह तो इनके लेखहीसे विदित है "थापि गोसाई करी मेरी आठ मद्धे छाप"(भारतेन्दुजी लिखित लेख) श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुका जन्म संवत् १५३५वैशाख कृष्ण ११ को और अन्तर्धान सवत १५८७ आषाढ सु०२ को और श्री गोस्वामी विट्ठलनाथजीका जन्म संवत् १५७२ पौषकृष्ण९और अन्तर्धान सवत् १६४२ माघ कृष्ण७को हुआ.अब इनका समय सवत् १५३५ से लेकर सवत् १६४२ के बीच १०७वर्ष के भीतरही निर्णय होना चाहिये.अब विचारना चाहिये कि इन्होने अल्पायु पाई या दीर्घायु। १पहिले तो उनके पदोकी बडी सख्या ही उन्हें दीर्घायु बताती है परन्तु मुझे उनकी [illegible] था लगभग अस्सी वर्षकी होनेका पक्का प्रमाण मिला है सूरदासजीने सूरसागरसारावलीको सरसठ वर्षकी अवस्थामें लिखा है ॥ यथा–

गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ वरस प्रवीन । शिव विधान तप करेउ बहुत दिन तऊपार नहिं लीन ॥ १००२ ॥ सुख पर्यंक अक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाय । मधुर मल्लिका कुसुमित कुजन दम्पति लगत सोहाये ॥१००३॥ गोवर्द्धन गिरि रत्नसिंहासन दम्पति रस सुख मान । निविड कुज जह कोउ न आवत रसविलसतसुखखान॥१००४॥ निशा भोर कबहू नहिं जानत प्रेममत्त अनुराग ॥ललितादिकसींचत सुख नैननि जुर सहचरि वडभाग ॥१००५॥ यह निकुजको वर्णन करिके वेद रूपचिहारनेति नेति करि कहेउमहसनिधिनऊनपायोपार १००६॥

दरशन दियो कृपा करि मोहन नेग दियो वरदान । आगम कल्प रमन तुव ह्वै है श्रीमुख कही बखान× ॥ १००७ ॥

सूरसागर सारावलीको सूरदासजीने एक लाख पद बनानेके उपरांत बनायाहैः–

कर्मयोग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो । श्रीवल्लभगुरुतत्त्व सुनायोलीलाभेद बतायो ॥११०२ तादिनते हरिलीला गाई एक लक्ष पद वन्द । ताकोसार सूरसारावलि गावत अति आनन्द ॥११०३॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ । तू कृत मम यश जो गावैगो सदा रहै मम साथ ॥ ११०४ ॥

सूरदासजीके सवालक्ष पद बनानेकी किम्वदन्ती जो प्रसिद्ध है वह ठीक विदित होती है क्यों कि एकलाख-पद तो श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य होनेके उपरांत और सारावलीके समाप्त होने तक बनाये इसके आगे पीछेके अलगही रहे ॥

अब देखना चाहिये कि यह सारावली कब बनी ? इसके अंतमें सूरदासजी लिखतेहैंः– "सरस समतसर लीला गावे युगल चरण चित लावे । गर्भवास बंदीखानेमें बहुरि सूर नहिं आवे ॥११०७॥"मुझे सरस संवत्सरका शब्द खटका और इसपर मैंनेमाननीयमहामहोपाध्याय श्रीपंडित सुधाकर द्विवेदीजीसे पूंछा इन्होंने बताया कि सरस नहीं यह शब्दप रस होसकता है जिसका अर्थसाठ होताहै और पहिले लोग सैकडाको छोडकर प्रायः लिखदिया करते थे, इससे संवत् १५६० का अनुमान हुआ. परंतु जो विचारकर देखा तो यह बात सर्वथा असंगत प्रतीत हुई. क्योंकि एक तो "सरस सम्वत्सरलीलागावे" से विदित होताहै कि,यह फलस्तुति है. सम्भवहै इस लीलाहीका नाम सरससम्वत्सरलीलाहो.क्योंकि गोवर्धनपूजाके प्रसंगमेंभीसूरदास-जीने लिखाहै "श्याम कह्यो सूरदासजीसों मेरी लीला सरस बनाय" दूसरे यह कि, हम ऊपर दिखला चुकेहैं कि सरसठ वर्षकी अवस्थामें यह ग्रंथ बना तो १५६०मेंसे ६७ निकालदीजिये तो १४९३ बचताहै जो कि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके जन्मके बहुत पहिले आता है और यदि श्रीगोसाईंजीके कालमें सूरदासजीकी मृत्यु उनके लेखानुसार मानीजाय तथा सूरदासजीने सम्वत १६०७ में साहित्यलहरी बनायीहै तब तो सूरदासजीकी अवस्था ११४ वर्षसेभी अधिक हो जातीहै, इससे इसे छोडकर साहित्यलहरीहीके सम्वतपर ध्यान देना चाहिये॥ साहित्यलहरीमें सूरदासजीने यों सम्वत दिया हैः–

"मुनि पुनि रसनके रस लेप । दशन गौरीनंदको लिखि सुबल सम्वत पेप ॥ नंदनंदन मास छैतहीनत्रितियावार । नंदनंदनजनमते हैं बाण सुखआगार॥ त्रितियरिक्ष सुकर्मयोग विचारि सूर नवीन । नंदनंदन दासहित साहित्य लहरी कीन ॥ १०९ ॥"

मुनि=सात, रसन=एक, रस=छ, दशन गौरीनंद=एक अर्थात् १६०७ "अंकानां वामतो गतिः" नंदनंदनमास=वैशाख, अक्षय तृतीया. कृत्तिकानक्षत्र सुकर्म योगमें साहित्यलहरी बनाया ।

साहित्यलहरीको सूरदासजीने सूरसागरसे दृष्टकूट पदोंको छांटकर संग्रह कियाहै अस्तु अब

× इसकी जीवनचरित्रवाले पद "प्रथमही प्रथमजगातके इनपदोंसे मिलाइये" सातएं दिन आय यदुपति कीन आप उद्धार। दियो चखदै कही शिशु सुनु मांगु वर जो चाह । हौं कही प्रभु भगति चाहत शत्रुनाश सुभाइ॥ दूसरो ना रूप देखों देखि राधा श्याम । सुनत करुणासिन्धु भाषी एवमस्तु सुधाम ॥ प्रबल दक्षिण विप्रकुलते शत्रु ह्वैहै नास । अमित बुद्धि विचारि विधमान माने मास ॥ नाम राखे मोर सूरजदास सूर सु श्याम । भये अन्तर्धान बीते पाछिली निशि याम ॥

१६०७ मेंसे सरसठ वर्ष निकाल दीजिये तो १५४० सम्वत्के लगभग उनके जन्मका समय आया और इसके पीछे सम्वत् १६२० के लगभग उनकी मृत्यु मानलेनी चाहिये ॥

सूरसागरके देखनेसे विदित होता है कि उस समयमें श्रीगोस्वामि हित हरिवंशजीको और स्वामि हरिदासजीके पूरे अभ्युदयका समयथा और उससमय के सब वैष्णवोंमें प्रेमथा सूरदासजी लिखते हैं:-

निशिदिन श्याम सेऊं में तोहिँ।इहै कृपा करि दीजै मोहिँ॥ नवनिकुंज सुखपुंजमें हरिवंशी हरिदासी जहाँ। हरि करुणा करि राखहु तहां॥ नित विहार आभार दे (पृष्ठ ३६२ पंक्ति १०)॥

ऐसा प्रतीत होताहै कि सूरदासजीने श्रीमद्भागवतको शृंखलापूर्वक एक समयमें नहीं बनाईथी क्योंकि वार्ता इत्यादिमें समय समय पर जो सवपद "खंजन नैन रूप रस माते।" आदि लिखे हैं प्रायः वे सभी इसमें आगयेहैं,और पूरा पूरा भागवतका अनुवादभी नहीं है बहुतसी कथा छोड़भीदीहै और कईएक उपासनाके अनुसार बढाभीदीहैं कुछ और पुराणोंसेभी सहायता लीहै. आप लिखते हैं:-

"वंदन रज विधि सबैकह्यो विधि दियो ऋषिन्ह बताइ। व्यास त्रिपद वामनपुराण कह्यो सू सोइ अब गाइ॥" (पृष्ठ ३६४ पंक्ति २२)

एक सूरदास और हुए हैं वह अपना नाम कवितामें सूरदास मदनमोहन रखतेथे सूरदासजीका नाम भारतवर्षमें ऐसा प्रसिद्ध होगया है कि सभी अंधोंको लोग सूरदास कहतेहैं और बहुतसे लोग आप कविता करिके सूरदासजीकी छाप उसमें रखदेतेहैं. जिसमें वह कविताप्रसिद्ध होजाय.बाबू अक्षयकुमारदत्तने भ्रमवश अपने वंगला ग्रंथ "भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदाय" में लिख दियाहै कि जितने अंधे फकीर एकतारा लेकर गातेहुये घूमते फिरतेहैं सब सूरदासके सम्प्रदायमें हैं सूरदासजीका जीवनचरित्र आगे दियेहुये लेखोंसे प्रगट होजायगा अतएव हम यहाँ कुछ अधिक लिखना आवश्यक नहीं समझते ॥

पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी लिखित नोट सूरदासजीका।

संसारमें जो लोग भाषाकाव्य जानते होंग वह सूरदासजीको अवश्य जानते होंगे और उसी तरह जोलोग थोडेभी वैष्णव होंगे,वे इनका थोडा बहुत जीवनचरित्रभी अवश्य जानते होंगे. चौरासी वार्ता, उसकी टीका,भक्तमाल और उसकीटीकामेंइनकाजीवन विवृत कियाहै.इन्हीं ग्रंथोंके अनुसार संसारको (और हमकोभी)विश्वास था(१) किये सारस्वत ब्राह्मणहैं, इनकेपिताका नाम रामदास,इनके माता पिता दरिद्रीथे, ये गऊ घाटपर रहतेथे, इत्यादि. अब सुनिये एक पुस्तक सूरदासजीके दृष्टिकूटपर टीका (टीकाभी सम्भव होताहै उन्हींकी है,क्योंकि टीकामें जहाँ अलंकारोंके लक्षण दियेहैं वह दोहे और चौपाई भी सूरनामसे अंकितहैं.) मिलीहै. इस पुस्तकमें ११६ दृष्टिकूटके पद अलंकार और नायिकाके क्रमसे हैं और उनका स्पष्ट अर्थ और उनके अलंकार नायिका इत्यादि सबलिखे हैं. इस पुस्तकके अंतमें कविने अपना जीवनचरित्र दियाहै, जो नीचे प्रकाश किया जाताहै. अब इसको देखकर सूरदासजीके जीवनचरित्र और

(१) कविवचनसुधा प्राचीन पुस्तकावलीकी दूसरी जिल्दमें सूरदासजीका जीवनचरित्र देखो।

वंशको हमलोग औरही दृष्टिसे देखनेलगे. यह लिखतेहैं "प्रथमजगात" (२) प्राथंज गोत्र (?) वंशमें इनके मूल पुरुष ब्रह्मराव (३) हुए जो बडे सिद्ध और देवप्रसाद लब्ध थे इनके वंशमें भौचंद (४) हुआ पृथ्वीराजने (५) जिसको ज्वालदेश दिया । उसके चार पुत्र जिनमें पहिला राजा हुआ. दूसरा गुणचन्द्र उसका पुत्र शीलचंद्र उसका पुत्र वीरचंद्र यह वीरचंद्र रत्नभ्रमर (रणथम्भौर) के राजा प्रसिद्ध हम्मीर (६) के साथ खेलताथा । इनके वंशमें हरिचन्द्र (७) हुआ उसके पुत्रके ७ पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटा (कवि लिखताहै) मैं सूरजचन्द्रथा मेरे ६ भाई मुसल्मानोंके युद्ध(८) में मारे गए । मैं अन्धाकुबुद्धिथा । एकदिनकुएमें गिरपडा तो सात दिन तक उस (अन्धे) कुएमें पडा रहा किसीने न निकाला सातवें दिन भगवानने निकाला और अपने स्वरूपका (नेत्र देकर) दर्शन कराया और मुझसे बोलेकि वर मांग मैंने वरमांगा कि आपका रूप देखकरअब और रूप न देखूं और मुझकोदृढभक्ति मिले और शत्रुओं (९) का नाश हो । भगवान्ने कहा ऐसाही होगा तू सब विद्यामें निपुण होगा प्रबल दक्षिणके ब्राह्मण(१०)कुलसे शत्रुका नाश होगा और मेरा नाम सूरजदास,सूर,सूरश्याम इत्यादि रखकर भगवान अन्तर्धान होगये । मैं ब्रजमें बसने लगा फिर गोसाईं (११) ने मेरी अष्ट (१२) छापमें थापना की इत्यादि । इसलेखसेऔरलेखअशुद्धमालूमहोतेहैं क्योंकिजिसेचौरासी वार्ताकी टीकामें लिखाहै कि दिल्लीके पास सीही गांवमें इनका दरिद्री माता पिताके घरजन्महुआयहबात नहीं आई । यह एक बडे कुलमें उत्पन्न थे और आगरे वा गोपाचलमेंइनकाजन्महुआहोयहमान-

---

(२) "प्रथमजगात"–इस जाति वा गोत्रके सारस्वत ब्राह्मण सुननेमें नहीं आए । पंडित राधाकृष्णसंगृहीत सारस्वत ब्राह्मणोंकी जातिमालामें "प्रथजगात" "प्रथ"–वा "जगात" नामके कोई सारस्वत ब्राह्मण नहीं होते । 'जगा वा जगातिया' तो भाटको कहतेहैं ।

(३) ब्रह्मराव नामसेभी सन्देह होताहै कि यह पुरुष या तो राजा राव हो या भाट ।

(४) भौ शब्द हुआ अर्थमें लीजिये तो केवल चन्द नामथा । चन्द्रनामका एक कवि पृथ्वीराजकी सभामें था।आश्चर्य !!!

(५) पृथ्वीराजका काल सन् ११७६ ।

(६) हम्मीर चौहान भीमदेवका पुत्र था । रणथंभोरके किलेमें इसीकी रानी इसके अलाउद्दीन(दुष्ट)के हाथसे मारेजाने पर सहस्रावधि स्त्रीके साथ सती हुईथी । इसका वीरत्व यश सर्वसाधारणमें हमीर हठके नामसे प्रसिद्ध है ।

(तिरिया तेल हमीरहठ, चढे न दूजीवार) इसीकी स्तुतिमें अनेक कवियोंने वीररसके सुन्दर श्लोक बनाए हैं । 'मुञ्चति मुञ्चति कोपं भजति च भजति प्रकम्पमरिवर्गम् । हम्मीरवीरखड्गे त्यजति त्यजति क्षमामाशु ॥' इसका समय सन् १२९० । (एक हमीर सन् ११९२ में भी हुआहै) ।

(७) सम्भवहै कि हरिचन्द्रके पुत्रका नाम रामचन्द्र रहाहोजिसे वैष्णवोंने अपनी रीतिके अनुसार रामदास कर लियाहो ।

(८) उस समय तुगलकों और मुगलों का युद्ध होताथा ॥

(९) शत्रुओंसे लौकिक अर्थ लीजिये तो मुगलोंका कुल (इससे सम्भव होताहै कि इनके पूर्वपुरुष सदासे राजाओंका आश्रय करके मुसलमानोंको शत्रु समझते थे या तुगलकोंके आश्रितथे इससे मुगलोंको शत्रु समझतेथे)यदि अलौकिकअर्थ लीजिए तो काम, क्रोधादि ।

(१०) शिवाजीके सहायक पेशवाका कुल जिसने पीछे मुसलमानोंका नाश किया।अलौकिक अर्थ लीजिए तो सूरदासजीके गुरु श्रीवल्लभाचार्य दक्षिण ब्राह्मण कुलके थे ।

(११) "गोसाईं"–श्रीविट्ठलनाथजी श्रीवल्लभाचार्यके पुत्र ।

(१२) अष्टछाप–यथा–सूरदास, कुम्भनदास,परमानन्ददास,और कृष्णदास ये चार महात्मा आचार्यजीके सेवक और छीतस्वामि गोविन्दस्वामि, चतुर्भुजदास और नन्ददास ये गोसाईंजीके सेवक । ये आठों महाकवि थे ।

लिया जाय कि मुसल्मानोंके युद्धमें इनके भाइयोंके मारेजानेके पीछेभी इनके पिता जीते रहे और एक दरिद्रअवस्थामें पहुँच गएथे और उसी समयमें सीदी गाँवमें चले गय हों तो लडमिल सक्ती है। जो हो हमारी भापा कविताके राजाधिराज सूरदासजीएकइतने वडे वंशके हैं यहजान कर हमलोगोंको वडा आनन्द हुआ। इस विपयमें कोई और विद्वान जो कुछ और विशेप पता लगा सके तो वहभीउसे पत्रद्वारा प्रकाशित करें॥

प्रथम ही प्रथ जगाते में प्रगट अद्भुत रूप। ब्रह्मराव विचारि ब्रह्मा राखु नाम अनूप॥ पान पयदेवी दियो शिव आदिसुर सुख पायाकहादुर्गा पुत्रतेरो भयो अति सुखदाय॥ पार पायन सुरनके पितु सहित अस्तुति कीन। तासुवंश प्रशंस में भौ (१) चंद*चारु नवीन॥ भूप

---

*दीपनिर्वाण नामक उपन्यासके पहले भागमें मुन्शी उदितनारायण वर्म्माने लिखाहै:-

"कविचन्द यथार्थ में एक प्रसिद्ध राजपूत महाकवि पृथ्वीराजके परमबन्धु थे, और पृथ्वीराजके सहवास ही में सर्व्वदा रहते थे। चन्दकवि पुस्तकमें कविचन्द्र के नाम से लिखे गये हैं। इङ्गलैण्डके सर फिलिप्सिड्नी और सर वाल्टर रयाली के समान वे काव्यविपयमें निपुण थे, युद्धविषय में भी वैसेही दूरदर्शी थे, किन्तु काव्यही उनके यशका चिह्न है. उनका सकल महाकाव्य राजपूत लोगोंके,विशेपतः पृथ्वीराजके कीर्तिकलाप और शूरता पराक्रममें वर्णनहुआ है। सुतराम् समस्त आर्यजाति में जैसे रामायण और महाभारत आदरणीय है,ग्रीक (यूनान) लोगोंमें जैसे होमर आदरणीय है, राजपूत लोगोंमें चन्दकविका काव्यसमूह भी वैसेही आदरणीय है। किन्तु चन्दकविका कपोलकल्पित काव्य बहुत कमहै, प्रकृत वृत्तान्तका भाग अधिक है। दुःखका विषय यही है कि उनका समस्त जीवनचरित्र कहींभी नहीं पाया जाता और उनके काव्यसमूहका अधिकांश प्रायः प्राचीन हिन्दीभापामें छन्दोबद्ध है।

चन्दकविके विषय में शिवसिंहसरोजमें यों लिखा है-

चन्दकवि प्राचीन वंदीजन संभल निवासी संवत् ११९६ ए. चन्दकवि महाराजा बीसलदेव चौहानरनथंभौरवालेके प्राचीन कवीश्वरकी औलाद में थे. संवत्११२०में राजा पृथ्वीराजचौहानके पास आयेऔर मंत्री कवीश्वर दोनोंपदको प्राप्त हुएऔर पृथ्वीराज रायसा नामक एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक सख्या भापामें रचाजिसमें६९ खंड हैं औरजिसमें पुरानीबोलीहिन्दुओं की है इस ग्रन्थमें चन्दकविने संवत् ११२० से संवत् ११४९ तक पृथ्वीराज का जीवनचरित्र महाकविताईके साथ बहुत छन्दों में वर्णन किया है छप्पय छन्द तो मानों इसी कविके भागमें थाँ जैसाचौपाई छन्द श्रीगोसाईतुलसीदासकेहिस्से में पडो थाँ इस ग्रन्थमें क्षत्रियोंकी वंशावली और अनेक युद्ध और आबू पहाडका माहात्म्य और दिल्ली इत्यादिराजधानियों की शोभा और क्षत्रियोंके स्वभाव चालचलन- व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णनकियेहैं ये कवि केवलकवीश्वरहीनहीं थे वरन् नीतिशास्त्र और चारनके काम काजमें महाशूरवीर थे संवत् ११४९ में साथ पृथ्वीराजके येभी मारेगए इन्हीकी औलादमें शाङ्गधर कवि थे जिन्होंने हमीररायसा और हमीरकाव्य भापामें बनाया है।

शाङ्गधर कवि बंदीजन चंद कवीश्वर वंशी संवत १३५७ये प्राचीन कवि चंद कवीश्वर के वंशमें संवत् १३३० के करीब उत्पन्न हुए थे। और राजा हमीरदेव चौहान रनथंभौर वालेके यहां जो राजा विशालदेवके वंशमें था रहा करते थे इन्होंने हमीररायसा १ और हमीरकाव्य २ येदो ग्रन्थ महाउत्तम बनायेहैं हमीररायसा राजा हमीरकी प्रशंसामें लिखा है।

दोहा-सिंहगवन सपुरुषवचन, कदलि फरै इक वार। तिरिया तेल हमीरहठ, चढै न दूजी वार॥ १॥

कवित्त-तंगन समेत काटि विहित मतंगनसों रुधिरसों रंगरण मंडलसों भरिगो।सारंग सुकवि भने भूपतिभवानीसिंहपारथ समान महाभारत सों करिगो॥ मारे देखि मुगुल तुरावखान ताहि समै काहू अस न जाना काहू नट सों उचारिगो।बाजीगर कैसी दगाबाजी करि हाथी हाया हाया हायो हाथी ते सहादति उवारिगो॥ १॥

चन्दकविके विषयमें पंडित श्रीमोहनलाल विष्णुलाल पंड्याने पृथ्वीराजरायसा की टिप्पणीमें लिखा है।

चंद वरदई-इस महाकाव्य का प्रथकर्त्ता कि जो हिन्दुओंके अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहानका लंगोटिया मित्र और उनके दरबारका कविराज था। वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलाते हैं उसके जगात नामक गोत्रका था और उसके पुरुषा पंजाब देश लाहौर नगरके रहनेवाले थे और उनकी यजमानी अजमेरके चौहानोंकी थी। उसकी जैसी शूरवीरता इस महाकाव्यसे विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि, वह पंजाब देशकी अबाबाधे

पृथ्वी (२) राज दीनों तिन्हें ज्वालादेश । तनय ताके चार कीन्हों प्रथम आप नरेश॥दूसरे(३) गुणचंद तासुत शीलचंद सरूप । (४) वीरचंद प्रताप पूरण भयो अदभुत रूप ॥ रंतभार

प्रसिद्ध वीरभूमिके तत्त्वों से उत्पन्न हुआ था और राजपूतानेके हृदयरूपी अजमेर नगरमें बड़ा हुआ था यह षट् भाषा-
व्याकरण, काव्य, साहित्य,छंद शास्त्र, ज्योतिष,वैद्यक,मन्त्रशास्त्र,पुराण,नाटक और गान आदिक विद्याओंमें अच्छा व्युत्पन्न
पंडित था। उसके पिताका नाम वेण और विद्या-गुरुका नाम गुरुप्रसाद था। उसकी दो स्त्रियोंके नाम क्रमशः अर्थात्
मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लड़कीका नाम राजबाई और दश लड़कोंके नाम सूर १ सुन्दर २ सुजान ३
जल्ह ४ वल्ह ५ बलिभद्र ६ केहरि ७ वीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुणराज १० थे। इस महाकाव्यके
विषयोंको वैसे तो उसने समय २ पर बनाकर कंठ कर रक्खे थे परन्तु उनको ग्रंथाकारमें उसने ६० दिनमें रचा था
और अतको उसने रायसाकी पुस्तक अपने लड़के जल्ह नामकको दी थी। इस रायसेके अतिरिक्त उसके रचे और भी
कईएक ग्रंथ सुनने में आतेहैं परन्तु उनमें सबसे बड़ा ग्रंथ यह रायसा है और अन्य सब ग्रंथ अब बिल्कुल नहीं मिलतेहैं।
उसका सविस्तर जीवनचरित्र और वंशावली जहाँ तक हमारे जाननेमें ख्यातादिसे आई है वह हम इस ग्रंथके समाप्त
होनेपर छापकर प्रसिद्ध करेंगे।

फिर लिखाहै-

छप्पय-"सम वनिता वर वांदि चद जंपिय कोमल कल। शब्द ब्रह्म यह सत्य अपर पावन कहि निर्मल ॥
जिहित शब्द नहिं रूप रेख आकार भ्रम नहिं ॥ अकल अगाध अपार पार पावन त्रयपुर महिं ॥
तिहिं शब्द ब्रह्म रचना करौं गुरुप्रसाद सरसे प्रसन॥यद्यपि सु उकति चूकौं सुगति तौ कमल बदाने कविदह हसन॥
छंद ॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

८ चंद इस रूपक में अपनी स्त्रीके उत्तरशंकाका उत्तर देकर समाधान करता है। शब्द ब्रह्म(सं० शब्दात्मकं ब्रह्म)
शब्दका प्रयोग चंदकी व्याकरण और वेदान्त विद्याके ज्ञान का द्योतक है। गुरुप्रसाद शब्द यहां श्लेषार्थमें कविने प्रयोग
किया है क्योंकि ख्यातियोंके अनुसार चदके विद्यागुरुका नाम गुरुप्रसाद था। यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि
यह गुरुप्रसाद नामक पंजाब देशका रहनेवाला एक बड़ा पंडित हुआहै। कविदह चंदकी हिन्दीका निज प्रयोग है और
उसका अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रचनेवाले कविका है। किसी २ पुस्तकमें जो वरवादि, अमल, अवल,त्रयपूर, महि,विहि
और प्रसन्न पाठ हैं वे अशुद्ध हैं।

फिर लिखाहै-

"विहु वाह सूर सजे समत । वेनै विरद बंधे अनत" ॥ ६२३ ॥

यह छद सं० १६४७। १७७० और १८४५ की पुस्तकोंमें नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है।
इस छदकी अतकी तुकमें "वेनै विरद बधे अनत" है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेनने अनेक विरद बांधे
अर्थात् कहे। यह वेन कवि इस महाकाव्यके रचनेवाले चंदका पिता था और वह सोमेश्वर जीके इस समय साथ था।
अब तक चंदसे पहिलेका कोई काव्य किसी भी कविका किसीके जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद छंद वर्णन-
की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध की है उसके पीछे मेवाड़राजके महाराणा जी श्री उदयसिंह जी
के महाराजकुमार श्री सगतसिंहजीके पंडित विष्णुदासजीने अकबर बादशाहके भाट गंग जीसे अजमेरमें पटोलावायके
मुकामपर चदके बाप कवि राव बेनका नीचे लिखा छप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करतेहैं। इस छप्पयसे
वेनने पृथ्वीराज जीके पिता सोमेश्वर जीको आशीश दी थी-

छप्पय-अटल ठाट महि पाट, अटल तारागढ थानं । अटल नग्र अजमेर, अटल हिंदव अस्थानं ॥
अटल तेज परताप, अटल लंका गढ डंडिव । अटल आप चहुवान, अटलभूमीपदमाडिव ॥
समरि भूप सोमेश नृप, अटल छत्र ओपे सु सर । कविराव बेन आशीश दे, अटल युगा राजेश कर ॥

इसीके साथ उसी पुस्तक में चंदके नागावअकरणोंका कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी लिखाहै:-

दोहा-ले पूजा नृप पीथुला, सामंत घमू समंद। वेन नंदन कनवज गमन, चंद करन यह छंद ॥

पृथ्वीराज रायसेकी प्रथम संस्तामें लिखाहै-

इसके सिवाय फारसी और जम्मूकी तवारीखभी इस बातकी साक्षी देती है कि चंद हमारे हिन्दुओंके अंतिमबादशाहका
परमप्रिय कविराज और सहचर था। यदि हम उन पुस्तकोंका मूल उद्धृत करके यहां प्रमाण में प्रवेश करें तो ग्रंथके बहुत
बढ़ जाने का भय है। अतएव हम मेजर रेवर्टी साहबकी एक टिप्पणीको उद्धृत कर प्रमाणमें इस अभिप्रायसे देते हैं कि
हमारे पाठकोंको इस विषयका अनुभव एक थोडीसी पंक्तियोंसे ही होजाय। नीचे लिखी थोडी सी पंक्तियें केवल

हमीर भूपत संग खेलत आप । तासु वंश अनूप भो हरचंद अति विख्यात ॥ आगरे रहि गोपचल में रहो ता सुत वीर। पुत्र जनमें सात ताके महाभट गंभीर ॥ कृष्णचंद (५) उदारचंद जो रूपचंद सुभाइ । बुद्धचंद प्रकाश चौथो चंद भो सुखदाइ ॥ देवचंदप्रबोध संसृत (६)चंद ताको नाम । भयो सप्तो नाम सूरज चंद मंद निकाम ॥ सो समर करि साहि सेवकगये(७) विधिके लोक। रहोसूरजचंद दृगते हीन भर वर शोक ॥ परो कूप पुकार काहू सुनीनासंसार । सातयें दिन आइ यदुपति कियो आप उधार ॥दियो(८)चखदेकही शिशु सुनु मांग वरजोचाइ। हांकहों प्रभु भगत चाहत शत्रु नाश सुभाइ ॥ दूसरो ना रूप देखों देखि राधा श्याम । सुनत करुणासिंधु भाषी एवमस्तु सुधाम ॥ प्रबल दच्छ छिन विप्रकुलते शत्रु हुइहैं नास । अखिल (९) बुद्धि विचारि विद्यामान माने मास ॥ नाम राखे मोर सूरजदास, सूर, सुश्याम । भयेअंतर्धान बीते पाछली निशि याम ॥ मोहि पनसो (१०) इहै ब्रजकी बसे सुख चित थाप । थपि(११) गोसाई करी मेरी आठ मध्ये छाप ॥ विप्र प्रथजगात को है भाव भूर निकाम।सूरहै नँदनंदजूको लियो मोल गुलाम ॥ ११८ ॥

अर्थ सुगम- सूर आपन वंश वर्णत है ॥ ११८॥

यही नहीं सिद्ध करतीं कि चंद कवि पृथ्वीराजजीके समयमें हुआ था परन्तु रायसेमें लिखे कतिपय और वृत्तान्त भी कुछ फेरफारके साथ सिद्ध करता है।

(मेजर रैवर्टी साहबकृत तबकात नासरी पृष्ठ ४८६)

हिन्दू लोग एक भिन्न वृत्तांत लिखते हैं कि उसीको अब्दुलफजलने और जम्मूकी तवारीख वालेने भी थोडेसे फरकके साथ वर्णन कियाहै-

यद्यपि फारसी इतिहासवेत्ता लिखते हैं कि रायपिथौरा तलावरी (तराई) पर लडाई में मारा गया और मुईजुद्दीन दमयकमें एक खोखरके हाथसे मारा गया कि जो इसी कामके लिये उतारू हो रहा था, और ऐसेही वृत्तान्तक, अबकंश तबकात और अकबरी और फरिश्ता के ग्रंथकर्त्ताओंने किया है. तथापि हिन्दू भट्टोंके जुबानी वर्णनसे कि जो प्रत्येक नामांकित शाखेकी ख्यातोंके भंडार हैं, और जो पीढियों तक कंठस्थ वृत्तान्त एक दूसरे को उपदेश करते आये हैं, यह वर्णन किया गयाहै कि राय पिथौराके लडाईमें कैद होजाने और गजनीको ले गये पीछे एक चंद जिसे कोई चारण करके भी लिखते हैं, कि जो राय पिथौराका स्तुतिपाठक और विश्वासी सहचर था और कोई कोई ग्रंथकर्त्ता उसे राय पिथौराका कविराज करके भी लिखतेहैं, वह अपने आपदाग्रस्त स्वामीकी खबर लेनेको गजनी पहुँचा वह अपने अच्छे प्रयत्नोंके बलसे प्रबंध कर सुलतान मुईजुद्दीनकी सेवामें प्राप्त हुआ और बंदीगृहमें राय पिथौराके साथ बातचीत करनेमें भी सफल हुआ. यह दोनों किसी एक युक्ति पर सम्मत हुए और एक दिन चंदने अपने छलबलके द्वारा सुलतानके मनमें राय पिथौराकी बाणविद्याकी परमकुशलता देखनेकी नितान्त इच्छा उत्पन्न की और उसको चंदने इतनी सराही कि सुलतानका मन उसे देखे बिना न रहने लगा. निदान बँधुआ राजा सन्मुख लाया गया और उससे उसकी बाण विद्याकी परमकुशलता दिखानेकी विनती की गई । उसके हाथमें एक धनुष और बाण दिये गये। उसने अपनी स्वीकृत युक्तिके अनुसार जो निशाना सुलतानने नियत कराया था उसे छोड कर खास सुलतानके ही बाण मारा कि वह वहीं मरगया और सुलतानके पासवालोंने राय पिथौरा और चंदाको काटकर टुकडे टुकडे कर डाले।

जम्मूकी तवारीखवाला लिखता है कि राय पिथौरा अंधाकर (देखो टिप्पण १ पृष्ठ ४६६) दिया गया था और जब वह बंदीगृह से बाहर लाया गया और उसके निज धनुष और बाण उसे दिये गये।यद्यपि वह अंधाथा तथापि उसने बाण चढाकर और साध कर सुलतानके शब्दके अनुसंधान और चंदा की सूचनाके अनुसार सीधा ऐसा मारा कि वह सुलतानके जाकर लगा। बाकीका वृत्तान्त तदनुसार ही है।

इति श्रीपदकूट सूरदासटीका संयुक्त संपूर्णम्।

टिप्पणी-सरदार कविने कईएक स्थान इस भजन में पाठान्तर किया है वह अंक देकर नीचे लिखा है।

(१) शुभमें (२) पृथ्वीराज (३) रनभौर (४) सुयशअवदात (५) कृतचंद (६) षष्ठम (७) साहिसे सब ८) दिव्य (९) अखिल (१०) मनसा (११) श्रीसूरदासके विषयमें ग्रंथके अन्तमें लिखा जायगा।

एकसौ अठारह पदकी टिप्पणीमें लिखा है कि ग्रंथके अंतमें सूरदासके विषयमें लिखा जायगा अतएव यहां इससमय मुझे जहांतक सूरदासके विषयमें लेख मिले हैं उन सबोंको यहां प्रकाश करताहूं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजीने चरितावली और सूरशतक पूर्वार्धमें जो लिखा है उसे छोड देताहूं। सूरदासके समयसे अनेक कवियोंका समय निर्णय होगा।

रामरसिकावली-महाराज रघुराजसिंहकृत-

दोहा-सूरदासजी जगविदित, श्रीउद्धव अवतार। कथा पुराणांतर कथित, वर्णन करौंउदार॥१॥

चौपाई-जब मथुरामें श्रीनँदलाला। गोपिनको विज्ञानविशाला॥१॥
सादर करन हेतु उपदेशू। पठ्यो उद्धव गोकुल देशू॥२॥
तहँ गोपिन पर प्रेम परेखी। उद्धव बोले ज्ञानविशेखी॥३॥
धारि भक्तिहरिनिजउरमाहीं। आवतभपुरमथुराकाहीं॥४॥
राखिभावउरगोपिनकेरो। लख्योसंगहरिचरितघनेरो॥५॥
तब उद्धवको श्रीयदुराया। बदरीनाथ कान्ह पठवाया॥६॥
यह सुवासना ऊधवके तब। रहों आयब्रजएकबार कब॥७॥
गोपिनकोअनूप अनुरागा। हरिलीला जो ब्रजसब जागा॥८॥
सो रसनाते वर्णन करहूं। वर संतोष हियेपर धरहूँ॥९॥
कीन्हें यही वासना काहीं। उद्धव प्रगट भये कलि माहीं॥१०॥
सूरदासते संत शिरोमणि। विरचनसवालाखपदकोगुणि॥११॥
करिसंकल्पमुदितमनसामें। हरि लीला विभूतिहू तामें॥१२॥

दोहा-वर्ण्यो तिमिगोपीनको, जोयथार्थअनुराग। विरचिकृष्णपदसूरदि, सहसपचीसअदाग॥
पूरण कीन्होंसूर प्रण, सूरश्यामजह होय। सो पद विरच्योकृष्णही, जानिलेहु सब कोय॥२॥
महाघोर कलिकाल महँ, जन्म लेवदुख दूर। हग विकार गुणि याहिते, सूरदास भे सूर॥३॥

चौपाई-जन्महिते हे नैन विहीना। दिव्य दृष्टि देखिहिं सुखभीना॥१॥
लीन परीक्षा सो तेहि नारी। एक समै अस वचन उचारी॥२॥
प्रिय मोहिं सकल ग्रामकीवामा। मोसों कहहिं वचनअसिवामा॥३॥
तू केहि देखन करहि शृंगारा। तेरो पति तो अंध अपारा॥४॥
सुनिके सूर कही यह बानी। आजु शृंगार भली विधि ठानी॥५॥
यहु इस्त्रिनको ले निज संगा। बैठहु आइ इहां सउमंगा॥६॥
भूषण तुव बिगरो जो होई। देहैं हम बताइ सत सोई॥७॥
सुनि यह सूरदासकी नारी। सब भूषण निज अंग सँवारी॥८॥
बेंदी देत भयी नहिं भाला। सूर बोलायो ढिग तब बाला॥९॥
तिय भूषन सब अंग निहारी। सूरदास बोल्यो सुषधारी॥१०॥
बंदी भाल दियो क्यों नाहीं। लखि प्रभाव यह सूर तहाँहीं॥११॥
कीन्हें सकल लोग जय शोरा। ख्यात बात भै जग सब ठोरा॥१२॥

दो०—ह्वै विरक्तसंसारते,दिव्यदृष्टि हरि ध्यान। सूरदासकरते रहे,निशिदिन विदित जहान॥१॥
सूरदास इतिहास बहु, परचे अहैं अनेक। जानि लेहु सब संतजन कहौं नेक सविवेक॥२॥

कवित्त—कविकुल कोक कंज पाइके किरिनि काव्य विकसे चिनोदित ह्वै नेरे और दूरके। सूखिगो अज्ञानपंक मन्दभो मयंकमोह विषयविकार अन्धकारमिटेकूरके॥ हरिकी विमुखताई रजनी पराइ गई मूक भये कुकवि उलूक रस झूकके। छायो तेज पुहुमिमें रघुराज रूर हरिजन जीव मूर सूर उदै होत सूरके॥ १॥ मतिराम *(१) भूषण (२) विहारी (३) नीलकंठ (४) गंग (५) वेनी (६) शंभु (७) तोष (८) चिंतामणि (९) कालिदास (१०) की। ठाकुर (११) नेवाज (१२) सेनापति (१३) शुकदेव (१४) देव (१५) पजनेश (१६) घनानन्द (१७) घनश्यामदास (१८) की॥सुन्दर (१९) मुरारी (२०) बोधा (२१) श्रीपति हू (२२) दयानिधि(२३)युगल (२४)कविंद (२५)त्योंगोविंद (२६) केशौदास(२७) की।भनै रघुराज और कविन अनूठी उक्ति मोहिं लगी जूंठी जानि जूंठी सूरदासकी॥२॥ अखिल अनूठी उक्ति युक्ति नहिं झूठी नेकु सुधाहूते सरस सरस को सुनावतो। उद्धत विराग भाग सहित अनेक राग हरिको अदाग अनुराग को सिखावतो॥ जगत उजागर अमलपद आगर नट नागर ध्याय सूर-सागर को गावतो। भाषै रघुराज राधा माधवको रास रस कौन प्रगटावतो जो सूर नहिं आवतो॥ ३॥साह सुन्यो सुरनसे वेगही बुलायो दिल्ली पूछ्यो कौन हो तू सूर कह्यो पूंछो वेटीसों। साह कह्यो जानो कैसे सूर कह्यो जंय तिल साह पुछ्वायो सो तुरत एक चेटीसों॥ कन्या कह्यो कहत तुरंत ही शरीर छूटी हठपरे कहि तनु तजि हरि भेटीसों। भनै रघुराज साह सूर पद शिर नाय पूछ हरिदास मोरिभवभीत मेटीसों॥ ४॥गोकुल में रास होत राधाजूने मान कीन्हों हरि मान मोरवेको उद्धवै पठायो है। जानि गुरुमान कह्यो नेसुक कटुक वैन दीनी वृषभानुसुता शापको पछायो है॥धारियै मनुज तनु तारिये जगत जाइ सकल सुनाइये जो रास रस भायो है। भनै रघुराज सोई उद्धव अवनि आइ रसिक शिरोमणि सो सूर कहवायो है॥ ५॥

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'शिवसिंहसरोज' पढनेके समय में जिन जिन कवियोंके विषयमें कुछ लिखा है उनमें अकवर और गंगके इतिहास पर अपनी राय नाम मात्रको लिखी है उसे नीचे प्रकाश करता हूं।

अकवर।

अकवर बादशाह दिल्ली सं० १५८४में हुए इनके हालात में अकवरनामा१आईनअकवरी२ तवकाहत अकवरी ३तारीख अब्दुल्कादिर वदाऊनी४इत्यादिवड़ीवडी किताबेंलिखीगईहें जिनसे इस महाप्रतापीवादशाहका जीवनचरित्र साफ साफ प्रगट होता है यहां केवल हमको उनकी कविता-का वर्णन करना अवश्य है सोहमको कोई ग्रंथ इनका नहीं मिला दो चार कवित्त जो मिलेहैं सो हमने लिखाहै. जहांगीर वादशाहने अपने जीवनचरित्रकी किताव तुजुक जहांगीरीमें लिखाहै कि अकवर वादशाह कुछ पढे लिखे न थे परंतु मौलाना अब्दुल्कादिरकी कितावसे प्रगट है कि अकबरशाह संस्कृत- महाभारतको एक रात आपही उल्था कराने वैठे और सुल्तान मोहम्मद थानेसरी औरखुदमौलाना वदायूनी और शेखफैजीने जहां जहां कुछ आशय छोड दियाथा उसे

* अंकवाले कवियोंका वर्णन आगे किया जायगा।

फिर तर्जुमा होनेको हुकुम दिया इनके समयमें नरहरि १ करन २ हाल २ खानखाना ४ बीरबर ५ गंग ६ इत्यादि बडे बडे कवि हुए हैं परंतु खास जो कवि नौकर थे उनके नाम इस सवैयासे प्रगट होंगे।

सवैया—पृथी प्रसिद्ध पुरंदर ब्रह्म सुधारस अमृत अमृत बानी। गोकुल गोप गुपाल गणेश गुणी गुणसागर गंग सु ज्ञानी ॥ जोध जगन्न में जगदीश जगामग जेत जगत्त है जानी। कोर अकब्बर सैन कथी एतने मिलिके कविता जु बखानी॥ १ ॥

श्रीगोसाईं तुलसीदास तौ दरबारमें हाजिर नहीं हुए* सूरदास जी और बाबा रामदास उनके पिता गानेवालोंमें नौकर थे × जैसा कि आईन अकबरी में लिखाहै केशवदास जी उस समयमें इनके मंत्री श्रीराजा बीरबरके दरबार में हाजिर हुए थे जब इन्द्रजीत राजा उडछा बुंदेलखंडी प्रवीन राइ पातुरीके लिये बादशाही कोपमें था।

दोहा—जाको यश है जगतमें, जगत सराहे जाहि । ताको जीवन सफलहै, कहत अकब्बर शाहि॥ १॥

गंग ।

गंगकवि (गंगाप्रसाद ब्राह्मण एकनौर जिला इटावा अथवा वंदीजन दिल्ली वाल) सं० १५९५में हुए. गंगाकविको हम सुनते रहे कि दिल्लीके बंदीजन हैं और अकबरबादशाहके यहां थे जसा किसी कविने वंदीजनोंकी प्रशंसामें यह कवित्त लिखा है।

कवित्त—प्रथम बिधाताते × प्रगट भये बंदीजन पुनि पृथु यज्ञ ते प्रकाश सरसात है।
माने सूत शौनकन सुनत पुराण रह यशको बखाने महासुख बरसातहै॥
चंद्र चौहानके केदार गोरी माह जूके गंग अकबरके बखाने गुण गातहै।
काग कैसे मास अजनास धन भाटनको लूटि धरे जाको खरा खोज मिटिजातहै॥ १॥

परंतु अब जो हमने जांचातो विदितहुआकि गंगकवि एकनौरगांउजिलाइटावाकेब्राह्मणथेजब गंग मरगये हैं और जैनखां हाकिमने एकनौर में कछु जुलुम किया तब गंगजीके पुत्रने जहांगीर शाहके यहाँ यह कवित्त अरजीके तौरपर दिया हो। जैनखां जुनारदार मारे एकनौरके; । जुनारदार फारसीमें जनेऊ रखनेवालेका नामहै लेकिन् खास ब्राह्मणहीको जुनारदार कहतेहैं खैर जो हो हमको इसबातमें बहुत लिखनेसे कुछ मतलब नहीं गंगजीमहान् कविथे राजा बीरबलने गंगको इस छप्पयमें (भ्रमर भ्रमत) एक लक्ष रुपया इनाम दिया इसी प्रकारसे अकबर, जहाँगीर; बीरबर, खानखाना; मानसिंह सवाई इत्यादि सबोंने गंगको बहुत दान मान दियाहै।

भक्तविनोद-कवि मियाँसिंह कृततेः—

दो०—करनविमलमनहरनतम; दमन त्रिविधदुख दोप। भक्ति महातम कहुँकल; कथनललितप्रदमोप
नाशन कुमतिकृतांत भय, भासनभानु प्रबोध। सुमति विकासन भक्तजन, दलनमदनमदक्रोध
चौपाई—कृष्ण देव जब जनन उधारा । मथुरा लीन ललित अवतारा ।
किए कृपालु चरित जस चारू । सो मनहरन विदित संसारू ॥ १ ॥
तब यादव इक भक्त प्रवीना । कृष्ण सरोज चरण मन लीना ।
सूर नयन, वर वंश उजागर । उपज्यो भक्त सुष्ट गुणसागर ॥ २ ॥

* श्रीतुलसीदासजीका काल यह नहीं है । हरिश्चंद्र । + श्रीसूरदास यहाँ नौकर न हुए । हरिश्चंद्र
× सूरदासजीके पदसे मिलाना । हरिश्चंद्र ।

सखा पुनीत मीत व्रत धारी । मन वच कर्म कृष्ण हितकारी ।
जब मथुरा तजि करत पयाना । द्वारवती आय भगवाना ॥ ३ ॥
ते किमि चंचरीक बड भागी । सकहिं सरोज चरण प्रभु त्यागी ।
भक्ति प्रेम कल नवल उमंगा । आयो दिनदयालु कर संगा ॥ ४ ॥
यद्यपि आनँद भवन प्रसादू । ताके तहँ सुलभ सब साधू ।
पै निवास वृंदावन चारू । विहरन कुंज गलिन मनहारू ॥ ५ ॥
कृष्ण संग नित नवल विलासा । सो न पलक कल विसरत तासा ।
तन मथुरा वृंदावन मनुआं । लग्यो रहत निश दिवस अनुआं ॥ ६ ॥
करि सुमरन कल कुंजन शोभा । होत प्रबल जिय यादव छोभा ।
प्रभु सन बार बार अस बरनी । नम्रत विनय दिवस निशि करनी ॥ ७ ॥
कृपा निकेत जनन सुखदाई । तुव सन कवन दिवस शुभ जाई ।
शुचि भंडीर विपिन मनहरना । रविजा कुंज स नम्र नग धरना ॥ ८ ॥
आन ललित लावण्य तनीके । देहु देव परमप्रिय जीके ।
जब लगि जियन नाथ संसारा । सो प्रमोद किमि बिसरन हारा ॥ ९ ॥
अस प्रकार उतकंठित रहना । वृंदाविपिन अहर निशि कहना ।
काल पाय तब भक्त उबारा । लिये संग यादव परिवारा ॥ १० ॥

दोहा–करिकौतुककरुणायतन,निजविकुंठकलधाम । गएगमनकरिभवनमुद,रमारमनअभिराम ॥

चौपाई–ते यादव हरि भक्त सुजाना । तहाँपि जोरि युगल निज पाना ।
वृन्दावन दरशन अनुरागा । नम्रत विनय करन अस लागा ॥ १ ॥
चलन होहिं तुव दीन सनेहू । कब कृपालु वृन्दावन तेहू ।
सो अरण्य कल कुंज सुहाए । दीननाथ मोरे मन भाये ॥ २ ॥
विसरत सो न भक्त सुखदाई । एक बार प्रभु देहु दिखाई ।
तासु कथन सुनि त्रिभुवनराई । बोले वदन वचन मुसुकाई ॥ ३ ॥
सुनहू मीत पूरवत ताहीं । मोर गमन धृन्दावन माहीं ।
अब नहोहिं पयभक्त सुजाना । मैं परिवार सहित निज नाना ॥ ४ ॥
कुंज कुंज राधा युत चारू । तहां निवास करहुँ मन हारू ।
ते मथुरा वृन्दावन जोहीं । जन वैकुंठ अधिक प्रिय मोहीं ॥ ५ ॥
जबते तज्यो मनोहर नगरी । कलित कुंज लीला निज सगरी ।
तबते यद्यपि मोर सुहावा । इह वैकुंठ अखिल सुख छावा ॥ ६ ॥
तद्यपि तिहि समान सुखदाई । उपज्यो नहिंन तनक सुख भाई ।
जिमि वाराणशि शंकर काहीं । विदित विश्व प्रिय मानस माहीं ॥ ७ ॥
तजत न तासु देव त्रिपुरारी । तिमि मथुरा मोहिं प्राणन प्यारी ।
अजहुं समरण होत मन भाई । ललित बाललीला सुखदाई ॥ ८ ॥

दो०–मृतिकाभक्षण पूतना, शकटविभंजन मित्र । अर्जुनयमलजमदहरन,अघ बकवदनचरित्र ॥१॥
कालीपद क्षय करन पुनि, मोद्द नलिनभव देन । वृंदावन वंसीवजन, चरन चारु वरधेन॥२॥

धेनुक वधन प्रलंब पुनि, तृणावर्त वश काल। वृंदावन रक्षाकरन, नग नख धरण रसाल ॥ ३ ॥
रचन रास लीलादि पुनि, वचन सखन सखिसंग। केसिविध्वंसननंदकुल, ज्ञातनहृदय उमंग ॥
दावानलकर शमन पुनि, ग्वालन सन मन चाउवन वन विहरन सजन सुन, हनन कंसरिपु गउ॥५॥
जननि जनक बंधन मुकत, चरित चारु इत्यादि। जबजब होनसमरण इह, उपजन हृदय दुखादि ॥
चौपाई–सदा रहत मानस उतकंठा। तजि निज रुचिर धाम वैकुंठा।
पुनि करु वपुप पूर्ववत धारी। अद्भुत करहुँ चरित मनहारी ॥१॥
जे जन भक्ति निरत वड भागे। मोर प्रेम पावन रस पागे।
हृदय कुतर्क कपट सब खोई। मोर रुचिर लीला कृत जोई ॥२॥
यथा विधान राम विरचाई। गायन श्रवण करहिं मन लाई।
सो साक्षात विश्व शुभ चारी। मोर स्वरूप भक्त व्रत धारी ॥३॥
मथुरा धारि जन्म निय जोई। मोर ललित उत्सव पर होई।
मो मोहिं यशुमति मातु समाना। सुनहु आन अबभक्त सुजाना ॥४॥
जे नर मोर जन्म दिन लेखीं। धारि रुचिर व्रत भक्ति विशेषी।
बालरूप मम पूजन करहीं। आवागमन सहज श्रम हरहीं ॥ ५ ॥
करि प्रवेश मथुरापुरि माहीं। जो जन करहिंरटनमोहिंकाहीं।
भक्त मोर सो प्राणन प्यारू। ताकर तरन सुमन संभारू ॥ ६ ॥
अब तोहिं जोपि भक्तवडभागा। मथुरा गमन प्रीति अनुरागा।
तो अब सुनहु कथन कछ मोरा। संतन भक्त सृष्ट हित तोरा ॥ ७॥
जेहि तें तहां सजन तुव नाई। सोउ लहु सुख कीरति पाई।
अस कहि कृष्ण देव भगवाना। लागे तासु प्रबोधन ज्ञाना ॥८॥
कलीकाल सन्ध्या अवसाना। मथुरा प्रांत भक्त गुणखाना।
सुभ्रत विप्र वंश उपजाई। मथुरा मोर ललित पुर आई॥ ९ ॥
मोर जन्म लीला मन पारू। करत करत गायन व्रत धारू।
सोउ अखंड सुयश सुख जोहीं। होहिं भक्तजन प्रापन तोहीं ॥ १०॥
बहुरि मोर लीला मनभायन। प्राकृत वदन सफुट जब गायन।
कीन तुमहुं संगीत प्रकारू। सुभ्रन ललित प्रेम रससारू ॥११॥
सुनत लोक कलिकाल मंझारा। हुइहैं भक्ति निरत संसारा।
बढहिं मोर चरणन अनुरागा। उधरहिं तुव प्रसाद बड़भागा ॥१२॥
पै तुव जन्म अन्ध दृग हीना। जननि जनक अस देखि प्रवीना।
दोहा–पालहिं जन समान कछु, सुतसनेहवश तोहिं। आन शंक बांधव सुहृद, सोनकरहिं हितकोइ॥
चौपाई–केवल जननि करहिं तुमसेवा। अस कहि वदन भक्त द्रुम देवा।
भए विराम कृष्ण घन बरना। तब प्रणाम करि यादव चरना ॥१॥
कलि सन्ध्या कर अंत प्रवीना। सोचन लग्यो भक्त मन लीना।
सो जब समय आय नियराना। तजि विकुंठ यादव गुणखाना ॥२॥
मथुरा प्रांत विप्र वर गेहा। भा उत्पन्न भक्ति हरि नेहा।

जन्म अंध दृग ज्योति विहीना। जननि जनक कछु हर्ष न कीना॥ ३॥
रहे मौन बांधव समुदाई। करहिं प्रीति केवल इक माई।
अष्ट वर्ष कर जानि सुहावा। यज्ञोपवित जनक तव पावा॥४॥
भयो प्रसिद्ध नगर अभिरामा। सूरदास ताकर अस नामा।
अवसर एक मातु पितु संगा। आन लोक पुर प्रेम उमंगा॥५॥
कृष्ण जन्म पुरि दरशनलागी। आये सकल सदन निजत्यागी।
करि यात्रा विधिवत अनुरागे। जव निज सदन चलन सव लागे॥६॥
सूरदास तव कहत उचारी। मैं अव इहां सदन नग धारी।
कछुदिनकरहुँललितनिजवासा। कृष्णप्रसाद विगत श्रम त्रासा॥७॥
तुव निज गवँहु सदनशुभ काहीं। चिंता मोरि करहु कछु नाहीं।
सुनिअसजननिजनकतेहिवानी। सुत सनेह निज मानसवानी॥८॥
रुदन करत अस वचन उचारे। वसत अंध दृग युगल तुम्हारे।
करहिं कवन भोजन पट दाना। शिशु निदान तुव देश विराना॥९॥
कसतजिजाहिं सुवन पितु माता। काहु न देखि परत तुव त्राता।
सुनिअसजननिजनकमुखवानी। कृष्ण भरोस सूर जिय मानी॥ १०॥

दो०–वोल्योअभयप्रसन्नमन,वदनवचनसुखदान।तुवजियकरहुनसोचकछु,मोहिंविदेशअसजान

चौपाई–मोरे कृष्ण देव भगवाना। करनहार कल पालन त्राना।
अन्ध दीन वलहीनन कोही। पोषन करत देव प्रभु सोही॥ १॥
शरन चरन दुख हरन करीके। परे कोटि अस मोर सरीके।
दीनवन्धु जन दीननपाला। दीननाथ प्रभु दीनदयाला॥ २॥
दीन हरन भय दीन उवारन। दीन सुखद दुख दीन निवारन।
अस प्रकार जव दीन सहाए। विदित पुराण वेद श्रुति गाए॥ ३॥
मोरे कस न होहिं तव मय्या। जानि दीन दृग हीन सहय्या।
तव अस सुनत वचन वर ताहू। साधु जठर दाया वश काहू॥ ४॥
वोल्यो सूर मातु पितु काहीं। तुव न करहु चिन्ता जिय माहीं।
हर्षि जाहु सुभ्रम निज गेहू। तुव दृग हीन वाल वर एहू॥ ५॥
मोरे वसहिं सदन सुख मानी। अस कहि गहत संत शुभ पानी।
चल्यो प्रसन्न लेत कल भवने। उत पितु मातु सदन निज गवने॥ ६॥
साधु सनेह प्रीति अवलोकी। भई प्रसन्न मातु गत शोकी।
सूरदास मानस अनुरागा। प्रमुदित वसन संत गृह लागा॥७॥
पूरव चरित कृष्ण कल गायन। रह्यो सुनत सादर मनभायन।
आशु प्रेम युत भक्ति उमंगा। वैष्णव संत जनन कर संगा॥ ८॥
नृत्य गीत गायन करि चारू। कृष्ण चरित्र विमल मनहारू।
प्रभु अद्भुत लीला जिमि कीनी। आदि उपांत श्रवन करिलीनी॥ ९॥
तासु प्रसाद कृष्ण भगवाना। सो पूरव संचित निज ज्ञाना।

अनुभव भयो विदित सब भास्यो। देवचरितलीलादि विलास्यो॥ १०॥

दो०–भयोछकितउनमत्तवत,प्रेमासवकरिपान।कृष्णचरितपदनवलनित,निजविरचितरुचिमान

चौपाई–अस प्रकार कृत नवल सुहाई। भक्त सूर कल कुंजन जाई।
करि प्रति दिवस मधुर स्वर गायन। भयो कृष्णपद भक्तिपरायन॥ १॥
मथुरा निवसि सुयश सुख लय्यो। सूर विदित सब देशन भय्यो।
निर्मित तासु ललित पद पावन। संसृति गाय लोक मनभावन॥ २॥
वैष्णव भए भक्ति रसनागर। भक्त प्रधान सुयश घन सागर।
सूरदास हरि गुण गण गाते। जहँ जहँ फिरहिं भक्त मदमाते॥ ३॥
तहँ तहँ भक्तिविवश अनुरागे। पाछे फिरहिं तासु प्रभु लागे।
सूर चरित पाछिल भगवाना। ग्वाल केलि वन धेनु चराना॥ ४॥
निज अनुभव इत्यादि सुहाए। देखत रहत भक्ति सरसाए।
ब्रह्मानंद मगन दिन राती। प्रेमभक्ति कछु कही न जाती॥ ५॥

दो०–एकदिवसमारगचलत,विधुनकूपकल कोय।हगविहीनचीन्ह्यो नकछु,लग्योभक्तच्युतहोय

चौपाई–तब भगवान भक्त रखवारे। अद्भुत गोप वेष निज धारे॥
गहत करन कर तुरत मुरारी। भक्त कूप च्युत लीन निवारी॥ १॥
करि कर हरण त्रास कर फेरा। सूर सपरश लेत जिय हेरा॥
इह कर जानिपरत नर नाहीं। करि विचार करुणानिधि काहीं॥ २॥
करते लीन पकरि कर संगा। कहिस वचन मन मोद उमंगा॥
अब न तजहु विन सोंच वखाने। तब भगवान वदन मुसकाने॥ ३॥
सूर करन कर करि वरजोरा। चले छुडाइ भक्त चितचोरा॥
अस जिय जानि देव चतुराई। ब्रह्मानन्द सूर सुख पाई॥ ४॥
मानत भयो भूरि निज भागा। करसों कर कृपालु जब लागा॥
गदगद गिरा प्रेम हग वारी। बोल्यो वदन वचन मनहारी॥
वंदहुं वार वार प्रभु तोहीं। जो अस निवल जानि जिय मोहीं॥
केशी कंस असुर मद गंजा। लीन छुडाय सवल कर कंजा॥ ६॥

दो०–काह भयो करते छुटे,कर्णधार भवसिंधु। मनते छूटन कठिन जन, भक्त कुमुद वर इंदु॥१॥
अबतो वलकर तोरिकर, चले निवल कर मोहिं। पै मनते छूटों न जब,तब देखों प्रभु तोहिं॥२॥

चौपाई–सुनि कटाक्ष मय वचन सुहाए। सूरदास कर प्रभु मन भाए॥
हर्ष दिनदयालु भगवाना। कीन स्परस हगन तिहि पाना॥ १॥
तत्क्षण अंग नयन युग तासा। अमल विमल कल ज्योति प्रकासा॥
पाय दीप्ति अस सूर सुजाना। सन्मुख कृपासिंधु भगवाना॥ २॥
कलित कंजलोचन घनवरना। आनन हृदय भक्ततमहरना॥
चारु ललाट खोर श्रीखंडन। माल जयंति जनन मनमंडन॥ ३॥
यज्ञोपवित पीतपट राजा। निज छवि कोटि मदनमद लाजा॥
चितवनि चारु मुनिन मनमोहन। धृत गोपाल वेष वर सोहन॥ ४॥

सूरति विमल बाल वल भय्या। निरत प्रवर परचारन गय्या॥
सूर विलोकि रूप मनहरना। परचो दंडवत चरणन धरना॥ ५॥
सुमिरि कृष्ण जब शीश उठावा। कीन तुरंत मुग्ध प्रभु माया॥
जानत भयो सूर मनमाहीं। गोप बाल नँदनंदन काहीं॥ ६॥
लग्यो बहुरि अस वचनउचारन। तुमहुँ कूप च्युत कीन निवारन॥
भयो सहाय अंध तकि मोरा। अहो कीन उपकार न थोरा॥ ७॥
वंदहुँ वार वार अब तोहीं। कीन्हों कूप त्रास गत मोहीं॥
अब वृतांत निज देहु सुनावा। केहि ते आव कवन कित जावा॥ ८॥
मोहविवश अस तासु निहारी। बोले गोप वेष गिरिधारी॥
मथुरा बसहुँ गोपसुत भय्या। आवा विपिन चरनहित गय्या॥ ९॥
तोरे देखि भक्त दृग हीना। कूप उहाँ निवरन युत कीना॥
अब तुमजाहु सदनसुखमाना। मैं इत करहुँ विपिन निज प्याना॥ १०॥

दो०-असकहिवत्सलभक्त प्रभु,कृष्णदलनदुख क्रूर।द्रुमन ओटकरुनायतन,गए कछुकजबदूर॥१॥

चौपाई-तव दर्शनहित सूर सुजाना। पाछिल चल्यो वेग अकुलाना॥
गवन्यो कहाँ बाल मृदु अंगा। हरण ललित छवि कोटि अनंगा॥ १॥
इत उत फिरहिं विथत मनमाहीं। आवत दृष्टि बाल प्रभु नाहीं॥
अतिशय क्लेश सूर तब पावा। पूँछत पथिक देखि जित आवा॥ २॥
कोउ अस वरन श्याम मृदु चारू। वेत्रपानि गय्यन चरवारू॥
कामर कन्ध माल वन सोहा। देखा तुमहुँ बाल मन मोहा॥ ३॥
सुनतहि कथन पथिक इहि भाँती। इह कस कहत कवन तोहिभांती॥
इहाँ न कोउ धेनु वनचारी। जाहु सजन निज सदन सिधारी॥ ४॥
सूर सुनत अस पथिकवखाना। आगल चल्यो विपिन विसमाना॥
खोजत नील जलजवत वरना। गोपबाल कानन मनहरना॥ ५॥
भ्रमत भ्रमत दारुण श्रम पाया। वैठ्यो अंतर्व्यथित द्रुमछाया॥
तौलौं ढुरयो सूर निशि छायो। भक्त सूर व्याकुल उठि धायो॥ ६॥
जहँ तहँ लग्यो भ्रमन वन माहीं। खोजत गोपबाल मृदुकाहीं॥
गति अनन्य अस भक्तजुडाना। भा तद्रूप कृष्ण भगवाना॥ ७॥
पावन भक्ति प्रीति मनमाहीं। तजि नजाहि काननपुरकाहीं॥
तव निशि स्वप्न रूप मृदु सोई। देखे दिवस गोपसुत जोई॥ ८॥
मंदहास युत भक्त सहय्या। बोले वदन वचन सुखदय्या॥
इहाँ न भक्त गोपसुत कोई। मैंहुँ कीन कौतुक कल सोई॥ ९॥
कीन्हों तुमहिं कूपच्युत वारन। वनत गोप वन गय्यन चारन॥
ज्योतिविमलतुव दृगन प्रकासा। भक्तसृष्टसवमोर विलासा॥ १०॥
तुव नयनन इन लीन निहारी। मोर स्वरूप भक्त व्रतधारी॥
तुव हित देन दरश मनहारू। इह मैं कीन चेष्टनिज चारू॥ ११॥

दो०–अब मथुरातुवगवनकरि,मोरचरितगुणगान।करिगायनभवपूर्ववत,विचरहुअभयसुजान॥१॥

चौपाई–सुनि प्रभुवचनसुखद अभिरामा । सूर दंडवत करत प्रणामा ॥
बोल्यो आज धन्य जगदीना । जेहिइनदृगनदरशप्रभु कीना ॥ १ ॥
मुनि योगिन सुर दुर्लभ जोई । मोरे सुलभ आज जग सोई ॥
अब न देव कछु संसृति कामा । एक स्मरण तोर अभिरामा ॥ २ ॥
मोरे हृदय लालसा छाई । बिसरहिं सो न भक्त सुखदाई ॥
अरु तुम्हार माया बलवाना । करहि न मोहिं मुग्ध भगवाना ॥ ३ ॥
हे कृपालु कल कमल बिलोचन । हृदय भक्तजन सोच बिमोचन ॥
जिन नयनन अस रूप तुम्हारा । मैं प्रत्यक्ष प्रभु लीननिहारा ॥ ४ ॥
तिनसन जगत बिलोकन काहीं । दीनदयालु मोरि रुचि नाहीं ॥
ताते करहु पूर्ववत मोरे । दृग बिहीन बन्दहुँ प्रभु तोरे ॥ ५ ॥
तुव स्वरूप नित दीन सनेहू । देखत रहहुँ दिवसनिशि एहू ॥
करि अस विनय वदन अनुरागा। भयो विराम सूर बडभागा ॥ ६ ॥
बोले कृष्ण भक्त चितचोरा । सूर कथन सब सन्तत तोरा ॥
होहिं सत्य संशय कछु नाहीं । भाषिवदनअसत्रिभुवनसाईं ॥ ७ ॥
भये लुप्त प्रभु भक्त उबारयो । उठे सूर जनु स्वप्न विचारयो ॥
युगलअंध लोचन निज पायो । प्रभुपद शीश मनहिं मन भायो ॥ ८ ॥
निज कल्पित पद पावनचारू । लग्यो करन गायन मनहारू ॥
उदय अरुण तजि विपिन सिधाए। यमुना तीर भक्त वर आए ॥ ९ ॥
करि स्नान गुणगण प्रभु गाते । मथुरा आय भक्ति मद माते ॥
भजन प्रभाव देखि अधिकाई । सादर करहिं लोक सेवकाई ॥ १० ॥

दो०–सबकर हित जिय मानिनिज,द्विजविरक्तसंसाररटन कृष्णगुणगण निरत, सूरभक्तव्रतधार

चौपाई– अवसर एक मलेक्ष सुहावा । विदित दिलीश लोक सब गावा ॥
संयुत भक्ति प्रीति हरषाए । तासु सूर जन लीन बुलाए ॥ १ ॥
आवत देखि भक्त अभिरामा । शाह कीन उठि दंडप्रणामा ॥
सादर शुचि आसन बैठारे । भक्ति पूर्वक वचन उचारे ॥२॥
तुव यादव प्रभु लोगन गाए । भक्त कृष्ण भगवान सुहाए॥
मोर प्रश्न कर दीन सनेहू । देहु उतर उर हरहु सँदेहू ॥ ३ ॥
सदन मोर प्रभु अगणित भामा। इकते एक सरस अभिरामा ॥
तिनहूँ मध्य यादव कुलधारी । पेहि कोउ विनभक्त मुरारी ॥ ४ ॥
सुनिदिलीश अस कथनसुहावा। सूर वदन अस वचन अलावा ॥
सुनहु धरणिनायक बडभागी । करहुँकथनकछुतुवहितलागी ॥ ५ ॥
जिहिते तोर मनोरथ एहा । अवहिं होहि पुर विगतसँदेहा ॥
इह तुम्हारि संकुल वरनारी । तुमहिं देखि पुनिमोहिंनिहारी ॥ ६ ॥
क्रमतें एक एक अस आई । करहिं गमन इत मारग राई ॥

तिनहुँ मध्य तवकर त्रिय जोई। सो निज सकुच लाज सब खोई ॥ ७ ॥
मोहिंसन करहि रुचिर संभाषा। होहि तुरंत बहुरि मृत तासा. ॥
साह सुनत अस दीन रजाई। महिषी सुनत सकल चलिआई ॥ ८ ॥
एक एक करि नम्र प्रणामा। चली जात भामिनि निज धामा ॥
आई एक सवन ते पाछे। पतिप्रिय रूपललितगुण आछे ॥ ९ ॥

दो०—निरखत सन्मुख हर्षवश,कहिसि वदन मुसकाय।कहिते कीन आगमनतुव,मोर मर्मकछुपाय।

चौपाई—देखत कहिस सूर तिहि ओरा। शुभ्रे मोहिं मर्म सब तोरा ॥
भामिनि सुनत चरण गहिलीने। देखत सवन प्राण तजि दीने ॥ १ ॥
महिषी आन देखिअस तासा। लागीं रुदन करन संभाषा ॥
साह व्यथित मानस विसमायो। धरत धीर पुनि वदन अलायो॥ २ ॥
बन्दहुँ वार वार अब तोहीं। भगवन करहु कथन सब मोहीं॥
को इह रही भवन मम भामा। जहिअस तज्यो वपुष निष्कामा ॥ ३ ॥
तब पूर्ववत कथा जु सुहायन। लागे सूरदास मुख गायन ॥
इह मथुरा पुरि वसहि सुहाई। वीरवधू सब लोगन गाई ॥ ४ ॥
हाव भाव कल निरत परायन। कला प्रवीन परमपटु गायन ॥
सभा महिंद्र धनक जन जाई। निज प्रभाव गुण लेत रहाई ॥ ५ ॥
काहु धनाढ्य काल शुभ पायो। पाणिग्रहण निज सुवन रचायो ॥
इहि कहँ पव्यो वोलि सन्माना। लाग्यो होन नृत्य कलगाना ॥ ६ ॥
करि निज कला ललित चतुराई। मूर्छित सभा कीन समुदाई ॥
तब कोउ आन देशकर राई। इहिनृत गीत देखि चतुराई ॥ ७॥
निज पुर गयो लेत हरपाना। पावा तहाँ विविध सन्माना ॥
एक दिवस रत नृत्य अगारा। देखिस रुचिर धरणिपतिदारा ॥ ८ ॥
सजि शृंगार आभरण सोहन। ठाढी मनहु मान रति मोहन ॥
चारि ओर परिवारत दासी। सेवइ सुखद रूप गुण रासी ॥ ९ ॥
अस प्रभाव दृग देखि सुहावा। तेहि कर हृदय मनोरथ छावा ॥
हमहुँ होव इहि सम कस रानी। अस विचारि मानस सकुचानी ॥ १० ॥
इन कर भूप पुण्य संसारा। हमहु अधम धिग जनम हमारा ॥
पुनि देखिस छितपत पटरानी। देत दान दीनन रति मानी ॥ ११ ॥

दो०—धन भूषण पट भक्तियुत,करत सकल सेवकाइ।अतिथ संत आवत सदन,भोजन देहुँजिवाइ॥
हमहुँ करव यदि पुण्य अस,कहत गुणत जियमाहिं।तो पावहुँ संशय नहीं, भूपपतनि पदकाहिं ॥

चौपाई—अस प्रकार पावन शुभ तासा। ललित दान रुचि हृदय प्रकासा ॥
तब तहिं दैवयोग कर आई। ज्वररुज उपज प्रबल दुखदाई ॥ १ ॥
पुनि पंचत्वभाव कहँ सोई। प्रापत भई व्याधि सब खोई ॥
धर्मदूत रौरव तेहि डारयो। तहां भोग निज कृत अवसार्यो ॥ २॥
सुर पुर गवनि बहुरि हरपाती। अपसर नृत्य गीन कलराती ॥

मधुरा भवन भवन भगवाना। जो नृत गीन ललित पुनि गाना ॥ ३ ॥
कीन्हेसि भक्ति प्रेम सरसाए। तेहि परिणाम अमर पुर पाए ॥
अरु उपकार देखि नृप रानी। जोतहि हृदय दान रुचिमानी ॥ ४ ॥
ताहि प्रसाद भवन तुव आई। भोगे विविध भोग सुख पाई ॥
आयु विदित देखत तुव एहा। मृत वश भई तुरत तजि देहा ॥ ५ ॥
पै यादव वंशी त्रिय जेहू। रही सो देव रूप सब तेहू ॥
कौतुक करन देवपुर त्यागी। आई धरणि कृष्ण अनुरागी ॥ ६ ॥
गवनी बहुरि अमरपुर काहीं। रही सो मनुज रूप कछु नाहीं ॥
अस कहि सूरदास हरषाते। माँगि विदाय भक्ति मदमाते ॥ ७ ॥
तब दिल्लीश सादर धन दीना। भक्त-सूरु सुइकार न कीना ॥
हमरे नहिन द्रव्य कछु कामा। तब दिल्लीश वर्णन अभिरामा ॥ ८ ॥
धरचो शीश नम्रत कर जोरी। विनय वदन कछु कीन न थोरी ॥
चले सूर तब होत विदाए। हर्षत कृष्ण ललित पुर आए ॥ ९ ॥
अगणित विमलभक्ति सरसावन। विरचत कृष्णचरित पदपावन ॥
रहे करत गायन संसारा। सकल लोक हित हृदय विचारा ॥ १० ॥
पदनःप्रबंध सूर जन नागर। बाँध्यो जनहु सेतु भवसागर॥
विनु प्रयास कलिकाल मँझारा। तेहि प्रसाद उतरत सब पारा ॥ ११ ॥

दो०–सूर सूरसम विदित जग,सकलकविनशिरमोर।सूरश्याम जेहिभक्तिवश,भए भक्तचितचोर१
जौलौं विचरे धरणि तल,पलन विसारे श्याम।भए अंत अलचरणकल,कंजकृष्ण अभिराम॥२॥

बाबू रघुनाथसिंह तभल्लुकेदार भदवरने मुझे १६ दोहे दियेथे उन दोहोंमें सूरदासके समयके कवियोंके नाम हैं पर कई एकमें मुझे सन्देह है जो हो वे दोहे नीचे प्रकाश कियेजातेहैं

दो०–सूरदासके समयमें,जोकवि भये महान। उन सबसे बढिके सबै, इन्हें करत सन्मान॥१॥
ओलिराम अकबर अगरे, दासकवी करनेश। चतुरविहारी गोपकवि,घनआनँद अमरेश॥२॥
आशकरन अजबेश अरु, कादर केशवदास। टोडर गोविंदै जतकवि,चरणै चतुर्भुजदास ३॥
जीवन केशव ताजकवि,हालराय कवि खेम। योधी जोयसी चंदसखि,कृष्णदास कवि क्षेम ॥
अमृत खानखाना जगनै, ऊधोराम कमाल। जमालुद्दीन जगनन्दकवि,गोविंददास जमाल ५
जमालुद्दीन कल्याण कवि,फैजी अबुल फहीम। अभयराम परसिद्धकवि, विट्ठलविपुल रहीम६॥
अमरसिंह घनश्यामहू, दीलहै नरोत्तमदास। चेतनचंद कविन्द भट,नारक त्रियादास ॥ ७ ॥
छितस्वामी भगवतरसिक, छत्र विहारीलाल। मिश्रगदाधर मानसिंह, लालन मोतीलाल ॥८॥
हरीदास हरिनाथकवि, मानराय रघुनाथ। मिश्रगणेश कबीरअरु, लीलाधर कविनाथ॥९॥
दामोदर दिलदार कवि, दौलत नागरदास। नंदनहित हरिवंस कवि, सेन नरायणदास १०॥
नीलकंठ नँदलाल कवि, नंददास रसखान। नाभा नरबाहन नरसि, नारायणभट तीन ॥११॥
निपटनिरंजन इंद्रजित, पृथ्वीराज को जान। लक्ष्मीनारायण हरी, बलभद्र को मान ॥१२॥

१।४ अगरदास और अगर कवि।
९१–और नरसिंहभी इनका नाम है ॥

विठलनाथ विशुनाथ कवि, पद्मनाभ परवीन। भगवनंदास मनोहरा, परमानन्द नवीन ॥१३॥
माणिकचंद निहालकवि,मुकुंद मुवारक वीर। देवीदिनेशनंदीन कवि,तेही[९९] तोपी[१००] नंधीर १४
श्रीपंति यद्यपिभक्तिमें,न्यूनन कछुकलखात। तद्यपिकवितामेंकहों, समताकछुनदिखात ॥ १५ ॥
विद्यांपति आदिक कविन, जितने भये सुजान। काव्य भावमें सूरसम,तुलसी❀एकप्रमान॥१६॥

चौरसीवार्ता-वालकृष्णजीसे॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक सूरदासजी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता।

सो एकसमय श्री आचार्यजी महाप्रभु अंडेलते व्रजको पॉव धारे सो कितनेक दिनमें गऊघाट आये सो गऊघाट आगरे और मथुराके वीचो. वीच हैं तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु पांव धारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभु उतरे तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु स्नान करिके संध्यावंदन करिके पाक करनको बैठे और श्री आचार्य जी महाप्रभूनके सेवकनको समाज वहुत हुतो और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुर जी की रसोई करन लगे सो गऊघाट ऊपर सूरदासजीको स्थल हुतो सो सूरदासजी स्वामी हैं आप सेवक करते सूरदास जी भगवदीय हे गान वहुत आछो करते ताते वहुत लोग सूरदासजीके सेवक भयेहुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभु गऊघाट ऊपर उतरे सो सूरदास जीके सेवक देखके सूरदास जीसों जाय कही जो आज श्री आचार्य जी महाप्रभु आप पधारे हैं जिनने दक्षिणमें दिग्वजय कियो है सव पंडितनको जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कियो है सो श्री वल्लभाचार्य यहाँ पधारे है तव सूरदास जीने अपने सेवकनसों कह्यो जो तू जायके दूर बैठि जव आप भोजन करके विराजें तव खबर करियो हम श्री आचार्य जी महाप्रभूनके दर्शको जायँगे सो वह तनक दूर जाय बैठ्यो तव श्री आचार्य जी महाप्रभु आप पाक करत हुते सो पाक सिद्धि भयो तव श्री ठाकुर जीको भोग समर्प्यो पाछे समयानुसार भोग सराय अनोसर करके महाप्रसाद लेके श्री आचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर विराजे तहां सव सेवकहू पहुंचिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आसपास आय विराजे हैं तव वह सूरदासको सेवक आयो सो सूरदाससों कही जो श्रीआचार्यजी महाप्रभू विराजेहैं तव सूरदास जी अपने स्थल ते आय के श्री आचार्य जी महाप्रभूनके दर्शनको आये तव श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर आवो बैठो तव सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करिके आगे आय बैठे तव श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर कछु भगवत् यश वर्णन करो तव सूरदास ने कही जो आज्ञा तव सूरदासजीने श्री आचार्यजी महाप्रभूनके आगे एक पद गायो सो पद।

राग धनाश्री-हों हरि सव पतितनको नायक॥ को करिसके वरावरमेरी,इनेमानकोलायक॥१॥
जो तुम अजामेलसोंकीनी जो पातीलिखपाऊं॥होयविश्वासभलोजियअपने औरहुपतितवुलाऊं॥२
सिमिटि जहां तहांते सवकोऊ आयजुरे एकठौर॥अवके इतने आन मिलाऊं वेरदूसरीऔर॥३॥
होडा होडी मन हुलास करि करें पाप भरिपेट॥ संवहिनले पॉयन तर परिहों यहीहमारीभेंट।

९९प्रवीनरायपातुरी।
१००भगवानदास
❀अंकवाले कावियोंका आगे वर्णन कियाजायगा।

ऐसी कितक बनाऊं प्राणपति सुमिरन है भयो आडो। अबकी बेर निवारलेउ प्रभु सूरपतित काठाडो॥ फिर दूसरो और पद गायो सो पद।

रागधनाश्री– प्रभुमें सब पतितनको टीको। और पतित सबद्यौस चारके मैंतो जन्मतहीको॥१॥ बधिक अजामिल गणिका तारी औरपूतनाहीको।मोहिंछाँडितुम और उधारेमिटैशूल कैसेजीको कोऊ न समरथ सेव करनको खेंच कहतहौंलीको। मरियतलाजसूरपतितनमेंकहतमननमेंनीको

ऐसो पद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे सूरदासजीने गायो सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो सूरह्वेके ऐसो काहेको घिघियातहै कछु भगवत्लीला वर्णन करुतब सूरदासने कह्यो जो महाराज हों तो समझत नाहीं तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेकह्योकि जास्नान करिआउ हम तोको समझावेंगे तब सूरदासजीस्नान करिआये तब श्रीमहाप्रभुजीनें प्रथम सूरदासको नाम सुनायो पाछे समर्पण करवायो और दशमस्कन्धकी अनुक्रमणिका कही सो तातें सब दोष दूर भये तातें सूरदासजीको नवधाभक्ति सिद्धभई तब सूरदासजीने भगवतलीला वर्णन करी अनुक्रमणिकातें सम्पूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानिये सो दशमस्कन्धकी सुबोधनीजी में मंगलाचरणकी प्रथम कारिका कियेहैं सो यह श्लोक सूरदाजीनें कह्यो सो–श्लोक।

नमामि हृदयेऽशेषलीलाक्षीराब्धिशायिनम्। लक्ष्मीसहस्रलीलाभिःसेव्यमानंकलानिधिम्॥१॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभूनके सन्निधि पद किये सो पद।

रागबिलावल–चकई री चलि चरण सरोवरि जहां न प्रेम वियोग।यह पद सम्पूर्णकरिकेसूरदासजीनें गायो सो यह पद दशमस्कन्धके मंगलाचरणकी कारिकाके अनुसार कियो सो यामें कह्योहै जो तहां श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरदासने या भांति पदकियेतातें जानी जो सूरदासकोसम्पूर्णसुबोधनी स्फुरी सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेजान्यो जोलीलाकोअभ्यास भयो पाछे सूरदासजीनें नन्दमहोत्सव कियो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकेआगेगायोसोपद।

राग देवगांधार–व्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी।

सो यह श्रीआचार्य जी महाप्रभूनके आगे गायो सो सुनके श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुखतें कहे जो सूरदास मानों निकटही हुते पाछे सूरदासजीने अपने सेवक किये हुते तिन सबनको नाम दिवायो पाछे सूरदासजीने बहुत पद किये पाछे श्री आचार्य जी महाप्रभूनने सूरदासजीको पुरुषोत्तमसहस्रनाम सुनायो तब सूरदासजीको संपूर्णभागवतस्फुर्तना भईपाछे जो पद किये सो भागवत प्रथमस्कंधतें द्वादशस्कंध पर्यंत (तांई) किये तातें वेसूरदास जी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमभगवदीय हे पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन तीन विराजे पाछे फिर व्रजको पांवधारे तब सूरदासजीहू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ व्रजको आये।

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १॥

अब जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु व्रजको पांव धारे सो प्रथम श्रीगोकुल पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके साथ सूरदासजीहू आयेतब श्रीमहाप्रभुजी अपने श्रीमुखसों कह्योजो सूरदासजी श्रीगोकुलकोदर्शन करो सोसूरदासने श्रीगोकुलको दंडवत करी सो दंडवत करतमात्र श्रीगोकुलकी बाललीला सूरदासजीके हृदयमेंफुरीऔर सूरदासजीके हृदयमें प्रथम श्रीमहाप्रभूने सकल लीला श्रीभागवतकी स्थापी है तातें दर्शन करत मात्र सूरदासजीको

श्रीगोकुलकी बाललीला स्फुर्तना भई तब सूरदासजीने मनमेंविचार्योजोश्रीगोकुलकीबाललीलाको वर्णन करिके श्रीआचार्यजीके महाप्रभूनके आगे सुनाइये जन्मलीलाको पद तो प्रथम सुनायो है अब श्रीगोकुलकी बाललीलाको पद गायो सो पद–

रागबिलावल–शोभित कर नवनीत लिये। घुटुअन चलत रेणु तनुमंडित मुखमें लेप किये॥१॥ चारुकपोललोललोचनछविगोरोचनकोतिलकदियेलरलटकनमानोमत्तमधुपगनमाधुरीमधुरपिये कठुलाकंठवज्रकेहारिनखराजतहैंसखिरुचिरहियेधन्यसूरएकौपलयहसुखकहाभयोसतकल्पजिये २

यह पद सूरदासने गायो सो सुनिके आप बहुत प्रसन्न भये पाछे औरहु पद गाये तब श्रीमहाप्रभुजी अपने मनमें विचारे जोश्रीनाथजीके इहांऔर तो सबसेवाको मंडान भयो है पर कीर्तनको मंडान नाहीं कियोहै ताते अब सूरदासजीको दीजिये तब आप श्रीजी द्वार पधारे सो सूरदासजीको साथ लिये ही सो श्रीनाथजीद्वार जायपहुँचे तब आपस्नानकरिके मंदिरमें पधारे तब सूरदासजीसों कह्यो जो सूरदासजी ऊपर आउ स्नान करिके श्रीनाथजीको दर्शन कर तब सूरदास पर्वत ऊपर जायके श्रीनाथजीको दर्शन कियो तब आपने कह्यो जो सूरदास कछू श्रीनाथजीको सुनावो तब सूरदासने प्रथम विज्ञप्तिको पद गायो सो पद–

राग धनाश्री–अब हों नाच्यो बहुत गुपाल ॥

यहपद संपूर्ण करिके श्रीनाथजीके आगे गायो तबश्रीमहाप्रभुजीनेकह्यो जो सूरदास अबतो तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या प्रभूनने दूर कीनी ताते कछू भगवत्‌यश वर्णन करो तब सूरदासने माहात्म्य और लीला ऐसो यश करिके गाय सुनायो सो पद–

रागगौरी–कौन सुकृत इन व्रजवासिनको ।

यह पद संपूर्ण करिके गायो सो सुनिके श्रीमहाप्रभुजी बहुत प्रसन्न भये सो जैसो श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें मार्गप्रकाश कियोहो ताकेअनुसार सूरदासजीने पद किये श्रीआचार्यजी, महाप्रभुनके मार्गको कहा स्वरूप है माहात्म्य ज्ञानपूर्वक सुदृढस्नेहकी तो परम काष्ठा है और स्नेह आगे भगवान्‌को रहत नाहीं ताते भगवान बेर बेर माहात्म्य जनावतहैं नाम प्रकरणमें पूतना करि शकट तृणावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि वैकुंठ दर्शन करि ऐसे करिके भगवानने बहुत माहात्म्य जतायो परि इन व्रजभक्तनको स्नेह परमकाष्ठापन्न है ताते ताही समय तो माहात्म्य रहे पीछे विस्मृत होय जाय ।

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और सूरदासजीने सहस्रावधि पद कियेहैं ताको सागर कहिये सो सब जगतमें प्रसिद्ध भये सो सूरदासजीके पद देशाधिपतिने सुने सो सुनके यह विचार्यो जो सूरदासजी काहू रीत (विधि) सों मिलें तो भलो सो भगवतइच्छाते सूरदासजीमिलेसोसूरदासजीसोंकह्यो देशाधिपतिने जो सूरदासजी में सुन्यो है जो तुमनेविष्णुपद बहुतकियेहैंजोमोको परमेश्वरनेंराज्यदियो है सो सब गुणीजन मेरो यश गावत हैं ताते तुमहूँ कछुगावो तब सूरदासजीनेदेशाधिपतिके आगे कीर्तन गायो सो पद।

राग बिलावल–मना रे तू करि माधवसों प्रीति ॥ यह पद देशापतिके आगे संपूर्ण करिके सूरदासजीने गायो सो यह पद कैसोहै जो या पदको अहर्निश ध्यान रहे तो भगवत् अनुग्रहकी सदा स्मृति रहे और संसारते सदा वैराग्य रहे और कुसंगको सदा भय रहे और भगवदीयके

सगकी मदा चाह रहे और श्रीठाकुरजीके चरणारविंद उपर सदा स्नेह रहे देशादिक उपर आसक्ति न होय ऐसो पद देशाधिपतिको सुनायोसोसुनिके देशाधिपति बहुतप्रसन्न भयो और कह्योजो सूरदासजी मोको परमेश्वरने राजज्य दीनो है सो मन गुणीजन मेरो यश गावत है तातें मेरो यश कछु गावो तब सूरदासजीने यह पद गायो सो पद।

राग केदारो—नाहिन रह्यो मनमें ठौर॥ यह पद संपूर्ण करिके गायो सो सुनिके देशाधिपति अकबर बादशाह अपने मनमें विचार्यो जो ये मेरो यश काहेको गावेंगे जो इनको मेरो कछु बातको लालच होय तो गावें ये तो परमेश्वरके जन हैं औरसूरदासजीने या पदके अंतमें गायो हो जो "सूर ऐसे दर्शको ए मरतलोचनप्यास" यहगायोहोसोदेशाधिपतिने पूछी जो सूरदासजी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कैसे मरतहें और बिन देखे तुम उपमाको देतहो सो तुम कैसे देतहो तब सूरदासजी कछु बोले नहीं तब फिरि देशाधिपति बोल्योजोइनकेलोचनहें सो तो परमेश्वरके पासहें सो वहां देखतहें सो वर्णन करत हैं तब देशाधिपतिने सूरदासजीके समाधानकी मनमें विचारी जो इनको कछु दियो चाहिये पर यहतो भगवदीयहें इनको काहू बातकी इच्छा नाहीं पाछे सूरदासजी देशाधिपतिसों विदा होयके श्रीनाथजीद्वार आये।

वार्ता प्रसंग॥ ३॥

एक समय सूरदासजी मार्गमें चले जातहे सो कोऊ चौपड खेलत हते सो वा चौपड खेलमें ऐसे लीन हे जो कोऊ आवतेकी सुधि नाहीं ऐसे खेलमें मग्न हे सो देखके सूरदासजीके संग भगवदीय हे तिनसों सूरदासजीने कह्यो जो देखो यहप्राणीनेंसोअपनोजमारोखोवतहेभगवानने तो मनुष्यदेह दीनी हैं सो तो अपनी सेवा भजनके लिये दीनी हैसोतोयादेहसों होइहै तहें यामें यह लौकिक सिद्ध नाहीं सो काहेते जो या लोकमें तो अपयशऔरपरलोकमें भगवानते बहिर्मुखता तातें श्रीठाकुरजीने इनको मनुष्यदेह दीनीहै तिनको चौपड ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदासजीने अपने संगिनसों कह्यो सो पद।

राग केदारो—मन तू समझ सोच विचार। भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहतनिगमपुकार॥१॥
साधु संगति डार पासा फेर रसना सार। दाव अबके पर्‍यो पूरो उतरि पहिली पार॥२॥
बाकसत्रे सुनि अठारे पंचहीको मार। दूरते तजि तीन काने चमकि चौंकि विचार॥३॥
काम क्रोधजजालभूल्यो ठग्योठगनी नार। सूर हरिके पदभजनबिन चल्यो दोउ कर झार॥४॥

यह पद सूरदासजीने अपने संगके भगवदीयनसों कह्योसोयापदमें सूरदासजीने कहाकह्यो मनतूसमझ शोच विचार। ये तीनों वस्तु चौपडमें चाहिये सोईतीनों वस्तु भगवानके भजनमें चहिये काहेतेजोसमझ न होय तो संसार श्रवणकहाकरेगो तातेपहिलेतो समझचहियेऔर सोच कहिये चिन्ता सो भगवान्‌के प्रातिकी चिन्ता न होयतो संसारऊपरवैराग्यकैसेआवे तातेसोच चहिये और विचार जोयाजीवको विचारही नहोतो संगदुसंगमें कहाकरेगोतातेविचार चहिये सो ये तीनों वस्तु होयतोभगवदीयहोयताते ये तीनोवस्तु भगदीयको अवश्य चाहिये और चौपडमेंहू तीनों वस्तु चाहिये समझ कहेगनवोन आवे तोगोटकैसे चले और सोच अगमजो मरे यह गोट दाव पड तोयह चले विचार जो वाहीमें तब मनजो ये तीनो वस्तु होय तो चौपड खेली जाय सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे परम भगवदीय हैं।

वार्ता प्रसंग ४.

बहुरि श्रीसूरदासजी श्रीनाथजीद्वार आयके बहुत दिनताई श्रीनाथजीकी सेवा कीनी बीच बीचमें श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शनको आवते सो एक समय सूरदासजीश्रीगोकुल आये श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शन किये और बाललीलाके पद बहुत सुनाये सो श्रीगुसाईंजी सुनिके बहुत प्रसन्न भये पाछे श्रीगोसाईंजीने एकपालना संस्कृतमें कियो सो पालना सूरदासजीको सिखायो सो पालना सूरदासजीने श्रीनवनीत प्रियाजी झूलतहुते ता समय गायो सो पद।

राग रामकली ॥

प्रेपपर्यंकशयनम् ।

यह पद सूरदासजीने सम्पूर्णकरिके गायो सुनायो श्रीनवनीत प्रियाजीको पाछेयापदके भावके अनुसार बहुत पद किये सो सुनिके श्रीगोसाईंजी बहुत प्रसन्न भये पालनाके भाव अनुसार पद गायो सो पद ॥

राग बिलावल–बाल विनोद आंगनमेंकी डोलनि ॥ मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलि बलि गई तोतरी बोलनि ॥१॥ कठुलाकंठ रुचिर केहरिनख व्रजबाला बहु लई अमोलनि।बदनसरोज तिलक गोरोचन लर लटकन मनु मधुगनि लोलनि ॥२॥ लीन्यो कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यो कपोलनि । कहे जन सूर कहांलों वर्णों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥ ३ ॥

और पद राग बिलावल–गोपाल दुरेहें माखन खात । देख सखी शोभा जोबढी अतिश्याम मनोहर गात ॥१॥ उठि अवलोकि ओट ठाढी है जिहि विधि नहिं लखिलेत। चकृत नैन चहूं दिश चितवत और सवनको देत ॥ २ ॥ सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यहे अकार । जनु जलरुह तजि वेर विधीसों लाय मिलत उपहार ॥३॥ गिरिगिरि परत बदनते ऊपर दैदधिसुतके बिंदु । मानहुँ सुधाक न खोरवत प्रियजन विंदु ॥४ ॥ बाल विनोद विलोकि सूर प्रमुदित भई व्रजकी नारि । फुरत न बचन वरजिवेको मन गहि विचार विचारि ॥५ ॥

राग जैतश्री–कहाँ लगि बरणों सुंदरताई।खेलत कुँवरकतिकआँगनमें नैननिरखि सुखपाई ॥१॥ कुलहे लसतश्यामसुंदरके बहुविधि रंग बनाई। मानउ नव घन ऊपर राजत मघवा धनुष चढ़ाई श्वेत पीत अरुअसिततालमणि लटकनभालरुराई।मानहुँ असुरदेवगुरुसों मिलिभूमिजमो समुदाई अति सुदेशमृदुचिहुर हरतमनमोहनमुखबिगराई।मानहुमंजुल कंचनऊपरअलिआवलिफिरिआई दूधदंतछवि कहीनजातकछुअलिलपलपझलकाई।किलकतहसत दुरितप्रगटतमानोधिंदुमेंविपुलताई खंडित वचनदेतपूरणमुख अद्भुत यहउपमाई।घुटुरुनचलतउठतप्रमुदितमनसूरदासबलिजाई॥६॥

राग रामकली–देखो सखी एक अद्भुतरूप।एक अंबुज मध्य देखियत बीसदधिसुत जूप ॥१॥ एकअवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप । पंजचार चढि गहिं देखियत कहो कहा स्वरूप ॥ शिशुगणनमें भई शोभा करो कोउ विचार । सूर श्री गोपालकी छबि राखो यह निरधार॥३॥

ऐसे पद सूरदासजीने गाये पाछे फेरि श्रीनाथजी द्वार आये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ५ ॥

अब सूरदासजीनें श्रीनाथजीकी सेवाबहुत कीनी बहुत दिनताई ता उपरान्त भगवत इच्छा जानी जो अब प्रभुनकी इच्छा बुलायवेकी है यह विचारकेजोनित्यलीला फलात्मकरासलीला जो जहांकरे है ऐसो जो परासोली तहां सूरदासजी आये श्रीनाथजी कीध्वजाको दण्डवत करिके

ध्वजाके साम्हें सन्मुख करिके सूरदासजी सोये परि अंतःकरणमें यहजो श्री आचार्यजीमहाप्रभु दर्शन देयंगे अथयह देहतो थकीनाते अथवा देहसों श्रीनाथजीको दर्शनहोयतो जानिये परम भाग्यहे श्रीगुसाईंजीकोनाम कृपासिंधुहैभक्तनकेमनोरथ पूर्णकर्ताहैं ऐसे विचारके सूरदासजी श्री गुसाईंजीको चिंतवनकरते हें और श्रीगुसाईंजीकेसे कृपासिंधुहें जैसेसूरदासजी वहांस्मरण करते हें तैसे श्रीगुसाईंजी इनको छिनहू नाहिं भूलतहें श्रीनाथजीको शृंगार होतो ता समय सूरदासजी मणिकोठामें ठाढे ठाढे कीर्तन करते सो ता दिन श्रीगुसाईंजीश्रीनाथजीको शृंगार करत हुत और सूरदासजीको कीर्तन करत न देख्यो तब श्रीगुसाईंजीनें पूंछो जो सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहेते ? तब काहू वैष्णवने कह्यो जो महाराज सूरदासजी तो आज परासोलीकी ओरी जात देखे हें तब श्रीगुसाईंजीने जान्यो जो भगवत् इच्छाते अवसान समयहे ताते सूरदासजी परासोली गयेहेंतब श्रीगुसाईंजीने अपने सेवकनसों कह्यो जो पुष्टिमार्गको जहाज जातहे जाको कछू लेनो होय सोलेउ और जो भगवत इच्छाते राजभोग आरती पाछे रहत हें तो मेंहू आवत हों पाछे श्रीगुसाईंजी वेरवेर सूरदासजी की खबरि मँगायो करें जोआवे सोई कहे जोमहाराज सूरदासजीतोअचेतहें कछू बोलतनाहीं ऐसे करत श्रीनाथजीकेराजभोगको समयभयोसो राजभोग आरती करिके श्रीगुसाईंजी गिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीतरके सेवक रामदासजी प्रभृति और कुंभनदासजी और गुसाईंजीके सेवक गोविंदस्वामी चतुर्भुजदास प्रभृति और सब श्रीगुसाईंजीके साथ आये सोआवतही सूरदासजीसों श्रीगुसाईंजीने पूछो जोसूरदासजी केसेहो तब सूरदासजीनेश्रीगुसाईं जीको दंडवत करिके कह्यो जो महाराज आये हो महाराजकी वाट देखत हुतो यह कहिके सूरदासजीने एक पद कह्यो सो पद ॥

रागसारंग–देखो देखो हरि जूको एक सुभाय॥अति गंभीर उदार उदधिप्रभु जानिशिरोमणिराय राई जितनी सेवाको फल मानत मेरु समान।समझि दास अपराध सिंधुसमबूंदनएकोजान२ वदनप्रसन्नकमलपदसन्मुख दीखतहींहे ऐसे ॥ त्रिविख भयेकृपायाप्रुखकीजवदेखातवतेंसे ॥ भक्तविरहकातरकरुणामयडोलतपाछेलागे॥ सूरदास ऐसे प्रभुको कत दीजे पीठअभागे ॥४॥

यह पद सूरदासजीने कह्यो सो सुनिके श्रीगुसाईंजी वहुत प्रसन्न भये औरकह्यो जोऐसे दैन्य प्रभु अपने सेवकनकोदेहिं यादैन्यके पात्र एही हें तब वा वेर श्रीगुसाईंजीके पास ठाढेहुते और चतुर्भुजदासहू ठाढेहुते तबचतुर्भुजदासने कह्योजो सूरदासजीने वहुतभगवतयशवर्णन कियोपरि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको वर्णननाहीं कियो तब यह वचन सुनिके सूरदासजी वोले जो में तो सब श्रीआचार्यजी माहाप्रभुन कोही यश वर्णन कियोहे कछून्यारो देखूं तो न्यारो कहूं परि तेरे माथ कहतहों या भांति कहिके सूरदासजीनें एक पद कह्यो सो पद ॥

राग विहागरो–भरोसो दृढ इन चरणन केरो॥श्रीवल्लभनख चंदछटा विनु सवजग मांझ अँधेरो॥ साधनऔर नहींयाकलिमें जासों होतनिवेरो॥ सूरकहा कहेदुर्विधि आंधरो विनामोलकोचेरो॥

यह पद कह्यो पाछे सूरदासजीकों मूर्छा आई तब श्रीगुसाईंजी कहेंजो सूरदासजी चित्त की वृत्ति कहां हे तब सूरदासजीने एक पद और कह्यो सो पद ॥

राग विहारो–वलि वलि वलि हों कुमरि राधिका नंदसुवनजासों रति मानी॥ वे अति चतुरतुम चतुर शिरोमणि प्रीति करी कैसे होत हे छानी ॥१॥वे जु धरत तन कनक पीतपट सो तो सब

तेरी गति ठानी ॥ते पुनि श्याम सहजवे शोभा अंवर मिस अपने उर आनी ॥२॥ पुलकितअंग अबहिं ह्वैआयो निरखि देखि निज देह सियानी॥सूर सुजानके वूझे प्रेमप्रकाशभयोविहँसानी३

यह पद कह्यो इतनो कहिके श्रीसूरदासजीके चित्त श्रीठाकुरजीको श्रीमुख तामें करुणारसके भरे नेत्र देखे तव श्रीगुसाईजी पूछो जो सूरदासजी नेत्रकी वृत्ति कहां है तव सूरदासजीने एक पद और कह्यो सो पद ॥

राग विहागरो–खंजन नैन रूप रसमाते ॥ अतिशय चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते चलचलजातनिकटश्रवणनकेउलटपलटताटंकफँदाते॥सूरदासअंजनगुणअटकेनातरअवउडिजाते॥

इतनो कहतेही सूरदासजीने या शरीरको त्याग कियो सो भगवत् लीलामें प्रतिभये पाछे श्रीगुसाईजी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये ताते सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते (सो)इनकी वार्ताको पार नहीं पाते इनकी वार्ताकहांताईलिखिये

सीधीहिन्दी–पहिले भागमें गया गवर्नमेन्ट स्कूलके पंडितवलदेव मिश्रने लिखाहैकिसूरदासा का घर कृष्णावेना गांवमें देवशर्म्मा ब्राह्मणका वेटा विलमङ्गल पांड इनका नामथा । पहले इनकी चालचलनअच्छी नहींथी ।पीछेये सुधरे और सवालाख भजनका सूरसागर वनाकर वडे नामी हुए। लोग कहते हैं कि इन्होंने अपनी आंख आपही फोडीथी।

'सुगम पंथमें पंडित गणपत लाल चौवे फर्स्ट असिस्टेंट मास्टर स्कूल गयपुरने लिखाहै कि-शूरदास किंवा सूरदास–मदनमनोहर सूरध्वज ब्राह्मण दिल्लीनगरके समीप किसीग्रामकेरहनेवाले थे।किसीसमय दिल्लीआये वहां एक दिन किसी स्त्रीको कोठेपर खडीदेख उसपर मोहित हुए और कोठेकी ओर इकटक चिते रहेलोगइनकीदशादेखधिक्कारनेलगेपरंतु वह स्त्री घरसे वाहर निकल वोली "विप्रजी क्या आज्ञा होती हैं" विप्र वोले "क्या सचमुच मेरी आज्ञा पालेगी" वह वोली "निस्सन्देह" मुझे ईश्वर साक्षी है तवतो वह विप्रके कहनेके अनुसार दो सुइयां ले आई और जव विप्रने कहा कि मेरी छातीपर वेठ इनदोनों सुइयोंको मेरे नेत्रोंमें घुसेडदे उसने वैसाही किया और तवहीसे सूरदास कहलानेलगे।लोगोंने इनकी वडी प्रशंसाकर इनके कहनेके अनुसार मथुरा वृन्दावनमें पहुँचादिया यहांपर इन्होंने सवालख विष्णुपदका एक वहुत वडा सूरसागर नामी ग्रन्थ वनाया निदान कुछ कालतक ये अकवर वादशाहकी सभामें रहे और फिर परलोकको सिधारे।

प्राचीन मनुष्योंकी कहावतहै कि,ये उद्धवका अवतारथे वेसव कवियोंमें श्रेष्ठ गिनेजातेहैं यथा दो०–सूरसूर्य्य तुलसी शशी,उडगण केशवदासअवके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करहिं प्रकाश

रामरसिकावलीकी टिप्पणीमेंलिखाहै कि'अंकवाले कवियोंका आगे वर्णन किया जायगा' परंतु मतिराम कविका वर्णन काव्यरत्नाकरमें लिखागयाहै अतएव यहाँ उनका कुछ काव्य लिखा जाता है।

(१)मतिराम त्रिपाठी टिकमापुरवाले।

कवित्त–पूरण पुरुषके परम दृग दोऊ जानि कहत पुराण वेद वानियो रतिगई।
कवि मतिराम दिनपति यों निशापतियों दुहुँनकी कीरति दिशान माँझ मढिगई॥रविके करन भये एकमहादानी यह जानि जिय आनि चिंता चित्त मांझ चढिगई। तोहि राज वैठत कुमाऊ श्रीउदोतचंद्रचंद्रमाकी करक करेजहूंते कढिगई॥१॥

ललितललाम।

परम प्रवीन धीर धरम धुरीन दीनबंधु सदा जाकी परमेश्वरमें मतिहै।
दुर्जन बिहाल करि याचक निहाल करि जगतमें कीरति जगाई ज्योति अतिहै॥
राउ शत्रुशालके सपूत पूत भाऊसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबतिहै।
जानपति दानपति हाडा हिन्दुवानपति दिल्लीपति दलपति बालचंद पतिहै॥२॥
कैसे आसमानसे विमानसे बदासे गज गवरे चलत मानों मेरुसे लरतिहै॥
अतल वितल तल हलत चलत दल गज मद राजे दिगदंती चिक्करतिहै॥
कहै मतिराम शम्भु द्विरद दराज ऐसे जिन्हें पाइ कविराज आनद भरतिहै।
कुंभ छाये षटपद मदनि करद नद कदनि बिलंद गढ गरद करतिहै॥३॥

छप्पय।

जबलगि कच्छप कोल सहसमुखधरणिभारधर। जबलगि आठों दिशनि दाबि सोहतदिग्गजवर
जबलगि कवि मतिराम सगिरि सागर महिमंडल। जबलगिसुवरणमेरुसघनबनमगनअगनचल
नृप शत्रुशालनंदन नवल भावसिंहभूपालमनि। जगचिरंजीवनजबलगिसुखितकहतसकलसंसारधनि
दो०— भौंह कमान कटाक्षशर,समरभूमि विचनैन। लाजतजेहूंदुहुंनके,सजल सुहदसे बैन॥१॥
रूपजाल नँदलालके, परिकरिबहुरि छुटैन। खंजरीट मृगमीनसे,ब्रजबनितनके नैन॥२॥
क०— पानीको वसन कैधौं बातको विलास डोले कैधौं मुखचंद्रचारु चांदनी प्रकाश है।
कवि मतिराम कैधौं कामको सुयश के पराग पुंज प्रफुलित सुमन सुवास है॥
नासा नथुनीके गजमोतिनके आभा कैधौंरतिवत प्रगटित हियको हुलास है।
सीत करिबेको पिय नैन घनसार कैधौं बालाके वदन विलसत मृदु हास है॥४॥

छंदसार पिंगल।

दाता एक जैसो शिवराज भयो जैसो अब फतेसाहिसी नगर साहिबी समाजुहै।
जैसो चित्तौर धनी राना नरनाह भयो जैसोई कुमाऊं पति पूरो रज लाजु है॥
जैसे जयसिंह यशवंत महाराज भयो जिनको महीमें अजोंबाढयो बलसाजुहै।
मित्रासाहि नंद सी बुंदेल कुलचंद जग ऐसो अब उदित स्वरूप महाराजु है॥५॥
लछमनहीं संगलिये जीवन विहार किये सीता हिये बसे कहातासोअभिरामको।
नव दल शोभा जाकी विकसे सुमित्रलखि कोशलेबसतकोऊ सुठि धामठामको॥
कवि मतिराम शोभा देखिये अधिक नित सरसनिधानकविकोविदके कामको।
कीन्होहै कवित्त एक तामरसहीको यासों रामको कहतकै कहत कोऊ बामको॥६॥

रसराज।

चंदन चढारी नभ चंदन चढारी अंग चंद उजियारी देखि नकराति केसीहै।
फंद फंदफबदी गंसीली गांठि गूंठि मूंदिमूंदिमूंदि सुख मंद मंतरात केसीहै॥
मतिराम मिलन बिहारी सूं तूं प्यारी चलु नितगतिवारी आजु जकराति केसी है॥
कतरात कैसी बात बतरात केसी जात सतरात केसी रात रत रात केसीहै॥७॥
चोरकीचोरछिनारछिनारकीसाहुकीसाहुबलीकीबलीठगकोठगकामुककामुककी [illegible]
प्रवीणनकीपरवीणहीजानैमतिरामनजानैकहांधौंचली। उनफेरिदईनथकीमुकतानफेरिफेरिफूलगुलाबकली
गोपबधू तनतोलतडोलतबोलतबोलजुकोमलभायैं। ऊरूनितंबनिकीगुरुतापगजातगयंदनिकीगतिनायैं
आगमभोतरुणापनकोमतिरामभनैभईचंचलआंपैं। खंजनकेयुगसावकज्योंउडिआवतनाफरकावतपांपैं

क०–येरे मतिमन्द चन्द ढिगदे अनन्द तेरो जोपे विरहीन जरिजात तेरे तापते।
तूतो दोपाकार दूजे धरेहै कलंकउर तीसरे सखानि संग देखो शिग्छापते॥
कहे मतिराम हाल जाहिर जहानतेरो वारुणीके वासी भासीगढ़के प्रतापते।
वांधोगयोमथोगयोपियोगयोखारोभयो वापुरोसमुद्र ऐसेपूतह्वीके पापते॥ ९॥

(२) शिवसिंहसरोजमें लिखाहै भूपणत्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुर सं० १७३८ मेंहुए रौद्र वीर भयानक ए तीनों रस जैसे इनकी काव्यमें हैं ऐसे और कवि लोगोंकी कवितामें नहीं पाए जाते ए महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना नरेशके यहाँ छःमहीनेतक रहे तेहिपीछे महाराज शिवराज सुलंकी सतारागढ वालेकेइहां जाय वडा मानपाया औरजब यह कवित्त भूपणजीने पढा (इंद्र जिमिंजंघपर) तब शिवराजने पांच हाथीओ २५ हजार रुपिया इनाम दिया इसी प्रकारसे भूपणने वहुत वार वहुत २ रुपिया हाथी वोडा पालकी इत्यादि दानमें पाये ऐसे शिवराजके कवित्त वनाए हैं जिनकी वरावर किसी कविने वीरयश नहीं वनाय पाया। निदान जब भूपण अपने वरको चले तो परना होकरराजाछत्रशालसेमिलेछत्रशालनेविचाराअवतो शिवराजनेइन को ऐसाकुछ धन धान्य दियाहै किहम उसका दसवांहिस्सा भीनहीं देसकते ऐसा सोचविचार करि चलते समय भूपणकी पालकीका वांस अपने कंधे पर धरि लिया ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूपणजी वहुत प्रसन्न हे यह कवित्त पढ़ा। साहूको सराहों की सराहों छत्रशाल को। और दूसरा यह कवित्त वनाया।तेरी वरछीने वरछीने हैं खलनके। और दो दोहा वनाय छत्रशालको दे घरमें आए॥

दोहा–एक हाडा बूँदी धनी,मरद महेवावाल। शालत नौरंगजेवके, ए दोनों छत्रशाल॥ १॥
ए देखो छत्तापता, ए देखो छत्रशाल। ए दिल्लीकी ढाल ए, दिल्ली ढाहनवाल॥ २॥

भूपणजी थोडे दिन घरमें रहि वहुत देशान्तरोंमें घूमिघूमि रजवाडोंमें शिवराजका यश प्रगट करते रहे जव कुमाऊंमें जाय राजा कुमाऊंके यशमें यह कवित्त पढा (उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलधिजल)।

तव राजाने सोचाकि ये कुछदान लेने आएहैं और हमने जो सुनाथाकि शिवराजनेंलाखों रुपया इनको दिया सो सव झूँठहै ऐसा विचार हाथी वोडे मुद्रा वहुत कुछ भूपणके आगे किया भूपणजी वोले इसकी अव भूँख नहीं हम इसलिये इहाँ आएथे कि देखें शिवराजका यश यहाँ तक फैलाहै या नही–इनके वनाए हुए ग्रंथ शिवराजभूपण १ भूपणहजारा २ भूपणउल्लास ३ दूपणउल्लास ४ ए चारि ग्रंथ सुनेजातेहैं कालिदासजूने अपने ग्रंथ हजाराकी आदिमें ७० कवित्त नवरसके इन्हीं महाराजके वनाए हुए लिखेहैं।

(३) विहारीलाल चौवे ब्रजवासी सम्वत् १६०२ में हुये।ये कवि जयसिंह कछवाहे महाराजे आमेरके इहाँथे जयपुरकी तवारीख देखनेसे प्रगटहै कि महाराजे मानसिंह से जो संवत् १६०२ में विद्यमान थे संवत् १८७६ तक तीनि जयसिंह होगयेहै। पर हमको निश्चय है कि ये कवि माहराजे मानसिंहके पुत्र जयसिंहके पास थे जो महागुणग्राहकथे औ दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंहके प्रपौत्र संवत् १७५९ में थे। यह वात प्रगट है कि जव महाराजे जयसिंह किसी एक थोरी अवस्था वाली रानी पर मोहित है रात दिन राजमंदिरम

रहने लगे। राज्यके संपूर्ण काज काम बंद होगए तब बिहारीलालने यह दोहा बनाय राजाके पास तक किसी उपाय से पहुचाया।

दो०--नहिंपरागनहिं मधुर रस,नहिंविकासयहिकाल।अलीकलीहीसोंबिध्यो,आगेकौनहवाल१॥

इस दोहा पर राजा अत्यन्त प्रसन्न हो १०० मोहर इनाम दे कहा इसी प्रकारके और दोहा बनावो बिहारीलालने सातसौ दोहा बनाए औ७००अशरफी इनाममें पाया। यह सतसई ग्रन्थ अद्वितीय है बहुत कविलोगोंने इसके ढंग पर सतसई बनाकर अपनी कविताका रंग जमाना चाहा पर किसी कविको सुर्खरूई प्राप्त नहीं हुई है। यह ग्रंथ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं और आज तक तृप्तिनहीं हुई। लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होतेहैं सो वास्तव में इसी ग्रंथके अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं।

सब तिलकों में सूरतिमिश्र आगरेवालेका तिलक विचित्र है और सब सतसैयों में विक्रमसतसई और चंदनसतसई इसके लगभग हैं।

बिहारी कवि२ सं०१७२८ इनके महासुंदर कवित्त हजारमें हैं। बिहारी कवि ३बुंदेलखंडी सं०१८०६ सरस कविता करीहै। बिहारीदास कवि४ब्रजवासी सं०१६७०इनके पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें हैं।

(४)नीलकंठमिश्र अंतर्वेदी वासी संवत् १६४८ दासजीने इनकी प्रशंसा ब्रजभाषा जाननेमें करीहै।

(५)नीलकंठत्रिपाठीटिकमापुरवालेमतिरामके भाई।संवत्१७२०इनकाकोईग्रंथहमनेनहींदेखा॥

(६)बेनीकवि प्राचीन असनी जिले फतेपुरवाले। संवत १६९० ए महान् कवीश्वर हुए हैं इनका एक ग्रंथ नायकाभेदमें अति विचित्र देखनेमें आयाहै इनकी कविताई बहुतही सरस-ललित मधुरहै।

बेनीकवि२बन्दीजन बैंती जिले रायबरेलीके निवासी संवत् १८४४एकवि महाराजटिकैतराइ दीवान नवाब लखनऊ के इहां थे और बहुत वृद्ध हो संवत १८९२ के करीब मरगए।

बेनी प्रवीन ३ बाजपेई लखनऊके निवासी संवत् १८७६ए कवि महासुंदरकविताकरनेमें विख्यात हैइनका ग्रंथ नायकाभेद में देखनेके योग्य है।

बेनी प्रगट ४ ब्राह्मण कविंद कवि नरवरी निवासीके पुत्र संवत् १८८० इनकी काव्य महासुंदर है।

(७)एक शंभु कविका वर्णन काव्यरत्नाकरकी टिप्पणी में है उसके सिवाय यहां लिखा है। शंभुनाथ मिश्र कवि सं०१८०३ ए महाराज महान कवि भगवंत राइ खीची के यहां असोथर में रहा करते थे शिव कवि इत्यादि सेकड़ों मनुष्यों को इन्होंने कवि कर दिया।कवितामें महा निपुण थे रसकल्लोल १ रसतरंगिणी२अलंकारदीपक ३ ए तीनि ग्रंथ इनके बनाये हुए हैं।

शंभुनाथकवि बंदीजन सं० १७९८ ये कवि सुखदेव के शिष्य थे रामविलास नाम रामायण बहुत ही अद्भुत ग्रंथ बनाया है रामचंद्रिका की ऐसी इस ग्रंथ में भी नाना छंद हैं।

शंभुनाथकवि त्रिपाठी डौंडिया खेरेवाले सं०१८०९ ए महाराज राजा अचलसिंह बैस डौंडिया खेरेके इहांथे राजरघुनाथसिंह के नाम बेतालपचीसीको संस्कृतसे भाषा किया है और मुहूर्तचिंतामणि ज्योतिषग्रंथ को भाषामें नाना छंदोंमें बनायाहै ए दोनों ग्रंथ सुंदर हैं।

शम्भुनाथमिश्र कवि बैसवारे वाले सं० १९०१ ए कवि राना यदुनाथसिंह बैस खजुरगांवके इहाँथे थोरी अवस्थामें अल्पायु होगया बैस वंशावली और शिवपुराणका चतुर्थखंड भाषामें बनायाहै शम्भुप्रसाद कविके शृंगारमें सुन्दर कवित्त हैं।

(८) तोष कवि सं० १७०५ ये महाराज भाषाकाव्यके आचार्य्योंमें हैं ग्रन्थ इनका कोई हम को नहीं मिला पर इनके कवित्तोंसे हमारा कुतुबखाना भराहुवाहै कालिदास तथा तुलसीजीने भी इनकी कविता अपने ग्रन्थों में बहुत सारी लिखीहैं।

(९) चिन्तामणि त्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुर वाले सं० १७२९ ए महाराज भाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिनेजातेहैं अन्तर्वेदमें विदित है कि इनके पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजीके स्थानमें जातेथे वे देवीजी. वनकी भुइआं कहाती हैं टिकमापुरसे एक मैल के अंतर पर हैं एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती प्रसन्न ह्वै चारि मुंड दिखाय बोलीं यही चारों तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुवा कि चितामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशंकर या नीलकण्ठ चारि पुत्र उत्पन्न हुए इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए शेष तीनों भाई संस्कृत काव्यको पढि ऐसे पंडित हुए कि उनका.नाम प्रलय तक बाकी रहैगा इन्हीं के वंश में शीतल और बिहारीलाल कवि जिनका लाल भोग है संवत१९०१ तक विद्यमान थे निदान चिंतामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में सुर्य्यवंशी भोंसला मकरंदशाहिके इहां,रहे और उन्हींके नाम १ छंदविचार नाम पिंगल बहुतभारी ग्रंथ बनाया.और काव्यविवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ए पांच ग्रंथ इनके बनाए हुए हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं इनकी बनाई हुई रामायण कवित्त और नाना अन्य छन्दों में बहुत अपूर्व है. बाबू रुद्रसाहि सुलंकी और शाहिजहां बादशाह और जैनदी अहमद ने इनको बहुत दान दिए हैं इन्होंने अपने ग्रंथों में कही कहीं अपना नाम मणिलाल करिके कहा है।

चिन्तामणि २ ललित काव्य करीहै।

(१०) कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अन्तर्वेदके निवासी सं० १७४९ ये कवि अन्तर्वेदमें बड़े नामी गिरामी हुएहैं। प्रथम औरंगजेब बादशाहके साथ गोलकुंडा इत्यादि दक्षिणके देशोंमें बहुत दिन तक रहे तेहि पीछे राजा योगाजीतसिंह रघुवंशी महाराजे जम्बूकेइहाँ रहे और उन्हींके नाम वधूविनोद नाम ग्रन्थ महाअद्भुत बनाया और एक ग्रन्थ कालिदास हजारा नाम संग्रह बनाया जिसमें सं० १४८० से लेकर अपने समय तक अर्थात् सं० १७७५ तकके कवि लोगोंके एक हजार कवित्त २१२ कवि लोगोंके लिखेहैं हमको इसग्रन्थके बनानेमें कालिदासके हजारासे बडी सहायता मिली और एक ग्रंथ और जंजीराबन्द नाम महाविचित्र इन्हीं महाराजका हमारे पुस्तकालयमें है इनके पुत्र उदयनाथ कविन्द और पौत्र कवि दूलह बडे महान्कवि हुए हैं।

(११) ठाकुर कवि प्राचीन सं० १७०० ठाकुर कविको किसीने कहाहै कि वे असनी ग्रामके बन्दीजनथे संवत् १८०० के करीब मोहम्मदशाह बादशाहके जमानेमें हुएहैं और कोई कहतेहैंकि नहीं ठाकुर कवि कायस्थ बुंदेलखण्डके बासीहैं। किसी बुंदेलखण्डी कविका बयानहै कि छत्र-पुर बुंदेलखण्ड में बुंदेला लोग हिम्मति बहादुर गोसांई के मारने को इकट्ठा थे ठाकुर कविने यह कवित्त (समयो यह बीर बरावने हैं) लिखि भेजा सब बुंदेला चले गए और हिम्मति बहादुरने ठाकुर को बहुत रुपया इनाम दिया हिम्मति बहादुर .संवत १८०० में थे और कवि कालिदास

ने हजारा संवत् १७२५ के करीब बनायाहै और उसमें ठाकुरके बहुतकवित्त औरउपर लिखा हुवा कवित्त भी लिखा है। इससे हम अनुमान करतेहैं किठाकुरकवि बुंदेलखण्डीअथवाअसनी वाले भाट या कायथ कछु होवें पर ए कवि अवश्य संवत् १७०० में थे इनकी काव्य महामधुर लोकोक्ति इत्यादि अलंकारों से भरी पुरी सर्व प्रसन्नकारी है । सवैया इनके बहुत ही चोटीलहैं इनके कवित्त तो हमारे पुस्तकालय में सैकरों हैं पर ग्रंथ कोई नहीं और न हमने किसी ग्रंथ का नाम सुना ।

। ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी किशुनदासपुर जिले रायबरेली सं० १८८२ ये महान् पंडित संस्कृत साहित्य में महाप्रवीण सारे हिन्दुस्तान में काव्यहीके हेतु फिरि२वस्तेपुस्तकेंकेवलकाव्यकी इकट्ठाकीथीं अपने हाथसेभी नानाग्रन्थ लिखेथे औरबुंदेलखण्डमें तो घर घर कवि लोगोंके इहाँ फिर फिर एक संग्रह भाषा कवि लोगोंकीइकट्ठाकीथी रसचन्द्रोदयग्रन्थ इनका बनाया हुवाहै तत्पश्चात् काशीजीमें गणेश और सरदार इत्यादि कवि लोगोंसे बहुत मेलजोल रहा और अवधदेशके राजा महाराजाओंके इहाँभी गये जब इनका संवत् १९२४ में देहान्त हुवा तो इनके चारों महामूर्ख पुत्रोंने १८। १८ वस्ते बाँटिलिये और कौडियोंके मोल बेंचिडाले हमने भी प्रायः दोसौ ग्रन्थ अन्तमें मोल लियाथा।

ठाकुररामकवि इनके कवित्त शान्तरसमें सुंदरहैं ।

ठाकुरप्रसादत्रिवेदी अलीगंज जिले खीरी विद्यमानहैं सत कविहैं ।

(१२) निवाजकवि जुलाहा बिलग्रामी सं० १८०४ शृंगारमें अच्छे कवित्तहैं ।

निवाज २ ब्राह्मण अन्तर्वेद वाले सं० १७३९ ये कवि महाराज छत्रशाल बुंदेला परना नरेश के इहाँ थे आजमशाहकी आज्ञानुसार शकुंतला नाटकको संस्कृतसे भाषा बनाया एक दोहासे लोगोंको शकहै कि निवाजकवि मुसलमानथे पर हमने बहुत जांचा तो १ निवाज मुसलमान और २ हिन्दू पाये गये हैं ।

दो०–तुम्हें न ऐसी चाहिये,छत्रशाल महराज । जहं भगवतगीता पढ़े,तहँ कवि पढे निवाज॥१॥

निवाज २ ब्राह्मण बुंदेलखंडी सं०१८०१ये कवि भगवंतराइ खीची गाजीपुरवालेके इहांथे।

(१३) सेनापति कवि वृंदावन वासी १६८० ए महाराज वृन्दावनमें क्षेत्र संन्यास ले सारीविस वहाँही व्यतीत किया । काव्यमें इनकी प्रशंसा हम कहांतक करें अपने समयके भामथे काव्य कल्पद्रुम इनकाग्रंथ बहुतही सुंदरहै हजारामें इनके बहुत कवित्तहैं ।

(१४) सुखदेव मिश्र कंपिला वासी १७२८ए कवि भाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिने जाते हैं प्रथम राजा अर्जुनसिंहके पुत्र राजागजसिंह गौरके इहाँ जाय कविराजकी पदवी पाय वृत्तविचार नाम पिंगल सब पिंगलोंमें उत्तम ग्रन्थको रचा तत्पश्चात् राजा हिम्मतिसिंह बंधलगोती अमेठीके इहां आय छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिरि नवाबफाजिलअलीखां मंत्रीऔरंगजेब बादशाहके नाम भाषासाहित्यमें फाजिलअलीप्रकाश नाम ग्रन्थ महाअद्भुत रचा ए तीनों ग्रन्थोंके सिवाय हमनें कहीं लिखा देखाहै कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ए दो ग्रन्थ औरभी इन्हीं महाराजके किये हुये हैं ।

सुखदेव मिश्र कवि २ दौलतपुर जिले रायबरेली वाले । १८०२ ए महाराज महान् कवि

वैसवारेमें होगये हैं राव मर्दनसिंह वैस डौंडियाखेरेके इहांथे और उन्हींके नाम रसार्णवनाम ग्रंथ नायकाभेदमें वहुत सुंदर वनाया हे शंभुनाथ इत्यादि कवि इन्हींके शिष्यथे।

सुखदेव कवि २ अंतर्वेदी वाले। १७९१ ए कवि महाराजे भगवंत राय खीची असोथर वाले के इहांथे कछु आश्चर्य्य नहीं है कि ए महाराज सुखदेव मिश्र दौलतिपुर वाले न होवें।

(१५) देव कविप्राचीन देवदत्त ब्राह्मण समानेगांव जिले मेनपुरी निवासी सं० १६६१ ये महाराज अद्वितीय अपने समयके भाम मम्मट के समान भाषा काव्यके आचार्य होगयेहैं शब्दों में ऐसी समाई कहां हे जिनमें इनकी प्रशंसा की जावे इनके वनाये ग्रंथोंकी संख्या आज तक ठीक ७२ हमको मालूम हुईहै तिनमें केवल ११ ग्रंथोंके नामं जो हमको मालूम हैं लिखे जाते हैं जिन्हें अक्सर हमने भी देखाहे।

१ प्रेमतरंग २ भावविलास ३ रसविलास ४ रसानंदलहरी ५ सुजानविनोद ६ काव्यरसायन पिंगल ७ अष्टयाम ८ देवमायाप्रपंचनाटक ९ प्रेमदीपिका १० सुमिलविनोद ११ राधिकाविलास

देव (काष्ठजिह्वास्वामी) काशीस्थ। १९११ ए महाराज पंडितराज षट्शास्त्रके वक्ता प्रथम संस्कृत काशीजीमें पढि देवयोगसे एकवार अपने गुरुसे वादकरि पीछे पछिताय काष्ठकी जीभ मुहँमें डालि बोलना वंदकरिदिया पाटीमें लिखिके वातचीत करतेथे उन्हीं दिनों श्रीमन्महाराज ईश्वरीनारायणसिंह काशीनरेशने इनसे उपदेश ले रामनगरमें टिकाया तव ए महाराज भाषा में नाना ग्रन्थ विनयामृत इत्यादि वनाए इन्हींकेपद आजतक काशीनरेशकी सभामें गाएजाते हैं

(१६) पजनेशकवि बुंदेल खण्डी १८७२ ए कवि परनामें थे और "मधुप्रिया" नाम ग्रंथ भाषा साहित्यमें अद्भुत वनाया हे इस कविकी अनूठी उपमा अनूठे पद अनुप्रासें जमक तारीफके-योग्य हैं पर टवर्ग शृंगार रसमें और कटु अक्षरोंसे जो अपनी कवितामें भरिदियाहे इस कारण से इनकी काव्य कविलोगोंके तीररूपी जिह्वाकी निशाना हो रही है इनका नखशिख देखने योग्य है इन्होंने पारसी विद्यामें भी श्रमकिया था।

(१७) घनआनंद कवि। १६१५ ए कवि कविलोगोंमें महाउत्तम कवि होगये हैं।

(१८) घनश्याम शुक्ल असनी वाले १६३५ ए कवि कवितामें महानिपुण बांधवनरेशके इहां थे ग्रन्थ तो पूरा हमने कोई नहीं पाया कवित्त २०० तक इनके हमारे पास हैं कालिदासने भी इनके कवित्त हजारामें लिखेहैं।

(१९) सुंदरकवि ब्राह्मण ग्वालियर निवासी सं० १६८८ ए महाराज शाहजहां वादशाहके कवि थे पहिले कविरायकी पदवी पाया इनका वनाया हुवा सुंदरशृङ्गार नाम ग्रन्थ भाषासाहित्यमें वहुत सुंदर है इन्हीं कविके पदमें यह अगन पराथा (सुंदर कोप नहीं सपने) यह कवित्त इस ग्रन्थमें है।

सुंदर कवि दादूजीके शिष्य मेवाडदेशके निवासी। इनकी कविता शांतरसमें कुछ अच्छी है सुंन्दरसांख्य नाम एक इनका वनाया हुआ ग्रंथभी सुना जाताहे।

(२०) सुन्दरकवि वंदीजन असनीवाले रसप्रबोध ग्रंथ बनायाहे।

मुरारिदास ब्रजवासी इनके पद रागसागरोद्भवमेंहैं।

(२१) बोधाकवि सं० १८०४ इनके कवित्त वहुतही सुंदर हैं।

बोधकवि बुंदेलखण्डी। सं० १८५५ ऐजन्।

(२२) श्रीपतिकवि प्रयागपुर जिले बहिरायच निवासी सं० १७०० ये महाराज भाषासाहित्यके आचार्योंमें गिनेजातेहैं इनके बनाएहुए काव्यकल्पद्रुम १.काव्यसरोज २ श्रीपतिसरोज ३ ये तीन ग्रंथ विख्यात हैं हमने ये तीनों ग्रंथ नहीं देखे और न इनके कुल और न जन्मभूमिसे हमको ठीक ठीक आगाही है।

(२३) दयानिधिकवि बैसवारेके सं० १८११ राजाअचलसिंह बैसकीआज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रंथ बनाया ।

(२४) युगलकिशोरभट्ट कैथल वासी सं० १७९५ ए महाराज मोहम्मद शाह बादशाहके बडे मुसाहिबों में थे इन्होंने संवत् १८०३ में अलंकारनिधि नाम एक ग्रंथ अलंकार में अद्वितीय बनाया है जिस्में ९६ अलंकार उदाहरण समेत वर्णन किये हैं इसी ग्रंथ में ए दो दोहा अपने नाम और सभाके समाचार में कहे हैं ।

दोहा–ब्रह्म भट्ट हौ जातिमें,निपट अधीननिदान । राजा पद मोको दयो, महमदशाह सुजान॥१॥
चारि हमारी सभामें, कोविद कविमतिचारु । सदा रहत आनंद बढे,स्सको करत विचारु ॥२॥
मिश्र रुद्रमणि विप्रवर, अरु सुखलाल रसाल । शतंजीव गुणमान है,शोभितगुणनि विशाल॥३॥

युगलकिशोर कवि २ शृंगाररस में कवित्त नीके हैं ।

जुगराज कवि बहुतही सरस काव्य इनकी है ।

जुगुलप्रसाद चौबे । इनकी बनाई हुई दोहावली बहुत सुंदर काव्य है ।

जुगुलदास कवि–पद बनाए हैं ।

जुगुलकवि सं०१७५५ इनके बनाए हुए पद अति अनूठे महाललितहैं ।

(२५) कविंद (उदयनाथत्रिवेदी) बनपुरा निवासी कविकालिदासजीके पुत्र सं०१८०४ ये कवि अपने पिताके समान महान्कवीश्वर होगुजरेहैं प्रथम राजाहिम्मतसिंह बंधलगोती अमेठी महाराजके यहांबहुत दिनतक रहे और कवितामें अपना नामउदयनाथ वर्णन करतेरहेजब राजाके नामसे रसचन्द्रोदयनाम ग्रंथबनाया तबराजाने कविंदपदवी दिया तबसे अपनानाम कविंदकरके धरतेरहे । इस ग्रंथकेचारिनामहैं रतिविनोद चंद्रिका१ रतिविनोदचंद्रोदय२रसचंद्रिका३ रसचंद्रोदय ४ यह ग्रंथभाषासाहित्यमें महाअद्भुतहै तेहिपीछे कविंदजीथोरेदिन राजागुरुदत्तसिंहअमेठीके इहांरहि भगवतराइखीचीऔरगजसिंहमहाराजे आमेरऔर रावबुद्धहाडा बूंदीवालेके यहांमहामान सन्मानके साथ काल व्यतीत करतेरहेऔरएक कविंदत्रिवेदी वैतीगांवजिलेरायबरेलीमेंभी महान्कवि होगयेहैं ।

कविंद२ सखीसुख ब्राह्मण नरवरबुंदेलखंड निवासीके पुत्र सं०१८५४ इन्होंने रसदीपकनाम ग्रंथ बनायाहै ।

कविंद ३ सरस्वती ब्राह्मण काशीनिवासी सं० १६२२ ये कविन्दाचार्य्य महाराज संस्कृतसाहित्य शास्त्रमें अपने समयके भानु थे । शाहजहां बादशाहके हुकुमसे भाषाकाव्य बनाना प्रारंभ किया और बादशाहीआज्ञानुसार कविंदकल्पलता नाम ग्रंथ भाषामें रचा जिस्में बादशाह के पुत्र दाराशिकोह और बेगम साहेबकी तारीफमें बहुत कवित्त हैं ।

(२६) गोविंद अटलकवि सं० १६७० इनके कवित्त हजारामें हैं ।

गोविंदजी कवि सं०१७५० ऐजन् ।

गोविंददासजी ब्रजवासी सं० १६१५ रागसागरोद्भवमें इनकीकविताहैं ए कविनाभाजीकेशिष्यथे

गोविंदकवि सं० १७९८ एकचीश्वर बडे नामी कवि हो.गए हैं इनका बनायाहुवा करुणाभरण ग्रंथ बहुत कठिन और साहित्यमें शिरोमणि है।

केशवदास सनाढ्य मिश्र बुंदेलखंडी सं० १६२४ इनका प्राचीन निवास टिहरीथा.राजा मधुकर शाह उडछावालेके इहां आये और यहां उनका बड़ा सन्मान हुवा राजा इंद्रजीतसिंहने २१ गांव संकल्प दिये तब कुटुंब सहित उडछे में रहने लगे। भाषा काव्यके तौ भाम मम्मट भरता के समान प्रथम आचार्य्य समुझना चाहिये काहेते कि काव्यके दशौ अंग पहिले पहिले इन्हींने कविप्रिया ग्रन्थमें वर्णन किये तेहि पीछे अनेक आचार्य्योंने नाना ग्रन्थ भाषामें रचे प्रथम मधुकर शाहके नाम विज्ञानगीता ग्रंथ बनायो औ कविप्रिया ग्रन्थ प्रवीनराइ पातुरीके लिये रचा और रामचंद्रिका राजा मधुकरशाहके पुत्रइन्द्रजीतके नामसे बनाया और रसिकप्रिया साहित्य और रामअलंकृतमंजरी पिंगल ए दोनों ग्रन्थ विद्वज्जनोंके उपकारार्थ रचेजब अकबरबादशाहने प्रवीनराइपातुरीके हाजिर नहोने औरउदूल हुकमी और लड़ाईके कारण राजा इन्द्रजीत पर एक करोड़ रुपया जुर्माना किए तब केशवदासजीने छिपकर राजा बीरबर मंत्रीसे मुलाकात किया और बीरबरकीप्रशंसामें(दियो करतार दुहूं करतारी) यह कवित्त पढा तब राजा बीरबरने महाप्रसन्न है जुर्माना माफ कराया परन्तु प्रवीणराइको दरबारमें आनेपडा।

केशवदास २ सामान्य कविता हैं।

केशवराइ बाबू बघेलखंडी सं० १७२९इन्होंने नायकाभेदमें एक ग्रन्थ बहुत सुन्दर बनायाहै और इनके कवित्त बलदेवकविने अपने संग्रहीत ग्रन्थ सतकवि गिराविलासमें लिखे हैं।

केशवरामकवि इन्होंने भ्रमरगीत नाम ग्रन्थ रचाहै।

बाबू रघुनाथ सिंहके दोहेके अनुसार कवियोंका 'समय शिवसिंह सरोजसे' निरूपण किया जाताहै।

(१)ओलीरामकवि सं० १६२१ कालिदासजीने इनकी काव्य अपने हजारेमें लिखेहैं

(२)अकबरका हाल पहिले लिखा गयाहै।

(३)अगर कवि सं०१६२६ नीतिसम्बंधी कुण्डलिया छप्पय दोहा इत्यादि बहुत बनाए हैं।

(४) अगरदास गलता जयपुर राज्यके निवासी सं० १५९५ इनके बहुत पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें हैं ए महाराजे कृष्णदास पयअहारीके शिष्यथे और इन महाराजके नाभादास भक्तमालग्रंथकर्त्ता शिष्यथे।

(५) करनेशकवि बंदीजन असनीवाले सं० १६११ ये कवि नरहरि कविके साथ दिल्लीमें अकबरबादशाहकी सभामें जाते आते थे इन्होंने कर्णाभरण १ श्रुतिभूषण भूपभूषण ३ ये तीनि ग्रन्थ बनाये हैं।

(६) चतुरविहारीकविब्रजवासी संवत्१६०५ इनके पद रागसागरोद्भवमें बहुत हैं।

(७) गोपकवि सं० १५९० रामभूषण १ अलंकारचन्द्रिका २ ए दो ग्रन्थ बनाए हैं।

(९) अमरेशकवि सं० १६२५ इनकी कविता महाउत्तम है कालिदासजीने अपने हजारामें इनकी कविता बहुतसी लिखीहैं।

(१०) आशकरनदास कछवाह राजा भीमसिंह नरवरगढ वालेके पुत्र सं० १६१५ पद बहुत बनाए हैं जो कृष्णानंद व्यासदेवके संग्रहीत ग्रन्थमें मौजूद हैं।

(११) अजबेस प्राचीन सं० १५७० ये कवि श्रीराजा वीरभानसिंह जोधपुरके इहां थे। और उसी देशके रहनेवाले वंदीजन मालूम होतेहैं।

अजबेस नवीन भाट सं० १८९२ये कवि श्रीमहाराज विश्वनाथसिंह बांधव रीवांनरेशके इहांथे।[1]

(१२) कादर, (कादिरबख्श मुसलमान पिहानीवाले) सं० १६३५ कवितामें निपुण थे और सैयद इब्राहीम पिहानीवाले रसखानिके शिष्य थे।

(१४) टोडर, (राजा टोडरमल खत्री पंजाबी) सं० १५८० ये राजा टोडरमल अकबर बादशाहके दीवान आला थे इनके हालातमें तारीख फारसी भरीहुई है अरबी फारसी संस्कृत विद्यामें महानिपुण थे श्रीमद्भागवतको संस्कृतसे फारसीमें उल्था कियाहै और भाषामें नीति-संबंधी बहुत कवित्त कहे हैं इन महाराजने दो काम बहुत शुभ हिन्दुस्तानियों के लिये किए हैं एक तो पंजाब देशमें खत्रियोंके इहां रिवाज तीन साला मातमको उठाय केवल वार्षिक रस-मको नियत किया दूसरे फारसी हिसाब कितावको ईरान देशके माफिक हिन्दुस्तानमें जारी किया सं० ९९८ हिजरीमें शहर लाहौरमें देहान्त हुआ।

(१६) जैतकवि स० १६०१ अकबर बादशाहके इहां थे।

(१७) चरणदास ब्राह्मण पंडितपुर जिला फैजाबाद सं० १५३७ सुरोदय ग्रन्थ बनाया।

(१८) चतुर्भुज सुन्दर कविता करी है।

चतुर्भुजदास स० १६०१ रागसागरोद्भवमें इनके बहुत पद हैं ए महाराज करौलीके राजा स्वामी विट्ठलनाथजी गोकुलस्थके शिष्यथे अष्टछापमें इनका भी नाम है।

(१९) जीवन कवि स० १६०८ इनके कवित्त हजारामें है।

(२१) ताजकवि स० १६६२ हजारामें इनके कवित्त हैं।

(२२) होलरायकवि बंदीजन होलपुर जिले बाराबंकी सं० १६४० ए महान कवि अकबर-के दरबार तक राजा हरिवंशराइ दीवान कायथ बदरकावासीके वसीलेसे पहुँचे और एक चक पाइ उसीमें होलपुर नाम ग्राम बसाया एक दिन श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी अयोध्यासों लौटते समय होलपुरमें आए होलरायने गोसाईंजीके लोटाकी प्रशसामें कहा।

दोहा–लोटा तुलसीदासको, लाख टकाको मोल।–तब गोसांईजी बोले–
मोल तोल कछु है नहीं, लेहु राय कवि होल ॥ १ ॥

होलराइने उस लोटाको मूर्तिके समान स्थापन करि उसके ऊपर चबूतरा बांधि पूजन करते हे हमने अपनी आंखसे देखा है कि आज तक उसकी पूजा होतीहैइस होलपुरमें सिवायगिरिधर और नीलकण्ठ इत्यादिके कोइ नामी कवि नहीहुए इनदिनो लछिरामऔर सतनकस एदोकवि अच्छे हैं यह गाव आज तक इन्ही वंदीजनोंके नबरमें है।

(२३) खेमकवि २ ब्रजवासी सं० १६३० रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें इनके पद हैं। एक खेमकवि बुंदेलखंडी हैं।

(२४) जोधकवि सं० १२९० अकबरबादशाहके इहां थे।

१ संवत् १८९२ के अजबेस सूरदासके समयके नहीं हैं।

(२५) जोयसीकवि सं० १६५८ इनके कवित्त हजारामें हैं ।

(२६)चंद्रसखी व्रजवासी सं० १६३८ इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ।

(२७)कृष्णदास गोकुलस्थ वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके वहुत पद रागसागरोद्भवमें लिखेहैं औरइनकीकविताअत्यंत ललित और मधुरहे ए कविऔर सूरदासऔ परमानंददास और कुंभनदास चारों श्रीवल्लभाचार्य्यके शिष्यथे कृष्णदासजीकी कवितासुरदासकी कवितासे मिलतीथी एकदिन सूरजी वोले आप अपना कोई ऐसापद सुनावो जोहमारी काव्यमें नमिले तव कृष्णदासजीने चारि पद सुनाये उन सव पदोंमें सूरजीने चोरी अपने पदोंकीसावितकिया तव कृष्णदासजीने कहा कालिह हम अनूठे पद सुनावेंगे ऐसा कहि सव रात्रि इसी शोचमें नहीं सोये प्रातःकाल अपने सिरहाने यह पद लिखाहुवा देखि सूरजीके आगे पढा ॥ आवत वने कान्ह गोप वालक संग नैचुकी खुर रेनु छुरित अलकावली॥ सूरजी जानगये कि यह करतूत किसी और ही कौतुकीकी है वोले अपने प्रभुकी सहायता लीनी है इनकी गिनती अष्टछापमें हे अर्थात् व्रजमें आठ८ वडेकवि हुए हे जेसा तुलसीशब्दार्थप्रकाश ग्रंथमें गोपालसिंहने ब्योरा अष्टछापका लिखाहे इसभाँतिसे कि सूरदास१कृष्णदास२परमानंद३ कुंभनदास ४ए चारों वल्लभाचार्य्यकेशिष्य और चतुर्भुज५छीतस्वामी६नंददास७गोविंददास ८ ए चारों विट्ठलनाथ वल्लभाचार्य्यके पुत्रके शिष्य अष्टछाप करिके विख्यात हैं कृष्णदासजीका वनाया हुवा प्रेमरसरासग्रन्थ वहुत सुंदर हे ।

(२८)छेमकवि २ वंदीजन दलमऊके सं० १५८२ ए कवि हुमायूं वादशाहके इहाँ थे ।

(२९)अमृत कवि संवत् १६०२ अकवर वादशाहके यहांथे ।

(३०)खानखाना नवाव अब्दुलरहीम खानखाना वैरमखांके पुत्र रहीम और रहिमन छाप है। सं० १५८० ए महाविद्वान् अरवी फारसी तुरकी इत्यादि यामिनीभाषा और संस्कृत व्रजभाषाके वडे पंडित अकवर वादशाहकी आंखकी पुतली थे इन्हीके पिता वैरमकी जवांमर्दी और तदवीरसे हुमायूंको दुवारा दिल्लीका राज्य प्राप्तहुआ खानखानाजी पण्डित कवि मुल्ला शायर ज्योतिषी और सव गुणवान मनुष्योंके वडे कदरदान थे इनकी सभा रातदिन विद्वज्जनोंसे भरीपुरी रहती थी संस्कृतमें इनके वनाए श्लोक वहुत कठिन हैं और भाषामें नवोरसके कवित्त दोहा वहुतही सुन्दर हैं नीतिसम्बन्धी दोहा ऐसे अपूर्व हैं कि जिनके पढनेसे कभी पढनेवालेको तृप्ति नहीं होती फारसीमें इनका दिवान वहुत उमदा है वाकियात वावरी अर्थात् वावर वादशाहने जो अपना जीवनचरित्र तुरकी जवानमें आपही लिखा है उस्को इन्होंने फारसी जवानमें तर्जुमा किया है७२वर्षकी अवस्था में सन्१०३६हिजरीमें सुरलोकको सिधारे ।

श्लोक–आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्ण या भू[illegible]

त्प्रीतयेऽद्यावधि ॥प्रीतो यद्यसि मां निरीक्ष्य [illegible]

कदापि मा नय पुनर्मामीदृशीभूमिकाः ॥ १ ॥

शृङ्गार सोरठा–भाषा ।

पलटि चली मुसक्याय,दुति रहीम उजियाय अति।वाती सी उसकाय,मानौ दीनी दीपकी ॥१॥
गई आगि उरलाय, आगि लेन आई जु तिय।लागी नही बुझाय,भभकि भभकि वरि वरि उठै२

नीति–दोहा–खीरा शिर धरिकाटिये,मलिये निमक लगाय।
करुये मुखको चाहिये, रहिमन यही सजाय ॥ १ ॥

फारसी ।

शुमार शौक नदानिस्तअमकि ताचंदअस्त, जुज ई कद्र किदाम सख्त आरजूमन्द अस्त, नदाना दानम, बेनदानम; ईकदरदानम, कि पाय तावमरम हमें हस्तदरबंदस्त;

एक दिन खानखानाने यह आधा दोहा बनाया—

तारायन शशि रैन प्रति, सूर होहिं शशि गैन ।

औ दूसरा चरण नहीं बना रोज रात्रि को यह आधा दोहा पढाकरते थे दिल्लीमें एक खत्रानी ने यह हाल सुनि आधा चरण बनाय बहुत इनाम पाया ।

तदपि अँधेरे है सखी, पीव न देखे नैन ॥ १ ॥

(३१)जगनकवि सं० १६५२ शृङ्गाररसमें कवित्त चोखे हैं ।

(३२)ऊधोराम कवि सं० १६१० इनकी कविता कालिदास जू ने अपने हजारेमें लिखीहै।

(३३)कमाल कवि (कबीरजू के पुत्र) कायस्थ सं० १६२२ इनकी कविता कालिदासने हजारा में लिखी है ।

(३४)जमालउद्दीन पिहानीवाले सं० १६२५ कवि अच्छे थे ।

(३५)जगनंदन कवि वृन्दावनवासी सं०१६५८ इनके कवित्त हजारेमें हैं ।

(३७)जमाल सं० १६०२ए कविगूढकविकूटमें बहुत निपुण थे इनके दोहा बहुतसुंदर हैं।

(३८) जलालउद्दीन कवि सं० १६१५ हजारा में इनके कवित्त हैं ।

(३९) कल्याणदास व्रजवासी कृष्णदास पयअहारीके शिष्य सं० १६०७ इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं । पुनःकल्याण सिंह भट्ट एक और हैं ।

(४०)फैजी शेख अबुल फैज नागौरी शेख मुबारक के पुत्र सं० १५०८इनको छोटे बडे विद्वान् भली भांति जानते हैं कि ए फैजी अरबी फारसी संस्कृत भाषामें महानिपुण थे इनका ग्रंथ हमने भाषामें नहीं पाया केवल दोहरा मिलेहैं ए अकबरके कविथे ।

(४१) ब्रह्मकवि राजा बीरबल ब्राह्मण अंतर्वेदिवाले सं० १५०८इनका नाम प्रथम महेशदासथाए कान्यकुब्ज दुबे ब्राह्मण जिले हमीरपुरके किसी गांवके रहनेवाले थे काव्य पढि लिखि राजा भगवानदास आंबेर नरेशके इहाँ कवि लोगोंमें नौकर होगये राजाभगवानदास इनकी कविता-से बहुत प्रसन्न है अकबर बादशाहको नजरके तौर इनको देदिया ए कवि काव्यमें अपना नाम ब्रह्म करिके वर्णन करते थे अकबर कविताके सिवाय इनमें सब प्रकारकी बुद्धि पाय पूर्वसंस्कारके अनुसार प्रथम अपनामित्र बनाय कविराइकी पदवी दिया तेहि पीछे पांच हजारीका मनसबओ मुसाहेब हातिशवरराजे वीरबरकाखिताब दिया इनके जीवनचरित्र विचित्र तवारीखोंमें लिखे हैं सन् ९९० हिजरीमें बिजौर इलाके काबुलमें पठानोंके हाथसे समरभूमिमें मारेगए इनका समग्र ग्रन्थ तौकोई हमने देखा सुना नहीं पर इनकी कविताई बहुतही फुटकर हमारे पुस्तकालयमें हैं सूरदासजीने कहा है ।

दोहा ।

सुन्दर पद कविगंगके; उपमाको वरबीर।केशव अर्थ गंभीर को,सूर तीनि गुण तीर ॥

राजा बीरबलने अकबरके हुक्मसे अकबरपुर गाउँ जिले कानपुरमें बसाय आप भी अपना निवासस्थान उसीको नियत किया और नारनौल कसबामें इनकी पुरानी इमारतें बडी

आलीशान आज तक मौजूद हैं चौधराईका ओहदा जो बहुधाब्राह्मणोंकोमिला और गोवध बंद हुआ औरहिंदू मुसल्मानोंमें बहुत मेलजोल होगया ए सबबातें इन्हीं महाराजकी कृपासेहुईथीं

(४२) फहीम शेख अबदुलफजल फैजीके कनिष्ट सहोदर सं० १५८० इनके केवलदोहरा हमने पाये हैं ग्रंथ कोई नहीं मिला ए अकबरके वजीर थे।

(४३) अभयराम सं० १६०२ कालिदासजीने इनकी काव्य अपनेहजारेमें लिखाहे।

(४४) परसिद्धकवि प्राचीन सं० १५९० ए महान् कवीश्वर खानखानाके इहां थे।

(४५) विट्ठल विपुल २ गोकुलस्थ श्रीस्वामी हरिदास के शिष्य १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ए महाराज मधुवनमें बहुधा रहाकरतेथे।

(४६) रहीमकवि ए रहीमकवि खानखानाकेसिवाइ दूसरेरहीमहैंकविताइनकीसरसहे काव्यनिर्णयमें दासकविने इनका नाम एक कवित्तमें लिखाहेपरंतु दोनों रहीम अर्थात् अबदुलरहीम खानखाना और इन रहीमकी फुटकर काव्यका भिन्न भिन्न करना कठिन हे।

कवित्त– सूर केशौ मंडन विहारीकालिदासब्रह्म चिंतामणिमतिराम भूपणसोजानिये।नीलकंठ नीलाधर निपट नेवाज निधि नीलकंठमिश्र सुखदेव देव मानिये ॥ आलम रहीम खानखाना रसलीनवली सुंदर अनेक गन गनती बखानिये। ब्रजभाषाहेत ब्रजबसकीन अनुमान एते एते कविनकी बाणीहूंते जानिये ॥ १ ॥

(४७) अमरसिंह हाडा जोधपुरकेराजा सं० १६२१ ए महाराजअमरसिंह श्रीहाडावंशावतंस सूरसिंहके पौत्रहैं जिन सूरसिंहने छःलाखरुपया एक दिनमें छः कवि लोगोंको इनाम दियाथा और जिनके पिता गजसिंहने राजपुतानेके कविलोगोंको धनाधीश करदिया था राजा अमरसिंहकी तारीफमें जो बनवारी कविने यह कवित्त कहाहे कि (हाथकी वडाई की वडाई जमधरकी) सो इसकी बाबत टाड साहेबकी किताब टाडराजिस्तानसें हम कछु लिखते हैं। प्रगटहो कि राजा अमरसिंह हाडा महा गुणग्राहक और साहित्यशास्त्रके बडेकदरदानऔरखुदभीमहाकविथे। इन्हीं महाराजानें पृथ्वीराजरायसा चंदकवि कृतको सारे राजपुतानेमें तलाश कराय ६९ उनहत्तर खंड तक जमा किया जो अब सारे राजपुतानेमें बडे बडे पुस्तकालयोंमें मौजूद हैं. शाहजहां बादशाहके इहां अमरसिंहका मनसब तीन हजारीथा जो कि अमरसिंह बहुधा शैर शिकारमें रहा करतेथे इस लिये एकदफे शाहजाहांने नाराज है कछु जुर्माना किया और सलावतिखांबख्शी उल्मुमालिकको जुर्माना वसूल करनेको नियत किया अमरसिंह महाक्रोधाग्निसे प्रज्वलित दरबारमें आया। पहिले एक खंजरसे सलावतिखांका काम तमाम किया पीछे शाहजहां परभी तलवार आबदार झारी तलवार सितूनमें लगी बादशाह तो भागबचे अमरसिंहने पांच और बडे सरदार मुगलोंको मारि आप भी उसीजगह अर्जुनगौर अपने सालेकेहाथसेमारेगयेविस्तारकेभयसेसंक्षेपसेलिखाहै.

(४९) दील्हकवि सं० १६२५

(५०) नरोत्तमदास ब्राह्मण बाडी जिले सीतापुरवाले सं० १६०२ सुदामाचरित्र बनायाहे मानो प्रेमसमुद्र बहायाहे।

(५१) चेतनचंद्रकवि सं० १२१६ राजाकुशलसिंह सेंगर वंशावतंसकी आज्ञानुसार अश्वविनोद नाम शालिहोत्र बनाया।

(५२) वाग्ककवि सं० १६५५

(५५) विद्यादास ब्रजवासी सं० १६५० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं।

(५६) छीतस्वामी ब्रजवासी सं०१६०१ इनके पद बहुत रागकल्पद्रुममें हैं ए महाराज वल्लभाचार्य्यके पुत्र विट्ठलनाथजीके शिष्य थे इनकी गिनती अष्टछापमें है।

(५७) भगवतरसिक वृन्दावननिवासी माधवदासजीके पुत्र हरिदासजीके शिष्य सं० १६०१ इनकी कुंडलियां बहुत सुंदर है।

(५८) छत्रकवि सं०१६२५ विजयमुक्तावलीनाम ग्रन्थ अर्थात् भारतकी कथा बहुत संक्षेपसे सूचीपत्रके तौरसे नानाछंदोंमें वर्णन कियाहै॥

(५९) गदाधरमिश्र ब्रजवासी सं० १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं इनका बनायाहुवा यह पद सखी हौं श्यामके रंग रंगी देखि बिकायगई यह मूरति मूरति हाथ बिकी। देव स्वामी जीव गोसाईं जो उस समय बडे महात्मा थे गदाधर भट्टसे बहुत प्रसन्न हुए।

(६०) मानसिंह महाराजे कछवाह आमेरवाले सं०१५९२ ए महाराज कवि कोविदोंके बडे कदरदान थे हरिनाथ इत्यादि कवीश्वरोंको एक एक दोहामें लक्ष लक्ष रुपया इनाम दिया इन्होंने अपने जीवनचरित्रकी किताब विस्तारपूर्व्वक बनायाहै जिस्का नाम मानचरित्र है उसी ग्रंथमें लिखाहै कि जब राजा मानसिंह काबुलकी ओर अकबरके हुकुमसे चले और अटक नदीपर पहुंचके धर्म्मशास्त्रको विचारि उतरनेमें शोच विचार करने लगे और अकबरशाहको लिखा तब अकबरने यह दोहा लिखा।—

दोहा—सबै भूमि गोपालकी,तामें अटक कहा। जाके मनमें अटकहै, सोई अटक रहा॥ १॥

यह दोहा पढि मानसिंह अटकपार जाय स्वामिकार्य्यमें बडी वीरता करी॥

(६१) लालनदास ब्राह्मण दलमऊ वाले सं०१६५२ ए महाराज बडे महात्मा हो गुजरे हैं इनके कवित्त शांतरसमें है और हजारामें भी कालिदासने इनका नाम लिखाहै। एक और मोतीलाल कवि हुए हैं।

(६२) मोतीलाल कवि वांसी राज्यके निवासी सं० १५९७ गणेशपुराण भाषामें बनाया। एक और मोतीलाल कवि हुए हैं।

(६३) हरिदास स्वामी वृन्दावन निवासी सं०१६४० इन महाराजका जीवनचरित्र भक्तमालमें हैं इहां केवल इनको काव्यहीका वर्णन करना अवश्य है सो संस्कृतकाव्यमें जयदेव कविसे इनकी कविता कम नहीं है और भाषामें इनके पद सूर और तुलसीके पदोंके समान मधुर और ललित हैं इन्होंने बहुत ग्रन्थ बनाये हैं पर हमने इनकी कविता केवल यही देखाहै रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें है तानसेनको इन्हीं महाराजने काव्य और सगीतविद्या पढ़ाया था।

(६४) हरिनाथ कवि महापात्र वंदीजन असनीवाले सं०१६४४ ए महान् कवीश्वरनरहरिजूके पुत्र बडे भाग्यवान् पुरुष थे जहा जिस दरबारमें गये लाखो रुपया हाथी घोडे गाव रथ पालकी पाय लौटे श्रीबांधवनरेश राजाराम बघेलेकी प्रशंसामें यह दोहा पढ़ा।

दोहा—लंकालीं दिल्ली दई,साहि विभीषण काम। भये बघेलो राममों,राजा राजाराम॥ १॥

इस दोहा पर एक लक्ष रुपया इनाम पाया। और राजा मानसिंह सवाई आमेरवालेके पास ए दोहा पढि दो लक्ष रुपया दान पाया।

दोहा—बलि बोई कीरति लता,कर्ण करी द्वै पात। सींची मान महीपने जब देखी कुंभिलात॥

जाति जातिते गुण अधिक,सुन्यो न अजहूं कान । सेतु बांधि रघुवर तरे,हेलांदे नृप मान ॥२॥

. जब हरिनाथ जू ए रुपया और सब सामानले घरको चले तो मार्गमें एक नागापुत्र मिले और उसने हरिनाथ जू की प्रशंसामें यह दोहा पढा।

दोहा।दान पाइ दोई बढे,की हरिकीहरिनाथ।उनबढिऊंचे पगकिये, इन बढि ऊंचे हाथ॥१॥

हरिनाथने सब धन धान्य जो पाया था सब इसी नागापुत्रको दे आप रीते हाथ घरको चले आए और अपनी और अपने पिताकी कमाई तमाम उमर इसी भाँति से लुटाते रहे।

(६६)मानराय वंदीजन असनीवाले सं० १६८०अकवरके यहां थे।

(६७) रघुनाथराय कवि सं०१६२५ यह कवीश्वर राना अमरसिंह जोधपुरके इहांथे।

(६८) गणेशजी मिश्र सं० १६१५।

(६९) कबीर(कबीरदास)जोलाहा काशीवासी सं०१६१०इनके दो ग्रन्थ अर्थात् बीज़१ रैमनी २ मेरे पास हैं औ इनके चरित्र तो सबमनुष्योंपर विदित हैं कालिदास जू ने हजारामें इनका नाम भी लिखाहे इसलिये हमने भी लिखदिया।

(७०) लीलाधरकवि सं०१६१५एकवि महाराज गजसिंह जोधपुरके इहांथे और इनका प्रमाण सब कवि करते चले आए हैं।

. (७१)नाथ कवि,नाथ कविके नामसे मालूम नहीं होसका कि नाथ कितनेहुएहैं जैसे उदयनाथ,काशीनाथ,शिवनाथ, शंभुनाथ,हरिनाथ इत्यादि कविलोगोंने नाथ करके अपना भोग वर्णन कियाहै जहां तक हमको मालूम हुआ तहांतक हरएक नाथकी कविताअलगअलग वर्णन करीहै। नाथकवि ब्रजवासी गोपाल भट्ट ऊंचगांव वालेके पुत्र इनकी काव्य रागसागरोद्भवमें षट्ऋतु इत्यादि सुंदरहै।

(७२) दामोदरदास ब्रजवासी सं०१६२२ इनके पद रागसागरमें हैं एकऔर दामोदरकविहैं

(७३) दिलदार कवि सं०१६९० हजारामेंइनकी काव्य है।

(७४) दौलत कवि सं०१६५१।

(७५) नागर कवि सं०१६४८ हजारामें इनके कवित्त हैं।

(७६) दास (भिखारी दास कायस्थ) अरवल बुंदेलखण्डी सं० १७८० ए महान् कवि भाषासाहित्यके आचार्य्य गिनेजाते हैं छंदार्णव नाम पिंगल १ रससारांश २ काव्यनिर्णय ३ शृंगारनिर्णय ४ बागबहार ५ए पाँच ग्रन्थ इनके बनाये हुए अतिउत्तम काव्यके हैं।

दास २ वेनीमाधव दास पसका जिले गोंडा सं० १६५५ ए महात्मा गोस्वामी तुलसीदासजू के शिष्य उन्हींके साथ रहते रहेहैं और गोसांईजीके जीवनचरित्र की एकपुस्तक गोसाईंचरित्र नाम बनाया है संवत १६९९ में देहांत हुवा।

(७७) नंदनकवि सं०१६२५ ए महाराज सतकवि होगए हैं हजारामें इनका नामहै।

(७८) हितहरिवंश स्वामी गोसांई वृन्दावननिवासी व्यासस्वामीके पुत्र संवत् १५५९ इनके पिता व्यासजीने राधावल्लभीसंप्रदायको चलाया ए देववंदके रहेनेवाले गौडब्राह्मणथे हितहरिवंश जी महान्कविथे संस्कृतमें राधासुधानिधि नाम ग्रंथ और भाषामें हितचौरासी नाम ग्रंथ महासुंदर बनायाहै।

(७९) सेनकवि नापति बांधवगढके सं० १५६० हजारामें इनके कवित्त हैं ए कवि स्वामी राम नंदजीके शिष्यथे।

(८०) नारायणदास कवि सं० १६१५ हितोपदेश-राजनीतिको भाषामें छंदबद्ध रचाहै।

(८२) नंदलालकवि सं० १६०१ कवित्त सुंदर हजारामें इनके कवित्त हैं ।

(८४) रसखानकवि सैयद इबराहिम पिहानीवाले सं० १६३० ए कवि मुसल्मानथे श्रीवृंदावनमें जाय कृष्णचंद्रकी भक्तिभावमें ऐसे डूबे कि फिर मुसल्मानी त्यागकरि माला कंठी धारण किए हुए वृन्दावनकीरजमें मिलिगए इनकी कविता निपट ललित माधुर्य्यतासे भरीहुई है इनकी कथा भक्तमालमें पढने योग्य है ।

(८५) नाभादासकवि नामनारायणदास महाराष्ट्र दक्षिणी सं० १५८० इनको स्वामीअग्रदास जीने गल्ता नाम इलाके आमेर में लाय अपना शिष्य बनाय भक्तमाल नाम ग्रंथ लिखने की आज्ञा करी नाभाजीने ११८ छप्पय छन्दमें इस ग्रंथको रचा तेहि पीछे स्वामी प्रियादास वृन्दावनीनेउसका तिलक कवित्तों में किया तेहि पीछे लालजी कायथ कांधलाके निवासी बमन् ११५८ हिजरी में उसीका टीका बनाय भक्तउरबासी नाम रक्खा इनदिनों उसी भक्तमालको महारसिक भगवतभक्त तुलसीराम अगरवाले मीरापुर निवासीने उर्दू में उल्था करि भक्तमाल-प्रदीपन नाम धरा है नाभादास की विचित्रकथा भक्तमाल में लिखी है ।

(८६) नरवाहनजी कवि भौगाँव निवासी सं० १६०० ए कवि स्वामी हितहरिवंशजीके शिष्य थे इनके पद बहुत विचित्र हैं कथा इनकी भक्तमालमें है ।

(८७)नरसियाकवि अर्थात्नरसीजी जूनागढनिवासी सं० १५१० इनके पद रागसागरोद्भवमेंहैं ।

(८८)नारायणभट्ट गोसाईं गोकुलस्थ ऊंचगांव बरसानेके समीपके निवासी सं० १६२० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ये महाराज बडेभक्तथेवृन्दावन मथुरागोकुलइत्यादिमें जो तीर्थस्थान लुप्तहोगयेथे उन सबको प्रगट करि रासलीलाकी जड इन्होंने प्रथम डालीहै ।

(८९)तानसेनकवि ग्वालियर निवासी सं० १५८८ए कवि मकरंद पाँडे गौड ब्राह्मणके पुत्रथे प्रथमश्रीगोसाईं स्वामीहरिदासजू गोकुलस्थके शिष्य हो काव्य विद्याको यथावत् सीखातत्पश्चात्

साहेबने अपनी जीभ

निपुण होगए इनकी

हजारामें कोई नहीं हुवा निदान तानसेन दौलतखां शेरखां बदशाहके पुत्रपर आशिकहो उनके ऊपर बहुतसी कविता करी तेहि पीछेदौलतखांके मरनेपर श्रीबांधवनरेश रामसिंहबघेलाकेयहां गए और वहांसे अकबर बादशाहने अपने इहां बुलायलिया तानसेन और सूरदासजीसे बहुत मित्रताथी तानसेनजीने सूरदासकी तारीफमें यह दोहा बनाया ।

दो०–किधौं सूरको शर लग्यो,किधौं सूरकी पीर।किधौंसूरकोपदलग्यो,तनमनधुनत शरीर॥१॥

तबसूरदासजीने यह दोहा कहा ।

दोहा–विधना यह जिय जानिके,शेश न दीन्हे कान।धरामेरुसब डोलतो,तानसेनकीतान॥२॥

इनके ग्रंथ रागमाला इत्यादि महाउत्तम काव्यके ग्रन्थ हैं ।

(९०)निपटनिरंजन स्वामी संवत१६५०एमहाराजगोस्वामी तुलसीदासके समान सिद्धहोग एहैं और इनकेग्रन्थोंकी ठीक ठीक संख्या मालूम नहीं होती पुरानीसंग्रहीत पुस्तकोंमें सैकडों कवित्त हम इनके देखतेहैं हमारे पुस्तकालयमें शांत सरसी १ और निरंजन संग्रह २ दो ग्रन्थ इन महाराजके बनायेहुए हैं इनकी कवितामें बहुत बडा प्रताप यहहै कि मनुष्य कैसाही काम क्रोध इत्यादि पाशोंसे बद्ध होवे इनकी वाक्यके श्रवण कीर्तनसे निःसंदेह मुक्त होजावे ।

(९१)इंद्रजीत त्रिपाठी वनपुरा अंतर्वेदीवाले सं० १७२९ औरंगजेवके नौकर थे ।

(९२) पृथ्वीराज कवि सं०१६२४ हजारामें इनके कवित्तहैं ये कवि वीकानेरके राजा संस्कृत और भापाके वडे कवि थे * ।

(९३)लक्ष्मीनारायण मैथिल सं०१५८० ये कवि खानखानाके यहां थे।

(९४)हरिकवि ये महान् कविथे इन्होंने चमत्कारचंद्रिका नाम ग्रंथ भापाभूपणकी टीका १ औरकविप्रियाभरण नाम ग्रंथ कविप्रियाका तिलक२ विस्तारपूर्वक वनायाहै औरतीनोंकाण्ड अमरकोश भापा कियाहे ।

(९५)वलिभद्र सनाढ्य उडछेवाले केशवदास कविके भाई सं०१६४२ इनका नखशिख सारे कवि कोविदोंमें महाप्रमाणिक ग्रंथहै और भागवतपुराणपर टीका वहुत सुंदर कियाहै।

(९६) विट्ठलनाथ गोकुलस्थ गोसाई वल्लभाचार्यके पुत्र सं० १६२४ ये महाराज वल्लभाचार्य-जीके पुत्र परमभक्त वात्सल्यनेष्ठाके हुएहैं इनके सात पुत्रोंकी सात गादियाँ गोकुलजीमें चली आती हैं इनकी कविता पद इत्यादि वहुतसे रागसागरोद्भवमें हैं ।

(९७) विश्वनाथ कवि प्राचीन सं० १६५५.

(९८) पद्मनाभजीव्रजवासी कृष्णदास पयहारी गलताजीके शिष्य सं० १५६० इनकेपदवहुत रागसागरोद्भवमें हैं अर्थात् कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देया, कल्याण, हठीनारायण, पद्मनाभ ये सव कृष्णदासजीके शिष्य औरमहान्कवि हुएहैं औरअग्रदासके शिष्य नाभादासथे।

(९९)प्रवीनराइ पातुरी उडछा बुंदेलखण्डवासिनी सं० १६४० इस वेश्याकी तारीफमें केशव-दासजूने कविप्रियाग्रंथकी आदिमें वहुत कुछ लिखा है इसके कवि होनेमें कुछ संदेह नहीं इसका वनाया हुवा ग्रंथ तो हमको नहीं मिला केवल एक संग्रह मिली है जिसमें इसके सेकरों कवित्त वनाए हुए हैं हमने किसी तवारीखमें नहीं देखा कि वादशाह अकवरने प्रवीनको वोलाया केवल विदित है कि अकवरने प्रवीनकी प्रवीनताई सुनी दरवारमें हाजिर होनेका हुक्म दिया तो प्रवीनरायने प्रथम राजा इंद्रजीतकी सभामें जाय ये तीन कूट कवित्त पढे (आईहौं बूझन मंत्र) तेहि पीछे जव प्रवीन सभामें वादशाहके गई तो वादशाहसे प्रश्नोत्तर हुए ।

वादशाह–युवन चलत तिय देहते, चटकि चलत किहि हेतु ।
प्रवीन–मन्मथ वारि मसालको, सैंति सिहारो लेतु ॥ १ ॥
वादशाह– ऊंचे ह्वै सुर वश किये, सम ह्वै नर वश कीन ।
प्रवीन– अव पताल वश करनको, ढरकि पयानो कीन ॥ २ ॥
इस्के पीछे जव प्रवीनने यह दोहा पढ़ा ।

विनती राय प्रवीनकी, सुनिये शाह सुजान । जूंठी पतरी भखत हैं, वारी वायस श्वान ॥ १ ॥

तव वदशाहने विदाई दई और प्रवीन इंद्रजीतके पास आई ।

(१००) भगवानदास निरंजनी भर्तृहरिशतक कवित्तोंमें भापा किया है । पुनः भगवानदास मथुरा निवासी सं० १५९० रागसागरोद्भवमें पद हैं ।

(१०१) मनोहर कवि (राजा मनोहरदास)-कछवाहा सं० १५९२ ये महाराज अकवर शाहके मुसाहिव फारसी संस्कृत भापाके महान् कवि थे फारसीमें अपना नाम (तौसनी) करिके वर्णन करतेथे ।

---

* मार्कंडेय कविने सुराये यह कवित्त कहा था—

कवित्त—जवते सुनीहै वैन तवते न मोको चैन पाती पढि नेकु सो विलंवना लगावैगो । ऐेके यमदूतसो खमस राजपूत अ ज आठपही आगरामें ऊधम मचावैगो ॥ कहै पृथ्वीराज प्रिया नेकु उर धीर धारो चिरजीव राजा दे म्लेच्छन भगावैगो । मानको मर्दि मान मपट प्रतापसिंह वज्वर टौं तहपि अकव्वर पै आवैगो ॥

(८२) नंदलालकवि सं० १६०१ कवित्त सुंदर हजारामें, इनके कवित्त हैं ।

(८४) रसखानकवि सैयद इबराहिम पिहानीवाले सं० १६३० ए कवि मुसलमानथे श्रीवृंदा- ... नें ऐसे डूबे कि फिर मुसल्मानी त्यागकरि माला कंठी धारण ... इनकी कविता निपट ललित माधुर्य्यतासे भरीहुई है इनकी कथा भक्तमालमें पढने योग्य है ।

(८५) नाभादासकवि नामनारायणदास महाराष्ट्र दक्षिणी सं० १५८० इनको स्वामीअग्रदास जीने गलता नाम इलाके आमेर में लाय अपना शिष्य बनाय भक्तमाल नाम ग्रंथ लिखने की आज्ञा करी नाभाजीने ११८ छप्पय छन्दमें इस ग्रंथको रचा तेहि पीछे स्वामी प्रियादास वृन्दावनीनेउसकातिलक कवित्तों में किया तेहि पीछे लालजी कायथ कांधलाके निवासी बसन् ११५८ हिजरी में उसीका टीका बनाय भक्तउरवासी नाम रक्खा इनदिनों इसी भक्तमालको महारसिक भगवद्भक्त तुलसीराम अगरवाले मीरापुर निवासीने उर्दू में उल्था करि भक्तमाल प्रदीपन नाम धरा है नाभादास की विचित्रकथा भक्तमाल में लिखी है ।

(८६) नरवाहनजी कवि भौगाँव निवासी सं० १६०० ए कवि स्वामी हितहरिवंशजीके शिष्य थे इनके पद बहुत विचित्र हैं कथा इनकी भक्तमालमें है ।

(८७) नरसियाकवि अर्थात्नरसीजी जूनागढनिवासी सं० १५९० इनके पद रागसागरोद्भवमेंहैं ।

(८८) नारायणभट्ट गोसाईं गोकुलस्थ ऊंचगांव बरसानेके समीपके निवासी सं० १६२० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ये महाराज बडेभक्तथेवृन्दावन मथुरागोकुलइत्यादिमें जो तीर्थस्थान लुप्तहोगयेथे उन सबको प्रगट करि रासलीलाकी जड इन्होंने प्रथम डालीहै ।

(८९) तानसेनकवि ग्वालियर निवासी सं० १५८८ ए कवि मकरंद पांडे गौड ब्राह्मणके पुत्रथे ... हजारामें कोई नहीं हुवा निदान तानसेन दौलतिखां शेरखां बदशाहके पुत्रपर आशिकहै उनके ऊपर बहुतसी कविता करी तेहि पीछेदौलतिखांके मरनेपर श्रीबांधवनरेश राजा रामसिंहबघेलाकेयहां गए और वहांसे अकबर बादशाहने अपने इहां बुलायलिया तानसेन और सूरदासजीसे बहुत मित्रताथी तानसेनजीने सूरदासकी तारीफमें यह दोहा बनाया ।

दो०–किधौं सूरको शर लग्यो, किधौं सूरकी पीर।किधौंसूरकोपदलग्यो,तनमनधुनत शरीर॥१॥

तबसूरदासजीने यह दोहा कहा ।

दोहा–विधना यह जिय जानिके,शेश न दीन्हे कान।धरामेरुसब डोलतो,तानसेनकीतान॥२॥

इनके ग्रंथ रागमाला इत्यादि महाउत्तम काव्यके ग्रन्थ हैं ।

(९०) निपटनिरंजन स्वामी संवत १६५० एमहाराजगोस्वामी तुलसीदासके समान सिद्धहोग एहैं और इनकेग्रन्थोंकी ठीक ठीक संख्या मालूम नहीं होती पुरानीसंग्रहीत पुस्तकोंमें सैकडों कवित्त हम इनके देखतेहैं हमारे पुस्तकालयमें शांत सरसी १ और निरंजन संग्रह २ दो ग्रन्थ इन महाराजके बनायेहुए हैं इनकी कवितामें बहुत बडा प्रताप यहहै कि मनुष्य कैसाही काम क्रोध इत्यादि पाशोंसे बद्ध होवे इनकी वाक्यके श्रवण कीर्तनसे निःसंदेह मुक्त होजावे ।

(९१) इंद्रजीत त्रिपाठी वनपुरा अंतर्वेदीवाले सं० १७३९ औरंगजेवके नोकर थे।

(९२) पृथ्वीराज कवि सं० १६२४ हजारामें इनके कवित्तहैं ये कवि वीकानेरके राजा संस्कृत और भापाके वडे कवि थे *।

(९३) लक्ष्मीनारायण मैथिल सं० १५८० ये कवि खानखानाके यहां थे।

(९४) हरिकवि ये महान् कविथे इन्होंने चमत्कारचंद्रिका नाम ग्रंथ भापाभूपणकी टीका १ और कविप्रियाभरण नाम ग्रंथ कविप्रियाका तिलक२ विस्तारपूर्वक बनायाहै औरतीनोंकाण्ड अमरकोश भापा कियाहे।

(९५) वलिभद्र सनाढ्य उडछेवाले केशवदास कविके भाई सं० १६४२ इनका नखशिख सारे कवि कोविदोंमें महाप्रमाणिक ग्रंथहै और भागवतपुराणपर टीका बहुत सुंदर कियाहै।

(९६) विट्ठलनाथ गोकुलस्थ गोसाईं वल्लभाचार्यके पुत्र सं० १६२४ ये महाराज वल्लभाचार्यजीके पुत्र परमभक्त वात्सल्यनेष्ठाके हुएहैं इनके सात पुत्रोंकी सात गादियाँ गोकुलजीमें चली आती हैं इनकी कविता पद इत्यादि बहुतसे रागसागरोद्भवमें हैं।

(९७) विश्वनाथ कवि प्राचीन सं० १६५५.

(९८) पद्मनाभजीव्रजवासी कृष्णदास पयहारी गलताजीके शिष्य सं० १५६० इनकेपदबहुत रागसागरोद्भवमें हैं अर्थात् कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्याण, हठीनारायण, पद्मनाभ ये सब कृष्णदासजीके शिष्य औरमहान्कवि हुएहैं औरअग्रदासके शिष्य नाभादासथे।

(९९) प्रवीनराइ पातुरी उडछा बुंदेलखण्डवासिनी सं० १६४० इस वेश्याकी तारीफमें केशवदासजूने कविप्रियाग्रंथकी आदिमें बहुत कुछ लिखा हे इसके कवि होनेमें कुछ संदेह नहीं इसका बनाया हुवा ग्रंथ तो हमको नहीं मिला केवल एक संग्रह मिली है जिसमें इसके सेकरों कवित्त बनाए हुए हैं हमने किसी तवारीखमें नहीं देखा कि वादशाह अकबरने प्रवीनको वोलाया केवल विदित है कि अकबरने प्रवीनकी प्रवीनताई सुनी दरबारमें हाजिर होनेका हुकुम दिया तो प्रवीनरायने प्रथम राजा इंद्रजीतकी सभामें जाय ये तीन कूट कवित्त पढे (आईहौं बूझन मंत्र) तेहि पीछे जब प्रवीन सभामें वादशाहके गई तो वादशाहसे प्रश्नोत्तर हुए।

वादशाह–युवन चलत तिय देहतें; चटकि चलत किहि हेतु।
प्रवीन–मन्मथ वारि मसालको, सैंति सिहारो लेतु ॥ १ ॥
वादशाह– ऊंचे ह्वै सुर वश किये, सम ह्वै नर वश कीन।
प्रवीन– अब पताल वश करनको, ढरकि पयानो कीन ॥ २ ॥
इस्के पीछे जब प्रवीनने यह दोहा पढ़ा।

विनती राय प्रवीनकी, सुनिये शाह सुजान। जूंठी पतरी भखत हैं, बारी वायस श्वान ॥ १ ॥

तब बदशाहने विदाई दई और प्रवीन इंद्रजीतके पास आई।

(१००) भगवानदास निरंजनी भर्तृहरिशतक कवित्तोंमें भापा किया है। पुनः भगवानदास मथुरा निवासी सं० १५९० रागसागरोद्भवमें पद हैं।

(१०१) मनोहर कवि (राजा मनोहरदास) कछवाहा सं० १५९२ ये महाराज अकबर शाहके मुसाहिब फारसी संस्कृत भापाके महान् कवि थे फारसीमें अपना नाम (तौसनी) करिके वर्णन करतेथे।

* मार्कंडेय कविने इससे यह कवित्त कहा था—
कवित्त—जबते सुनीहै बेन तबते न मोको चैन पाती पढि नेकु सो विलंबना लगावैगो। लेकै पमदूलखो लमरत राजपूत अथा आठपदी आगरामें ऊधम मचावेगो ॥ कहै पृथ्वीराज मिया नेक वर धीर धारो चिरजीव राना दे म्लेच्छन भगावैगो। मानधो मरदि मान मबळ मतापसिंह बब्बर लौं तहपि अकब्बर पै आवैगो ॥

(१०२) परमानंददास व्रजवासी वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके पद रागसागरोद्भव-में बहुत हैं और इनकी गिनती अष्टछापमें है ।

(१०३) नवीनकवि बहुतही सुंदर कवित्त शृंगाररसके हैं ।

(१०४) माणिकचंद्र कवि सं० १६०८ रागसागरोद्भवमें इनके पद हैं ।

(१०५) निहाल प्राचीन सं० १६३५ ।

(१०६) मुकुन्दसिंह हाडा महाराजे कोटा सं० १६३५ये महाराजा शाहजहां बादशाहके बडे सहायक और कविताईमें महानिपुण कवि कोविदोंके चाहक थे ।

(१०७) मुबारक सैयदमुबारकअली बिल्ग्रामी सं० १६४० इनकी काव्य तौ विदित है इनका ग्रंथ कोई हमने नहीं पाया कवित्त सैकरों हमारे पुस्तकालयमें हैं ।

(१०८) बीरवर (बीरवर कायस्थ दिल्ली निवासी) सं० १७७७ये महान्कवि थे इनका बनाया हुवा कृष्णचन्द्रिका नाम ग्रंथ साहित्यमें बहुत सुन्दर और हमारे पुस्तकालयमें मौजूद है ।

(११०) दिनेशकवि इनका नखशिख बहुतही विचित्र है ।

(१११) दानकवि शृंगारमें सरस कविता है ।

(११२) तोपीकवि ।

(११३) तेहीकवि ।

(११४) धीरजनरिंद महाराजे इंद्रजीतसिंह बुंदेला उडछावाले सं० १६३५ इन्हीं महाराजके इहाँ कवि केशवदास थे और प्रवीनराइ पातुरीभी इन्हींकी सभामें विराजमानथी इनके समयमें उडछा बडी राजधानी थी । *

(११७)श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी सं० १६०१ ये महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर जिले प्रयागके रहनेवाले प्रायः संवत १५८३ के करीब उत्पन्न हुए थे औरसं० १६८० में स्वर्गवास हुवा इनके जीवनचरित्रकी पुस्तक वेनीमधवादास कवि पुसकाग्रामवासीने जो इनके साथ साथ रहे हैं बहुत विस्तारपूर्वक लिखी है उसके देखनेसे इन महाराजके सब चरित्र प्रगट होतेहैं इस पुस्तकमें ऐसे विस्तार कथाको हम संक्षेप करिके वर्णन करेहैं निदान गोसाईजी बडे महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध होगएहैं [illegible] नही हुई केवल जो ग्रंथ हमने देखे अथवा [illegible] प्रथम ४९ कांड रामायण बनाया है इस तफसीलसे—

[illegible] ली ७ कांड । ४ छंदावली ७ कांड । [illegible] : और सिवाय इन ४९ कांडके १ सतसई । २ रामसलाका । ३ संकटमोचन । ४ हनुमत्बाहुक । ५ कृष्णगीतावली । ६ जानकीमंगल । ७ पार्वतीमंगल । ८ कंडलाछंद । ९ रोलाछंद । १० झूलना छंद । इत्यादि औरभी ग्रंथ बनाए हैं अन्तमें विनयपत्रिका महाविचित्रमुक्तिरूप प्राज्ञानां; सागर ग्रंथ बनायाहै चौपाई गोसाईं महाराजकी ऐसी किसी कविने बनाय नहीं पाया और न विनयपत्रिका के समान अद्भुतग्रंथ आज तक किसी कवि महात्माने रचा इस कालमें जो रामायण न होता तौ हम ऐसे मूर्खोंका बेडा पार

* (११५) श्रीपति कविका वर्णन पहले हुआ है परन्तु यह इस दोहेका नहीं है ।

रत्नाकर कविने हमसे कहा है कि श्रीपति कवि अकबर बादशाहके नौकर थे परन्तु खुशामदी न थे कई एक कवियोंने मिलकर अकबर बादशाहके सामने (करो मिल आस अकब्बरकी) समस्या दिये परः श्रु कविने स्पष्ट बादशाहको फटकारा यह कवि भक्त था यह तो कविताधे स्पष्ट ही मालूम हुआ ।

अबके सुलतां फुनियान समान है बांधत पाग अटब्बरकी । तजि एकको दूजो भजै जो फोऊ सब जीभ कटै वह लब्बरकी ॥ शरणागत श्रीपति श्रीपतिकी नहि आस जहां कोऊ अब्बरकी । जिनको नहि आस [illegible] कछू हरिकी सो करो मिलि आस अकब्बरकी ॥

नहीं लगता गोसाईजी श्रीअयोध्याजी, मथुरा, वृंदावन, कुरुक्षेत्र, पराग, वाराणशी, पुरुषोत्तमपुरी इत्यादि क्षेत्रोंमें बहुत दिनतक घूमते रहेहैं सबसे अधिक श्रीअयोध्या, काशी, पराग उत्तराखण्ड, बंशीबट इत्यादि जिले सीतापुरमें रहेहैं। इनके हाथकी लिखीहुई रामायण जो राजापुरमेंथी वह खण्डित होगई है पर मलिहाबादमें आजतक सम्पूर्ण ७ काण्ड मौजूद हैं १ पत्र नहीं है विस्तार भयसे अधिक हालात हम नहीं लिख सकते दो दोहा पर इन महाराजका वृत्तांत समाप्त करतेहैं।

दोहा–कविताकरता तीनि हैं, तुलसी केशव सूर॥ कविता खेती इन लुनी, सीला बिनत मजूर॥१॥
तुलसी रवि सूरज शशी, उडगण केशवदास॥ अबके कवि खद्योत सम; जहँ तहँ करत प्रकाश॥२॥

१९२० तक होता है। अब यदि संवत् १७०० से अधिकके समयमें कवियोंका सूरदासजीके सामयिक रघुनाथसिंहके दोहे और "शिवसिंहसरोज" के अनुसार ठहराया है यह यथार्थमें ठीक नहीं है। अब सोचना पड़ा कि बाबूरघुनाथसिंहके दोहे ठीक हैं कि नहीं। यह तो मुक्तकण्ठसे कहनापड़ेगा कि उस दोहेसे अनेक कवियोंका सूरदासका सामयिक होना ठीक है परन्तु यदि उसमें भ्रम है उसमें भी यह नहीं कहा जा सकता है कि इस नामके और कवि न हुये हों परन्तु "शिवसिंहसरोज" से जो मैंने कवियोंके समय प्रकाश किया है उसमें अवश्य भ्रम है।

हरिश्चन्द्रजीने लिखा है सूरदासके समयमें तुलसीदासजी न हुए उसका कारण सोचनेसे यह मालूम होता है कि नन्ददासजीके भाई तुलसीदासजीपर ध्यान गया है क्योंकि वैष्णवोंकी चौरासी वार्तामें लिखा है कि तुलसीदास और नन्ददास भाई हैं और नन्ददासका समय संवत् १५८५ का है और तुलसीदास नन्ददासका भाई गोसाईंचरित्र उर्दूमें भी लिखा है। अथवा मीराबाईके समयपर ध्यान गया होगा क्योंकि "भक्तकल्पद्रुम" और 'रामरसिकावली' तथा "हरिभक्तिप्रकाशिका" में मीराबाई और तुलसीदासकी बातचीत लिखी है परन्तु मीराबाईका समय तुलसीदासके समयमें मेरी सम्मतिसे नहीं है।

क्योंकि "शिवसिंहसरोज" में मीराबाईके विषयमें यह लिखा है।

मीराबाई सं० १४७५ में हुई हमने इनका जीवनचरित्र भक्तमाल तुलसीदास कायस्थकृतमें देखा और तवारीख चित्तौरसे मिलाया तो बड़ा फरक पायागया अब हम इनका हाल चित्तौरके प्राचीन प्रबन्धसे लिखते हैं ये मीराबाई मारवार देशमें राना राठौरवंशावतंसमें रेतिया देशाधिपतिके यहां उत्पन्न हुई थी यह रियासत सारे मारवाड़के फिरकोंमें उत्तरोत्तर है और मीराबाईका विवाह सं० १४७० के करीब राना मोकल देवके पुत्र राना कुम्भकरन चित्तौर नरेशके साथ हुवा था संवत् १५२५ ऊदारानाकेपुत्रने रानाको मारडाला मीराबाई महास्वरूपवती और कवितामें अति निपुण थी रागगोविंद ग्रन्थ भाषामें बहुत ललित बनाया है चित्तौरगढ़में दोमंदिर करीबमहल रानारायमलकेथे। एक रानाकुंभका और दूसरामीराबाईका, सोमीराबाईअपनेइष्टदेव श्यामनाथको उसीमंदिरमें स्थापन करि नृत्य गीत भाव भक्तिसे रिझाया करती थी। एक दिन श्यामनाथ मीराके प्रेमवश है चौकीसे उतरि अंकमें लै बोले हे मीरा, केवल इतनाही शब्द श्यामनाथके मुंहसे सुनि मीराबाई प्राणत्याग करि रसिकविहारी गिरधारीके नित्यविहारमें जायमिली इन दोनों मंदिरोंके बनानेमें नवलेलाख रुपया खर्च हुवा था।

मीराबाईके विषयमें 'तवारीख तुहफए राजस्थान'से मौलवी मुहम्मद उबैदुल्लाह फरहतीने लिखा है।

"सांगाको इस शिकस्तका निहायत रंज हुवा, वह इसीसालके अन्दर मेवाड़के पहाड़ी इलाकेमें मौतसे या किसीके जहर देनेसे इन्तिकाल करगये, और उनके साथ मेवाड़की तरक्की खतम होगई अगर वह जिन्दह रहते तो दोबारह लड़ाईमे किस्मत आजमाई करते यह महाराणा जोरावर, खूबसूरत और दर्मियानी कदके आदमी थे। इन महाराणाके दो बेटे उनके सामने गुजर चुके थे जिनमेंसे बड़े भोजराजके साथ मेड़तिया राठौर जयमलकी रिस्तहदारी बहिन मीराबाई, जिसके फकीरानह भजन अवाममें मशहूर हैं ब्याही गई थी। कर्नल टाडने गलत तौरपर उसकी शादी महाराणा कुम्भाके साथ लिखदी है, जो सांगाजीके दादा थे। एशियाई मुल्कोंमें जियादह ब्याह करनेसे आदतें खराब और जिस्म जईफ होनेके सिवाय हरएक औरत अपनी औलादकी बिहतरीके वास्ते हर तरहकी तदबीर करना चाहती है जिससे बहुत खराबियां पैदा होती हैं। इसलिये कर्नल टाडने खयाल किया है कि महाराणा सांगाको उनके खानदानमेंसे किसीने जहर देदिया।"

अब पं० बलदेवमिश्र और पं० गनपतलाल चौबेकी बातपर विशेष ध्यान दिया जाय तो इन्हें शुद्ध भ्रम होगया है जरा भक्तमाल भी पढे होते तो सूरदास कितने हुए हैं मालूम होजाता, फिर जिस सूरदासका सूरसागर बनाया है स्वयं उनमें और सूरदासका हाल न लिखते! इति।

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीसूरसागरकी विषयानुक्रमणिका ।

अथ प्रथमस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ.
मङ्गला वर्णन	१
भक्त महिमा वर्णन	,,
भक्तवत्सल भाव वर्णन	,,
भक्तमहिमा वर्णन	४
माया वर्णन	५
अविद्या वर्णन	६
तृष्णा वर्णन	,,
विनती प्रसङ्ग वर्णन	७
भागवत निमित्त वर्णन	१७
व्यासजी शुक उत्पत्ति वर्णन	,,
श्रीभागवत वक्ता श्रोता प्रस्ताव वर्णन	१८
सूत संवाद वर्णन	,,
व्यास अवतार वर्णन	,,
श्रीभागवत आविर्भाव कारण वर्णन	,,
नाम माहात्म्य वर्णन	१९
भगवान् विदुर गृहभोजन करन वर्णन	,,
उद्धव प्रति वचन वर्णन	,,
भगवान् दुर्योधन संवाद वर्णन	२०
द्रौपदी सहाय वर्णन	,,
सूत वचन शौनक प्रति वर्णन	२१
भीष्मोपदेश युधिष्ठिर प्रति वर्णन	,,
भारत वर्णन	२२
अर्जुन दुर्योधनको गवन कृष्ण गृह वर्णन	,,
दुर्योधन वचन भीष्म प्रति वर्णन	,,
भीष्म प्रतिज्ञा वर्णन	,,
भगवत वचन अर्जुन प्रति वर्णन	२३
अर्जुन भीष्म संवाद वर्णन	,,
भीष्म देहत्याग वर्णन	,,
भगवान्को द्वारका गमन वर्णन	२४
कुन्तीकी विनय वर्णन	,,
विदुरको उपदेश राजा धृतराष्ट्र गांधारी प्रति वचन राजा युधिष्ठिरको वैराग्य वर्णन	,,
हरिवियोग पांडवनको स्वर्ग गमन वर्णन	२५
श्रीभगवान् परीक्षित गर्भरक्षा जन्म वर्णन	,,
परीक्षित राजाको ऋषिपुत्र दत्त ऋषिशाप वर्णन	२६
वैराग्य उपदेश परीक्षित मन प्रति वर्णन	२७
[illegible] संवाद वर्णन	२८
मन बुद्धिको संवाद वर्णन	२९
मन प्रबोध वर्णन	,,

अथ द्वितीयस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ.
श्रीशुकदेव वचन वर्णन	३१
अनन्यभक्ति महिमा वर्णन	,,
नाम महिमा वर्णन	३६
हरिविमुख निन्दा वर्णन	,,
सत्संग महिमा वर्णन	३७
भक्तिसाधन वर्णन	३७
आत्मज्ञान वर्णन	३८
विराट् रूप वर्णन	,,
आरती वर्णन	,,
नृप विचार वर्णन	,,
नृपको वचन शुकदेव प्रति वर्णन	,,
शुकदेव वचन वर्णन	३९
नारदब्रह्मा संवाद वर्णन	,,
चतुर्विंशति अवतार वर्णन	,,
ब्रह्मा उत्पत्ति चतुःश्लोक प्रति वर्णन	,,
चतुःश्लोकी श्रीमुखवाक्य वर्णन	,,

अथ तृतीयस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ.
शुकवचन वर्णन	४०
उद्धव विदुर संवाद कृष्णज्ञान संदेश मैत्रेय निकट पठावन वर्णन	,,
विदुर जन्म वर्णन	,,
सनकादिक अवतार वर्णन	,,
रुद्र उत्पत्ति वर्णन	,,
सप्तऋषि चार मनु उत्पत्ति वर्णन	,,
सुर असुर उत्पत्ति वर्णन	४१
वाराह रूप वर्णन	,,
कपिलदेव मुनि अवतार वर्णन	,,
कर्दम प्रसङ्ग वर्णन	,,
देवहूति मातको ज्ञान कपिल मुनिको वर्णन	४२
भक्ति ज्ञान वर्णन	,,
हरिमाया प्रश्न वर्णन	,,
देवहूति प्रश्न सुगम उपाय वर्णन	४३
भक्त महिमा वर्णन	४४
देवहूति हरिपद प्राप्ति वर्णन	,,

अथ चतुर्थस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ.
शुकदेव वचन वर्णन	४५
यज्ञपुरुष अवतार वर्णन	,,
संक्षिप्त यज्ञपुरुष अवतार कथा वर्णन	४६
पार्वती विवाह वर्णन	,,
ध्रुवकथा वर्णन	,,
ध्रुववर देन अवतार वर्णन	,,
पृथु अवतार वर्णन	४८
पुरंजन कथा वर्णन	४९

अथ पंचमस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ.
शुकदेव वचन वर्णन	५२
ऋषभदेव अवतार वर्णन	,,
जड़भरत कथा वर्णन	,,
जड़भरत रहूगण संवाद वर्णन	५३

अथ षष्ठस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ.
शुकदेव वचन वर्णन	५५

विषय.	पृष्ठ
अजामिल उद्धार वर्णन	५५
श्रीगुरुमहिमा, बृहस्पति अनादरसे विश्वरूप वृत्रासुर ब्राह्मणहत्या प्रति पुनि गुरुकृपासे इन्द्रासनप्राप्ति वर्णन	५६
गुरुमहिमा वर्णन	५७

अथ सप्तमस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ
श्रीनृसिंहरूप अवतार वर्णन	५८
श्रीभगवान् शिवसहाय वर्णन ...	६१
नारद उत्पत्ति कथा वर्णन	"

अथ अष्टमस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ
शुकदेव वचन वर्णन	६२
गजमोचन अवतार वर्णन ...	"
कूर्म अवतार समुद्रमथन अमृतादि निमित्त वर्णन	६३
मोहिनी रूप वर्णन	६४
वामन अवतार वर्णन	"
मत्स्य अवतार वर्णन	६५

अथ नवमस्कंध ।

विषय.	पृष्ठ
राजापुरूरवाको वैराग्य वर्णन ...	६६
च्यवनऋषि कथा वर्णन	६७
हलधर विवाह वर्णन	६८
राजाअम्बरीष कथा वर्णन	"
सौभरिऋषि कथा वर्णन	६९
श्रीगङ्गा भुवलोक आगमन वर्णन ...	७०
श्रीगङ्गा विष्णुपदोद्भवकी स्तुति वर्णन ...	"
परशुरामअवतारवर्णन	७१
श्रीराम अवतार कारण वर्णन ...	"
बालकाण्ड श्रीरामजन्म वर्णन ...	"
बाललीलावर्णन	७२
विश्वामित्र यज्ञ रक्षा ताड़कावध तारणपवर वर्णन	"
सीतापति दर्शन वर्णन ...	"
सीता मनोरथ पूरण	"
दशरथका जनकपुर आगमन रामजूके विवाह हेतु वर्णन	"
कङ्कना खोलन वर्णन	"
धनुभङ्ग पाणिग्रहण वर्णन	७३
जनक दशरथ रामजी सीतासमेत विदाकरण वर्णन	"
मार्गविषे परशुरामका रामजीसों मिलाप परस्पर विवाद वर्णन	"
अवधपुरी प्रवेश वर्णन	"
दशरथविचार रामजीको राज्य दे आप वनगवन कैकेयी विनती भरत राज्य वर्णन ...	"
दशरथ कौशल्या विलाप वर्णन ...	"
दशरथ पश्चात्ताप कैकेयीप्रति वचन वर्णन ...	"
कैकेयी वचन रामप्रति वर्णन ..	७४
श्रीरामचन्द्रप्रति दशरथ विलाप वर्णन ...	"
श्रीराम वचन जानकी प्रति वर्णन ...	"
जानकी वचन श्रीरामजू प्रति वर्णन ...	"
श्रीराम वचन लक्ष्मण प्रति बिदा करन हेतु वर्णन	"
लक्ष्मण उद्वेग वर्णन	"
अहल्या तारण वर्णन	"
लक्ष्मण केवटसंवाद वर्णन	"
केवट विनय वर्णन	"
केवट वचन श्रीरामजी प्रति वर्णन ...	७५
पुरवासी वचन जानकी प्रति वर्णन ...	"
दशरथ प्राणतजन श्रीराम हेतु वर्णन ...	७५
राजाको तेल घटस्थापन मन्त्री गमन भरत निकट वर्णन	"
कौशल्या विलाप भरत आवन मातापर अति क्रोध करन वर्णन	"
भरत शत्रुघ्न वचन माता प्रति वर्णन ...	"
भरत गमन रामजीनिकट वनविषे परस्पर सम्वाद वर्णन	७६
श्रीराम सीता विलाप दशरथ परलोकश्रवणसुनि वर्णन	"
श्रीराम भरत संवाद वर्णन	"
श्रीराम उपदेश भरत प्रति वर्णन ...	"
भरत बिदाकरण वर्णन	"
दण्डकवनमें शूर्पणखाकी नाक छेदन वर्णन ...	"
खरदूषण वध मारीच रावणको वनमें आवन वर्णन	"
मारीच वध सीताहरण मार्गमें गृध्रसों युद्ध वर्णन	"
श्रीराम स्वरूप मृगपीछे धावनसमयका वर्णन	७७
सीताकोअपाहरण रावण गृध्रसे युद्ध वर्णन ...	"
अशोकवनमें सीताका स्थापन वर्णन ...	"
श्रीराम विलाप सीता वियोग वर्णन ...	"
श्रीरामजीका गृध्रसों मिलाप सीताका समाचार श्रवण वर्णन	"
गृध्रहरिपद प्राप्त वर्णन	७८
शबरीका हरिपद प्राप्ति वर्णन... ...	"
सुग्रीव आज्ञा हनुमान् रामका मिलाप वर्णन	"
हनुमान् रामसंवाद वा सुग्रीवको श्रीरामजीका दर्शन वर्णन	"
बालिवध सीता भूषणदर्शन सप्ततालभेद वर्णन	"
सुग्रीव राज अङ्गदसमाधान वर्णन ...	"
पवनसुत अङ्गदादि मुद्रिकासहित सीताशुधिहित सम्पातिमिलाप वर्णन	"
संपातीका सीताअवस्था कपिन प्रति वर्णन समुद्रतीर परस्पर मंत्र हनूबिदा सुरसामुख प्रवेश वर्णन ...	"
हनुमत लङ्कादर्शन सीतामिलापहित अशोकवन प्रवेश वर्णन	७९
आकाशवाणी हनूप्रति सीतानिश्चय वर्णन ...	"
निशिचरी रावण बड़ाई सीताकी निन्दा वर्णन ...	"
निशिचरी सीतासत प्रगट करना रावण उद्धारज्ञान वर्णन	८०
रावण लोभदिखावन जानकी निरादरकरन वर्णन ...	"
त्रिजटाने सीताका समाधान किया सो वर्णन ...	"
त्रिजटा प्रति सीतामनोरथ वर्णन ...	"
सीताप्रति त्रिजटास्वप्नवर्णके हनूसीयदरश परस्पर संवाद मुद्रिका अर्पण वर्णन	८१
हनुमत सीता समाधान वर्णन	८२
हनुमत निरखि सीतासन्देह मुद्रिका अरपेते प्रतीति वर्णन	"
हनूका श्रीराम लक्ष्मणका समाचार कहना अपना पराक्रम वर्णन	"
सीता आगमन प्रसन्न हनू धीरज देन वर्णन ...	"
हनू मिलापते सीता आनन्द वर्णन ...	८३
सीता रामपराक्रम दशाननसमेत वेगि मिलापहित वर्णन	"
सीता निज दुःख हनुप्रति वर्णन	"
सीता विजय निजदुःख निवारणनिमित्त श्रीरामप्रति वर्णन	"
सीता निज अपराध प्रगटन वर्णन ...	"
हनुमत वचन वर्णन	"
अशोकवन भङ्ग इन्द्रजीत हनुमतप्रति ब्रह्मास्त्रबंधन वर्णन	"
हनुमान रावण संवाद ब्रह्मास्त्र मुक्ति वर्णन ...	८४
हनुमान लङ्कादहन वर्णन ...	"
आकाशवाणी सीता कुशल वर्णन ...	"
लङ्का दग्ध पुनः सियदर्शन वर्णन ...	"
श्रीरामचन्द्र प्रति सीता सन्देश हनुमन्तबिदा वर्णन	"

विषय. पृष्ठ.

अङ्गदादि निकट हनुमानका पुनः आगमन सीताशुधिदेन वर्णन ... ८५
सुग्रीवादि कृत हनूमान प्रशंसा वर्णन ... "
श्रीरामचन्द्र हनुमान गोष्ठी वर्णन ... "
श्रीराम वचन वर्णन ... "
सेनासमेत सिन्धुतट श्रीरामपयान वर्णन ... "
हनुमान निज शरीरवृद्ध कथन वर्णन ... "
हनूमानका निज पराक्रम युद्धनिमित्त कथन वर्णन ८६
सिन्धु सेतुनिमित्त हनुमान विनय वर्णन ... "
सीतादेननिमित्त विभीषण वचन रावण प्रति वर्णन "
रामचन्द्रसों विभीषणमिलाप वर्णन ... "
समाश्रय श्रीरामचन्द्र वचन वर्णन ... "
विपद मिलननिमित्त मन्दोदरीशिक्षा रावण प्रति वर्णन "
मन्दोदरी रावण संवाद वर्णन ... ८७
सेतुबन्ध आरम्भ सिन्धु मिलाप वर्णन ... "
सेतुबन्धन वर्णन ... "
रावणदूत ग्रहण पहिरायनि दे बिदाकरन वर्णन... "
राम लक्ष्मणसंवाद रावणदूत पुनः लङ्का गमन युद्धनिमित्त कुम्भकर्ण मन्त्र वर्णन ... "
श्रीरघुपति सेतु उतरन वर्णन ... ८८
मन्दोदरी प्रति रावण गर्व वचन वर्णन ... "
रावणकेपास अङ्गद दूतत्व वर्णन ... "
रावण प्रति श्रीराम सन्देश वर्णन ... ८९
रावण प्रति अङ्गद उत्तर वर्णन "
अङ्गद वचन रावण प्रति वर्णन ... "
रावण भेद उपजायन अङ्गद श्रीराम प्रशंसा वर्णन "
इन्द्रजीत युद्ध आज्ञा अङ्गद पाऊँ रोपन वर्णन ... "
अङ्गद आवन रावण निपट वर्णन ९०
श्रीरघुनाथप्रति लक्ष्मण प्रतिज्ञा युद्ध निमित्त वर्णन "
लक्ष्मणका सेना सहित युद्ध गमन वर्णन ... "
मन्दोदरी वचन रावण प्रति वर्णन ... "
मेघनाद युद्ध नारद शिक्षा नागफांस मोचन वर्णन "
कुम्भकर्ण रावण संवाद वर्णन .. "
लक्ष्मण वचन खड्गधारण वर्णन ... "
रावण लक्ष्मण युद्ध लक्ष्मण मूर्छा वर्णन ... "
श्रीराम करुणा वर्णन ९१
श्रीराम हनू प्रशंसा ... ... "
रावण प्रति हनुमत वचन लक्ष्मण मूर्छा उपाय वर्णन "
सजीवन निमित्त हनुमत गवन वर्णन ... "
हनू पर्वत लावन भरत मिलाप वर्णन .. "
भरत कुशलप्रश्न पूछन हनू लक्ष्मणमूर्छा कथन करुणामें सुमित्रा धैर्य वर्णन ... "
धैर्य सहित सुमित्रा वचन वर्णन ... ९२
हनूमत भरत प्रति उत्तर वर्णन .. "
कौशल्या सन्देश राम प्रति वर्णन ... "
हनूमान सजीवन लावन लक्ष्मण चैतहीन वर्णन "
रावण कुटुंब वध वर्णन ... .. "
रावण मरणसमय मन्दोदरी आदिविलापवर्णन... ९३
आकाशते अमृतवर्षा वर्णन ... ... "
सीतामिलाप वर्णन ... ... "
परीक्षाहेतु सीता अग्निप्रवेश वर्णन ... "
कौशल्या शकुन विचार काग वचन वर्णन ... "
अङ्गद पतीटी रावणवध आदि पर्यन्त लीला वर्णन "
अयोध्या प्रशंसा वर्णन ९४
श्रीराम आगमन श्रवणसुनि भरत रचना कर उत्सवप्रकाश वर्णन ९४
श्रीराम वचन सुग्रीव प्रति भरत दरशावन परस्पर मिलाप वर्णन ... ... "
कौशल्या सुमित्रा आदि आरती मङ्गलाचार वर्णन "
श्रीराम राज्याभिषेक वर्णन ... ९५
राज समाज वर्णन ... ... "
इन्द्र दुराचार इन्द्र अहल्या प्रति गौतम शाप वर्णन "
राजा नहुष राज्य प्राप्ति इन्द्राणी चाह प्रदशापते सर्पदेह पावन वर्णन ... ... "
कच संजीवनी विद्याहेतु शुक्रगेह गवन देवयानी लोभायन परस्पर शाप वर्णन ९६
देवयानी कूप निपातन राजा ययाति पाणिग्रह शुक्र शाप राजपुत्रयौवन भोग वैराग्यपरि मोक्ष प्राप्ति वर्णन "

अथ दशमस्कन्ध पूर्वार्द्ध ।

श्रीशुकदेव वचन वर्णन ९८
श्रीभगवान जन्मलीला वर्णन ... ... "
श्रीभगवान् मथुराते गोकुल आये वर्णन ... १०४
छठी व्यवहार वर्णन १०५
पूतना वध वर्णन १०६
कागासुरको आयबो वर्णन १०८
शकटासुरका कंस आज्ञा मांगन वर्णन ... "
उत्तम अध्याय तृणावर्त वध मोहा तोरन वर्णन ... ११०
नामकर्म वर्णन १११
अन्नप्राशन लीला वर्णन ... ... "
बरसगांठि लीला वर्णन ११२
कनछेदनलीला वर्णन ११३
घुटुरुवनि चलिबो वर्णन ... ... "
पायन चलन समय वर्णन ११५
बाल वेष वर्णन ११८
चन्द्रप्रस्ताव वर्णन १२३
कलेवा भोजन समय वर्णन १२६
शयन समय वर्णन ... ... "
ब्राह्मणको प्रस्ताव वर्णन १३०
माटीको प्रसङ्ग वर्णन १३१
माखनचोरी प्रथम वर्णन १३२
हरि दांवरि बन्धन वर्णन १३९
यमलार्जुन उद्धारन दूसरी लीला वर्णन ... १४५
धेनु दुहन सीखन वर्णन १४९
वत्सासुर वध वर्णन ... ... "
बकासुर वध वर्णन १५०
अघासुर वध वर्णन १५१
ब्रह्मा वत्स बालक हरन वर्णन १५२
बहुरि बाल गोवत्स हरन वर्णन १५३
चकई भौंरा खेलन समय वर्णन १६१
श्रीराधा कृष्णजीका प्रथम मिलाप वर्णन ... "
सुख विलास वर्णन १६२
गृह गवन वर्णन १६३
श्रीराधिकाजीको यशोदा गृह गवन वर्णन ... १६४
श्रीश्याम राधा खेलन समय वर्णन ... १६५
श्रीराधा गृह गवन वर्णन ... ... "
गोचारन वर्णन १६६
धेनुक वध वर्णन १६७

विषय.	पृष्ठ.
वृन्दावन प्रवेश शोभा वर्णन	१६९
कंस कमलका फूल मँगावे कालीदमन वर्णन ...	१७०
काली लीला दूसरी वर्णन	१७७
दावानल पान वर्णन	१८१
प्रलम्ब वध वर्णन	१८४
गोचारन वर्णन	१८५
मुरली स्तुति वर्णन	१८६
गोपी वचन वर्णन	१९०
श्रीराधा यशोदाके गृह आई वर्णन ...	१९१
चीरहरन लीला वर्णन	१९६
वस्त्रहरन लीला दूसरी वर्णन	२००
पनघट प्रस्ताव वर्णन	२०२
यज्ञपत्नी लीला वर्णन	२०८
गोवर्धन पूजा वर्णन	२१०
इन्द्र विचार वर्णन	२१५
इन्द्र शरण चले सो वर्णन	२१९
गोवर्धनकी दूसरी लीला वर्णन	२२२
नन्दको वरुण ले गये वर्णन	२३२
दानलीला वर्णन	२३३
दानलीला दूसरी वर्णन	२५२
ग्रीष्मलीला छाक सहित यमुना विहार वर्णन	२६८
अनुराग समयके पद वर्णन	२८०
आसिया समयके पद वर्णन	३३७
वंशी ध्वनि सुन गोपी मोह वा रासपञ्चाध्यायी वर्णन	३३८
श्रीकृष्ण विवाह वर्णन	३४७
श्रीकृष्ण अन्तर्धान लीला वर्णन ...	३५३
गोपी विरह वर्णन	"
श्रीकृष्ण मिले गोपिनसो फेर रासलीला वर्णन ...	३५७
जलक्रीडा वर्णन	३५८
श्रीराधिकाजीका नाम वर्णन	३६४
खण्डिता समय वर्णन	३६७
श्रीराधाजीका नाम वर्णन	३८१
बड़ी मानलीला वर्णन	४००
हिंडोल लीला वर्णन	४१९
विद्याधर शापमोचन वृन्दावन विहार शङ्खचूड़ दानव वध वर्णन	४१६
वृषभासुर वध वर्णन	४३७
केशीवध वर्णन	४३८
भौमासुर वध वर्णन	४३९
वसन्त वा होरीलीला वर्णन	४३०
अक्रूर प्रस्ताव कथा वर्णन	४५१
अक्रूर गोकुल गवन वर्णन	४५४
श्रीकृष्ण मथुरा गवन वर्णन	४६०
रजकवध वर्णन	४६४
श्रीकृष्ण धनुषभूमि आगमन कुबरी उद्धार वर्णन ...	४६६
कुवलिया हस्ती वा मुष्टिक चाणूर वध वर्णन	"
कंसवध उग्रसेन राज हेतु वर्णन	४७०
वसुदेव दर्शन यज्ञोपवीत उत्सव कुबिजागृह आगमन नन्द बिदा वर्णन	४७२
नन्द व्रज आगमन यशोदावचन नन्दप्रति वर्णन	४७३
नन्दवचन यशोदा प्रति वर्णन	४७८
यशोदा वचन नन्द प्रति वर्णन ...	"
समस्त व्रज लोग वचन वर्णन	"
विषय	पृष्ठ.
ग्वाल वचन वर्णन	४७८
गोपी वचन कुबिजाप्रति परस्पर तरक वदत वर्णन	"
श्याम रङ्गको तरक वदति वर्णन	४८०
नन्द यशोदा वचन परस्पर वर्णन	"
पन्थी वाक्य देवकी प्रति वर्णन	४८२
गोपी विरह अवस्था परस्पर वर्णन	"
नैन प्रस्तावु पद वर्णन	४८७
स्वप्न दर्शन वर्णन	४८९
पावस समय वर्णन	४९३
चन्द्र प्रति तरक वदति वर्णन	४९७
उद्धव व्रज आगमन हेतु वर्णन	५०३
भँवर गीत वर्णन	५०७
उद्धव मथुरागमन श्रीकृष्णप्रति वचनवर्णन	५६३

अथ दशमस्कन्ध उत्तरार्द्ध।

विषय	पृष्ठ.
जरासन्ध आगमन द्वारका हेतु वर्णन ...	५७०
कालयवन दहन मुचुकुन्द उद्धार वर्णन ...	"
द्वारका प्रवेश वर्णन ...	"
द्वारकाकी शोभा वर्णन ...	५७१
रुक्मिणी पत्रिका आगमन वर्णन ...	"
द्विज सन्देश कृष्णप्रति वचन वर्णन ...	५७३
श्रीकृष्ण कुन्दनपुर गवन वर्णन ...	"
सखीवचन रुक्मिणी प्रति वर्णन ...	"
रुक्मिणी हरन वर्णन ...	"
श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह वर्णन ...	५७४
प्रद्युम्न जन्म वर्णन	५७६
मणिहेतु सत्यभामा जाम्बवती विवाह वर्णन ...	"
शतधन्वावध अक्रूर संवाद वर्णन ...	"
पञ्चपटरानीसों श्रीकृष्ण विवाह वर्णन ...	५७७
द्वारका प्रवेश शोभा वर्णन ...	"
भौमासुर वध नृपकन्या मोचन सुरलोक आगमन सोलहसहस्र रानी विवाह वर्णन ...	"
रुक्मिणी भक्ति परीक्षा वर्णन ...	५७८
प्रद्युम्नविवाह रुक्म कलिङ्गराज वध वर्णन ...	५७९
ऊषा अनिरुद्ध विवाह वर्णन ...	"
नृगराज उद्धार वर्णन	५८०
बलभद्र वृन्दावन गवन वर्णन	"
पुण्डरीक उद्धार वर्णन	५८१
द्विविद वा सुतीक्ष्ण वर्णन	"
सांब विवाह वर्णन	५८२
नारद संशय द्वारका आगमन वर्णन ...	"
भगवान हस्तिनापुर चले जरासन्ध वध हेतु वर्णन	५८३
जरासन्ध वध वर्णन	"
पांडवयज्ञमें शिशुपाल वध वर्णन ...	५८४
पांडव सभामें दुर्योधन क्षोभ वर्णन ...	"
शाल्व द्वारका आक्रमण प्रद्युम्नशाल्व युद्ध शाल्ववध वर्णन	"
दन्तवक्त्र वध वर्णन	५८५
बल्वल वध राम तीर्थ गमन	"
सुदामा दारिद्र भञ्जन वर्णन	
श्रीकृष्ण द्वारका गमन हेतु पन्थी प्रति व्रजनारीवचनवर्णन	५८६

विषय	पृष्ठ
कुरुक्षेत्र यशोमति गोपी आगमन वर्णन ...	५८८
रुक्मिणी वचन श्रीभगवान् प्रति	५९०
श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र आगमन वर्णन ...	,,
सखी वचन राधिका प्रति शकुन विचार ...	,,
कुरुक्षेत्रमें श्रीकृष्ण वा नन्द यशोदा गोपी मिलन वर्णन	५९१
श्रीकृष्ण देवकीके षट् पुत्र लाये का वर्णन	५९३
वेदस्तुति वर्णन ...	५९४
नारदस्तुति वर्णन ...	,,
सुभद्रा अर्जुन विवाह वर्णन	५९५
जनकदेव मिलाप परमार्थ वर्णन ...	,,
भस्मासुर वध वर्णन ...	,,
भृगुपरीक्षा अर्जुन निजरूप दर्शन ब्राह्मणपुत्र ल्यावन वर्णन	,,

विषय	पृष्ठ
अथ एकादशस्कन्ध ।	
उद्धवको श्रीकृष्ण बद्रिकाश्रम भेजन वर्णन ...	५९७
हंसावतार वर्णन ...	५९८
अथ द्वादशस्कन्ध ।	
श्री शुकदेव वचन वर्णन ...	५९९
बौद्धावतार वर्णन ...	,,
भविष्य कल्कीअवतार वर्णन ...	,,
राजा परीक्षित् हरिपदप्राप्ति वर्णन ...	६००
जन्मेजय कथा वर्णन ...	,,

इति श्रीसूरसागरकी विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।



॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर

अथ श्रीसूरदासजीरचित सूरसागर सारावली।

तथा सवालाखपदोंका सूचीपत्र ।

रागकल्पद्रुम ॥वन्दौं श्रीहरिपद सुखदाई।जाकी कृपा पंगु गिरिलंघे अँधरेको सबकुछ दरशाई॥ बहिरो सुने मूग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्रधराई। सूरदास प्रभुकी शरणागत बारम्बार नमो ते पाई॥रागिनी काफी तालजति॥खेलत यहि बिधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात ॥ टेक-अविगत आदि अनन्त अनूपम अलख पुरुष अविनासी। पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम नित निज लोकविलासी॥१॥जहँ वृन्दावन आदि अजर जहँ कुंजलता विस्तार। तहँ विहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृंग गुंजार ॥२॥रत्न जटित कालिंदीके तट अति पुनीत जहँ नीर। सारस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कीर ॥३॥जहँगोवर्द्धन पर्वत मणिमय सघन कंदरासार गोपिनमंडल मध्य विराजत निस दिन करत विहार ॥ ४ ॥खेलत खेलत चितमें आई सृष्टि करन विस्तार। अपने आप करि प्रकट कियोहे हरी पुरुष अवतार ॥ ५ ॥ माया कियो क्षोभ जबहु विधि करि कालपुरुष के अंग। राजस तामस सात्त्विक त्रयगुण प्रकृति पुरुषको संग॥६॥ कीन्हेतत्त्व प्रकट तेही क्षण सबै अष्ट अरु वीस। तिनके नाम कहत कवि सूरज निर्गुण सबके ईश ॥ ७॥पृथिवी आप तेज वायू नभ संज्ञा शब्द परस अरु गन्ध। रस अरु रूप और मन बुधि चित अहंकार मति अन्ध ॥ ८॥ पान अपान व्यान उदान अरु कहियत प्राण समान। तक्षक धनंजय देवदत्त अरु पौण्ड्रक शंख द्युमान॥ ९॥ राजस तामस सात्त्विक तीनों जीव ब्रह्मसुखधाम। अट्ठाईस तत्त्व यह कहियत सो कवि सूरज नाम॥ १०॥ नाभि कमल नारायणकी सो वेद गर्भ अवतार। नाभिकमलमें बहुतहि भटक्यो तऊ न पायो पार॥११॥ तब आज्ञाभइ यह हरिकी अज करो परमतप आप। तब ब्रह्मा तप कियो वर्षशत दूरिभये सब पाप॥ १२॥ तब दर्शन दीन्हों करुणाकर परमधाम निज लोक। ताको दर्शन देखि भयो अज सब बातन निःशोक॥१३॥ जहां आदि निजलोक महानिधि रमा सहससंयूत। आन्दोलन झूलत करुणानिधि रमासुखद अतिपूत ॥१४॥ अस्तुति करें विविध नाना करि परम पुरुष आनन्द। जय जय जय श्रुति गीत गायके पढत हं नानाछंद ॥ १५॥ आज्ञा करी नाथ चतुरानन करो सृष्टि विस्तार। होरी खेलन की विधि नीकी रचना रचे अपार॥१६॥चौदह लोक करो नानाविधि रचि वैकुंठ पताल। नाना रचना रची विधाता होरी खेल रसाल॥ १७॥ दशहीपुत्र भये ब्रह्माके जिन संच्यो संसार॥स्वायंभुव मनु प्रकट तब कीन्हें अरु शतरूपा नार॥ ॥ १८॥ भुवकी रक्षा करन जु कारण धरि वराह अवतार। पीछे कपिलरूप हरि धारयो कीन्हों सांख्य विचार॥ १९॥ दीन्हों ज्ञान आप माताको कीन्हों भवनिस्तार। आठों लोकपाल तब

कीये अपन अपन अधिकार ॥२०॥तेज, अग्नि, यम, मरुत, वरुण औ सूर्य्य चन्द्र यह नाम। मृत्यु, कुबेर, यक्षपति कहियत जहँ शंकर को धाम ॥२१॥सत्यलोक,जनलोक, तपलोक और महर निजलोक। जहँ राजत ध्रुवराज महानिधि निशि दिन रहत अशोक ॥२२॥जननी आज्ञा पाय चले वन पांच वर्ष सुकुमार। ताको आप कृपा हरि किन्हीं धरि आये अवतार॥२३॥ पाछे पृथुको रूप हरि लीन्हों नाना रस दुहि काढे। तापर रचना रची विधाता बहुविधि यत्र तत्र ठाढे॥२४॥रचि नवखण्ड द्वीप सातों मिलि कीन्हों जोरि समाज।वन उपवन पर्वत बहुफूले सब वसन्तको साज॥२५॥दानव देव लगे आपसमें कीन्हों युद्ध प्रकार । विविध शस्त्र छूटत पिचकारी चलत रुधिर की धार ॥ २६॥ दीन्हें मारि असुर हरिने तब देवन दीन्हों राज। एकन को फगुवा इन्द्रासन इक पतालको साज ॥ २७॥विद्याधर, गन्धर्व्व, अप्सरा गान करत सब ठाढे। चारण, सिद्ध पढत विरुदावलि लै फगुवा सुख बाढे ॥ २८॥ चन्द्रलोक दीन्हों शशिको तब फगुवामें हरि आप। सब नक्षत्रको राजा दीन्हों शशिमंडल में छाप ॥ २९ ॥ मंगल बुद्ध शुक्र अरु शनि अरु राहु केतु यह जान। रवि अरु शशि सबहिनको फगुवा दीन्हों चतुर सुजान॥ ॥ ३० ॥ अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान। पाताल और रसातल मिलिके सातों भुवन प्रमान ॥ ३१ ॥ संकर्षणको धाम परम रुचि तहँ राजत निज वीर। शेषनाग ताके तर कूरम बसत महा धन धीर ॥३२॥इलावर्त्त औ किम्पुरुषा कुरु औ हरिवर्ष केतुमाल। हिरनमय रमनक भद्रासन भरतखण्ड सुखपाल॥३३॥ सातों द्वीप कहे शुक मुनिने सोइ केहत अवसुर। जंबू, प्लक्ष, क्रौंच, शाक, शाल्मलि, कुश, पुष्कर भरपूर॥ ३४॥ अपने २ स्थाननपर तब फगुवा दियो चुकाय। जब जब हरि मायाते दानव प्रकट भयेहैं आय॥३५॥तब तब धरि अवतार कृष्णने कीन्हों असुर संहार। सो चौबीस रूप निज कहियत वर्णन करत विचार ॥३६॥प्रथम किये स्वायंभुवमनु नृप अज आज्ञा यह दीन्हीं। भूपर जाय राज तुम करिहो सृष्टि विस्तार यह कीन्हीं ॥३७॥ स्वायंभुवमनु अरु शतरूपा तुरत: भूमि पर आये। जलमें मगन भये भुव देखे फिरि अजपे चलिआये ॥३८॥ जासों आय कही सबही विधिभुवहूब देखियत नाहीं। तब अति ध्यान कियो श्रीपतिको केशव भये सदाहीं ॥ ३९॥ आई छीक नाकते प्रकटे शूकर अति लघु रूप। देखत गजसे होयगये हैं कीन्हों वृहत स्वरूप ॥ ४० ॥ जय जय करत सकल सुर नर मुनि जल में कियो प्रवेश। जाय पताल वाट गहिलीन्हीं धरणी रमानरेश ॥ ४१॥ ते भुवकमल कुसुमकी नाई चले मनहुँ गजराज। कछुडर नाहिन जियमें डरपति अति आनन्द समाज॥ ४२ ॥ योगी साधु, सनकादिक चारों गये हरिके निज लोक। कीन्हें क्रोध मने जब कीन्हें दियो शाप अति शोक॥ ४३ ॥जय अरु विजय असुर योनिनको भये तीन अवतार। तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृह दितिकी कोखि मँझार॥४४॥ प्रथम भयो हिरण्याक्ष महाबल जिन जीते लोकपाल। नारद सीख गयो शूकरपे देखो रूप विकराल॥४५॥सहस वर्षलों जलमें जूझे कियो दनुज संहार। पाछे आय भूमिको थापी कियो यज्ञ विस्तार ॥ ४६॥ स्वायम्भुव शतरूपा तनया कहियत तीन प्रमान। आकूती देवहूती औ परसूती चतुर सुजान ॥ ४७॥ परसूती दई दक्षप्रजापति तिनकी सती सयान। सो दीन्हीं महादेव देवको अति आनंद सुज्ञान॥ ४८॥ तज्यो देह अपमान पायके बहुरि दक्षगृहजाई। पातिव्रतहि धर्म जब जायो बहुरो रुद्र बिहाई ॥४९॥ आकूती दई रुचि प्रजापति भये यज्ञ अवतार। इन्द्रासन बैठ सुख विलसत दूर किये भुवभार ॥ ५०॥

तिनके काज अंश हरि प्रगटे ध्रुव जगत विख्यात ॥ ८१ ॥ वहुत वर्पलौं राज कियो ध्रुव फिर आये निजलोक । सबके ऊपर सदा विराजत ध्रुव सदा निःशोक ॥ ८२ ॥ सनकादिक पुछियो चतुरानन ब्रह्मजीवको वीच । प्रगट हंसवपु धस्यो जगत पुर जोपै नीर सुमीच ॥ ॥ ८३ ॥ यह भुवमण्डल को रस काढ्यो भांति २ निज हाथ । धरि पृथुरूप कियो जग आनद अखिल लोकके नाथ ॥ ८४ ॥ प्रियव्रत वंश धरेउ हरि निजवपु ऋषभदेव यह नाम । कीन्हें कार्ज सकल भक्तनको अंग २ अभिराम ॥ ८५ ॥ कीन्हों गर्व महा मघवानेवर्षा वरषो नाहिं । तव हरि आप मेघह्वै वरपे करी परम सुख छांहिं॥८६ ॥ ज्ञान उपदेश कियोपुत्रन को ब्रह्मावर्त मंझार । पाछे करि संन्यास जगतमें विचरे परम उदार ॥ ८७ ॥ आठों सिद्ध भई सन्मुख जब करी न अंगीकार । जय जय जयश्रीऋषभदेव मुनिपरब्रह्म अवतार॥८८॥ ब्रह्मसभामें यज्ञकियो जब करन वेदउच्चार। प्रगटभये हयग्रीव महानिधि परब्रह्म अवतार ॥ ८९ ॥ चार वेद लैगो शंखासुर जलमें रहो छिपाय । धरिहयग्रीव रूप हरि मास्यो लीन्हें वेद छुडाय ॥ ९० ॥ सत्यव्रत राजा रघुवंशी प्रथमभये मनुवंस। कीन्हों तप वहु भांति परमरुचि प्रकट भये हरिअंश ॥ ९१ ॥धरि लघुरूप मीनको मोहन आये उनके पानि । तब उन जलमें डारिदियो फिर तब वोले हरि वानि॥ ९२ ॥जलके वीच डारि जिन मोकों वडे मच्छ डर लाग ।यह कहिवृहतरूप हरि धारेउ सत्यव्रत के भाग ॥ ९३ ॥सतयें दिवस होयगी परलय आवेगी इकनाव।तामें वैठ सप्तऋपि अरु तुम करो भजन मम भाव॥९४॥इतनो कहिहरिनृप देखतही भये जो अन्तर्धान। सातें दिवम भयो जब परलय तब कीन्हों नृप ज्ञान ॥९५॥सवहि अन्नको वीज लियो नृप और लियो ऋपि साथ । वैठो नावध्यान हरिका करिदरशन दीन्हों नाथ ॥ ९६॥ वासुकि नागआय तहं तत्क्षण वांधी दृढकरि नाव । पूंछ्यो ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्त्व विधान वनाव ॥९७॥ वहुत काललौं विचरे जलमें तव हरि भये सुसांति । वीते प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची वहुभाति ॥ ९८॥यह हरि मच्छरूप जब लीन्हों कियोचरित विस्तार । जय जय जयश्रीमान् महावपु जय जय जगत अधार॥९९॥सुर अरु असुर मथन कीन्हो निधि चौदह रतन निकार। पर्वत पीठ धरेउ हरिनीके लियो कूर्म अवतार ॥ १००॥ हिरण्य कशिपु अति प्रवल दनुज है तप कीन्हों परचण्ड । तव उनपर दीन्हों चतुरानन कीन्हों अमर अखण्ड ॥ १०१ जब तप गयो तवहिं मघवाने सव संपति गहि लीन्हीं ।गहे जब कच कामिनि राजाकी तवनारद सिख दीन्ही॥ ॥ १०२ ॥ याके गर्भ वसतहै हरिजन सुनु सुरपति यह वात । तब तजिदई आप लै आये निज आश्रम विख्यात ॥ १०३॥ नित प्रति ज्ञानकथा हंसनसों कहत रहत मुनिराज । सुनि प्रहलाद प्रसन्न कोखिमें अति आनंद समाज॥१०४॥ता पाछे तपकियो असुरवहु फिरि देख्यो निजधाम। तव नारद मुनि दई कथा ध्रुव लै आयो है ग्राम ॥१०५॥पाछे लोकपाल सब जीते सुरपति दियो उठाय । वरुण कुवर अग्नि यम मारुत सुवस कियोक्षण मांय ॥ १०६ ॥ हाहाकार भयो सुरलोकन गये सबै अजपास।तब अज ध्यान कियो माधवको वाणी भई अकास ॥१०७॥सकललोक यह देत असुर दुख तऊ न करौ संहाराजब मेरे जनको-दुखदैहै क्षणहिमें डारौ मार ॥१०८ ॥ जय प्रहलाद प्रकट ताके गृह पांच वर्षके भैहें।आदर वहु कीन्हों राजाने पढन विप्रगृह गे हैं॥१०९॥ जब वह विप्र पढावे कुछ २ सुनके चित धरि राखें । जब वह जाय तवहिं सवहिनसों राम राम मुख भाखें ॥११०॥ लरिका और पढत शालामें तिनहिं करत उपदेश । हरिको भजन करो सवही

मिलि और जगत सुखलेश ॥ १११ ॥ यहि विधि करि उपदेश सबनको कियेभजन रसलीन। पण्डामर्क जो पूंछन लाग्यो तव यह उत्तर दीन ॥११२॥राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज। सोई सार जगतमें कहियतसुनो देव द्विजराज ॥११३ ॥येही वातजगत्‌मेंनीकीसोइ पढ़त हम आज। जबहीं विप्र कहेउ जो असुरसों पुत्र पढत विनकाज ॥ ११४ ॥ तवहिंअसुर प्रह्लाद बुलाये लिये गोद भरिअंक। कहो पुत्र तुम कहा पढोहो पूँछत कहेउ निशंक ॥ ११५ ॥ श्रवण कीर्त्तन; स्मरणपाद, रत, अरचन, वंदनदासासख्य और आतमा निवेदन प्रेमलक्षणाजास ११६ ॥सुनो पिता हौं यहीपढ्यो हूं और बात नहिं जानूं इनते और मोहिं जो कहियत सो कवहूं नहिं मानूं ॥११७॥ दीन्हों पटकि भूप धरणीपर कहेउ विप्रसों खीझ। रेमूरख तू कहा पढायो कैसे देउँ तोहिं रीझ ॥११८॥ जोवह मेरो वैरीकहियत ताको नाम पढायो। देहुगिराय याहि पर्वतते क्षण गत जीव करायो॥११९॥दीन्हों डारि शैलते भूपर पुनि जल भीतर डारो। डारि अग्निमें शस्त्रनमारो नाना भांति प्रहारो ॥१२० ॥ तऊ न घातभई अंगनकी जहँ तहं राम वचायो। तव नृप आप शस्त्रकर गहिके वहुतहि त्रास दिखायो ॥१२१ ॥ कहां है राम कृष्ण वह तेरो यों कहि गर्जन कीन्हों। घट घटजल थल व्योम धरणिमें व्यापकयहध्वनिलीन्हों॥१२२॥ तव ले खड्ग खम्भमें मारो भयो शब्द अतिभारी। प्रगट भये नरहरि वपुधरिहरि कटकट करि उचारी ॥ १२३ ॥ पकरिलियो क्षणमांझ असुर वल डारो नखन विदारी। रुधिर पानकरि आंत मालधरि जय जय शब्द उचारी ॥ १२४॥ मारो दैत्य दुष्ट इकक्षणमे जय नृसिंहवपुधारेपुष्पन वृष्टि करत सुरनर मुनि भये भक्त रखवारे ॥ १२५ ॥ रमा निकट नहिं आवत हरिके ऐसो वपु हरिधारो। अज सनकादि देव नारद मुनि जानत रूप निहारो॥१२६॥अपनी २ अस्तुति करि-के सवहिन यहै सुनायो।गंधर्व अरु विद्याधर चारण विमल विमल यशगायो॥ १२७ ॥तव प्रह्लाद आय हरि पदसों शीशनाय यह भाख्यो।जय जय जय जगदीश जगतगुरु मोर अधम प्रण राख्यो ॥१२८॥तुमही आदिअखंड अनूपम अशरणशरण मुरारी।देव देव परब्रह्म परिपूरण भक्तहेतु अवतार ॥१२९॥जहजहं भीर परत भक्तनको तहतह होत सहाय।अस्तुतिकरि मनहर्ष वढायो लेहनजीभ कराय ॥ १३० ॥ तव वोले नरसिंह कृपाकरि सुनहु भक्त मम वात।मन्वन्तर को राज दियो तोहिं धरयो शीशपर हाथ ॥१३१॥निर्गुण सगुणहोय मे देख्यो तोसों भक्त न पाऊं। जह जहं परत भीरभक्तनको तहां प्रकट हो आऊं॥१३२॥ सुत प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी तोको। कवहुं न त्यागूं जैसे धेनु वच्छको चाटत तैसे में अनुरागूं॥१३३ ॥जो मांगो सो देहुं तुरतही नहिं विलम्ब कछु लाग।तव प्रह्लाद यही वर मांग्यो चरण कमलअनुराग॥१३४॥करी कृपादीन्होकरुणानिधि अटल भक्ति थिरराज।अन्तर्धान भये हरि तहते सफल भयेसवकाज॥१३५॥नारदरूप जगत उद्धारणनि नरत लोकन माय। करि उपदेश ज्ञानहरिभक्तहिअरुवैराग्यदढाय॥१३६॥स्वायंभुवशतरूपादोऊ कहियतहैं अवतार।जगको धर्म प्रचार किये भुव भक्त कर्म आचार ॥१३७॥ करुणाकर जलनिधिते प्रकटे सुधाकलश लेहाथ। आयुर्वेद विस्तारण कारण सवब्रह्माण्डके नाथ॥१३८॥ क्षत्रिय दुष्टवढे जो भुवपर लियो कृष्ण अवतार।परशुराम व्हैके द्विजथापे दूरकियोभूभार॥१३९॥रघुकुलवंश चतुर चूड़ामणि पुरुषोत्तम अवतार।दशरथके गृह जन्म लियो हरि रूपराम सुकुमार ॥ १४० ॥ रावण कुम्भकर्ण असुराधिप वढे सकल जगमाहिं।सवहिन लोकपाल उन जीते कोऊ वाच्यो नाहिं ॥१४१॥सकल देव मिलि जाय पुकारे चतुराननके पास।लै शिवसंग जले चतुरानन क्षीरसिन्धु

मिलि और जगत सुखलेश ॥ १११ ॥ यहि विधि करि उपदेश सवनको कियेभजन रसलीन। पण्डामर्क जो पूछन लग्यो तव यह उत्तर दीन ॥११२॥राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज । सोई सार जगतमें कहियतसुनो देव द्विजराज ॥११३ ॥येही वातजगतमेंनीकीसोइ पढ़त हम आज । जवही विप्र कहेउ जो असुरसो पुत्र पढत विनकाज ॥ ११४ ॥ तवहिअसुर प्रह्लाद वुलाये लिये गोद भरिअक । कहो पुत्र तुम कहा पढौहो पूछन कहेउ निशक ॥ ११५ ॥ श्रवण कीर्तन; स्मरणपाद, रत, अरचन, वदनदासासख्य और आतमा निवेदन प्रेमलक्षणाजास ११६ ॥सुनो पिता हौं यहीपढ्यो हूं और वात नहिं जानू इनते और मोहि जो कहियत सो कवहू नहिं मानू ॥११७ ॥ दीन्हो पटकि भूप धरणीपर कहेउ विप्रसों खीझ । रेमूरख तू कहा पढायो कैसे देउँ तोहिं रीझ ॥११८॥ जोयह मेरो वैरीकहियत ताको नाम पढायो । देहुगिराय याहि पर्वतते क्षण गत जीव करायो॥११९॥दीन्हो डारि शैलते भूपर पुनि जल भीतर डारो । डारि अग्निमें शस्त्रनमारो नाना भांति प्रहारो ॥१२० ॥ तऊ न घातभई अगनकी जहँ तह राम वचायो ।तव नृप आप शस्त्रकर गहिके वहुतहि त्रास दिखायो ॥१२१ ॥ कहां है राम कृष्ण वह तेरो यो कहि गर्जन कीन्ही । घट घट जल थल व्योम धरणिमें व्यापकयहध्वनिलीन्ही॥१२२॥ तव लै खड्ग खम्भमें मारो भयो शब्द अतिभारी ।प्रगट भये नरहरि वपुधरिहरि कटकट करि उच्चारी ॥ १२३ ॥ पकरिलियो क्षणमांझ असुर वल डारो नखन विदारी। रुधिर पानकरि आंत मालधरि जय जय शब्द उचारी ॥ १२४॥ मारो दैत्य दुष्ट इकक्षणमें जय नृसिंहवपुधारेपुष्पन वृष्टि करत सुरनर मुनि भये भक्त रखवारे ॥ १२५ ॥ रमा निकट नहिं आवत हरिके ऐसो वपु हरिधारो । अज सनकादि देव नारद मुनि जानत रूप निहारो॥१२६॥अपनी २ अस्तुति करि-के सवहिन यहै सुनायो।गधर्व अरु विद्याधर चारण विमल विमल यशगायो॥ १२७ ॥तव प्रह्लाद आय हरि पदसो शीशनाय यह भाख्यो।जय जय जय जगदीश जगतगुरु मोर अधम प्रण राख्यो ॥१२८॥तुमही आदिअखड अनूपम अशरणशरण मुरारी।देव देव परब्रह्म परिपूरण भक्तहेतु अवतार ॥१२९॥जहँजहँ भीर परत भक्तनको तहतह होत सहाय।अस्तुतिकरि मनहर्ष वढायो लेहनजीभ कराय ॥ १३० ॥ तव वोले नरसिंह कृपाकरि सुनहु भक्त मम वात।मन्वन्तर को राज दियो तोहिं धर्यो शीशपर हाथ ॥१३१॥निर्गुण सगुणहोय मैं देख्यो तोसो भक्त न पाऊ। जह जहं परत भीरभक्तनको तहां प्रकट ह्वा आऊ॥१३२॥ सुत प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी तोको। कवहुँ न त्यागूँ जैसे धेनु वच्छको चाटत तैसे मैं भनुरागूं॥१३३ ॥जो मांगो सो देहु तुरतही नहिं विलम्व कछु लाग।तव प्रह्लाद यही वर मांग्यो चरण कमल अनुराग॥१३४॥करी कृपादीन्होकरुणानिधि अटल भक्ति थिरराज।अन्तर्धान भये हरि तहँते सफल भयेसवकाज॥१३५॥नारदरूप जगत उद्धारणनि चरत लोकन माय। करि उपदेश ज्ञानहरिभक्तहिअरुवैराग्यदृढाय॥१३६॥स्वायभुवशतरूपादोऊ कहियतहैं अवतार।जगको धर्म प्रचार किये भुव भक्त कर्म आचार ॥१३७॥ करुणाकर जलनिधिते प्रकटे सुधाकलश लेहाथ । आयुर्वेद विस्तारण कारण सवब्रह्माण्डके नाथ॥१३८॥ क्षत्रिय दुष्टदै जो भुवपर लियो कृष्ण अवतार।परशुराम ह्वैके द्विजथापे दूरकियोभूभार॥१३९॥रघुकुलवश चतुर चूडामणि पुरुषोत्तम अवतार।दशरथके गृह जन्म लियो हरि रुपराम सुकुमार ॥ १४० ॥ रावण कुम्भकर्ण असुराधिप वढे सकल जगमाहिं।सवहिन लोकपाल उन जीते कोउ वाच्यो नाहिं ॥१४१॥सकल देव मिलि जाय पुकारे चतुराननके पास।लै शिवसग जले चतुरानन क्षीरसिन्धु

सुखवास ॥१४२॥अस्तुतिकरि बहुभांति जगाये तब,जागेनिजनाथ। आज्ञादई जायकपिकुलमें प्रकटो,सब सुर साथ ॥१४३॥ तब ब्रह्मा सबदिनसों भाष्यो सोई मत्र सुर कीन्हों। सातों द्वीप जाय कपिकुलमें आय जन्म सुरलीन्हों ॥१४४॥अपने अंश आपहरि प्रकटे पुरुषोत्तमनिजरूप। नारायण भुवभारहरोहि अति आनन्द स्वरूप॥१४५॥वासुदेव यों कहत वेदमें हैंपूरण अवतार। शेषसहसमुख रटत निरंतर तऊ न पावतपार ॥१४६ ॥ सहसवर्षलोंध्यान कियो शिव रामचरित सुखसार। अवगाहन करिके सब देख्यो तऊ न पायो पार ॥ १४७ ॥वितीसमाधि सती तब पूछ्यो कहो मर्मगुरुईश। काको ध्यान करत उरअंतर को पूरण जगदीश ॥ १४८॥ तब शिव कहेउ राम अरु गोविंद परमइष्ट इक मेरे। सहस वर्ष लौं ध्यान करत हौं राम कृष्ण सुख केरे ॥१४९॥ तामें रामसमाधि करी अब सहसवर्ष लौं वाम। अतिआनन्द मगन मेरो मन अंग अंग पूरण काम ॥१५०॥ दाया करिमोकोयहकहियेअमर होहुं जेहिभांति। मोहिं नारद मुनि तत्त्वबतायो ताते जिय अकुलाति॥ १५१ ॥ तबमहादेव कृपाकरिके यहचरितकियो विस्तार। सो ब्रह्मांडपुराण व्यासमुनि कियो वदन उचार ॥ १५२॥ मुनिवाल्मीकिकृपासातो ऋषि राम मंत्र फल पायो। उलटोनामजपतअघबीत्यो पुनि उपदेशकरायो ॥ १५३॥रामचरित वर्णनके कारण वाल्मीकि अवतार। तीनोंलोक भये परिपूरण रामचरित सुखसार ॥१५४॥ शतकोटी रामायण कीनों तऊ न लीन्हों पार। कह्यो वसिष्टमुनि रामचन्द्रसों रामायणउचार ॥ १५५॥ कागभुशुंडगरुडसों भाष्यो रामचरितअवतार। सकलवेदअरु शास्त्र कह्यो है रामचन्द्र यशसार ॥ १५६ ॥कछु संक्षेप सूर अब॰ वर्णन लघुमति दुर्बल वाल। यह रसना पावनके कारण मेटन भव जंजाल ॥१५७॥तीनों व्यूह संगले प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीराम।संकर्षण प्रद्युम्न लक्ष्मण भरत महासुखधाम ॥ १५८ ॥ शत्रुघ्नहि अनिरुध कहियतहै चतुर्व्यूहनिजरूप।रामचन्द्रप्रकटे जब गृहमें हरषे कोशलभूप॥१५९॥पुष्य नक्षत्र नौमी जु परम दिन लग्न शुद्ध शुभवार। प्रगटभये दशरथ गृह पूरण चतुर्व्यूह अवतार॥१६०॥अति फूले दशरथ मनहीं मन कौशल्या सुख पायो। सौमित्रा केकयी मन आनँद यह सबहिन सुन जायो ॥ १६१ ॥ गुरु वशिष्ट नारदमुनि ज्ञानी जन्मपत्रिका कीनी।रामचंद्र विख्यात नाम यह सुर मुनिकी सुधि लीनी ॥ १६२ ॥देत दान नृप राज द्विजनको सुरभी हेम अपार। मत्र सुंदरि मिलि मंगल गावत कंचन कलश दुवार ॥ १६३॥ आये देव और मुनिजन सब दे अशीश सुख भारी।अपने अपने धाम चले सब परममोद रुचिकारी॥१६४॥मनवांछित फल सबहिन पाये भयो सबन आनंद। बालरूप ह्वैके दशरथसुत करत केलि स्वच्छंद॥१६५॥घुटरुन चलत कनक आँगन में कौशल्या छवि देखत। नील नलिन तनु पीत झँगुलिया घनदामिनि द्युति पेखत ॥ १६६॥कबहूं माखन रोटी लेके खेल करत पुनि मांगत। मुरप चुवंत जननी समझावत आय कंठ पुनि लागत॥ १६७॥ कागभुशुण्ड दरशको आये पांच वर्षलौं देखे। स्तुति करी आपु वर पायो जन्म सफल करिलेखे॥१६८॥ कृपा करी निज धाम पठायो अपनो रूप दिखाय।ताके आश्रम कोउ बसतहै माया लगत न ताय॥१६९ ॥ प्रातकाल उठि जननि जगावत उठो मेरे बारे राम। उठि बैठे दँतुवन ले आई करी मुखारी श्याम॥ १७० ॥चारों भ्रात मिल कर कलेऊ मधु मेवा पकवान। जल आचमन आरती करिके फिर कीन्हों अस्नान॥ १७१॥करत शृंगार चार भय्या मिलि शोभा वरणि न जाई। चित्र विचित्र सुभग चौतनिया इन्द्र धनुप छवि छाई ॥ १७२ ॥ अलकावलि मुक्तावलि

गूंथी डोर सुरंग विराजे। मनहुँ सुरसरी धार सरस्वति यमुना मध्य विराजे ॥ १७३ ॥ तिलक भाल पर परम मनोहर गोरोचन को दीनो। मानो तीन लोककी शोभा अधिकउदयसोकीनो॥ ॥ १७४ ॥ खंजन नैन बीच नासापुट राजत यह अनुहार। खंजन युग मनो लरत लराई कीर बुझावत रार ॥ १७५ ॥ नासाके वेसर में मोती वरण विराजत चार। मनो जीव शनि शुक्र एक ह्वै वाढे रविके द्वार ॥ १७६ ॥ कुंडल ललित कपोल विराजत झलकत आभागंड। इन्दी वरपर मनो देखियत रविकी किरण प्रचंड ॥ १७७ ॥ अरुण अधर दमकत दशनावलि चारु चिवुक मुसक्यान। अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिमवीज समान ॥ १७८ ॥ कंठसिरी विच पदिक विराजत वहुमणि मुक्ताहार। दहिनावर्त देत ध्रुव तारे सकल नखत वहुवार ॥ ॥ १७९ ॥ रत्न जटित कंकण वाजूवंद नगन मुद्रिका सोहै। डार डार मनु मदन विटपतरु विकच देखि मन मोहै ॥ १८० ॥ कटिकिंकिणि रुनु झुनु सुनि तनकी हंस करत किलकारी। नूपुरध्वनि पग लालि पन्हैयां उपमा कौन विचारी ॥ १८१ ॥ भूषण वसन आदि सव रचि रचि माता लाड लडावे। रामचंद्रकी देखमाधुरी दर्पणदेख दिखावे ॥ १८२ ॥ निज प्रतिविंव विलोक मुकुर में हँसत राम सुखरास। तैसेइ लक्ष्मण भरत शत्रुहन खेलत डोलत पास ॥ १८३ ॥ दशरथ राय न्हाय भोजन को वैठे अपने धाम। लावो वेगि राम लक्ष्मण को सुनि आये सुखधाम ॥ १८४ ॥ वैठे सँग वावा के चारों भैया जेंवन लागे। दशरथ राय आपु जेंवतहैं अति आनँद अनुरागे ॥ १८५ ॥ लघु लघु ग्रास राम मुख मेलत आपु पिता मुख मेलत। वालकेलि को विशद परमसुख सुखसमुद्र नृप झेलत ॥ १८६ ॥ दाल भात घृत कढी सलोनी अरु नाना पकवान। आरोगत नृप चारिपुत्र मिलि अतिआनन्द निधान ॥ ॥ १८७ ॥ अचवनकर पुनि जल अचवायो जवनृप वीरा लीनो। रामलषण अरु भरत शत्रुहन सवहिन अचवन कीनो ॥ १८८ ॥ वीरा खायचले खेलनको मिलिकै चारों वीर। सखासंग सव मिले वरावर आये सरयू तीर ॥ १८९ ॥ तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत। कवहुँक सधे अश्व चढि आपुन नानाभांति नचावत ॥ १९० ॥ कवहुँक चारभ्रात मिलि अगिआ जात परम सुख पावत। हरिनआदि वहुजंतु किये वध निज सुरलोक पठावत ॥ १९१ ॥ यहि विधि वन उपवन वहुक्रीडा करी राम सुखदाई। वाल्मीकि मुनि कही कृपाकर कछुयक सूर जो गाई ॥ १९२ ॥ भई सांझ जननी टेरतहै कहां गए चारोंभाई। भूख लगी ह्वैहै लालन को लावो वेगि वुलाई ॥ १९३ ॥ इतने मांझ चार भैया मिलि आये अपने धाम। मुखचुंवत आरती उतारत कौशल्या अभिराम ॥ १९४ ॥ सौमित्रा कैकयि सुख पावत वहु विधि लाड लडावत। मधुमेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेंवावत ॥ १९५ ॥ चारों भ्रातन श्रमित जानिकै जननी तव पौढाये॥ चापत चरण जननि अप अपनी कछुक मधुर स्वर गाये ॥ १९६ ॥ आई नींद राम सुख पायो दिनको श्रम विसरायो। जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठलगायो ॥ १९७ ॥ विश्वामित्रवड़े मुनि कहियत यज्ञकरत निजधाम। मारिच और सुवाहु महासुर विघ्न करत दिनयाम ॥ १९८ ॥ परब्रह्म अवतार जानिकै आये नृपके पास। दशरथ राय वहुत पूजा विधि किये प्रसन्न हुलास ॥ ॥ १९९ ॥ भोजन कर जवहीं जु विराजे तव भाष्यो मुनिराय। यज्ञ सकल कीजे मेरो अव दीजे राम पठाय ॥ २०० ॥ तव नृप कह्यो राम हैं वालक मोको आज्ञा कीजे। तव द्विज कह्यो राम परमेश्वर वचन मान यह लीजे ॥ २०१ ॥ गुरु वशिष्ट सव विधि समझाये राम लषन सँग दीन्हें।

मारगमें अहल्या उद्धारी नायक निज पद दीने ॥ २०२ ॥ विश्वामित्र सिखाई बहुविधि विद्या
धनुष प्रकार । मारग में ताडका जु आई धाई वदन पसार ॥ २०३ ॥ छिनमें राम तुरत सो मारी
नेक न लागीवार । दीन्ही मुक्ति जानि निज महिमा आये ऋषिके द्वार ॥ २०४ ॥ कीन्हें विप्र
यज्ञ परिपूरण असुर विघ्नको आये । अग्निवाण कर दहन कियोहै एक समुद्र पठाये ॥ २०५ ॥
जनक विदेह कियो जु स्वयम्बर बहु नृप विप्र बुलाये । तोरन धनुष देव त्र्यम्बकको काहू यतन
न पाये ॥ २०६ ॥ विश्वामित्रमुनि वेग बुलाये सकल शिष्यलैसंग । राम लषण संगलिये आपने
चले प्रेमरससंग ॥ २०७ ॥ जहँ तहँ उझकि झरोखा झांकत जनक नगरकी नार । चितवनि
कृपाराम अवलोकत दीन्हों सुख जो अपार ॥ २०८ ॥ कियो सन्मान विदेह नृपतिने उपवनवासी
कीन्हों । देखन राम चले निजपुरको सुख सबहिनको दीन्हों ॥ २०९ ॥ सब पुर देखि धनुषपुर
देख्यो देखे महल सुरंग । अद्भुत नगर विदेह निलोकत सुख पायो सब अंग ॥ २१० ॥ कहत
नारिसब जनक नगरकी विधि सों गोदपसार । सीताजूको वर यहचाहियेहैजोरी सुकुमार ॥ २११ ॥
अपने धामफिरे तब दोऊ आये जान भई सांझ । कर दण्डवत परसिपदऋषिके बैठे उपवन
मांझ ॥ २१२ ॥ संध्याभई कृत्य नित करिकै कीन्हो ऋषि परणाम । पौंढे जाय चरण सेवा द्विज
करके अति विश्राम ॥ २१३ ॥ ब्रह्म मुहूरत भयो सवेरो जागे दोऊ भाई । कर परणाम देवगुरु
द्विजको जल सुस्नान कराई ॥ २१४ ॥ आयेभूप देश देशनके जुरी सभा अतिभारी । तहां
बुलाये सकल द्विजनको जनक सभा मंझारी ॥ २१५ ॥ कौशिकमुनि तहँउविसों पधारे लिये
शिष्य संग सात । चलेनित्य आह्निक सबकर द्विज उर आनँद न समात ॥ २१६ ॥ दोनोंभ्रात
संगमें लीन्हें आये राजदुआर । जहँ बैठे सब भूप ओपसों बाढ्यो गर्व अपार ॥ २१७ ॥ अपने
अपनेभुज बलतोलत तोरन धनुषपुरार । कछुनहिं चलतखिसायगये सब रहेबहुत पचिहार ॥ २१८ ॥
सीता कहत सहेलिनसों पुनि यही कहतरघुनन्द । तबउनकह्यो सकलसुखसागर सो ये परमानन्द
॥ २१९ ॥ बार बार जिय शोचकरत हैं विधिसों वचनउचारी । मन क्रमवचन यहै वरदीजो मांगत
गोदपसारी ॥ २२० ॥ एकवार सुन्दरी पूजत भयो दरश सखि मोहिं । तादिनते छिन कल न
परतहै सत्य कहतहौं तोहिं ॥ २२१ ॥ सब नृपपचे धनुषनहिं टूट्यो तब विदेह दुखपायो । क्रोध
वचनकरि सबसे बोले क्षत्री कोउ न रहायो ॥ २२२ ॥ यहसुनि लक्ष्मण भये क्रोधयुत विषम
वचन यों बोले । सूरजवंश नृपति भूतलपर जाके बल बिन तोले ॥ २२३ ॥ किनकवान यह
धनुष रुद्रको सकल विश्व कर लेहों । आज्ञापाय देव रघुपतिकी छिनकमांझ ढठैंहों ॥ २२४ ॥
सबके मनको देख अँदेशो सीता आरत जानी । रामचन्द्र तबही अकुलाने लीन्हों शार-
गपानी ॥ २२५ ॥ छिनमें करलेके जु चढायो देखत हैं सबभूप । डारचो तोर अघात
शब्द भयो जैसे कालको रूप ॥ २२६ ॥ सबही दिशा भई अति आतुर परशुराम
सुनि पायो । परशुसम्हारशिष्यसंगलेके छिनहीमें तहँ आयो ॥ २२७ ॥ जयजयकार भयोजगतीपर
जनकराज अति हरषे । सुर बिमान सब कौतुकभूले जयध्वनि सुमनन वरषे ॥ २२८ ॥ जनकराज
तब विप्रपठाये वेगबरात बुलाई । दशरथराज बाजि गजलेके सबही सौजतुराई ॥ २२९ ॥ चली
बरात विपुल धनलैके जुरे मनुज नहिंपार । शोभासिंधुकहतनहिंआवे वर्णन करतउचार ॥ २३० ॥
गुरु वशिष्ठ मुनि लग्न दियो शुभ शुभनक्षत्र शुभवार । आयेजान नृपति सन्माने कीन्हीं अति
मनुहार ॥ २३१ ॥ व्याह केलि सुख वर्णन कीन्हो आनै वाल्मीकिअपार । सो सुख सूर कह्यो वह

कीरति जगतकरी विस्तार ॥२३२॥वेद शास्त्र मथ करी ब्याहविधि सोइ कीन्हीं नृपराय। राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारोंदिये विवाय॥२३३॥होम हवन द्विजपूजा गणपति सूरजशक्र महेश। दीन्हों दान बहुत विप्रनको राजा मिथिल नरेश ॥ २३४ ॥ उत्सव भयो परम आनँदको बहुत दायजो दीन्हों। भये विदा दशरथनृप नृपसों गमन अवधपुर कीन्हों ॥२३५॥भृगुपति आयजानि जब रघुपति मिले धाय शिरनाय ॥ दशरथराय विनय बहुकीन्हीं जियमें अति डरपाय॥२३६॥ तब मुनिकह्यो धनुष क्यों तोरेउ रुद्र परमगुरु मेरे। रामचंद्र पूरणपुरुषोत्तम नेक नयन जब हेरे ॥२३७॥ लीन्हों अंश खैंचि भृगुपतिको अपनेरूप समायो । करो जाय तप शैल महेंद्रपे मुनि मुनिवर शिरनायो॥२३८॥अति आनन्द अयोध्या आये कियो नगरशृंगार। कदलीखंभ चौक मोतिनके बाँधी बंदनवार॥२३९॥कियो प्रवेश राजभवननमें रामचंद्र सुखराश। अद्भुत भवन विराजत रत्नन सूरजकोटि प्रकाश २४०॥ द्वादश बरष विराजे बालक फिर भूभार हरो। कैकेयी वचन प्रमान किये नृप तब यह काज करो॥२४१॥वचन समझ नृप आज्ञाकीन्हीं देव उपाय करो। रामचन्द्र पितुआज्ञा मानी जियमें वचन धरो॥२४२॥यह भू भार उतारन रघुपति बहुत ऋषिन सुखदेन। वनोवासको चले सियासँग सुखनिधि राजिवनैन २४३ ॥मारगमें हरि कृपा करीहै परमभक्त इकजान। तहँते गये जु चित्रकूटको जहां मुनिनकी खान ॥२४४ ॥ वाल्मीकि मुनि वसत निरंतर राममंत्र उचार।ताको फल यह आज भयो मोहिं दर्शन दियो कुमार ॥२४५॥पूजाकर पधराय भवनमें रामचन्द्र परनाम।कियो विविधविधि पूँजाकरिकै ऋषिचरनन शिरनाम ॥ २४६ ॥ बहुत दिवसलौं बसे जगतगुरु चित्रकूट निजधाम। किये सनाथ बहुत मुनिकुलको बहुविधि पूरे काम ॥ २४७ ॥ भरतजान जियमें रघुपतिको दुःसह परम वियोग। आये धायसंग सब लैके पुरवासी गृहलोग ॥२४८॥ विन दशरथ सब चले तुरतही कोशलपुरके बासी। आये रामचन्द्र मुख देख्यो सबकी मिटी उदासी ॥२४९॥ रामचन्द्र पुनि सबजन देखे पिता न देखनपाये। पूछी बात कह्यो तब काहू मन बहुविधि विलखाये ॥२५०॥ वेदरीति कारे रघुपति सबविधि मर्य्यादा अनुसार। बहुतभांति सब विधि समुझाये भरत करी मनुहार॥२५१॥ गुरु वशिष्ट मुनि कह्यो भरतसों रामब्रह्मअवतार। वनमें जाय बहुत मुनि तारे दूर करें भुवभार ॥ २५२ ॥पुनि निजविश्वरूप जो अपनो सो हरिजाय देखायो।आज्ञापायचले निजपुरको प्रभुहि गीत समझायो॥ २५३ कछु दिन बसे जु चित्रकूटमें रामचन्द्र सदभ्रात। तहँते चले दंडकावनको सुखनिधि साँवलगात ॥ २५४ ॥ मारगमें बहुमुनिजन तारे अरु विराधरिपु मारे। वंदनकर शरभंग महामुनि अपने दोष निवारे ॥ २५५ ॥ दरशन दियो सुतीक्षण गौतम पंचवटी पग धारे। तहां दुष्ट शूर्पणखा नारी करि विननाक उघारे॥२५६॥यहसुनि असुर प्रबल दलआये छिनमें राम सँहारे। कीन्हें काज सकलसुर मुनिके भुवके भार उतारे ॥ २५७ ॥ मुनिअगस्त्य आश्रम जु गये हरि बहुविधि पूजा कीन्हीं। दिव्य वसन दीने जबमुनिने फिरयह आज्ञा दीन्हीं॥ ॥२५८॥दशकंधरको वेगि सँहारो दूरकरो भुवभार। लोपामुद्रा दिव्य वस्त्र लै दीने जनककुमार ॥ २५९ ॥ शूर्पणखा जब जाय पुकारी नाक कान ले हाथ। रावणक्रोध कियो अतिभारी अधर फरक अतिगात ॥२६० ॥गयो मारीच आश्रमहि तबहीं वानेबहु समझायो। तब मारीच कह्यो दशकंधर विनती बहुत करायो ॥२६१॥ रामचन्द्र अवतार कहत हैं सुनि नारद मुनि पास। प्रकट भये निश्चर मारनको सुनि वह भयो उदास ॥ २६२ ॥ करगहि खड्ग तोर वध

कारिहीं सुनि मारिच डर मान्यो। रामचन्द्रके हाथ मरेगो परम पुरुष फल जान्यो ॥ २६३ ॥ कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता बिनती कीन्हीं। रामचन्द्र कर सायक लैके मारनकी विधि कीन्हीं ॥२६४॥ मारयो धनुष बाणले ताको लक्ष्मण नाम पुकारेउ। लक्ष्मण नाम सुनत तहँ आये अवसर दुष्ट विचारेउ ॥ २६५ ॥ धरिकै कपटभेष भिक्षुकको दशकन्धर तहँ आयो। हरिलीन्हों छिनमें माया करि अपने रथ बैठायो॥ २६६ ॥ चल्योभाज गोमायु जंतुज्यों लैके हरिको भाग। इतने रामचन्द्र तहँ आये परमपुरुष बडभाग ॥२६७॥ जब माया सीता नहि देखी जियमें भये उदास। पूंछनलगे राम द्रुमगनसों बहुत बढी दुखरास ॥ २६८ ॥ मारगमें जटायुखग देख्यो विकल भयो तनुहीन। विनती करी राम में तासों बहुतलडाई कीन॥२६९॥ जब तनु तज्यो गृध्र रघुपति तब बहुत कर्म विधि कीनी। जान्यो सखा राय दशराथको अपनी निजगति दीनी ॥ २७० ॥ मारगमें कबंधरिपु मारयो सुरपति काज सँवारयो। पंपापुर हरि तुरत पधारे जलको दोष निवारयो ॥२७१ ॥शबरी परमभक्त रघुपतिकी बहुत दिननकी दासी। ताके फल आरोगे रघुपति पूरण भक्ति प्रकासी ॥ २७२ ॥ दीन मुक्ति निजपुरकी ताको तब रघुपति चले आगे।सीतासीता विलपतडोलत परम विरहसों पागे॥ ॥ २७३ ॥रविनन्दन जब मिले रामकोअरु भेंटे हनुमान। अपनी बात कहा उन हरिसों बालि बडो बलवान॥२७४॥सप्तताल वेधन हरि कीन्हों बालिछिनकमें तारो। दीन्होंराजगम रविनंदन सब विधि काज सँवारो ॥२७५॥ सप्तद्वीपके कपिदल आये जुरी सेन अति भारी।सीताकी सुधि लेन चले कपि ढूंढत विपिनमँझारी ॥२७६॥ जलनिधितीर गये सब कपि मिल सुन संपातिकी बानी। लंकबसत सीता रिपु बनमें सब बानर यह जानी ॥२७७॥ रामचरण कर सुमिरन मनमें चले पवनसुत धाय। रामप्रताप विघ्न सब मेटे पेठि नगर सुखपाय ॥ २७८ ॥ धरि लघुरूप प्रवेश कियो कपि लंका नगर मँझार। रामभक्त निज जान विभीषण भेंटे हरि अँकवार ॥२७९॥ तब वाने सबभेद बताये देखी कपि सबलंक। रामचरण धरि हृदय मुदितमन विचरत फिरत निशंक ॥ २८० ॥ जाय अशोकवाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह। कर दण्डवत बहुत विनती कर राम मुद्रिका दीन्ह ॥ २८१ ॥ सब संदेश कह्यो कपि सियप्रति सुनि हियमें धरि राख्यो। राम संदेश कहेउ तब सीता जो बूझो सो भाख्यो॥२८२॥ लागीभूख चले उपवनमें नाना विधि फल खायो। विटप उखार उजार विपिनको सबहिनको दरशायो ॥ २८३ ॥ सुनि पुकार निश्चर बहु आये कूदि सबन संहारे। इन्द्रजीत बलनिधि जब आयो ब्रह्मअस्त्र उन डारे ॥२८४॥ तासों बँधे दशानन देखत चले पवनसुत धीर।रावण बहुत ज्ञान समझायो कथरकथा गँभीर ॥२८५॥ चले छुडाय छिनकमें तबही जारदई सब लंक। कूदिचले गजवनको जयकर ज्यों मृगराज निशंक ॥२८६॥ आये तीर समुद्र मिले कपि मिले आय जहँ राम।सुनि सुनि कथा श्रवण सीताकी पुलकित अति अभिराम ॥२८७॥ करि कपिकटक चले लंकाको छिनमें बांध्यो सेत।उतरगये पहुँचे लंकापै विजयध्वजा संकेत ॥२८८॥ पठये बालिकुमार विनयकरि समझाये बहुवार। चित्त न धरो कालवश जान्यो फिर आयो सुकुमार ॥२८९॥ अशरण शरण उदार कल्पतरु रामचन्द्र रणधीर। रिपुभ्राता जान्यो जु विभीषण निश्चर कुटिलशरीर ॥२९०॥ राखिशरण लंकेशकियो पुनि जब निश्चर सब मारे।माया करी बहुत नानाविधि सबको गर्व निवारे ॥ २९१ ॥ कुंभकर्ण पुनि इन्द्रजीत यह महाबली बलसार। छिनमें लिये सोख मुनिवर ज्यों क्षत्री बली अपार ॥२९२॥

कियो प्रसाद शांतना करिके राजविभीषण दीन्हीं । पुनि मंदोदरि अचल आयु दै अभयदान सबकीन्हीं ॥ २९३ ॥ समाधान सुरगणको करिके अमृत मेघ बरषायो । कृपादृष्टि अवलोकन करिके हत कपिकटक जियायो ॥ २९४ ॥ निश्चर किये मुक्त सब माधव ताते जिये न कोय। निर्भय किय लंकेश विभीषण रामलषणनृप दोय ॥ २९५ ॥ सीता मिली बहुत सुखपायो धरो रूप निज मायो । पुष्पकयान बैठके नीके चले भवन सुखछायो ॥ २९६ ॥ चले पवनसुत विप्ररूप धरि भरतहि देन बधाई । जानि दूत रघुपतिको प्रमुदित भरत मिले तबधाई ॥ २९७ ॥ सुनत नगर सबहिन सुख मान्यो जहँतहँते चले धाई ।रामचन्द्र पुनि मिले भरतसों आनँदउरन समाई ॥ २९८ ॥कियो प्रवेश अयोध्यामें तब घर घर बजत बधाई । मंगल कलश धराये द्वारे वन्दनवार बँधाई ॥ २९९ ॥ राजभवनमें राम पधारे गुरु वशिष्ठ दरशायो । शीशनवाय बहुतपूजाकरि सूरजवंश बढायो ॥ ३०० ॥ समाधान सबहिनको कीन्हों जो दर्शनको आयो-कौशल्या कैकयी सुमित्रा मिलि मनमें सुखपायो ॥ ३०१ ॥बैठे राम राजसिंहासन जगमें फिरी दुहाई ।निर्भय राज रामको कहियत सुर नर मुनि सुख पाई ॥ ३०२ ॥ चार मूर्ति धर दरशन आये चार वेद निज रूप ।अस्तुति करी बहुत नानाविधि रीझे कोशलभूप ॥३०३शिव विरंचि नारद सनकादिक सब दरशनको आये ।रामराज बैठे जब जाने सबहिन मन सुख पाये॥३०४॥ लोकपाल अतिही मन हरषे सब सुमनन बरषायो।पुष्पविमान बैठि हरि आये लै कुबेर पहुँचायो॥ ॥ ३०५ ॥ अति आनन्द भयो अवनीपर रामराज सुखदास । कृतयुग धर्म्म भये त्रेतामें पूरण रमा प्रकास ॥ ३०६ ॥ अश्वमेधबहु यज्ञ किये पुनि पूजे द्विजन अपार । हय गज हेम धेनु पाटम्बर दीन्हें दान उदार ॥ ३०७ ॥ चरित अनेक किये रघुनायक अवधपुरी सुख दीन्हों । जनकसुता बहु लाड लडावत निपट निकट सुख कीन्हों ॥ ३०८ ॥ जौन वसंत बहुत द्रुम फूले जनकसुता अनुरागे । प्रेमप्रवाह प्रकट प्रकटायो होरी खेलनलागे ॥ ३०९ ॥ कबहुँक निकट देखि वर्षातऋतु झूलत सुरँग हिंडोरे । रमकत झमकत जनकसुता सँग हावभाव चित चोरे ॥ ३१० ॥ कबहुँक कमल सरोवर उपवन जनकसुता सँग लीन्हें । नाना जलविहार विहरतहैं सन्तजनन सुखदीन्हें ॥३११ ॥ कबहुँक रत्न महल चित्रसारी शरद निशा उजियारी । बैठे जनकसुता सँग विलसत मधुर केलि मनुहारी ॥ ३१२ ॥ कबहुँक अगरधूप नानाविधि लिय सुगन्ध सुखकारी। कबहुँक निरतत देवनटीलखि रीझतहैं सुखभारी ॥ ३१३ ॥ रामविहार कहेउ नानाविधि वाल्मीकि मुनि गायो ।वर्णत चरित विस्तार कोटिशत तऊ पार नहिं पायो ॥ ३१४ ॥ सूर समुद्रको बुन्द भई यह कवि वर्णन कह करिहै । कहत चरित रघुनाथ सरस्वति बौरी मति अनुसारिहै ॥ ३१५ ॥ अपने धाम पठाय दिये तब पुरवासी सब लोग । जे जे जे श्रीरामकल्पतरु प्रकट अयोध्या भोग ॥ ३१६ ॥ दुष्ट नृपति जब बैठे भुवपर धरि भृगुपतिको रूप । क्षणमें भुवको भार उतारयो परशुराम द्विजभूप ॥ ३१७ ॥ व्यासरूप ह्वै वेद विस्तारे कीन्हें प्रकट पुराणन । नानावाक्य धर्म थापनको तिमिरहरण भुवभारन ॥ ३१८ ॥ बुद्धरूप कलिधर्म प्रकाश्यो दया सबनको मूल ।दूरकियो पाखण्डवाद हरिभक्तनकोअनुकूल॥३१९ ॥कलिके आदिअन्तकृतयुगके है कलंकी अवतार । मारि मलेच्छ धर्म्म फिर थाप्यो भयो जग जयजयकार ॥ ३२० ॥कर्मवाद थापनको प्रकटे पृश्नि गर्भ अवतार। सुधापान दीन्होंसुरगणकोभयो जग यशविस्तार ॥ ३२१॥ असुरनको व्यामोहकियोहरिधरोमोहनीरूप ।अमृतपानकराय सुरनकोकीन्हेंचरितअनूप॥३२२॥

तैसेही भुवभार उतारन हरिहलधर अवतार । कालिंदी आकर्ष कियो हरि मारे दैत्य अपार ॥ ॥ ३२३ ॥ गज अरु ग्राह लडेउ जलभीतर तब हरिसुमिरण कीन्हों ।छोडिगरुड सुखधामसांवरो भक्तनको सुख दीन्हों ॥ ३२४ ॥जब बहु असुर बढे पृथवी पर कियो अनर्थ विस्तार।सत्यसेन प्रगटे विश्वम्भर सत्य कियोहै अपार॥३२५॥निज वैकुण्ठ वसाय रमापति कियो रमाको हेत ।विनती सुनि कमलाकी केशव कीन्हों सुख संकेत ॥ ३२६ ॥ ब्रह्मचर्य्य थापनके कारण धरो विभु अवतार ।जहँ तहँ मुनिवर निज मर्य्यादा थापी अघट अपार॥ ३२७॥अजितरूप ह्वै शैल धरो हरि जलनिधि मथवे काज ।सुर अरु असुर चकित भये देखत किये भक्तके काज॥ ॥ ३२८॥जब बलिराजा गये देपुरर लीन्हों स्वर्ग छुडाय। अदिती दुखित भई कश्यपसों विनतीकरी सुनाय ॥ ३२९ ॥तब कश्यप मुनि कहेउ पयोव्रत विधिसों करो बनाय । ताकी कोखि जन्म हरि लीन्हों श्रीवामन सुखदाय॥ ३३०॥भादों श्रवणद्वादशी शुभ दिन धरेविप्र हरिरूप ।शिव विरंचि सनकादिक आये वन्दनको सुखभूप ॥ ३३१ ॥ यज्ञोपवीतविधोक्त कियो विधि सब सुर भिक्षा दीन्हीं।वामनरूप चले हरि द्विजवर बलिकीमनसुधि कीन्हीं॥३३२॥ दण्ड कमंडलु हाथ विराजत अरु ओढ़े मृगछाला । धरि बटुरूप चले वामनप्रभु अम्बुजनयन विशाला ॥ ३३३ ॥ सूरज कोटि प्रकास अंगमें कटि मेखला विराजे । करी वेदध्वनि नृपद्वारेपै मनहु महाघनगाजे ॥ ३३४ ॥ सुनिधायो तबहीं बलिराजा आय चरण शिरनायो।विनती करी बहुत सुख मान्यो आज भयो मनभायो ॥ ३३५॥ चलिये विप्र यज्ञशालामें जहँ द्विजवर सब राजें । आये ब्रह्मसभामें वामन सूरज तेज विराजें ॥ ३३६॥ तब नृप कहेउ कछू द्विज माँगो रतन भूमि मणिदान । हय गज हेम रतन पाटम्बर देहौं प्रगट प्रमान॥३३७ ॥तब बोलेवामनयह बाणी सुन प्रह्लाद कुल भूप । बहुत प्रतिग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप॥३३८ ॥ तीन पैंड वसुधा हम पावें पर्णकुटी इक कारण । जब नृप भुव संकल्प कियो है लागे देह पसारन ॥ ३३९ ॥ एक पैरमें वसुधा नापी एक पैर सुरलोक । एक पैर दीजे बलि राजातब ह्वैहो विनशोक ॥३४० ॥नापो देह हमारी द्विजवर सो संकल्पित कीन्हों । सुनि प्रसन्न वामन यों बोले तैं मोको वश कीन्हों ॥ ३४१ ॥सदाद्वार तेरे ठाढोहै दरशन देहौं तोहि। मायाकाल कबहुँ नहिं व्यापे सुमिरन करतें मोहि ॥ ३४२ ॥सुतललोकमें थिरकरि थाप्योजहँ विभुत अति भारी । गहिके गदा द्वारपर ठाडे वामन ब्रह्म मुरारी ॥ ३४३ ॥ स्वर्गलोक दीन्हों सुरपतिको पुनि थिरकरि कर थाप्यो । निगमनेति कहि रटत निरन्तर देवशत्रु सब कांप्यो ॥ ३४४ ॥वामनरूप ब्रह्महरि प्रगटे जिनको यश जग गावे ।शेषसहसमुख रटत निरंतर सूर पार किमि पावे ॥ ३४५ ॥ पुनि बलिराजहि स्वर्गलोकमें थपेंगे हरि राय । सार्वभौम अवतार धरेंगे श्रीवामन सुखदाय ॥३४६ ॥पुनि विभुरूप एक हरि लैंगे सकल जगत कल्याण। कपट खण्ड पाखण्ड असुरकों थापे भक्त निदान ॥ ३४७ ॥ विष्वकसेन रूप हरिलैंगे कीन्हों शिवको हेत । असुर मारि सब तुरत बिडारे दीन्हें रुद्रनिकेत ॥ ३४८ ॥धर्मसेतु ह्वै धर्मबढायो भुविको धारण कीन्हों। शेषरूप ह्वै धराशीश फिर सब जगको सुख दीन्हों ॥३४९ ॥ अन्तर्यामी पालन कारण निज सुधर्म धरि रूप। अन्नदान दै सब जग पोष्यो किये काज सुर भूप ॥ ॥ ३५० ॥योगपन्थ पातंजलि भाष्यो सोउ क्षीण सब जान्यो । योगीश्वर वपु धरि हरि प्रकटे योगसमाधि प्रमान्यो॥३५१ ॥ क्रिया पंथ श्रुतिने जो भाष्यो सो सब असुर मिटायो । वृहद्भानु

ह्वैके हरि प्रकटे क्षणमे फिरि प्रकटायो ॥ ३५२ ॥ यह अनेक अवतार कृष्णके को करि सकै वखान। सोई सूरदासने वरणे जो कहे व्यास पुराण॥ ३५३॥ अंशकला अवतार श्यामके कवि-पै कहत न आवैं। जहँ जहँ भीर परत भक्तनको तहँ तहँ वपुधरि धावैं ॥ ३५४ ॥ मायाकला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह धरि रूप। वायु वरुण यम औ कुवेर शशि मृत्युअग्नि सुर भूप ॥ ॥ ३५५ ॥ रवि शशि भृगु मरीचि सुरगुरु अरु चार वेदवपु जान। जगको प्रकटकरनपरजापति प्रकटे कलानिधान ॥ ३५६ ॥ जो जो भूप भये भूमण्डल लोकपाल निजजान। निज महिमा हरि प्रकट करी है विधिके वचन प्रमान ॥ ३५७ ॥ सुर अरु असुर रची हरि रचना सो जग प्रगटहि कीन्हीं। क्रीडाकरी बहुत नानाविधि निगम बात दृढ चीन्ही ॥३५८ ॥ यहि विधि होरी खेलत खेलत बहुत भाँति सुख पायो। धरि अवतार जगतमें नाना भक्तन चरित दिखायो ॥३५९ ॥अंश कला अवतार बहुत विधि राम कृष्ण अवतारी। सदा विहार करत ब्रज मण्डल नदसदन सुखकारी ॥ ३६० ॥ नित्य अखण्ड अनूप अनागत अविगत अनघ अनन्त। जाको आदि कोउ नहिं जानत कोउ न पावत अन्त ॥ ३६१ ॥ जब हरिलीलाकी सुधि कीन्ही प्रगट करन विस्तार। श्रीवृषभानु रूप ह्वै प्रकटे पुनि ब्रजराज उदार ॥ ३६२ ॥विद्या ब्रह्म कही यशुमतिसों जाकी कोखि उदार। सोरहकला चन्द्र जो प्रगटे दीन्हो तिमिर विदार ॥ ३६३॥ पुनि वसुदेव देवकी कहियत पहिले हरिवर पायो। पूरण भाग्य आय हरि प्रकटे यदुकुल ताप नशायो ॥३६४॥ आठें बुद्ध रोहिणी आई शंखचक्र वपुधारो।कुण्डल लसत किरीट महाध्वनि वपु वसुदेव निहारो ॥३६५॥ अस्तुति करी बहुत नानाविधि रूप चतुर्भुज देख्यो । पीताम्बर अरु श्याम जलद वपु निरखि सफल दिन लेख्यो ॥ ३६६ ॥ तब हरि कहेउ जन्म तुम्हरे गृह तीन बार हम लीनो ।पृश्नीगर्भ देव ब्राह्मण जो कृष्णरूप रँग भीनो ॥ ३६७ ॥ माँगो सकल मनोरथ अपने मनवांछित फल पायो। शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म ले आयो ॥ ३६८ ॥यह भुवभार उतारन कारन हलधरके संग लायो। क्रीडा करो लोक पावनकर करो भक्त मन भायो ॥३६९॥प्राकृत रूप धरो हरि क्षणमे शिशु ह्वै रोवनलागे। तब वसुदेव देवकी निरखत परम प्रेमरसपागे ॥ ३७० ॥ तब देवकी दीन ह्वैभाष्योनृपकोनाहिं पतीजे॥अहोवसुदे-वजाव ले गोकुल कह्यो हमारो कीजे ॥ ३७१ ॥ तबले हरिपलना पौढाये पीताम्बरजु उढायो। तब वसुदेव शीश धरि पलना भयो मगन मनभायो ॥ ३७२॥ गोकुलचले प्रेमआतुर ह्वै खुलि-गये कपट कपाट। सोयें श्वान पहरुआ सोये सबै मुक्त भई वाट ॥ ३७३ ॥तब वसुदेव लियो करपलना अपने शीश चढायो। रैन अँधेरी कछु नहिं सूझत अटकर अटकर आयो ॥३७४॥ शेष सहसफण ऊपर छाये घनकी बूँद बचावैं। आगेसिंह हुकारत आवत निर्भय वाट जनावैं॥ ॥ ३७५ ॥यमुना अतिजलपूर बहतहै चरणकमल परशायो। मारग दीन्हो राम सिंधुज्योनन्दभ-वन चलिआयो ॥ ३७६ ॥ पहुँचेआय महर मन्दिरमे नेकन शंका कीन्ही। बालक धरि लैके सुरदेवी सुरति गवनकी कीन्ही ॥ ३७७ ॥ ले वसुदेव तुरतघरआये काहू जिय नहिंजाने। जब वह रोवनलागी तब सब जागपरे अकुलाने ॥ ३७८ ॥बालक भयो कह्यो नृपसों जबद्वारि कंस तबआयो। करगहि खड्ग कह्यो देवकिसों बालक कहँ पहुँचायो ॥ ३७९ ॥ तब देवकीअधीन कह्यउ यह मै नहिं बालकजायो। यह कन्या मोहिं बकस वीर तू कीजे मोमन भायो ॥३८०॥ कंस वशको नाश करत है कहा समुझ रिसयानी। मोको भई अनाहद वाणी ताते डर नहिं

जानी ॥२८१ ॥ कन्या माँगलई तब राजा नेकु शंक नहिं आनी । पटकत शिला गई आकाशै कंस प्रतीत न मानी ॥ २८२ ॥भइ अकाशवाणी सुरदेवी कंस यहाँ अब आई । तेरो शत्रुप्रकट कहुँ व्रजमें काहु लख्यो नहिं जाई ॥ २८३ ॥ जैसे मीन करत जलक्रीडा जलमें रहत समाई । त्यों तुवकाल प्रकट इक कनहूँ लखि न सकत तेहि कोई ॥ २८४ ॥ अन्तर्द्धान भई सुरदेवी कंस प्रतीत जो मानी । तब वसुदेव देवकी के गृह कंस गयो यह जानी ॥२८५॥क्षम अपराध देवकी मेरो लिख्यो न मेट्यो जाई । मैं अपराध किये शिशु मारे करजोरे विल्लाई ॥२८६॥ पुनि गृह आय सेजपर सोयो नेकु नींद नहिं आवे।देश देशके दूत बुलाये सबहिन मतोसुनावै॥ ॥२८७ ॥दीनहीन जो असुर चढत वलि करत सकल पुनि तैसो । बुझत नहिं तब भार उतारेउ जलको माखन जैसो ॥२८८ ॥ भयो भोर यशुमति गृह आनँद मंगलचार वधाई॥ जागी महरि पुत्र मुख देख्यो आनँद उर न समाई ॥२८९ ॥ जैसे शशि प्रकटत प्राचीदिशि सकलकला भरिपूर । यशुमतिकोख आय हरि प्रकटे असुरतिमिर कर दूर ॥२९० ॥ नन्दराय घर ढोटा जायो महर महासुख पायो । विप्र बुलाय वेदध्वनि कीन्ही स्वस्ती वचन पढायो ॥ ॥२९१ ॥ जातकर्मकर पूजि पितर सुरपूजन विप्र करायो । दोइलख धेनुदई तेहि अवसर बहुतहि दानदिवायो२९२ पर्वतमात तिलनको कीन्हों रत्ननओघमिलायो । मागध सूत और वन्दीजन ठौर ठौर यश गायो ॥२९३॥वाजे वजत विचित्र भाँतिसों ग्वाउ घोप सब गाज । सुर सुमनन वरपावत गावत व्योम विमानन माज॥२९४ ॥ बांधत वन्दनवार साथिय द्वारेध्वजा सुहाई । कनक कलश प्रतिपौर बिराजत मंगलचार वधाई॥२९५॥सुरभी वृपभ सिंगारे बहुविधि हरदी तेल लगाई। सुवरण माल विचित्र धातुरंग अँग अँग चित्र वनाई ॥२९६॥आये गोपभेंटलैलैके भूपण वसन सोहाये । नानाविधिउपहारदूध दधि आगेधरि शिरनाये ॥ २९७ ॥यशुमतिके गृह पुत्र प्रकटभयो सुनीसकल व्रजनारी । मंगलसाज सँवार हाथले वरवर मंगलकारी॥२९८॥ अति आतुरह्वै चलीं झुण्डजुरि शिर सुमनन वरसावैं । मानों रीझ मधुप धरणीको रस पराग दरशावैं ॥ २९९ ॥ पहुँचीं जाय महर मन्दिरमें करत कुलाहल भारी । दरशनकरि यशुमतिसुतको सब लेनलगीं बलिहारी ॥ ४०० ॥ नाचतगोपपरस्पर सब मिलि छिरकतहैं नवनीत। दूध औरदधि और हरदजल सींचतहैं कर प्रीत ॥ ४०१ ॥ यशुमतिकोखिसराहि वलैया लेनलगीं व्रजनार। ऐसो सुत तेरे गृह प्रकट्यो या व्रजको शृंगार ॥ ४०२ यशुमति रानी देति वधाई भूपण रत्न अपार । फूलीफिरत रोहिणीमइया नखशिख करशृंगार ॥ ४०३॥ देत अशीशचलींव्रजसुन्दरि जियउपज्योसुखभारी।गृहपूजनसब कियो वेदविधि नंदराय सुखकारी॥४०४॥देशदेशतेढाढीआये मनवांछित फलपायो । को कहि सकै दशा धीउनको भयो सबन मन भायो ॥ ४०५ ॥तादिनते सगरे या व्रजमेंरमारूप दरशायो।निजकुल वृद्ध जानि इक ढाढी गोवर्धनते आयो ॥ ४०६परम उदार महरव्रजपतिजू ढाढी निकट बुलायो । वाजत हुडुक मँजीरा नूपुर नानाभाँति नचायो ॥ ॥४०७ ॥ झँगापगा अरु पाग पिछोरी ढाढिनकोपहिरायो । हरिदरियाई कठलगाई परदरशात उठायो ॥ ४०८॥बहुतदान दीन्हें उपनँदजूरतनकनक मणि हीराधरानन्दधनबहुतहि दीन्होंज्यों वरपत घन नीर ॥ ४०९ कुण्डल कान कंठ माला दे ध्रुवनँद अति सुखपायो । सीधोबहुत सुर सुरानँदै गाडाभरि पहुँचायो॥४१०॥कर्माधर्मानन्दकहत हैं बहुतहिदानदिवायो । व्रजरानीढाढिन पहिराई मनवांछित फल पायो ॥ ४११ ॥ चले भवनको दै अशीश दोउ निर्भय कीरति गावें।

जिन यांचे व्रजपति उदार अति याचक फिर न कहावैं ॥ ४१२॥नानाविधिके विविधखिलौना रत्नन अधिक अमोले। ताको लेनगये मथुराको आनकदुन्दुभि बोले ॥ ४१३ ॥ वेगजाव गोकुल तुम अबहीं सुनियतहै उतपात। सुनि व्रजराज तुरत घर आये जियमें अति अकुलात ॥४१४॥प्रथम पूतना कंस पठाई अतिसुन्दर वपु धारयउ। घसिकै गरल लगाय उरोजन कपट न कोउ निहारयउ ॥॥४१५॥लिये उठायश्यामसुन्दरकोथनगहिकेमुखलीन्हों।लीन्हें खींचिप्राण विप पय युत देह विकल तब कीन्हों ॥ ४१६ ॥ छोड छोड कहि परी धरणिपर कर चरणन जु पसार। योजन डेढ विटप वेली सब चूरचूरकरडाल ॥४१७॥ताकोजननीकी गतिदीन्हींपरमकृपाल गुपाल। दीन्हीं फूंक काठ तन वाको मिलके सकल गुवाल ॥ ४१८॥ तबहीं नन्दरायजू आये कौतुक सुनि यह भारी। विस्मितभये देवनेराख्यो बालक यह सुखकारी ॥ ४१९ ॥ विप्रबुलाय वेदध्वनि कीन्हीं रक्षा बहुत कराई।आरति विविध उतार महरजू मंगल करतबधाई ॥ ४२० ॥ एकदिना हरि लई करोटी सुनिहरषी नँदरानी।विप्रबुलायस्वस्तिवाचन करि रोहिणिनैनसिरानी ॥ ४२१ ॥ नित मंगल नित होत कुलाहल नितनित बजत बधाई। भादों देव छट्ठिको शुभ दिन प्रगटभये बलभाई॥ ४२२ ॥ वर्ष दिवस पहिले व्रजमण्डल शेष महा वपु लीन्हों। अपनो धाम जान प्रगटो भुव रूप प्रगट निज कीन्हों ॥ ४२३॥कंसनृपतिने शकट बुलायो लेकर बीरा दीन्हों। आय नन्दगृह द्वार नगरमें रूप शकटको कीन्हों ॥ ४२४ ॥ मारी लात श्याम पलनाते परयउ धरणि भहराय। जहँ तहँते दौरे व्रजवासी श्यामहिं लियो उठाय॥ ४२५ ॥ वच्छपुच्छ लै दियो हाथपर मंगलगीत गवायो। यशुमतिरानी कोखिसिरानी मोहनगोदखिलायो ॥ ४२६ ॥इक दिन अस्तनपान करावति यशुमति अति बडभागी। वदनपसारि विश्व दिखरायो क्षणइक मुरछा जागी ॥ ४२७॥ तृणावर्त विपरीति महाखल सो नृपरायपठायो। चक्रवातह्वै स॰ल घोषमें रजधुंधर ह्वै छायो ॥ ४२८ ॥चल्यो उठाय गुपाल व्योममें तब हरि कंठ गहायो पटक्यो शिला खरिकके आगे क्षण निरजीव करायो॥४२९ ॥गर्गराज मुनिराज महाऋषि सो वसुदेव पठायो। नामकरण व्रजराज महरघर अति आनन्दित आयो॥४३०॥नामकरण कीन्हों दोहुनको नारायणसम भाषे। तुम्हरेदुःख मिटावनकारण पूरणको अभिलाषे ॥ ४३१ ॥ राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज।बहुतहि काज करैंगे तुम्हरे सुनहु महर व्रजराज ॥ ४३२ ॥ एकदिना पलना हरि पौढे नन्दमहरके द्वार।नँदरानी गृह कारज लागी नाहिंन लई सँभार ॥ ४३३ ॥ कंसनृपति इक असुर पठायो धरेउ कागको रूप।सम्मुख आय नयन दोउ जोरे देख्यो श्यामको रूप॥४३४ ॥ कंठ चाप बहुबार फिरायो पटक्यो नृपके पास। एक याममें वचन कह्यो यह प्रगट भयो तुव नास ॥४३५॥यह कहिके तनु त्याग कियो उन कंसनृपतिके आगे।भयो उदास सुहात न कछु ये क्षण सोवत क्षण जागे ॥ ४३६ ॥ एकदिना व्रजराज महरजू और यशोदारानी। घुटुवन चलत श्यामको देखत बोलत अमृतबानी॥ ४३७ ॥ इतते नन्दमहर बोलतहैं उतते जननि बुलावत। सुन्दरश्याम खिलौना कीन्हों हँसि हँसि मोद बढावत॥४३८॥शशिको देख और हरिठानी कर मनुहार मनावत। मधु मेवा पकवान मिठाई विविध खिलौना लावत॥ ४३९ ॥ कमलनैनको महर यशोदा जलप्रतिबिंब दिखावत।फेरतहाथ चंद्र पकरनको नाहिंन होत लखावत ॥ ४४० ॥ वृद्धेवाघू दरशन आये लाल चंद्रमणि दीन्हों। ताको देख और सब छांडी भोजनकी सुधि कीन्हों ॥ ४४१ ॥ औट्यो दूध कपूर मिलायो प्यावत कनक कटोरे। पीवत देखि रोहिणी यशुमति

डारतहैं तृण तोरे ॥४४२॥ कछु दिन भये सग दोउ बालक बल मोहन दोउ भाई । चोरी करत हरत दधि माखन लील कहिय न जाई ॥४४३ ॥ सब ब्रजनारी उरहन आई ब्रजरानीके आगे । मैं नाहिन दधि खायो याको शिशु है रोवनलागे ॥ ४४४ ॥ एकदिना ब्रजपतिकीपौरीखेलतहरि ब्रजबाल । माटी खाय वदन दिखरायो चचल नयनविशाल॥ ४४५ सकल ब्रह्मांड उदरमें देख्यो ब्रजमडल सताल । नन्द महर यशुदा रोहिणि पुनि धेनु सकल ब्रजग्वाल ॥ ४४६ ॥ हृदयज्ञान उपज्यो तब यशुमति पूरण ब्रह्म विशेखे । हरि उपजाई माया तब सब बहुरि पुत्रकरि लेखे ॥ ॥ ४४७ ॥ एकदिना दधि मथन करतही महर घोषकी रानी । हरि माग्यो माखन नहिं दीन्हो तब मनमें रिस ठानी ॥ ४४८ ॥ फोरे भांड दही आगनमें फैलपरेउ अति भारी । दौरी पकर देत नहिं मोहन अति आतुर महतारी ॥ ४४९ ॥ जानी विकल बहुत जननीको हरि पकराई दीनी । बहुत दाम ले बाँधनलागी अँगुरी द्वै भइ हीनी॥ ४५० ॥व्याकुल भई बँधन नहिं मोहन दया श्यामको आई । उखल दाम बँधे हरि जाने गोपी देखन धाई ॥४५१ ॥तौलौं बधे दैन दामोदर जौलौं यह कृतकीनी । देख दुखित द्वै सुत कुबेरके कृपादृष्टि करि दीन्ही ॥ ४५२ ॥ नारद मुनिको शाप पायके श्याम दई गति ताय। निकसे बीच अटक उखलमेंश्यामरहे अटका- य॥ ४५३ ॥चरण परसि ते पुलकि भये भुन परे वृक्ष भहराय । भयो शब्द आघात स्वर्गलौं सुनि आये ब्रजराय ॥ ४५४ ॥ अस्तुति करि वेगये स्वर्गको अभयहाथकरिदीन्हो । बधनछोरि नद बालकको ले उछग कर लीन्हो ॥ ४५५ ॥ यशुमतिजूसो कहै महर जु तुम क्यों बाँध्यो दाम । गर्ग कहेउ मोही नारायण आये हैंबलश्याम ॥ ४५६ ॥यशुमतिमाय धाय उर लीन्होगई लोन उतारो । लेत बलाय रोहिणी नीके सुंदर रूप निहारो॥४५७ ॥ कबहुँककर करताल बजा- वत नाना भाति नचावत । कबहुँक दधि माखनके कारण आछी आर मचावत ॥ ४५८ ॥बडे गोप उपनन्द बुलाये नदमहरके धाम । कीन्हें मन्त्र गोपसब मिलिके जेहि विधि पूरणकाम४५९। बहु उत्पात रहत हैं गोकुल निज प्रति कस पठायो ।अंत जाय कछु वास करेंगे बालकदेन बचा- यो ॥ ४६०॥ अब वृंदावन जाय रहेंगे जहँ वीरुध तृण पानी । चले गोप अति ओप विराजे बोलत हो हो बानी॥४६१॥यमुना उतर आय वृन्दावन जहां सुखद द्रुम राजे ।गोवर्द्धनवृन्दावन यमुना सघन कुञ्ज अति छाजे ४६२ वसे जाय आनद उमँगसो गइया सुखद चरावें । आयो दुष्ट बकासुर जान्यो हरि चित घात धरावे ॥४६३ ॥करि विचार छिनमे हरि मारो सो बछरा बनआज । तापाछे जो बकासुर आयो घात कियो ब्रजराज॥४६४॥बच्छ चरावन वेणु बजावत गोप सखनके सग । सो देखत चतुरानन आये हरि लीला रसरग॥ ४६५ ॥छाकें खात खवा- वत ग्वालन सुन्दर यमुनातीर।ग्वालमडली मध्य विराजत हरि हलधर दोउ वीर॥ ४६६॥गाय गोप अरु बच्छ सबै विधि छिनहीमेंहरिलीन्हो।सबको रूपभयेहरिआपुननेकविलम्ब न कीन्हो ॥४६७॥ जबही गर्वगयो चतुरानन अद्भुत चरितहिंदेख। परोधाय हरिपाय जोरि कर नाथ कृपा करलेख ॥४६८॥अस्तुतिकरी वेदविधि करके चतुरानन बहुभांति । अद्भुत चरित देख माधो- को हँसत सकल किलकाति ॥४६९ ॥गयेधाम अपने विधि सुखसो हरिआज्ञा सुखपाय । वर्ष- दिवसलौं सर्वरूप हरि ब्रजवासिन सुखदाय॥४७०॥धेनु चरावनचले श्यामघन ग्वालमंडलीजोरा हलधरसग छाक भरि काँवर करत कुलाहलशोर॥४७१॥क्रीडा करत आप वृन्दावन धेनुसमूह नचावत। गोवर्धन पर वेणु बजावत फूलन भेष सँवारत ॥ ४७२ ॥ कालीनाग नाथ हरिलाये

सुरभी ग्वालजिवाये। कनक कमलके बोझ शीशधरि मथुरा कंस पठाये॥ ४७३ ॥दावानलको पान कियो मुख गोपन रक्षा कीनी। वर्षा सुऋतु देख वृंदावन क्रीडाकी सुधि लीनी॥ ४७४ ॥ वेणु बजाय विलास कियोवन धौरी धेनु बुलावत। वरहापीडदाम गुञ्जामणि अद्भुतभेष बनावत ॥४७५॥ प्रातकाल अस्नान करनको यमुना गोपि सिधारी।लैकेचीर कदम्ब चढे हरि विनवत हैं व्रजनारी॥४७६॥दै वरदानसंग खेलनको शरद रैनि जब आई। रचिकै रास सवन सुख दीन्हों रजनी अधिक कराई॥४७७ ॥गोवर्धन धरि सब व्रज राख्यो मघवा मान मिटायो। नारायण प्रकटे सब जाने जोइ गर्गमुनि गायो ॥४७८॥धेनुक और प्रलम्ब सँहारे शंखचूड वध कीन्हों। करिकै चरण परस प्रभु वनमें व्याल अभयपद दीन्हों॥४७९॥ नानाविधि क्रीडा हरि कीन्हीं व्रजवासिन सुख पायो। सबहिन यह मांग्यो विनती कर हरि बैकुंठदिखायो ॥ ४८०॥अभयदान दीन्हों मघवाको नंदरायको राख्यो। वरुणलोकमें गये कृपा करि विविध वचन उन भाख्यो ॥४८१॥यज्ञ करत ब्राह्मण मथुराके ओदन श्याम मँगायो। उन नहिं दियो नारिपै पठये तब उन सुनि सुख पायो ॥ ४८२ ॥ षटरस थार सँवार साजसों सबही हरिपै आई।कियो मनोरथ पूरण उनको निर्भय करि जु पठाई॥ ४८३ ॥व्योमासुर केशी सब मारे अरु अरिष्ट वध कीनो। क्रीडा बहुत करी गोकुलमें भगतनको सुख दीनो ॥ ४८४ ॥ नारद आय कहेउ नृपसों यह कौन नींद तू सोवे। तेरो शत्रु प्रकट गोकुलमें गुप्त नजानत कोवे ॥ ४८५ ॥ यह सब देव प्रकट भये व्रजमें जहँ तहँ ठौरहि ठौर।उग्रसेन वसुदेव देवकीयादव जेसब और ॥४८६ ॥ नंदगोपवृषभान यशोदा सबहि गोपकुल जानो। करो उपाय वचो जो चाहो मेरो वचन प्रमानो ॥ ४८७॥ यह सुनि कंस सबनको बन्धन दीनोहै त्यहिकाल। श्रीवसुदेव देवकी निज पितु बन्धन दियो विशाल॥ ॥ ४८८ ॥ फिरि नारद गोकुल हो आये हरि चरणनशिरनाये। अस्तुति करी बहुत नानाविधि मधुरे बीन बजाये॥ ४८९ ॥ हरि कछु इन उत्तर नहिं दीनो फिरगये अपने धाम। बल मोहन सब सखा वृन्द ले क्रीडत गोकुल ग्राम ॥४९०॥ बल अक्रूर कंस यह भाष्यो सुन सुफलकसुत बात। राम कृष्णको लावो मधुपुर विलमकरो जनि जात ॥४९१ ॥तब रथ बैठ चले सुफलक-सुत संध्या गोकुल आये।पैंडेमें हरिचरण धूरिलै अपने अंग लगाये ॥ ४९२ ॥ मिले नंद बलदेव रोहिणी और यशोदारानी।पूजा करि पधराय सदनमें भोजनकी विधि ठानी॥४९३ ॥ भोजन करि अक्रूर जो बैठे सब वृत्तांत सुनाये। धनुषयज्ञ कीन्हों नृपजूने सबको वेग बुलाये ॥ ४९४ ॥ चले महर व्रजराज साज लै कौतुक देखन आज।राम कृष्ण दोउ आगे लैकै सकल घोष शिरताज ॥ ४९५ ॥मारगमें कालिंदीके तट कीन्हों जल असनान।निज बैकुंठ दिखायो जलमें दीन्हों पूरण ज्ञान ॥४९६॥करि वंदन हरिके चरणनको पुनि अक्रूर यह भाख्यो । तुम यदुकुल प्रकटे पुरुषोत्तम भक्तनको प्रण राख्यो ॥४९७॥मथुरा आये रहे उपवनमें नंदराय सब गोप।रामकृष्णके चरण परसते अधिक मधुपुरी ओप ॥ ४९८॥ गये नगर देखनको मोहन बलदाऊ ले साथ। पुर कुल वधू झरोखन झांकत निरख निरख मुसक्यात॥४९९॥मारगमें यक रजक सँहारचो सबहि वसन हरि लीन्हें। बालक मिल्यो सबहि पहिराये सबहिनको सुख दीन्हें ॥५००॥आगे मिल्यो सुदामा माली फूल माल पहिराई।निर्भयदान दियो हरि तिनको अविचल भक्ति दृढाई॥५०१॥ कुब्जा घिसि चन्दन लैआई मारग देखन आई।हरि माँग्यो उन लेजु समर्प्यो मन बांछित फल पाई॥५०२॥ दियो वरदान भवन आवनको तहांते चले कन्हाई।मथुरानगर देख मनमोहन

फूले रे दोउ भाई ॥ ५०३ ॥ रीझन नारि कहत मथुराकी आपुसमें ह्वै मैन । कोमल गात कौनको ढोटा सुन्दर राजिवनैन ॥ ५०४ ॥ यह बालक सुकुमार सरस वपु असुर प्रबल अतिभारी । कैसेके वाको मारेंगे सोचतहैं पुरनारी ॥ ५०५ ॥ उपवन आय कियो हरि व्यारू नन्दराय सुख दीन्हो । मधु मेवा पकवान मिठाई जो भायो सो लीन्हो ॥ ५०६ ॥ पौढे जाय दोउ शय्यापर सोवत आई निंद । स्वपनेमें मथुरा फिर देखी जागे बालगोविंद ॥ ५०७ ॥ भयो प्रात नृप फेर बुलायो धनुषयज्ञको देखन । मल्लयुद्ध नानाविध क्रीडा गजद्वारको पेखन ॥ ५०८ ॥ गये व्रजराज द्वार भूपतिके कर उपहार दिवाये । तब नृप कह्यो सकल गोपनसों भलीकरी तुम आये ॥ ५०९ ॥ बैठारे सब मंच आपसों कौतुक देखनलागे । राम कृष्ण सँग ग्वालमण्डली नगर दरस अनुरागे ॥ ५१० ॥ तोरेउ धनुष टूक करिडारे दोउन आयुध कीने । तासु मारि करि चूर पहरुआ परममोद रसभीने ॥ ५११ ॥ मद गजराज द्वारपर ठाढो हरि कहेउ नेक बचाय । उन नहिं मान्यो सन्मुख आयो पकरेउ पूछ फिराय ॥ ५१२ ॥ दियो पटाय श्याम निजपुरको मारत महि गजराज । आगे चले सभामें पहुँचे जहँ नृप सकल समाज ॥ ५१३ ॥ बडेबडे राजा सब बैठे अरु पुरवासी लोग । अपने अपने भाव सु देखत मिट्यो सकल मनशोग ॥ ५१४ ॥ मल्लन सबन मल्लसे दीखे नृपन लखे नृपराय । युवतिन सबै कामवपु दरसे भेंटनको ललचाय ॥ ५१५ ॥ गोपन सखाभाव करि देखे दुष्ट नृपति कृतदण्ड । पुत्रभाव वसुदेव देवकी देखें नित्य अखण्ड ॥ ॥ ५१६ ॥ विदुष जनन विराट प्रभु दीसे अति मनमें सुखपायो । परम तत्त्व देख योगी जन हितसों ध्यान लगायो ॥ ५१७ ॥ यदुकुलके कुल दीपक प्रकटे सब यादव सुखदाई । कंस देखि निजकाल आपनो बढतहि क्रोध रिसाई ॥ ५१८ ॥ जब उन कह्यो मल्लक्रीडा तुम करत गोपके संग । वृन्दावनमें हम सुनियत है क्रीडत हौ बहुरंग ॥ ५१९ ॥ अब तुम कंस नृपतिको दिखावो मल्लयुद्ध करि नीके । कह्यो चाणूर मुष्टि सब मिलके जानत हौ मन जीके ॥ ५२० ॥ तब हरि भिरे मल्लक्रीडा करबहु निधि दाव देखाये । वर्णन कियो प्रथम सकेषन अबहू वर्ण न पाये ॥ ५२१ ॥ मुष्टिकसाथ लरे बलभाई बेरेउ वृहदवपु दोउ । छिनहीमें हरि तुरत सँहारे अतिआनँद मनहोउ ॥ ५२२ ॥ और मल्ल मारे शल तोशल बहुत गये सब भाज । मल्लयुद्ध हरि करि गोपनसों लखि फूले व्रजराज ॥ ५२३ ॥ तब नृपकंस बहुत बिल्लायो बारबार रिसयाई । बांधो नंद हरो गोपन धन कीन्हों कपट दुराई ॥ ५२४ ॥ फागुनवदि चौदशको शुभदिन अरु रविवार सुहायो । नखत उत्तरा आप बिचारेउ काल कंसको आयो ॥ ५२५ ॥ यह कहि कूदगये हरि ऊपर जहँ बैठे नृपराय । हरिको देखि खड्ग कर लीन्हों सन्मुख आयो धाय ॥ ५२६ ॥ तब हरि केश पकरि अपने कर धरणी मांझ पछारो । ऊपर गिरे आपु तिहूँ पुरको बोझ शीशपर डारो ॥ ५२७ ॥ कचगहि आपु बहुत वह खैंच्यो हरि यमुनालौं आये । करिविश्राम सकल श्रम बीत्यो जबै यमुना जल न्हाये ॥ ५२८ ॥ बंधन छोर पिता माताके अस्तुति करि शिरनायो । तुम हमको पठये गोकुलमें याते लाड लडायो ॥ ५२९ ॥ यशुमति मात और व्रजपति ज बहुतहि आनँद दीनो । याते टहल करब नहिं पायो कहत श्याम रँगभीनो ॥ ५३० ॥ तब व्रजराज महरपै आय बल मोहन दोउ भाई । तुम्हरी कृपा कंस मैं मारे कहँ लौं करौं बडाई ॥ ५३१ ॥ रोहिणि यह बोली यशुमतिसों हम तुम्हरे सुखपायो । ज्यों तुम्हरो सुत त्यों मेरो सुत बहुतहि लाड लडायो ॥ ५३२ ॥ हिल मिल चले सकल व्रजवासी नंद गाँव फिरि आयो । सुवसन सीम मधुराता

दिनते उग्रसेन बैठायो ॥५३३॥ राम कृष्ण घरआये जाने पुरवासिन सुखपायो । मंगलचार भये घर घरमें मोतिन चौक पुरायो ॥ ५३४ ॥ तब हरि मात पितापै आये दोउ भाइन शिर नायो । बन्धन छोर विनय बहु कीन्हें तुम हमबिन दुख पायो ॥ ५३५ ॥ फिर वसुदेव बसे अपने गृह परम रुचिर सुखधाम । राम कृष्णको लाड लडावत जानत नहिं दिन याम ॥ ५३६ ॥ गर्ग बुलाय वेदविधि कीन्हों शुभ उपवीत करायो।विद्या पढ़न काज गुरु गृह दोउ पुरी अवन्ति पठायो ॥ ॥५३७॥ राजनीति मुनि बहुत पढ़ाई गुरु सेवा करवाये। सुरभी दुहत दोहनी मांगी बांह पसार देवाये ॥ ५३८ ॥ गुरुदक्षिणा देन जब लागे गुरुपत्नी यह मांग्यो । बालक बह्यो सिन्धुमें हमरो सो नितप्रति चितलाग्यो॥५३९॥यह सुनि श्याम राम दोऊ मिलि गये जलधिके बीच। परपंचानन शंख तहँ लीन्हों मारि असुर अति नीच ॥ ५४० ॥ यमपुर जाय शंखध्वनि कीन्हों यमराजा चलिआयो । चरणधोय चरणोदक लीन्हों बालक दे शिरनायो ॥ ५४१ ॥ ले बालक गुरु आगे धरिकै राम कृष्ण सुखरासी ।आज्ञाले मधुपुरी सिधारे परब्रह्म अविनासी ॥ ५४२ ॥ क्रीडा करत विविध मथुरामें अक्रूर भवन सिधारे। अस्तुति करी बहुत नाना विधि निर्भयकरशिर धारे ॥५४३॥ कुबिजाके घर आपु पधारे सबै मनोरथ कीनो । ऊधोभक्त संगलेके अति आनँद भक्तन दीनो ॥५४४॥ उद्धव भक्त बुलाय संगले हरि इकांत यह भाख्यो । ब्रजबासी लोगनसों मैंतो अन्तर कछु नहिं राख्यो ॥५४५॥सुरगुरु शिष्य बुद्धिमें उत्तम यदुकुल कहत प्रमान । मन्त्री भृत्य सखा मो सेवक याते कहत सुजान ॥ ५४६ ॥ मोकू लाड लडायो उन जो कहँलगि करें बडाई । सुनि ऊधो तुम समझत नाहिन अब देखोगे जाई ॥५४७॥ वेग जाव ब्रज मो आज्ञाते ब्रजवासिन सुख देहो । चरणरेणु शिरधरि गोपिनकी तुमहुं अभयपद लेहो ॥ ५४८ ॥ गोपिन-सों विनती करि कहियो नितप्रति मन सुधि करियो । विरह व्यथा बाढे जब तनुमें तब तब म्वहिं चितधरियो ॥ ५४९ ॥ पाती लिखी आपकर मोहन ब्रजबासी सबलोग । मात यशोदा पिता नन्दजू बाढो विरह वियोग ॥५५०॥धौरी धूमरि कारी काजर मैन मजीठी गाय।ताको बहुत राखियो नीके उन पोष्यो पयप्याय॥ ५५१ ॥वनमें मित्र हमारे यक हैं हमहींसो है रूप।कमल-नयनधनश्याम मनोहर सब गोधनको भूप॥५५२॥ ताको पूजि बहुरि शिर नइयो अरु कीजो परणाम । उन हमरो ब्रजसबहि बचायो सब विधि पूरे काम॥५५३॥आज्ञाले ऊधो श्रीपतिकी चलेवेग नँदग्राम ।पुष्करमाल उतार हृदयते दीनी सुन्दरश्याम ॥५५४ ॥ पीताम्बर अपनो पहि-रायो श्रुति कुण्डल पहिराये ।अपने रथ बैठाय प्रीतिसों उद्धव ब्रज पधराये ॥ ५५५ ॥दिनमणि अस्तभये गये गोकुल नँदरायसों भेंटे।बल मोहनदोउ देख माधुरी परमविरहदुख मेटे॥५५६॥ मिले नन्द बलराम कृष्ण दोउ हैं नीके यह भाख्यो।मारो कंस भली सब कीन्हीं यादवकुल सब राख्यो ॥ ५५७ ॥पूजा करि भोजन करवायो उद्धव संत सरायो ।सोवन निशा नेक नहिं पाये रामकृष्ण गुणगायो॥ ५५८ ॥यशुदा विकल बात पूछतिहै नयनन नीर प्रवाह । तन मनमें अतिही दुखबाढ्यो अति आतुर जनुदाह॥ ५५९॥बातें करत शेष निशिआई उद्धव गये सनान। सुमिरण कर फिर ब्रजमें आये गोपिन देखे-आन ॥५६०॥उद्धव देखि सकल गोपिनने कीन्ही मन अनुमान ।रथको देखि बहुत भ्रम कीन्हों धाँआये फिरकान ॥ ५६१ ॥ तब यक सखी कहै सुनरी तू सुफलकसुत फिरि आयो ।प्राणगये लै पिंड देनको देह लेन मन भायो॥ ५६२॥इतने देख कृष्ण अनुचर मुख उद्धव यह सब जानी। उद्धव कियो प्रणाम सबनको विनय कियो

मृदुवानी ॥५६३॥ भलीकरी तुम आये उद्धव लाये हरिकी पाती। जादिनते हरि गोकुल छांड्यो हमपर विरह बराती ॥ ५६४ ॥ इतने मांझ मधुप यक दरयो आय चरण लपटायो। ताको देख कहत उद्धवसों हरि गोकुल बिसरायो ॥५६५॥रे रे मधुप मितनके बन्धु चरण परस जिन कर्हि। प्रियाअङ्क कुंकुम कर गते ताहीको अनुसरिहौ॥५६६॥अधर सुधारस सकृत पान दे कान्ह भये अति भोगी। विजय सखा को मसी कहतदे तासों रहत संयोगी॥५६७॥ तीनलोक नारीको कहियत जो दुर्लभ वलबीर। कमलाहू नित पायँपे लोटत हमतो रे आभीर ॥५६८॥ पहिलेही इन हनी पूतना बांधे बलिको दान। शूर्पणखा ताडका संहारी श्याम सहज यह बान॥५६९॥ याकी कथा सुनी जिन श्रवणन वनविहग भये योगी।मागतभीख फिरत घर घरही सजन कुटुम्ब वियोगी॥५७०॥फिर हरिआययशोदाके गृह रिंगन लीला करिहैं।माग्यो चन्द्र आर जनकीन्ही उन बानन चितधरिहैं ॥५७१॥बहुत दनुज संहार श्यामघन ब्रजकी रक्षा करिहैं ।यमला अर्जुन विटप उपारे कालीको विष हरिहैं ॥५७२॥ वेणुबजाय रास बन कीन्हो अति आनंद दरशायो। लीला कथन सहसमुख तौऊ अजहू पार न पायो ॥ ५७३ ॥ महाप्रलयके मेघ पठाये सुरपति कीन्हों कोप।छिनहीमाझ गोवर्धन धारो राखलिये सब गोप॥५७४॥ ऐसे अन्त चरित्र कान्हके वरणि कहत नहिंआवै।उद्धव तुम नयनन नहिंदेखो ताते भेद न पावै ॥ ५७५॥ तब उद्धव कहैं धन्य धन्य तुम धन्य धन्य ब्रजनारी। तुम्हरे सुबस सदा हरि खेलो ब्रजमें करत विहार ॥५७६॥ तुम्हरी चरणकमलरज कारणतप कीन्हों चतुरानन।रमा शेष पुनि किनहु न पायो सो देखियत वृन्दावन ॥५७७॥गुलमलतामें जन्म मांगि तब विधिसों गोद पसारी ।उद्धव कहत सदा म्वहिं दीजै चरणरेणु ब्रजनारी ॥ ५७८॥ एक रूप ह्वै रहे वृन्दावन गुलमलता करवास ।वज्रनाभ उपदेश कियो जिन पूरण केलि प्रकास॥५७९॥ एक रूप उद्धव फिर आये हरिचरणन शिरनायो। कह्यो वृत्तान्त गोपवनितनको विरह न जात कहायो ॥५८०॥म्वहिं खोजत षटमास बीतिगये तबहुँ न आयो अंत । ब्रजवनितनके नैन प्राणबिच तुमही श्याम बसंत ॥ ५८१ ॥ छिन नहिं दूर श्याम तुव उनसों मैं निश्चय यह कीनों ।तुमरो रूप देखि गोकुलमें बाढ्यो नेह नवीनो ॥ ॥ ५८२ ॥ तब हरि कह्यो सुनो उद्धवजू ब्रजवासी तनमोर ।तिनको सपन करहु नहिं छांडो सत्य कहतहौं तोर ॥ ५८३ ॥वृन्दावनमें धेनु चरावत गोपसखनके संग । वेणुबजावत मोद बढावत क्रीडा कोटि अनंग॥५८४॥अरुगोपिनसों अंगसुअंग करि नितप्रति करा विनोद।दुष्ट कंस मारन यह आयो सदा यशोदा गोद ॥ ५८५ ॥कुंज कुंजमें क्रीडा करि करि गोपिनको सुख देहैं ।गोप सखन संग खेलत डोलैं ब्रज तज अंत न जैहैं ॥५८६ ॥मारेउ दुष्ट बहुत जो भूपर धर्मकरो विस्तार । वसुधाभार उतारन कारन यदुकुल लिय अवतार ॥ ५८७ ॥ मित्र एक वन बसत हमारो सो नयनन भरि देख्यो। ताको पूजन नित प्रति करिहौं सो तुम सुबुध विशेख्यो ॥ ५८८ ॥ नाना रत्न कदम्ब कनहू छिन नहिं मोहिं भुलावे क्रीडा । करो नित्य कुंजनमें गोपिनको सुखभावै ॥ ५८९ ॥ताहीक्षण अक्रूर बुलाये बल मोहन यह भाख्यो । तुम अब वेगि जाव हस्तिनपुर कमलनयन जिय राख्यो ॥५९० ॥तब अक्रूर बैठि हरिके रथ हस्तिनपुर जु सिधारे।कुंती मिली युधिष्ठिरअर्जुन भीमविदुरउर धारे ॥५९१ ॥गांधारीदुर्योधन आदिक भीष्म कर्ण सब भेंटे।बहुत दिनाके ताप सबनके सुफलक सुत सब मेटे ॥ ५९२ ॥ तब यह कह्यउ नृपतिसों नीके बहुत भांति समुझायो।तब नृप कह्यो नहीं मेरो बश मोह प्रबल

जियछायो ॥ ५९३ ॥तब अक्रूर विचार कियो यह हरि इच्छा जिय मानी । करि प्रणाम गये मधुपुरको जहां श्याम सुखदानी ॥ ५९४ ॥ समाचार सबही कहि दीनो बलमोहनहिं सुनायो। सुन वसुदेव देवकी दोऊ बहुतहि दुख जिय पायो ॥ ५९५ ॥ अस्ती अरु प्राप्ती दोउपत्नी कंस रायकी कहियत । जरासंध पै जाय पुकारीं महा क्रोध मन दहियत ॥ ५९६ ॥ तीन बीस अक्षौहिणिले दल जरासंध तहँ आयो । बल मोहन छिनमांझ संहारे करि बिनचमू पठायो ॥ ५९७ ॥ सत्रह बार फेर फिर आयो हरि सब चमू सँहारी । अबके फेर दुष्ट बनि आयो हरि कछु बात विचारी ॥ ५९८ ॥ अंतरिक्षते द्वै रथ उपजे आयुध तुरँग समेत।तापरबैठ कृष्णसंकर्षण जीते हैं सब खेत ॥ ५९९ ॥ नारद जाय यवनसों भाष्यो राम कृष्ण दोउ वीर । तोहिंन गनत वसतहैं मथुरा बडे बली रणधीर ॥ ६०० ॥यह सुनि यवन तुरतही धायो जियमें अति अकुलाय। तीन कोटि भट यवन संगले मथुरा पहुँच्यो जाय ॥ ६०१ ॥ सुन बलमोहन बैठ रहसिमें कीनो कछू विचार।मागध मगधदेशते आयो साजे फौज अपार ॥६०२॥ विश्वकर्माकोआज्ञा दीन्हीं रची द्वारका आय । निशिको सोये सब मथुरामें जागेद्वारका जाय ॥ ६०३ ॥हलधरहलमूसल करलीने सभी मलेच्छ सँहारे । मारि फौज सबही मागधकी जरासंध उखारे ॥ ६०४ ॥ चले भाज दोउ सभी उहांते जहँ सोवत मुचुकुन्द । बसन उढाय रहे छिपि आपन पूरण परमानन्द ॥ ६०५ ॥ मारी लात आय जब नृपको तब जाग्यो भहराय।निकसी अग्नि नैनते तासों भस्म भयो तेहि दाय ॥ ६०६ ॥ इतने मांझ आपु हरि आये दरशन दीन्हों भूप । शंख चक्र गद पद्म चतुर्भुज सुंदर श्याम स्वरूप ॥ ६०७ ॥ तब पूछ्यो तुम कौनरूपहौ कौन देव अवतार।अबलौं कहुँ देखे नाहीं मैं तुम अति हौ सुकुमार ॥ ६०८॥ तब हरि कह्यो जन्म मेरे बहु वेद न पावैं पार। भुवकी रज नभके सब तारे तितने हैं अवतार ॥६०९॥ अब कहिये द्वापर युग सुन नृप वासुदेव ममरूप। भूतल भार उतारन आयो यदुकुल सुखद स्वरूप ॥ ६१० ॥ तब नृप अस्तुति बहु विधि कीन्हीं जन्मकर्म गुणगाय । तुमहीं ब्रह्म अखिल अविनाशी भक्तन सदा सहाय ॥ ६११ ॥ नव गुण नवलरूप पुरुषोत्तम जे यदुकुल अवतार । जयजयजय बैकुंठ महानिधि कमल नयन सुखसार ॥ ६१२ ॥ वेद पुराण रटत यश जाको तऊ न पावत पार । मैं मुचुकुन्द नृपति कृतयुगको सोवत भए युगचार ॥ ६१३ ॥ अब मोको आज्ञा कछु दीजे जैसे चरणन पाऊं।सदावसों निजलोक निरंतर जन्म कर्म गुणगाऊं ॥ ६१४ ॥ क्षत्री जन्म बहुत अघ कीन्हों ताते मुक्ति न होय। विप्रजन्म धरि मुक्ति होयगी करि तप साधन सोय ॥ ६१५ ॥ आज्ञा लेके चल्योनृपति वहँ उत्तर दिशा विशाल । करि तप विप्रजन्म जब लीन्हों मिटचो जन्म जंजाल ॥ ६१६ ॥ तहांते चले श्याम अरु हलधर परवरषन गिरि आये । पर्वत बहुत नमन करि पूजा यह विनती करवाये ॥ ६१७॥ नितप्रति मोशिर मघवा बरसत लागत शीत अपार । अगणित पाप महादुख मेटो मांगत यही मुरार ॥ ६१८ ॥ इतने मांझ मगध चलि आयो उन जानी यह बात । पर्वत मांझ गये दोउ भइया उन देखें दृग जात ॥ ६१९ ॥ दीन्हीं अग्नि लगाय चहूंधा उन जानी रिपु हान । राम कृष्ण दोउ कूद पधारे पुरी द्वारका जान ॥ ६२० ॥ भयो अनंद द्वारकामें सब घर घर गीत गवाये । करि रिपु हानि समर सब जीत्यो राम कृष्ण घर आये ॥ ६२१ ॥ एक समय नारद मुनि आये नृपति भीष्मके गेह । पूजा करी बहुत नाना विधि नृपति जनाये नेह॥ ६२२ ॥लायी रुक्मिणी कह्यो मुनि नारद यह कमला अवतार ।

पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम श्रीवसुदेव कुमार ॥ ६२३ ॥ उनके योग्य यही कन्या है सुनो देव महाराज । तव नृप कह्यउ करो निश्चय यह सफल होय ममकाज ॥ ६२४ ॥ तव नारदमुनि गये द्वारका कृष्णचन्द्रके पास ।विनती करी रुक्मिणीकी सब सुनि हरि भये हुलास ॥ ६२५ ॥ करौ वेग कछु विलँव न कीजे नारद कहि यह वात । श्रवण सुनत कमलापतिको जिय तनुपुलकित सवगात॥६२६॥सुन नारद म्वहिं नींद न आवे करिहौं वेग उपाय । यह कहि चले आप हरि रथचढि शोभा कही न जाय ॥६२७॥ देश देशके नृपति जुरे सव भीष्म नृपतिके धाम ।रुक्म कह्यउ शिशुपालहि देहौं नहीं कृष्णसों काम ॥६२८ ॥ यतने मांझ आपु हरि आये सुनीनृपति सववात । उपवन रहे जान जियमें यह मनमें अति अकुलात॥६२९ ॥पूजन करन चली देवी-को सखी वृन्द सवसंग।पूजा करि वोली यह कमला लोकलाज कृत भंग॥ ६३० ॥अटलशक्ति अविनाश अधिक वल एक अनादि अनूप । आदि अव्यक्त अंविका पूरण अखिललोक तवरूप ॥ ६३१ ॥ कृष्णचन्द्रके चरण कमलमें सदा रहो अनुरागा।येही पति नित होहिं हमारे जोपूरण मम भाग ॥ ६३२ ॥ तव उन कहेउ कृष्ण तुम्हरे पति ह्वैहैं अचल सुहाग । चली महावर पाय रुक्मिणी अति पूरणअनुराग ॥ ६३३॥तव हरिआय वैठ रथ नीके आय मिलेवडभाग।करगहि वांह लई रथनीकेअतिआतुरचलेभाग ॥ ६३४ ॥ मानो नीलमेघके सँगमें मिली दामिनीआय। चले तुरत हरि पुरी द्वारका शंखचक्रधरि धाय ॥ ६३५ ॥ दुष्ट नृपतिको मान मथन करिचले द्वारकानाथ ।जरासंध शिशुपाल आदि नृप पाछे लागे साथ ॥ ६३६ ॥ रथपाछे मिलि शोभित यहि विधि सकल दुष्टकोसान ।महासिंह निजभाग लेत ज्यों पाछे दौरें श्वान॥ ६३७ ॥ हल-धर आय दुष्टसवमारे असुर नृपतिकी भीर।भाजि चले शिशुपाल जरासंध अति व्यापित तनुपीर ॥ ६३८ ॥ आये नाथ द्वारका नीके रच्यो मांड्यो छाय ।व्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय ॥ ६३९ ॥ ब्रह्मा रुद्र देव तहँ आये शुक नारद सनकादि।दरशन करि मंगल सुख के सब मेटी विरह जो आदि॥६४०॥चैत्रमास पूनोंको शुभदिन शुभनक्षत्र शुभवार व्याहिलई हरि देव रुक्मिणी वाढ्योसुख जो अपार ॥ ६४१ ॥ यक सत्राजित यादव कहिये सूरजदेव उपास । दीन्हीं मणि आदित्य स्यमंतक कोटिक सूर्यप्रकाश॥ ६४२ ॥भार भार नित कनक देतहै नृपति सुनी यह वात। तव उन मांगी इन नहिं दीनी वाढ्यो वैर अघात॥६४३॥एक दिवस मृगयाको निकस्यो कंठ महामणि लाय। तव उन सिंहमारि मणि लीन्हों ऋच्छ मिल्यो यकताय ॥ ६४४ ॥ जाम्ववान महावली उजागर सिंहमारि मणि लीन्हीं । पर्वत गुफा वैठअपने गृह जाय सुताको दीन्हीं ॥६४५॥ चर्चा परी वहुत द्वारावति कृष्णचन्द्रकी वात । तव हरि गये शैलकंदरमें अति कोमल मृदुगात ॥ ६४६॥ दिनअट्ठाइस युद्ध कियो जव ऋच्छ भयो वेलभंग। तव पग परेउ वहुत अस्तुति करि जानि रामपदसंग ॥६४७ ॥तवहरि कहेउभक्त तू मेरो तोसों करि संग्राम । कीन्हें शुद्ध तत्त्व सव तनुके पूरण कीन्हें काम ॥६४८ ॥जाम्ववती अरपी कन्या भरि मणि राखी समुहाय । करि हरि ध्यान गयो हरिपुरको जहां योगेश्वर जाय ॥ ६४९॥ ले स्यमंतमणि जाम्ववतीसह आये द्वारकानाथ।अति आनंद कुलाहल घर घर फूले अँग न समात॥ ॥ ६५० ॥आश्विनसुदि नौमीको शुभदिन हरि आये निजधाम ।तौलौं घर घर प्रति दुर्गाको पूजन कियो सव गाम ॥ ६५१ ॥सत्राजित अपनी तनयाको दीन्हें त्रिभुवनराय । सतभामाजु नाम तेहि कहियत शोभा कही न जाय॥ ६५२ ॥कीन्हों व्याह परमआनंद सों सतभामा सुखरास ।

द्वारावती विराजत नित प्रति आनद करत विलास ॥ ६५३ ॥ इन्द्रप्रस्थ हरि गये कृपा करि पांडव कुलको तार। तहँ कालिन्दी वनमे व्याही अतिसुन्दरि सुकुमारि ॥६५४॥ मित्रविदा यक नृपतिनन्दनी ताको माधव व्याये। सात बैल नाथनके कारण आप अयोध्या आये॥६५५॥सत्या व्याहि बहुतसुख कीन्हो मथ्यो नृपतिको मान।आये फेर द्वारका मोहन मगल केलि निधान६५६॥ भद्रा व्याहि आप जब आये द्वारवती आनन्द ।तैसेही लक्ष्मणा विवाही पूरण परमानंद ॥६५७॥ नरकासुरको मारि श्यामघन सोरह सहस त्रियलाये।एकहिलग्न सवन कर पकरे एकमुहूर्त्त विवाये॥ ॥६५८॥ यह सुनि नारद अचरज पायो ब्रह्मलोकते धाये । कृष्णचन्द्रके चरण परस कर वीणा मधुर बजाये ॥६५९ तब हरि रीझ कहेव नारद सो कहौ कहांते आये । तब उन कहेव दरशको आयो बहुत रूप धरि व्याये ॥६६०॥ यह कौतुक देखनके कारण मे आयो जो देखायो। रूप अनत आदि अविनाशी दरशन प्रेम बढायो॥६६१॥ तब हरि कहेउ जाव घर घर प्रति देखोगे सब ठौरमेही हौ सब थल परिपूरण मोबिन नाहिन और॥६६२॥ तब मुनि चले देख घर घर प्रति परम केलि सुख पायो ।नाना क्रीड़ा करत निरतर घरघर रूप दिखायो ॥६६३॥कहुँ क्रीडत कहुँ दामबनावत कहू करत शृगार। कहुँ बालकन खिलावत माधव खेलत परम उदार ६६४॥ कहुँ चौपर खेलत युवतिन सँग पांच सात उचार। कहुँ मृगयाको चले अश्वचढि श्रीवसुदेवकुमार ॥६६५॥ कहुँ कर लेकर शस्त्र सवारत कहुँ कछु करत विचार। कहुँ कछु बात कहत सबहिन-सो कहुँ ध्वनि वेद विचार॥६६६॥ कहु मिलि यज्ञ करत विप्रन सँग अति आनंद मुरार। नाना दानदेत हय गज भुव ऐसे परमउदार ॥६६७॥ कहुँ गोदान करत कहुँ देखे कहुँ कछु सुनत पुरान।कहुँ निर्त्तत सब देखवारवधु कहुँ गँधरब गुणगान॥६६८॥कहुँ जप करत सनातन निजवपु ब्रह्म करत कहुँ ध्यान। कहुँ उपदेश कहूँ जेवेको कहूँ दृढावतज्ञान ॥६६९ ॥ कहुभोजन नानारुचि माँगत पटरसके पकवान। आरोगत ब्रजराज सांवरो कहूँ करत जलपान ॥ ६७० ॥ कहुँ जागत दरशनदियो मुनिको करि पूजापरणाम। सध्या करतकहूँ त्रिभुवनपति स्नान करत कोउ धाम ॥ ॥ ६७१ ॥ कहु पौढे कमलाके सँगमे परम रहस्य एकान्त । कहुँव्रत करत कहूँ निगमनको ज्ञान कर्मको अत ॥ ६७२ ॥ कतहूँ श्राद्ध करत पितरनको तर्पण करि वहुभांति। कहुँ विप्रनको देत दक्षिणा कहुँ भोजनकी पांति ॥ ६७३ ॥ कहू सुगन्ध लगावत लैकै कहूँ अश्व शृगार। कहुँ गजरथ कहुँबाजिरथन सजि डोलतहैं गृह द्वार ॥ ६७४ ॥कहुँ ऊधोसो ब्रजसुख क्रीडा परम प्रेम उचार। कहुँ पांडवकी कथा चलावत चिन्ता करत अपार ॥ ६७५ ॥ कहुँ मिलि विप्र कहत सबहिनसो वालक करन सगाई। कहुँ सुत व्याह कहूँ कन्याको देत दायजो राई ॥ ६७६ ॥कहुँ गजराज बाजि शृगारे तापर चढे जु आप। सँग बलभद्र चमू सब सग लै चले असुरदल कांप॥ ॥ ६७७ ॥ कहू हस्तिनापुर देखनको मनमें करत विचार । कतहूँ अर्घ्य देत सूरजको कहुँ पूजत त्रिपुरार ॥ ६७८ ॥ कहुँ यक दुर्गादेवि जानिकै जोरि निम्र निजधाम। करत होम बहु भांति वेदध्वनि सबविधि पूरणकाम॥६७९ ॥ प्रथमपुत्रको व्याह जानिकै पूजत कहु गणेश। कहू ऋषिनके चरण धोयके शिरपर धरत नरेश ॥६८० ॥कहू व्याहकी केलि परम सुख निरखत मुनि सचुपायो। शेष सहससुख पार न पावै कछु इक सूर जु गायो ॥ ६८१ ॥ फिर मुनिआय भवन कमलाके चरणकमल शिर नायो। मैं सबठौर फिरेउँ तुव देखन कहतहू पार न पायो ॥ ६८२॥ जित तित देखो तुम परिपूरण आदि अनंत अखड। लीला प्रगट देव

पुरुषोत्तम व्यापक कोटि ब्रह्मंड ॥ ६८३ ॥ शिव विरंचि सनकादि महामुनि शेष सुरेश दिनेश । इन सबहिन मिलि पार न पायो भगवती नरेश ॥ ६८४ ॥ तुम्हरे चरण कमलकी महिमा जानतहैं त्रिपुरारि । प्रकट गंग पावन चरणनते ताहि रहत शिर धारि ॥६८५ ॥पुनि गौतम घरणी जानतहै वानक शबरी जान । उद्धव विदुर युधिष्ठिर अर्जुन अरु भीषम सुरज्ञान॥ ६८६ ॥ हनूमान अरु भक्तविभीषण चरणकमल रज मांगी । सोई कृपा करो करुणानिधि माँगतहौं अनुरागी॥ ६८७ ॥यह कहिकै मुनि लोक सिधारे बीण बजाय रिझाय । ब्रह्मलोक पहुँचे छिनहीमें हरि आज्ञाको पाय॥ ६८८ ॥पहिलो पुत्र रुक्मिणी जायो प्रद्युम्न नाम धरायो । कामदेव प्रगटे हरिके गृह पहिले रुद्र जरायो ॥ ६८९॥नारद जाय कह्यो शंबरसों तव रिपु वपु धरि आयो। वेग उपाय करो मारनको प्रगट द्वारका जायो॥६९०॥ तब शंबर भयभीत द्वारका गयो तुरत त्यहि काल। हरिको चक्र देख रखवारी व्याकुल भयो बिहाल ॥ ६९१ ॥ तब नारदमुनि आय चक्रसो बात करन ठहरायो। इतने मांझ पुत्रले भाज्यो निधिमें जाय दुरायो ॥ ६९२ ॥ एक मीनने भक्ष कियो तब हरि रखवारी कीनी । सोई मत्स्य पकरि मोधुकने जाय असुरको दीनी ॥ ६९३ ॥ तब उन कह्यो पाकशालामें अबहीं यह पहुँ- चाओ । चीरयो उदर पुत्र तब निकस्यो उन जान्यो मम नाओ ॥६९४॥ नारद कह्यो यही तब पति है याको वेग बढाय ।जौलों बडो होय तौलो यह असुरन मतिहि देखाय॥६९५॥सेवारीनी बडेभये जब समरथविपुल उदार। महाबलीबलराम कृष्ण सुत कीन्हो असुरसँहार ॥ ६९६ ॥ मारि असुरकोआय द्वारका कृष्ण चरण शिर नायो।भीतर गये नये रुक्मिणिको सबहिन कंठ लगायो ॥६९७॥वर अरु वधू आय जब जाने रुक्मिणि करत बधाई।रतिअरु काम प्रकट तादिनते कवि मिलिकीरति गाई॥६९८॥याविधि केलि करत द्वारावति पूरण परमानंद । महिमा सिंधु कहांलग वरणें सूर जु कवि मति मंद ॥६९९ ॥पुनि अनिरुद्ध भेद नारदके चित्ररेखा हरिलीन्हो। चारवर्ष अरु चारमासलौं ऊखाकोसुखदीन्हो॥७००॥तबहरि जायसगहलधर लैमन यादव दलजोर। सबै भुजा करि दूर असुरकी चार हाथ दिय छोर॥ ७०१ ॥ आये रुद्र पक्ष करि ताको युद्ध करन हरिसाथ । छिनमें जीति वधूसुत लैके आय द्वारकानाथ ॥ ७०२ ॥ पुनि यक दिवस सुधर्मा बैठे यादव सभा अपार । उग्रसेन वसुदेव सात्यकी अरु अक्रूर उदार॥ ७०३ ॥ इतने माझ दूत यक आयो सबहिन कहि समुझायो। वासुदेव नृप आज्ञा करके मोको वेगि पठायो ॥ ७०४ ॥ वासुदेव यह कहत वेदमें प्रगट ब्रह्म अवतार। मो तौ मैही प्रगट भयो श्रुत यहि विधि बढचो अपार ॥ ७०५ ॥ क्षणमें जाय तुरत हरि मारचो दीन्हीं मुक्ति कृपाल । फेर द्वारका तुरत पधारे गरुड़ चढ़े गोपाल ॥ ७०६ ॥ एक दुष्टनें बहुत कियो तप सो रीझे त्रिपुरार । तब शिवने उन कृत्या दीन्ही बाढो क्रोध अपार ॥ ७०७ ॥ कृत्या चली जहा द्वारावति हरिजानी यह बात । आज्ञा करी चक्रको माधव छिन कृत्याकर घात ॥ ७०८ ॥ काशीजाय जराय छिनकमें गये द्वारकाफर । अति आनन्द परम सुखसो सब दिन बीतत रसटेर ॥७०९॥पुनि कुरुक्षेत्र गये यादवमिलि कियो तीर्थ अस्नान। यज्ञ होम करि पितर देवता विप्रनको बहु दान ॥७१०॥ सूरज ग्रहण नृपन बहु जान्यो आय जुरी सब भीर। दर्शन भयो सबनको हरिको मिट्यो ताप तनु पीर॥ ७११ ॥ भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर भीमार्जुन सहदेव । कुंती नकुल और गान्धारी कृपी विदुर सहदेव ॥७१२ ॥ दुर्योधन सब भ्रात

संगले धृतराष्ट्रहि लै आयो। नारद गौतम वाल्मीकि मुनि हरिदर्शन हित धायो ॥ ७१३ ॥ भारद्वाज मरीचि अंगिरा अत्रेमुनी अनंत। पुलह पुलस्त्य अगस्त्य कश्यप पुनि अरुसनकादिक संत ॥ ७१४ ॥ हरिको दर्शन करि सुख पायो पूजा वहु विधि कीन्हीं। अति आनंद भये तन मनमें सौंज वहुत विधि दीन्हीं ॥ ७१५ ॥ व्रजवासी सब सखा संगके यशुमति अरु व्रजराज। दर्शन पाय वहुत सुख पायो सफल भये सब काज ॥ ७१६ ॥ यशुमति मात उछंग लगाये वल मोहनको आय। वालभाव जियमें सुधि आई अस्तन चले चुचाय ॥ ७१७ ॥ गोपिन देखि कान्हकी शोभा वहुतहि मन सुख पायो। सघन निकुंज सुरत संगम मिलि मोहन कंठ लगायो ॥ ७१८ ॥ रुक्मिणि कहत कमललोचनसों गधा हमें देखायो। जाकी नित्य प्रशंसा तुम करि हम सवहिनकुं सुनायो ॥ ७१९ ॥ तव वृषभानुसुता पगधारी रानिन मंडल मांझ। मनो सरस इन्दीवर फूले तामधि फूली सांझ ॥ ७२० ॥ देख तेज वृषभानुसुताको सबै भई छवि हीन। अति आनन्द मोद मन मान्यो हमहिं कृतारथ कीन ॥ ७२१ ॥ तव हरि कह्यो मोहिं राधा विन पल क्षण कछु न सोहाय। सुनोरुक्मिणी कथा घोपकी मोपै कहिय न जाय ॥७२२॥ एक दिना वनमें इन मोको अपनो सुधा पिवायो। ताके वल गिरि गोवर्द्धन लै अपने हाथ उठायो ॥ ७२३ ॥ अरु काली धेनुक दावानल प्रकट पूतना आई। इनकी कृपा सकल विघ्नकों छिनमें दिये नशाई ॥ ७२४ ॥ भांति भांति करि मोहिं लडायो सघन कुंजमें जाय। ताकी कथा कहों कह तुमसे मोपै कहिय न जाय॥७२५॥रास केलि करि क्रीडा कीन्ही होरी खेल खिलायो। मटुकि छुडाय लियो दधि वरसत तउ कछु मन नहिं आयो ॥ ७२६ ॥ रत्न जटित पर्यंक द्वारका पौढत है सुखधाम। तौहू इनको ध्यान करतही वीततहैं सब याम ॥ ७२७ ॥ इन विन मोहिं कछू नहिं भावै नन्दरायकी आन। सुनो रुक्मिणी लोचनमें ए वसी रहें मम प्राण॥७२८॥ जागत सोवत अरु वन डोलत भोजन करत विहार। ध्यान करत नखशिख इनहीको वसि द्वारका-मँझार ॥७२९॥ तव मिलि रंग वहुत भांतिनसों कीन्हें विपुल विहार। व्रजजन चले सकल गोकुलको दीन्हें दान अपार ॥७३०॥ चले द्वारका यदुकुल सव मिलि भयो कुलाहल भार। पहुँचे आय द्वारका संमुख घर घर मंगलचार ॥७३१॥ कियो विचार यज्ञको राजा राजसूय जिय जानि। कृष्णचंद्रको वेगि वुलाओ संग सकल पटरानि ॥७३२॥ आये इंद्रप्रस्थ सव यदुकुल महा महोत्सव मान। जुरे भूप वहु सकल देशके हरिदर्शन जिय जान ॥ ७३३ ॥चारों भ्रात चारि दिशि जीतो भारत कही वखान। ठौर ठौरके नृप सव आये लै उपहार प्रमान॥७३४॥ वडो यज्ञ राजसूय रचायो जुरे विप्र वहु भारी। महाभाग्य राजा जु युधिष्ठिर जहँ माधव अधिकारी॥ ७३५॥ सवहिन कहयो प्रथम पूजा अव कहो कौनकी कीजै। सबमें वडो कौन भूपति है जाहि अर्चना दीजै॥७३६॥तव सहदेव कह्यो सवहिनसों सुनो नृपति मन लाय। पूजा योग प्रकट पुरुषोत्तम कृष्णचंद्र यदुराय ॥ ७३७ ॥सबहिन कह्यो साधु यह वाणी सुर मुनि मनुज सराई। यक शिशुपाल दुष्ट नृप कहिये सुनतहि उठ्यो रिसाई ॥७३८॥ गोकुल नंद अहीर गोपगृह पय पियके यह जीयो। दधि जु चुराय खाय वृन्दावन चरित विपम वहु कीयो॥७३९॥ मातुलमारि वहुइ अघ कीन्हें कहांलों करों वडाई। वृन्दावन गोवर्धन कुंजन लूटी नारि पराई ॥७४०॥वन वन गाय चरावत डोलत कांध कमरिया राजे। लकुटी हाथ गरे गुँजमाला अधर मुरलिका वाजै॥७४१॥ऐसे ख्याल करे इन वहु विधि कहत जु आवे लाज। वेद विदित सुर

काज बिगारे बहुँकाये ब्रजराज ॥ ७४२ ॥ यज्ञ करत विप्रन मथुरामें यांचे भीख न दीन्हीं । अर्पण कियो नहीं देवनको पहिले इन मति कीन्हीं॥ ७४३ ॥ माखन चोरचोर गोपिनको दूधजु दधि लै खायो । यमुना न्हात गोपकन्यनको लै पट कदम चढायो ॥ ७४४ ॥ कालीहरिकीआज्ञा-को लै यमुनामांझ बसायो । ताहि निकालदियो क्षणहीमें नेक सकोच न आयो॥ ७४५ ॥ यक पूतना पयपान करावन प्रेमसहित चलिआई । ताहि लगाय हृदय लपटानो प्राणजो लियो छुराई ॥ ७४६ ॥ जन्म होत इन मात तात को तबहीं बंधन दीन्हो । यादव जात भाज जित तितको अनत जाय सुख कीन्हो॥ ७४७ ॥ वेणु बजाय रास इन कीन्हो मधुपगोपकी नारी ।परनारीको दोष कछु चित इन नहिं कीन्ह विचारी ॥७४८॥ दूध दहीके भाजन चाटे नेकहु लाज न आई । माखन चोरि फोरि मथनीको पीवत छाँछ पराई ॥ ७४९ ॥ छाक खाय जूठन ग्वालिनकी कछु मनमें नहिं मान्यो । परदाराके संग आय निशि कुब्जासों सुख मान्यो ॥ ७५० ॥बहुत प्रीतिकरि गोपन जाने बहुविधि लाड लडायो । ताको यतन कछू नहिं मान्यो मथुरामें चलिआयो ॥७५१॥ जरासन्ध इन बहुत बारही करि संग्राम पलायो । हमरे डर कर दोऊ भाई नगर समुद्र बसायो ॥ ७५२ ॥ कालयवनके आगेभाज्यो जाय गुफा गहिलीन्हीं । लातमारि मुचुकुन्दजगायोनेकुदया नहिं कीन्ही ॥७५३॥ याते बहुतयाहिकी लपट सभामांझनहिंकहिये ।जियमें समुझआपनेमसुख सुखते चुपकरि रहिये ॥ ७५४ ॥ अतिशयक्रोध भये पांडवसुत और नृपति हरिदास । सबसे बरज सबनको माधव नेकु न भये उदास ॥७५५ ॥अतिही भई अवज्ञा जानी चक्र सुदर्शन मारयो । करि निजभाव एक छुन तनमें क्षणक दुष्ट शिरमारयो ॥७५६॥परम कृपालु दयालु देवकी-नन्दन पावननाम । दीन्ही मुक्ति दया करिके तब दियो लोक निजधाम॥७५७॥जयजयकार भयो वसुधापर राज युधिष्ठिर हरषे।अमृतस्नान कराय वेदविधि कनककुसुमगिरबरषे॥७५८॥ दीन्हीं सभा बनाय पांडुकी मय मायागत अंत। ताको देखभ्रमेदुयोधनमहामोहमतिमंत॥७५९॥ जलमें थलमति थलमें जलमति भई नृपतिको जान । अन्ध पुत्र लखि हँस पवनसुत सुन जियमें रिस मान ॥७६० गयो भवन अकुलाय बहुत जिय क्रोधवंत अभिमानी । ताहीं दिनते पांडु-पुत्रसों वैर विषमगति ठानी ॥७६१॥ सभा रची चौपरक्रीडा करि कपट कियो अति भारी । जीत युधिष्ठिर भई सब जानी तउ मनमें अधिकारी ॥ ७६२ ॥ युवती धर्म जान दुष्टनने जब द्रौपदी बुलाई । हरिको सुमिरन करत पथमें दुश्शासन गहिलाई ॥ ७६३ ॥ अहोनाथ ब्रजनाथ नाथ निज यदुकुलके निज नाथ । गोकुलनाथ नाथ सब जनके मो पति तुम्हरे हाथ ॥७६४॥ ज्यों गजराज बचायो जलमें नेक विलंब न कीन्हो । अपनो भक्त बचावनकारण विष अमृत करि दीन्हो ॥७६५॥ शबरी गीध और पशु पक्षी सबकी रक्षा कीनी । अबतो सहाय करो तुम मेरो हौ पांवर मतिहीनी ॥ ७६६ ॥ चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारकामझार। पासे डार परम आतुर सो कीन्हें अनत उचार ॥७६७॥ चीर बढाय दियो बहु तेहिक्षण ऐंचत पार न पायो । भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर सब विस्मय मन लायो ॥७६८॥रहेउ दुष्ट पचि हार दुशासन कछू न कला चलाई । बैठो आय सभामें पाछे बार बार पछिताई ॥७६९॥ फिर द्रौपदी भवनमें आई श्रीहरि लज्जा राखी । वेद पुराण तन्त्र भारतमें कही बहुत विधि भाखी ॥ ॥७७०॥ पुनि बनवास दियो पांडवसुत हरि द्वारकामें जानी । अक्षय पात्र दिवायो रविपै बडे भक्त सुखदानी ॥७७१॥ दुर्वासा शापनको आये तिनकी कछु न चलाई । अक्षय कियो कमल-

दल लोचन भक्तन भये सहाई ॥७७२॥ पांडव कुलके सहाय भये हरि जहँ तहँ संगहि डोले। दुर्योधनसों कह्यो दूत है भक्त पक्ष दृढ बोले॥ ७७३ ॥पांच गांव पाण्डवको दीजे सुनो नृपति मम बात। और राज सब तुमही करिये निपट जगत विख्यात ॥ ७७४ ॥ प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान । इन्द्रप्रस्थ बीचमें दीजे और राज तुव जान॥७७५॥सुनिके क्रोध भयो दुर्योधन सब पाण्डवको राज।तुमरो कुलसबनाश होयगो कहिजो चले व्रजराज॥७७६॥ बहुत दुःख दीन्हों पाण्डवको अबलों में सहि लीन्हो। लाख भवन बैठार दुष्टने भोजनमें विष दीन्हों॥७७७॥ बन बन फिरे अर्क तूलन ज्यौं वास विराटहि कीन्हों ।अन्तहि गुप्त रहेतापुरमें भेद काहु नहिं दीन्हों॥७७८॥जुरे नृपति अक्षौन अठारह भयो युद्धअतिभारी।रथहांकत गोविंदअर्जुन-कोदीन्हशस्त्र सबडारी ॥७७९॥करीप्रतिज्ञाकहेउभीष्मसुख पुनि पुनि देव मनाऊं।जोतुम्हरेकर शर न गहाऊं गंगासुत न कहाऊं॥७८०॥चढे प्रबल दल दोऊ ओरके बिच अर्जुन रथ ठाढो।इत पारथ गांगेय बली उत जुरो युद्ध अति गाढो॥ ७८१ ॥दशदिन लरे बली गंगासुत श्याम प्रतिज्ञा जानी ।सत्यवचन हरि कियो भक्तकोनिगम झूठकर बानी ॥ ७८२ ॥धरि रथचक्र,श्यामनिज करमें जबहि भीष्मपर डारो। शीतल भई चक्रकी ज्वाला जब शिर तिलक निहारो ॥७८३॥ धन्य धन्य कहि परे आय पग गुणनिधान गांगेव। तब हरि कहेउ विपुल बल तुम्हरो जीति-लिये सब देव ॥७८४॥तब उन कहेउ चरण आपनमें राख्यो निशि दिन ध्यान। मोरि प्रतिज्ञा तुम राखी है मेटि वेदकी कान ॥७८५॥ डार शस्त्र शरशय्या सोये हरि चरणन चित लायो। उत्तर दिशि रवि जान देह तजि वहां परमपद पायो ॥ ७८६॥ नृपति युधिष्ठिर राजतिलक दे मारि दुष्टकी भीर। द्रोण कर्ण अरु शल्य सुक्तकरि मेटी जगकी पीर॥७८७॥गोविंदआय द्वारका निज गृह अति आन्द बढायो। घर घर मंगल महा कुलाहल यदुकुल होत बधायो ॥ ॥७८८॥ शल्य नृपति तपकिय पंचानन तापे यह वर पायो। दियो बनाय नगर गोपुरमें काहु न जात लिवायो॥७८९॥ आय द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाने। प्रद्युमन लरे सप्त-दश दोदिन रंच हार नहिं माने ॥७९०॥ हरि अपसगुन जानि हस्तिनपुर बैठ तुरत रथ धाये। बहुत देशको पावन करिकरि सांझ द्वारका आये॥७९१॥ कीन्हों युद्ध आय शाल्वसों उन बहु माया कीन्हीं। जलमें थल थलमें जल देख्यो श्याम दूर करदीन्हीं॥७९२॥माया दूर करी नँद-नन्दन चक्र दियो शिरडार। क्षणहीं मांझ दुष्ट संहारो भुवको भार उतार ॥७९३॥ जयजयकार करत देवांगन बरषत कुसुम अपार। कियो प्रवेश द्वारका मोहन घर घर मंगलचार ॥ ७९४ ॥ राजसूय करवाय श्यामघन जरासंध मरवायो। दन्तवक्र महिपाल महाबल विदुरथप्राण नशायो ॥ ७९५॥ बालक मृतक देवकी मांगे सो छिनमें हरिलाये। दीन्हों दरश भक्त नृपबलिको तनुके ताप नशाये ॥ ७९६॥ बालक आय देवकी जाने अस्तन पान कराय । हरिको शेषपान करिके वे हरिके पद पहुँचाये ॥७९७॥ एकदिना यदुनाथ संग सब विप्रमण्डली लीन्हें। मिथिला चले जनकराजापै दरश कृपा करि दीन्हें ॥ ७९८ ॥ तहाँ बसत श्रुतिदेव महामुनि सुनि दर्शनको धायो। तब उन कहेउ चलो मेरे गृह हरि स्वीकार करायो ॥ ७९९ ॥ नृपति कह्यउ मेरे गृह चलिये करो कृतारथ मोय। ताहूके हरि आपु पधारे प्रकट धरे वपु दोय॥ ८०० ॥ देख चरित्र विनोद लालके विस्मित भे द्विजराय। अद्भुत केलि कृपा करि कीन्हीं द्विजको ज्ञान दृढाय ॥ ८०१ ॥ बहुत दिवसलों कृपा करी हरि जनकराय सुख दीन्हों। बहुरि पधारे पुरी

गारा यदुकुल तुम फीरो ॥ ८०२ ॥ हरि सुभद्रा ब्याह निचारो हरि अर्जुन चित पाये । श्रीबलदेव कहइ दुर्योधन नीको दुल्ह निचारो ॥ ८०३ ॥ हरिको भेद पायके अर्जुन धरि दण्डीको रूप । भिक्षाको निजभवन बुलायो श्रीबलभद्र अनूप ॥ ८०४ ॥ नयनन मिलन लई कर गहिके फागुन चले पराय। सुनि बलदेव क्रोध अति बाढ्यउ कृष्ण शान्त कियो आय ॥ ८०५ ॥फेर बुलाय ब्याह कारिदीन्हो बिजय बहुत सुख पायो । फिर आनि हस्तिनपुर पारथ मघवाप्रस्थ बसायो ॥ ८०६ ॥ एकदिना यक विप्र भक्तमति हरिको सखा कहाने । अतिदारिद्र दुखित जब जाने तब पत्नी समुझाने ॥ ८०७ ॥ जाहु नाथ तुम पुरी द्वारका कृष्णचन्द्रके पास । जिनके दरश परम करुणाते दुख दरिद्रको नास ॥८०८ ॥ तदुल मांग दोचिक लाई सो दीन्हों उपहार । फाटे वसन बांधिके द्विजवर अति दुर्बल तन हार ॥ ८०९ ॥आये देख द्वारका हरिपै जाय चरण शिर नायो । हरि भेंटे भ्राताकी नाई पूजा विविध करायो ॥ ८१० ॥ अपने सुनि आसन बैठारे हसि २ बूझत बात । कहो निप्र हम गये बन्तिका गुरुके सदन विख्यात ॥ ८११ ॥बनमें बहु वर्षा जब आई ताकी सुधि करलेहो । गुरु आय आपुनको बोलत सब थकायो सेहो ॥ ८१२ ॥ तादिनकी यह कथा तुम्हारी बिसरत नाहिन मोहि।कीधौं कौन कार्यको आये सो पूछत हौं तोहि॥ ८१३ ॥ कछु हमको उपहार पठायो भाभी तुम्हरे साथ । फाटे वसन सकुच अति लागत काटत नाहिन हाथ॥ ८१४ ॥हरि अपने कर छोरि बसनको तदुल लीन्हे हाथ । मुट्ठी एक प्रथम जब लीन्हें खान लगे यदुनाथ ॥ ८१५ ॥द्वितिय मुष्टिका लेनलगे जब कमला गहिलियो हात। दियो द्विजहि मघवाको वैभव बाढ्यो यश विख्यात ॥ ८१६ ॥भोर भये उठि चले भवनको हरि कछु इनहिं न दीन्हो । ताको हर्ष शोक निज मनमें मुनिवर कछु न कीन्हो ॥८१७॥ भली भई हरिदरशन पायो तनुको तापनसायो । दुर्बलविप्रकुचेल सुदामा ताको कंठ लगायो ॥ ॥ ८१८॥ धन्य धन्य प्रभुकी प्रभुताई मोपै वणि न जाई। शेष सहसमुख पार न पावत निगम नेति कहि गाई॥ ८१९॥ऐसे कहतगये अपने पुर सबहिं विलक्षण देख्यो । मणिमय महल फटिक गोपुर लखि कनकभूमि अवरेख्यो ॥ ८२० ॥ पत्नी मिली परमसुख पायो कृष्णचन्द्र आराधे।मघवाको सुख भयो सुदामहि तऊ कछुक नहिं बाधे ॥ ८२१ ॥ नौलख धेनु दई राजानृग बहुविधि दान देवायो । कृष्णभक्तिबिन विप्रशापते गिरगिटकी गति पायो ॥ ८२२ ॥ ताको चरण परसिके माधव दुखित शाप छुटायो । कृपा करी यदुनाथ महानिधि जिन बैकुंठ पठायो ॥८२३ ॥ बलदाऊ ब्रजमंडल आये ब्रजवासिनको भेंट। बहुत दिननके विरहताप दुख मिलन क्षणकमें मेंट ॥ ८२४ ॥ सघन निकुंज सुभग वृन्दावन कीन्हें विविध बिहार । गोपिन संग रासरस खेले बाढ्यो श्रम सुकुमार ॥८२५ ॥ कालिन्दीको निकट बुलायो जलक्रीडाके काज । लियो आकरषि एक क्षणमें हरि अति समरथ यदुराज ॥ ८२६ ॥ विविध भांति क्रीडा हरि कीन्हीं ब्रजवासिनसुख दीन्हो। द्वादश वन अवलोक मधुपुरीतीरथको चित कीन्हों ॥ ८२७॥ शुभ कुरुखेत अयोध्या मिथिला प्राग त्रिवेनी न्हाये । सुनि शतरुद्र और चन्द्रभागा गंगाव्यास न्हवाये ॥ ८२८ ॥निमिषारन आये बलभद्र जब सकल विप्र शिरनायो । करी अवज्ञा कथा कहत द्विज अपने लोक पठायो ॥ ८२९ ॥ तब द्विज कहेउ कथा कहिके यह हमको सुख उपजायो । हम कापै अब कथा सुनेंगे बलदाऊ समझायो ॥ ८३० ॥इनको पुत्र होय जो बालक ताको वेग

बिठावो । धरेउ हाथ शिर दीन्ही विद्या नित प्रति कथा सुनावो ॥८३१॥ पुनि द्विज विनती करि यह भाष्यो असुर एक इह आवे । यज्ञ करतमे जानपरत वह आय रुधिर वर्षावे ॥८३२॥ यह सुनिके बलदेव गुसाई हल मूसल लियो हाथ । लियो पकर हल नभ मण्डलते कर मूसल-सो घात॥८३३॥जयजयकार भयो सुरलोकन देव दुदुभी बाजे ।अस्तुति करत बहुत पूजा द्विज अति आनद समाजे ॥८३४॥ विनती करी बहुत विप्रनने राम विप्र तुम मारेव। तीरथ न्हाय शुद्ध तनको करि हरि द्विजबचन विचारेउ ॥ ८३५ ॥ वर्ष दिवसमे अरसठ तीरथ । न्हान करत घर आये।आय प्रभासु विप्र बहुजनको बहुतहि दान देवाये८३६॥पुनि मिथिला यक दिवस पधारे हरि बलदेव गुसांई । गदायुद्ध दुर्योधन सिखयो नानाभेद बताई ॥८३७॥ पुनि द्वारका पधारे निजपुर अतिआनद सुखबाढचो। प्रगट ब्रह्म नित बसत द्वारका कलह भूमिको काढचो॥ ॥८३८॥ दश दश पुत्र एक यक कन्या हरि सबके उपजाई ।सुतके सुत नाती पतिनीकी महिमा कहिय न जाई ॥८३९॥ बडे बली प्रद्युम्न कहावत कृष्णअंश अवतार । तिन सब जग जीत्यो तिहु लोकन बाढचो सुयश अपार ॥८४०॥अश्वमेध करवाय युधिष्ठिर कुलको दोष मिटायो। करि दिग्विजय विजयको जगमे भक्त पक्ष करवायो ॥ ८४१ ॥ नानाविधि कीन्ही हरि क्रीडा यदुकुल शाप दिवायो ।जो ज्यहि लोक छोडिके आयो ताको तह पहुचायो ॥८४२॥ ऊधोको कहि ज्ञान आपनो निगमन तत्त्व बतायो । कही कथा दत्तात्रय मुनिकी गुरु चौबीस करायो ॥ ॥८४३॥ कहि आचार भक्त विधिभाषी हसधर्म प्रकटायो। कही विभूति सिद्धि साधनता आश्रम चार कहायो ॥८४४॥सांख्यतत्त्व गीताहरि कीन्ही गुणके भेद करायो। ऐलगीत पुनि भिक्षुगीत कहि पूजाविधि दरशायो ॥ ८४५॥ सदा बसत हरि पुरी द्वारका बहु विधि भोग विलासी। आदि अनन्त अघट्ट अनूपम हैं अविगत अविनाशी॥ ८४६ ॥ एकदिना यक विप्र द्वारका बसत सुखद निजधाम। वेदरूप तपरूप महामुनि कृष्ण विप्र यह नाम ॥ ८४७ ॥ बालक दश जु भये वाके जब भूमा लिये मँगाय । चितमें यह अनुरक्त विचारत हरिदर्शनको चाय ॥८४८॥ दश सुत भयो जानिके ब्राह्मण करि पुकार हरिपास। तब हरि कहेउ देवकी गति यह करत काल जग नाम॥ ८४९ ॥ तब अर्जुन यह कहेउ मत्त हैं नृप नाहिन भुवभार ।मे अर्जुन गांडिवधनु जाको काल लरो क्षणमार ॥ ८५० ॥ जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मणते अर्जुन गये गृह ताइ । शर-पजर रोप्यो चहु दिशिते जहां पवन नहिंजाइ ॥ ८५१ ॥तब सुत गयो देहको लैके दरशन भयो न ताय अतिहीक्रोध भयो ब्राह्मणको बहुत बक्यो बिललाय ॥ ८५२ ॥ तब अर्जुन ढूढनको निकसे तीनलोक फिरि आयो । कहू न पायो सुत ब्राह्मणके तब मनमे अकुलायो ॥ ८५३ ॥ कियो विचार प्रवेश अग्निको हरि आये समुझायो । लै निज सग चले पश्चिमको लोकालोक सोहायो ॥ ८५४ ॥कनकभूमि अरु धामदेनको देखे परम सुहायो । बहुत निबिड तम देखचक्र धरि धरेउ हाथ समुझायो ॥ ८५५॥ महाकालपुर तुरत पधारे हरि भूमाके पास।तुल्य अग्निवर अगिन समानी भूमा तेज प्रकाश ॥ ८५६ ॥कृष्ण तेजको देख सकल सुर तन मन भयोहुलास। अतिहीमन्द तेजभूमाकोहरिकेतेजप्रकाश ॥८५७॥ अतिआनन्दपरस्पर बाढ्यो जब उनविनती कीन्ही । भलीभई भुवभार उतारेउ मेरी फिरि सुधि लीन्ही ॥ ८५८ ॥ लै दशपुत्र द्वारका आये दीन्हे विप्र बुलाय। कीन्हो दुःख दूरि अर्जुनको महिमा प्रकट दिखाय॥ ८५९ ॥ कीन्हीं केलि बहुत बल मोहन भुवको भार उतारेउ । प्रकट ब्रह्मगजन द्वागवति वेद पुराण विचारेउ॥ ८६०॥

एक दिना रुक्मिणि सों माधव करत बात सुखदाई । सुनु रुक्मिणि राधिका बिना मोहिं पल सम कल्प बिहाई ॥८६१॥ कनकभूमि रचि खचित अरुणा कुंजनकी उजियारी । गोवर्धन पर्वतके ऊपर बोलत मोर सुहारी ॥ ८६२ ॥ यमुनानीर भौंरसम मृगकी मोहिं नितप्रति सुधि आवै। वृन्दा विपिन राधिका मन्दिर नितप्रति याद उडावै ८६३ ॥ राति दिवस रस भवन सुधामें कामधेनु दुहवाई । लूट लूट दधिखात सखन सँग तैसो स्वाद न पाई ॥८६४॥ षटरस भोजन नानाविधिके करत महलके माहीं। ढाकेखात ग्वालमंडलमें वैसो तो सुखनाहीं॥८६५॥ जन्मभूमि देखनके कारण भये मन ललचाना। धौरी धेनु बुलावन कारणमधुरे वेनुबजावै॥८६६॥ रासविलास विविध में कीन्हे सग राधिका लीन्हें । कीन्हे केलि विविध गोपिनसों मनइनको सुख दीन्हे॥ ॥८६७॥ तब मोहन फिर व्रजहि पधारे ऊधोको सँग लीने। दीन्हो राम चरणरजगोपिनगुल्मलता रस भीने ॥८६८॥ सदा विलासरत गोकुलमेंधन धनयशुमतिमाता। ज्यों दीपकते दीपक कीन्हो भये द्वारकानाथ ॥ ८६९॥ नित प्रति मंगल रहत महरके नितप्रति बजत बधाई । नितप्रति मंगल कलश धरावत नित प्रति वेद पढाई ॥ ८७० ॥श्रीवृषभानु रायके आँगन नितप्रति बजतबधाई। नितप्रति मिलमुनिगजमण्डलीमंगलचोपकराई॥८७१॥ बालकेलिक्रीडत नंदआंगनयशुमतिको सुख दीन्हो। तरुण रूप धारे गोपिनके हित,सबको चित हरि लीन्हो॥८७२॥ चन्द्रावली गोपकी कन्या चन्द्रभागगृह जाई । भई किशोर श्यामने देखी अद्भुत प्रीति बढाई ॥८७३॥ तब ललिता पूछ्यो नीके कर केहि विधि श्याम मिलाई । अब न परत मोकू कलक्षणहू जियमेंअतिअकुलाई ॥८७४॥ तब उन कहेउ शीघ्रगोरसले बेचनकेमिस आओ । गोवर्धनपरगोविंद खेलत निरख परम सुख पाओ ॥ ८७५ ॥ करि शृंगार चली चन्द्रावलि नख शिख भूषण साजे । ज्यों करनी गजराजविलोकत ढूँढतहैअतिगाजे ॥ ८७६ ॥ गोवर्द्धनके शिखर चारुपर सखावृन्दसँगलीन्हे। गोपिन देख टेर हरि कीन्हो दान लेन मनकीन्हे ॥ ८७७ ॥ राखो घेरि सकलयुवतिनकोसखा वृन्दसों भारयो।आपु जाय पकरयो कोमल कर दधि अमृत रस चाख्यो ॥ ८७८ ॥ देहो दधिको दान नागरी गहर न राखो चित्त । तुमरे काज नित्य हम ठाढे अरपे अपनो वित्त॥८७९॥ वृन्दावनमा धेनु चरावत मागत गोरस दान । नाना खेल सखनसँग खेलत तुम पायो वृषभान ॥ ८८० ॥ अरी ग्वालि मदमत्त वचनको बोलतवचनविचार । अचल राज गोवर्धनमेरोवृन्दावन मझार ॥ ८८१ ॥ जो तुम राजा आप कहावत वृन्दावनकोठौर । लूटलूट दधिखात सखनको सब चोरनके मौर ॥ ८८२ ॥ चोरी करत भक्तके चितकी अरु दधि अरु नवनीत । सखा वृन्द सब मीत हमारे बडीराज रजनीत ॥ ८८३ ॥ जो तुम राजनीत सब जानत बहुत बनावत बात । जब तुम जन्म लियो मथुरामें आये आधीरात ॥ ८८४ ॥ सुनरी ग्वालि गँवार बातकी बोलत बिना विचार । कमल कोषमें बसत मधुप ज्यों त्यों भुव रहे मुरार ॥ ८८५ ॥ दूध दहीके नात बनावत नातें बहुत गोपाल । गढि गढि छोलत कहा बावरे कृतहोनजबाल ॥ ८८६ ॥ जो प्रभु देह धरे नहिं भुवपर दीन अधमको तारे ॥ बढे असुर पृथ्वीपर खल अति तिन्हेतुरतको मारे ॥ ८८७॥ योग युक्तिकर ध्यान लगावत योगसिद्ध कर ज्ञाना। नेति नेति करि निगम बतावत ताहि होत निर्मान ॥ ८८८॥ योगसारूप्य अरु ज्ञान भामिनी माया हृदय विनास ।प्रेमभक्त मेरोयशगावे तेहि घट मेरो वास ॥ ८८९ ॥ मुखऊपर कहकहो लायके अब उत्तरको खोर । जब यशुमतिनेऊखल बांधे हमही दीन्हें छोर ॥ ८९० ॥बालकनिपट अयान ग्वालिनीरञ्च सुधि जानिन जाय। लेकर

चीर कदमपर बैठ्यौ सवहिन हाहाखाय ॥८९१॥ बहुत भयेहो ढीठ साँवरे मुखपर गारीदेत। तुम्हरे डर हम डरपत नाहिंन कहा कँपावत बेत ॥ ८९२ ॥श्याम सखनसों कहेउ टेरदे घेरो सब अब जाय। बहुत ढीठ यह भई ग्वालिनी मटुकी लेहु छिड़ाय॥८९३॥ जाय श्याम कंकणकर लीनो गहि हारावलि तोर। लूट लूट दधि खात सांवरो जहां साकरी खोर ॥ ८९४ ॥इन्द्रा वृन्दा और राधिका चन्द्रावलि सुकुमारि। विमल विमल दधि खात सबनको करत बहुत मनुहारि ॥ ८९५ ॥ गहि बहिया ले चले श्याम घन सघन कुजके द्वार । पहिलि सखी सबै रचिराखी कुसुमन सेज सँवार ॥ ८९६ ॥ नाना केलि सखिन सँग विहरत नागर नंदकुमार । आलिंगन चुम्बन परिरंभन भेटत भारे अँकवार ॥ ८९७ ॥ श्रम-जल विंदु इन्दु आनन पर राजत अति सुकुमार ॥ मानो विविध भाव मिल विलसत मगन सिंधुरससार ॥८९८॥ कजरंध्र अवलोकि सहचरी अपनो तन मन वारे। निरख निरख दंपति नेत्रन सुख तोर तोर तृनहारे ॥ ८९९ ॥ यह अवलोकि देव गंध्रव मुनि वरसत कुसुम अपार। जय जय करत वार नीराजन बोलत जय जयकार॥ ९०० ॥ गोवर्द्धनकी सघन कंदरा कीनो रैनि निवास। भोर भये निजधाम चले दोउ अतिआनन्द विलास ॥ ९०१ ॥ नन्दधामहरि बहुरि पधारे पौढ़रहे निज शैन। यशुमतिमात जगावत भोरहिं जागे अम्बुजनैन ॥ ९०२ ॥ करी मुखारी और कलेऊ कीनो जल असनान।करि शृंगार चले दोउ भइया खेलनको सुखदान॥ ॥ ९०३ ॥कहुँ खेलत मिल ग्वाल मंडली आँखमीचनीखेल। चट्टा चढीकोखेल सखनमे खेलन हैं रसरेल ॥ ९०४ ॥कहूँ आमरू डार विटपकी खेलत सखन मँझार। कूद कूद धरणी सब धावत दाँवदेत किलकार ॥९०५॥ भोजन समय जान यशुमतिने लीने दुहुँन बुलाय ॥ बैठ आय यशुमति कि गोदमें आनँद उर न समाय॥९०६॥ वहु विधिके पकवान बनाये परसत यशुमति माय। आरोगित बलमोहन दोऊ सुख देखत ब्रजराज ॥ ९०७ ॥ कबहू कवर खात मिरचनकी लागी दशन टकोर॥ भाज चले तब गहे रोहिणी लाई बहुत निहोर॥९०८॥ भोजनकरि नाना विधि दोउलीनो मठासलोनो। अँचवन करि ब्रजराज पधारे बल मोहन सुख मानो ॥९०९॥ बीरी खाय चले खेलनको बीच मिली ब्रजनार। ले चलि पकर बाँह राधाँपे सघन कुंजके द्वार ॥ ९१० ॥ राधासो मिलि अतिसुख उपज्यो उन पूछी इक बात। कहो जु आज रैनकहँसोये हमदेखे तुम जात॥९११॥ तब हरि कहेउ सुनो मृगनैनी गाय गई यक ठौर। ताको लेन गयो गोवर्धन सोय रहेउँ तेहि ठौर ॥९१२॥ कंद मूल फल दीनें गोधन सो निशिकोमें खायो। भोर भये उठि तेरे आयो चरण कमल परसायो ॥९१३॥ निज प्रतिविंब विलोकि राधिका हरिनख-मंडलमाहें। द्वितियरूप देखे अवलाको मान वढ्योतनछाहें॥ ९१४ ॥ चली रिसाय कुंजमृग-नयनी जहं अति करत गुंजार। बैठीजाय एकांत भवनमें जहां मानगृह चार ॥९१५॥ नन्द-कुँवर विरहन राधाके विरहभये भरिपूर। बैठ जाय एकांत कुंजमें सखा कियो सब दूर ॥९१६॥ ललिता बोल कहीमृदुवाणी कृष्ण विमल दलनैन। विन राधा मोहिं कल न परतहैं कहत मधुर मृदु बैन ॥९१७॥ वेगजाय परि पायँ राधिका विनती करो सुनाय। दरशन देन सकलदुख मेटो तुम बिन रह्यो न जाय ॥९१८॥ तुमबिन खान पान नहिं भावत गोचारन शृंगार न नींद नहिं परत निरंतर संभाषण व्यवहार ॥९१९॥ करिदंडवत चली ललिता जो गईराधिकागेह। पायँन पर पर बहुत विनय कर सफलकरनको नेह ॥ ९२० ॥ वेगि चलो वृषभानुनन्दनी

बोले नन्दकुमार । तुम बिन पल छिन कल न परत है भोजन सुख व्यवहार ॥ ९२१ ॥ नव निकुंजमें मिलो श्यामसों भेंटो भरि अँकवार । कुसुम सेजपर करो केलि प्रिय गिरधर परम उदार ॥ ९२२ ॥ तो बिन पियहि कछू नहि भावे तोसों पिय आधीन। तो बिन श्याम रहत हैं ऐसे जैसे जल बिन मीन ॥ ९२३ ॥ कहासुभाव परयो मति तेरो यह विनवनहीं तोह ।मान करत गिरवरधर पियसों मानतनाहिन मोह ॥ ९२४॥करि शृंगार सकल ब्रज सुन्दरि नीलाम्बर तनुसाज । रैन अँधेरी कछू न दीसत नूपुर ध्वनि जिन बाज ॥ ९२५ ॥ कुवलय दल कुसुमन शय्या रचि पथ निहारत तोर । सपन जाग अरु शयन सुमृत तुव नचन मत्यहैं मोर ॥ ९२६॥ सित अरु पीत ग्रथिका वेनी गुथो विविध बनाय।रचो भाल निज तिलक मनोहर अंजन नयन सोहाय ॥ ९२७ ॥ तू छबि सिंधु विहर ब्रजनायक क्षुद्र नदी नहिं भावे । जबते नाम सुन्यो श्रवणन तुव रैनि नींद नहिं आवे॥९२८॥ हरि राधा राधा रटत जपत मंत्र दुरदाम।विरह विराग महायोगी ज्यों बीतत है सब याम ॥ ९२९ ॥कबहुँक किसलय सेज सँवारत तेरेही हित लाल। कबहुँक अपने हाथ सँवारत गुंथत कुसुमन माल ॥ ९३० ॥तुव बिन बटम्बरेन मदन वन देखत लगत उदास । विरह अग्नि चहुँ दिशिमें धावत फूले दिखत पलास ॥ ९३१ ॥ सारस हंस मोर पारावत बोलत अमृतवान । बैठहे दुरसदन सघन वन ध्वनि नहिं सुनियत कान ॥ ९३२ ॥ कालिन्दी तट विमल कदमतर करत वदन तुव ध्यान । सुहृदय सखा त्यागि मनमोहन करत मधुर तुव गान ॥९३३ ॥ गुंजत श्रवणन मधुप सुनत हैं तुव श्रुति की सुधि आवे । कंचन वरन जात तेरो वपु पीताम्बर पहिरावे ॥ ९३४ ॥ सुनत कोकिला शब्द मधुरध्वनि कमल नयन अकुलात । तेरे बोल करत सुधि जियमें विरह मगन ह्वैजात ॥९३५॥ तुव नासापुट गात मुक्त फल अधर बिंब उनमान । गुंजाफल सबके शिर धारत भ्रकुटी मीन प्रमान ॥ ९३६ ॥ सिंधु सुतासुत तारिपु गमनी सुन मेरी तू बात ।कामपिता वाहन भखको तनु क्यों न धरत निज गात॥ ॥ ९३७॥अलि वाहन पति वाहन रिपुकी तपनबढ़ी तनुभारी । शैल सुतासुत तासुत अँगना सोते सबै निसारी ॥९३८ ॥ भृंग यूथ चतुरानन तनया ब्रह्मनाद सुरसंग। जलसुत वाहनसों जन धारत विषम लगत विषअंग ॥ ९३९ ॥ चतुरानन सुत तासुत वा सुत उदित होन अब आयो । मन्मथ मात तात सुत अथयो सो तो वृथागँवायो॥९४०॥पकज उर पकजजिन फेरे तेरो अटल सुहाग । सुरपति वाहन तासुत शिरपर भाग भरो अनुराग ॥ ९४१ ॥ कमल पुत्र तासुत कर गजत सोहरि निज कर लीन्हें । सप्तस्वरन उपजाय बजावत रटन राधिका लीन्हे ॥ ९४२ ॥सुत प्रह्लाद तासुसुत ता पित भ्राता वृथा गँवायो ॥ सज्ञा सुत वपु सदृश वसन तन सो तन लागत छायो ॥ ९४३॥ सारँग ऊपर सारँग राजत सारँग शब्द सुनावे। सारँगदेख सुने मृदुनैनी सारंग सुख दरशावे ॥९४४ ॥ सारँग रिपुकी वदन ओट दे कह बैठी है मौन । ब्रह्म सुता सारँगके धोखे करत सकलब्रज गौन ॥९४५॥ सारँगसुता हेरि सारंगको तेरो अटल सुहाग । सारँग पति ता पति ता वाहन कीरत रट अनुराग ॥ ९४६ ॥ दधिसुत वाहन सुभग नासिका दधि-सुत वाहन देख्यो । दधिसुत वाहन वचन सुनत तुव अंग अंग अवरेख्यो ॥ ९४७ ॥ शशिको भ्रात कहत ता वाहन कुन्द कुसुम ललचात । खंजन सदृश देख तुव अँखियाँ नन मनमें अकु-लात ॥ ९४८ ॥मारुत सुरपति रिपु ता पतनी ता सुत वाहन बात । श्रवण सुनत अकुलात साँवरो कछुक कहीनहिं जात ॥ ९४९ ॥ चतुरानन सुत ता सुत पत्नी ता सुतको जो दास।

ता सुत बाहन पुत्र अंगधरि जलसुत करों प्रकास ॥ ९५० ॥ श्रीबलदेवराम जो कहिये तामें भान मिलाय। ताकी सुता कहत चतुरानन निगम सदा गुणगाय ॥ ९५१ ॥ सिंधु सुता तव भाग्य विलोकत मनमें रही लजाय। काम पिता माता गुरु ता वपु युवति कोटदरशाय ॥९५२॥सातों रासमेल द्वादशमें ऐसे बीतत याम । द्वितिय रासमें मिलत सप्तमी सो जानतनिज धाम॥९५३॥ शैलसुता धरि ता रिपु बांधत अंगअंगपिय आज। कोटि यत्नकर सींचततोऊमिटतनहीं ब्रजराज ॥ ९५४ ॥ वायस अजा शब्द मन मोहन रटत रहत दिन रैन। तारापतिके रिपु परठाढे देखतहैं हरिनैन ॥९५५॥ गंगासुत रिपु रिपुशिपमेरीसुनत नहीं सखिकाह। नारायणसुत ता सुत ता सुत लगत विपम विप ताह ॥९५६॥ जलसुत वाहन देख वदन तव ब्रह्मसुता अकुलानी। मंगल मात तासु पति वाहन राजत सदृश भुलानी ॥ ९५७ ॥ दक्षप्रजापतिकी तनयापति ता सुत नारगई। सिंधुसुता सुत वाहनकी गति देखत विपम भई ॥ ९५८ ॥अग्नितात तेहि तात अंगना त्यों उनमें तू राखी। बंधु कुसुम द्रुम ता रिपुको पति सारँग रिपुकर भाखी ॥ ९५९ ॥ पति पाताल लग्न तनधारन सो सुख भुजा विचारी॥प्रथममथत जलनिधि जो प्रकट्योसोलागत सब नारी ॥९६०॥ बंधु कुमुद पति पिता सुता जो तुव यश मधुरे गावै। ब्रह्मसुता सुत पदरज परसत सारँग सुता देखावै ॥ ९६१ ॥ इन्द्र सुतापति भुजा लगन लखि जलसुत हृदय लगावै । इन्द्र सुता तनया पतिको सुत ताके गुनै न पावै ॥ ९६२ ॥ धरत कमलमें कमल कमल कर मधुर वचन उचार। कमलवाहन गहत कमलसों कमलन करत विचार॥९६३॥ कालिन्दी पतिनैन तासु सुत लागतहैं सबलोग। इन्द्र मात तेहि तात सो सरधत प्रकट देखियत भोग ॥ ९६४ ॥ अम्बुज मात तात पति ता रिपु ता पति काम विगारे । ताते सुन तू भाननन्दनी मेरो वचन विचारे ॥ ९६५ ॥ तीस मान द्वै मास सकल ऋतु सिंधुसुता सन जान। भूपन अंग लसत गुंजावलि और न कछू समान ॥९६६॥ इति दृष्टकूट सूचनिका सम्पूर्ण ॥कबहुँक सेज रचत वेदी कर हृदय होम घृत नैन। विप्र भोज वालल तुव देखियत अगकूस नहिं चैन॥९६७॥ अव तू वेग विचार वचन मम सुनु वृपभानु कुमारि।मिलिहौ वेग कमलदल लोचन सुनु मेरी मनु हारि॥९६८॥गौर वरण ह्वैजात सांवरो ध्यान करत तुव अंग।पुनि ललिता हरिके ढिग आई वैठे सांवल रंग ॥९६९॥ वेग चलो तुम श्याम मनोहर आपुकाज मँह काज ।लेहु मनाय प्राणप्यारीको प्रकट्यो कुंज समाज ॥ ॥ ९७० ॥ ऋतु वसंत अव आय देखियत फूले कुसुम सुरंग। मानो मदन वसंत मिले दोउ खेलतहैं रसरंग ॥९७१॥ वेगि चलो अव पिया मनावन नेक विलम्ब न लाओ । मेरी कही वात नहिं मानत ताको ज्ञान दृढाओ ॥९७२ ॥ परी पांय अपराध क्षमावत सुनत मिलेगी धाय।सुनत वचन दूतिका वदनमें श्याम चले अकुलाय॥९७३॥जहँवैठी वृपभानु नंदनी तहँ आये धरि मौन। परेपाय हरि चरण परसकरि छिन अपराध सलौन॥९७४॥सुनि हरि वचन विलोकत शोभा मानग-यो सवछूट।मिले धाय अकुलाय श्यामघन प्रेम काम रस लूट॥९७५॥रच्यो शृँगार श्याम अपने कर नख शिख प्रिया वनायो।शीशफूल वेनी नकवेसर तिलकभाल करवायो ॥९७६॥युगताटंक चिवुक दशनावलि कर कंकण उरमाल। नूपुर पद कटि छुद्रघंटिका सव शृंगार रमाल ॥ ९७७ ॥ सकल शृंगार करत वर्णनको कृपा यथामति मोर।होत विलम्ब मिलनके कारण ताते वर्णत थोर॥९७८॥ चले धाय नवकुंज दोउ मिलि किसलय सेज विराजे।परिरंभण सुख गस हास मृदु सुरत केलि सुख साजे॥९७९॥नाना वंध विविध रस क्रीडा खेलत श्याम अपार। रस रस

तत्त्व भेद नहिं जानत दंपति अंग सँभार ॥ ९८० ॥ सुरत सरुद्र मगन दंपति रस झेलत अति सुख झेल । निरवधि रमन अपरमित अच्युत मनुज माय बहु खेल ॥ ९८१ ॥ नूपुर संचित किंकिनिकी ध्वनि सुनत मधुर किलकार । मदन सिंधु मधुमत्तमधुपगनफूलेकरतगुंजार॥९८२॥ मधुपयूथ मिलि सघन चन्द्रमा तडित लिये आकाश । खंजन मीनवजावत गावत निरतत सुख सुविलास ॥ ९८३ ॥ जलद समूह खसत उडुगण गण पै समुद्रके बीच । मकरकपोल बोल मृदु कोकिल अमृत सुधारस सींच ॥९८४॥ मोहन बेल शृंगार विटपसों उरझी आनँदवेल । कंचन बेल तमालहि लपटी रसिक रंग भरि रेल ॥ ९८५ ॥ युगल कमलसों मिलत कमल युग युगल कमल ले संग । पांच कमल मध्य युगल कमल लखि मनसाभई अपंग ॥ ९८६॥ किरणकदम्ब मंजुका पूरण सौरभ उडत अवेश । अगर धूप सौरभ नासा सुख बरपत परम सुदेश ॥ ९८७ ॥ कुंतद कुमुद बंधूक मिलत पुनि मीन देख ललचात । तापर चन्द्र देख संज्ञासुत तनमें बहुत डरात ॥ ९८८ ॥ बरना भख करमें अवलोकत केश पास कृत बन्द । अधर समुद्र सदल जो सहसा ध्वनि उपजत सुखकन्द ॥ ९८९ ॥ मुदित मराल मिलत मधुकर-सों खंजन मिलत कुरंग । कीर कीर रणधीर मिलतसम रत रस लहरतरंग ॥ ९९० ॥ सुरत समुद्र कहत दम्पतिके निरवधि रमन अपार । भयो शेष मनमूढ कहनको राधाकृष्ण विहार॥९९१॥ शोभा अमित अपार अखण्डित आप आतमाराम।पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम सब विधि पूरण-काम ॥ ९९२ ॥ आदि सनातन एक अनूपम अविगत अल्पअहार । ॐकारआदि वेद असुरहन निर्गुण सगुण अपार ॥ ९९३ ॥ चतुरानन पञ्चानन अरु पुन षटआनन सम जान । सहसानन बहुआनन गावत पार न पाय बखान ॥ ९९४ ॥ सघनकुंजमें अमितकेललखतनु सुगन्धकी रेल। मधुकर निकट आय पीवत रस सुखद सदारस झेल ॥ ९९५ ॥ मलिन भये रस मानसरोवर मुनि-जन मानसहंस।थकित विलोकि शारदा वर्णन करिवेबहुतप्रशंस ॥९९६॥ वृंदावननिजधामपरम रुचिवर्णन कियो बढाय। व्यास पुराण सघन कुञ्जनमें जनसनकादिकआय॥९९७॥ धीर समीर बहत त्यहि कानन बोलत मधुकर मोर।प्रीतम प्रियावदन अवलोकत उठि उठि मिलत चकोर॥ ॥ ९९८ ॥ अमित एक उपमा अवलोकत जियमें परत विचार । नहिं प्रवेश अज शिव गणेश पुनि कितक बात संसार॥९९९ ॥सहस रूप बहुरूप रूप पुनि एकरूप पुनि दोय। कुमुद कली विकसित अम्बुज मिलि मधुकर भागी सोय ॥१०००॥नलिनपरागमेंवमाधुरिसों मुकुलितअम्ब कदम्ब । मुनिमन मधुप सदा रस लोभित सेवत अज शिव अम्ब ॥१००१॥गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरप प्रवीन। शिवविधान तप करेउ बहुत दिन तऊ पार नहिं लीन ॥१००२॥सुख पर्य्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाये। मधुर मल्लिका कुसुमित कुञ्जन दम्पति लगत सोहाये ॥१००३॥ गोवर्द्धन गिरि रत्न सिंहासन दम्पति रस सुखमान। निविड कुञ्ज जहँ कोउ न आवत रस विलसतसुखखान॥ १००४ ॥निशा भोर कबहूं नहिं जानत प्रेम मत्त अनुराग। ललितादिक सींचत सुखनैनन जुर सहचरि वडभाग॥१००५॥ यह निकुञ्जको वर्णनकरिहै वेद रहे पचिहार।नेति नेति कर कहेउ सहस विधि तऊ न पायो पार॥ १००६॥दरशन दियो कृपा करि मोहन वेग दियो वरदान।आगम कल्परमण तुव ह्वैहै श्रीमुख कही बखान ॥१००७॥ सो श्रुतिरूप होय व्रजमण्डल कीनो रास विहार। नवल कुञ्जमें अंश बाहु धरि कीन्हीं केलि अपार ॥ १००८॥ पुनि ऋषि रूप राम वर पायो हरिसे प्रीतम पाय । चरण प्रसाद राधिका देवी उन

हरिकंठ लगाय ॥ १००९ ॥ वृन्दावन गोवर्धन कुञ्जन यमुना पुलिन सुदेश । नित प्रति करत विहार मधुररस श्यामा श्याम सुरेश ॥ १०१०॥ निरखि निरखि सुख दम्पतिको यह कविकुल सब पचि हारे। भूषण खसे सुरत वश दोऊ केशन आपु सँवारे ॥ १०११ ॥ ललिता ललित बजाय रिझावत मधुर वीन कर लीने। जान प्रभात रागपञ्चम पट मालकोस रसभीने॥१०१२॥ सुर हिंडोल मेघ मालव पुनि सारँग सुरनट जान। सुर सांवत भूपाली ईमन करत कान्हरो गान॥ ॥ १०१३ ॥ऊंछ अडानेके सुर सुनियत निपट नायकी लीन। करत विहार मधुर केदारोसकल सुरन सुख दीन ॥ १०१४ ॥सोरठ गौंड मलार सोहावन भैरव ललित बजायो । मधुर विभास सुनत बेलावल दम्पति अतिसुख पायो॥१०१५॥देवगिरी देशाक देव पुनि गौरी श्री सुखरास। जैतश्री अरु पूर्वी टोडी आसावरि सुखरास॥१०१६॥रामकली गुनकली केतकी सुर सुघराई गाये। जैजैवन्ती जगत मोहनी सुरसों वीन बजाये ॥ १०१७ ॥सूआ सरस मिलत प्रीतम सुख सिन्धुवीर रसमान्यो। जान प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोउजान्यो॥ १०१८ ॥जागेप्रात निपट अलसाने भूषण सब उलटाने। करत शृंगार परस्पर दोउ अति आलस शिथिलाने ॥ ॥१०१९॥जालरंध्र ह्वै सहचरि देखत जन्म सफल करि लेखे। जान प्रभात उछंगन दम्पतिलेत प्राण रसपेखे ॥१०२०॥औट्यो दूध कपूर मिलायो लै ललिता तहँ आई । पहिले श्यामाको अँचवायो पाछे पिवत कन्हाई ॥ १०२१ ॥करि शृंगार सघन कुञ्जनमें निशि दिन करत विहार। नीराजन बहुविधि वारतहैं ललितादिक ब्रजनार॥१०२२॥कबहुँक केलि करत यमुनाजल सुन्दर शरद तडाग। कबहुक मधुरमाधुरी झूलत आनँद अति अनुराग ॥१०२३॥ प्रथम वसन्तपञ्चमी शुभदिन मंगलचार वधाये ।पञ्चानन जार्‍यो मन्मथ सो प्रगटभये फिरिआये॥१०२४॥यशुमति मातवधाई बाँटत फूली अँग न समाई।उबटिन्हवाय श्यामसुन्दरको आभूषणपहिराई॥१०२५॥ घर घरते आईं ब्रज सुन्दरि मंगल साज सँवारे। हेम कलश शिरपर धरि पूरण काम मन्त्र उपचारे ॥ १०२६॥अबिर गुलाल अरगजा सोंधीलीन्हों सोंजबनाय।मनमें किये मनोरथ बहु विधि मिलवत सब मनभाय ॥ १०२७ ॥ भीर जानि सिंह पौर त्रियनकी यशुमति भवन दुराई। ढूँढ सकल त्रिय दौर मातको पकर बाँह ले आई॥१०२८॥ केसर चन्दन और अरगजा शीश महर के नाये। जो जो विधि उपजी जाके जिय सोइ सोइ भाँति कराये ॥१२०९॥फगुआ दियो महर मन भायो यशुमति परम उदार। पकर लिये घनश्याम मनोहर भेंटे भरि अँकवार॥ १०३० ॥ पहिली जान वसंत पंचमी यशुमति बहुत खिलाये। केसरचोवा और अरगजा श्याम अंगलपटाये॥ १०३१ ॥ ता पाछे गोपिनने छिरके कनक कलश भरिडारे। मानो शीश तमाल अमृत घन सरस सुधानिधरारे॥ १०३२ ॥चन्दन चोवा मथत हाथ कर नील जलद तनु अर्‍प्यो। मानो प्रकट करी अपने चित पियको प्राण समर्‍प्यो ॥ १०३३ ॥ किये मनोरथ नाना विधिके मेवा बहु विधि लाई। सो हरिने स्वीकार कियो सब निरखि परम सुखपाई ॥१०३४ ॥ सुबल सुबाहु तोक श्रीदामा सकल सखा जुरि आये। रत्न चौकमें खेल मचायो सरस वसन्त वधाये ॥ १०३५ ॥ करत परस्पर गोप ग्वाल मिलि क्रीडा अति मन भाई। सुँरग अबीर गुलाल उडावत रह्यो गगन सब छाई ॥ १०३६ ॥फगुआ देन कह्यो मनभायो सबै गोपिका फूली।कंठ लगाय चलीं प्रीतमको अपने गृह अनुकूली॥ १०३७ ॥ करतआरतीविविध भाँतिसों यशुमति परम सुहाई। सखावृन्द सब चले यमुन तट खेलत कुँवर कन्हाई ॥ १०३८ ॥ बैठ जाय मधन

कुंजनमें यमुनातीर गोपाल। सखी एक तहँ आय निकटही बोली वचन रसाल ॥ १०३९ ॥ वृन्दावन फूल्यो नँदनंदन सघन कुंज बहु भाँत । हरि प्रतीत मुकुलित द्रुम पल्लव मुखरित मधु-कर पाँत ॥ १०४० ॥ ठौर ठौर झिल्ली ध्वनि सुनियत मधुर मेघ गुंजार । मानो मन्मथ मिलि कुसुमाकर फूले करत विहार ॥ १०४१॥ अपनो सब गुण तुम्हें दिखावन स्मर वसन्त मिलि आयो । मधुर माधुरी मुकुलित पल्लव लागत परम सुहायो ॥ १०४२ ॥ गोवर्धनके शिखर सुभगपर फूले कुसुम पलास । सहज सुरत सुख देत सँयोगिन विरहिन करत उदास॥१०४३ ॥ पुहुप पराग परस मधुकर गन मत्त करत गुंजार । मनो कामि जन देख युवति जन विषयासक्ति अपार॥१०४४ ॥वीथिन विपिन विलोकि विविध मन मण्डित कुसुमित कुंज । मनहुँ हेम मंडपिका मुखरिति कल्पलता रस पुंज ॥ १०४५ ॥ वेगि चलो वृन्दावन नायक राधा मारग जोवत । हलि मिल खेलो मन्मथ क्रीडा क्यों वसंत दिन खोवत ॥ १०४६ ॥ सुनत वचन ललिताके मोहन तुरत चले उठिधाय । कियो वसंत खेल वृन्दावन अद्भुत फागु मचाय ॥१०४७ ॥लता लता वन वन कुंजनमें खेलत फिरत वसन्त । मनहुँ कमल मण्डलमें मधुकर विहरतहैं रसमन्त ॥ १०४८ ॥ उत श्यामा इत सखा मण्डली उत हरि इत व्रजनार । मनो तामरस पारस खेलत मिलि मधुकर गुञ्जार ॥ १०४९ ॥ खेल वसंत बहुत सुख मान्यो हर्षे गोपी ग्वाल । बिहँसि गये व्रजराज भवन सब चञ्चल नैनविशाल ॥१०५०॥ होरीडांडी दिवस जानके अति फूले व्रजराज।बैठे सिंहद्वारपै आपुन जुरिके गोपसमाज॥१०५१॥ विप्र बुलाय वेदविधि करिकै होरी डांडी रोप । आनन्दे सब गोप मण्डली मन्मथ कियो प्रकोप ॥१०५२॥परिवाप्रथम दिवस होरीको नन्दराय गृहआई । सकल सांज गोपीकर लेके खेलनको मनभाई॥ १०५३॥ दुइज दुहूँ दिशिते होरी मचि सुरंग गुलाल उडायो । मनो अनुराग दुहुँनके अन्तर सबहिन प्रकट करायो ॥ १०५४ ॥ तीज तरुणि मिलि पकरे मोहन गहिकर अञ्जन दीनो । मत्त मधुप बैठ्यो अम्बुज पर मुखरत है सुरभीनों ॥ १०५५ ॥ चम्पक लता चौथ दिनजान्यो मृगमद शीर लगायो।मनहुँ नीलजलधरके ऊपर कृष्णागर लपटायो॥१०५६॥ पांचे प्रमदा परम प्रीतिसों केसर छिडकी घोर । मनहुँ सुधानिधि वर्षत घनपर अमृत धार चहुँओर ॥ १०५७ ॥ छठि छरागनी गाय रिझावत अति नागर बलवीर । खेलत फाग संग गोपिनके गोपवृन्दकी भीर ॥ १०५८ ॥ सातें रिजि सुगन्ध सब सुन्दरि लेआईं उपहार । बल मोहनको हँसत खेलावत गीझ भरत अँकवार ॥ १०५९ ॥ आठैं अति आतुर अबलाप्रिय चुम्ब-न दीन्हां गाल । नाना विधि शृंगार बनाये बेंदा दीन्हों भाल ॥ १०६०॥ नवमी नौसत साजि राधिका चन्द्रावलि व्रजनार । हो हो करत पलाश कुसुम रँग वर्षनहैं जो अपार ॥ १०६१ ॥ दशमी दशौं दिशा भई पूरित सुरंग अबीर गुलाल । मनु प्रीतम मिलिवेके कारण फूले नयन विशाल ॥ १०६२ ॥ एकादशी एक सखि आई डारचो सुभग अबीर । एक हाथ पीताम्बर पक-रयो छिरकन कुमकुम नीर ॥ १०६३ ॥द्वादशि मची दुहूदिशि होरी इत गोपी उत ग्वाल ॥ इत नायक बल मोहन दोऊ उत राधा नवलाल ॥ १०६४॥ तेरस तरुणी सब मिलिके यह कीन्हों कछुक उपाय । तोक सुबल मधु मंगल बोल्यो सबहिन मतो सुनाय ॥१०६५॥ चौद-शि चहुं दिशा सों मिलिके गठ जोरो गहि भोर । मनमोहन पिय दूलह राजत दुलहिन राधा गोर ॥१०६६॥देखि कुहू कुसुमाकर फूल्यो मधुप करत गुंजार। चन्द्रावलि केसर ले आई छि-

रके नन्दकुमार ॥ १०६७ ॥ शुक्लपक्ष परिवा पुरुषोत्तम क्रीडा करत अपार । हलधर संग सखा सब लीन्हें डोलत गृह गृह द्वार ॥ १०६८ ॥ द्वैज दाम कुसुमनकी जूँथी अपने हाथ सँवार। दई पठाय भानुतनयाको पहिरत घोषकुमार ॥ १०६९ ॥ तीज तरुण सब गावत आईं नन्दराय दरबार । पकरे आय श्यामनट सुंदर भेंटत भरि अँकवार ॥१०७०॥ चौथ चहूंदिशिते सबधाये सखा मंडली धाय । इतते आई कुँवर राधिका होरी अधिक मचाय ॥ १०७१ ॥ पंचम पंच शव्द करि साजे सजि वादित्र अपार। रुंज मुरज ढफताल बाँसुरी झालरको झंकार ॥१०७२॥ बाजत बीन रबाब किन्नरी अमृत कुण्डली यंत्र। सुर सुरमण्डल जलतरंग मिल करत मोहनी मंत्र ॥ १०७३ ॥ विविध पखावत आवत संचित बिच बिच मधुर उपंग । सुर सहनाई सरस सारँगी उपजत तानतरंग ॥ १०७४ ॥ कंसताल कटताल बजावत शृंग मधुर मुहचंग । मधुर खंजरी पटह प्रणव मिल सुख पावत रतभंग॥१०७५॥ निपटन केरी श्रवणन धुनि सुनि धीर न रहे ब्रजबाल । मधुर नाद मुरलीको सुनके भेंटे श्याम तमाल ॥ १०७६ ॥ छठिको पटरस सरस बनायो हरिभोजन करवायो । नानाविधि पकवान बनायो जेवँत अति सुख पायो ॥१०७७॥ सातैं सखि मिलि थारी लाई आरोगे ब्रजराज।आठैं दिशा सकल मिल ठाढो दूर करी सब लाज॥ ॥ १०७८ ॥ नवमी नवसत साजि राधिका हरिसों खेलत फाग । दशमी दशहु दिशा परिपूरण बाढ्यो अति अनुराग ॥१०७९॥ एकादशी राधिका मोहन दोउ मिलि खेलनलाग । बैठजाय सघन कुंजनमें जहँ सहचारे बडभाग ॥१०८०॥ सघन कुंजमें डोल बनायो झूलतहैं पिय प्यारी। ललितादिकवीरी जोखवावत नानाभाँतिसँवारी ॥१०८१॥अतिसुगंधघसलायअरगजा छिरकत सांवलगात। हरि बारीप्यारी हरि छिरकतशोभा वरणि न जात॥१०८२॥द्वादश दिवस दुहूँदिश माच्यो फागु सकल ब्रजमांझ।आलिंगन सब देत श्यामको लखे न धुन्धरमाझ ॥१०८३॥तेरस भामिनि पियो अधररस अति आनन्द अघाय।चहुँदिशिते गहिकै गठजोरी कीन्होंसखियनआय ॥१०८४॥ पून्यो सुखपायो ब्रजबासी होरी हर्ष लगाय।परमराग अनुराग प्रकट भयो अतिफूले ब्रजराय॥१०८५॥ यशुमतिमाय लाल अपनेको शुभ दिन डोल झुलायो । फगुवा दियोसकल गोपिनको भयो सबन मनभायो॥१०८६॥यमुनाजल क्रीडत ब्रजवासीसंगलिये गोविंद।सिंहद्वार आरतीउतारत यशुमति आनँदकंद ॥१०८७॥ यहि विधि क्रीडत गोकुलमें हरि निज वृन्दावन धाम। मधुबन और कुमुदवन सुन्दर बहुलावन अभिराम ॥१०८८॥ नन्दग्राम संकेतखिदरवन और काम बनधाम । लोह बन माठ बेलवन सुन्दर भद्रबृहदवन ग्राम॥१०८९॥चौरासीब्रजकोश निरन्तर खेलतहैं बलमोहन । सामवेदऋग्वेद यजुरमें कहेउ चरित ब्रजमोहन ॥१०९०॥ व्यास पुराण प्रगट यह भाख्यो तंत्र ज्योतिपिन जान्यो । नारदसों हरि कहेउ कृपाकर अमृत वचन परमान्यो॥ १०९१ ॥ सनकादिकसों कहेउ आपु हरि निज वैकुंठ मँझार । व्यासदेव शुकदेव महामुनि नृपसों कियोउचार॥ १०९२॥ नारायणचतुराननसोंकहि नारदभेदबतायो।तातेसुनिके व्यास भागवत नृप शुकदेव जतायो ॥१०९३॥ शेष कहेउ जो सांख्यायनसोंसुनिके सनत्कुमार कहेउ बृहस्पति पुनिमैत्रसों उद्धवकियो विचार॥ १०९४ ॥ऐसे विविध प्रमाण प्रकट बहु लीला करि ब्रजईश । सोई श्रीशुकदेव महामुनि प्रकटकही राधीश ॥१०९५॥वृन्दावनहरि यहिविधि क्रीडत सदा राधिकासंग । भोर निशा कबहूं जानतहैं सदा रहत यक रंग॥१०९६॥सघनकुंजमें खेलत गिरिधर मधुराकी सुधिआई । राखे बरजि राधिकारानी अब न सकोगे जाई ॥१०९७॥

राखौं कंठलगाय लालको पलक ओट नहिं करिहौं । युगकुच बीच भुजादोउनमिलसदाप्रेमरंग भरिहौं ॥ १०९८ ॥ सदा एक रस एकअखंडित आदि अनादि अनूप। कोटिकल्प वीतत नहिं जानत विहरत युगल स्वरूप ॥१०९९॥ संकर्षणके वदन अनलते उपजी अग्नि अपार। सकल ब्रह्मांड तुरत तेजसो मानो होरी दई पजार ॥ ११०० ॥ सकल तत्त्व ब्रह्मांड देव पुनि माया सब विधि काल । प्रकृतिपुरुष श्रीपति नारायण सब हैं अंश गोपाल ॥ ११०१ ॥ कर्म योग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो । श्रीवल्लभ गुरुतत्त्व सुनायो लीलाभेद बतायो ॥११०२॥ तादिनते हरिलीला गाई एक लक्ष पद बन्दानाको सार सूर सारावलि गावतअतिआनन्द॥११०३॥ अथ श्रीनाथजीके वरदान ॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ। तू कृत मम यश जो गावेगो सदारहे मम साथ ॥ ११०४ ॥ खेलत मंहि विधि हरि होरी हो वेद विदित यह बात । ॥ * ॥धरि जिय नेम सूर सारावलि उत्तर दक्षिण काल। मनवांछित फल सबहीपावें मिटे जन्म-जंजाल ॥११०५॥ सीखे सुने पढे मन राखे लिखे परम चितलाय। ताके संग रहतहौं निशिदिन आनँद जन्म विहाय ॥११०६॥ सरस सम्वतसर लीलागावें युगल चरण चितलावें । गर्भवास वंदीखानेमें सूर बहुरि नहिं आवें ॥ ११०७ ॥

इति श्रीसूरदासजीकृत सम्वतसरलीला तथा सवालाखपदोंकासूचीपत्र समाप्त ॥



जाहिरात।

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण।

संस्कृत मूल तथा भाषाटीका सहित।

पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र अनुवादित।

यदि आप रामचरितामृत पान करनेकी इच्छा करते हैं, यदि आपके हृदयमें रघुराज की भक्तिका स्रोत बहता है यदि आदि कवि वाल्मीकिजीकी मनोहारिणी चमत्कारिणी कविताका स्वाद लेनेकी इच्छा है, यदि दशरथ कुमारकी लीला इस आर्यग्रंथके द्वारा जानने की इच्छा है,यदि आपको त्रेतायुगकी वाणी का स्वाद लेनाहै, तो इस सटीक रामायणके स्वाद लेनेसे न चूकिये,इसमें प्रत्येक श्लोककी टीका पूर्ण आशय भावार्थ शंका समाधान पद टिप्पणी आदि ऐसी रीतिसे लिखीहैं कि सर्व साधारणके ध्यानमें सबप्रकार आजावें.पढ़नेसे पत्रे हाथमें लेकर छोड़नेको जी नहीं चाहता, भाषाकी शैली इस प्रकार रक्खीहै कि, बराबर पाठ करनेसे प्रेमसागरहृदयमें उमड़ता चला आताहै,मानो यह लीला नेत्रोंके सामने होरही है ऐसा ध्यान बँध जाताहै, बहुतकालसे महात्माओंको इसकी अभिलाषाथी,सो आपहीके निमित्त इसग्रंथको बड़े टाईपमें चिकने मोटे कागजपर छापकर तयार कियाहै, मूल्यभी डाकव्यय समेत केवल २२॥ ही रुपयेहैं ॥

वाल्मीकीय रामायण केवल भाषा।

और भी सुभीताहै--ऊपरके सब अलंकारों से युक्त सर्गके आदि अन्तके श्लोकलिखकर शेष सबभाषा और श्लोकांक भी लगे हुए दो भागोंमें विलायती बढ़िया सुन्दरसुनहरी अक्षरोंकी जिल्द बँधी है बहुत नहीं सत्रा सतरह रुपये १७)में घर बैठे पहुँचा देंगे।

शुकसागर।

कविवर लाला शालिग्रामजी अनुवादित।

लीजिये अब देरकरनेका समय नहीं यदि आप कृष्णचरितामृत पान करनेकी इच्छा करते हो, यदि श्रीमद्भागवतका परम मनोहर अनुवाद और चारपदार्थ हस्तगत करनाचाहते हो,यदि कृष्णचन्द्र आनंदकंद गोविन्दके मनभावन सुख उपजावन पवित्र चरित्र पाठ करने की उत्कण्ठा है, यदि अन्यभी महाभारतादि बड़े बड़े ग्रंथोंके आख्यान एकही पुस्तकमें देखना चाहते हो, यदि चटपटे अनूठे प्रेमरस भरे भजन दोहा चौपाई सोरठा कवित्तादिकी मिठाईके स्वाद कीचाहनाहै,यदिप्रत्येकअध्यायके शंका समाधानकी इच्छा है तो इस नवीन शुकसागरके लेनेमें देर न कीजिये, यह ग्रंथ अनेक विषयोंके होनेसे बहुत बढ़गयाहै, इस कारण अच्छे चिकने कागजपर बडे टाईप के अक्षरों में दो भागों में छापकर तयार कियाहै देखो अक्षरभी इतने बडे हैं कि वृद्धजनभीसुगमता से पढ़सकेंगे, मूल्य इतने परभी२५) रुपये और ५) डाकमहसूल रक्खाहै वजन भी पक्का १० सेरका है केवल लागतका यह दाम है पुट्ठा बढिया विलायती कपडेका है.

रामरसायन-रामायण ।

लीजिये पाठको ! यह परमप्यारी रसिकविहारीजीकी मनोहर काव्यरचनाका बहुतही सुंदर ग्रंथ लीजिये,देखिये समग्र ग्रंथ परमरोचकदोहा,चौपाई,सोरठा,कवित्तइत्यादिछन्दोवद्धमें वर्णित है और सम्पूर्ण ग्रंथ रामकथासे विभूषित है. रामकथामृताभिलाषियोंको तो अत्यन्तही सौख्यप्रद है रामजन्म,रामविवाह, वनगमन, सीताहरण, रामरावणसंग्राम, रामराज्य रामाश्वमेध इत्यादि कथायें अत्यन्त विस्तारपूर्वक वर्णित हैं काव्यानुरागियो ! यह नूतनकाव्य प्राचीनकाव्योंसे किसीप्रकार भावगंभीर, पदरुचिरतामें न्यून नहीं है इसके पदपदमें काव्यकी छटा चित्तको हर्षित करतीहै विशेष लिखनेकी आवश्यकता नही है. काव्यानुरागी इसके द्वारा शीघ्र रुचि पूर्ण करें डाकव्यय सहित ६॥।-छ रु० तेरह आना

भजनामृतसार-इसमें मंगल गौरी होली जय ध्वनि पद विनय आरती इत्यादि अनेकप्रकार के भजन हैं साधुओंके वास्ते अतिउत्तमहै की०१।रु०ड०-४ आ०

ब्रजविहार-वृंदावनवासी श्रीनारायण स्वामीजीकृत-जिसमें श्रीकृष्णचन्द्रआनंदकंद वृन्दावनविहारी तथा श्रीवृषभानुनन्दिनीराधे महारानीकीसम्पूर्णलीलाओंका वर्णन सुन्दर अनेकप्रकारके भजन दोहे कवित्त औरवार्तिकमें अतिमधुरतासे किया गयाहै जिसके पढनेसे श्रीकृष्णचरणानुरागियोंका मन प्रेममें एक दम मग्न होजाताहै इसमें अधिकतर वही लीला सम्मिलित कीगई हैं कि जिनको आजकलके रासधारी लोग करते हैं अन्तमें अनुरागरसभी है स्थान२ पर चित्र भी सुन्दर लीलानुकूल लगाये गये हैं पुस्तककी रक्षाके निमित्त विलायतीकपडेकी जिल्दभी बांधी गई है जिसपर सोनेके अक्षर भी लिखेगयेहैं मूल्यप्रेमियोंके निमित्तचिकनेकागजका ३ रु०डाक म०।≡)

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्, प्रेस-बम्बई.



श्रीराधाकृष्णचन्द्राय नमः।



श्रीगणेशाय नमः।

अथ सूरसागर।



प्रथम स्कन्ध।

राग विलावल॥ चरण कमल वंदौं हरि राई। जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधेको सब कछु दरशाई॥ बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई। सूरदास स्वामी करुणामय बार बार बन्दौं तेहि पांई॥ १ ॥राग कान्हरा। भक्त अंग॥अविगत गति कछु कहत न आवै। ज्यों गूँगे मीठे फलको रस अंतर्गतही भावै॥ परमस्वाद सबही जु निरंतर अमित तोष उपजावै। मन बाणीको अगम अगोचर सो जानै जो पावै॥ रूप रेख गुण जाति जुगति बिनु निरालम्ब मन चक्रृत धावै। सब विधिअगमबिचारहिंतातेंसूर सगुण लीलापद गावै॥ २॥ भक्तवत्सलअंग।राग मारू॥

वासुदेवकी बडी बडाई ॥ जगत पिता जगदीश जगत गुरु आपुन भक्तकी सहत ढिटाई ॥ भृगुको चरण राखि उर ऊपर बोले वचन सकल सुखदाई । शिव विरंचि मारनको धाए सो गति काहू देव न पाई॥विनु बदले उपकार करतहैं स्वारथ विना करत मित्राई । रावण अरिको अनुज विभीषण ताको मिले भरतकी नाई ॥ वकी कपट करि मारन आई सो हरिजू बैकुंठ पठाई।बिनु दीनेही देत सूर प्रभु ऐसे हैं यदुनाथ गुसाई ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ करणी करुणा सिंधुकी कछु कहत न आवै । कपट हेतु परशे बकी जननी गति पावै ॥ वेद उपनिषद यश कहै निर्गुणहि बतावै । सोइ सगुण होय नंदकी दाँवरी बंधावै ॥ उग्रसेनकी आपदा सुनि सुनि बिलखावै । कंस मारि राजा कियो आपुन शिरनावै ॥ जरासंधकी बंदी काटी नृप कुल यश गावै । असमय वन निगले पिता ताको शाप नसावै ॥ उधरे शोक समुद्रते पांडव गृह लावै । जैसे गैया बच्छको सुमिरत उठि धावै । वरुण फांस ते ब्रजपतिहि छिन माहिं छुडावै । दुखित गयंदहि जानिकै आपुन उठि धावै ॥ कलिमेंनामा प्रगटियो ताकी छानिछवावै । सूरदासकीबीनती कोउ लै पहुँचावै ॥४॥ राग मारू । ऐसी कौन करी है और भक्त काजै ॥ जैसे धरे जगदीश जियमाहिंलाजै॥हिरनकश्यप बढ्यो उदय अरु अस्त लौं ग्रस्यो प्रह्लाद चित चरण लायो । भीरके परेते धीर सबहिन तज्यो खंभते प्रगट करि जन छुडायो ॥ ग्रस्यो गज ग्राह लै चल्यो पातालको कालके त्रास मुख नाम आयो । छांडि सुखधाम अरु गरुडतजि सांवरो पवनके गवनते अधिक धायो॥कोपि कौरव गहे केश जब सभा में पांडुकी वधू यश नेकु गायो । लाजके साजमें हुती ज्यों द्रौपदी बढ्यो तनु चीर नहिं अंत पायो॥रोरके जोरते शोर घरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठाढयो ॥जोरि अंजलि मिले छोरि तंदुल लये इन्द्रके विभवते अधिक बाढ्यो॥शक्रकोदानविनमान ग्वालिन कियो गह्यो गिरिपान यश जगत छायो । यहै जिय जानिकै अंध भवत्रासते सूर कामी कुटिल शरण आयो ॥५॥ राग रामकली । का न कियो जनहित जदुराई ॥ प्रथम कह्योदे वचन दयारत तेहि बस गाय चराई ॥ भक्त बछल वपु धरि नरकेहरि दनुज दहन उर दर सुरसाई।बलि बल देखि अदिति सुत कारन भियदुपलव निर्हेपुर फिरि आई ॥ एहि था वनि ग्रीडा गज मोचन और अनंत कथा श्रुति गाई। सूर दीन प्रभु प्रगट विरद सुनिअजहुँ दयाल पतितशिरनाई॥६॥ जहां जहां सुमिरे हरि जेहि विधि तहांतेंसेउठि धायेहो।दीनबंधु हरि भक्त कृपानिध वेदपुराणन गाये हो ॥ सुत कुवेरके मत्त मगन भए विष रस नैना छाये हो । मुनिशरापते भये जमल तरु तेहि हित आपु बँधाये हो ॥ वस्त्र कुचैल दीनद्विज देखत ताके तंदुल खाये हो ।सम्पतिदईवाकी पत्नीको मन अभिलाष पुराये हो ॥ जब गज गह्यो ग्राह जलभीतर तब हरिनामपुकार्यो हो । गरुड छांडि आतुर ह्वै धाय सो तत्काल उबार्यो हो ॥ कलानिधान सकल गुणसागर गुरु धौं कहा पढाये हो ॥ तेहि उपकार मृतक सुत यांचे सो यमपुरते ल्याये हो ॥ तुम मोसे अपराधी माधव कितेक मुक्ति पठाये हो । सूरदास प्रभु भक्तबछल तुम पावन नाम कहाये हो ॥ ७॥ राग धनाश्री ॥ प्रभुको देखो एक सुभाई । अति गंभीर उदार उदधि मरि जान शिरोमणि राई॥ तिनकासो अपने जनको गुण मानत मेरु समान । सकुचि समुद्र गनत अपराधहि बूँद तुल्य भगवान ॥ वदन प्रसन्न कमल ज्यों सन्मुख देखत हौं हों जैसे । विमुख भये अकृपिण निमेष हू फिर चितयो तो तैसे ॥ भक्त विरह कातर करुणामय डोलत पाछे लागे । सूरदास

ऐसे स्वामीको देहि सु पीठ अभागे ॥ ८ ॥ राग नट ॥ हरिसो ठाकुर और न जनको।जेहि जेहि विधि सेवक सुख पावे तेहि विधि राखत तिनको॥ भूखे बहु भोजन जु उदर को तृषा तोय पट तन को।लग्यो फिरत सुरभी ज्यों सुत संग उचित गमन गृह वनको॥परम उदार चतुर चिंतामणि कोटि कुबेर निधनको॥राखत है जनकी परतिज्ञा हाथ पसारत कणको ॥संकट परे तुरत उठि धावत परमसुभट निजप्रणको॥कोटिककरै एक नहिं मानै सूर महाकृतघनको॥९॥ राग धनाश्री॥हरिसो मीत न देखौं कोई। अंतकाल सुमिरत तेहि अवसर आनि प्रतक्षो होई ॥ग्राह गहे गजपति मुकरायो हाथ चक्रलै धायो।तजि बैकुंठ गरुड तजि श्री तजि निकट दासके आयो॥ दुर्वासाको शाप निवारचो अंबरीष पति राखी। ब्रह्मलोक पर्यंत फिरचो तहँ देव मुनी जन साथी ॥ लाखागृहते जरत पांडुसुत बुधि बल नाथ उबारे । सूरदास प्रभु अपने जनके नाना त्रास निवारे॥१०॥ राग धनाश्री॥राम भक्तवत्सल निज बानो।जाति गोत कुल नाम गनत नहिं रंक होयकै रानो॥ब्रह्मादिक शिव कौन जात प्रभु हौं अजान नहिं जानों॥महता जहाँ तहाँ प्रभु नाहीं सो द्वैता क्यों मानो ॥प्रगट खंभ ते दई दिखाई यद्यपि कुलको दानो।रघुकुल राघो कृष्ण सदाही गोकुल कीनो थानो ॥ बरणि न जाय भजन की महिमा बारम्बार बखानो । ध्रुव रजपूत विदुर दासीसुत कौन कौन अरगानो॥युग युग विरद यहै चलि आयो भक्तन हाथ बिकानो।राजसूय में चरण पखारे श्याम लये कर पानो ॥ रसना एक अनेक श्याम गुण कहँलौं करों बखानो । सूरदास प्रभुकी महिमा है साखी वेद पुरानो ॥ ११ ॥ रागबिलावल॥काहूके कुल तन न विचारत । अविगतकी गति कहि नपरतुहै व्याध अजामिलतारत॥ कौन धौं जाति अरु पांति विदुरकीताहीके प्रभु धारत । भोजन करत दुष्ट घर उनके राज मान भँग टारत ॥ऐसे जन्म करमके ओछे ओछेहीं अनुसारत । यहै सुभाव सूरके प्रभुको भक्त वछल प्रण पारत ॥ १२ ॥ राग सारंग ॥ गोविंद प्रीति सबनकी मानत॥ जेहि जेहि भाय करी जिन सेवा अंतर्गत की जानत॥ शबरीकटुकबेरतजिमीठे भाखि गोद भरि लाई।जूंठे की कछु शंक न मानी भक्ष किये सतभाई॥ संतन भक्त मित्र हितकारी श्याम विदुरके आये । अतिरस बाढो प्रीति निरंतर साग मगन ह्वै खाये ॥कौरव काजचले ऋषि शापन साग पत्रही अघाये । सूरदास करुणानिधान प्रभु युग युग भक्त बढाये ॥१३॥ रागराम-कली॥ शरण गये को को न उबारचो । जब जब भीरपरी संतन को चक्रसुदर्शन तहां सँभारचो॥ भयो प्रसाद जु अंबरीप को दुर्वासाको क्रोध निवारचो । ग्वालन हेतु धरचो गोवर्धन प्रगट इन्द्र को गर्व प्रहारचो ॥ कृपा करी प्रह्लाद भक्त को खंभ फारि उर नखन विदारचो । नरहरि रूप धरचो करुणा करि छिनक माहिं हरनाकुश मारचो॥ग्राह ग्रसत गजको जल बूडत नामलेत वाको दुख टारचो । सूरश्याम बिनु और करै को रंगभूमिमें कंस पछारचो ॥ १४ ॥ राग केदारा। जनकी और कौन पत राखै । जाति पांति कुल कानि न मानत वेद पुराणनि साखै ।जेहिकुल राज द्वारका कीनो सो कुल शापत नाश्यो ।सोइ मुनि अंबरीप के कारण तीन भुवन भ्रमि त्रास्यो ॥ जाकी चरणोदक शिव शिर धरचो तीन लोक हितकारी । तिन प्रभु पांडुसुतनके कारण निजकर चरण पखारी ॥ बारह बरस वसुदेव देवकी कंस महा डर दीनो । तिन प्रभु प्रह्लादहिं सुमिरत ही नरहरि रूप जु कीनो॥जग जानत यदुनाथ जितेजन निजभुज श्रम सुख पायो। ऐसो को जो शरण गये ते कहत सूर इतरायो ॥ १५ ॥जब जब दीनन कठिन परी।जानतहौं करुणामय जनको तब तब सुगम करी ॥ सभामँझार द्रौपदी आनी हरि सुदुशासन दुष्ट धरी। सुमिरतपटको कोट बढचो

१ विपत्काल ।

तब दुख सागर उबरी ॥ब्रह्मशापते गर्भ उधारयो टेरत जगी जरी॥ तब तब रक्षा करी भगतपर जब जब विपतिपरी॥ विपतिकाल पांडव बँधुअनमें राख्यो श्याम डरी॥करि भोजन अवशेषयज्ञ प्रभु त्रिभुवनभूख हरी॥पाय प्रसाद भक्तपन राख्यो गजगों गहि धरी । महामोहमें परयो सूर प्रभु काहे सुधि विसरी ॥१६॥ राग रामकली ॥ और न काहुहि जनकी पीर । जब जब दीन दुखी भयो तब तब करी कृपा बलवीर ॥ गज बल हीन विलोकि दशों दिशि तब हरि-शरण परयो । करुणासिंधु दयालु दरश दे सब संताप हरयो ॥गोपी गाइ ग्वाल गो सुत हित सात दिवस गिरि लीनो । मागध हन्यो मुक्त नृप कीने मृतक विप्रसुत दीनो॥श्रीनृसिंह वपु धरयो असुर हति भक्त वचन प्रतिपारयो । सुमिरत नाम द्रुपदतनयाको पट अनेक विस्तारयो ॥ मुनि मद मेटि दास व्रत राख्यो अंबरीष हितकारी । लाषा गृहमें शत्रु सैनते पांडव विपति निवारी ॥ वरुण फांस ब्रजपति मुकरायो दावानल दुख टारयो । घर आए वसुदेव देवकी कंस महाखल मारयो॥श्रीपति युग युग सुमिरनके वश देव विमल यश गावैं । अशरण शरण सूर यांचतहै को जो सुरति करावै ॥ १७ ॥राग केदारा ॥ठकुरायत गिरधर जूकी सांची ॥ कौरव जीति युधिष्ठिर राजा कीरति तीन लोकमें माची ॥ ब्रह्म रुद्र डर डरत कालके काल डरत ध्रुव भंग की आंची । रावण सो नृप जात न जान्यो माया विषम शीश धरि नाची ॥ गुरुसुत आनि दिये यमपुरते विप्र सुदामा कियो अयाची । दुःशासन कर वसन छुडावत सुमिरत नाम द्रौपदी बांची ॥ हरि चरणारविंद तजि लागत अनत कहूं तिनकी मति कांची । सूरदास भगवंत भजन जे तिनकी लीक चहूं युग खांची ॥ १८ ॥भक्त महिमा ।राग सारंग ॥हरिके जन सबते अधिकारी । ब्रह्मा महादेवते को बड तिनके सेवक भ्रमत भिखारी । याचक पै याचक कहावैजो यांचै सो रसना हारी । गणिका पूत शोभ नहिं पावत जिन कुल कोऊ नहीं पितारी॥ तिनकी साख देखि हरनाकुश रावण कुटुंब समेत भो ख्वारी । जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली विभीषण सु अजहूँ राजारी ॥ शिला तरी जल माहिं सेतु बँधि बलि वहि चरण अहल्या तारी । जे रघुनाथ शरण तकि आये तिनकी सकल आपदा टारी ॥ जिनगोविंदअचल ध्रुव राख्योरवि शशिदे प्रदक्षिणा हारी । सूरदास भगवंत भजनविनु धरनीजननिवोझकतमारी । ॥१९ ॥ राग सारंग ॥जापरदीना-नाथ ढरे । सोइ कुलीन बडो सुन्दर सोइ जिनपर कृपा करे ॥ राजा कौन बडो रावणते गर्वहिगर्व गरे । रंकव कौन सुदामाहूते आपु समान करे ॥ रूपव कौन अधिक सीताते जन्म वियोग भरे । अधिक कुरूप कौन कुबिजाते हरिपति पाइ वरे ॥ योगीकौनबडोशंकरते ताको काम छरे। कौन विरक्त अधिक नारदसों निशि दिन भ्रमत फिरे॥अधम सुकौन अज मिलहूते यम तहँ जात डरे । सूरदास भगवंत भजन विन फिर फिर जटर जरे ॥ २० ॥ जाको दीनानाथ निवाजे । भवसागरमें कबहुं न झुकै अभय निशाने बाजे ॥ विप्रसुदामाको निधि दीनी अरजुन रनमें गाजे ॥लंकाराज विभीषण राजे ध्रुव आकाश विराजे ॥ मारि कंस केशी मथुरामें मेट्यो सबै दिवाजे । उग्रसेनशिर छत्र धरयो है दानव दुहुं दिशि भाजे ॥ अंबर गहत द्रौपदी राखी पलटि अंधसुत लाजे । सूरदास प्रभु महा भक्तिते जाति अजातिहि साजे ॥ २१ ॥ रागदेवगंधार ॥ जाको मन मोहन अंग करै । ताको केश खसै नहिं शिरते जोजग वैरपरै ॥हिरनकशिपुपरिहार थक्योप्रह्लाद नरंकुडरे। अजहूं लौं उत्तानपाद सुत राज्य करत न मरै॥राखी लाज द्रुपदतनयाकी कोपित चीर हरै । दुर्योधन-को मान भंग करि वसन प्रवाह भरै ॥ विप्रभक्त नृग अंधकूपदियो बलिपढिवेदछरै। दीनदयाल-

तु कृपालु कृपानिधि कापै कह्यो परै ॥ जो सुरपति कोप्यो व्रज ऊपर कहिधौं कछु न सरै।राखे व्रज जन नंदके लाला गिरिधर विरद धरै ॥ जाकी विरद है गर्वप्रहारी सो कैसे विसरै। सूरदास भगवंत भजन करि शरण गहे उधरै ॥२२ ॥ राग केदारा ॥ जाको हरि अंगीकार कियो । ताके कोटि विघ्न हरि हरिकै अभयप्रताप दियो॥दुर्वासा अंवरीप सतायो सो हरि शरण गयो ।परतिज्ञा राखी मनमोहन फिरि तापै पठयो ॥निकसि खंभते नाथ निरंतर अपनो राखि लियो । वहु शासना दई प्रह्लादहिं ताहि निशंक कियो ।मृतक भये सव सखा जिवाये ।विप जल जाइ पियो सूरदास प्रभु भक्तवच्छल हैं उपमा कौन कियो॥२३ ॥ राग विलावल ॥कहा कमी जाके राम धनी। मनसानाथ मनोरथ पूरण सुखनिधान जाको मौज घनी ॥ अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष फल चार पदारथ देत छनी । इन्द्र समान जाके हैं सेवक मो वपुरेकी कहा गनी॥ कहा कृपणकी माया कितनी करत फिरत अपनी अपनी । खाइ न सकैं खरच नहिं जानैंज्यों भुअंगशिररहतमनी॥ आनँद मगन राम गुण गावे दुख संताप की काटि तनी। सूर कहत जे भजत रामको तिनसों हरिसों सदा वनी॥ २४ ॥ हरिजूके जनकी अति ठकुराई।महराज ऋपिवर सुर नरमुनिदेखत रहेलजाई ॥निरभय राज ताहिकोदीनो लागनि मननि उछाहू। कामक्रोध मद लोभ मोहमिलि भये चोरते साहू॥दृढ विश्वास कियो सिंहासन तापर वैठ्यो भूप । हरिजस विमल छत्र शोभित शिर राजत परम अनूप॥हरिपद पंकज प्रजाप्रेम वश ताहीके रँगराते। मंत्री ज्ञान न अवसर पावे कहत न वनै सकाते ॥ अर्थ धर्म दोउ रहे वहे दुरि काम मोक्षशिर नायो।विनय विवेक विचित्र पौरिया समय न काहू पायो॥अष्टमहानिधिआगेठाढी कर जोरे उर लीने।छरीदार वैगारविनोदी छिरकि वाहिये कीने ॥ कायर काल कछू नहिं व्यापै या इस रीतिहि जाने।सूरदास नर तौ जाने जो गुरुप्रसाद पहिचानै ॥ २५ ॥मायावर्णनाराग केदारा ॥विनतीसुनो दीनकी चित दे कैसे तव गुण गावै । माया नटिनि लकुटि कर लीने कोटिक नाच नचावै ॥ दर दर लोभ लागि लै डोलति नाना स्वांग करावै ।तुमसों कपट करावति प्रभु जू मेरी वुद्धि भ्रमावै ॥ मन अभिलास तरंगनि करिकरि मिथ्यानिशा जगावै। सोवत स्वप्नेमें ज्यों सम्पति त्यों दिखाय वौरावै ॥ महा मोहनी मोह आत्मा मन करि अघहि लगावै ।ज्यों दूती परवधू भोरिकै लै परपुरुप दिखावै ॥ मेरे तो तुमहीं पति तुम गति तुम समान को पावै।सूरदास प्रभु तुमरी कृपा विनु कोमों दुख विसरावै॥२६॥ राग सोरठ। विनै कासों कहों दीनवन्धो। जन्मकृत अकृत चकृतचित चरनसरन राखिदयासिंधो॥ द्विज पतित मतिहीन गनिका गुन लौलीन करत अघ खीन पूतना प्रहारे।सकृत निज हरिनाम जिन लियो अवशि कर दूरि करि को को न तारे॥ध्रुव तेइथापि थिरप्रहलाद परतीत करि हिरन कश्यप उर नख विदारे। मानि गज भारि भेंटि तनकी पीर द्रुपदकन्या धरन धीर लज्या निवारे॥ रावन मदअन्ध और नृप जरासंध कियेनिरवन्ध क्रोध वर तुल्य कारे।त्रैलोक जस रह्यो यहै सव श्रुति कह्यो सोही में दृष्टि गह्यो शैलधारे ॥अगिनतविक्रम शिवविरंचि भ्रमतभ्रमसकलमुनिजन अगम लोकपारे। सूरकल्यान प्रभु राखिसनमान अव देहि निज दान कलिमल ताप हारे ॥२७॥ विनवी करत मरत हों लाज।नख सिखलौं मेरी यह दही है पापकी जहाज॥लखमुनिजस रह्यो रेहे नन आंखितर देखत अपनो साज । तीनों पनभरि ओर निवाह्यो तऊ नआयो वाज॥पाछे भयो न आगे हैहे सव पतितन सरताज।नरकौ भज्यो नाम सुनिमेरो पीठिदई यमराज॥अवलौंनान्हे रून्हे तार्यो ते सव वृथा अकाज । सांचे विरदसूरके तारतलोकन लोकअवाज ॥२८॥ हरितेरी

माया कौन बिगोयो ।सौ योजन मर्याद सिंधुकी पलमें राम बिलोयो॥नारद मगनभयेमायामें ज्ञान बुद्धि बल खोयो । साठ पुत्र अरु द्वादश कन्या कंठ लगाये जोयो ॥शंकरको चितहर्यो कामिनी सेज छोडि भुव सोयो । जारि मोहनी आढ आढ कियो तब नख शिखते रोयो॥ सौ भैयाराजादुर्योधन पलमों गर्द समोयो॥सूरज दास कांच अरु कंचनएकहिधगापरोयो॥२९॥ राग सारंग । तुम्हरी माया महाबली जिन जग वश कीनो॥नेकु चितै मुसुकाइ सबन को मन हरि लीनो ॥कछु कुलधर्म न जानइ याके रूप सकल जग राच्यो॥ बिनु देखे बिनही सुने ठगन न कोऊ बाच्यो ॥ सुनि याके उत्पाततें शुक सनकादिक भागे । लोक लाज सब छुटि गई काम क्रोध मद जागे ॥ अकथ कथा याकी हरिकही कहत न आई । छैलनके संग यों फिरै जैसेतनु- सँग छाई ॥ इहि विधि इन डहकेसबै जलथल जियजेते। चतुरशिरोमणि नन्दके अरु कहा कहौं केते॥पहिरे राती चूनरी शिर श्वेतउपरनासोहै॥ कटिलहँगा लीलोबन्यो नीको जोदेखिनसोहै॥ चोली चतुरानन ठग्यो अमर उपरना राते।अनरोटा अवलोकिके सब असुर महा मदमाते॥ योग युगति बिसरी सबै उठि धाये संग लागे । नेक दृष्टि तह परिगइ शिव शिर टोना लागे॥ बहुत कहांलौं बर्णियो पर पुरुष न उबरन पावै।भरि सोवै सुखनींदमें तहां जाइ जगावै एकनि- को दरशन ठगै एकनि संग सोवै । एकनि लै मन्दिर चढै इक बिरचि बिगोवै ॥बहि लाजनि मरिए सदा सब कहत तुमारी । सूर श्याम यहि बरजिकै मेटहु कुल गारी ॥ ३० ॥ राग बिलावल॥ हरि तेरो भजन कियो न जाइ ।कहा करूं तेरी प्रबल माया देति उदर बहाइ ॥ जबै आऊं साधु संगति कछुक मन ठहराइ। ज्यों गयंद अन्हाइ सरिता बहुरि वहै सुभाइ॥ वेष धरि धरि हर्यो परधन साधु साधु कहाइ । जैसे नटुवा लोभ कारण करत स्वांग बनाइ ॥ करौं यतन न भजौं तुमको कछुक मन उपजाइ । सूर हरिकी प्रबल माया देति मोहिं लुभाइ ॥३१॥ माधव जू मन माया वश कीनो । लाभ हानि कछु समुझत नाहीं ज्यों पतंग तनुदीनो ॥गृह दीपक धनतेल तूल तिय सुत ज्वाला अति जोर। मैंमतिहीन मर्म नहिं जान्यौं पर्योंअधिक करि दौर॥विवश भयो नलिनीके शुक ज्यों बिन गुरु मोहिं गह्योमें अज्ञान कछू नहिं समझ्यों परदुखपुंज सह्यो॥ बहुतक दिवस भए या जगमें भ्रमत फिर्यो मतिहीन।सूर श्यामसुंदर जो सुमिरै क्योंहोवै गति दीन॥३२॥अविद्यावर्णन। मलार ॥ माधव जू यह मेरी इक गाइ।अब आजुते आपु आगे लै आइए चराई॥है अति हरिहाई हटकनहूं बहुत अमारग जाती॥फिरति वेद बन ऊख उखारति सब दिन अरु सबराती ॥ हित कै मिलैलेहु गोकुलपति अपने गोधन मांह । सुख सोऊं सुनि बचन तुम्हारे देहु कृपा करि बांह॥निधरक रहौं सूरके स्वामी जन्म न जाऊं फेरि।मैं ममता रुचिसों रघु- राई पहिले लेउँ निवेरि ॥ ३३ ॥ राग धनाश्री ॥ कितक दिन हरिसुमिरन बिनु खोये। परनिंदा रसनाके रसमें अपने पर तर बोये ॥ तेल लगाइ कियो रुचि मर्दन वस्त्रहि मलि मलि धोये। तिलक बनाय चले स्वामी है विषयिनके मुख जोये॥ काल बलीते सब जग कंपत ब्रह्मादिक हूं रोये। सूर अधमकी कहा कौन गति उदर भरे परि सोये ॥३४ ॥ तृष्णावर्णन। केदारा ॥ माधव जू नेकु हटको गाइ । निशि बासर यह भ्रमति इतउत अगह गही नहिं जाय ॥क्षुधित बहुत अघात नाहीं निगम द्रुम दल खाइ ।अष्टदश घट नीर अचवै तृषा तउ न बुझाइ॥ छहूं रस हू धरत आगे वहै गंध सुहाय । और अहित अभक्ष भक्षति गिरा बर्णि न जाय ॥व्योम धर नद शैल कानन

इते चरि न अघाइ।ढीठ निठुर न डरति काहू त्रिगुण ह्वै समुहाइ॥हरे नखलबल दनुजमानव सुरनि शीश चढाइ। रचि विरंचि मुख भौंह छविलौंचलतिचितहिंचुराइ॥नील खुर जाकेअरुन लोचन श्वेत सींग सोहाइ।दिन चतुर्दश खेत खूँदति सु यह कहासमाइ॥नारदादि शुकादि मुनिजनथके करत उपाइ।ताहि कहु कैसे कृपानिधि सकत सूर चराइ॥ ३५ ॥ विनती अंग। राग केदारा॥वन्दौं चरण सरोज तुम्हारे । सुन्दर श्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्राणपति प्यारे॥ जे पद पद्म सदाशिवके धन सिंधुसुता उरते नहिं टारे।जे पदकमल तातरिसत्रासत मनवचक्रम प्रहलाद सँभारे ॥ जे पद पद्म परसि जलपावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे । जे पदपद्म परसि ऋपिपत्नी बलि नृग व्याध पतित बहु तारे ॥ जे पदपद्म रमत वृन्दावन अहिशिर धरिअगणित रिपु मारे। जे पद पद्म परसि व्रजभामिनि सर्वस दै सुत सदन विसारे॥ जे पदपद्म रमत पंडव-दल दूत भये सब काज सँवारे । सूरदास तेई पदपंकज त्रिविध ताप दुख हर न हमारे ॥ ३६ ॥ ॥ धनाश्री ॥हरि जू तुमते कहा न होई। रंक सुदामा कियो इन्द्रसम पांडवहित कौरवदल खोई॥ पतित अजामिल दासी कुविजा तिनहूंके कलिमल सब धोई।बोलै गूँग पंगु गिरिलंघै अरुआवै अंधा जग जोई॥ बालक-मृतक जिवायदिये द्विजजो आयेदरबारे रोई।सूरदास प्रभु इच्छापूरण श्री गुपाल सुमिरत सबकोई ॥३७॥राग सोरठ ॥ अबके राखिलेहु भगवान । हम अनाथ बैठेद्रुम डरिया पारधिसाधे बान ॥जाके डर भाज्योचाहतहै ऊपर ढुक्यो सचान । दुबौं भाँतिदुखभयो आनि यह कौनउबारे प्रान ॥ सुमिरतहीं अहि डस्यो पारधी करछूटे संधान।सूरदासशरलग्यो सचानहिं जय जय कृपानिधान ॥ ३८ ॥ रागबिहगरा ॥ हृदयकी कबहुँ न जरन घटी । बिनु गोपाल विथा या तनुकी कैसे जात कटी॥अपनी रुचि जितही तित खैंचति इन्द्रिय ग्राम गटी। हो तितहीं उठि चलति कपट लगि बांधे नयन पटी ॥ झूठो मन झूठी यह काया झूठी आर भटी। अरु झूठनि के वदन निहारत मारत फिरत लटी ॥ दिन दिन हीन छीन भइ काया दुख जंजाल जटी ॥ चिंता गई अरु भूख भुलानी नींद फिरत उचटी ॥ मगन भयो माया रस लम्पट समझत नाहिं हटी । तापर मूड चढी नाचति है मीचति नीच नटी॥ खैंचत स्वाद श्वान पातर ज्यों चातक रटत उटी ।सूर जलधि सिंचे करुणानिधि निज जन जरनि मिटी ॥ ३९ ॥ ॥ राग केदारा ॥ अब नाथ मोहिं उधारि । मग नहीं भव अम्बुनिधि में कृपासिन्धु मुरारि ॥ नीर अति गंभीर माया लोभ लहरति रंग। लये जाति अगाध जल में गहे ग्राह अनंग ॥ मीनइन्द्रिय अतिहि काटति मोट अघ शिर भार ।पग न इत उत धरन पावत उरझि मोह सिवार ॥ काम क्रोध समेत तृष्णा पवन अति झकझोर। नाहिं चितवनदेत तियं सुत नाम नौका ओर॥ थक्यो बीच बिहाल बिह्वल सुनो करुणामूल । श्याम भुज गहि काढि लीजे सूर व्रजके कूल॥ ४० ॥ राग सारंग ॥माधव जू मन हठि कठिन परयो । यद्यपि विद्यमान सब निरखत दुःख शरीर भरयो॥ बार बार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशिधाये । ज्यों शुकसेंवरफूलविलोकतजातनहीं बिन खाये॥युग युग जन्म मरन अरु बिछुरन सन समुझतमतिभेव।ज्योंदिनकरउल्लूकनहिंमानत परी आनि यह टेव॥हौं कुचील मतिहीन सकलविधि तुम कृपालु जग जान। सूरमधुपनिशिकमल

कोश वश करो कृपादिन भान ॥ ४१॥ रागधनाश्री॥ आछो गात अकारथ गाऱ्यो। करी न प्रीति कमल लोचन सों जन्म जुवा ज्यों हाऱ्यो ॥ निशि दिन विषय विलासनि विलसत फूटि गईं तव चाऱ्यो। अब लाग्यो पछतान पाइ दुख दीन दई को माऱ्यो ॥ कामी कुटिल कुचील कुदरशन कौन कृपा करि ताऱ्यो। ताते कहत दयालु देव मुनि काहे सूर बिसाऱ्यो ॥ ४२ ॥ रागसारंग॥ माधव जू मन सबही विधि पोच। अति उन्मत्त निरंकुश मयगज चिंता रहित अशोच ॥ महा मूढ अज्ञान तिमिरमें मग्न होत सुख मानि। तेलीकेर वृषभ ज्यों भरम्यो भजत न सारंगपानि॥ गीध्यो ढीठ हेम तस्करज्यों अति आतुर मतिमंद। लुब्धो स्वाद मीन आतुर ज्यों अवलोक्यो नहिं फंद॥ज्वाला प्रीति प्रगट सन्मुख हटि ज्यों पतंग तनु जाऱ्यो। विषय असक्त अमितअघ व्याकुल तब हम कछु न सँभाऱ्यो ॥ ज्यों कपि शीत हुताशन गुंजा सिमटि होत लवलीन। त्यों शठ वृथा तजत नहिं कबहूं रहत विषय आधीन॥ सेंवर फूल सुरँग शुक निरखत मुदित होत खग भूप। परशत चोंच तूल उघरत मुख परत दुःख के कूप ॥ और कहांलों कहौं एक मुख या मनके कृत काज। सूर पतित तुम पतित उधारन गहो विरद की लाज ॥४३ ॥ मेरो मन मतिहीन गुसांईं। सब सुखनिधि पद कमल छांडि श्रम करत श्वान की नाईं ॥ फिरत वृथा भाजन अवलोकत सूने सदन अज्ञान। तिहिं लालच कबहूं कैसहूं तृप्ति न पावत प्रान॥ जहँ जहँ जात तहीं भय त्रासत आस लकुटि पदत्रान। कौर कौर कारण कुबुद्धि जड किते सहत अपमान ॥ तुम सर्वज्ञ सकल विधि पूरण अखिल भुवन निजनाथ। तिन्हें छांडि यह सूर महाशठ भ्रमत भ्रमनिके साथ ॥ ४४ ॥ राग गौरी ॥ करुणामय तेरी गति लखि न परे। धर्म अधर्म अधर्म धर्म कारि अकरन करन करे ॥ जय अरु विजय कर्म कहा कीनो ब्रह्म शराप दिवायो। असुर योनि ता ऊपर दीनी धर्मउँ छेद करायो॥पिता वचन खंडे सो पापी सो प्रह्लाद-हि कीनी। निकसे खंभ वीच ते नरहरि ताहि अभयपद दीनो॥ दान धर्म बहु कियो भानुसुत सो तुव विमुख कहायो। वेद विरुद्ध सकल पंडवसुत सो तुम्हरो मन भायो॥ यज्ञ करत वैरोचन को सुत वेद विमल विधि कर्मा। सो छलि बांधि पताल पठायो कौन कृपानिधि धर्मा ॥ द्विज कुल पतित अजामिल विषयी गणिका नेह लगायो। सुत हित नाम लियो नारायण सो वैकुंठ पठायो। पतिव्रता जालंधर युवती सो पतिव्रत ते टारी। दुष्ट पुंश्चली अधम सु गणिका सुवा पढावत तारी॥ मुक्त हेतु योगी श्रम कीनों असुर विरोधहिं पावे। अविगत गति करुणामय तेरी सूर कहा कहि गावे ॥४५॥ राग सारंग ॥ अविगत गति जानी न परे। मन वच अगम अगाध अगोचर केहि विधि बुधि सँचरे ॥ अति प्रचंड पौरुष वल पाये केहरि भूख मरे। विन आशा विन उद्यम कीने अजगर उदर भरे ॥रीते भरे भरे पुनि ढोरे चाहे फोरि भरे। [illegible]क तृण बूडे पानी में कबहूं शिला तरे ॥ वागर ते सागर करि राखे चहुं दिशि नीर भरे। सूर [illegible] कमल विकसाही जलमें अगिनि जरे ॥ राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरे। कोटि [illegible] तनक में जो प्रभु नेकु ढरे॥४६॥ राग केदारा ॥अपनी भक्ति देहु भगवान ॥ देखिसाहस सकु[illegible] नाहिंन रुचि आन ॥ जरत ज्वाला गिरत गिरिते सुकर काटत शीश। सिंह शावक जात गृहँ नाहिंन रुचि आन ॥ जरत ज्वाला गिरत गिरिते सुकर काटत शीश। विषय विष हठि खात नीरसकत न ईश॥ कामना करि कोपि कबहूं करत कर पशु घात। [illegible] डगत ॥ जा दिना ते जन्म पायों यहै मेरी रीति। [illegible] ॥ थके किंकर यूथ यमके टारे टरत न नेक।

नरक कूपनि जाइ यमपुर परचो वार अनेक ॥ महा माचल मारिबेको सकुच नाहिन मोहिं। परचो हौं प्रण किये द्वारे लाज प्रणकी तोहिं॥नाहिनै काचो कृपानिधि करौं कहा रिसाय। सूर तबहुं न द्वार छांडे डारिहौ कढराइ ॥ ४७ ॥ राग धनाश्री ॥जनके उपजत दुख किन काटत। जैसे प्रथम अषाढ के वृक्षनि खेतहर निरखि उपाटत ॥ जैसे मीन किलकिला दरशत ऐसे रहो प्रभु डाटत। पुनि पाछे अघसिंधु बढत हे सूर खार किन पाटत ॥ ४८ ॥राग कान्हरा॥कीजै प्रभु अपने बिरदकी लाज। महापतित कबहूं नहिं आयो नेकु तुम्हारे काज ॥माया सबल धाम धन वनिता बांध्यो हौ इहिसाज। देखत सुनत सबै जानत हौं तऊ न आयो बाज ॥ कहियत पतित बहुत तुम तारे श्रवणनि सुनी अवाज। दई न जात खार उतराई चाहत चढनजहाज ॥ लीजैपार उतारि सूर को महाराज ब्रजराज। नई न करन कहत प्रभु तुम सों सदा गरीबनेवाज॥ ४९॥ राग बिलावल ॥महाप्रभु तुम्हें बिरद की लाज। कृपानिधान दानि दामोदर सदा सँवारत काज॥ जब गज ग्राह चरण धरि राख्यो तब तुम्हें नाथ पुकारचो।तजिकै गरुड़ चल्यो अति आतुर पकरि चक्र कर मारचो ॥ निशि निशिही ऋषि लये सहस दश दुर्वासा पग धारचो।तत्कालहि तब प्रगट भये हरि राजा जीव उबारचो ॥ हरनाकुश प्रह्लाद भक्तको बहुत शासना जारचो। रहि न सके नरसिंह रूप धरि गहि कर असुर पछारचो॥दुःशासन गहिकेश द्रौपदी नगन करन को लाये। सुमिरत ही तत्काल कृपानिधि वसनप्रवाह बढाये॥ मागधपति बहु जीति महीपति कछु जियमें गर्वाए। जीत्यो जरासंध रिपु मारचो बल करि भूप छुड़ाए ॥ महिमा अति अगाध करुणामय भक्त हेतु हितकारी। सूरदास पर करौ कृपा अब दरशन देहु मुरारी ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ शरण आयेकी लाज उर धरिये। सध्यौ नहिं धर्म शील शुचि तप व्रत कछू कहा मुख ले तुम्हें विनय करिये॥कछु चाहौं कहौ सोचि मनमें रहौं कर्म अपने जानि त्रासआवै।यहै निज सार अधार मेरे अहै पतितपावन बिरद वेद गावै ॥ जन्मते एकटक लागि आशा रही विषय विष खात नाहिं तृप्तिमानी।जो छिपा छरद करि सकल संतनि तजी तासु मति मूढरस प्रीति ठानी ॥ पाप मारग जिते तेव कीने तिते बच्यो नहिं कोइ जहं सुरति मेरी। सूर अवगुण भरचो आइ द्वारे परचो तकी गोपाल अब शरण तेरी ॥ ५१ ॥ प्रभु मेरे गुण अवगुण न विचारो। कीजे लाज शरण आयेकी रविसुत त्रास निवारो ॥ योग यज्ञ जप तप नहिं कीयो वेद विमल नहिं भाष्यो। अति रसलुब्ध श्वान जूँठनि ज्यों कहूं नही चित राख्यो॥जिहिजिहि योनि फिरचो संकटवश तिहि तिहि यहै कमायो। काम क्रोध मद लोभ ग्रसित भये विषय परम विष खायो ॥ जो गिरिपति मसि घोरि उदधि में ले सुरतरु निज हाथ। मम कृत दोष लिखें वसुधा भर तऊ नहीं मित नाथ ॥कामी कुटिल कुचील कुदरशन अपराधी मतिहीन।तुमसमान और नहिं दूजो जाहि भजौं ह्वै दीन॥अखिल अनंत दयालुदयानिधिअविनाशी सुखरास।भजन प्रताप नाहिं में जान्यो परचो मोहकी फांस॥ तुम सर्वज्ञ सबै समरथ विधि अशरण शरण मुरारि। मोह समुद्र सूर बूडत है लीजै भुजा पसारि ॥ ५२ ॥राग सारंग ॥ तुम हरि सांकरे के साथी। सुनत पुकार परम आतुर ह्वै दौरि छुडायो हाथी॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी वेद उपनिषद साखी वसन बढ़ाय द्रुपदतनया के सभा मांझ पत राखी ॥ राज रवनि गाई व्याकुल ह्वै दे दे सुत को धीरक। मागध हति राजा सब छोरे ऐसे प्रभु परपीरक ॥कपट स्वरूप धरचो जब कोकिल नृप प्रतीति करि मानी। कठिन परी तबहीं तुम प्रगटे रिपु हति सब सुखदानी॥ ऐसे कहौं कहांलौं

गुणगण लिखत अंत नहि पइये। कृपासिंधु उनहीके लेखे मम लज्जा निवेहिये ॥ सूर तुम्हारी ऐसी निबही संकटके तुम साथी। ज्यों जानो त्यों करो दीनकी बात सकल तुम हाथी ॥५३॥ तुम बिनु सांकरे को काको। तुम बिनु दीनदयालु देवमणि नाम लेउँ धौं ताको ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी हुतो नहीं वश ताको। मेटी पीर परम पुरुषोत्तम दुख मेट्यो दोउ धांको॥ हा करुणामय कुंजर टेर्यो रह्यो नहीं बल जाको। लागि पुकार तुरत छुटकायो काट्यो बंधन वाको॥ अंबरीषको शाप देन गयो बहुरि पठायो ताको। उलटी गाढ परी दुर्वासा दहत सुदर्शन जाको निधरक ह्वै पंडसुत डोलें हुतो नहीं डर काको। चारों वेद चतुर्मुख ब्रह्मा यश गावतहैं ताको॥ छोरी वेदनिंदा करि राजा राजा होइ कि रांको। जगसंधको जोर उघर्यो फारि कियो द्वैफांको॥ सभा मांझ द्रौपदी पति राखी पति जानै गुन जाको। बसन ओट करि कोट विश्वंभर परन न पायो झांको॥ भीर परे भीषम प्रण राख्यो अर्जुनको रथ हांको। रथते उतर चक्र कर लीनो भक्त बछल प्रण ताको॥ गोपीनाथ सूरको स्वामी है समुद्र करुणाको। नरहरि हरि हरनाकुश मार्यो काम पर्यो हो वांको ॥ ५४ ॥ राग कान्हरा ॥ तुम्हरी कृपा गुपाल गुसाईं मै अपने अज्ञान न जानत। उपजत दोष नयन नहिं सूझत रविकी किरनि उलूक न मानत ॥ सब सुखनिधि हरि नाम महातम पायो है नाहिन पहिचानत। परम कुबुद्धि तुच्छ रस लोभी कौडी बदले मगरज छानत ॥ शिनको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराण बखानत। इते मान यह सूर महाशठ हरि नग बदलि विषयखरि आनत॥५५॥ राग बिलावल ॥ अपुने जान मै बहुत करी। कौन भांति हरि कृपा तुम्हारी सो स्वामी समुझी न परी॥ दूरि गयो दरशनके तांई व्यापक प्रभुता मन बिसरी। मनसा वाचा कर्मअगोचर सो मूरति नहिं नैन धरी ॥ गुणबिनु गुणी स्वरूप रूप बिनु नामलेत श्री श्याम हरी। कृपासिंधु अपराध अपरमित क्षमो सूरते सब बिगरी ॥ ५६ ॥ तुम गोपाल मोसो बहुत करी। नरदेही दीनी सुमिरनको मो पापीते कछु न सरी॥ गर्भवास अतित्रास अधोमुख तहां न मेरी सुधि बिसरी। पावक जठर जरन नहिं दीनो कंचन सी मेरी देह धरी॥ जगमे जन्मि पाप बहु कीने आदि अंत लौं सब बिगरी । सूर पतित तुम पतित उधारन अपने बिरद कि लाज धरी॥५७॥ राग धनाश्री ॥ माधवजू जो जनते बिगरै। तउ कृपालु करुणामय केशव प्रभु नहिं जीय धरै॥ जैसे जननि जठर अंतर्गत सुत अपराध करै। तउ पुनि जतन करै अरु पोषै निकसे अंक भरै॥ यद्यपि मलय वृक्ष जड काटत कर कुठार पकरै। तऊ सुभाव सुगंध सुशीतल रिपु तनु ताप हरै ॥ ज्यो हल गहि धर धरत कृषीबल बारि बीज बिथुरै। सहि सन्मुख त्यो शीत उष्णको सोई सुफल करै॥ द्विज रसना जो दुखित होइ बहु तौ रिस कहा करै। यद्यपि अंग विभंग होतहै लै समीप सँचरै॥ कारण करण दयालु दयानिधि निज भय दीन डरै। इहि कलिकाल व्याल मुख ग्रासित सूर शरन उबरै ॥ ५८ ॥ राग कान्हरा॥ दीनानाथ अब बार तुम्हारी। पतित उधारन बिरद जानिकै बिगरी लेहु सँवारी॥ बालापन खेलतही खोयो युवा विषय रस माते। वृद्ध भये सुधि प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुतनि तज्यो तिय तज्यो भ्रात तजि तनत्वच भई जु न्यारी। श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जलधारी॥ पलित केश कफ कंठ निरोध्यो कल न परी दिन राती। माया मोह न छांडै तृष्णा ए दोउ दुख दाती ॥ अब या व्यथा दूरि करिबेको और न समरथ कोई। सूरदास प्रभु करुणासागर तुमते होइ सु होई ॥ ५९ ॥ राग आसावरी ॥ पतित पावन जान शरन आयो। उदधि संसार शुभ

नाम नौका तरन अटल स्थान निज निगम गायो ॥ व्याध अरु गीध गणिका अजामेल द्विज चरण गौतमनारि परश पायो। अंत औसर अर्ध नाम उच्चार करि सुनत गज ग्राहते तुम छुड़ायो ॥ अबल प्रह्लाद बलदैत्य सुखही बचत दास ध्रुव चरण चित शीश नायो। पांडुसुत विपत मोचन महादास लखि द्रौपदी चीर नाना बढ़ायो ॥ भक्तवत्सल कृपानाथ अशरण शरण भार भूतल हरन यश सुहायो। सूर प्रभु चरण चित चेत चेतन करत ब्रह्म शिव शुक आदि शेष गायो ॥ ६० ॥राग आसावरी ॥ श्रीनाथ शारंगधर कृपा कर दीनपर डरत भव त्रासते राखिलीजे। नाहिं जप नाहिं तप नाहिं सुमिरन भक्ति शरण आयेनकी लाज कीजै ॥जीव जलधर जिते भेप धरि धरि तिते रचे लघु दीर्घ बहु अचल भारे। मुशल मुद्गर हनत त्रिविध कर्मनि गनत मोहिं दंडत धर्म दूत हारे ॥ वृपभ केशी मल्ल धेनुक अरु पूतना रजक चाणूरसे दुष्ट तारे। अजामिलि गणिका ते कहा मैं घट कियो तुम जु अब सूर चितते विसारे ॥ ६१ ॥ कबहुँ नाहीं गहर कियो। सदा स्वभाव सुलभ सुमिरन वश भक्तनि अभय दियो ॥ गायगोपगोपीहितकारण गिरि करकमल लियो। अघ अरिष्ट केशी कालीनथ दावानलहिं पियो ॥ कंसवंशवधि जरासंधहति गुरुसुत आनि दियो। कर्पत सभा द्रुपदतनयाको अंबर अक्षय कियो ॥ सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो। काकी शरण जाउँ करुणामय नाहिंन और बियो ॥ ६२ ॥ राग सारंग ॥ ताते तुमरो भरोसो आवै। दीनानाथ पतित पावन यश वेद उपनिपद गावै ॥ जो तुम कहो कौन खल तारयो तौ हौं बोलों साखी। पुत्रहेतु हरिलोक गयो द्विज सक्योनकोऊ राखी॥ गणिका किये कौन व्रत संयम शुक हित नाम पढ़ावै। मनसा करि सुमरयो गज बपुरो ग्राह परमगति पावै ॥ बकी जु गई घोपमें छल करि यशुदाकी गति दीनी।और कहत श्रुति वृपभ व्याधकी जैसी गति तुम कीनी ॥ द्रुपदसुताहि दुष्ट दुर्योधन सभा माहिं पकरावै। ऐसो कौन और करुणामय बसन प्रवाह बहावै ॥ दुखित जानिकै सुत कुबेरके तिहि लगि आप बँधावै। ऐसो को ठाकुर जन कारन दुख सहि भलो मनावै॥दुर्वासा दुर्योधन पठयो पंडवअहित विचारी।सुमिरत तीनों लोक अघाए न्हात भज्यो कुश डारी ॥ देवराज मख भंग जानिकै बरस्यो ब्रजपर आई। सूर श्याम राखे सब निजकर गिरि लै भए सहाई॥६३॥ राग धनाश्री ॥दीनकोदयालुसुन्यों अभय-दान दाता। सांची विरुदावलि तुम जगतके पितु माता ॥व्याध गीध गणिका गज इहिमें को ज्ञाता।सुमिरत तुम तबहिं आये त्रिभुवन विख्याता ॥ केशी कंस दुष्ट मारिमुष्टिक कियो घाता। अपने ध्रुव राज काज केतक यह बाता ॥ तीनलोक विभव दियो तंदुलके खाता। सर्वस प्रभु रीझि देत तुलसीके पाता ॥ गौतमकी नारि तारी नेकु परश लाता। और कुटिल तारे तारे काहे गर्वाता ॥ माँगतहै सूर त्याग जिहितन मनराता। अपनी प्रभु भक्ति देहु जासों तुम नाता ॥६४॥ राग मारू ॥सो कहा जु मैं न कियो जोपै सोइ सोई चित धरिहौ। पतितपावन विरद सांच कौन भांति करिहौ॥जबते जग जन्म लियो जीवहै कहायो।तबते छुटअवगुण इक नाम न कहि आयो॥साधुनिंदक स्वाद लंपट कपटी गुरुद्रोही। जितने अपराध जगत लागत सब मोही ॥ गृह गृह गृह द्वार फिरयो तुमको प्रभु छाँडे। अंध अंध टेक चले क्यों न परे गाडे ॥ कमलनैन करुणामय सकल अंतर्यामी। विनय कहा करै सूर कूर कुटिल कामी ॥६५॥ राग सारंग ॥ कौन गति करिहौ मेरी नाथ। हौंतो कुटिलकुचील कुदरशन रहत विपयके साथ ॥ दिनबीतत

गुणगण लिखत अंत नहि पइये । कृपासिंधु उनहीके लेखे मम लज्जा निर्वहिये ॥ सूर तुम्हारी ऐसी निवही संकटके तुम साथी ।ज्यों जानो त्यों करो दीनकी बात सकल तुम हाथी॥५३ ॥ तुम बिनु सांकरे को काको । तुम बिनु दीनदयालु देवमणि नाम लेउँ धौं ताको ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी हुतो नहीं वश ताको । मेटी पीर परम पुरुषोत्तम दुख मेटयो दोउ धांको॥ह्य करुणामय कुंजर टेरयो रह्यो नहींबलजाको ।व्यागिपुकार तुरत छुटकायो काटयो बंधन वाको॥ अंबरीषको शाप देन गयो बहुरि पठायो ताको । उलटी गाढ परी दुर्वासा दहत सुदर्शन जाको निधरक है पंडवसुत डोलें हुतो नहीं डर काको ।चारों वेद चतुर्मुख ब्रह्मा यश गावतहैं ताको॥ छोरी बंदिविदा करि राजा राजा होइ कि रांको।जगसंधकोजोर उधेरयो फारि कियो द्वैफांको॥ सभा माँझ द्रौपदी पति राखी पति जाने गुन जाको।वसन ओट करि कोट बिश्वंभर परननपायो झांको ॥ भीर परे भीषम प्रण राख्यो अर्जुनको रथ हांको । रथते उतर चक्र कर लीनो भक्त बछल प्रण ताको ॥गोपीनाथ सूरको स्वामी है समुद्र करुणाको।नरहरि हरि हरनाकुश मारयो काम परयो हो बांको ॥ ५४ ॥राग कान्हरा ॥ तुम्हरी कृपा गुपाल गुसाईं मैं अपने अज्ञान न जानत । उपजत दोष नयन नहिं सूझत रविकी किरनि उलूक न मानत ॥ सब सुखनिधि हरि नाम महातम पायो है नाहिन पहिचानत । परम कुबुद्धि तुच्छ रस लोभी कौडी बदले मगरज छानत ॥ शिवको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराण बखानत । इते मान यह सूर महाशठ हरि नग बदलि विषयखरि आनत॥५५॥राग बिलावल ॥ अपुने जान मैं बहुत करी। कौन भांति हरि कृपा तुम्हारी सो स्वामीसमुझिन परी॥दूरि गयो दरशनके ताईं व्यापकप्रभुता सब बिसरी। मनसा वाचा कर्मअगोचर सो मूरति नहिं नैन धरी ॥ गुणबिनु गुणी स्वरूप रूप बिनु नामलेत श्री श्याम हरी । कृपासिंधु अपराध अपरमित क्षमो सूरते सब बिगरी ॥ ५६ ॥ तुम गोपाल मोसों बहुत करी। नरदेही दीनी सुमिरनको मो पापीते कछु न सरी॥गर्भवास अतित्रास अधो-मुख तहां न मेरी सुधि बिसरी । पावक जठर जरन नहिं दीनों कंचन सी मेरी देह धरी॥जगमें जन्मि पाप बहु कीने आदि अंत लौं सब बिगरी । सूर पतित तुम पतित उधारन अपने बिरद कि लाज धरी॥५७॥ रागधनाश्री ॥माधवजू जो जनते बिगरै॥तउकृपालुकरुणामयकेशवप्रभुनहिं जीय धरै॥ जैसे जननि जठर अंतर्गत सुत अपराध करै। तउ पुनि जतन करै अरु पोषैनिकसे अंक भरै॥यद्यपि मलय वृक्ष जड काटत कर कुठार पकरै । तऊ सुभाव सुगंध सुसीतल रिपु तनु ताप हरै ॥ज्यों हल गहि धर धरत कृषीवल वारि बीज बिथुरै । सहि सन्मुख त्यों शीत उष्णको सोई सुफल करै ॥ द्विज रसना जो दुखित होइ बहु तौ रिस कहा करै । यद्यपि अंग विभंग होतहै ले समीप सँचरै ॥ कारण करण दयालु दयानिधि निज भय दीन डरै। इहि कलिकाल व्याल मुख ग्रासित सूर शरन उबरै ॥ ५८ ॥राग कान्हरा॥दीनानाथ अब बार तुम्हारी । पतित उधारन बिरद जानिके बिगरी लेहु सँवारी ॥ बालापन खेलतही खोयो युवा विषय रस माते । वृद्ध भये सुधि प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुतनि तज्यो तिय तज्यो भ्रात तजि तनत्वच भई जु न्यारी । श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जलधारी ॥ पलित केश कफ कंठ विरोध्यो कल न परी दिन राती। माया मोह न छाडे तृष्णा ए दोऊ दुख दाती ॥ अब या व्यथा दूरि करिवेको और न समरथ कोई । सूरदास प्रभुकरुणासागरतुमते होइ सु होई ॥ ५९ ॥ राग आसावरी ॥ पतित पावन जान शरन आयो । उदधि संसार शुभ

नाम नौका तरन अटल स्थान निज निगम गायो ॥ व्याध अरु गीध गणिका अजामेल द्विज चरण गौतमनारि परश पायो । अंत औसर अर्ध नाम उच्चार करि सुनत गज ग्राहते तुम छुड़ायो ॥ अवल प्रह्लाद वलदैत्य सुखही बचत दास ध्रुव चरण चित शीश नायो । पांडुसुत विपत मोचन महादास लखि द्रौपदी चीर नाना वढ़ायो ॥ भक्तवत्सल कृपानाथ अशरण शरण भार भूतल हरन यश सुहायो । सूर प्रभु चरण चित चेत चेतन करत ब्रह्म शिव शुक आदि शेष गायो ॥ ६० ॥ राग आसावरी ॥ श्रीनाथ शारंगधर कृपा कर दीनपर डरत भव त्रासते राखिलीजे । नाहिं जप नाहिं तप नाहिं सुमिरन भक्ति शरण आयेनकी लाज कीजै ॥ जीव जलधर जिते भेप धरि धरि तिते रचे लघु दीर्घ बहु अचल भारे । मुशल मुद्गर हनत त्रिविध कर्मनि गनत मोहिं दंडत धर्म दूत हारे ॥ वृपभ केशी मल्ल धेनुक अरु पूतना रजक चाणूरसे दुष्ट तारे । अजामिलि गणिका ते कहा मैं घट कियो तुम जु अव सूर चितते बिसारे ॥ ६१ ॥ कवहुँ नाहीं गहर कियो । सदा स्वभाव सुलभ सुमिरन वश भक्तनि अभय दियो ॥ गायगोपगोपीहितकारण गिरि करकमल लियो । अघ अरिष्ट केशी कालीनथ दावानलहिं पियो ॥ कंसवंशवधि जरासंधहति गुरुसुत आनि दियो। कपट सभा द्रुपदतनयाको अंबर अक्षय कियो ॥ सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो । काकी शरण जाउँ करुणामय नाहिंन और बियो ॥ ६२ ॥ राग सारंग ॥ ताते तुमरो भरोसो आवै । दीनानाथ पतित पावन यश वेद उपनिषद गावै ॥ जो तुम कहो कौन खल तारयो तौ हौं बोलों साखी। पुत्रहेतु हरिलोक गयो द्विज सक्योनकोऊ राखी॥ गणिका किये कौन व्रत संयम शुक हित नाम पढ़ावै । मनसा करि सुमरयो गज वपुरो ग्राह परमगति पावै ॥ वकी जु गई घोषमें छल करि यशुदाकी गति दीनी।और कहत श्रुति वृपभ व्याधकी जैसी गति तुम कीनी ॥ द्रुपदसुताहि दुष्ट दुर्योधन सभा माहिं पकरावै । ऐसो कौन और करुणामय वसन प्रवाह बहावै ॥ दुखित जानिकै सुत कुबेरके तिहि लगि आप बँधावै । ऐसो को ठाकुर जन कारन दुख सहि भलो मनावै॥दुर्वासा दुर्योधन पठयो पंडवअहित विचारी।सुमिरत तीनों लोक अघाए न्हात भज्यो कुश डारी ॥ देवराज मख भंग जानिकै वरस्यो व्रजपर आई । सूर श्याम राखे सब निजकर गिरि लै भए सहाई॥६३॥ राग धनाश्री ॥दीनकोदयालुसुन्यौं अभय-दान दाता । सांची विरुदावलि तुम जगतके पितु माता ॥व्याध गीध गणिका गज इहिमें को ज्ञाता।सुमिरत तुम तबहिं आये त्रिभुवन विख्याता ॥ केशी कंस दुष्ट मारिमुष्टिक कियो घाता । अपने ध्रुव राज काज केतक यह बाता ॥ तीनलोक विभव दियो तंदुलके खाता। सर्वस प्रभु रीझि देत तुलसीके पाता ॥ गौतमकी नारि तारी नेकु परश लाता। और कुटिल तारे तारे काहे गर्वाता ॥ माँगतहै सूर त्याग जिहितन मनराता । अपनी प्रभु भक्ति देहु जासों तुम नाता ॥६४॥ राग मारू ॥सो कहा जु मैं न कियो जो पै सोइ सोई चित धरिहौ । पतितपावन विरद सांच कौन भांति करिहौ॥जबते जग जन्म लियो जीवहै कहायो।तबते छुटअवगुण इक नाम न कहि आयो॥साधुनिंदक स्वाद लंपट कपटी गुरुद्रोही। जितने अपराध जगत लागत सब मोही ॥ गृह गृह गृह द्वार फिरयो तुमको प्रभु छाँडे । अंध अंध टेक चले क्यों न परे गाडे ॥ कमलनैन करुणामय सकल अंतर्यामी । विनय कहा करै सूर क्रूर कुटिल कामी ॥६५॥ राग सारंग ॥ कौन गति करिहौ मेरी नाथ । हौंतो कुटिलकुचील कुदरशन रहत विपयके साथ ॥ दिनवीतत

मायाके लालच कुल कुटुंबके हेत। सारी रैन नींद भरि सोवत जैसे पशू अचेत ॥कागज धरनि करे द्रुम लेखनि जलसायर मसि घोर। लिखे गणेश जन्म भर ममकृत तऊ दोषनहिं ओर॥गज गणिका अरु विप्र अजामिल अगनित अधम उधारे। अपथ चाल अपराध करे मे तिनहूं ते अति भारे॥ लिखि लिखि मम अपराध जन्मके चित्रगुप्त अकुलाये। भृगु ऋषि आदि सुनत चकृत भये यम सुनि शीश डुलाये॥ परम पुनीत पवित्र कृपानिधि पावन नाम कहायो। सूर पतित जब सुन्यो विरद यह तब धीरज मन आयो॥ ६६ ॥ राग केदारा ॥ मेरी कौन गति ब्रजनाथ। भजन विमुख अरु शरण नाही फिरत विषयिन माथ॥ हौं पतित अपराध पूरण जरयो कर्म विकार। काम क्रोध रु लोभ चितवननाथ तुम्हें विसार॥उचितअपनीकृपा करिहौ तबै तौ बनिजाइ।सोइ करहु जो चरण सेवै सूर जूंठनि खाइ ॥ ६७ ॥राग धनाश्री ॥सोइ कछु कीजे दीनदयाल। जाते जन छिन चरण न छांडे करुणासागर भक्तरसाल ॥ इन्द्रिय अजित बुद्धि विषयारत मनकी दिन दिन उलटी चाल। काम क्रोध मद लोभ महाभय अहनिश नाथ भ्रमत बेहाल॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत इनमें एको अंक न भाल। कहा करूं किहि भाँति रिझाऊं हौं तुमको सुन्दर नंदलाल ॥ सुनि समरथ सर्वज्ञ कृपानिधि अशरण शरण हरण जग जाल। कृपानिधान सूरकी यह गति कासो कहै कृपण यहि काल॥ ६८ ॥ ॥ राग सूहरी ॥कृपा अब कीजिए वलि जाउं। नाहिं मेरे और कोउ वलि चरण कमल विनु ठाउं॥ हौं असोच अकृत अपराधी सन्मुख होत लजाउं। तुम कृपालु करुणानिधि केशव अधम उधारन नाउं॥ काके द्वार जाइहौं ठाढो देखत काहि सुहाउं। अशरण शरण नाम तुमरो हौं कामी कुटिल सुभाउं॥ कलंकी और मलीन बहुत मैं सेंतमेंत बिकाउं। सूर पतित-पावन पद अंबुज क्यों सो परिहरि जाउं ॥६९॥राग सारंग ॥ दीनदयालु पतितपावन प्रभु विरद भुलावत कैसो। कहा भयो गज गणिकानारी जो जन तारो ऐसो॥जो कबहूं नर जन्म पाइ नहिं नाम तुम्हारोलीनो। कामक्रोध मद लोभ मोह तजिअंत नहीचितदीनो॥ [illegible] दुखअज्ञान अवज्ञा अनमारग अनरीति। जाको नाम लेत अघ उपजे सो मे करी अनीति ॥ [illegible] रमतश भयो भ्रमत रह्यो जोइ कह्यो सो कीनो। नेम धर्म व्रत तप नहिं संयम साधु संग नहिं चीनो ॥ दुरश मलीन दीन दुर्बल अति तिन केसे दुख दामी। ऐसो सूरदास जन हरिको सब अधमनिमें नामी ॥७०॥ राग देवगधार॥ मोहि प्रभु तुमसोहोड परी।नाजानो करिहो जु कहा तुम नागर नवल हरी ॥ हुती जिती तितनी मति गाई सो मैसबकरीपावहुगेकहुँमोमहिं तारनकोजिय जक पकरी॥ मैं जु रहो राजीवनैनन दुरि पाप पहार दुरी। पावहु मोहिं कहो तारन को गूढ गँभीर खरी॥एक अधार साधुसंगतिको रचि पचिके संचरी।ज्यों गजशुचि नराइ निरमलकरि पुनिरज शीश धरी॥मोकोमुक्त विचारतहो प्रभुपूछनपहर घरी।श्रमतेतुम्हेंपसीनाऐहेकतियह जकनिकरी॥ सूरदास विनती कहा विनवै दोषनि देह भरी। अपनो विरद सँभारहुगे तव यामेंसबनिबरी॥ ॥७१॥ राग धनाश्री ॥ नाथ सको तौ मोहिं उधारो। पतितनिमें विख्यात पतित हौं पावन नाम तुम्हारो॥ बडे पतित पासंगहु नाहीं अजामिल कौन विचारो। भाजे नरक नाम सुनि मेरो यमनि दियो हठ तारो॥क्षुद्रपतिन तुमतारि रमापति जिय जु करौ जिन गारो। सूरपतित-को ठौर कहूं नहिं है हरिनाम सहारो ॥ ७२ ॥ तुम कब मोसो पतित उधार्‍यो। काहे को प्रभु विरद बुलावत विन ममकृत को तार्‍यो ॥गीध व्याध गज गौतमकी तिय उनको कहा

निहोरो ।गणिका तरी आपनी करनी नाम भयो प्रभु तोरो ॥ अजामील तो विप्र तुम्हारो हुतो पुरातन दास । नेक चूकते यह गति कीनी फिर वैकुंठहि वास ॥ पतित जानि तुम सब जन तारे रह्यो न काहू खोट । तौ जानौं जो मोहि तारिहौ सूर कूर कवि ठोट ॥ ७३ ॥पतित पावन हरि विरद तुम्हारो कौने नाम धरचो। हौंतो दीन दुखित अति दुर्बल द्वारे रटत परचो ॥ चारि पदारथ दए सुदामा तंदुल भेट धरचो। द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अंबर दान करचो ॥ सदीपन-सुत तुम प्रभु दीने विद्या पाठ करचो। सूर कि विरियां निठुर भये प्रभु मोते कछु न सरचो ॥ ७४ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु हौं एक एक करि टरिहौं। कै हमही कै तुमही माधव अपुन भरोसे लरिहौं ॥ हौ तो पतित सात पीढिनको पतिते ह्वै निस्तरिहौ। अब हौं उघरि नचन चाहत हौं तुम्हें विरद बिनु करिहौं ॥ कत अपनी परतीत नशावत मैं पायो हरि हीरा। सूर पतित तबही लै उठिहै जब हँसि देहो वीरा ॥७५॥राग नट ॥कहावत ऐसे दानी। चारि पदारथ दये सुदामहिं अरु गुरुको सुत आनी ॥ रावणके दश मस्तक छेदे शर गहि शारँग पानी। विभिषनको तुम लंका दीनी पूर्वली पहिचानी॥विप्र सुदामा कियो अयाची प्रीति पुरातन जानी ।सूरदास सो कहा निठुर भए नैनन हूकी हानी ॥ ७६ ॥ राग धनाश्री ॥ मोसो बात सकुच तजि कहिये। कत ब्रीडत कोउ और बतावहु वाहीके ह्वै रहिये॥कैधौं तुम पावन प्रभु नाही कै कछु मोमैं भोलो। तौ हौ अपनी फेरि सुधारो वचन एक जो बोलो॥तीनो पनमें और निवाही इहै स्वांगको काछे। सूरदासको यहै वडो दुख परत सवमके पाछे॥७७॥राग सारंग॥ प्रभुहौ बडी वेरको ठाढो।और पतित तुम जैसे तारे तिनही में लिखि काढो॥ युग युग यहै विरद चलिआयो टेरि कहत हौं याते।मरियत लाज पांच पतितन में होव कहौ घट काते॥ कै प्रभु हार मानिकै वैठहु कै करो विरद सही। सूर पतित जो झूठ कहत है देखौ खोजि वही ॥ ७८ ॥प्रभु हौं सब पतितनको टीको। और पतितसब दिवस चारिके हौं जन्मांतरहीको ॥ वधिक अजामिल गणिका तारी और पूतनाहीको। मोहिं छांडि तुम और उधारे मिटै शूल क्यो जीको॥कोउ न समरथ अघ करिवेको खेंचि कहतहौं लीको। मरियत लाज सूर पतितनिमें हमहूंते को नीको ॥ ७९ ॥ हौंतो पतित शिरोमणि माधो। अजामील बातनही तारचो सुन्यो जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मानिकै वैठहु कै अवही निस्तारो। सूर पतितको और ठौर नहिं है हारे नाम सहारो ॥ ८० ॥ माधो जू और न मोते पापी। घातक कुटिल चवाई कपटी महा र संतापी ॥ लंपट धूत पूत दमरीको विषय जाप को जापी। भक्ष अभक्ष अपेय पान करि कवहुँ न मनसा धापी॥ कामी विवश कामिनीके रस लोभ लालसा थापी।मन क्रम वचन दुसह सबहिनसो कटुक वचन आलापी ॥ जेतिक अधम उधारे तुम प्रभु तिनकी गति मैं नापी।सागर सूर भरचो विकारजल पतित अजामिल बापी ॥ ८१॥राग कान्हरा ॥हरि हौं सब पतितन पतितेश।और न सर करिवेको दूजो महामोह मम देश ॥ आशाके सिंहासन वैठ्यो दंभछत्र शिरतान्यो। अपयश अति नकीब कहि टेरचो सब शिर आय ममान्यो॥मत्री काम क्रोध निज दोऊ अपनी अपनी रीति।दुविधा दुंद होत निशि वासर उपजावति विपरीत ॥ मोदी लोभ खवास मोहके द्वारपाल अहँकार।पाठ अह ममता है मेरी मायाको अधिकार।सेनक्तृष्णा भ्रमत टहल हित लहत न छिन विश्राम। अनाचार सेवकसो मिलिकैकरत चवायन काम॥ वाजुमनोरथ गर्व मत्तगज असत कुमति रथ सूत ।पाइक मन वानैत अधीरज सदा दुष्ट मति दूत ॥गढ तजि भये नरकपति मोसो दीने रहत किंवार। सेना

साथ बहुत भाँतिनकी कीने पाप अपार ॥ निंदा जग उपहास करत मग बंदीजन यश गावत । हठ अन्याय अधर्म सूरनित नौबत द्वारबजावत॥८२॥राग धनाश्री॥सांचो सो लिखहार कहावै। काया ग्राम ममाहत कर्कि जमा बांधिठहरावै॥ण्न यह तोकरिकैदअपनेमें ज्ञानजहतिया लावै। मांडि माडि खरिहान क्रोधको पोता भजन भरावै॥ बट्टा काट कसूर भर्म को फरद तले ले डारै । निश्चय एक अमल पै राखै टरै न कबहूं टारै ॥करि अनार जा प्रेम प्रीतिको असल तहां खतियावै । दूजी करद दूरि करि हे यतनै फत तामें आवै ॥ मुजमिल जोरै ध्यान कुल्ह का हरिसों तहँ ले राखै। निर्भय रूपे लोभ छांडि के सोई वारिज राखे॥ जमा खर्च नीके करिराखे लेखा समुझि बतावै । सूर आप गुजरान मुहासिब ले जवाब पहुँचावै ॥ ८३ ॥ प्रभु जु मे ऐसो अमल कमायो । साविक जमा हुती जो जोरी मिनजालिक तल्लायो ॥ वासिलवाकी स्याहा मुजमिल सब अधर्म की बाकी । चित्रगुप्त होत मुस्तौफी शरण गहूं मे काकी॥पांच मुहर्रिर साथ करिदीने तिनकी बडी विपरीति । जिम्मे उनके मांगि मोते यह तो वडी अनीति ॥ पांच पचीस साथ अगवानी सब मिलि काज बिगारे । सुन नगीरीमेरी बिसरिगई सुधिमोतजि भये नियारे॥ बढो तुम्हार बरामद हू को लिखि कीनो है साफ । सूरदाकी यहै बीनती दस्तक कीजे माफ ॥ ८४ ॥ राग सारंग ॥ प्रभु हौं सब पतितनको राजा । निंदा परमुख पूरिरह्यो जग यह निसान तन बाजा ॥ तृष्णा देश रु सुभट मनोरथ इन्द्रियखङ्ग हमारे । मन्त्रीकामकुमति देवे को क्रोध रहत प्रतिहारे ॥ गज अहंकार चढयो दिगविजयी लोभछत्रकरि शीश । फौज असत संगतिकी मेरी ऐसो हौं मैं ईश॥ मोहमई बंदीगुण गावत मागध दोष अपार । सूर पापको गढ दृढ कीनो मुहकम लाइ किवार ॥ ८५ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि हौं सब पतितनको राव । कोकरिसके बराबरि मेरी सो तो मोहिं बताव॥व्याध गीध अरु पतितपूतनातिनमें बढिजो और।तिनमेंअजा-मेल गणिकापति उनमें मैं शिरमौर ॥ जहँ तहँ सुनियत यहै बडाई मो समान नहिं आन । अब रहे आजु काल्हिके राजा मैं तिनमें सुल्तान ॥ अबलौं तौ तुम बिरद बुलायो भई न मोसों भेंट। तजौ बिरद कै मोहिं उधारो सूर गही कसि फेंट ॥ ८६ ॥राग सारंग ॥ हरि हौं सब पतितनको नायक । को करि सके बराबरि मेरी और नहीं कोउ लायक॥जैसो अजामेलको दीनो सो पाटी लिखि पाऊं । तो विश्वास होइ मनमेरे औरौ पतितबुलाऊं॥ यह मारग चौगुनो चलाऊं तौ पूरो व्यापारी । वचन मानि ले चलौ गाँठि दै पाऊं सुख अति भारी॥पतित उधारन नाम सुन्यों जब शरन गही तकि दौर । अबकै तौअपनी ले आयो बेर बहुरकी और ॥ होडा होडी मनहिभावते किये पाप भरि पेट । सबै पतित पाँइन तर डारौं इहै हमारी भेंट ॥बहुत भरोसो जानि तुम्हारो अघ कीनो भरि भाडो।लीजै बेगि निबेरि तुरतहि सूर पतित को टाडो ॥८७॥ राग धनाश्री ॥ मोसोंपतित न औरगुसाईं।अनगुण मोते अजहु न छूटत भली तजी अबताईं ॥ जन्म जन्म योंही भ्रमि आयो कपि गुंजा की नाईं । परशत शीत जात नहिं क्योंहू लैलै निकट बनाई ॥मोह्यो जाइ कनक कामिनि सो ममता मोह बढाई।जिह्वा स्वाद मीन ज्यों उरझ्यो सूझन नहिं फदाई॥सोवत मुदित भयो स्वप्नेमें पाई निधि जु पराई । जागि परयो कछु हाथ न आयो यह जगकी प्रभुताई ॥ परसे नाहिं चरण गिरिधरके बहुत करी अन्याई । सुर पतितको ठौर और नहिं राखि लेहु शरणाई ॥ ८८ ॥ हरि हौं महा पतित द्रोही अभिमानी । परमारथसो पीठि विषयरस भाव भगति नहिं जानी॥ निशि दिन दुखित मनोरथ करि कारै पावतहूं तृष्णा न बुझानी।शिर

पर काल नीच नहिं चितवत आयु घटत ज्यौं अँजुरी पानी ॥विमुखनिसों रति जोरतदिनप्रति साधुनसों न कहूं पहिचानी । तिहि बिनुरहतनहीं निशि वासर जिहि सबदिनरसविषयवखानी॥ माया मोह लोभ नहिं जाने ऐसो वृन्दावन रजधानी । नवलकिशोर जलद तनुसुन्दर बिसरयो। सूर सकल सुखदानी ॥ ८९ ॥ माधव जू मोहिं काहेकी लाज । जन्म जन्म योंही भरमायो अभिमानी बे काज ॥ जल थल जीव जिते जग जीवन निरखत दुखित भयेदेव। गुण अवगुणकी समुझि न शंका परी आइ यह टेव ॥ सर्वस खाइ रह्यो घर बैठ्यो करयो न कछू बिचारी । सूर श्वानके पालनहारे आवत है नित गारी ॥ ९० राग सारंग ॥ माधवजू सो अपराधी हौं । जन्म पाइ कछु भलो न कीनो कहो सु क्यों निबहौं ॥ सबसौं रीति कहत यमपुरकी गज पिपीलिकालौं ॥ पाप पुण्यको फल दुख सुख है भोग करौं जुइगों । मोको पंथ बताओ सोई नरक कि स्वर्ग लहौं । काके बल हौं तरौं गुसाईं कछु न भक्तिमों रहौं॥ हँसिबोलेजगदीश जगत्पति बात तुम्हारी यों । करुणासिंधु कृपालु कृपानिधि भजो शरण को क्यों । बात सुनेते बहुत हँसोगे चरण कमल की सौं । मेरी देह छुटत यम पठये जितक दूत घर मों ॥ लैलै सब हथियार आपुने सान धराये त्यों। जिनके दारुण दरश देखिके पतित करत म्योंम्यों॥दांतचबात चले मधुपुरते धाम हमारे को । ढूँढि फिरे घर कोउ न बतावे श्वपच कोरिया लों ॥ रिस भरि गए परम किंकर तब पकरयो छुटि न सकों । लै लै फिरे नगरमें घर घर जहां मृतक हौ हौं ॥ ता रिसते मोहिं बहुतक मारयो कहँ लौं बरणि कहौं ।हाय हाय में परयो पुकारयो राम नाम न बकौं॥ ताल पखावज चले बजावत.समधी सोभोकों । सूरदासकी भली बनीहै गजीगईअरुपों॥९१ ॥ रागकान्हरा ॥थोरो जीवन बहुत न भारो कियो न साधु समागम कबहूं लियो न नाम तुमारो ॥ अति उन्मत्त मोह मायावश नहिं कछु बात विचारो । करत उपाव न पूंछत काहू गनत न खाटो खारो ॥ इन्द्री स्वाद विवश निशि वासर आप अपुनपो हारयो । जल उनमत्त मीन ज्यों बपुरो पांउ कुल्हारो मारयो॥ बांधी मोट पसारि त्रिविध गुण कहूँ न बीच उतारयो । देख्यो सूर विचारि शीश पारि तब तुम शरण पुकारयो ॥९२॥ राग धनाश्री ॥ अब में नाच्यों बहुत गुपाल । काम क्रोध को पहिरि चोलना कंठ विषयकी माल॥महामोहको नेपुर बाजत निंदा शब्द रसाल। भरम भये मन भयो पखावज चलत कुसंगत चाल ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दे ताल। मायाको कटि फेटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ कोटिक कला कांछि देखराई जल थल सुधि नहिं काल। सूरदास की सबै अविद्या दूरि करो नँदलाल ॥ ९३ ॥ ऐसी करत अनेक जन्म गये मन संतोष न आयो । दिन दिन अधिक दुराशा लाग्योसकललोक भरमायो ॥ सुनि सुनि स्वर्ग रसातल भूतल तहीं तहीं उठि धायो । काम क्रोध मद लोभ अग्नि ते काहु न जरत बुझायो ॥ स्रक चंदन वनिता विनोद सुख यह जर जरन बितायो। में अज्ञान अकुलाइ अधिक ले जरत मांझ घृत नायो । भ्रमि भ्रमि हौं हारयो हिय अपने देखि अनल जग छायो । सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपा बिनु कैसे जात नशायो ॥ ९४ ॥ वादिहि जनम गयो सिराइ। हरि सुमिरन नहिं गुरुकी सेवा मधुवन बस्यो न जाइ ॥ अबकी बेर मनुष्यदेहधरि भजों न आन उपाइ । भटकत फिरयो श्वान की नाईं नेक जूंठ के चाइ ॥ कबहुँनरिझये लाल गिरिधरन विमल विमल यश गाइ॥ प्रेम सहित पग बांधि घूँघुरू सक्योंन अंगनचाइ॥श्रीभागवत सुन्यो नहिं श्रवणनि नेकहुँ रुचि उपजाइ।अनन्य भक्त नरहरि भक्तनके कबहुँ न धोए

पाइ॥ कहा कहीं जो अद्भुत है वह कैसे कहूं बनाइ। भव अंभोधि नाम निज नौका सूरहिं लेउ चढाइ॥ ९५॥ राग गौरी ॥माधव जू तुम कन जिय बिसरचो। जानत सब अंतरकी करणी जो मैं कर्म करचो॥ पतित समूह सबै तुम तारे हुते जु लोग भरचो। हौं इनसे न्यारो करि डारचौ इहि दुख जात मरचो॥ फिरि फिरि योनि अनंतनि भरम्यो अब सुख शरण परचो। इहि अवसर कत बांह छुडावत इहि डर अधिक डरचो॥ हौं पापी तुम पतित उधारन डारे हो कत देत। जो जानत यह सूर पतित नहिं तौ तारो निज हेत॥ ९६॥ राग केदार ॥ जो पै तुमही विरद बिसारचो। तो कहो कहां जाउँ करुणामय कृपण कर्मको मारचो॥ दीनदयालु पतितपावन यश वेद बखानत चारचो॥ सुनियत कथा पुराणनि गणिका व्याध अजामिल तारचो॥ राग द्वेष विधि अविधि अशुचि शुचि जिन प्रभु जिते सँभारचो किये न कहूं विलम्ब कृपानिधि सादर सोच निवारचो॥ अगणित गुण हरि नाम तुम्हारे अजाअपुनपो धारचो। सूरदास प्रभु चितवत काहे न करत करत श्रम हारचो॥९७॥ रागसारंग। जैसे और बहुत खल तारे। चरणप्रताप भजन महिमा सुख को कहि सकै तिहारे॥ दुःखित गीध दुष्ट मति गणिका नृगे कूप उधारे। विप्र बजाइ चल्यो सुतके हित काटि महाअघ भारे॥ व्याध दुरद गौतमकी नारी कहो कौन व्रत धारे। केशी कंस कुवलिया मुष्टिक सब सुख धाम सिधारे॥उग्जनिको निप वांटि लगायो यशुमतिकी गति पाई। रजक मल्ल चाणूर दवानल दुख-भंजन सुखदाई॥ नृप शिशुपाल महा पद पायो सर औसर नहिं जाने। अघ बक तृणावर्त धेनुक इति गुण गहि दोष न माने॥ पांडुवधू पटहीन सभामें कोटिन वसन पुजाए। विपति काल सुमिरत छिन भीतर तहीं तहीं उठि धाए॥गोप ग्वाल गोसुत जल त्रासन गोवर्धनकरधारचो। सतत दीन महा अपराधी काहे सूर विसारचो॥ ९८॥ राग केदार ॥ बहुरि कौ कृपाहू कहा कृपाल। विद्यमान जन दुखित जगतमें तुम प्रभु दीनदयाल॥ जीवत यांचत कनकनि निर्धन दर दर रटत बिहाल। तनु छूटे ते धर्म नहीं कछु जो दीजे मणिमाल॥ कहा दाता जो द्रवै न दीनहिं देखि दुखित कलिकाल। सूरश्यामको कहा निहोरो चलत वेदकी चाल॥ ९९॥

कौन सुने यह बात हमारी। समरथ और न देखों तुम बिनु कासो बिथा कहौं वनवारी॥ तुम अविगत अनाथके स्वामी दीनदयालु निकुंज विहारी। सदा सहाय करी दासन को जो उर धरी सोइ प्रतिपारी॥ अब केहि शरण जाउँ यादवपति राखि लेहु बलि त्रास निवारी। सूरदास चरणनिके बलि बलि कौन गुसाते कृपा विसारी॥ १००॥ राग कल्याण॥ जैसे राखहु ते-सहि रहौं। जानत दुख सुख सब जनके तुम मुख करि कहा कहौं॥ कबहुँक भोजन लहो कृपानिधि कबहूं भूँख सहौं। कबहुँक चढौ तुरंग महागज कबहुँकभार बहौं॥ कमलनयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं। सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हरे चरण गहौं॥ १०१॥ राग धनाश्री॥ कब लगि फिरिहै दीन भयो। सुरत सरित भ्रम भँमर परचो तन मन परचत न लह्यो॥ वातचक्र तृष्णा प्रकृति मिलि हौं तृण तुच्छ गह्यो। उरझ्यो विवश कर्म तरु अतर श्रम सुख शरण चह्यो॥ विनती करत डरात कृपानिधि नहीं न परत रह्यो। सूर करन वर ग्यो जु निज कर सो कर नाहिं गह्यो॥१०२॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी। जेहिके वश अनमिष अनेक गण अनुचर आज्ञाकारी॥ बहत पवन भरमत दिनकर दिन फनपति शिर न डुलावे।

दाहक गुण तजि सकत न पावक सिंधु न सलिल बहावे ॥ शिव विरंचि सुरपति समेत अब सेवत प्रभु पद चाये। जो कछु करन चहत सो कीजत करत है अति अकुलाये ॥ तुम अनादि अविगत अनंत गुण पूरण परमानंद । सूरदास पर कृपा करो प्रभु श्रीवृन्दावन चन्द ॥ १०३ ॥ राग मलार ॥ तुम तजि कौन नृपति के जाऊं। काके द्वार जाय शिर नाऊं पर हथ कहां विकाऊं ॥ ऐसो को दाताहै समरथ जाके दए अघाऊं । अंतकाल तुमरो सुमिरन गति अनत कहूं नहिं जाऊँ ॥ रंक अयाची कियो सुदामा दियो अभयपद ठाऊं। कामधेनु चिंतामणि दीनो कल्पवृक्ष तरु छाऊं ॥ भव समुद्र अति देखि भयानक मनमें अधिक डराऊँ। कीजे कृपा सुमिरि अपनो प्रण सूरदास बलि जाऊं ॥ १०४ ॥ राग मारू ॥ मेरी तौ गति पति तुम अंतहि दुख पाऊँ। हौं कहाइ तिहारो अबकौनको कहाऊँ॥कामधेनु छांडि कहा अजा जा दुहाऊं । हय गयंद उतरि कहा गर्दभ चढि धाऊं ॥ कंचन मणि खोलिडारि कांच गर बँधाऊं।कुं-कुमको तिलक मेटि काजर मुख लाऊँ ॥ पाटंबर अंबर तजि गूदर पहिराऊँ । अंबको फल छांडि कहां सेंवरको धाऊं ॥ सागरकी लहर छांडि खार क्रत अन्हाऊं। सूर कूर आँधरो मैं द्वार पर्यो गाऊँ ॥ १०५ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम बलरामको सदा गाऊँ । श्याम बलराम बिनु दूसरे देवको स्वप्नहू माहिं हृदय न लाऊं॥ यहे जप यहे तप यम नियम व्रत यहे यहे मम प्रेमफल यहे पाऊँ ॥ यहे मम ध्यान यह ज्ञान सुमिरन यहे सूर प्रभु देहु हौं यहे पाऊं ॥१०६ ॥ राग देवगंधार॥ मेरे जिये सु ऐसी बनी॥छांडि गुपाल और जो जाचौं तौ लीजे जननी॥कहाकांचको संग्रह कीजे त्याग अमोल मनी । विषको मेरु कहालों कीजे अमृतएक कनी ॥ मन बच क्रम सतभाउकतहौं मेरे श्याम धनी। सूरदास प्रभु तुमरी भक्ति लगि तजी जाति अपनी ॥ १०७॥ मेरो मन अनत कहां सुख पावे । जैसे उडि जहाजको पक्षी फिर जहाज पर आवे ॥ कमलनैनको छांडि महा-तम और देव को धावे । परमगंगको छांडि पियासो दुर्मति कूप खनावे॥जिनमधुकरअंबुजरस चाख्यो क्यों करील फल लावे। सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावे॥ १०८॥ राग सारंग ॥तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान। छूटिगये कैसे जन जीवत ज्यों पानी बिन प्रान ॥जैसे मगन नाद सुनि सारँग वधत वधिक तनु वान ।ज्यों चितवे शशिओर चकोरी देखतही सुखमान॥जैसे कमल होत परिफूलित देखत दरशन भान । सूरदास प्रभु हरिगुण मीठे नितप्रति सुनियत कान ॥१०९॥रागधनाश्री ॥ जो हम भले बुरे तौ तेरे।तुम्हें हमारी लाज बढाई विनती सुन प्रभु मेरे॥ सब तजि तुम शरणागत आयो निजकर चरण गहेरे। तुम प्रताप बल बदत न काहू निडर भये घर चेरे ॥ और देव सब रंक भिखारी त्यागे बहुत अनेरे । सूरदास प्रभु तुमरि कृपाते पायो सुख जु घनेरे ॥ ११० ॥ राग बिलावल ॥ हमें नँदनंदन मोल लिये । यमके फंद काटि मुकराए अभय अजात किये॥भाल तिलक श्रवणनि तुलसी दल मेटे अंक बिये । मूँडे मूँड कंठ बनमाला मुद्रा चक्र दिये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामको सुनत सिरात हिये । सूरदास को और बडो सुख जूंठनि खाइ जिये॥१११॥हरि हरि हरिहरि सुमरन करौ॥हरिचरणाविंद उर धरौ॥ हरिकी कथा होइ जब जहां । गंगाहू चलिआवे तहां॥यमुनासिंधुसरस्वतिआवे।गोदावरीविलंबन लावे॥सर्व तीर्थको बासा तहां॥सूर हरिकथा होवे जहां॥११२॥श्रीभागवत वर्णन निमित्त ॥रागसारंग ॥श्री-मुख चारि श्लोक दिये ब्रह्माको समुझाइ॥ब्रह्मानारदसों कहेनारदव्यास सुनाइ॥व्यासकहेशुकदेव-सों द्वादश कंध बनाइ।सूरदास सोई कहे पद भाषा करिगाइ११३॥व्याससोंशुकउत्पत्ति । रागविलावल॥

व्यास कह्यो जो शुकसों गाई। कहों सु सुनो सेतचित ल्याई ॥ व्यास पुत्रहित बहुत तप कियो। तब नारायण यह वर दियो ॥ ह्वैहै पुत्र भक्त अतिज्ञानी। जाकी जगमें चलै कहानी॥यहैहृदय हरि कियो उपाई। नारदमुनि संशय उपजाई ॥ तब नारद गिरिजापै गये। तिनसों यहिविधि पूंछत भये ॥ मुंडमाल शिव ग्रीवा जैसे। मोसों वरणि सुनावो तैसे ॥ उमा कही मैं तो नहिं जानी। अरु शिवहू मोसों न बखानी ॥ नारद कह अब पूँछहु जाई। बिनु पूंछे नहिं देइ बताई॥ उमा जाइ शिवको शिर नाई। कह्यो सुनो बिनती सुरराई ॥ मुंडमाल कैसे तव ग्रीवा। ताको मोहिं बतावहु सीवा ॥ शिव तब बोले वचन रसाल। उमा आहि यह सुनि मुंडमाल ॥जब जब जन्म तुम्हारो भयो। तब तब मुंडमाल में लयो ॥ उमा कह्यो शिव तुम अविनाशी। मैं तुम्हरे चरणनकी दासी ॥ मेरे हित इतनो दुख भरंत। मोहिं अमर काहे नहिं करत ॥ तब शिव उमा गये ता ठौर। जहाँ नहीं द्वितिया कोउ और॥सहसनाम तहाँ तिन्हें सुनावो। जातेआप अमरपद पावो ॥ तहां हुतो इक शुकको अंग। तिनयह सुन्योसकल परसंग ॥ ताकोशिवमारनकोधायो। तिन उडि अपुनो आप बचायो॥उड़त २ शुक पहुँच्यो तहां। नारि व्यासकी बैठी जहां॥शिवहू ताके पाछे धाए। पै ताको मारन नहिं पाये ॥ व्यासनारितयहीं मुख बायो। तब तनु तजि मुख-माहिं समायो ॥ द्वादश वर्ष गर्भमें रह्यो॥ व्यास भागवत तब तिहि कह्यो ॥ बहुरो जब यदुपति समुझायो। तेरी माता बहुदुख पायो॥ तू जेहिहित बाहर नहिं आवै। सो हमसों कहि क्यों न सुनावै ॥ प्रभु तुव माया मोहिं सतावत। ताते हौं बाहर नहिं आवत ॥ हरि कह्यो अबनव्यापि है माया। तब वह गर्भ छांडि जग आया ॥ मायामोहताहि नहिं दह्यो। सुन्यो ज्ञान सो सुमिरन रह्यो ॥ जैसे शुकको व्यास पढायो। सूरदास तैसे कहि गायो ॥ ११४ ॥ श्रीभागवत वक्ता श्रोता सतार वर्णन। राग बिलावल ॥ व्यासदेव जब शुकहि पढायो। सुनिकै शुक सो हृदय बसायो ॥ शुक सों नृपति परीक्षित सुन्यो। तिन पुनि भलीभांतिकै गुन्यो॥ सूत शौनकनिसोंपुनिकह्यो। विदुर मैत्रेयसों पुनि लह्यो ॥ सुनि भागवत सबनि सुखपायो।सूरदास सो वरणि सुनायो ११५ सूत संवाद।रागबिलावल ॥ सूत व्याससों हरिगुण सुने। बहुरो तिन निज मनमें गुने ॥ बहुरो नैमिषारपै आयो। तहां ऋषिनको दर्शन पायो ॥ ऋषिन कह्यो हरिकथा सुनावहु। भली भांति हरिको गुण गावहु॥ प्रथम कह्यो तिन व्यास अवतार। सुनो सूर सो अब चित धार ॥ ॥ ११६ ॥ व्यास अवतारवर्णन।राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि-चरणाविन्द उर धरो॥ व्यासजन्म भयो जा परकार। कहौं सो कथा सुनोचितधार ॥ सत्यवती मच्छोदरि नारी ॥ गंगातट ठाढीसुकुमारी॥पाराशर ऋषि तहाँ चलिआए। विवश होइ तिनकेमद छाए ॥ ऋषि कह्यो ताहि दान गति देहि। मैं वर दीन्यो तोहिं सुलेहि ॥ तू कुमारिकाबहुरो होई॥ तोको नाउँ धरै नहिं कोई ॥ मेरो कह्यो न जो तू करिहै। देउँ शराप महादुख भरिहै॥सत्यवती शाप भय मान। ऋषिको वचन कह्यो परिमान ॥ व्यासदेव ताके सुत भये। होत जन्म बहुरो वन गये ॥ योजनगंधा माता करी। मच्छ बास ताकी तब हरी ॥ देखो कामप्रताप अधिकाई वश कियो पाराशर ऋषिराई॥ प्रबल शत्रु आहै यह मार। याते सुनोचली संभार ॥ या विधि भयो व्यास अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ११७॥ श्रीभागवत आदि वर्णकारण। राग बिलावल॥ भयो भागवत चारि प्रकार। कहौं सुनो सो अब चित धार ॥ सतयुग लाख वर्षकी आई। त्रेता दश सहस कह गाई ॥ द्वापर सहस एक रहिगई। कलियुग शत संवत रहिगई॥

सोऊ कहन सुनन को भाई।कलि मर्याद कही नहिं जाई॥ ताते हरि करि व्यास अवतार ।करी संहिता वेद विचार ॥ बहुरि पुराण अठारह गाए । पै तोऊ शांती नहिं पाए ॥ तब नारद तिनके ढिग आय। चारि श्लोक कहे समुझाय ॥ ए ब्रह्मासो कहे भगवान। ब्रह्मा मोसे कहे बखान ॥ सोई अब मैं तुमसोभाषे।कही भागवतइहि हिय राखे ॥ श्रीभागवत सुनै जो कोई ।ताको हरि-पद प्रापति होई ॥ ऊँच नीच व्योरो न वडाई । ताकी साखी मैं सुनि पाई ॥जैसे लोहा कंचन होई। व्यास भई मेरी गति सोई ॥ दासीसुत ते नारद भयो। दुःख दासपनको मिटि गयो ॥ व्यासदेव तव करि हरि ध्यान । कियो भागवतको व्याख्यान ॥सुनै भागवत जो चित लाई ।सूर सु हरि भजि भव तरिजाई ॥ ११८ ॥राग सारंग ॥ कह्यो शुक श्रीभागवत विचार । जाति पांति कोऊ पूछत नहिं श्रीपतिके दरवार ॥ श्रीभागवत सुनै जो हित करि तरे सु भव जलधार । सूर सुमिरि गुण रटि निशि वासर राम नाम निज सार ॥ ११९ ॥ नाममाहात्म्यवर्णन। राग कान्हरा ॥ वडी है राम नामकी ओट । शरण गये प्रभु काढि देत नहिं करत कृपाके कोट ॥वैठत सभा सबै हरिजूकी कौन वडो को छोट। सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट॥ १२० ॥राग धनाश्री॥ सोई भलो जु रामहिं गावे । श्वपच प्रसन्न होइ वड सेवक विनु गुपाल द्विज जन्म न भावे ॥वाद विवाद यज्ञ व्रत साधे कतहूं जाइ जन्म डहकावे । होइ अटल जगदीश भजनमें सेवा तासु चारि फल पावे ॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल विनु भृंगी ज्यों दशहूं दिशि धावे। सूरदास प्रभु संत-समागम आनँद अभय निसान वजावे ॥ १२१ ॥राग सारंग॥ काहूके वैर कहा सरे । ताकी सर-वरि करै सु झूठो जाहि गुपाल वडोकरै॥शशि सन्मुख जो धूर उडावै उलटितिहीके मुख परै ॥ चीरिया कहा समुद्र उलीचै पवन कहा पर्वत टरै ॥ जाकी कृपा पतित होइ पावन पग परसत पाहन तरे । सूर केश नहिं टारिसके कोउ दांत पीसि जो जगत मरै ॥ १२२ ॥ राग केदारा ॥ है हरि भजनको परमान । नीच पावै ऊँच पदवी वाजते नीशान ॥भजनको परताप ऐसो जल तरै पापान। अजामिल अरु भील गणिका चढे जात विमान॥ चलत तारे सकल मंडल चलत शशि अरु भान॥ भक्तध्रुवकी अटलपदवी रामकेदीवान॥निगमजाको सुयश गावत सुनत संत सुजान। सूर हरिकी शरन आयो राखि ले भगवान ॥ १२३ ॥ भगवान विदुर गृह भोजन करन वर्णन।राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सबकोई। ऊंच नीचहरि गिनत न दोई ॥ विदुर गेह हरिभोजन पाये। कौरवपतिको मनहिं न ल्याये॥ कहौ सुकथा सुनो मन लाई। शूर श्याम भक्तनि मन आई ॥ १२४ ॥ भए पांडवनिके हरि दूत । गये जहां कौरवपति धूत ॥ उनसों जो हरि वचन सुनाये। सूर कहत जो सुनि चित लाये ॥ १२५ ॥ सुनि राजा दुर्योधन हम तुमपै आये। पांडुसुतन जीवित मिले दै कुशल पठाए॥क्षेम कुशल अरु दीनता दण्डवत सुनाए। कर जोरे विनती करी दुर्वल सुखदाए ॥ पांच गांव पांचो जना करि किरपा दीजै । ए तुमरे कुल वंश है हमरी सुनिलीजै ॥ उनकी हमसो दीनता कोउ कहि न सुनावो । पांडु सुतनि अरु द्रौपदीको मारिकढावो ॥ राजनीति जानो नहीं गोसुत चरवारे । पीवहु छाँछ अवाइके कब केरे वारे ॥ गई गाउके वेटला मेरे आदि सहाई । इनकी हम लज्जा नही तुम राजवडाई ॥भीषम द्रोण कर्ण सुनै कोउ मुखहु न वोले। ए पांडव क्यो काढिए धरणी डग डोले ।हम कछु लेन न देत है ए वीर तुम्हारे। सूरदास प्रभु उठि चले कौरव सुत हारे ॥ १२६ ॥ उद्धवप्रति वचन॥ राग धनाश्री॥ उद्धव चलो विदुरके जाइये। दुर्योधनके कौन काज जहांआदर भान न पाइये॥गुरु

सुत नहीं वडे अभिमानी का। सेव कराइये। टूटी छानी मेघ जल वरषे टूटे पलँग बिछाइये॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो तिया कहै प्रभु आइये। मकुचति फिरति जु नदन त्पात्र भोजन कहा मँगाइये॥ तुमतो तीनि लोकके ठाकुर तुमतेकहा दुराइये॥हम तौ प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी शाक चराइये॥ हँसि हँसि खात कहत मुख महिमा प्रेम प्रीति अधिकाइये। सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम वढाइये ॥ १२७ ॥ हरि ठाढे रथ चढे दुवारे। तुम दारुक आगे ह्वै देखहु भक्त भवन किधौं अनत सिधारे॥ सुनि सुदरि उठि उत्तर दीनो कौरव-सुत कछु काज हकारे। तहँ आये यदुपति कहियतहैं कमल नयन हरि हितू हमारे॥ तिहिको मिलन गयो मेरो पति ते ठाकुर हैं प्रभू हमारे। सूर प्रभू सुनि सभ्रम धाए प्रेम मगन तन वसन बिसारे॥ १२८॥प्रभुजू तुम हौ अतर्यामी।तुम लायक भोजन नहिं गृहमें अरु नाहीं गृहस्वामी। हरि कह्यो मागपत्र जो मोहिं प्रिय अमृत या मम नाहीं। वारवार मगहि सूर प्रभु शाक विदुर घर खाहीं॥ १२९ ॥भगवान दुर्योधन संवादाराग सोरठ॥ कधौं दामीसुतके पाँव धारे। भीषम कर्ण द्रोण मदिर तजि मम गृह तजे मुरारे॥ सुनियत दीन हीन वृषलीसुत जाति पातिते न्यारे॥ तिनके जाइ कियो तुम भोजन यदुवशी सब लाजनि मारे॥हरि जू कहें सुनो दुर्योधन सोइ कृपण मम चरण बिसारे। वेई भक्त भागवत वेई गगद्वेषते न्यारे॥ सूरदास प्रभु नंदनंदन कहें हम ग्वालन जुठिहारे॥ १३०॥राग सारग॥ हमते विदुर कहा है नीको। जाके रुचिसों भोजन कीनो सुनियत सुत दासीको॥ द्वै विधि भोजन कीजे राजा विपति परे के प्रीती। तेरी प्रीतिन मोहिं आपदा यहै बडी विपरीती॥ ऊचे मंदिर कौन काजके कनक कलश जु चढाये। भक्त भवनमें मैं जु वसतहौं यद्यपि तृणकरि छाये॥ अतर्यामी नाम हमारो हौं अतरकी जानों। तद्यपि सूर भक्तवच्छलही भक्तन हाथ बिकानों॥ १३१ ॥ हरि तुम क्यों न हमारे आए। षटरस व्यंजन छाडि रसोई साग विदुर घर खाये॥ ताकी तुगियामें तुम वैठे कौन बडापन पायो। जाति पाति कुलहूते न्यारो है दासीको जायो॥ मैं तुहि कहौं अरे दुर्योधन सुन तू बात हमारी। विदुर हमारो प्राण पियारो तू विषया अधिकारी॥ जाति पाँति हौं सबकी जानों बाहिर छाक मगायो। ग्वालनिके सँग भोजन कीनो कुलके लाज लगायो॥ जहँ अभिमान तहा मे नाहीं यह भोजन विष लागे। सत्य पुरुष वैठे घटहीमे अभिमानीको त्यागे॥ जहँ जहँ भीर परे भक्तनको तहा तहा उठि धाऊ। भक्तनके हौं सग फिरत हौं भक्तन हाथ बिकाऊ॥ भक्तबछल है बिरद हमारो वेद स्मृति हू गाये। सूरदास प्रभु यह निज महिमा भक्तन काज वढाये॥ १३२॥ द्रौपदी सहाय॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरौ सबकोई।नारि पुरुष हरि गनत न दोई॥ द्रुपदसुताकी गयी लाज। कौरवपतिको पारयो ताज॥ कहौं सु कथा सुनो चित लाई। सूरश्याम भक्तन वनिआई॥ १३३॥ कौरव पासा कपट बनाये। धर्मपुत्रको जुवा खिलाये॥ तिन हारयो सब भूमि भँडारी। हारीवहुरि द्रौपदीनारी॥ताकोपकरि सभामें लाये। दुःशासनकरि वसन छुडाये॥ तब वह हारसो रोइ पुकारी। सूर राखि मम लाज मुरारी॥ १३४॥ राग सारग ॥अब कछु नाहीं नाथ रह्यो। सकल सभामें वैठि दुःशासन अम्बर आनि गह्यो॥ हारयो सब भडार भूमि अरु अब वनवास लह्यो। एकैचीर हुतो मेरे पर सो इन हरन चह्यो॥ हा जगदीश राखि यहि अवसर प्रगट पुकारि कह्यो। सूरदास उमँगे दोउ नयना वसन प्रवाह वढ्यो॥१३५॥ राग बिलावल॥ जेतीलाजगोपालहिमेरी॥ तितनी नाहिं वधू हौंजाकी

अंवर हरत सबन तन हेरी ॥ पति अति रोप मारि मनमहियां भीपम दई वेद विधि टेरी । हा जगदीश द्वारका स्वामी भई अनाथ कहत हौ टेरी॥वसन प्रवाह बढ्यो जब जान्यो साधु साधु सबहुन मति फेरी। सूरदास स्वामी यश प्रगट्यो जानी जनम जनमकी चेरी ॥ १२६ ॥ राग धनाश्री ॥निवहो बॉह गहेकी लाज। द्रुपदसुता भाषत नँदनन्दन कठिन भई है आज ॥ भीपम कर्ण द्रोण दुर्योधन बैठे सभा विराज। तिहि देखत मेरो पट काढत लीक लगी तुम काज ॥ खंभ फारि हिरनाकुश मारयो ध्रुव नृप धरयो निवाज। जनकसुता हित हत्यो लंकपति बांधो साइर गाज ॥ गद्गद सुर आतुर तनु पुलकित नैननि नीर समाज। दुखित द्रोपदी जानि प्राणपति आये खगपति त्याज॥पूरे चीर वहुरि तनु कृष्णा ताके भगे जहाज।काढि काढि थाक्यो दुःशासन हाथनि उपजी खाज ॥ विकलअमानकयो कौरवपति पारयो शिरकोताज।सूर प्रभू यह रीति सदाही भक्त हेत महाराज ॥१२७॥राग विहागरा ॥ठाढी कृष्ण कृष्ण यों बोलै ॥ जैसे कोई विपति परेते दूरि धरयो धन खोलै॥ पकरयो चीर दुष्ट दुःशासन विलख बदन भइ डोलै। जैसे राहु नीच ढिग आये चंद्रकिरन झकझोलै ॥ जाके मीत नन्दनन्दसे ढकिलइ पीत पटो लै। सूरदास ताको डर काको हरि गिरिवरके ओलै ॥ १२८ ॥ राग धनाश्री॥ तुमरी कृपा विनु कौन उबारै । अर्जुन भीम युधिष्ठिर राजा सुमति नकुल वल भारै ॥ केश पकरि लायो दुःशासन राखी लाज मुरारे। नाना वसन बढाइ दियो प्रभु वलि वलि नंददुलारे ॥ नगन न होति चकित भयो राजा शीश धुँन करसों कर मारै॥जापै कृपा करै करुणामय को ताकीदिशि सकैनिहारै॥जोजो जन निश्चयकरिसेवैहरि प्रभु अपनोविरद सँभारै।सूरदास प्रभुअपनेजननको कवहूँ उरतेनेकु न टारै॥१२९॥सूतवचन शौनकनि प्रति ॥ राग विलावल॥हरि हरि हरि हरि सुमरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि पंडवको ज्यों दियो राज। अरु पुनि गयो राज्य ज्यों त्याज ॥ बहुरो भयो परीक्षित राजा। तिनको शाप विप्रसुत साजा ॥ सुनि हरिकथा मुक्त सो भयो। सूत शौनकनिसों सो कह्यो ॥ कहो सो कथा सुनो चित धार। सूर कहै भागवत अनुसार ॥ ॥ १४० ॥ भीष्मोपदेश युधिष्ठिर प्रति। राग विलावल ॥ हरिहरि हरिहरि सुमिरन करो।हरिचरणारविंद उर धरो ॥ भारत युद्ध होइ जब बीता। भयो युधिष्ठिर अति भयभीता ॥ कुरुकुल हत्या मोतें भई। धौं अब कैसे करिहै दई ॥ करौ तपस्या पाप निवारौ। राजछत्र नाही शिर धारौ॥लोगन तिहि बहुविधि समझायो। पै तिहि मनसंतोप न आयो ॥ तब हरि कह्यो टेक परिहरो।भीष्मपितामह कहे सुकरो॥ हरि पांडव रणभूमि सिधाए। भीपम देखि बहुत सुख पाए ॥ हरि कह्यो राज्य न करत धर्मसुत। कहत हते मैं भ्रात भ्रातसुत ॥ गुरुहत्या मोतें है आई। कहौ सु छूटे कौन उपाई ॥ राजधर्म भीपम तबगायो। दान आपदा मोक्ष सुनायो॥पै नृपको संदेह न गयो- तब भीपम नृपसो पुनि कह्यो ॥ धर्मपुत्र तू देखि विचार। कारन करनहार करतार ॥ नरके किए कछू नहिं होई। करता हरता आपुहि सोई॥ ताको सुमिरि राज्य तुम करौ ।अहंकार चितते परिहरो ॥ अहंकार किये लागत पाप। सूरश्याम भजि मिटे संताप ॥ १४१ ॥ राग धनाश्री ॥ करी गोपालकी सब होई। जो अपनो पुरुपारथ मानत अतिझूठो है सोई ॥ साधन मंत्र यंत्र उद्यम वल यह सब डारहु धोई। जो कछु लिखिराखी नँदनंदन मेटि सकै नहिं कोई॥ दुख सुख लाभ अलाभ समुझि तुम कतहिं मरत हौ रोई। सूरदास स्वामी करुणामय श्याम चरण मन पोई ॥ १४२ ॥ राग कान्हरा ॥होत सुजो रघुनाथ ठटी।पचि पचि रहे सिद्ध साधक मुनि तऊ बढी

न घटी ॥ योगी योग धरत मन अपने औ शिर राखि जटी । ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहूं सों न छटी॥जपि तपि तपसी आराधन कर चारों वेद रटी । सूरदास भगवंतभजन बिनु कर्म रेख न कटी ॥ १४३ ॥राग सारंग ॥भावी काहू सों न टरै । कहां वह राहु कहां वह रवि शशि आनि संयोग परै ॥ मुनि वशिष्ठ पंडित अतिज्ञानी रचि रचि लग्न धरै। तात मरन सियहरन राम वन वपु धरि विपति भरै ॥रावण जीति कोटि तैंतीसों त्रिभुवन,राज्य करै।मृत्यु बांधि कूपमें राखे भावीवश सु मरै ॥ अर्जुनके हरि हितू सारथी सोऊ वन निकरै । द्रुपदसुताके,राजसभा दुःशासन चीर हरै ॥हरिश्चंद्रसो को जग दाता सो घर नीच भरै।जो गृह छांडि देश बहु धावै तउ वह संग फिरै ॥ भावीके वश तीनि लोक है सुर नर देह धरै । सूरदास प्रभु रची सु ह्वैहै को करि सोच मरै॥ १४४ ॥राग कान्हरा॥ताते सेइए यदुराई। सम्पति विपति विपति सों सम्पति देह धरेको यहै सुभाई॥तरुवर फूले फले परिहरै अपने कालहि पाई।सरवर नीर भरे पुनि उमडे सूखे खेह उडाई ॥द्रितिय चन्द्र बाढत ही बाढै घटत घटत घटि जाई । सूरदास संपदा आपदा जिनि कोऊ पतिआई॥ १४५॥मलार॥इहि विधि कहाघटैगोतेरो।नंदनँदन करिघरको ठाकुर आपुन ह्वै रहु चेरो ॥ कहा भयो जो सम्पति बाढी कियो बहुत घर घेरो ।कहुँ हरिकथा कहूँ हरि पूजा कहुँ संतनि को डेरो ॥ जो वनिता सुत यूथ सकेलै हय गय रथनि घनेरो। सब तजि सुमिरण सूर श्याम गुण यहै साच मत मेरो ॥१४६ ॥ भारत वर्णन।राग सारंग॥ भक्तवछल श्रीयादवराई । भीषमकी परतिज्ञा राखी अपनो वचन फिराई॥ भारत माहिं कथा यह विस्तृत कहत होय विस्तार । सूर भक्त वत्सलता वरणौं सर्व कथाको सार ॥१४७॥अर्जुन दुर्योधनको गवन कृष्णगेह॥भक्तवत्सलता प्रगट करी । सत संकल्प वेदकी आज्ञा जनके काज प्रभु दूरि धरी ॥ भारतादि दुर्योधन अर्जुन भेटन गए द्वारकापुरी । कमलनैन बैठे सुखशय्या पारथ पाइतरी ॥ प्रभु जागे अर्जुन तन चितयो कब आये तुम कुशल घरी । ता पाछे दुर्योधन भेटहि शिर दिशते मन गर्व धरी॥ दुहूँ मनोरथ अपनो भाष्यो तब श्रीपति बातैं उचरी । युद्ध न करौं शस्त्र नहिं पकरौं एक ओर सेना सिगरी ॥ हरि प्रभाव राजा नहिं जान्यो कह्यो सेन मोहिं देहु हरी। अर्जुन कह्यो जानि शरणागत कृपा करौ ज्यों पूर्वकरी।निजपुर आइ राइ भीषमसों कही जु बातैं हरि उचरी।सूरदास भीषमपरतिज्ञा शस्त्र लिवाऊं पैजकरी१४८ दुर्योधन वचन भीष्म प्रति ।राग धनाश्री ॥ मैं तोहि पूछौं भूतलराई । सुनहु पितामह भीषम मम गुरु कीजे कौन उपाई ॥ उत अर्जुन अरु भीम पंडुसुत दोउ करवार गहे गंभीर । इतै भगदत्त द्रोण भूरिश्रव तुम सेनापति धीर ॥जे जे जात परत ते भूतल ज्यों ज्वालागत चीर।कौनसहाय जानियत नाहिंन होत वीर निर्वीर ॥ जब तोसों समुझाय कही नृप तबतैं करी नकान।पावककिरणदहत सबही दल तूलसुमेरु समान॥अविगत अविनाशी पुरुषोत्तम हांकतरथकीक्यान।अचरज कहा पार्थ जो वेधे तीनलोक इक बान ॥तेरे काज करौं पुरुषारथयथाजीवघटमांहीं।यहनकहौं हौं रन चढि जीतौं मो मति नहिं अवगाही ॥ अजहूं समुझि कह्यो करि मेरो कहत पसारे बाहँ। कहो ताहि को सरवरि पूजे प्रभु पारथ दोउमाहँ॥ अबतो सूर शरण तकि आयो सोइ रजायसु दीजे । जिहिते रहै छत्रपन मेरो वहै मतौ कछु कीजे ॥ १४९ ॥ भीष्म प्रतिज्ञा । राग मलार ॥

१ इतादि करण ।

आज जो हरिहि न शस्त्र गहाऊं ॥ लाजौहौं गंगा जननीको शंतनुसुत न कहाऊं ॥ स्यंदन खंडि महारथ खंडों कपि ध्वज सहित डुलाऊं।इती न करौं शपथ मोहिं हरिकी क्षत्रिय गतिहि न पाऊं॥ पांडवदल सन्मुख ह्वै धाऊं सरिता रुधिर बहाऊं। सूरदास रणभूमि विजय विन जियत न पीठि दिखाऊं ॥ १५० ॥ राग मारू ॥ सुरसरि सुवन रणभूमि आये। वाणवर्षा लगे करन अति क्रोध ह्वै पार्थ औसान तव सबै भुलाये। कह्यो करि कोप प्रभु अब प्रतिज्ञा तजो नहीं तो मरत रण हम हराए। सूर प्रभु भक्तवत्सल विरद आनि उर ताहि याविधि बचन कहि सुनाये ॥ १५१ ॥ भगवत बचन अर्जुन प्रति ॥राग बिलावल ॥ हम भक्तनके भक्त हमारे। सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत नटारे ॥ भक्तकाज लाजजिय धरिकै पाइँ पयादे धाऊं। जहँ जहँ भीर परै भक्तनको तहँ तहँ जाय छुडाऊं ॥ जो मम भक्तसों बैर करत है सो निज वैरी मेरो। देखि विचारि भक्त हित कारण हांकतहों रथ तेरो ॥ जीते जीत भक्त अपनेकी हारे हारि विचारों। रदास सुनि भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन जारों ॥ १५२ राग सारंग ॥ गोविंद कोपि चक्र कर लीनो। छांडि आपनो प्रण यादवपति जनको भायो कीनो ॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै चले चरण अति धाए। मनु शकित भूभार उतारन चलत भए अकुलाए ॥ कछुक अंगते उडत पीतपट उन्नत बाहु विशाल स्वेद स्रोत तनु शोभा कन छवि घन वर्षत जनु लाल ॥ सूर सुभुजा समेत सुदर्शन देखि विरंचि भ्रम्यो। मानो आनि सृष्टि करिवेको अंबुज नाम भज्यो १५३ राग मलार ॥मेरी प्रतिज्ञा रहै कि जाउ। इत पारथ कोप्यो है हमपर उत भीषम भट राउ॥ रथते उतरि चक्र धरि कर प्रभु सुभट हि सन्मुख आए। ज्यों कंदर ते निकसि सिंह झुकि गज यूथनिपर धाये ॥ आय निकट श्रीनाथ विचारी परी तिलकपर दीठि।शीतल भई चक्रकी ज्वाला हरि हँसि दीनी पीठि॥जय जय जय चिंतामणि स्वामी शंतनुसुत यों भाखै। तुमविनु ऐसो कौन दूसरो जो मेरो प्रण राखै ॥ साधु साधु सुरसरीसुवन तुम मैं प्रण लागि डराऊं।सूरजदास भक्त दोनों दिशि कापर चक्र चलाऊं ॥ ॥ १५४ ॥ ॥अर्जुन भीष्म संवाद। राग धनाश्री ॥ कहो पितु मोसों सोइ सतभाव।जाते दुर्योधन दल जीतों किहि विधि कवन उपाव ॥ जब लगि जी अंतर घट मेरे को सरवरि करि पावै।चिरंजीव जौलौ दुर्योधन जियत न पकरहिं आवै ॥ कौरव छांडि भूमिपर कैसे दूजो भूप कहावै।तो हम कछु नवसाइ पार्थ जो श्रीपति तोहि जितावै॥अब मै शरण तुम्हे ताकि आयो हमैं मंत्र कछु दीजै। नातर कुटुँब सैन संहारि कर कौन काजको जीजै॥द्रुपदकुमार होइ रथ आगे धनुप गहो तुम बान। ध्वजा बैठि हनुमत कलगाजे प्रभु हांकि रथ जान ॥ केतिक जीव कृपण मम बपुरो तजैं कालहू प्रान। सूर एकही बाणबिडारे श्रीगोपालकी आन ॥ १५५ ॥ भीष्म देह त्याग। राग सारंग ॥ पारथ भीपमसों मति पाई। कियो सारथी शिखंडि आई ॥ भीपम ताहि देखि मुख फेरचो।पारथ युद्ध हेतु रथ प्रेरचो ॥ कियोयुद्ध अतिही विकरार।लागी चलनि रुधिरकी धार॥भीपम शरशय्यापर परचो।पै दक्षिणायन लगि नहिं मरचो।हरि पांडव समेत तहँ आए।सूरज प्रभु भीपम मनभाए१५६ राग सारंग॥हरिसों भीपम विनय सुनाई। कृपा करी तुम यादवराई॥ भारतमें मेरो प्रण राख्यो। अपनो कियो दूरिकर नाख्यो॥तुम बिन प्रभु ऐसी को करजो भक्तनके वश अनुसरै॥तुम दर्शन सुर नर मुनि दुर्लभ। मोको भयो सो अतिही सुलभ ॥ दूरि नहीं गोविंद वह काल। सूर कृपा कीजै गोपाल ॥ १५७ गोविंद अब न दूरि वह काल। दीनानाथ देवकीनन्दन भक्तवत्सल गोपाल ॥ मैं भीपम तुम कृष्ण सारथी किये पीत पट लाल।बहुत सनाह समर शर

वेधे कनक वेल ज्यों ताल ॥ तुमरे चरणकमल मम मस्तक कत ताको शरजाल। सूरदास जन जानि आपनो देहु अभयकी माल १५८ ॥ राग मलार ॥वा पट पीतकी फहरान । कर धरि चक्र चरणकी धावनि नहिं विसरति वह बान ॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै कच रजकी लपटान। मानों सिंह शैलते निकस्यो महामत्तगज जान॥जिनगुपाल मेरो प्रण राख्यो मेटि वेदकी कान॥ सोई सूर सहाय हमारे निकट भये हैं आन॥ १५९ ॥ राग सारंग ॥भीषम धरि हरिको उरध्यान। देखत हरिके तजे परान॥तासु क्रिया करि सब गृह आए। राजासिंहासन बैठाए॥ हरि पुनिद्वारावती सिधाये । सूरदास हरि को गुण गाये ॥ १६० ॥ अथ भगवानको द्वारका गमन ॥ राग बिलावल ॥

धर्मपुत्र को दै हरि राज। निज पुर चलिवेको कियो साज ॥ तब कुन्ती विनती उचारी।सुनौ कृपा करि कृष्ण मुरारी ॥ जब जब हमको विपदा परी । तब तब प्रभु सहाय तुम करी॥ तुमते विमुख राज्य किहि काम।सूर बिसारहु हमें न श्याम॥१६१ ॥ अथ कुंतीकी विनय ॥राग कान्हरा ॥ प्रभुजू विपदा भली विचारी ।धिक यह राज्य विमुख चरणनते कहति पंडुकीनारी ॥लाक्षामंदिर कौरव विरच्यो तहँ राखे बनवारी।दुर्योधन की सभा द्रौपदी अंबर दए उबारी॥अतिथिरूपीश्वर शापन आए शोक भयो जिय भारी। स्वल्प शाकते तृप्त किए सब कठिन आपदा टारी॥परनिज्ञा प्रहलादकि राखी श्री नरहरि वपुधारी ।सोई सूर सहाय हमारे सतनको हितकारी ॥ १६२ ॥

अथ विदुरको उपदेश राजा धृतराष्ट्र गांधारी प्रति, वन गमन, राजा युधिष्ठिरको वैराग्य वर्णन।

राग बिलावल॥कुरुपतिज्यों वनगमन कियो।धर्मसुवन विरक्त ज्योंभयो॥वरणिसुनाऊं ता अनुसार। सूत कही जैसे परकार॥भारतादि कुरुपतिकी जथा । चली पांडवनकी जब कथा ॥ विदुर कह्यो मत करो अन्याई । देहु पांडवन राज्य बटाई॥कुरुपति कह्यो धान मम खाइ । पंडुसुतनकी करत सहाइ॥याको ह्यांते देहु निकारी॥बहुरिन आवै मेरे द्वारी ॥विदुर शस्त्र सब तहीं उतारी । चल्यो तीरथनि मुड उघारी ॥ भारतके बीते पुनि आयो। लोगन सब वृत्तांत सुनायो॥तबपूँछो कुरुपति हैं कहा ।कह्यो पंडुसुत मंदिर जहा ॥राजा सेवा भलि विधि करत।दिन प्रति सुख संपति तहँ भरत ॥ विदुर कह्यो देखो हरिमाया। जिन इहसकल लोक भरमाया॥ जिहि हरि कृपाकरयो सो छूट्यो। इन माया सब लोगनि लूट्यो ॥इहिके पुत्र एकसौ भए।तिनै बिसारि सुखी ए हुए॥अब मैं उनको ज्ञान सुनाऊ । जिहि तिहिं विधि वैराग्य उपाऊँ॥ बहुरो धर्मपुत्र पै आयो ।राजा देखि बहुत सुख पायो ॥करि सन्मान कह्यो आ भाई । करी हमारी बहुत सहाई ॥ लाक्षागृहते जरत उबारे।अरु बालपनते प्रतिपारे॥कौन कौनतीरथफिरि आए।विदुर सकल वृत्तान्त सुनाए॥ बहुरि कह्यो हरि सुधि कछु पाई ।कह्यो न कछू रह्यो शिर नाई॥ बहुरो कौरवपति ढिग आए। पूछे समाचार मत भाए ॥कह्यो युधिष्ठिर सेवा करत। ताते बहुत अनंदित रहत ।कह्यो पुत्रसुधि आवत कबहीं॥ कह्यो भाविपके वश सबही ॥ विदुर कह्यो शतपुत्र तिहारे । पंडव सुतनि कलंक सहारे ॥ तिनके गृह तुम भोजन करत। अरु पुनि कहत सुखे हम घरत।धिक तुम धिक या कहिबे ऊपर । जीवत रहिहो कौलौं भूपर ॥ श्वान तुल्य है बुद्धि तुम्हारी । जंठन काज सहत दुख भारी ॥ द्रौपदिके तुम बसन छिनाए। इन तुम राज बहुत दुख पाए ॥ इनके गृह रहि सुख तुम मानत।अति निलजको लाज न आनत॥जीवनआश प्रबल तुम लेखी।साक्षात मो तुममें देखी॥ काल अग्नि सबहीं जग जारत। तुम कैसे जीवन न विचारत॥आयुतुम्हारी गई सिराइ ।बन चलि भजो द्वारकाराइ ॥ कुरुपतिकह्यो अंध हम दोई । बनमें भजन कौनविधि होई॥विदुर कहैसेनामें

करिहौं।सेवा करत नेक नहिं टरिहौं॥अर्धनिशा ताको लै गयो।प्रात भए नृप विस्मयभयो॥बूढमुए के कहुँ उठि गये।तिनके ताप नृपति वहुतए॥वहां जाइ कुरुपति वल योग। दियो छांडि तनको संयोग ॥गांधारी सहगामिनि कियो।विदुरभक्त तीरथ मग लियो॥इहि अंतर नारद इहँ आयो। नृपको सब वृत्तांत सुनायो॥ नृपके मन उपजो वैराग । भजो सूर प्रभु अब सब त्याग॥१६३॥ अथ हरिवियोग पांडवनको उत्तर गमन राग सारंग ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो ।हरि चरणारविन्द उर धरो॥हरिवियोग पांडव तजिराज।गमन कियोपरीक्षितराज॥कहौं सुकथा सुनौ चित धार।सूरकह्यो भागवत अनुसार ॥१६४॥राग बिलावल॥राजासों अर्जुन शिरनाई। कह्यो सुनो विनती महाराई ॥ वहुदिन भे हरिसुधि नहिं पाई। आज्ञा होइ तो देखहुँ जाई॥ यह कहि पारथ हरिपुर गए ।सुन्यो सकल यादव क्षय भए॥अर्जुन सुनत नयन जलधार।पर्‍यो धरणि पर खाइ पछार ॥ तब दारुक संदेश सुनायो।कह्यो हरिजू जो गीता गायो॥सो स्वरूप मम हृदये आन । रहियो सदा करत मम ध्यान॥तब अर्जुन मन धीरज धारि।चल्यो संग लै जे नर नारि॥तहँ भिछनिसों भई लराई।लूटे विन सब श्याम सहाई ॥अर्जुन वहुत दुखित तब भए। इह अपसगुन होत दिन नए॥रोवैं वृषभ तुरंग अरु नाग । श्याल दिवस निशि वोलैं काग ॥ कंपै भुव वर्षा नहिं होई । भए सोच चित यह नृप जोई ॥ इहि अंतर अर्जुन फिरि आयो । राजाके चरणन शिर नायो ॥ राजा ताको कंठ लगाई । कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ वल वसुदेव कुशल सब लोई । अर्जुन यह सुनि दीने रोई ॥ राजा कह्यो कहा भयो तोहिं । तू क्यों कहि न सुनावे मोहिं॥काहू असत्कार तोहिंकियो।कै कहि दान न द्विजको दियो॥ कै शरणागतको नहिं राख्यो । कै तुमसों काहु कटु भाख्यो ॥ कै हरिजू भए अन्तर्ध्यान । मोसों कहि तू प्रकट बखान ॥ तब अर्जुन नैनन जल डारि । राजासों किय वचन उचारि ॥ सूरज प्रभु वैकुंठ सिधारे।तेहि विन को मम काज सँवारे ॥ १६५॥ रागधनश्री हरि विनु को पुरवैमेरोस्वारथ॥मुंडहि धुनत शीश कर मारत रुदन करत नृप पारथ॥थाके हस्त चरणगति थाकी अरु थाक्यो पुरुषारथ। पांच वाण मोहि शंकर दीने तेऊ गए अकारथ ॥ जाके संग सेतुबन्ध कीनो अरु जीत्यो महभारथ।गोपीहरी सूरके प्रभु विन घटतनप्राणपदारथ॥ ॥१६६ ॥राग बिलावल ॥यह सुनि राजा रोइ पुकारे। भीमादिक रोये पुनि सारे॥रोवत सुनि कुंती तहां आई । कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ अर्जुन कह्यो सबै लारे मुए । हरिविनु सब अनाथ हम हुए॥कुंतीप्राण तजे धरि ध्यान।जीवन मरन उते भल जान॥राज्यपरीक्षितको नृप दीना।वज्रनाभ मथुरापति कीना॥ द्रुपदसुता समेत सब भाई।उत्तरदिशा गए हर्षाई॥योगपंथ करि उन तनु तजे। सूर सबै ते हरि पद भजे ॥ १६७ ॥अथ श्री भगवान् परीक्षित गर्भरक्षा, जन्म वर्णन ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरनकरो।हरिचरणारबिन्द उर धरो॥हरि परीक्षितै गर्भ मँझार । राखिलियो निज कृपा अधार॥कहौं सु कथा सुनो चितलाई।जो हरि भजै रहै सुख पाई॥भारत युद्ध वितत जब भयो। दुर्योधन अकेल तहँरह्यो॥अश्वत्थामा तापै जाई।ऐसी भांति कह्यो समुझाई॥हमसों तुमसों वाल मिताई।हमसों कछु न भई मित्राई॥अब जो आज्ञा मोको होई। छांडि विलंब करों अब सोई ॥ राज्य गयेको दुःखन सोई।पांडव राजभयो जो होई॥उनकेमुएहीय सुखहोई।जो करिसको करो अब सोई ॥ हरि सर्वज्ञ बात यह जान । पांडुसुतनिसों कह्यो वखान॥आज सरस्वतितट रहो सोई।पै यह बात न जाने कोई॥पांडवहरिकीआज्ञा पाइ।तजि गृह रहे सरस्वति जाइ ॥ काहूसों यह कहि न सुनाई । वहां जाइ सब रैन बिताई । अश्वत्थामा तब इहां आए। द्रौपदिसुत तहां

सोवत पाए ॥ उनको शिर लै गयो उतारि । कह्यो दुर्योधन आयो मारि ॥ विन देखे ताको सुख छयो । देखेते दूनो दुख भयो ॥ ए बालक तैं वृथा जु मारे । पुनि कुरुपति तजि प्राण सिधारे ॥ अश्वत्थामा भय करि भग्यो । इहां लोग सबसोवतजग्यो॥द्रौपदिदेखिसुतनदुखपायो ।अर्जुनसो यह वचन सुनायो॥अश्वत्थामा जब लगि मारों। तब लगि अन्न न मुखमें डारों॥हरि अर्जुन रथपर चढि धाये । अश्वत्थामापै चलि आये ॥ अश्वत्थामा अस्त्र चलायो। अर्जुनहू ब्रह्मास्त्र पठायो ॥ उन दोनोंसे भई लराई । तब अर्जुन दोउ लए बुलाई ॥ अश्वत्थामाको गहि लाए । द्रौपदि शीश मुठी मुकराए ॥ याके मारे हत्या होई। मूयो जिवत न देख्यो कोई ॥ अश्वत्थामा बहुरि खिसाई। ब्रह्मअस्त्रको दियो चलाई॥गर्भ परीक्षित जारन गयो । तब हरि ताहि जरन नहिं दियो॥ रूप चतुर्भुज गर्भ मँझार । ताको तासों लियो उवार ॥ जन्म परीक्षित को जब भयो ।कह्यो चतुर्भुज अब कहँ गयो ॥पुनि जब हरिको देखौं जोई।पाइ संतोष सुखीहोउँसोई॥गजाजन्मसमयको देखि। मनमें पायो हर्ष विशेखि ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा करी। सोई कथा सकल विस्तरी ॥ श्रीभगवान कृपा जिहि करै । सूर सो मारे काके मरै ॥ १६८ ॥ अथ परीक्षित राजाको कलियुगदंड ऋषि शाप। राग सारंग ॥ हरि हरिभक्तनको शिरनाऊं। हरि हरिभक्तनके गुण गाऊं ॥ हरि हरिभक्त एक नहिं दोई । पै यह जानत विरला कोई ॥ भक्त परीक्षित हरिकोप्यारो।गर्भमाहँ होतो जब बारो॥ब्रह्म अस्त्रते ताहि बचायो।युग युग विरद यहै चलि आयो ॥ बहुरि राज्य ताकहँ जब भयो । मिस दिग्विजय चहूं दिशि लयो ॥ सकल प्रजा सुधर्म रत देखे । ताके मन बहु हर्ष विशेखे ॥ कुरुक्षेत्रमें पुनि जब आयो। गाय वृषभ तहँ दुःखित पायो ॥ तासु वृषभके पग त्रय नाहीं ।रोवत गाय देखके ताहीं॥वृषभ धर्म पृथ्वी सो गाई। वृषभ कह्यो तासो या माई ॥ मेरे हेत दुखी तू होत । कै अधर्म तुम पर अच्छोत ॥गो कह्यो हरि बैकुंठ सिधारे । शम दमउनहीं सग पधारे॥तप संतोष दया अरु गयो ।ज्ञान यमादिक सब लय भयो॥यज्ञ साधना कोउ नकरै। कोऊ धर्म न मनमें धरै॥अरु तुमको बिन पाइन देखि । मोहि होतहैदुःखविशेखि ॥ इह अतर राजा शूद्र आयो।वृषभ गऊको पांव चलायो ॥ ताहि परीक्षित खड्ग उठाइ ।बहुरो वचन कह्यो या भाइ । तू को कौन देश है तेरो ॥ केछल गह्यो राज्य सब मेरो ॥ या विधि नृपति परीक्षित कह्यो । पै वासो उत्तर नहिं लह्यो ॥ कह्यो वृषभसो को दुखदाई । तासु नाम मोहि देहु बताई ॥ इद्र होइ ताहूको मारो । तुमरो यह संताप निवारो॥ वृषभ कह्यो तुम ऐसेइ राव । पै मै लेउं कौनको नाँव ॥ कोउ कह हरिइच्छा दुख होई। द्वितिया दुखदायक नहिं कोई ॥ कोउ कह कर्म दुःखके दाता । काहु दुख नहिं देत विधाता ॥ कोउ कह शत्रु होत दुखदाई । सु तौ मै न कीनी शत्राई ॥ काके नाम बताऊ तोको। दुखदायक अरिष्ट सम मोको ॥ लहत आपने दुख दातार। तुमहीं देखो करिय विचार ॥तबविचारकरि राजादेख्यो । शूद्रनृपतिकलियुगकरिलेख्यो॥वृषभ धर्म अरु पृथ्वी गाइ । इनको भयो इहां दुखदाइ ॥ ताहि कह्यो तुम बडा अधर्मी ।तो समान नहिं और कुकर्मी ॥ क्षमा दया तप पग तै काट्यो। छांडि देश मम यह कहि डाट्यो ॥तिन कह्यो मोमें एक भलाई । तुमसो कहो सुनो चितलाई ॥ धर्म विचारत मनमे होई । मनसा पाप न लागतकोई ॥ राज तुम्हारो है सब ठौर। तुम बिनु नृपति न द्वितिया और ॥ जौन ठौरमोहिंआज्ञा होई । ताहि ठौर रहौं मै जोई ॥ हो हरि विमुख रु वेश्या जहां। सुरापान वधिकन गृह तहां॥ जूवा खेलत जहां जुवारी । ए पांचो है ठौर तुमारी ॥ पांचौ होई नृपति ए जहां। मोकोठौरयता-

वहु तहां॥तव नृप याको कनक वतायो ।कनक मुकुट लखि सो लपटायो॥इक दिन राव अखेटे गयो । ता वनमाँह पियासो भयो ॥ ऋषि शमीकके आश्रम आयो ।ऋषि हरिपदको ध्यान लगायो ॥ राजा जल ता ऋषिसों मांग्यो । ताको मन हरिपदसों लाग्यो ॥राजाको उत्तर नहिं दियो। तव मनमाहिं क्रोध नृप कियो॥ यह सव कलियुगको परभाव ।जो नृपके मन भयो कुठाव ऋषिकी कपट समाधि विचारी । दियो भुजंग मृतक गर डरी ॥ ऋषि समाधिमहँ त्योंहीं रह्यो। शृंगीऋषि सों लरिकन कह्यो ॥ शृंगीऋषि तव कियो विचार । प्रजा दुःख कर नृपति गुहार ॥ नृपति दुःख कहिये किहिजाई। दियो शाप तोहिं तक्षक खाई॥देकरिशाप पितापैआयो। देख्यो सर्प पितागर नायो॥ रोवन लाग्यो सु मृतक जान । रुदन करत छूट्यो ऋषिध्यान। सुतसों कह्यो कहा भयो तोहिं । कहि न सुनावत निज दुख मोहिं ॥ शृंगीऋषि सव कहि समुझायो । नृप भुजंग सो ग्रीवा नायो ॥ यह अपराध वडो उन कीनो । तक्षकडसन शाप मैं दीनो॥ऋषिकह्यो वहुत वुरो तुम कीनो । जो यह शाप नृपतिको दीनो ॥ तुव शरापते मरिहै सोई । यह अपराध मोहिं सव होई ॥ सुखसों सोवत राज याहि सव । दुख पैहैं सो सकल प्रजा अब ॥ ताकी रक्षा हरिजू करी। हरि अवज्ञा तुम अनुसरी॥इहां राजा मनमें पछताई । मैं यह कियों वडोअन्याई॥ जाके हृदय वुद्धि यह आवै । ताको फल सो भलो न पावै ॥ ऋषि शिपको भेज्यो समझाई। नृपसों कह तुम ऐसे जाई ॥ मम सुत शाप दियो या भाई । सप्तम दिनतोहितक्षकखाई ॥ शृंगी-ऋषि यह किय विन जाने । होत कहा अवके पछताने ॥ ताते तुम उपाव सो करो । जाते भव सागरको तरो ॥ नृप सुनि लाग्यो करन विचार। सप्तम दिन मरिवो निर्धार॥ यज्ञदानकरिसुर-पुर जैये । तहां जाइके सुख वहु लहिये ॥ वहुरि कह्यो सुरपुर कछु नाहिं । पुण्य क्षीण तिहि ठौर गिराहिं॥ ताते सुत कलत्र सव त्यग । गहों एक हरिपद अनुराग॥वहुरि कह्यो अव हो कहा त्याग। खोयो जन्म विषय सुख लाग ॥ सूर न हरिपदसों चित लायो। इत उत देखत जन्म गँवायो ॥ ॥ १६९ ॥वैराग्य उपदेश परीक्षित मन प्रति । धनाश्री ॥इत उत देखत जन्म गयो।या माया झूठीके लालच दुहुँ दृग अंध भयो ॥ जन्म कष्ट में पाय दुखित भये अति दुख प्राण सह्यो । वे त्रिभुवनपति विसरिगए तुहिसुमिरतक्यों न रह्यो ॥श्रीभागवतसुनो नहिं श्रवणनि वीचहिभटक मुयो । सूरदास कहि सव जग पूज्यो युगयुग भक्तजियो ॥१७०॥ राग सारंग ॥ जन्म सिरानो अटके अटके । राज काज सुत पितुकी डोरी विन विवेक फिरयो भटके॥ कठिन जु ग्रंथि परी मायाकी तोरी जात न झटके । ना हरिभजन न संत समागम रहे वीचहीलटके ॥ ज्यों वहु कला काछ दिखरावै लोभ न छूटत नटके । सूरदास शोभा क्यों पावै पिय विहीन धन मटके॥ ॥ १७१ ॥ जन्म सिरानो ऐसे ऐसे । कै घर घर भरमत यदुपति विन कै सोवत कै वैसे ॥ कै कहुँ खान पान रसनादिक कै कहुँ वाद अनैसे । कै कहुं रंक कहूं ईश्वरता नट वाजीगर जैसे ॥ चेत्यो नहीं गयो टारि अवसर मीन विना जल जैसे । यह गति भई सूरकी ऐसी श्याम मिलैं धौं कैसे ॥ १७२॥ राग देवगंधार ॥ विरथाजन्मलियो संसार । करी न कवहूं भक्ति हरिकी मारिजननी भारि॥यज्ञजपतप नाहिंकीनो अल्पमति विस्तारि । प्रगट ब्रह्म दुरयो नहीं तू देखि नैन पसारि ॥प्रवल अविद्या ठग्यो सव जग जन्म जूवा हारि।सूर हरिको सुयश गावहु जाहि मिटि भव भारि ॥ १७३॥ राग सोरठ ॥ काया हरिके काम न आई । भाव भक्ति जहँ हरियश सुनियत तहां जात अलसाई । लोभातुर ह्वै काम मनोरथ तहां सुनत उठि धाई ॥ चरण कमल

सुंदर जहँ हरिकी क्योंहू न जात नवाई ॥जब लगि श्याम अंग नहिं परसत अंध हिज्यों भरमाई। सूरदास भगवत भजन तजि विषय परम विष खाई ॥ राग धनाश्री ॥ १७४ ॥सबै दिन गए विषयके हेत । तीनोंपन ऐसेही बीत केश भये शिर श्वेत ॥ आंखिनि अंध श्रवण नहिं सुनियतथाके चरण समेत । गंगाजल तजि पियत कूपजल हरितजि पूजत प्रेत ॥ रामनामविन क्योंछूटोगेचंद ग्रहे ज्यों केत । सूरदास कछु खर्च न लागत रामनाम मुख लेत ॥ १७५ ॥ राग सारंग ॥जोतू राम नाम चित धरतो । अबको जन्म आगलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतो॥ यमको त्रासमबै मिटिजातो भक्त नाम तेरो परतो। तंदुल घृत सँवारि श्यामको संत परोसो करतो॥ होतो नफा साधुकी संगति मूल गांठ नहिंटरतो।सूरदास बैकुंठ पथमें कोउ न फेंट पकरतो ॥ १७६ ॥ रागमलार॥ दोमें एकौतो न भई।ना हरि भजे न गृह सुख पावे वृथा विहाइ गई॥ ठानीहुतीऔर कछु मनमें औरे आनि ठई । अविगत गति कछु समुझि परत नहिं जो कछु करत दई॥सुत सनेह तिय सकल कुटुंब मिलि निशि दिन होत खई । पदनखचंद चकोरविमुखमन खात अँगारमई॥विषय विकार दवानल उपजी मोह बयार बई ।भ्रमतभ्रमत बहुते दुख पायो अजहुं न टेव गई॥ कहा होत अबके पछताने होनी शिर बितई । सूरदास सेये न कृपानिधिजो सुख सकलमई ॥१७७॥ रागसारंग ॥ यह सब मेरियै कुमति । अपनेही अभिमान दोष दुख पावत हौं मैं अति ॥ जैसे केहरि उझक कूपजल देखे आप परत । कूप परचो पुनि मर्म न जान्यो भई आय सुइ गत ॥ ज्यों गज फटिक शिला में देखत दशनन जाइ अरत । जो तू सूर सुखहि चाहतहै तौ क्यों विषय परत ॥ १७८ ॥ राग केदारा ॥झूठहि लगि जन्म गवायो । भूल्यो कहां स्वप्नके सुखको हरिसों चित न लगायो । कबहुंक बैठ्यो रहसि रहसिके ढोटा गोद खिलायो । कबहुंक फूल सभामें बैठ्यो मूछनि ताव दिवायो ॥टेढी चाल पाग शिर टेढी टेढे टेढे धायो। सूरदास प्रभु क्यों नहिं चेतत जब लगि काल न आयो ॥ १७९ ॥राग केदारा ॥ जगमें जीवतहीको नातो । मनबिछुरेतनु छार होइगो कोउ न बात पुछातो ॥ मैं मेरी कबहू नहिं कीजे कीजे पंच सुहातो । विषयअसक्त रहत निशि बासर सुख सीरो दुख तातो ॥साचझूठकरि मायाजोरीआपुन रूखो खातो।सूरदास कछु थिर नहिं रहई जो आयो सो जातो ॥ १८०॥ राग धनाश्री ॥ कहा लाइ तैं हरिसों तोरी। हरिसों तोरि कौनसों जोरी ॥ शिरपर धरि न चलैगोकोऊ अनेकजतनकरि माया जोरी।भज पाट सिंहासन बैठे नील पदम हू सों कहे थोरी॥मैं मेरीकरि जन्मगँवावत जबलगि नाहिं परत यम डोरी । धन जोबन अभिमान अल्प जल कहे कूर आपुनी बोरी ॥ हस्तीदेखि बहुतमन गर्वित ता मूरखकी मति है थोरी । सूरदासभगवतभजन बिनु चलेखेलिफागुनकी होरी ॥१८१॥ विचारतही लागे दिन जान । सजल देह कागज ते कोमल किहि विधि राखे प्रान॥ योग न यज्ञ ध्यान नहिं सेवा संत संग नहिं ज्ञान । जिह्वास्वाद इंद्रियन कारन आयु घटत दिनमान॥ और उपाय नहीरे बौरे सुनि तू यह दे कान । सूरदास अबहोत बिगूचन भजिले शारंगपान॥१८२॥ अब मैं जानी देह बुढानी । शीश पाउँ धरकह्यो न मानततनकी दशासिरानी ॥ आनकहत आनै कहिआवत नाक नैन बहै पानी । मिटगइ चमक दमक अँगअँगकी दृष्टि रु मति ज्ञहिरानी॥ नारी गारी विन नहिं बोले पूत करै कलकानी।घरमें आदर कादरकोसो खीझत रैन बिहानी॥ नाहिं रही कछु सुधि तन मनकी भई है बात पुरानी। सूरदास अब होत बिगूचन भजिले शारंगपानी ॥ १८३ ॥ चित्त बुद्धि को सम्वाद । राग देवगंधार ॥ चकई री चलि चरण सरोवर

जहां न प्रेम वियोग। जहँ भ्रम निशा होत नहिं कबहूं वह सायर सुख जोग॥ जहां सनकसे मीन हंस शिव मुनिजन नख रवि प्रभा प्रकाश। प्रफुलित कमल निमिप नहिं शशि डर गुंजत निगम सुवास॥ जिहि सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत अमृत रस पीजे। सो सर छांडि कुबुद्धि विहंगम इहां कहा रहि कीजे॥लछमी सहित होत नित क्रीडा शोभित सूरजदास।अब न सुहात विपय रस छीलर वा समुद्रकी आस॥ १८४ ॥राग देवगंधार॥ चलि सखि तिहि सरोवर जाहिं। जिहि सरोवर कमल कमला रविविना विकसाहिं॥ हंसउज्वलपंख निर्मल अंक मलि मलि न्हाहिं।मुक्ति मुक्ता अंबुकेफल तिन्हें चुनिचुनिखाहिं॥अतिहिमगनमहा मधुररस रसन मध्य समाहिं। पद्मवास सुगंध शीतल लेत पाप नशाहिं॥ सदा प्रफुलित रहैं जल विनु निमिप नहिं कुम्हलाहिं।देखि नीर जो छिलछिलो अति समुझि कछु मन माहिं॥ सघन गुंजत बैठि उनपर भौंर हैं विरमाहिं। सूर क्यों नहिं चलो उडि तहां बहुरि उडिवोनाहिं॥१८५॥ राग रामकली॥ भृंगी री भजि चरण कमल पद जहँ नहिंनिशिको त्रास।जहां विधि भानु समान प्रभानख सो वारिज सुखरास॥ जिहिं किंजल्क भक्ति नव लक्षण याम ज्ञान रस एक। निगम सनक शुक नारद शारद मुनिजन भृंग अनेक॥ शिव विरंचि खंजन मनरंजन छिन छिन करत प्रवेश। अखिल कोश तहांवसत सुकृत जनप्रगटत श्याम दिनेश॥ सुनु मधुकरी भरम तजि निर्भय राजिव रविकीआश॥ सूरजप्रेमसिंधुमें प्रफुलिततहां चलि करैंनिवास॥१८६॥मन बुद्धिको संवाद। राग देवगंधार॥सुवा चलि ता वनको रस पीजे। जा वन राम नाम अमृतरस श्रवणपात्र भरि लीजे॥ को तेरो पुत्र पिता तू काको घरनीघर को तेरो। काम कराल श्वानकोभोजन तू कहै मेरो मेरो॥ वडी वाराणसि मुक्तिक्षेत्रहै चलि तोको दिखराऊं।सूरदास साधुनकीसंगति वडोभाग्यजो पाऊं॥१८७॥अथ मन प्रबोध॥रे मन सुमिरि हरि हरि हरि हरि। शतयज्ञनाहीं नाम सम परतीति करि करि करि॥हरिनाम हिरणाकुश विसारचो उठ्यो वरि वरि वरि।प्रह्लाद हित जिन असुर मारचो ताहि डरि डरि डरि॥गज गृध्र गणिका व्याधकेअघ गयेगरि गरिगरि।चरणअंबुजबुद्धिभाजनलेहुभरिभरि भरि॥द्रौपदीकीलाज कारण दावपरि परि परि। पंडुसुतके विघ्नजेते गए टरि टरि टरि॥कर्णदुर्योधन दुशासनशकुनि अरिअरिअरि। सुतहित अजामिल नाम लीनोगयो तरि तरि तरि॥चारि फलके दानिहैं प्रभु रहे फरि फरि फरि। सूर श्रीगोपालके गुण हृदय धरि धरि धरि॥१८८॥राग केदारा॥ करि मन नंदनंदन ध्यान। सेइ चरण सरोज शीतल तजि विपय रस पान॥ जानु जंघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड। काछनी कटि पीत पट द्युति कमल केसर खंड॥ जनुमराल प्रवाल छीना किंकिणी कल राव। नाभि ह्रद रोमावली अलि चारु सहज सुभाव॥ कंठ मुक्तामाल मलयज उर बनी वनमाल। सुरसरी शशि तीर मानो लताश्याम तमाल॥बाहु पाणि सरोज पल्लव धरे मृदु मुख वेणु। अति विराजति वदन विधुपर सुरभि मंडित रेणु॥ अधर दसन कपोलनासा परम सुंदर नैन। चलत कुंडल गंड मंडल मनो निरतन मैन॥ कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखंड। मदन धनु मनो शर संधाने देखि घनकोदंड॥ सूरश्रीगोपालकी छवि दृष्टि भरि भरि लेहिं। प्राणपतिकी निरखि शोभा पलक परन न देहीं॥ १८९॥ भजि मन नंदनंदन चरण। परम पंकज अति मनोहर सकल सुखके करण॥सनक शंकरध्यान ध्यावत निगम अवरन वरन। शेप शारद ऋपि सुनारद संत चिंतत चरण॥पदपराग प्रताप दुर्लभ रमाली हित करण। परशि गंगा भई पावन तिहूं पुर घर घरन॥ चित्त चिंतन करत जग अघ हरत

तारन तरन। गये तरि ले नाम केते पतित हरि पुर धरन॥जासु पदरज परसि गौतम नारि गति उद्धरण। तासु महिमा प्रगट केवट धोइ पग सिर धरण॥ सोइ पद मकरंद पावन अरु नही सग वरण। सूर भजि चरणारविंदनि मिटै जनमन मरण॥ १९० ॥ रे मन समुझि सोच विचारि। भक्ति विनु भगवंत दुर्लभ कहत निगम पुकारि॥ढारि पासा साधु संगति करि रसना सारि। दांव अबके पर्‍यो पूरो कुमतिपिछलीहारि॥गरिस मतह सुनि-अठारह चोर पांचोमारि डारिदे तू तीन काने चतुर चौक निहारि॥ काम क्रोध मद लोभ मोह्यो पर्‍यो नागनि नारि। सूर श्रीगोविंद भजन विनु चले दोउ कर झारि॥ १९१ ॥ ॥ राग सारंग ॥होमन रामनामको गाहक।चौरासीलक्ष जिया योनिमें भटकत फिरत अनाहक॥ भक्तन हाट बैठि तू स्थिर ह्वै हरि नग निर्मललेहि। कामक्रोध मद लोभ मोह तू सकल दलाली देहि॥ करि हियाव सो सो जलादि यह हरि के पुर लेजाहि।बाट बाट कहुं अटक होइ नहिंसब कोउ देहि निवाहि॥ और वनजमें नाही लाहाहोत मूलमें हानि। सूरस्वामिकोसौदो साचोकहो हमारो मानि॥ १९२ ॥रागकेदारा॥ रे मन रामसों करि हेतु। हरिभजन की वारि कारले उबरे तेरो खेत॥ मन सुआ तनु पिंजरा तिहिमाहि राख्यो चेत। काल फिरत बिलारतन धरिअव धरी तुम लेत॥ सकल विषय विकार तजि तू तरै सायर सेत। सूर भजि गोपाल गुणको गुरु बताए देत॥ १९३ ॥राग कान्हरा॥ मन वच क्रम मन गोविंद सुधि करि। शुचि रुचि सहज समाधि साजि शठ दीनबधु करुणामय उर धरि॥ मिथ्यावाद विवाद छांडिदे काम क्रोध मद लोभै परिहरि।चरण प्रताप आनि उरअंतरऔरसकल सुखया सुखतर हरि॥वेदन कह्यो सुमृतिहु भाष्यो पावन पतित नाम निज नरहरि। जाको सुयश सुनतअरुगावत पापवृन्द जैहैं भजिभर-हरि॥परमउदार श्याम घन सुंदर सुखदायक सतन हितकर हरि। दीनदयाल गोपाल गोपपति गावत गुण आवत ढिग ढर हरि॥ अति भयभीत निरखि भवसागर घन ज्यों घेरि रह्यो घट घर हरि।जव यमजाल पसारपरैगोहरिविनु कौन करैगो धरहरि॥ अजहु चेत मूढ चहुँदिशिते कालअग्नि उपजत झुकि झरहरि। सूर काल बलिव्याल ग्रसतहै श्रीपति शरन परत क्यो न फर-हरि॥ १९४ ॥ तिहारो कृष्ण कहत कहा जात।विछुरे मिलन वहुरि कव ह्वैहै ज्यों तरुवरकेपात। शीत पित्त कफ कठ विरोधे रसना टूटे वात। प्राण लए जम जाइ मूढमति देखत जननी तात॥ छिन इक माहि कोटि युग वीतत नरकी केतक वात।इह जग प्रीति सुवा सेमर ज्यो चाखत ही उडजात॥ जवलगि यमको फट परचो नहि चरणन चित्त लगात॥ कहत सूर वृथा यह देही इतो कहा इतरात॥१९५॥दिन दश लेहु गोविंद गाइ। छिन न चेतत चरण अंबुज वाद जीवन जाइ॥ दूरि जवलो जरा रोग रु चलत इंद्री भाइ। आपुनो कल्याणकरिलेमानुषीतनु पाइ॥ रूप यौवन सकल मिथ्या देखि जिन गरवाइ।ऐसेही अभिमान आलसकाल ग्रसिहै आइ॥ कृपसनि कन जाइरे नर जरत भवन वुझाइ।सूर हरिको भजन करिले जन्म मरण नशाइ॥ १९६ ॥ ॥राग धनाश्री ॥मन तोसों कतिकहीसमुझाई। नदनंदनके चरण कमलभजि तजि पखड चतुराई॥ सुख सपति दारा सुत हय गय झूठ सवे समुदाई।क्षणभगुर ए सवे श्यामविनु अंत नाहिं संग जाई। जन्मत मरत वहुत युग वीते अजहूं लाज न आई।सूरदास भगवंतभजनविनु जैहै जन्म गँवाई॥ ॥ १९७ ॥राग मलार॥अव मन मान धौं राम दुहाई।मन वच क्रम हरिनाम हृदय धरि जो गुरु वेद वताई।महाकष्ट दश मास गर्भवसि अधोमुख शीशरहाई। इतनी कठिन सही तू निकस्यो अजहू न तू समुझाई॥ मिटिगए राग द्वेष सव तिहिके जिन हरि प्रीति लगाई।सूरदास प्रभु

नामकी महिमा पतित परमगति पाई ॥ १९८ ॥ राग आसावरी ॥ बौरे मन रहन अटल कर जाना।धन दारा सुत बंधु कुटुंब कुल निरखि निरखि बौराना॥जीवनजन्म अल्प सपनोसोसमुझि देखि मन माही। बादर छांह धूम धौराहर जैसे थिर न रहाही ॥ जब लगि डोलत बोलत चितवत धन दाराहै तेरे।निकसत हंस प्रेत कहि भजिहैं कोउ न आवै नेरे॥मूरखमुग्धअज्ञानमूढ-मति नाही कोऊ तेरो।जो कोऊ तेरो हितकारी सो कहे कढू सवेरो॥घरी एक सज्जन कुटुंब मिलि बैठे रुदन कराही। जैसे काग कागके मूये कां कां कहि उड़ि जाही॥ कृमि पावक तेरो तन भखिहैं समुझि देखि मनमाही। दीनदयालु सूर हरि भजिले यह औसर फिरि नाही ॥१९९॥ ॥रागगौरी॥ ते दिन बिसरि गये इहां आये।अति उन्मत्त मोह मद छाक्यो फिरत केश बगराए॥ जिन दिवसनिते जननि जठरमें रहत बहुत दुख पाए । अति संकटमें भरत भटालौ मलमें मूँड गडाए ॥ बुधि विवेक बल हीन छीन तन सबही हाथ पराए। तिहि न करतचित अधमअजहूँलौ जीवत जाके ज्याए॥कहिधौं साथ कौन है तेरे खान पान पहुँचाए।सूर सुमृग ज्योंबाणसहतनित विषय व्याधके गाए॥२००॥रागधनाश्री ॥रे मन निपट निलज्जअनीति।जियतकी कहि को चलावै मरत विषया प्रीति॥श्वान कुब्जक पंगु कानो श्रवण पुच्छ विहीन।भगन भाजन कंठकृमिशिरका-मिनीआधीन॥निकट आयुध धरे बधक करत तीक्षण धार।अजानायक मग्नक्रीडतचढतबारबार॥ देह छिन छिन होत छीनी दृष्टि देखत लोग।सूरस्वामीसो विमुख ए सतीकेसेभोग२०१॥रागगौरी॥ बौरे मन समुझि समुझि कछु चेत।इतनो जन्म अकारथ खोयो श्यामचिकुर भएश्वेत॥तबलगि सेवा कर निश्चय करि जबलगि हरवा खेत। सूरजदास भरम जिन भूलो करि विघनासे हेत२०२॥ राग धनाश्री ॥ रे शठ बिन गोविंद सुख नाही।तेरो दुःख दूर करिबेको ऋद्धि सिद्धि फिरि जाही॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनि जन उनकी गति अवगाही। जगतपिता जगदीश शरण बिन सुख तीनो पुर नाही ॥ और सकल मैं देखे झूठे बादरकी सी छाही।सूरदास भगवत भजन बिन दुख कबहू नहिं जाही ॥२०३ ॥ राग कान्हरा ॥ मन तोसो कोटिक बार कही। समुझ न चरण गहत गोविंदके उर अघ शूल सही ॥ सुमिरन ध्यान कथा हरि जूकी यह एकौ न भई । लोभी लंपट विषयनसो हित यह तेरी निबही॥ छांडि कनकमणि रत्न अमोलक कांचकी किरच गही। ऐसो तू है चतुर विवेकी पय तजि पियत मही॥ ब्रह्मादिक रुद्रादिक रवि शशि देखे सुर सबही। सूरदास भगवत भजन बिनु सुख तिहूँ लोक नही ॥२०४ ॥राग परज ॥ मना रे माधव सो कर प्रीति। काम क्रोध मद लोभ मोह तू छाँडि सबै विपरीति ॥ भौरा भोगी बन भ्रमै, मोद न मानै ताप। सब कुसुमनि मिलि रस करै, कमल बँधावै आप ॥ सुनि परमित पिय प्रेमकी, चातक चितवत पारि। घन आशा सब दुख सहै; अत न याचै वारि ॥ देखो करनी कमलकी, कीनो जलसो हेत। प्राण तज्यो प्रेम नतज्यो, सूख्यो सरहि समेत॥ दीपक पीर न जानई, पावक परत पतंग। तनुतो तिहि ज्वाला जरचो,चित न भयो रस भंग॥मीन वियोग न सहिसकै, नीर न पूछै बात। देखि जु तू ताकी गतिहि,रति न घटै तन जात॥ प्रीति परेवाकी गनो, चाहन चढत अकाश। तह चढि तीय जु देखिये, परत छाड उरश्वास॥ सुमर सनेह कुरंगकी, श्रवनन राच्यो राग। धरि न सकत पग पछमनो, सर सनमुख उर लाग॥ देखि जरनि जड नारि की, जरत प्रेतके संग। चिता न चित फीको भयो, रची जु पियके रंग॥ लोक वेद बरजत सबै, नयनन देखत त्रास।चोर न जिय चोरी तजै; सरबस सहै बिनास॥ सब रसको रस प्रेमहै,विषयी खेलै

सार । तन मन धन यौवन खिमैं, तऊ न मानै हार॥ तैं जु रत्न पायो भलो जान्योसाधुसमाज । प्रेम कथा अनुदिन सुनी, तउ न उपजी लाज ॥ सदा सवाती आपनो,जियकोजीवन प्रान।सोतू विसरचो सहजही, हरि ईश्वर भगवान ॥ वेद पुराण स्मृति सबै,सुर नर सेवत जाहि । महामूढ अज्ञानमति,क्यो न सँभारत ताहि॥खग मृग मीनपतग लौ, मैं शोधे सन ठौर।जल थलजीवजिते तिते, कहौ कहां लगि और॥ प्रभु पूरण पावन सखा,प्राणनहूंको नाथ ।परमदयालु कृपालुप्रभु, जीवन जाके हाथ ॥ गर्भवास अति त्रासमें,जहां न एको अग । सुनि शठ तेरो प्राणपति,तहान छांड्यो सग ॥ दिना राति पोषत रहै,ज्यो तबोलीपान।वा दुखतेतोहिंकाढके, लेदीनो पयपान ॥ जिन जड़ते चेतन कियो, रचि गुण तत्त्व विधान। चरण चिकुर कर नख दिए,नैननासिका कान॥अशन वसन बहुविध दिये,औसरऔसरआनि। मात पिता भय्या मिले,नईरुचइपहिचान॥ सजन कुटुंब परिजन बढे, सुत दारा धन धाम । महामूढ विषयी भयो,चित आकर्ष्यो काम ॥ खान पान परिधान रस, यौवन गयो वितीत । ज्यो विट परि परतीय वश, भोर भये भयभीत॥ जैसे सुखहीमनवढ्यो,तैसे वढ्योअनग। धूम वढ्यो लोचन खस्यो,सखा न रह्यो सग ॥ जम जान्यो सब जग सुन्यो,वाढ्यो अयश अपार।नीच न काहू तन कियो,जब दूतनि काढ्योमार॥ कह जानो कहवां मुवो, ऐसे कुमति कुमीच । हरिसो हेतु विसारिकै,सुख चाहतहै नीच ॥ जो पै जिय लज्जा नही,कहा कहौं सौ बार।एकहु अंक न हरि भजे, रे शठ सूर गँवार ॥२०५॥

रागकल्याण ॥ धोखेही धोखे डहकायो।समुझि न परी विषयरसगीध्यो हरिहीरा घरमांहगँवायो॥ ज्यो कुरग जल देखि अवनिको प्यास न गई चहू दिशि धायो । जन्म जन्म बहु कर्म किये हैं तिनमें आपुन आपु बँधायो॥ज्यो शुक सेमर सेव आश लगि निशि वासर हठि चित्त लगायो। रीतो परचो जबै फल चाख्यो उडि गयो तूल तांवरो आयो ॥ ज्यों कपि डोरी बांध बाजिगर कनकनको चौहटे नचायो । सूरदास भगवतभजनविनु काल व्याललै आप डसायो ॥ २०६ ॥

राग धनाश्री ॥ जन्म गँवायो ऊआवाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो विलोकत छांई ॥ धन जोवन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई । लालच लुब्ध श्वान जूठनि ज्यो सोऊ हाथ न आई ॥ग्च कांच सुख लागि मूढमति कचन राशि गँवाई ॥सूरदास प्रभु छांड़ि सुधारस विषय परम विष खाई॥२०७॥ भक्ति कब करिहो जन्म सिरानो । बालापनमें खेलत खोयो तरुणापे गरवानो ॥बहुत प्रपच करे मायाको तऊ न पेट अघानो। जतन जतन करि माया जोरी लै गये रक न रानो॥ सुत नित वनिता मोह लगायो झूठे भरम भुलानो । लोभ मोहमेचेत्योनाहीसुपने ज्यो डहकानो ॥ वृद्ध भये कफ कठ निरोध्यो शिर धुनि धुनि पछतानो । सूरदास भगवत भजन विनु यमके हाथ विकानो ॥२०८॥मन रामनाम सुमिरन विनु बाद जनम खोयो।रचक सुख कारणते अतकाल विगोयो॥साधु सगति भक्ति विनातन अकारथ जाई।जानिज्योहाथझारि चलेछटकाई॥सुत दारा देह गेह सपति सुखदाई ।इनमें कछु नाहिं तेरी कालअवधि आई॥काम क्रोध लोभमोह मनमेंवृजोयो। गोविंदगुणचितविसारिकौननींदसोयो ॥सूरदासशुचिविचारिभ्रम भूल्यो अंधा।रामनामले तजिकरि और सकल धधा॥२०९॥राग कल्याण॥भक्तिविनुवैलविरानेहोहो। पाँउ चारि शिरशृग गुगमुख तन कैसे गुणगैहो॥चारि पहर दिन चरतफिरत वनतऊनपेटअघैहो टूटे कध सुफूटी नाकनि कौलों धौ भुस खैहो॥लादत जोतत लकुट बाजिहै तब कहँसूडदुरैहो। शीत घाम घन विपति बहुत विधि भारके मरिजैहो ॥ हरि सतनको कह्यो न मानत कियो

आपुनो पैहो । सूरदास भगवन भजन विनु मिथ्या जन्म गँवैहो ॥ २१० ॥राग सारंग॥ छांडि मन हरि विमुखनको संग। जिनके संग कुबुद्धि उपजतिहै परत भजनमें भंग ॥ कहा होत पयपान कराये विष नहिं तजत भुजंग । कागहि कहा कपूर चुगाये श्वान न्हवाये गंग ॥ खरको कहा अरगजालेपन मर्कट भूषण अंग । गजको कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै खहि छंग ॥ पाहन पतित बाँस नहि वेधत रीतो करत निखंग।सूरदास खल कारी कामरि चढत न दूजो रंग॥२११॥ राग सोरठ॥रे मन जन्म अकारथ खोइस। हरिकी भक्ति कबहुँ नहि कीनी उदर भरयो परिसोइस॥ निशि दिन रहत फिरत मुँह बांधे अहंकार कारे जन्म बिगोइस। गोड पसारि परचो दोउ नीके अबके किये कहा होइस ॥ काल यमनिसो आनि बनेहै देखि देखि मुख रोइस। सूरश्याम बिनु कौन छुडावै चले जाहु भइ पोइस॥ २१२॥ तबते गोविंद क्यो न सँभारे । भूमि परेते सोवन लाग्यो महाकठिन दुख भारे ॥ अपने पिंड पोपिवे कारण कोटि सहस जिय मारे । इन पापनते क्योंहु न उबरो दामनगीर तिहारे ॥ आप लोभ लालच के कारण कह्यु न पाप तिहारे । सूरदास यम कंठ गहेते निकसत प्राण दुखारे ॥ २१३ ॥राग धनाश्री ॥ रे मन मूरख जन्म गँवायो । कारि अभिमान विपय रस गीध्यो श्याम शरण नहि आयो ॥ यह संसार सुवा सेंवर ज्यो सुंदर देखिलुभायो।चाखनलाग्यो रुई उडिगई हाथ कछूनहिंआयो॥ कहा होत अबके पछताये पहिले पाप कमायो । कहत सूर भगवंत भजन बिनु शिर धुनि धुनि पछतायो ॥ २१४ ॥ राग मारू ॥ औसर हारयो रे तै हारयो। मानुपजन्म पाइ नर बौरे हरिको भजन विसारयो॥रुधिरबुंदते साजि कियो तन सुंदर रूप सवांरयो । जठरअग्निअंतर उरध मुख जिन दश मास उबारयो ॥ जनते जन्म लियो जगभीतर तबते प्रभु प्रतिपारयो । अध अचेत मूढ मतवारे सो प्रभु क्यो न सँभारयो । पहिरि पितांबर करि आडंबर यह तनु ठाट शृंगारयो । काम क्रोध मद लोभ त्रिया रति बहु विधि काज बिगारयो ॥मरन बिसारि जिवन थिर जान्यो बहु उद्यम जिय धारयो।सुत दाराको मोह अजयविप हरि अमृतफल डारयो॥ झूँठ सांच करि माया जोरी रचि पचि भवन उसारयो।कालअवधि पूरण भई जादिन बिनहू त्यागि सिधारयो ॥प्रेत प्रेत तेरो नाम परयो जब जेवरि बांधि निकारयो । जा सुतके हितविमुख गोविंदते प्रथमहिं तिन मुख जारयो ॥ भाईबंधु कुटुंब सहोदर सब मिलि यहै विचारयो । जैसे कर्म लहो फल तैसे तिनुका तोरि उचारयो ॥ सतगुरुको उपदेश हृदय धरि जिन भ्रम सकल निवारयो । हरि भज बिलंब छांडि सूरज प्रभु ऊंचे टेरि पुकारयो ॥ २१५ ॥ राग बिलावल ॥याविधि राजा करि बिचार। राज साज सबहीको डार । जीरण पटकु दीन तनु धारि । चल्यो सुरसरी तीर उधारि॥ पुत्र कलत्र देखि सब रोवे । राजा तिनके ओर न जोवे॥ राजा चलत चले सब लोग । दुखित भये सब नृपति-वियोग॥नृपति सुरसरीकेतट आये । कियो स्नान मृत्तिका लगाये॥करि संकल्प अन्नजल त्याग्यो। केवल हरिपदसो अनुराग्यो ॥ अत्रि वसिष्ठादिक तहँ आये । नारदादि मुनि बहुरि सिधाये॥ कुश आसन दै तिनहिं बिठायो । पुनि कह्यो तिनके पद शिर नायो ॥ धन्य भाग तुम दर्शन पायो । मम उधार कारण तुम आयो ॥ तुमदेखत हरि सुमरन होई । और प्रसंग चले नहिं कोई ॥ आज्ञा होइ करों अब सोई। जाते मोरि शुद्धगति होई ॥ कोउ कहै तीरथ सेवन करो। कोउ कहै दान यज्ञ बिस्तरो ॥ काहू कहै मंत्र जप करना । काहू कछु काहू कछु बरना ॥ राजा कह्यो सप्त दिन माहीं । इति इहिको मोहिं संशत नाहीं ॥ इहि अंतर शुकदेव तहां आये । राजा

देखि तुरत उठि धाये ॥करि दंडवत कुशासन दीनो । पुनि सन्मान ऋषिन सब कीनो॥शुकको रूप कह्यो नहिं जाई । शुक हिय रह्यो कृष्णरस छाई ॥ शुककी महिमा शुकही जानै । सूरदास कहि कहा बखानै ॥ २१६ ॥ हरिके जनकी अति ठकुराई । महाराज ऋषिराज राजहूं देखत रहे रजाई॥निर्णय देश राज्य करि ताको लोगन मन उत्साह।काम क्रोध मद लोभ मोह ए भये चोरते साह ॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन तापर बैठे भूप । हरियश विमल छत्रशिरऊपर राजत प्रेम अनूप ॥ हरिपदपंकज पियो प्रेमरस ताहीके रँगराते । मंत्री ज्ञान न औसर पावै कहत बात सकुचाते॥अर्थ काम दोऊ रहें द्वारे धर्ममोक्ष शिर नावै।बैठि विवेक विचित्र पौरियासमय न कबहूं पावै॥अष्ट महासिधि द्वारे ठाढीं करजोरे डरलीने।छरीदार वैराग विनोदी झरकि बाहरे कीने॥माया काल कछू नहिं व्यापै यह रसरीति जु जानी।सूरदास यह सकल समग्री गुरुप्रताप पहिचानी॥ २१७ ॥ शुक नृपओर कृपा करि देख्यो । धन्य भाग्य तिन अपनो लेख्यो ॥विनती करी चरण शिर नाई ।सत दिवस भय मेरी आई॥तऊ कुटुंबको मोह न जात। पुनि धनलोभ आइलपटात॥जानि बूझि मैंहोतअजान।उपजत नाहीं मनसों ज्ञान॥अरु तनु छूटत बहु दुख होई।ताते सोचरहे नहिंकोई॥बिना त्वचा सुमिरनक्योंहोई।आज्ञाहोइ करौंअबसोई॥शुक कह्यो तन धन कुटुंबविहाई।हरिपदभजौन और उपाई॥आयु भग्नघटजलसी छीजे।अहनिशहारि हरि सुमिरन कीजे ॥ नृप खट्वांग पूर्व इक भयो। सुतौ द्वैघरीमें तरिगयो॥तेरी सप्त दिवसहैं आई। कहीं भागवत सुन चित लाई॥सुनि हरि कथा धरौ हरि ध्यान।जग सब जानो स्वप्न समान॥ या विधि जो हरिपद उर धरिहैं ॥निस्संदेह सूर तब तरिहैं ॥ २१८ ॥ हरि यश कथा सुनौ चित लाई।जो खट्वांग तरयो गुण गाई ॥ नृप खट्वांग भयो भुवमाही । ताके सम द्वितिया जग नाही ॥ इक दिन इन्द्र तासु घर आयो। राजा उठिकरि शीश नवायो॥धन मम गृह धन भाग्य हमारो। जो तुम चरण कृपा करि धारो॥अब मोको जो आज्ञा होई । आयसु मान करों सब सोई॥ इन्द्र कह्यो मम करो सहाई । असुरनसो भइ मोहिं लराई ॥ इन्द्रपुरी खट्वांग सिधाये । नाम सुनत सो सकल पराये॥ सुरपतिसो नृप आज्ञा मांगी। उन कह्यो लेहु कछू वर मांगी ॥ नृपति कह्यो कहो मेरी आय । वर लेहों पुनि शीश चढ़ाय॥ दोइ मुहूरति आयु बताई।नृप बोल्यो तब शीश नवाई ॥ तुरत देहु मोहि घर पहुँचाय ।तरो जाय तह हरिगुण गाय॥ एक मुहूरतमें फिर आयो। एक मुहूरत हरिगुण गायो ॥ हरिगुण गाय परमपद लह्यो। सूर नृपति शुनि धीरजगह्यो॥२१९॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृतप्रथमः स्कंधः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर।

द्वितीयस्कन्ध।

राग विलावल ॥हरि हरि हरि हरिसुमिरनकरौ।हरिचरणारविंद उर धरौ॥शुकदेव हरिचरणन चित लाई।राजासों वोल्यो या भाई॥तुम कह्योसप्तदिवस ममआय ।कहों हरिकथा सुन चित लाय॥ चिंता छांडिभजो यदुराई।सर तरो हरिके गुण गाई ॥ १ ॥ राग सारंग॥जो सुख होत गोपालहि गाये । सो न होत जप तपके कीने कोटिक तीरथ न्हाये ॥ दिये लेत नहिं चारि पदारथ चरण कमल चित लाये । तीन लोक तृण सम करि लेखत नंदनँदन उर आये ॥ वंशीवट वृन्दावन यमुना तजि वैकुंठको जाये । सूरदास हरिको सुमिरनकरि वहुरि न भव चलिआये ॥ २ ॥ राग केदार ॥सोइ रसना जो हरिगुण गावै।नैननकी छवि यहै चतुरता ज्यों मकरन्द मुकुन्दहि ध्यावै॥ निर्मल चिततौ सोई सांचो कृष्णविना जिय और न भावै।श्रवणनिकी जु यहै अधिकाई सुनि रसकथा सुधारस प्यावै ॥ करतेई जो श्यामहिं सेवै चरणनि चलि वृन्दवन जावै । सूरदास जैये वलि ताके जो हरिजूसे प्रीति वढावै ॥ ३ ॥ रागसारंग ॥ जवते रसना राम कह्यो । मानो धर्म साधि सव वैठ्यो पढिवेमें धौं कहा रह्यो ॥ प्रगट प्रताप ज्ञान गुरु गमते दधिमथि घृतलै तज्यो मह्यो । सारको सार सकल सुखको सुख हनूमान शिव जानि कह्यो ॥ नामप्रतीत भई जा जनकी लै आनन्द दुख दूरिदह्यो । सूरदास धनधन वे प्राणी जो हरिको व्रत लै निवह्यो॥४ ॥ अनन्यभक्तिमिदमा राग सारंग ॥ गोविंदसो पति पाइ कहा मन अनत लगावै।गोपाल भजन विनु सुख नहीं जो चहुँ दिश धावै ॥ पतिको व्रत जो धरै त्रिया सो शोभा पावै । आन पुरुपको नाम लेत तिय पतिहि लजावै ॥ गणिकातेउपजैसुपूतकौनकोकहावै॥वसतसुरसरीतीर मंदमति कूप खनावै ॥जैसेश्वान कुलालके पाछे उठि धावै।आन देव हरि तजि भजैसो जन्मगँवावै ॥ फलकी आशा चित्त धारि जो वृक्ष वढावै । महामूढ सो मूल तजि शाखा जल नावै ॥ सहजभजै नंदलालको सो सवशुचि पावै। सूरदास हरिनाम लिये दुख निकट न आवै ॥ ५ ॥ राग कान्हरा ॥ जाको मन लाग्यो नँदलालहिं ताहि और नहिं भावै हो । ज्यों गूँगो गुरखाइअधिकरस सुख सवाद न वतावै हो॥ जैसे सरिता मिलै सिंधुको वहुरि प्रवाह न आवै हो।ऐसे सुर कमललोचनते चित नहिं अनत डुलावै हो ॥६॥ राग विहाग ॥ जो मन कवहुँक हरिको जांचे । आन प्रसंग उपासना छांडे मन वच क्रम अपने उर सांचे ॥ निशिदिन श्याम सुमिरि यश गावैकल्पन मेटि प्रेमरसपावै । यह व्रतधरै लोकमें विचरै सम करि गनै महामणिकाचै ॥ शीतउष्ण सुख दुख नहिं मानै हानि भये कछु शोच न राचै । जाइ समाइ सूरवानिधिमें वहुरि न उलटि जगतमें नाचै ॥ ७ ॥ राग सारंग॥कह्यो

शुक श्रीभागवतविचारि । हरिकीभक्ति विरद हे युगयुगआनधर्मदिनचारि॥ चिंता तजौपरीक्षि राजा सुन सुख सारिग हमारि । कमलनयनकी लीलागावतकटतअनेक विकारि ॥ सतयुगसत त्रेता तप कीनो द्वापर पूजा चारि । सूर भजन कलि केवल कीजे लज्जा कानि निवारि ॥ ८ ॥ राग बिलावल ॥ गोविन्दभजन करोइहिवारा। शंकर पार्वतीउपदेशत तारकमंत्र लिख्योश्रुतिद्वारा ॥ अश्वमेधयज्ञ जो कीजेगयाबनारसअरुकेदारा । रामनाम सरितउनपूजेजो तनु गारोजाइहिवारा॥ सहसबार जो वेनी परसौ चन्द्रायण सौ वारा॥सूरदास भगवंतभजनबिनु यमकेदूत खरेहैं द्वारा॥९॥ ॥राग केदारा॥ हैहरिनामको आधार । और इहि कलिकाल नाहीं रह्यो विधि व्यवहार॥नारदादि शुकादि मुनि मिलि कियो बहुत विचार । सकल श्रुति दधि मथित काढ्यो इतोई घृतसार॥दशौ दिशते कर्म रोक्यो मीनको ज्यों जार । सूर हरिको सुयश गावत जाहि मिट भव भार॥ १० ॥ अथ नाममहिमा॥रागबिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सबकोई । हरि हरि सुमिरत सब सुख होई॥ हरिसमान द्वितीयनहिंकोई । हरिचरणनि राखो चितगोई ॥ श्रुतिस्मृतिसबदेखोजोई ।हरिसुमिरत होई सो होई ॥ हरिहरिहरिसुमिरो सबकोई । बिनहरिसुमिरनमुक्ति न होई ॥ कोटि उपाय करे जो कोई । हरिहरिहरि सुमिरो सबकोई ॥ शत्रुमित्र हरि गिनत न दोई । जो सुमिरै ताकी गति होई ॥ हरिहरिहरि सुमिरो सबकोई । हरिके गुण गावत सब कोई ॥ राव रंक हरि गिनत न दोई । जो गावै ताकी गति होई ॥ हरि हरि हरि सुमिरयो जिन जहां । हरि तिहिं दरशन दीनो तहां ॥ हरि बिनु सुख नहिं इहां न वहां । हरिहरिहरि सुमिरो जहँ तहां ॥ हरिहरिहरि सुमिरो दिन रात । नातर जन्म अकारथ जात ॥ सौ बातनिकी एके बात । सूर सुमिरि हरि हरि दिन रात ॥ ११ ॥जन्म जन्म जब जब जिहिंजिहिंयुग जहां जहां जन जाइ। तहां तहां हरिचरणकमलरति जो दृढ होइ रहाइ॥ श्रवण सुयशसारंगनादविधि चातकविधि मुख नाम ।नैन चकोर संत संतति शशि करि अर्चन अभिराम॥ सुमति स्वरूप सचे सरवा लौ उर अंम्बुज अनुराग । नितप्रति अलि जिमि गुंज मनोहर आवत प्रेम पराग ॥ औरो सकल सुकृत श्रीपति हित तन मन रहत सुप्रीतिनाक निरै सुख दुख न सूर प्रभु जिहिके भजन प्रतीति१२॥ अथ हरिविमुख निंदा। राग सारंग ॥ अचभो इन लोगनिको आवे । छांडे श्याम अमीरस फलको माया विष फल भावे॥ निंदत मूढ मलय चन्दनको राख अंग लपटावे । मानसरोवरछांडिहंस-तट काग सरोवर न्हावे ॥ पगतर जरत न जाने मूरख घर तजि घूर बुझावे। चौरासी लख योनि स्वांग धरि भ्रमि भ्रमि यमहिं हसावे ॥मृगतृष्णा आचारयुक्ति जल तासँग मन ललचावे। कहत जु सूरदास संतनि मिलि हरियश काहे न गावे ॥ १३ ॥ भजन बिनु कूकर सूकर जैसो॥ जैसे घर बिलावके मूसा रहत विषय वश तैसो ॥ बकी बकुला अरु गीध गीधनी आइ जन्म लियो वैसो । उनहूंके यह सुत दारा हे इन्हें भेद कहो कैसो॥ जीव मारिके उदर भरत हे तिनके लेखे ऐसो सूरदास भगवंतभजनबिनु जियत ऊंट खर जैसो ॥ १४ ॥ भजनबिनुजीवत जैसे प्रेत। मलिन मंदमति डोलत घर घर उदर भरनके हेत ॥ मुख कटु वचन नित्य प्रति निन्दा सगुन सुयश सुखलेत । कबहूं पाप करे पावत धन गांठि धूर तहां देत ॥ ब्राह्मण गुरु संतजन सज्जन जात न कबहुं निकेत । सेवा नहिं भगवंत चरणकी भवन नीलको खेत ॥ कथा नहीं गुण गीत सुयश हरि मांगत देव अचेत । ताकी कहा कहो सुनि सूरज बूडत कुटुंब समेत ॥ १५ ॥ जिहि तनु हरिभजवो न कियो । सो तनु शूकरश्वानमीन ज्यों इहिसुख कहा जियो ॥ जो जगदीश

ईश सबहूको ताहि न चित्त दियो। प्रगट जानि यदुनाथ बिसारे आशामद ज्यु पियो॥चारिपदा रथको प्रभु दाता तिन न मिलो हियो। सूरदास रसना वश अपने टेरि न नाम लियो ॥ १६ ॥ ॥ अथ सत्संग महिमा॥ राग केदारा॥जादिन संत पाहुने आवत। तीरथ कोटि सनान करे फल जै सो दरशन पावत ॥ नेह नयो दिन दिन प्रति उनको चरण कमल चित लावत। मन वच कर्म और नहिं जानन सुमिरतऔ सुमिरावत॥मिथ्यावाद उपाधिरहित ह्वै विमल विमल यश गावत।वधन कर्म कठिन जे पहिले सोऊ काटि वहावत ॥सगति रहै साधुकी अनुदिन भव दुख दूरि नशावत। सूरदास या जन्म मरण ते तुरत परमगति पावत ॥१७ ॥ अथ भक्ति साधन ॥राग धनाश्री ॥ हरि रसतो कबहु जाइ लहिये। गये सोच आये नहि आनंद ऐसो मारग गहिये ॥ कोमल वचनदीनता सबसो सदा अनदित रहिये। वाद विवाद हर्ष आतुरता इतो दड जियसहिये॥ऐसीजो आवे या मनमे यह सुख कहलों कहिये। अष्ट सिद्धि नवनिद्धि सूरप्रभु पहुँचे जोकछु चहिये ॥ १८॥ राग धनाश्री ॥ जौलों मन कामना न छूटे। तो कहा योग यज्ञ व्रत कीने बिनुकन तुसको कूटे॥ कहा सनान किये तीरथके अंग भस्म जटजूटे। कहा पुराणन पढ ज्यु अठारह ऊर्ध्व धूमके घूटे ॥ जग सोनाकी सकल वडाई इहिते कछू न खूटे। करनी और कहे कछु औरै मन दशहूदिश लूटे॥काम क्रोध मद लोभ शत्रु हैं जो इतनो सुनि छूटे। सूरदास तबहीं तम नाशे ज्ञान अग्नि झर फूटे ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ भक्तिपथको जो अनुसरे। सुत कलत्र सो हित परिहरै॥अशन वसन की चित्त न करे। विश्वभर सम जगको भरै॥ पशु जाके द्वारेपर होई। ताकोपोपत अहनिशि सोई॥ जो प्रभुके शरणागत आवे। ताको प्रभु क्योकरि बिसरावे ॥ मात उदरमे रस पहुँचावत। बहुरि रुधिरते क्षीर बनावत॥अशन काज प्रभु बनफल करे। तृषाहेतु जल झरना झरै॥ पात्र स्थान हाथ हरि दीने। वसन काज वल्कल प्रभु कीने॥शय्या पृथ्वी करि विस्तार। गृह गिरिकंदर करे अपार ॥ ताते चिंता सकल तयाग। सूर श्यामपद करि अनुराग ॥२०॥ भक्ति पंथको जो अनुसरे। सो अष्टांग योगको करे ॥ यम नियमासन प्राणायाम। करि अभ्यास होइ निष्काम॥प्रत्याहार धारना ध्यान। करे ज्यु छांडि वासना आन॥क्रम क्रम करिकै करे समाधि। सूरश्याम भजि मिटे उपाधि ॥२१॥राग धनाश्री॥ सबै दिन एकैसे नहिं जात। सुमिरन ध्यान कियोकरि हरिको जब लगि तन कुशलात॥ कबहूं कमला चपला पाके टेढे टेढे जात। कबहुँक मग मग धूरि टटोरत भोजन को बिलखात॥ या देहीके गर्व बावरो तदपि फिरत इतरात।वाद विवाद सबै दिन बीते खेलतही अरु खात॥हौं वड हौं बड बहुत कहावत सूधे कहत न बात। योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भये अकुलात॥बालापन खेलतही खोयोतरुणापन अलसात। सूरदास औसरके बीतेरहिहो पुनि पछितात ॥ २२ ॥ राग सारग ॥ गर्व गोविंदहि भावत नाहिं। कैसी करी हिरण्यकशिपुसो प्रगट होइ छिन माहिं ॥ जग जानी करतूत कसकी नरकासुर मारचो पलमाहिं। ब्रह्मा इन्द्रादिक पछताने गर्व धारि मनमाहिं॥ यौवन रूप राज धन धरती जान जलदकी छांहि।सूरदास हरिभजो गर्व तजि विमुख अगतिको जाय॥२३॥ राग कान्हरा ॥ विषया जाते हर्ष्यो गात। ऐसे अध जानि तै मूरख जो परत्रिय लपटात॥रगजिरहे सन कहे न मानत करिकरि जतन उडात। परे अचानक त्यों रसलपट तनु तजि यमपुरजात॥ यह तो सुनी व्यासके मुखतें परदारा दुखदात ॥ रुधिर मेद मल मूत्र कठिन कुच उदर गंध गंधात। तन धन यौवन ताहित खोवत नरककी पाछे बात ॥ जो नर भले चहत तो सो तजि

सर प्रभु गुण गात ॥ २४ ॥ अथ आत्मज्ञान ॥राग नट ॥ जौलौं मन स्वरूप नहिं सूझत। तौलौं मृगमद नाभि बिसारे फिरत सकल वन बूझत॥अपनोही मुख मलिन मंदमति देखत दर्पणमाहिं। ता कालिमा मेटवे कारण पचत पसारत छाहिं ॥ तेल तूल पावक पुट भरि धरि वनै न बिना प्रकाशत। कहत बनाइ दीपकी बतियाँ कैसे धौं तम नाशत ॥ सूरदास यह गति आये बिनु सब दिन गने अलेखे। कहा जाने दिनकरकी महिमा अंध नयन बिनु देखे ॥ २५ ॥ अपुनपो आपुनही बिसरयो।जैसे श्वान काँचमंदिरमें भ्रमिभ्रमि भूसिमरयो॥हरिसौरभ मृगनाभि वसतहै द्रुम तृण सूंघि मरयो।ज्यों सपनेमें रंक भूप भयो तस करि अरि पकरयो॥ज्यों केहरि प्रतिबिंब देखिके आपुन कूप परयो।ऐसे गज लखि फटिक शिला में दशननि जाइ अरयो ॥ मर्कट मुष्टि छाडि नहिं दीनी घर घर द्वार फिरयो । सूरदास नलनीको सुवटा कहि कौने जकरयो॥ २६॥ अथ विराटरूप वर्णन। राग केदारा॥ नैननि निरखि श्याम स्वरूप । रह्यो घट घट व्यापि सोई ज्योतिरूप अनूप ॥ चरण सप्त पताल जाके शीश है आकाश। सूर चंद्र नक्षत्र पावक सर्व तासु प्रकाश॥ २७॥ अथ आरती ॥ हरिजकी आरती बनी। अति विचित्र रचना रचि राखी परति न गिरा गनी॥कच्छप अध आसन अनूप अति डांडी शेष फनी । मही सराव सप्तसागर घृत बाती शैल घनी ॥रवि शशि ज्योति जगत परिपूरण हरत तिमिर रजनी।उडत फूल उडगन नभ अंतर अंजन घटा घनी ॥ नारदादि सनकादि प्रजापति सुर नर असुर अनी । काल कर्म गुण ओर अंत कछु प्रभुइच्छा रचनी ॥ यह प्रताप दीप सु निरंतर लोक सकल भजनी।जाके उदित नचत नाना विधि गति अपनी अपनी ॥ सूरदास सब प्रकृति धातुमय अति विचित्र सजनी ॥२८॥ अथ नृपविचार। राग गूजरी ॥ श्रीशुकके सुनि वचन नृप लाग्यो करन विचार । झूठे नाते जगतके सुत कलत्र परिवार॥चलत न काऊ संग चले मोरि गेह मुख नार।आवत गाढे काम हरि देखो सूर विचार ॥ २९ राग गजरी॥ हरि बिनु कोऊ काम न आयो। यह माया झूठी प्रपंच लगि रतनसो जन्म गँवायो॥कंचन कलश विचित्र चित्र करि रचि पचि भवन बनायो ।तामेते तिहि छिनहीं काढ्यो पलभरि रहन न पायो॥हौं तेरेही संग जरौंगी यह कहितिया धूति धन खायो। चलत रही चित चोरि मोरि मुख एक न पग पहुँचायो॥बोलि बोलि सब बोलि मित्रजन लीनो सो जिहि भायो।परयो काज अंतकी बिरिया तिनिही आनि बँधायो ॥आशा करि करि जननी जायो कोटिक लाड लडायो ।तोरिलियो कटिहूको डोरा तापर बदन जरायो ॥ पतित उधारन गणिका तारन सो मैं शठ बिसरायो। लियो न नाम नेकहूँ धोखे सूरदास पछतायो॥ ३० ॥ राग देवगंधार ॥सकल तजि भजि मन चरणमुरारि।श्रुति स्मृति अरु मुनिजन भाषत मेहूँ कहत पुकारि॥जैसे स्वप्ने सोइ देखियत तैसे यह संसारि । जात बिलै ह्वै छिनक मात्रमें उघरत नैन किवारि ॥ वारंवार कहत में तोसो जन्म न जूवा हारि। पाछे भई सु भई सूरजन अजहूं समुझि सभारि॥ ३१ ॥ राग गूजरी ॥ अजहू सावधान क्यो न होई। माया विषम भुजगनिको विष उतरयो नाहिन तोई॥कृष्ण सुमन जियावन मूरी जिन जग मरतजिवायो। वारवार निकट श्रवण-निहिं गुरु गारुडी सुनायो॥भौतिक देह जीय अभिमानी देखत ही दुख लायो। कोउ कोउ उतरयो साधु संगति जिन राम जीवन पायो ॥जाग्यो मोह मयूर प्रति छूटे सुयश गीतके गाये। सूर मिटै अज्ञान मूर्छा ज्ञान मूलके खाये ॥ ३२॥ नृपसों वचन शुकदेव प्रति ॥ नमो नमो करुणा निधान। चितवत कृपाकटाक्ष तुम्हारी मिटिगयो तम अज्ञान॥मोहनिशाको लेश रह्यो नहिं भयो विवेक

विहान । आतमरूप सकल घट दरश्यो उदय कियो रवि ज्ञान ॥ मैं मेरी अब रही न मेरे छुट्यो देह अभिमान । भावे परो आजुही यह तनु भावे रहो अमान ॥ मेरेजियअब यहैलालसा लीला श्रीभगवान।श्रवण करौंनिशि बासरहितसों सूर तुम्हारी आन ॥ ३३ ॥ अथ शुकदेववचन रागसारंग ॥ कह्यो शुक सुनो परीक्षितराव । ब्रह्म अगोचर मन वाणीते अगम अनंत प्रभाव ॥ भक्तन हित अवतार धारि जो करि लीला संसार । कहौं ताहि जो सुनै चित्त दै सूर तरै सो पार ॥ ३४ ॥ अथ नारदब्रह्मा संवाद रागबिलावल ॥ नारद ब्रह्माको शिरनाई । कह्यो सुनो त्रिभुवन पतिराई ॥सकल सृष्टि यह तुमते होई । तुम सम द्रितिया और न कोई ॥ तुम हौ धरत कौनके ध्यान । यह तुम मोसों कहो बखान॥ कह्यो कर्ता हर्ता भगवान । सदा करत मैं तिनको ध्यान ॥ नारदसों कह्यो विधि या भाई । सूर कह्यो त्योंहीं शुक गाई ॥ ३५ ॥ अथ चतुर्विंशति अवतारवर्णन ॥ राग धनाश्री॥ जो हरि करै सो होई कर्ता नाम हरी। ज्यों दर्पण प्रतिबिंब त्यों सब सृष्टि करी ॥ आदि निरंजन निराकार कोउ हुतो न दूसर । रचो सृष्टि विस्तार भई इच्छा इक औसर ॥ त्रिगुण तत्त्वते महातत्त्व महातत्त्वते अहंकार।मन इंद्रिय शब्दादि पंची ताते किये विस्तार ॥ शब्दादिकते पंचभूत सुन्दर प्रगटाये।पुनि सबको रचि अंड आपमें आप समाये॥तीनलोकनिजदेहमें राखेकरिविस्तार।आदि पुरुष सोई भयो जो प्रभु अगम अपार ॥ नाभिकमलते आदिपुरुष मोको प्रगटायो। खोजत युग गए बीति नालको अंत न पायो ॥ तिन मोसों आज्ञा करी रचि सब सृष्टि उपाई । स्थावर जंगम सुर असुर रचे सबै मैं आई ॥ मच्छ कच्छ बाराह बहुरि नरसिंह रूप धरि । वामन बहुरो परशुराम पुनि राम रूप करि ॥ वासुदेव सोई भयो बुध भयो पुनि सोई । कल्की होइहै और न द्रितिया कोई ॥ ए दश है अवतार कहों पुनि और चतुर्दश।भक्तबछल भगवान धरे वपु भक्तनिके वश॥ अज अविनाशी अमर प्रभु जन्मै मरै न सोई । नटवर कला करत सकल बूझै विरला कोई॥सनकादिक पुनि व्यास बहुरि भए हंसरूपहरि।पुनिनारायण ऋषभदेव बहुरयो धन्वंतरि ॥ नारद दत्तात्रेय हरि यज्ञ पुरुष वपु धारि ॥ कपिल मोहनी पृथु हयग्रीव सुध्रुव उद्धारि ॥ भृमिरेणु कोउ गनै और नक्षत्रन समुझावै । कह्यो चहै अवतार अंत सोऊ नहिं पावै ॥ सूर कहो क्यों कहि सकै जन्म कर्म अवतार । कहे कछुक गुरुकृपाते श्रीभागवत अनुसार ॥ ३६ ॥ब्रह्माउत्पत्ति चतुःश्लोक गीत राग बिलावल॥ ब्रह्मा यों नारदसों कह्यो । जब मैं नाभिकमलते भयो ॥ खोजत नाल कितो युग गयो । तउ मैं कछू मरम ना लह्यो ॥ भइ अकाशवाणी तिहिं बार । तू ए चारि श्लोक विचार ॥ इनैं विचारत ह्वैहै ज्ञान । ऐसी भाँति कह्यो भगवान ॥ ब्रह्मा जो नारदसों कही । व्यास सोइ नारदसों लही ॥व्यास कही मोसों विस्तार । भयो भागवत या परकार॥ सोई मै अब तोसों भाखौं । तेरे हृदय न संशयराखौं॥ मूल भागवतके एइ चार । सूर भली विधि इन्हें विचार ॥ ३७ ॥ अथचतुःश्लोकी श्रीमुखवाक्य । राग कान्हरा ॥ पहिले होहिं हों तब एक । अमल अकल अज भेद विवर्जित सुनि विधि विमल विवेक ॥ सो हौं एक अनेक भांति करि शोभित नाना भेष। ता पाछे इन गुणनि गाएते हौं रहिहौं अवशेष॥ झूठोहै सांची सी लागति मम माया सो जानि ।रवि शशि राहु संयोग विना ज्योंलीजत है मन मानि । ज्यों जग फटिक मध्य न्यारो बसि पंच प्रपंच विभूत ॥ ऐसे मैं सबहुनते न्यारो मणि ग्रंथित ज्यों सूत ॥ पहिले ज्ञान विज्ञान द्रितिय पद तृतिय भक्तिको भाव ।सूरदास सोई समष्टि करि व्यष्टि दृष्टि मनलाव ॥ ३८ ॥

इति श्रीकविवरसूरदासकृते श्रीमद्भागवते सूरसागरे द्वितीयःस्कन्धःसमाप्तः ॥

अथ कवि सूरदास कृत-

श्री सूरसागर ।

तृतीय स्कन्ध ।

अथ शुकवचन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ । हरिचरणारविंद उरधरौ ॥ शुकदेव हरिचरणन चितलाई । राजासो बोल्यो या भाई ॥ कहौ हरिकथा सुन चित लाई। सूर तरौहरिके गुण गाई ॥ १ ॥ उद्धव विदुर संवाद । कृष्णज्ञान संदेश मैत्रेय निकट बताबन राग बिलावल ॥ जब हरि भए अतर्ध्यान। कहि उद्धवसो तत्त्वज्ञान॥ कह्यो मैत्रेयसो समुझाई। यह तुम विदुरहि कहियोजाई॥ वद्रिकाश्रम दोऊ मिलि आए । तीरथ करत गए अकुलाए ॥ उद्धव विदुर तहां मिलि गए । दोऊ कृष्ण प्रेम वश भए ॥ उद्धव कहो हरि कह्यो जो ज्ञान । कहिहैं तुम्हैं मैत्रेय आन ॥ यह कहि उद्धव आगे चले । विदुर मैत्रेय बहुरो मिले॥ जो कछु हरिसो सुनियो ज्ञान। कह्यो मैत्रेय ताहि वखान॥ सोई मोहिं दियो व्यास सुनाई । कहो सो सूर सुनो चितलाई ॥२॥ अथ विदुर जन्म वर्णन ॥ विदुर सुधर्मराई अवतार । ज्यों भयो कहों सुनो चितधार ॥ मांडव्य ऋषि जब शूली दयो । तब सो काठ हरचो ह्वैगयो ॥ मांडव्य धर्मराजपै आयो । क्रोधवंत यह वचन सुनायो ॥ कौन पाप मैं ऐसो कियो । जाते मोक्रू शूली दियो ॥ धर्मराज कह सुन ऋषिराई । क्षमा करौ तौ देउँ सुनाई ॥ वालअवस्थामें तुम धाई । उडत भँभीरी पकरी जाई ॥ ताहि शूलपर शूली दियो । ताको वदलो तुमसो लियो ॥ ऋषि कहै वाल दशा अज्ञान । भयो पाप मोतें विन जान ॥ वालापनको लगत न पाप । ताते देउँ मैं तुम्हैं शराप ॥ दासीसुत तू ह्वै है जाई । सूर विदुर भयऊ सो आई ॥ ३ ॥ अथ सनकादिकावतार ॥ ब्रह्मा ब्रह्मरूप उर धारि । मनसो प्रगट कियो सुत चारि ॥ सनक सनदन सनतकुमार । बहुरि सनातन नाम ए चार ॥ ए चारों जब ब्रह्मा किये । हरिको ध्यान धरचो तिहिं हिये ॥ ब्रह्मा कह्यो सृष्टि विस्तारो । उन यह वचन हृदय नहिं धारो ॥ कह्यो यहै हम तुमसो चहै । पांच बरसके नितही रहै ॥ ब्रह्मासो यह वर तिहि पाई । हरि चरणन चित राख्यो लाई ॥ शुकदेव कह्यो जैसे प्रकार । सूर कहै ताही अनुसार ॥४ ॥ अथ रुद्र उत्पत्ति वर्णन । सनकादिकनि कह्यो नहिं मान्यो । ब्रह्मा क्रोध बहुत मन आन्यो ॥ तब इक पुरुष भौंहते भयो। होत समय तिहि रोवन ठयो ॥ ताको नाम रुद्र विधि राख्यो । ताको सृष्टि करन को भाख्यो ॥ तिन बहु सृष्टि तामसी करी । सो तामसकरि मन अनुसरी । ब्रह्मा मन सो भली न भाई। सूर सृष्टि तब अवर उपाई ॥५॥ अथ सप्तऋषि चारमनु उत्पत्तिवर्णन॥ ब्रह्मा सुमिरन करि अभिराम। प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम॥ भृगुमरीचिअंगिरावसिष्ठ। अत्रिपुलहपुनि भयोपुलस्त्य॥

पुनि दक्षादि प्रजापति भये । स्वयंभु आदि चार मनु जये ॥ इनते उपजी सृष्टि अपार । सूर कहां लौं कर विस्तार ॥ ६ ॥ अथ सुर असुर उत्पत्ति वर्णन ॥ राग विलावल ॥ ब्रह्मा ऋषि मरीचि निर्मायो । ऋषि मरीचि कश्यप उपजायो ॥सुर अरु असुर कश्यपके पुत्र। भ्रात विमात आपमें शत्रु॥ सुर हरिभक्त असुर हरिद्रोही । सुरअति क्षमी असुर अति कोही॥उनमें नित उठि होइ लराई । करें सुरनकी कृष्ण सहाई ॥ तिनहित जो जो किये अवतार । कहीं सूर भागवतअनुसार॥ अथ वाराह रूप वर्णन । राग विलावल ॥ब्रह्माते स्वयंभू मनु भयो॥ तासों सृष्टि करनको कह्यो ॥तिन ब्रह्मासों कहो शिर नाई । सृष्टि करौंसु रहे किहि भाई ॥ ब्रह्मा हरिपद ध्यान लगायो ॥ तब हरि वपु वराह धारे आयो॥ह्वै बराह पृथ्वी जब ल्यायो।सूरदास शुक त्यौंहीं गायो॥८॥ राग धनाश्री ॥ हरि गुण कथा अपार पार नहिं पाइये। हरि सेवत सुख होइ हरी गुण गाइये ॥ ब्रह्मपुत्र सनकादि गये बैकुंठ एक दिन। द्वारपाल जय विजय हुते वरज्यो तिहिंको पुन ॥ शाप दियो तब क्रोध ह्वै असुर होउ संसार । हरि दर्शनको जात क्यों रोक्यो बिना विचार ॥ हरि तिनसों कह्यो आइ भली शिक्षा तुम दीनी। वरज्यौ आवत तुम्हैं असुरबुद्धी इन कीनी ॥ तिन्हैं कह्यो संसारमें असुर होउ अब जाइ ।तृतियहि जन्म विरुद्ध करि मोसों मिलिहौआइ॥कश्यपकी दिति नारि गर्भ ताके दोउ आए । तिनके तेज प्रताप देवतनि बहु दुख पाए ॥ गर्भ माहिं शत वर्ष रहि प्रगट भये पुनिआइ । तिन दोउनको देखिकै सुर सब गए डराइ ॥ हिरण्याक्ष इक भयो हिरण्यकशिपु भयोदूजो। तिनके बलको इंद्र वरुण कोऊ नहिं पूजो॥ हिरण्याक्ष तबपृथ्वीको लेराख्यो पाताल । ब्रह्मा विनती करि कह्यो दीनबंधु गोपाल ॥ तुम बिन दुतिया और कौन जो असुर सँहारे । तुम बिन करुणासिंधु कौन पृथ्वी उद्धारे ॥ तब हरि धरि वाराह वपु ल्याए पृथ्वी उठाइ। हिण्याक्ष लेकर गदा तुरतहि पहुँच्यो आइ ॥ असुर कोप ह्वै कह्यो बहुत तुम असुर संहारे । अब लेहौं वह दांव छांडिहौं नहिं बिन मारे ॥ यह कहिकै मारी गदा हरिजू ताहि सँभारि । गदायुद्ध तासों कियो असुर न मानी हारि ॥तब ब्रह्मा करि विनय कह्यो हरि ताहि सँहारो। तुम तो लीला करत सुरन मन परो धकारो ॥ मार्यो ताहि विचारि हरि सुर मुनि भयो हुलास।सूरदासके प्रभु बहुरि कियो बैकुंठ निवास ॥ ९॥ अथ कपिलदेवमुनि अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ ॥ हरिकोध्यान सदा हियधरौ॥ज्यौं भयो कपिलदेव अवतार। कहौं सो कथा सुनो चित धार ॥ कर्दम पुत्रहेतु तप कियो । तासु नारिहूं इक व्रत लियो ॥ हरिसो पुत्र हमारे होई। और जगत सुख हू पुनि होई ॥ नारायण तिनको वर दियो । मोसो औरन कोई बियो ॥मैं लेहौं तुम गृह अवतार। तप तजि करो भोग संसार॥ दुहुँ तब तीरथमाहिं न्हवायो । सुंदर रूप दुहूं जन पायो॥भोगसमग्री जुरी अपार।विचरन लागे सुख संसार ॥ तिनके कपिलदेव सुत भये । परम भाग्य मानी तिहिलये ॥ १० ॥ अथ कर्दममंगराग बिलावल ॥ कर्दम कह्यो तिन्हैं शिरनाई ॥ आज्ञाहोइकरौं तप जाई ॥ अभयअछेदरूपममजान। जो सबघट है एक समान॥ मिथ्या तनुको मोहविसारि ।जाइरह्यो भावै गृहदारि॥ करतइंद्रियनि चेतन जोई ॥ मम स्वरूप जानोतुमसोई ॥तनुअभिमान जाको नशिजाई।सोनररहैसदा सुख पाई ॥ जब ममरूप देह तजि जाई । तबसब इंद्री शक्ति नशाई ॥ ताको जानि मम्र हे रहे। देहअभिमान ताहि नहिं दहै॥ और जो ऐसी जाने नाहीं । रहै सो सदा कालभयमाहीं॥यह सुनि कर्दम वनहिं सिधाए। वहां जाय हरिपद चित लाए ॥ हरिस्वरूप सब घट पुनि जान्यो।ऊँख-

माहिं ज्यों रस है मान्यो ॥ जोयो तिन आतम रस सार । ऐसी विधि जान्यो निरधार ॥ यह लखि गहि हरिपद अनुराग । मिथ्या तनुको कीनो त्याग ॥ तनुहि त्यागिके हरि पद पायो । नृप सुनि हरिस्वरूप उर लायो ॥ ११ ॥ अथ देवहूती माताको प्रश्न कपिलमुनिसों ॥ इहां कपिल-सों माता कहो । प्रभु मेरो अज्ञान तुम दहो ॥ आतमज्ञान देहु समुझाई । जाते जन्म मरण दुख जाई ॥कह्यो कपिल कहों तुमसोज्ञान । मुक्तहोइ नर ताको जान ॥मुक्त विविधके लक्षण केहौं। तेरे सब संदेहे दहौं ॥मम सो रूप जो सब घट जान। मग्न रहे तजि उद्यम आन ॥अरु सुखदुख कछु मन नहिं ल्यावे ।माता सो नरमुक्त कहावे ॥ और जु मेरो रूप न जाने ।कुटुंब हेत नित उद्यम ठाने ॥जाको इहिविधि जन्म सिराई। सो नर मरिके नरक सिधाई ॥ ज्ञानीसंगति उपजे ज्ञान । अज्ञानीसँग हो अज्ञान ॥ ताते साधु संग नित करना । जाते मिटे जन्म अरु मरना ॥ स्थावर जंगममें मोहिं जाने । दयाशील सबसों हित ठाने ॥ सत संतोष दृढ करे समाध । माता ताको कहिये साध ॥ काम क्रोध लोभै परिहरै । द्वंद्व रहित उद्यम नहिं करे ॥ ऐसे लक्षण हैं जिहि माही । माता तिनकों साधु कहाही ॥ जाको काम क्रोध नित व्यापे । अरु पुनि लोभ सदा संतापे ॥ ताहि असाधु कहत कवि सोई । साधु भेष धरि साधु न होई ॥ संत सदा हरिके गुण गावें।सुनि सुनि लोग भक्तिको पावें ॥भक्ति पाइ पावें हरिलोक ।तिन्हें न व्यापे हर्ष न शोक ॥ देवहूति कह भक्ति सु कहिये ।जाते हरिपुर बासा लहिये ॥१२॥भक्तिप्रश्न॥ अरु सु भक्ति कीजे किहि भाई । सोऊ मोको देहु बताई ॥ माता भक्ति चारि परकार । सत रजतम गुण सुधासार॥भक्ति एक पुनि बहुविधि होई।ज्यों जल रंग मिलि रँगसुहोई॥भक्ति सात्त्विकी चाहत मुक्त । रजोगुणी धनकुटुंबअनुरक्त ॥तमोगुणी चाहै या भाई।ममवैरी क्योंही मरजाई ॥ सुधाभक्ति मोक्षको चाहे । मुक्तिहुको नाहीं अवगाहे॥मन क्रम वच मम सेवा करै। मनते भव आशा परिहरै॥ऐसो भक्त सदा मोहिं प्यारो। इकछिन जाते रहौं न न्यारो ॥ ताके मैं हित मम हित सोई।जा सम मेरो और न कोई॥त्रिविधभक्ति मेरे हे जोई॥जो माँगे तिहिदेहुँ मैं सोई ॥ भक्त अनन्य कछू नहिं माँगे । ताते मोहिं सकुच अतिलागे ॥ ऐसो भक्तजानिहेजोई जाके शत्रु मित्र नहिं दोई॥हरिमाया सब जग संतापे । ताको माया मोह न व्यापे ॥ १३ ॥ हरिमायाप्रश्न ॥कपिल कहो हरिको निजरूप ॥ अरु पुनि माया कौन स्वरूप ॥ देवहूति जब याविधि कह्यो। कपिलदेव सुनि अतिसुख लह्यो ॥ कह्यो हरिके भय रवि शशि डरे । वायु वेग अतिशय नहिं करे ॥ अगिनि रहे जाके भय माही ।सो हरिमाया जा वश माही॥मायाको त्रिगु-णातम जानो । सत रज तम ताको गुण मानो ॥ तिन प्रथमै महत्तत्त्व उपायो।तातेअहंकार प्रग-टायो ॥ अहंकार कियो तीनप्रकार ।मनते ऋषिमनमान रु चार॥रजगुणते इंद्रिय विस्तारी। तम-गुणते तन्मात्रा सारी ॥ तिनते पांच तत्त्व प्रगटायो । इहि सबको इक खंड बनायो॥अंडसु जड़ चेतन नहिं होई । तब हरिपद माया मन पोई ॥ ऐसीविधिविनतीअनुसारी।महाराजबिनु शक्ति तुम्हारी॥ यह अंडा चेतननहि होई।करौकृपाहरि चेतन सोई॥तामें शक्तिआपुनीधारी। चक्षुरा-दिक इंद्री बिस्तारी॥चौदहलोक भये तामाहिं।ज्ञानी तिहि वैराट कहाहिं ॥ आदिपुरुष चैतन्य-को कहत।जो है तिहुं गुननते रहित ॥ जड स्वरूपसब माया जानो।ऐसो ज्ञान हृदयमें आनो॥ जबलगि है जियको अज्ञान । चेतनको सो सके न जान॥सुत कलत्रको अपनो माने । अरु-तिनसों ममत्व बहु ठाने ॥ जो कोइ सुख दुख सपने जोई । सत्य मानले तिनको सोई ॥ जब

जागे तव सत्त न मानै।ज्ञान भए त्योही जग जानै ॥ चेतन घट घट है याभाई । ज्यो घट घट रवि प्रभा लखाई ॥ घट उपजो बहुरो नशि जाई। रवि नित रहै एक ही भाई ॥ जा तनको है जन्म रु मरना । चेतन पुरुष अमर अज बरना ॥ ताको ऐसो जानैजोई।ताके तिनसो मोह न होई ॥ जबलौं ऐसो ज्ञान न होई ।वर्णधर्म को तजे न सोई ॥ सतनकी सगति नित करै । पापकर्म मनते परिहरै ॥ अरु भोजन सो इहि विधि करै ।आधा उदर अन्नसो भरै ॥ आधेमे जलवायु समावै। तव तिहि आलस कबहु न आवै ॥ और जु परालब्ध सो आवै । ताहीको सुखसो वरतावै ॥ बहुतेको उद्यम परिहरै । निर्भय ठौर बसेरो करै ॥ तीरथहू में जो भय होई । ताहूको तू परिहरै सोई ॥ बहुरो धरै हृदय महँ ध्यान । रूप चतुर्भुज श्याम सुजान ॥ प्रथमै चरण कमलको ध्यावै । तासु महातम मनमें ल्यावै ॥ गंगा परसि उनहिंको भई । शिव शिवता इनही सो लही॥लक्ष्मी इनको सदा पलोवै । वारवार प्रीतिको जोवै। जघनको कदली सम जानै । अथवा कनक थभ सम मानै ॥ उर अरु ग्रीव बहुरि हिय धारै।तापर कौस्तुभ मणिहि विचारै॥ भृगुलत्ता लक्ष्मी तहँ जानी।नाभि कमल चित धारै ध्यानी॥मुख मृदुहास देख सुख पावै। तासो प्रेम सहित मन लावै ॥ नैन कमल दलसे अनियारे । दरशत तिनै कटै दुख भारे ॥नासा कीर परम अति सुंदर । दरशत ताहि मिटै दुखद्वदर॥ कूप समान श्रवन दोउ जानैं । मुखको ध्यान इसी विधि ठानै ॥ केसर तिलक रेख अति सोहै । ताके पटतरको जग को है ॥ मृगमद बिदा तामें राजै । निरखत ताहि काम शत लाजै ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै । जो देखै ताको मन मोहै॥श्रवणनि कुडल परम मनोहर। नख शिख ध्यान धरै यो उर धर॥क्रम क्रम करि यह ध्यान बढावै ।मन कहुँ जाय फेरि तहँ आवै ॥ ऐसे करत मगन होइ सोई ॥ बहुरो ध्यान सहजही होई ॥ चितवत चलत न चितते टरै ॥सुत त्रिय धन की सुधि विसमरै ॥ तव आतम घट घट दरशावै । मग्न होइ तन मन विसरावै ॥ भूख प्यास ताके नहि व्यापै । सुख दुख तनिकौ नहिं सतापै ॥जीवनमुक्त रहै या भाई । ज्यो जल कमल अलिप्त रहाई॥१४ ॥ देवहूतीप्रश्न सुगम उपाय। राग बिलावल ॥देवहूति यह सुनि पुनि कह्यो । देव ममत्व ढेर मुहिं रह्यो ॥ कर्दममोह न मनतें जाई । ताते कहिये सुगम उपाई ॥ कपिल कह्यो तोहि भक्ति सुनाऊ।अरु ताको वेवरो समझाऊ॥ मेरी भक्ति चतुर विधि करै। सुने सुने ते सब निस्तरै ॥ जो कोउ दूरि चलनको करै ।क्रम क्रम करि डग डग पग धरै ॥ इकदिन सु वहां पहुचे जाई॥ त्यो मम भक्त मिलै मोहिं आई ॥ चलत पथ कोउ थाक्यो होई।कहै दूरि डरि मरिहै सोई ॥जो कोउ ताको निकट बतावै।धीरज धरि सु ठिकाने आवै॥तमोगुणी रिपु मरनो चाहै॥रजो गुणी धन कुटुंब अवगाहै॥भक्त सात्त्विकी सेवमत लखै तवै मूरति भगवत॥मुक्ति मनोरथ मनमे ल्यावै।ममप्रसादतेसोवहपावै।निर्गुण मुक्तिहुको नहिं चहै।मम दर्शनहीते सुखलहै॥ऐसो भक्त सु मुक्त कहावै॥सो बहुरचो चलिभवनहिं आवै॥क्रम क्रम ही करि सब गति होई । मेरो भक्त नष्ट नहि होई ॥ १५॥ हरिते विमुख होइ नर जोइ।मरिकै नरक परत है सोइ॥तहां जातना बहुविधि पावै।बहुरो चौरासीमे आवै॥चौरासी भ्रमि नरतन पावै। पुरुष-वीर्यसो निय उपजावै॥ मिल रज वीरज ऐसी होई। द्वितिय मास शिर धारै सोई ॥ तीजे मास हस्त पग होवै।मास चौथि कटि अंगुरी सोवै ।प्राणवायु पुनि आय समावै ॥ताको इत उत पवन चलावै । पचम मास हाड बलपावै।छठे मास इन्द्री प्रगटावै॥सप्तम चेतनता लहै सोई । अष्टमास सम्पूरण होई॥नीचेशिरअरु ऊचे पांई।जठर अग्निको व्यापै ताई॥कष्ट बहुत सो पावै जहां।पूर्वजन्म

सुधि आवे तहां॥तनम मास पुनि विनती करै।महाराज यह दुख मम टरै॥ह्यांते जो में बाहर परौं अहर्निश भक्ति तुम्हारी करौं॥ अरु मोपै प्रभु किरपा कीजे। भक्ति अनन्य आपुनी दीजै॥अरु यह ज्ञान न चितते टरै।बार बार यो विनती करै॥दशम मास पुनि बाहर आवै।तब यह ज्ञान सकल बिसरावै॥बालापन दुख बहुविधि पावै।जीभ विना कहि कहा सुनावै॥कबहू विष्टामें रह जाई। कबहू माखी लागे आई॥कबहू खुवां देई दुखभारी।तिनको सो नहिं सके निवारी॥पुनि जब षट वर्षको होई।इत उत खेलन चाहत सोई॥माता पिता निवारें जबहीं।मनमें दुख पावै सो तबहीं॥ माता पिता पुन तेहि जानै।यह उनसे तब नातो मानै॥बरसे दश व्यतीत जब होई।बहुरि किशोर होय पुनि सोई॥सुंदर नारी ताहि विवाहै।। अशन वसन बहुविधि सो चाहै॥ बिना भाग सो कहतेआनै।तब वह मनमें बहु दुख पावै॥पुनि लक्ष्मी हित उद्यम करै।अरु जब उद्यम खाली परै॥तब वह रहै बहुत दुख पाई॥कहँ लौं कहौं कह्यो नहिं जाई॥ बहुरो ताहि बुढापो आवै। इन्द्री शक्ति सकल मिट जावै॥कान न सुनै आंखि नहिं सूझै।बात कहै सो कछु नहिं बूझै॥खैवेको जब नाहिन पावै। तब बहु विधि मनमें पछतावै॥ पुनि दुख पाइ पाइ सो मरै। बिनु हरि-भक्ति नरकमें परै। नरक जाइ पुनि यह दुख पावै।पुनि पुनि योहीं आवै जावै॥नरजनहीहरि-सुमिरण करै। ताते बार बार दुख भरै॥ १६॥ भक्त महिमा॥ भक्त सकामीहू जो होई। क्रम क्रम करिके उधरै सोई॥ शनै शनै विधि पावै जाई। ब्रह्म सग हरिपदहि समाई॥निष्कामी वैकुंठ सिधावै।जन्म मरन तिहि बहुरि न आवै॥त्रिविधि भक्ति अब कहौं सुनु सोई।जातें हरिपद प्रापति होई॥ एक कर्मयोगको करै। वर्ण आश्रम धरि निस्तरै॥ अरुअधर्म कबहू नहिं करै।ते नर याही विधि निस्तरै॥ एक भक्ति योग को करै।हरि सुमिरन पूजा विस्तरै॥हरि पद पंकज प्रीति लगावै। क्रम क्रम करि हरि पदहि समावै॥ते हरिपद को याविधि पावै॥क्रम क्रम करि हरिपदहि समावै॥एक ज्ञान योग निस्तरै। ब्रह्म जानि सबसो हित करै॥ कपिलदेव बहुरो यो कह्यो। हमे तुमे संवाद जु भयो॥ कलियुगमें यहि सुनिहै जोई। सो नर हरिपद प्रापति होई॥१७॥देवहूति हरिपदप्राप्ति॥देवहूति ज्ञानको पाई। कपिलदेवको कह्यो शिर नाई॥ आगे में तुमको सुत मान्यो। अब मैं तुमको ईश्वर जान्यो॥तुम्हरी कृपा भयो मुहिं ज्ञान। अब न व्यापिहै मोहिं अज्ञान॥ पुनि वन जाइ दियो तनु त्याग। गहिके हरिपदसों अनुराग॥ कपिलदेव सांख्य जो गायो। सो राजा में तुम्हें सुनायो॥ याहि समुझि जु रहै लवलाई। सूर बसै सो हरिपुर जाई॥ १८॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते तृतीयस्कन्धः समाप्तः॥ ३॥



अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर।

चतुर्थस्कन्ध।



(राग बिलावल)हरि हरि हरिहरि सुमिरनकरो।हरिचरणारविन्दउरधरो॥कहों अब दत्तात्रेय अवतार। राजा सुनों ताहि चित धार॥ अत्रि पुत्रहित बहु तप कियो। तासुनारिहूँ यह व्रत लियो॥तीनोंदेव तहां मिलिआयो।तिनसों ऋषि यह वचन सुनायो॥मैंतोएक पुरुषको ध्यायो।अरुएकहि सोंमैंचित लायो॥ अपने आवनको कहो कारण।तुम हौ सकल जगत निस्तारण॥कह्यो तुम एक पुरुष जो ध्यायो।ताको दरश न काहू पायो॥ताकी शक्ति पाइ हम करैं।प्रतिपालैं बहुरो संहरैं॥ हम तीनोंहैं जगकरतार। मांगलेहु हमसों वर सार॥ कह्यो विनय मेरी सुनिलीजै।ज्ञानमान पुत्र मोहिदीजै॥ विष्णुअंश दत्त अवतरे। रुद्र अंश दुर्वासा ढरे॥ ब्रह्म अंश चंद्रमा भयो। अत्रि अनसूयाको सुख दयो॥ यों भए दत्तात्रेय अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ १ ॥शुकदेव वचन॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो॥ शुकदेव हरि चरण चित लाई। राजासों बोल्यो या भाई॥ कहौं हरिकथा सुनौ चित लाई। सूर तरयो हरिके गुण गाई॥ २ ॥ यज्ञ पुरुष अवतार वर्णन ॥ दक्षके उपजीं पुत्री सात। तिनमें सती नाम विख्यात॥ महादेव-कोसो पुनि दई। यज्ञ दक्षकेमें सो मुई॥तहां कियो हरि यज्ञ अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ ३ ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो॥ कहौं अब यज्ञ पुरुष अवतार। राजा सुनो ताहि चित धार॥ सती दक्षके पुत्री भई। दक्ष सु महादेवको दई॥ ब्रह्मा महादेव ऋषि सारे। एक दिन बैठे सभा मँझारे॥ दक्ष प्रजापति-हू तहां आए। करि सन्मान सबनि बैठाये॥ काहू समाचार कछु पूछे। काहूसे बहुरो उन पूँछे॥ शिवकी लागी हरिपदतारी। ताते नहिंशिव आंख उघारी॥ महादेव बैठे रहि गए। दक्ष देखिके तिहि दुख तए॥ महादेवको भाषत साधु। मैं तो देखो बहुत असाधु॥ यज्ञ भाग ताको नहिं दीजै।मेरो कहो मान करिलीजै॥नन्दी हृदय भयो सुनि ताप। दियो ब्राह्मणनको तिन शाप॥ श्रुति पढिके तुम नहिं उद्धरिहौ। विद्या बेंचि जीविका करिहौ॥ भृगु तब कोप होय तहँ कह्यो। तें शराप सबहुनको दियो॥महादेव हित जो तप करिहै।सोऊ भव जलते नहिं तरिहै॥ दक्ष प्रजापति यज्ञ रचायो। महादेवको नहीं बुलायो॥ सुर गंधर्व जे नेवति बुलाये। ते सब वधू-सहित तहां आये॥ सती सबनि तिन्ह आवत देखी।शिवसोंबोली वचन विशेखी॥ चलिये दक्ष-गेह हम जाहीं। यद्यपि हमैं बुलायो नाहीं॥ मोको तो यह अचरज आयो उन हमको कैसे बिसरायो॥ गुरु पितु गृह बिनु बोले जैये।यहै नीति नाहीं सकुचैये॥शिव कह्यो तुम भलि नीति

सुनाई। पै वह मानत है शत्रुताई॥वहां गये ते होइ अपमान। तौ यह भली बात नहिं जान॥ दुर्जन वचन सुनत दुख जैसो। नागलगे दुख होयन तैसो॥मम सतगई हृदये आन।करिहैं तेरोऊ अपमान॥भयेअपमान वहांतू मरिहै।जो ममवचन हृदय नहिं धरिहै॥सतीकह्यो ममभगिनी सात। सबै बोलाई हुहै मात॥मोहूको अवअज्ञा दीजै।महाराज अब विलंब न कीजै बारबारसती जब कह्यो। तबशिव अतर्गत यों लह्यो॥ सती सदा मम आज्ञाकारी। कहत जु या विधि बारबारी॥ देखत हैं कछु होननहारी। सो काहू पै जाइ न टारी॥ गणन समेत सती तहं गई। तासा दक्ष बात नहिं कही॥सतीजानि अपनो अपमान। शिवको वचन कियो अनुमान॥कह्यो वहां अब गयो न जाई।बैठगई शिर नीचे नाई॥ शिव आहुतिकि बेर जब आई।विप्रन दक्षपूछियो जाई॥ शिवनिंदा कहि तिनसों भाष्यो। मैं तुमही पहिलेहि कहि राख्यो॥ मेरो वचन प्रमान करि लेहू। शिवनिमित्त आहुति मत देहू॥ तब है क्रोध सती तिहि कही। तै शिवकी महिमा नहिं लही॥ महादेव ईश्वर भगवान। शत्रु मित्र वह एक समान॥ तू अज्ञान जो करि शत्रुताई। उनकी महिमा तै नहिं पाई॥ पिता जानि तोको नहिं मारौं। अपनोही मैं आप सहारौं॥योगधारण करि तनु त्यगो। शिवपद कमल माहिं अनुराग्यो॥ बहुरि हिमालयके अवतरी। समयांतरहर बहुरो वरी॥ह्यां शिवगणनि उपद्रव कियो। तवभृगुऋषि उपाय यह ठयो॥आहुति यज्ञ कुंडमें डारि। कह्यो पुरुष उपजै बल भारि॥ पुरुष कुंडते प्रगट जुभए। भृगुके निकट चले सब गए॥ भृगु कह्योकरत यज्ञको नास। इनकोह्यांते देहु निकास॥ शिवके गण तिहि बहुते मारे। ते गण शिवते जाइ पुकारे॥ शिव ह्वै क्रोध इक जटा उपारी। वीरभद्र उपज्यो बल भारी। वीरभद्रको तहां पठायो। तासों इहि विधि कहि समझायो॥ दक्ष शिरकाटि कुंडमें डारी। आवौ वेगि न करौ अबारी॥ वीरभद्र दक्षको मारयो। अरु भृगुऋषिको केश उपारयो॥ हाथ पाय बहुतनके काटे।आइ नवायो शिवहिं ललाटे॥ तब सुर ऋषि ब्रह्मपै जाय। दियो सकल वृत्तान्त सुनाय॥ कह्यो ब्रह्मा शिवनिन्दा जहां। बुरो कियो तुम सबै तहां॥ ब्रह्मा तिहिलै शिवपै आये। शिर प्रणाम करि ढिग बैठाये॥ शिवको सबन कियोपरमान। भोला नाथ लियो सो मान॥ब्रह्मा शिवको वचन सुनायो।दक्ष तुम्हारो मर्म न पायो॥जैसो करयोसो तैसो पायो। अब बाकोतुमफेर जिवायो॥शिव कह्यो मेरेनहिंशत्रुताई।सती मुई यह मनमें आई॥ अब जो तुम्हरी आज्ञा होई। छाडि विलंब कीजिए सोई।ब्रह्मा विष्णु रुद्र तहँ आए। भृगु ऋ-षि केश आपुने पाए॥ घायल सब नीके है गए।सुर ऋषि सबके भाए भए॥ दक्ष शीश कुंडमें जरयो। ताके बदले अजशिर धरयो॥ महादेव तेहिफेरि जिवायो। दक्ष जानि यह शीश नवायो॥ विप्रन यज्ञ बहुरि विस्तारयो। वेद भली विधिसों उचारयो॥ यज्ञपुरुष प्रसन्न जब भए। निकसि कुंडसे दरशन दए॥सुंदर श्याम चतुर्भुज रूप। ग्रीवा कौस्तुभ माल अनूप॥ उठि सबहुन माथो नायो। दक्ष बहुरि यह विनय सुनायो॥ मैं अपमान रुद्रको कियो। तब मम यज्ञ भंग नहिं भयो॥ अब मोहिं कृपा कीजिए सोई। फिर दुर्बुद्धि न ऐसी होई॥ बहुरो भृगु ऋषि अस्तुति कीनी। महाराज मम बुधि भइ हीनी॥ दियो क्रोध करि शिवहिं शराप। करौ कृपा जु मिटै यह दाप॥ पुनि शिव ब्रह्मा अस्तुति करी। यज्ञपुरुष वाणी उचरी॥ दक्षतैं कियो शिवहि अपमान।ताते भई यज्ञकी हान॥ विष्णु रुद्र विधि एकहि रूप। इन्हे जान मन भिन्न स्वरूप॥जाते यह परगट भइ आई।ताको तू मनमाहिं धियाई॥यो कहि पुनि वैकुंठ

सिधारे। सुर गंधर्व गये पुनि सारे॥या विधि भयो यज्ञ अवतार।सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ ॥ ४ ॥ अथ संक्षिप्त यज्ञपुरुष अवतार कथा ॥ राग मारू ॥यज्ञ प्रभु प्रगट दरशन दिखायो ॥विष्णु विधि रुद्र मम रूप ए तीनि हू दक्षसों वचन यह कहि सुनायो ॥ दक्ष ऋषि मानि जब यज्ञ आरंभ कियो सबनको सहित पत्नी हँकारयो। रुद्र अपमान कियो सती तव जिय दियो रुद्रके गणनि ताको सँहारयो॥बहुरि विधि जाइ क्षमवाइ कै रुद्रको विष्णु विधि रुद्र तहां तुरत आये। यज्ञ आरंभ मिलि ऋषिन बहुरो कियो शीश अज राखिके दक्ष जिवाये॥कुडते प्रगट यज्ञपुरुषदरशन दयो श्यामसुंदर चतुर्भुज मुरारी। रूप प्रभु निरखि दंडवत सबहिनि कियो सूर ऋषि सबनि अस्तुति उचारी ॥५ ॥ पार्वती विवाह वर्णन॥ सती हिए धरि शिवको ध्यान।दक्ष यज्ञमें छाडयो प्रान ॥ बहुरि हिमालयके शुभ घरी। नाम पार्वति ह्वै अवतरी ॥ पार्वती वर प्रापत भई। तबहिं हिमाचल तासो कही ॥ तेरो कासो कीजै व्याह। तिन कह्यो मेरो पति शिव आह ॥ कह्यो हिमाचल शिव प्रभु ईश। हमको उनसो कैसी रीस ॥ पार्वती शिव हित तप करयो। तब शिव आइ तहां तिहि वरयो ॥ पार्वती विवाह व्यवहार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥६ ॥ ध्रुव कथा राग बिलावल ॥ स्वयंभू मनुके सुत भए दोई। तिनकी कथा कहो सुनसोई॥ उत्तानपाद इक नृपको नाम ॥ द्वितिय प्रियव्रत अति अभिराम ॥ उत्तानपादकेध्रुवसुतगए।हरि जू ताको दरशन दए ॥ बहुरि दियो ताको अस्थान। जहां प्रदक्षिण दे शशि भान ॥कहौं सुकथा सुनो चित धार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥७॥ ध्रुव वरदेन अवतार वर्णन। राग बिलावल॥ हरिहरिहरिहरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ कहौं अब ध्रुव वर देन अवतार। राजा सुनो ताहि चितधार ॥ उत्तानपाद पृथ्वीपति भयो। ताको यश तीनो पुर छयो ॥ नाम सुनीति बडी तिहि नारि। सुरुचि दूसरी ताकी नारि॥ भयोसुरुचितेउत्तमवार। सुनीति नारिके ध्रुव कुमार ॥ राजा को सु सुरुचिसो नेह। बसै सुनीतिदूसरे गेह॥ इक दिन नृपति सुरुचि ग्रह आए। उत्तम कुवर गोद बैठाए ॥ ध्रुव खेलतखेलत तह आए। गोद बैठिबेको पुनिधाए॥राजा त्रियडर गोद न लीनो ।ध्रुव कुमार रोइ तब दीनो ॥तबहि सुरुचिध्रुवकोसमुझायो।तै गोविंद-चरण नहिं ध्यायो ॥ जो हरिको सुमिरन तू करतो। मेरे गर्भ जानिअवतरतो॥राजातब तोहिं लेतो गोद। तबहिं गोदमे करतो मोद ॥ अजहू तू हरिपद चित लाई ।होहि प्रसन्नतोहियदुराई॥ वचन सुरुचि बाण सम लागे। ध्रुव आये मातापे भागे ॥ माता ताको रोदन देखि। दुख पायो मन मोह विशेखि ॥ कह्यो पुत्र तोको केहिं मारयो। ध्रुव अति दुखित वचन उचारयो ॥ माता ताको कंठ लगायो। तब ध्रुव सब वृत्तांत सुनायो॥ कह्यो सुत सुरुचिसत्ययहकह्यो।विनु हरिभक्ति पुत्र मम भयो ॥अजहूं सो हरिपद चित लेहो। सकलमनोरथमनको पैहो॥जिनरहरि चरणन चितलाए। तिन तिन सकल मनोरथ पाए॥पितु तुव ब्रह्माको तपकियो। हरिप्रसन्नह्वै तिहि वर दियो ॥ तिहिको सर्व जगत विस्तार। जाको नाही पारावार॥बहुरि स्वयंभू मनु तपकीनो। ताहूको हरिजू वर दीनो॥ताको भयो बहुत परिवार।नर पशु कीट गनत नहिं पार॥तूहूजोहरिहित तप करिहै। सकल मनोरथ तेरो पुरिहै॥ ध्रुव यहि सुनि वनको उठि चले।पथमाहिं तेहि नारद मिले ॥ देख्यो पांच वरसको बाल। वचन सुरुचि नहिंसक्यो सँभाल॥अवमैहयाकोदृढदेख्यो। दृढविश्राम बहुरि उपदेशो ॥ ध्रुवसे कह्यो क्रोध परिहरो। मै जो कहो सोचितमेधरो॥मेरे संग राजापै आवो। देआवों तोहि राज्य धन गांवो॥भक्तिभावको जो तोहि चाह। तोसो नहिं ह्वै है निवाह ॥ बहुतक तपसी पचिपचि मुए। पै तिहि हरि दरशन नहिं हुए ॥ मै हरिभक्त नाम

मम नारद । मोसों कहो सु अपनो ह्वारद ॥ राजा पास कहो सो जाई । लेहु मान नृपति मत भाई ॥ ध्रुव विचार तब मनमें कियो । सुमिरत नारद दरशन दियो ॥ जब मैं भक्ति श्यामकी करिहौं । नहिं जानत जु कहा मैं पैहौं ॥ कह्यो मो नारद करो सहाई । करो भक्ति हरिकी चित लाई ॥ तुम नारायण भक्त कहावत । काहेको तुम मोहिं फिरावत ॥ तब नारद ध्रुवको दृढ़ देखि । कह्यो देउँ मैं ज्ञान विशेष ॥ मथुरा जाय सु सुमिरन करो । अरु हरिध्यान हृदयमें धरो ॥ मथुरा जाइ सोई उन कियो । तब नारायण दरशन दियो ॥ ध्रुव अस्तुति कीनी बहुभाई । तबहरि-जू बोले मुसुकाई ॥ ध्रुव जो तेरी इच्छा होई । माग लेहु मोसों अब सोई ॥ प्रभु मैं तुमरो दरशन लह्यो । मागनको पाछे कहा रह्यो ॥ हरि कह्यो राज्य हेतु तप कियो । ध्रुव प्रसन्न होइ मैं तोहिं दियो ॥ अरु तेरे हित कियो अस्थान । देहिं प्रदक्षिण जहँ शशि भान ॥ ग्रह नक्षत्रहु त्योंही फिरें । तू भव अटल न कबहू टरें ॥ अरु पुनि महाप्रलय जब होई । मुक्तिस्थान पाइहौ सोई ॥ यह कहि हरि निज लोक सिधारे। ध्रुव निजपुरको पुनि पग धारे ॥ जब ध्रुव पुरके बाहर आये । लोगन नृपको जाइ सुनाये ॥ उनके कहे न मनमें आई । तब नारद कह्यो नृपसों जाई ॥ ध्रुव आयो हरिसों वर पाई । राजा ताहि जाहि मिलि धाई ॥ नृप सुनि मन आनन्द बढायो । अंत - पुरमें जाइ सुनायो ॥ पुनि नृप कुटुंब सहित तहँ आये । नगर लोग सब सुनि उठि धाये ॥ ध्रुव राजाके चरणन परयो । राजा कंठ लाइ हित करयो ॥ पुनि सु सुरुचिके चरणन परयो । तासों वचन भूप उच्चारयो ॥ तुम उपदेश में हरिहि धियायो । यह उपकार न जात मिटायो ॥ पुनि माताके पाँइन परयो । माता ध्रुवको अंकम भरयो ॥ ध्रुव नृप सिंहासन बैठाए । नृप तप-कारण बनहि सिधाये ॥ सप्तद्वीप राज्य ध्रुव कियो । शीतल भयो मातको हियो ॥ यों भयो ध्रुव वर देन अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ८ ॥ राग आसावरी ॥ ध्रुव विमाता वचन सुनि रिसायो । दीनके बाल गोपाल करुणामई मातुसों सुनि तुरत शरन आयो ॥ बहुरि जब वन चल्यो पथ नारद मिल्यो कृष्ण निज धाम मथुरा बतायो ॥ मुकुट शिर धर बनमालकौ-स्तुभ गरे चतुर्भुज श्याम सुंदर धियायो ॥ भयेअनुकूल हरि दियो तेहि तुरत वर जगत करि राज पद अटल पायो ॥ सूरके प्रभुकी शरन आयो जु नर कारि जगत भोग वैकुंठ सिधायो ॥ ९ ॥

पृथु अवतार वर्णन राग बिलावल ॥ धारि पृथुरूप हरि राज्य कीयो । विष्णु की भक्ति परमान जगमें करी प्रजाको सुख सकल भांति दीयो ॥ वेन नृप भयो बलवंत जब पृथ्वी पर ऋषिनसों कह्यो जप तप निवारो । होइ तिहिको पतन शाप ताको दयो मारिके ताहि जगदोष टारयो ॥ भयो प्रगट आराज तब सब ऋषिन मन्त्र करि वनकी जावको मथन कीनो । जावके मथेते पुरुष परगट भयो श्याम तिहि भीलको राज्य दीनो ॥ बहुरि जब ऋषिन भुजदक्षिन मथन कियो लक्ष्मी सहित पृथु दरश दीयो । पहिरि आभरन पुनि राज्य लागे करन आनि सब प्रजा दंडवत कीयो ॥ बहुरि वदी जननि आय अस्तुति करी इन्द्र अरु वरुन तुम तुल्य नाहीं । कह्यो नृप विना प्राक्रम न अस्तुति करो विना किए मूढ सुनि हर्ष जाहीं ॥ करो भगवानको यश सदा गुणीजन जो जगत सिंधुते पारतारे । किये नरकी अस्तुति कौन कारज सरे करे सु आपनो जन्म हारे ॥ कह्यो तिन तुम्हें हम मनुष जानत नहीं जगतपितु जगतहित देहधारयो । करोगे काजजो कियो न काहू नृपति किए जस जप हम दोष सारो ॥ बहुरि सब प्रजा मिलि आय नृपसों कह्यो विना आजीविका मरत सारी । नृप धनुष बाण ले पृथ्वीपर कोप कियो तिन गऊरूप विनती

उचारी॥ वेनके राज्यमें औषधी गिलगई होइहेसकलकिरपातुम्हारी।पर्वतनि जहांतहांरोकिमोकों लियो देहु करि कृपा एक दिशा टारी ॥ धनुपसों टारि पर्वत कियो एक दिश पृथ्वी सम करि प्रजा सब बसाई। सुर ऋषिन नृपति यों पृथ्वी दोहन करी आपुनी जीविका सबन पाई॥ बहुरि नृप यज्ञ निन्यानवे करी शत यज्ञको जबहिं आरंभ कीनो। इन्द्र भय मान हय गहन सुतसों कह्यो सो न ले सक्यो तब आप लीनो ॥ नृपति सुतसों कह्यो जाइ हय ल्याव अब इंद्र तिहि देखि हय छांड दीनो। नृप कह्यो सुरनके हेतु मैं यज्ञ करत इन्द्र मम अश्व किहि काज लीनो॥ऋषिन कह्यो तुव शतमयज्ञआरंभ लखि इन्द्रकोराज्यहितकँप्योहीयो। नृप कह्यो इन्द्रपुरकी न इच्छा मुझे ऋषिन तब पूर्ण आहुतीदीयो॥ यज्ञपूरुपकह्यो कुंडतेनिकसि यज्ञ पूर्ण भयो इन्द्र जिमि वर कछू मांगि लीजे। पृथु कह्यो नाथ मेरे न कछु शत्रुता अरुन कछु कामना भक्ति दीजे ॥ यज्ञ पूरुप गए वैकुंठ धाम जब नौति नृप प्रजाको तब हँकारो। तिन्हें संतोपि कह्यो देहु माँगे मुझे विष्णुकीभक्तिसब चित्त धारो॥ सुनत यह बात सनकादि आए तहां मान दै कह्यो मोहि ज्ञान दीजे। कह्यो यह ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै निरखि हरिरूप मुख नाम लीजै ॥ पुनिकह्यो देहु आशीश मम प्रजाको सबै हरिभक्ति नित चित्त धारै। कृपातुमकरी मैं भेदको मन धरी नहीं कछु वस्तु ऐसी हमारे ॥ बहुरि सनकादि गए आपुने धामको नृपति सब लोग हरिभक्ति लाए। सूर प्रभु चरित अगनित न गनेजाँयकछुयथामतिआपुने कहिसुनाए ॥१०॥ पुरंजन कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो॥कथा पुरंजनकी अब कहों।तेरे सब संदेहै दहों॥ प्राचिनवर्हि भूप इक भए।आयुप्रयंत यज्ञ तिहि ठये ॥ताके मन उपजी गिल्यान। मैं कीनी बहु जियकी हानि॥यह ममदोपकवनविधि टरै। ऐसी भाँति सोच मन करे ॥ इहि अंतर नारद तहँ आए।नृपसों यों कहि वचन सुनाए ॥ मैं अबहीं सुरपुर ते आयो। मगमें अद्भुत चरित लखायो ॥ यज्ञमाहिं जो पशु तुम मारे।ते सब ठाढे शस्त्रनि धारे॥जोहतहैं येपंथतुम्हारो।अब तुमअपनोआपसँभारो॥नृप कह्यो मैंऐसोईकियो। यज्ञकाज मैं तिहि दुख दियो॥रसनाहीको कारज सारचो।मैं यों अपनोकाजविगारचो॥अबमैंयहै विनय उच्चरौं।जो कछुआज्ञा होइ सो करौं॥कह्यो कहौं एकनृपकीकथा। उनजोकियोकरोतुम तथा ॥ ताहि सुनौ तुम भली प्रकार। पुनि मनमें देखो जु विचार ॥तानृपकोपरमातममित्र। इक छिन रहै नहीं सो अत्र॥खान पान सो सब पहुँचावै।पैनृप तासों हितनलगावै॥नृप चौरासीलक्ष फिरि आयो। तब एहिपुर मानुपतनु पायो ॥ पुरको देखि परमसुख लह्यो ।रानीसोंमिलाप तहां भयो ॥तिन पूँछ्यो तुम काकी अही। उन कह्यो मम सुमिरन नहिं रही ॥ पुनि कह्यो नाम कहा है तेरो। कह्यो न आवे नाम मोहिं मेरो ॥ तन पुरजाय पुरंजन राव। कुमति तासुरानीको नांव ॥ आँख नाक मुख मूलद्वार। मूत्र शौच नव पुरको द्वार ॥लिंग देह नृपको निजगेह ।दश इन्द्रिय दासीसों नेह ॥कारण तन सुशैनअस्थान।तहां अविद्या नारि प्रधान॥कामादिक पांचौ प्रतिहार। रहैं सदा ठाढे दरवार ॥ संतोपादि न आवे पावें।विपयी भोग आइ हरपावें॥जाद्वारे-पर इच्छा होय। रानी सहित जाइ नृप सोइ॥तहां तहांको कौतुकदेखि ।मनमेंपावै हर्पविशेखि॥ इन्द्री दासी सेवा करैं। तृप्ति न होइ बहुरि विस्तरैं॥यहि इन्द्रीको यहै सुभाइ।तृप्तिन होइ कितोई खाइ॥ निद्रावश जो कबहूं सोवै। मिलि अविद्यासों सुधि बुधि खोवै ॥ उनमत ज्योंसुख दुख नहिं जानै। जागे वहै रीति पुनि ठानै॥संत दरश कबहूं जो होई।जग सुख मिथ्या जानै

सोई ॥ पै कुबुद्धि ठहरान न देइ । राजाको अंकम भरिलेइ ॥राजा पुनि तब क्रीडा करै । छन-भर हू अंतर नहिं धरै ॥ जब अखेट पर इच्छा होइ । तब रथ साजि चलै नृप सोइ ॥जा द्वारेनृप इच्छा करै।ताही द्वार होइ निस्सरै॥ चक्ष्वादिक इन्द्री दर जानो। रूपादिक सब बनसम मानो॥ मन मंत्री सो रथ हँकवैया।रथमें पुण्यपाप दोउ पहिया ॥ अश्व पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच । विषय अखेटक नृप मन.रांच॥राजा मंत्रीसों हित मानै । ताके दुख सुख दुख सुख जानै॥ नृपति ब्रह्म-अंश सुखरूप । मन मिलि परयो दुःखके कूप ॥ ज्ञानी संगति उपजै ज्ञान । अज्ञानी संग होइ अज्ञान॥मंत्री कहै अखेट सो करै। विषय भोग जीवनि संहरै॥निशि भये रानी पै फिर आवै । सोवत सो तिहि बात सुनावै ॥ आजु कहा उद्यम करि आए । कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम पाए॥ कालिह जाय अस उद्यम करौं। तेरे सब भंडारनि भरौं ॥ सब निशि याही भांति बिहाई । दिन भये बहुरि अखेटक जाई ॥ तहां जीव नाना संहरै । विषय भोग तिहिको हत करै ॥विषयभोग कबहूं न अघाई । यों हीं नृप नित आवै जाई॥एक दिन नृप निजमंदिर आयो॥रानीसों अह-निशि मन लायो॥ ताके पुत्र सुता बहु भए । विषय वासना नाना रये ॥काललागिके असकह्यो जाइ । जरा कालकन्या पुर आइ ॥ कह्यो प्रिया अब कीजै सोइ । देखे नृपति कहा धौं होइ ॥ देह शिथिल भई उठ्यो न जाई।मानों दीनी कोट गिराई॥कह्यो प्रिया अब कीजैसोइ। देखो नृपति कहा धौं होइ ॥ पुनि ज्वर दौ दीनौ पुर लाई । जगनलगे पुरलोग लोगाई ॥ मरन अवस्थाको नृप जानै । तौहू धरै न मनमें ज्ञानै ॥ मम कुटुंबकी कहा गति होई। पुनि पुनि मूरख सोचै सोई॥काल भए तिहि पकरि निकारयो।सखा प्राणपति तउ न सँभारयो॥ रानीहीमें मन रहिगयो । मरि विदर्भकी कन्या भयो॥ बहुरो तिनसतसंगति पाई। कहीं सु कथा सुनो चित लाई॥ मेघध्वजसों भयो विवाह । विष्णुभक्तिको तिहि उत्साह॥ता संगति नव सुत तिन जाये । श्रवणादिक मिलि हरि गुण गाये॥या विधि तिहि निजआयु बिताई।पूर्वपापसबगए बिलाई॥मरण अवस्था जबनजिकाई।ईश सखाके मन यह आई॥बहुत जन्म इन भ्रमभ्रम कीनो। पै इन मोकोकबहुं न चीनो ॥तब दयालु है दरशन दीनो।कबहु मूढ तैं मोहिं न चीनो॥ विषय-भोगहीमें पगरह्यो । जान्यो मोहिं और कहुं गयो ॥ मैं तो निकट सदाही रह्यो।तेरे सकलदुख नको दह्यो ॥ यह सुनिके तिहि उपज्यो ज्ञान । पायो पुनि तिहि पद निर्वान ॥यह कहि नारद नृपसों कही।तेरीहू तैसी गति भई॥ मैं जु कहो सो देखिविचार।बिन हरिभजन नहीं निस्तार॥ हरिकी कृपा मनुष्यतनु पावै। मूरख विषयहेतु सु गँवावै ॥ तिन अंगनको सुनो विवेक । खरची लाख मिलै नहिं एक ॥ नैन दरश देखनको दिये । मूरख लखि परनारी जिए॥श्रवण कथा सुनिवेको दीने। मूरख परनिंदा हित कीने ॥हाथ दए हरिपूजा हेत । तेहिं कर मूरख पर-धन लेत ॥ पग दए तीरथ जैवे काज। तिनसों चलि नित करत अकाज ॥ रसनाहरिसुमिरन-कों करी । ताकरि परनिन्दा उचारी॥यह सुनि नृप कीनों उनमान। मैं सुइ नृपति न दूसरआन॥ नारद जू तुम कियो उपकार। डूबत मोहि उतारयो पार ॥ नृपति पाइ पुनि आतमज्ञान ।राज्य छांडिकरि गए उद्यान ॥यह लीला जो सुनै सुनावै।सूर हरि कृपा ज्ञानको पावै ॥ शुक ज्यों राजाको समुझायो । मैंहू ता अनुसार सुनायो ॥ ११॥राग बिलावल॥अपुनपो आपुनहीमें पायो । शब्दहि शब्द भयो उजियारो सतगुरु भेद बतायो ॥ ज्यों कुरंग नाभी कस्तूरी ढूंढत

फिरत भुलायो। फिरि चेत्यो जब चेतन ह्वैकारे आपुनही तनु छायो ॥ राजकुँआर कंठ मणि भूषण भ्रम भयो कहूं गँवायो ॥ दियो बताइ और सत जन तब तनुको पाप नशायो। सपने माहिं नारिको भ्रम भयो बालक कहूं हिरायो। जागि लख्यो ज्यों को त्योंही हैना कहुँ गयो न आयो ॥ सूरदास समुझे की यह गति मनही मन मुसकायो।कहि न जाइ या सुखकी महिमा ज्यों गूँगो गुर खायो ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे श्रीसूरदासकृते चतुर्थःस्कन्धःसमाप्तः ॥



अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर ।

पञ्चमस्कन्ध ।



राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारबिंद उर धरो ॥ हरिचरणन शुकदेव सिरनाई । राजासो बोल्यो या भाई ॥ कहौं हरि कथा सुनो चित धार । जाते तरो उदधि संसार ॥ज्यों भयो ऋषभदेव अवतार। कहौं सुनो सो अब चितधार॥शुक वर्ण्यो जैसे परकार । सूर कह्यो ताही अनुसार ॥ १ ॥ ऋषभदेव अवतार वर्णन । रागबि ल ॥ ब्रह्म स्वयंभू मनु उपजायो । ताते जन्म प्रियव्रत पायो॥प्रियव्रतके अग्नीध्र भयो ।नाभि जन्म ताहीते लयो।नाभि नृपति सुतहित जग कियो।यज्ञपुरुष तब दर्शन दियो ॥ विप्रन अस्तुति वेद सुनाई। पुनि कह्यो सुत त्रिभुवनके राई॥तुम सम पुत्र नाभिके होई।कह्यो मो सम जग और न कोई॥ मैं हर्त्ता कर्त्ता संसार । मैं लैहौं नृपगृह अवतार॥ऋषभदेवतब जन्मेआई। राजाके मनभयेबधाई ॥बहुरो ऋषभ बडे जब भए।नाभि राज्य दे बनको गए ॥ ऋषभराज परजा सुख पायो। यशताकोमब जगमें छायो॥इन्द्र देखि ईर्षामन लायो। करिके क्रोध नजल बरसायो॥ऋषभदेवतबहीयहजानि। कह्यो इन्द्र यह कहा मन आनि॥निजबल योगनीर बरसायो।प्रजालोग अतिहीसुखपायो॥ऋषभराज मन सब उत्साह। कियो जयतीसो पुनिब्याह॥तासो सुत निनानबे भए। भरतादिकसबहरि रग रए॥तिनमें नव नवखंडअधिकारी।नव योगेश्वर ब्रह्मविचारी॥असी और इकद्विजबनलियो। ऋषभ ज्ञान सबहिनको दियो ॥ दृष्टमान नाश सब होई। साक्षी व्यापक नश न सोई ॥ताहीसो तुम चित्त लगावहु ।ताको सेवि परमगति पावहु॥संत संग सेवो हरि चरना। ताते मन संग नित करना ॥ बहुरो देकर भरतहि राज । ऋषभ ममत्व देह को त्याज॥उनमत भे ज्यो विचरन लागे। असन बसनकी सुरति तियागे ॥ कोउ खवावे तो कछु खाही ॥नातरु बैठेई रहि जाही ॥ मूत्र पुरीष अंग लपटावे।सुगंध बास दश योजन जावे ॥ अष्ट सिद्धि बहुरो तहँआई। ऋषभदेवपैसुख न लगाई॥ राजा रहत हुतो तहां एक। भयो श्रावगी ऋषिको देख॥ वेद पुराने तजि न अन्हावे। प्रजा सकलको यहै सिखावे ॥ अबहू श्रावग ऐसो करे ।ताहीको मारग अनुसरे ॥ अंतः क्रिया रहित नहिं जाने। बाहर क्रिया देखि मन माने ॥ वर्ण्यो ऋषभदेव अवतार । सूरदास भागवत अनुसार ॥ २ ॥ जडभरत कथा वर्णन रागबिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविन्द उर धरो ॥ ऋषभदेव जब बनको गए। नव सुत नवो खंड नृप भए॥ भरत सु भरतखंडको राव। करे सदाहि धर्म अरु न्याव ॥ पाले प्रजा सुतनकी नाईं। पुरजन बसें सदा सुख पाई ॥भरतहु दे पुत्रनको राज। गये बनको तज राजसमाज ॥ तहां करी नृप हरिकी सेवा। भए प्रसन्न देवन के देवा ॥एक दिनस गंडकि तट जाई। करनलग्यो सुमिरन चित लाई॥ गर्भ-

वती हारिनी तहां आई । पानी सो पीवन नहिं पाई ॥ सुनी सिंह भय मान अवाजि । मारि फलाग चली वह भाजि ॥ कूदत तनु ताको छुटिगयो । ताके छौना सुन्दर भयो ॥ भरत दया ता ऊपर आई । ल्याये आश्रम ताहि लिवाई ॥ पोपे ताहि पुत्रकी नांई । खाइ आप तब ताहि खवाई ॥ सोवै जब तब ताहि सोआवै । तासों क्रीडत अति सुख पावै ॥ सुमिरन भजन बिसारि सब गयो । एक दिन मृगछौना कहि गयो ॥ ताके मोह भरत तब भयो । सब दिन विरह अग्नि अति तयो ॥ सध्या समय निकट नहिं आयो । ताके ढूँढन हित उठि धायो ॥ पग को चिह्न पृथ्वी पर देखि । कहो पृथ्वीजहां धन पगरेखि ॥ बहुरौदेख्यो शशिकी ओर । तामे देख्यो श्यामता कोर ॥ कहन लगो मम सुत शशि गोद । तासेती शशि करत विनोद ॥ ढूँढत २ बहु श्रम पायो । पै मृगछौना नहिं दरशायो ॥ मृगको ध्यान हृदय नहिं गयो । भरत देह तजिके मृग भयो ॥ पूरब जन्म ताहि सुधि रही । आप आपसो तब यह कही ॥ मैं मृगछौनामें चित दयो । ताते मैं मृगछौना भयो ॥ अब काहूसे संग न करौं । हरिचरणारविन्द उर धरौं॥संग मृगनिहू को नहिं करै। हरे घा सहसो नहिं चरै ॥ सूखे पात रु तिनके खाई । या विधि डारयो जन्म बिताई ॥ मृग-तनु तजि ब्राह्मण तनु पायो । पूर्व जन्म तहां सुमिरन आयो ॥ मनमें यहै बात ठहराई । होय असंग भजों यदुराई ॥ पिता पढावै सो नहि पढै । मनमें रामनाम नित रढै । पिता तासु कालवश भयो । भ्रातनिहूं श्रम बहु विधि ठयो ॥ पै सो हारे हरि सुमिरतरहै । और कछु विद्या नहि गहै ॥ जडस्वरूप सो जह तहँ फिरै । असन बसनकी सुधि नहि धरै॥जैसो देहि सु तैसो खाई । नहिं तो भूखोई रहि जाई ॥ कृपिरक्षक भाइन तब कीनो । उन तहां हरिचरण-न चित दीनो ॥ तह ही अन्न देहिं पहुचाई । जो न देहिं भूखोरहिजाई ॥ भीलराव निजलोगनि कह्यो । मै कालीसो यह प्रण गह्यो ॥ तुव प्रसाद मम गृह सुत होई ।नर बलि देहुँ भयो वर सोई॥ तुम काहू धन दै लै आवहु । मेरे मनकी आश पुजावहु॥ ते खोजतखोजत तह आए। जहां जड-भरत कृपीमे छाए॥ देख्यो भरत तरुण अति सुदर । स्थूल शरीर रहित सब द्वदर ॥ निजनृपपास बांधि ले आए । नृप तेहि देखि बहुत सुख पाए॥ विप्रन कह्यो ताहि अन्हवावहु । याके अग सुगध लगावहु ॥ तिहि देवी मदिर ले गए । खड्ग रावके कर तिहिं दए ॥जब राजा तिहिं मारन लाग्यो । देवी काली मन धगधाग्यो ॥ हरिजन मारे हत्या होई। ज्यो नहि मरे करौं अबसोई॥ देवी निकसि रावको मारयो । भरत साथ यह वचन उचारयो ॥ जाने विना चूक यह भई । मैं उनसो ऐसी नहिं कही ॥ विप्रन वेदधर्म नहिं जान्यो । ताते उन ऐसो बलि ठान्यो ॥ यह सुनि ह्वांते भरत सिधायो । राजासो शुक कहि समुझायो ॥ नही त्रिलोकीऐसो कोई । भक्तनको दुख दै सके जोई ॥ ज्यो शुकनृपको कहिसमुझायो । सूरदास त्योंही करिगायो॥ ३ ॥ जडभरत रहूगण गोष्ठ वर्णन राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो।हरिचरणारविंद उर धरो॥नृपति रहूगणके मन आई।सुनिए ज्ञान कपिलसोजाई॥चढि सुखआसननृपति सिधायो।तहां कहार एक दुखपायो भरत पंथ पर देख्यो खरयो । वाके बदले ताको धरयो ॥ तिनसो भरत कछु ना कह्यो । सुख-आसन कांधे पर गह्यो ॥ भरत चले पथ जीव निहार। चलें नही ज्यो चलें कहार ॥ नृपति कह्यो मारग सम आह।चलन न क्यो तुम सूधो राह ॥ कह्योकहारनहमें न खोरि। नयो कहार चलन पग झोरि ॥कह्यो नृपति मोटो तूआहि । बहुत पथहू आयो नाहिं ॥ तू जो टेढोटेढो चलत।मरिवेकी नहिं भय हिय धरत॥ ऐसी भांति नृपति बहु भाखी ।सुनि जडभरत हृदयमें राखी ॥ मन मन

लाग्यो करन विचार। हर्ष शोक तनुको व्यवहार॥ जैसो करै सो तैसो लहै। सदा आत्मा न्यारो रहै॥ नृप कह्यो मैं उत्तर नहिं पायो। मेरो कह्यो न मनमें लायो॥ नृप दिशि देखि भरत मुसुकाये। बहुरो याविधि कहि समुझाए॥ तुम कह्यो तैं है बहुत मोटायो। और बहुत मारग नहिं आयो॥ टेढ़ो टेढ़ो क्यों तू जात। सुनो नृपति मोसों यह बात॥ जिय करि कर्म जन्म बहु पावै। फिरत फिरत बहुतो श्रम आवै॥ अरु अजहूं न कर्म परिहरै। जाते इहिको फिरिबो टरै॥ तनु स्थूल अरु दूबर होइ। परम आत्मको ए नहिं दोइ॥ तनु मिथ्या क्षणभंगुर जानो। चेतन जीव सदा थिर मानो॥ जीवको सुख दुख तनुसँग होई। जोर निजोर तनके सँग सोई॥ देहअभिमानी जीवहिं जानै। ज्ञानी जीव अलितकारि मानै॥ तुम कह्यो मरिवेको तोहिं चाह। सबकाहूको है यह राह॥ कहा जानि तुम मोसों कह्यो। यह सुनि ऋषिस्वरूप नृप लह्यो॥ तजि सुखपाल रह्यो गहि पाइ। मैं जान्यों तुम हो ऋषिराइ॥ भृगु कै दुर्वासा तुम होहु। कपिल कै दत्त कहो तुम मोहु॥ कबहूं सुर कबहूं नर होई। कबहूं राव रंक जिय सोई॥ जीव कर्म करि बहु तनु पावै। अज्ञानी तिहि देखि भुलावै॥ ज्ञानी सदा एक रस जानै। तनके भेद भेद नहिं मानै॥ आत्म सदा अजन्म अविनाशी। ताको देह मोह बड़ फांसी॥ ऋषभ पुत्र भरत मम नाम। राज्य छांडि लियो वन विश्राम॥ तहँ मृगछौनासों हित भयो। नरतनु तजिकै मृगतनु लह्यो॥ अब मैं जन्म विप्रके पायो। सब तजि हरिचरणन चित लायो॥ ताते ज्ञानी मोह न करै। तनु कुटुंबमोंहित परिहरै॥ जबलगिभजे न चरण मुरारी। तब लगि होइ न भवजलपारी॥ भव जलमें नर बहुदुख लहै। पै वैराग तबहुं नहिं गहै॥ सुत कलत्र दुर्वचन जु भाषै। तिन्हें मोहवश मन नहिं राखै॥ जो वे वचन और कोउ कहै। तिनको सुनिकै सहि नहिं रहै॥ पुत्र अन्याय करे बहुतेरे। पिता एक अवगुन नहिं हेरे॥ और जु एक करै अन्याइ। तिहि बहुअवगुण देइ लगाइ॥ इक मन अरुज्ञानेन्द्री पांच। नरकोसदानचावै नाच॥ ज्यों मग चलत चोर धन हरै। त्यों एक सुकृत धनहिं परिहरै॥ तस्कर ज्यों सुकृतधिन लेही। अरु हरि भजन करन नहिं देहीं॥ ज्ञानीइनसोंसंग न करै। तस्कर जानिदूरि परिहरै॥ नृपयह सुनि भरतै शिरनाई। बहुरि कह्यो या भांति सुनाई॥ नरशरीर सुर ऊपर आहि। कहे ज्ञान कहिए कहँ ताहि॥ ताते तुमको करत दंडौत। अरु सब नरहूंको परनौत॥ शुक कह्यो सुन यह नृपति सुजान। लेहु ज्ञान तजि देहअभिमान॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सोऊ ज्ञान भक्तिको पावै॥ शुकदेव ज्यों दियो नृपति सुनाइ। सूरदास कह्यो याही भाइ॥ २॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते पंचमः स्कंधः समाप्तः।



अथ कविवर सूरदास कृत–

श्रीसूरसागर।

षष्ठस्कन्ध।

राग बिलावल ॥हरि हरिहरिहरि सुमिरन करो। आधे पल कहुँ जिन बिस्मरो॥शुक हरिचरणनको शिर नाय। राजासों बोल्यो या भाय॥कहौं हरिकथा सुनौ चित लाय। सूर तरयो हरिके गुण गाय॥१॥ अजामिल उद्धार वर्णन।राग बिलावल ॥ हरिहरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणारबिंद उर धरो॥ हरि हरि कहत अजामिल तरयो।ताको यश सब जग बिस्तरयो॥ कहौं सु कथा सुनो चितलाय।कहै सुनै सो नर तरि जाय॥अजामिल बिप्र कनौज निवासी। सो भयो वृषलीके गृहवासी॥ जाति पाँति तिन सब बिसराई। भक्ष अभक्ष मिलै सो खाई॥ ता वृषलीके दश सुत भए। पहिले पुत्र भूलि तिन गए॥ लघु सुत नाम नरायण धरयो। तासों हेतु अधिक करि करयो॥ काल अवधि जब पहुँची आइ। तब यम दीने दूत पठाइ॥ नारायण सुत नाम उचारयो। यमदूतनि हरिगणनि निवारयो॥ दूतन कह्यो बडो यह पापी। इनतो पाप किए हैं धापी॥ बिप्र जन्म इन बृथे हारयो। काहेते तुम हमें निवारयो॥ गणनि कह्यो इन नाम उचारयो।नाममहातम तुमन बिचारयो॥जान अजान नाम जो लेई। हरि तिहि वैकुंठ-बासा देई॥बिन जाने कोउ औषधि खाई। ताको रोग सकल नशिजाई॥ ज्यों त्यों हरि बिनु जाने कहै। सो सब अपने पापनि दहै॥अग्नि बिना जाने कोउ गहै।तातकालसो ताको दहै॥ दोउ पुरुषको नाम एक होई। एक पुरुषको बोलै कोई॥ दोऊ ताके ओर निहारैं। हरिहू ऐसे भाव बिचारैं॥हांसी में कोउ नाम उचारै।हरिजू ताको सत्य बिचारै॥मैंहू करि कोउ लहै जुनाम। हरिजू देहिं तिन्हैं निज धाम॥जा बन केहरि शब्द सुनावै। ताबनते मृग जाहि परावै॥नाम सुनत यों पाप पराहीं। पापी हू वैकुंठ सिधाहीं॥यह सुनि दूत चले खिसिआई।कह्यो तिन्ह धर्म-राजसों जाई॥ अबलौं हम तुमहीको जानत। तुमहीको दंडदाता मानत॥ आज गह्यो हम पापी एक।तिन भय मानत हमको देख॥नारायण सुत हेत उचारयो। पुरुष चतुर्भुज हमें निवारयो॥ उनसों हमरो कछु न बसायो। ताते तुमको आनि सुनायो॥ औरो दंडदाता कोउ आही। हमसों क्यों न बतावै ताही॥ धर्मराज करि हरिको ध्यान।निज दूतनसों कह्यो बखान॥ नारायण सबके करतार। पालत अरु पुनि करत संहार॥ ता सम द्वितिया और न कोई। जब चाहै पुनि साजै सोई॥ ताको जब उन नाम उचारयो। तब हरिदूतन तुमैं निवारयो॥हरिके दूत जहां तहं रहैं। हम तुम उनकी सुधि नहिं लहैं॥ जो जो मुख हरि नाम उचारैं।हरिगन तिहिं तिहिं तुरत उधारैं॥नाममहातम तुमनहिं जानौ।नाममहातम सुनो बखानौ॥ज्यों ज्यों कोउ हरि-नाम उचरै।निश्चयकरि सो तरै पै तरै॥जाके गृहमें हरिजन जाई।नाम कीर्तन करै सो गाई॥

यद्यपि वे हरिनाउ न लेही। तद्यपि तिहि हरि निजपद देही॥ कैसोइ पापी क्यों नहिं होई। रामनाम चित उच्चरै सोई॥ तुम गे नहिं ता ठौर अधिकारा। मैं तुमसों यह कही पुकारा॥ अजामेल द्विज भक्तन देखि। मनम कीनो हर्ष विशेषि॥ यमदूतनको इनहि निवाऱ्यो। नाम यते मोहिं इन्हीं उबाऱ्यो॥ तब मन-माहिं आनि वैरागा। पुत्र कलत्र मोह सब त्यागा॥ हरिपदमें उन ध्यान लगायो। तातकाल वैकुंठ सिधायो॥ अंतकाल जो नाम उचारै। सो सब अपने पापन जारै॥ ज्ञान विराग तुरत तिहि होई। सूर विष्णुपद पावै सोई २ श्रीगुरुमहिमा वर्णन बृहस्पति अनादरते विश्वरूप वृत्रासुर आदिक हत्या इन्द्रप्रति पुनि गुरु पास इन्द्रागमन भाष॥

रागबिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो॥ हरि गुरु एक रूप नृप जानि। तामें कछु संदेह न आनि॥ गुरु प्रसन्न हरि प्रसन्न जोई। गुरुके दुखित दुखित हरि होई॥ कहौं सो कथा सुनो चित धारि। कहै सुनै सो तरै भवपारि॥ इन्द्र इक दिन निज सभा मँझारि। बैठ्यो हुतो सिंहासन डारि॥ सुर ऋषि सब गंधर्व तहां आए। पुनि कुबेरहू तहां सिधाए॥ सुरगुरुहू तेहि औसर आयो। इन्द्र उठि तिन्हें न शीश नवायो॥ सुरगुरु लख्यो गर्व तिहि भयो। तहँते फिर निज आश्रम गयो॥ सुरपति तब लागे पछतान। मैं यह कहा कियो अज्ञान॥ पुनि निज गुरु आश्रम चलि गयो। तिहि सुर-गुरु दरशन नहिं दयो॥ यह सुन असुर इन्द्रपुर आए। किये इन्द्रसों युद्ध बनाये॥ इन्द्र सहित तब सब सुर भागे। आश्रम अपने सबहिन त्यागे॥ पुनि सब सुर ब्रह्मापै जाई। कह्यो वृत्तांत सकल शिरनाई॥ ब्रह्मा कह्यो बुरो तुम कियो। निजगुरुको आदर नहिं दियो॥ अब तुम विश्वरूप गुरु करो। ता प्रसाद या दुखसों तरो॥ सुरपति विश्वरूपपै जाइ। दोउ कर जोर कह्यो शिरनाइ॥ तुम करो मम प्रोहित होहु। कियो बृहस्पति मोपर कोह॥ कह्यो पुरोहित होत न भलो। जात तेज तप जप नशि सकलो॥ पै तुम विनती बहुविधि करी। ताते मैं मनमें यह धरी॥ यह कहि इन्द्र हियन्न करायो। गयो राज्य अपनो तिन पायो॥ असुरनि विश्वरूपसों कह्यो। भलो भाइ तू सुरगुरु भयो॥ तुव ननसालमाहिं हम आहिं। आहुति हमें देत क्यो नाहिं॥ तिन्ह निमित्त तिहि आहुति दई। सुर-पति बात जानि यह लई॥ करिके क्रोध तुरत तिहि माऱ्यो। हत्याहेत न मन बिचाऱ्यो॥ चारि अंश हत्याके किए। चारों अंश बांटि पुनि दिए॥ एक अंश धरतीको दियो। ऊसरमाहिं अन्न नहिं भयो॥ एक अंश वृक्षनको दीनो। गोंद होइ प्रकाश तिन कीनो॥ एक अंश जलको पुनि दयो। ह्वैकरि काई जलको छयो॥ एक अंश सब नारिनि पायो। तिनको ह्वै रजस्वला छायो॥ त्वष्टा विश्वरूपको बाप। दुखित भयो सुनि सुत संताप॥ तिन करि क्रोध इक जटा उपारी। वृत्रासुर उपज्यो बल भारी॥ सो सुरपतिको मारन धायो। सुरपतिहू ता सन्मुख आयो॥ जतक शस्त्र किए प्रहार। सो करि लिए असुर आहार॥ तब सुरपति मनम भयमान। गयो तहां जहां श्रीभगवान॥ नमस्कार करि विनय सुनाई। राखि राखि अशरनशरनाई॥ कह्यो भगवान उपाय न आन। ऋषि दधीचि हाड लै दान॥ ताको तुम निज वज्र बनाव। मरिहै असुर तिसीके घाव॥ तब सुरपति ऋषिके ढिग जाई। करी विनय बहु शीश नवाई॥ बहुरि कही अपनी सब कथा। हरि ज्यों कह्यो कह्यो पुनि तथा॥ तिन कह्यो देह मोहि अति प्यारी। सुरपतिहू यह देखि विचारी॥ यह तनु क्योंहीं दियो न जावै। और दत कछु मन नहिं आवै॥ पै यह अंत न रहिहै भाई। परहित देहुँ तो होइ भलाई॥ तनु दैवेते नाहिन भजो। योग धारना करि यह तजो॥ गऊ चटाइ मम त्वचा उपारो। हाडनको तुम वज्र सवारो॥ सुरपति ऋषिकी आज्ञा पाई। लियो हाड कियो वज्र बनाई॥ गोमुख अशुचि तबे ते भयो। ऋषि शुकदेव

नृपतिसो कह्यो ॥ इंद्र आइ तब असुर प्रचारयो । कियो युद्ध पै असुरन मारयो ॥ इन्द्र हाथते वज्र छिनाई । मारयो ऐरावतको जाई ॥ ऐरावत घायल जब भयो । तब वृत्रासुरको सुख भयो ॥ ऐरावतको अमृत प्याए।भयो सुचेत इद्र तब धाए॥वृत्रासुरको वज्र प्रहारयो तिन तिरशूल इंद्रको मारयो ॥ लगत त्रिशूल इद्र मुरझायो । करते अपनो वज्र गिरायो ॥ कह्यो असुर सुरपति सभारि । लेकर वज्र मोहिं परहारि ॥ जो मरिहौ तौ सुरपुर जैहौ । जीते जगतमाहिं यश लेहौ ॥ हारि जीति नहि जयके हाथ । कारण करता आपहि साथ॥हमे तुमे पुतरीके भाइ । देखत कौतुक विविध नचाइ ॥तव सुरपति लै वज्र सहारयो।जै जै शब्द सुरन उच्चारयो ॥ पै इद्रहि सतोप न भयो । ब्राह्मणहत्यादु खहि तयो॥सोहत्यातिहि लागी धाइ।छपो सुकमलनालमें जाइ ॥ सुरगुरु जाइ तहांते ल्यायो । तासो हरि हित यज्ञ करायो ॥ यज्ञ किए हत्या गइ विलाइ।यो नृप वहुरि इद्रपुर आइ॥ नृप यह सुनि शुकसो पुनि कही। ज्ञानवुद्धि असुरहि क्यों भई॥शुककह्यो सुनो परीक्षितराइ । देहुँ तोहिं वृत्तान्त सुनाइ ॥ चित्रकेतु पृथ्वीपति राव । सुतहित भयो तासु हिय चाव ॥यद्यपि रानी बरी अनेक। पै तिहिते सुतभयो न एक॥तागृह ऋपि अगिरा सिधाये । अर्घ्यासन दै तिन बैठाए ॥ ऋपिसो नृप निज व्यथा सुनाई ।कह्यो मोहिं सो करो उपाई ॥ ऋपि कह्यो पुत्र न तेरे होई । होइ कहूँ तो दुख दे सोई॥नृप कह्यो एक बार सुत होई। पाछे होनी होइ सो होई ॥ ऋपि ता नृपसो यज्ञ करायो। दै प्रसाद यह वचन सुनायो ॥ जा रानीको तू यह देहै। ता रानीसेती सुत ह्वैहै॥तव रानीको सो नृप दियो। तिन प्रणाम करि भोजन कियो॥ ऋपि प्रसादते सुत तिन जायो । सुत लडाइ दपति सुख पायो ॥ विप्र याचकन दीनो दान । कियो उत्सव कहा करो वखान ॥ ता रानी सो नृप हित भयो । और तियनिको मन अति तयो॥तिन सवहिन करि मन्त्र उपाई । नृपति कुँवर को जहर पिआई ॥बहुत वेर भइ कुँवर न जाग्यो ।दासीसो रानी तब भाख्यो॥ ल्याव कुँवरको वेगि जगाय । दूध प्यायके वहुरि सोवाय ॥ दासी कुँवर जगावन आई । देख्यो कुँवर मृतककी नाई ॥ दासी वालक मृतक निहारी । परी धरणिपै खाइ पछारी॥ रानी तव तहां धाई आई। सुत मृत देखि गिरी मुरझाई ॥ पुनि रानी जब सुरति सँभारी । रुदन करन लागी अति भारी ॥ रुदन सुनत राजा तहँ आयो। देखि कुँवरको अति दुख पायो ॥ तवही मूर्छित हो नृप गिरे । कवहुँक सुतको अंकम भरे ॥ ऋपि नारद अँगिरा तहँ आये । राजासो यह वचन सुनाये ॥ को तू को यह देखि विचार। स्वप्न स्वरूप सकल ससार ॥ सोयो होय होय सत मानै । जो जागै सो मिथ्या जानै ॥ ताते वृथा मोह विसारि । श्रीभगवान चरण उर धारि ॥ हम तुमसो पहिले ही कही । नृप सो वात आज भइ सही ॥नृपको सुनि उपज्यो वैराग। वनको गयो राज सव त्याग॥वनमें जाइ तपस्या करी । मरि गधर्व देह तिन धरी ॥ इक दिन सो कैलास सिधायो । शिवको दरशन तहां न पायो ॥ उमा नग्न देखी तिन जाई। दियो शाप ताही या भाई ॥ तू अब असुर देह धरि जाई । मेरो कह्यो वृथा नहिं जाई ॥ उमा शाप ताको जब भयो। वृत्रासुर सो या विधि भयो॥हरिकी भक्ति वृथा नहिं जाई । जन्म जन्म सो प्रगटै आई ॥ ताते हरि गुरु सेवा कीजे । मेरो वचन मानि यह लीजे॥ ज्यों शुक नृपसो कहि समुझायो ।सूरदास त्योंही करिगायो ॥ ३ ॥गुरुमहिमा ॥ रागसारग॥ गुरु विनु ऐसी कौन करै।माला तिलक मनोहर वाना लै शिर छत्र धरै॥भवसागरसे बूडत राखै दीपक हाथ धरै । सूरश्याम गुरु ऐसो समरथ छिनमें लै उधरै ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविराजश्रीसूरदासकृते पष्ठः स्कन्धः समाप्तः ॥ ६ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत–

श्रीसूरसागर ।

सप्तमस्कन्ध ।

श्रीनृसिंहरूप अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारविंद उर धरो ॥ हरिचरणन शुकदेव शिर नाई । राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं सु कथा सुनो चित लाइ । सूर तरो हरिके गुण गाइ ॥ १ ॥ नरहरि नरहरि सुमिरन करो । नरहरि पद नित हृदय धरो ॥ नरहरि रूप धरयो जो भाई । कहौं सु कथा सुनो चितलाई॥हरि जब हिरण्याक्षको मारयो । दशन अग्र पृथिवीको धारयो॥ हिरण्यकशिपु दुःसह तपकियो।ब्रह्मा आइ दरश तब दियो॥कह्यो तोहिं इच्छाजो होई।माँगिलेहि वरदेहुँ अब सोई॥राति दिवस नभ धरणि न मरौं।अस्त्र शस्त्र परिहार न धरौं ॥ तेरी सृष्टि जहाँ लगि होई ।मोकोमारिसकेनाहिं कोई॥कह्योब्रह्माऐसेहीहोई ।पुनि हरि चाहै करिहै सोई॥यहकह्यो ब्रह्मा निजपुरआए । हिरण्यकशिपु निजभौन सिधाए ॥भवन आइ त्रिभुवनपति भए।इंद्र वरुण सबही भजि गए ॥ताके पुत्र भए प्रह्लाद । भयो असुर मुनि अति अह्लाद ॥ पांच वरपकी भई आइ । पंडामर्का लिए बुलाइ ॥ तिनके सँग चटशाल पठायो।राम नामसों तिन चित लायो॥ पंडामर्क रहे पचिहारा।राजनीति कह्यो वारंवार॥कह्यो प्रह्लाद पढत मैं मार । कहा पढावत और जंजार ॥ जब पांडे इत उत कहिं गए । बालक सब इकठौरे भए ॥ कह्यो यह ज्ञान कहां तुम पायो । नारद मातागर्भ सुनायो॥ सबनि कह्यो देहु हमें सिखाइ । सबहुनके मति ऐसी आइ ॥ कह्यो सबनिसे तब समुझाई । सब तजि भजो चरण रघुराई ॥ रामहिं राम पढो रे भाई ।रामहिं जहँ तहँ होत सहाई ॥ इहां कोऊ काहूको नाहिं ।असंबंध मिलत जगमाहिं ॥ काल अवधि जब पहुँचे आइ । चलत वेर कोउ संग न जाइ ॥ सदा संगती श्री यदुराई।भजिये ताहि सदा ल्वलाई॥हर्ता कर्ता आपे सोई।घट घट व्यापि रह्योहै जोई ॥ ताते द्वितिया और नकोई।ताके भजे सदासुख होई॥दुर्लभ जन्म सुलभही पाइ।हरि न भजे सो नरकहि जाइ॥यह जिय जानि विषय परिहरो । राम नाम ही सदा उचरो ॥ शत संवत मनुष्यकी आई।आधीतो सोवत ही जाई ॥ कछु बालापनहीं में वीते । कछु विरधापनमाहिं व्यतीते ॥ कछु तप सेवा करत विहाई । कछुइक विषय भोगमें जाई॥ऐसेही जो जन्म सिराई ।बिन हरि भजन नरकमें जाई ॥ बालपनो गए ज्ञानी आवे । वृद्ध भये मूरख पछतावे ॥ तीनों पन पुनि ऐसहि जाई। ताते अबहिं भजो यदुराई ॥विषय भोग सब तनमें होई।बिनु नरजन्म भक्ति नहिं होई ॥जो न करै सो पशुसम होई । ताते भक्ति करो सब कोई॥जबलगि काळ न पहुँचे आई।हरिकी भक्ति करौ चित लाई ॥ हरि व्यापक है सब संसार।ताहि भजो ऐसही विचार॥शिशु किशोर वृद्धतनु

होई। सदा एक रस आतम सोई ॥ जानि ऐसो तनु मोहे त्यागो। हरिचरणारविंद अनुरागो॥ माटीमें जो कंचन परे। त्योंहीं आतम तनु संचरे ॥ कंचनते जो माटी तजै। त्यों तनु मोह छांडि हरि भजै ॥नरसेवाते जो सुख होई।क्षणभंगुर थिर रहे न सोई॥हरिकी भक्ति करो चित लाई। होइ परमसुख कबहुँ न जाई॥नीच ऊंच हरि गिनत न दोइ। यह जिय जानि भजो सब-कोइ ॥ असुर होइ सुर भावे होई। जो हरि भजे पिआरो सोई ॥ रामहि राम कहो दिन रात। नातर जन्म अकारथ जात॥ सौ बातनकी एकै बात। सब तजि भजो द्वारकानाथ॥ सब चेटियन ऐसी मन आई। रहे सबै हरिपद चित लाई ॥हरि हरि नाम सदा उच्चारें। विद्या और न मनमें धारें ॥ तब पंडामर्का संक्याय। कह्यो असुरपतिसों पुनि जाय ॥तब सुतको पढाय हम हारे। आप न पढे अरु और बिगारे॥राम नाम नित रटिबोकरे। राजनीति नहिं मनमें धरे॥ताते कह्यो तुमें हम आइ। करनी होय सो करो उपाइ॥हिरनकशिपु तब सुतहि बुलायो। कछुक प्रीति कछु डर देखरायो ॥ बहुरो गोदमाहिं बैठारि। कह्यो कहा पढ्यो विद्यासारि ॥ सार वेद चारोंको जोई। छहों शास्त्र सार पुनि सोई॥सर्वपुराणमाहिं जो सार। राम नाम में पढ्यो सँभार ॥कह्यो याको लेजाइ उठाई। सुमिरत मम रिपुको चित लाई ॥ मेरी ओर न कछू निहारो। याको पावक भीतर डारो ॥ जो ऐसे करते नहिं मरै। डारि देहु गज मैंमत तरे॥पर्वतसे इहि देहु गिराई।मरे जौन विधि मारो जाई॥असुर चले तब कुँवर लिवाय। हरिजू ताकी करै सहाय॥करै उपाउ सो वृथा जाइ। नृपकी आज्ञा लियो उठाइ॥ कुँवर रह्यो हरि-पद चितलाइ। असुरनि गिरिते दियो गिराइ॥ राखि लियो तिन त्रिभुवन राइ ॥तब गज मैंमत आगे डारचो। राम नाम तब कुँवर उचारचो।गज दोउ दंत टूटि धर परे। देख असुर यह अचर-ज करे॥बहुरो नाग दयो लपटाइ। जिनके ज्वाला गिरि जरि जाइ॥ हरिजू तहँहू करी सहाइ। नाग रह्यो शिर नीचे नाइ ॥ पुनि पावकमें दियो गिराय। हरि जू ताकी कियो सहाय ॥ करै उपाइ सु बिरथा जाइ। तब सब असुर रहे खिसियाइ ॥ कह्यो असुरपतिसों पुनि जाइ। मरत नहीं यह कियो उपाइ ॥हमतो बहुत भांति पचिहारे ।यह तो रामहि राम उचारे॥नृपकह्यो मंत्र यंत्र कछु आहि।कै छल करत कछू तू आहि॥तोको कौन बचावत आइ। सो तू मोको देहि बताइ ॥ मंत्र यंत्र मेरे हरि नाम। घट घटमें जाको विश्राम ॥ जहां तहां सोइ करत सहाइ।तासों तेरो कछु न बसाइ॥कह्यो कहाँ सो मोहिं बताइ। नातर तेरो जिय अब जाइ॥ जो सबठौर खंभहूं होइ । कह्यो प्रह्लाद आहि तू जोहि ॥ हिरण्यकशिपु क्रोध मन धारचो ।जाइ खंभको मुक्का मारचो॥फटि तब खंभ भयो द्वै फारि।निकसे हरि नरहरिवपु धारि॥निरखि असुरचक्रतह्वैगयो। बहुरि गदा लै सन्मुख भयो॥हरि तासों कियो युद्ध बनाइ। तब सुर मनमें गयो डराइ ॥ संध्या समय भयो जो आइ।हरिजू ताको पकरचो धाइ॥ निज जांघन पर ताहि पछारचो।नखन साथ तब उदर विदारचो ॥ जयजयकार दशो दिश भयो। असुर प्राण तजि हरिपुर गयो॥ब्रह्मादिक सब रहे अरगाइ। क्रोध देखि कोउ निकट न जाइ ॥बहुरो ब्रह्मा सुरन समेत ।नरहरिजूके जाइ निकेत॥करि दंडवत विनय उचारि। तुम अनंतपराक्रम बनवारि ॥ तुमहीं करत नरक निस्तार उत्पति भरत करत संहार ॥करो क्षमा कियो असुर सँहारा।गयो न क्रोध भरो सो भार ॥महादेव पुनि विनय उचारी। नमो नमो भक्तन भयहारी ॥ भक्त हेतु तुम असुर सँहारो। श्री नर-हरि अब क्रोध निवारो ॥ क्रोध न गयो तब ऐसे कह्यो। क्षमो प्रलयको समय न भयो ॥

तौहू क्रोध न गयो बिकारि । महादेव हू फिरे निहारि ॥ बहुरि इन्द्र अस्तुती उचारी।मुयो असुर सुर भये सुखारी ॥ हुहै यज्ञ अब देव मुरारी । क्षमिए क्रोध सुरन सुखकारी ॥पुनि लक्ष्मी यों विनय सुनाई । डरों देखि यह रूप निराई ॥ महाराज यह रूप दुरावहु । रूप चतुर्भुज मोहि दिखावहु ॥ वरुन कुबेरादिक पुनि आए । करी विनय तिनहू बहु भाए ॥तौहू क्रोध क्षमा नहिं भयो । तब सब मिलि प्रल्हादहिं कह्यो ॥ तुमरे हेतु हरि लियो अवतार । तुम अब जाइ करो मनुहार॥तब प्रह्लाद हरि निकट आइ । करि दडवत परो गहि पाइ ॥ तब नरहरि न ताहि उठाइ ।हू कृपालु बोल्यो या भाइ॥कहु जु मनोरथ तेरो होइ।छांडि विलब करो अब मोइ॥दीनानाथ दयालु मुरारी।मम हित तुम लीनो अवतारी ॥असुर अशुचि है मेरी जात। मोहिं सनाथ कियो तुम नाथ ॥ भक्त तुम्हारी इच्छा करै ।ऐसो असुर कहो क्यों मरै ॥ भक्तन हित तुम धारी देह। तारहिं गाइ गाइ गुण एह॥जग प्रभुत्व प्रभु देखा जोई। सो बिन तुम क्षण भगुर होई ॥ इन्द्रादिक जाते भय करयो । सो मम पिता मृतक होइ पर्यो॥माधुमग प्रभु मोकों दीजै। तिहि ममत तुम भक्ति करीजै॥और न मेरी इच्छा कोइ।भक्ति अनन्य तुम्हारी होइ॥और जु मोपर कृपा करो ।जो सब जीवनको उद्धरो॥जोकहो कर्मभोग जब करिहै ।तब ए जीव सकल निस्तारहे ॥मम कृत इनके बदले लेहु । इनके कर्म सकल मोहिं देहु ॥ मोको नरकमाहिं लै डारो । पै प्रभुजु इनको निस्तारो ॥पुनि कह्यो जीव दुखित ससारा ।उपजत विनशत बारम्बारा ॥ बिना कृपा निस्तार न होई।करो कृपा मैं मागत सोई॥प्रभु मैं देखि तुम्हे सुख पावत।पै सुर देखि सकल डर पावत॥ताते महा भयानक रूप । अन्तर्ध्यान करो सुरभूप॥ हरि कह्यो मोहिं बिरद की लाज।करो मन्वन्तरलो तुम राज।राजलक्ष्मी मद नहिं होइ॥कुल इकीसले उधरे सोइ॥जो मम भक्त नरकमें जाइ॥ होइ पवित्र ताहि परसाइ ॥ जा कुलमाहिं भक्त मम होइ।सात पुरुष लै उधरै सोइ ॥ पुनि प्रह्लाद राज बैठाए । सब असुरन मिलि शीश नवाए॥ नरहरि देखि हर्ष मन कीनो। अभयदान प्रल्हादहिं दीनो ॥तब ब्रह्मा विनती अनुसारी । महाराज नरसिंह मुरारी ॥ सकल सुरनको कारज सरो । अतर्ध्यान रूप अब करो॥तब नरहरि भे अतर्ध्यान ।राजासों शुक कह्यो बखान ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै । सूरदास हरिभक्ति सु पावै॥२॥ राग रामकली ॥पढौ भैया कृष्ण गोविंद मुरारी।कहै प्रह्लाद सुनो रे बालक लीजै जन्म सुधारी॥को है हिरण्यकशिपु अभिमानी जोर सके तुम मारी । राखनहार वहै कोउ और श्याम धरे भुज चारी ॥ कर्मरूप वसुदेव नारायण नहिं दीजै सु बिसारी॥सूरदास ताहरिसे मीना कबहु न आवैहारी॥३॥ राग कान्हरा ॥जो मेरे भक्तन्ह दुखदाई। सो मेरे इहि लोक बसै जिन त्रिभुवन छाडि अनत कहूँ जाई ॥शिव विरचि नारद मुनि देखत तिनहु न मोको सुरति दिवाई । बालक अबल अजान रहे वह दिन दिन दून त्रास अधिकाई ॥ खभ फारि गलगाजि मत्त बल क्रोधमान छबि बरणि न जाई । नैन अरुन विकराल दशन अति नखसो हृदय विदारन आई॥कर जोरे प्रह्लादजु विनवै विनय सुनो अशरन शरनाई।अपनी रिसै बिसारि तात मम अपराधी सु परमगति पाई ॥ दीनदयालु कृपानिधि नरहरि अपनो जानि हृदय लियो लाई । सूरदास प्रभु पूरण ठाकुर कह्यो शुकहिं नामें निरुआई॥४॥ राग मारू ॥ऐसी को सकै कार बिना मुरारी।कहत प्रह्लादके धारि नरसिंहवपु निकसि आए तुरित खभ फारी ॥हिरण्यकश्यपु निरखि रूप चकृत भयो बहुरि कर लै गदा असुर धायो । हरि गदायुद्ध तासो कियो भली विधि बहुरि सध्या समय होन आयो ॥ गहि असुर

धाइ पुनि जाइ निज जंघपर नखनिसों उदर डारचो विदारी। देखि यह सुरन वर्षा करी पुहुप-की सिद्ध गंधर्व जय ध्वनि उचारी ॥बहुरि वहु भाइ प्रह्लाद अस्तुति करी ताहि दै राज वैकुंठ सिधाए। भक्तके हेत हरि धरचो नरसिंह वपु सूर जन जानि यह शरन आए॥ ५ ॥ राग धनाश्री॥ तवलगि हौं वैकुंठ न जैहौं ।सुनु प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जबलगि तुम शिर छत्र न दैहौं॥मन वच कर्म जान जिय अपने जहां जहां जन तहँतहँ ऐहों। निर्गुण सगुण होय सब देख्यों तोसो भक्त कहूं नहिं पैहों॥मो देखत मो दास दुखित भयो यह कलंक हौं कहां गँवैहों। हृदय कठोर कुलिशतें मेरो अव नहिं दीनदयालु कहैहों॥गहि तनु हिरनकशिपुको चीरों फारि उदर तव रुधिर नहैहों। इहि हत मिटे कहे सूरज प्रभु या कृतको फल तुरत चखैहौं ॥६॥ श्रीभगवान शिव सहायववर्णन॥ राग विलावल॥हरि हरि हरिहरि सुमिरन करो।हरिचरणारविन्द उरधरो॥हरिज्योंशिव-की करी सहाई।कहौं सुकथा सुनो चितलाई॥एक समै सुर असुर प्रचारि।लरे भई असुरनकी हारि॥ तिन ब्रह्माके हित तप कीनो। ब्रह्मा प्रकटि दरश तव दीनो॥तव ब्रह्मासों कह्यो शिर नाइ। जे ह्वैहैं हमरी किहि भाइ ॥ ब्रह्मा तव यह वचन उचारचो। मय मायामय कोट सँवारचो॥ तामें बैठि सुरन जय करो। तुम उनके मारे नहिं मरो॥असुरनयहमयको समुझाई। तवमयदीनोकोटवनाई लोहतले मधरूपा लायो। ताके ऊपर कनक लगायो ॥जहँ लैजाहि तहां वह जावै।त्रिपुर नाम सो कोट कहावे ॥ गढके वल असुरन जय पाई। लियो सुरनसों अमृत छिनाई ॥ सुर सब मिलि गए शिवशरनाई। शिव तव कीन्ही तिनें सहाई ॥ पै शिव जाको मारत धाई। अमृत प्याइ तिहिं लेहिं जिवाई ॥ तव शिव कीनो हरिको ध्यान ।प्रगट भये तहां श्रीभगवान॥ शिव हरिसों सब कथा सुनाई। हरि कह्यो अव मैं करों सहाई॥ सुंदर गऊरूप हरि कीनो ।वछरा करि ब्रह्मा संग लीनो॥अमृतकुंडमें पैठी जाय।कह्यो असुरन मारो या गाय॥ एकनि कह्यो याहि मत मारो। याको सुंदर रूप निहारो ॥ कितक अमृत पीवै यहि भाई। हरिमति तिनकी फिर भर-माई॥ हरि अमृत पिय गए अकाश। असुर देखि यह भए उदास॥कह्यो इही हिरणाक्ष सुमारचो। हिरण्यकशिपु इनहिं संहारचो ॥यासों हमरो कछु न वसाई। यह कहि असुर रहे खिसियाई ॥ शिव तव कीनो युद्ध अपार। पै असुरन नहिं मानी हार॥ वाण एक हरि शिवको दियो। तासों सब असुरन क्षय कियो ॥या विधि हरिजू करी सहाय। मैं सो तुमसों दई सुनाय ॥ शुक ज्यों नृपको कहि समझायो ।सूरदास जन त्योंही गायो॥ ७॥ नारद उत्पत्ति कथा वर्णन। राग विलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि भजि जैसो नारद भयो। नारद व्यासदेवसों कह्यो ॥ कहौं सु कथा सुनो चित धार। नीच ऊंच हरिके इकसार॥ गंधर्व ब्रह्मासभा मँझार। हँस्यो अप्सरा ओर निहार॥ कह्यो ब्रह्मा दासीसुत होहि। सकुच न करी देखि तैं मोहि ॥ भयो दासीसुत ब्राह्मण गेह।तुरत छाँडिके गंधर्व देह ॥ ब्राह्मणगृह हरिके जन छाए। दासी दास सेवहित लाये॥ हरिजन हरिचरचा जो करै।दासीसुत सो हृदय धरै ॥सुनत सुनत उपज्यो वैराग।कह्यो जाउं क्यों माता त्याग ॥ ताकी माता खाई कारे। सो मरगई शापके मारे ॥दासी सुत वन भीतर जाई। करी भक्ति हरिपद चित लाई॥ब्रह्मापुत्र तनु तजि सो भयो। नारद यों अपने मुख कह्यो ॥ हरिकी भक्ति करे जो कोई। सूर नीचसों ऊंच सु होई ॥८॥

इति श्रीभागवते सूरसागरे सूरदासकृते सप्तमस्कंधः समाप्तः॥ ७ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर।

अष्टमस्कन्ध।

रागबिलावल। चालि॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविन्द उर धरो॥ हरिचरणन शुकदेव शिर नाई। राजासों बोल्यो या भाई॥ कहो हरिकथा सुनो चितलाई। सूरदास हरिके गुण गाई॥ १॥ गजमोचन अवतार॥ रागबिलावल॥ गजमोचन ज्यों भयो अवतार। कहों सो अब चित धार॥ गंधर्व एक नदीमें जाय। देवल ऋषिके पकस्यो पाय॥ देवल कह्यो ग्राह तुम होहि। कह्यो गंधर्व दया करि मोहि॥ जब गजेंद्रके पग तू गहिहै। हरिजू ताको आनि छुडैहै॥ भये सपर्श देवतनु धरिहै। मेरो कह्यो नहीं यह टरिहै॥ राजा इंद्रद्युम्न कियो ध्यान। आयो अगस्त्य नहीं तिन जान॥ दियो शाप गजेंद्र तू होहि। कह्यो नृप दयाकरो ऋषि मोहि॥ कह्यो तुहि ग्राह आन जब धरिहै। तू नारायण सुमिरन करिहै॥ याही विधि तेरी गति होई। भयो त्रिकूट पर्वत गज सोई॥ कालहि पाइ ग्राह गज गह्यो। गज बल करि करिके थकि रह्यो॥ सुत पत्नी हू बलकरि रहे। छूट्यो नहीं ग्राहके गहे॥ ते सब भूखे दुःखित भये। गजको मोह छोडि उठिगए॥ तब गज हरिकी शरणहि आयो। सूरदास प्रभु ताहि छुडायो॥ २॥ माधवजू गज ग्राहते छुडायो। निगमनि हू मन वचन अगोचर प्रगटि स्वरूप दिखायो॥ शिव विरंचि सब देखत ठाढे बहुतदीन दुख पायो। बिन बदले उपकार करेको काहू कहत न आयो॥ चितवत चितहीमें चिन्तामणि चक्र लये कर धायो। अति करुणा क[illegible]

[illegible] जु निज जन कारन कहू न गहर लगायो

राग बिलावल॥ हरि कर चक्र धरे धर धावत॥ गरुड समेत सकल सेनापति पाछे लागे आवत॥ चलि ना सकत गरुड मन डरपत बुधि बल बलहि बढावत। मनो पवनवश पत्र पुरातन अपनो चरण चलावत॥ को जाने प्रभु कहाँ चलेहै काहू कछु न जनावत। अति व्याकुल गति देखि देवगण सोचि सकल दुख पावत॥ गजहित धावन जन मुकरावन वेदविमलयशगावत। सूर समुझि समुझाव अनाथनि इहि विधि नाथ छुडावत॥ ४॥ राग रंग॥ झाँई न मिटन पाई आए हरि आतुर है जब जान्यो गज ग्राह लये जात जलमें। यादौपति यदुनाथ खगपति साथ जन जान्यो विहवल तब छाँडि दयो थलमें॥ नीरहूते न्यारो कीनो चक्र नक्र शीश छीनो देवकीके नन्दलाल ऐचि भुवतलमें। कहे सूरदास देखि नैननकी मिटी प्यास कृपा कीनो गोपीनाथ आइगए पलमें॥ ५॥ राग बिलावल॥ अब हौं सब दिशि हेरि रह्यो। राखत कोउ न नाथ कृपानिधि अति बल ग्राह गह्यो॥ सुर नर सब स्वारथके गाहक कौन श्रम आन करे। उडगण उदित तिमिर नहि नाशत बिन रवि रूप धरे॥ इतनी बात सुनत करुणामय चक्र

गहे कर धाए । हत गजशत्रु सूरके स्वामी ताछिन सुखउपजाए॥ ६ ॥ कूर्मअवतार समुद्रमथन अमृतादि निमित्त ॥ राग बिलावल॥ जैसे भयो कूर्मअवतार । कहौं सुनो सो अब चित धार ॥ नरहरि हिरण्यकशिपु जब मार्यो । अरु प्रह्लाद राज्य बैठार्यो ॥ ताको सुत वैरोचन भयो । ताके बहुरि पुत्र बलि हुयो ॥ बलि सुरपतिको बहु दुख दयो। तब सुरपति हरिशरणनि गयो॥हरिजूअपनी बिरद सँभार्यो। सूरज प्रभु कूरमतनु धार्यो ॥ ७ ॥ राग मारू ॥सुरन हेत हरि कच्छपरूप धार्यो । मथन करि जलधिअमृतनिकार्यो॥चतुर्मुख त्रिदशतबविनय हरिसों करी बलिअसुरसों सुरनि दुःख पायो । दीनबंधू कृपाकरन अशरनशरन मंत्र यह तिनैं निज मुख सुनायो ॥ वासुकी नेति अरु मंदराचल रई कमठमें आपनी पीठ धार्यो। असुरसों हेत करि करो सागर मथन तहांते अमृतको पुनि निकार्यो॥ रत्न चौदह बहुरि तहांते प्रगट होहिं असुरको सुरा तुम अमृत प्याऊं ।जीतिहौ तब महाअसुर बलवंतको मरैं नहिं देवता यों जिवाऊं॥इन्द्र मिलि सुरन बलिपास गयो बहुरि उन कह्यौ कहो किहि काज आयो।त्रिदश तबसमुद्रके मथनकीबातजोहुतीसो सकल कहिके सुनायो॥बलि कह्यो विलंब अब नेकु नहिं कीजिए मंदराचल अचल चलो धाई।दोउ इक मंत्र करि जाइ पहुँचे तहां कह्यो अब लीजिए इहि उँचाई ॥ मंदराचल उपारत भयो बहुत श्रम बहुरि लै चलनको जब उठायो । सुर असुर बहुत ता ठौरही मरिगए दुहूँको गर्व हरि यों नशायो॥तब दुहूँ ध्यान भगवानको धरि कह्यो बिन तुम्हारी कृपा गिरि न जाई। वामकरसों पकरि गरुडपर राखि हरि क्षीरके जलधितट धर्यो जाई ॥ कह्यो भगवान अब वासुकी ल्याइए जाइ तिनि वासुकीसों सुनायो।मान भगवानआज्ञा सुआयोतहां नेति करि अचलको समुद्र पायो॥मंदराचल समुद्र माहिं बूडनलग्यो तब बहुरि सबन अस्तुति सुनाई । कूर्मको रूप धरि धरि अचल पीठपर सुर असुर सकल मन भइ बधाई॥पूंछको तजि असुर दौरिके मुख गह्यो सुरन तब पूंछकी ओर लीनो।मथतभए छीन जब तबै अस्तुति करी श्रीमहराज निजशक्ति दीनी॥भयोहलाहल प्रगट प्रथमहीमथत जब रुद्रको दयो तिहि कंठधारी।चन्द्रमाबहुरि जबमथत पायोप्रगटसोउकरिकृपा दीनो मुरारी॥कामना धेनु तब सत ऋषिको दई लई उन बहुत आनन्द कीने।अप्सरा पारजातक धनुप अश्व गज श्वेत ए पांच सुरपतिहि दीने॥शंख अरु कौस्तुभमणि लई आप हरि बहुरि पुनि लक्ष्मीदई दिखाई । परम सुन्दर मनो तडित हे दर्शनी कमलकी माल कर लए आई ॥ सकल भूपन मनिनके बने सकल अंग अरु वसन अरुन सुंदर सुहाये। देखि सुर असुर सब दौरि लागे गहन कह्यो मैं बरवरों आप भाए। जो मुझे चहै मैं ताहि नाहीं चहौं असुरको राज थिर नाहिंदेखों । तपसियनको कह्यो क्रोध इनमें बहुत ज्ञानियनिमें न आचार पेखों ॥ सुरनको देखि कह्यो ए पराधीन सब देखि विषको कह्यो यह बुढायो । चिरंजीवनि देखि कह्यो न डराई ए लोकतिहुँ माहिं कोउ चित न आयो॥बहुरि भगवानको निरखि सुन्दर परम कह्यो इहिमाहिंहै सब भलाई।पै न इच्छा इनैंहै कछू वस्तुकी अरु न ए देखिके मोहिं लोभाई॥कबहुं किये भक्तिहूके न ए रीझिहैं कबहुंके बैर ए रीझि जाहीं । और गुण चाहिये सो सकल हैं इन्हें डारि दई माल कहि गरेमाहीं ॥ हरि कह्यो मम हृदय माहिं तुम रहो सदा सुरन मिलि देव दुन्दुभि बजाई । धन्य धनि कह्यो पुनि लक्ष्मीसों सकल सिद्ध गंधर्व जै ध्वनि सुनाई ॥ बहुरि धन्वंत्रि आयो समुद्रसे निकसि सुरा अरु अमृत पुनि संग लायो । भयो आनंद सुर असुरको देखिकै असुर करि बलहि अमृत छिनायो ॥ सुरन भगवानसों आइ विनती करी

असुर सब अमृत ले गए छिनाई। कह्यो भगवान चिंता न कछु मन धरो मैं करों अब तुम्हारी सहाई॥परस्पर असुर तब युद्ध लागेकरन होय बलवंत सोइ ले छिनाई। मोहिनी रूपधरि श्याम आए तहां देखि सुर असुर सबही लोभाई॥ आइ असुरन कह्यो लेहु यह अमृत तुम भवन दे बांटि मेटो लगाई। हंसि कह्यो नहीं हम तुम कछू मित्रताबिना विश्वासबांट्यो न जाई ॥कह्यो तोहि बांट पर हमें विश्वास है देहु तुम बाँट जो धर्म होई। कह्यो सब सुर असुर मिलि कियो दधि मथन देउ सब बांट है धर्म सोई॥ कह्यो जो करौं सो हमें परमान है असुर सुरपांति करि तब बिठाई। असुर दिश जित मुसकाइ मोहे सकल सुरनको अमृत दीनो पिलाई॥ राहु शशि सूर्यके बीचमें बैठिके मोहनीसों अमृत मागिलीनो।सूर्य शशि कह्यो जब असुर यह कृष्णजू ले सुदर्शन सु द्वै टूक कीनो॥राहु शिर केतु धरको भयोतबहितेसूर शशिको सदा दुःखदाई। करत भगवान रक्षा शशिउ सूरकी होत है सुदर्शन तब सहाई॥ करि अन्तर्ध्यान तब मोहनीरूपको गरुड असवार ह्वै तहां आए। असुर चकृत भए कहां गई नारि वह सुर असुर युद्ध हेतु दोउ धाए॥ सुरनकी जीति भई असुर मारे बहुत जहां तहां गए सबही पराई। सूर प्रभु जिहि करे कृपा जीते सुई बिनु कृपा जाइ उद्यम वृथाई॥ ८ ॥ मोहनीरूप। राग मारू॥ हरि कृपा करें जीते सोई।बाद अभिमान जिन करो कोई॥पाइ सुधि मोहनीकी सदाशिवचले जाइ भगवानसों कहे सुनाई।असुर अजितेंद्रिय देखि मोहित भये रूपसो मोहिं दीजै दिखाई॥हरि कह्यो ब्रह्मव्यापक निराकार सोनिर्गुण तुम सगुण ले कहा करिहौ। पुनि कह्यो बीनती मानलीजे प्रभू उमा देख्यो चहत कृपा धरिहौ॥हरि कह्यो तुम्हें दिखराइहौं रूप यह करो विश्राम इक ठौर जाई। बैठि एकांत जोहन लग्यो पथ शिव मोहनी रूप कब दे दिखाई॥ होइअंतर्ध्यान मोहनी रूप धारि जाइ वनमाहिं दीनो दिखाई।मनु शशि किधों चपला परमसुंदरी अंग भूषननि छबि कहि न जाई॥हास अरु भाव करि चलत चितवत जबै कौन ऐसो जो मोहित न होई।उमाको छांडि अरु डारि मृगचर्मको जाइके निकट रह्यो रुद्र जोई॥रुद्रको देखिकरि मोहनी लाज करिलियो अंतर रुद्र अधिक मोह्यो। उमाहू देखि पुनि ताहि मोहित भई तासुसम रूप अपनो न जोह्यो॥ रुद्र धीरज तज्यो जाइ ताको गह्यो सो चली आपको तब छुडाई। रुद्रको वीर्य छुटिके परचो धरणिपर मोहनी रूप हरि लियो दुराई।देखिके उमाको रुद्र लज्जित भए कह्यो मैंकौन यह काम कीनो। इंद्रीजित कहावत हौं तो आपुको समुझि मनमाहिं है रह्यो खीनो।चतुर्भुज रूप हरि आइ दरशन दियो कह्यो शिव शोच दीजे बिहाई॥सम तुम्हारो नहीं दूसरो जगतमें कह्योतुमरूपतब दियो दिखाई॥नारिके रूपको देखि मोहे न जो सो नहीं लोक तिहु माहिं भावै। सूरस्वामी शरन रहित माया सदा को जगत जो न कपिज्यो नचावै॥ ९ ॥ राग बिलावल॥ असुर द्वै हुते बलवत भारी। सुंद उपसुंद स्वेच्छा बिहारी॥ भगवती तबै दीनी देखाई। देखि सुंदरी दोउ रहे लुभाई॥भगवती कह्यो तिनको सुनाई। युद्ध जीते सु मुहि बरे आई॥तब दुहूं युद्ध कीनो तहांई। मरि गये तुरतहि दोउ भाई॥ देखिके नारि मोहित जो होवै।आपुनो मूल या विधि सु खोवै॥ शुक नृपति पास जेहि विधि सुनाई।सूर ज्यों ही तेहि भांति गाई॥१०॥ वामनअवतार वर्णन॥ राग बिलावल॥जैसे भयो वामन अवतार।कहौं सुनो सो अयचित धार॥हरि जब अमृत सुरन पियायो।तब वलि असुर बहुत दुख पायो॥शुक्र ताहि पुनि यज्ञ करायो।सुर जे राज्य त्रिलोकी पायो॥ निन्यानवे यज्ञ पुनि किये। तब दुख भयो अदितिके हिये॥ हरिहित उन पुनि बहुत पुकारचो। सूरश्याम वामन वपु धारयो॥११॥ रागमलार॥द्वारे ठाढे हैं द्विज वामन। चारो वेद पढत मुख आगर अति सुगध सुर गावन॥ बाणी पुनि बलि पूछन लागे इहां विप्र करो आनन।

चर्चित चन्दन नील कलेवर वरसति बुदन सावन॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो मांगि देउँ मन भावन। तीन पैंड वसुधा हौ चाहों परण कुटीको छावन ॥ इतनो कहा विप्र ते मांग्यो बहुत रत्न देउ गांवन। सूरदास प्रभु वोल छले वलि धरयो पीठि पद पावन॥ १२ ॥ राग मलार॥राजा इक पंडित पौरि तुमारी। चारो वेद पढे मुख आगर है वामन वपुधारी॥ अपद दुपद पशुभाषा बूझे अविगत अल्प अहारी। नगर सकल नरनारी मोहे सूरज ज्योति विसारी॥ सुनि आनदचलेवलि राजा आहुति यज्ञ विसारी। देखि स्वरूप सकल कृष्णाकृति कीनी चरण जुहारी॥ चलिए विप्र जहां यज्ञवेदी बहुत कही मनुहारी। जो मांगो सोइ देहुँ तुरतही हीरा रतन भंडारी॥ रहु रहु राजा यो नहिं कहिये दूषण लागे भारी। हूठ पैंड दे वसुधा हमको तहां रचौं धर्मसारी॥ शुक्र कह्यो सुन हो बलिराजा भूमिको दान निवारी। ए तो विप्र न होवे राजा आए छलन मुरारी॥ कहि धौं शुक्र कहा धो कीजे आपुन भए भिखारी। सवही उदक दियो बलिराजा वामन देह पसारी॥ जैजैकार भयो भुव मापति तीन पैंड भइ सारी। आध पैंड दे वसुधा राजा नातरि चल सतहारी॥ अब सत क्यो हारो जगस्वामी नापो देह हमारी। सूरदास वलि सर्वस दीनो पायो राज्यपतारी॥ ॥ १३ ॥ मत्स्यअवतार वर्णन ॥ राग मारू ॥ सुरन हेतु हरि मत्स्यरूप धारयो। सदाही भक्त संकट निवारयो॥ चतुर्मुख कह्यो श्रुति चतुर शखा असुर लै गयो तबै परले दिखायो। भक्तवच्छल कृपाकरन अशरन शरन मत्स्यको रूप तहां धारि आयो॥ स्नान करि अंजली जल जबै नृप लियो मच्छको देखि कह्यो डार दीजे। मत्स्य कह्यो मैं गही आय तुमरी शरन करि कृपा मोहिं अब राखिलीजे॥नृप सुनत वचन चकृत प्रथम ह्वै रह्यो कह्यो मच्छ वचनकिहिभांतिभाख्यो। पुनि कमंडलु धरयो तहां सो वढिगयो कुंभ धरि बहुरि पुनि माट राख्यो॥ पुनि धरयो खाइ तालाबमें पुनि धरयो नदीमें बहुरि तिहि डारिदीनो॥बहुरिजब वढिगयो सिंधु तवलैगयो तहांहरिरूप तव चीन्हलीनो॥कह्यो करि विनय तुम ब्रह्म अन अंत हौ मत्स्यको रूप किहिकाज कीन्हो। वेद विधि चहत तुम प्रलय देखन कहत तुम दोऊ हेतु अवतार लीनो॥ कबहुँ वाराह नरसिंह कबहुँ भयो कच्छको रूपहू कबहुँ लीनो। कबहुँ भयो राम वसुदेव कबहुँ भयो और बहुरूप हितभक्त कीनो॥सातवे दिवसदिखरायहोप्रलय तुहिसप्तऋषि नावमेंबैठिआवे। तोहिं बैठारिहे नावमें हाथ गहि बहुरि हम ज्ञान तुहि कहि सुनावे॥सर्प इक आइहै बहुरि तुमरेनिकट ताहिसो नाव मम शृंग बांधोयहैकहि मत्स्यप्रभुभएअंतर्ध्यान नृप तबै आपनो कर्म साधो॥सातवें दिवस आयो निकटजलधि जब नृपतिकह्योअब कहौ नाव पावे। आइगई नाउ तवऋषिन तासो कह्यो आव हम नृपति तुमको बचावे॥ पुनि कह्यो मत्स्य हरि अब कहां पाइये ऋषिन कह्यो ध्यानजियमांहि धारयो।मत्स्यअरु सर्प ता ठौर प्रगटित भए तबै तिनसो नृपति कहि उचारयो॥ ज्यो महाराज या जलधिते पार कियो भवजलधिहू पार करो स्वामी॥अहं ममता हमें सदा लागी रहति मोह मद क्रोधयुत मद कामी॥कर्म सुखहित करत होत तहँ दुःख तव इतेपर मूढ़ नाहीं सँभारत॥करन कारन महाराजहेआपही ध्यान प्रभुकोनमनमाहिं धारत॥विनु तुमारी कृपा गति नही नरनकीजानिमोहिं आपनोकृपा कीजे।जन्मअरु मरनमें सदा दुःखितरहतदेहु मोहिज्ञानजो सदा जीजे॥मत्स्यभगवान कह्यो ज्ञानपुनि नृपतिसो भयो सुपुराण सब जगत जान्यो।लैहुअब ज्ञान कह्योआखिअब मीचितू मत्स्य जोकह्यो सो नृपति मान्यो॥आखिको खोलिजब नृपति देख्यो बहुरि कह्यो हरि प्रलय माया दिखाई। कह्यो जो ज्ञान भगवान सो आनि नृप उरहि निज आयु इहिविधिविताई॥बहुरि शंखासुरै मारिवेदआनिदयो चतुर्मुख विविध अस्तुति सुनाई। सूरके प्रभूकी नित्य लीलाघनी सके कहि कौन यह कहुक गाई॥ १४ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते अष्टमः स्कधः समाप्तः॥८॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

नवमस्कन्ध।

राजा पुरुरवाको वैराग्य वर्णन । राग बिलावल ॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राउ। नारी नागिनिएक स्वभाव॥ नागिनिके काटे विष होइ। नारी चितवत नर रहै मोइ॥ नागिसों नर प्रीति लगावै। पै नारी तिहि मनहिं न ल्यावै॥ नारी संग प्रीति जो करै। नागी ताहि तुरत परिहरै॥ नृपति एक पुरूरवा भयो। नारीसंग हेत तिन ठयो॥ तासों उन कटु वचन सुनाए। पै ताके मन कछू न आए॥ बहुरो तिहि उपज्यो वैराग। गयोउरवशीकोसो त्याग॥ हरिकी भक्ति करत गति पाई। कहों सुकथासुनो चित लाई॥ एकबार महाप्रलय भयो। नारायण आपै रहिगयो॥ नारायण जलमें रहे सोई। जागि कह्यो बहुरो जग होई॥ नाभिकमलते ब्रह्मा भयो॥ तिन मनते मरीचिको ठयो॥ पुनि मरीचिकश्यप उपजायो। कश्यपकी तिय सूरज जायो॥ सूरजके वैवस्वत भयो। सुतहित सो वशिष्ठपै गयो॥ ताकी नारि सुताहित भाख्यो। मुनि वशिष्ठअपने मन राख्यो॥ ऋषि नृपसों यज्ञ विधि करवाई। इला सुता ताके गृह आई॥ नृप कह्यो पुत्र हेत यज्ञ कियो। पुत्री भई यह अचरज भयो॥ ऋषि कह्यो रानी पुत्री कही। मेरे मनमें सोई रही॥ ताते पुत्री उपजी आइ करिहैं पुत्र ताहि हरि गइ॥ हरि ता पुत्रीसों सुत करचो। नाम सुद्युम्न ताहि ऋषि धरचो॥ एक दिवस सु अखेटक गयो। जाइ अंबिका वन तिय भयो॥ बुधके आश्रम सो पुनि आयो। तासों गंधर्व व्याह करायो॥ बहुरिएकपुत्रतिन जायो। नाम पुरूरवाताहि धरायो॥ पुनि सुद्युम्न वशिष्ठसों कह्यो। अंबा वनमें तिय ह्वैगयो॥ ऋषि शिवसों बहु विनती करी। तब शिव यह वाणी उच्चरी॥ एक मास यह ह्वैहै नारि। द्वितीय मास पुरुषआकारि॥ तब सुद्युम्न अपने गृह आयो। राज समाज माहिं सुख पायो॥ तीनि पुत्र तिन और उपाए। दक्षिण राज्य करन सु पठाए॥ दश सुत ताके उपजे और। भयो इक्ष्वाकु सबन शिरमौर॥ सूरजवंशी सो कहवायो। रामचन्द्र ताही कुल आयो॥ सोमवंश पुरूरवासों भयो॥ सकल देश नृप ताको दयो॥ तिहि वंश लियो कृष्ण अवतार। असुर मारि कियोसुरन उद्धार॥ कहिहौं कथा सुकरि विस्तार। पुरूरवा कथा सुनो चितधार॥ पुरूरवागेह उर्वशीआई। मित्रवरुनते शापहिं पाई॥ नृपति देखि तेहि मोहित भयो। तिन यह वचन नृपतिसों कह्यो॥ विन रतिकाल नग्न नहिं होवहु। मम मेंढनिको कहूँ न खोवहु॥ तबलों मैं तुमरोसँग करौं। वचन भंग भयेते परिहरौं॥ नृपति कह्यो तुम कह्यो सु करिहौं। तुमरी आज्ञा मैं अनुसरिहौं॥ तासों मिलि नृप बहु सुख माने। षष्ट पुत्र तासों उतपाने॥ सुरपुरसों गंधर्व पुनि आयो। उर्वशीसों यह वचन सुनायो॥ अब तुम इंद्रलोकको चलो। तुम विनु सुरपुर लगत न भलो॥ तिन उर्वशी कह्यो या भाइ। छल बल करिसको तो लेजाइ॥ मम चलिवेको यहै उपाव। छल करि मेंढनि

नभ लै जाव ॥ गंधर्व मेढनि नभ ले धाए । सोवत नृप उरवशी जगाए ॥ मम मेढनिको ले गयो कोई । देखो तुम पुरुपे तिहिं जोई ॥ अर्ध निशा नृप ताको धायो । पै मेढनिको कहूँ न पायो॥ इत उत देखि नृपति जव आयो । तव उरवशी यह वचन सुनायो ॥ राजा वचन तुमारो टरचो । ताते मैं तुमको परिहरचो ॥ यह कहिकै सो चली पराय । जैसे तडित अकासै जाय ॥ताकेविरह नृपति वहु तयो । नग्न नग्न ता पाछे धयो ॥ भ्रमत भ्रमत नृप वहु श्रम पायो । वहुरो कुरुक्षेत्रमें आयो ॥ तहां उरवसी सखिन समेत । आइगई सुस्नानके हेत ॥पै उनको कोउ देखै नाहिं । उनको सकल लोक दरशाहिं ॥उरवशीसों तिलोत्तमा कह्यो । कौन पुरुप तुम भुवमें लह्यो ॥ ताके देखनकी मोहिं चाह ।कह्यो पुरुप वह ठाढो आह ॥ नृपको देखि सु विस्मय भई। कह्यो विरह तोहिं नृपसुधि गई ॥ वहुत दुखित है तेरे नेह ।एक वेर इहि दरशन देह ॥ तिन माया आकर्षण करी ।तव वह दृष्टि नृपतिकी परी ॥ राजा निरखि प्रफुल्लित भयो ।मानो मृतक वहुरि जिय लह्यो ॥ उरवशीनिकट नृपति चलिआयो । करि विनती यह वचन सुनायो ॥ तैं मोको काहे विसरायो । मैं तुम विन वहुतै दुख पायो॥तुम विन भूख नींद नहिं आवै । पल पल युग सम मोहिं बिहावै॥मेरे गेह कृपा करि चलो।वाही विधि मोसों हिल मिलो॥कह्योनेहहमकामसोंआ-हि ।विना काम हमरे नहिं चाहि ॥हमसों सहस वरस हित धरे।हमतिहिको छिनमेंपरिहरे॥विन अपराध पुरुप हम मारे । माया मोह न मनमें धारे॥हमें कहो केतो किन कोई । चाहें करन करें हम सोई ॥ नृप पुनि विनती वहु विधि करी । तव उरवशी वात उचरी ॥वर्ष सातवीतेहौंऐहौं। एक रात्रि तोको सुख देहौं॥वर्ष सप्त वीते सो आई ।नरपतिसोंमिलिरैनविताई॥प्रातहोतचलिबे-को चलो।तव राजातासों यों कलो॥तू मोको छांडि कित जात।मोको तुम विनु छिन न विहात ॥ जव या भांति नृपति वहु कह्यो । तप उरवशी यह उत्तर दयो ॥यहतो होनहार है नाहीं।सुरपुर छांडि रहौं भुव माहीं ॥ जो तुम मेरी इच्छा धरो ॥ गंधर्वनीके हित तप करो॥तप कीनेसे देहैं आग ।ता सेती तुम कीजो जाग॥यज्ञ किये गंधर्वलोक सिधैहो। तहां आइ मोको तुम पैहो॥ नृप यज्ञ करि ता लोक सिधायो । मिलि उरवशी वहुत सुख पायो ॥ जव या विधि वहु काल वितायो । तव वैराग्य नृपति मन आयो ॥वहुते काल भोग मैं कीए। पै संतोप न आए हीए॥श्री नारायणको विसरायो । विपय हेत सव जन्म गँवायो ॥ याविधि जव विरक्त नृप भयो ।छांडि उरवशी वनको गयो ॥ वनमें जाइ तपस्या करी । विपय वासना सव परिहरी॥ हरिपदसों नृप ध्यान लगायो । मिथ्या तनुको मोह भुलायो ॥ हरि व्यापक सव जगमें जान।हरिप्रसाद पायो निर्वान ॥ ताते वुधि त्रियसे गति तजे ।श्रीनरायणको नित भजे॥शुक जैसे नृपको समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १ ॥च्यवनऋषि कथा वर्णन ॥ राग बिलावल॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राव ।जैसो है हरिभक्त प्रभाव॥हरिको भजन करे जो कोई ।जग सुख पाइ मुक्ति फल सोई॥ च्यवन ऋपीश्वर वहु तप कियो ।तासम और जगत नहिं वियो ॥ वांमी ताको लियो छिपाई। तासों ऋषि नहिं दई दिखाई ॥ ता आश्रम सरजात नृप गये । तहांजाइके डेरा दये ॥ छांडि तहीं सव राज समाज । राजा गयो अखेटक काज ॥ नृपकन्या तहँ खेलन गई । ऋपि दृग चमकत देखत भई ॥ पै तिहि ऋपि दृग जाने नाहिं । खेलत शूल दये तेहि माहिं ॥ रुधिर धार ऋपि आँखिन ढरी । नृपकन्या सु देखि तव डरी ॥ शूल व्यथा सव लोगन भई । राजा कह्यो कहा भइ दई ॥तहँके वासी नृपति वुलाये ।वूझो तव तिन कह्यो

बुझाय॥च्यवन ऋषि आश्रम है इहां राई। करौ बीनती उनसों जाई॥ नृप खोजत ऋषिआश्रम आयो। ऋषि दृग देखत बहुत डरायो॥ कह्यो कियो किन ऐसो काज। कन्या कह्यो सुनौ महाराज॥ मोते बिन जाने यह भई। ऋषिके दृगनि शूल ह्वै दई॥नृप मनही मन बहु पछितायो। ऋषिसों पुनि यह वचन सुनायो॥ महाराज तुम तो हौ माया। मम कन्याते भयो अपराध॥ या कन्याको प्रभु तुम वरो। कष्ट शूल कृपा करि हरो॥ लोग सकल नीको जब भयो। नृप कन्या दै गृहको गयो॥ ऋषि समाधि हरि चरण लगाई। कन्या ऋषी चरण रत लाई॥ सुरपति ताके रूप लुभायो। बहुरि कुबेर तहां चलि आयो॥पै तिहिं दिशि तिन देख्यो नाहीं। गये रिसाय दोऊ मन माहीं॥ चौदह वर्ष भये यह भाई। तब ऋषि देख्यो शीश उठाई॥हाडचाम तनु पर रहि गये। कृपावंत ऋषि तापर भये॥ असुनी सुत यहि अवसर आयो। करि प्रणाम यह वचन सुनायो॥ जोकछुआज्ञामोकोहोई।छांडि विलंब करौ अब सोई॥कह्यो दृगनिकोकरो उपाय। तुरत नेत्र तिन दिये बनाय॥ कह्योमैंयज्ञभाग नहिंपावत। वैद्यजानिमोहिंसुरबहरावत॥ ऋषि कह्यो मैं करिहौं जहां जाग। देहों तोहिं अवश करि भाग॥नृपकन्यासों ऋषि सो कह्यो॥ तुहि ऊपर प्रसन्न मैं भयो॥ यद्यपि कछु इच्छा नहिं मेरे। तदपि उपाय करौं हित तेरे॥ दोउ मिलि तीरथ माहिं अन्हाये। सुन्दर रूप दुहू जन पाये॥दासी सहस प्रगट तहां भई।इन्द्रलोक रचना ऋषि ठई॥ तियको सुख ऋषि बहु विधि दियो। तासु मनोरथ पूरणकियो॥तवसरजात रानीसों कही। जबते कन्या ऋषिको दई॥ तबते सुधि कछु नाहीं पाई। बिनु प्रसंग तहां गयो न जाई॥ यज्ञारंभ नृपति तह गयो। देखि ऋषाश्रम विस्मय भयो॥ कह्यो यह विभव कहांते आई। किन यह ऐसी बनन बनाई॥ इहि अंतर नृप कन्या आई। पिता देखि मिलिबे को धाई॥ नृप ताको आदर नहिं दियो। तै यह कौन कर्म है कियो॥ वृद्ध ऋषीश्वरको कहा भयो। कुल कलंक तैं किहि मिलि लयो॥ कह्यो योगबल ऋषि सब कीनो। मुहि सुख सकल भांति करि दीनो॥ नृप प्रसन्न हो ऋषिपै आए। यज्ञ प्रसंग कहिकै गृह लाए॥रानी सुता देखि सुख मान्यो। धन्य जन्म करि अपनो जान्यो॥च्यवननृपतिको यज्ञ करवायो। अश्विनीसुत हित भाग उठायो॥ इन्द्र कोप है ऋषिसो कह्यो। ताहि भाग तुम काहे दयो॥ पुनि मारनको वज्र उठायो। पै ऋषिको मारन नहिं पायो॥इन्द्र हाथ ऊपर रहि-गयो। तिन कह्यो दई कहा यह भयो॥ कह्यो सुरन तुम ऋषिहिं सतायो। ताते कर रहिगयो उँचायो॥इन्द्र विनय ऋषिसों बहु करी। तब ऋषि कृपा ताहि पर धरी॥ सुरपति कर जब नीचे आयो। अश्विनीसुत बलि सुरमें पायो॥ऐसो हरिको भक्त प्रभाव।वरनि कह्यो मैं तुमसों राव॥हरि-की भक्ति करे जो कोई। दुहू लोकको सुख तेहि होई॥शुक ज्यों नृपसों कहि समुझायो। सूरदास त्योंहीं कहि गायो॥ २ ॥हलधर विवाह कथा वर्णन। रागभैरों॥ द्वारावति पति रैवत राजा।तासम जग दुतिया न विराजा॥ताग्रह जन्मरेवती लयो।ताको लैसुब्रह्मपुर गयो॥विधि तिहि आदर दै बैठायो। तब नृप मनमें अति सुख पायो॥ इहां देखि अप्सरा अखारा। नृप कछु नही वचन उचारा॥जब अप्सरा नृत्य करि रही। तब राजा ब्रह्मासों कही॥मम पुत्री वर प्रापति आहि। आज्ञा होइ देउँ तेहि व्याहि॥ ब्रह्मा कह्यो सुनो नरनाह। ते नृप तो अब जगमें नांह। हल-धरको तुम देहु विवाह।व्याह योग अब सोई आह॥रैवत व्याह कियो जग आइ।आप कियो तप बनमें जाइ॥ हलधर व्याह भयो या भाइ। सूरदास जन दियो सुनाइ॥३॥राजा अंबरीषकविध,

१७ बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि पद अंबरीप चित लायो । ऋपिशरापते ताहि बचायो ॥ ऋपिको तापै फेरि पठायो । शुक नृपको यो कहि समुझायो ॥ अंबरीप राजा हरिभक्त । रहे सदा हरिपद अनुरक्त॥ श्रवणकीरतन सुमिरनकरैपद सेवन अचरन उर धरै॥ बदनदासीपन सो करै। भक्तनशिष्यभाव अनुसरै ॥ कायनिवेदन सदा उचारै । प्रेम सहित नवधा विस्तारै ॥ नवमी नेम भली विधि करे । दशमीको सयम विस्तरै॥ एकादशी करै निरहार । द्वादशी पोपै ले आहार॥पतिव्रता वा नृपकी नारी । अहनिशि नृपकी आज्ञाकारी । इन्द्री सुखको दोऊ त्याग॥ धरैं सदा हरिपद अनुराग। ऐसीविधि हरिपूजै सदा ॥ हरि हित लावै सब संपदा ॥ राजकाज कछु मन नहिं धरै । चक्र सुदर्शन रक्षा करै ॥ घटिका दोइ द्वादशी जान । ऋपि आयो नृप कियो सन्मान॥ कह्यो भोजनकीजै ऋपिराई । ऋपिकह्यो आवतहो मे न्हाई ॥ यह कहिकै ऋपि गये अन्हान । काल बितायो करत अस्नान॥ राजाकहै कहा अब कीजे । द्विजन कह्यो चरणोदक लीजे॥ राजा तब करि देख्यो ज्ञान। याविधिहोइ न ऋपिअपमान ॥ लेचरणोदक निजव्रतसाध्यो । ऐसीविधि हरिको अवराध्यो॥इहिअंतरदुर्वासा आए । अंबरीपसो वचन सुनाये॥ सुन राजा तेरो व्रत टरो । क्यो कर तेरे भोजन करो ॥ कह्यो नृपति सुनिये ऋपिराई । मैं व्रत हित यह कर्यो उपाई ॥ चरणोदक लै व्रत प्रतिपार्यो। अबलौ अन्न मुखमें डार्यो ॥ऋपिकरि क्रोध इक जटाउपारी। सोकृत्याभइज्वाला भारी। जब नृप ओर दृष्टि उन करी । चक्र सुदर्शन सो सहरी ॥ पुनि ऋपिहूको जारनलाग्यो । तबऋपि आपन जिय लै भाग्यो ॥ ब्रह्मा रुद्र लोकहू गयो । उनहूं ताहि अभय नहिं दयो॥बहुरो ऋपि वैकुंठ सिधायो । करि प्रणामयह वचनसुनायो ॥ मै अपराध भक्तकोकीनो । चक्र सुदर्शनअति दुख दीनो॥ औरकहूं मैं ठौर न पायो । अशरणशरण जानिकै आयो ॥ महाराज अबरक्षाकीजै। मोको जग्त राखि प्रभु लीजे॥ हरि जू कह्यो सुनो ऋपिराई । मोपै तुहि राख्यो नहिं जाई ॥ तैं अपराध भक्तको कीन । मै निज भक्तनके आधीन ॥ मम हित भक्त सकल सुख तजैं । और सकल तजि मोको भजें ॥ बिन मम चरण न उनकेआशा । परमदयालु सदा मम आशा॥ उनके मन नाही शत्राई । ताते कहो उन्हीपै जाई॥ तुमको लेहे वेड बचाई । नाही या बिन और उपाई ॥ इहां राजा अतिही दुख लयो । ऋपि मम द्वारेते फिरि गयो ॥ ऋपिमग जोवत वर्ष बितायो। पै भोजन तौहू न सिरायो ॥ अंबरीप पै तब ऋपि आयो । हाथ जोरि पुनि शीश नवायो ॥ ऋपिहि देखि नृप कह्यो या भाई । लेहु सुदर्शन याहि बचाई ॥ ब्राह्मण हरि हरि भक्त पियारो। ताते अब याको मति जारो ॥ चक्र सुदर्शन शीतल भयो । अभयदान दुर्वासा लह्यो ॥ पुनि नृप तिहिं भोजन करवायो ।ऋपि नृपसो यह वचन सुनायो॥ मैनहिं भक्तमहातम जान्यो । अबते भली भांति पहिचान्यो॥जोयह लीलासुनै सुनावै। सो हरिभक्ति पाइसुखपावै॥ शुक राजासो ज्यो समझायो । सूरदास त्योही करिगायो॥४॥राग गूजरी॥फिरत फिरत बल हीन भयो । कहा करो या त्रास कृपानिधि जप तपको अभिमानगयो॥धायो धर शर शैल विदिशि दिशि तहां चक्रहू चाहि लयो।जासेशिवविरंचि सुरपतिसब काहू नेकन शरनदयो॥भाज्योफिर्यो लोक लोकनमें पत्र पुरातन पवन हयो । सूरदास मुनि दीन जानि प्रभुतब निजजनसन्मुखपठ्यो ॥५॥सौभरि ऋषि कथा वर्णन॥ रागबिलावल ॥शुकदेव कह्यो सुनोहो राव। जैसो है हरिभक्त प्रभाव ॥ हरिको भजन करै जो कोई ।जग सुख पाइ मुक्ति लहै सोई॥सौभरिऋपि यमुनातट गयो। तहां

मच्छ इक देखत भयो ॥ सहित कुटुंब सो क्रीडा करै । अति उत्साह हृदयमें धरै ॥ ताहि देखिकै ऋषिमन आई । गृहआश्रम है अति सुखदाई ॥ तपतजिकै गृह आश्रम करौं । कन्या एक नृपतिकी वरौं ॥ कह्यो मान्धातासों जाइ । पुत्री एक देहु मोहिं राइ ॥ नृप कह्यो देखि वृद्ध ऋषि देह । है पचास पुत्री मम गेह ॥ अंतःपुर भीतर तुम जाउ । वरै तुम्हें सो देहुँ विवाहु ॥ तव ऋषि मनमें करै विचार । वृद्ध पुरुषको वरै न नार ॥ तप वल कियो रूप अति सुन्दर । गयो सु तहाँ जहाँ नृपमन्दिर ॥ सव कन्या साँभरिको वरयो । ऋषि विवाह सवहिनसो करयो ॥ ऋषि तिनके हित गेह वनाये ॥ तिनके भीतर वाग लगाये ॥ भोगमसग्री भरे भंडार । दासी दास गनत नहिं पार ॥ ऋषि नारी मिलि वहु सुख पाये । सहस पचास पुत्र उपजाये ॥ तिनके वहुत भये संतान । कहँलौं तिनको करौं वखान ॥ वहुतकाल या भांति वितायो । पै ऋषि मन सतोष न आयो ॥ कह्यो विषयते तृप्ति न होय । केतो भोग करौ किन कोय ॥ या विधि जव उपज्यो वैराग । तव तप करि कीन्यो तनु त्याग ॥ सव नारिन सहगामिनि कियो । हरिजू तिनको निजपद दियो ॥ ताते वुध हरिसेवा करै । हरि चरणन नितही चित धरै ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो ॥ सूरदास त्योंही कहि गायो ॥६॥ श्रीगंगा भुवलोक आगमन कथा ॥ राग भैरों ॥ शुकदेव कह्यो सुनौ नरनाह । गंगा ज्यों आई जग मांह ॥ कहौं सु कथा सुनौ चित लाई । सुनै सु भवतरि सुरपुर जाई ॥ शतमों यज्ञ सगरजव ठयो । इन्द्र अश्वको हरि लै गयो ॥ कपिलाश्रम लै ताको राख्यो । सगरसुतन तव नृपको भाष्यो ॥ हम सव लोक माहिं फिरि आये । हयके खोज कहू नाहिं पाये ॥ आज्ञा होइ जाहिं पाताल । जाहु तिन्हैं भाष्यो भूपाल । तिनके खोदे सागर भये । कपिल आश्रम ते पुनि गये ॥ अश्व देखि पह्यो धावहु धावहु । भागि जाहि मति विलम लगावहु ॥ कपिल कुलाहल सुनि अकुलायो । कोपदृष्टि करि तिन्ह जरायो ॥ सगर नृपति जव यह सुधि पाई । अंशुमानको दियो पठाई ॥ तिन कपिलस्तुति वहु विधि कीनी । कपिल ताहि यह आज्ञा दीनी ॥ यज्ञ हेतु अश्व यह लेहु । भ्रात तुमारे भये जु खेहु ॥ सुरसरि जव भुव ऊपर आवै । उनको अपनो जल परसावै ॥ तवही उन सवकी गति होई । ता विन और उपाय न कोई ॥ अश्व लाइ यज्ञ पूरण कियो । अंशुमान राजा पुनि भयो ॥ अंशुमान पुनि राज विहाई । गंगाहेतु कियो तप जाई ॥ याही विधिदिलीप तव कीनो । पैगंगाजू दरस न दीनो ॥ भागीरथ जव वहुतप कियो । तव गंगाजू दर्शन दियो ॥ कह्यो मनोरथ तेरो करौं । पै मैं जव अकाशते परौं ॥ मोको कौन धारना करै । नृप कह्यो शंकर तुमको धरै ॥ तव नृप शिवकी सेवा कीनी । शिव प्रसन्न ह्वै आज्ञा दीनी ॥ गंगासों नृप जाइ सुनाई । तव गंगाजू भुवमें आई ॥ साठ सहस्र सगरके पुत्र । कीने सुरसरि तुरत पवित्र ॥ गंग प्रवाह माहिं जु अन्हाई । सो पवित्र ह्वै हरिपुर जाई ॥ गंगा इहिविधि भुवपर आई । नृप मैं तुमसो भाषि सुनाई ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥७॥ श्रीगंगा विष्णुपादोदककी स्तुति वर्णन ॥ राग विलावल ॥ हरिपद कमलको मकरंद । मलिन मति मन मधुप परिहरि विषय नीरस फंद ॥ परम शीतल जानि शंकर शिर धरयो तजि चंद । नाक सरससु लैन चाहो सुरसरीको विंद ॥ अमृतहूते अमल अति गुण स्रवति निधिआनंद । सूर तीनों लोक परस्यो सुर असुर जस छंद ॥८॥ राग भैरों ॥ जय जय जय जय माधव वेनी । जगहित प्रगट करी करुणामय अगतिनको गति देनी ॥ जानि कठिन कलि काल कुटिल नृप संग सजी अघ सेनी । जनु ता लगि तरवार त्रिविक्रम धरिकरि कोपउपेनी ॥ मेरु मूठि वर वारि पाल क्षिति वहुत वित्तकी लेनी । शोभित अंग तरंग त्रिसंगम धरी धारअति

पैनी ॥ दरशनहूं नाश यम सेनिके जिमि नेह बालक सैनी।एके नाम लेत सब भाजे पीर सुभूमि रसैनी ॥ जा जल युद्ध निरखि सन्मुख ह्वै सुन्दर सैना वेनी। सूर परस्पर करत कुलाहल गर मृगपहरावैनी ॥ ९॥ राग बिलावल ॥ गग तरग बिलोकत नैन। अति पुनीत विष्णु पादोदक महिमा निगम पढ़त गुन चैन॥परम पवित्र मुक्तिकी दाता भागीरथी भई वर दैन।द्वादशवर्ष सेये निशि वासर तब शकर भापी है लैन॥ त्रिभुवन हार सिंगार भगवती सलिल चराचर जाके ऐन। सूरजदास विधाताके तप प्रगट भई सतन सुख देन ॥ १०॥ परशुराम अवतार वर्णन। राग बिलावल ॥ ज्यो भयो परशुराम अवतार। कहौ सु कथा सुनो चितधार ॥ सहसबाहु रविबंशी भयो ।सरिता तिर इक दिन सो गयो॥निज भुजबल तिन सरिता गही।नढिगयो जल तब गवणनृपकही। तुम हमसो करो लराई।कह्यो करी मध्यान विताई॥बहुरो क्रोधवतयुधछ्यो।सहसवाहुतवताकोगह्यो ॥ बहुरो नृप करिकै मध्यान।दीनो ताको छांडि निदान॥फिर नृप जमदग्न्याश्रम आयो।कामधेनुबल करि लै धायो॥परशुराम जब यह सुधि पाई। मारचो ताहि तुरतहि धाई॥तासुसुतनिजमदग्निहि मारचो। परशुराम रेणुका हँकारचो ॥ मार्यो क्षत्री इकइसवार।यो भयो परशुरामअवतार॥शुक नृपसो ज्यो कहि समुझायो।सूरदास त्योही कहि गायो॥११॥ राग धनाश्री ॥परशुराम जमदग्नि-गृह लीनो अवतार। माता ताकी यमुन जल लेन गई इक बार॥ लागी तहां अबार तिहि ऋषि करि क्रोध अपार। परसुरामसो यो कही माको वेगि सहार ॥ औ सुतन तब कही पिता नहिं कीजै ऐसी। क्रोधवत ऋषि कह्यो करौ इनसो हू वैसी ॥परशुराम तिन सबनको मारचो खड्ग प्रहार। ऋषि कह्यो होइ प्रसन्न वर मांगौ देउं कुमार॥परशुराम तब कह्यो यहै वर देहु तात अब। जाने नाहिन मुए फेरिकै जीवै ये सब॥ऋषि कह्यो यह वर दियो मै इनको देहु उठाइ।परशुराम उनको दियो सोवत मनो जगाइ ॥ परशुराम वन गए तहां दिन बहुत लगाये। सहसबाहु तिहि समय जमदगिन आश्रम आए ॥ कामधेनु जमदग्निकी लैगयो नृपति छिनाय। परशुरामसो बोलि ऋषि दियो वृतान्त सुनाय ॥ परशुराम सुनि पिता वचन ताको सहारयो। कामधेनु दई आनि वचन ऋषिको प्रतिपारचो ॥सहसबाहुके सुतन पुनि राखी घात लगाइ। परशुराम जब बन गयो मारचो ऋषिको धाइ ॥ ऋषिकी यह गति देखि रेणुका रोइ पुकारी॥ परशुराम तुम आइ लगत क्यो नही गोहारी॥ यह सुनिकै आगो तुरत मारचो तिन्हें प्रचार। बहुरो जिय धरि क्रोध हति क्षत्री बीसिकवार ॥ जग अराज ह्वै गयो ऋषिन तब अति दुख पायो। लै पृथ्वीको दान ताहि फिर बनहिं पठायो ॥बहुरि राज्य दियोक्षत्रियनि भयो ऋषिन आनद। सूरदासपावत हरप गावत गुण गोविंद ॥ १२ ॥ रामअवतार कारण राग बिलावल ॥हरिहरिहरि हरि सुमिरन करो। हरि चणारविंद उर धरो ॥ जय अरु विजय पार्षद दोइ। विप्र शराप असुर भये सोइ ॥ एक वराह रूप धरि मारचो। एक नृसिंह रूप सहारचो ॥ रावण कुभकर्ण सोइ भये। राम जन्म तिनके हित लए ॥ दरशरथ नृपति अयोध्या राव।ताके गृह कियो आविर्भाव ॥ नृपसो ज्यो शुकदेव सुनायो। सूरदास त्योही कहि गायो ॥ १३ ॥ बालकाड श्रीरामजन्म वर्णन॥ राग कान्हरा ॥ आजु दशरथके आँगन भीर। आए भुव भार उतारन कारन प्रगटे श्याम शरीर ॥ फूले फिरत अयोध्या बासी गनत न त्यागत चीर। परिरम्भण हँसि देत परस्पर आनँद नैननि नीर॥ त्रिदश नृपति ऋषि व्योमनिमाननि देखत रहे न धीर ॥ त्रिभुवननाथ दयालु दरश दे हरी सबनकी पीर ॥ देत दान राख्यो न भूप कछु महा बड़े नग हीर। भये निहाल सूर सब याचक जे याचे

रघुवीर ॥ १४ ॥ अयोध्या बाजत आज बधाई। गर्भ मुच्यो कौशल्या माता रामचन्द्र निधि आई ॥ गावें सखी परस्पर मंगल ऋषि अभिषेक कराई। भीरभई दशरथके आँगन साम वेद ध्वनि गाई ॥ पूछत ऋषिहि अयोध्याको पति कहि हो जन्म गुसांई। बुद्धवार नौमीतिथि नीकी चौदह भुवन बड़ाई ॥ चारि पुत्र दशरथ के उपजे तिहू लोक ठकुराई। सदा सर्वदा राज रामको सूर दादि तहँ पाई ॥ १५ ॥ रघुकुल प्रगटे है रघुवीर। देश देशते टीका आयो रतन कनक मनि हीर ॥ घर घर मंगल होत बधाई अति पुरवासिन भीर। आनँद मगन भये मन डोलत कछु न शोध शरीर ॥ मागध वंदी सूत लुटाए गउ गयंद हय चीर। देत अशीश सूर चिरजीयो रामचन्द्र रणधीर ॥ १६ ॥ शरक्रीडा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ करतल शोभित बान धनुहियां। खेलत फिरत कनकमय आँगन पहिरे लाल पनहियां ॥ दशरथ कौशल्याके आगे लसत सुमनकी छहियां। मानो चारि हंस सरवर ते बैठे आइ सदहियां ॥ रघुकुल कुमुद चंद चिंतामणि प्रगटे भूतल महियां। यह देन आए रघुकुलको आनँद निधि मन गहियां ॥ य सुख तीन लोकमें नाहीं जो पाए प्रभु पहियां। सूरदास हरि बोलि भगतको निरवाहत गहि बहियां ॥ ॥१७॥ राग बिलावल ॥ धनुही बान लये कर डोलत। चारों वीर संग इक सोहत बचन मनोहर बोलत लछिमन भरत शत्रुघन सुंदर राजिवलोचन राम। अति सुकुमार परम पुरुषारथ मुक्ति धर्म धन काम ॥ कटि पट पीत पिछौरी बांधे काग पच्छ धरि शीश। शर क्रीड़ा दिन देखत आवत नारद सुर तेतीस ॥ शिवमन शोच इन्द्रमन आनँद सुख दुख ब्रह्म समान ॥ दिति दुर्बल अति अदिति हृष्ट चित देखि सूर सधान ॥ १८ ॥ विश्वामित्र यज्ञ रक्षा ताड़का वध सीतास्वयंवर। वन। ॥ राग सारंग ॥ दशरथसों ऋषि आनि कह्यो। असुरनसों यज्ञ होन न पावत राम लछन तब संग दयो ॥ मारि ताड़का यज्ञ करायो विश्वामित्र आनंद भयो। सीय स्वयंवर जानि सूर प्रभुको ऋषि लै ता ठौर गयो ॥ १९ ॥ सीता पतिदर्शन ॥ राग बिलावल ॥ देखनको मंदिरआनिचढी। रघुपति पूरनचंद विलोकत मानो उदधि तरंग बढी॥ पिय दरशन प्यासी अतिआतुर निशि वासर गुन आन रढी। तजि कुलकानि पीय मुख निरखत शीश नाइ आशीशपढी ॥ भई देहजोसिहकरम-वश ज्यों तट गंगा अनल ढढी। सूरदास प्रभु दृष्टि सुधानिधि मानो फेरि बनाइ गढी ॥ २० ॥ सीता मनोरथ पूर्ण ॥ राग सारंग ॥ चिते रघुनाथ बदनकीओर। रघुपतिसो अब नेमहमारोविधिसो करति निहोर॥ यह अति दुसह पिनाक पिताप्रण राघव वयस किशोर। इनते परिघ धनुष चढिहै क्यों यह सखि संशय मोर ॥ सिय अंदेश जानि सूरज प्रभु लियो करजकी कोर। टूटत धनु नृप झुके जहां तहँ ज्यों तारागण भोर ॥ २१ ॥ दशरथको जनकपुर आगमन रामजूके विवाहहेतु॥ महाराज दशरथ तहँ आये। ठाढे जाय जनक मंदिरमें मोतिन चौक पुराये ॥ विप्र लगे ध्वनि वेद उचारन युवतिन मंगल गाये। सुर गंधर्वगन कौटिक आए गगन विमानन छाये ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन ब्याह निरखि सुख पाये। सूर भयो आनंद नृपतिमन दिवि दुंदुभीबजाए॥ ॥ २२ ॥ कंगना खोलन ॥ राग आसावरी ॥ कर कंपै कंगन नहिं छूटे। राम सुपरस मगन मय कौतुक निरखि सखी सुख लूटे ॥ गावत नारि गारि सब दैदै तात भ्रातकी कौन चलावे। तब कर डोर छुटे रघुपति जू जो कौशल्या माइ बुलावे ॥ पूगीफल युत जल निर्मल धरि आनी भरि कुंडीजु कनककी। खेलत जूप भुवन युवतिनमें हारे रघुपति जीति जनककी ॥ घेरे निशान अजिर गृह मंगल विप्र वेद अभिषेक करायो। सूरअमितआनंदकुशलपुर मोदशुकदेव पुराणनिगायो ॥ २३ ॥

धनुर्भंग पाणिग्रहणलीला ॥ राग नट ॥ ललितगति राजत अति रघुवीर। नरपति सभा मध्य भये ठाढ़े युगल हँसत मतिधीर॥ अलख अनंत अमित महिमाबल कटि कसि रख्यो तुनीर । लघु धनु काकपक्ष शिर शोभित इक इक द्वै द्वै तीर॥ भूषण विविध विशद अंबर युत सुन्दर श्याम शरीर। देखत मुदित चरण परसे सुर व्योम विमानन भीर॥ प्रमुदित जनक निरखि अंबुज मुख विगत नयन मन पीर। तात कठिन प्रण मानि जानि जिय जनकसुता आधीर॥ करुणामय जब चाप लियो कर बाँधि सुदृढ कटि चीर। भुवभृत शीश नमित जु गर्वगत पावक संच्यो नीर॥ डुलत महीधर भौ फनपति चल कूरम अति अकुलान। दिग्गज चलित खलित मुनि आसन इन्द्रादिक भयमान॥ रवि मग तज्यो तरफि ताके इत उत पथ गए कीआन॥ शिव विरंचि व्याकुल भये ध्वनि सुनि जब तोरचो भगवान॥ भनन शब्द प्रगटित अति अद्भुत अष्टदिशा नभ पूर। श्रवन हीन सुनि भये अष्टकुल नाग वगरि भय चूर॥ अष्ट श्रवण पूरित ब्रह्मा सुनि सदा सुभट बड भूर। मोहित सकल सयान जानि जिय महाप्रलयको पूर॥ पाणिग्रहण रघुवर वर कीनो जनकसुता सुख दीन। जय जय धुनि सुनि करत अमरगन नरनारी लवलीन॥ दुष्टन दुष्ट संत संतनको नृप व्रत पूरण कीन॥ रामचंद्र दशरथहिं विदा करि सूरदास आधीन॥२४॥ जनक दशरथ रामजी सीता समेत विदा करन।राग सारंग॥ दशरथ चले अवध आनन्दत। जनकराइ बहु दाइज देकरि बार बार पद वंदत॥ तनया जामातनिको समुदत नैन नीर भरि आए। सूरदास दशरथ आनन्दित चले निशान बजाए॥ २५ ॥ मार्गविषे परशुरामको रामजीसों मिलाप परस्पर विवाद ॥ परशुराम तेहि अवसर आयो । कठिन पिनाक कह्यो किन तोरचो क्रोधवंत यह वचन सुनायो ॥ विप्र जानि रघुवीर धीर दोउ हाथ जोरि शिर नायो। बहुत दिननको हुतो पुरातन हाथ छुअत उठि आयो ॥ तुम तौ द्विज कुलपूज्य हमारे हम तुम कौन लराई। क्रोधवंत कछु सुन्यो नहीं लयो सायक धनुप चढाई॥ तबहू रघुपति क्रोध न कीनो धनुप बान संभारचो । सूरदास प्रभु रूप समुझि पुनि परशुराम पगधारचो॥ २६॥ अवधपुरी प्रवेश । राग सारंग॥ अवधपुर आए दशरथ राइ। राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन शोभित चारो भाइ॥ घुरत निसान मृदंग शंख ध्वनि भेरे झांझ सहनाई उमँगे लोग नगरके निरखत अतिसुख सबहिन पाइ॥ कौशल्या आदिक महतारी आरति करति बनाइ यह सुख निरखि मुदित सुर नर मुनि सूरदास बलि जाइ ॥ २७ ॥ दशरथ विचार रामजीको राज्य दे आप वन गमन, कैकेयी विनती, भरत राज ॥ महाराज दशरथ मन धारी। अवधपुरीको राज राम दे लीजे व्रत वनचारी॥ यह सुनि बोली नारि केकई अपनो वचन सँभारो। चौदह वर्ष रहें वन राघव छत्र भरत शिर धारो॥ यह सुनि नृपति भयो अतिव्याकुल कहत कछू नहिं आई।सूर रहे समुझाइ बहुत पै कैकयि हठ नहिं जाई॥ २८ ॥ दशरथ कौशल्याविनय ।राग कन्हरा ॥महाराज दशरथ पुनि सोचत। हा रघुपति लछिमन वैदेही सुमिरि सुमिरि गुण रोवत॥ त्रियचरित्र मय मत्त न समुझत उठि पखाल मुख धोवत । महा विपरीत रीति कछु औरै बार बार मुख जोवत ॥ परम कुबुद्धि कह्यो नहिं समुझत राम लषन हँकराये । कौशल्या अति परम दीन ह्वै नैन नीर भरि आये॥ विह्वल तन मन चकित भई सुनि सो प्रतच्छ सुपनाये। गदगद कंठ भूप कोसलपुर शोर सुनत दुख पाये ॥ २९ ॥दशरथ पश्चात्ताप कैकेयी प्रति वचन ॥ फिरि फिरि नृपति चलावत बात । कहो सुमति कहा तोहिं पलटी प्राण जीवन कैसे बन जात॥हाहा राम लक्ष्मण अरु सीता फल भोजन जु डसावे पात।है वियोग

शिर जटा धरें द्रुम चर्म भस्म सब गात॥ बिन रथ रूढ दुसह दुख मारग बिन पदत्रान चलें दोउ भ्रात।एहिविधि सोच करत अतिही नृप जानकि ओर निरखि बिलखात॥ इतनीसुनत सिमिटि सब आये प्रेम सहित धारे अश्रुपात । तादिन सूर शहर सब चक्रत सब रस नेह तज्यो पितु मात ॥ ३० ॥ कैकयी बचन राम प्रति। राग सारंग ॥ सकुचनि कहत नहीं महाराज। चौदह वर्ष तुम्हें बन दीनो मम सुतको निज राज॥ तब आयसु शिर धरि रघुनायक कौशल्या ढिग आए। शीश नाइ बन आज्ञा माँग्यो सूर सुनत दुख पाये ॥ ३१ ॥ राम जू प्रति दशरथ विलाप ॥ रघुनाथ पियारे आजु रहो हो । चारि याम विश्राम हमारे छिन छिन मीठे वचन कहो हो॥वृथा होइ वर वचन हमारो री कैकयी जीव कलेश सहो हो । आतुरह्वैअवछांडिकुशलपुरप्राणजिवन कित चलन कहो हो ॥ बिछुरत प्राण पयान करेंगे रहो आजु पुनि पंथ गहो हो । अब सूरज दिन दर्शन दुर्लभ कलपि कमल कर कंठ गहो हो ॥३२॥ राग गूजरी॥श्रीराम जू वचन जानकी प्रति॥ तुम जानकी जनकपुर जाहु। कहां आनि हम संग भरमिहो बन दुख सिंधु अथाह ॥ तजि वह जनकराज भूषण सुख कत तृण तलप विपिन फल खैहो । श्रीपम कमलवदन कुम्हिलैहै तजि सर निकट दूर कित न्हैहो ॥ जिन कछु वृथा सोच मन करिहौ मातु पिता सुख देहो । तुम फिरि रहौ संग में तेरे जो बन बसि पछितैहो॥होनी होइ कर्मकृत रेखा करिहौ तासु वचन निरबाहु।सूर सत्य जो पतिव्रत राखो तौ उठि संग चलौ जिन जाहु ॥ ३३ ॥ जानकी वचन श्रीराम जू प्रति राग केदारा ॥ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई । तुमसों तजि प्रभु मोसी दासी अनत न कहूं समाई ॥ तुमरो रूप अनूप भानु ज्यों जब नैननि भरि देखौं।ता छिन हृदय कमल परफुल्लित जन्म सफल करि लेखौं ॥ तुमरे चरनकमल सुखसागर यह व्रत हौं प्रतिपलिहौं। सूर सकल सुख छांडि आपनो बन बिपदा सँग चलिहौं ॥ ३४ ॥ श्रीराम वचन लक्ष्मण प्रति बिदा करन हेतु । राग गूजरी ॥ तुम लछमन निज पुरहि सिधारो। बिछुरन भेंट देहु लघु बंधु जियत न जैहै शूल तुम्हारो॥यह भावी कछु और काज है सो को जो याको मेटनहारो॥तुम मति करो अवज्ञा नृपकी यह दूषण तो आगे भारो॥याको कहा परेखो हरषो मधु छीलर सरितापति खारो । सूर सुमित्रा अंक दीजियो कौशल्या परणाम हमारो ॥ ३५ ॥लक्ष्मण संग ले ॥ राग सारंग, लछमन नैन नीर भरि आयो । उत्तर कहत कछू नहिं आयो रह्यो चरण लपटायो॥ अंतर्यामी प्रीति जानिके लक्ष्मण लीनो साथ।सूरदास रघुनाथ चले वन पितावचन धरि माथ ॥ ३६ ॥ अहल्या तरन । राग सारंग॥ गंगातट आए श्रीराम । तहँ पाषाण रूप पग परसे गौतम ऋषिकी वाम ॥ गई अकास देव तनु धारिके अतिसुन्दर अभिराम। सूरदास प्रभु पतित उधारन बिरद कितक यह काम ३७ ॥ लक्ष्मण केवट संवाद ॥ राग मारू ॥ रे भैया केवट लै उतराई । रघुपति महाराज इत ठाढे तैं कित नाव दुराई॥अबहिं शिलाते भई देव गति जब पगरेणु छुआई। हौं कुटुंब काहे प्रतिपारौं वैसी यह है जाई॥जाके चरन रेणुकी महिमा सुनियतु अधिक बडाई। सूरदास प्रभु अगनित महिमा वेद पुराननि गाई ॥ ३८ ॥ केवट बिनय॥ राग बान्हरा ॥नवका नाहीं हौं लै आऊं । प्रगट प्रताप चरणको देखों ताहि कहां लौं गाऊं॥ कृपासिंधुपै केवट आयो कंपत करत जु बात । चरण परसि पाषान उडतहै मति मेरी उडिजात ॥ जो यह बधू होय काहूकी दार स्वरूप धरे। छूटे देह जाइ सरिता तजि पगसों परस करे ॥ मेरी सकल जीविका यामें रघुपति मुक्ति न कीजे। सूरजदास चढो प्रभु पाछे रेणु पखारन दीजे ॥ ३९ ॥ केवट वचन राम-

मति। राग रामकली ॥ मेरी नवका जिन चढौ त्रिभुवनपति राई। मो देखत पाहन उडे मेरी काठ कि नाई ॥ में खेवीही पारको तुम उलटि मँगाई।मेरो जिय योंहीं डरे मति होहि शिल्हाई॥ मैं निर्बल मेरे बलनहीं जो और गढ़ाऊँ। मेरो कुटुँब माहीं लग्यो ऐसी कहां पाऊँ॥ मैं निर्धन मेरे धन नहीं परिवार घनेरो। सेमर ढाक पलास काटि बांधो तुम वेरो ॥ बार बार श्रीपति कहे केवट नहिं मानै। मन परतीति न आवै उडतीही जाने ॥ नियरे हीं जल थाह है चलो तुमैं बताऊँ। सूरदासकी वीनती नीके पहुँचाऊँ ॥ ४० ॥ पुरवासी वचन जानकी प्रति ॥ सखीरी कौन तिहारी जात। राजिव नैन धनुष कर लीने बदन मनोहर गात॥लज्जित रही पर-वधू पूँछें अंग अंग मुसक्यात। अति मृदु वचन पंथ वन बिहरत सुनियतअद्भुतबात ॥ सुन्दर नैन कुँवर सुन्दर दोउ सूर किरन कुम्हिलात।देखिमनोहर तीनों मूरति त्रिविधि ताप तनुजात॥ ॥४१ ॥ सीता सैन,पति जतावन। राग धनाश्री ॥ कहि धौं सखी बटोही को हैं। अद्भुत वधू लिये संग डोलत देखत त्रिभुवन मोहैं॥ परम सुशील सुलक्षण जोरी विधिकी रची न होई। काकी अब उपमा यह दीजै देह धरे धौं कोई ॥ यहिमें को पति त्रिया तुम्हारो पुरंजन पूछें धाई। राजिवनैन सैनकी मूरति सैनन माहिं बताई ॥ गए सकल मिलि संग दूरि लौं मन न फिरत पुरवास। सूरदास स्वामीके बिछुरत भरि भरि लेत उसाँस ॥ ४२ ॥ दशरथ प्राणतजनें श्रीरामदेव ॥ तात वचन रघुनाथ जबै वन गौन कियो। मंत्री गयो फिरावन रथ ले रघुवर फेरि दियो॥ भुजाछुडाई तोरि तृण ज्यों हित करि प्रभु निठुर हियो। सुरत साल ज्वाला उर अंतर ज्यों पावकहिं पियो ॥यह सुनि तात तुरत तनु त्यागो बिछुरत तात वियो। इहि विधि विकल सकल पुरवासी नाहीं चाहत जियो ॥ पशु पंछी तृण कण त्याग्यो अरु बालक पय न पियो। सूरदास सियनाथ बोल हित पतिव्रत सुख जु कियो ॥ ४३ ॥ राजाको तैल घट स्थापन, मन्त्रीगमन॥ भरत निकट ॥ राग सारंग ॥ राजा तेल द्रोनि में डारे।सात दिवस मारगमें वीते देखे भरत पियारे ॥ जाइ निकट हिय लाइ दोउ शिशु नैन उमँग जलधारे। कुशल क्षेम पूँछत कौशल्या राजा कुशल तिहारे ॥ कुशल राम लछमन वैदेही ते हैं प्राण हमारे। कुशल क्षेम अवधके पुरजन दासि दास प्रतिहारे ॥ कुशल राम लछमन वैदेही तुम हित काज हँकारे। सूर सुमंत ज्ञानि ज्ञानाद्भुत महिमा समय विचारे॥ ४४ ॥ कौशल्या विलाप, भरत अवन, मातापर अतिक्रोध ॥ राग गूजरी॥रामहिं राखौ कोऊ जाई।जबलौं भरत अयोध्या आवें कहत कौशल्या भाई ॥ पठयो दूत भरतको ल्यावन वचन कह्यो शिरनाई। दशरथ वचन राम वन गवने यह कहियो अरथाई ॥ आए भरत दीनह्वै बोले कहा कियो कैकयि माई। हम सेवक वा त्रिभुवनपतिके सिंहहि बलि कौवा क्यों खाई ॥ आजु अयोध्या जल नहिं अचवों ना मुख देखों माई। सूरदास राघवके बिछुरे मरों भवन दौलाई ॥ ॥ ४५ ॥ भरत शत्रुघ्न वचन माता प्रति। राग केदारा ॥ तैंकैकई कुमंत्र कियो। अपने मुख करि काल हँकारयो हठ करि नृप अपराध लियो ॥ श्रीपति चलत रह्यो कहि कैसे तेरो पाहन कठिन हियो हम अपराधिनके हित कारन तैं रामहिं वनवास दियो॥ कौन काज यह राज हमारे इहि पावक परि कौन जियो। लोटत सूर धरणि दोउ बंधू मनो तपत विष विषय पियो॥४६ ॥राग सोरठ॥ राम कहां गए री माता।सूनो भवन सिंहासन सूनो नाहीं दशरथ ताता॥ धिग तेरो जन्म जिवन धृग तेरो कही कपट सुखदाता। सेवक राज साहिब वन पठये यह कब लिखी विधाता॥मुखारविंद हम देखि जीवते ज्यों चकोर शशिराता।सूरदास कौशल्यानंद वन कहा अयोध्या तेरो नाता४७॥

॥रागसुन्दरा॥गुरू वशिष्ट भरत समुझायो ॥राजाकोपरलोक सँवारो युग युग यह चलि आयो॥चंदन अगर सुगंध और सब विधि करि चिता बनायो।चले विमान संग गुरु पुरजन तापर राज पुढायो॥ दिन दश लौं जल कुंभ सांति शुचि दीपदान करवायो। भस्म अंत तिलअंजलि दीनो देव विमान चढ़ायो॥ जानि एकादश विप्र बुलायो भोजन बहुत करायो। दीनों दान बहुत नाना विधि इहि विधि कर्म पुजायो॥ सब करतूति केकयीके शिर जिन अभिलाष उपायो। इहि विधि सूर अयोध्यावासी दिन दिन काल गँवायो॥४८॥ भरत गमन रामजी निकट वन विषे परस्पर संवाद॥ राग सारंग॥ राम पै भरत चले अकुलाई। मनही मन सोचत मारगमें दई फिरि क्यों गवनराई॥ देखि दरश चरणन लपटानो गदगद कंठ न कछु कहि आई। लीनो हृदय लगाइ सूर प्रभु पूछत मंद भए क्यों भाई॥४९॥ रामसंविलमिलाप दशरथपरलोकश्रवण राग केदरा॥ भरत मुख निरखि राम बिलखाने। मुडित केश शीश विह्वल दोउ उमँगि कंठ लपटाने॥ तात मरनसुनिश्रवणकृपानिधि धरणि परे मुरझाई। मोह मगन लोचन जलधारा विपति हृदय न समाई॥ लोटति धरणि परी सुनि सीता समुझति नहिंसमुझाई। दारुण दुख दवा ज्यों तृणवन नाहीं बुझति बुझाई॥दुर्लभ भयो दरश दशरथको भयो अपराध हमारे। सूरदास स्वामी करुणामय नैन जात उघारे॥५०॥ श्रीरामभरतसंवादरागकेदारा॥मुखमविल रघुनाथ कौन विधिजीवन कहा बने॥चरण सरोज बिना अवलोके को सुख धरणि गने॥ हठ करि रह्यो चरण नहिं छांडे नाथ तजो निठुराई। परमदुखी कौशल्या जननी चलो सदन रघुराई॥ चौदह वर्ष तातकी आज्ञा मोपै मेटि न जाई। सूरस्वामि पॉवरी शीश धरि भरत चले बिलखाई॥५१॥ रामउपदेश भरत प्रति। राग मारू॥बंधु करियो राज सँभारे। राजनीति अरु गुरुकी सेवा गाइ विप्र प्रतिपारे॥कौशल्या कैकयी सुमित्रा दरशन सांझ सवारे। गुरु वशिष्ट अरु मिलि सुमतसों परजा हेतु विचारे॥भरत गात शीतल ह्वै आयो नैन उमँगि जलधारे॥सूरदास प्रभु दई पॉवरी अवध पुरी पग धारे॥५२॥भरत विदाकरण।राग सारंग॥ राम यों भरत बहुत समुझायो। कौशल्या कैकई सुमित्राको पुनि पुनि शिरनायो॥गुरुवशिष्ठ अरु मिलि सुमतसों अतिहीप्रेम बढायो। बालक प्रतिपालक तुम दोऊ दशरथ लाड लडायो॥ भरत शत्रुघन करि प्रणाम रघुवर हित कंठलगायो॥ गद्गद गिरा सजल अति लोचन हिय सनेह जस छायो॥ कीजै यहै विचार परस्पर राजनीति समुझायो। सेवा मात प्रजा प्रतिपालन यह युग युग चलिआयो॥चित्रकूटते चले तिहीं वन मन विश्राम न पायो॥सूरदास बलि गयो रामके निगम नेति जेहि गायो॥५३॥ दंडकवनमेंशूर्पणखाको नाकछेदन राग मारू॥दंडकवन आए रघुराई। काम विवश व्याकुल उर अंतर राक्षसि इक तहां आई॥ हसिकरि राम कह्यो सीतासों इहि लक्ष्मणके निकट पठाई॥भृकुटी कुटिल अरुण अति लोचनअग्निशिखा मुख कह्योफिराई॥ए बौरी भई मदन विवश मेरे ध्यान चरण रघुराई॥विरह व्यथा तनु गई लाज छुटि बार बार अकुलाई॥ रघुपति कह्यो निलज्ज निपट तू नारि राक्षसी ह्यांतेजाई॥सूरज प्रभु पत्नीव्रत एकै काटयो नाक गई खिसिआई॥५४॥ खर दूषण वध मारीच रावणको वनमें आवन। राग सारंग॥ खर दूषण यह सुनि उठि धाए। तिनके संग अनेक निशाचर रघुपति आश्रम आये॥ श्रीरघुनाथ लछनते मारेकोउ एक गए पराए। शूर्पणखा ये समाचार सब लंका जाय सुनाये॥ दशकंधर मारीच निशाचर यह सुनिकै अकुलाये। दंडकवन आये छलके हित सूर ठग्यो रघुराये॥५५॥ मारीचवध सीताहरण मारगमेंगृध्रसों युद्ध ॥राग केदारा॥ सीता पुष्प वाटिका लाई। नानाविधि

पांति पांति सुन्दर मनु कंचनकीहैलताबनाई॥बार बार शोकादिकके तरु प्रेम प्रीति सींचे रघुराई अंकुर मूल भए सो पोषेकर्मभोगफल लागेआई॥मृगस्वरूपमारीच धरयो तब फेरि चल्यो मारग प्रभु दिखाई। श्रीरघुनाथ धनुष कर लीनो लागत बाणदेवगतिपाई॥टेर लषण सुनिविकलजानकी अति आतुर उठि धाई। रेखा खैंची बार वचनकी हा रघुवीर कहांहो भाई॥रावण तुरत विभूति लगाए कहत हस्त भिक्षा दे माई। दीन जानि सुधि आनि भजनकी प्रेम प्रीति भिक्षा ले जाई। हरि सीता ले चल्यो डरत जिय मानो रंक महानिधि पाई॥ सूरसंग पछतात यहै कहिकर्मदशा मेटी नहिं जाई॥५६॥ राम स्वरूप वर्णन ॥ मृग पाछे धावन समय ॥राग सारंग॥रामधनुष अरु सायक साधे।सियहित मृग पाछे उठि धाए वसन बहुत ढिग बांधे॥नवघननील सरोज वरण वपु विपुल बाहु क्षत्रीगुन कांधे॥इन्दु वदन राजीव नैन वर शीश जटा शिवसम शिर बांधे॥ पालत सृजत संहारत संतत अंड अनेक अवधि पल आधे॥ सूरभजन महिमा दिखरावत इमि अति सुगम चरण अवराधे॥५७॥ सीता छाया हरन रावण गिद्धसे युद्ध ॥ राग मारू॥ इहिविधि वन बसे रघुराई। डासिके तृण भूमि सोवत द्रुमनिके फल खाई।जगत जननी करीचारी मृगाचरिचरि जाइ।कोपिके प्रभु बान लीनो तबहिं धनुष चढाइ॥ जनक तनया धरि अगिनिमें छायारूप बनाइ॥इह कोऊ नहिं भेद जानें विना श्रीरघुराइ।कह्यो अनुजसों रहो यहांतुम छांडि जिनि कहुँ जाइ।कनक मृग मारीचमारयो गिरयो लक्षण सुनाय॥खोदि दईसुरेख सीता कह्यो सुकह्योनजाइ॥तबहिंनिशिचर कियोयह छललियो सीय चुराइ॥गिद्धताकोदेखि धायोलख्यो सूरबनाइ।कटे पंख गिरयो असुर तबगयोलंकाधाइ॥५८॥अशोकवन में सीता को स्थापना राग सारंग।वनअशोकमेंजनकसुताकोरावणरख्यो जाइ।भूख रु प्यास नींद नहिं आवैगई बहुत मुरझाइ।रखवारीकोबहुत निशिचरीदीन्ही तुरतपठाइ सूरदास सीता तेहि निरखत मनही मन सकुचाइ॥ ५९ ॥ राम विलाप सीता वियोग ॥ रागकेदारा ॥ रघुपति कहि प्रियनाम पुकारत।हाथ धनुष ले मुक्त मृगहिंकियेचकृतभये दिशि विदिश निहारत निरखत सून भवन जड ह्वै रहे खन लोटत धर वपु न सँभारत।हा सीता सीताकहिश्रीपतिउमगि नयनजल भरि भरि ढारत॥ लागि शेष उर बिलखि जगत गुरु अद्भुतगति नहिं परत विचारत॥ चेतत चेतत सूर सीता हित मोह मेरु दुख टरतनटारत॥ ६०॥सुनोअनुजइहिवनइतननि मिलि जानकी प्रिया हारी कछु इक अंगनिकी सहिदानी मेरी दृष्टि परी कटिकेहरि कोकिल बाणी अरु शशि मुख प्रभा धरी।मृगमूसी नैननिकी शोभा जाति न गुप्तकरी॥ चंपक बरनचरन करि कमलनि दाडिम दशन लरी। गति मराल अरु बिंब अधर छबि अहि अनूप कबरी॥ अति करुणा रघुनाथ गुसाई युगभर जात घरी॥ सूरदास प्रभु प्रिया प्रेम वश निज महिमा बिसरी॥ ६१ फिरत प्रभु पूछत वन तुम बेली। अहो बंधु काहू अवलोकी इहि मग वधू अकेली॥ अहो विहंग अहो पन्नग नृप या कंदर राई।अबकी वार मम विपतिमिटाओ जानकी देहु बताई॥ चंपक पुहुप बरन तनु सुन्दर मनो चित्र अवरेखी। हो रघुनाथनिशाचर के संग चलीजाति हौं देखी॥यह सुनि धावत धरनि चरनकी प्रतिमा खगी पंथ मेंपाई।नैन नीर रघुनाथ सानिके शिव ज्यों गात चढाई॥कहुँ हियहार कहूँ कर कंकन कहुँ अंचर कहुँ चीरा। सूरदास वन वन अवलोकत बिलखि वदन रघुवीरा॥ ६२॥ रामजीको गृधसों मिलाप सीता समाचार श्रवण ॥राग केदारा॥ तुम लक्ष्मण या कुंज कुटीमें देखो नैन निहारि। कोउ एक जीव नाम मम लेले उठत पुकारि पुकारि॥ इतनी कहत कंधते कर गहि लीनो

धनुष सँभारि। कृपानिधान नाम हित धाए अपनी विपति बिसारि ॥ अहो विहँग कहो आपनो दुख पूँछत तब जु मुरारि। किहि मतिमूढ घघ्यो तनु तेरो किधौं बिछोही नारि ॥ श्रीरघुनाथ रमनि जगजननी जनकनरेशकुमारि।ताको हरण कियो दशकंधर हौं जो लग्यो गुहारि ॥ इतनी सुनि कृपालु कोमलप्रभु दियो धनुष कर डारि।मानो सूर प्रान ले रावन गयो देहको डारि॥६३॥ गिद्ध हरि पद प्राप्ति ॥ रागकेदारा ॥रघुपति निरखि गिद्ध शिर नायो । कहिकै बात सकल सीता-की तनु तजि चरण कमल चित लायो। श्रीरघुनाथ जानि जन अपनो अपने कर करि ताहि जरायो। सूरदास प्रभु दरश परश करि हरिके लोक सिधायो ॥ ६४ ॥शबरीको हरिपद प्राप्ति ॥ शबरी आश्रम रघुवर आए। अर्घ्यासन दे प्रभु बैठाए ॥ खाटे तजि फल मीठे लाई । जूँठे भयेसु सहज सुनाई ॥ अन्तर्यामी अति हित जानें। भोजनकीने स्वाद बखानें॥जात न काहूकी प्रभु जानत।भक्त भाव हरि युग युग मानत॥करि दंडवत भई बलिहारी।पुनि तनु तजि हरिलोक सिधारी ॥ सूर प्रभु करुणामय भये। निज कर करि तिल अंजलि दये ॥६५॥ किष्किंधाकाण्ड॥ सुग्रीव आज्ञा हनुमान रामको मिलाप ॥ राग मारंग ॥ऋष्यमूक पर्वत विख्यात।इक दिन अनुज सहित तहां आये सीतापति रघुनाथा ॥ कपि सुग्रीव बालिके भयते बस्यो हुतो तहँ आई। त्रास मानि तब पवनपुत्रको दीनो तुरत पठाई ॥ को यह बीर फिरै बन भीतर किहि कारण इहां आए। सूर प्रभूके निकट आइ कपि हाथ जोरि शिरनाए६६॥हनुमान राम संवाद।सुग्रीवको रामजीका दर्शन॥राग मारू मिले हनु पूछी असि प्रभु बात।महा मधुर प्रियबाणीबोलतशाखामृग कौने ते तात॥अंजनिकोसुत केसरिके कुल पवन गवनउपजायो गात।तुम को बीर नीरभरि लोचन मीन हीनजल ज्यों मुरझात॥ दशरथकुल कोशलपुर बासी त्रिया हरी ताते अकुलात। ये गिरिपति कपिपति सुनियतहै बालि त्रास कैसे दिन जात ॥ महादीन बलहीनविकलअतिपवनपूत देखतबिलखात। सूरसुनत सुग्रीव चले उठि चरण गहे पूछो कुशलात ॥ ६७॥बालिवध सीता-भूषण दर्शन सप्तताल भेद॥ रागमारू॥ भाग्य बडे इहि मारग आये। गदगद कंठ शोकसों रोवत वारि विलोचन छाए। महाधीर गंभीर वचन सुनि जाम्बवंत वचन समुझाए। बढी परस्पर प्रीति रीति तब भूषण सिया दिखाए॥ सप्त ताल शर साधि बालि हति मन अभिलाष बढाए। सूरदास प्रभु भुजनिके बलिबलि विमलविमलयशगाए॥६८ ॥सुग्रीव राज अंगद समाधान। राग सारंग ॥ राजदियो सुग्रीवको तिन हरि यश गायो।पुनि अंगदको बोलि ढिग या विधि समुझायो ॥होनिहार सोइ होति है नहिं जात मिटायो। सूरदासप्रभु चतुर मास ता ठौर बितायो ॥६९॥ पवनपुत्र अंगदादि मुद्रिका सहित सीता सुधि हित संपाति मिलाप। राग सारंग॥ श्रीरघुपति सुग्रीव को निजनिकटबुलायो। लीजै सुधि अब सीयकी यह कहि समुझायो ॥ जाम्बवंत अंगद हनू उठि माथो नायो।हाथ मुद्रिका दई प्रभुसंदेश सुनायो ॥ आए तीरसमुद्रके कछु शोध नपायो। संपाती तहँ मिल्यो सूर यह वचनसुनायो॥ ७० ॥ संपातीकासीता अवस्था वर्णन कपिन प्रति। राग सारंग ॥बिछुरी मनोसंगते हिरनी। चितवति रहति चकित चारों दिशि उपजी बिरह तनु जरनी॥तरुवर मूल अकेली ठाढी दुखित रामकी घरनी। बसन कुचील चिहुर लपटाने देह पीतांबर बरनी ॥ लेत उसास नयन जल भरि भरि धुकि उपरी धरिधरिनी। सूर शोच जियपोच निशाचररामनामकीशरनी७१॥ सुंदर कांड समुद्रतीर परस्पर मंत्र हनु बिदा सुरसासुरा प्रवेश राग केदारा॥ तब अंगद इक वचन कह्यो। को तरि सिंधु सियासुधि लावै किहि बल इतोलह्यो॥ इतनो वचनश्रवणसुनि हरप्योहँसि बोल्यो

जम्बुवंत। यादल मध्य प्रगट केशरि सुत जाहि नाम हनुमंत ॥ वहे लाइ है सिय सुधि छिनमें अरु आइ है तुरंत।उन प्रभाव त्रिभुवन को पायो वाके वलहिं न अंत॥जो मन करे एक वासर में छिन आवे छिन जाइ। स्वर्ग पताल महागम ताको कहिये कहा वनाइ ॥ केतिक लंक उपारि वामकर लै आवे उचकाइ। पवनपुत्र वलवंत मज तन काके होय समुदाइ ॥ लियो बुलाय मुदित चित ह्वैके वच्छ तंबोलहिं लेहु। ल्यावहु जाइ जनकतनया सुधि रघुपतिको सुख देहु ॥ पौरि पौरि प्रति फिरो विलोकत गिरि कंदर वन गेह।समयविचारि मुद्रिका दीजोसुनो मंत्र सुत येह ॥ लयो तंवोल माथ धरि हनुमत कियो चतुर्गुण गात। चढि गिरि शिखर शब्द इक उचरयो गगन उठयो आवात ॥ कंपत कमठ शेष वसुधा नभ रवि रथ भयो उतपात। मानो पच्छ सुमेरहि लागे उडयो अकासहि जात ॥ चकृत सकल परस्पर वानर वीच करी किलकार। तहां इक अद्भुत देखि निशिचरी सुरसा मुख विस्तार ॥ पवनपुत्र मुख पैठि पधारे तहां लगी कछु वार। सूरदास स्वामी प्रताप वल उतरयो जलनिधि पार ॥ ७२ ॥ हनुमत लङ्का दर्शन, सीता मिलाप हित अशोकवन प्रवेश। राग धनाश्री ॥ लखि लोचन सोचे हनुमान। चहुँ दिशि लंक दुर्ग दानवदल कैसे पाऊं जान ॥ सौ योजन विस्तार कनक पुरि चकरी योजन वीस। मनो विश्वकर्मा करअपुने रचि राखीगिरि शीश॥गरजत रहतमत्त गज चहुँ दिशि छत्रध्वजा चहुँ दीश। भरमत भयो देखि मातरुसुत दई महावल ईश ॥ उाडि हनुमंत गयो आकासहि पहुँच्यो नगर मँझारि। वन उपवन गम अगम अगोचर मंदिर फिरयो निहारि। भई पैज अव हीन हमारी जिय में करै विचारि। पटकि पूँछ माथो ध्वनि लोटै लखी न राघव नारि ॥ नना रूप निशाचर अद्भुत सदा करत मद पान। ठौर ठौर अभ्यास महामल नट पेपने पुरान ॥ जिय जिय शोच करत मारुत सुत जियत न मेरे जानाकै वह भाजि समुद्रमें वूडी कै उन तज्यो पिरान ॥कैसे नाथ वदन दिखराऊं चो विन देखे जाऊँ। वानर वीर हँसेंगे मोसों तैं वोरयो पितु नाऊँ॥ते सब तर्क वोलिहैं मोको तासों वहुत डराउँ॥ भली रामको सिया मिलाई जीति कनकपुरगाउँ॥जब मोहिं अंगद कुशल पूछिहैं कहा कहौंगो वाहि। या जीवनतें मरन भलोहै मैं देख्यों अवगाहि॥ मारौ आजु लंक लंकापति लै दिखराऊं ताहि। चौहहसहस अंतःपुर ते लेहैं राघव चाहि॥वहुरि वीर जब गयो अवासहिं जहां वसे दशकंध। कनक जटि मणि खंभ वनाए पूरण वास सुगंध॥ श्वेत छत्र फहरात शीशपर मनो लच्छको वंध। दश सिर मुकुटविराजतमणिकृतभानुउदयदससंध चौदह सहस नागकन्या रति परयो सुरत मत अंध॥वीणानाद पखावज आवजऔरराजकोभोग। पुहुप प्रयंक परीनव योवन सुख परिमल रस जोग॥जिय जिय गढेकरैविश्वासहिजानैलंकालोग। इहि सुख सेज परीहै सीता राघव विपति वियोग ॥ वैठ्यो जाइ एक तरुवर पर जाकी शीतल छांहि। वहु निशाचरी मध्य जानकी मलिन वसन तनु माहिं ॥ पुनि आयो सीता जहां वैठी वन अशोकके माहिं। चारहु ओर निशिचरी घेरे नर जेहि देखि डराहिं॥ वारंवार विसूरि सूर दुख जपति नाम रघुनाह। मलिन अर्धपट देखि वदन पर चन्द्र गह्यो ज्यों राह ॥ ७३ ॥ आकाशवाणी हनुमतप्रति, सीय निश्चय, । राग मारू ॥गयोकूदि हनुमंत जब सिन्धुपारा॥ शेषके शीश लागे कमठ पीठिसों धस्यो गिरिवर सबै ता संभारा ॥ शोच लाग्यो करन यहै धौं जानकी कै कोऊ और मोहि नहिंचिन्हारा ।लंकगढमाहिंआकाशमारगगयो चहूदिशवज्रलागे किंवारा॥पौरि सव देखि आशोकवनमें गयो निरखि सीता छप्यो वृक्षडारा॥सूरआकाशवाणीभई तव तहां है यहै करिजुहारा ॥ ७४ ॥ निशिचरी रावण वडाई,सीताकी निंदा ॥ समुझि अब निरखि

जानकी मोहि। वडोभाग्य गुण अगम दशानन शिव वर दीनो तोहिं। केतक राम कृपण ताकी पितुमातु वढाई कानि।तेरे पिता जनककी सीता कीरतिकहौं वखानि॥विधि संयोग टरत नहिं टारचो वन दुख देख्यो आनि। अव रावण घर विलसि सहज सुख कह्यो हमारो मानि॥ इतनो वचन सुनत सिरधुनिके वोली सिया रिसाइ।अहो ढीठ मति मुग्ध निशिचरी सम्मुख वैठी आइ॥ तव रावण को वदन देखिहौं दश शिर शोणितदाइ॥ के तन देउँ मध्य पावकके के विलसैं रघुराइ॥ जो पै पतिव्रता व्रत तेरे जीवत विछुरी काइ।तव किन मुई कहा तुम मोसों भुजागही जव राइ। अव झूठो कभिमान करति सिय झुकति हमारे ताइ।सुखहीं रहसि मिलो रावणको अपने सहज सुभाइ॥जो तू रामहि दोप लगावै करौंप्राणके घात।तुमरो कुलकोवेर न लागै होत भस्मसंघात॥ उनके क्रोध जरे लंकापति तेरे हृदय समाई। तोपैसूर पतिव्रतसांचो जो देखौं रघुराई॥ ७५॥ निशिचरी सीता सत प्रगट करन रावण निज उद्धार ज्ञान॥ राग धनाश्री॥ सुनो क्यों न कनकपुरीके राइ। हौं वुधि वल छल करिपचि हारी लख्यो नशीश उचाइ। डोलै गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलटि जगजाइ।।नशे धर्म मम वचनकाय करि शंभु अचंभुकराइ।अचलाचल चलत पुनिथाके चिरंजीव सो मरई।श्रीरघुनाथ प्रताप पतिव्रता सीता सत नहिं टरई।।ऐसी त्रिया हरित क्यों आई जाके यह सतभाइ। मनवचकम औरनहिं दूजो तजिरघुनन्दनराइ॥इनके क्रोध भस्महैजेहोकरहु न सीता चाउ।अव तुम काकी शरनउवरिहौं सो वल मोहिं वताउ॥जो सीता सतते विचलेतौ श्रीपति काहि सँभारे। मोसे मुग्ध महापापीको कौन क्रोध करि तारे॥ यह जननी वे प्रभु रघुनंदन हम सेवक प्रतिहार। सीताराम सूर संगम विनु कौन उतारे पार॥७६॥ रावण क्षोभ दिखावन जानकी निरादर करन। राग मारू॥ जनकसुता तू समुझि चित्त में निरखि मोहिं तन हेरी। चौदह सहस किन्नरी जेती सव दासी हैं तेरी॥ कहे तो जनक गेह दै पठवौं अर्ध लंकको राज।तोहिं देखि चतुरानन मोहे तू सुन्दरि शिरताज॥छाडि राम तपसीके मोहैं उठि आभूषण साजु। चौदह सहस तिया में तोको पटा वँधाऊं आज॥ कठिन वचनसुनिश्रवन जानकी सकी न वचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरीछी दई नैन जलधार॥पापी जाउ जीभ गलि तेरी अजुगत वात विचारी।सिंहको भक्ष शृगाल न पावै हौं समरथ की नारी॥ चौदह सहस दुष्ट खर दूषण रघुपति एकहि वान। लक्ष्मण राम धनुप सन्मुख करि काके रहिहैंप्राण॥ तेरी अवधि कहत सव कोऊ ताते कहियत वात। विन विश्वास मारिहैं तोको आजु रैनिके प्रात॥ मेरो हरन मरन है तेरो सो कुटुंव संतान। जरिहै लंक कनकपुर तेरो उदित रघुकुल भान॥ यह राक्षसकी जाति हमारी मोह न उपजै गात। परत्रिय रमे धर्म कहां जानै डोलत मानुप खात॥ मनमें डरी कानि जिनि तोरै मुहि अवला जिय जानि।नख शिखवसनसंभारिसकुचि तनु कुच कपोल गहि पानि॥ रे दशकंध अध मति तेरी आयु तुलानी आनि। सूर राम को विरद गर्व हत डारें शंभु भुज भानि॥७७॥ त्रिजटाने सीताको समाधान किया राग मारू॥त्रिजटा सीता पै चलि आई॥मनमें सोच न कर तू माता यहकहिकै समुझाई॥नल कूवरको शापरावनहिं तोपर वल न वसाई॥सूरदास मनु जरी सजीवन श्री रघुनाथ पठाई॥७८॥ त्रिजटा प्रति सीता मनोरथ वर्णन। राग केदारा॥ सो दिन त्रिजटी कहि कव है है। जादिन [illegible]

हृदय लगै है॥कवहुँक लक्ष्मण पाय सुमित्रा माइ माइ

वधू वधू कहि मोहिं वुलैहैं॥ जादिन राम गयणहि मा-

सफल करि जानो मेरे हृदयकी कालिम जैहै॥जा दिन कंचनपुर प्रभु ऐहैं विमल ध्वजा रथ पर फहरैहैं। तादिन सूर राम पर सीता सरबसु वारि बधाई देहैं ॥ ७९ ॥ राग सारंग ॥ मैं रामके चरणन चित दीनो।मनसा वाचा और कर्मणा बहुरि मिलनको आगम कीनो ॥ डुलै सुमेरु शेष शिर कंपै पश्चिम उदै करै वासर पति। सुनि त्रिजटी तौहू नहिं छोडौं मधुर मूर्ति रघुनाथ गात रति ॥ सीता करति विचार मनै मन आज्ञ कालिह कोशलपति आवैं। सूरदास स्वामी करुणामय सो कृपालु मोहिं क्यों विसरावें ॥ ८० ॥ सीताप्रतित्रिजटास्वप्न वर्णके हनू सियदरश परस्पर सवाद मुद्रिका अर्पण॥राग धनाश्री ॥ सुन सीता सपनेकी बात।रामचंद्र लछमन मैं देखे ऐसी विधिपरभात॥कुसुम विमान बैठि बैदेही देखी राघव पास।श्वेतछत्र रघुनाथ शीशपर दिनकर किरण प्रकाश ॥ भयो पलायमान दानवकुल व्याकुलता इक त्रास। पंजरत ध्वजा पताक छत्र रथ मनिमय कनक अवास ॥ रावन शीश पुहुमिपर लोटत मंदोदरि विलखाइ।कुम्भकर्ण तनु खंग ल्गाई लंक बिभीषण पाइ॥ प्रकटचो आइ लंक दल कपिको फिरि रघुवीर दुहाई। यह सपनेको भाव सखीरी क्योंहूँ विफल न जाई॥ त्रिजटी वचन सुनत बैदेही अति दुख लेत उसांस ।हाहा रामचन्द्र हा लछिमन हा कौशल्या सास ॥त्रिभुवन-नाथ नाह ज्यों पायो सुयों रहे वनवास। हा कैकई सुमित्रा रानी कठिन निशाचर त्रास ॥ कौन पापमेंपापिन कीनो प्रकटयोहैइहिवार । धिग धिग जीवन है अब इहितनु क्यों न होइ जरिछार। द्वै अपराध मोहिं ये लागे मृगके हित दीने हथियार॥जान्यो नहीं निशाचरके छल नांघी धनुप अकार॥पंछी एक सुहृद जानतहो करयो निशाचर भंग। ताते विरमि रह्यो रघुनंदन करि मनसा मन पंग॥ इतनो कहत नैन उर फरके सगुन जनायो अंग। आज लहौं रघुनाथ सँदेशो मिटै विरह दुख संग ॥ तिहिं छिन पवन पूत तहँ प्रगटेउ सिया अकेली जानि। श्री दशरथकुमार दोउ बंधू धरे धनुष दोउ पानि ॥ प्रिया वियोग फिरत मारे मन परे सिंधु तट आनि। ता सुन्दरि हित मोहिं पठायो सकौं न हौं पहिचानि ॥ वारंवार निरखि तरुवर तन कर मीड़ति पछिताइ। देव जीव पशु पक्षी को तू नाम लेतरघुराइ ॥ बोलै नहीं रह्यो दुरि वानर द्रुममें देह छुपाइ। कै अपराध ओढ अब मेरो कै तू देहि दिखाइ ॥ तरुवर त्यागि चपल शाखामृग सन्मुख बैठ्यो आइ। माता पुत्र जानि दे उत्तर कहु किहि विधि विलखाइ॥ किन्नर नाग देवि सुरकन्या कासों हित उपजाई। कै तू जनककुमारि जानकी राम वियोगिनि आई॥राम नाम सुनि उत्तर दीनो पिता बंधु तू होहि। मैं सीता रावन हारिल्यायो त्रास दिखावत मोहि॥अब मैं मरौं सिंधुमें बूडौं चितमें आवै कोह। सुनोवच्छ जीवन धिगमेरो लक्ष्मण राम विछोह ॥ कुशल जानकीजू रघुनंदन कुशल लक्ष्मण भाई। तुमहित नाथ कठिन व्रत कीनो नहिं जल भोजनखाई॥मुरै न अंग कोऊ जो काटै निशिवासर सम जाई। तुमघट प्राण देखियत सीता बिना प्राण रघुराई ॥ वानर वीर चहूँ दिशि धाए ढूंढें गिरि वनचारी।सुभट अनेक सबल दल साजे परे सिन्धुके पारी॥उद्यम मेरोसफल भयो अबमैं देखो तुम आइ।अबरघुनाथ मिलाऊं तुमको सुन्दरिसोग सिराइ॥ यह सुनि सियमन शंका उपजी रावनदूत विचारि। छल करिआयो निश्चर कोऊ नानारूपनिधारि॥ श्रवणमूँदिअंचरमुखढांप्यो अरेनिशाचर चोर। काहेकोछल करि करिआवत धर्म विनाशन मोर॥पावक परौं सिंधुमहँ बूडौंनहिं मुखदेखौं तोर।पापीक्योंन पीठिदे मोको पाहनसरिस कठोर॥जियमें डरयोमोहिं मति शापे व्याकुलवचन कहंत। जोवरदियोसकल

देवन मोहिं नाउ धर्‍यो हनुमंत ॥ सुग्रीवको तारका मिलाई बध्यो बालि भयभंत । अंजनि-कुँवर रामको पाइक ताके बल गंजत ॥ लेहु मातु मुद्रिका निसानी दई प्रीति करि नाथ । सावधान ह्वै शोकनिवारो ओड़हु दक्षिणहाथ॥तिन मुंदरीसिनही हनुमतसों कहति बिसूरि बिसूरि। कहि मुद्रिके कहां ते छाडे मेरे जीवनमूरि॥कहियोबच्छसँदेशो इतनो जब हम एकत थान।सोवत काग छुयो तनु मेरो बाहिर कीनोबान॥फोर्‍यो नयन कागनहिंछाँड्यो सुरपतिके बिदमान।अब वह कोप कहां रघुनन्दन दशशिरकंठ बिरान॥निकट बुलाइबैठाइ निरसिमुख अंचर लेत बलाइ। चिरजीयो सुकुमार पवनसुत गहति दीन ह्वै पाइ ॥ बहुत भुजनि बल होइ तुमारे ये अमृत फल खाहु । अबकी बेर सूर प्रभु मिलिहो बहुरि प्राण किन जाहु॥८१॥ हनुमत सीता समाधान॥राग मारू॥ जननी हौं अनुचर रघुपति को । मति माता करि क्रोध शरापे नहिं दानव ठिग मति को ॥ आज्ञा होइ देउँ कर मुंदरी कहो संदेशो पति को।मति हिय बिलखकरो सिय रघुवर धर्षिहै कुल देयत को॥ कहौ तु लंक उखारि डारि देउँ जहां पिता सपति को। कहौ तु मारि सँहारि निशाचर रावण करों अगति को ॥ सागर तीर भीर बनचरकी देखि कटक रघुपतिको । लै मिलाइहौं अबहिं सूर प्रभु राम रोष डर अतिको ॥८२॥ राग मारू॥ अनुचर रघुनाथ तेरे दरश काज आयो।पवनपूत कपि स्वरूप भक्तनमें गायो॥तपसी जहां तपन करें सोइ बनमें झांक्यो। जाकी तुम छाह बैठी सोइ द्रुम में राख्यो॥ आयसु जो होइ जननि सकल असुर मारों । लंकेश्वर बांधि राम चरणन तर डारों ॥ चढ़ि चलो जु पीठि मेरी अबहिं लै मिलाऊं । सूर श्रीरघुनाथ-जूके लीला गुण गाऊं ॥ ८३ ॥ हनुमत निशानि सीता सदेह मुद्रिका आगत मधीवे । राग मारू ॥ तुम्ह पहिचानति नाहीं बीर । इहि नैननि कबहूं नहिं देख्यो रामचन्द्रके तीर ॥ लंका बसत दैत्य अरु दानव उनके अगम शरीर । तोहिं देखि मेरो जिय डरपत नैननि आवत नीर॥जब कर काढि अँगूठी दीनी तो जिय उपजी धीर । सूरदास प्रभु लंकाकारण आए सागर तीर ॥ ८४ ॥ हनूका रामलक्ष्मणके समाचार कहना, अपनो पराक्रम वर्णन॥राग सारंग ॥ जननी हौं रघुनाथ पठायो।रामचन्द्र आयेकी तुमको देन बधाई आयो ॥ हौं हनुमतकपट जिनिसमुझो बात कहत समुझाई। मुंदरीदूत धरीलै आगे तब प्रतीति जिय आई॥ अतिसुखपाइउठाइलई तब बार बार उरभेंटति।ज्योंमलया-गिरि पाइ आपनी जरनि हृदयकी मेटति ॥लक्ष्मण पालागनि कहि पठयो हेतु बहुत करि माता । दई अशीश तरनि सन्मुख ह्वै चिर जीयो दोउ भ्राता ॥ बिछुरनको संताप हमारो तुम दरशन-ते काट्यो । ज्यों रवि तेज पाइ दशहू दिशि दोष कुहरको फाट्यो ॥ठाढे बिनती करत पवनसुत अब जो आज्ञा पाऊं। अपने देस चलेको यह सुख उनहू जाइ सुनाऊं ॥ कल्प समान एक छन राघव कर्म कर्म करि बितवत । तातेहौं अकुलात कृपानिधि ह्वैहैं पैंडोचितवत ॥ रावणहतिलैचलो साथही लंकाधरौं अपूठी।यातेंजियअकुलात कृपानिधि करौं प्रतिज्ञाझूठी॥यहांजोइसनदशाहमारी सूर सो कहियो जाई । बिनती बहुत कहा कहौंरघुपतिजिहिबिधिदर्शा पाई ॥८५॥ सीता आगमन प्रताप हनू धीरजदेन॥राग मलार ॥ बनचर कौन देशते आयो । कह वे राम कहां वे लक्ष्मण क्यों करि मुद्रा पायो ॥ हौं हनुमत रामके सेवक तुव सुधि लेन पठायो । रावण मारि तुम्हें लै जातो रामनिदेश न पायो ॥ तुम मति डरियो मेरी मैया राम जोरि दल ल्यायो । सूरदास रावण कुल खोवन सोवत सिंह जगायो ॥ ८६ ॥ अन्यच्च राग सारंग॥ कहो कपि कैसे उतर्‍यो पार । दुस्तर अति गंभीर बारिनिधि शत योजन बिस्तार॥इतउत क्रोध दैत्य कपि मारत महाअबुधिअधिकार।

हाटकपुरी कठिन पथ वानर आये कौन अधार। राम प्रताप सत्य सीताको यहै नाउ कंधार । विनअधार छनमें अवलंघ्यो आवत भई न वार॥पृष्ठभाग चढि जनकनन्दिनी पौरुष देख हमार। सूरदास ले जाउँ तहाँ जहँ रघुपति कंत तुम्हार ॥ ८७ ॥ हनू मिलापते सीता आनंद। राग मारू ॥ हनुमत भली करी तुम आए। बार बार कहती वैदेही दुख संताप मिटाए ॥ श्रीरघुनाथ और लक्ष्मणके समाचार सब पाये।अब परतीति भई मन मेरे संग मुद्रिका लाये ॥क्यों करि सिंधु पार तुम उतरे क्योंकरि लंका आये। सूरदास रघुनाथ जानि जिय तो बल इहाँ पठाए ॥ ८८ ॥ सीता रामपराक्रम वर्णन सराहना समेत वेगि मिलाप हित। राग कान्हरा ॥ सुन कपि वे रघुनाथ नहीं ।जिन रघुनाथ पिनाक पितान्यो तोरयो निमिष महीं॥ जिनरघुनाथफेरि भृगुपतिगति डारीकाटि तहीं। जिहिंरघुनाथहारखरदूषणहरेप्राणशरहीं॥केरघुनाथ तज्यो प्रण अपनो योगिन दशा गही।केरघुनाथ दुखित कानन के नृप भये रघुकुलहीं॥के रघुनाथ अतुल राक्षस बल दशकंधर डरहीं।छाँडी नारि बिचारि पवनसुत लंक बाग वसहीं॥ किधौं कुचील कुरूप कुलक्षण तौ कंतहि न चही॥सूरदास स्वामीसों कहियो अब विरमियो नहीं॥८९॥सीता निज दुख बर्ण्यो हनूमंति ॥ राग मारू॥देखे यह गति जात सँदेशो केसेकै जु कहौं। सुन कपि इन प्राणनको पहरो कबलों देति रहौं ॥ ये अति चपल चल्यो चाहत हैं करत न कछू विचार।कहि धौं प्राण कहांलौं राखों रोकि रोकि मुखद्वार॥ अपनी बात जनावतितुमसोंसकुचतिहौं हनुमंत।नाहींसूर सुन्यो दुख कबहूँ प्रभुकरुणामयकंत९० सीता विनय निज दुख निवारण निमित्त श्रीराम प्रति राग मारू ॥ कहियो कपि रघुनाथ राजसों यह इक विनती मेरी।नाहीं सही परति यह मोपै दारुण त्रास निशाचरकेरी ॥ यह जो अंध बीसहूँ लोचन छल बल करत आनि मुख हेरी॥आइ शृगाल सिंहबलि मांगत यह मरजाद जात प्रभु तेरी ॥ जेहि भुज परशुराम बल करष्यो ते भुज क्यों न सँभारत फेरी । सूर सनेह जानि करुणामय लेहु छुडाइ जानकी चेरी ॥ ९१ ॥सीता निज अपराध मगटन राग मारू ॥ मैं परदेशिन नारि अकेली। बिनु रघुनाथ और नहिं कोऊ मातु पिता न सहेली ॥रावणभेषधरचोतपसीको कत मैं भिक्षा मेली। अति अज्ञान मूढ मति मेरी रामरेख पाइन में पेली ॥विरहताप तनुअधिक जरावत जैसे दौ द्रुम वेली । सूरदास प्रभु वेगि मिलाओ प्राण जातहै खेली ॥ ९२ ॥हनुमतवचन रागमारू ॥तू जननी जिय दुख जिन मानहि। रामचन्द्र नहिं दूरि कहूं पुनि भूलिहुचितचितामति आनहि ॥ अबहिं लिवाइजाउँ सब रिपु हति डरपतहौं आज्ञाअपमानहिं ।राख्यो सुफल सँवारि सान दे कैसे निफल करौं या बानहिं ॥ हैं केतक यह तिमिर निशाचर उदित एक रघुकुल के भानहि । काटन दे दशशीस समर मुख अपनो कृत एऊ जो जानहि ॥देहिंदरश शुभनैननिकट निज रिपु को नाश सहित संतानहिं। सूरसत्तमोहि इनहिंदिननिमें लै जुआइहौंकृपानिधानहिं ॥९३ ॥अशोकवन भंग इन्द्रजीतहनुमतमीति महाशरबंधन ।रागमारू॥ हनुमत बल प्रगट भयो सीता जब पाई ।जनकसुता चरण वंदि फूल्यो न समाई ॥ अगणित तरु फल सुगंध मधुर मिष्ट खाटे। मनसा करि प्रभुहिं अर्पि भोजनको डाटे॥द्रुमन गहि उपाटिलिये दैदै किलकारी। दानव बिन प्राण भये देखि चरित भारी ॥ विह्वल मतिहीन गए जोरे सब हाथा। वानर बन विघ्र कियो त्रिभुवनके नाथा ॥ है निशंक अतिहि ढीठ बिडरे नहिं- भाजे। मानो वन कदलि मध्य उनमत गज गाजे॥ भाने मठ कूप वाय सरवरको पानी । गौरिकंत पूजत जहां नवतन दल आनी॥कांप्यो सुनि असुर सेन शाखामृग जान्यो।मानो जलजीव सिमिटि जाल में समान्यो॥

तरुवर तहँ इक उपारि हनुमंतकर लीनो।किंकर कर पकरि वाण तीन खंड कीनो ॥ योजन विस्तार शिला पवनसुत उपाटी । किंकर कारि लक्ष्मान अंतरिक्ष काटी ॥ आगर इक लोह जरित लीनो वरवंड । दुहूं करनि असुर हयो भयो मानस पिंड ॥ दुर्धर परहस्त संग आई सैन भारी । पवनपूत दानव बल बादर चल कारी ॥ रोम रोम हनूमंत लच्छ लच्छ वान । जहां तहां देखत कपि करत राम आन ॥ मंत्रीसुत पाँच सैन अक्षय कुवँर सूर । धीर सहित सबै हते झपटिकै लंगूर ॥ चतुरानन बल सँभारि मेघनाद आयो । मानो घन पावस में नगपति ह्वै छायो॥ देख्यो जब दिव्य बान नागफांस आन्यो । छांडयो तब सूर हनू ब्रह्म तेज मान्यो ॥ ९४ ॥ हनुमान रावण संवाद ब्रह्मशर शक्ति । राग मारू ॥ सीतापति सेवक तोहि देखनको आयो।काके बल वैर तें जु रामते बढायो॥जे जे तुव सूर सुभट कीटसम न लेखों।तेरे दशकंध अंध प्राणनि बिनुदेखों॥ नख शिख ज्यों मीन जाल जड्यो अंग अंगा । अजहुँ नाहिं शंक धरत वनचर मति भंगा॥जोई सोइ मुखहि कहत मरण निज न जाने । जैसे नर सन्निपात हिये बुधि बखाने॥तब तू गयो सून भवन भस्म अंग पोते।करितो विनुप्राण तोहिं लक्ष्मण जो होते॥पाछे तें सीय हरी विधिमर्याद राखी। जो पै दशकंध बली रेख क्यों न नाखी॥अजहूं सिय सौंपि नतरु बीस भुजा भानै। रघुपति यह पैज करी भूतल धरि पानै॥ब्रह्म वाण कानि करी बल करि नहिं बांध्यो। कैसे यह ताप मिटै रघुपति आराध्यो ॥ देखत कपि बाहुडंड तनु प्रस्वेद छूटे । जेजे रघुनाथ नाथ कहत बंध टूटे॥ देखत बल दूरि करयो मेघनाद गारो।आपुन भयो सकुचि सूर बंधन ते न्यारो॥९५॥ हनुमान लंकादहन ॥ राग मारू॥मंत्रिन नीको मंत्र विचारयो।राजन् कहो दूतकाहूको कौननृपतिहै मारयो॥इतनी कहत विभीषण बोल्यो बंधू पांइ परौं। यह अनरीति सुनी नहिं श्रवणनि अब पै कहा करौं ॥ तेल तूल पावक बपु धरिकै देखत तुमे जरौं। अब मेरेजिय यहैवसीहै रघुपतिकाज करौं ॥ हरी विधाता बुद्धि सबनिकी अति आतुर ह्वै धाये । सन अरु सूत चीर पाटंबर लै लंगूर बँधाये ॥ बंधनि तोरि मोरि मुख असुरनि ज्वाला प्रगट करी। रघुपति चरण प्रताप सूरप्रभु लंका सकल जरी ॥ ९६ ॥आकाशवाणी,सीताकुशल॥ रागधनाश्री ॥सोचि जिय पवनपूत पछिताई । अगम अपार सिंधु दुस्तर तरि कहा कियो मैं आई ॥ सेवकको सेवापनइतनो आज्ञाकारीहोई।या भय भीति देखि लंकामें सीय जरी मति होई ॥ बिनु आज्ञा मैं भवन प्रजारे अपयश करिहै लोइ । वे रघुनाथ चतुर कहियत हैं अंतर्यामी सोइ ॥ इतनी कहत गगनवाणी भई हनू सोच कत करिहै।चिरंजीव सीता तरुवर तर अटल न कबहूं टरिहै ॥ फिर अवलोकि सूर सुख लीजै भुवमें राम न परिहै । जाके हिय अंतर रघुनंदन सो क्यों पावकजरिहै ॥९७ ॥ लंकादग्ध पुनः सियदर्शन॥ रागकेदार ॥लंका हनूमान सब जारी ।रामकाज सीताकी सुधि लगि अंगद प्रीति विचारी॥जा रावणकी शक्ति तिहूंपुर कहूं न आज्ञा टारी। ता रावणके अछत अक्षय सुत पालक दृष्टि पछारी ॥ पूंछ बुझाइ गये सागर तट है जहँ सीतानारी ।.करि दंडवत प्रेम पुलकित ह्वै सुनि राघवकी प्यारी ॥ तुमही तेज प्रताप रही है तुमरी यहै अटारी। सूरदास स्वामीके आगे जाइ कहौं सुख भारी ॥ ९८॥ रामचन्द्र प्रति सीता संदेश हनुमंत विदा ॥ राग सारंग ॥ मेरी केती विनती करनी । पहिलै करि परणाम पाँइ परि मणि रघुनाथहाथ लैधरनी॥ मंदाकिनि तटफटिकशिला पर सुख मुख जोरि तिलककी करनी।कहा कहौं कपि कहत नआवैसुमिरतप्रीतिहोइडरअरनी ॥ तुम हनुमंत पवित्र पवनसुत कहियो जाइ जोइ मैं वरनी । सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मूरति

दुसह दुःखभयहरनी॥९९॥ अंगदादि निकट हनुमानका पुनः आगमन सीता सुधि देन ॥ राग मारू॥हनूमान अंगदके आगे लंक कथा सब भाषी। अंगद कह्यो भली तुम कीनीहमसबकीपतिराखी ॥ हर्षवंतह्वै चले तहां ते मगमें बिलम न लाई । पहुँचे आइ निकट रघुवरके सुग्रीव आयो धाई॥सबनप्रणाम कियो रघुपति को अंगद वचन सुनायो । सूरदास प्रभु पदप्रताप करि हनू सिया सुधि ल्यायो॥ ॥१००॥ सुग्रीवादि कृत हनूमान प्रशंसा ॥ राग मारू ॥हनू तैं सबको काज सँवारचो।वार वार अंगदयों भाषै मेरो प्राण उबारचो ॥ तुरतहि गमन कियो सागरते बीचहिवागउजारचो।कियो मधुवनको चूर चहूं दिशि माली जाइ पुकारचो ॥ धनि हनुमंत सुग्रीव कहतहै रावणको दल मारयो ।सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारचो ॥१०१॥ श्रीरामचन्द्र हनुमान गोष्ठी। राग मारू॥ कहो कपि जनकसुता कुशलात । आवागमन सुनावहु अपनो देहु हमैं सुख गात ॥सुनो पिता जल अंतर ह्वैके रोक्यो मग इक नारि । धर अंबर घन रूप निशाचरि गरजीवदनपसारि॥ तबमैं डरपि कियो छोटो तनु पैठ्यो उदर मँझारि। खरभर परी देव आनंदे जीत्यो पहिली रारि॥गिरि मैनाक उदधिमें अद्भुत आगे रोक्यो जात।पवनपिताको मित्र न जानत धोखे मारीलात॥तबहीं और रह्यो सरितापति आगे योजन सात।तुव प्रताप पेलि निशि पहुंच्यो कौन बढावैबात।लंका पौरि पौरि में ढूँढी अरु वन उपवन जाइ । तरुवरतर अवलोकि जानकी तब हौंरह्योलुकाइ ॥ रावण कह्यो सु कह्यो न जाई रह्यो क्रोध अति छाई । तबहीं अवधि जानिकै राख्यो मंदोदरि समुझाई ॥ तब हौं गयो सु फुलवारीमें देखी दृष्टि पसारि । असी सहस किंकर दल जिहिके दौरे मोहिं निहारि ॥ तुम परताप देव छिन भीतर जुरत भई नहिं बार।तिनकोमारितुरंतहिकीनो मेघनादसों रार ॥ ब्रह्मफांस जब लई हाथ करि में चेत्यो करजोरि। तज्यो कोप मर्यादाराखी बँध्यो आपही मोर ॥रावणपै लेगयो सकल मिलि ज्यों लुब्धक पशु जाल ।करुवो वचनश्रवण सुनि मेरो तब रिस गही भुवाल ॥ आपुनही मुद्गर लै धायो करि लोचन विकराल। चहुँदिशि सूर शोर करि धावै ज्यों केहरिहि सियाल॥१०२॥ राम वचन । राग मारू ॥ कैसेपुरीजरीकपिराय। बडे दैत्य कैसे करि मारे ईश्वर तुमैं बचाय॥प्रगट कपाट बडे दीने हैं बहु जोधा रखवारे।तेंतिस कोटि देव वश कीने ते तुमसे क्यों हारे ॥ तीनिलोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न पेखे । तुमरे क्रोध शाप सीताके दूरि जरत हम देखे॥हो जगदीश कहा कहौं तुमसों तुम वर तेज मुरारी।सूरज दास सुनो सबसंतोअवगतिकी गतिन्यारी ॥१०३॥ सेना समेत सिन्धु तट राम पयान।राग मारू॥ सीय सुधि सुनत रघुवीर धाये।चल्यो तब लक्ष्मण सुग्रीव अंगद हनूजाम्बवंतनीलनलसवैआये॥ भूमि अति डगमगी योगनी सुनि जगी सहसफन शेष सों शीश कांप्यो।कटकअगणित जुरयो लंक खरभर परयो सूरको तेज धर धूर ढांप्यो॥जलधि तट आइ रघुराइ ठाढे भए ऋच्छ कपि गरजि ह्वै ध्वनि सुनायो । सूर रघुराइ चितये हनूमान दिशि आइ तिन तुरतही शीश नायो ॥ १०४॥ हनूमान निज शरीर बल कथन॥राग केदारा॥राघव जू कितक बात तजि चिंत।केतक रावण कुम्भकर्ण दल सुनिहो देव अनंत॥कहो तु लंक लकुटज्यों फेरों फेरि कहूंलैडारों।कहोतुपर्वतचापि चरणतरनीर खारमेंगारों॥कहो तोअसुरलंगूर लपेटों कहौ तुनखनविदारों। कहोतु शैल उपारिपेडते देसुमेरुसो मारों॥जितक शैलसुमेरुधरणिमें भुजभरि आनि मिलाऊं।सत समुद्र देइ छातीतर इतनक देहबढाऊं चली जाहु सेना सब मोपर धरो चरण रघुवीर।मोहि अशीश जगतजननीकीतुव तनु वज्र शरीर॥ जितक बोल बोले तुम आगे रामप्रताप तुमारे। सूरदास प्रभुकी सब सांची जनकी पैज पुकारे॥

॥१०५॥ हनूमान निज पराक्रम युद्ध निमित्त कथन ॥ राग मारू ॥रावण से गहि कोटिक मारौं। जो तुम आज्ञा देहु कृपानिधि तो यह परहित सारौं॥कहो तो जननिजानकी ल्याऊं कहोतो लंक उदारौं। कहो तु अवहीं पैठि सुभट हति अनल सकल परजारौं ॥ कहो तुसचिवसवंधुसकलअरिएकहि एक पछारौं।कहो तो तुम प्रताप श्रीरघुवर उदधि पषाननि तारौं॥कहो तो दशो शीश वीसों भुज काटि छिनकमें डारौं। कहो तो ताको तृण गहाइके जीवत पाँइन डारौं॥ कहोतुसेनाचारि रचों कपि धरनी व्योम पतारौं।शैल शिला द्रुमवरपि व्योम चढि शत्रु समूह सँहारौं॥ वार वार पद परसि कहतहौं हौं कवहूं नहिं हारौं। सूरदास प्रभु तुमरे वचन लगि शिव वचननको टारौं॥ १०६॥ अन्यच ॥राग मारू ॥ हौं हरिजूको आयसु पाऊं। अवहीं जाइ उपारिलंकगढउदधि पार ले आ[illegible] जंबुद्वीप यहांते ले लंका पहुँचाऊं। सोखि समुद्र उतारौं कपिदल छिनक विलंब न लाऊं ॥ अव [illegible] जीतिदल तौ हनुमंत कहाऊं। सूरदास शुभ पुरी अयोध्या राघव सुयश वसाऊं ॥१०७॥ सिंधु स[illegible] निमित्त हनुमान विनय॥ राग सारंग ॥ रघुपति वेगि जतनअव कीजे।वांधें सिंधु सकल सेना मिलि आपुन [illegible]यसुदीजे॥तवलगि तुरतएकतौवांधौंद्रुमपापाननि छाइं। द्वितिय सिंधु सिय नैन नीरह्वै जवलौं मिले [illegible]पाई॥यह विनतीहौंकरौंकृपानिधिवारवार अकुलाई। सूरज दास अकाल प्रलय प्रभु मेटो दरशदिखाइ॥[illegible]०८॥ सीता देन निमित्त विभीषणवचन रावण प्रति। राग मारू॥ लंकपतीको अनुज शीश नायो। परम गंभीर [illegible]धीर दशरथ तनय कोपि करि सिंधुके तीर आयो॥ सियाको ले मिलो यह मतो है भलो कृपा करि [illegible]म वचनमानिलीजे। ईशको ईश करतार करुणामयी तासु पदकमल पर शीश दीजे॥कह्यो लंकेश द[illegible]शपग तासुके जाहि मत मूढ कायर डरानो। जानि अशरण शरण सूरके प्रभूको तुरंतहि जाइ द्वारे [illegible]ानो॥ ॥ १०९ ॥रामचन्द्रसों विभीषण विलाप। राग सारंग॥ आयविभीषण शीश नवायो। देखत ही [illegible]घुवीर धीर कहँ लंकपती तिहि नाम वुलायो ॥ कह्यो सु यहुरि कह्यो नहिं रघुवर यहै विरद [illegible]लि आयो। भक्तवछल करुणामय प्रभुको सूरदास यश गायो ॥११०॥ सभामध्य श्रीरामचन्द्र वचन॥ राग मारू॥तव हौं नगर अयोध्या जैहौं। एक वात सुन निश्चय मेरी रावण राज्य विभीषण देहौं। कपिदल जोरि और सव सेनासागर सेतु वँधैहौं। काटि दशों शिर वीस भुजा तव दशरथ सुत जु कहैहौं ॥ छन इक माहिं लंक गढ तोरौं कंचन कोट ढहैहौं। सूरदास प्रभु कहत विभीषण रिपुहति सीता लैहौं॥१११॥सिय दे मिलन निमित्त मंदोदरी शिक्षा रावण प्रति॥राग मारू॥वे देखिआये राम राजा। जलके निकट आय भये ठाढे दीसत विमल ध्वजा ॥ सोवत कहा चेत हो रावण मैं जु कहति कत खात दगा। कहति मँदोदरी सुनु पिय रावण मेरी वात अगा ॥ तृण दशनन लैमिलि दशकंधर कंठहिं मेलि पगा। सूरदास प्रभु रघुपति आये दहपट होय लंका ॥११२॥ अन्यच॥ शरण परि मन वच कर्म विचारि॥ ऐसो कौन और त्रिभुवन में जो अव लेइ उवारि ॥ सुनि शिष कंत दंत तृण धरिकै स्यो परिवार सिधारो। परमपुनीत जानकी सँग ले कुल कलंक किन टारो ॥ ये दशशीश चरणतर राखो मेटो सव अपराध। महाप्रभु कृपाकरन रघुनंदन रिस न गहैं पल आध ॥ तोरि धनुप मुख मोरि नृपनको सीयस्वयंवर कीनो। छिन इकमें भृगुपति प्रताप वल करपि हृदय धरि लीनो ॥ लीला करत कनकमृग मारयो वध्यो वालि अभिमानी। सोइ दशरथकुलचन्द अमित वल आए शारँगपानी ॥ जाके दल सुग्रीव सुमंत्री प्रवल यूथपति भारी। महासुभट रणजीत पवनसुत वडो वज्र वपुधारी ॥ करिहै लंक पंक छिन भीतर वज्र

शिला लै धावै । कुल कुटुंब परिवार सहित तुहिं बांधत बिलम न लावै ॥ अजहूं जिन वल कर शंकरको मान वचन हित मेरो।जाइ मिलो कौशल नरेशको भ्रात विभीषण तेरो।कटक शोर अति दूरि दशोंदिश देखत वनचर भीर।सूर समुझि रघुवंशतिलक दोउ उतरे सागरतीर॥११३॥ अन्यच ॥ काहे परतिरिया हरि आनी । यह सीता जू जनककी कन्या रमा अपुन रघुनंदन रानी ॥ रावण मुग्ध कर्मको हीनो जनकसुता तैं त्रिय करि मानी । जाके क्रोध भूमिजल पटके कहाकहैगो सिंधुज पानी॥मूरख सुखहिं नीद नहिं आवै लैहैं लंक वीस भुज भानी। सूर नमिटत भागकी रेखा अल्प मृत्यु तेरी आइ तुलानी ॥ ११४ ॥ अन्यच्च। राग मारू ॥ तोहि कौन मति रावण आई । आजु कालिह दिन चारि पांचमें लंका होति पराई ॥ लंका कोट देखि जिन गर्वहि अरु समुद्र सी खाई। जाकी नारि सदा नवयौवन सो क्यों हरै पराई॥काके हित सीतापति आये राम लक्षण दोउ भाई । सूरदास प्रभु लंका तोरैं फेरैं राम दुहाई ॥११५ ॥ मंदोदरी रावण संवाद। राग मारू ॥ आयो रघुनाथ बली सीख सुनो मेरी । सीता लै जाइ मिलो पति जु रहै तेरी ॥ तैं जु बुरे कर्म किये सीता हरि ल्यायो । घर बैठे वैर कियो कोपि राम आयो ॥ चेतत क्यों नाहिं मूढ एक बात मेरी । अजहुं सिंधु नाहिं बंध्यो लंका है तेरी ॥ सागरको पाजि बांधि पार उतरिआवैं।सेना कछु अंतनाहिंइतनोदल ल्यावैं।देखित्रिया करिकै वल कैसीदिखराऊं।रीछ कीश वश्यकरौं रामहिं गहि ल्याऊं॥जानति हौं वलहिं बालिसों न छूटि पाई।तुम्हें कहादोषदीजे कालअवधि आई॥बलि जब बहु यज्ञ करे इन्द्र सुनि सुखायो।छल करि लई छीनि मही वामन ह्वै धायो॥हिरणकशिपु अति प्रचंड ब्रह्मा वर पायो । नारसिंह रूप धरे छिन न विलम लायो ॥ पाहनसों बांधि सिंधु लंका गढ तोरैं । सूरदास मिलि विभीषण राम देहि फोरैं ॥ ११६ ॥ सेतुबंध आरंभ सिंधुमिलन ॥ राग धनाश्री ॥ रघुपति चन्द्र बिचार कर्यो । नातो मानि सगर सागरसों कुश साथरे पर्यो ॥ तीनि याम अरु वासर बीतेसिंधु गुमान भर्यो ।कीन्यो कोप कुवँरकमलापतितब कर धनुष धर्यो ॥ ब्रह्म भेष आयो अति व्याकुल देख्यो वान डर्यो ।द्रुम पषान प्रभु वेगि मँगायो रचना सेतु कर्यो ॥ नल अरु नील सुत विश्वकर्माके छुवत पषान तर्यो । सूरदास स्वामी प्रतापते सब संताप हर्यो ॥ ११७ ॥ सेतु बंधन ॥राग मारू ॥आपुन तरि तारि औरन तारत। असम अचेत पाषाण प्रगट पानी में वनचर डारत ॥ इहि विधि उपलै सुतरु पात ज्यों यदपि सेन अति भारत।बुडि न सके तु सेतु रचना रचि राम प्रताप विचारत॥जिहि जल तृण पशु बार बूडि आपुन सँग औरन वोरत। तिहि जल गाजत महावीर सब तरतअंग नहिं मोरत॥रघुपतिचरण प्रताप प्रगट सुर व्योम विमाननि गावत।सूरदास प्रभु सकल कलाविधि सायर पैज बढ़ावत११८॥ (लंकाकाण्ड) रावण दूत ग्रहण,पहिरावनि दे बिदाकरन । राग सारंग॥शुक सारन द्वै दूत पठाये।वानर वेष फिरत सेनामें सुनत विभीषण तुरत बँधाये॥ वीचहि मार परी अतिभारी राम लछन जब दरशन पाये। दीनदयालु विहाल देखिकै छोरी भुजा कहांते आये । हम लंकेश दूत प्रतिहारी समुद्र तीरको जात अन्हाये । सूर कृपालु भये करुणामय आपुन हाथ दूत पहिराये ॥११९॥राम सागर संवाद,रावण दूत पुनः लंका गमन,युद्ध निमित्त कुंभकर्ण मंत्र । राग धनाश्री॥ रघुपति जबै सिंधु तट आये । कुश साथरी बैठि इक आसन वासर तीनि गँवाये ॥ सागर गर्व धर्यो उर भीतर रघुपति नर करि जान्यो । तब रघुवीर तीर अपने कर अग्नि वरण गहि तान्यो । तब जलधर खरभरो त्रास गहि जंतु उठे अकुलाई । कह्यो न नाथ बाण मोहिं जारो शरण पर्यो हौं आई ॥

आज्ञा होइ एक छिन भीतर जल दश दिशि करि डारौं। अंतर मारग होइ सबनिको इहि विधि पार उतारौं॥ और मंत्र जोकरै देवमणि बाँधो सेतु विचार।दीनजानि धरिचाप विहँसिके दियो कंठते हार॥ यहै मंत्र सबहिन मन आयो सेतुबंध प्रभु कीजे।सब दल उतरि होइ पारंगन ज्यों न कोऊ इक छीजे॥यह सुन दूत गयो लंकामहँ सुनत नगर अकुलानो।रामचन्द्र प्रताप दशौं दिशि जल पर तरत पषानो॥दशशिर बोलि निकट बैठायो कहि यावन सतभाउ। उद्यम कहा होत लंकाको कौने कियो उपाउ॥जाम्बवंत अंगद बंधु मिलि कैसे इहि पुर ऐहैं।मो देखत जानकी नैन भरि कैसे देखन पैहैं॥हाँ सत भाउ कहत लंकापति जो जिय उत्तम मानो। सकल कहौ व्योहार कटकको कपि उमहे सो मानो॥बार बार यों कहन सकत नहिं तो इति लेहैं प्राण। मेरे जान कनकपुर फिरिहैं रामचन्द्रकी आन॥ कुंभकर्ण हँसि कह्यो सभामें सुनी आदि उत्पात। एक दिवस हम ब्रह्मसभामें चलत सुनी यह बात॥ कामअंध ह्वै सब कुटुंब धन खोवे एकहि बार।सो अब सत्य होत एहि अवसर कौन जु मेटनहार॥ और मंत्र कछु उराजिनि आनो आजु सुकपि रण मांडहि। गहै बांह रघुपतिके सन्मुख ह्वैकरि यह तनु छांडहि॥ यह यश जीति परमपद पावहु उर संशय सब खोई।मूर सकुचि जो शरन सँभारी क्षत्री धर्म न होई॥१०॥ रघुपति सेतु बबंधन॥ राग धनाश्री ॥ सिंधु तट उतरत राम उदार। रोष विषम कीनो रघुनंदन सब विपरीत विचार॥ सागर पर गिरि गिरि पर अंबर कपि घनके आकार। गरज किलक आघात उठत मनु दामिनि पावक झार॥ परत फिराइ पयोनिधि भीतर सरिता उलटि बहाई। मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्योसार पठाई। बाला विरह दुसह सबहुनको जान्यो राजकुमार। बाण वृष्टि शोणित करि सारेता व्याहत लगी न बार॥ श्रवणनि कनक कलश आभूषन मनि मुक्ता गन हार। सेतुबंध करि तिलक कृपानिधि रघुपति उतरे पार॥ १२१॥ मंदोदरी वचन॥ राग धनाश्री॥ देखि रे वह शारंगधर आयो। सायर तीर भीर बानरकी शिरपर छत्र बनायो॥ शंख कुलाहल सुनियत लागे लीला सिंधु बंधायो। सोयो कहा लंक गढ़ भीतर अधिको कोप दिखायो॥ पद्मकोटिजाकी सेना सुनियत जंतु जु एकपठायो। सूरदास रघुनाथ विमुख भये तिहि केतक सुख पायो॥१२२॥ अर्थपि॥ राग मारू॥ मेरे जान अजहूं जानकी दीजै। लंकापति पिय कहत पियासों यामें कछू न छीजै॥ पाहन तारे सागर बाँध्यो तापर चरण न भीजे। बनचर एक लंक तिहि जारी ताकी सरि क्यों लीजे॥ चरण टेकि दोउ हाथ जोरिके विनती काहे न कीजै। वे त्रिभुवनपति करें कृपा अति कुटुंब सहित सुख जीजे॥आवत देखि बाण रघुपतिके तेरो मन न पतीजै। सूरदास प्रभु लंक जारिके राज्य विभीषण दीजै॥१२३॥ मंदोदरी प्रति रावणगर्व वचन॥ कहा तू कहति त्रिया बार बारी। कोटि तेंतीस सुर सेव अहनिशि करत राम अरु लक्ष्मण हैं कहा री॥ मृत्युको बाँधि मैं राखियो कूपमें देव आवत कहा डरत नारी। कहत मंदोदरी मेटि को सकै तेहि जो रची सूर प्रभु होनहारी॥ १२४॥ रावणके पास अंगद दूतत्व॥ लंकपति पास अंगद पठायो। सुन अरे अंध दशकंध ले सिया मिलिसेतुकरिबंधरघुवीरआयो॥ यह सुनत परिजरयो वचन नहिं मन धरयो कहा तैं राम ते मुहि डरायो। सुर असुर जीति मैं सब कियो आपुबश सूर मम सुयश तिहुँलोक गायो॥ १२५॥रावण तबलौंहेरण गाजत।जबलौं कर शार्ंगपानीके नाहीं बाण बिराजत॥ यम कुबेर इन्द्र हैं जानत रचि पचिके रथ साजत॥ रघुपति रवि प्रकाश सो देखौ उडुगन ज्यों तोहि भाजत॥ ज्योंसहगमनसुन्दरीकेसँगबहुबाजन

हैं बाजत । तैसे सूर असुर आदिक सब सँग तेरे हैं लाजत ॥ १२६ ॥ रावण प्रति श्रीराम संदेश ॥ जानिहौं बल तेरो रावण। पठवों कुटुम सहित यम आगे नेक देहि धौं मोको आवन॥दारुणकोश सुभट वर सन्मुख लैहों संग त्रिदश बल पावन।अगिनि पुंज सित बाण धनुष धरि तोहिं असुर-कुल सहित जरावन ॥ करिहौं नाम अचल पशुपतिको पूजा विधि कौतुक देखरावन । असुरमुख छेदि पक्क नवफल ज्यों अरु शंकर दशशीश चढावन ॥ देहौं राज्य विभीषण जनको लंकापुर रघुआन चलावन । सूरदास निस्तरिहैं इहि यश कृपन दीन जन नव यश गावन ॥ १२७ ॥ रावण प्रति अंगद उत्तर ॥ मोको राम रजायसु नाहीं ।नातर सुन दशकंध निशाचर प्रलय करौं छिन माहीं ॥ पलटि धरौं नवखंड पुहुमि पर जो बलभुजा सँभारौं। राखौं मेलि भंडार सूर शशि नभ कागदज्यों फारौं॥जारौं लंक छेदि दशमस्तक सुर संकोच निवारौं॥श्रीरघुनाथ प्रतापचरणते उर-ते भुजा उपारौं ॥ रे रे चपल स्वरूप ढीठ तू बोलत वचन अनेरो।चितवै कहा पान पल्लव पुट प्राण प्रहारोंतेरो॥गये सशंकयुगल बंधूबन जान्यो असुरअहेरो।तीनि लोक विख्यात विशदयश प्रलय नामहै मेरो ॥रे रे अंध बीसहू लोचन परत्रियहरन बिकारी। सूने भवन गवन तैं कीनो शेष रेख नहिं टारी॥ अजहूं कह्यो सुनेजो मेरो आये निकट मुरारी। जनकसुता लै चलि पाँइन पर श्रीरघुनाथ पियारी॥ संकट परे जु शरण पुकारौं तौ क्षत्री न कहाऊं । जन्महिते तापस आराध्यो कैसेहित उपजाऊं॥अब तो सूर यहै बनिआई हरिको निजपद पाऊं। ये दशशीश ईश निर्मायल कैसे चरण छुआऊं ॥ १२८ ॥अंगदवचन राग मारू ॥मूरख रघुपति शत्रु कहावत ।जाके नाम ध्यान सुमिरणते कोटि यज्ञ फल पावत॥ नारदादि सनकादि महामुनि सुमिरत मन शुचि ध्यावत । अंबरीप प्रह्लाद भक्त बलि निगम नेति जिहि गावत ॥ जाकी घरनि हरी छल बल करि ताते बिलम न लावत । दश अरु आठ शंख वनचर लै लीला सिंधु बँधावत ॥ जाइ मिलो कौशलनरेशको मन अभिलाष बढावत।दै सीता लंकेश पाइँ पारि तव लंकेश कहावत॥तू भूल्यो दश शीश बीस भुज मोहिं गुमान दिखावत। कंध उपारि डारि भूतलमें सूर सकल दुख पावत ॥ ॥ १२९ ॥रावण भेद उपजावन अंगद राम प्रशंसा । राग मारू ॥ रे कपि क्यों पितु वैर विसारयो । तो सम कुलकन्या किन उपजी जो कुलशत्रु न मारयो ॥ ऐसो सुभट नहीं इहिमंडल देख्योबालि समान । तासों कियो बैर मैं हारयो कीनी पैज प्रमान ॥ ताको बधन कियो इहि रघुपति तो देखत विद्मान । ताकी शरण रह्यो क्यों भावै शब्द सुनौ दै कान॥रे दशकंध अंध मति मूरख क्यों भूल्यो इहि रूप । सूझत नहीं बीस हू लोचन परयो तिमिरके कूप ॥ धन्य पिता जापर परिफुल्लित राघव भुजा अनूप । वा प्रतापकी मधुर बिलोकनि गहि वारौ सतरूप॥जो तुहि नाहिं बांह बल पौरुष अर्ध राज देउँ लंका मो समेत ये सकल निशाचर लरत न मानें शंक॥जब रथ साजि चढों रणसन्मुख जीय न आनों दंग।राघव सैन समेत सँहारों करों रुधिर मय अंग॥श्री-रघुनाथचरण व्रत उर धारि क्यों नहिं लागत पाइ । सबके ईश परमकरुणामय सबहीको सुखदाइ॥ हौं जु कहत लै चलो जानकी छांडि सबै दंभान। सन्मुखहोइसुरकेस्वामी भक्तन कृपानिधान ॥ ॥ १३० ॥इन्द्रजीत युद्ध आज्ञा अंगद पापरोपन रागमारू ॥ लंकपती इन्द्रजीतको बुलायो । कह्यो तिहि जाहु रणभूमि दल साजिकै कहा भयो राम दल जोरि ल्यायो ॥ कोपि अंगद कह्यो धरों धर चरण मैं ताहि जो सकें कोऊ उठाई।तौ बिना युद्ध किये जाहिं रघुबीर फिरि यह सुनत उठे जोधा रिसाई ॥ रहे पचिहारि नहिं पार कोऊ सक्यो उठ्यो तब आप रावण खिसाई । कह्यो

अंगद कहा मम चरणको गहत चरण रघुवीर गहू क्यों न जाई ॥ सुनत यह सकुच कियो गवन निज भवनको वालिसुत ह्वै वहां ते सिधायो। सूरके प्रभुको पाँइ परि यों कह्यो अंध दशकंधको काल आयो ॥१२१॥ अंगद आवन रावण निरट ॥ वालिनन्दन आइ शीश नायो। अन्ध दशकंधको काल सूझत प्रभु में कई भेदविधि कहि जनायो॥इन्द्रजितचढ्योनिजसेनसनमाजिकै रावरी सेन हू साज कीजे। सूर प्रभु मारि दशकंध थपि बंधु तिहि जानकी छोरि यश गान लीजै ॥१२२॥ श्रीरघुनाथ प्रति लक्ष्मण प्रतिज्ञा युद्ध निमित्त॥रघुपति जो न इन्द्रजित मारौं तो न होउँ चरणनको चेरो जो न प्रतिज्ञा पारौं ॥ जो दृढ़ बात जानिये प्रभुतू धर्म गये कहि बान निवारों। शपथराम परताप तिहारे खंड खंड करि डारौं ॥ कुंभकर्ण दशशीश बीसभुज दानवदलहि बिडारौं।तवै सूर संधान सफल है रिपुको शीश उपारौं ॥१२३॥ लक्ष्मणका सेना सहित युद्ध गवन ॥ लछन दल संग लये लंक घेरी। वसुमति पद्म अरु अष्ट आकाश भये दिश निदिश कोउ नहिं जात हेरी॥ऋच्छ पलवग किलकार लागे करन आन रघुनाथकी जाइ फेरी। पाट गये टूटि परी लूट मच नगरमें सूर दरवान कह्यो जाइ टेरी ॥ १२४ ॥ मंदोदरी वचन रावण प्रति॥ गवन उठि निरखि देखि आजु लंक घेरी।कोटि जतन करि रहीनहिं सीख सुनी मेरी॥गहगहानकिलकिलात अन्धकार आयो। रविको रथ सूझत नहिं धरनि गगन छायो ॥ तोरि पाट लूट परी भागे दरवाना। लंकामें शोर परयो अजहूँ ते न जाना॥फोरि फारि तोरितारि गगन होत गाजे। सूरदास लंकापर चक्र शंख बाजे ॥ १२५ ॥ अन्यच ॥ लंका फिरि गई राम दुहाई। कहति मंदोदरि सुन पिया रावण तैं कहा कुमति कमाई॥ दश मस्तक मेरे बीस भुजा है सो योजनकी ग्वाई। मेघनादसे पुत्र महाबल कुम्भकर्णसे भाई॥ रहु रहु अबला बोल न बोलौं उनकी करत बड़ाई। तीनि लोकते पकरिमगाऊं वे तपसी दोउ भाई॥तुम्हैं मारि महारावण मारै देयँ विभीषण राई। पवनको पूत महाबल जोधा पलमें लंक जराई ॥ जनकसुतापति हैं रघुवरसे संग लक्ष्मण से भाई॥ सूरदास प्रभुको यश प्रगट्यो देवनि बंदि छुड़ाई ॥१२६॥ मेघनाद युद्ध नारद शिक्षा नाग फाँस मोचन॥ राग मारू ॥ मेघनाद ब्रह्मा वर पायो।आहुति अगिनि जिवाइ संतोपी निकस्यो रथ बहु रतन बनायो॥आयुध धरे समेत कवच सजि गर्जि चढ्योरणभूमिहि आयो।मनों मेघनायकऋतु पावस बाणवृष्टि करि सेन खपायो॥कीनो कोप कुँवर कोशलपति पथ अकास मायकनि छायो। हँसि हँसि नागफांस शर साधन बंधन बंधु समेत बँधायो॥नारदस्वामी कह्यो निकट ह्वै गरुडासन काहे बिसरायो। भयो तोप दशरथके सुतको मुनिको ज्ञान लखायो ॥ सुमिरन ध्यान जानिकै अपनो नागफांसते सैन छुडायो। सूर विमान चढे सुरपुर लौं आनँद अभय निसान बजायो ॥ १२७ ॥ कुम्भकर्ण रावण संवाद। राग मारू॥ लंकपति अनुज सोवत जगायो। लंकपुर आइ रघुराइ डेरो दियो त्रिया जाकी सिया मैं ले आयो॥ तै बुरी बहुत कीनी कहा तोहिं कहौ छांडि यश जगत अपयश बढ़ायो। सूर अब डर न करि युद्धको साज करि होइहै सोइ जो दई भायो ॥ १२८॥ लक्ष्मण वचन खड्गधारण राग मारू ॥ लछन कह्यो करवार सँभारो। कुम्भकर्ण अरु इन्द्रजीतको टूक टूक करि डारौं॥महाबली रावण जिहि बोलत पलमें शीश सँभारौं। सब राक्षस रघुवीर कृपाते एकहि बाण निवारौं ॥ हँसि हँसि कहत विभीषणसों प्रभु महाबली रण भारो।सुर सुनत रावण उठि धायो क्रोध अनल तन धारो॥१२९॥ रावण लक्ष्मण युद्ध, लक्ष्मण मूर्छा॥ राग मारू॥ रावण चल्यो गुमान भरयो। श्रीरघुनाथ अनाथबंधुसो सन्मुख कहत खरयो ॥ कोप

धरो रघुबीर धीर तब लक्ष्मण पाँय परचो । तेरे तेज प्रताप नाथ जू मैं कर धनुप धरचो ॥ सारथि सहित असुर वहु मारे रावण क्रोध जरचो । इन्द्रजीत लीनी जब सैंथी देवन हहा करचो॥ छूटी बिज्जु राशि वह मानो भूतल बंधु परचो। करुणा करत कुँवर कौशलपति नैनन नीर झरचो ॥ सूरदास हनुमान दीन ह्वै अंजलि जोरि खरचो । आज्ञा देहु सजीवन लाऊं गिरि उचाय सिगरचो ॥ १४० ॥ श्रीराम करुणा॥ राग मारू॥ निरखि मुख राघव धरत न धीर । भये अरुण विकराल कमलदल लोचन मोचत नीर ॥ बारह वरस नींद है साधी ताते विकल शरीर । बोलत नहीं मौन कहा साधी बिपति बढावन वीर॥दशरथ मरन हरन सीता-को रन वीरनकी भीर।दूजो सूर सुमित्रासुत बिनु कौन धरावै धीर॥१४१॥ अन्यच ॥अबहीं कौन-को मुख हेरों।रिपुसैना समूह जल उमडे काहि संगलै फेरों॥दुखसमुद्रजिहि वारपार नहिं तामें नाव चलाई।केवट थक्यो रह्यो अधबीचककौनआपदा आई ॥नाहिंन भरत शत्रुघनसुन्दर जासों चित्त लगायो।बीचहि भई औरकी औरै भयो शत्रुकोभायो॥मैंनिज प्राण तजौंगोसुनकपितजिहैजानकि सुनिके । ह्वैहै कहा बिभीषणकी गति यहै सोच जिय गुनिकै॥बारबारशिर लै लक्ष्मणकोनिरखि गोदपर राखैं । सूरदास प्रभु दीन वचन यों हनूमानसों भाखैं ॥ १४२ ॥ श्रीराम हनू प्रशंसा ॥ कहां गयो मारुतपुत्र कुमार । ह्वै अनाथ रघुनाथ पुकारें संकटमित्र हमार॥इतनी बिपति भरत सुनि पावैं आवैं दलहिसगूथ । करगहिधनुप जगतको जीतैं कितक निशाचरयूथ॥ नाहिंन और बियो कोउ समरथ जाहिपठाऊं दूत । वह अबहीं पौरुप दिखरावै होइ पवनके पूत॥इतनोवचन श्रवण सुनि हरष्यो फूल्यो अंग न मात। लै लै चरण रेणु निज प्रभुकी रिपुके शोणित न्हात॥ हो परबल पुनीत केशरिसुत तुम हितबंधु हमारो ॥ जिह्वा रोम रोम प्रति नाहीं पौरुप गनों तुम्हारो ॥ जहां जहां जेहि काल सँभारे तहँ तहँ त्रास निवारे।सूर सहाय कियो वन बसिकै बन बिपदादुख टारे ॥ १४३ ॥राघव प्रति हनुमत वचन लक्ष्मण मूर्छा उपाय ॥ रघुपति मन संदेह न कीजै। मो देखत लक्ष्मण क्यों मरिहैं मोको आज्ञा दीजै॥ कहोतु सूरज उगनदेहुँ नहिं दिशि दिशि बाढै ताम।कहो तु गन समेत ग्रसि खाऊं यमपुर जाइन राम ॥ कहो तु कालहि खंड खंड करि टूक टूक करि काटौं।कहोतु मृत्युहि मारि डारिकै खोदि पतालहिं पाटौं॥कहोतु चन्दहि लैअकाशते लक्ष्मण मुखहि निचोरों।कहो तुपैठि सुधाके सागर जल समेतमैं घोरों।श्रीरघुवर मोसोजनजाके ताहि कहा सकराई।सूरदास मिथ्या नहिं भाषत मोहिं रघुनाथ दुहाई॥ १४४ ॥ सजीवन निमित्त हनुमत गवन ॥ कह्यो तब हनुमतसों रघुराई । द्रोणागिरि पर आहि सजीवनि वैद सुपेन बताई॥तुरत जाइ लै ह्यांते आवो विलंब न करि अब भाई ॥सूरदास प्रभु वचन सुनत हनुमंत चल्यो अतुराई ॥१४५॥ हनू परवत लावन भरतमिलाप राग मारू॥ दौनागिरि हनुमान सिधायो। संजीवनिको भेद न पायो तब सब शैल उचायो॥ चितैरह्यो तब भरतदेखिकै अवधपुरीजब आयो । मनमें जानि उपद्रव भारी बाण अकास चलायो ॥राम राम यह कहत पवनसुत भगत निकट तब आयो। पूछ्यो सूर कौन है कहि तू हनुमत नामसुनायो ॥१४६ ॥ भरतकुशलप्रश्नपूछन हनू लक्ष्मण मूर्छा कथन,करुणामें सुमित्रा धैर्य ॥कहोकपिरघुपतिकोसंदेश।कुशलबंधुलक्ष्मणवैदेहीश्रीपति सकल नरेश॥जिन पूछो तुम कुशल नाथकी सुनो भरत बलवीर। बिलखवदन दुखभरेसियाकीहैं जलनिधिके तीर॥वनमें बसत निशाचर छल करि हरी सिया ममभात।ताकारनलक्ष्मणशरलाग्यो भये राम बिन भ्रात ॥ इतनो वचन श्रवन सुनि सुनिके सबनि पुहुमि तन जोयो।ब्राह्मिब्राहिकहि

पुत्र पुत्र कहि लोटि सुमित्रा रोयो॥ धन्य सुपुत्र पितापन राख्यो धन्य सुकुल जिहि लाज।सेवक धन्य अंतके अवसर आवै प्रभुके काज॥ वनरघुनाथ सूरके प्राण मोको लेन पठाये।थक्यो सुमध्य अर्धनिशि बीती को लक्ष्मणहि जियावै॥पुनि धरि धीर कह्यो धनि लक्ष्मण रामकाज जो आवै।सूर जियेतो जगयश पावैमरि सुरलोक सिधावै १४७॥ धैर्यसहित सुमित्रा वचन राग मारू॥ धनि जननी जो सुभटहि जावै।भीर परे रिपुकोदलदलिमलिकौतुककरिदिखरावै॥कौशल्यासोंकहति सुमित्रा जिनि स्वामिनि दुख पावै।लक्ष्मण जनि हौं भई सपूती रामकाज जो आवै॥जीय तो सुखविलसै जगमेंकीरति लोगनि गावै। मरै तु मंडल भेदि भानुको सुरपुर जाय रमावै॥ लोह गहे लालच करि जियको औरो सुभट लजावै। सूरदास प्रभु जीति शत्रुको कुशल क्षेम घर आवै॥ १४८ ॥हनुमत भरतप्रति उत्तर॥ राग मारू॥पवनपुत्र बोल्यो सतभाय। जाति सिराति राति बातनि हौं सुनो भरत चित लाय॥ श्रीरघुनाथ सजीवनकारण मोको यहां पठायो। भयो अकाज अर्ध निशि बीती लक्ष्मण काज नशायो॥त्यो पर्वत शर बैठि पवनसुत हौं प्रभुपै पहुँचाऊं।सूरदास पांवरि सम शिरहै इहि बल भरत कहाऊं॥१४९॥ कौशल्यासंदेश रामप्रति॥राग मारू॥सुनो कपि कौशिल्याकी बात।इहिपुर जनि आवहु बिनुलक्ष्मन सुनो वच्छ रघुनाथ॥जिनतज्यो राजकाज माता हित तुम चरननि चित माने। कहा कहूँ कछु कहत न आवैसज्जन होइ सु जाने॥लक्ष्मन सहित सकल सेनापति आनिराजपुरकीजै। नातरुसगसुमित्रासुतपरवारिआपुनसोदीजै॥ १५०॥ विनती जाइ कहिय पवनसुत तुम रघुपतिकेआगे।या पुरजिनि आवहु बिनुलक्ष्मण जननीलाज न लागे॥मारुतसुत संदेश हमारो सुमित्रा कहि समुझावै। सेवक जूझि परे रन निग्रह ठाकुर तौ घर आवै॥ जबते तुम गौने काननको भरत भोग सब छाडे। सूरदास प्रभु तुमरे दरशबिनुदुख समूहडरगाडे॥ १५१॥ हनुमानसजीवन लावन लक्ष्मण चेत होन॥ राग सारंग॥हनुमान सजीवन ल्यायो। महाराज रघुबीर धीरको हाथ जोरि शिर नायो॥ पर्वत आनि धर्यो सागर तट भरत संदेश सुनायो॥ सूर सजीवन दे लक्ष्मणको मूर्छित फिरि जगायो॥ १५२॥ श्रीराम वचन जय प्रतिज्ञा सहित॥ राग कान्हरा॥दूसरे कर वाण न लेहौं। सुन सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहि बान असुर सब हैहो॥शिवपूजा जिहि भांति करीहै सोइ पद्धति परतक्ष दिखैहौं। देत प्रहार पाय फल वर्जित शिर माला कुल सहित चढैहौं॥ मनो तूलगन परत अगिन मुख जानि जडनि यमपथ पठैहौं।करिहौं नहीं विलम्ब कछू अब उठि रावणसन्मुख ह्वैधैहौं॥इमि दमि दुष्ट देव द्विजमोचन लंक विभीषण तुमको देहौं। लक्ष्मण सिया समेत सूर कपिसब सुख सहित अयोध्या जैहौं॥ ॥१५३ रावण कुलक्षय॥राग मारू॥आजुअति कोपे हैं रनराम। ब्रह्मादिक आरूढ विमानन देखे सुर संग्राम॥धर तन दिव्य कवच सजि करि अरु कर धार्यो शारंग। शुचि करि सकल बान सूधे करि कटितट कस्यो निषंग॥सुरपुरते आयो रथ सजिके रघुपति भयो सवार। कांपी भूमि कहा अब ह्वैहै सुमिरत नाम मुरारि॥ क्षोभित सिंधु शेष शिर कंपित पवनगती भइ पंग। इन्द्र हस्यो हर हेमि बिलखान्यो जानि वचन भयो भंग॥ घर अंबर दिशि विदिशिनिढेअतिसायक किरन समान। मानो महाप्रलयके कारन उदित उभय पट भान॥ टूटत ध्वजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिर त्रान। जूझत सुभट जरत ज्यो दौ द्रुम बिनु शाखा बिनु पान॥ शोणित छिछि उछरि आकाशहि गज बाजिन शर लागी। मनो नगर रन तननि धरनिते उपजी है अति आगी॥ उठि कबंध भहरात भीत ह्वै निकसतहै जरिजागि।फिरतशृगाल सच्यो सो कारत चलत बिसरि लै भागि॥ रघुपति रिस पावक प्रचंड अति सीता श्वास समीर।रावण कुल अरु कुम्भकर्ण वन सकल सुभट रणधीर॥भये भस्म कछु बार न लागी ज्यो ज्वाला पट

चीर। सूरदास प्रभु अपुने बाहुबल कियो निमिष मय कीर ॥ १५४ ॥ रघुपति अपुनो प्रण प्रतिपारचो।तोरचो कोपि प्रबल गढ रावण टूक टूक करि डारचो ॥ कहुँ भुज कहुँ धर कहुँ शिर लोटत मनो मदच मतवारो। डरपत वरुण कुवेर इन्द्र यम महा सुभट तन भारो॥रह्योमांस को पिंड प्राण लैगयोबाण अनियारो। जाके नव ग्रह परे पाटि तर कूपे काल उसारचो॥ सो रावण रघुनाथछिनकमें कियो गिद्धको चारो।शिर सँभारि ले गयो उमापति रह्यो रुधिरकोगारो॥ छोरे और सकल सुखसागर बाँधि उदधि जल खारो। सुर नर मुनि सब सुयश बखानत दुष्ट दशानन मारचो ॥दियो विभीषण राज्य सूर प्रभु कियो सुरनि निस्तारचो।बंधु सहित जानकी संग ले अवधपुरी पग धारचो ॥ १५५ ॥ रावण मरण समय मंदोदरी आदि विलाप ॥ करुणा करति मंदोदरी रानी। चौदह सहस सुंदरी ऊभी उठै न कंत महा अभिमानी॥ बार बार बरज्यो नहिं मानत जनकसुता तैं कत घर आनी। ये जगदीश ईश कमलापति सीता तिया तैं जु करि जानी॥ लीन्हे गोद विभीषण रोवत कुल कलंक ऐसी मति ठानी।चोरी करी राजहू खोयोअल्प-मृत्यु तेरी आइ तुलानी ॥ कुम्भकर्ण समुझाइ रहे पंचि दे सीता मिलि शारंगपानी। सूर सबनि-को कह्यो न मान्यो त्यों खाई अपनी रजधानी ॥ १५६ ॥ आकाशसे अमृत वर्षा ॥ सुर-पतिहि बोलि रघुबीर बोले।अमृतकी वृष्टि रणखेत ऊपर करोसुनत तिन अमियभंडार खोले॥ उठे कपि भालु तत्काल जय जय करत असुर भये मु रघुवर निहारे। सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहि परत सिद्ध गंधर्व जय जय पुकारे ॥ १५७ ॥ सीता मिलाप ॥ लक्ष्मण सीता देखी जाई। अति कृप दीन छीन तन प्रभु बिन नैननि नीर बढाई ॥ जाम्बवंत सुग्रीव विभीषण करी दण्डवत आई।आभूषण बहु मोल पटंबर पहिरो मात बनाई ॥ बिनु रघुनाथ मोहिं सब फीके आज्ञा मेटि न जाई। पुहुप विमान बैठि बैदेही त्रिजटा तब गुहराई॥ देखत दरशराम मुख मोरचो सिया परी मुरछाई। सूरदास स्वामी तिहुँपुरके जग उपहास डराई ॥ १५८ ॥ परीक्षा हेतु सीता अग्नि प्रवेश। राग सोरठ ॥ लक्ष्मण रचो हुताशन भाई। यह सुनि हनूमान दुख पाये मोपै लख्यो न जाई ॥ आसन एक हुताशन बैठी मानो कुंदनकी अरुणाई। जैसे रवि इक पल घन भीतर बिनु मारुत दुरिजाई॥ ले उछंग उत्संग हुताशन निष्कलंक रघुराई। ले विमान बैठारि जानकी कोटि वदन छबि छाई ॥ दशरथ कही देवहू भाषी व्योम विमान निकाई।सियारामले चले अवधको सूरदास बलि जाई॥१५९॥ कौशिल्या शकुन विचार काग वचन। राग सारंग ॥ बैठी जन-नि करति शगुनौती। लक्ष्मण राम अब मिलैं मोको दोउ अमोलक मोती ॥इतनी कहतसुकाग उहांते हरीडार उडि बैठ्यो। अंचल गांठ दई दुख भाज्यो सुख जो आनि उर पैठ्यो॥जौलौं हौं जीवन भर जीवों सदा नाम तुव जपिहौं। दधि ओदन दोना भरि देहौं अरु माइनमें थ-पिहौं ॥ अबके जो परचो करि पाऊं अरु देखौं भरि आंखें। सूरदास सोनेके पानी मढिहौं चोंच अरु पांखें॥१६०॥अंगद पैठौठी रावण वध आदि पर्यन्त लीला। राग मारू ॥ बालिनंदनबली विकट वनचर महा द्वार रघुवीर को वीर आयो। और ते दौर दरवान दशशीशसों जाय शिर नाय यों कह सुनायो ॥ सुनि श्रवण दशवदन दशन अभिमान कर नैनकी सैन अंगद बुलायो। देखि लंकेश कपिभेश दर दर हँस्यो सुन्यो भट कटक को पार पायो ॥ विविध आयुध धरे सुभट सेवत खरे छत्रकी छांह निर्भय जनायो। देव दानव महाराज रावण सभा कहन को मंत्र तहां कपि पठायो ॥ रंक रावण कहा टेक तेरो इतो दोउ कर जोरि विनती विचारो।परम अभिराम रघुनाथके रोमपर वीस भुज शीश दश वारि डारो।झटकि हाटक मुकुट

पटकि भट भूमिसों झारि तरवारि तेरो शिर सहारो । जानकीनाथके हाथ तेरो मरण कहा मतिमंद तोहिं मध्य मारो ॥ पाक पावक करे वारि सुरपति भरे पवन पावन करै द्वार मेरे । गान नारद करे ज्ञान सुरगुरु कहै वेद ब्रह्मा पढे पौरि टेरे ॥ शेष वासुकि प्रभृति नाग गंधर्व गण सकल वसुजीति मैं करे चेरे। सुनि अरे शठ दशकंधको कौन भय राम तपसी दये आनि डेरे॥ तपवली सत्यतापस वली तपविना वारि पर कौन पापाण तारै। कौन ऐसो वली सुभट जननी जन्यो एकही बाण तकि बालि मारै॥ परमगंभीर रणधीर दशरथतनय शरण गये कोटि अवगुण बिसारै। जाइ मिलि अध दशकंध गहि दंत तृण तौ भले मृत्यु मुखते उवारै ॥ कोपि करिवार गहि काल लंकाधिपति मूढ कहा रामको शीश नाऊं । शंभुकी सत सुनि कुकपि कायर कृपण श्वास आकाश वनचर उडाऊं ॥ होइ सन्मुख भिरा शक नहिं मन धरो मारि सब कटक सागर वहाऊं।कोटि तेंतीस मम सेवनिशिदिन करत कहाअव राम नरसों डराऊं॥परो भहराय भभकत रिपु घायसो करि क्रंदन रुधिर भरो अघाऊं । सूर साजे सबै देव दुंदुभि अरे एकते एक रण करि बिताऊं॥१६१॥रघुपतिरावण सुन्यो शीशतव शिर धुन्योउमडि रण रसरघुवीर आये।रुंडभक रुंड धुकि धकत धरणी परे रुधिर सरिता नहीं पार पाये॥राम शर लागि मनु आगि गिरिपरजरी उछलि छिछिन शरनि भानु छाये ॥ मारि दशकंध पथ वधुको सूर प्रभु राजीवनैन घर सिया ल्याए॥ १६२ ॥(उत्तर काड) अयोध्या प्रशंसा ॥राग मारू ॥हमारो जन्मभूमि यह गाउँ । सुनहु सखा सुग्रीव विभीषण अवनि अयोध्या नाउँ॥देखत वन उपवन सरिता सर परम मनोहर ठाउँ । अपनी प्रकृति लिये बोलतहौं सुरपुरमें न रहाउं ॥ ह्यांके वासी अवलोकत हौं आनँद उर न समाउँ । सूरदास जो विधि न सकोचे तो वैकुंठ न जाउँ॥१६३॥ राम आगमन श्रवण सुनि भरत रचना करन उत्सव प्रकाश। राग वसंत ॥राघव आवति हैं अवधि आज।रिपु जीते साधे देवकाज॥प्रभुकुशल बंधु सीतासमेत।जस सकल देश आनंद देत॥ कपिशोभितसकलअनेकसंग। ज्योंपूरणशशिसागर तरंग॥सुग्रीव विभीषण जाम्बवंत।अंगद केदारसुखेन संत॥नलनीलद्विविद केसरिगवच्छ।कपि कहे मुख्य और अनेक लच्छ॥ जब कही पवनसुत विविध बात। तब उठी सभा सब हर्षगात॥ ज्यों पावस ऋतु घन प्रथम घोर। जलजीवक दादुर रटत मोर॥ जब सुने भरत पुर निकट भूप। तब रच्यो नगर रचना अनूप॥प्रतिप्रति गृह तोरण ध्वजा धूप। सजे सकल कलश अरु कदलि जूप॥ दधि हरददूब फल फूलपान । कर कनकथार तिय करतगान ॥ सुनि भरे वेद ध्वनि शंख नाद। सुनि निरखि पुलक आनँद प्रसाद ॥ देखत प्रभुकी महिमा अपार।सब बिसरि गये मन बुधि विकार॥जय जय दशरथ कुलकमल भान।जय कुमुद जननि शशि प्रजा प्रान ॥ जयदिन भूतल शोभा समान।जय जय जय सूर न शब्द आन ॥ १६४ ॥ श्रीराम वचन सुग्रीव प्रति भरत दरशावन परस्पर मिलाप। राग मारू ॥ देखो कपिराज भरत वे आये। मम पावरी शीश पर जाके कर अँगुरी रघुनाथ बताए ॥ क्षीन शरीर बीरके बिछुरे राग भोग चितते बिसराए ॥ लघु दीरघ तपसा अरु सेवा स्वामी धर्म सब जगहिं सिखाये ॥ पुहुप बिमान दूरिहीं छाडे चरण चपल प्रभु प्रण करिधाये । आनँद मगन सदन सुत कैकई कनक दंड ज्यों गिरत उठाये ॥ भेंटत आसू परत पीठिपर गद्गद गिरा नैन जल छाए । ऐसे मिली सुमित्रा सुतको विरह अग्नि तनु जरत बुझाए ॥ यथायोग भेंटे पुरवासी शूल मिटी सुखसिंधु पठाए । सिया राम लक्ष्मण मुख निरखत सूरदासके नैन सिराए ॥ १६५ ॥ कौशल्या सुमित्रा आदि आरती मंगलाचार ।राग मारू ॥अति

सुख कौशल्या उठि धाई । उदित वदन अरु मुदित सदनते आरति साजि सुमित्राल्याई॥ ज्यों सुरभी बन बसति बच्छबिनु परवश पशुपनिकी बहराई । चली साँझ समुहाय स्रवत थन उमँगि मिलन जननी दोउ आई ॥ अमी वचन सुनि होत कुलाहल देवन दिविदुंदुभीबजाई । दधिफल दूब कनकके कोपर आरति युवति विचित्र बनाई ॥ बरण बरण पट पडत पाँवडे नैननि सकल सुखद ही छाई । पुलकित रोम हर्ष गदगद सुर युवतिन मंगल गाथा गाई॥निजमन्दिरमें आनि तिलक दे द्विजन अशीश सुनाई । सिया सहित सुख लेहो ह्यां तुम सूरदास बलि जाई॥१६६॥ श्रीराम राज्याभिषेक ॥ राग मारू ॥ मणि मय आसन आनि धरे । दधि मधु नीर कनकके कोपर आपुन भरत भरे ॥ प्रथम भरत बैठाइ बंधुको यह कहि पाँइ परे । हौं पावन प्रभुचरण पखारो रुचि करि आप करे ॥ निजकर चरण पखारि प्रेम रस आनँद आँसु ढरे । ज्यों शीतल संताप सलिल दे शुद्धि समूह करे ॥ परसत पाणि चरण पावन दुख अँग अँग सकल हरे । सूर सहित आमोद चरण जल लेकर शीश धरे ॥१६७॥ रागआसावरी ॥ राज समाज वर्णन ॥ विनती केहि विधि प्रभुहि सुनाऊं।महाराज रघुबीर धीरको समय न कबहूं पाऊं॥ याम रहत यामिनके बीते तिहि औसर उठि धाऊं । सकुच होत सुकुमार नीदसे कैसे प्रभुहि जगाऊं ॥ दिनकर किरण उदित ब्रह्मादिक रुद्रादिक इक ठाऊं।अगणित भीर अमर मुनिगनकी तिहिते ठौर न पाऊं॥उठत सभा दिनमध्य सियापति देखि भीर फिरिआऊं।न्हात खात सुख करत साहिबी कैसेकर अनखाऊं ॥ रजनीमुख आवत गुण गावत नारद तुम्बर नाऊं । तुमही कहा कृपणही रघुपति किहिविधिदुख समझाऊं॥ एक उपाय करौ कमलापति कहो तो कहि समझाऊं। पतित उधारण सूर नाम प्रभु लिखि कागद पहुंचाऊं ॥ इन्द्र दुराचार इन्द्रअहल्या प्रति गौतम शाप।राग बिलावल ॥ सुरपति गौतम नारि निहारि।आतुर ह्वै गयो बिनाविचार॥काग रूपकरि ऋषि गृहआयो।अर्धनिशा तेहि बोल सुनायो॥ गौतम लख्यो प्रात है भयो।न्हान काज सो सरिता गयो॥ तब सुरपति मन माहिं विचारी ।पतिव्रता है गौतम नारी ॥ गौतम रूप बिना जो जैये । ताके शाप अग्निसो दहिये ॥ गौतम रूप धारि तहँ आयो । मूर्छित भयो अहिल्या पायो ॥ कह्यो अहिल्या तू को आहि।वेगि यहाँते बाहिर जाहि॥यहि अंतर गौतम ऋषि आयो।इन्द्र जानि यह वचन सुनायो॥तू इन्द्राणी तजि ह्यां आयो । मूरख तैं परत्रिय मन लायो॥इक भगकी तोहि इच्छा भई।भग सहस्र मैं तो तन दई॥इन्द्र शरीर सहस तन भई । छुप्यो सो कमल नालमें जई॥काल बहुत ता ठौर बितायो । सुनि गुरु ऋषिन सहित तब आयो॥यज्ञ कराइ प्रयाग न्हवायो।तौहू परवततु नहिं पायो॥नवमव ऋषिन दई आशीश।भगतें नेत्र करो जगदीश॥ भगअस्थान नेत्र तब भये।ऋषि इन्द्रहिलैसुरपुर गये ॥ परत्रिय मोह इन्द्र दुख पायो।सो नृपमैं तोहि कहि समझायो॥परत्रिय नेह करै जोकोई। जीवत नरक परत है सोई ॥ शुक नृपसो ज्यो कहि समुझायो । सूरदास त्योहीकहिगायो॥१६९॥ राजा नहुष राज्य प्राप्ति । इन्द्राणी चाह । ब्रह्म शापते सर्प देह पावन ॥ राग बिलावल ॥ सुरपतिको शाप जब भयो । सो सुरपुर लज्जित नहिं पायो ॥ नहुप नृपतिपे ऋषि सब आई । कह्योसुरराज करौतुम जाई ॥ नहुप इन्द्र राज जब पायो । इन्द्राणीको देखि लुभायो ॥कह्यो इन्द्राणीमोपेआवै।नृपसों ताको कहा बसावै ॥ सुरगुरुसो यह बात सुनाई । अवधि करन तिहि कहि समुझाई ॥ शची नृपतिसों सोई भाषी । नृप सुनिकै हृदयमे राखी॥ शची अग्निको तुरत पठायो ।सुरपतिदशा देखि सो आयो ॥ इन्द्राणी सुनि व्याकुल भई। अवधि परी व्यतीत ह्वै गई॥ तब तिन ऐसी बुधि

१ सुर ।

उपजाई। इहि अंतर सो नहुप बुलाई ॥कह्यो तुम अश्वमेध नहिं कियो ।ऋषिआज्ञा तुम सुर-पति भयो॥ विप्रन पर चढिके जो आवहु।तो तुम मेरो दर्शन पावहु॥नृपति ऋषिनपरह्वै असवार। चलियो तुरत शचीके द्वार ॥ काम अंध कछु रहि न सँभार। दुर्वासा ऋषिको पग मार ॥ सर्प सर्प कहि वारंवार। तब ऋषि दीन्हो ताको डार॥ कह्यो सर्प तैं भाष्यो मोहि।सर्परूपही तू नृप होहि ॥ जबै शापऋषिसों नृप पायो। तब ऋषिचरण माथोनायो॥ इहशापमुक्तिज्योंहोइ। ऋषि मोको अब भाषो सोइ॥कह्यो युधिष्ठिर देखे जोइ। तब उद्धार तेरो नृप होइ॥नृप ऐसो है परत्रिय प्यार। मूर्ख करत सो बिना विचार ॥ जोशुक नृपसोंकहिसमुझायो। सूरदासत्योंही कहि गायो ॥ १७० ॥ कच संजीवनी विद्या हेतु शुक्र गेह गवन, देवयानीलोभावन परस्पर शाप। राग भैरव ॥

अविगति गति कछु समुझि न परै।जो कछु प्रभु चाहै सो करै॥जिवकोंकियो कछू नहिं होइ।को-टि उपाय करो किन कोइ ॥ एक वार सुरपति मन आई। शुक्र असुरको लेत जिवाई।मम गुरु हू विद्या पढि आवैं। मृतक सुरनको फेरि जिवावैं ॥ निज गुरुसों भाष्यो तिन जाई।शुक्र असुर-को लेत जिवाई ॥ तुमहू यह विद्या सिखि आवहु। मृतक सुरनको तुमहु जिआवहु ॥ तब तिन कचको दियो पठाइ। कह्यो शुक्रको तिन शिर नाइ॥मैं आयो तुमपै शिर नाइ। तुम मुहिं विद्या देहु पढाइ ॥शुक्र कह्यो तासों या भाई। देहौं विद्या तोहि पढाई ॥ विद्या पढै करै गुरुसेव। सब विधि सुखरै ताके देव ॥ शुक्रसुता देवयानी नाम। सब गुण पूर्ण रूप अभिराम ॥सुरगुरुसुतको देखि लुभाई।देखे ताहि पुरुषकी नाई॥कितक काल व्यतीत जब भयो।गाइ चरावनको सोगयो॥ असुरनमिलि यह कियो विचार।सुरगुरुसुतको डारैं मारि॥जो यह संजीवनि पढि जाई॥तौ हम शत्रुनि दय जिआई॥यह विचार करि कचको मारयो।शुक्रसुता दिन पंथ निहारयो॥सांझ भये हू जब नहिं आयो। शुक्र पास तिन जाइ सुनायो ॥ शुक्र हृदयमें करी विचार। कह्यो असुरन वहि डारो मार ॥ सुता कह्यो तिहि फेरि जिवावहु। मेरे जियके सोच मिटावहु ॥ शुक्र ताहि पढि मंत्र जिवायो।भयो तासु तनयाको भायो॥पुनि हति मदिरा माहिं मिलाई।दिये दानवनि तिहि शुक्र पियाई ॥तबते हत्या मद की लागी। यहै जानि सब देवन त्यागी॥शाप दिये ताको या भाई।जो तोहि पियै सु नरकहिं जाई॥कचबिनु

मारयो कचको असुरन धाई। मदिरामें सुहि

कहोसुअब मैं करों॥कह्यो विनय करि सुनि

कचहिं पढाई। तासेती यों कह्यो समुझाई॥जब तुम निकरि उदरते आवहु।याविद्याकरि मोहिं जिवावहु॥ उदर फारि तिहिं बाहर कियो। मृतक कच ऐसी विधि जियो॥सुजब उदरते बाहर आयो। संजीवनि पढि शुक्र जिवायो ॥बहुत काल व्यतीत जब भयो। कच ऋषि ऋषितन-यासों कह्यो॥ जो तुमरी मोहिं आज्ञा होई। तात मातको देखौं जोई ॥ऋषितनया कह्योमोहिं विवाह। कच कह्यो तू गुरुभगनी आहि। तब तिन शाप दियो या भाई। विद्या पढी सु वृथा जाई॥ कचहूं ताहि कह्यो या भाई ।विप्र पुरुष तोहि मिले न आई॥ यह कहि कच अपनेगृह आयो। पिता पास वृत्तान्त सुनायो ॥ शुक्र नृपसों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १७१ ॥ देवयानी कूप निकासन, राजा ययाति पाणिग्रहण, शुक्र शाप, राजपुत्र यौवन भोग, वैराग्य करि मोक्ष प्राप्ति। राग भैरव ॥दानव वृषपर्वा बलभारी नाम शरमिष्ठा तासु कुमारी ॥ताहि देवयानीसों प्यार। रहै न तासों पल भरि न्यार॥ एक वार ताके मन आई। न्हावन काज प्रयाग सिधाई।

तासँग दासी गईं अपार । न्हान लगीं सब कपडे डार ॥ दनुजसुता तिहि नहीं निहारी । अँधियारी आई अति भारी॥बसन शुक्रतनयाके लीने । करत उतावलि परत न चीने ॥ शुक्रसुता जब आई बाहर।बसन न पाए तिन तिहि ठाहर॥ असुरसुताको पहिरे देखि । मनमें कीनो क्रोध विशेखि ॥ कह्यो मम बसन नहीं तुव योग । तुम दानव हम तपसी लोग ॥ मम पितु दियो राज नृप करत । तू मम बसन हरत नहिं डरत ॥ तिन कह्यो तुव पितु भिक्षा खात । बहुरि कहति हमसों ये बात॥या बिधि कहि करि क्रोध अपार । दीनों ताहि कूपमेंडार॥ नृपति ययाति अचानक आयो। शुक्रसुताको दरशन पायो॥दियो तब बसन आपनो डारि । हाथ पकरिके लियो निकारि ॥ बहुरो नृप निज गेहसिधायो । सुता शुक्रसों जाइ सुनायो ॥ शुक्र क्रोध करि नगर तियाग्यो । असुर नृपतिहनिऋषिसँग लाग्यो ॥जब बहुभाँति विनयनृप करी । तब ऋषि यह बाणी उच्चरी॥ मम कन्या प्रसन्न ज्यों होय। करोअसुरपति अबतुमसोय ॥ शुक्रसुतासों कह्यो तिन आई । आज्ञा होइ करौं सु उपाई ॥ जो तुम कहो करौं अब सोइ ।तब पुत्री मम दासी होइ॥दासीसहस ताहिसँग भई । नृपपुत्रीदासीकरिदई॥सो सब ताकीसेवा करैं । दासी भाव हृदयमैं धरैं॥इकदिन शुक्रसुतामन आई । देखौं जाइ फूल फुलवाई॥ लै दासी फुलवारी गई । पुहुप सेज रचि सोवत भई ॥ असुरसुता तेहि व्यजन डुलावै । सोवत सेज सु अति सुख पावै ॥ तेहि अवसर ययाति नृप आयो । शुक्रसुता तेहि वचन सुनायो॥नृपममपाणिग्रहण तुम करो । शुक्रसकुच हृदयमतिधरो॥ कचको प्रथमदियो मैं शाप। उनहू मोहि दियो करि दाप॥ ताको कोइ न सकै मिटाई । ताते ब्याह करो तुम राई॥ नृपकह्यो कहो शुक्रसोंजाइ । करिहौंजो कहिहैं ऋषिराइ ॥ तब तिन कह्यो शुक्रसों जाइ । कियो ब्याह ऋषि नृपति बुलाइ ॥ असुरसुता ताके सँग दई । दासी सहस तासु सँग भई ॥ दंपति भोग करत सुख पाए । शुक्रसुता यों द्वै सुत जाए ॥ कह्यो शरमिष्ठा अवसर पाइ । रतिको दान देहु मोहिं राइ ॥ नृप ताहूसों कीनो भोग । तीन पुत्र भये विधि संयोग ॥ शुक्रसुता तिहि पुत्रन देखि । मनसों कीनो क्रोध विशेखि ॥ कह्यो शरमिष्ठासुत कहां पायो। उन कह्यो ऋषि किरपाते जायो॥बहुरि कह्यो ऋषिको कह नाम । कह्यो स्वप्न देख्यो अभिराम ॥ पुनि पुत्रन सों पूछ्यो जाई । पिता नाम मोहिं कहो बुझाई ॥ बडे पुत्र भाष्यो पुनि ताहि । नृपति पिता ययाति मम आहि ॥ सुनि नृपसों कियो युद्ध बनाई । बहुरि शुक्र सेती कह्यो जाई ॥ पाछेते ययातिहू आयो ।ऋषि तासों यह वचन सुनायो ॥ तैं यौवन मदते यह कीनो । ताते शाप तोहिं मैं दीनो ॥ जरा अबहिं तोहिं व्यापै आइ।भयो वृद्ध तब कह्यो शिर नाइ॥ऋषि तुम तो शराप मोहिंदियो। पूरण काम नाहिं मैं कियो ॥ ताते जो मोहिं आज्ञा होइ।आयसु मानि करौं अब सोई ॥ कह्यो जरा तेरी सुत लेय ।अपुनो तरुनापा तोहिं देय ॥ भोग मनोरथ तब तू पावै।मेरे वचन वृथा नहिं जावै॥बडे पुत्र यदुसों कह्यो आइ । उन कह्यो वृद्ध भयो नहिं जाइ ॥ नृप कह्यो तोहि राज नहिं होई । वृद्धपनो ले राजा सोई ॥ औरनहू सों जब नृप भाख्यो।नृपति वचन काहू नहिं राख्यो ॥ लघु सुत नृपति बुढापो लयो । अपुनो तरुनापो तेहि दयो ॥ वर्ष सहस्र भोग नृप कियो । पै संतोष न आयो हियो ॥ कह्यो विषय तेतृप्ति न होई ।भोग करौ कैसो किन कोई ॥ तब तरुनापा सुतको दीनो । वृद्धपनो अपनो फिरि लीनो ॥ वनमें करी तपस्या जाइ । रह्यो हरिचरणनसों चित लाइ ॥ या बिधि नृपति कृतारथ भयो । सो राजा मैं तुमसों कह्यो ॥ शुक ज्यों नृपको कहि समुझायो ॥ सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १७२ ॥

इति श्रीमद्भागवते–सूरसागरे कविवरश्रीसूरदासकृते नवमः स्कंधः समाप्तः ॥ ९ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्री सूरसागर।

दशमस्कन्ध।

राग सारंग ॥ व्यास कह्यो शुकदेवसों श्रीभागवत वखान ।द्वादशस्कंध परम सुभग प्रेम भक्तिकी खान ॥ नवस्कंध नृप सों कही श्री शुकदेव सुजान । सूर कहत अब दशमको उरमें धरि हरि ध्यान ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो ।हरि चरणारविंद उर धरो॥जय अरु विजय पार्षद दोई । विप्रनशाप असुर भयेसोई॥दोइजन्मज्योंहरिउद्धारी । सोशुक तुमसों कहि उचारी॥ दंतवक्र शिशुपाल जोभये।वासुदेव होइसोपुनि हए॥ औरो लीला वहु विस्तार।कीन्हे जीवन ज्यों निस्तार॥ सो अब तुमसों सकल वखानों॥ प्रेमसहित सुनि हृदये आनो ॥जो यह कथा सुनै चितलाई । सो भव तरि वैकुंठहिं जाई ॥ जैसे शुक नृपकोसमुझायो । सूरदास त्योंहीं कहि गायो॥२॥भगवान जन्मलीला राग सारंग॥बालविनोद भावती लीला अतिपुनीत मुनिभाखीहो। सावधान ह्वै सुनहु परीक्षित सकलदेव मुनि साखीहो ॥ १ ॥ कालिंदीके कूल,बसत एक मधुपुरी नगर रसाला हो ।कालनेमि उग्रसेन वंश कुल उपजे कंस भुवाला हो॥ २ ॥आदिब्रह्म जननी सुर देवी,नामदेवकी बाला हो। दई विवाहि कंस वसुदेवको अघभंजन उरमाला हो॥३॥हय गज रत्न हेम पाटंवर आनँद मंगलचारा हो । समदत भई अनाहद वाणी कंसकान झनकारा हो ॥ ४ ॥ याके गर्भ अवतरें जे सुत करिहैं प्राण प्रहारा हो । रथते उतरि केश गहि राजा कियो खड्ग पटतारा हो ॥ ५॥ तब वसुदेव दीनह्वै भाष्यो पुरुष न त्रियवध करई हो॥मैंसुनी कान भेद बिधि वाणी ताते संच न परई हो॥६॥आगे वृक्ष फरे जो विषफल वृक्षहि विनकिन सरई हो।ताहि मारि तोहि और विवाहों अग्रसोच क्यों मरई हो॥७ ॥बालककाज धर्म जनि छाँडो राय न ऐसी कीजे हो । तुम मानी वसुदेव देवकी जीवदान इन दीजे हो ॥ ८ ॥ कीन्हो यज्ञ होत है निःफल वेद भंग नहिं कीजे हो ।याके गर्भ अवतरें जे सुत सावधान ह्वै लीजेहो ॥९ ॥ वाचाबंध कंस करि छांड्यो तब वसुदेव पतीजे हो।मानो मृगी चरत गहि वनमें नैन नीरउर भीजे हो ॥ ॥१०॥ प्रथम पुत्र देवकी जु जायोले वसुदेव दिखायो हो।बालक देखि कंस हँसि दीन्हेसबअपराध क्षमायो हो ॥ कंस कहा लरिकाई कीन्ही कहि नारद समझायो हो। जाको भरम करतहो राजा मति पहिले सो आयो हो॥११ ॥यह सुनि कंस पुत्र फिरि मार्‍यो येहिविधि सबनिसँहारो हो ।तब देवकी भई तनु व्याकुल कहँले प्राणप्रहारो हो ॥१२॥ कंसवंशको नाश करत है कहाँले जीव उबारों हो।इहि दुख कहा मेटिहै श्रीपति अरु हौ काहि पुकारों हो ॥१३॥धेनुरूप धरि पुहुमि पुकारी शिव विरंचिके द्वारा हो । सब मिलि गये जहां पुरुपोत्तम सोवत अगम अपारा हो ॥ १४॥क्षीर समुद्र मध्यते यों कहि दीरघ वचन उचारा हो॥ उधरौ धरणि असुर कुल

मारी धरि नरतनु अवतारा हो ॥१५॥ छूँछी मसक पवन पानी ज्यों तैसोइ जन्म विकारी हो। पाखंड धर्म करतहैं पाँवर नाहिन चलत तुम्हारी हो ॥ १६ ॥ मारग छाँडि कुमारगसों रत बुधि विपरीति विचारी हो ।अमृत छाँडि विषय विषअचवत देत अधमगति गारीहो॥१७॥सुर नर नागतथा पशु पंछी सबको आयसु दीन्हों हो। गोकुल जन्म लेहु मेरे सँग जो चाहत सुख कीन्हो हो॥१८॥दैवैकोप अकर्ष रोहिणी आपुन अंश जो लीन्हों हो।जेहि माया विरंचिशिव मोह्यो वोहिवाणि कारि चीन्हो हो ॥ १९ ॥ अपनेहि गेह मधुपुरीआवन देवकि प्राणअधाराहो। असुर मारि सुरसाध बढावन ब्रजजनसुखदातारा हो॥२०॥हरिके गर्भवास जननीकोवदनउजारा लाग्यो हो । मानहु शरदचंद्रमा प्रगट्यो शोच तिमिर तनु भाग्योहो॥२१॥ तेहि खन कंसआनि भयोठाढो देखि महातमजाग्यो हो।अबकीबार अरी आयोहै आपु अपनपो त्याग्योहो॥२२॥ दिन दश गए देवकी अपनो वदन विलोकन लागी हो।कंसकाल जिय जानि गर्भमें अति आनंद सभागी हो ॥ २३॥ सुर नर देव वंदना आये सोवत ते उठि जागी हो ।अविनासी को आगम जानी सकल देव अनुरागी हो ॥ २४ ॥ कछु दिन गए गर्भको आगम उर देवकी जनायो हो । कासों कहौं सखी कोउ नाहीं चाहत गर्भ दुरायो हो ॥ २५ ॥ बुध रोहिणी अष्टमी संगम वसुदेव निकट बुलायो हो । सकल लोकनायक सुखदायक अजन जन्म धरि आयोहो॥२६॥माथे मुकुट सुभग पीतांबर उर शोभित भृगुरेखा हो। शंख चक्र भुज चारि बिराजत अति प्रताप शिशुभेषा हो ॥२७॥जननी निरखिभई तनु व्याकुल यह न चरित कहुँ देखा हो। बैठी सकुच निकट पति बोले दुहुँन पुत्र मुख पेखाहो॥२८॥सुनि देवैएक आन जन्मकी तोसों कथा चलाऊं हो ॥ तुम माँग्यो मैं दियो नाथ हौं तुमसो बालकपाऊं हो॥२९॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक योग जापहू न आऊं हो ॥ भक्तवछल बानोहैमेरो विरदहिकहा लजाऊं हो ॥ ३०॥यह कहि माया मोह अरुझायोशिशुह्वै रोवन लागे हो। अहोवसुदेवजाहुलैगो-कुल तुमहो परम सभागे हो ॥ ३१ ॥ घनदामिनि धरणीमिलिगरजेमहाकठिन दुखभारेहो।आगे जाउँ यमुन जल बूडों पाछे सिंह दहारे हो ॥३२ ॥ लैवसुदेव धँसेदहसामुहितिहूँलोकउजियारेहो। जानु जंघ कटि ग्रीव नासिका वसुदेव मनहिविचारेहो ॥३३॥चरणपसारिपरसिकालिंदी तरवा नीरते आगे हो ।शेष सहसफन ऊपर छायो लै गोकुलको भागे हो॥ ३४ ॥पहुँचे जाइ महर-मंदिरमें मनहि न शंका कीनी हो।देखी परी योगमाया वसुदेव गोद करि लीनीहो॥३५॥ तुरत वेग मधुपुरी पहुँचे सकल प्रगटपुर कीनी हो।देवे गर्भ भईहै कन्या राइन बात पतीनी हो॥३६॥ यह सुनि कंसखड्गले धायोतबदेवै आधीनीहो।यह कन्याजूबकसुबंधुमोहिंदासीजानकरिदीनीहो ॥३७॥क्रूर कंस अघवंश न समुझै नवै नहींरिसि कीनी हो।ना जानी होई छल कीन्हे अविगति गतिको चीन्ही हो ॥३८॥ पटकत शिला गई आकाशहि दोउभुज चरणलगाईहो ॥ गगन गई बोली सुरदेवी कंस मृत्यु नियराई हो ॥ ३९ ॥ जैसे मीन जालमों कूदत गनै न आपुलखाईहो। तैसे कंस काल ढूक्योहै ब्रजमें यादवराईहो ॥४० ॥ जैसे व्यालवेगको ढूकै वेग पसारी ताकेहो। जैसे सिंह आपुमुख निरखै परै कूपमें झांके हो ॥ ४१ ॥ तैसेहि कंस परम अभिमानी भूल्यो राज सभाके हो । गतिकी गति पतिकी पति तेरी हाथ मींजुहैताके हो ॥ ४२ ॥ यह सुनि कंसदेवकी आगे रह्यो चरण शिरनाई हो।यह अपराध करी शिशु मारे लिख्यो न मेट्योजाई हो॥४३॥काके शत्रु जन्म लीनो है बूझहु मतो बुलाईहो।चारि पहरसुख सेज परेनिशि नेक नींद नहिं आईहो४४

देश देशके दूत बुलावहु कासो है छल कैसो हो । अविगतअजरअजीनअमग्ताकस्ताकोनल्जैसो हो ॥४५॥ दिनही दिन सो पुरुष होतहै वढत असुर वल जेमोहो ।गृअतमहि वणभार बुझायो पवली कर्षन तेमो हो ॥ ४६॥ जागी महरि पुत्रमुख देख्योआनंदतूरवजायोहो।कचनकलशहोम द्विज पूजा चदन भवन लिपायो हो॥४७॥वरण वरण रग ग्वाल वनेमिलिगोपिनमगलगायोहो। बहुविधि व्योम कुसुम सुर वर्षन फूलन मडप छायो हो ॥ ४८ ॥ आनंद भरे करत कौतूहल प्रेममगन नर नारी हो ।अभय निभय नीसान वजावत देत महरिको गारी हो॥४९॥नाचत महर मुदित मन कीन्हे ग्वाल वजावत तारी हो।सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा गर्वप्रहारी हो। ॥ ५० ॥अथ प्रथम छाश मथुराते गोकुल आये। रागबिलावल ॥ हरिमुख देखिये वसुदेव। कोटिकाम स्वरूप सुन्दर कोउ नजानत भेव॥चारिभुजा जाके चार आयुध निरखि लै करताउ। जोपै मन परतीत अवि नदघर लेजाउ ॥श्वान सुते पहरुआ सब नींद उपजी गेह।निशि अंधेरी वीजु चमकै सघन वरपै मेह॥झरे ताला पहरु पौढे खुलिगये वज्रकेंवार।वदिनैरी सबै छूटी कहाँ कौन विचार॥सिंह आगे शेष पाछे यमुनभई भरपूर।नासिका वहु नीर आए पार पहिलो दूर ॥ कृष्णने हुकार छोड्यो यमुन मान्यो हेत। चरण परसत थाह दीन्हो वसुदेव उतरे सेत ॥देत अमर और कमर फूली अँग न समाइ। भिक्षुक भाट सब द्वार ठाढे देखे यशोमति आइ ॥ नदसों मनुहार कारिहौं सुनिनलेहु वसुदेव।सूर सुतही जानिअपनो कृष्णको करिसेव॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४॥राग केदारा॥ हो पिय सो उपायकछु कीजे। जेहि तेहि विधिदुराय इह वालकराखि कससोलीजे।मनसावाचा कहत कर्मना नृपतिहि नहीं पतीजे । बुधि वल छल कलकैसहू करिके काटि अनत लैदीजे ॥ नाहिनयतनो भाग सोयहरस नितलोचनपुट पीजे ।सुनहु सूर ऐसेसुतको मुख निरखिनिरखि जग जीजे ॥ ५ ॥राग केदारा ॥सुन देवकी को हितू हमारे । असुर कस अपयशविनाशनशिरपर बैठेहैं रखवारे ॥ऐसो को समरथ त्रिभुवन मे जो यह वालकनेक उवारे।खड्गधरेआयोतोदेखतअपनेकर क्षणमाहें पछारे॥यह सुनतहि अकुलाइ गिरीधर नैन नीर भरि भरि दोउ डारे । दुखित देखि वसुदेव देवकी प्रगट भये धरिकै भुज चारे॥बोलत उठे प्रतिज्ञा प्रभु यह मति डरपैं तव मोहिं उमारे ।अति दुखमें सुख दे पितु मातहि सूरको प्रभु नन्दभवन सिधारे ॥ ६॥ भादोंभरकी राति अँधियारी। द्वारकपाट कोटभट रोके दशहुदिशि कस भय भारी॥गर्जत मेघ महा डर लागत वीच वढी यमुना जल कारी।तपते इहै शोच जिय मेरेक्यो दुरिहैं शशिवदन उज्यारी॥कतपिय वोल वचनकरिराखी वरु ताहीदिन जीवनमारी॥कहि जाको ऐसो सुत विछुरे सो कैसे जीवै महतारी॥करि न विलाप देवकीसों कहि दीनदयालु भक्त भयहारी ।छुटिगयो निविड तवहि गये गोकुल सूर सुमति दे विपति निवारी॥७॥ राग धनाश्री ॥अँधियारी भादौंकी राति । वालकको वसुदेव देवकी पठे पठे पछिनाति॥वीच नदी घन गर्जत वर्षत दामिनि कोधत जाति। वैठत उठत सेज सोवरिमे कस डरनि अकुलाति॥गोकुल वाजत सुनी वधाई लोगन हेरि सिहाति। सूरदास आनंद नदके देत कनक नगदाति॥८॥ विहागरो॥देवकी मन मन चकृत भईदेखहु आइ पुन सुख काहेन ऐसी कहूँ देखि नदई॥शिरपर मुकुट पीत उपरेना भृगुपद उर भुजचारि करे।पूरवकथा सुनाइ कही हरि तुम माग्यो वहवेषधरे ॥ छूटे निगड सो आये पहरू द्वारेको कपाट उघर्यो । तुरत मोहिं गोकुल जानहु ले यह कहति शिशुभेष धर्यो॥वसुदेव तवहिं उठे यह सुनतहि हर्षवत नन्दभवन गये । वालक धर्यो लई सुरदेवीआइसुरमधुपुरीभये॥९॥राग विलावल॥ आनदे आनद वढ्योअति।देवन

दइ दुंदुभी वजाई सुनि मथुरा प्रगटे यादवपति ॥ विद्याधर किन्नरी कंठ धर उपजावत अनुराग अमित अति।गावत गगन धरणि ध्वनि सुनियत गर्जत घन तेहि काल जतनजति॥ वर्षत सुमन सुदेश सूर सुरजयजयकार करत मानत रति। शिव विरंचि इन्द्रादि सनक मुनि फूलेसुख नसमात मुदितमति॥१०॥कमलनयन शशिवदन मनोहरदेखियेहोपतिअति विचित्रगति।श्याम सुभगतनु पीतवसन दुति उर वाने सोहे अद्भुत अति॥नखमणिमुकुटप्रभाअतिउद्वितचिंतचकृतउनमाननया-वति।अति प्रकाशनिशिविमल तिमिरछुटिकल्मलिमलिनिजपतिहि जगावति॥दरशनसुखीदुखी अतिशोचत पट्सुतशोक सुरतिउरआवति।सूर दासप्रभु लेहुपुराकृत भुजके चिह्न दुरावति॥११॥ गोकुल प्रगटभए हरि आई । अमर उधारन असुर सँहारन अंतर्यामी त्रिभुवनराई ॥ माथेपर धरि वसुदेव ल्याए नंदमहर घरगे पहुँचाई। जागी महरि पुत्रमुख देखत पुलक अंग उर में न समाई॥ गद्गद कंठ बोल नहिं आवे हर्षवंत ह्वै नंद बुलाई। आवहु कंत देव परसन भए पुत्र भयो मुख देखौधाई ॥ दौरि नंद गए सुतमुख देख्योसो शोभासुख वरणि न जाई।सूरदास पहिले यहमॉग्यो दूध पिआवन यशुमति माई॥१२॥जागी महरिपुत्रमुख देख्यो आनँद तूर वजाइ। कंचन कलश हेम द्विज पूजा चंदन भवन लिपाइ ॥दिनदशहीते वर्षे कुसुमनि फूलन गोकुल छाइ । नंद कहे इच्छा सव पूजी मनवांछित फल पाइ ॥आनँदभरे करत कौतूहल उदित मुदित नर नारी।निर्भय भए निशानवजावत देत निशंके गारी॥नाचत महर मुदित मन कीनोग्वालवजावत तारी।सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कस प्रहारी ॥ १३ ॥ नंदराइके नवनिधि आई। माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीतवसन भुजचारु सुहाई॥वाजत ताल मृदग यंत्रगति चरचि अरगजा अंग चढाई॥ अक्षत दूव लिए शिरबदत घर घर वंदनवार वधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भरि लेत उठाई। सूरदास सव मिलत परस्पर दान देत नहिं नंद अघाई॥१४॥ आजु वन फोऊ जिनि जाइ।सवे गाइ और वछरा समेत सव आनहु चित्र वनाइ॥ढोटा है रे भयो महरिकेकहत सुनाइ सुनाइ । सवहि घोषमें भयो कोलाहल आनँद उर न समाइ ॥ कतहो गहर करत रे भैया वेगि चलौ उठि धाइ । अपने अपने मनको चीत्यों नैननि देखो आइ ॥ एक फिरत दधि दूव वँधावत एक रहत गहि पाइ। एक परस्पर करत वधाई एक उठत हँसि गाइ ॥ तरुण किशोर वृद्ध अरु वालकवेठ चौगुने चाइ।सूरदास सव प्रेम मगन भए गनत न राजाराइ॥ ॥१५॥राग रामकली ॥ हौ एक वात नई सुनि आई। महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर होत वधाई॥द्वारे भीर गोप गोपिनके महिमा वरणि न जाई।अति आनंद होत गोकुलमें रत्न भूमिसव छाई॥नाचत तरुण वृद्ध अरु वालक गोरस कीच मचाई। सूरदास स्वामी सुखसागर सुन्दर श्याम कन्हाई॥१६॥हौं सखी नई चाह एकपाई॥ऐसे दिनन नन्दके सुनियत उपजे पूत कन्हाई॥वाजत पवन निसान पंचविधि रुंज मुरज सहनाई।महर महरि व्रजहाट लुटावत आनँद उर न समाई॥ चलौ सखी हमहू मिलि जैये वेगि करो अतुराई।कोउ भूषण पहिरचो कोउ पहरति,कोउ वैसेहि उठिधाई॥कचन थारदूव दधिरोचनगावतचली वधाई।भांतिभाँति वनिचली युवतिगणयहउपमा मोपै नहिं आई॥अमर विमान चढे सुर देखत जयध्वनि शब्द सुनाई।सूरदास प्रभु भक्तहेतुहित दुष्टनके सुखदाई ॥१७॥राग सूजी ॥सखी री काहेको गहरु लगावति।सुतको जन्म यशोदाके गृह तालगि तुमहिंबुलावति ॥ कनकथार भरि लेदधि रोचन वेगि चलौ मिलि गानति । साचहु सुत भयो नदनायकके हौं नादिन वौरानति॥ आनँद उर अंचल न सभारति शीश सुमन वरषावति॥

सूरदास शोभा तेहि अवसर जहाँ तहाँते आवति ॥१७॥ राग आसावरी ॥ व्रज भयो महरके पूत जब यह बात सुनी । सुनि आनंदे सब लोग गोकुल गनक गुनी ॥अति पूरवपूरे पुण्यरूपकुल अटल थुनी॥महलग्न नक्षत्र बल शोधि कीनी वेद ध्वनी॥सुनि धाईं सबै व्रज नारी सहज शृंगार किए॥तनु पहिरे नौतन चीर काजर नैन दिये ॥ कसि कंचुकि तिलक लिलार शोभित हारहिये॥ करकंकन कंचनथार मंगलसाज लिये ॥ शुभ श्रवणनि तरल बनाइ वेनी शिथल गुही॥सुर वर्षत सुमन सुदेश मानों मेघ फुही ॥ मुखमंडित रोरी रंग सेंदुर माँग छुही ॥ ते अपने अपने मेलि निकसीं भांति भली॥मनु लाल मनिनकी पांतिपिंजर चूरि चली॥गुण गावहिं मंगल गीतमिलि दश पांच अली । मनु भोर भए रवि देखि फूली कमलकली ॥ पिय पहिले पहुँची जाइ अति आनंद भरी॥लई भीतर भवन बुलाय सबै शिशुपाइ परी॥ एक वदन उघारि निहारि देहि अशीश खरी॥चिरजियो यशोदानंद पूरणकामकरी॥धनि धनि दिन धनि रात धनि यह पहरघरी॥धनधन्य महरिकीकूख भाग सुहागभरी ॥जिनजायोऐसोपूत सब सुखफलनिफरी॥थाप्योथिरपरिवारमनकी शूल हरी॥सुनि ग्वालिन गाय बहोरि,बालक बोलि लये। गुहि गुंजा घसि बनधातु अंगनि चित्र ठये॥शिरदधि माखनके माट गावत गीत नये॥कर झाँझ मृदंग बजाइ सब नंदभवन गये॥मिलि नाचत करत कलोल छिरकतहरद दही॥मानोवर्षत भादों मासनदी घृत दूधवही॥जाको जहीं जहीं चितजाइकौतुक तहींतहीं॥सबआनंदमगन गुवाल काहूबदत नहीं॥एकधायनंदपे जाइ पुनि पुनि पाय परे। एक आपुन आपुहि माहिं हँसि हंसि अंक भरे॥एकअंबर उतारत अंग देतनशंक करे। इक दधि अक्षत अरु दूब सबनके शीश धरे॥तब न्हाइ नंद भए ठाढ़े अरु कुश हाथ लिये॥घसि चन्दन चारु मँगाइ विप्रन तिलक किए ॥ नान्दीमुख पित्र पुजाइ अंतर शोच हरे॥गुरुजनद्विजन पहिराइ सबनिके पाइ परे॥गैयां गनी न जाहिं तरुणि सब वच्छनढीं॥तेचरहिं यमुनके कच्छदूने दूध चढी॥खुरताँबे रूपेपीठि सोनेशृंगमढीं॥ते दीनी द्विजन अनेक हरषि अशीशपढीं॥तबअपने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलि लिए॥मथि मृगमदमलय कपूर सबनके तिलक किए॥उरमणिमाला पहिराय सबन विचित्र ठए॥दान मान परधान पूरणकाम किए॥वरमागध बंदीसूत आँगन भवन भरे। ते बोलें लैलै नाम क्रीडत विवशपरे॥जिन यांच्योजोइदीन रसनँदरायढरे॥मानो वर्षतमास अषाढ दादुर मोर ररे॥तब अंमर और मँगाइ सारीसुरंग घनी॥ते दीनी वधुन बोलाइजेसीजाहि बनी॥ते बहुरी अति आनंद निज गृह गोप धनी॥ ते निकसीं देत अशीश रुचि अपनी अपनी॥ घर घर भेरिमृदंगपटहनिशान बजे॥वारन वंदनवार अरुध्वज कलश सजे॥तादिनते वे लोगसुख संपति नतजे॥कहि सूर सबनकी यह गति जे हरिचरण भजे ॥१८॥ राग धनाश्री ॥ आजु नंदके द्वारे भीर। एक आवत एक जात विदा होइ एक ठाढे मंदिरके तीर ॥ कोउ केसर कोउ तिलक बनावत कोउपहिरतकंचुकीचीर।एकनकोदे दानसमर्पितएकनकोपहिरावतचीर॥एकनको भूपण पाटम्बर एकनको जोदेत नग हीर। एकनको पुहुपनकी माला एकनको चंदनघसिवीर॥एकनको तुलसीकी माला एकनको राखत दे धीर॥सूरश्याम घनश्यामसनेहीधन्ययशोदापुण्यशरीर॥१९॥ गौरी ॥गोपी गावहिं मंगलचार वधायो व्रजराजको॥ अब भयउ अमर सब काज वधायो व्रजराजको॥रानी जायोहै मोहनपूत वधायो व्रजराजको ।बहुतनारि सुभाग सुंदरि और घोषकुमारि। सजन प्रीतम नाउ लैलै देहिं परस्पर गारि ॥ आनँद स्तुति अतिशय भयो घर घर नृत्य कामहि ठाउँ । नंदद्वारे भेंट लैलैउमह्योहै गोकुल गाउ ॥ साथिये बनाइके देहिं द्वारे सात सींक

वनाय। नवकिशोरी मुदित ह्वै ह्वै गहति यशुदाजीके पाँय॥ चौकेचंदनलीपिकेआरतिधरीसँजोइ॥ कहत घोपकुमारि ऐसो आनँद जो नित होइ ॥ करि करि अलंकृतगोपिकापहिरेसुभूपणचीर। गाइ बच्छ सँवारि ल्याये ग्वालनकी भै भीर॥ मुदित मंगल सहित लीला करहिं गोपी ग्वाल। हरद अक्षत दूब दधि ले तिलक करहिं ब्रजबाल ॥ एक हेरी देहि गावहिं एकभेटहिंधाइ।एकएक न गनै काहू इक खेलावत गाइ ॥ एकबिरधकिशोरबालकएकयौबनयोग।कृष्ण जन्मसुप्रेमसागर क्रीडत सब ब्रजलोग ॥ प्रभुमुकुंदके हेतु नवतनु होहि घोप विलास। देखि ब्रजकीसंपदाफूलेहैं सूरदास ॥ २० ॥ आजु वधायो नंदराइके गोपीगावहिं मंगलचार ॥ आईं मंगलकलश साजिकै ता ऊपर फलडार। अक्षत रोचन दूब लै चलीं बहु विधि फल भरे थार॥ घरनघरनतेगावतचलीं ब्रजवधूझुंड अपार। चलीं सबमिलि महरके घर देखन नंदकुमार॥ देखिमोहन आशपूरीसबैदेति अशीश। नंदमहरके लाडिले तुम जिऔ कोटि वरीश ॥ उरमेलैहैं नंदरायके गोपसखन मिलि हार। मागध वंदी जन अति क्रीडत वोलतजैजैकार॥महरि दान जु बहुतदीनोअरु दियोनंदराइ। ऐसो सुख देखौ सखी जन सूरदास वलि जाइ ॥२१॥ धनिधनि नंदयशोमतिधनिजगपावन रे। धनि हरिलियो अवतार सुधनि दिन आवन रे ॥ दशयें मास भयो पूत पुनीतसुहावनरे। शंख चक्र गदापद्म चतुर्भुज भावन रे॥वनि वनि ब्रजसुंदरि चलीं सुगाइवधावनरे। कनकथार रोचन दधि तिलक वनावनरे॥नंद घरहिं चलि गाइ महरि जहां पावन रे। पाँइनिपरिसव वधूमहरिबैठाव-नरे ॥ यशुमति धनि यह कोखि जहां रहे वावनरे।भले सुदिनभयोपूतअमरअजरावनरे॥युग युग जीवहु कान्ह सवनि मनभावन रे। गोकुल हाटवजार करत जु लुटावनरे॥घरघरबजैवधावनगरहरि आवनरे।अमर नगरउत्साह अप्सरा गावन रे॥ब्रह्मलियोअवतार दुष्टके दावनरे।दानसबैजोदेतवर्षि जनु सावन रे॥ मागध सूत भाट धन लेतजुरावनरे ।चोवाचंदनअबीरगलीछिरकावनरे॥ब्रह्मादिक सनकादिक गगन भरावन रे। कश्यप ऋषि सुर तातसुलगन गनावनरे ॥तीनिभुवनआनंदकंसहि डरावन रे। सूरदास प्रभु जन्मे भक्तहुलसावन रे ॥२२॥ राग कल्याण ॥ शोभासिंधु नअंत रहीरी। नंदभवन भरिपूर उमंग चलीब्रजकी वीथिनि फिरति वही री ॥ देखी जाइआजुगोकुलमेंघर घर वेचत फिरति दही री। कहँालगि कहों वनाइ वहुत विधि कहतनमुखसहसहुनिवहीरी॥यशुमति उदर अगाध उदधिते उपजी ऐसी सवन कही री। सूरश्याम प्रभु इन्द्रनील मणि ब्रजवनिता उरलाइ गहीरी ॥२३॥ राग काफी ॥ आजु निशान वाजै नंद महरिके। आनंद मगन नर गोकुल शहरके॥ आनँदभरी यशोदा उमँगि अंग न समाति आनंदितभईं गोपी गावति चहरके ॥ दूब दधि रोचन कनकथार लैलै चलीं मानों इंद्रवधू जुरि पांतिनि वहरके। आनंदितभयेग्वालवाल करत विनोद ख्याल भुजभरि धरि अंकमदे वरहरिके ॥ आनंदमगन धेनु थन स्रवै पय फेनु उमँग्यो यमुनजल उछलै लहरके। अंकुरित तरु पात उकठि रहेजेगात वनवेलीप्रफुलित कलिन कहरके। आनंदित विप्रसूत मागध याचक गण उमँग अशीश देत तरहतरहहरिके॥आनंदमगन सब अमर गगन छाए पुहुप विमान चढे पहर पहरके। सूरदास प्रभु आइगोकुल प्रगट भए संतन भयो हरप दुष्टजन मनदहरके ॥ २४ ॥ माई आजु होवधायोबाजेनंदगोपराइके।यदुकुल यादव जन्मेंहैं आइके॥ आनंदित गोपी ग्वाल नाचैं करदेदे तालअतिअह्लादभयोयशुमतिमाइके।शिर पर दूब धरि बैठे नंद सभा मधि द्विजनको गाइ दीनी वहुत मँगाइके॥कनकमाटमँगाइ हरद दही मिलाय छिरकैं परस्पर छलवल धाइके। आठैं कृष्णपक्ष भादौ महरकेदधिकादोंमोतिनबँधायो

वार महलमें जाइके ॥ ढाढी और ढाढिनि गावै हरिकेठाढे बजावै हरपिअशीश देतमस्तकनवाइके। जोई जोई मॉग्योजिनिसोई सोई पायो तिनि दीजै सूरदास दर्श भक्तनबुलाइके॥२५॥राग जैतश्री॥ आजु बधाई नंदके माई।सुन्दर नंद महर के मंदिर। प्रगट्यो पूत सकल सुखकंदर ॥ यशुमति ढोंटा व्रजकी शोभा। देखि सखी कछु औरै लोभा ॥ लक्ष्मीसी जहां मालिनबोलै। वंदन माला बांधत डोलै ॥ द्वार बुहारत फिरत अष्टसिधि।कोरेन सथिया चींतन नवनिधि ॥ गृह गृहते गोपी गावती जब। रंगीली गलिन बिच भीर भई तब ॥ सोवरनथाल रही हाथन लसि। कमलन चढि आए मानोशशि॥उमंगे प्रेमनदी छवि पावै।नंद नंद सागरको धावै॥ कंचन कलश जगमगे नग के।भागे सकल अमंगल जगके॥ डोलत ग्वाल मानो रणजीते। भये सबहिके मनके चीते ॥ अति आनद नंद रस भीने। पर्वत सात रत्नके दीने ॥ कामधेनुते नेक नवीने। द्वैलख धेनु द्विजनको दीने ॥ नंदद्वार जे याचन आए। बहुरो फिरि याचक न कहाए ॥ घरके ठाकुरके सुत जायो। सूरदास तब सब सुख पायो ॥ २६॥ राग बिलावल ॥ आज गृहनंद महरिके बधाई। प्रात समय मोहनमुख निरखत कोटि चंद्र छबिपाई॥मिलि व्रजनारीमंगल गावत नंदभवन में आई। देति अशीश जियो यशुदासुत कोटि वर्ष कुंवरकन्हाई॥अति आनंद बढयो गोकुलमेंउपमा कही न जाई। सूरदास धनि नंदघरनि है देखत नैन सिराई॥२७॥ राग जैजैवंती ॥ माई आजु तो बधाई बाजै मंदिर महरके।फूले फिरैं गोपी ग्वाल ठहर ठहरके॥ फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अंग अंग। फिर फूले तरुवर आनंद लहरके॥फूले बंदीजन द्वारे फूले फूले बंदनेवारे।फूले जहां जोइ सोइ गोकुल शहरके॥फूले फिरै यादव कुल आनंद समूल मूल।अंकुरित पुण्य फूले पिछले पहरके॥ उमगे यमुनाजल प्रफुलित कुंज पुंज।गरजत कारे भारे यूथ जलधरके।नृत्यत मदन फूले फूली रति अंग अंग। मनके मनोज फूले हलधर हरिके ॥ फूले द्विजसंत वेद मिटिगयो कंस खेद। गावत बधाई सूर भीतर बहरके ॥ फूलीहै यशोदा रानी सुत जायो शारंग पानी।भूपति उदार फूल भार फरे घरके ॥ २८॥ जैतश्री ॥ नदजू मेरे मन आनन्द भयो हौं गोवर्धनते आयो। तुमरे पुत्र भयो मैं सुनिकै अतिआतुर उठिधयो॥बंदीजन अरु भिक्षुकसुनिसुनि दूरिद्वारेते आयो।इक पहिलेही आशा लागे बहुत दिननके छाये॥ते पहिरे कंचन मणि भूषण नानाबसन अनूप।मोहिं मिले मारगमें आवत मानों जात कहूके भूप॥तुमतौ परम उदार नंदजू जिन जोमांग्योसोदीनो। ऐसो और कौन त्रिभुवनमें तुम सरि साको कीनो॥कोटि देहुतौरुचिनहिंमानोंबिनदेखेनहिंजैहौं। नदराय सुनि बिनतीमेरीतबहिंबिदाभले ह्वैहौं॥दीजेमोहिकृपाकारि सोई जोहौं आयो मांगन।यशुमतिसुत अपने पॉइन जबखेलतआवै आंगन॥जब तुम मदन मोहन करिटेरो इहि सुनिकैघरजाऊं। हौं तो तेरो घरको ढाढी सूरदास मेरो नाऊं॥२९॥मैं घरको ढाढीहौं तिहारो को मोसरकरैआन। सोई लैहौं जो मो मनभावे नंदमहरकी आन॥धन्य नंद धनिधन्य यशोदा धनिधनि जायोपूत धन्य भूमि व्रजवासी धनि धनि आनंदकरत अकूत॥ घरघरहोत आनंद बधाई जहँतहँमागध सूत।मणि माणिक पाटंबर देते लेत न बनतबहूत॥हयगय भवन भंडार दिये सब फेरिभरेसेभाति। जबहिं देत तबही फिरि देखत संपति घर न समाति॥ते मोहि मिले जात घर अपने में बूझी तब जातिहँसि हसि दौरि मिले अंकम भरि हम तुम एकै ज्ञाति॥संपति देहु लेहुँनहिएको अन्न वस्त्र केहि काज। जोहौं तुमसो मांगन आयो सो लैहौं नंदराज ॥ अपने सुतको वदन देखावहु वडे महर शिरताज। तुम साहब मैं ढाढी तेरो प्रभु मेरे व्रजराज॥चन्द्रवदन दरशन संपति देसो

में लै पुर जाऊं। जो संपति सनकादिक दुर्लभ सो है तुमरे ठाऊं॥जाकोनेतिनेतिश्रुतिगावत तेउ कमलपद धाऊं।हौं तेरो जन्म जन्मको ढाढी सूरदास कहि गाऊं॥३०॥ राग केदारो ॥नंदउदौसुनि आयोहो वृपभानुको जगा। देवेको वडो महर देत न लावै गहरलालकीवधाईपाऊंलालकोझगा॥ प्रफुलित ह्वैके आनदीनहै यशोदा रानी झीनीए झगुली तामें कंचनको तगा। नाचै फूल्यो आँगनाइ सूर वखशीश पाइ माथेकै चढाइ लीनो लालको वगा॥३१॥ राग धनाश्री॥ यशोमति लटकति पाइ परे। तेरो भलो मनाइहौं झगरिन तू मति मनहि डरै॥ दीन्हों हार सबै कर कंकण मोतिन थार भरै। सूरदास स्वामी प्रगटेहै अवसर पाइ झगरै ॥ ३२ ॥ नंदजू दुःख गयो सुख आयो सवन्हको दियो पुत्र फल मानौ। तुमरो पुत्र प्राण सवहिनको भवन चतुर्दशजानौ॥हौंतो तुम्हारो घरको ढाढी नावसेन सज पाउँ। गृह गोवर्धन वास हमारो घरतजिअनतनजाऊँ।ढाढिनि मेरी नाचै गावै हौंही ठाढो वजावौं।हमरो चीत्यो भयो तुम्हारे जो मांगौं सोपावौं॥अवतुममोको करो अयाची जो ग्रह गेह विसारौं।द्वारेरहौं देहु एकमंदिरश्यामस्वरूपनिहारौं॥हँसिढाढिनिढाढीसों वोली अव तू वरणि वधाई। ऐसो दियो न देहै सूर कोउ यशोमतिहौंपहिराई॥३३॥ढाढिनि दान मानकी भाई। नंद उदार भए पहिरावत वहुत भले वनिआई॥ जव जव जन्म धरौं ढाढीको जन्म कर्म गुण गाऊं। अर्थ धर्म कामना मुक्त फल चार पदारथ पाऊं॥ लै ढाढिनि कंचनमणि मुक्ता नाना वसन अनूप। हीरा रतन पाटंवर हमको दीन्हें ब्रजके भूप॥ अव तो भली भई नारायण दरशे नैन निरखि निधि पाई। जहं तहं वंदनवार विराजत घर घर वजत वधाई॥जो याच्यो सोई तिन पायो तुमरिव भई विदाई। भक्ति देहु पालने झुलावों सूरदास वलिजाई॥३४॥ छठीव्यवहार ॥६॥ राग सारंग ॥गौरि गणेश विनऊं हो देवीशारद तोहि॥ गाऊं हरिजीकोसोहलो मन औरआवे मोहि॥वधावो हरिकोमनरहिवोरानी जायोहै मोहन पूत। घर आँगन वाहेर सव मांगें ठाढे मागध सूत॥आठ मास चंदन पियोहो नवएं पियो कपूर। दशयें मास मोहनभए मेरे आंगन री वाजे धतूर॥ हर्पा पार परोसिनि भए हरप नगरके लोग। हर्पा सखी सहेलरीसव आनँदभयो सुखयोग॥वाजन वाजे गहगहे मिलि वाजै शारद भेरि। मालिनि वांधै तोरन मेरे आँगन री रोपै आछेकेरि॥ आने गढ़ि सोना ढोलना पढिलाये चतुर सुनार। वीच वीच हीरा लगे नंदलाल गरेको हार॥ यशुमति भाग सुहागिनी जिन जायो हरिसो पूत। करहु ललनकी आरती री अरु दधिकाँदो सूत॥ नाउनि वोलहु नवरंगी लै आवहु महावर वेग। लाखटका अरु झूमकसारी देहु दाईको नेग॥अगरचंदनको पालनो गढई गुर ढार सुढार। लैआयो गढि ढोलनी विश्वकर्मा सोसुतधार॥धन्य सोदिन धन्यसोघरी धन्यसो जोतिकजाग।धन्य धन्य मथुरापुरी हो धनि धनि महरिको भाग॥ धनि धनि मातु देवकी धनि धनि वसुदेव सुजान। धनि धनि भादों अष्टमी धनि जन्म लियो जब कान्ह॥ काढहु कोरे कापर हो अरु काढो घीकी मौन। जाति पाँति पहिरायकै सब समदि छतीसौ पौन॥ काजर रोरी आनोरी मिलि करो छठीको जार। एपनकोसी पूतरी सब सखियन कियोहै शृंगार॥ क्रीट मुकुट शोभा वनी शुभअंग वनी वनमाल। सूरदास प्रभु गोकुल जनमे मोहन मदन गोपाल॥ ३५ ॥ राग काफी ॥ अति परम सुंदर पालना गढि ल्याव रे वढैया। शीतल चंदन कटाउ धरि खरादि रंग लगाउ विविध चौकी वनाउ रंग रेशम लगाउ हीरा मोती लाल मढैया॥विश्वकर्मा सुढार रच्यो हे काम सुनार मणि गणि लागे अपार नंदमहर सुत काज अढैया। आनि धरचो नंदद्वार अतिही

सुंदर सुढार ब्रजवधू देखैं वारवार शोभा नहिं वारपार धनि धनि धन्यहै गढैया॥ पालनोआन्यौ सबहि अति मनमान्यो नीको सो दिन धरा मसिन मंगल गवाय रंगमहलमें पौढयोहै कन्हैया। सूरदास प्रभुकी मैया यशुमति नंदरानी जोई मांगत सोई लेन बधैया ॥३६॥ राग जयश्री ॥ ब्रजको जीवन नंदलाल।असुरनिकंदन भक्तपाल॥कनकरतन मणि पालनोअतिगढ्यो काम सुतहार।विविध खेलौना भांति भांतिके गजमुक्ता बहुधार ॥ शुभग पालने झूलें हो नंदलाल मात पिता सुकृत फल जगपाल। जननि उबटि अन्हवायके अतिक्रममसों लीनो गोद।पौढाये पट पालने शिशु निरखि जननि मनमोद ॥ अतिकोमल दिन गातके अधर चरण कर लाल।सूरश्याम छवि अरुणता निरखि हरपि ब्रजवाल ॥ ३७॥ राग धनाश्री ॥ यशोदा हरि पालने झुलावै । हल-रावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै॥ मेरे लालकों आउ निदरिया काहे न आनि सुवावै। तू काहे न वेगिसी आवै तोको कान्ह बुलावै ॥ कबहूं पलक हरि मूंदिलेतहैंकबहूँअधरफरकावै। सोवत जानि मौन ह्वै है रही कर करि सैन बतावै ॥ इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि यशुमति मधुरे गावै । जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नंदभामिनि पावै ॥ ३८ ॥ राग गौरी ॥ हालरो हलरावै माता । बलि बलि जाउं घोष सुखदाता ॥ यशुमति अपनो पुण्य विचारै।वारवार शिशु-वदन निहारै ॥अंग फरकाय अलप मुसकानो । या छवि पर उपमाको जानो॥हलरावति गावति कहि प्यारे । बालदशाके कौतुक भारे॥महरि निरखिमुख [illegible]
॥३९॥ राग धनाश्री॥ कन्हैया हालरु रे । गढिगुढि ल्यायो [illegible]
एक लख मांगे बढई बलि हालरू रोदुइ लख बाबा नंदजी देहीं ॥ काहेको तेरो पालनावलिहाल-रुरे कहिलागी डोर ।रतन जडितको पालना बलि हालरुरे। रेसम लगी डोर॥कबहुंकझूलेपाल-ना बलिहालरुरे ।कबहुंक नंदजीकी गोद॥झूल सखी झुलावहीं बलि हालरुरे। सूरदास बलि जाहीं ॥४० ॥ अथ पूतनावध ॥आज्ञा हौं राजकाज करि आऊं वेगि सहारों सकल घोष शिशु जो मुख आयसु पाऊं ॥ तौ मोहन मूर्छन वशीकरन पढि अमित देह बढाऊं।अंगसुभग सजिके मधु मूरति नयननिमाहैं समाऊं॥बसिके गरल चढाइ उरोजनि लै रुचिसों पय प्याऊं। सूरदास प्रभु जीवत ल्याऊं तौ पूतना कहाऊं ॥ ४१ ॥ बिलावल ॥ कंसराय जिय शोच परी । कहा करौं काको ब्रज पठऊं त्रिधना कहा करी ॥ बारंबार विचारत मनमें भूप नींद बिसरी । सूर बुलाइ पूतनासों कह्यो करुन विलंब घरी॥ ४२ ॥ राग धनाश्री ॥रूप मोहनीधरि ब्रज आई। अद्भुत साजि शृंगार मनोहर असुर कंस दै पानपठाई॥ कुच विषबोटि लगाइकपटकरि बालघातिनी परमसुहाई।बैठी हुती यशोदामंदिर दुलरावति सुत श्याम कन्हाई॥प्रगटभई तहां आइ पूतना प्रेरितकाल अवधि नियराई।आवत पीढा बैठन दीनो कुशल बूझि अतिनिकट बुलाई ॥पौढाये हरि सुभगपालने नंदघरनि कछु काज सिधाई।बालक लियो उछंग दुष्टमति हर्षितअस्तनपान कराई॥वदन निहारि प्राण हरिलीनो परी राक्षसीयोजनताई। सूरजदेजननीगति ताकोकृपाकरी निजधाम पठाई॥४३॥ प्रथम कंस पूतना पठाई।नंदघरनि जहँ सुतलिए बैठी चलि तेहि धामहि आई ॥ अतिमोहनी रूप धरिलीनो देखत सबहीके मन भाई।यशुमति रही देखि वाकोमुख काकी वधू कौनघों आई॥ नंदसुवन तबही पहिचानी असुरघरनि असुरनकी जाई । आपुन वज्र समान भए हरि माता दुखित भई भरपाई॥ अहो महरि पालागन मेरो हों तुम्हरो सुत देखन आई ।यह कहि गोद लियो अपने तबत्रिभुवनपतिमनमनमुसकाई॥मुखचूंब्योगहि कंठ लगाए विष लपट्यो अस्तन मुख

लाई।पयसँग प्राण ऐंचि हरि लीन्हें योजन एक परी मुरझाई॥त्राहि त्राहि कहि ब्रजजन धाए अति बालक बयो बच्यो कन्हाई। अति आनद सहित सुत पायो हृदये माँझ रहे लपटाई॥ करबर टरी बडी मेरेकी घरघर आनँद करत बधाई।सूरश्याम पूतना पछारी यह सुनिजिय डरप्यो नृपराई॥४४॥ राग सारग॥ कपटकरि ब्रजहि पूतना आई। रूप स्वरूप विषम स्तन लाए राजा कस पठाई॥मुख चूमत अरु नैन निहारत राखत कठ लगाई। भाग्य बडे तुमरे नँदरानी जिनके कुँवर कन्हाई॥करगहि क्षीर पियावत अपनो जानत केशव राई।बाहर होइके असुर पुकारी अब वलि लेहु छोडाई।गई मुर्च्छाइपरी धरनीपर मानो भुवगम खाई।सूरदास प्रभु तुमरी लीलाभक्तन गाइ सुनाई॥४५॥ रागधनाश्री॥देखो यह विपरीत भई।अद्भुत रूपनारिकरि आई कपट हेत क्यो सहै दई॥ कान्है लै यशुमतिकोरांते रुचिकरि कठ लगाई। तब वह देह धरी योजनलौ श्याम रहे लपटाई।बडे भाग्यहैं नदमहरके बडभागिन नदरानी। सूर श्याम उर ऊपर वारे यह सब घर घर जानी॥४६॥ बिहागरो॥ नेक गोपालै मोको दे री॥ देखो कमलवदन नीके करि ता पाछे तू कनिया लै री॥अतिकोमल करचरण सरोरुह अधर दशन नासा सोहैरी।लटकन शीश कठमणि भ्राजत मन्मथ कोटि वारने गैरी॥वासर निशा विचारतही सखि यह सुख कबहु न पायो मैं री। निगमन धन सनकादिक सर्वसु भाग्यबडे पायो तैं हैरी॥जाकोरूप जगत्के लोचन कोटिचद्ररवि लाजत भैरी।सूरदास बलिजाइ यशोदा गोपिन प्राण पूतना वैरी॥४७॥ राग जैतश्री॥कन्हैया हालरो हालरोई।हौं वारी तेरे इदु वदनपर अति छवि अलस निरोई॥कमलनयनको कपटकिये माई इहि ब्रज आवै जोई।पालागो विधि ताहि बकीज्यों तू तिहि तुरत बिगोई॥सुन देवता बडेजगपावन तू पति या कुलकोई।पय पूजिहौं वेगि यह बालक करिदे मोहि बडोई॥ द्वितियेके शशिलौं बाढै शिशु देखै जननि जसोई।यह सुख सूरदासके नयनन दिन दिन दूनो होई॥ ४८॥ राग कान्दारो॥ पालने श्याम हलावति जननी। अति अनुराग परस्पर गावत प्रफुलित मगन मुदित नँद घरनी॥ उमगि उमँगि प्रभु भुजा पसारत हरष यशोमति अकम भरनी। सूरदास प्रभु मुदित यशोदा पूरण भई पुरातन करनी॥४९॥ राग बिलावल॥ गोपाल माई पालने झुलाए।सुरमुनि कोटि देव तेतीसौं देखन कौतुक अमर छाए॥ जाकोअत न ब्रह्मा जानत शिवसनकादि न पाए। सो अब देखो नद यशोदा हरपि हरपि हलराये॥ हुलसत हुलसि करत किलकारी मन अभिलाख बढाए। सूरश्याम भक्तन हितकारन नानावेष बनाए॥५०॥सिद्धर बाभनकरमकसाई।कह्यो कससो वचनसुनाई॥प्रभु मैं तुम्हरो आज्ञाकारी। नदसुवनको आवो मारी॥ कस कह्यो तुमते इह होई। तुरइ जाहु कर विलँव न कोई॥ शिरधर नदभवन चलि आयो।यशुदाउठिकै माथो नायो॥ करो रसोईं मैं चलि जावो। तुम्हरे हेतु यमुनजल ल्यावो॥ इह कहि यशुदा यमुना गई।सिद्धर कही भली इह भई॥ उन अपनेमन मारन ठानो। हरिजी ताको तबही जानो॥ब्राह्मण मारे नही भलाई। अग याको मैं देउँ नशाई। जबही ब्राह्मण हरिढिग आयो। हाथ पकर हरि ताहि गिरायो॥ गोड चाप लै जीभ मरोरी। दधि ढरकायो भाजन फोरी॥ राख्यो कछु तेहि मुख लपटाई॥ आपु रहे पलनापर आई॥ रोवन लागे कृष्ण बिनानी। यशुमति आइगई लै पानी॥ रोवत देखि कह्यो अकुलाई। कहा करयो तैं विप्र अन्याई॥ ब्राह्मणके मुख बात न आवै। जीभ होइ तौ कहिमसुझावै॥ ब्राह्मणको घरबाहरकीन्हो। गोदउठाइ कृष्णको लीन्हो॥ पुरवासी सब देखन आए। सूरदास हरिके गुण गाए॥५१॥ सुन्यो कस पूतनामारी।शोच भयो ताके जिय

भारी ॥ कागासुरको निकट बुलायो । तासों कहि सब वचन सुनायो॥मम आयसु तुम माथे धरौ।छल बल करि मम कारज करौ ॥ इह सुनिकै तिन्ह माथो नायो।सूर तुरत ब्रजको उठि धायो ॥ ५२ ॥अथ कागासुरको आयवो ॥ राग सारंग ॥कागरूप एक दनुज धरयो।नृप आयसु लेकर माथे-पर हर्षवंत उर गर्व भरयो॥कितिक वात प्रभु तुम आयसु ले यह जानो मो जान मरयो। इतनी कहि गोकुल उठि आयो आइ नंदघर छाज रह्यो ॥ पलना पर पौढे हरि देखे तुरत आइ नैननिसों अरयो। कंठ चापि बहुवार फिरायो गहि पटक्यो नृपपास परयो ॥ तुरत कंस तेहि पूंछन लाग्यो क्यों आयो नहिं काज सरयो।बीत्यो जाम ज्वाव जव आयो सुनहु कंस तेरो आयु सरयो ॥ धरि अवतार महाबल कोऊ एकहि कर मेरो गर्व हरयो। सूरदास प्रभु कंसनिकंदन भक्तहेतु अवतार धरयो ॥ ५३॥ राग बिलावल ॥ मथुरापति जिय अतिहि डेरान्यो । सभामांझ असुरनिके आगे बार बार शिर धुनि पछितान्यो । ब्रज भीतर उपज्यो मेरो रिपु मैं जानी यह वात। दिनही दिन बहु बढ़त जातुहै मोको करिहै घात ॥ दनुजसुता पूतना पठाई छिनकहि मांझ सँहारी। घीच मरोरि कागसुर दीनो मेरे ढिग फटकारी ॥ अवहींते यह हाल करतुहै दिन दिन होत प्रकाश ।सेनापतिन सुनाइ वात यह नृप मन भयो उदास ॥ ऐसो कौन मारिहै ताको मोहिं कहै सो आय । वाको मारि अपनपौ राखै सूर ब्रजहि सो जाइ॥५४॥अथ शकटासुरको कंस-आज्ञा मागन। गौड मलार॥नृपति वात यह सवनि सुनायो।सुहां चही सेनापति कीनो शकटासुर मन गर्व बढायो ॥ दोउ कर जोरि भयो तव ठाढो प्रभु आयसु मैं पाऊं। ल्याति जाइ तुरतही मारौं कहौ तौ जीवत ल्याऊं॥यह सुनि नृपति हर्ष मन कीनो तुरतहि बीरा दीनो ।बारंवार सूर कहि ताको आपु प्रशंसा कीनो ॥५५॥ गौड मलार॥ पान ले चल्यो नृपआन कीन्हों।गयो शिरनाइके गर्वही बढाइके शकटको रूपधरि असुर लीन्हो॥सुनत घहरानि ब्रजलोग चकृतभए कहा आघात ध्वनि करतु आवै । देखि आकाश चहुँपास दशहू दिशा डरे नर नारि तनुसुधि भुलावै ॥ आपु गयो तहाँ जह प्रभु रहे पालने कर गहे चरण अंगुठ चचोरहि। किलकि किलकि हँसत बाल शोभा लसत जानि तिहि कसत रिपु आयो भोरहि ॥ नेंक फटक्यो लात शब्द भयो आघात गिरयो भहरात शकटा संहारयो । सूर प्रभु नंदलाल दनुज मारयो ख्याल मेटि जंजाल ब्रजजन उवारयो ॥५६॥ राग बिलावल ॥ देखो सखी अद्भुत रूप अनूप । एक अंबुज मध्य देखियत बीस उदधि सुत यूथ ॥ एक शुक है जलचर उभय अर्क अनूप। पच विराजे एकहि ढिग बहु सखि कौन स्वरूप ॥ शिशुतामें शोभा भई करो अर्थ विचारी।सूर श्रीगोपालकी छवि राखिय उरधारी ॥५७॥ राग बिलावल ॥ कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढे पालने अकेले हरपि२अपने रँग खेलत॥शिव शोचत विधि बुद्धि विचारतवटवाढयोसागरजलझेलत।बिडरि चले घन मलय जानिकै दिगपति दिगदंती न सकेलत॥मुनिमन भीत भए भव कंपित शेपसकुचि सहसौ फन फैलत । उन ब्रजवासिन बात न जानी समुझे सूर शकट पगु पेलत ॥ ५८ ॥ चरण गहे अँगुठा मुख मेलत ।नंदघरनि गावति हलरावति पलना पर किलकत हरि खेलत॥जो चरणारविंद श्रीभूषण उरते नेकु न टारति । देखो धौं का रसु चरणनमें मुख मेलत करि आरति ॥ जा चरणारविंदके रसको सुर नर करत विषाद । यह रस है मोको दुर्लभता ताते लेत सवाद॥ उछलत सिंधु धराधर कांप्यो कमठपीठ अकुलाइ।शेप सहसफनडोलन लाग्यो हरि पीवतजव पाइ॥बढयो वृक्षवट सुर अकुलाने गगनभयो उतपात।महाप्रलयकेमेघउठेकरि जहाँ तहाँ आघात॥करुणा करी

छांडि पशु दीनो जानि सुरन मन संस ॥ सूरदास प्रभु असुरनिकंदन दुष्टनके उर गंस॥५९॥ राग बिहाग॥यशोदा मदनगुपाल सुवावै । देखि स्वप्न गति त्रिभुवन कंप्यो ईश विरंचि भ्रमावै॥असित अरुण सित आलस लोचन उभै पलक पर आवै।जनु रविगति संकुचित कमलयुग निशिअलि उडन न पावै॥चौंकि चौंकि शिशुदशा प्रगटकरि छबि मनमे नहिं आवै।जानौ निशिपतिधरिकरि अमृत श्रुतिभंडार भरावै ॥ श्वास उदर उरसति यो मानो दुग्धसिंधु छवि पावै । नाभिसरोज प्रगट पद्मासन उतरि नाल पछितावै॥कर शिर तर करि श्याम मनोहर अलक अधिक सोभावै। सूरदास मानौ पन्नगपति प्रभु ऊपरफनछावै॥६०॥ राग बिलावल॥ अजिर प्रभातहि श्यामको पलका पौढाए। आपु चली गृहकाजको तहा नंद बुलाए॥निरखि हरषि मुख चूमिकै मंदिर पग धारी॥आतुर नंद आए तहां जहँ ब्रह्म मुरारी॥ हसे तात मुख हेरिकै कर पग चतुराई। किलकि झटकि उलटे परे देवन मुनि राई॥ सो छवि नद निहारिकै तहाँ महरि बुलाई। निरखि चरित गोपालके सूरज बलि जाई॥६१॥ रामकली ॥ हरखे नंद टेरत महरि।आइ सुत मुख देखि आतुर डारिदै दधि टहरि॥मथति दधि यशुमति मथानी ध्वनि रही घर गहरि।श्रवन सुनति न महरि वातै जहातहागईचहरि॥यह सुनत तब मातु धाई गिरे जाने झहरि।हँसत नदमुख देखि धीरज तब कह्यो ज्यो ठहरि॥श्याम उलटे परे देखे बढी शोभा लहरि । सूरप्रभु कर सेज टेकत कबहु टेकत ढहरि ॥ ६२ ॥ महरि मुदित उलटाइकै मुख चूंबन लागी।चिरु जीवो मेरो लाडिलो मैं भई सभागी॥एकपाख त्रयमासके मेरो भयो कन्हाई।पट करानि उलटे परे मैं करो बधाई॥नदघरनि आनँदभरी बोली ब्रजनारी। यह सुख सुनि आई सबै सूरज बलिहारी॥६३॥यह सुख सुनिआई ब्रजनारी।देखनकौं धाई बनवारी॥ कोइ युवती आई कोइ आवति। कोउ उठि चलति सुनत सुख पावति॥घर घर होत आनंद बधाई। सूरदास प्रभुकी बलि जाई॥६४॥ रामकली ॥जननी देखि छवि बलिजाति।जैसे निधनी धनहि पाइ हरपदिन अरुराति॥बाललीला निरखि हरखि धनि धनि धनि ब्रजनारि।निरखि जननीवदन किलकत त्रिदशपति देतारि॥ धन्य नंदधनि धन्य गोपीधन्य ब्रजके वास।धन्यधरनीकरन पावन जन्म सूरजदास ॥६५॥ राग बिलावल॥यशुमति भागि सुहागिनि हरिको सुत जानै।मुखमुख जोरि बतावई शिशुताई ठानै॥मो निधनीके धन रहै किलकत मनमोहन । बलिहारी छविपर भई ऐसी विधि जीवन॥लटकत बेसरि जननिकी इकटकचख लावै॥पकरत वदन उठाइके मनही मन भावै॥ महरि मुदित हित उर भरै यह कहि मैं वारी। नंदसुवनके चरितपर सूरज बलिहारी॥६६॥राग आसावरी ॥गोद लिये हरिको नँदरानी अस्तन पान करावतिहै । बार बार रोहिणिको कहि कहि पलिका अजिर मगावतिहै ॥ प्रातसमय रविकिरण कोंवरी सो कहि सुतहि बतावतिहै । आउ धाम मेरे श्यामलाल आँगन बालकेलिको गावतिहै॥रुचिर सेज लैगई मोहनको भुजाउछंगि सुनावतिहै॥सूरदास प्रभु सोई कन्हैया लहरावति मल्हरावतिहै ॥ ६७॥ राग बिलावल ॥ नंदघरनि आनदभरी सुत श्याम खिलावै । कबहुँ घुटुरुवनि चलहिंगे कहि विधिहि मनावै ॥ कबहुँ दतुली द्वै दूधकी देखों इननैननि।कबहू कमलमुखबोलिहैं सुनिहौ इनबैननि॥चूमति करपगअधर पान लटकाति लट चूमति । कहा वरणि सूरज कहै कहां पावै सो मति॥६८॥ राग बिलावल ॥ मेरो नान्हरिया गोपाल बेगि बडो किनि होहि।इहि मुख मधुरे बचन हँसि कबहूं जननि कहोगे मोहि॥ यह लालसा अधिक दिनदिनप्रतिकबहूं ईशकरै। मोदेखत कबहू हँसि माधव पगु द्वै धरनिधरै॥हलधर सहित फिरे जब आंगन चरणशब्द सुख पाउ। छिन छिन क्षुधित जात पय कारन हौं हठि

निकट बुलाऊं॥आगम निगम नेति करि गायो शिव उनमान न पायो।सूरदास बालक रस लीला मन अभिलाष बढ़ायो ॥६९॥ अथ सप्तम अध्याय तृणावर्त वध गोडा तोरन ॥राग बिलावल ॥यशुमति मन अभिलाष करै। कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगे कब धरनी पग द्वैक धरै ॥कब द्वै दंत दूधके देखौं कब तुतरे मुख बैन झरै। कब नंदहि कहि बाबा बोल कब जननीकहिमोहिररै॥कबमेरोअचरागहि मोहन जोइ सोइ कहि मोसों झगरै। कब धौं तनकतनककछुखैहैअपनेकरसोंमुखहिभरै॥कबहसि बात कहैगे मोहिसों छवि पेखत दुख दूरि करै॥श्याम अकेले आंगन छाडे आपु गई कछु काज घरै॥एहि अंतर अंधवाइ उठी इक गरजत गगन सहित घहरै। सूरदास ब्रज लोग सुनत ध्वनि जो जहाँ तहां सब अतिहि डरै ॥७०॥ राग सही ॥ अति बिपरीत तृणावर्त आयो। बातचक्र मिस ब्रजके ऊपरि नंद पवरिके भीतर धायो॥पौढे श्याम अकेलेआंगन लैनउड्यौआकाशचढायो। अंधधुंध भयो सब गोकुल जो जहा रह्यो सो तहा छपायो॥यशुमतिआइ धाइजोदेखैश्यामश्याम करि शोर उठायो। धावहु नंद गोहारी लागो किनि तेरे सुतअंधवाइउडायो॥इहिअंतरआकाश- ते आवत पर्वतसम कहि मवनि बतायो। मारयो असुर शिलामों पटक्यो आप चढे ता ऊपर भायो ॥दौरे नंद यशोदा दौरी तुरतहि लै हित कंठ लगायो। सूरदास यह कहत यशोदा ना जानौं विधिनहिं कह भायो॥७१॥ राग बिलावल॥शोभित सुभग नंदजूकीरानी।अतिआनंद आंगनमेंठाढी गोद लियेसुतशारंगपानी॥तृणावर्तकीसुरतिआनिजिय पठयोअसुरकंसअभिमानी।गरूभयेमहिमें बैठाए सहि न परे जननीअकुलानी ॥आपुनगईसदनहीदौरीकाहूएककाजलपटानी। धौंडरुमहा भयावन आयो गोकुल सबै प्रलयके जानी॥ महादुष्ट लै उडचो गोपालहिं चल्यो आकाश कृष्ण यह ठानी। चापि ग्रीव हरि प्राण हरे द्रग करत प्रवाह चल्यो अधिकानी॥पाहनशिलानिरखि हरि डारयो ऊपर खेलत श्याम बिनानी। देति अभूषण वारि वारि सब सूरज पियत वारि सब पानी॥ ॥७२ राग धनाश्री॥उबरयो श्याम महरि बडभागी।बहुत दूरिते आइपरयो धर देखहुँ में कहुँचोट न लागी॥ रोगलेउँ बलिजाउँ कन्हैया यह कहि कठलगाई। तुमहीहौ ब्रजके जीवन धन देखत नैन सिराई॥ भली नही तेरी प्रकृति यशोदा छांडि अकेलो जाति। गृहको काज इनहुते प्यारो नेकहु नहीं डेराति ॥भली भई अबके हरि बाच्यो अबहूं सुरति सम्हारि। सूरदासखिझि कहतिग्वालिनी मनमें महरि विचारि ॥ ७३ ॥ राग बिलावल॥ अब हौं श्याम बलि जाउ हरी। निशि दिन रहति बिलोकति हरिमुख छांडि सकति नहिं एक घरी॥हौं अपनेगोपाललडैहौं भौन चाउ सबरहौं धरी। पाए कहां खेलाननको सुख मैं दुखिया दुख कोटि भगी॥जा सुखको शिव गौरि मनाई त्रियव्रत नेम करी॥सूर श्याम पाए पेंडेमें निधि रांक परी॥७४॥ राग धनाश्री ॥ हरि किलकत यशु- दाकी कनियां। निरखि निरखि मुख हँसति श्यामसो मो निधनीके धनियां॥ अतिकोमल तनु श्यामको बार बार पछिताति।कैसे बच्योजाउ बलि तेरी तृणावर्तके घात॥नाजानौंधौं कौन पुण्यते को करिलेत सहाइ। वैसो काम पूतना कीनो इहि ऐसो करि आइ॥ माता दुखित जानि हरि बिहसे नान्ही दँतुली दिखाइ। सूरदास प्रभु माता चितते दुखडारयो बिसराइ॥ ७५॥सुत मुख देखि यशोदा फूली। हर्षित देखि दूधकी दँतिया प्रेममगन तनुकी सुधि भूली॥ बाहिरते तब नंद बुलाये देखो धौं सुंदर सुखदाइ। तनक तनकसी दूधकी दँतियां देखो नैन सुफल करौ आइ ॥ आनँद सहित महर तब आए मुख चितवत दोउ नैन अघाइ। सूरश्याम किलकत द्विज दरख्यो मानो कमल पर बीज जमाइ ॥ ७६ ॥रागनी धौरठी ॥जननी

वलि जाय हालरु हालरो गोपाल । दधिहि विलोइ सदमाखन राख्यो मिश्री सानि चढावै नँदलाल ॥कंचनके खंभ मयारि मरुवाडांडी खचि हीरा बिच लाल प्रवाल। रेशम बुनाइ नव रतन लाइ पालनो लटकन बहुत पिरोजा लाल॥मोतिन झालरि नानाभाँति खिलौना रचे विश्वकर्मासुतिहार। देखि देखि किलकतदँतिया दो राजत क्रीडत विविध विहार॥कठुलाकंठवज्र केहरिनखराजें मसविंदुकामृगमद भाल॥देखत देत आशीशब्रजजननर नारी चिरजीवोयशोदातेरो वाल। सुर नर मुनि कौतूहल फूले झूलन देखत नंदकुमार ॥ हरषत सुमन अपार वर्षत नभ ध्वनि छायो जैजैकार ॥७७॥अथ अष्टमअध्याय नामकर्म। राग विलावल ॥ महर भवन ऋषिराज गए। चरणधोइ चरणोदक लीनो अरघआसन करि हेतु दए। धन्य आजु वडभाग्य हमारे ऋषिआए अतिकृपाकरी। हमकहँ धनि धनि नंद यशोदा धनि यह व्रज जहां प्रगट हरी ॥ आदि अनादि रूप रेखा नहिं इनते प्रभु नहिं और वियो। देवकी उदर अवतारलेन कह्यो दूध पिवन तव माँगिलियो ॥ वालक करि इनकोजिनि जानौ कंसको वध एकरिहैं॥सूर देह धारि सुरन उधारन भूमिभार ए हरिहैं॥७८॥ धन्य यशोदा भाग्य तुम्हारो जिन ऐसो सुत जायो । जाके दरशपरस सुख तन मन कुलको तिमिर नशायो ॥ विप्र सुजन चारण वंदीजन सकल नंदगृह आए । नौतम सुभगहरद दूर्वा दधि हर्षितशीश वंधाए॥गर्ग निरूपकहें सब लक्षण अविगतिहैं अविनासी। सूरदास सुनते यश हरिके आनंदे व्रजवासी॥७९॥अन्नप्राशनलीला॥कान्ह कुवँरकीकरहुअन्नप्राशनी कछु दिन घटि षटमास गए। नंदमहर यह सुनि पुलकित जिय हरि अन्नप्राशन योग भए॥ विप्र बुलाइ नाम ले बूझ्यो राशि शोधि इक दिनहि धरो॥आछो दिनसुनि महर यशोदा सखिन वोलिशुभ गानकरो॥युवति महरिको गारीगावति औरमहरिको नाम लियो॥व्रज घरघर आनंद बढ्यो अतिप्रेमपुलकनसमात हियो॥जाको नेति नेतिश्रुति गावत ध्यावतशिव मुनि ध्यान धरे। सूरदास तिनको व्रजयुवती झकझोरति उर अंक भरे ॥ ८० ॥ राग सारंग ॥ आजु कान्ह करिहै अनप्राशन॥मणिकंचनके थारभराए भाँतिभाँतिकेवासन॥नंदघरनिसबवधूबुलाईजेसबअपनीजाति। कोउ जिवनार करति कोउ घृतपक षटरसकेवहुभांति॥ बहुत प्रकार कियेसब व्यंजनअनेक वरन मिष्टान । अति उज्ज्वल कोमल सुठिसुंदर महरिदेखि मनमान॥यशुमति नंदहिबोलिकह्यो तव महर बुलाइ वहु जाति । आप गए नँद सकल महर घर लै आये सब ज्ञाति॥आदर करि बैठाइ सबनिको भीतर गये नंदराइ। यशुमति उवटि न्हवाइ कान्हको पटभूषण पहिराइ ॥ तन झँगुली शिर लाल चौतनी करचूरा दुहुँपाइ ।वारवार मुख निरखि यशोदा पुनि पुनि लेत बलाइ॥घरीजानिसुत मुख जुठरावन नंद बैठे ले गोदा॥महर वोलि बैठारिमंडली आनँद करतविनोद॥ कंचनथार लै खीर धरी भरि तापर घृत मधु नाइ । नंद लै लै हरिमुख जुठरावत नारि उठीं सब गाइ ॥ षटरसके परकार जहांलगि लैलै अधर छुवावत ।विश्वंभर जगदीश जगतगुरु परसत मुख करुवावत ॥तनक तनक जल अधर पोछिके यशुमति पै पहुँचाए। हर्षवंत युवती सब लैलै मुख चूमति उर लाए॥महर गोप सबहीमिलि बैठे पनवारे परुसाए। भोजन करत अधिक रुचिउपजी जो जेहिके मन भाए॥इहिविधि सुख विलसत ब्रजवासी धनि गोकुल नरनारी॥नंदसुवनकी या छवि ऊपर सूरदास वलिहारी ॥ ८१ ॥ राग सारंग॥ हरिको मुख माई मोहिं अनुदिन अति भावै। चितवत चित नैननकी मति सबगति बिसरावै ॥ ललना लैलै उछंग अधिक लोभ सो लागै । निरखति निंदति निमेष करत ओट आगे ॥ शोभित शुभ कपोल अधर अलप अलप दशना।

किलकि बैन कहत मोहन मृदु रसना ॥ नासिका लोचन विशाल सतत सुखकारी । सूरदास धन्य भाग्य देखत ब्रजनारी ॥ ८२ ॥ लालन तेरे मुखपरहों वारी । बालगोपाल लगों इन नैननि रोगु बलाइ तुम्हारी॥ लट लटकनि मोहन मसि बिंदुका तिलक भाल सुखकारी । मनहुं कमल अलि-मानक पगति उठत मधुप छवि भारी ॥ लोचन ललित कपोलनि काजर छवि उपजत अधिकारी। मुखमे मुख औरै रुचिबाढति हसत देदे किलकारी॥अल्पदशन कलबल करि बोलनि विधिनहिं परत बिचारी । निकसति ज्योति अधरनिके बिचहे मानों विधुमें बीजु उज्यारी॥सुदरताको पार न पावति रूपदेखि महतारी॥सूरसिंधुकी बूद भई मिलि मति गति दृष्टिहमारी॥८३॥राग धनाश्री॥ लाल तेरे मुख ऊपर वारी ॥ बलि केसे मेरे नेननि लागे लेउ बलाइ तिहारी॥सुदरताको पार न आवति रूप देखि महतारी । उरअतर आनंद बढावत हसत देत किलकारी ॥ अल्पदशन तोत-रात बोलत छवि चितहु न जात बिचारी । सूर सिंधुकी बूदभई मिलि मनसा मगन हमारी॥ ॥८४॥राग जैतश्री॥ लालन हौं वारी तेरे या मुख उपर । माई मेरिहि डीठि न लागे ताते मसि-बिंदा दयो भ्रूपर ॥ सर्वसु मे पहिलेही दीनी नान्हीं नान्हीं दँतुली दूपर । अब कह करौं निछावरि सूर यशोमति अपने लालन ऊपर ॥ ८५ ॥ लाला हौं वारी तेरे मुखपर । कुटिल अलक मोहन मन विहँसत भ्रुकुटी विकट नेननिपर ॥ दमकति द्वै द्वै दँतुलिया विहँसति मानो सीपिज घरु कियो वारिजपर । लघु लघु शिर लट घूँघरवारी लटकि २ रह्यो लिलार पर॥यह उपमाकहि कापैआवै कछुक कहीं सकुचतिहौं हियपर॥नूतनचन्द्र-रेखमधि राजति सुरगुरु शुक्र उदोत परस्पर ॥ लोचन लोल कपोल ललित अति नासिकको मुक्ता रदछदपर॥सूर कहा न्योछावरि करिये अपने लाल ललित लर ऊपर॥८६ ॥ अथ वरगांठि-लीला राग विलावल ॥ आजु भोर तमचुरकी रोल । गोकुलमें आनद होतहै मगल धुनि महराने टोल ॥ फूले फिरत नद अति सुख भयो हर्षि मँगावत फूल तमोल । फूली फिरत यशोदा घर घर उबटि कान्ह अन्हवाइ अमोल॥तनक वदन दोउ तनक तनक कर तनक चरन पोछत पटझोल । कान्हगले सोहै कठमाला अग अभूषण अँगुरिन गोल॥शिर चौतनी दिठौना दीने आँखि आजि पहिराइ निचोल । श्याम करत मातासो झगरो अटपटात कलबल कर बोल॥दोउकपोलगहिके मुख चूमति वर्षदिवस कहि करत कलोल । सूर श्याम ब्रजजन मन मोहन वरषगांठिको डोरा खोल ॥८७ ॥ राग धनाश्री ॥अलि मेरे लालनकी आजु वरषगांठि सब सखनिबोलावो॥शुभकरि मगल गान करावो । चदन अंगन सवनलिपावो ॥ मोतिअनको तुम चौक पुरावो।उमग अगनि आनँद तूर बजावो॥ मेरे कहे तुम विप्र बुलावो। शुभ घरी एक आनि धरावो ॥ धागे बीरे बनि ठनि बनावो । आभूषण पहिरावो॥अक्षत दूब बधावो। लालनकी वर्षगाठि जुरावो॥ इहै मोहि नेनन लाहो दिखावो । पचरग सारी मँगावो ॥वधुजन सब पहिरावोनचें सब उमँगि अग बढावो॥नद रानी सब ग्वाल बुलावो॥इहै रीति कहि कहि सुनावो॥ वेगि करो किनि विलँब लगावो॥यशुमति तब नद बोलावो ॥ लाल लिए कनियां देखगवो। लग्नकी घरी तुरत अब आवो ॥मैतो अन्ह-वाय बनावो । अति सुख भयो वर गाठि जुरावो ॥सूरश्याम मुख छविहि निहारति॥तनमन धन युवतीजन वारति ॥८८॥ राग आसावरी ॥उमँगनि उमँगीहैं ब्रजनारी कान्हकी वरपगांठि वरप वरपनि॥गावहिं मगलगान नीके सुर नीकी तानआनदहरपनि॥कचनमणिजटित थार दधिरोचन फूल डार देखन चली नदकुमारमिलिबेकी तरसनि॥सूरदास प्रभुकीवरपगांठि जोरतियहछविपर

तृन तोरति अरस परसनि ॥ ८६ ॥ श्रीकृष्णजीको कनछेदन लीला राग धनाश्री ॥ कान्ह कुँवरको कनछेदनोहै हाथ सुहारी भेली गुरकी। विधि विहँसत हरि हँसत हेरि हरि यशुमतिके धुकधुकी उरकी ॥ रोचन भरि लै देत सींकसों श्रवण निकट अतिही चतुरकी ॥ कंचनके द्वै दुर मँगाइलिये कहै कहा छेदन आतुरकी । लोचन भरि भरि दोउ माताके कनछेदन देखत जिय मुरकी ॥ रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नौवाको झरकी। हँसत नंदयुवती सब विहँसी झमकि चली सब भीतर दुरकी ॥ सूरदास नँद करत बधाई अतिआनंद बाला व्रज पुरकी ॥ जबहि भयो कनछेदन हरिको । सुखनिता सब कहत परस्पर व्रजवासी दासी समसरि को ॥ गोपी मगन भई सब गावतिहलरावतसुतमहरमहरिको । जो सुख मुनिजन ध्यान न पावत सो सुख नंद करत सब घरको॥ मणिमुक्तागणकरतन्यछावरि तुरत देत विलम नहिं घरिको । सूर नंद व्रजजन पहिरावत उमँगि चल्यो सुखसिंधु लहरको ॥ ८७ ॥ अथ घुटुरवनिचीलवो ॥ खेलत नंद आंगन गोविंद। निरखि निरखि यसुमति सुख पावति वदन मनोहर चंद ॥ कटि किंकिनी कंठ मणिकी द्युति लट मुकुता भरि भाल। परम सुदेश कंठ केहरि नख बिच बिच वज्र प्रवाल ॥ कर पहुँचियाँ पांयन पँजनी सुरतन रंजित रजपीत । घुटुरुनि चलत अजिर में विहरत मुखमंडित नवनीत॥ सूर विचित्र कान्हकी बानक बाणी कहत नहीं बनिआवै ।बालदशाअवलोकिसकलमुनियोग विरति विसरावै ॥८८॥ राग आसावरी ॥ घुटुरवन चलत श्याम मणि आंगन मात पिता दोउ देखत री ॥ कबहुँक किलकिलातमुखहेरत कबहुँ जननि मुखपेखत री ॥ लटकन लटकत ललित भालपरकाजरबिंदु भ्रुवऊपर री। यहशोभा नैननि भरि देखैं नहिं उपमा तिहुँ भूपर री ॥ कबहुँक दौरि घुटुरुवन लटकत गिरत परत फिरि धावति री । इतते नंदबुलाइ लेतहैं उतते जननि बुलावत री॥ दंपति होड करत आपसमें श्याम खिलोना कीनो री। सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोउ लीनो री॥८९॥ राग सारंग ॥ निरखि छवि फूलतहै व्रजराज । उत यशुदा इत आपु परस्पर आडे रहे कर पाज॥ किंकिनि कटि मध्य प्रसरित भुज उभय मिलत फुनि लाज । झुमत लरत अलि सैन सरोज पर मन मकरंदके काज ॥ अर्धगिरामृदु स्रवत सुधा जनु पिवत श्रुति निपट आज । सूरदास प्रभु सुत रति करि २ लैलै ऊपर भाज ॥ ९० ॥ राग बिलावल॥ शोभित कर नवनीत लिये॥ घुटुरुन चलत रेणु तनुमंडित मुख दधिलेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक किये । लट लटकनि मनो मत्त मधुप गन मादक मदहि पिये॥ कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिये। धन्य सूर एको पल या सुख का शत कल्प जिये॥ ९१॥ राग ललित ॥ माई विहरत गोपाललाल मणिमय रच्यो अंगना परिरांगना घुटुरवनि डोलै॥ निरखि निरखि अपनो प्रतिबिंब हँसत किलकत पाछे फिर फिर चितै मैयामैया बोलै॥ ज्यों ज्यों अलिगण सहित विमलजल धाइ रहेकुटिलअलक वदनकी छवि अवनी प्रति लोलै॥ सूरदास छवि निहारि थकित रहे सब घोपनारि तनमनधन देति वारि वारि ओलै॥ ९२॥ राग बिलावल ॥ बाल विनोद खरो जिय भावत॥ मुख प्रतिबिंब पकरिवे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत॥ छिनक माँझ त्रिभुवनकी लीला शिशुतामाहँ दुरावत । शब्दएक बोल्यो चाहतहैं प्रगट वचन नहिं आवत ॥ कमलनैन माखनमाँगतहैं ग्वालिन सैन बतावत। सूर श्याम सु सनेह मनोहर यशुमति प्रीति बढावत॥ ९३॥ राग सारंग॥ बलिजाऊं श्याम मनोहर नैन। अब चितवत मोहन करि अँखियन मधुप देत मनों सैन॥ कुंचित अलक तिलक गोरोचन शशिपरह-

रप ऐन॥कबहुंक खेलत जात घुटुरुवनि उपजावत सुख चैन॥कबहुंक रोवतहँसतहँ बलिगईबोलत मधुरे बैन ॥ कबहुंक ठाढे होत टेकि कर चलि न सकत इत गैन ॥ देखत वदनकरो न्योछावरि तात मात सुखदैन ॥ सूर बाललीलाके ऊपर वारौं कोटिक मैन ॥ ९४॥ कान्हरो ॥ आँगन चलत घुटुरुवन धाए।नीलजलद तनु श्यामसुख निरखि जननि दोउ निकट बुलाए॥बंधुकसुमन अरुण पदपकज अंकुश राम चिह्न बनिआए॥ नूपुर कलरव मनो सुनहंसनि रचे नीड दे बाँह बसाए॥ कटि किंकिनि वरहार ग्रीवदर रुचिर बाहुभूषण पहिराए। उर श्रीवत्स मनोहर केहरिनखनमेंमध्य मणिगण बहु लाए ॥ सुभग चिवुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोलमोहि सुठि भाए ॥ भुव सुंदर करुणारसपूरन लोचन मनहु युगल जलजाए ॥ भाल विशालललितलटकनमणि बालदशाके चिकुर सुहाए ॥ मानो गुरु शनि कुज आगे करि शशिहि मिलन तमके गण आए॥ उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत उढाए॥ नील जलद पर उडगन निरखत तजि सुभाउ मनो तडित छपाए॥ अंग अंग प्रति मार निकर मिलि छबि समूह लैलै जनु छाए ॥ सरश्याम सो क्योंकरि बरणै जो छबि निगम नेति करि गाए ॥ ९५ ॥ धनाश्री ॥ हौं बलि जाउ छबीले लालकी॥ धूसरि धूरि घुटुरुवन रेंगनि बोलन बचन रसालकी॥ छिटकिरहींचहुंदिशि जु लटुरियां लटकन लटकत भालकी। मोतिन सहित नासिका नथुनी कठ कमलदल मालकी॥कछुकै हाथ कछु मुखमाखन चितवनि नैन बिशालकी॥सूर सु प्रभुके प्रेम मगन भई ढिग न तजति ब्रजबालकी ॥९६॥ कान्हरो॥ सादर सहितविलोकि श्याममुख नदरूपलियेकनियाँ ॥ सुदरश्याम सरोज नीलतनु अँग अँग सकल सुभग सुखदनियाँ॥अरुणचरनिनखज्योतिजगमगतिरुनझुन करत पाईं पँजनियाँ। कनकरतन मणि जटित रचित कटि किंकिनि कलित पीतपट तनियाँ॥पहुँची करनिपदिक उर हरिनख कठुला कठ मजु गजमनियाँ ॥ रुचिर चिवुक द्विज अधर नासिका अतिसुदर राजत सोनथियाँ॥कुटिलभृकुटि सुखकीनिधिआनन कपोलनकीछबि न उपनियाँ॥भाल तिलक मसिबिंदु बिराजत शोभित शीशलाल चौतनियाँ॥ मनमोहनकीतुतरी बोलन मुनिमन हरतसु हँसि मुसकनियाँ॥बाल स्वभाउ बिलोकि बिलोचन चोरत चितहि चारु चितवनियाँ॥निरखति ब्रजयुवती सब ठाढी नदसुवनछबि चन्द्रवदनियाँ ॥ सूरदास प्रभुनिरखि मगन भए प्रेमबिवश कछु सुधिनअपनियाँ॥९७॥कान्हरे ॥बोलि लिए यशुमति यदुनदहि॥ पीन झँगुलियाकी छबि छाजति विद्युलता सोहति मनोकदहि॥ राजापति अग्रजअरातिअरजथानसुत मालागदहि ॥ मनोसुरगृहते सुररिपु कन्या सातै आवति छुरिमदहि॥आरि करत कर चपल करसुतो नदनारि आनन छुवैमदहि । मनो भुजगअरि परमलालची फिरिफिरिचाटत सुभग सुचदहि ॥गुणी बातनि यो अनुरागति भँवर गुजरत कमलनि बदहि । सूरदास प्रभु सुतप किये बड भाग्य यशोदा अरु नदहि॥९८॥राग धनाश्री॥कहा लौं बरनौं सुंदरताइ॥ खेलत कुँवर कनक आँगनमें नैन निरखि छबिछाइ॥कुलहि लसतशिर श्याम सुभग अति बहुनिधि सुरग बनाइ । मानो नवघन ऊपर राजत मघवा धनुष चढाइ॥अति सुदेश मृदु हरत चिकुर मनमोहन मुख बगराइ। मानो प्रगट कज पर मजुल अलि अवली फिरि आइ॥नील श्वेत पर पीत लालमणि लटकनि भालरुनाइ ॥ शनि गुरु असुर देवगुरु मिलि मनो भौम सहित समुदाइ॥ दूधदत दुति कहि न जाति अति अद्भुत एक उपमाइ ॥ किलकत हँसत दुरत प्रगटत मनो घनमें विद्यु छपाइ ॥ खडित वचन दत पूरन सुख अलप जलप जलपाइ ॥ घुटुरुन चलत रेणु तनु मंडित सूरदास बलिजाइ ॥ ९९ ॥ नारायण ॥ हरिजूकी बाल छबि कहौं बरनि ।

सकल सुखकी सींव कोटि मनोज शोभा हरनि ॥ भुज भुजंग सरोज नयननि वदन विधु जित लरनि। रहे विवरन सलिल नभ उपमा अपर दुति उरनि॥ मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरत भूषण भरनि। मनहुँ सुभग शृंगार शिशु तरु फरयो अद्भुत फरनि। चलत पद प्रति-बिंब मणि आँगन घुटुरुवन करनि। जलजसंपुट सुभग छवि भरि लेत उर जनु धरनि॥ पुण्यफल अनुभवति सुतहि विलोकिके नंदघरनि। सूर प्रभुकी बसी उर किलकनि ललित लरख रनि॥१००॥राग धनाश्री ॥ किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत। मणिमय कनक नंदके आँगनमुख प्रतिबिंबपकरवेहि धावत॥कबहुं निरखि हरि आप छांहको करसों पकरनको चित चाहत।किलकि हँसत राजत द्वे दतियां पुनि पुनि तिहिं अवगाहत॥कनक भूमि पर कर पग छाया यह उपमा एक राजत।कर कर प्रति पदप्रतिमणि वसुधा कमल वैठकी साजत॥ बालदशासुख निरखि यशोदा पुनि पुनि नंद बुलावत।अचरा तर लै ढांकि सूरके प्रभुको जननी दूध पियावत॥१०१॥राग बिलावल॥नंद धाम खेलत हरि डोलत।यशुमति करत रसोंई भीतर आपुन किलकत बोलत॥टेरि उठी यशुमति मोहनको आवहु घुटुरुवन धाए।बैनसुनत माता पहिचानी चलेघुटुरुवनि पाए॥ले उठाय अंचल गहि पोंछे धूर भरी सब देह। सूरज प्रभु यशुमति रज झारति कहां भरी यह खेह॥२॥ अथ पाँयन चलन समय ॥ सुहो बिलावल ॥धनि यशुमति बडभागिनी लियेश्याम खिलावै।तनकतनक भुजपकरिके ठाढो होन सिखावै॥लरखरात गिरि परतहैं चलि घुटुरुवनि धावै।पुनि क्रमक्रम भुज टेकिके पग द्वैक चलावै॥अपने पाँयन कबहिंलों मो देखत धावै। सूरदास यशुमति यह विधि साँज मनावै ॥३॥कान्हरो॥हरिको विमल यश गावत गोपंगना॥मणिमय आँगन नंदरायके बाल गोपाल तहां करें रंगना ॥ गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत खेलतहैं दोउ छगन मंगना।धूसरि धूरि धौत तनु मंडित मातु यशोदा लेत उछंगना ॥ वसुधा त्रयपद करत न आलस भयो कठिन परचोदे-हरी उलंघना। सूरदास प्रभु व्रजवधू निरखत रुचिर हार हिए सोहतुबंधना ॥४ ॥ सुहो बिलावल॥ चलन चहत पाँइन गोपाल। ले लगाइ अँगुरी नंदरानी मोहन मूरति श्याम तमाल ॥डगमगात गिरि परत पाँइ पर भुज भ्राजत नँदलाल। जनो श्रीधर श्रीधरत अधोमुख धुकतधरनि मानों मनिमाल॥ धूरि धौति तनु नैनन अंजन चलत लटपटी चाल। चरणरुणित नूपुरध्वनि मानो सर विहरत है बाल मराल ॥ लट लटकनि शिर चारु चपोडा सुठि शोभा सोहे शिशु भाल।सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजे जगमें बहुकाल॥५॥बिलावल॥सिखवत चलनयशोदामैया।अरबराइ कर पाणि गहावत डगमगाइ धरणी धरे पैया॥ कबहुँक सुन्दर वदन विलोकतिउरआनँदभरिलेत बलैया। कबहुँक बलिको टेरि बुलावति इहि अंगन खेलो दोउ भैया॥ कबहुँक कुलदेवतामना-वत चिरजीवे मेरो बाल कन्हैया। सूरदास प्रभु सब सुखदायक अतिप्रताप बालकनँदरैया ॥६॥ सुहो बिलावल ॥ मणिमयआंगन नंदकेखेलतदोउभैया।गौरश्यामजोरीबनीबलरामकन्हैया॥लटकन ललित लटुरियाँ मसि बिंदु गोरोचन। हरि नख उर अति गजहिं संतनिदुखमोचन॥ संग संग यशुमति रोहिणी हितकारनि मैया। चुटकीदेहिनचावहिसुतजानिनन्हैया॥नीलपीतपट ओढनी देखत जिय भावे।बालविनोद अनंदसों सूरज जन गावे॥७॥ राग धनाश्री ॥ आँगन खेलें नंदके नंदा। यदुकुल कुमुद सुखद चारु चंदा॥ संग संग बलमोहन सोहें। शिशुभूषणसबकोमन मोहे॥ तनुद्युति मोरचंद्र जिमि झलके।उमँगि उमँगि अँग अँग छवि छलके॥कटिकिंकिनिपग नूपुर बाजे। पंकज पाणि पहुँचिया राजे ॥ कठुला कंठ बघनहा नीके।नयनसरोज मयन सरसीके॥ लटकन

ललित ललाट लटूरी। दमकत द्वै द्वै दँतुरियारुरी॥ मुनिमन हरत मंजु मसिविंदा। ललित वदन वल वाल गोविंदा॥कुलही चित्र विचित्र झगूली।निरखि यशोदा रोहिणि फूली॥गहिमणिखम्भ डिंभ डग डोलैं। कलबल वचन तोतरे वोलैं॥ निरखत छवि झाकत प्रतिबिंबे। देत परम सुख पितु अरु अंबे॥ ब्रजजन देखत हिय हुलसाने।सूरश्याम महिमा को जाने॥८॥राग नटनारायण॥ बलिगई वालरूप मुरारि। पाँयपैजन रुनु झुनु नचावति नंदनारि॥कबहूं हरिको लाइ अंगुरीचलन सिखावति ग्वारि। कबहूं हिरदे लगाइ हितकारि लेति अंचल डारि॥कबहुंक हरिको चितै चूमति कबहूँ गावति गारि॥कबहूं लै पाछे दुरावति ह्यां नहीं बनवारि॥ कबहूं अंग भूपण बनावति राई लोन उतारि। सूर सुर नर सबै मोहे निरखि यह अनुहारि॥९॥विलावल॥भावत हरिको वाल विनोद। श्यामराम मुख निरखि प्रमोदित रोहिणि जननियशोद॥आँगन पंकरागतनु शोभितचले नूपुरध्वनि सुनि मनमोद।परमसनेह बढावत मातनि रवकि रहरिवैठत गोद॥ अतिश्रीचपल सकल सुखदायक निशिदिन रहत केलिसश्रोद।सूरश्याम अंबुजदल लोचन फिरि चितवत ब्रजवनिता कोद॥वालविनोद आँगनकी डोलनि। मणिमय भूमि नंदके आलय वलि वलि जाउं तोतरी वोलनि॥कठुला कंठ रुचिर केहरि नख बज्रमोल बहुलाल अमोलनि।वदनसरोज तिलक गोरो चन लट लटकन मधु पंकति लोलनि॥लोनी करआनन परसतहैं कछुक खाइ कछु लग्यो कपोलनि। कहि जन सूर कहांलौं वरणौं धन्यनंदजीवनयुगतोलनि॥ ११०॥राग विलावल॥गहेअंगुरिया तातकी नंद चलन सिखावत।अरवराइ गिरिपरतहैं करटेकि उठावत॥वारवार वकि श्यामसों कछु वोल वकावत।दुहुंया द्वै दंतुली भई अति मुखछवि पावत॥ कबहुं कान्ह करछांडि नंदपग द्वै करि गावत।कबहुं धरणिपर वैठिकै मनमें कछु गावत॥कबहुं उलटि चलै धामको घुटुरुन करि धावत। सूरश्याम मुख देखि महरमन हर्ष वढावत॥११॥धनाश्री॥ कान्ह चलत पग द्वै द्वै धरनी। जो मनमें अभिलाप करतही सो देखत नंदघरनी॥ रुनुक झुनुक नूपुर वाजत पग यह अतिहि मनहरनी। वैठजात पुनि उठत तुरतही सो छवि जाइ न वरनी॥ ब्रजयुवती सबदेखिथकितभईसुंदरताकी सरनी। चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदासको तरनी॥१२॥ राग विलावल॥चलत श्याम घन राजति पैंजन पग पग चारु मनोहर। डगमगात डोलत आंगनमें निरखिविनोद मोहे सुर मुनि नर॥ अरु मन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरत गहे अंगुरी कर। मनो धेनुतृणछांडिबच्छहित प्रेम पुलकि चित स्रवत पयोधर॥ कुंडल लोल कपोल विराजत लटकन ललित लटुरिया भूपर। सूर श्याम सुंदर बिलोकनि रहत वालगोपालनंदघर॥१३॥ राग गौरी॥ भीतरते वाहरलौं आवत घर आंगन अति चलत सुगम भयो देहरीमें अटकावत॥ गिरि गिरि परतजातनहिंउलँघीअति श्रम होत न धावत। अहुठपैर वसुधा सब कीन्ही धाम अवधि बिरमावत॥मनहीमन बलवीर कहतहैं ऐसे रंग बनावत।सूरदास प्रभु अगणितमहिमा भक्तनके मन भावत॥ १४॥राग धनाश्री॥ चलन देखि यशुमति सुख पावै।ठुमुकु ठुमुकु धरनी धर रेंगत जननी देखिदिखावै॥देहरी लौं चलि जात वहुरि फिरि फिरि इतहीको आवै।गिरि गिरि परत वनत नहिं नांघत सुर मुनि शोच करावै॥ कोटि ब्रह्मांड करत छिन भीतर हरत विलंब न लावै। ताको लिए नंदकी रानी नानारूप खिलावै॥ तव यशुमति कर टेकि श्यामको क्रमक्रमके उतरावै। सूरदास प्रभु देखि देखि सुर नर मुनि मन बुद्धि भुलावै॥ १५॥ राग भैरव॥ सो वल कहा गयो भगवान। जिहि वल मीनरूप जल थाह्यो लियो निगम हति असुर पुरान॥ जेहि वल कमठपीठ पर गिरिधर सजलसिंधु मथि

कियो विमान। जिहिबल रूप वराह दशनपर राखी पुहुमी पुहुपसमान ॥ जेहि बल हिरणकशिपु तनु फारयो भए भक्तको कृपानिधान। जेहि बल बलि बंधन करि पठयो त्रैपद वसुधा करी प्रमान॥ जेहि बल विप्र तिलकदै थापे रक्षा आपु करी विदमान। जेहि बल रावणके शिर काटे कियो विभीषण नृपति समान ॥ जेहि बल जाम्बवंत मद मेट्यो जेहि बल ध्रुवविनती सुनि कान। सूरदास अब धाम देहरी चढि न सकत हारे खरेई अयान ॥ १६ ॥आसावरी॥ देखो अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धरयोहैहो॥तीनलोक जाके उदर भवन सो सूपके,कोन परयो है हो॥ जाकेनालरुद्रब्रह्मादिक सकलयोगव्रतसाधै हो।तिनकोनालछी निब्रजयुवती बाँटि तगासों बाँधै हो॥ जाके मुख सनकादिक तप कियो सकल चतुरई ठानीहो। सोमुख चूमति महरि यशोदा दूध लार लपटानी हो ॥ जिन कानन गजसंकट सुनिके गरुडासन बिसरावै हो। तिन कानन ह्वै निकट यशोदा हलरावै (दुलरावे) गुन गावै हो॥ विश्वभरण पोषण सब समरथ माखनकाज अरे हैं हो। रूप विराट रोम प्रति कोटि सुपलना माँझ परेहैं हो॥जिन्हहि भुजा प्रहलाद उबारयो हिरणकशिपु तनु फारे हो। सो भुज पकरि कहतब्रज युवती ठाढे होहु ललारेहो॥ जाको ध्यानधरैं सुर मुनिजन शंभु समाधि न टारी हो। सो ठाकुरहैसूरदासको गोकुल गोप विहारीहो॥ १७॥ आसावरी॥आनंदप्रेम उमँगीयशोदालालरीखिलावै॥शिवसनकादिशुकादिब्रह्मादिक खोजतअंतनपावै॥गोदलिएहँसिके हलरावत तोतरे बोल बोलावै ॥दैकर ताल बजावति गावति रागअनूप मल्हावै। कबहुँक करपल्लव आनिगहावति आँगन माँझरिझावै॥मोहिलियो सुरव्योम विमाननरवि नहिं रथहिचलावै॥कबहुँ क हिलके किलकैजननीमनसुखसिंधुबढावै। मोहिरही ब्रजकीयुवतीसब सूरदास यश गावै॥१८॥ राग कान्हरा ॥हरिहित मेरो माधैया।देहरीचढत परतहरिगिरि गिरि करपल्लवजो गहतहैरीमैया॥भक्ति हेतु यशुदाके आये चरण धरणिपर धारैया। जिनहि चरण छलियो बलिराजा नखप्रदेस गंगा जो बहैया॥जिहि स्वरूपमोहे ब्रह्मादिक कोटि भानुशशिउगैया॥सूरदास प्रभुइनचरणनकी मैंबलिमैंब-लिजैया॥१९॥राग सूहो ॥आँगनश्याममनचावहि यशोमतिनंदरानी।तारीदैदैगावहीमधुरीमृदुवानी॥ पाँयन नूपुर बाजई कटिकिंकिनी कूजे।नन्ही नन्ही एडिअन अरुणता फलबिंबनपूजे॥यशुमतिगान सुनै श्रवण तबआपुन गावै।तारी बजावत देखहि पुनितारी बजावै॥केहरिनख उरपर सुठि शोभा-कारी।मानों श्याम घन मध्यमें नौ शशि उजियारी॥गभुआरे शिर केशहैं ते वधूसँवारे। लटकन लटकै भालपर विधु मधि गण तारे॥ कठुला कंठ चिबुक तरे मुख हँसनि विराजै। खंजन मीन शुक आनिके मानो परे दुरावै॥यशुमति सुतहि नचावइछबि देखत जियते।सूरदास प्रभुश्यामके सुख टरतन हियते॥२०॥राग बिलावल ॥त्यों त्यों नाचोरी मनमोहन धाम मधुर सुर होईतेसिये किंकिनि हरि पगनेपुर रसहि मिले सुर दोई॥कंचनकोकठुला मनमोहत तिन बघनहा बिचपोई। निरखि निरखि सुख नंद सुवनको सुर मन आनँद होई॥देखत बनै कहत नहिं आवै उपमा-को नहिं कोई। सूर भवनको तिमिर नसायो निरखत जननि यशोई॥ २१॥राग आसावरी ॥जबले में खेलत देखो आँगन री यशुदाको पूत री।तबते ग्रहसों नाहिननातो टूट्यो जैसो काचोसूतरी॥ अतिविशाल वारिजदललोचन राजति काजररेख री।इच्छासों मकरंद लेत मनों अलिगोकुलके वेषरी॥श्रवणन नहि उपकंठ रहतहैअरु बोलत तुतरात री । उमँगे प्रेम नैन मगह्वैके कापै रोके जातरी ॥ दमकत दोउ दूधकी दतियाँ जगमग जगमग होत री। मानो सुंदरतामंदिरमें रूपर-तनकी ज्योतिरी॥सूरदास देखो सुंदर मुखआनँद उर न समाइरी।मानों कुमुद कामनापूरण पूरण इंदुहि पाइ री॥अद्भुत एक चितयो हौं सजनी नंदमहरके आंगनरी।सो मैं निरखि अपनपो खोयो

गई मथनियां मांगनरी ॥ बालदशा मुखकमल विलोकत कछु जननीसों बोलै री।प्रगटत हँसत दँतुलिया मानों सीपदुरेदलओलै री॥ सुंदरभालतिलक गोरोचनमिलि मसिबिंदुकलाग्यौरी।मनो मकरंद अचै रुचिकै अलिसावक सोइ न जाग्यौ री॥ कुंडललोलकपोलनझलकत मनो दर्पणमें झाई री। रही विलोकि विचारि चारुछवि परमितिकाहुन पाई री॥मंजुल तारनकीचपलाईचितु चतुरानन करपै री। मनो शरासन समर धरे कर भौंह चढे शरवरपै री॥ जलधिथकित जनोकाग-दपोत ज्यो कूलन कबहूं आयो री। ना जानोंकेहिअंग मगन मन चाहि रह्योनहिं पायोरी॥कहां लगि कहौं बनाइ बरणि जितनी छबि निरखत हारी री। सूर श्यामके एक रोमपर देहुं प्राण बलि-हारी री॥२३॥राग धनाश्री॥ यशोदा तेरो चिरजीवहु गोपाल। वेगि बढो बलसहित वृद्धलट महरि मनोहर बाल॥ उपजि परचो इह कोख कर्मवश शुदी सीप ज्यों लाल। या गोकुलके प्राणजीवन बैरिनके उर शाल॥ सूर कितो मन सुख पावतहै देखे श्याम तमाल। रुजि आरति लागो मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल॥ २४॥राग आसावरी॥ आजु गई हों नंदभवनमें कहा कहौं गृहच-नुरी। बहुअंग चतुरंग छलमो कोटिक दुहियतु धेनु री॥ घूमिरहे जित तित दधि मथना सुनत मेघ ध्वनि लाजे री। वरणौ कहासदनकी शोभा वैकुंठहुते राजे री॥ बोलिलईनववधू जानिकै खेलतजहाँ कन्हाई री। मुख देखत मोहनीसी लागत रूप न वरण्यो जाई री॥ लटकनलटकि रहे भ्रूऊपर पँचरँग मणिगण पोहे री। मानहु गुरु शनि शुक्र एक होइ लाल भाल पर सोहे री॥ गोरोचनको तिलक निकटही काजरबिंदुकु लाग्यौ री। मनहु कमलयुग पीयराग रस निशि अलिसुत सोइ जाग्यौ री॥ विधु आनन पर दीरघ लोचन नासा लटकत मोती री। मानों सोम संगकरिलीनो जानि आपनो गोती री॥ सीपजमाल श्याम उर सोहे बिच बघना छवि पावै री। मानो द्वैजशशि नखत सहितहै उपमा कहत न आवै री॥ वरणो कहा अंग अंग शोभा भाव धरो जलराशी री॥ बाल लाल गोपाल हि वर्णत कविकुल करिहे हांसीरी॥शोभासिंधु अगाधबोध बुधउपमा नाहिन औररी॥रूपदेखि तनु थकितरहीहोमनो भेइभरेको चोर री॥जोमेरी अँखिया रसनाहोती कहती रूप बनाइरी॥चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदास बलि जाइ री॥ २५॥ बलभद्रवचन राग बिलावल ॥कलबलते हरि हारपरे। नवरंग विमल जलद पर मानों द्वै शशि आनि अरे॥तवगिरि मकट सुरासुर सर्पहि धरत नमनमें नेक डरे। तिन भुज भूषण भार परत कर गोपिनके आधार धरे॥चंद्रवदन मानों मथि काढ्यो विहँसनि मनहु प्रकाश करे। सूरश्याम दधिभाजनभीतर निरखत मुख मुखते न टरे॥२६॥ मथत दधि मथनी टेक रह्यो।आरि करत मटुकी गहि मोहन वासुकि शंभु डरचो।मदर तरतसिंधु पुनि कांपत फिरि जनि मथन करै।प्रलय होत जनि गहो मथानी प्रभु मर्याद टरै॥सुरअरि सुर ठाढे सब चितवैं नैनन नीर ढरै। सूरदास प्रभु मुग्ध यशोदा मुख दधिबिंदु गिरै॥ २७॥ जब दधिरिपु हरि हाथ लियो।खगपतिअरि डर लै शकत बासरपति आनंद कियो॥विधि शिर धुनि सकुचत शिव सोचत गरलादिक कैसे जात पियो। अति अनुराग संग कमलातन प्रफुल्लित अगन अमित हियो॥ एकन दुख एकन सुख उपजत को ऐसो न विनोद कियो। सूरदास प्रभु तुमरे महतहि एक एकने होत बियो॥२८॥ राग धनाश्री॥जब मोहन कर गही मथानी। परसतकर दधिमाटनेत चित उदधि शैल बासुकि भय मानी॥ कबहुँक अहुठ परग करि बसुधा कबहुक देहरि उलंघि न जानी॥ कबहुँक सुर मुनि ध्यान न पावत कबहुँ खिला-वति नंदकी रानी॥ कबहुक अपर खीरनहि भावत कबहुँ मेखली उदर समानी॥कबहुँक आर करत माखनको कबहुँक भेष दिखाइबिनानी॥ कबहुक अखिल उदर नहिं तर्पित कबहुक दल माखन रुचि मानी॥ सूरदास प्रभुकी यह लीलापरतनमहिमाशेषवखानी॥२९॥ रागबिलावल नंदजूके बारे कन्हैया छांडिदे मथनियां।बार बार कहे मातयशोमतिरनियां॥नेकरहौमाखनदेउं

मेरे प्राण धनियां॥ आरि जिनि करौ बलिजाऊंहौ निधनीके धनियां॥सुर नर जाकोध्यानधरैंगावैं मुनि जनियां। ताको नँदरानी मुख चुंवतिहै लिए कनियां॥सहसाननगुणगानेगनतनहींवनियां। सूरश्याम देखि सब भूली गोपधनियां ॥१२०॥यशुमति दधि मथन करति बैठी वरधाम अजिर ठाढे हरि हँसत नान्हीसी दतिआनछबिछाजै॥चितवत चितलेइचोराई शोभा वरणि न जाईमुनि-नके मनहरनको मनमोहनि दलसाजै॥जननि कहति नाचौ तुम देहौं नवनीतमोहन रुनुकु झुनुकु चलत पांइन चायन नूपुर वाजे। गावत गुण सूरदास यश वाढ्यो भुव अकाश नाचत त्रैलोक-नाथ माखनकेकाजै॥१२१॥प्रात समय दधि मथत यशोदा अति सुख कमलनयन गुणगावति॥ अतिहि मधुर गति कंठ सुघर अति नंदसुवन चित हितहि करावति॥नीलवसनतनु सजल जलद मानौ दामिनिविविभुजदंड चलावति॥चंद्रवदन लटलटकि छवीली मनहुँ अमृतरस राहुचुरावति॥ गोरस मथत नाद इक उपजत किंकिनिधुनि सुनि श्रवण रमावति॥सूरश्याम अचराधरे ठाढेकाम कसौटी कसिदेखरावति॥२२ ॥ललित॥छोटीछोटी गुडियां अंगुरियां छोटी छवीली नख ज्योति मोती मानौ कंजदलनपर॥ललित आँगन खेलै ठुमुकु ठुमुकु डोलै झुनुक झुनुक वाजै पैंजनी मृदुमुखर॥किंकनी कलित कटि हाटक रतन जटित मृदु कर कमल पहुँचियारुचिर वर॥ पियरी पिछौरी झीनी और उपमा भीनी वालक दामिनि मानौं ओढ़ेवारोवारिधर॥उरवघनहाकंठकठुला झडूले वार वेनीलटकन मस विंदु मुनिमनहर॥अंजन रंजित नयनाचितवनि चितचोरैमुखशोभा परवारौं अमित असमसर। चुटुकि वजावति नचावति नंद घरनि वाल केलि गावत मल्हावति प्रेम सुघर॥ किलकि किलकि हँसैं द्वैद्वै दँतुरिया लसैं सूरदास मन वसै तोतरे वचनवर॥ २३॥ राग बिलावल॥ माधव तनकसेवदन तनकसे चरन भुज तनकसे करन पर तनकमाखन॥ तनकसीवात जो कहत तनकसे तनक रिझि रहे तनक सुधन॥तनक कपोल तनकसी दंतुलिया तनक अधर अरु तनक हँसन पर हरत हो मन। तनकहि तनक जो सूर निकट आवे तनक कृपा करि दीजे तनक शर न॥माधव तनक चरन अरु तनक तनक भुज तनक वदन वोलै तनकसे वोलातनक कपोल तन कसी दँतिया तनक हँसन पर लेतहौ मन मोल॥ तनक करनपर तनक माखन लिये देखत तनक जाके सकल भुवन। तनक सुनै सुयश पावत परमगति तनक कहत तासों नंदसुवन॥ तनक रीझ पर देत सकल तन तनक चितै चितवन चितके हरन॥तनकहि तनक तनक करि आवै सूर तनक तनक दीजे तनक शरन॥२४॥ राग कान्हरो॥ गोदखिलावति कान्हसुनोवडभागिनिहो नँदरानी॥ आनँदकी निधि मुख लालको ताहि निरखि निशिवासर सोतो छवि क्योंहूँ नजाति वखानी॥ गुणअपार वहु विस्तार कहि न परत निगमागमवानी। सूरदास प्रभुको लियेयशुमति गोदखिलावति चितै मुसुक्यानी॥२५॥ राग गौरी॥मेरे माई श्याम मनोहर जीवनि॥निरखिनयन भूलेते वदन छवि मधुर हँसनि पैपीवनि॥ कुंतल कुटिल मकर कुंडल भुव नैनविलोकनि वंक। सिंधुसुधाते निकसि नयो शशि राजत मनौ मृगअंक॥शोभित सुमन मयूर चंद्रिका नीलनलिन तनुश्याम। मानहुनक्षत्र समेत इंद्र धनु सुभग मेघ अभिराम॥परमकुशलकोविदलीलानटमुसुकनि मन हरिलेत। कृपा कटाक्ष कमल कर फेरत सूर जननि सुखदेत॥२६॥ राग आसावरी॥वेदकमल मुख परसत जननी अंक लिये सुतरति करि श्याम। परमसुभग जु अरुनकोमल रुचिआनंदित मनु पूरणकाम॥ आलंवित जु पृष्ट वल सुंदर परस्पर नितवत हरि राम। झाकि उझकि हसत दोऊ सुत प्रेम मगन भई इकटक जाम॥ देखिस्वरूप न रही कछू सुधि टूरी तवहि कंठते दाम। सूरदास प्रभु शिशुलीला रस आवहु नंद देखि सुखधाम॥२७॥ राग गौरी॥ शोभा मेरे श्यामहिपै

सोहै। बलि बलि जाऊं छबीले मुखकी या पटतरको को है॥या बानक उपमा दीबेको सुकबिक-हा टकटोहै। देखत अंग थके मनमें शशि कोटि मदन छवि मोहै॥शशिगण गारि कियो विधि आनन बंकभौंह मिलि जोहै। सूर श्याम सुंदरता निरखत मुनिजनको मन मोहै॥३८राग बिलावल

बाल गोपाल खेलौ मेरे ताता बलि बलि जाउँ मुखारविंदकी अमी वचन बोलत तुतरात॥ उनींदे नयन विशालकी शोभा कहत न बनिआवै कछु बात। दूर खरेसब सखा बुलावत नयनमींडि उठि आए प्रभात॥ दुहुँकर माठ गह्यो नँदनंदन छिटकि बूँद दधि परत अघात॥ मानहु गजमुक्ता मर्कत पर शोभित सुभग सांवरे गात॥ जननी प्रति मागत मनमोहन दे माखन रोटी उठि प्रात। लोटत पुहुमि सूर सुन्दर घन चारि पदारथ जाके हाथ ॥ ३९ ॥ पालने झूलो मेरे लाल पियारे॥ सुसकनिकी हौं बलि बलि करौं तिल तिल हठ न करहु जे दुलारे॥ काजर हाथ भरो जिनि मोहन ह्वैहैं नैन अतिही रतनारे। शिर कुल्ही पहिराय पैजनी तहां जाहु जहाँ नंदबबारे॥यह विनोद देखत धरणीधरमात पिता बलभद्रददारे। सुर नर मुनि कौतू-हल भूले देखत सूर श्याम हैं कारे॥४०॥ क्रीडत प्रात समय दोउ वीर॥ माखन माँगत बात न मानत झकत यशोदा जननी तीर॥जननी मध्य सन्मुख संकर्षण ऐंचत कान्ह खस्यो तनुचीर। मानो सरस्वती संग उभै द्विज राम कृष्ण अरु नील कठीर॥ सूरश्याम गही कुवरी करमुक्तामांग गही बलबीर। ताहन भसुलीनो अप अपनोमानहु लेतनिबेरनि सीर॥४१गोपालराइ दधिमांगत अरु रोटी। माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक समंगल मोटी॥ कतहोआरिकरत मेरे मोहन कत तुम आंगन लोटी। जो मांगहु सो देहुँ मनोहर यहै बात तेरी खोटी॥ प्रातकाल उठि देहुँ कलेऊ बदन चुपरि अरु चोटी। सूरदासको ठाकुर ठाढो हाथ लकुट लिये छोटी॥ ४२॥ हरिकर राजत माखन रोटी।मनो बारिज शनि बैरु जानि जियगह्यो सुधा शिशुधोटी॥मनौवराह भूधर सहपति धरी दशननकी कोटी। शनि शशि मिलि मुख अंबुज भीतर उपजी उपमामोटी॥ नग्न गात मुसक्यात तात ढिग निरत करत गहि चोटी। सूरज प्रभुकी इहै जु जूठनि लालनललि-त लपेटी॥४३॥दोउ भैया मैयापै माँगत दे माँ माखन रोटी।सुनीभावतीएकबातसुतनकीझूठेहि धामके काम अगोटी॥ बलजू गह्यो नासिका मोतीकान्हकुँवरगहीदृढकरचोटी। मानहुहंसमोर-भख लीनै कविजन कहै उपमा कछु छोटी॥यह छवि देखत महरि अनंदितमहरहँसतलोटिलोटी। सूरदास प्रभु मुदित यशोदा भाग बडे करमनिकी मोटी॥४४॥ राग आसावरी॥ तनक देरी माइ। माखन तनक देरी माइ॥ तनिक करपर तनिक रोटी मांगत चरन चलाइ॥ कनक भूपर रत-नकी रेखा नेक पकरयो धाइ। कंपिआगिरिशेषशंक्योउदधिचलोअकुलाइ॥ जामुखको ब्रह्मादिक लोचें सो मांगत ललचाइ। ईशके वेग दरश दीजै ब्रज बालक लेत बलाइ॥ माखन मांगत श्याम सुंदर देत पग पटकाइ। तनक मुखकीतनकबतियां मांगतहैं तोतराइ॥मेरेमनकोतनिकमोहन लागु मोहि बलाइ। श्यामसुंदर [illegible]

नथों तुमको। ठाढी मथति [illegible]

सुन्दर भूख लगी तुम भारी। बात कहूंकी बूझति श्यामहि फेर करत महतारी॥ कहत बात हरि कछू न समुझत झूठेहि देत हुँकारी।सूरदास प्रभुके गुण गावत तुरतहि बिसरिगई नँदनारी॥ ॥४६॥ बातनहीं सुत लाइ लियो। तबलौं मथि दधि जननि यशोदा माखन करि हरिहाथदियो॥ लैलै अधर परसकरि जेवत देखत फूल्यो गात हियो। आपुहिं खात प्रशंसत आपुहिं माखन

रोटी बहुत प्रियो॥जोप्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुतहित वश करि नंदत्रियो।यह सुख निरखत सूरज प्रभुको धन्य धन्यफल सुफल जियो॥४७॥अथ बालवेष वर्णन ॥बरनोंबालभेष मुरारि।थकित जित कित अमरमुनि गण नंदलालनिहारि॥केशशिर बिन पवनके चहुँदिशा छिटके झारि।शीशपर धरे जटा मानो रूप कियो त्रिपुरारि ॥ तिलक ललित ललाट केशर बिंदु शोभाकारि। रेखा अरुन ज्यों त्रितयलोचन रह्यो जनु रिपु जारि॥ कंठ कठुला नील मणि अंभोजमाल सँवारि। गरल ग्रीव कपाल उर यहि भाय भए मदनारि॥कुटिल हरिनख हिये हरिके हरपिनिरखतिनारि। ईश जनु रजनीश राख्यो भालहूते उतारि ॥ सदन रजतन श्याम शोभित सुभग इहि अनुहारि। मनहु अंग विभूति राजत शंभुसो मधुहारि॥त्रिदशपति पति अशनको अति जननिसों करआरि। सूरदास विरंचि जाको जपत निजमुख चारि ॥४८॥सखीरीनंदनंदन देखु।धूरिधूसरि जटाजूटलि हरि किए हरभेषु॥नीलपाट पुरोइ मणिगण फणिग धोखे जाइ।झुनझुना करि हँसत मोहन नचत डौंरु बजाइ॥जलजमाल गोपालपहिरे कहौं कहा बनाइ।मुण्डमाला मनो हरगर ऐसिशोभापाइ॥ स्वातिसुत माला बिराजत श्यामतन यों भाइ। मनो गंगा गौरिडर हर लिए कंठ लगाइ॥केहरीके नखहि निरखत रही नारि बिचारि।बालशशि मनो भालते लै उर धर्योत्रिपुरारि।देखि अंगअनंग डरप्यो नंदसुतको जान। सूरदासके हृदय बसिरहचो श्याम-शिवको ध्यान॥४९॥राग नटनारायण॥ विहरतविविधबालकसंग।डगरडगडोलतमगनिमग धूरिधूसरअंग॥ललित गति पग परत पैंजनि परस्परकिलकानि।मनहु मधुरमराल शावक सुभग बैन विहानि॥ललित श्रीगोपाललोचनश्याम शोभा दून,मनु मयंकहि अंक दीन्ही सिंहिकाके सून॥दूर दमकतश्रवणशोभा जलजयुगडहडहत। मनहुं बाल्व बलि पठाए जीव कवि कछु कहत॥कबहुँ द्वारे दौरि आवत कबहुँनंदनिकेत।सूर प्रभुको गहत ग्वालिनि चारुचुंबनहेत१५० ॥राग बिलावल ॥देखो मेंदधिसुतमेंदधिजात।एकअचंभो देखिसखि री रिपुमें रिपु जु समात॥दधिपर कीर कीरपरपंकज पंजकेद्वैपात।यहशोभादेखत पशुपालक फूले अँग न समात॥सुंदर बदन बिलोकि श्यामको नँदनिरखिमुसकात।ऐसोध्यानधरैजो हरिको सूरदास बलिजात॥५१ राग धनाश्री॥दधिसुत जामेनंददुवार।निरखिनैनअरुझ्योमनमोहन रटत देहु कर बारंबार ॥ दीरघ मोल कह्यो ब्यापारी रहे ठगेसे कौतुकहार। करऊपर लै राखिरहे हरि देत न मुक्ता परमसुढार ॥ गोकुलनाथ बए यशुमतिके आँगनभीतरभवनमँझार।शाखापत्र भए जलमेलत फूलत फरत न लागी बार ॥ जानत नहीं मर्म सुर नरमुनि ब्रह्मादिक नहिंपरत बिचार। सूरदास प्रभुकी यह लीला व्रजवनिता गुहि पहिरे हार॥ ५२॥कजरीकोपयपिअहुलाल तेरी चोटी बढै।सब लरिकनमें सुन सुंदर सुत तो श्री अधिक चढै।जैसेदेखि और व्रजबालक त्यों बलबेस बढै। कंस केशि बक बैरिनके उर अनुदिन अनल उठै॥ यह सुनिकैहरिपीवनलागे त्योंत्यों लियो लटै।अचवन पै तातो जब लाग्यो रोवत जीभ उठै॥पुनिपीवतही कच टकटोवे झूठे जननि रढै। सूर निरखि मुख हँसत यशुदा सो सुख उर नकढै ॥ ५३ ॥ रामकली॥यशोदा कबहिं बढेगी चोटी। किती बार मोहिं दूध पिवत भई यह अजहूँ हैं छोटी॥तूजुकहति बलकी बेनी ज्यों ह्वैहै लाँबी मोटी। काढत गुहत न्हवावत ओछत नागिनिसीभुइँलोटी॥काचोदूधपिवावत पचिपचि देत न माखन रोटी। सूर श्याम चिरजिवदोउभैयाहरिहलधरकीजोटी ॥५४॥ देवगंधार ॥ कहन लगेमोहन मैया मैया। पिता नंदसों बाबा बाबा अरु हलधरसों भैया ॥ ऊंचे चढि चढि कहत यशोदा लैलै नाम कन्हैया। दूरि कहूं जिन जाहु लला रे मारैगीकाहूकी गैया॥

गोपी ग्वाल करत कौतूहल घरघर लेत बधैया॥मणिखंभन प्रतिबिंब बिलोकत पुनिनिवनीत कुँवर हरि पइया॥नंद यशोदाजीके उगते इह छवि अनत न जइआ। सूरदास प्रभु तुमरेदरशको चरणनकी बलि गइआ॥५५॥राग सारंग॥मैया मोहिंबडो करिबे री॥दूध दही घृत माखन मेवाजो मांगों सो देरी॥कछू हवस राखे जिन मेरी जोइ जोड मोहिं रुचेरी ॥ रंगभूमिमें कंस पछारौं कहौं कहाँ लौं मैं री। सूरदास स्वामीकी लीला मथुरा राखौं जो री॥ सुन्दर श्याम हँसत जननी सों नंद बबाकी सौं री ॥५६॥ राग रामकली ॥ हरि अपने आगे कछु गावत। तनक तनक चरणनसों नाचत मनहीं मनहिं रिझावत॥बांह उंचाइ काजरी धौरी गैयन टेरि बुलावत। कबहुँक बाबा नंद बुलावत कबहुँक घरमें आवत ॥ माखन तनक आपने करलै तनक बदनमें नावत। कबहुं चितै प्रतिबिंब खंभमें लवनी लिए खवावत॥दुरि देखत यशुमति यह लीला हर्ष अनंद बढावत॥सूर श्यामके बालचरित निसही नित देखत भावत॥७५॥राग बिलावल॥आजु सखी हौं प्रातसमय दधि मथन उठी अकुलाइ। भरि भाजन मणिखंभनिकट धरि नेत लियोकर जाइ॥ सुनत शब्द तेहि छिन समीप मैं महरि हँसि आए धाइ।मोहे बालबिनोद मोद करि नयनन नृत्य देखाइ ॥ चितवनि चलनि हरयो चित चंचल चितरही चित लाइ।पुलकित तब प्रतिबिंबदेखि करि सबही एक सुभाइ॥माखन पिंड बिभाग दुहूँकर आपत मुहँ मुसुकाइ । सूरदास प्रभु ता सुतके सुख सके न हृदय समाइ॥५८॥बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावहु । अबकी बार मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाचि देखावहु ॥तारी देहु आपने करकी परम प्रीति उपजावहु॥आन यंत्र-ध्वनि सुनि डरपति कत मो भुज कंठ लगावहु॥जिन शंका जियकरो लाल मेरे काहेको भरमावहु। बांह उँचाइ कालिकी नाईं धौरी धेनु बुलावहु ॥ नाचहु नेकु जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावहु। रत्नजटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावहु॥ कनकखंभ प्रतिबिंबित शिशु इकलौनी ताहि खवावहु। सूर श्याम मेरे उरते कहुं टारे नेक न भावहु ॥५९॥ राग सारंग॥ कान्ह बलिजाउ ऐसी आरि न कीजे। जोइ जोइ भावै सोइ सोइ लीजे॥कहत यशोदा रानी।को खिझवै शारँगपानी॥ मेरे जो लाल खिजावै। सो अपनो कियो भलो पावै॥ तिहिं देहौं देश निकारो।ताकोब्रज नाहिं नगारो ॥ अति रिसहीं ते तनु छीजे। सुठि कोमल अंग पसीजे॥ बर्जत बर्जत बिरुझाने। करि क्रोध मनहि अकुलाने॥ धरत धरणि धरलोटै। माताको चीर नखोटै॥ अंग आभूषण सब तोरे। लवनी दधि भाजन फोरे ॥ देखि तप्त जल तरसे। यशुदाके चरणन परसे॥महरि बांह गहि आने। तब तेल उबटने साने ॥ तब गिरत परत उठि भागे। कहू नेक निकट नहिंलागे ॥ तब नंदघरनि चुचकारे। आवहु बलि जाउँ तुम्हारे॥ नहिं आवहु तो भले लाल। पुनि जानहुगे मदन-गोपाल ॥ तुम मेरी रिस नहिं जानो। मोको नहिं तुम पहिचानो ॥ मै आजु तुम्हें गहि बांधौं। दाहा व रि कारि अनुराधौं ॥ बाबा नंद उतहिते आए। कौने हरि अतिहि खिझाए ॥ सुत चूमि हरखि लेआए। यशुमतिपै पहुँचाए ॥ मोहन कत खिझत अयानी। लिये लाइ हिये नँदरानी ॥ क्योंहूं जतन जतन करि पाए। तब उबटन तेल लगाए ॥ ताती जल आनि समोयो। अन्हवाइ दियो मुख धोयो॥ अति सरसबसन तन पोंछे। लैके मुख-कमल अँगोछे॥ अंजन दोउ दृग भरि दीनों॥ भ्रुव चारु चखोडा कीनों॥अँगआभूषणजेबनाए। लालहि क्रम क्रम लै पहिराए॥ऐसी रिस न करो मेरे कान्हा॥अब लाहु कुँवर कछुनान्हा॥तुतरात कह्यो का है री। जो मोहिं भावै सो देरी॥जोइजोइभावैमेरे प्यारे।सोइसोइदेहौंजु ललारे॥कलोहि

सिरावनसीरा।कछु हठ न करौ बलवीरा॥सद दधिमाखनदेआनी।तापर मधु मिश्री सानी॥खोवामें मधुर मिठाई।सो देखत अतिरुचि पाई॥कछु बलदाऊको दीजै। अरु दूध अधावट पीजै॥सबहेरि धरीहै साढी।लै उपर उपरते कढी॥अति प्योसरसारिस बनाई।तेहिसोंठि मिरचरुचिताई।दूधबरा दही बोरी।सो खात अमृत इक कोरी॥सुठिसरस जलेबी बोरी।जेहि जेंवत रुचिनहिंथोरी॥ अरु खुरमा सरस सँवारे।ते परसि धरेहैंन्यारे॥ संकरपालेसद पागे।तेजेंवत परमसभागे॥सेवलाडूरुचि रसवारे।जेमुख मेलत सुकुमारे॥ अतिलाडू हैं सुठि मीठे॥ वे खात न कबहुँउबीठे॥खीरलाडू लै गए नाए।ते करि बहु जतन बनाए॥ गोझा बहुपूरन पूरे।भरि भरि कपूररसचूरे॥ अरु तैसियगाल मसूरी।जो खातहि सुखदुख दूरी॥अरु है समि सरस सँवारी। अति खात परम सुखकारी।पापर बरणे नहिं जाही।जेहि देखत अतिसुख पाही॥मालपुवामधुसाने।ते तुरत तपत करि आने॥सुंदर अतिसरसअंदरसे।ते घृत मधु दधि मिलि सरसे॥ घेवर अति घिरत चभोरे।लै खांड उपर तर बोरे॥माधुरि अति सरस सजूरी।सद परसि धरी घृतपूरी॥ जबपूरी सुनि हरि हरष्यो।तब भोजन पर मन करष्यो॥सुनि तुरत यशोदा ल्याई।अति रुचि समेत हरि खाई॥ बलदाऊको टेरि बुलाए।यह सुनि हलधर तहां आए॥षटरस परकार मँगाए। जे बरणि यशोदा गाए॥ मनमोहन हलधरवीरा।जेंवतरुचिराख्यो सीरा॥शीतलजल लियोमँगाई।भरि झारी यशुमति ल्याई॥अचवत तब नयन जुडाने।दोऊ हरपि हरपि मुसकाने॥हँसि जननी चुरु भरवाए।तब कछु कछु मुख पखराए॥तब बीरी तनक मुख नाए।अति लाल अधर ह्वै आए॥ तब सूरदास बलिहारी। माँगत कछुजूंठनि थारी॥हरितनक तनककछु खाये।जूंठनि सब भक्तनिपाए॥१६०॥राग धनाश्री॥

पाहुनी करिदे तनक मह्यो। हौं लागी गृहकाज रसोई यशुमति बिनय कह्यो॥आरि करै मनमोहन मेरो अंचल आनि गह्यो।व्याकुल मथति मथनियां रीती दधि भ्वैं ढरकि रह्यो॥माखनजात जानि नँदरानी सखिन सम्हारि कह्यो। सूर श्याम मुख निरखि मगन भई दुहुनि सकोच सह्यो॥६१॥ आसावरी॥यशुमति जबहि कह्यो अन्हवावनरोइगए हरिलोटतरी।लेतउबटनोलैआगेदधि कहि लालहि चोटत पोटत री॥ मैं बलिजाउं न्हाउ जिनि मोहन कत रोवत बिनकाजैरी।पाछे धरि राखौ छपाइके उबटन तेल समाजे री॥ महरि बहुतबिनतीकरिराखतिमानतनहीं कन्हाईरी। सूरश्याम अतिही विरुझाने सुर मुनि अंत न पाई री॥ ६२॥ अथ चंद्रमस्ताव॥ कान्हरो॥ ठाढी अजिर यशोदा अपने हरिहि लिये चंदा देखरावत। रोवत कत बलिजाउँ तुम्हारी देखौ धौं भरि नयन जुडावत॥ चितैरहे तब आपुन शशितन अपने कर लै लै जु बतावत। मीठो लगतकिधौं यह खाटो देखत अतिसुंदर मनभावत॥मनमनही हरि बुद्धि करतहैं माताको कहि ताहि मँगावत। लागी भूख चंद मैं खैहौं देहु देहु रिसकरि विरुझावत॥ यशुमति कहत कहा मैं कीनो रोवत मोहन अति दुखपावत।सूरश्यामको यशुदाबोधतिगगन चिरैयां उडतलखावत॥६३॥राग कान्हरो॥

किहिविधि करि कान्हे समुझैहौं।मैंही भूलिचंद्र दिखरायोताहि कहतमोहि देमैं खैहौं॥अनहोनी कहुं होत कन्हैया देखी सुनी न बात। यह तौ आहि खिलौना सबको खान कहत तेहितात॥यहै देत लवनी नित मोको छिन छिन सांझ सबारे।बार बार तुम माखन मांगत देउँकहांते प्यारे॥ देखतरहौ खिलौना चंदा आरि न करौ कन्हाई॥ सूर श्याम लियो महरियशोदानंदहिकहतबुझाई॥६४॥ राग धनाश्री॥ आछे मेरे लालहो ऐसी आरि नकीजै।मधुमेवापकवानमिठाई जोइभावै सोइ लीजै॥ सद माखन घृत दह्यो संजायो अरु मीठो पय पीजै।पालागोंहठअधिक करोजिनि

अति रिसमें तनु छीजे॥आन बतावत आन दिखावत बालक तौ न पतीजे। खिझ खिझ कान्ह ससन कनियाते सुसुकि सुसुकि मन खीजे॥ जलपुट आनि धरयो आंगनमें मोहननेक तौ लीजे। सूर श्याम हठि चंदहि मांगे चंद कहाते दीजे॥६५॥राग कान्हरो॥वार वार यशुमति सुत बोधति आउ चंद तोहिं लाल बुलावे। मधु मेवापकवान मिठाई आपु नखैहे तोहिं खवावे॥ हाथहि पर तोहिं लीने खेले नहिं धरणी बैठावे। जलभाजन करले जु उठावति याहीमें तू तनु धारि आवे॥ जलपुट आनि धरणि पर राख्यो गहि आन्यो वह चन्द्र दिखावे। सूरदास प्रभु हँसि मुसकाने बार बार दोऊकर नावे॥६६॥राग रामकली॥मेरेमाई ऐसो हठी बालगोविंदा॥ अपने कर गहि गगन बतावत खेलनको मांगे चंदा॥ बामन के जल धरयोयशोदाहरिकोआनि दिखावे। रुदनकरत ढूंढ नहिं पावत धरणि चन्द कैसे आवे॥दूध दही पकवानमिठाई जु कछु मांगु मेरे छौना। भौंग चकई लाल पाटको लँडुवा मांगु खिलौना॥ दैत्यदलन गजदंत उपारन कंसकेश धरि फंदा। सूर दास बलिजाइ यशोमति सुखके सागर दुखके खंदा॥६७॥ लेहौं री मा चंदा चहौंगो। कहा करौं जलपुट भीतरको बाहर ओकि गहौंगो॥ इहतौ झलमलात झकझोरत कैसेकै जु लहौंगो। वहतो निपटनिकटहीदेखत बरज्यो हौं न रहौंगो॥तुमरो प्रेम प्रगट मैं जान्यो बौराएन बहौंगो। सूरश्याम कहै करगहि ल्याऊं शशि तनु दाप दहौंगो॥६८॥राग धनाश्री॥लाल यह चंदा लैलैहो। कमलनयन बलिजाइ यशोदानीचे नेकचितैहो॥जाकारण सुनि सुत सुंदर वर कीन्हो इतीअनैहो। सोइ सुधाकर देखि दमोदर या भाजनमें हैहो॥ नभते निकट आनि राख्योहै जलपुट जतन जोगैहो। लै अपने कर काढि दमोदर जो भावैसो कैहो॥ गगन मँडलते गहिआन्यो हैपंछी एक पठै हो। सूरदास प्रभु इती बातको कत मेरो लाल हठैहो॥६९॥ राग बिहागरो॥तुममुखदेखिडरतुशशि भारी। कर करिकै हरि हेरयो चाहत भाजि पताल गयो अपहारी॥वह शशितो कैसेहुनहिंआवत यह ऐसी कछु बुद्धि विचारी॥वदन देखि विधु विधि सकातमन नैनकंज कुंडल उजियारी॥सुनहु श्याम तुमको शशि डरपत है कहत ए शरन तुम्हारी। सूर श्याम विरुझाने सोए लिए लगाइ छतियाँ महतारी॥७०॥ राग केदारो॥यशुमति लैपलिकापौढावति।मेरोआजुअतिहीविरुझानोयहकहिकहि मधुरे सुर गावति॥पौढिगई पुनि हरुयें करिकै अंगमोरि तब हरि जमुहाने। करसोंठोकिसुतहिदुलरावति चटपटाइ बैठे अतुराने॥पौढौ लाल कथा एक कहिहौ अतिमीठी श्रवणनको प्यारी। यहसुनि सूरश्याम मनहरपे पौढिगए हँसि देत हुँकारी॥ ७१॥ सुनसुत एककथा कहौं प्यारी।कमलनयन मनआनँद उपज्यो चतुरशिरोमणि देत हुँकारी॥ नगर एक रमणीक अयोध्या बडे महल जहं अगम अटारी।बहुत गली पुर बीच बिराजतभाँतिभाँति सब हाटबजारी॥तहाँनृपतिदशरथरघुवंशी जाके नारि तीन सुखकारी। कौशल्याकैकयी सुमित्रा तिनकेजन्मभएसुतचारी॥चारिपुत्रराजाके प्रगटे तिनमें एक राम व्रतधारी। जनक धनुप व्रत देखि जानकी त्रिभुवनके सब नृपति हँकारी॥ राजपुत्र दोउ ऋषि लै आए सुनि व्रत जनक तहां पगधारी॥धनुपतोरि सुखमोरि नृपनको जनकसुता तिनकी वरनारी॥ पग अंगुठा जब पीर नृपतिके तब कैकयी मुखमेलि निवारी। वचन माँगि नृपसों तब लीनो रघुपतिके अभिषेक सवारी॥तातवचन सुनि तज्योराज्य तिन भ्रातासहित घरनि बनचारी। उनके जात पिता तनुत्याग्यो अतिव्याकुल करि जीव विसारी॥ चित्रकूट गए भरत मिलन जब पगपांवरी दे करी कृपारी॥युवतीहेतु कनकमृग मारी राजिवलोचन गर्वप्रहारी॥ रावण हरण करयोसीताको सुनि करुणामय नींद विसारी॥सूर श्यामकर उठे चापको लछिमन देहु

जननि भ्रमभारी॥७२॥राग बिहागरो॥ नंदनँदन तुम सुनहु कहानी।पहली कथा पुरातन सुन सुत जननि पास मुखवानी॥ रामचंद्र राजा दशरथसुत जनकसुता ताके गृह रानी।कहि पंचतत्त्वअरु पंचवटी वन छाँडि चले रजधानी॥तहां वसत सीता हरलीनो रजनीचर अभिमानी। लछिमन धनुष देहु करि उठि हरि यशुमति सूर डरानी॥७३॥राग केदारो॥यशुमतिमनमें यहै विचारति।झझकि उठयो सोवत हरि अबहीं कछु पढिपढि तनुदोष निवारति॥खेलतमें कहुँ डीठि लगाई लैलै राई लोनु उतारति। सांझहिते मेरो बिरझान्यो चंदहि देखि करी अति आरति॥बारबार कुलदेव-मनावति दोउ कर जोरि शिरहि ले धारति।सूरदास यशुमति नँदरानी निरखि वदन त्रयताप बिसारति॥७४॥नहिन जगाइ सकति सुनि सोवावत सजनी।अपने जानअजहुँ कान्ह मानत हैं रजनी॥ जब जब हौं निकट जाति रहति लागी लोभा। तनुकी गति विसरिजाति निरखत मुखशोभा॥वचननिको बहुत करति साजति जिय ठाढी। नैननि विचार परति देखत रुचि बाढी॥ इहिविधि वदनारविंद यशुमति मनभावै।सूरदास सुखकी राशि कहत न बनिआवै॥७५॥राग बिलावल॥जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कुसुम फूले। कुमुद वृंद सकुचित भए भृंग लता भूले॥ तमचुर खग रोर सुनहु बोलत वनराई।राँभति गौ खिरकनमें बछराहित धाई॥विधु मलीन रविप्रकाश गावत नर नारी। सूर श्याम प्रात उठौ अंबुज करधारी॥७६॥राग रामकली॥ प्रात समय उठि सोवत हरिको वदन उघार्‍यो नंद। रहि न सकत देखनको आतुर नैन निशाके द्वंद॥ स्वच्छ सेजमेंते मुख निकसत गयो तिमिर मिटि मंद। मानौं मथि सुर सिंधु फेन फटि दरश दिखाई चंद॥ धायो चतुर चकोर सूर सुनि सब सखि सखा सुछंद। रही न सुधि शरीर धीरमति पिवत किरन मकरंद॥७७॥भोरभए निरखत हरिको मुख प्रमुदित यशुमति हरषित नंद। दिनकर किरन नलिन ज्यों विकसत उर उपजत आनंद॥वदन उघारि निहारति जननीजागहु बलिगई आनँद-कंद।मनहु मथत सुर सिंधु फेन फटि दई दिखाई पूरन चंद॥जाको यश ब्रह्मादिक मुनिजन नेति नेति गावति श्रुति छंद। सो गोपाल ब्रजके सुनि सूरज प्रगटे पूरण परमानंद॥७८॥ललित॥जागिये गुपाल लाल आनँदनिधि नंदबाल यशुमति कहै बार बार भोर भयो प्यारे। नैन कमलसे विशाल प्रीति वापिका-मराल मदन ललित वदन ऊपर कोटि वारि डारे॥ उगत अरुन विगत शर्वरी शशांक किरनहीन दीन दीपक मलीन छीनदुति समूह तारे। मनहु ज्ञान घनप्रकाशवीतेसब भवविलास आस त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे॥ बोलत खग मुखर निकर मधुर ह्वै प्रतीत सुनहु परम प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे। मनो वेद वंदी मुनि सूत वृन्द मागधगण विरद वदत जैजैजैत कैटभारे॥विकसत कमलावलीय चलि प्रफंद चंचरीक गुंजत कल कोमल ध्वनि त्यागि कंज न्यारे। मानौं वैरागपाइ सकलकुलग्रह विहाइ प्रेमवंत फिरत भृत्य गुनत गुन तिहारे॥सुनत वचन प्रियरसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुखकदम्ब टारे। त्यागे भ्रमफंद द्वंद निरखिके मुखारविंद सूरदास अति अनंद मेटे मद भारे॥ ७९॥ प्रात भयो जागो गोपाल। नवल सुंदरी आई बोलत तुमहिं सबै ब्रजबाल॥ प्रगटे भानु मंद उडुपति भयो फूले तरुनतमाल। दरशनको ठाढी ब्रजवनिता ल्याईं कुसुम गुंज वनमाल॥मुखहि धोइ सुंदर बलिहारी करहु कलेऊ मोहन लाल। सूरदास प्रभु आनंदके निधि अंबुजलोचन नयन विशाल॥१८०॥ ललित॥जागो जागोहो गोपाल।नाहिन इतो सोइये सुनु सुत प्रातसमय शुचिकाल॥दिन विकसतमनौ कमलकोशमति छवि ज्यों मधुपन माल।फिरि फिरि निरखिनिरखिछिन छिनछिन सबगोपनकेबाल॥ तो

टकटोरे। तीक्षण लगी नयन भरिआए रोवत बाहर दौरे ॥ फूँकति वदन रोहिणी ठाढी लिये लगाइ अकोरे। सूर श्यामको मधुर कौर दे कीन्हे तात निहोरे॥ १७॥ राग नट॥ हरिके बालचरित्र अनूप। निरखि रही व्रजनारी एकटक अंग अंग प्रतिरूप॥ बिथुरी अलकें रहीं वदनपर विनहीं विपिन सुभाइ। देखि खंजन चंदके वश मधुप करत सहाइ ॥ सुलक्ष लोचन चारु नासा परमरुचिर बनाइ। युगल खंजन लरत अवनित बीच कियो बनाइ॥ अरुण अधरनि दशन भाई कहीं उपमा थोरि। नीलपट विच मोतिमानों धरे चंदन बोरि ॥ सुभग बालमुकुंदकी छवि वरणि कापै जाइ। भृकुटि पर मसिबिंदु सोहै सकै सूर न गाइ॥ १८॥ राग कान्हरो ॥ सांझ भई घर आवहु प्यारे। दौरत कहाँ चोट लगिहै कहुँ पुनि खेलोगे होत सकारे ॥ आपुहि जाइ बाँह गहि ल्याई खेह रही लपटाई। धूरि झारि तातो जल ल्याई तेल परसि अन्हवाई ॥ सरसवसन तनु पोंछि श्यामको भीतर गई लिवाइ। सूरश्याम कछु करौ वियारू पुनि राख्यो पौढाइ॥ १९ ॥ राग बिहागरो॥ कमल नयन कछु करौ बियारी॥ लुचुई लपसी सद्य जलेबी सोई जेवँहु जो ... जूरी सरस सवारी। घरा उत्तम दधिवाटी दालमसूर ... ल्याईहै रोहिणि महतारी॥ सूरदासबलरामश्याम दोउ जेवें हैं जननिजाहिबलिहारी॥ २००॥ बिहागरो॥ बलमोहन दोउ करत बियारी॥ प्रेम सहित दोउ सुतनि जिमावत रोहणि अरु यशुमति महतारी॥ दोउ भैया मिलि खात एकसँग रतनजटित कंचनकी थारी॥ आलससों कर कौर उठावत नैननि नींद झमकिरही भारी॥ दोउमाता निरखत आलससों छवि परतनमन डारति वारी॥ बारबारजमुहात सूर प्रभु इह उपमा कवि कहैकहारी॥ १॥ राग केदारो॥ कीजै पयपान ललारे ल्याई है दूधयशुमतिमैया॥ कनककटोरा भरिलीजयह पीजै अतिसुख दीजै कन्हैया॥ आछोमें औटयोसुठिनीकोअरुमिठाई रुचिकरि अचवतक्योंन नन्हैया॥ बहुत जतन करिकरि राख्यो व्रजराज लडैतेतुमकारणबलभैया॥ फूकि फूंकि जननी पय प्यावति आनँद उर न समैया। सूरदास प्रभु पय पीवत बलराम श्याम दोऊ जननी लेत बलैया ॥ २॥ बल मोहन दोऊ अलसाने। कछुक खाय दूध लै अचयो मुखजँभात जननी जियजाने॥ उठहुलाल कहि मुखपखरायो तुमकोलैपौढाऊँ॥ तुमसोवहु मैंतुमहिं सुवाऊँ कछुमधुरे सुर गाऊं॥ तुरतजायपौढेदोनोभैयासोवत आई नींद॥ सूरदासयशुमतिसुखपावति पौढे बालगोविंद॥ ३॥ माखन बाल गोपालहि भावै। भूखेछिनुन रहतमनमोहन ताहिबदौंजोगहरु लगावै॥ आनि मथानी दह्योविलोये जौलगि लालनउठन न पावै॥ जागतहीउठिरारिकरत अति नहिं मानै जो इंदु मनावै॥ हौं यह जानति बानि श्यामकीअँखियांमीचेवदनचलावै॥ नंदसुवनकी लागबलैयायहजूठनिकछुसूरज पावै॥ ४॥ राग बिलावल ॥ भोरभयोमेरे लाडिलेजागोकुँवरकन्हाई॥ सखाद्वार ठाढे सबै खेलौ यदुराई॥ मोको मुख देखरावहु त्रयताप निवारहु॥ तुवमुखचंद्रचकोरनैनमधु पानकरावहु॥ तव हरि पट मुख दूरिकै भक्तन सुखकारी॥ हँसत उठे प्रभु सेजते सूरजबलिहारी॥ ५॥ राग बिलावल॥ भोरभयोजागोनँदनंदन॥ संगसखाठाढेजगवंदन॥ सुरभीपय हितवच्छपियावैं॥ पंछीतरु तजि दुहुँदिशधावैं॥ अरुनगगन तमचुरनिपुकारे॥ शिथिल धनुक रतिपति गहि डारे॥ निशिनिवटी रवि रथ रुचि साजी॥ चंद मलिन चकई रति राजी ॥ कुमुदिनि सकुची वारिज फूले॥ गुंजतफिरत अलीगन झूले ॥ दरशन देहु मुदित नरनारी॥ सूरज प्रभु दिन देव मुरारी॥ ६॥ राग नट ॥ खेलत श्याम अपने रंग। नंदलाल निहारि शोभा निरखि थकित अनंग॥ चरणकी छवि निरखिडरप्यो अरुन गगन छपाइ। जनु रंभाकी सबै छवि निदरि लई छडाइ ॥ युगल जंघनि खंभ रंभा नहिन

सम सारि ताहि । कटि निरखि केहरि लजाने रहे वन वन चाहि ॥हृदय हारिनख अति विराजति छवि न वरनी जाइ। मनौं वालक वारिधर नवचंद्रलई छपाइ॥मुकुतमाल विशाल उरपर कछुकहौं उपमाइ।मनौं तारागनन पूरित गगन रह्यो छपाइ॥अधर अरुन अनूप नासानिरखि जनसुखदाइ। मनौ शुक फलविंव कारन लेन वैठो आइ॥कुटिल अलक विनाविपिनकेमनो अलिशशिजाल। सूर प्रभुकी ललित शोभा निरखिरही व्रजवाल॥राग सारंग॥न्हात नंद सुधिकरी श्यामकील्यावहु वोलि कान्ह वलराम ॥ खेलत कान्ह वार वडि लागी व्रज भीतर काहूके धाम ॥ मेरे संग आइ दोउ वैठें उन विनु भोजन कौने काम । यशुमति सुनतचली आतुर ह्वै व्रजघरघर टेरत लै नाम॥ आजु अवेर भई कहुँ खेलत वोलिलेहु हरिको कोउ वाम । ढूंढिफिरी नहि पावत हरिको अति अकुलानी आवत धाम ॥ वारवार पछितातियशोदा वासर वीतिगए युग याम । सूरश्यामको कहूँ न पावत देखे वहु वालक इक ठाम ॥८॥राग सारंग॥ कोउ माई वोलिलेहुगोपालहि। मैं आवनको पंथ निहारति खेलत वेर भई नँदलालहि ॥ हेरत वेरवडीभई मोकहु नहिं पावत घनश्याम तमालहि । सिध जेंवन सिरात नद वैठल्यावहु वोलिकान्हततकालहि॥ भोजनकरहिं नंद सँगमिलिकै भूँख लगी ह्वैहै मेरे वालहि।सूर श्याम मग जोवंति यशुदा आइगएसुनि वचनरसालहि॥९॥राग नटनारायण ॥हरिको टेरतहै नदरानी । वहुत अवार कतहुँ खेलतभइ कहांरहेमेरेशारंगपानी॥सुनतहि टेर दौरि तहँ आए कवके निकसे लाल ।जेंवत नहीं नंदजू तुम विनुवेगिचलोगोपाल॥श्यामहि ल्याई महरि यशोदा तुरतहि पॉइ पखारे।सूरदासप्रभुसंग नंदके वैठहैं दोउ वारे॥१०॥राग सारंग॥ जेंवत श्याम नंदकी कनियां । कछुक खात कछु धरणि गिरावत छवि निरखत नँदरनियां॥वरी वरा वेसन वहु भाँतिन व्यंजन विविध अनगनिया ।डारत खात लेत अपने कर रुचिमानतदधिदनियाँ ॥मिश्री दधि माखन मिश्रित करि मुख नावत छविधनियां। आपुनखातनंदमुख नावत सो सुख कहत न वनियां ॥ जो रस नंद यशोदा विलसतसोनहिंतिहूं भुवनियाँ।भोजनकरि नंद अचवन कियो माँगत सूरजुठनिया॥११॥ राग कान्हरो॥ वोलि लेहु हलधरभैयाको।मेरे आगे खेल करौ कछु नैननि सुख दीजे मैयाको॥मै मूदौं हरि आँखि तुम्हारी वालक रहैं लुकाई।हरपि श्याम सव सखा वुलाए खेलो आंखिमुँदाई॥हलधर कहै आंखि को मूँद हरि कह्यो जननियशोदा।सूर श्याम लिये जननि खेलावति हर्षसहित मनमोदा॥१२॥ राग गौरी ॥हरितवआपनिआंखिमुँदाई। सखासहित वलराम छपाने जहँ तहँ गए भगाई ॥कान लागि कह जननियशोदा या घरमें वलराम । वलदाऊको आवन देहौ श्रीदामासों है काम ॥ दौरिदौरिवालकसवआवत छुवतमहरिके गात।मव आए रहे सुवल श्रीदामा हारे अवकेतात॥शोरपारिहरिसुवलहिधाएगह्योश्रीदामाजाइ। दै दै सौंहें नद ववाकी जननीपै लैआइ ॥ हँसि हँसितारी देत सखा सव भएश्रीदामाचोर।सूरदास हँसि कहति यशोदा जीत्योहै सुत मोर ॥१३॥ राग केदारो ॥चलोलालकछुकरोवियारी।रुचि नाहीं काहूपर मेरे तू कहि भोजन करचो कहारी॥वेसन मिलै उरस मैदासों अति कोमलपूरीहै भारी।जेंवहुश्याम मोहिं सुख दीजे ताते करी तुमहिं पियारी॥निवुवा सूरन आँव सँधानो और करौंदनकी रुचि न्यारी।वार वार तू कहति यशोदा कहिल्याए रोहिणि महतारी॥जननी सुनत तुरत लैआई तनक तनक धरि कंचनथारी । सूर श्याम कछु कछु लैखायो जल अचयो अरु वदन पखारी॥१४॥पौढिए लाल मै रचि सेज विछाई । अति उज्जल है सेज तुम्हारी सोवत सुखदाई॥खेलत तुमनिशि अधिक गई सुत नैननि नींद झमाई।वदन जँभात अग ऐंडात जननी

तुमही आपुन उठि देखौ निद्रा नैन विशाल। ज्यो तुम मुहिं न पत्याहु सूरप्रभु सुंदर श्याम तमाल ॥८१॥ राग भैरव ॥उठौ नंदकुमार भयो भिनुसार जगावति नंदकी रानी।झारीकैजलवदनपखारौ कहि कहि शारंगपानी॥माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावै सोलेउ आनी।सूर श्यामसुखनिरखि यशोदा मनही मनहि सिहानी ॥ ८२ ॥ राग बिलावल ॥ नंदके लाल उठे जब सोइ। निरखि मुखारविंदकी शोभा कहि काके मन धीरज होइ ॥ मुनि मन हरन हरन युवतीके रति मनि जाइ मन खोइ। ईषदहास दशन द्युति दामिनि मनि गनि ओपि धरे जनु पोइ॥ नागर नवल कुंवर वर सुंदर मारग जात लेन मनगोइ॥ सूर श्याम मनहरण मनोहर गोकुल वसि मोहे सब लोइ ॥८३॥ अथ कलेवाभोजनसमय ॥राग भैरव॥उठिये श्याम कलेऊ कीजे। मन मोहन मुख निरखत जीजे ॥ खारिक दाख खोपरा खीरा। केरा आम ऊखरस सीरा॥ श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिरुआ अरुन सुखानी॥घेवर फेनी और सुहारी।खोवा सहित खाहु बलिहारी ॥ रचि पिराक लाडू दधि आनौ। तुमको भावत पुरी सधानौ॥ तब तमोरकचितुमहिं खवावौं। सूरदास पनवारो पावौं॥८४॥कमलनयन हरि करौ कलेवा। माखन रोटी सद्य जम्यो दधि भाँति भाँतिके मेवा॥चारक दाख चिरौंजी किसिमिस मिश्री उज्ज्वल गरीबदाम। सफरीसेव छुहारे पिस्ताजि तरबूजा नाम॥ अरु मेवा बहु भाँति भाँतिहैं षटरसके मिष्ठान। सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥८५॥ अथ खेलन समय ॥राग रामकली॥खेलत श्याम ग्वालन संग। सुवल हलधर अरु सुदामा करत नानारंग॥हाथ तारीदेत भाजत सबै करि करि होड।बरजेहलधरश्याम तुम जिनि चोट लगिहै गोड॥ तब कह्योमें दौरि जानत बहुतबल मोगात।मोरी जोरीहैसुदामा हाथ मारे जात॥बोलि तबै उठे श्रीसुदामा जाहु तारी मारि।आगेहरि पाछेसुदामाधरचोश्यामहँकारि॥ जानिकै मै रह्यो ठाढो छुवत कहा जु मोहि। सूर हरि खीझत सखासो मनहि कीनो कोहि॥८६॥ राग गौरी ॥सखा कहतहै श्याम खिसाने।आपुहि आपु ललकिभये ठाढे अब तुम कहा रिसाने॥ बीचहि बोलि उठे हलधरतब इनके माय नबाप।हारिजीतिकछुनेकनजानतलरिकनलावतपाप॥ आपुन हारि सखासो झगरत यह कहि दिये पठाई। सूरश्यामउठिचलेरोइकेजननीपूंछति धाई॥ ॥ ८७ ॥ मैया मोहि दाऊ वहुत खिझा[illegible]

कहा कहौं एहि रिसके मारे खेलन हौं न[illegible]

गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम श[illegible]

मोहीको मारन सीखी दाउहि कबहु न [illegible]

रीझे ॥ सुनहुकान्हबलभद्रचबाइजनमतहि[illegible]

॥ राग नट ॥मोहन मान मनायो मेरो। [illegible]

कहि मोहि खिझावत बरजत खरो अनेरो। आनन विमल शशिते ततुसुंदर कहाकहैबलिचेरो॥ न्यारो जो पै हुते होकल अपनो न्यारी गैया तेरो। मेरो सुतसरदारसबनको इहुतेकान्हेंही मेरो॥ बनमें जाइ करौ कौतूहल इह अपनोहे खेरो। सूरदास द्वारे गावतहैं विमलविमलयशतेरो॥८९॥ रागगौरी ॥ खेलन अब मेरी जात बलैया।जबहि मोहिदेखतलरिकनसँग तबहिंखिझतबल भैया॥ मोसो कहत तात बसुदेवको देवकी तेरी मैया। मोल लियो कछु दे बसुदेव को करि करि जतन बढैया ॥ अब बाबा कहि कहत नंदसो यशुमतिको कहे मैया। ऐसेही कहि सब मोहि खिझावत तब उठि चलो खिसैया ॥ पाछे नंद सुनतहैं ठाढे हसत हसत उर लैया। सूर नंदबलिरामहि घिरयो सुनि मनहरष कन्हैया ॥ ९० ॥ राग रामकली ॥खेलनचलियेबालगोविंद। सखाप्रियद्वारेबुला

वत घोष बालक वृंद ॥ तृषित हैं सब दरश कारन चतुर चातकदास।बरषि छवि नव बारिधरही हरहु लोचन प्यास ॥ विनय वचन सुने कृपानिधि चले मनोहर चाल। ललित लघु लघु चरन कर उर बाहु नयन विशाल ॥ अजिर पदप्रतिबिंब राजत चलत उपमा पुंज। प्रतिचरण मानहु हेमवसुधा देत आसन कंज ॥ सूर प्रभुकी निरखि शोभा रहे सुर अवलोकि। शरद चंद चकोर मानों रहे थकित विलोकि ॥९१॥राग धनाश्री॥खेलनको हरि दूरि गयो। संग संग धावत डोलतहैं कहाँ धौं बहुत अबेर भयो ॥ पलकओट भावत नहिं मोको कहा कहौं तोको बात। नंदहि तात तात कहबोलत मोहिं कहतहैं मात ॥ इतनी कहत श्यामघन आए ग्वाल सखा सब चीन्हें। दौरिजाइ उरलाइ सूर प्रभु हरषि यशोदा लीन्हें॥९२॥बिलावल॥खेलन दूरि जात कित कान्हा। आजु सुन्यो वन हाऊ आयो तुम नहिं जानत नान्हा ॥ इक लरिका अबहीं भजिआयो बोलि बुझावहु ताहि। कान तोर वह लेत सबनके लरिका जानत जाहि ॥ चलहु वेग सबेरे जैये भजि अपने अपने धाम। सूरदास यह बात सुनतही बोलि लिए बलराम॥९३॥जैतश्री॥दूरिखेलनजनि जाहु लला वन मेरे हाऊ आयोहै।तब हँसिबोले कान्हरि मैया इनको किनहि पठायोहै॥ अब डरप- त सुनि सुनि ये बातें कहत हँसत बलदाऊ। सप्तरसातल शेषासनरहे तबकी सुरत भुलाऊ॥ चारिवेद लेगयो शंखासुर जलमें रहे लुकाऊ। मीनरूप धरिकै जब मारयो तबहि रहे कहाँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मंदर जलधि धसाऊ।कमठरूप धरि धरनि पीठपर सुखपायो सहिराऊ॥ जब हिरणाक्ष युद्धअभिलाष्यो मनमें अति गरवाऊ।धरिवाराहरूप रिपुमारयोलै क्षितिदंत अगाऊ॥ विकटरूप अवतार धरयो जब सो प्रहलादहि नाऊ।धरि नरसिंह जब असुर विदारयो तहाँ न देख्यो हाऊ ॥ वामनरूप धरयो बलि छलिकै तीनपरग बसुधाऊ। श्रमजलब्रह्म कमंडलु राख्योदरशचरण परसाऊ॥मारयो मुनि बिनही अपराधहि कामधेनु लेआऊ। इकइसबार निछत्रजय कीनीतहाँ न देखेहाऊ॥शूर्णणखा तारका मारी हिमकुल सहित सोवहाऊ। सिंधुसेतु बांध्यो पषाणसों तहाँ न देखेहाऊ ॥ राम रूप रावन जब मारयो दशशिर बीस भुजाऊ। लंकजराय छार जबकीनी त- हाँ न देखे हाऊ॥नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तहाँ वह भाव बताऊ।तुरत चीरद्वै टूककियोधरिऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ यमुनाके तट धेनु चरावत तहाँसघनवनझाऊ। पैठिपताल ब्यालगहिनाथ्यो तहाँ न देखे हाऊ॥माटीके मिस वदन बिगारयो जब जननी डरपाऊ। मुख भीतर त्रैलोक दिखा- यो तबउ प्रतीत न आऊ ॥ भक्तहेतु अवतार धरे सब असुरन मारि बहाऊ। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नितगाऊ ॥९४॥रामकली॥यशुमति कान्हहि यहै सिखावति।सुनहु श्याम अब बडे भए तुम अस्तन पान छुडावति॥ब्रजलरिका तोहि पीवत देखें हँसत लाज नहिं आवति। जेहैं बिगरि दांतहैं आछे ताते कहि समुझावति॥अजहुँ छांडि कह्यो करिमेरो ऐसी बात नभावति। सूर श्याम यह सुनि मुसकाने अंचल मुखहि लुकावति ॥९५॥नंद बुलावतहैं गोपाल। आवहु वेगि बलैया लेहौं सुन्दर नैन विशाल॥परस्यो थार धरयो मग चितवत वेगि चलौ तुम लाल।भात सिरात तात दुख पावत क्योंनचलौ ततकाल ॥ हौं बलिजाऊं नान्हे पाइनिकी दौरि दिखावहु चाल। छाँडिदेहु तुम ललित अटपटी यहगति मंद मराल॥ सो राजा जोआगमदौरे सूर सुभौन उताल।जोजैहे बलदेव पहिलेही तौहँसिहें सब ग्याल॥९६॥राग सारंग॥जेंवत कान्ह नंदइकठौरे। कछुक खात लपटात दुहूंकर बालकहैं अतिभोरे ॥ बडो कौर मेलत मुख भीतर मिरिच दशन

पलोटत पाँई॥ मधुरे सुर गावत केदारो सुनत श्याम चित लाई। सूर श्याम प्रभु नंदसुवनको नींद गई तब आई ॥ १५ ॥ राग सारंग॥ खेलन जाहु बाल सब टेरत। यह सुनि कान्ह भए अति आतुर द्वारे तन फिरि हेरत॥ बारबार हरिमातहिकहिकहमेरीचौगान कहांहे। दधिमथनीके पाछे देखो ले में धरी तहांहे॥लैचौगान बटाकर आगेप्रभु आए जब बाहर। सूर श्याम पूँछत सब ग्वालन खेलोंगे केहि ठाहर॥ १६ ॥ खेलत बेन घोष निकास। सुनहु श्याम तुम चतुरशिरोमणि इहां है घर पास॥ कान्ह हलधर वीर दोऊ भुजाबल अतिजोर।सुबल श्रीदामा और सुदामा वे भए इक ओर॥ और सखा बटाइ लीन्हें गोपबालक वृंद। चले व्रजकी खोरि खेलन अति उमँग नँदनंद॥ बटा धरणी डारदीनों लेचले ढरकाइ। आपु अपनी घात निरखत खेल जम्यो बनाइ॥सखा जीतत श्याम जाने तब करीकछु पेल।सूरदासतबकहतसुदामा कौन ऐसो खेल॥१७॥खेलतमें को काको गोसैयां। हरि हारे जीते श्रीदामा बरबसही कत करत रिसैयां॥ जाति पाति हमते कछु नाहि न बसत तुम्हारी छहियाँ। अति अधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारे हैं कछु गइयाँ॥रूहठि करे तासों को खेले रहे पाँढि जहां तहां सब ग्वैयाँ।सूरदास प्रभु खेलोई चाहत दांव दयो करि नंददोहैयां॥१८॥ राग कान्हरो॥आवहुकान्हसाँझकीबिरियाँ। गाइन मांझ भएहौ ठाढे कहत जननि यह बड़ी कुबेरियां॥लरिकाई कहुँ नेक न छांडत सोइरहो सुथरी सेजरियाँ। आए हरि यह बात सुनतही धाइ लिये यशुमति महतरियाँ॥लेपौढीआँगनही सुतको छिटकिरही आछी उजियरियां॥सूरदास कछु कहत कहतहीवश कारलिए आइ नींदरियां॥ ॥१९॥ आँगनमें हरि सोइगयो री॥ दोउ जननी मिलिके हरुये करि सेजसहित तब भवनलियो री॥ नेक नहीं घरमें बैठतहे खेलहिके अब रंग रए री॥ इहिबिधिश्यामकबहुँनहिसोएबहुतनींदके वशहि भए री॥ कहत रोहणी सोवनदेहु न खेलत दौरत हारिगए री॥सूरदास प्रभुको मुखनिरखत यह छबि नितनित होत नए री॥२०॥ अथ ब्राह्मणको प्रसंग॥राग धनाश्री ॥महरानेतेपांडे आयो।व्रज घर घर बूझत नँदरावर पुत्र भयो सुनिके उठि धायो॥ पहुँच्योआइनंदकेद्वारेयशुमतिदेखिअनंद बढायो। पाय धोइभीतर बैठायोभोजनकोनिजभवनलिपायो॥जोभावैसोभोजनकीजैविप्रमनहि अति हर्ष बढायो। बडी बयस बिधि भयो दाहिनो धनियशुमति ऐसोसुतजायो॥ धेनुदुहाइ दूध लैआई पांडे रुचिके खीर चढायो। घृत मिष्टानखीरमिश्रितकरिपरुसिकृष्णहित ध्यानलगायो॥ नैन उघारि विप्रजो देखे खात कन्हैया देखन पायो। देखो आइ यशोदा सुतकृत सिद्ध पाक इहि आइ जुठायो॥ महरि विनय दोऊ कर जोरे घृत मिष्टान पयबहुतमँगायो। सूर श्याम कत करत अचगरी बारबार ब्राह्मणहि खिझायो॥ २१॥ रामकली ॥ पांडेनहिंभोगलगावनपावे।करि करि पाक जबै अर्पतहे तबहिं तबहिं छै आवे॥इच्छा करि मैं ब्राह्मण न्योत्योंतू गोपाल खिझावै। वह अपने ठाकुरहि जेंवावत तू ऐसे उठि धावै॥ जननी दोष देहु जनि मोको करि विधान बहु ध्यावै निन मूँदि कर जोरि नाम लेबारहि बार बुलावै॥ कह अंतरक्योंहोइभक्तकोजोमेरे मन भावे। सूरदास बलि हौं ताकी जो जन्म पाइयशगावै ॥२२॥राग बिलावल॥ सफलजन्मप्रभुआजु भयो। धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जाके हरि अवतार लयो॥ प्रगट भयोअब पुण्यसुकृतफल दीनबंधु मोहिं दरश दियो। बारबार नंदके आंगन लोटत द्विजआनंद भयो॥मैंअपराध कियो बिन जाने को जाने केहि भेष जँयो। सूरदास प्रभुभक्तहेतवश यशुमतिहित अवतारलयो॥२३॥ राग धनाश्री॥ अहो नाथ जेइ जेइ तेरे शरण आए तेइ तेइ भएपावन।महापतितकुलतारनएकनाम

अघ जारन कारन दुख विसरावन॥मोते को हो अनाथ दरशनतेभयोसनाथदेखत नेनजुडावन। भक्तहेत देह धरण पुहुमीको भार हरण जन्म जन्म जन मुक्तावनं॥अशरन शरन दीनबंधु यशु- मति सुखकारन देहधरावन॥हितके चितकी मानत सबके जियकी जानत सूरदास प्रभुमनभावन॥ ॥२४॥ राग बिलावल ॥मया करियेकृपाल प्रतिपालसंसारउदधिजंजालते पारपार।काहूकेब्रह्माकाहू- के महेश काहूके गणेशप्रभु मेरे तौ तुमहिआधार॥दीनदयालु कृपाकरिमोकोयह कहिकहिलोटत वार वार। सूरश्याम अंतर्यामी स्वामीहो जगतके कहा कहौं करो निरवार॥२५॥ अथ मायीको प्रसंग राग बिलावल ॥ खेलन श्याम पौरिके वाहर व्रज लरिका सोहत सँग जोरी। जैसेइ आपु तैसेई लरिका सव अति अज्ञ सवनि मति थोरी ॥ गावत हांक देत किलकारत दुरि देखत नँद- रानी। अति पुलकित गदगद मृदुवानी मन मन महरि सिहानी ॥ माटी लै मुख मेलिदई हरि तवहिं यशोदा जानी। सॉटी लिये दौरि भुज पकरे श्याम लगरई ठानी ॥लरिकनको तुम सव दिन झुठवत मोसो कहा कहोगे। मैया मैं माटी नहि खाई मुख देखे निवहो- गे॥ वदन उघारि देखायो त्रिभुवन वन घन नदी सुमेरानभ शशि रवि मुखभीतर है सवसागर धरनी फेर ॥ यह देखत जननी जिय व्याकुल वालकमुख वा आहि। नैन उघारिवदन हरिमूंद्यो माता मन अवगाहि॥झूठे लोग लगावत मोको माटी मोहिं न सुहावै।सूरदास तव कहतियशोदा व्रजलोगन इह भावै॥२६॥राग धनाश्री ॥मोहन काहे न उगिलो माटी।वारवारअनरुचिउपजावत महरिहाथ लिये सॉटी। महतारीको कह्यो न मानत कपटचतुरई ठाटी। वदन पसारि दिखाइ आपनो नाटककी परिपाटी॥ वडी वार भई लोचन उघरे भ्रम या मनकी फाटी॥सूरदास नदरानि भ्रमित भई कहत न मीठी खाटी ॥२७॥रामकली ॥मो देखतयशुमति तेरे ढोटाअवहीमाटीखाई। इह सुनिकै रिस कारि उठि धाई वांह पकर लेआई॥इक करसों भुज गहि गाढेकरि इककर लीनें साटी। मारतिहौ तोहि अवहि कन्हैया वेगि न उगलो मांटी॥व्रजलरिकासव तेरेआगेझूठीकहत वनाई। मेरे कहे नही तू मानत दिखरावो मुख वाई॥अखिलब्रह्मांडखडकी महिमादेखरायोमुख- माही। सिंधु सुमेरु नदी वन पर्वत चकृत भई मनमाही॥करते सॉटि गिरा नहिंजानीभुजाछांडि अकुलानी। सूर कहै यशुमति मुख मूँदहु वलि गइ शारँगपानी॥२८॥राग सारग॥ नदहि कहति यशोदा रानी।माटीके मिस मुख देखरायो तिहूलोक रजधानी॥स्वर्गपतालधरनि वन पर्वतवदन- मांझ रहे आनी। नदी सुमेरु देखि चकृत भई याकी अकथ कहानी॥ चितरहे तव नद युवति- मुख मन मन करत विनानी॥सूरदास तव कहति यशोदा गर्ग कही यह वानी॥२९॥राग बिलावल॥ कहत नद यशुमति सुन वौरी।ना जानिये कहा ते देख्यो मेरे कान्हहि लावति सौरी॥पाचवर्षको मेरो कन्हैया अचरज तेरी वात। वेही काज सॉटि ले धावति ता पाछे विललात ॥ कुशल रहैं वलराम श्याम दोउ खेलत खात अन्हात॥सूर श्यामकोकहा लगावति वालक कोमल गात ॥३०॥ रागबिलावल॥देखो रे यशुमति वौरानी।वरघरहाथ दिखावत डोलत गोद लिये गोपालविनानी॥ जानत नाहिं जगतगुरु माधो यहि आये आपदा नशानी। जाको नाम शक्ति पुनि ताकी ताहीं देत मन्त्र पढि पानी॥अखिल ब्रह्मांड उदर गति जाकी जाकी ज्योति जल थलहि समानी॥सूरसकल साँची मोहिंलागत जोकछुकहीमुखगर्ग कहानी॥३१॥राग धनाश्री॥गोपालराइहौचरनन्हिहौंकाटी। हम अवला रिस वाँचि न जानी वहुत लागि गइ सॉटी॥वारों कर जु कठिन अति कोमल जरहु नयन जिन डाटी। मधु मेवा पकवान छांडिकै काहे खात लाल तुम माटी॥सिगरोई दूध पियो

मेरे मोहन बलहि न देवत बाटी । सूरदास नंद लेहु दोहनी दुहहु लालकी नाटी ॥ ३२ ॥ ॥अथ माखनचोरी प्रथम ॥ गौरी ॥ मैया री मोहिं माखन भावै । मधु मेवा पकवान मिठाई मोहिं नहीं रुचि आवै ॥ व्रज युवती इक पाछे ठाढी सुनति श्यामकी बात । मन मन कहति कबहुं मेरे घर देखों माखन खात ॥ बैठे जाय मथनियांके ढिग मैं तब रही छिपानी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिनिमनहिंकी जानी॥३३॥गौरी ॥गए श्याम तिहि ग्वालिनिके घर। देख्यो जाइ द्वार नहिं कोई इत उत चितै चले घरभीतर ॥ हरि आवत गोपी तब जान्योआपुन रही छिपाई। सूने सदन मथनियाके ढिग बैठिरहे अरगाई॥माखन भरी कमोरी देखी लैलै लागे खान। चितैरहत मणिखंभ छाहतन तासों करतसयान॥प्रथम आजुमैं चोरी आयो भलयो बन्योहै संग । आपु खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहत का रंग॥जो चाहो सब देउं कमोरी अतिमीठो कत डारत।तुमहि देखि मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा बिचारत॥सुनि सुनि बातश्यामके मुखकी उमँगि हँसी व्रजनारि । सूरदास प्रभु निरखि ग्वालिमुख तब भजि चले मुरारि ॥ ३४ ॥ फूली फिरति ग्वालि मनमें री।पूछति सखी परस्पर बातें पायो पर्यो कछुकहूं तैं री॥ पुलकितरोम रोम गदगद मुख वाणी कहत न आवै। ऐसो कहा आहि सो सखिरी मोको क्यों न सुनावै॥तनु न्यारो जो एक हमारो हम तुम एकै रूप । सूरदास कहै ग्वालि सखीसों देख्यो रूप अनूप ॥ ॥राग सूहौ॥आजु सखी मणिखंभनिकट हरि जहाँ गोरसको गोरी। निजप्रतिबिंब सिखावतज्यों शिशु प्रगट करै जिनि चोरी ॥ आध बिभाग आजुते हम तुम भली बनीहै जोरी॥माखन खाहु कितहि डारतहौ छाँडिदेहु मति भोरी॥हिसा न लेहु सबै चाहतहौ इहै बात है थोरी॥मीठोअधिक परम रुचि लागै देहौ काढि कमोरी॥प्रेम उमगि धीरज न रह्यो तबप्रगट हँसी मुखमोरी॥सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख भज कुंज गहि खोरी॥३५॥राग बिलावल॥प्रथम करी हरि माखन चोरी। ग्वालिन मन इच्छा करि पूरण आपु भजे हरि व्रजकी खोरी ॥ मनमें इहै बिचार करत हरि व्रज घर घर सब जाउं । गोकुल जन्म लियो सुखकारण सबकर माखन खाऊं ॥ बाल रूप यशुमति मोहिं जानै गोपिन मिलि सुख भोग । सूरदास प्रभु कहत प्रेमसों येरी रे व्रज लोगू॥ ॥३६॥राग रामकली॥करत हरिग्वालनसग बिचार।चोरि माखन खाहु सब मिलिकरोबालविहार॥ यह सुनत मन सखा इप भली कही कन्हाइ । हसि परस्पर देत तारी सौंह करि नंदराइ ॥ कहाँ तुम यह बुद्धि पाई श्याम चतुर सुजान ॥ सूर प्रभु मिल ग्वालबालक करतहैं अनुमान ॥ ३७॥ राग गौरी ॥सखासहित गए माखन चोरी।देख्यो श्याम गवाक्षपथ ह्वै गोपी एक मथतिदधि भोरी॥ हेरि मथानी धरी माटते माखन हौं उतरात । आपुन गई कमोरी मागन हरिहू पाई घात ॥ पैठे सखनसहित घर सूने माखन दधि सब खाई। छूंछीछाडि मटुकिया दधिकी हँसि सब बाहिर आई ॥ आइगई कर लिये मटुकिया घरते निकरे ग्वाल।माखन कर दधि मुख लपटानो देखि रही नँदलाल॥ काहे आजु व्रजबालक सगले माखन कर दधि मुख लपटानो।देखतते उठि भजो सखा एक इहि घर आइ छिपानो ॥ भुज गहिलियो कान्ह इक बालक निकरे व्रजकी खोरि । सूरदासप्रभु ठगिरहीग्वालिनिमनुहरिलियो अजोरि॥३८॥राग गौरी ॥चकित भई ग्वालिनितन हेरयो।माखन छाँडि गई मथि बैसहि तबते कियो अबेरयो॥देखौजाइ मटुकिया रीतीमैंराख्यौ कहुँ हेरी।चकृत भई ग्वालिनि मन अपने ढूंढति घर फिरि फेरी॥देखति पुनिपुनि घरके बासन मन हरिलियो गोपाल। सूरदास रसभरी ग्वालिनी जानै हरिके ख्याल॥३९॥राग बिलावल॥व्रजघर

घर प्रगटी यह बात।दधि माखन चोरीके लेहरि ग्वालसखासँग खात ॥व्रजवनिता यह सुनि मन हर्षीं सदन हमारे आवैं। माखन खात अचानक पावैं भुज भरि उरहि छुवावैं॥मनहीमन अभिलाप करत सब हृदय करत यह ध्यान। सूरदास प्रभुको घरते लैदेहौं माखन खान ॥ ४० ॥ राग सारंग॥ गोपालहि माखन खानदे। सुनुरी सखी कोऊ जिनि बोलै वदन दहीलपटानदे॥गहि वहियाँ हौंलेके जैहों नयनन तपति बुझानदे। वापै जाइ चौगुनो लेहौं मो यशुमति लौं जानदे॥तुम जानति हरि कछुव न जानत सुनत मनोहर कानदे। सूरदासप्रभु तुम्हरे मिलनको राखोंगी तन मन प्रानदे ॥ ॥ ४१ ॥राग कान्हरो॥ चली व्रज घरघरनि यह बात। नंदसुत सँग सखा लीने चोरि माखन खात॥ कोउ कहति मेरे भवनभीतर अवहिं पैठे धाइ। कोउ कहति मुहि देखिद्वारे गयउ ताहि पराइ ॥ कोउ कहति केहि भाँति हरिको देखों अपने धाम। हेरि माखन देहुँ आछो खाहि जितनो श्याम॥ कोउ कहति में देखिपाऊं भरि धरौं अँकवारि। कोउ कहति मैं बाँधिराखौं को सकै निरवारि॥ सूर प्रभुके मिलन कारन करत बुद्धि विचार। जोरि कर विधिको मनावति पुरुप नंदकुमार ॥ ॥४२॥ राग कान्हरो॥ ग्वालनिघर गये जानि साँझकी अँधेरी। मंदिरमें गए समाइ श्यामलतनु लखि न जाइ, देह गेह रूप कहो को कहै निवेरी॥दीपकगृह दान करयो भुजा चारि प्रगट धरयो, देखत भई चकृत ग्वालि इत उतकोहेरी।श्याम हृदय अतिविशाल माखन दधि विंदु जाल,मनमोह्यो नंदलाल वलहि बूझेरी॥युवती अति भइविहाल भुज भरिदे अंकमाल,सूरज प्रभु अति कृपाल डारयो मन फेरी। करसों कर ले लगाइ महरिपै गई लिवाय आनँद उरमें न समायवातहै अनेरी॥ ॥४३॥राग कल्याण ॥यशुमति धौं देखि आनिआगेह्वै लेपिछानि वहियाँगहिल्याईकुँवर औरको कि तेरो।अवलौं में करी कानि सही दूध दही हानि,अजहूं जियजानिमानि कान्हहैअनेरो॥ दीपकमें धरयो वारि देखत भुज भये चारि,हारी हौं धरति करति दिन दिनको झेरो।देखियत नहिं भवनमांझ तैसोइ तनु तैसि साँझ छलसों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो ॥ गोरस तनु छीटरही शोभा नहिं जात कही,मानौं जलयमुन विंव उडगन पधुफेरो।उरहनौं दिन देउँ काहिकाहेतूइतनो रिसाइ,नाहीं व्रजवास सासु ऐसी विधि मेरो॥ गोपी निरखति सुमार यशुमतिको है कुमार, भूली भ्रम रूपमानौ आनि कोऊ हेरो।मनमन विहँसत गोपालभक्तपाल दुष्टशाल,जानैकोसूरदास चरित कान्हकेरो॥४४॥राग गौरी॥देखि फिरे हरि ग्वालि दुवारे।तवइक बुद्धिरची अपने मनभीतर साँझ परे पिछवारे ॥ सूने भवन कहूँ कोउ नाहीं मनो याहिको राज। भाँडे धरतु उघारतुमूँदतु दधिमाखनकेकाज ॥रैनि जमाइ धरयो सो गोरस परयो श्यामके हाथ।लैलै खात अकेलेआपुन सखा नहीं कोउ साथ ॥ आहट सुनि युवती घर आई देख्यो नंदकुमार।सूरश्याममंदिर अँधियारे निरखत वारंवार॥४५॥अँधियारे घर श्याम रहे दुरि। अवहीं में देख्यो नँदनंदन चरित भयो मनहीमन झुरि॥पुनिपुनि चकृत होति अपनेजीकेसीहै यहवात। मटुकीकेढिग वैठिरहे हरि करैं आपनी घात॥ सकल जीउ जलथलके स्वामी चींटी दईउपाइ।सूरदास प्रभुदेखि ग्वालिनीभुज पकरे तव आइ ॥ ४६ ॥ श्याम कहा चाहतसे डोलत। बूझेहूते वदन दुरावत सूधे वोल न वोलत ॥सूने निपट अँध्यारे मंदिर दधि भाजन में हाथ। अव कहि कहा वनैहौ उत्तर कोऊ नाहिन साथ॥में जान्यों यह घर अपनो हैया धोखे मैंआयो।देखतहौं गोरसमें चींटी काढनको कर नायो ॥ सुनि मृदु वचन निरखि मुख शोभा ग्वालिनि मुरि मुसुकानी। सूरश्याम तुम हो रतिनागर वात तिहारी जानी ॥४७ ॥ राग सारंग॥यशोदा कहाँलौं कीजे

कानि।दिनप्रति कैसे सही परतिहै दूध दहीकी हानि॥ अपने या बालककी करनी जो तुम देखो आनि। गोरस खाइ ढूँढि सब बासनभली करी यह बानि॥ मैं अपने मंदिरकेकोनेमाखन राख्यो जानि।सोईजाइ तुम्हारे लरिकालीनोहैपहिचानि॥बूझीग्वालिनि घरमें आयो नेकुन शंका मानी। सूरश्याम तब उतर बनायो चीटी काढत पानी ॥४८॥राग गौरी॥ आप गए हरुए सूने घर। सखा सबहिं बाहरही छांड देख्यो दधि माखन हरि भीतर।तुरत मथ्यो दधि माखन पायो लै लै खात धरत अधरनिपर। सैनहु दे सब सखा बुलाए तिनहिं देत भरिभरि अपने कर॥ छिटकिरहीं दधि-बूंद हृदयपर इत उत चितवत करि मनमें डर। उठत ओटते लेत सबनि लै पुनिलै खात देत ग्वालिनि बर॥अंतरभई ग्वालि यह देखति मगन भई अति उर आनँद भरि।सूरश्याममुख निरखि थकित भइ कहत न बनै रही मनमें धरि॥४९॥राग धनाश्री॥गोपाल दुरेहैं माखन खात। देखि सखी शोभा जु बनी है श्याम मनोहरगात॥उठिअवलोकिओटठाढेह्वै जिहि बिधिहैलखि-लेत। चकृतबदन चहूंदिशि चितवत और सखनको देत॥ सुंदर कर आनन समीप अति राजत इहि आकार। मनौ सरोज बिधुबैर बंचि करि लिये मिलन उपहार॥ गिरिगिरि परत बदनके ऊपर ह्वै दधिसुतके बिंदु। मानहु सुभग सुधाकन बरपत बिजमोआनम इंदु॥बालबिनोद बिलोकि सूर प्रभु शिथिल भईव्रजनारि।फुरै न बचन बरजिबे कारनरही बिचारिबिचारि॥५०॥ राग सारंग॥ग्वालिनि जो घर देखैआइ।माखन खाइचुराइ श्यामतब आपुन रहो छपाइ॥ठाढीभई मथनियांके ढिग रीती परी कमोरी। अबहि गई आई इन पाँइनि लैगयो को करि चोरी॥ भीतर गई तहां हरिपाए श्याम रहे गहि पाई। सूरदास प्रभु ग्वालिनि आगे अपनो नाम सुनाई॥५१॥राग गौरी॥जो तुम सुनहु यशोदा गोरी। नँदनंदन मेरे मंदिरमें आजु करन गए चोरी॥ हौं भई आनि अचानक ठाढी कह्यो भवनमें को री।रहे छपाइ सकुचि रंचक ह्वै भई सहजमति भोरी॥ जब गहि बाँह कुलाहल कीनो तब गहि चरण निहोरी। लागे लै नैनन भरि आँसू तब मैं कान न तोरी॥ मोहिं भयो माखनको संशय रीती देखि कमोरी। सूर-दास प्रभु देत दिनहुँ दिन ऐसी लरिकसलोरी॥५२॥राग सारंग॥जानि जु पाए हौहरि नीके। चोरि चोरि दधि माखन मेरो नितप्रति गीधिरहे या छींके॥ रोक्यो भवनद्वार व्रजसुंदरि नूपुर मूंदि अचानक हीके। अब कैसे जैयतु अपने बल भाजत दूध दही मेरो पीके॥सूर श्याम प्रभु भले परे फँद देउ न जान भावते जीके। भरि गंडूक छिरकदे नैननि गिरिधर भागि चले दै कीके॥ ॥५३॥राग रामकली॥माखनचोर री मैं पायो।मैं जुकही सखीहोतुकहाहै भाजन लगत डुझायो॥जो चाहो तौ जान क्यों पैये बहुत दिननुहैखायो।बारबारहौंढूका लागी मेरी घात न आयो॥नोईनेत-की करी चमोटी घूँघटमें डरवायो बि हँसत निकसिरहीदोदँतियाँ तब लै कंठ लगायो॥मेरेलाल-को मारिसकै को रोहिनि गहि हलरायो। सूरदास प्रभु बालकलीला बिमलबिमल यश गायो॥ ॥५४॥राग नट॥देखि ग्वालिनि यमुना जात। आपु ता घर गए पूँछत कौन है कहि बात॥ जाइ देखे भवनमहियाँ ग्वालबालक दोइ। भीर देखत अति डेराने दुहूँ दीनो रोइ॥ग्वालके कांधे चढे तब लिए छींके उतारि। दह्यो माखन खात सब मिलि दूध दीनो डारि॥बच्छ लै सब जोरिदीने गए बन समुदाइ। छिरकि लरिकनु दहीसों भरि ग्वाल दीने चलाइ॥देखि आवत सखी घरको सखा गए सब दौरि। आनि देखे श्याम घरमें भई ठाढी पौरि॥प्रेम अंतर रिस भग्यो मुख युवति बूझति बात। चितै मुखतन सुधि बिसारी कियो उर नख घात॥ अतिहि रिसबस भई ग्वालिनि गेह देह बिसारि। सूर प्रभु भुजगहे ल्याई महरिसों अनुहारि॥५५॥ राग गौरी ॥महरि

तुम मानौ मेरी वात। ढूँढि ढूढि गोरस सब घरको हरयो तुम्हारेतात॥ और काढिसीकेतेलीनो ग्वाल कँधा दै लात।अंमभापु बोलन आई है ढीठ ग्वालिनी प्रात॥ चाखत नही दूध धौरीको तेरे कैसे खात। औरो कहति कछू सकुचतिहौ कहादिखाऊ गात॥ ऐसो तौ मेरो नहिं अचगरो कहा बनावति वात। चितवत चकित ओट भए ठाढे यशुदातन मुसुकात॥ है गुण बडे सूरके प्रभुके यां लरिका हैजात॥५६॥ राग गौरी॥ सॉवरेहि वरजति क्यो जु नही। कहा करी दिन प्रतिकी वातै नाहिन परत सही॥माखन खात दूध लै डारत लेपत देह दही॥ तापाछेघरहूकेलरिकनु भाजत छिरकि मही॥जो कछु धरहिं दुराय दूर लै जानत ताहि तँही।सुनहुमहारितेरेयासुतसोहम पचिहारि रही॥ चोर अधिक चतुराई सीखी जाइ न कथा कही। तापर सूरबछरुवनिढीलतवन वन फिरत वही॥५७॥ राग कान्हरो॥अब ये झूठेहु बोला लोग।पॉच वरप अरु कछुक दिननिको कव भयो चोरीयोग॥ इहि मिस देखन आवति ग्वालिनि मुह फाटे जुगवारी। अनदेखेको दोष लगावति दई देइगो टारी॥कैसेकरि याकी भुज पहुँची कौन वेग ह्यांआयो। ऊखलऊपरआनिपीठ धरि तापर सखा चढायो॥ जो न पत्याहु चलो सँग यशुमति देखो नयन निहारि। सूरदासप्रभु नेकु न वरजो मनमें महरि विचारि॥५८॥ मेरो गुपाल तनकसो कहा करि जानै दधिकी चोरी। हाथ नचावति आवति ग्वालिनि जीभुन करही थोरी॥ कव सीके चढ़ि माखन खायो कव दधि-मटुकी फोरी। अँगुरिन करि कवहू नहि चाखतु घरही भरी कमोरी॥ इतनी सुनत घोषकी नारी विहँसि चलीं मुख मोरी।सूरदास यशुदाको नदन जो कछु करै सु थोरी॥५९॥ राग कान्हरो॥ इनु अँखियनुआगेते मोहन एकौ पल जिनि होहिं नियारे। हौं वलिगई दरश देखेविनु तलफतहैंनैननि केतारे॥ आनोसखा वुलायआपनेयहि ऑगन खेलौ मेरेवारे।निरखति रहौं फणिककीमणिज्यो सुदरश्यामविनोदतिहारे॥ मधुमेवा पकवान मिठाई खाटे मीठे व्यजन खारे। सूरदासप्रभुजोमन इच्छा सोइमोइमागिलहु मेरेप्यारे॥६०॥ राग नटनारायण॥ मेरेलाडिलेहोजननिकहतजनिजाहुकहू। तेरेहि काजै गुपाल सुनहु लाडिलेलाल राखेहै भाजन भरि सुरस छहू॥ काहेको पराये जाइकरै इतने उपाइ दूध दधी घृत मधु माखन तहूाकरतिकछू न कानि वकतिहै कटुवानि निपटनिलजवैन विलखतहू॥ व्रजकी ढीठी ग्वारी हाटकी वेचनहारी सकुच नदेति गारी झगरिकहूँ।कहालौमे करौ रिस वकत धौं इही कृश इही मिससूर श्यामवदन चहू॥६१॥ राग धनाश्री॥ चोरी करत कान्ह धरि पाये। निशिवासर मोहिं वहुत सतायो अव हरि हाथहि आये॥ माखन दधिमेरो मव खायोवहुत अचगरी कीन्ही। अवतौ आइ परेहौ ललना तुम्हें भल मैं चीन्ही॥ दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहो माखन लेउ मॅगाइ। तेरीसो मे नेकु न चाख्यो सखा गये सव खाइ॥ मुखनन चितै विहँसि हँसिदीनो रिस तव गई वुझाइ। लियो उर लाइ ग्वालिनी हरिको सूरदास वलिजाइ॥ ॥६२॥ राग धनाश्री॥ मथति ग्वालि हरि देखा जाइ। गये हुते माखन की चोरी देखत छवि रहे नयन लगाइ॥ डोलत तनु शिर अचलु उघरयो वेनी पीठि डोलत इहि भाइ। वदन इदु पय पान करनको मनहु उरग उठि लागत धाइ॥ निरखी श्याम अग पुनि शोभा भुज भरि धरि लीनो उर लाइ। चितै रही युवती हरिकोमुरनयनसैनदैचितहिचुराइ॥तन मन धन गति मति विसराई सुख दीनो कछु माखन खाइ। सूरदास प्रभुरसिकशिरोमणितुम्हरी लीला कोकहै गाइ॥६३॥राग ललित॥देख्योहरिमथतिग्वालिदधिभेदसोठाढी। यौवनमदमातीइत-राती वेनी ढुरत कटिपर छवि वाढी॥दिन थोरी भोरी अति कोरी देखतही जु श्याम भये चाढी।

कपैतिहै डुहुँकरन मथानी शोभाराशि भुजा गहि गाढी॥इत उत अंग मुरति झकझोरति अँगियां वनी कुचनसों माढी। सूरदास प्रभु रीझि थकित भए मनहु काम साँचे भरि काढी॥ ६४॥ राग बिलावल॥गए श्याम तेहि ग्वालिनिके घरादेखोजाइ मथति दधि ठाढी आपु लगे खेलनद्वारे पर॥फिरि चितई हरि दृष्टि परिगए वोलि लिए हरुवे सूने घर।लियेलगाइकठिनकुचके विचगाढ़े चापि रही अपने कर॥ उमँगि अंग अँगिया उर दरकी सुधिबिसरीतनकीतिहिऔसर।तव भये श्याम वरप द्वादशके रिझैलई युवती वा छविपर॥मन हरिलयो तनकसे ह्वैगये देखिरही शिशुरूप मनोहर।माखन लै मुख धरति श्यामके सूरज प्रभु रति पति नागरवर॥६५॥ग्वालिनि उरहनके मिस आइ। नंदनँदन तनु मनु हरिलीनो विन देखे क्षण रह्यो न जाइ॥ सुनहु महरि अपने सुतके गुण कहा कहौं किहि भाँति वनाइ। चोली फारि हार गहि तोरयो इन वातन कहौ कौन वडाइ॥ माखन खाइ खवावत ग्वालन जो उवरयो सो दियो लुटाइ। सुनहु सूर चोरी सहलीनी अवकैसेसहिजातढिठाइ॥ ६६॥राग सारंग॥झूंठहिमोहिंलगावतिग्वारि।खेलतमें मोहिं वोलिलियोहै दोउ भुज भरिदीनी अँकवारि॥मेरेकर अपने कुचधारति आपुहिंचोली फारि।माखन आपुहि मोहि खवायो में कव दीन्हों ढारि॥कहाजाने मेरोवारो भोरोहुकीमहरि देदै मुख गारि।सूरश्यामग्वालिनि मन मोह्यो चितैरही इकटकहि निहारि॥६७॥राग गौरी॥कवहिं करन गयेमाखनचोरी।जानतिहौं जु कटाक्षनिहारे कमलनयन मेरोइ तनकसो री॥ दैदै दगा वुलाइ भवनमैंभेटति भुज भरि उरजकटोरी। उर नखचिह्न दिखावति डोलति कान्ह चतुर भए तू अति भोरी॥मो घरआवति उरहन के मिस चितै रहति ज्यों चन्द्रचकोरी। सूरसनेह जात नहिं हटक्यो नैननिप्रीति जाति नहिं तोरी॥ ६८॥ राग गौरी॥कहा कहौं हरिके गुण तोसों। सुनहु महरि अवही मेरे घर जे कीने मोसों॥ में दधि मथति आपने मंदिर गए तहाँ इहि भाँति।मोसों कह्यो वात सुनु मेरीमें सुनिकै मुसकाति॥ वाँह पकरि चोली गहि फारी भरि लीनी अँकवारी। कहत न वनै सुकुचकी वातें देखो हृदय उघारी॥ माखन खाइ निदरि नीकी विधि इह तेरे सुतकी वात। सूरदास प्रभु तेरेआगेसुकुचतनकह्वैजात॥ ६९॥ राग गौडमलार॥ ग्वालिनी श्याम तनु देखरी आपु तन देखिये। भीतिजवहोइतवचित्र अवरेखिये॥ कहाँ मेरो कुँवरहै पाँचही वरपको रोइ अजहूं पयपान माँगे। कहाँतू ढीठ यौवन मद सुंदरी फिरति अठिलाति गोपाल आगे॥कहाँ मेरो कान्हकी तनकसी आँगुरी वडेवडे नखनिके चिह्न तेरे। मष्ट करु हँसैगो लोगु अँकवारभुज अहाँ पाएतें श्याम मेरे॥टगटगैमुख झुकी नयनहूं नागरी उरहनो देत रुचि अधिक वाढी। सुनहु सूर सर्वसु हरयो साँवरे अनउत्तर महरि ढिग देति ठाढी॥७०॥ राग गौरी॥कतहो कान्ह काहुके जात।ये सववढी गर्वगोरसके मुखसम्हारि वोलति नहिं वात॥जोइ जोइ रुचै सोइसोइ तव मोपै माँगिलेहु किन तात।ज्योंज्यों वचन सुन्योंमुख अमृत त्यों त्यों सुख पावत सव गात॥ कैसी टेव परी इन गोपिन उरहनके मिस आवतिप्रात। सूर सकति हठि दोप लगावति घरहूको माखन नहिं खात॥७१॥राग बिलावल॥कान्हकोग्वालिनि दोप लगावत चोर। तनक दही माखनके कारणकवै गयोतेरी ओर॥तुमतो धन योवनकीमाती निलज भई उठि आवत भोर। लालकुँवर मेरो कछू न जानै तूहै तरुणि किशोर॥ कापर नयन चढाये डोलति या व्रजमें तिनकासो तोर।सूरदास यशुदा अनखानी इह जीवन धनमोर॥७२॥ राग देवगंधार॥कान्हहि वरजति क्यों न नँदरानी॥एक गाँवकेवसत कहाँलौंकरैनंदकीकानी॥तुम जो कहतहो मेरो कन्हैया गंगाकोसो पानी। वाहर तरुण किशोर वेस वर वाट घाटको दानी॥

वचन विचित्र कमलदललोचन कहत सरस वर बानी। अचरज महरितुम्हारेआगेआवे जीभ तुत-रानी ॥ कहाँ मेरो कान्ह कहाँ तुम ग्वालिनि इह विपरीति न जानी। आवत सूर उरहनेके मिसु देखि कुँवर मुसुकानी ॥ ७३ ॥ राग धनाश्री॥ माखन माँगत है यशुमतिसो। माता सुनत तुरत लैआई देति खवाइ मगन मन रतिसो ॥ मैया मेंअपने कर लेहीं धरिदे मेरे हाथ। माखन खात चले उठि खेलन सखा जुरे सब साथ ॥ मथुरा जात ग्वालिनी देखी चरचि लई हरि आइ। सूर श्याम ता घरके पाछे बैठिरहे अरगाइ॥७४॥ राग धनाश्री ॥मथुराजात हौंबेंचनदधियो। मेरे घरको द्वार सखीरी तबलौं देखति रहियो ॥ दधि माखनद्वैमाठकछूतेसौंपतिहौतुहिसहियो। और तौ डर नाहीं या व्रजमें नंदसुवन सखि आवतलहियो॥येशुभव चननिकटहैमोहनसुनि करि उर सब गहियो। सूरपौंरिलौंगईन ग्वालिनिकूदिपरयो दैधहियो॥७५॥ राग नट ॥देख्योजाइश्याम घरभीतर। अवही निकसि कहतिभई सो फिरिआई पुनि तुम्हरेडर॥ सखासाथकेचमकि गए सब गह्यो श्यामकर धाई। औरनि जानि जान मैं दीन्ह्यो तुम कहँ जाहु पराई ॥ वहुत अचगरी करत फिरतहौ मैं पाए करि घात। बाँह पकरि लैचली महरिपै करतरहतउतपात ॥ देखो महरि आपने सुतको कबहूँ नाहि पत्याति बैठे श्याम आपने भवनहिं चितै चितैपछिताति॥बाँहपकरि तू ल्याई काको अति बेशरम गवाँरि। सूरश्याम मेरे आगे खेलत यौवनमद मतवारि ॥ ७६॥ राग सारंग ॥ यशुदा तू जो कहतिही मोसो। दिनप्रतिदिन उरहनोआवतिकहातिहारो कोसो॥ यहै उरहनो सत्य करनको गोविंदहि गहिल्याई। देखन चली यशोदा सुतकोह्वैगएसुता पराई ॥ तेरे हृदय नेकमति नाही वदन पेखि पहिचान्है। सुनरी सखी कहति डोलतिहै या कन्या सो कान्है तैं जो नाम कान्ह मेरेको सूधो है करिपायो।सूरदास स्वामी यह देखो तुरत त्रिया ह्वैआयो॥७७॥ राग गौरी ॥ रही ग्वालि हरिको मुख चाहि। कैसे चरित किये हरि अवही वार वार सुमिरति करताहि॥बाँह पकरिघरते लै आई कहा चरित कीन्हे हैं श्याम।जात न बनै कहत नहिंआवेकहत महरि तू ऐसी वात॥ जानी वात तिहारी सबकी यशुमति कह्यो इहांते जाहि।सूरदासप्रभुके गुण ऐसेबुद्धि करी तब जीतीताहि॥७८॥राग गौरी ॥श्याम गए ग्वालिनिघर सूनो।माखनखाइडारिसब गोरस वासन फोरिसोरु रहिदूनो।वडोमाट इकवहुत दिननिको तासुकिये दशटूक।सोवतलरिका न छिरकि महीसों हँसनचले दैकूक॥आइगई ग्वालिनि तिहिऔसर निकसतहरिधरिपायो।देखत घर वासन सब फूटे दहीदूध ढरकायो॥दोउभुज धरि गाढे करिलीन्हे गई महरिकेआगे।सूरदास अववसैकौनह्यां पतिरहिहैव्रजत्यागे॥७९॥राग विलावल ॥ऐसे हाल कियोघरघरको। हौंलैआई तुम पास पकरिकै फोरे सववासन घरकोदधि माखनखायो जोउवरयोसोडारयो रिसकरिकै॥लरिका छिरकि महीसो देखो उपज्यो पूत सपूत महरिको।वडी माट वरधरयो युगनिको सोउ टूकपांच दश करिकै ॥ पारि सपाट चले तब पाये हौ ल्याई तुम पास पकरिकै। सूरदासप्रभुको यौंराखो ज्यों राखिये गज मदकोजकरिकै॥८०॥राग कान्हरो ॥करत कान्हव्रजघरनिअचगरी।खीझतिमहरि कान्हसो पुनिपुनि उरहन लैआवतिहै सिगरी ॥ वडे वापके पूत कहावत हम वे वास वसतइक नगरी। नदहुते ये वडे कहैहै फेरिवसैहै ये व्रज नगरी॥ जननीके खीझत हरि रोये झूठेहि मोहिं लगावत धगरी। सूरश्याममुख पोंछि यशोदा कहति सबै युवती है लंगरी॥८१॥राग सारंग ॥नित नित सब आवतिउठि भोर।मेरे बारेहि दोष लगावत ग्वालिनयौवनजोर॥ दूधदहीमाखनकेकारण कब गयो तेरी ओर। धनमाती इतराती डोलति सकुचतिनाहिकरें अतिशोर॥ मेरोकन्हैयाकहां

तनकसो तू है कुचनकठोर।तेरे मनको इहां कौन है पायो आजु कटकको छोर॥कापर नयन चलावति आवति जाति नहीं व्रज तिनका तोर। सुनहु सूर ग्वालिनिकीबातैं बसत कान्हजीवन धन मोर॥८२॥राग नट॥मेरोमाई कौनको दधि चोरै।मेरेबहुत दईको दीनो लोगपियतहैंऔरै॥ कहा भयो तेरे भवनगये जो पियो तनकुलैभोरै॥ ऊपर काहे गरजतिहौ मनो आईचढिघोरै॥ माखन खाइमह्यो सबडारयो बहुरो भाजनफोरै।सूरदास ये रसिक ग्वालिनी नेह नवलसँगजोरै॥८३॥राग रामकली॥ अपनो गाउँ लेहु नंदरानी। बडे बापकी बेटी ताते पूतहि भले पढावति बानी॥सखा भीर लै पैठत घरमें आपु खाइ तौ सहिये।में जब चली सामुहे पकरन तबके गुण कह कहिये॥ भाजि गये दुरि देखत कतहूं में घर पौढीआई। हेर हेर बेनी गहि पाछे बांधीपाटी लाई॥ सुनु मैया याके गुण मोसों इन मोहिं लियो बुलाई। दधिमें परी सेतिकी चींटीमोपेसबै कढाई॥ टहल करत याके घरकी में इह पति सँग मिलि सोई। सूर वचन सुनि हँसी यशोदा ग्वालि रही मुख गोई॥८४॥राग सारंग॥महरि तुम व्रज चाहति कछु और॥बात एक में कहौकि नाही आपु लगावति झौर। जहां बसे पति नहीं आपनो तजन कह्यो सो ठौर॥सुतकं भएबधाई पाई लोगन देखति हौर। कान्ह पठाइदेति घर लूटन कहत करौ या गौर॥ व्रज घर समुझि लेहु महरि जू इहा करति कर जोरि। सूर सुनत ग्वालिनिकी बातै रहियशुमतिमुख मोरि॥८५॥लोगन कहति झुकति तू बौरी। दधि माखन गांठी दे राखत। करति फिरत सुत चोरी॥जाके घरकी हानि होत नित सो नहिं आन कहैरी।जाति पांतिके लोगन देखत औरबसैहै नेरी॥ घर घर कान्ह खान को डोलत अतिहि कृपण तू हेरी।सूरश्यामको जब जोइ भावे सोइ तबही तू देरी॥८६॥राग मलार॥महरि तें बडी कृपणहै माई। दूध दही विधिको है दीनो सुत डर धरति छिपाई॥ बालक बहुत नाहि री तेरे एकै कुँवर कन्हाई।सोऊ तो घरही घर डोलत माखन खात चुराई॥वृद्ध बैस पूरे पुण्यनिते तें बहुतै निधि पाई।ताहूको खैबे पियबेको कहाकरतिचतुराई॥ सुनहु न वचन चतुर नागरिके यशुमति नंद सुनाई। सूरश्यामको चोरीकेमिसदेखनकोरी आई॥८७॥राग नट॥ अनत सुत गोरसको कत जात। घरसुरभी नव लाख दुधारी और गनी नहिं जात॥ नितप्रति सबै उरहनेके मिस आवति हैं उठि प्रात। अनसमुझे अपराध लगावति विकट बनावति बात॥ अतिहि निशंक विवादति सन्मुख सुनि मोहिं नंद रिसात। मोसोंकृपण कहत तेरे गृहढोटाऊ न अघात॥ करिमनुहारि उठाय गोदलै सुतको बरजति मात। सूर श्याम नितसुनत उरहनो दुख पावत तेरो तात॥८८॥राग बिलावल॥ भाजिगये मेरे भाजन फोरी।लरिका सहस एकसँग लीने नाचतफिरत सांकरी खोरी॥माखन खाइ जगाइ बालकन्हवनचरसहितबछरुवा छोरी। सकुच न करत फागुसी खेलत गारी देत हँसत मुख मोरी॥ बात कहौं तेरे ढोटाकी सब व्रज बांध्यो प्रेमकी डोरी।टोनासी पढि नावत शिर पर जो भावत सो लेत अजोरी॥आपु खाइ तौ सब हम मानें औरन देत सिकहरो तोरी। सूर सुतहि देखो नँदरानी अब तोरतचोलीबंद जोरी॥८९॥राग नट॥श्याम सब भाजन फोरिपराने। हांक देत पैठतहैं पैला नेकु न मनहिं डराने॥ सींके तोरि मारि लरिकनको माखन दधि सब खाई। भवन मच्यो दधिकाँदो लरिकन रोवत पाये जाई॥ सुनहु २ सबहिनके लरिका तेरोसो कहुँ नाहीं।हाटन बाटन गलिनिकहूंकोउ चलत नहीं डरुपाहीं॥ ऋतु आयेको खेलकन्हैयासबदिनखेलनफाग। रोकि रहत गहि गलीसाकरी टेढी बांधत पाग॥बारेतेसुत ये ढँग लाये मनही मनहिं सिहात।सुनहु सूरग्वालिनिकीबातें

सकुचि महरि पछितात ॥ ९० ॥ राग सारंग॥कन्हैया तू नहिंमोहिंडेरात। पटरस धरेछांडि कतपर घर चोरी करि करि खात ॥ बकति बकति तोसोंपचिहारी नेकहु लाज न आई।ब्रजपरगन सरदार महर तू ताकी करत नन्हाई॥पूत सपूत भयो कुल मेरो अव मैं जानी वात।सूरश्याम अवलौं तोहिं बकस्यो तेरी जानी घात ॥ ९१ ॥ राग गौरी॥सुनरी ग्वारी कहौं एक वात। मेरी सौं तुम याहि मारियो जवहीं पावोघात॥अब मैं याहि जकरि बांधौंगी बहुतैंमोहिंखिझाई।साटिन्हमारि करौं पहुनाई चितवत वदन कन्हाई॥ अजहूं मातु कह्यो सुनु मेरो घर घर तू जनि जाहि। सूर श्याम कह्यो कवहुँ न जैहौं माता मुखतनुचाहि॥ ९२॥ राग बिलावल॥तेरे लाल मेरो माखनखायो। दुपहर दिवस जानि घर सूनी ढूँढि ढँढोरि आपही आयो ॥खोल किंवार सून मंदिरमें दूधदही सव सखनखवायो। सींकेकाढिखाट चढि मोहन कछुखायोकछुलेढरकायो ॥ दिनप्रतिहानिहोत गोरसकी यह ढोटा कौने ढँग लायो । सूरदास कहती ब्रजनारी पूत अनोखो जायो॥ ९३ ॥ राग रामकली ॥माखन खातपराये घरको।नितप्रतिसहसमथानी मथियेमेघशब्ददधि माठघमरको॥ कितने अहिर जियतहैं मेरगृह दधिले बेंचत मही महरको। नव लख धेनु दुहत हैं नित प्रति बडो भाग्यहै नंद महरको॥ताकेपूत कहावत हौ जी चोरी करत उघारत फरको।सूरश्याम कितनी तुम खैहौ दधिमाखन मेरे जहँतहँ ढरको ॥ ९४ ॥ मैया मैं नाहीं दधि खायो । ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो॥ देखि तुही सीकेपर भाजन ऊंचेघर लटकायो।तुही निरखि नान्हे कर अपने मैं कैसे करि पायो ॥ मुख दधि पोंछि कहत नँदनंदन दोना पीठ दुरायो।डारि सांट मुसुकाइ तवहिंगहि सुतको कंठ लगायो॥वालविनोद मोद मन मोह्यो भक्तप्रताप देखायो। सूरदास प्रभु यशुमतिके सुख शिव विरंचि बौरायो ॥९५॥ यशुमति तेरो वारो नान्हो अतिहि अचगरो ।दूध दही माखन लै डारिदेत सगरो॥भोरहि उठि नितप्रति मोसों करतहैझगरो। ग्वालबाल संग सवलिये घेरि रहैं वगरो॥हम तुमहैंसव वैस एकके को काते अगरो।लियो दियो सोई कछु डारिदेहु झगरो ॥ सूरश्याम तेरो गुननिमें अति नगरो । चोली अरु हार तोरि कियो झगरो॥९६ ॥देखो माई या वालककी वात । वन उपवन सरिता सव मोहे देखत श्यामल गात॥ मारग चलत अनीत करत हरि हठिकै माखन खात।पीतांवरवे शिरते ओढतअंचलदै मुसुकात॥ तेरी सौंकहा कहौं यशोदा उरहन देत लजात।जवहरिआवततेरे आगे सकुचितनकहुँजात॥कौन२ गुण कहौं श्यामके नेक न काहु डरात।सूर श्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा इह वात ॥ ॥९७॥राग नट ॥नंदघरनि सुतभलोपढायो।ब्रजकीवीथिनि पुरनि घरनि घर घाट घाट सव शोर मचायो ॥लरिकन मारि भजत काहूके काहूको दधि दूध लुटायो।काहूके घरकरत वडाईमैंज्यों त्यों करि पकरन पायो॥अवतौइन्हें जकरि वांधौंगी इहिंसव तुम्हगो गाउँ भँडायो। सूर श्याम भुज गहि नँदरानी वहुरि कान्ह अपनेढिग आयो ॥९८॥राग [illegible]
तें सुत वडो लडायो । काके नहीं अनोखेढोंटाकेहि न कठि [illegible]
ते वहुत दिननमें पायो ।यहि ढोंटा लै ग्वाल भवनमें कछु वगर्‍यो कछु खायो॥ तें तो ग्वालि पकरि भुज याकी वदन दही लपटायो। सूरदास ग्वालिनि अति रूठी वरवस कान्ह वँधायो॥ ॥९९॥अथ नवमअध्याय हरि दँवरि वँधाण॥राग गौरी॥ ऐसी रिसमें जो धरि पाऊं । कैसे हाल करौं धरि हरिकै तुमको प्रगट देखाऊं॥सटिया लिये हाथ नँदरानी थरथरात रिस गात।मारे विना आजु जो छांडों लागै मेरे तात॥यहि अंतर ग्वालिनि इक औरै धरे बांह हरि ल्यावति।

भली महरि सूधो सुत जायोचोली हार बतावति॥रिसमें रिस अतिही उपजाई जानि जननि अभि· लाष। सूरश्यामभुज गहे यशोदा अबवांधौंकहिमाख॥२००॥ राग सोरठ॥ यशुमतिरिसकरिकरि रजु करपै। सुत हित क्रोध देखि माताके मनही मन हरि हरपै॥उफनत क्षीर जननिकरि व्याकुल इहि विधि भुजा छुडायो। भाजन फोरि दही सब डारयो माखन मुँह लपटायो॥ले आई जेवरि अब बाँधौं गरबजानि न बँधायो। आंगुर द्वैघटिहोतसबनिसों पुनिपुनि और मँगायो॥नारद शाप भये यमलार्ज्जुन इनको अब जो उधारौं॥सूरदास प्रभु कहत भक्तहित युगयुगमें तनुधारौं॥ ३०१॥ राग बिलावल॥यशोदा हरि गहिगजतकरपै।गावत गोविंदचरित मनोहरप्रेमपुलकिचितहरपै॥उफनत क्षीर शरीर तन व्याकुल तबही भुजा छुडायो।भाजन फोरिदही सब डारेव लवनी मुख लपटायो॥ लेकर दांवरि यशोदा दौरी बाँधन कृष्ण न पायो। द्वै द्वै अंगुर घटे जेवरी तातै अचबुधआयो॥ नारदशाप भए यमलार्जुन तिन हित आपु बँधायो। सूरदास बलिजाइ यशोदा सोचे देखल आयो॥३०२॥रागधनाश्री॥देख सखी यशुमति बौरानी।घरघरडोलति लेत दामरीबांह गहेहरिकी बिततानी॥ जानति नहीं जगतपति माधव जिनते सब आपदा नशानी।जाके नाम सकतिपुनि ताकी ताहि देखि बांधन नंदरानी॥अखिलब्रह्मांड उदरमें जाके जिनकी ज्योति जलथलहुसमानी। मुख जम्हात त्रिभुवन देखरायो अचरज कथा न जात बखानी॥ ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक भ्रमत रहत इनहु नहिं जानी। सूरदास मोहिं ऐसी लागत जो कछु कही गर्गमुनिबानी॥३०३॥ राग रामकली॥यशोदा येतो कहा रिसानी।कहा भयो जो अपने सुतपै महि ढरिपगीमथानी॥रोस रोस सँभरे दृग तेरे कीरति पय लए पानी। मनहु शरदके कमलकोशपर मधुकर मीन सकानी॥ श्रम जलकण किंचित निरखि बदनपर यह छवि कहत न मानी। मनौं चंद्र नव उमँगि सुधा भुव ऊपर बरषा ठानी॥गृह गृह गोकुल दई दाँवरी बाँधति भुज नँदरानी।आपु बँधावत भक्तन छोरत वदन बिदित श्रमपानी॥गुण लघु चरचि करति श्रम जितनो निरखि बदन मुसुकानी। शिथिल अंग सब देखि सूर प्रभु शोभासिंधु तिरानी॥४॥राग सारंग॥बाँधौं आजुकौनतोहिछोरै। बहुत लँगरई कीनी मोसों भुजगहिरजु ऊखलसोंजोरै॥जननी अतिरिस जानिबँधायोचितवदन लोचन जल ढोरै। यह सुनि ब्रजयुवती उठि धाई कहत कान्ह अब क्यों नहिं चोरै॥ ऊखलसों गहि बाँधि यशोदा मारनको सौंटी कर तोरै।साँटी लखि ग्वालिनि पछितानी बिकल भई जहंतहँ मुख मोरै॥सुनहु महरि ऐसी न बूझिये सुत बाँधत माखनदधि थोरै।सूर श्यामको बहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरै॥५॥ राग आसावरी ॥जाहु चली अपने अपनेघर।तुमही सब मिलि ढीठ करायो अब आई बंधन छोरनवर॥मोहिं अपने बाबाकी सौंहैं कान्हेंअब न पत्याऊं।भवनजाहु अपने अपने सब लागतिहौं में पाऊं॥मोको जिनि बरजो युवती कोउ देखौं हरिके ख्याल। सूर श्यामसों कहति यशोदा बडे नंदके लाल॥६॥राग सोरठ॥यशोदा तेरोमुख हरि जोवै।कमल-नयन हरि हिचिकिनि रोवै बंधन छोरि जु सोवै॥ जो तेरो सुत खरोई अचगरो तऊ कोखिको जायो।कहाभयो जो घरको ढोंटा चोरीमाखनखायो॥ कोरीमटकीदही जमायो जामन पूजन पायो।तेहि घर देव पितर काहेको जाघर कान्ह रुवायो॥जाकर नाम लेत भ्रम छूटे कर्म-फंद सब काटे।सो हरि प्रेमजेवरी बांध्यो जननि साँट लेडांटे॥दुखित जानि दोउसुत कुबेरके ता हित आपुबँधायो।सूरदास प्रभु भक्तहेतुही देहधारि तहांआयो॥७॥राग बिलावल॥देखोमाई कान्ह हिचकियन रोवै।तनक मुखहि माखन लपटान्यो डरनिते अँसुअन धोवै॥माखन लागि उलूखल

बाँध्यो सकल लोग ब्रज जोवै। निरखि कुरुपि उन बालकनिकी दिशि लाजन अँखियन धोवै ॥ ग्वाल कहैं धनि जननि हमारी सुकरसुरभि नित नोवै।बरबसही बैठारि गोदमें धारे वदन निचोवै ॥ ग्वालिनि कहैं या गोरस कारण कत सुतकी पति खोवै।आनि देहिं हम अपने घरते चाहति जित-कु यशोवै॥जब जब वंधन छोरचो चाहत सूर कहै यह कोवै।मन माधोतनु चित गोरसमें इहि विधिमहरि बिलोवै॥८॥राग सारंग॥माई नेकहुँनहिं दरद करति हिलकिनि हरि रोवै।वज्रहुते कठिन हियो तेरोहै यशोवै ॥ परुना पौढाइ जिनहिं विकट बाउ काटे । उलटे भुज बांधि तिनहिं लकुट लिये डॉटे ॥ नेकहू न थकित पानि निर्दयी अहीरी।अहो नंदरानी सीख कौनपै लहीरी॥जाको शिव सनकादिक सदा रहत लोभा ।सूरदास प्रभुको मुख निरखि देखि शोभा॥९॥ राग विहागरो॥ कुँवर जल लोचन भरिभरि लेत । बालक वदन विलोकि यशोदा कत रिस करत अचेत ॥ छोरि कमरते दुसह दांवरी डारि कठिनकर वेत ।कहि तोको कैसे आवतुहै शिशुपर तामस एत॥ मुख आँसू माखनके कनिका निरखि नैन सुख देत । मनु शशि स्रवत सुधानिधि मोती उडुगणअव-लि समेत॥सरवसु तौ न्यवछावरि कीजै सूर श्यामके हेत।नाजानों केहि हेतु प्रगट भये इहि ब्रज नंदनिकेत॥३१०॥ राग केदारो॥हरिके वदन तनधौंचाहि।तनक दधिकारण यशोदा एतो कहा रिसा-हि ॥ लकुटके डर डरत जैसे सजल शोभित डोल । नील नीरज दृग लसैं मनो ओसकन कृत लोल ॥ वातवश सु मृणाल जैसे प्रात पंकज कोप । नमित मुखपर अधर सूचित सकुचमें कछु रोप ॥ कतिक गोरस हानि जाको करतिहौ अपमान । सूर ऐसे वदन ऊपर वारिये धन प्रान ॥ ११ ॥ राग केदारो ॥ मुखछवि देखि हो नंदघरनि । शरद निशिके अंशु अगणित इंदुआभा हरनि ॥ ललित श्रीगोपाललोचनलोल आँसू ढरनि। मनहुँ वारिज विलखि विभ्रम परे परवश परनि ॥ कनकमणिमय मकर कुंडल ज्योति जगमग करनि । मित्र लोचन मनहुं आए तरलगति दोउ तरनि॥कुटिल कुंतल मधुप मिलि मनो कियो चाहत लरनि । वदन-कांति अनूपशोभा सकै सूर न वरनि॥१२॥राग केदारो॥हरिमुख देखि हो नंदनारि।महरि ऐसे सुभग सुतसों इतो कोह निवारि ॥ जलज मंजुल लोल लोचन शरद चितवनि दीन । मनहुँ खेलतहैं परस्पर मकरध्वज द्वै मीन ॥ ललित कण संयुत कपोलनि ललित कज्जल अंक । मनहुँ राजत रजनि पूरणकला अति अकलंक॥ वेगि बंधन छोरि तन मन वारि लै हिय लाइ। नवल श्याम किशोरऊपर सूरजन बलिजाइ ॥ १३ ॥राग विहागरो॥ कहो तौ माखन ल्याऊं घरते।जा कारण तू छोरति नाहिन लकुट न डारति करते ॥ महरि सुनहु ऐसी न वूझिये सकुचि गयो मुख डरते । मनहुँ कमल दधिसुतसम पोतकि फूलत नाहिन सरते ॥ ऊखल लाइ भुजा धरि बाँधे मोहन मूरति वरते । सूर श्याम लोचन जल वरपत जनु मुक्ता हिमकरते ॥१४॥राग कल्याण॥ कहनलगी अब बढिवढि बात। ढोटा मेरो तुमहिं बँधायोतनकहिमाखनखात॥अबमोहिंमाखन देतिमँगाए मेरे घर कछु नाहीं। उरहनकरिकरि साँझ सवारे तुमहिं बँधायो याहीं॥रिसहीमेंमोको गहि दीनो अब लागी पछितान॥सूरदास हँसि कहत यशोदा बूझो सबको ज्ञान॥१५॥राग धनाश्री॥कहाभयो जो घरकेलरिका चोरी माखन खायो।अहो यशोदा कत त्रासतिहौइहै कोखको जायो ॥ बालक जान अजान न जानैं केतिक दह्यो लुटायो ।तेरो सखी कहा खायो गोरस गोकुल अंत न पायो॥ हाहा लकुट त्रास देखरावत आपन पाश बँधायो । रुदन करत दोउ नयन रचेहैं मनहु कमल तन छायो ॥ पौढिरहे धरणीपर तिरछे विलखि वदन कर जाहु । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि

हँसिके कंठ लगाहु ॥ १६ ॥ सु चित दै चितै तनै तन ओर । सकुचत शीत भीत ज्यों
जलरुह भुव कर लकुट निरखि सखि घोर ॥ आनन ललित श्रवण जल शोभित अरुण
चपल लोचनकी कोर । डारत मनौं गंडूक सुधा भरि विधुमंडल ज्यों उभय चकोर ॥
सुभग मृणाल युगलभुजऊपर बांधे ऊखल दाम कठोर। मनु भुवंग भीतर बांबीपर उरझिरही
केचुरि गरजोर॥लघु अपराध देखि बहुशोचति निर्दय हृदय वज्रसम तोर।सूर कहा सुतपर इतनी
रिस कहि इतनै कछु माखन चोर॥१७॥राग बिलावल॥यशुदा देखि सुतकी ओर।बाल वैस, रिसालपर
रिस इती कहाके पोर ॥ वार वार निहारि तव तन निमिष दधिमुख चोर।नगनि किरनिके परशि
मानो कुमुदि विधुमति भोर॥त्रासते अति चपल गोलक सजल शोभित छोर।मीन मानो वेधि
वंशी करत जल झकझोर ॥ नंदनंदन जगतवंदन करत आँसू कोर ।सूरदास सु महरि मुख हित
निरखि नंदकिशोर ॥ १८॥राग धनाश्री॥चितै धौं कमलनयनकी ओर।कोटि चंद वारौं या मुख
छवि येहैं शाह के चोर॥उज्ज्वल अरुण असित देखतिहै दुहूं नैनकी कोर।मानों सुधापानके कारण
बैठे निकट चकोर॥ कतहि रिसात यशोदा इन्हसों कौन ज्ञान है तोर। सूर श्याम बालक मन-
मोहन नाहिन तरुण किशोर॥१९॥राग सारंग॥कबके बाँधे ऊखल दाम। कमलनयन बाहिर करि
राखे तू बैठी सुखधाम॥हौ निर्दयी दया कछु नाहीं लागि गई गृहकाम।देखि क्षुधाते मुख कुँभिलानो
अतिकोमल तनु श्याम ॥ छोरहु बेगि बडी बिरियां भई बीतगये युग याम । तेरे त्रास निकट
नहिं आवत बोलि सकत नहिं राम॥जेहि कारण भुज आप बँधाये वचन कियो ऋषि ताम।ता दिनते
यह प्रगट सूर प्रभुदामोदरसो नाम॥२०॥राग गौरी॥वारौं हां वे कर जिन हरिको वदन छुवोरी।वारौं
[illegible]

कितिक गोरस हानि जाको तू तोरति कानि डारयो तुहिं सूर श्यामके रोमरोमपर वारी॥ २१ ॥
राग सोरठ ॥यशोदा तेरो भलो हियो है माई ।कमलनयन माखनके कारण बांधे ऊखल लाई॥जो
संपदादेवमुनि दुर्लभसपनेहुं देइ न देखाई । याहीते तू गर्वभुलानी घरबैठे निधिपाई॥सुन काहूको
रोवत देखति दौरि लेत हिय लाई।अब अपने घरके लरिकासों इती कहा जडताई ॥ वारंवार सजल
लोचन भरि चितवत कुवर कन्हाई।कहा करौं बलि जाउँ छोरती तेरी सौंहदिवाई॥जोमूरति जल
थलमों व्यापक निगम न खोजत पाई। सो मूरति तू अपनेआँगन चुटकी दैदै नचाई॥सुरपालक
सब असुरसँहारक त्रिभुवन जाहि डराई। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाई॥२२॥
राग केदारो॥देख री नँदनंदन ओर।त्रासते तनु त्रसितभोर हरितकत आननतोर॥वारवार डराततोको
वरन वदनहि थोर। मुकुर मुख दोउ नैन ढारत क्षणहि क्षण छवि छोर॥ सजल चपल कनीन
पलकैं अरुणऐसेडोर।सरस अंबुज भँवर भीतर भ्रमतहै जनु भोर॥लकुटके डरदेखि जैसेभयेशोणि-
तथोर । उर लगाइ बहाइ रिस जिय तजहु प्रकृति कठोर ॥ कछुक करुणा कारि यशोदा करति
निपट निहोर। सूरश्याम विलोकि यशुमति कहति माखनचोर॥२३॥राग धनाश्री॥तबतेबाँधेऊखल
आनि । बालमुकुंदको कत तरसावति अति अग कोमल जानि॥प्रातकालते बाँधे मोहन तरनि
चढै मध्यानि।कुम्हिलानो मुखइंदु दिखावति देखौ धौं नंदरानि॥तेरेत्रासतेकोऊन छोरतअबछोरहु
तुम आनि। कमलनैन वाबेई छोडे तू बैठी मन मानि॥ यशुमतिके मन सुखके कारण आपु
बँधावत पानि । यमलार्जुनकी मुक्ति करनको सूर श्याम इह ठानि॥ २४ ॥राग नट॥ कान्हसों

आवत क्यों विरसात। लैलै लकुट कठिन अपने कर परशति कोमल गात॥देखि जु आंसू गिरत नैनते शोभित है ढरिजात। मुक्ता मनौ चुगत खग खंजन चोंचिपुटी नसमात॥उरनिडोल डोल-तहैं इहि विधि निरखि सुभ्रुव सुनि बात। मानहुँ सूर सकेत शरासन उडिबेको अकुलात॥२५॥ राग रामकली ॥यशोदा यह न बूझिको काम।कमलनयनकी भुजादेखि धौं तैं बांधेहैदाम॥पूतहुते प्रीतम नहिं कोऊ कुलदीपक मणि धाम। हरिपर वारि डारु सब तन मन धन गोरस अरु ग्राम॥ दिखियत कमलवदन कुँभिलानो तू निर्मोही बाम। तू बैठी मंदिर सुखछाहैं सुतदुखपावत घाम॥ अति सुकुमार मनोहर मूरति ताहि करत तुम ताम। एई हैं सब ब्रजके जीवन सुख पावत लिए नाम॥ इह सुनि ग्वालि जगतके बोहित पतितपावन नाम। सूरदास प्रभु भक्तके वश हैं जगत-विश्राम॥२६॥ राग धनाश्री॥ ऐसी रिस तोकों नँदरानी। भली बुद्धि तेरेजियउपजी वडीवैसअब भई सयानी॥ढोंटा एक भए कैसेहुँ करि कौनकौन करबर विधि भानी।कर्म कर्म करि अवलौं उबरयो ताको मारि पितर दे पानी॥को निर्दयी रहेतेरे घरको तेरे सँगवैठआनी।सुनहुसूरकहि कहि पचिहारी युवती चलीं घरहि विरुझानी॥२७॥ राग सारंग॥ हलधरसोंकहिग्वालिसुनायो। प्रातहिते तुमरो लघुभैया यशुमति ऊखल बाँधिलगायो॥काहूकेलरिकहिहरिमारयोभोरहिआनि तिनहिं गोहरायो।तबहींते बांधे हरि वैठे सो हम तुमकोआनिजनायो॥हमबरजीबरजोनहिं मानत सुनतहि वल आतुर ह्वै धायो॥सूरश्याम बाँधे ऊखल गहि माताडरतनअतिहित्रसायो॥२८॥राग सारंग यह सुनिके हलधर तहँधाए।देखिश्यामऊखलसोंबांधेतबहीं दोउलोचनभरिआए॥मैंबरज्योंके वार कन्हैया भली करी दोउहाथ बँधाए।अजहूँछोडोगे लँगराईदोउकरजोरि जननिपैआए॥श्यामहि छोरि मोहिं वरु बांधैनिकसत सगुन भले नहिं पाए।मेरे प्राण जीवनधन कान्हातिनको भुज मोहिं बँधे देखाए॥मातासों कह करौ ढिठाई शेषरूप कहि नाम सुनाए। सूरदास तब कहत यशोदा दोउ भैया तुम इकमत भाए॥२९॥राग सारंग॥ एतौ कियो कहा रिस मैया।कौन काज धन दूध, दही यह क्षोभ करायो कन्हैया॥आये सिखावन सबे पराये स्यानी ग्वालि बौरैया।दिनदिनदेन उरहनो आवैं ढुंकि ढुंकि करत लरैया॥सूरदास सुंदरहि लगाने वह वलभद्र औ भैया॥३३०॥ राग केदारो॥काहेको कलहु नाध्यो दारुण दाँवरि बाँध्यो कठिनलकुट लै त्रास्यो मेरे भैया॥नाहीं, कसकत मन निरखि कोमल तन तनक दधिकाज भली री तू मैया॥ हौं तौ न भयो घर देखतो तेरीयो अरि फोरतो वासन सब जान [illegible]
वलजाको सोईही गन्हैया॥३१॥राग [illegible]
मेरो भैया कितनो दधि पियतो। हौंतो न भयो घर साँटी दीनी सरसर बांध्यो कर जेवरी नीके कैसे देखि जियतो॥ गोपालतो सबनि प्यारो ताकों तैंकीनो प्रहारो जाकोहैमोकोगारोअजुगुत कियतो। ठाढो बांधे बलवीर नैनोंसे ढरतु नीर हरिजूते प्यारो तोको दूध दही घियतो॥सूरदास गिरिधरन धरनीधर हलधरयहछविसदाईरहोमेरेजियतो॥३२॥ रागसोरठ॥यशोदातोहिंबाँधे क्यों आयो। कसको नाहिं नेकु तनु तेरो यह कहि काहि खिझायो॥शिव विरंचि महिमा नहिं जानत सो गाइन सँगधायो।ताते तू पहिचानति नाहीं कौन पुण्यते पायो॥इतनी कहत रसिकमणितबहीं रोषसहितवल धायो। जननी छांडि और जो होती करत आपनो भायो॥कहा भयो जो घरके लरिका चोरी माखन खायो। अपने कर सब बंधन खोले प्रेम सहित उर लायो॥सरस वचन मनोहर कहि कहि अनुज शूल बिसरायो। सूरदासप्रभु भक्तनकेहितनिजकरआपबँधायो॥३३॥

राग सोरठ ॥ काहेको हरि इतनों त्रास्यो।सुनुरीमैयामेरेभैयाकितनोगोरसनाश्यो॥ जबरजुसों कर गाढो बोधि छर छर मारी साटी । सूने घर बाबानंद नाहींऐसो करि हरिहाटी॥ औरनकछुदेखे तन श्यामहि ताको करौं निपातु। तू जो करे बात सोइ साँची कहा करौं तोहि मातु॥ गाढे बदन त्रास सब हलधर माखन प्यारो तोही। ब्रज प्यारो जाको मोहिं गारो छोरति काहेन ओही ॥ काको ब्रज माखन दधि केहिको बाँधे जकरि कन्हाई।सुनत सूर हलधरकीबातें जननी सेन बताई ॥ ३४॥ राग सारंग ॥सुनहु बात मेरी बलराम। करनदेहु इनकीमोहिं सेवा चोरी प्रगटत नाम॥ तुमहीं कहा कमी काहेकी नव निधि मेरे धाम। मैंगरजति सुत जाहु कहूंजनि कहि हारी निशि याम॥ तुमहुं मोहिं अपराध लगायो माखन प्यारो श्याम। सुनु मैया तुहि छोंडि कहाँ किहि को राखे मेरो नाम ॥ तेरी सौं [illegible] अकुलाने कबके बाँधे दाम ॥ ३५ ॥ कहा [illegible] गई बहुते ढीठ कन्हाई॥ मेरो कह्यो नेकु नहिं मानत करतआपनी टेक। भोरहोत उरहनले आवत ब्रजकी वधू अनेक॥ फिरत जहाँ तहँ द्वंद्व मचावत घर न रहतक्षण एक। सूर श्याम त्रिभुवनको कर्ता यशुमति कहति जनेक॥ ३६ ॥ राग गौरी ॥निरखि श्याम हलधरमुसुकाने। को बाँधे को छोरै इनको यह महिमा येई पै जाने॥उत्पति प्रलय करतहैं येई शेषसहसमुखसुयश बखाने। यमलार्ज्जुन तोरि उधारन कारनकरन करत मनमाने ॥ असुरसँहारन भक्तहितारन पावनपतित कहावत बाने। सूरदास प्रभु भावभक्तके अतिहित यशुमति हाथ बिकाने॥ ३७ ॥ हरि चितये यमलार्ज्जुन तन। अबही आजु इन्हें उद्धारों येहैं मेरेई जन॥इनकेहेतुमुजनबँधवाईअबविलंबनहिं लाऊं। परशकरौं तनुतरुहि गिराऊं मुनिवरशाप मिटाऊं॥येसुकुमार बहुत दुख पायोसुतकुवेरके तारो। सूरदास प्रभु कहतमनहि मन करबंधन निरवारौं॥३८॥राग रामकली॥यशोदा ऊखलबांधे श्याम। मनमोहन बाहिरही छोडे आपु गई गृह काम॥दह्यो मथति मुखते कछु बकरतिगारी दे दे नाम। घर घर डोलत माखन चोरत षटरसमेरे धाम॥ ब्रजके लरिकन्ह मारि भजतहैं जाहु तुमहु बलराम।सूर श्याम ऊखलसों बांधे निरखति ब्रजकी बाम॥३९॥रागधनाश्री॥ यशोदा कान्हते दधि प्यारो। डारिदेहु कर मथत मथानी तरसत नंददुलारो॥ दूध दही माखन वारों सब जाहि करति तू गारो।कुंभिलानेमुखचंद देखि छवि काहे न नैन निहारो॥ ब्रह्म सनकशिव ध्यान नपावत सो ब्रज गैयन चारो। सूर श्याम पर बलि बलिजैये जीवन प्राण हमारो॥ ४० ॥ राग धनाश्री ॥ यशुमति केहि यह सीख दई। सुतहि बाँधि तू मथत मथानी ऐसी निठुर भई ॥ हरै बोल युवतिनि को लीनो सुन सब तरुणी नई। लरिकहि त्रास दिखावत रहिये कत मुरझाय गई॥ मेरे प्राण जीवन धन माधव बांधेबेर भई। सूर श्याम कहुं त्रास दिखावत तुम कहा कहत दई ॥४१ ॥ राग धनाश्री ॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई। युवती गई घरनिसबअपनेगृहकारज जननी अटकाई ॥ आपुन गये यमलार्ज्जुनके तरु परशत पातउठेझहराई ।दियेगिरायधरणिदोउ तरु तब द्वै कुबेर सुत प्रगटे आई॥ दोउ कर जोरि करत दोउ अस्तुति चारि भुजा तिन्हें प्रगट देखाई। सूर धन्य ब्रज जन्म लियो हरि धरणीकी आपदानशाई॥४२॥ राग बिलावल ॥धनिगोविंद धनि गोकुल आये। धनिधनि नंद धन्यनिशिवासरधनियशुमतिजिनश्रीधरजाये॥धनिधनिबाल केलि यमुना धनि धनि बन सुरभीवृंद चराये। धनि यहसमौ धन्यब्रजवासी धनिधनिवेणुमधुर ध्वनि गाये॥ धनि धनि अनख उरहनो धनि धनि धनिमाखनधनिमोहनखाये।धन्यसूर ऊखल

तरु गोविंद हमहिं हेत धनि भुजा बँधाए॥४३॥राग सोरठ॥धन्य धन्य ऋषि शाप हमारे। आदि अनादि निगम नहिं जानत ते हरि प्रगट देह व्रज धारे॥धन्य नंद धनि मातु यशोदा धनि ऑगनमें खेलनवारे।धन्य श्याम धनि दाम बँधाए धनि ऊखल धनि माखनप्यारे॥ दीनबंधु करुणानिधि हौ प्रभु राखिलेहु हम शरण तिहारे।सूर श्यामके चरण शीश धरि अस्तुति करि निजधाम सिधारे ॥४४॥राग बिलावल॥यह जिय जानि गोपाल बँधाये।शापदग्ध द्वै सुत कुबेरके आनि भये तरुयुगल सुहाये॥व्याज रुदन लोचन जल ढारत ऊखल दाम सहित चलि आये।विटप भजि यमलार्जुन तारे करि अस्तुति गोविंद रिझाये॥तुमबिनु कौनदीन खलु तारे निर्गुण सगुण रूप धरिआये। सूरदास श्याम गुण गावत हर्षवंत निजपुरी सिधाये॥४५॥ राग रामकली ॥तरु दोउ धरणि परे भहराइ।जर सहित अरराइके आघात शब्द सुनाइ॥भए चकृत लोग सब व्रजके रहे सकुचि डराइ।कोउ रहे अकाश देखत कोउ रहे शिरनाइ॥घरिकलौ जकिरहे जहं तहँ देहगति बिसराइ।निरखि यशुमति अजिर देखे बँधे नाहिं कन्हाइ॥वृक्ष दोउ महि परे देखे महरि कीन्ह पुकार।अबहिऑगन छोडिआई चप्योतरुके डार॥मैं अभागिनि बांधि राखे नंदप्राणअधार।शोर सुनि नंद दौरिआये विकल गोपी ग्वार॥देखि तरु सब अति डराने हैं बडेविस्तार।गिरे कैसे बडो अचरज नेकु नही बयार॥दुहूँतरुविच श्याम बैठे रहे ऊखल लागि।भुजा छोरि उठाय लीने महर हैं बडभागि॥ निरखि युवती अंग हरिके चोट जनि कहु लागि।कबहुँ बाँधति कबहुँ मारति महरि बडी अभागि॥नयन जल भरि ढारि यशुमति सुतहि कंठ लगाइ।जरहु रिस जिन तुमहिं बांध्यो लगै मोहि बलाइ॥नंद मोहिं कहा कहैंगे देखि तरु दोउ आइ। मैं मरौ तुम कुशल रहौ दोऊ श्याम हलधर भाइ ॥ आइ घर जो नंद देखैं तरु गिरे दोउ भारि। बांधि राखति सुतहि मेरे देत महरिहि गारि॥तात कहि तब श्याम दौरे महर लियो अँकवारि। कैसे उबरे कृष्ण तरुते सूरले बलिहारि ॥४६॥ राग नट ॥ मेरे मोहन हौं तुमपर वारी। कंठ लगाइ लिये मुख चूमत सुंदर श्याम बिहारी ॥ काहेको दाम ऊखलसो बांध्यो है कैसी महतारी। अतिहि उतंग बयारि न लागत क्यो टूटे दोऊ तरु भारी॥ बारंबार बिचारि यशोदा यह लीला अवतारी। सूरदासस्वामीकी महिमा कापर जात बिचारी॥ ॥४७॥राग सारंग॥अब घर काहूके जिनि जाहु। तुम्हरे आजु कमी काहेकी कत तुम अनतहि खाहु॥ बरे जेवरी जिन तुम बांधे जरे हाथ महराई। नंद मोहिं अतिही त्रासतहैं बांधे कुंवर कन्हाई॥ रोग जाउ अपने हलधरकी छोरतहै तब श्याम। सूरदास प्रभु खात फिरो जिनि माखन दधि तुव धाम॥ ४८॥व्रजयुवती श्यामहिं उर लावति। बारम्बार निरखि कोमल तनु करजोरति विधिको जु मनावति ॥ कैसे बचे अगम तरुकेतर मुख चुंवति यह कहि पछितावति। उरहनो लै आवति जेहि कारण सो सुख फल पूरणकरि पावति॥ सुनहु महरि इनको तुम बांधति भुज गहि बंधनचिह्न दिखावति। सूरदास प्रभु अति रतिनागर गोपी हरषि हृदय लपटावति ॥ ४९ ॥ अथ यमलार्जुनउद्धारन दूसरीलीला॥ राग बिलावल॥ ग्वालि उरहनो भोरहि ल्याई। यशुमति कहाँ गयो तेरो कन्हाई ॥ माखन मथि भरि धरी कमोरी। अबही मोहन लैगयो चोरी॥भलो कर्म तैं सुतहि पढायो। बारेहीते मूँड चढायो ॥यह सुनतहि यशुमति रिसमानी।कहां गयो कहि सारंगपानी॥ खेलनते औचक हरि आये। जननी बांह पकरि बैठाये॥मुखदेखत यशुमति पहिचानो। माखन वदन कहाँ लपटानो। फिरिदेखै तौ ग्वालिनि पाछे। माता मुख चितवत नहिं आछे॥ चोरीके सब भाव बताये। मातासैंदिया द्वैक लगाये॥ माखनखान जात परघरको। बाधततोहिं

नेकु नहिं धरको । बाँह गहे ढूढति फिरि डोरी । बाँधों तोहिं सकै को छोरी ॥ बाँधि पची डोरी नहिं पूरे । बार बार खीझन रिस झूरे ॥ वरघरते जेंवरि ले आई । मिसहीमिस देखनको धाई ॥ चकित भई देखे ढिग ठाढी । मनोचितेरे लिखिलिखि काढी ॥ यशुमति जोरिजोरि रजु बाँधे । अंगुर द्वै द्वै जनरिसाँधे ॥ जबजानी जननीअकुलानी । आपुबँधायो सारंगपानी ॥ भक्तहेत दावरी बँधाई । यमला अर्जुनकी सुधि आई ॥ माता हेतु जनहिं सुखकारी । जानि बँधायो श्रीबनवारी ॥ मुख जँभात त्रिभुवन दिखरायो । चकित कियो तुरतहिं बिसरायो ॥ बाँधि श्याम बाहर ले आई । गोरस घरघर खात चुराई ॥ ऊखलसों गहिबाँधिकन्हाई । नितहिउरहनो सह्यो न जाई ॥ इक कहि जाति एक फिरिआवे । रैनि दिना तू मोहिं खिझावे ॥ माखनदधितेरे घर नाहीं । धाम भरो चोरी करिखाहीं ॥ नवलख धेनु दुहत घर मेरे । केते ग्वाल रहत घर घेरे ॥ मथत नंदघरसहस मथानी । ताके सुतचोरीकी बानी ॥ मोसो कहति आनिजबनारी । बोलिजातुनहिं लाजन मारी ॥ नदमहरकी करे नन्हाई । वृद्धवैसमसुत भयोकन्हाई ॥ तुम्हरेगुणमन नीके जानें । नितसरजों कबहू नहि मानें ॥ कोउछोरैजनि ढीठ कन्हाई । बाँधे भुजदोउऊखलल्लाई ॥ भवनकाजकोगइनदरानी । आंगन छाडे श्यामविनानी ॥ उरहनदेनग्वालि जे आई । तिन्हेंयशोदा दियोबहराई ॥ चलीसबेमिलि सोचति मनमें । श्यामहिंगहि बाँधेहु छनमें ॥ हँसतबात इककही कि नाही । ऊखलसोंनाथ्यो सुत वाही ॥ कहा कहेंगा छविको माई । बांबीपरअहिकरतलगई ॥ कान्हबदनअतिही कुँभिलान्यो । मानयों कमलहि हिम तरसान्यो ॥ डरते दीरघ नैन चपल अति । वदन सुधारस मीनकरति गति ॥ यह सुनि और युवति सब आई । यशुमतिबाँधे कहत कन्हाई ॥ भलीबुद्धि तेरेजियउपजी । ज्यो ज्योंदिनी भई त्योंनिपजी ॥ छोरहुश्यामकरहु मनलाहो । अतिनिर्दयी भईतुम हो ॥ देखोश्याम ओर नदरानी । सकुचि रह्यो मुख सारंगपानी ॥ बाहिर बांधि सुतहिं बैठारो । मथत दहीमाखन तोहिं प्यारो ॥ छांडि देहु वहि जाइ मथानी । सौह दिवावति छोरहु आनी ॥ हांसी करन सबै तुम आई । अब छोरहुँ नहिं कुँवर कन्हाई ॥ तुमही मिलि रसवाद बढायो । उरहन देदे मूड पिरायो ॥ सबहिन गोधन सौंह दिवाई । चितैरहे मुख कुँवर कन्हाई ॥ कब तुमको मैं बोलिबुलाई । केहि कारण तुम धाई आई ॥ इह सुनि बहुरि चली मुरझाई । कहा करौं बलिजाउँ कन्हाई ॥ मूरखको कोइ कहा सिखावे । याकी मति कछु कहत न आवे । नारि गईं फिरि भवन आतुरी । नदघरनि अबभईचातुरी ॥ ओछी बुद्धि यशोदा कीनी । याकोजाति अबैहँम चीन्हीं ॥ इहैकहतअपनेघरआई । माने नही किती समुझाई ॥ मथत यशोदा दही मथानी । तबहिं कान्ह ऐसी मति ठानी ॥ भक्त-

बछल हरि अंतर्यामी । सुत कुबेरके ये दोउ नामी ॥ यहि अवतार कह्यो इन तारण । इनको दुख अब करौं निवारण ॥ जो जेहि ढँग तिहि ढँग सब लायो । यमलार्जुन पै प्रभु तब आयो ॥ वृक्षबीच ऊखल ले अटक्यो । आगे निकसि नेक गहि झटक्यो ॥ अररात दोउ वृक्ष गिरे धर । अति आघात भयो व्रजऊपर ॥ भए चकृत ब्रजके सब वासी । यहि अंतर दोउ कुँवर प्रकासी ॥ शंख चक्र कर शारँगधारी । भक्तहेतु प्रगटे बनवारी ॥ देखि दरश मन हरष बढायो । तुमहिं विना प्रभु कौन सहायो ॥ धनि व्रज कृष्ण जहां वपुधारी । धनि यशुमति ब्रह्महि अवतारी ॥ धन्य नद धनि धनि गोपाला । धन्यधन्य गोकुलकी बाला ॥ धन्य माइ धनिद्रुम वन चारन । धनि यमुना हरि करत विहारन ॥ धन्य उरहनो प्रातहि ल्याई । धनिमारन चोरत यदुराई ॥ धन्यसुजन ऊखल गढि ल्याये । धन्य दाम भुज कृष्ण बँधाये ॥ गदगदकंठ बचन मुख भारी । शरण राखिलेहु गर्व-

प्रहारी ॥ बार बार चरणन परे धाई। कृपाकरी भक्तन सुखदाई॥साधु साधु कहि श्रीमुखवानी। बिदा भये इहि भाँति बखानी ॥ यमलार्जुन प्रभु तारि पठाये। नदद्वार दोउवृक्ष गिराये॥निरखि यशोदा आंगन आई।दुहू वृक्षबिच बचे कन्हाई ॥ दौरिपरे ब्रजके नर नारी । नंदद्वार कछु होत गोहारी ॥ देखे आइ वृक्ष दोउ डारे।ये गुण यशुमति आहि तुम्हारे॥ तुरत छोरि ऊखलते ल्यायो। देखत जननि नैन भरिआयो ॥ बज्रदेह हरिकी है माई। जहां तहां बिधि होत सहाई ॥ प्रथम पूतना मारन आई।पयपीवत वह तहां नशाई ॥ तृणावर्त लैगयो उडाई। आपुहि गिरयो शिलापर आई ॥ कागासुर आवत नहिं जान्यो। सुनी कहत ज्यो लेइ परान्यो॥शकटासुर पलना ढिग आयो । को जानै केहि ताहि गिरायो॥खेलतमे केशीको मारयो। घीच मरोरि वहिधरनि पछारयो ॥ ग्वालनके सँग गये गोचारन। तहां बकासुर लाग्यो मारन॥कौन कौन करिवर हरि टारयो । यशुमति बांधि अजिर लै डारयो॥बहुतै उबरयो आजु कन्हाई। ऊपर वृक्षगिरेभहराई ॥ कहा कहो कहत न बनिआवे। तुरत आय हरि कौन बचावै ॥ सबहिन पेलि करत धनभाई।पुण्य नदके बच्यो कन्हाई ॥ मुख चूमति लै लै उर लाए।युवतिन करे आपु मनभाए ॥ लै जननी सुत कठ लगावति । चोरीकी बातैं समुझावति ॥ मै रिसही रिस करत लालसो ।भुज बांधे मन हँसति ख्यालसो ॥ मेरे जो तुम करत अचगरी । उरहनकोठाढी रहँसगरी।बारबारतन देखत माई । गिरत वृक्ष कहुँ चोट न आई ॥ कहत श्याम मैं अतिहि डरान्यो । ऊखलतर मैं रह्यो छिपान्यो ॥ बात सुतहि बूझत नँदरानी । कान्ह कहै मुख उरकीबानी॥हरिके चरितकथा नहिं जानै । यशुमति अतिबालक करिमानै॥अखिलब्रह्मांड जीवके दाता। माखनको बाधतिहै माता॥गुण अपार अविगति अविनाशी।सो प्रभु घरघर घोष विलासी॥ऊखलबँध्यो हेतु भक्तनके। येइ माता येइ पिता जगतके॥ यमलार्जुनको मोक्ष करायो।पुनहेतु यशुदागृह आयो॥ऐसे हरि जनके सुखकारी ।प्रगटे रूप चतुर्भुज धारी ॥ जो जेहि भावभजै प्रभुजैसे।प्रेमवश्य हरि मिलही तैसे ॥ सूरदास यह लीला गावै।कहत सुनत सबके मन भावै ॥ जो हरिचरित ध्यान उर राखै।आनदसदा दुरित दुख नाखै॥५०॥राग मलार॥निगमस्वरूपदेखि गोकुल हरि।जाको दूरिदरश देवनकोसो बाँध्यो यशुदा ऊखल धरि ॥ चुटकिन दे दे ग्वाल नचावत नाचत कान्ह बाल लीला धरि । जेहि डर भ्रमत पवन रवि शशि जल सो क्यो डरै लकुटियाके डरि ॥क्षीरसमुद्र शैन सतत जेहि माँगत दूध पतोखी दै भरि।सूरदास गुणकेगाहकहरि रसना गाइ गये अनेकतरि॥५१॥राग सोरठ॥ जाको ब्रह्मा अत न पावै । तापै नदकीनारि यशोदा घरकी टहल करावै ॥शेष सनकनारदगणेश मुनि जाको गुण नित गावै।निशिवासर खोजत पचिहारे मनसाध्यान न आवै॥धन्यधन्यगोकुल धनि वनिता निरखति श्याम बँधावै।सूरदास प्रभु प्रेमहिके वश सतन दरश दिखावै॥ ५२ ॥ राग बिलावल ॥गोविंदतेरोइस्वरूप निगम नेतिनेतिगावै।भक्तकेवश श्यामसुँदर देहधरेआवै॥ योगी जन ध्यान धरत सपनेहु नहिं पावै। नद घरनि बाधिबाँधि कपिज्यो नचावै॥गोपीजन प्रेमातुर तिनको सुख दीनो । अपने अपनेरसविलास काहू नहि चीनो ॥ श्रुति समृति सब पुरान कहत मुनि विचारी। सूरदास प्रेमकथा सबहीते न्यारी॥५३ ॥राग सारंग॥भूखो भयो आजु मेरो बारो ।भोरहि ग्वालिनि उरहन ल्याई उहि यह कियो पसारो ॥ पहिले रोहिणिसो कहि राख्यो तुरत करहु जेवनार। ग्वाल बाल सब बोलि लिये मिलि बैठे नदकुमार ॥ भोजन बेगि ल्याउ कछु मैया भूख लगी मोहि भारी।आजु सबारे कछु नहिं खायो सुनत हसी

महतारी ॥ रोहिणि चितैरहीं यशुमति तन शिर धुनि धुनि पछिताती । परमहु वेगि येर कत लावत भूखे सारँगपानी ॥ बहु व्यंजन बहु भांति रसोई षटरसके परकारा ॥ सूर श्याम हलधर दोउ भैया और सखा सब ग्वार ॥९४॥राग सारंग॥ नंदभवनमें कान्ह अरोगे।यशुदा ल्याई षटरस भोगे ॥ आसन दे चौकी आगे धरि।यमुना जल राख्यो झारी भरि ॥ कनकथारमें हाथ धुवाए। मनहरषे तहँ भोजन आए ॥ लै लै धरति सबनके आगे। मातु परोसे जो हरि मांगे॥खीर खांड घृत लावज लाडू । ऐसे होइँ न अमृत खांडू॥और लेहु कछु सुत व्रजराजा । लुचुई लपसी घेवर खाजा ॥ पेठा पाक जलेबी पेरा । गोंद पाग तिनगरी गिंदोरा॥गोंझा इलाइचीपाग अमिरती। सीरे खाजो लै व्रजपती ॥ छोलि धरे खरबूजा केरा । शीतल वायु करत अति घेरा ॥ नारिक दाख अरु गरी चिरारी । पिंड बदाम लेत बनवारी ॥ वेसन पुरी सुरपुरी लीजे । आछो दूध कमलमुख पीजे ॥ मैया मोहि और किन प्यावे । धौरीको पय मोको भावे॥ वेला भरि हलधर-को दीनो । पीवत पय बल अस्तुति कीनो॥ग्वाल सखा सबही पै अँचयो। नीके औटि यशोदा रचयो ॥ दोना मेलि धरेहै खजुना । हाँस होइ तौ ल्याउ प्रवा ॥मीठे अति कोमल हे नीके।ताते तुरत चभोरे घीके॥फनी सेव अँदरसे प्यारे । लै आऊँ जेवहु मेरे बारे ॥ हलधर कही ल्याउ री मैया । मोको दे नहिं लेत कन्हैया॥यशुमति हरष भरी लै परमति।जेवतहै अपनी रुचिसोंअति॥ कान्ह मागि शीतल जल लीयो। भोजन बीच नीर लै पीयो॥भातु पसाइ रोहिणीलाई।घृतसुगंध सुन्दर दे ताई ॥ नीलानति चांवर दिवि दुर्लभ । भात परोस्यो माता सुर्लभ ॥ मूंग मसूर उरद चना दारी। कनकवरण धार फटक पछारी ॥ रोटी बाटी पोरी झोरी । एक कोरी एक घीव चभोरी॥गायो घृत भरि धरी कचोरी। कछु खायो कछु फेटो छोरी॥मीठे तेल चनाकी भाजी । एक मकुनी दे मोहि साजी॥मीठे चरपरउज्ज्वल कोरा। हाँस होइ तौल्याउ औरा॥सुगौरा पकौरा पनौए पतोरा । एक कोरे भीजे गुर बोरा॥ पापर बरी फुलौरि मिथौरी । कूर बरी कचरी पीठौरी ॥ बहुत मिरिचि दे किय निमोना । वेसनके दश बीसक दोना ॥ बनकोरा पिंडिसा चींचोंडी ।खीप पिंडारू कोमल भींडी ॥चौलाई लाल्हाअरु पोई ।मध्य मेलि निवुआनि निचोई॥रुचितरजान लोनिका फागी। कढी कृपालु दूसरे मागी॥सरसों मेथी सोवा पालक । बथुवा राधि लियो जु रतालक॥ हींग हरदि मृच छौके तेले । अदरख और आँवरे मेले॥ सालन सकल कपूर सुवासित ।स्वाद लेत सुदर हरि आसित॥औव आदि दे सबे सँधाने ।सब चाखे गोवर्धनराने॥कान्ह कहे हौं मातु अघानो । अब मोको शीतल जल आनो ॥ अचवन ले तब धोये कर मुख। शेष न वरने भोजनको सुख ॥उज्ज्वल पान कपूर कस्तूरी। आरोगत मुखकी छवि रूरी॥चदन अंग सखनके चरच्यो । यशुमतिको मुख कानहिं परच्यो॥ मांगि जूठ सूरजु ले लीनो। बांटि प्रसाद सखनको दीना ॥ जन्मजन्म बाढ्यो जठनिको । चेरो नंद महरके घरको ॥९५॥राग का ९रा॥मोहिं कहतयुवतीसबचोर।खेलनरहो कतहुमें बाहिर चितैरहति सबमेरीओर॥ बोलिलेत भीतर घर अपने मुख चूमति भरिलेत अकोर।माखन हरि देति अपने कर कछु कहि विविसों करति निहोर ॥जहा मोहिं देखति तहँ टेरति मे नहि जात दोहाई तोर।सूरश्याम हँसि कंठ लगायो वे तरुणी कहा बालक मोर॥९६॥ राग केदारा॥ यशुमति कहति कान्हसों मेरे अपने ही आंगन तुम खेलो।बोलि लेहु सब सखा संगके मेरो कह्यो कबहु जनि पेलो॥ व्रजवनितासब चोर कहति तोहिं लाजन सकुचिजातु मन मेरो।आज मोहि बलराम कहतहे रूठहि नाम लतहे

तेरो॥जब मोहिं रिस लागति तब त्रासति बांधति जैसे चेरो । सूर हँसति ग्वालिनि दै तारी चोर नाम कैसेहु सुत फेरो॥५७॥ अथ धेनु दुहन सीखन समै॥अध्याय एकादश ॥ राग बिलावल॥ धेनुदुहतहरि देखत ग्वालिनि । आपुन वैठिगए तिनके सँग सिखवहु मोहिं कहत गोपालनि॥ कालिह तुम्हें गोदोहन सिखवैं दुही सबै अब गाई । भोर दुहो जे नंद दोहाई उनसों कहत सुनाई॥बडोभयो अब दुहत रहौंगो अपनी धेनुनिवेरी।सूरदास प्रभु कहत सौंह दै मुहिं लीजौ तुम टेरी॥५८॥ राग कान्हरो॥मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु। कैसे धार दूधकी वाजत सोइ सोइ विधि तुम मोहि बताहु॥कैसे दुहत दोहनी घुटवन कैसेवछरा थनहिलगावहु। कैसेलै नोईपग वाँधत कैसे लै पग या अटकावहु॥ निकट भई अब साँझ कन्हैया गाइनपै कहुँ चोट लगावहु।सूर श्यामसों कहत ग्वाल सब धेनु दुहन प्रातहि उठि आवहु॥५९॥राग सारंग॥महर महरिके मन इह आई।गोकुल बहुतउपद्रवदिनप्रति वसिये वृंदावन अब जाई॥ सब गोपनमिलि शकटासाजी सबहिनके मनमें इह भाई॥सूर यमुन-तट डेरा देई पांच बरसके कुँअरकन्हाई ॥६०॥राग विलावल॥जागहु होतुमनंदकुमार।हौं बलिजाउँ मुखारबिंदकी गोसुत मेलो खरिक सँभार ॥ इतनो कहा सोये मन मोहन और बार तुम उठत सबार।बारहि बार जगावति माता अंबुजनयन भयो भिनुसार ॥ दधि मथिकै माखन बहु दीनों सकलग्वाल ठाढे दरबार। उठिकै मोहन वदन देखावहु सूरदासके प्राणअधार॥६१॥राग बिलावल॥ जागहु हो ब्रजराज हरी । लै मुरली आँगन ह्वै देखौ दिनमणि उदित भयो द्वै घरी॥ गोसुत गूढ बँधन सबलागे गोदोहनकी जूनटरी । निठुरबचनकहिसुतहि जगावतिजननि यशोदा पासखरी॥ भोर भयो दधिमथन होतु सब ग्वाल सखाकी हांक परी। सूरदास प्रभु दरशनकारण नींदछुडाई चरण धरी॥६२॥राग बिलावल॥जागहु लाल ग्वाल सब टेरत।कबहुँ पीतांबर डारि बदनपर कबहुँ उघारि जननि तन हेरत ॥ सोवतमें जागत मनमोहन बात सुनत सबकी अब टेरत । बारंबार जगावति माता लोचन खोलि पलकपुनि घेरत॥पुनि कहिउठीयशोदा मैया उठहु कान्ह रविकिरणि उजेरत।सूरश्याम हँसि चितै मातमुख पट कर लै पुनि पुनि मुख फेरत ॥ ६३ ॥ ॥राग सूहो बिलावल॥जननि जगावतिउठौकन्हाई।प्रगट्यो तरणि किरणिगणछाई॥आवहुचंद्रवदन देखराई । वारवार जननी बलिजाई॥सखा द्वार सब तुमहिं बुलावत। तुम कारण हम धाए आवत॥ सूर श्याम उठि दरशनदीनो।माता देखिमुदितमन कीनो॥६४॥रागरामकली॥ दाऊजूकहि श्याम पुकार्‌यो। नीलाम्बर पट ऐंचि लियो हरि मनु बादरते चंद उतार्‌यो ॥ हँसत हँसत दोउ बाहर आये माता लै जल वदन पखार्‌यो । दतवनि लै दुहुँ करी मुखारी नैननिको आलस जु बिसार्‌यो ॥ माखन खाहु दुहुन कर दीन्हो तुरत मथ्यो मीठो अति भार्‌यो । सूर-दास प्रभु खातपरस्पर माताअंतर हेत विचार्‌यो॥६५॥ राग बिलावल ॥जागहुजागहु नंदकुमार।रवि बहु चढे रैनि सब निघटी उघरे सकलकिवार॥ बारिबारिजलपियतियशोदा उठुमेरे प्राणअधार । घरघर गोपी दह्यो बिलोवहिं कर कंकन झनकार॥सांझ दुहन तुम कह्यो गाइको ताते होत अबार।सूरदास प्रभु उठे सुनतही लीला अगम अपार-॥६६॥तनक कनककी दोहनी देदे री. मैया । तात दुहन सीखन कह्यो मोहिं धौरी गैया॥अटपटे आसन बैठिकै गोथन कर लीनो । धार अनतही देखिकै ब्रजपति हंसिदीनो॥घर घरते आईं सबै देखन ब्रजनारी।चितै चोरि चित हरिलियो हँसि गोपबिहारी॥विप्र बोलि आसन दियो करि वेद उचारी। सूर श्याम सुरभी दुही संतन हितकारी॥६७॥अथ वन्नासुरवध ॥ राग नटनारायन॥ चले वछरुचरावनग्वाल।वृंदावनसबछाडि-

के लेगये जहँ घन ताल॥ परम सुंदरभूमिदेखत हँसत मनहिं बढाइ । आपुलागेतहांखेलन बच्छ दिये बगराइ॥जानिकै हलधर गये तहं बालबछरा पास।रोहणीनंदनहिं देखत हरष भए हुलास॥ तालरस बलराम चाख्यो मन भयो आनंद। गोपसुतसब टेरिलीने सुधि भईनँदनंद ॥कह्योबछरा हांकि ल्यावहु चलहु जहां कन्हाइ । तालरसके पानतेअतिमत्त भये बलराइ ॥ तहां छल करि दनुज धायो धरे बछरा भेष। फिरत ढूंढत श्यामको अति प्रबल बलको देखि ॥ सबै बछरनि घेरिल्याए बहुनघेरचो जाइ। दाऊकहि बालकनि टेरचो वृषभसुत न बगइ॥कह्योमन इहि अब-हिंमारौं उठे बलहिँसँभारि।टेरिलिये सबग्वालबालक गये आपु प्रचा।रि॥आगे हैइतको बिडारचो पूछ हाथ लगाइ।पकरिकै भुजसोंफिरायो तालके तर आइ॥असुर लै तरुसों पछाऱ्यो गिरचो तरु झहराइ।तालसों तरुताल लाग्यो उत्योवन घहराइ॥बछ असुरको मारि हलधर चले सबनि लिवाइ। सुर प्रभु को वीर जाकी तिहुं भुवन बडाइ ॥ ६८॥ राग देवगंधार॥बछरा चारन चले गोपाल। सुबल सुदामा अरु श्रीदामा संग लिए सब ग्वाल ॥दनुज एक तहँ आइ पहुँचेउ धरे बत्स को रूप ।हरि हलधर दिशि चितइ कह तुम जानतहो इह वीर॥ कहेब आदि दानौ इहि मारौ धारे वत्स शरीर। तब हरि सींग गह्यो यक करसों यक करसों गहे पाइ ॥ थोरेकहि बलसों छिन भीतर दीनो ताहि गिराइ । गिरत धरनि पर प्राण गए चितवत फिरि नहिं आयो श्वास॥ सूरदास ग्वालनसँग मिलि हरि लागे करन बिलास ॥ ६९ ॥ अथ बकासुरवध॥रागसारंग ॥ बन बन फिरत चरावत धेनु । श्याम हलधर संग हैं बहुगोप बालकसेनु ॥ तृषित भई सबजानिमोहन सखन टेरत बेनु । बोलि ल्यावो सुरभिगण सब चलीं यमुन जल देन ॥ सुनतही सब हाँकिल्याए गाइ करिइकठेन।हेरि देदे ग्वाल बालक कियो यमुन तट गैन॥बकासुर रचि रूपमाया रह्यो छलकरि आइ।चांचु यक पुहुमी लगाई इक अकास समाइ॥आगे बालक जातहे तेपाछे आए धाइ।श्यामसों सब कहन लागे आगे एक बलाइ॥नितहिं आवत सुरभि लीने ग्वाल गोसुत संग ।कबहुँ नहिंइहि भांति देख्यो आजकोसो रंग॥मनहिं मन तब कृष्ण जान्यो बका असुर बिहंग। चोंच फारि बिदारि डारौं पलकमें करौं भंग॥निदरि चले गुपाल आगे बकासुरके पास।सखा सब मिलि कहनलागे तुमन जियके आस॥अजहूँ नाहिं डरात मोहन बचे कितने गास।तब कह्यो हरि चलहु सब मिलि मारि करहिं बिनास॥चले सब मिलि जाइ देख्यो अगम तन बिकरार ।इत धरणि रत व्योमके बिच गुहाके आकार।पैठि बदनु बिदारिडारचो अति भए बिस्तार ।मरत असुर चिकार पारचो मारचोनंदकुमार ॥ सुनत ध्वनि सब ग्वाल डरपे अब न उबरे श्याम।हमहि बरजत गयो देखो किये ऐसे काम ॥ देखि ग्वालन बिकलता तब कहि उठे बलराम ।बका बदन बिदारि डारचो अबहिं आवत श्याम ॥ सखा हरि तब टेरिलीने सबै आवहु धाइ । चोंच फारिबका सँहारचो तुमहु करौ सहाइ ॥ निकट आए गोपबालकदेखि हरिसुखपाइ । सूर प्रभुके चरित अगणित नेति निगमन गाइ ॥ ३७० ॥ब्रजमें कोउपज्योहैयह भैया। संग सखा सब कहत परस्पर इनको गुण अगमैया ॥ जबते ब्रज अवतार धरचोइन कोउ नहिं घात करैया। किती बात यह बका बिदारचो धनि यशुमति जिन जैया॥ तृणावर्त पूतना पछारी तब अति रहे नन्हैया। सूरदास प्रभुकी लीला यह हम कत जिय पछितैया ॥ ७१ ॥ राग धनाश्री॥ बका बिदारि चले ब्रजको हरिसखा संग आनंद करत सब अंगअंग बनधातु चित्र करि॥बनमाला पहिरावत श्यामहि बारबार अंकवारिभरत धरि।कंस निपात करोगे तुमहीं हम

जानी यह बात सही परि॥पुनिपुनि कहत धन्य नँद यशुमति जिन इनको जन्मों सो धन्यघरि। कहत इहेसब जात सूरप्रभु आनँद आंसूभरितलोचनभरि॥७२॥राग कान्हरो॥व्रजबालक सब जाइ तुरतही महर महरिके पाँइ परे।एसोपूत जनों जग तुमहीं धन्यकोख जहँ श्याम धरे॥गाइ लिवाइ गए वृंदाबन चरत चलीं यमुना तट हेरि।असुर एकखगरूप रह्यो धरि बैठो तीर बाइ मुख घेरि॥ चोंच एक पुहुमी करिराखी एक रह्यो तोंगगन लगाई।हरिहमवरजत पहलेहि धायो वदन चीरि पलमाहिं गिराई॥सुनत नंद यशुमति चकृत चित सुन चकृतनरनारी।सूरदास प्रभु मन हरिलीनो तब जननी भरि लई अंकवारी॥७३ ॥अथ द्वादसमो अध्याय ॥१२ ॥अघासुरवध धनाश्री॥नंदसुत ला-डिलेहो सबव्रजजीवनप्रान।बारबारमाता कहै जागो श्यामसुजान॥यशुमति लेति बलाइभोर भयो उठो कन्हाई।संग लिये सब सखा द्वारे ठाढे बल भाई॥सुंदर वदन दिखाइये हरो नैननकोतापु। नैन कमल मुख धोइये कछु करो कलेऊ आपु ॥ माखन रोटी लेहु सद्यदधि रैनि जमायो । षट रसके मिष्टान्न सोई जेवहु रुचि आयो॥मोपै लीजे मांगिके जोइ जोइ भावे तोहिं।संग जेंवहि बल-राम तुम रुचि उपजावहु मोहिं॥तब हँसि चितए श्याम सेजते वदन उघारयो॥मानहु पयनिधि मथत फेन फटि चंद उजारयो॥सखा सुनत देखन चले मानहुं नैन चकोर ।युगल कमल मानों इंदु पर.बैठ रहे अति भोर॥तब उठि आए कान्ह मातु जल वदन पखारयो। बोलिउठे बलराम श्याम कत उठचोसवारचो॥दाऊजू कहि हँसि मिले बाहँगहि बैठाइ।माखन रोटी सद्यदही हो जेंवत रुचि उपजाइ॥जल अचयो मुख धोइ उठे बल मोहन भाई । गाइ लईं सब घेरि चले वन कुँवर कन्हाई॥टेर सुनतबलरामकी आएबालक धाइ।लैआए सब घेरिके घरतेबछरा गाइ॥सखन्ह कान्हसों.कही.आजु वृंदावन जेए। यमुना तट तृण बहुत सुरभि गण तहां चरैये॥ग्वाल गाइ सब लै गए वृंदावन समुहाइ। अतिहि सघन वन देखिके हरषि उठे सब गाइ॥कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभि गण जोरि चलावत। कोउ कोउ हेरी देत परस्पर श्याम सिखावत॥अंतर्यामी कहत जीव सब हमहिं सिखावत टेरी। श्याम कहत अबके गई पुनि धोली जहु फेरी॥कोउ मुरली कोउबेणु शब्द शृंगीको पूरे।कृष्ण कियो मन ध्यान असुर इकु बस्यो अधूरै॥ बालक बछरा राखिहो एक बार लै जाऊं। कछुक जनाऊँ अपनपो हो अबलौंरहोसुभाऊ॥असुरकुलहिंसंहारिधरणिको भार उतारों। कपटरूप रचि रह्यो दनुज यहि तुरत पछारों॥गिरि समान धरि अगम तन बैठो बदन पसारि। मुखभीतर बन घन नदी माया छल करिभारि॥पैठिगए मुखग्वाल धेनुबछरासँगलीनें। देखि महावन भूमि हरे तन द्रुम कृत कीने॥ कहनलगे सब आपुसमें सुरभी चरी अघाई। मानहु पर्वत कंदरा मुख सब गये समाई॥ मुख सब गए समाय असुर तब चोंच सबेरयो। अंधकार होयगयो मनहुँ निशि बादर घेरचो॥अतिहि उठे अकुलाइके ग्वाल बच्छसबगाइ।त्राहित्राहि कहि कहि उठपरे कहाँ हमआइ॥धरिधरि कहिकान्ह असुर यह कंदर नाहीं।अनजानत सब परे अघा-मुख भीतर माहीं ॥ जिय त्यागयो यह सुनतही अब को सकै उबारि। बातें दूनी देह धरी तब असुर न सक्यो सँभारि॥ शब्द कर्यो आघात अघासुर टेरि पुकारचो। रह्यो अधर दोउ चापि बुद्धि बल सुरति बिसारचो॥ ब्रह्मद्वार फिरि फूटिके निकसे गोकुलराइ। बाहिर आवहु निकसिके मैं करिलियो सहाइ॥बालक बछरा धेनु सबै मन अतिहि सकाने।अंधकार मिटिगये देखि जहां तहां अतुराने॥ आये बाहर निकसिके मन सब कियो हुलास। हम अज्ञान कत डरतहैं कान्ह हमारे पास॥धन्य कान्ह धनि नंद धन्ययशुमतिमहतारी। धन्यलियोअवतारकोखि धनि जियहि देतारी॥ गिरि समान तन अगम अति पन्नगकी अनुहारि। हम देखत पल

एकमें मारयो दनुज प्रचारि ॥ हरि हँसि बोले बैन संग जो तुम नहिं होते। तुम सब किए सहाय भयोतब कारज मोते॥हमहू तुमहू मिलि बैठिकैवन भोजनकरिये जाइ।वंशीवटभोजन बहुत यशुमति दियो पठाइ॥ग्वाल परमसुख पाइ कोटि मुख करत प्रशंसा।कहा बहुत जो भए सपूत तौ एकै वंसा॥ चढि विमान सुर देखही गगन रहे भरि छाइ। जै जै ध्वनि नभ करतहैं हरपि पुहुप बरषाइ॥ब्रह्मसुनी यह बात अमरवर बरनि कहानी।गोकुललीनो जनम कौन यह मै नहिंजानी। देखौं इनकी खोजलैशोच परचोमनमाह।सूर श्याम ग्वालन लियेचले वंशीवटकी छाहँ॥७२॥६

अथ तेरह अध्याय ब्रह्मा वत्स बालक हरन॥ राग धनाश्री ॥ हरप भये नंदलाल बैठि तरुछाँहकी। ग्वाल बाल संग करत कोलाहल छाँहकी॥वंशीवट अति सुखद और द्रुम पास चहूं है। सखनलिये तहां गए धेनु वन चरति कहूँ है ॥ बैठिगए सुख पाइके ग्वाल बाल लिये साथ। अति आनँद पुलकित हिये गावत हैं गुणगाथ ॥ १ ॥ अहिर लिये मधु छाक तुरत वृन्दावन आए। व्यंजन सहस प्रकार यशोदा वनहि पठाए॥श्याम कही वन चलतही मातासों समुझाइ। इतने में आए सबै देखतही सुख पाइ ॥ २ ॥ कान्ह देखि मधु छाक पुलकि अँग अंग बढायो। हरि हँसि बोले तबै प्रेमसो जननि पठायो ॥ नीके पहुँचे आनिके भलो बनो संयोग। बार बार कहि सबनको आजु करौ सुखभोग ॥ ३ ॥ वन भोजन विधि करत कमलके पात मँगाये। तोरे पात पलाश सरस दोना बहु ल्याये॥भांतिरभोजन धरे दधिलवनी मिष्टान। वनफल लये मँगाइके लागे भोजन खान ॥४॥ वन भोजन हरि करत संग मिलि सुबल सुदामा। श्याम कुँवर परसन्न महर सुत अरु श्रीदमा।श्याम सबै मिलि खातहैं लै लै कौर छुडाय।औरन देत बुलाइके डहकि आपु मुख नाइ॥५॥ ब्रह्मा देखि विचार सृष्टि कोई नई चलाई। मुहि पठयो जिहि सौंपि ताहि कहिहौ का जाई॥ देखौ धौं यहकौनहै बाल वत्स हरिलेउँब्रह्मलोक लेजाउँगो यह बुधि करि दुख देउँ ॥ ६ ॥ अतर्यामी नाथ तुरत विधिमनकी जानी।बालकदैदियेपठै धेनु वन कहू हिरानी॥जहां तहां वन ढूँढिके फिरिआये हरि पास।श्याम सखन बैठारिकरि आपुन गये उदास ॥ ७ ॥ हरि लै बालक वत्स ब्रह्मलोकहिएदुचाये।फिरिआनैजोकान्हकहूंकोउनाहिंन पाये ॥ प्रभु तबहीं जानो यहौ विधि लैगयो चुराइ। जो जेहिरँग जेहिरूपको बालकवच्छ बनाइ ॥ ८ ॥ तातें कीन्हे और ब्रह्म इदनाल उपायो। अपनो करि तेहि जानि कियो ताको मनभायो॥ उद्भाग्न मारन समर्थ मन हरि कीनो ज्ञान।अनजानेविधियहकरीनयेरचेभगवान॥९॥उहै बृद्धि उहै प्रकृति वहै पौरुप तन सनकेउहै नाउँ उहि भाउ धेनु वछगमिलिसबके॥श्यामकह्योसबसखनको ल्यावहु गोधन फेरि।संध्याको आगम भयो ब्रजतन हांकोघेरि॥१०॥सुनतग्वाललैधेनुचले ब्रजवृंदावनतें। कान्हहि बालक जानि डरे सब ग्वालमनहितें॥मध्यकियेलैश्यामकोसखाभयेचहुँ पास। वच्छ धेनु आगे किये आवत करत विलास ॥ ११॥बाजतवेणुविपाणसबैअपनेरँग गावत। मुरली ध्वनि गो रंभ चलन पग धूरि उडावत॥ मोरमुकुट शिर सोहई वनमाला पट पीत। गोरज मुखपर सोहई मनहु चन्द्रकण शीत ॥ १२ ॥देखि हरपि ब्रजनारि श्यामपर तनमनवारति। इकटक रूप निहारिरही मेटति चित आरति ॥ कहा कहैं छवि आजुकी मुख मंडित सुर धूरि। मानहु पूरन चंद्रमा कुहू रह्यो आपूरि ॥ १३ ॥ गोकुल पहुँचे जाइ गये बालक अपने घर। गोसुत अरु नर नारि मिलीं अतिहित लाइ गर॥ प्रेम सहित वे मिलतहैं जउ सुत जायो आजु। यशुमति मिलि सुतसों कहति रैनि करत केहि काजु॥ १४ ॥ मै घर आवत कहौ सखासँग कोउ

नहिं आवै। देखत बन अतिअगम डरौं वे मोहि डरपावे ॥ बारबार उर लाइके लइ बलाइ पछिताइ। कालिहिते वेई सबै ल्यावहिं गाइ चराइ ॥ १५ ॥ यह सुनिकेहरिहँसेकालिमेंरि जाइ बलैया। भूख लगी मोहिं बहुत तुरतही दे कछु मैया॥माखनदीयो हाथके यहतबलौंतुमखाहु। तातो जल है घामको तनकतेलसों न्हाहु॥ १६ ॥ तब यशुमति गहिबाँह तुरत हरि लै अन्हवाए। रोहिणि करि जिवनार श्यामबलराम बुलाए॥ जेंवत अतिरुचि पावहीं परुसति माता हेत। जेंय उठे अँचवन लियो दुहुँ कर बीरा देत ॥ १७॥ श्याम उनींदे जानि मातरचिसेज बिछायो।तापर पौढे लाल अतिहि मन हरष बढायो ॥ अघमर्दन विधिगर्व हत करत न लागीबार। सूरदास प्रभुके चरित पावत कोउ न पार॥ १८॥ राग ललित ॥हौं नाहिंन जगाइसकति सुनुसुबातसजनीरी। अपनेजान अजहुँ कान्ह मानतहैंरजनीरी॥७५॥ जबजब हौंनिकटजाति रहतिलागिलोभा।तनकी गति बिसरिजाति निरखत मुखशोभा ॥ ७६॥ बचननिकौ बहुत करति शोचतिजियठाढी। नैननि सुविचार करति देखत रुचि बाढी ॥७७॥यहिविधिवदनारविंद यशुमतिजियभावे।सूरदास सुख-की राशि कापै बरणिआवे॥ ७८॥ राग बिलावल ॥ नंदमहरके भावते जागो मेरेबारे। प्रात भयो उठि देखिये रविकिरणि उज्यारे॥ ग्वालबाल सब टेरहिं गैया बनचारन।लालउठौ मुख धोइये लागी बदन उघारन ॥ मुखते पट्ट न्यारो कियो माता करअपने। देखि बदनचकृतभईसौंतुक कि सपने ॥ कहा कहौं वह रूपकी को बरणि बतावै। सूर सु हरिके गुण अपार नंदसुवन कहावै ॥ ७९ ॥ राग ललित ॥ उठे नंदलाल सुनत जननीकी बानी । आलस भरे नैन दोउ सकल शोभाकी खानी ॥गोपीजन विथकित ह्वै चितवत सब ठाढी। नैन कर चकोर चंद्रबदन प्रीति बाढी ॥ माता जलझारी लै कमलमुख पखारचो। नैन नीर परसि करत आलसहि बिसारचो ॥सखा द्वार ठाढे सब टेरतहैंबनको।यमुनातट चलौ कान्ह चारन गोधनको ॥ सखा सहित जेंवहु मैं भोजन कछु कीनो।सूरश्याम हलधर सब सखा बोलिलीनो ॥३८०॥राग बिलावल॥ दोउ भैया जेंवत माँआगे। पुनिपुनि लै दधि खात कन्हाई और जननिपै माँगे॥अतिमीठो दधि आजु जमायो बलदाऊ तुम लेहु। देखौ धौं दधिस्वाद आपु लै ता पाछे मोहिं देहु॥बलमोहन दोउ जेंवत रुचिसों सुख लूटति नंदरानी॥सूरश्याम अब कहत अघाने अँचवन माँगत पानी ॥ ॥राग रामकली॥द्वारे टेरतहैं सब ग्वाल कन्हैया आवहु बार भई।आवहु बेगि विलम जनि लावहु गैयां दूरि गई॥इह सुनतहि दोऊ उठिधाए कछु अँचयो कछुनाहीं। कितिक दूरि सुरभी तुम छांडी बनतोपहुँचीआहीं॥ग्वाल कह्यो कछु पहुँची ह्वैहैं कछुमिलिहैंमगमाहीं।सूरश्यामबलमोहन भैया भैयन पूंछत जाहीं ॥८१॥राग बिलावल॥बन पहुंचत सुरभी लई जाई। जैहौ कहां सखनको टेरत हलधर संग कन्हाई ॥जेंवत परखलियो नहिं हमको तुम अति करी चँडाई। अब हम जैहैं दूरि चरावन तुम संग रहैं बलाई॥यह सुनि ग्वाल धाइ तहांआए श्यामहि अंकमलाई। सखाकहत यह नंदसुवनसों तुम सबके सुखदाई॥ आज चलो वृन्दावन जैए गैया चरैं अघाई। सूरदास प्रभु सुनि हरषित भए घरते छाक मँगाई॥८२॥राग बिलावल॥चलेसबवृन्दावन समुहाइ। नंदसुवन सब ग्वालन टेरत लावहु गाइ फिराइ ॥ अति आतुर ह्वै फिरे सखा सब जहँ तहँ आये धाइ। बूझत बात ग्वाल केहि कारण बोलेकुँवरकन्हाइ ॥ सुरभीबृंद तहींको हांकी औरन लेहुबोलाइ।सूरश्याम यह कही सबनिसों आप चले अतुराइ ॥८३॥राग धनाश्री॥गैयन घेरि सखा सब ल्याए।देख्यो कान्ह जात वृन्दावन याते मम अतिहरष बढाए॥ आपुसमें सब करत

कुलाहल धौरी धूमरि धेनु बोलाए। सुरभी हाँकिदेत सब जहँतहँ टेरिहिरिसुरगाए॥पहुँचिआइविपिन घन वृंदा देखत द्रुम दुख सबनिगवाँए। सूरश्याम गए अघामारिजव तादिनतेयहिबनअब आए ॥८४॥राग नटनारायणी॥ चरावत वृंदावन हरि धेनुग्वाल सखासबसंगलगाएखेलतहैंकरिचैनु॥कोउ गावत कोउ मुरलि बजावत कोउ विषान कोउ वेनु।कोउनिर्ततकोउउघटितारद जुरि व्रजबालक सेनु॥त्रिविध पवन जहँ वहत निशिदिन सुभग कुंज घन ऐनु। सूरश्याम निजधामविसारत आवत यह सुख लेनु॥८५॥राग धनाश्री॥वृंदावन मोको अतिभावत। सुनहु सखातुमसुबलश्रीदामा व्रजते वन गऊ चारन आवत॥ कामधेनु सुरतरु सुख जितने रमासहित वैकुंठभोलावत। यह वृंदावन यह यमुनातट ये सुरभी अति सुखद चरावत॥ पुनिपुनि कहत श्याम श्रीमुखते तुम मेरे मन अतिहिसुहावत। सूरदास सुनि ग्वाल चकृत भये यह लीलाहरिप्रगट देखावत॥८६॥राग बिलावल॥ ग्वालसखा कर जोरि कहतहैं हमहि श्याम तुम जिनि बिसरावहु।जहांजहां तुम देह धरतहो तहां तहां जनि चरन छुडावहु॥ व्रजतेतुमहि कहूं नहि टारौं इहै पाइ मैंहूं व्रज आवत। यह सुख नाहीं भुवन चतुर्दश यहि व्रज यह अवतार बतावत॥ अवर गोप जे बहुरि चलेघरतिनसोंकहिमुखछाक मँगावत। सूरदासप्रभु गुप्त बात सब ग्वालनसों कहिकहिसुख पावत॥८७॥राग बिलावल॥कन्हैया हेरिदे सुभगसांवरे गातकी मैं शोभा कहत उजाउँ।मोरपंख शिरमुकुटकी मुखमटकनिकी बलि जाउँ॥कुंडल लोल कपोलनि झांई विहँसनि चितहिचुरावै। दशनदमक मोतिन्ह लर ग्रीवाशोभा कहत न आवै॥उरपरपदिक कुसुम वनमाला अँग धुकधुकी विराजै। चित्रित बाहु पँहुचिआ पौंचे हाथ मुरलिका छाजै॥कटि पटपीतमेखला मुकुलित पाइन नूपुरु सोहै। आसपास वर ग्वालमंडली देखत त्रिभुवन मोहै॥सब मिलि आनंद प्रेम बढावत गावत गुणगोपाल।यह सुख देखत श्याम संगको सूरदास सब ग्वाल॥८८॥कान्हकांधे कामरि लकुट लिएकर घेरैहो।वृन्दावनमेंगऊ चरावै धौरी धूमरि टेरैहो॥ लिये लिवाइग्वाल बुलाइ जहँतहँ वनवन हेरैहो।सूरदास प्रभुसकललोकपति पीतांबर कर फेरैहो॥८९॥सोई हरि कांधे कामरीकाछे कियेनाँगेपाइन गाइनकी टहलकरतहैं। त्रिभुवनपतिदिनपतिनारीनरपतिपंछिनपति रविशशि जेहि डरतहैं ॥ शिवविरंचिध्यानधरतभक्त त्रिविधि ताप हरत तेहि तन उधरतहैं।सूरदास प्रभुकेगुण निगम नेति नेति गावत तेई वन विहरतहैं॥२९०॥ राग नट॥छाक लेन जे ग्वाल पठाए। तिनसों बूझति महरि यशोदा छांडि कन्हैयहि आए॥हमहि पठायदिये नँदनंदन भूखे अति अकुलाए।धेनु चरावतहैं वृंदावन हम यहि कारण आए॥ यह कहि ग्वाल गए अपने गृह वनको खबरि सुनाए। सूर श्यामबलराम प्रातही अध-

ग्वाल सब गृह आए गोपालहि बेर भई।अतिहिअबेर भई

हींते भोजन करिराख्यो उत्तम दूध जँमाई। ना जानों कान्ह कौन वन चारत अतिहि अबेर लगाई॥राज्य करैं वे धेनु तुम्हारी नंदहि कहत सुनाई। पंचकी भीख सूर बलमोहन कहति यशोदा माई॥९२॥राग सारंग॥जोरतिछाकप्रेमसोंमैया।ग्वालन बोलिलएअधजेवतउठिदौरेदोउ भैया॥तबहीते भोजननहिकीनो चाहतदियो पठाई।भूखेभए आजु दोउ भैया आपहि बोलिमँगाई॥सदमाखन साजो दधि मीठो मधु मेवापकवान। सूर श्यामको छाक पठावत कहति ग्वारिसों जान॥९३॥राग सारंग॥घरहीकी यक ग्वारि बोलाई।छाक सामग्री सबै जोरिकै वाके कर दै तुरत पठाई॥कह्योताहि वृन्दावन जैयै तू जानति सब प्रकृति कन्हाई। प्रेमसहित लै चली छाक यह कहाँ वैहैं भूखे दोउ भाई॥तुरत जाइ वृन्दावन पहुँची ग्वालबाल कहुँ

कोउ न बताई।सूर श्यामको टेरति डोलति कत हौ लाल छाक में ल्याई ॥ ९४॥राग टोडी॥आजु कौने धौं वन चरावत गाइ कहां भई अबेर। बैठे कहां सुधि लेउँ कौन विधि ग्वारि करत अवसेर॥ वृन्दावन दे आदि सकल वन ढूँढ्यो जहां गायनकी टेर। सूरदास प्रभु रसिक-शिरोमणि कैसे दुरत दुराये कहो धौं डुँगरनकी ओट सुमेर ॥ ९५ ॥ छाक लिये शिर श्याम बुलावति। ढूंढति फिरति ग्वारि नीकेकरि कहूं भेद नहिं पावति॥ टेर सुनत काहूकी श्रवणनि तहीं तुरत उठि धावति। पावति नहीं श्याम बलरामहिं व्याकुल ह्वै पछितावति ॥ वृंदावन फिरिफिरिदेखतिहै बोलि उठे तहां ग्वाल।सूरश्याम बलराम इहाँ हैं छाक लेहु किन लाल ॥९६॥ ॥राग कान्हरो॥फिरत वन वन वृंदावन वंशीवट संकेत वट नटनागर कटि काछे खौरि केसरिकी किये। पीत वसन चंदन तिलक मोरमुकुट कुण्डल श्यामघन यह छबि लिये॥तनु त्रिभंग सुगंध अंग निरखि लज्जत रति अनंग ग्वाल बाल लिये संग प्रमुदित सबहिये। सूर श्याम अति सुजान मुरलीध्वनि करत गान व्रजजनमनकोसुख दिये॥९७॥हरिको टेरति फिरति गुआरि।आईलेहुतुम छाक आपनी बालकवल बनवारि॥आजुकलेऊकरत बन्यो नहिं गैयन सँग उठिधाये।तुमकारण यन छाकयशोदा मेरेहि हाथ पठाए॥यह बानी जब सुनी कन्हैया दौरिगए तेहिकाजू।सूरश्याम कह्यो नीके आई भूख बहुतही आजू॥९८॥बहुत फिरी तुमकाज कन्हाई।टेरिटेरि में भईबावरी दोउ भैया तुम रहे लुकाई॥जे सब ग्वाल गये व्रजघरको तिनसोंकहितुम छाक मँगाई।लवनीदधि मिष्टान्न जोरिकै यशुमति मेरे हाथ पठाई ॥ ऐसी भूखमांझ तू ल्याई तेरी केहिविधि करौ बडाई। सूर श्याम सब सखन पुकारत आवहु क्यों न छाक है आई।।९९॥रागसारंग॥गिरिपर चढि गिरिधरधर टेरे। अहो सुबल श्रीदामा भैया ल्यावहु गाइ खरिकके नेरे ॥ आई छाक अबार भई है नेसुकु धैया पिअहु सबेरे। सूरदास प्रभु बैठि शिलनिपर भोजन करैं ग्वाल चहुँफेरे॥४००॥ राग नट॥ बिहारी लाल आवहु आई छाक। भई अबार गाइ बहुरावहु उलटावहु दे हांक॥ अर्जुन भोज अरु सुबल श्रीदामा मधुमंगल इकताक। मिलि बैठे सब जेंवन लागे बहुत बन्यो कहि पाक ॥ अपनी पत्रावलि सब देखत जहँ तहँ फेनी पिराक। सूरदास प्रभु खात ग्वालसँग ब्रह्म-लोक यह धाक ॥ १ ॥ राग सारंग॥ आई छाक बुलाए श्याम। यह सुनि सखा सबै जुरिआए सुबल सुदामा अरु श्रीदाम ॥ कमलपत्र दोना पलाशके सब आगे धरि परुसत जात। ग्वाल-मंडलीमध्य श्यामघन सब मिलि भोजन रुचिकर खात॥ऐसी भूखमांझ इह भोजन पठैदियो करि यशुमति मात। सूर श्याम अपनो नहिं जेंवत ग्वालनकरते लैलै खात॥ २॥सखनसंग हरि जेंवत छाक।प्रेमसहित मैया दैपठए सबै बनाएहैं एकताक॥सुबल सुदामा श्रीदामासँगसबमिलि भोजन रुचिसों खात। ग्वालनकरते कौर छुडावत मुख लै मेलि सराहतजात ॥ जो सुख कान्ह करत वृंदावन सो सुख नहीं लोकहूं सात। सूर श्याम भक्तनवश ऐसे व्रजहि कहावतहैं नँदतात ॥ ३ ॥ ग्वालमंडलीमें बैठेहैं मोहन वडकी छहियाँ दुपहरीकी बिरियां संग लीने। एक मथन दोहनी दूध एक बँटावत फल चबैने॥ एकनिकर हरि झगरि लेत ऐसे बनि आपनी [illegible] आसनकीने। जेंवतहैं अरु गावतकान्हसारंगीकी तान लेत सखनिके मध्य विराजत [illegible] छीने।सूरदास प्रभुको मुख निरखत सूर रीझि हेरैं सुमननि बरषत सभीने॥४॥[illegible] छंडावत। जूठो लेत सबनके मुखको अपने मुख लै नावत ॥पटरसके पक्वान [illegible] नहिं रुचि पावत। हाहा करिकारि माँगिलेतहैं कहत मोहिं अति भावत ॥ [illegible]

जाने जाते आप बंधावत। सूर श्याम स्वपने नहिं दरशत मुनिजनध्यानलगावत ॥५॥ ब्रजवासी पटतर कोउ नाहिं।ब्रह्मसनकशिवध्यान न पावत इनकी जूठनि लैलैखाहिं॥धन्यनंद धनिजननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई । धन्यधन्य वृंदावनके तरु जहां विहरत त्रिभुवनके राई ॥ हलधर कह्यो छाँक जेंवत सग मीठो लगत सराहतजाई । सूरदास प्रभु विश्वंभर हैं ते ग्वालनके कौर अवाई॥६॥राग सारंग॥शीतल छहियों श्याम बैठे जानिभोजनकीबेरिआ॥वामभुजा सखाअंशपर दीने लीने दक्षिणकर द्रुमडरिआ॥चलिये जू नेक गाइनघेरौ जू बलगमसोंकहतबोलिलेहु अपनी ओरिआ । सूरदास प्रभु बैठे कदमतर गइयाको दूध निकरिया॥७॥राग नटनारायण॥ विधि मनहीमनशोच परयो।गोकुलकी रचनासब देखत अति जियमांहिडरयो॥मैंविरंचिविरच्यो जग मेरो यह कहि गर्व बढायो । ब्रज नर नारि ग्वालबालक कहि कौनेठाट रचायो॥वृंदावनबट सघन वृक्षतर मोहन सबै बोलाये । सखासंग मिलिकरि भोजी विधि विधि मन भरम उपाये॥ धेनु रही बनमें भूली द्वै बालक भ्रमत न पाये।याते श्याम अतिहि अतुराने तुरत तहां उठिधाये॥ बालक बच्छ हरे चतुरानन ब्रह्मलोक पहुँचाये ॥ सूरदास प्रभु गर्वविनाशन नवकृत फेरि बनाये ॥८॥राग सारंग॥जेंवतअंक गाइविसराई।सखाश्रीदामाकहतसबनिसोंछोकहिंमैंतुमरहेभुलाई । धेनु नहीं देखियत कहुनियरे भोजनहीमें सांझलगाई।सुरभि काज जहँ तह उठि धाये आपुतहोंउठि चले कन्हाई ॥ ल्यायेग्वाल घेरिगोगोसुत देखि यशमनहरष बढाई । सूरदास प्रभु कहत चलौ घर बनमे आजु अबार कराई ॥९॥राग गौरी ॥ ब्रजहि चलौ आई अबसांझ।सुरभीसबैलेहुआगे करि रैनि होइपुनि बनही मांझ॥भली कही यह बातकन्हाई अतिहि सघनआरण्यउजारि।गैयां हांकि चलाई ब्रजको औरग्वाल सबलिए पुकारि॥निकसिगएबनते सबबाहिर अतिआनंद भए सब ग्वाल।सूरदास प्रभुमुरलि बजावत ब्रज आवत नटवर गोपाल॥४१०॥राग कल्याण॥सुंदरश्याम सुंदर वर लीला सुन्दर बोलन वचनरसाल॥सुंदर चारु कपोल विराजत सुंदरउरज बनीवनमाल॥ सुंदर चरण सुंदर हैं नखमनि सुंदर हैं कुंडल मकराल । सुन्दर मोहन नैन चपल किए सुन्दर ग्रीवा बाहु विशाल ॥ सुंदर मुरली मधुर बजावत सुंदर हैं मोहन गोपाल । सूरदास जोरी अति राजति ब्रजको आवत सुंदर चाल ॥ ११ ॥ सुंदर श्याम सखा सब सुंदर सुंदर भेष धरे गोपाल । सुंदर पथ सुंदर गति आवनि सुंदर मुरली शब्द रसाल ॥ सुंदर लोग सकलब्रज सुन्दर सुंदर हलधर सुंदर चाल । सुंदर वदन विलोकनि सुंदर सुंदर गुण सुंदर वनमाल॥ सुन्दर गोप गाइ अति सुंदर सुंदर गुण सब करत विचार।सूर श्यामसँगसबसुख सुंदर सुंदर भक्तहेत अवतार ॥ राग बिलावल॥सुंदर ढोटा कौन को सुंदर मृदुबानी ।कहि समुझायो ग्वालिनी जायो नँदरानी॥सुन्दरि मृगनि देखकै बनबसा लजानी।सुंदर नैन निहार लियोकमलनको पानी ॥ सुन्दरता तिहुँलोककी ब्रजपुरमें आनी । सूरदास यशुमति भईसुन्दरता रजधानी । ॥ १२ ॥ राग गौरी ॥ देखि सखी बनते जु बने ब्रज आवतहैं नँदनदन । शिखी शीश मुखमुरलि बजावत बन्यो तिलक उर चंदन ॥कुटिल अलक मुख चंचल लोचन निरखत अतिआनंदन । कमल मध्य मनो द्वै खग खंजन बँधे आइ उडि फंदन ॥अरुण अधर छवि दशन विराजति जब गावत कल मंदन । मुक्ता मनो लालमणिमें पुट धरे सुरकि वरबंदन॥ गोपवेष गोकुल गोचारतहैं प्रभु असुरनिकंदन।सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेति नेति श्रुतिछंदन॥१३ मेरे नैन निरखिसुख पावत।संध्या समै गोपगोधनसँग बनते बने लालब्रज आवत ॥ बलियलि जाउमुखारविंदकी मंद

मंद गति धावत । नटवर रूप अनूप छबीलो सबहीके मन भावत॥ गुंजा उर बनमाल मुकुट शिर वेणु रसाल बजावत। कोटिकिरणमणि मुखपरकासतउडपति कोटि लजावत॥ चंदनखौरि काछनी-की छबिसबकेमनहिं चुरावत।सूर श्याम नागरनारिनको बासरविरहनशावत१४॥राग केदारो॥शोभा कहत कहे नहिं आवै । अचवत अति आदर लोचनपुट मनन रूपको पावै॥ सजलमेघ घनश्याम सुभगवपु तडितवसन उरमाल।शिखीशिखिर तनु धातु विराजतिसुमनसुगंधप्रवाल॥ कछुक कुटि-लको विपिनसघन शिर गोरजमंडित केश । शोभित मनु अंबुजपरागरस राजत अली सुदेश ॥ कुंडलकिरिन कपोलकुटिल छबि नैन कमलदल मीन । प्रतिप्रति अंगअंग कोटिक छबि सुनुसखि परमप्रवीन ॥ अधर मधुर मुसुकानि मनोहर कोटि मदन मनहीन ।सूरदास जहां दृष्टिपरतहै होत तहीं लवलीन॥१५॥ बहुरि बाल वत्सहरन॥ राग धनाश्री॥ब्रजकीलीला देखि ज्ञानु विधिको भयो भारी। त्रिभुवननायक आनि भयो गोकुलअवतारी ॥ खेलत ग्वालनसंग रंगआनंदमुरारी । शोभित सँग ब्रजबाल लाल गोवर्धनधारी ॥ घरघरते छाकें चलीं मानसरोवरतीर। नारायण भोजन करैं बाल-क संग अहीर ॥ १६॥व्यंजन सकल मँगाइ सखनिके आगे राखे। खाटे मीठे स्वाद सबै रस लैलै चाखे॥ रुचिसों जेंवत ग्वाल सब लैलै आपुन खात॥भोजनको सब स्वाद लै कहत परस्पर बात ॥ १७ ॥देखत गणगंधर्व सकल सुरपुरके बासी । आपुसमें वे कहत हँसत एई अविनासी ॥ देखि सबै अचरजु भए कहौ ब्रह्मसों जाइ । जाको अविनाशी कहत सो ग्वालन सँग खाइ ॥ ॥ १८ ॥इह सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत वृन्दावन आयो । देखि सरोवर सलिल कमल तिहि मध्य सुहायो ॥ परम सुभग यमुना बहै तहां त्रिविध समीर । पुहुपलता द्रुम देखिकै चकृतभयो मतिधीर॥१९ ॥अतिरमणीक कदंबछँाह रुचिपरमसुहाई। राजतमोहनमध्य अवलि बालक छबिपाई ॥ प्रेममगन ह्वै परसपर भोजनकरत गुपाल । ल्यावहु गोसुत घेरिकै प्रभु पठएद्वै ग्वाल॥४२०॥बनउपवन सब ढूंढिसखा हरिपैफिरिआए। बछरा भए अदृष्ट कहूंखोजत नहिं पाए॥ सबै सखा बैठेरहौ मैंदेखौंधौं जाइ। बच्छहरनजियजानिप्रभुआपुगएबहराइ॥२१॥जबगोविंद गए दूरि बालकन हरचो विधाता । लैहैंतुरतमँगाइआपुहैहैंजगत्राता॥ब्रह्मलोकब्रह्मागयोबालकबच्छा संग।प्रभुकी लीला गमनहीं कियो गर्व अतिअंग॥२२॥तबचिंतामणि चितैचित्तइक बुद्धिबिचारी। बालक बच्छ बनाइ रचे वेहीउनिहारी॥ करत कुलाहल सब गए ब्रजघर अपने धाइ। अतिआदर करिकरि लिये अपनीअपनीमाइ ॥ २३॥ब्रह्माकियोबिचारजाय ब्रज गोकुलदेख्यो । करिहैंशोकु सँतापजाइपितुमातहिदेखों ॥ आए तहांविधनाचले घरघर देखौ आइ । संध्या समै होत कौतूहल जहँ तहँ दुहिये गाइ ॥ २४ ॥ यह गोकुल किधौं और किधौं हौंही भ्रमभूल्यो । यहअविनाशी होइ ज्ञान मेरे भ्रम झूल्यो॥अंतर्यामी जानिधौं हरी बच्छ लैआइ।जगतपिता में सभ्रम्योगएलोक फिरि धाय ॥ २५॥ देख्यो जाइ जगाइ बाल गोसुत जहँ राखे । विधि मन चक्रित भये बहुरि ब्रजको अभिलाखे ॥ छिन भूतल छिन लोकमें छिन आवे छिन जाइ । ऐसेहि करत वरपदिन बीतो थकित भये विधि पाइ ॥ २६ ॥ तब हरि प्रगट्यो जानि ज्ञान चितमें जब आयो । धृगधृग मेरी बुद्धि कृष्णसों वैर बढायो॥लैगोसुत गोपालशिशु शरनगयोह्वैसाधु। चारिहु मुख अस्तुति करत प्रभुक्षमो मोहिं अपराधु ॥२७ ॥ अनजानत यह करी मैंतुमसों बरि आई । ये मेरे अपराधक्षमहु त्रिभुवनके राई॥ ज्यों बालक अपराधशत जननी लेति सँभारि।शरन गए राखत सदा अवगुण सकल विसारि ॥ २८॥ जोरउदित खद्योत ताहि क्यों तिमिर नशावै।

जानें जाते आप नँचावत। सूर श्याम स्वपने नहिं दरशत मुनिजनध्यानलगावत ॥५॥ ब्रजवासी पटतर कोउ नाहिं।ब्रह्मसनकशिवध्यान न पावत इनकी जूठनि लैलैखाहिं॥ धन्यनंद धनिजननि यशोदा धन्य जहा अवतार कन्हाई । धन्यधन्य वृंदावनके तरु जहा विहरत त्रिभुवनके राई ॥ हलधर कह्यो छोंक जेवन सग मीठो लगत सराहतजाई । सूरदास प्रभु विश्वभर हैं ते ग्वालनके कौर अघाई॥६॥राग सारग॥शीतल छहियाँ श्याम बैठे जानिभोजन कीबरिआ।वामभुजा सखा-अंशपर दीने लीन दक्षिणकर द्रुमडरिआ॥चलिये जू नेक गाइनघेरों ज वलरामसोकहतबोलि-लेहु अपनी ओरिआ । सूरदास प्रभु बैठे कदमतर गइयाको दूध निकरिया॥७॥राग नरनारायण॥ विधि मनहीमनशोच परयो।गोकुलकी रचनासब देखत अति जियमाहिडरचो।मैंविरचिविरच्यो जग मेरो यह कहि गर्व बढायो । ब्रज नर नारि ग्वालबालक कहि कौनेठाट रचायो॥वृंदावनघट सघन वृक्षतर मोहन सबै बोलाये । सखासग मिलिकरि भोजी विधि निधि मन भरम उपाये॥ धेनु रहीं वनमें भूली ह्वै बालक भ्रमत न पाये।याते श्याम अतिहि अतुराने तुरत तहा उठिधाये॥ बालक बच्छ हर चतुरानन ब्रह्मलोक पहुँचाये ॥ सूरदास प्रभु गर्वविनाशन नवकृत फेरि बनाये ॥८॥राग सारग ॥जेंवतब्रज गाइविसराई।सखाश्रीदामाकहतसबनिसाछाकहिमैंतुमरहेंभुलाई । धेनु नहीं दखियत कहुनियरे भोजनहीमें साझलगाई।सुरभि काज जहँ तह उठि धाये आपुतहाउठि चले कन्हाई ॥ ल्यायेग्वाल घेरिगोगोसुत देखि यशमनहरष बढाई । सूरदास प्रभु कहत चलौ घर वनम आजु अवार कराई ॥९॥राग गौरी ॥ व्रजहि चलौ आई अवसाझ।सुरभीसबैलेहुआगे करि रैनि होइपुनि वनही माझ॥भली कही यह बातकन्हाई अतिहि सघनआरण्यउजारि।गैया हाकि चलाई ब्रजको औरग्वाल सबलिए पुकारि॥निकसिगएवनते सबबाहिर अतिआनद भए सब ग्वाल।सूरदास प्रभुमुरलि बजावत ब्रज आवत नटवर गोपाल॥१०॥राग कल्याण॥सुदरश्याम सुदर वर लीला सुन्दर बोलत वचनरसाल॥सुदर चारु कपोल विराजत सुदरउरज बनीवनमाल॥ सुदर चरण सुंदर हैं नखमनि सुदर हैं कुडल मकराल । सुन्दर मोहन नैन चपल नित सुन्दर ग्रीवा बाहु विशाल ॥ सुदर मुरली मधुर बजावत सुदर हैं मोहन गोपाल । सूरदास जोरी अति राजति ब्रजको आवत सुदर चाल ॥ ११ ॥ सुदर श्याम सखा सब सुदर सुदर भेष धरे गोपाल । सुदर पथ सुदर गति आवनि सुदर मुरली नाद रसाल ॥ सुदर लोग सकल ब्रज सुन्दर सुदर हलधर सुदर चाल । सुदर वदन विलोकनि सुदर सुदर गुण सुदर वनमाल॥ सुन्दर गोप गाइ अति सुदर सुदर गुण सब करत विचार।सूर श्यामसँगसबसुख सुदर सुदर भक्तहेत अवतार ॥ राग बिलावल॥सुदर ढोटा कौन को सुदर मृदुवानी ।कहि समुझायो ग्वालिनी जायो नँदरानी॥सुन्दरि भृगति देखेबनघटा लजानी।सुदर नैन निहार लियोकमल-नको पानी ॥ सुन्दरता तिहुँलोककी व्रजपुरमें आनी।

छ ब्रजबालक करतचले मधुरे सुर गान॥ पूरव प्रीति १२ ॥ राग गौरी ॥ देखि सूर्ज वनिता अरु धेनु । सूरज प्रभु अच्युत व्रज मगल घरही घर लाग सुख देनु॥१३॥राग कान्हरा ॥ आजवने बनतेब्रज आवत । नानारगसुमनकी माला नदनँदन उरपर छवि पावत ॥ सग गोप गोधन सग लीने नाना गति कौतुक उपजावत । कोउ गावत कोउ नृत्य करतकोउ उघटतकोऊ ताल बजावत॥रँभतगाइ बच्छहित सुधि करि प्रम उमँगि थन दूध चुवावत । यशुमतिबोलीउठिहरषिनहैकान्हो धेनुचराये आवत ॥इतनीकहतआइगये मोहन जननीदौरि हियेलेलावत । सूरश्यामकेकृत यशुमतिसों ग्वालबाल कहि प्रगट सुनावत ॥ १२ ॥

मंद गति धावत । नटवर रूप अनूप छबीलो सबहीके मन भावतै॥ गुंजा उर वनमाल मुकुट शिर वेणु रसाल बजावत। कोटिकिरणमणि मुखपरकासतउडपति कोटि लजावत॥चंदनखौरि काछनी-की छविसबकेमनहिं चुरावत।सूर श्याम नागरनारिनको वासरविरहनशावत१४॥राग केदारो॥शोभा कहत कहे नहिं आवे । अचवत अति आदर लोचनपुट मनन रूपको पावै॥ सजलमेघ घनश्याम सुभगवपु तडितवसन उरमाल।शिखीशिखिर तनु धातु विराजतिसुमनसुगंधप्रवाल॥ कछुक कुटि-लको विपिनसघन शिर गोरजमंडित केश । शोभित मनु अंबुजपरागरस राजत अली सुदेश ॥ कुंडलकिरिन कपोलकुटिल छवि नैन कमलदल मीन ।प्रतिप्रति अंगअंग कोटिक छवि सुनुसखि परमप्रवीन ॥ अधर मधुर मुसुकानि मनोहर कोटि मदन मनहीन ।सूरदास जहां दृष्टिपरतहै होत तहीं लवलीन॥१५॥ बहुरि बाल वृत्सहरन॥ राग धनाश्री॥ब्रजकीलीला देखि ज्ञातु विधिको भयो भारी। त्रिभुवननायक आनि भयो गोकुलअवतारी ॥ खेलत ग्वालनसंग रंगआनंदमुरारी । शोभित सँग ब्रजबाल लाल गोवर्धनधारी ॥ घरघरते छाकैं चलीं मानसरोवरतीरा नारायण भोजन करें बाल-क संग अहीर ॥ १६॥व्यंजन सकल मँगाइ सखनिके आगे राखे। खाटे मीठे स्वाद सबै रस लैलै चाखे॥ रुचिसों जेंवत ग्वाल सब लैलै आपुन खात॥भोजनको सब स्वाद लै कहत परस्पर बात ॥ १७ ॥देखत गणगंधर्व सकल सुरपुरके वासी । आपुसमें वे कहत हँसत एई अविनासी ॥ देखि सबै अचरज भए कह्यौ ब्रह्मसों जाइ । जाको अविनाशी कहत सो ग्वालन संग खाइ ॥ ॥ १८ ॥इह सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत वृन्दावन आयो । देखि सरोवर सलिल कमल तिहि मध्य सुहायो ॥ परम सुभग यमुना बहै तहां त्रिविध समीर । पुहुपलता द्रुम देखिकै चक्रतभयो मतिधीर॥१९ ॥अतिरमणीक कदंबछाँह रुचिपरमसुहाई । राजतमोहनमध्य अवलि बालक छविपाई ॥ प्रेममगन ह्वै परसपर भोजनकरत गुपाल । ल्यावहु गोसुत घेरिकै प्रभुपठएद्वै ग्वाल॥४२०॥वनउपवन सबढूँढिसखा हरिपैफिरिआए। बछरा भए अदृष्ट कहूंखोजत नहिं पाए॥ सबै सखा बैठेरहो मैंदेखौंधौं जाइ। वच्छहरनजियजानिप्रभुआपुगएवहराइ॥२१॥जबगोविंद गए दूरि बालकन हरयो विधाता । लैहेंतुरतमँगाइआपुह्वैहेंजगत्राता॥ब्रह्मलोकब्रह्मागयोबालकवच्छा संग।प्रभुकी लीला गमनहीं कियो गर्व अतिअंग॥२२॥तबचिंतामणि चितैचित्तइक बुद्धिविचारी। बालक बच्छ बनाइ रचे वेहीउनिहारी॥ करत कुलाहल सब गए ब्रजघर अपने धाइ। अतिआदर करिकरि लिये अपनीअपनीमाइ ॥ २३॥ब्रह्माकियोविचारजाय ब्रज गोकुलदेख्यो । करिहैंशोकु सँतापजाइपितुमातहिदेखौं ॥ आए तहांविधनाचले घरघर देखी आइ । संध्या समै होत कौतूहल जहँ तहँ दुहिये गाइ ॥ २४ ॥ यह गोकुल किधौं और किधौं हौंही भ्रमभूल्यो । यहअविनाशी होइ ज्ञान मेरे भ्रम झूल्यो॥अंतर्यामी जानिधौं हरो बच्छ लैआइ।जगतपिता मैं संभ्रम्योगएलोक ... नाल गोसुत जहँ राखे। विधि मन चक्रितभये बहुरि

संग पयपान करावत अपनी हाथ लयो। शंकर ध्यान ... आवे छिन जाइ । ऐसेहि ... भाग अहो भाग नंदसुत तपको पुंज लियो । लीला सुभग सूरकी ब्रजम ... ॥ ॥४५०॥राग जयतश्री॥वदत विरंचि विशेप सुकृत ब्रजवासिनके। श्रीहरि जिनके भेप सुकृतब्रजवा सिनके॥ज्योतिरूप जगनाथ जगत् गुरु जगत् पिता जगदीश । योग यज्ञ जप तप में दुर्लभ गइ-यां गोकुल ईश॥इक इक रोम विराट कोटि तनकोटिकोटि ब्रह्मंड। सो लीन्हो अवछंग यशोदा अपने भरि भुजदंड ॥ जाके उदर लोक त्रय जल थल पंचतत्त्व चौखानि। सो बालक ह्वै झूलत पलना यशुमति भवनहि आनि॥क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामे बलि छलि

दीपकवहुत प्रकाशनरनिसम क्यों कहवावै ॥ मैंब्रह्मा इकलोकको ज्यों गूलरिविच जीव। प्रभु तुमरे इक रोमप्रति कोटि ब्रह्म अरु शीव ॥ २९ ॥ मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया। मिथ्या है यह देह कहो क्यों हरि विसराया॥ तुम जाने विन जीव सव उत्पति प्रलय समाहिं। शरण मोहिं प्रभु राखिये चरणकमलकी छांहिं ॥ ४२० ॥करहु मोहिं ब्रजरेणु देहु वृंदावन वासा। मांगों यहै प्रसाद और नहिं मेरे आसा ॥जोइ भावै सो करहु तुम लता सलिल द्रुम गेहु। ग्वाल गाइको भृत्य करौ मनौ सत्यव्रत एहु ॥ २१ ॥जो दरशन नर नाग अमरसुरपतिहू न पायो। खोजत युग गए वीति अंत मोहू न दिखायो ॥ यह ब्रज परम नित्य है मैं अव समुझो आइ। वृंदावन रज ह्वै रहौं मोहिं नहिं लोक सुहाइ॥२२॥मांगत वारंवार शेप ग्वालनिको पाऊं। आप लियो कछु जानि भक्ष करि उदर जिआऊं॥ अवमेरे निज ध्यान यह गहिहौं जूठनि खाइ। और विधाताकीजिय मैं नहिंतेछोंडौं पाइ ॥ २३॥ तव प्रभु वोले आपु वचन मेरो अव मानो। और काहि विधि करों तुमहिंते कौन सयानो ॥तुम ज्ञाता हौ कर्म धर्मके तुमते सव संसार। मेरी माया अति अगम कोउ न पावै पार ॥ २४ ॥ श्रीमुख वाणी कहत विलंव अव नेक न लावहु। ब्रज परिक्रमा करहुदेहको पाप नशावहु ॥तुरत जाहु कही लोकको यहिविधि करि मनुहार। ब्रह्मा करि अस्तुति चले हरि दीनो उर हार ॥२५॥ धनि वछरा धनि वाल जिनहिते दरशन पायो। डर मेरो गयो धन्य कृष्ण माला पहिरायो ॥ धनि यशुमति जिन वश किएअविनाशी अवतार। धनि गोपी जिनके सदन माखन खात मुरार॥२६॥धनि गोपी धनिग्वाल धन्य ये ब्रजके वासी। धन्य यशोदा नंद भक्तिवश किये अविनाशी ॥धनि गोसुत धनि गाइ ये कृष्ण चराये आपु। धनि कालिंदी मधुपुरी जा दरशननशै पापु॥२७॥ मथुरा आदि अनादि देह धरि आपन आए। धनि देवै वसुदेव पुत्र तुम मांगे पाए॥चारि वदन मैं कहा कहौं सहसानन नहिंजान। गाइ चरावत ग्वालसँग करत नंदकी आन ॥२८॥ योगीजन अवराधिफिरत जिहिध्यान लगाए। तेब्रजवासिन संग फिरत अति प्रेम वढाए ॥ वृंदावन ब्रजको महतु कापै वरण्यो जाइ। चतुरानन पग परशिकै लोक गयो सुख पाइ ॥ २९ ॥ हरि लीनो अवतार कहत शारदनहिं पावै। सतगुरुकृपा प्रसाद कछुक ताते कहिआवै ॥ सूरदास कैसे कहै महापतित अवतार। शेप सहसमुख जपतहै सोउनपावैपार॥४४०॥राग सारंग॥कह्योगोपालचरतहैंगोसुत हमसववैठिकलेऊकीजै।शीतल छांह वृक्षकी सुंदर निर्मल यमुनाको जल पीजै॥भोजनकरतसखा इक वोल्यो वछरू कतहूं दूरि गये। यदुपति कह्यो घेरि हौंआनों तुम जेंवहु निश्चितभए ॥ चतुराननवछरा लै गोए फिरिमाधौआए वहि ठांऊं।वालकवच्छहरे लोकेश्वर वारवार टेरत लै नाऊं॥जान्यो छल ब्रह्मा मनमोहन गोपी गाइ वहुत दुख पैहैं। तजिहैंप्राण सवैमिलिसुतकोनिश्चयगृहजो आजु न जैहैं ॥ वाहीभांति वरन वपु वेसहिशिशुसवरचे नंदसुत आन। आगेलत[illegible]नाचे सरदास [illegible] ॥ [illegible] अधिक ताहूते [illegible] वनते [illegible] पाछ ब्रजवालक करतचले मधुरे सुर गान॥पूरव प्रीति [illegible]तलक [illegible] ब्रज वनिता अरु धेनु। सूरज प्रभु अच्युत ब्रज मंगल घरही घर लागे सुख देनु॥४१॥राग कान्हरो॥ आजवने वनतेब्रज आवत। नानारंगसुमनकी माला नंदनंदन उपर छवि पावत ॥ संग गोप गोधन सँग लीने नाना गति कौतुक उपजावत। कोउ गावत कोउ नृत्य करतकोउ उघटतकोऊ तालवजावत॥रांभतगाइ वच्छहित सुधि करि प्रेम उमँगि थन दूध चुवावत। यशुमतिवोलीउठिहरपिनैंह्वकान्हो धेनुचराये आवत ॥ इतनीकहतआइगये मोहन जननीदौरि हियेंलैलावत। सूरश्यामकेकृत यशुमतिसों ग्वालवाल कहि प्रगट सुनावत ॥ ४२ ॥

गोविंद चलत देखियतु नीके। मध्य गुपाल मंडली विराजति कांधे धरि लिएसीके॥ बछरा बृंद घेरि आगे करि जन जन शृंग बजाए। जानौं वन कमल सरोवर तजिके मधुप उनींदेआए॥ वृंदावन प्रवेश अघमारचो बालक यशुमति तेरो।सूरदास प्रभुसुनतियशोदा चितवदन प्रभुकेरो॥ ॥ ४३ ॥ रागबिलावल ॥ आजु यशोदाजाइ कन्हैयामहादुष्ट इकु मारचो। पन्नग रूप गिल शिशु गोसुत यहि सब साथ उबारचो॥गिरि कंदरा समान भयोबड जब अघ वदन पसारचो। निदरि गुपाल बैठि मुख भीतर खंड खंड करि डारचो॥ याके बल हम बदत न काहू सकल भुवन तृण चारचो। जीते सबै असुर हम आगे यह कह उनहि निहारचो॥ हरषि गए सब कहत महरिसों अबहिं अघासुर मारचो।सूरदास प्रभुकीयह लीलाकोकोभुलएनपारचो॥४४॥यशुमति सुनि सुनि चकित भई। मैं बरजति बन जात कन्हैया का धौं करे दई॥ कहाँ कहाँते उबरचो मोहन नेकन तऊ डरात।आप जे कहौं तनकसो बातैं सुनहु बनहु में घात॥मेरो कह्यो सुनो जो श्रवणन कहति यशोदा खीझति। सूर श्याम कह्यो बनहि न जैहों यह कहि मन मन रीझति ॥४५॥राग गौरी॥ मैया बहुत बुरो बलदाऊ। कहनलगे बन बडो तमाशो सब मौंडा मिलि आऊ॥ मोहूंको चुचकार गए लै जहाँ सघन बनझाऊ। भागि चले कहि गयो वहाँते काटि खाइहै हाऊ॥ हौंहू डरप्यो कांपी पुकारी दाऊ कोउ नहिं धीर धराऊ। थरसगयो नहिं भाग सकौं वे भागे जात अगाऊ॥मोसोंकहत मोलको लीनोआपु कहावत साहु। सूरदास बल बडे चवाई तैसे मिलेसखाहु ॥ ४६ ॥राग नट॥हरिकी लीला कहत न आवै।कोटि ब्रह्मांड छनकमें नाशै छिनहीमें उपजावै। बालक बच्छ ब्रह्म हरिलैगयो ताको गर्व नवावै।ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीझति फिरि पछितावै॥शिव सनकादि अंत नहिं पावै भक्त बछल कहवावै। सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाइ चरावै ॥ ४७ ॥ राग सारंग॥ब्रह्माबालक बच्छ हरे।आदिअंत प्रभु अंतर्यामी मनसाते जो करे॥सोई रूप वै बालक गोसुत गोकुल जाइ परे।एक बरष निशिवासर रहि सँग काहुन जानि परे॥त्रास भयो अपराध आप लखि अस्तुति करत खरे। सूरदास स्वामी मनमोहन तामें मन न धरे ॥४८॥राग नट॥तब हरि हरचो विधिको गर्व। बच्छबालक लैगयो धरितुरतकीन्हों सर्व॥ब्रह्मलोक चुराइ राख्यो चरित देखन आपु।बच्छ बालक देखिके मन करत पश्चात्तापु॥तब गयोवधि लोक अपने दृष्टिकै फिरिआइ।जानिजियअवतारपूरणपरचो पाँयनिधाइ॥बहुत मैंअपराध कीनो क्षमा कीजे नाथ।जानियह मैं नहीं कीन्ही जोरि कर रह्योमाथ॥बच्छ बालक आनि सन्मुखशरण शरण पुकारि। सूर प्रभुके चरण गहिकहि निकट रासुमुरारि ॥४९॥ राग धनाश्री ॥ व्रज व्यवहार निरखिकै नैननि ब्रह्माको अभिमानगयो।गोपी ग्वाल फिरतसँग चारतहौंहूं क्यों नभयो॥व्यंजन वर करवर पर राखत ओदन मधुर दयो। आपन खातखवावतऔरन कवन विनोद ठयो॥सखा संग पयपान करावत अपनी हाथ लयो। शंकर ध्यानधरत युग बीतेइह रस तउन दयो॥ अहो भाग अहो भाग नंदसुत तपको पुंज लियो। लीला सुभग सूरकी ब्रजमें सब कोउ गाइ जियो ॥ ॥४५०॥राग जयतश्री॥बदत विरंचि विशेष सुकृत ब्रजवासिनके। श्रीहरि जिनके भेष सुकृतब्रजवासिनके॥ज्योतिरूप जगनाथ जगत गुरु जगत पिता जगदीश।योग यज्ञ जप तप में दुर्लभ गइयां गोकुल ईश॥इक इक रोम विराट कोटि तनकोटिकोटि ब्रह्मंड। सो लीन्हो अवछंग यशोदा अपने भरि भुजदंड॥ जाके उदर लोक त्रय जल थल पंचतत्त्व चौखानि। सो बालक ह्वै झूलत पलना यशुमति भवनहि आनि॥क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामें बलि छलि

दियो पतार।देहरिउलँघि सकत नहिं सो अव खेलत नंददुआर॥ अनुदिन सुरतरु पंचसुधारस चिंतामणि सुरधेनु। सो तजि यशुमतिको पै पीवत भक्तनको सुखदेनु॥ रवि शशि कोटिकला अवलोकत त्रिविध ताप क्षय जाइ। सो अंजन कर लै सुत कहि चख्नु आँजति यशुमति माइ॥ दाता भुक्ता हरताकरता विश्वंभरजग जानि।ताहि लइहिमाखनकीचोरी बाँधे यशुमति रानि॥वेद वेदांत उपनिषद अरपै सो भख भुक्ता नाहिं।गोपी ग्वालनिके मंडलमें सो हँसि जूंठनि खाहिं॥ कमलानायक त्रिभुवनदायक दुख सुख जिनकेहाथ।कांधे कमरिआ कांख लकुटिया विहरत वन वछ साथ॥ वकी वकासुर शकट तृणावर्त अवप्रलंव विष भास। केशी कंसको वह गति दीनी राखे चरन निवास॥भक्तवछल अखिलअंतर्यामी रहे सकल भरपूर। मारग रोकि रह्यो द्वारे परि पतित शिरोमणिसूर॥५१॥राग सूहमलार॥आदि सनातनहरि अविनासी।सदानिरंतरघटघटवासी॥ पूरण ब्रह्म पुराण बखानै।चतुरानन शिव अंतनजानै॥गुणगण अगम निगमनहिं पावै। ताहियशोदा गोद खिलावै॥एक निरंतर ध्यावै ध्यानी।पुरुष पुरातनहैनिर्वानी॥जप तप संयमध्यानन आवै। सोई नंदके आँगन धावै॥लोचन श्रवणन रसनानासा।नापद पानिन गुन परगासा॥विश्वंभरनिज नाम कहावै। घरघरगोरसजाय चुरावै॥शुकशारदसेकरत विचारा। नारदसे पावहिं नहिंपारा॥अवर वरन सुर तीनहिं धारै। गोपिनको सो वदन निहारै॥जरामरनतें रहित अमाया। मात पिता सुत बंधु न जाया॥ज्ञान रूप हृदयमेंबोलै। सो नंदमहरके आंगन डोलै॥जलधर अनिल अनल नभछायो। पंच तत्त्व मिलि जगत उपायो॥काल डरै जाकेडर भारी। सोऊखल बांध्यो महतारी॥ माया प्रगट सकल जग मोहै।कारन करन करै सो सोहै॥ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावै।सोगोकुलमें गाइ चरावै॥अच्युत रहै आय जलशाई। परमानंद परम सुखदाई॥लोकरचै राखै प्रतिपारै। सो ग्वालन संग लीला धारै॥ गुण अतीत अविगत न जनावै। यश अपार श्रुति पार न पावै॥ जाकी महिमा कहत न आवै। सो गोपिन सँग रास रमावै॥ जाकी महिमा लखै न कोई। निर्गुण सगुण धरै वपु सोई॥ चौदह भुवन पलक में टारै। सो वन वीथिन कुटी सँवारै॥ चरण कमल नित रमा पलोवै। चाहत नेक नैनभरि जोवै॥ अगम अगोचर लीला धारी। सो राधावश कुंजविहारी॥ भागवडेउन सव ब्रजवासी।जिनकेसंगरमेंअविनासी॥जोरस ब्रह्मादिक नहिं पावें। सोरसगोकुल गलीयहावें॥ सूरसुयश कहिकहा वखाने। गोविंदकी गति गोविंद जानै॥ ५२॥राग मलार॥ विनवै चतुरानन कहि भोरे।तुव प्रताप जान्यो नहिंप्रभुजू करि अस्तुति कर जोरे॥ अपराधी मतिहीन नाथ हौं चूकपरी निज घोरे। इंकृत दोषु क्षमा करुणामय ज्यों भूपरसत ओरे॥युग युग विरदइहै चलि आयो सत्य कहतु अव होरे। सूरदास प्रभु पछिले लेखे अव नवने मुखमोरे॥५३॥ राग सारंग॥माधवमोहिं करौवृन्दावन रेनु। जिन चरणन डोलत नँदनंदन दिन प्रति चारत धेनु॥ कहा भयोहै देवदेह धरि अरु ऊंचो पद पायो ऐनु।सव जीवनलै उदर मांझ प्रभु महाप्रलय जल करत है सेनु॥हमतें धन्य सदा वे तृण द्रुम वालक वच्छ धृपानरु वेन। सूरश्याम जिनके सँग डोलत हँसि वोलत मथि पियतहैं फेन॥५४॥ राग सारंग॥ऐसे वसिए व्रजकी वीथिनि।ग्वालनके पनवारेचुनि चुनिउदर भरैंएसीथिनि॥।पैंडेके सब वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतनि। कुंजकुंज प्रति लोटि लोटि रति रज लागे रंगरीतनि॥ निशि दिन निरखि यशोदानंदनु अरु यमुनाजल तीतनि। परसत सूर होत तन पावन दरशन करत अतीतनि॥ ५५॥धनि यह वृन्दावनकी रेनु। नंदकिशोर चराई गैया मुखहि वजाई वेनु॥

मदनमोहनको ध्यान धरें जो अतिसुख पावत चैनु। चलत कहा मन वसत पुरातन जहां लेन नहिं देनु ॥ इहां रहौं जहँ जूठनि पावै ब्रजवासी के ऐनु।सूरदास ह्यांकी सरवरि नहिं कल्पवृक्ष सुरधेनु॥५६॥राग गौरी॥अचा मारि आए नँदलाल।ब्रजयुवती सुनिकै उठि धाईं घरघर कहत फिरत सब ग्वाल ॥ निरखत वदन चकित भईं सुंदरि मनहीमन इह करि अनुमान।कहति परस्पर सत्य बात यह कौन करै इनकी सरि आन॥एई हैं रतिपतिके मोहन एई हैं हमरे पति प्रान। सूर श्याम जननी मन मोहत वारवार माँगत कछु खान॥५७॥ माँगिलेहु जो भावै प्यारे।वहुत भांति मेवा सब मेरे पटरसके परकार हैं न्यारे॥सबै जोरि राखति हित तुम्हरे मैं जानति तुव बानि । तुरत मथो माखन दधि आछो खाहु देउँ सो आनि॥माखन दधि मोहिं लागत प्यारो और न भावै मोहि।सूर जननि माखन दधि दीनो खात हँसतु मुख जोहि॥५८॥चकईभौरा खेलनसमै॥विलावल ॥ दे मैया भँवरा चकडोरी।जाइलेहु आरेपर राखो कालिह मोल ले राखे कोरी॥लैआये हँसिश्याम तुरतही देखिरहे रँगरँग वहुडोरी।मैया विना और को राखै वारवार हरि करत निहोरी॥वोलिलिएसव सखासंगके खेलतश्याम नंदकीपोरी।जैसेइहरि तैसेइ सवबालक करभँवरा चकरिनिकी जोरी ॥ देखति जननि यशोदा यह छवि विहँसत वारवार मुखमोरी । सूरदास प्रभु हँसिहँसि खेलत ब्रजवनिता तृण डारत तोरी ॥५९॥ राग कान्हरो॥ मेरे हियरे मांझ लगोमनमोहन लैगयो मन चोरी । अवहीं इहि मारग है निकसे छवि निरखत तृण तोरी ॥ मोर मुकुट श्रवणन मणि कुंडल उर वनमाला पीत पिछौरी । दशन चमक अधरन अरुणाई देखत परी ठगोरी ॥ ब्रज लरिकन सँग खेलत डोलत हाथ लिए फेरत चकडोरी । सूरश्याम चितवत गए मोतन तन मन लिए अजोरी॥४६०॥राग टोडी॥तवते मेरो जिव न रहि सकत।जित देखौं तितहीवहसूरति नैननिमें नित लग्योई रहत ॥ ग्वालवालसब संग लगाए खेलतमें करि भाव चलत । उरझिपरचो मेरो मनु तवते कर झटकत चकडोरी हलत ॥अव मैं कहा करौं मेरी सजनी सुरति होत तव मदन दहत । सूर श्याम मेरो चित हरिलीन्हों सकुचछांडि अब तोहिसोंकहत ॥ ६१ ॥श्रीराधाकृष्णजीकाप्रथममिलाप। राग टोडी ॥ खेलन हरि निकसे ब्रजखोरी। कटि कछनी पीतांवर ओढे हाथ लिए भौंरा चकडोरी ॥ मोर मुकुट कुंडल श्रवणन वर दशन दमक दामिनि छवि थोरी। गए श्याम रवितनयाके तट अंग लसति चंदनकी खोरी॥ औचकही देखी तहां राधा नयन विशाल भाल दिए रोरी।नील वसन फरिया कटि पहिरे वेनी पीठि रुचिर झकझोरी ॥संग लरिकिनी चलि इत आवति दिन थोरी अतिछवि जन गोरी। सूर श्याम देखतही रीझे नैन नैन मिलि परी ठगोरी ॥ ६२ ॥ राग टोरी ॥ बूझत श्याम कौन तू गोरी।कहां रहति काकी है वेटी देखी नहीं कहूं ब्रजखोरी॥काहेको हम ब्रजतन आवति खेलति रहति आपनी पौरी। सुनति रहतिश्रवणनि नँदढोटा करत रहत माखनदधि चोरी॥तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलौ संगमिलिजोरी।सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि वातन भुरइ राधिका भोरी ॥ ६३ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो । सैन सैन कीनी सब वातैं गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो ॥ खेलन कबहुँ हमारे आवहु नंदसदन ब्रजगांव । द्वारे आइ टेरि मोहि लीजो कान्ह है मेरो नाउं ॥ जो कहिये घर दूरि तुम्हारो बोलत सुनिए टेर।तुमहि सौंह वृषभानु ववाकी प्रातसांझ एक फेर॥ सूधी निपट देखियत तुमकों ताते करियत साथ। सूरश्याम नागर उत नागरि राधा दोउमिलि गाथ ॥६४॥ राग नट॥सैननि नागरी समुझाई। खरिक आवहु दोहनीलै यहै मिस छल पाइ॥गाइ

गिनती करत जेहि मोहिं ले नंदराइ।बोलि वचन प्रमाण कीने दुहुँन आतुरताइ॥ कनकवदन सुढार सुंदरि सकुचि मुख मुसुकाइ। श्याम प्यारी नैनराचे अति विशालचलाइ॥गुप्तप्रीति जु प्रगट कीन्हो हृदयदुहुँन छिपाइ।सूरप्रभुके वचनसुनिसुनि रही कुँवरिलजाइ॥६५॥राग गारग॥ गईवृषभानुसुता अपने घरसंग सखीसों कहति चली यह को जेहै खेलनइनकेदुग॥रही वेर भइ यमुना आए खीझति हैहै मैया।वचन कहति मुख हृदय प्रेमसुख मन हरि लियो कन्हैया॥ माता कही कहां हुती प्यारी कहां अवार लगाई। सखदाम तब कहति राधिका खरिकदेखिमें आई॥ ६६॥ राग रामकली॥ नागरि मनहिं गई अरुझाइ। अतिविरह तनु भई व्याकुल घर न नेक सुहाइ॥श्याम सुंदर मदनमोहन मोहनीसी लाइ।चित्त चंचलकुँवरि राधा खान पान भुलाइ॥ कबहुं विलपति कबहु विहँसति सकुचिबहुरि लजाइ।मात पितुको त्रास मानति मन बिना भई वाइ॥ जननिसों दोहनीमाँगति वेगिदेरी माइ। सूर प्रभुको खरिक मिलिहौं गए मोहिं बोलाइ॥६७॥ राग धनाश्री॥ मोहिं दोहनी दे री मैया।खरिकमाहिं अबही ह्वैआई अहिर दुहत अपनी सब गैया॥ ग्वालदुहत तब गाइ हमारी जब अपनी दुहिलेत। घरिक मोहिं लगिहै खरिकामें तू आवे जनिहेत॥शोचति चली कुँवरि घरहीते खरिका गइसमुहाइ। कबदेखोंवह मोहनमूरतिजिन मन लियो चुराइ॥देखी जाइ तहाँ हरि नाही चकृत भई सुकुमारि।कबहू इत कबहू उत डोलत लागी प्रीति खुमारि॥नंद लिए आवततहाँ देखे तब पायो विश्राम।सूरदासप्रभुअतर्यामी कीन्हो पूरणकाम॥६८॥ नंदराय खरिकेहि हरि लीन्हे।देखी तहा राधिका ठाढी श्याम बुलाइलई तहँ चीन्हे॥ महर कह्यो खेलहु तुम दोऊ दूरि कहू जनि जैहौ। गनती करत ग्वालगैयनकी सुर्हि नियरेतुम रहियो॥ सुनुबेटीवृषभानु महरिकी कान्हहि लिये खिलाइ।सूर श्यामको देखे रहिहौ मारै जनि कोउ गाइ॥ ६९॥ राग नट॥नंदबबाकी बात सुनो हरि। मोहिं छांडिके कबहुँ जाउगे ल्याउगी तुमको धरि॥ भली भई तुम्हेंसौंपिगये मोहिं जान न देहों तुमको। बाहँ तुम्हारी नेकु न छाडिहौंमहरिरिसीझिहैं हमको॥ मेरीबाहँ छाँडिदे राधा करत उपरफटबात॥सूरश्यामनागर नागरिसों करतप्रेमकी घात॥७०॥ राग नट॥नीवी ललित गही यदुराई।जबहिं सरोज धरो श्रीफलपर तब यशुमति गइ आई॥ तत्सण रुदन करत मनमोहन मनमेंबुधि उपजाई।देखो ढीठि देति नहिंमाता राख्योगेंद चुराई॥काहेको झकझोरत नोखे चलहु न देउँ बताई।देखि विनोद बालसुतको तब महरि चली मुसिकाई॥सूरदासके प्रभुकी लीला को जाने इहि भाई॥७१॥राग धनाश्री॥बातनमेलइराधालाइ।चलहु जैयेविपिन वृन्दा कहत श्याम बुझाइ॥ जब जहां तन भेष धारौं तहां तुम हित जाइ। नेकहू नहिं करौं अंतर निगम भेद न पाइ॥ तुव परशि तन ताप मेटो काम द्वंद्व बहाइ। चतुर नागरि हँसि रही सुनि चंद्रवदन नवाइ॥मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ। श्यामश्यामा गुप्त लीला सूर क्यो कहै गाइ॥७२॥ अथ सुखविलास॥रागगौडमलार॥ गगन गरजि घहराइ जुरी घटा कारी। पौन झकझोर चपला चमकि चहुँ ओर सुवनतन चितै नंद डरत भारी॥ कह्यो वृषभानुकी कुँवरिसो बोलिकै राधिकाकान्ह घरलियेजारी।दोउ घर जाहुसंग नभ भयो श्यामरंग कुँवरगह्यो वृषभानवारी॥ गये वन घन ओर नवल नँदनंद किशोर नवल राधा नए कुंज भारी। अंग पुलकित भए मदन तिनतन जए सूरप्रभु श्यामश्यामाविहारी॥७३॥राग कमोद॥नयो नेहु नयो गेह नयो रस नवल कुवरि वृषभानु किशोरी॥नयो पीतांबर नई चूनरी नईनई बूँदनि भीजति गोरी॥नएकुंज अति पुंज नए द्रुम सुभग यमुनजल पवन हिलोरी। सूरदास प्रभुनवरस विलसत नवलराधिका यौवनभोरी॥७४॥राग कान्हरो॥ नवल गुपाल नवेली राधा नये प्रेमरस पागे।नव तरु वनविहार

दोऊ क्रीडत आपु आपु अनुरागे ॥ शोभितशिथिल वसनमनमोहन सुखवत सुखके बागे।मानहुँ बुझी मदनकी ज्वाला बहुरिप्रजारन लागे॥कबहुक बैठि अंशभुजधरिकैपीककपोलनिदागे।अति रसराशिलुटावतलूटतलालचलगे सभागे ॥ मानहुँ सूर कलपद्रुमकी निधिलैउतरीफल आगे।नहिं छूटति रति रुचिर भामिनी ता सुखमेंदोउपागे॥७५॥राग मलार॥उतारतहैंकंठनितेहार।हरिहरमिलत होतहै अंतर यह मन कियो विचार ॥ भुजा वामपर कर छवि लागति उपमा अंत न पार । मनहु कमल दल कमल मध्यते यह अद्भुत आकार ॥ चुंबत अंग परस्पर जनु युग चंद करत हितवार। रसन दशन भरि चापि चतुर अति करत रंग विस्तार ॥ गुण सागर अरु रस सागर निधि मानत सुखव्यवहार । सूर श्यामश्यामानवसर मिलि रीझे नंद कुमार ॥७६॥ राग कान्हरो॥ नवल किशोर नवल नागरिया । अपनी भुजा श्यामभुज ऊपर श्यामभुजा अपने उर धरिया ॥ क्रीडा करत तमालतरुन तर श्यामा श्याम उमगि रसभरिया । यो लपटाइरहे उर उर ज्यों मरकतमणि कंचनमें जरिया॥ उपमा काहि देउँ को लायक मन्मथ कोटि वारने करिया । सूरदास वलिबलि जोरीपर नंदकुमर वृषभानदुलरिया॥ ७७॥ राग गौरी ॥ आजु नँदनदन रंगभरे। विवि लोचन सुविशाल दोउनके चितवत चित्त हरे॥भामिनि मिले परम सुख पायो मंगल प्रथम करे। करसों करज करचो कंचनज्यों अंबुज उरज धरे॥आलिंगन दे अधरपान कर खंजन खंज लरे हठ करि मानकियो नवभामिनि तबगहिपाइँपरे॥लैगए पुलिनमध्य कालिंदी रसवश अनंग अरे। पुहुपमंजरी मुक्तनि माला अंग अनुराग भरे ॥ सुरतिनाद मुख बेनु सुधा सुनि तपि अनतप जो टरे । रचना सूररची वृंदावन आनंदकाजकरे॥७८॥ राग नट ॥हरि हँसि भामिनीउरलाइ।सुरतिवत गुपाल रीझे जानि अतिसुखदाइ॥हरषि प्यारी अंक भरि पियरही कंठ लगाइ।हाव भाव कटाक्ष लोचन कला कोक सुभाइ॥देखि वाला अतिहि कोमल मुख निरखि मुसुकाइ । सूरप्रभु रतिपतिके नायक राधिका समुझाइ॥७९॥गौड मलार॥ नवल सुनि नवलप्रिया नयोनयो दरश विवि तन मलमले प्राणपतिपीयको अधर धरचो री।प्रीतिकी रीति प्राण चंचल करत निरखि नागरिनैन चिवुक सो मोरी॥तब कामकेलि कमनीय चदपै चकोर चातक स्वातिबूंद परचोरी।सुनि सूरदास रसराशि रस बरसिकै चली जनुहरनि ले कुहूसि गोरी॥८०॥ गवरराग गौरी॥तुरत गए नँदसदन कन्हाई।अकम दे राधा घर पठई वादर जँहतह दिएउडाई॥प्यारीकी सारीआपुनलै पीतांबरराधा उर लाई।जो देखे यशुमति हरि ओढे मनयह कहति कहाँ धौं पाई॥जननी नैन जबहिं लखिलीने तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई।सूरदास सुतसो यशुमति कहै पीत उढनियां कहां गँवाई॥ ८१॥ राग सारंग ॥पीत उढनिया कहां बिसारी।यहतौ लाल ढिगनिकी औरै है काहूकी सारी॥हौं गोधन लैगयो यमुनतट तहां हुती पनिहारी । भीर भई सुरभी सब बिडरी मुरली भली सँभारी॥ हौं लैगयो औरकाहूकी सो लेगई हमारी।सूरदास प्रभु भली बनाईवलि यशुमतिमहतारी ॥८२ ॥ रागधनाश्री॥मैयारी मैं जानत वाको।पीतउढनियां जो मेरी लैगई लैआनौ धरि ताको ॥ हरिकी माया कोउ न जानै आँखिधूरिसी दीनी॥लाल ढिगनिकी सारी ताको पीत उढ़नियां कीनी ॥ पीतावर लै जननि दिखायो लै आन्यो तेहि पास । सूर मनहिंमन कहति यशोदा तरुनि पढावत गास॥८३॥श्यामहिं देखि महरि मुसुकानी।पीतांबर काके घर विसरचो लाल ढिगनकी सारी आनी॥ओढनी आनि दिखाई मोको तरुनिनकी सिखई बुधि ठानी।घर घर लै मेगे सुत मुखवति ऐसी सबै दिननकी जानी॥हरि अंतर्यामी रतिनागर जानिलई जननी पहिचानी।

गिनती करन जैहैं मोहिं लै नँदराइ।बोलि वचन प्रमाण कीने दुहुँन आतुरताइ ॥ कनकबदन सुढार सुंदरि सकुचि मुख मुसुकाइ। श्याम प्यारी नैनगचे अति विशालचलाइ॥गुप्तप्रीति जु प्रगट कीन्हो हृदयदुहुँन छिपाइ।सूरप्रभुके वचनसुनिसुनि रही कुँवरिलजाइ॥६५॥ राग सारंग॥ गईवृष-भानुसुता अपने घर।संग सखीसों कहति चली यह को जैहै खेलनइनकेदुर।बडी वेर भइ यमुना आए खीझति ह्वैहै मैया।वचन कहति मुख हृदय प्रेमसुख मन हरि लियो कन्हैया॥ माता कही कहां हुती प्यारी कहां अवार लगाई। सूरदास तब कहति राधिका खरिकदेखिमैं आई॥ ६६ ॥ राग रामकली ॥ नागरि मनहिं गई अरुझाइ। अतिविरह तनु भई व्याकुल घर न नेक सुहाइ॥श्याम सुंदर मदनमोहन मोहनीसी लाइ।चित्त चंचल कुँवरि राधा खान पान भुलाइ ॥ कबहुं बिलपति कबहुं बिहँसति सकुचिबहुरि लजाइ।मात पितुको त्रास मानति मन विना भई बाइ ॥ जननिसों दोहनीमाँगति वेगिदेरी माइ । सूर प्रभुको खरिक मिलिहौं गए मोहिंबोलाइ॥६७॥ राग धनाश्री॥ मोहिं दोहनी दे री मैया।खरिकमाहिं अबही ह्वैआई अहिर दुहत अपनी सब गैया॥ग्वालदुहत तब गाइ हमारी जब अपनी दुहिलेत । वरिक मोहिं लगिहै खरिकामें तूआवै जनिहेत॥शोचति चली कुँवरि घरहीते खरिका गइमसुहाइ।कबदेखौंवह मोहनमूरतिजिन मन लियो चुराइ॥देखी जाइ तहाँ हरि नाहीं चकृत भई सुकुमारि।कबहूं इत कबहूं उत डोलत लागी प्रीति खुमारि॥नंद लिए आवतहरि देखे तब पायो विश्राम।सूरदासप्रभुअंतर्यामी कीन्हो पूरणकाम ॥६८॥ नंदगये खरिके हरि लीन्हे।देखी तहां राधिका ठाढी श्याम बुलाइलई तहँ चीन्हे॥महर कह्यो खेलहु तुम दोऊ दूरि कहूं जनि जैहो।गनती करत ग्वालगैयनकी सुहिं नियरेतुम रहियो॥सुनुबेटीवृषभानु महरिकी कान्हहि लिये खिलाइ।सूर श्यामको देखे रहिहौ मारै जनि कोउ गाइ ॥ ६९॥ राग नट॥नंदबाबाकी वात सुनी हरि। मोहिं छांडिकै कबहुँ जाहुगे ल्याऊंगी तुमको धरि ॥ भली भई तुम्हेंसौंपिगये मोहिं जान न देहौं तुमको। बाह तुम्हारी नेकु न छंडिहौं महरिखीझिहैं हमको॥ मेरीबाहैं छाँडिदे राधा करत उपरफटबातें ॥सूरश्यामनागर नागरिसो करतप्रेमकी घातें ॥७०॥ राग नट॥नीवी ललित गही यदुराई।जबहि सरोज धरो श्रीफलपर तब यशुमति गइ आई॥ तत्क्ष-ण रुदन करत मनमोहन मनमेंबुधि उपजाई।देखो ढीठि देति नहिमाता राखीगेंद चुराई॥काहेको झकझोरत नोखे चलहु न देउँ बताई।देखि विनोद बालसुतको तब महरि चली मुसिकाई॥सूरदा-सके प्रभुकी लीला को जानै इहि भाइ॥७१॥ राग धनाश्री॥बातनमेंलइराधालाइ।चलहु जैयेविपिन वृन्दा कहत श्याम बुझाइ ॥ जब जहां तन भेष धारौं तहां तुम हित जाइ। नेकहू नहिं करौं अंतर निगम भेद न पाइ ॥ तुव परशि तन ताप मेटौं काम द्वंद्व बहाइ। चतुर नागरि हँसि रही सुनि चंद्रवदन नवाइ॥मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ। श्यामश्यामा गुप्त लीला सूर क्यो कहै गाइ ॥७२॥ अथ सुखविलास॥राग गौडमलार ॥ गगन गरजि घहराइ जुरी घटा कारी। पौन झकझोर चपला चमकि चहुँ ओर सुवनतन चितै नंद डरत भारी ॥ कह्यो वृषभानुकी कुँवरिसों बोलिकै राधिकाकान्ह घरलियेजारी।दोऊ घर जाहुसंग नभ भयो श्याम रंग कुँवरगह्यो वृषभान-धारी॥ गये बन घन ओर नवल नँदनंद किशोर नवल राधा नए कुंज भारी। अंग पुलकित भए मदन तिनतन जए सूरप्रभु श्यामश्यामाविहारी॥७३॥ राग कमोद॥नयो नेहु नयो गेहु नयो रस नवल कुवँरि वृषभानु किशोरी।नयो पीतांबर नई चूनरी नईनई बूँदनि भीजति गोरी॥नएकुंज अति पुंज नए द्रुम सुभग यमुनजल पवन हिलोरी। सूरदास प्रभुनवरस विलसत नवलराधिका यौवनभोरी ॥७४॥ राग कान्हरो ॥ नवलगुपाल नवेली राधा नये प्रेमरस पागे।नव तरु वनविहार

दोऊ क्रीडत आपु आपु अनुरागे ॥ शोभितशिथिल वसनमनमोहन सुखवत सुखके बागे।मानहुँ बुझी मदनकी ज्वाला बहुरिप्रजारन लागे॥कबहुँक बैठि अंशभुज धरिकैपीककपोलनिदागे। अति रसराशिलुटावतलूटतलालचलगे सभागे ॥ मानहुँ सूर कल्पद्रुमकी निधिलैउतरीफल आगे।नहिं छूटति रति रुचिर भामिनी ता सुखमेंदोउपागे॥७४॥राग मलार॥उतारतहैंकंठनितेहार।हरिहरमिलत होतहै अंतर यह मन कियो विचार ॥ भुजा वामपर कर छवि लागति उपमाऽंत न पार। मनहु कमल दल कमल मध्यते यह अद्भुत आकार ॥ चुंबत अंग परस्पर जनु युग चंद करत हितवार। रसन दशन भरि चापि चतुर अति करत रंग विस्तार ॥ गुण सागर अरु रस सागर निधि मानत सुखव्यवहार। सूर श्यामश्यामानवसर मिलि रीझे नंद कुमार ॥७६॥ राग कान्हरो॥ नवल किशोर नवल नागरिया। अपनी भुजा श्यामभुज ऊपर श्यामभुजा अपने उर धरिया ॥ क्रीडा करत तमालतरुन तर श्यामा श्याम उमगि रसभरिया। यों लपटाइरहे उर उर ज्यों मरकतमणि कंचनमें जरिया॥ उपमा काहि देउँ को लायक मन्मथ कोटि वारने करिया। सूरदास बलिबलि जोरीपर नंदकुमर वृषभानदुलरिया॥ ७७॥ राग गौरि ॥ आजु नँदनंदन रंगभरे। विवि लोचन सुविशाल दोउनके चितवत चित्त हरे॥भामिनि मिलि परम सुख पायो मंगल प्रथम करे। करसों करज करचो कंचनज्यों अंबुज उरज धरे॥आलिंगन दै अधरपान कर खंजन खंज लरे हठ करि मानकियो नवभामिनि तबगहिपाइँपरे॥लिगए पुलिनमध्य कालिंदी रसवश अनंग अरे। पुहुपमंजरी मुक्तनि माला अँग अनुराग भरे ॥ सुरतिनाद मुख वेनु सुधा सुनि तपि अनतप जो टरे। रचना सूरस्ची वृंदावन आनँदकाजकरे॥७८॥ राग नट ॥हरि हँसि भामिनीउरलाइ।सुरतिपंत गुपाल रीझे जानि अतिसुखदाइ॥हरपि प्यारी अंक भरि पियरही कंठ लगाइ।हाव भाव कटाक्ष लोचन कला कोक सुभाइ॥देखि वाला अतिहि कोमल मुख निरखि मुसुकाइ। सूरप्रभु रतिपतिके नायक राधिका समुझाइ॥७९॥गौड मलार॥ नवल सुनि नवलप्रिया नयोनयो दरश विवि तन मलमले प्राणपतिपीयको अधर धरचो री॥प्रीतिकी रीति प्राण चंचल करत निरखि नागरिनैन चिबुक सो मोरी॥तव कामकेलि कमनीय चंदपै चकोर चातक स्वातिबूँद परयोरी।सुनि सूरदास रसराशि रस वरसिकै चली जनुहरति ले कुहूसि गोरी॥८०यह गवनराग गौरी॥तुरत गए नँदसदन कन्हाई।अकम दै राधा घर पठई वादर जँहतहँ दिएउडाई॥प्यारीकी सारीआपुनले पीतांबरराधा उर लाई।जो देखें यशुमति हरि ओढे मनयह कहति कहाँ धौं पाई॥जननी नैन जबहिं लखिलीनै तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई।सूरदास सुतसों यशुमति कहै पीत उढनियां कहां गँवाई॥ ८१॥ राग सारंग ॥पीत उढनियां कहां बिसारी।यह तौ लाल ढिगनिकी औरै है काहूकी सारी॥हौं गोधन लैगयो यमुनतट तहां हुतीं पनिहारी। भीर भई सुरभी सब बिडरीं मुरली भली सँभारी॥ हौं लैगयो औरकाहूकी सो लैगई हमारी॥सूरदास प्रभु भली बनाई बलि यशुमतिमहतारी ॥८२ ॥ रागधनाश्री॥मैयारी मैं जानत वाको।पीतउढनियां जो मेरी लैगई लैआनौ धरि ताको ॥ हरिकी माया कोउ न जानै आँखिधूरिसी दीनी॥लाल ढिगनिकी सारी ताको पीत उढ़नियां कीनी ॥ पीतांबर लै जननि दिखायो लै आन्यो तेहि पास। सूर मनहिंमन कहति यशोदा तरुनि पढावत गास॥८३॥श्यामहिं देखि महरि मुसुकानी।पीतांबर काके घर बिसरचो लाल ढिगनकी सारी आनी॥ओढनी आनि दिखाई मोको तरुनिनकी सिखई बुधि ठानी।घर घर लै मेरो सुत भुरवति ऐसी सबै दिननकी जानी॥हरि अंतर्यामी रतिनागर जानिलई जननी पहिचानी।

सूर निरखि मुख सकुचि भगाने या लीलाकी यहै मयानी ॥ ८४ ॥ राग कल्याण ॥सुंदरि गई गृह समुहाइ। दोहनी कर दूध लीन्हे जननिटेरि बुलाइ ॥ प्रेमप्रीति निचोल हरिको कहूं धरचो छिपाइ।औरकी औरैकहति कछु मात मनहिडराइ॥कुंवरिकों कहुं डीठि लागी निरखिकै पछिताइ। सूर तब वृषभानुघरनी राधिका उर लाइ ॥ ८५ ॥ जननी कहति कहाभयो प्यारी ।अवहींखरिक गई तू नीके आवतही भई कौन विथा री॥एक विटिनियां संग मेरे थी कारे खाई ताहितहां री। मों देखत वह परी धरणि गिरि में डरपी अपनें जिय भारी॥श्यामवरण एक ढोटाआयो यह नहिं जानत रहत कहाँ री । कहत सुनीं वह नंदको वारो कछु पढिके वह तुरतहि झारी ॥ मेरो मन भरिगयो त्रासते अब नीको मोहि लागतु मा री। सूरदास अतिचतुर राधिका यह कहि समुझाई महतारी॥ ८६ ॥ गौडमल्लार ॥कुंवरिसों कहति वृषभानुघरनी । नेक नहिं घर रहति तोहि कितनो कहति,रिसनिमुहि दहति वन भईहरनी ॥ लरिकिनी सबनि घर तोसी नहि कोउ निडर, चलति नभ चितै जो तकै धरनी । वडी करवर टरी सांपसों उबरी,वातके कहत तोहि लगति जरनी॥ लिखी मेटै कौन कर्ता करै जौन,सोइ ह्वैहै होनहारी करनी। सुतालई उरलाइ तन.निरखि पछिताइ, डरनि गई कुंभिलाइ सूर वरनी ॥८७॥ महर वृषभानकेयहकुमारी दिवधामीकरत झारझारे परत,पुत्र द्वै तीसरीयहै वारी ॥ भई वरपसातकी शुभघरी जातकी, प्यारी दुहुँभ्रातकी वची भारी। कुँवरि दई अन्हवाइ गई तन मुरझाइ,वसन पहिराइ कछु कहति खारी ॥ जाहि जनि खरिकतन खेलि अपने सदन,यह सुनत हँसति मन श्यामनारी। सूर प्रभुध्यान धरि हरषि आनंदभरि,गात्र घर खेलिहौंकहति का री॥८८॥ श्रीराधिकाजीको यशोदा गृह गवन ॥ राग आसावरी॥खेलनके मिसकुँवरि राधिका नंदमहरके आई हो ।सकुचसहित मधुरे करि बोली घर हो कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिलसम वाणी निकसे अति अतुराई हो । मातासों कछु करत कलह हरि सो डारचो विसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति वारंवार वताई हो यमुना तीर कालिह में भूल्यों बांह पकरि लै आई हो ॥ आवति यहां तोहि सकुचतिहि में दै सोंह बुलाई हो। सूरश्याम ऐसे गुण आगर नागरि वहुत रिझाई हो ॥ ८९ ॥ को जानै हरिकी चतुराई। नैनसैन संभाषण कीनो प्यारीकी उर तपनि बुझाई ॥ मनही मन दोउ रीझि मगन भए अति आनंद उरमें न समाई। करपल्लव हरि भाव वतावत एक प्राण द्वै देह वनाई ॥ जननीहृदय प्रेम उपजायों कहति कान्हसों लेहु बुलाई ।सूरश्याम गहि वाहँ राधिका ल्याए महरि निकट बैठाई ॥ ४९० ॥ रागसूहो॥ देखि महरि मनहीं जु सिहानी। वोलिलई बूझति नँदरानी कुँवर कहति मधुरे मधुवानी ॥ ब्रजमें तोहिं कहूं नहिं देखी कौन गाउं है तेरो । भली करी कान्हहि गहि ल्याई भूल्यो इतो सुत मेरो ॥ नयन विशाल वदन अतिसुंदर देखत नीकी छोटी । सूर महरि सवितासों विनवति भली श्यामकी जोटी॥ ९१ ॥ राग नट ॥नामु कहा है तेरो प्यारी। बेटी कौन महरकी है तू कहि सु कौन तेरी महतारी ॥ धन्य कोख जिन तुमको राख्यो धन्य घरी जिहि तू अवतारी। धन्य पिता माता धनि तेरो छवि निरखति हरिकी महतारी। मैं बेटी वृषभानुमहरकी मैया तुमको जानति।यमुनातट बहुवार मिलन भयो,तुम नाहिंनपहिंचानति ॥ ऐसी कहि वाको में जानति वे तो वडी छिनारि । महर वडो लंगर सब दिनको हसत देति मुख गारि॥ राधा वोलि उठी वावा कछु तुमसों ढीठी कीनी।ऐसे समरथ कव मैं देखे हँसि प्यारी उर लीनी ॥ महरि कुँवरिसों यह करि भाषति आउ करों तेरीचोटी।सूरदास हरषी नँदरानी कहति महरि हम जोटी ॥ ९२ ॥राग गौरी॥यशुमति राधा कुँवरि सँवारति। वडे वार श्रीवंत शीशके प्रेमसहित लैलै निर-

वारति ॥ माँग पारि वेनीहि सँवारति गूंथी सुंदरभांति।गोरे भाल बिंदु चंदन मनी इंदु प्रातरविकांति ॥ सारी चीर नई फरियालैअपने हाथबनाय।अंचलसौं मुख पोंछिअंगसब आपुहि लै पहिराइ॥तिल चांवरी बतासे मेवा दियोकुँवरिके गोद । सूर श्याम राधा तन चितवत यशुमति मनमन मोद॥९२॥अथश्यामराधाखेलनसमय ॥राग कल्याण॥ खेलोजाइश्यामसँगराधा॥यहसुनिकुँवरि हरष मन कीनों मिटी जुअंतरबाधा॥जननी निरखिचकित भईठाढी दंपतिरूप अगाधादेखत भाव दुहुनको सोई जो चितकरि अवराधा॥सँग खेलत दोउ झगरन लागे शोभा बढी अगाधा।मनहु तडितघन इंदु तरनिहैं वाल करत रस साधा ॥ निरखत विधि भ्रम भूलि परचो तब मन मन करत समाधा। सूरदास प्रभु और रच्यो विधि शोन भयो तन दाधा ॥९४॥राग केदारो॥ विधिके आनविधिको शोचु । निरखि छवि वृषभानुतनया सकल मम कृत पोचु॥ रमा गौरी उर्वशी रति इंदिरा विभव समेति । तुल्य दिनमणि कहा सारँग नाहिं उपमा देति ॥ चरण निरखि निहारि नखछवि अजित देखें तोकि । चित्त गुण महिमा न जानत धीर राखति रोकि ॥ सूर आन विरंचि विरचे भक्त निज अवतार। अवलके वल सवल देखि अधीन सकल शृंगार ॥९९॥ राधा गृहगवन ॥रागनट॥ राधे महरिसों कहि चली । आनि खेलौ रहसि प्यारी श्याम तुम हिलमिली ॥ बोलि उठे गुपाल राधा सकुच जिय कत करति। मैं बुलाऊं नहीं आवति जननिको कत डरति॥ मैया यशोदा देखि तोको करति कितनो छोहु । सुनत हरिकी वात प्यारी रही मुख तन जोहु॥ हँसि चली वृषभानु तनया भई वहुत अवार। सूर प्रभु चितवें टरत नहिं गई घरके द्वार ॥९६॥ राग बिहारो ॥बूझतिजननी कहां हुतीप्यारी।किनतेरे भाल तिलक रचि कीनोंकिहि कचगूंदि मांग शिर पारी॥खेलतरही नंदके आंगन यशुमतिकही कुँवरि ह्यां आरी।तिल चावँरी गोद करि दीनी फरिया दई फारि नव सारी॥मेरो नाउँबूझि बाबाको तेरोबूझि दई हँसि गारी । मोतन चितैचितै ढोटातन कछु सवितासों गोद पसारी ॥यह सुनिकै वृषभानु मुदितचित हँसिहँसि बूझति बातदुलारी।सूर सुनत रससिंधु वढ्योअति दंपति मनमें यहे विचारी॥९७॥ राग गौरी॥मेरे आगे महरि यशोदा मैया री तोहिं गारी दीन्ही।वाकी वात सबै मैंजानति वे जैसी तैसी मैंचीन्ही॥तोकोकहि पुनि कह्यो बबाको बडो धूर्त वृषभानु।तबमैं कह्यो ठग्योकबतुमको हँसिलागी लपटान॥ भली कही तैं मेरी बेटी लयो आपनो दाउ।जो मुहि कह्यो सबै उनके गुण हँसिहँसि कहत सुभाउ॥फेरि फेरि बूझति राधासों सुनत हँसतसबनारि।सूरदास वृषभानुघरनि यशुमतिको गावति गारि॥९८॥ राग गौरी॥कहतकान्ह जननी समझाई।जहँ तहँ डारे रहत खिलौना राधा जनि लेजाइ चुराई॥सांझ सवारे आवनलागी चित रहति मुरली तन आइ। इनहीमें मेरो प्राण बसतुहै तेरे भाए नेकु न माइ॥राखि छपाइ कह्यो करि मेरी बलदाऊको जनि पतिआइ।सूरदास यह कहति यशोदा को लैहै मुहि लगो वलाइ ॥९९॥ राग आसावरी॥ मेरे लालके प्राण खिलौना ऐसो को लेजैहै री।नेक सुनन जो पैहौंताको सोकैसे ब्रजरैहैरी॥बिनदेखे तू कहा करैगी सो कैसे प्रगटैहै री।अजहुँ राखि उठाइ री मैया मांगेते कहा दैहैरी॥आवतही लैजैहैराधा पुनिपाछे पछितैहै री।सूरदास तबकहत यशोदा बहुरि श्याम विरुझैहैरी॥१००॥रागनट॥ सँतति महरिखिलौनाहरिके।जानति टेवआपने सुतकी रोवतिहै पुनि लरिकै॥धरि चौगानु बेन मुरली धरि अरु भौंरा चकडोरी।प्रेमसहित धरि धरि लैराखति जे सबमेरेकोरी॥श्रवणनि सुनत अधिकरुचि लागति हरिकी वतियां भोरी । सूर श्यामसों कहति यशोदादूध पियहु वलि तोरी॥१॥आजु सवारेधेनु दुहीमैं वहे दूध मोहिंप्यावैरी।

सुन मैया मैं तो पय पीवों मोहिं अधिक रुचि आवै री॥ और धेनुको दूध न पीवों जो करि कोटि बनावै री॥ जननी कहति दूध धौरीको मोको मोह करावै री॥ तुमतें मोहिं और को प्यारो बारबार मनावै री। सूरश्याम को पय धौरीको माता हितसों ल्यावै री॥२॥ आछो दूध पियो मेरे तात। तातो लगत वदन नहिं परसत फूकि देतहै मात॥ औटि धर्यो अबही मनमोहन तुम्हरे हेत बनाइ। तुम पीवो मैं नयनन देखों मेरे कुंवर कन्हाइ॥ दूध अकेली धौरीको है तनको अति हितकारी। सूर श्याम पय पीवनलागे अति तातो दियो डारी॥३॥ राग बिहागरो॥ देखत पय पीवत बलराम। तातो लगत डारि तुम दीनो दावानल पीवत नहिं ताम॥ कबहू रहत मौन धरि जलमें कबहू फिरत चैधावत दाम॥ कबहुँ अघासुरवदन समाने कबहुँ अँध्यारे जात न धाम॥ कबहू करत जसुधा सब नयपद कबहू देहरि उलघि न जाइ॥ पट दश सहस गोपिका विलसत वृंदावन रसरास रमाइ॥ इहै जानि अवतार धरत ब्रज सुर नर मुनि यह भेद न पाई॥ राजा छोरि बदितें ल्याए तिहूलोकमें विदित बडाई॥ युगयुग ब्रज अवतार लेत प्रभु अखिल लोक ब्रह्माडके नाथ। यई गोप यह ग्वाल इहै सुख यह लीला कहुँ तजत न साथ॥ एई कान्ह इहै वृंदावन यह यमुना यह कुंज बिहार॥ यहै बिहार करत निशिबासर येई है जनके प्रतिपार॥ येई है श्रीपति यदुनायक एई हैं कर्ता संसार। रोम रोम प्रति अंग कोटि रवि मुरत भ्रमति यशुमति कहि बार॥ एई कंस केशर संहार्यो ब्रह्म धर्यो कृष्ण अवतार॥ माखन खात चुराइ बरनते बहुत बार भए नंदकुमार॥ आदि अंत कोउ नहिं जानतु हरता करता सबके सार॥ सूरदास प्रभु बाल अवस्था तरुण वृद्धको करे निनार॥४॥

राग कल्यान॥ ललित ललित चरित गोकुल राइ। दावानलको पान कीन्हो पीवत दूध सिराइ॥ पूतनाहठि प्राण लीन्हें अपुन उर लपटाइ। कहति जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ॥ धर्यो गिरिवर दोहनी कर धरत बाँह पिराइ। शकटभंजन मथन कुचयुग कठिन लागत पाइ॥ तृणावर्त अकाशतें पटक्यो शिलापर जाइ। डरत लाल हिंडोर झूलत हरे दत झुलाइ॥ बकासुरकी चोंच फारे सैने दिए दखाइ। कीर पिंजरा गहत मोहन अंगुरि लेत भगाइ॥ बिना दीपक मदनमढियाँ तहाँ धरत न पाइ। अघासुरमुख पैठि निकसे बालबच्छ छुडाइ॥ लिख्यो कोरे नाग काजर ताहि देखि डराइ। नृतत कालीनाग फनप्रति सुहथ ताल बजाइ॥ यमलअर्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बढाइ। झटकि पात पलाश पल्लव दह देत दिखाइ॥ हरे बालक वत्स बयकृत हेत दौरी माइ। चरत धेनु न मिली तिनको आप दौर धाइ॥ वृषभ गजन मथन केशी हने पृष्ठ फिराइ। भजत सखा समेत मोहन देखि व्याई गाइ॥ गोपनारी संग मोहन कियो रास बनाइ। कहति जननी व्याहको तब रहत बदन दुराइ॥ कहा बरणों कोटि रसना हिये बुधि उपजाइ। सूरके प्रभु रसिक हरि पर अंग अंग बिकाइ॥५॥

अथ गौचारण राग रामकली॥ आज मैं गाइ चरावन जैहों। वृंदावनके भाँति भाँति फल अपने कर मैं खैहों॥ ऐसी अबहिं कहो जनि बारे देखो अपनी भाँति। तनक तनक पाँइन चलिहौ कैसे आवत ह्वैहै राति॥ प्रात जात गैयाँ लै चारन घर आवत है साँझ। तुम्हरो कमल वदन कुम्हिलैहै रेंगत घामहिं माझ॥ तेरी सों मोहिं घामु न लागत भूख नहीं कछु नेक। सूरदास प्रभु कह्यो न मानत परे आपनी टेक॥॥६॥ मैया हों गाय चरावन जैहों। तू कहि महर नंदबाबासों बडो भयो न डरैहौं॥ तेरे हत मान मनसुख अरु हलधर संगहि रैहों। बंशी वट तर गाइनके सँग खेलत अति सुख पैहों॥ ओदन भोजन दे दधि काँवरि भूख लगे तो खैहों। सूरदास मैं साथ सौंह दे जो यमुनाजल न्हैहों॥७॥ चल सब गाइ चरावन ग्वाल। हेरी टेर सुनत लरिकनकी दौरि गए नँदलाल॥ फिरि इतउत ह्वै देखे यशुमति दृष्टि न परे कन्हाइ। जान्यो जात ग्वाल सँग दौर्यो टेरति

यशुमति धाइ ॥ जात चल्यो गैयनके पाछे वलदाऊ कहि टेरत।पाछे आवत जननी देखी फिरि फिरिइतको हेरत ॥ वल देख्यो मोहनको आवत सखा किए सव ठाढे । पहुँची आइ यशोदा रिससों दोउ भुजु पकरे गाढ़े॥हलधर कह्यो जानदे मोसँग आवहिं आजसवारे।सूरदास वलसों कहै यशुमति देखेरहियो प्यारे ॥ ८॥ राग विलावल ॥ खेलत श्याम चले ग्वालनसँग । यशुमति कहति इहै घरआई देखो हरि कीने जेजे रँग ॥ प्रातहिते लागे एही ढँग अपनी टेक परयोहै। देखो जाइ आज वनको सुख कहा परोसि धरयोहै॥माखन रोटी अरु शीतलजल यशुमतिदियो पठाइ । सूर नंद हँसि कहत महरिसों आवत कान्ह चराइ ॥९॥ राग सारंग ॥ हरिजूको ग्वालिनि भोजन ल्याई। वृन्दाविपिन विशदयमुनातट शुचिज्योंनार बनाई ॥सानिसानि दधिभातु लियो कर सुहृद सवनि कर देत । मध्य गुपालमंडली मोहन छाँक वांटिके लेत ॥ देवलोग देखत सव कौतुत बालकेलि अनुरागी । गावत सुनत सुरन सुख करि मनो सूर दुरित दुख भागी ॥५१०॥ राग सारंग ॥ वृंदावन देख नँदनंदन अतिहि परम सुख पायो । जहं जहं वाल गाइ सँग डोलत तहँ तहँ आपुन धायो ॥ वलदाऊ मोको जिन छांडो संग तुम्हारे ऐहौं ॥ कैसेहुँ आज यशोदा छांड्यो कालि न आवनपैहौं ॥ सोवत मोको हेरिलैहै वावानंद दुहाई।सूरश्याम विनती करें वलसों सखनसमेत सुनाई ॥११॥ अथ धेनुकवध । राग भैरव ॥ सखा कहनलागे हरिसों तव । चलौ तालवनको जैये अव ॥ ता वनमें फल वहुत सुहाये । वैसे हम कवहूं नहिं खाए ॥ असुर धेनुक तहाँ है रखवारी । चलो कहे हँसि वलि वनवारी ॥ विहँसत हरिसँग चले गुआला। नाचत गावत गुण गोपाला ॥ सोयो हुतो असुर तरुछाया । सुनत शोर तरुते उठि धाया ॥ हलधरको देखे तिन आवत । ये दोउ वलकर जोर चलावत ॥ पकरि पाहँ वलभद्र फिरायो । मारि ताहि तरुमाहिं गिरायो ॥ और वहुत ताको परिवारो । हरि हलधर तिन सबको मारो ॥ ग्वालन वनफल रुचिसों खाए । वहुरौ वृन्दावनहिं सिधाए ॥ हरि हलधरछवि वरणि न जाई। सूरदास इह लीला गाई ॥ १२ ॥ राग गौरी ॥ बनते आवत धेनु चराये । संध्या समय सांवरे मुखपर गोपदरज लपटाये ॥ वरहमुकुटके निकट लसति लट मधुप बने रुचि पाये। विलसत सुधा जलदआननपर उडत न जात उड़ाये ॥ विधिवाहन भक्षनकी माला राजत उर पहिराये ॥ इकवपु रही नाहि वड छोटे ग्वाल वने इक दाये।सूरदास मिलि लीला प्रभुकी जीवत जन यश गाए ॥ १३ ॥ आजु हरि धेनु चराये आवत । मोर मुकुट वनमाल विराजत पीतांवर फहरावत ॥ जिहि जिहि भांति ग्वाल सव वोलत सुनि श्रवणन मन राखत । आपुन टेरिलेत नान्हेसुर हरपितमुख पुनि भापत ॥ देखत नंद यशोदा रोहिणि अरु देखतव्रज लोग । सूर श्याम गाइन सँग आये मैया लीनो रोग ॥ १४ ॥ यशुमति दौरि लए हरिकनियां । आजु गयो मेरो गाइचरावन हौ वलिगई निछनियाँ॥मोकारणकछु आन्योहै वलि वनफल तोरि कन्हैया । तुमहिं मिले मैं अति सुख पायो मेरे कुँवर कन्हैया ॥ कछुक खाहु जो भावै मोहन देरी माखन रोटी।सूरदास प्रभुजीवहु युगयुग हरि हलधरकी जोटी॥१५॥ राग सारंग ॥ मैं अपनी सव गाइ चरैहौं । प्रात होत वलके सँग जैहौं तेरे कहे न भुरैहौं ॥ ग्वालवाललैगाइनभीतरनेकहु नहिं डर लागत ।आजु न सोवों नंददुहाई रैनि रहौंगो जागत॥औरग्वाल सव गाइ चरैहैं मैंघर वैठो रहौं ।सूर श्याम अवसोइरहो तुम प्रात जान मैंदेहौं ॥ १६॥ राग केदारो ॥ वहुते दुखहरि सोइ गयोरी । सांझहिते लाग्यो यहि वातहि क्रम क्रमते मन वोधि लयो री ॥ एक दिवस गयो गाइ चरावन ग्वालन साथ सवारे।अवतौ सोइरह्योहै कहिके प्रातहि कहा विचारे॥यहतौसववलरामहिं लागे सँग लैगयो लिवाइ।सूर नंद यह कहतमहरिसों आवनदेफिरिधाइ॥१७॥ राग विलावल॥करहु

कलेऊ कान्ह पियारे। माखन रोटी दियो हाथपर वलिवलि जाऊं हों ग्वाह ललागे॥ टेरत ग्वाल द्वारके ठाढे आए तबके होत सवारे॥ खेलहु जाइ ब्रजहिके भीतर दूरि कहुं जनि जैयहु प्यारे॥ टेरि उठे बलरामश्यामको आवहु धाइधेनु वनचारे॥ सूरश्याम कर जोरि मातसों गाइचरावनकहतहमारे॥ १८॥ राग बिलावल॥ मैया री मोहि दाऊ टेरत। मोकों वनफल तोरिदेतहें आपुन गैयनघेरत॥ और ग्वाल सँग कबहुं न जैहौं वे सब मोहिं खिझावत। मैं अपने दाऊ संग जैहों वनदेखत सुख पावत॥ आगे दै पुनि ल्यावत घरको तू मुहि जान नदेति। सूरश्याम कहे यशुमति मैया हा हा करिकरि केति॥ १९॥ राग सारंग॥ बोलि लियोबलरामहिंयशुमति॥ आवहु लाल सुनहुहरिकेगुण कालिहिते लंगरयौ करत अति॥ श्यामहिं जानदेहु मेरे संग तू काहे डरपावति। मैं अपने ढिगतेनहिं टारों जियहि प्रतीति न आवति॥ हँसी महरिबलकीबातें सुनि वलिहारी या मुखकी। जाहु लिवायसूरकेप्रभु कोकहत वीरके रुखकी॥ ५२०॥ राग नट॥ अति आनंद भयो हरिधाए टेरत ग्वालबाल सब आवहु मैया मोहिं पठाए॥ उतते सखा हँसत सब आवत चलहुकान्हवन देखहु। वनमाला तुमको पहिरावहिं धातुचित्र तन रेखहु॥ गाइ लेइ सब घेरि घरनते महर गोपके बालक। सूर श्याम चले गाइ चरावन कंस उरहिके शालक॥ २१॥ राग सारंग॥ चरावत वृंदावनहरिगाइ। सखा लिए सँग सुबल श्रीदामा डोलतहैं सुख पाइ॥ क्रीडा करत जहां तहां सब मिलि आनंद बढइ बढाइ। बगरिगईं गैयांवनवीथिनि देखी अतिबहुताइ॥ कोउगए ग्वाल गाइ वनघेरनकोउ गए बछरू लिवाइ। आपुहि रहे अकेले वनमें कहुं हलधर रहे जाइ॥ वंशीवट शीतल यमुनातट अतिहि परम सुखदाइ। सूर श्याम तब वैठि विचारत सखा कहां विरमाइ॥ २२॥ वार वार हरि कहत मनहिं मन अबहिं रहे सँग चारत धेनु। ग्वालबाल कोउ कतहुँ न देख्यो टेरत नाँउ लेत दै सैनु॥ आलसगात जानि मनमोहन बैठे छाँह करत सुख चैनु। अकनि रहत कहुं सुनत नहीं कछु नहिं गौरभन वालकेबैनु॥ तृषावंत सुरभी वालकगण कालीदह अचयो जलजाइ। निकसि आइ सब तट ठाढे भए बैठि गए जहां तहां अकुलाइ॥ वन वन ढूंढिश्याम तहँ आए गोसुत ग्वाल रहे मुरझाइ। मनमहँ ध्यान करतही जान्यो काली उरग रह्यो ह्यां आइ॥ गरुड-त्रास करि आइ रह्यो दुरि अंतर्यामी सबके नाथ। अमृत दृष्टि भरि चिते सूर प्रभु बोलि उठे गावत हरि गाथ॥ २३॥ आवहु आवहु कान्ह जू पाई है सब धेनु। कुंज कुंजमें देखि रहे तृण चरति परम सुख चैन॥ द्रुमन चढे सब सखा पुकारत मधुर सुनावहु बैन। जनि धावहु वलि चरन मनोहर कठिन कठु मनऐन॥ वार वार ब्रज कौन उबारे पियो कालीदह फैन। सूरश्यामसतनहित कारनप्रगटभयेसुख दैन॥ २४॥ राग सारंग॥ पाईपाई है भैयाकुञ्ज वृन्दमें टाली। अबके अपनी हटकि चरावहु जैहे हटकी घाली॥ आवहु बेगि सकल दुहुं दिशिते कत डोलत अकुलाने। सुनि मृदु वचन देखि उन्नत कर हरषि सबै समुहाने॥ तुम तो फिरत अनतहीं ढूंढत ये वन फिरति अकेली। हांकी गाइ कौन पर लैहौं सघन बहुत द्रुम वेली॥ सूरदास प्रभु मधुर वचन कहि राखत सबहि बुलाए॥ नृत्यकरतआनँद गौचारत सबे कृष्णपैआए२५॥ रागरामकली॥ ताते तरकि कह्यो वनमाली। पशु तन चपल स्वरूप न जानत डोलत चाली चाली॥ धरि तन सगुण त्रिपद पूरण प्रभु आपु कमल प्रतिपाली। यद्यपि वृषभ सुता पति तजिके फिरति कुमति-की घाली॥ अति श्रम भयो सकल वनढूंढत वन वेली दी जाली। सूरदास संतन जन हित हरि इहि अब सबते टाली॥ २६॥ नटनारायणी॥ मोहिं वन छोडि आए सब ग्वाल। कहांते कहां आइ

निकसे करे केस स्याल ॥ मुरछि काहे गिरे धरणी कहा यह जंजालमें यहां जो आइ देखोपरे सब वेहाल॥ आनि अँचयो जल यमुनको तबहि गए अकुलाइ। निकसिके जब कूल आए गिरि परे सब आइ॥प्राणविनु हम सब भये ते तुमहिं दियो जिवाइ।सूरके प्रभु तुम जहां तहँ हमहिं लेत बचाइ ॥२७॥ राग गौरी॥बलदाऊ कहि श्याम पुकारचो।आवहुबेगि चलौ घर जैये वनहीमें पुनि होत अंध्यारो॥ल्याए बोलि सखा हलधरको हँसे श्याम मुख चाही। बडीबेर भई तुमहिं कन्हैया गाइन लेहु निबाही ॥ हेरी देत चले सब वनते गोधन दिए चलाई। सूरदास प्रभु राम श्याम दोउ ब्रजजनके सुखदाई ॥ २८ ॥वृंदावन प्रवेश शोभा। राग गौरी॥वै मुरलीकी टेर सुनावत। वृन्दावन वसि वासर सब निशि आगम जानि चले ब्रजआवत ॥ सुबल सुदामाअरु श्रीदामासग सखा मोहन छवि पावत। सुरभीगण सब लै आगे करि कोउ टेरत कोउ वेणु बजावत ॥ केकीपच्छ मुकुट शिर भ्राजित गौरी राग मिले रस गावत। सूरश्यामके ललित वदनपर गोरज- छवि कहुँ चंद छपावत ॥ २९ ॥हरि आवत गाइनके पाछे। मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल नयन विशाल कमलते आछे ॥ मुरली अधर धरन सीखतहैं बनमाला पीतांबर काछे। ग्वालबाल सब वरणवरणके कोटि मदनकी छवि कियो पाछे॥पहुँचे आइ श्याम ब्रजपुरमें घरहि चले मोहनवल आछे।सूरदासप्रभु दोउजननी मिलि लेतिबलाइबोलि मुख बाछे॥३०॥राग कल्याण आनँदसहित सबै घर आए। धन्य यशोदा तेरो बारो हम सब मरत जिवाए ॥ नरवपु धरे देव यह कोऊ आइ लियो अवतार। गोकुल ग्वाल गाइ गोसुतके एई राखनहार॥ पय पीवतपूतना निपाती तृणावर्त इहि भाँति। वृषभासुर वत्सासुर मारचो रामकृष्ण दोउ भ्रात ॥ जबते जन्म लियो ब्रजभीतर तबते इहै उपाइ। सूर श्यामके बल प्रतापते बन बन चारत गाइ॥ ३१ ॥ तुम कत गाइ चरावन जात। पिता तुम्हारो नंदमहरसो जाके यशुमतिसी है मात ॥ खेलत रहौ आपने घरमें माखन दधि भावे तब खात। अमृतवचन कहौमुख अपने रोम रोम पुलकित सब गात ॥ अब काहूके जाहु कहु जनि आवतहै युवती इतरात। सूर श्याम नैननआगे रहो काहे कहू जातहो तात॥ ३२ मैया हौ न चरैहौ गाइ। सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाँइ पिराइ ॥ जो नपत्याहि पूछि बलदाउहि अपनीसौंह दिवाइ। यहसुनिसुनि यशुमतिग्वालनिको गारी देत रिसाइ ॥ मैं पठवत अपने लरिकाको आवै मन बहराइ।सूरश्याम मेरो अति बालक मारत ताहि रिंगाइ ॥३३॥ बल मोहन बनते दोउ आए। जननि यशोदा मात रोहिणी हरषि दुहुँनि दोउ कठ लगाए॥काहे आजु अवार लगाई काहे कमलवदन कुँभिलाए। भूखे भए आजु दोउ भैया प्रातकलेऊ करनन पाए॥देखहु जाइ कहा जेंवन कियो यशुमति रोहिणि तुरत पठाई। मैअन्हवाएदेति दुहुँनको तुम भीतर अति करौ चँडाई ॥ लकुट लियो मुरली कर लीन्हे हलधर दियो विषान। नीलांबर पीतांबर लीन्हें सैति धरति करि प्रान॥मुकुट उतारि धरचो मदिर लै पोछति है अगधात। अरु बनमाल उतारति गरसे सूर श्याम की मात ॥३४॥ अगअभूषण जननि उतारति।दुलरी ग्रीव माल मोतिनकीकेउर लै भुज श्याम निहारति ॥ छुद्रा- वली उतारति कटिसे सैति धरति मनहीमन वारति।रोहिणि भोजन करहु चडाई बारबार कहिकहि करि आरति ॥ भूखे भए श्याम हलधर ए यह कहि अतरप्रेम विचारति। सूरदास प्रभु मात यशोदा पट लै दुहुँनि अगरज झारति ॥ ३५ ॥ ए दोऊ मेरे गाइ चरैया। मोल बिसाहि लये मैं तुमको तब दोउ रहे नन्हैया। तुमसो टहल करावति निशिदिनऔर न टह-

कलेऊ कान्ह पियारे।माखन रोटी दियो हाथपर बलिबलि जाऊं हौं ग्वाइ ल्लाग।टेरत ग्वाल द्वारके ठाढे आए तबके होत सवारे।खेलहु जाइ ब्रजहिके भीतर दूरि कहूं जनि जैयहु प्यारे।टेरि उठे बलरामश्यामको आवहु धाइधेनु बनचारे।सूरश्याम कर जोरि मातसों गाइचरावनकहतहमारे ॥ १८॥ राग बिलावल ॥मैया री मोहि दाऊ टेरत। मोकों बनफल तोरिदेतहैं आपुन गैयनघेरत॥ और ग्वाल सँग कबहुं न जैहौं वे सब मोहिं खिझावत। मैं अपने दाऊसंग जैहौं बनदेखत सुख पावत॥आगे दे पुनि ल्यावत घरको तू मुहि जान नदेति। सूरश्याम कहै यशुमति मैया हा हा करिकरि केति ॥ १९ ॥ राग सारंग॥बोलि लियोबलरामहियशुमति।आवहु लाल सुनहुहरिकेगुण कालिहिते लँगरयो करत अति ॥ श्यामहिं जानदेहु मेरे सँग तू काहे डरपावति । मैं अपने ढिगतेनहिं टारों जियहि प्रतीति न आवति॥ हँसी महरिबलकीबातें सुनि बलिहारी या मुसकी। जाहु लिवायसूरकेप्रभुको कहत वीरके रुखकी॥२०॥राग नट ॥अति आनंद भयो हरिधाएटेरत ग्वालग्वाल सब आवहु मैया मोहिं पठाए॥ उतते सखाहँसत सब आवत चलहुकान्हबन देखहु। बनमाला तुमको पहिरावहिं धातुचित्र तन रेखहु॥ गाइ लेइ सब घेरि घरनते महर गोपके बालक। सूर श्याम चले गाइ चरावन कंस उरहिकेशालक॥२१॥ राग सारंग॥ चरावत वृंदावनहरिगाइ। सखा लिए सँग सुबल श्रीदामा डोलतहैं सुख पाइ ॥ क्रीडा करत जहां तहां सब मिलि आनंद बढइ बढाइ। घररिगईं गैयांबनवीथिनि देखी अनिरा कहाते यशोदा जिनिहो लाल डगाई। गए बहुरागि गौरी॥मैं बरजों यमुनातट जात॥ सुधि रहिगई न्हातकी तेरे जिनि डरपो मेरे तात॥ नद उठाइ लियो कोराकरि अपने सँग पौढाइ। वृंदावनमें फिरत जहाँतहँ केहि कारण तू जाइ॥ अजिनि जैहौ गाइचरावन कहँकीरहनचलाइ।सूर श्याम दंपति बिच सोए नींद गई तब आइ॥ ॥ ४०॥राग कल्याण॥सपनो सुनि जननी अकुलाई॥दंपति बात कहत आपुसमें सोवति शारँग-पानी॥या ब्रजको जीवनि यह ढोटा कह देख्यो यहि आजु ॥ गाइ चरावन जान न दीजे याको है कह काजु ॥ गृह संपति द्वै तनक ढोटौना इनहीलो सुख भोग। सूर श्याम बन जात चरावन हसी करत सब लोग॥४१॥राग भैरवी॥यहि अंतर भिनुसार भयो। तारागण सब गगन छपाने अरुन उदित अंधकार गयो॥जागी महरि काज गृह लागीं निशिको सब दुख भूलि गयो।प्रातस्नान करन यमुनाको नंदहि तुरत उठाइदयो॥मथनिहारि सब ग्वालि बोलाई भोर भयो उठि मथो दह्यो। सूर नंदघरनी आपुनहु मथति मथानी नेतिगह्यो॥ ४२ ॥अथ कंस कमलके फूल मगाए कालीदमनलीला अष्टपदीपदमेरोडश॥राग बिलावल॥ नारदसो नृप करत विचार। ब्रजमें ये दोउ कोउ अवतार ॥ नंदसुवन बलराम कन्हाई। इनकी गति मैं कछू न पाई ॥ तृणावर्तसो दूत पठाए। ता पाछे कागासुर धाए ॥ बका पठाइ दई पहिलेही । ऐसेनको बलु वैसेहि लेही॥ उनते कछू भयो नहिं काजा।यह सुनिसुनि मोहिं आवति लाजा॥अब मुनि तुम इक बुद्धि विचारहु। सूर श्याम बलरामहि मारहु॥ ४३ ॥नारदऋषि नृपसों यह भाषत। वेहैं काल तुम्हारे प्रगटे काहेते तुम उनको राखत॥ काली उरग रहो यमुनामें तहते कमल मँगावहु। दूत पठायदेहु ब्रजऊपर नंदहि अति डरपावहु ॥ यह सुनिकै ब्रजलोग डरेंगे वोउ सुनिहैं यह बात। पुहुप लेन जैहैं नंदढोटा उरग करै तहां घात॥यहसुनि कंस बहुतसुख पायो भली कही इह मोहिं। सूरदास प्रभुको मुनि जानत ध्यान करत मन एहिं॥४४॥राग धनाश्री॥कंस बुलाइ दूत एक लीन्हो।

निकसे करे केस ख्याल ॥ मुरछि काढे गिरे धरणी कहा यह जंजालमें यहां जो आइ देखोपरे सब बेहाल॥आनि अँचयो जल यमुनको तबहि गए अकुलाइ। निकसिकै जब कूल आए गिरि परे सब आइ॥प्राणबिनु हम सब भये ते तुमहिं दियो जिवाइ।सूरके प्रभु तुम जहां तहँ हमहिं लेत बचाइ ॥२७॥ राग गौरी॥बलदाऊ कहि श्याम पुकारयो।आवहुवेगि चलौं घर जैये बनहीमें पुनि होत अंध्यारो॥ल्याए बोलि सखा हलधरको हँसे श्याम मुख चाही। बडीबेर भई तुमहिं कन्हैया गाइन लेहु निबाही ॥हेरी देत चले सब बनते गोधन दिए चलाई। सूरदास प्रभु राम श्याम दोउ ब्रजजनके सुखदाई ॥ २८ ॥वृंदावन प्रवेश शोभा। राग गौरी॥वे मुरलीकी टेर सुनावत। वृन्दाबन बसि बासर सब निशि आगम जानि चले ब्रजआवत ॥ सुबल सुदामाअरु श्रीदामासंग सखा मोहन छवि पावत। सुरभीगण सब ले आगे करि कोउ टेरत कोउ वेणु बजावत॥ केकीपच्छ मुकुट शिर भ्राजित गौरी राग मिले रस गावत। सूरश्यामके ललित वदनपर गोरज-छवि कहुँ चंद छपावत॥ २९ ॥हरि आवत गाइनके पाछे। मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल नयन विशाल कमलते आछे ॥ मुरली अधर धरन सीखतहैं बनमाला पीतांबर काछे। ग्वालबाल सब बरणबरणके कोटि मदनकी छवि कियो पाछे॥पहुँचे आइ श्याम ब्रजपुरमें घरहि चले मोहनबल आछे।सूरदासप्रभु दोउजननी मिलि लेतिबलाइबोलि मुख पाछे॥३०॥राग कल्याण सबै नंद बुलाए कहत सुनो यह बाता।सुनहु तुरो प्यारो हम सब मरत जिवाए ॥ नरबपु धरे देव ॥रागजैश्री ॥आपु चढे ब्रजऊपर काली। कहांनिकसि जेए कोराखे नंदकहत बेहाली॥भितपूतना जियको डर नेकहु दोउ सुतको डरपाऊं। गाउ तजों कहुँ जाउ निकसि ले इनही काज पराऊँ ॥ अब उबारि नहिं दीखतकतहूं शरणराखि को लेइ।सूर श्यामको बरजति माता बाहिर जान नदेइ ॥५५०॥ राग आसावरी॥नंदघरनि ब्रजनारि बिचारति।ब्रजहि बसत सब जनम सिराने ऐसेंकंस करी नहिं आरति॥कालीदहके फूलमँगावत को आनै धौंजाई। ब्रजबासी नातरु सब मारौ बांधौं बलन कन्हाई॥ यह कहतहि दोउ नैन ढराने नदघरनि दुख पाइ। सूर श्याम चितवत मातासुख बूझत बात बनाइ॥ ५१ ॥बूझहु जाइ तातसो बात। मैं बलिजाउँ मुखारबिंदकी तुमही काज कंम अकुलात ॥आए श्याम नदपै धाए जान्यो मात पिता अकुलात। अबही दूरि करौं दुख इनको कसहिं पठै देउँ जलजात ॥ मोसो कहो बात बाबा यह बहुत करत तुम सोचबिचार।कहा कहौं तुमसो मेरे प्यारे कंस करत कछु तुमको झार॥जबते जनम भयो हरि तेरो कितनेकरबरटरे कन्हाई। सूर श्याम कुलदेवनि तोको जहां तहां करिलिए सहाई ॥५२॥ राग बिलावल ॥ तुमहिं कहत जो करै सहाई। सो देवता सगही मेरे ब्रजते अनत कहू नहि जाई॥ वह देवता कंस मारैगो केश धरे धरणी घिसिआई।वह देवता मनावहु सब मिलि तुरत कमल जो देइ पठाई॥ बाबा नद झखत केहि कारण यह कहि माया मोह अरुझाई। सूरदास प्रभु मात पिताको तुरतहि दुख डारयो बिसराई ॥५३॥ राग नट ॥खेलन चले कुवर कन्हाइ। कहतघोष निकासजैए तहां खेलें धाइ॥गेंदखेलत बहुत बनिहै आनो कोई जाइ। घरही गए सखा श्रीदामा गेंद तुरतही ल्याइ॥ अपनेकर ले श्याम देख्यो अतिहि हरषबढाइ। सूरके प्रभु सखा लीन्हे करत खेल बनाइ ॥५४॥ खेलन श्याम सखा लिये सगाइक मारत इक रोकत गेंदहिइक भागत कारे नानारंग॥ मारु परस्पर करत आपुमे अति आनद भए मनमाहिं। खेलतहीमें श्याम सबनिको यमुनातटको लीन्हें जाहिं ॥ मारि भजन जो जाहि ताहि सो मारत लेन आपनो दाव । सूर श्यामके

गुण को जाने कहत और कछुऔर उपाव॥५५॥ राग गौरी॥ लैगए टारि यमुनतटग्वालनि।आपुन जात कमलके काजहि सखा लिए संग ग्यालनि॥चोरी मारि भजत उतहीको जात यमुनके तीर। इक धावत पाछे उनहींके पावत नहीं अधीर ॥ रोगटि करत तुम खेलतहीमें परी कहा यह बानि। सूरश्यामसों कहत ग्वाल सब तुमहिं भले करि जानि॥ ५६ ॥ श्याम सखाको गेंद चलाई । श्रीदामा मुरि अंग बचायोगेंदपरचोकालीदह जाई॥धाइ गह्यो तब फेंट श्यामकी देहु न मेरो गेंद मँगाई।और सखा जिनि मोको जानो मोसों जिनि तुम करोढिठाई॥जानि बूझि तुम गेंदगिरायो अब दीन्हेही बनै कन्हाई।सूर सखा सब हँसतपरस्परभलीकरी हरिगेंदगिराई ॥ ५७॥ राग सोरठ॥ फेंट छांडि देहु मेरी श्रीदामा । काहेको तुम रारि बढावत तनक बातके श्यामा॥मेरो गेंद लेहु ता बदले बांह गहत कत धाइ । छोटो बडो न जानत काहू करत बराबरि आइ ॥हम काहेको तुमहि बराबरि बडे नंदके पूत । सूर श्याम दीन्हेंही बनिहै बहुत कहावत धूत ॥ राग कल्याण ॥ तोसों कहा धुताई करिहौं । जहां करी तहँ देखी नाहीं कहा तोसों मैं लरिहौं ॥ मुँह सँभारि तू बोलत नाहीं कहत बराबरि बात । पावहुगे अपनो कियो अबहीं रिसन कँपावत गात ॥ सुनहु श्याम तुमहूँ सरि नाहीं ऐसे गये बिलाइ । हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाइ ॥ ॥ ५८ ॥ हमहीपर सतरात कन्हाई । प्रथमहि कमल कंसको दीजै डारहु हमहिं मगाई ॥ साच कहो मैं तुमहिं श्रीदामा कमलकाज मैंआयो । कहा कंस मथुरो केहि लायक जाको मोहिं डरायो॥अघा बका केशी शकटासुर तृणा शिला पर डारचो । बकीकपटकरि ग्यावन आई ताको तुरत पछारचो ॥ कालीदह जलछुवत मरे सब सोइ काली धरि ल्याऊं । सूरदास प्रभु दह धरको गुण प्रगटौं एहि ठाऊं ॥५९॥ राग सोरठ ॥ रिसि करि लीन्ही फेंट छुडाई । सखासबै देखतहैं ठाढे आपुन चढे कदमपर धाई॥ तारी दैदै हँसत सबै मिलि श्याम गए तुम भाजि डराई । रोवत चले श्रीदामा घरको यशुमति आगे कैहौं जाई॥ सखा सखा कहि श्याम पुकारचो गेंद आपनो लेहु न आई । सूर श्याम पीताम्बर काछे कूदिपरे दहमें महराई॥५६०॥राग गौरी॥ हाइहाइ करि सखनि पुकारचो । गेंदकाज यह करी श्रीदामा नंदमहरको ढोटा मारचो ॥ यशुमति चली रसोईभीतर तबहिं ग्वालि इक छींकी।ठिठकिरहीद्वारेपरठाढीबात नही कछु नीकी॥आइ अजिरनिकसी नँद रानी बहुरो दोष मिटाइ । मजारी आगे दै निकसी पुनि फिरि आंगन आइ॥व्याकुल भई निकसि गई बाहिर कहा धौं गयो कन्हाई।बायोकाग दहिन खर शूकर व्याकुल घर फिरिआई॥खनभी-तर खन बाहिर आवति खन आगन इहि भाँति।सूर श्यामको टेरत जननी नेक नहींमनशांति। ॥ ६१॥ देखे नंद चले घर आवत । पैठत पौरिछींकभईबाईं रोइ दाहिने धाह सुनावत॥फटकत श्रवन श्वान द्वारेपर गगरी करत लराई । माथपर दै काग उडानो कुशकुन बहुतक पाई ॥ आए नंद घरहि मनमारे व्याकुल देखी नारी । सूर नंद युवतीसों बूझत बिन छबिवदन निहारी॥६२॥ राग नट॥नंद घरनिसों बूझत बात । बदन झुराय गयो क्यों तेरो कहा गयो बल मोहन तात ॥ भीतर चली रसोई कारण छींक परी तब आंगन आई।पुनि आगे ह्वै गई मजारी और बहुतकुश-कुन मैं पाई ॥मोहिं भए कुशकुन घर पैठत आजु कहा यह समुझि न जाई । सूर श्याम गए आजु कहा धौं बार बार बूझत नँदराई ॥ ६३ ॥ महरि महर मन गए जनाइ । खन भीतर खन आंगन ठाढे खन बाहर देखतहैं जाइ ॥ यहि अंतर सब सखा पुकारत रोवत आए ब्रजको धाइ।आतुर गए नंद घरहीको महर महरिसों बात सुनाइ ॥ चकित भई दोउ बूझनलागे कहौ

वात हमको समुझाई।सूर श्याम खेलतहि कदम चढि कूदिपरे कालीदह जाई॥६४ ॥राग सोरठ ॥ सपनो प्रगट कियो कन्हाई ।सोवतही निशि आज डराने हमसो यह कहि बात सुनाई ॥ धरणि परी मुरझाइ यशोदा नंद गए यमुनातट धाई।बालक सब नंदहि संग धाए ब्रज वर जहँतहँ शोर मचाई॥बाहिब्राहि करि नंद पुकारत देखत ठौर गिरे भहराई।लोटत धरणि परत जलभीतर सूर श्याम दुख दियोबुढाई॥६५॥राग गौरी॥ ब्रजबासीयहसुनिमबआये।कहां परयो गिरि कुँवर कन्हाई बालक ले सो ठौर दिखाये ॥ सूनो गोकुल कियो श्याम तुम यह कहि लोग उठे सब रोइ। नंद गिरत सबहिन धरि राख्यो पोंछत वदन नीर ले धोइ ॥ ब्रजवासी तब कहत नंदसो मरण भयो सबहीको आइ। सूर श्याम बिनु को बसिहै ब्रज धृग जीवन तिहुँ भुवन कहाइ॥६६॥ महरि पुकारति कुँवर कन्हाई ।माखन धरयो तिहारेहि कारण आजु कहाँ अबसेर लगाई।अतिकोमल तुम्हरे मुखलायक तुम जेंवहु मेरे नैनजुडाई।धौरीदूध औटि है राख्यो अपने कर दुहि गए बनाई॥ बरजत ग्वारि यशोदाकोसब यह कहिकहि नीके यदुराई।सूर श्याम सुतविरह मातके यह वियोग वरण्यो नहिं जाई॥६७ ॥ राग गौरी॥ माखन खाहु लाल मेरे आई।खेलत आजु अबार लगाई ॥ बैठहु आइ संग दोउ भाई।तुम जेंवहु मैया बलि जाई ॥ सद माखन अति हित मैं राख्यो। आजु नही नेकहु तै चाख्यो ॥प्रातहिते मैं दियो जगाइ । दँतवनि करि जु गए दोउ भाइ ॥मैं बैठी तुम पथ निहारो । आवहु तुमपर तनु मनु वारो॥ ब्रज युवती सब सुनि ए बानी । रोवत धरणि परी अकुलानी॥शोकसिंधु बैठी नँदरानी।सुधि बुधितनकी सबैभुलानी॥सूरश्याम लीला यह कीन्हो। सुखके हेत जननि दुख दीन्हो ॥ ६८ ॥ चौंकिपरी तनकी सुधि आई। आज कहा ब्रज शोर मचायोतब जान्यो दह गिरो कन्हाई॥पुत्रपुत्र कहिके उठि दौरी व्याकुल यमुनातीरहि धाई।ब्रज बनिता मब संगहि लागी आइगए बल अग्रज भाई॥जननी व्याकुल देखि प्रबोधतधीरजकरि नीके यदुराई । सूर श्यामको नेक नही डर जिनि तू रोवैयशुमति माई॥६९राग बिलावल॥ब्रजवासीसबउठे पुकारी।जलभीतर कहा करत मुरारी॥सकटमें तुम करत सहाय।अबक्यो नहीं बचावत आय॥ माता पिताअतिहिदुख पावत।रोइरोइ सब कृष्ण बुलावत॥हलधर कहत सुनहु ब्रजवासी।ये अंतर्यामी अविनासी॥सूरदास प्रभु आनँदरासी। रमामहित जलहीके वासी॥७०॥राग सही॥ अतिकोमल तनु धरयो कन्हाई।गए तहाँ जहाँ काली सोवत उरगनारि देखत अकुलाई॥कह्यो कौनकोबालकहैतू बारबार कहि भागन जाई।छिनकहिमेजरि भस्म होयगो जब देखै उठि जागिजँभाई॥ उरगनारिकी वाणीसुनिकै आप हँसे मनमें मुसकाई।मोकोकम पठायोदेखन तूयाको अब देहि जगाई॥कहाकस दिखरावत इनको एक फूकहीमें जरिजाई । पुनिपुनिकहत सूरकेप्रभुको तूअब काहेनजाइपराई ७१ राग गोंड मलार॥कहा डर करौंयहि फनीको बावरी।कह्यो मेरोमानि छाँडि अपनीबानि अबही परिहै जानि टेक सब रावरी॥तोहि देखि मोहिं मया अति भई कौनको सुवन तू कहाँ आयो । मरौ वह कंस निर्वंशवाकोहोइ कह्यो यह कस तोकों पठायो॥कसको मारिहों धरणि निरवारिहों अमर उद्धारिहौं उरगघरनी।सूर प्रभुके वचन सुनत उरगनि कह्यो जाहि अब क्यो न मति भई मरनी ॥ ॥७२॥ राग मारू॥झिरकिकै नारि दे गारि गिरिधारि तब पूछपर लात दे अहि जगायो । उठयो अकुलाइ डरपाइ खगराइको देखि बालकगर्व अति बढायो॥पूँछ राखी चर्चापि गिसनि काली कांपि देखै सब सांपि औसान भूले। पूँछ लीन्हो झटकि धरनिसो गहि पटकि फ कह्यो लटकि करि क्रोध फूले ॥ करत फनघात विषजात अतुरात अति नीर जरिजात नहिं गात परसै।

सूरके प्रभु श्याम लोकाभिराम बिन जानि अहिराज विषज्वाल परसे ॥ ७३ ॥
॥राग नट ॥इनको लै ब्रजलोग दिखाऊं।कमलभार इनहीपै ल्याऊं। इनकोआपु जनाऊं।मातपिता
अतिही दुख पावत दरशन दै मन हरष कराऊं। कमल पठाइदेउं नृपराजहि काल्हि कह्यो
ब्रजऊपर धाऊं॥मनमन करत विचार श्याम यह अब कालीको ठौर दिखाऊं।सूरदास प्रभुकी यह
बानी ब्रजवासिनको दुख बिसराऊं ॥७४॥ राग कल्याण ॥ उरगनारि सब कहत परस्पर देखहु या
बालककी बात। विषज्वाला जलजरत यमुनको याके तन लागत नहिं तात ॥ यह कछु यंत्र
मंत्र है जानत अतिही सुन्दर कोमलगात।यह अहिराज महाविषज्वाला फिरते करत महमफन
घात॥छुअत नहीं तनु याको विष कहु अबलौं बच्यो पुण्य पितुमात । सूर श्यामसों दाव बतायो
काली अंगलपेटत जात ॥७५॥राग बिलावल ॥उरग लियोहरिकोलपटाई।गर्ववचन कहिकहिमुख
भाषत मोको नहिं जानत अहिराई॥लियो लपेटिचरणते शिरलौं अति यहि मोसो करी ढिठाई।
चांपी पूंछ लुकावत अपनी युवतिनको नहिं सकत दिखाई ॥ प्रभु अंतर्यामी सब जानत अब
डारौं यहि सकुचमिटाई॥सूरदास प्रभुतनुविस्तारचो कालीविकलभयोतबजाई ॥७६॥राग कान्हरो॥
जबहिं श्यामतनु अतिविस्तारचो। पटपटात टूटत अँग जान्यो शरणशरण अहिराज पुकारचो ॥
यहबाणी सुनतहिकरुणामय तबहिंगए सकुचाई।इहै बचन सुनि द्रुपदसुतामुख दीन्हो बसन बढाई॥
इहै बचन गजराजसुनायो गरुड छांडि तहां धाये।यहै बचन सुनि लाखागृहमें पांडव जरतबचाये॥
यह बाणी सहिजात न प्रभुसों ऐसे परमकृपाल।सूरदास प्रभु अंगसकोरचो व्याकुल देख्योव्याल
॥७७॥रागगौरी॥नाथत व्याल बिलब न कीन्हो।पगसों चापि धीच बल तोरचो फोरि नाक करसों
गहिलीन्हो॥ कूदिचढे ताके माथेपर काली करत विचार।श्रवणन सुनी रही यहै बाणी ब्रज है
है अवतार॥तेइ अवतरे आइ गोकुलमें मै जानी यह बात।अस्तुति करनलग्यो सहसों फन धन्य
धन्य जगतात ॥बारबार कहि शरण पुकारचो राखिराखि गोपाल। सूरदास प्रभु कहत सकुचि
गए शरण कहत तब व्याल ॥७८ ॥राग बिलावल॥देखि दरश मन हरष भयो। पूरणब्रह्म सनातन
तुमही ब्रजहिं कृष्ण अवतार लयो॥श्रीमुख कह्यो अजौंलौं तुम नहिं जानो ब्रह्मअवतार।और कौन
जो तुमसों बाँचै सहसफननिकी झार॥ अनजानत अपराध किये यहु राखि शरण मोहिं लेहु ।
सूरदास प्रभु धनि मेरे फन चरणकमल जहां देहु॥७९॥राग गौरी॥ अब कीन्हो प्रभु मोहिं सनाथ।
कोटिकोटि कीटहु सम नाहीं दरशन दिये जगतके नाथ ॥ अशरनशरन कहावततहो तुम कहत
सुनी भक्तनिमुख बात। ये अपराध क्षमा सब कीजे धृग मेरी बुधि कहत डरात॥ दीनबचनसुनि
कालीमुखते चरण धरे फनफन प्रति आप।सूर श्याम देख्यो अहि व्याकुल सुख दीनो मेटे त्रय
ताप॥८०॥यशुमति टेरति कुँवर कन्हैया। आगे देखि कहति बलरामहिं कहां रह्यो तुम भैया॥
मेरे भैया आवत अबहीं तोहि दिखाऊं मैया । धीरज करहु नेक तुम देखहु यह सुनि लेति
बलैया॥पुनि यह कहति मोहिं परबोवत धरणिगिरी मुरझैया।सूर बिना सुत भइ अति व्याकुल
मेरोबाल नन्हैया॥८१॥राग सारंग॥भरोसो कान्ह कोहैमोहि।सुन यशुदाकालीके भयते तू जिनिव्या-
कुल होहि॥पहिले पूतना कपटके आई अस्तनविषयापोडि।गह बसीज्योंमबलछदिनके बालकमारि
दिखावत तोहि॥अघा बका धेनुक तृणावर्त केसीको बल देख्यो जोहि । सात दिवस गोवर्धन
गरयो [illegible] मन आयो अबरोहि।सूरदास प्रभु जो
कहिये [illegible] तोहि बसो क्यों भाने।तोमें कृष्णहेलुना

खेले सो सुरत्यो नहिं आवे ॥तेरे नीर शुची जल जो हैं खार पनार कहावे । हरिवियोग कोउ पोंउ न देहे को तट बेणु बजावे॥भरि भादों जो राति अष्टमी सो दिन क्यो न जनावे।सूरदासके ऐसे ठाकुर कमल फूल लेआवे ॥८३॥ ब्रजवासी सब भए बिहाल । कान्हकान्ह कहिकहि टेरतहें व्याकुल गोपी ग्वाल॥अब को बसे जाइ ब्रज हरि बिनु धृग जीवन नर नारी। तुमबिनु यह गति भई सबनिकी कहां गए बनवारी॥ प्रातहिते जलभीतर पेठे होन लग्यो युग याम । कमल लिये सूरज प्रभु आवत सबसों कहि बलराम ॥८४॥ राग नट ॥ आवत उरग नाथे श्याम । नंद यशुदा गोपि गोपनि कहतहें बलराम॥मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवन कुंडल लोल । कटि पितांबर भेष नटवर नृतत फनप्रति डोल॥दव दिवि दुंदुभि बजावत सुमनगन बरषाइ। सूरश्याम विलोकि ब्रजजन मात पितु सुख पाइ॥८५॥राग नट ॥ मात पिता मन हरष बढायो । मोर मुकुट पीतांबर काछेदेख्योअतिहिनिकटजबआयो॥देवव्योमदुंदुभी बजावत गावतफनपरनिरततश्याम। ब्रजवासी सब मरत जिवाए हरषि उठीं सब बाम ॥ शोकसिंधु बहिगयो तुरतही सुखको सिंधु बढायो।सूरदास प्रभु कंसनिकंदन कमल उरगपर ल्यायो ॥ ८६ ॥ राग कान्हरो ॥ फन फन प्रति निर्तत नँदनंदन । जलभीतर युगयाम रहे कहुं मिट्यो नही तनुचंदन॥उहे काछनी कटि पीतांबर शीश मुकुटअति सोहत॥मनु गिरिऊपर मोर अनंदित देखत ब्रजजनमोहत ॥ अंमरथकेअमर ललनासँग जयजयध्वनि तिहुँलोक।सूरश्यामकालीपर निर्ततआवत ब्रजकीओक॥८७॥राग सोरठ॥ गोपालराइ निर्तत फन प्रति ऐसे।मनो गिरिवर पर बादर देखत मोर अनंदत जैसे॥डोलत मुकुट शीशपर कुंडल मंडित गंड।पीत बसन दामिनि तनुघनपर तापर सुर कोदंड॥उरगनारि आगे सब ठाढी मुखमुख [illegible]

करी गुसाई। [illegible]

पति राखी । ग्राह मुखते गजराज छुडायो वेद पुराणन भाषी॥जोकछुकृपाकरी कालीको सोकाहू नहिं कीन्हों।कोटि ब्रह्मांड रोमप्रति अंगनि ते पग फन प्रति दीन्हों॥धरणि शीशधरिशेषगर्व करि भार अधिक संभारयो ।पूरण कृपा करी सूरजप्रभु पग फनफनप्रति धारयो॥८९॥राग सोरठ॥ठाढे देखतहें ब्रजवासी । करजोरें अहिनारि विनयकरें कहत धन्य अविनासी॥जे पद कमल रमा उर राखति परसि सुरसरी आई। जे पद कमल शंभुकी संपति फन प्रति धरे कन्हाई॥ जेपद परसि शिला उद्धारी पांडव गृह फिरि आए। जे पद कमल भजन महिमाते जन प्रहलाद बँचाए॥ जे पद ब्रज युवतिन सुखदायक तिहूँभुवन धरे बावन ।सूर श्याम ते पद फनफन प्रति निर्तत अहि कियो पावन ॥९०॥ ऐसी कृपा करी नहिं काहू। खंभप्रगटि प्रह्लाद बचायो ऐसी कृपा न ताहू ॥ ऐसी कृपा करी नहिं गजको पाईं पायदे धाए। ऐसी कृपा तबहुँ नहिं कीन्ही नृप बन्दिते छुडाए॥ ऐसी कृपा करी नहिं तब तिय नगनसमय पति राखी । ऐसी कृपा करी नहिं भीषम परतिज्ञा सतभाषी॥पूरण कृपा नद यशुमतिको सो प्ररण एहि पायो। सूर दास प्रभु धन्य कंस जिन तुमसो कमल मँगायो॥९१॥ राग कान्हरो ॥सुनहुकृपानिधि जैसी कृपा तुम या काली पे कीन्हो। इती बडाई कबहुँ न कैसो नहिं काहूको दीन्हो॥जिन पदकमल सुकृत जल परस्यो अजहुँ धरे शिवशीशाते पद प्रगट धरे फनफनप्रति धन्यकृपा जगदीश॥एकअंडको भार बहतहे गर्व धरयो जिय शेष । येही भार अधिक सह्यो अपने शिर अमित अंडमय भेष ॥ सुर नर असुर कीटपशु पंछी सब सेवक प्रभु तेरे । सूर श्याम अपराध क्षमहु अब या अपने

जनकेरे॥९२॥चरणकमल वंदौं जगदीश जे गोधनके संग धाए। जे पदकमल धूरि लपटानो कर गहिके गोपी उर लाए॥जे पदकमल युधिष्ठिर पूजे राजसूयमें चलिआए। जे पदकमल पितामह भीषम भारतमें देखनपाये॥जे पदकमल शंभु चतुरानन हृदयकमल अंतर राखे ।जे पद कमल रमा उर भूषण वेद भागवत मुनि भाखे।जे पद कमल लोकपावन त्रय बलिराजाके पीठ धरे।ते पद कमल सूरके स्वामी कालीफनपर निर्त करे॥९३॥गिरिधर ब्रजधर मुरलीधर धरनीधर पीतांबर धर मुकुटधर गोप धर उरग धर । शंखधर सारंगधर चक्रधर गदाधर रसधर अधर सुधाधर ॥ कंबुकंठधर कौस्तुभमणिधर वनमाला धर कालीफनप्रति चरणधर। सूरदासके प्रभु जगतधर भक्तधर दुष्टकंसकेश धर॥९४॥ गरुड त्रासते जो ह्यां आयो।तौ प्रभु चरण कमल फन फन प्रति अपने शीश धरायो॥धनि ऋषि शाप दियो खग पतिकों ह्यांतव रह्यो छपाइ। प्रभुवाहन डर भाजि बँच्यो अहि नातर लेतो खाइ॥ यह सुनि कृपा करी नँदनंदन चरणचिह्न प्रगटाये।सूरदास प्रभु अभय ताहि करि उरग द्वीप पहुँचाए॥९५॥ अतिवल करि करि काली हारयो । लपट गयो सब अंगअंग प्रति निर्विष कियो सकलअल झारयो ॥ निर्तत पद पटकत फन फन प्रति वमत रुधिर नहिं जात सँभारयो । अति बलहीन छीन भए तेहिछन देखियतहैं ज्वाला समडारयो॥तिय बिनती करुणा उपजी जिय गह्यो श्याम नहीं तेहि मारयो ।सूरदास प्रभु प्राणदान कियो पठयो सिंधु बहाते टारयो॥९६॥खेलत खेलत जाइ कदम चढि झप यमुनाजल लीनो।सोवतकाली जाइजगायो फिरि भारत हरि कीनो॥उठि युवती करजोरि विनति करि श्याम दान हम दीजे । टूटत फन फाटत तनु देही दुहुं दिशि कान्ह निहोरो लीजे॥तबअहिछांडिदियोकरुणामय मोहनमदन मुरारी।सागरवासदियो कालीकोसूरदासबलिहारी॥९७॥रागकल्याण ॥जयजयध्वनिअमरननभकीन्हीं।धन्यधन्य जगदीश गुसांई अपनो करि अहि लीन्हों॥अभय कियो फन चिह्न चरण धरि जानिआपनो दास।जलते काढ़ि कृपाकरि पठयो मेटि गरुडको त्रास ॥ अस्तुति करत अमरगणबहुरगए आपने लोक। सूर श्याम मिलि मातपिताको दूरिकियोतनुशोक॥९८॥ राग कान्हरो॥लीन्होंजननीकंठलगाइ।अंगपुलकित रोमगदगद सुखदअंशु वहाइ॥मैं तुमहिंवरजतिहौंहरि यमुनतटजिनजाइ। कह्यो मेरो कियो कान्ह नहिं गये खेलन धाइ॥कंस कमल मँगाइ पठए तात गएउडराइ।मैं कह्यो निशि स्वप्नतोसों प्रगट भयो सो आइ॥ग्वालसँग मिलि गेंदखेलत आए यमुनातीर।काहूलैमोहिं डारिदीन्हों कालिया दह नीर॥ यह कही तब उरग मोसों किनिपठायो तोहिं।मैंकहीनृपकंसपठयोकमलकारण मोहिं यह सुनत डर कमल दीन्हों मोहिं लियो पीठ चढाइ। सूर यह कहि जननि बोधी देखो तुमहीं आइ ॥९९॥ राग गौरी ॥ब्रजवासिनसों कहत कन्हाई। यमुनातीर आजु सुख कीजे यह मेरे मन आई॥ गोपन सुनि अति हर्ष बढायो सुखपायो नँदराई। घर घरते पकवान मँगायो ग्वालन दिये पठाई॥ दधि माखन षटरसके भोजन तुरतहि ल्याए जाई । मात पिता गोपी ग्वालनको सूरज प्रभु सुखदाई ॥६००॥ तुरत कमल अब देहु पठाइ । सुनहु तात अब बिलम न कीजे कंसचढै ब्रज ऊपर आइ ॥ कमल मँगाइ लिये तट ऊपर कोटि कमल तब दिये पठाइ । बहुत विनय करि पाती पठई नृप लीजे सब पुहुप गनाइ ॥तैसी मोकों आज्ञा दीजे बहुतधरे जलमांझ सजाइ। सूरदास नृप तुव प्रतापते काली आप गयो पहुँचाइ ॥ १ ॥राग सोरठ ॥सहस शकट भरि कमल चलाए । अपनी समसरि और गोप जे तिनको साथ पठाए ॥ और बहुत कांवरि माखन

दधि अहिरन कांधे जोरी । बहुत बीनती मेरी कहियो औरधरे जलजामल तोरी ॥ नृपके हाथ पत्र यह दीजो श्याम कमल लै आयो।कोटि कमलआपुन नृप मांगे तीनि कोटिहैपायो॥ नृपति हमहिं अपनो करि जानों तुम लायक हम नाही । सूरदास कहियो नृपआगे तुमहिं छोंडि कहां जाही ॥२॥ राग गंड॥ कमलके भार दधिभार माखनभार लिये सबग्वार नृपद्वार आए । तुरतही टारि गनिकरि शकटनिजोरि भये ठाढे पौरि तब सुनाए॥सुनत यहबात अतुरात औ डरातहिय महलते निकसि नृप आपु आए । देखि दरबार सब ग्वार नहिं कहूं पार कमलके भार शकटनि सजाए॥अतिही चकित भयो ज्ञान हरि हारिलयो सोच मनमें ठयो कहा कीन्हों। गोप शिरमोर नृपओर करजोरिकै पुहुपके काज प्रभु पत्रदीन्हों॥यह कह्यो नंद नृप बंद अहिइन्द्रपै गयो मेरो नंदन तुव नाम लीन्हों । उठ्यो अकुलाइ डरपाइ तुरतहि धाइ गयो पहुँचाइ तट आइ दीन्हों ॥ यह कह्यो श्याम बलराम लीजो नाम राजको काम यह हमहिं कीन्हों । और सब गोप आवत जात नृप बात कहत सूर मोहिं नहीं चीन्हों॥३॥ राग बिलावल ॥ग्वालन हरिकी बात चलाई।यह सुनि कंस गयो अकुलाई ॥ तबमनहीं मन करत बिचार । यह कोउ भयो नही अवतार॥यासों मेरो नही उबार। मोहिं मारत मारे परिवार॥ दैत्य गए ते बहुरि न आए । कालीते ये क्यों बचि आए॥ ताही पर धरि कमल लदाए। सहस शकट भरि व्याल पठाए ॥ एक व्याल में उनहिं बताए। कोटिव्याल मम सदन चलाए ॥ ग्वालन देखि मनहिं रिस कॉपे। पुनि मनमें यह अटकर नापै॥आपहिआप नृपहिं तनु त्याग्यो।सूर देखिकमलन उठि भाग्यो॥ ॥४॥राग नट ॥ भीतर लए गोपबुलाइ । हृदय दुख मुख हलभली करि ब्रजहि दिए पठाइ ॥ नंदको शिरोपाव दीन्होंगोप सब पहिराइ। यह कह्योबलराम श्यामहि देखिहौ दोउ भाइ॥अतिहि पुरुषारथ करे उन कमल उनहिं लियाइ । सूरप्रभुको देखिहौं में एक दिवस बुलाइ ॥५॥ कमल शकटनि भरे व्याल मानो । श्यामके बचन सुनि मनहि मन रह्यो गुनि काठ ज्यों गयो पुनि तन भुलानो॥ भयो बेहाल नँदलालके ख्याल यहडरगते बाँचि फिरिब्रजहि आयो। कह्यो दावा नलहि देखों तेरे बलहि भस्मकरि ब्रजपालहि कहि पठायो॥चल्यो रिसपाइ चतुराइ तबधाइकेब्रजलोग ब्रजसहित मैं जारि आऊं । नृपतिकै ले पान मन कियो अभिमान करत अनुमान चहुँपास धाऊं॥ वृंदावन आदि ब्रजआदिगोकुलआदि आदि बुन्यादि सब अहिरजारों । चल्योमगजात कहिबात इतरात अति सूरप्रभु सहितसंहारिडारों ॥ ६ ॥ राग गौड मलार ॥ कमल पहुँचाइ सबगोपआए । गए यमुनातीर भई अतिहीभीर देखि नंदतीर तुरतही बोलाए॥ दियो शिरोपाव नृपराउने महरको आप पहरावनी सब दिखाए । अतिहि सुख पाइकै लियो शिर नाइके हरपनँदराइकै मन बढाए॥ श्याम बलरामको नाम जब हम लियो सुनत सुख कियो उन कमल ल्यायो । सूर नंदसुवन दोउ एक दिवस देखिहौं पुहुपलिए सुखपाइ इनि बोलाए ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ यह सुनिनंद बहुतसुख पाये । कमल पठाइ दये नृपलीन्हे देखनको दुहुँ सुतन बुलाये॥सेवाबहुतमानि हैं लीन्ही ब्रजनारिन मन हरप बढाये । बडीबात भई कमल पठाए आनहु आपुन जलते ल्याये ॥ आनंद करत यमुन तट ब्रजजन खेलन खातहि दिवस बिहाए । एक सुख श्याम बचे कालीते यकसुख कसहिकमल चलाए ॥ हँसत कान्ह बलराम सुनत यह हमको देखन नृपति मगाए । सूरदासप्रभु मात पिता हित कमल कोटि दै ब्रजहि बचाए ॥ ८ ॥ अथ कालीलीला दूसरी । राग धनाश्री ॥ नारद कहि समुझाइ कंस नृपराजको । तब पठयो ब्रज दूत पुहुप एक काजको ॥ १ ॥ तब पठयो ब्रज ।दूत

सुनी नारदमुख वानी। वार वार ऋषिराज कंस मुख अस्तुति गानी॥ धन्य धन्य मुनिराज तुम भलो मंत्र दियो मोहिं। दूत चल्यायो तुरतही अवहिं जाहि ब्रज जोहि॥२॥ इह कहियो तू जाइ कमल नृप कोटि मँगायो। पत्र दियो लिखि हाथ कह्यो वहुभांति जनायो॥ कालि कमल नहिंआवई तौ तुमको नहिं चैन। शिरनाइ कर जोरिकै चल्यो दूत सुनि बैन॥३॥ तुरत पठायो दूत नंदघरहीमें आयो। कमल फूलके भार कंसनृप वेगि मँगायो॥कालिह न पहुँचे आइकै तव वसियो ब्रजलोग।गोकुलमें जे सुख किये ते करि देहौं सोग॥४॥जो न पठावहु पुहुप कहौंगे तेसी मोको।यह जानहु गोपन समेतधरिल्याऊं तोको॥वलमोहनतेरेदोउनको पकरिमगाऊं कालिपुहुप वेगि पठए वने जोरे वसौ ब्रजपालि॥५॥यह सुनि नंद डराय अतिहि मनमनअकुलानो।यहकागज क्यों होइ काल अपनो करिजानो॥ औरमहर सब बोलिलै केसी करें उपाइ। कालिप्रात ब्रज मारिहै वांधि सवनि लैजाइ॥६॥वल मोहनकोनाउँ धर्‍यो कहि पकरि मँगावन-जाते अति भयो सोच लगत सुनि मोहिंडरावन॥यह सुनि शिरनायेसवन मुखहि न आवैवात वार वार नंद कहतहै यह लरिकनपर घात॥७॥ की वालकनि भगाइ जाहिं लै आन देशपर। वरु हमको लैजाइ श्याम वलराम वचे घर॥ महरि सबै ब्रजनारिनसों पूछत कौन उपाउ। जनमहिते करवर टरी अवकै नहीं बचाउ॥ ८॥ कोउ कहै देहें दाम नृपति जितनो धन चाहै। कोउ कहै जैये शरन सबै मिलि बुधिअवगाहै॥ यही सोच सब परिरहे कछू नहीं निरवार। ब्रज भीतर नंदभवनमें घरघर इहै विचार॥९॥ अंतर्यामी जानि नंदसों बूझत बात। कहा करतहौ सोच कहौ कछु मोसों तात॥कहा कहौं मेरे लाडिले कहत वडो संताप। मथुरापतिके जी कछू तुमपर उपज्यो पाप॥ १०॥ कालीदहके पुहुप मांगिपठये हमसों उनि। तवते मोजिय सोच जवहिते बात वरी सुनि॥जो नहिं पठवहु कालिही तौ गोकुल देउँ लगाइ। मो समेत दोउ बंधु तुम कालिहि लेइ वँधाइ॥ ११॥ यह कहिपठयो कंस तवहिते सोच परचो मोहिं। प्रथम पूतना आइ बहुत दुख दै जु गई तोहिं॥ तृणावर्तके घातते बहुत बच्यो दुख पाइ। शकटा केशीते वच्यो अव को करै सहाइ॥ १२॥ अघा उदरते वच्यो वहुत दुख सह्यो कन्हाई। वका रह्यो मुख वाइ तहां भयो धर्म सहाई॥ इतने करवर हैं टरे देवन किये सहाइ। तवते अव गाढी परी मोको कछु न सुहाइ॥ १३॥ वावा तुमही कहत कौन धौं तोहिं उवारे। सोइ गजदेवता प्रगट कंस गहि केश पछारै॥यह जवही हरिसोंसुनीनंदमनहिं पतिआइ। गगनगिरत जो सँग रह्यो सो करिलेइ सहाइ॥ १४॥ नंदहि यह समुझाइ कान्ह उठिखेलन धाए। जहँ ब्रज वालक वहुत तुरत तह आपुन आए॥ गोपसुतनिसों यह कह्यो खेलैं गेंद मँगाइ। श्रीदामा इह सुनतही घरते लाये जाइ॥ १५॥ सखा परस्पर मार करें कोउ कानि न मानें। कौन वडो को छोट भेद भेदा नहिं जानें॥खेलत यमुना तट गए आपुहि ल्याये टारि। श्रीदामाके हाथते लै गेंद दयो दहडारि॥ १६॥ श्रीदामा गहि फेंट कह्यो हम तुम एक जोटा। कहा भये जो नंद वडेतुम तिनके ढोटा॥खेलतमें कहा छोट वड हमहुं महरके पूत। गेंद दियेही पै वने छांडिदेहु मद धूत॥ ॥१७॥ तुमसो धूत्यो कहा करौ धूर्यो नहिं देख्यो। प्रथम पूतना मारिकाग शकटासुर पेख्यो॥ तृणावर्त पटक्यो शिला अघा वका संहारि। तुम तादिन सगहि रहे अव धूतन कहत सँभारि॥ ॥ १८॥ टेढे कहा वतात कसको कमल देहु अव। कालिहि पठए मांगि पुहुप अव लै देहौंजव॥ वहुत अचगरी जिनकरौ अजहू तजो ढ्यारि। पकरि कस लैजाइगो कालिहिपरै सँभारि॥१९॥

कमल पठाऊँ कोटि कंसको दोष निवारौं। तुम देखत पुनि जाउँ कंस जीवत धरि मारौं॥ फेंट लियो तब झटकिकै चढे कदमपर आइ। सखा हँसत ठाढे सबै मोहन गए पराइ॥६२०॥ श्रीदामा चले रोइ जाइ कैहौं नंदआगे। गेंद लेहु तुम आइ मोहिंडरपावनलागे॥ यहकहिकैकूदे सलिल कीन्हें नटवर नाज। कोमलतनु धरिकै गए जहँ सोवतअहिराज॥२१॥ यहिअंतरनंदघरनि कह्यौ हरि भूखे ह्वैहैं। खेलत ते अब आइ भूखकहि मोहिं सुनैहैं॥ अति आतुर भीतर चली जेंवन कारन आप। छींक सुनत कुसगुन कह्यो कहा भयो यह पाप॥२२॥ अजिर चली पछितात छींकको दोष निवारण। मंजारी गई काटि तबहिं निकसतही वारण॥ जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबेर लगाइ। कुसगुन आजु बड़ेन भए कुशल रहैं दोउ भाइ॥ २३ ॥ श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई। आतुर आए नंद घरहि बूझत दोउ भाई॥ नंद घरनिसों यह कहत ,मोको लगत उदास। एहि अंतर हरि कहँ गए जहँ कालीको वास ॥ २४ ॥ देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय भयो सोवत। बैठि तहां अहिनारि डरी बालकको जोवत॥ भागि भागि सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात। एकफूंकको नहीं तू विषज्वाला अतितात॥२५॥ तब हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देइ जगाई। आयो देखन वाहि कंस मोहिंदियो पठाई॥ कंसकोटि जरिजाहिंगे विषकी एकफुंकार। कहा करै मरिजाहि तू अति बालक सुकुमार॥ २६॥ यहि अंतर सब सखा जाइ ब्रजनंद सुनायो। हमसँग खेलत श्याम जाय जलमाँझधा॥ सायो बूडिगयो उबरयो नहीं ता बातहिं बडि वेर। कूदि परयो चढि कदमते खबरि न करौ सबेर ॥ २७॥ त्राहि त्राहि करि नंद सुनत दौरे यमुना तट। यशुमति सुनि यह बात चली रोवत तोरति लट॥ ब्रजवासी नर नारि सब गिरत परत चले धाइ। बूड्यो कान्ह सबनि सुनी अतिव्याकुल मुरझाइ॥ ॥ २८ ॥ जहँ तहँ परी पुकार कान्ह बिन भए उदासी। कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल ब्रजवासी॥ नंद यशोदा अतिविकल परत यमुनमें धाइ। और गोप उपनंद मिलि बांह पकरि लै आइ ॥२९॥ धेनु फिरत बिललात बच्छथ न कोउ न लगावै। नंदयशोदा कहत कान्ह बिन कौन चरावै॥ यह सुनि ब्रजवासी सबै परे धरणि अकुलाइ। हाइहाइ करि कहत सब कान्ह रह्यो कहां जाइ ॥६३०॥ नंदपुकारत रोइ बुढ़ापा मोको छाधो। कछुदिन मोहलगाइजाइजल भीतर माधो॥ यह कहिकै धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराइ। नंदघरनि तब देखिकै कान्हहि टेरिबुलाइ॥३१॥ निठुरभए सुत आजु तातकी छोह न आवति। यह कहिकै अकुलाइ जलहि भीतर को धावति॥ परत धाइ यमुनासलिल गहि आनति ब्रजनारि। नेक रह्यो सब मरहिंगी कोहैजीवनहारि॥३२॥ श्याम गयो जल बूडि वृथा जगजीवन मनको। शिरफोरति गिरिजाति अभूषणतोरति अँगको॥ मुरछि परी तनु सुधि गई प्राण रह्यो कहुँजाइ। हलधर आए धाइकै जननि गई मुरझाइ॥ ३३॥ नाकमूँदि जल सींचि जननि जननी कहि टेरयो। बारबार झकझोरि नेक हलधरतन हेरयो॥ कहत उठी बलरामसों बनहिं तज्योलघुभ्रात। कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं तुमसों क्यों रहिजात॥ ॥३४॥ अब तुमहूं जिनि जाहु सखा यकदेहु पठाई। कान्हहि ल्यावै जाइ आजु अबसेर कराई॥ छाक पठाऊं जोरिकै मगन सोक सरमांझ। प्रात कछू खायो नहीं भूखे ह्वैगई सांझ॥३५॥ कबहुं कहति बन गए कबहुं कहि घरहि बतावति। कहं खेलतहो लाल टेरि यह कहति बुलावति॥ जागिपरी दुख मोहते रोवत देखे लोग। तब जान्यो हरि दह गिरयो उपज्यो बहुरि वियोग॥ धृग धृग नंदहिकह्यो और कितनेदिनजीहौ। मरत नहीं मोहिंमारि बहुरिजब सिहो कीहो॥ ऐसे

सुनी नारदमुख बानी। बार बार ऋषिराज कंस मुख अस्तुति गानी ॥ धन्य धन्य मुनिराज तुम भलो मत्र दियो मोहिं। दूत चलायो तुरतही अनहिं जाहि व्रज जोहि ॥ २॥ इह कहियो तू जाइ कमल नृप कोटि मँगायो। पत्र दियो लिखि हाथ कह्यो बहुभांति जनायो॥ कालि कमल नहिंआनई तौ तुमको नहिं चैन। शिरनाइ कर जोरिकै चल्यो दूत सुनि बैन॥३॥ तुरत पठायो दूत नंदघरहीमें आयो। कमल फूलके भार कंसनृप बेगि मँगायो॥कालिह न पहुँचै आइकै तब बसियो ब्रजलोग।गोकुलमें जे सुख किये ते करि देहौं सोग॥४॥जो न पठावहु पुहुप कहौंगे तैसी मो को।यह जानहु गोपन समेतधरिल्याऊं तोको॥बलमोहनतेरेदोउनको पकरिमँगाऊं कालिपुहुप बेगि पठए बने जोरे बसौ व्रजपालि॥५॥यह सुनि नंद डराय अतिहि मनमनअकु-लानो।यहकारज क्यों होइ काल अपनो करिजानो ॥ औरमहर सब बोलिके कैसी करें उपाइ। कालिप्रात ब्रज मारिहै बांधि नयनि लेजाइ॥६॥बल मोहनकोनाउँ धरयो कहि पकरि मँगावन-जाते अति भयो सोच लगत सुनि मोहिं डरावन॥यह सुनि शिरनाये सबन मुखहि न आवैबात बार बार नंद कहतहैं यह लरिकनपर घात॥७॥ की बालकनि भगाइ जाहिं ले आन देशपर। धरु हमको लेजाइ श्याम बलराम बचैं घर॥ महरि सबै ब्रजनारिनसो पूछन कौन उपाउ। जनमहिते करवर टरी अबके नहीं बचाउ ॥ ८॥ कोउ कहै देहु दाम नृपति जितनो धन चाहै। कोउ कहै जैये शरन सबै मिलि बुधि अवगाहै ॥ यही सोच सब परिरहे कहूँ नहीं निरवार। ब्रज भीतर नंदभवनमें घरघर इहै विचार॥९॥ अंतर्यामी जानि नंदसों बूझत बात। कहा करतहौ सोच कहौ कछु मोसो तात॥कहा कहौं मेरे लाडिले कहत बडो संताप। मथुरापतिके जी कछू तुमपर उपज्यो पाप॥ १०॥ कालीदहके पुहुप मांगिपठये हमसों उनि। तबते मोजिय सोच जबहिते बात बरी सुनि॥जो नहिं पठवहु कालिही तौ गोकुल देउँ लगाइ। मो समेत दोउ बंधु तुम कालिहि लेइ बँधाइ॥ ११॥ यह कहिपठयो कंस तबहिते सोच परचो मोहिं। प्रथम पूतना आइ बहुत दुख दै जु गई तोहिं ॥ तृणावर्तके घातते बहुत बच्यो दुख पाइ। शकटा केशीते बच्यो अब को करै सहाइ॥ १२ ॥ अघा उदरते बच्यो बहुत दुख सह्यो कन्हाई। बका रह्यो मुख बाइ तहां भयो धर्म सहाई ॥ इतने करवर हैं टरे देवन किये सहाइ। तबते अब गाढी परी मोको कछु न सुहाइ ॥ १३॥ बाबा तुमही कहत कौन धौं तोहिं उबारै। सोइ ब्रजदेवता प्रगट कंस गहि केश पछारै॥यह जबही हरिसोंसुनीनंदमनहिं पतिआइ। गगनगिरत जो सँग रह्यो सो कालिलेइ छुड़ाइ॥ १४॥ नंदहि यह समुझाइ कान्ह उठिखेलन धाए। जहँ ब्रज बालक बहुत तुरत तह आपुन आए॥ गोपसुतनिसो यह कह्यो खेलैं गेंद मँगाइ। श्रीदामा इह सुनतही घरते लाये जाइ ॥ १५॥ सखा परस्पर मार करें कोउ कानि न मानें। कौन बडो को छोट भेद भेदा नहिं जानें॥खेलन यमुना तट गए आपुहि ल्याये टारि। श्रीदामाके हाथते लै गेंद दयो दहडारि॥ १६॥ श्रीदामा गहि फेंट कह्यो हम तुम एक जोटा। कहा भये जो नंद बडेतुम तिनके ढोटा॥खेलतमें कहा छोट बड हमहु महरके पूत। गेंद दियेही पै बनै छांडिदेहु मद धूत ॥ ॥१७॥तुमसों धूत्यो कहा करौ धूत्यौ नहिं देख्यो। प्रथम पूतना मारिकाग शकटासुर पेल्यो॥ तृणावर्त पटक्यो शिला अघा बका सहारि। तुम तादिन सबहि रहे अब धूतन कहत सँभारि॥ ॥ १८ ॥टेढे कहा बतात कंसको कमल देहु अब। कालिहि पठए मांगि पुहुप अब लै देहौजब॥ बहुत अचगरी जिनकरौ अजहूं तजौ झगारि। पकरि कंस लेजाइगो कालिहिपरै सँभारि॥१९॥

कमल पठाऊँ कोटि कंसको दोष निवारौं । तुम देखत पुनि जाउँ कंस जीवत धरि मारौं ॥ फेट लियो तब झटकिकै चढे कदमपर आइ । सखा हँसत ठाढे सबै मोहन गए पराइ॥६२०॥ श्रीदामा चले रोइ जाइ कैहौं नंदआगे । गेंद लेहु तुम आइ मोहिंडरपावनलागे॥ यहकहिकैकूदे सलिल कीन्हें नटवर साज । कोमलतनु धरिकै गए जहँ सोवतअहिराज॥२१॥ यहिअंतरनंदघरनि कह्यो हरि भूखे ह्वैहैं। खेलत ते अब आइ भूखकहि मोहिं सुनैहैं॥ अति आतुर भीतर चली जेंवन कारन आप। छींक सुनत कुसगुन कह्यो कहा भयो यह पाप॥२२॥अजिर चली पछितात छींकको दोष निवारण । मंजारी गई काटि तबहिं निकसतही वारण ॥ जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अबेर लगाइ । कुसगुन आजु बहुत भए कुशल रहैं दोउ भाइ ॥ २३ ॥ श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई । आतुर आए नंद घरहि बूझत दोउ भाई ॥नंद घरनिसों यह कहत मोको लगत उदास । एहि अंतर हरि कहँ गए जहँ कालीको वास ॥ २४ ॥ देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय भयो सोवत। बैठि तहां अहिनारि डरी बालकको जोवत॥भागि भागि सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात।एकफूकको नहीं तू विषज्वाला अतितात॥२५॥तब हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देइ जगाई।आयो देखन वाहि कंस मोहिंदियो पठाई ॥ कंसकोटि जरिजाहिंगे विषकी एकफुकार । कहा करै मरिजाहि तू अति बालक सुकुमार ॥ २६॥ यहि अंतर सब सखा जाइ ब्रजनंद सुनायो । हमसँग खेलत श्याम जाय जलमाँझधँ॥ सायो बूडिगयो उबरचो नहीं ता बातहिं बडि बेर ।कूदि पर्यो चढि कदमते खबरि न करौ सबेर ॥ २७ ॥त्राहि त्राहि करि नंद सुनत दौरे यमुना तट । यशुमति सुनि यह बात चली रोवत तोरति लट॥ ब्रजवासी नर नारि सब गिरत परत चले धाइ । बूड्यो कान्ह सबनि सुनी अतिव्याकुल मुरझाइ ॥ ॥ २८ ॥ जहँ तहँ परी पुकार कान्ह बिन भए उदासी । कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल ब्रजवासी॥नंद यशोदा अतिविकल परत यमुनमें धाइ । और गोप उपनंद मिलि बांह पकरि लै आइ ॥ २९॥ धेनु फिरत बिललात वच्छथ न कोउ न लगावै॥नंदयशोदा कहत कान्ह बिन कौन चरावै ॥ यह सुनि ब्रजवासी सबै परे धरणि अकुलाइ। हाइहाइ करि कहत सब कान्ह रह्यो कहां जाइ ॥६३०॥ नंदपुकारत रोइ बुढापा मोको छायो । कछुदिन मोहलगाइजाइजल भीतर मायो॥ यह कहिकै धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराइ।नंदघरनि तब देखिकैकान्हहि टेरिबुलाइ॥३१॥ निठुरभए सुत आजु तातकी छोह न आवति। यह कहिकै अकुलाइ जलहि भीतर को धावति॥ परत धाइ यमुनासलिल गहि आनति ब्रजनारि।नेक रहौ सब मरहिंगी कोहैजीवनहारि॥३२॥ श्याम गयो जल बूडि वृथा जगजीवन गनको। शिरफोरति गिरिजाति अभूषणतोरति अँगको ॥ मुरछि परी तनु सुधि गई प्राण रह्यो कहुँजाइ ।हलधर आए धाइकै जननि गई मुरछाइ ॥ ३३ ॥ नाकमूँदि जल सींचि जननि जननी कहि टेर्यो । बारबार झकझोरि नेक हलधरतन हेर्यो ॥ कहत उठी बलरामसों बनहिं तज्योलघुभ्रात।कान्ह तुमहिं बिन रहत नहिं तुमसों क्यों रहिजात॥ ॥३४॥ अब तुमहूं जिनि जाहु सखा यकदेहु पठाई ।कान्हहि ल्यावै जाइ आजु अवसेर कराई ॥ छाक पठाऊं जोरिकै मगन सोक सरमांझ । प्रात कछू खायो नहीं भूंखे ह्वैगई सांझ॥३५॥कबहुं कहति बन गए कबहुँ कहि घरहि बतावति । कहँ खेलतहौ लाल टेरि यह कहति बुलावति ॥ जागिपरी दुख मोहते रोवत देखे लोग । तब जान्यो हरि दह गिर्यो उपज्यो बहुरि वियोग॥ धृग धृग नंदहिकह्यो और कितनेदिनजीहौ।मरत नहीं मोहिंमारि बहुरिब्रजबसिहौ कीहौ॥ ऐसे

दुखसों मरन सुख मन करि देखहु ज्ञान । व्याकुल धरणी गिरिपरे नंद भए विनप्रान ॥ ३७ ॥ हरिको अग्रजवधु तुरतही पिता जगायो । माताको पयोधि ढुँढ़िनि धीरज धरवायो ॥ मोहिं दोहाई नंदकी अवहीं आवत श्याम । नाथि नाग लै आइहै तव कहियो बलराम ॥३८॥ हलधर कह्योसुनाइ नंद यशुमति ब्रजवासी । वृथामरत केहि काज मरैक्यों वह अविनाशी ॥ आदिपुरुष मैं कहतहौं गयो कमलके काज। गिरिधरको डर करतहौं वहदेवन शिरताज ॥ ३९॥ वहअविनाशीआदिकरो धीरजअपनेमन । काली छेदे नाक लिये आवत नितंतफन॥कमहिकमलपटाइहै काली पठवे द्वीप । एक घरी धीरज धरो बैठो सब तरुनीप ॥६४०॥ वहां नागिनसों कहत श्याम अहि क्यों न जगावै । वालक वालक करति कहा पति क्यों न उठावै ॥ कहा कम कहा उरग यह अवहिं दिखाऊ तोहिं । देजगाइ मैं कहतहों तू नहिं जानति मोहिं ॥ ४१॥ छोटे मुँह वडी वातकहत अवही मरिजैहैजो चितवे करिक्रोधअरे इतनहिजरिजैहै॥ छोहलगति तोहिंदेखि मोहिं काको वालक आहि।खगपतिसों सरवरकरी वृथपुरो को आहि॥४२॥ वपुरा मोसोंकहति तोहिं वपुरी करिडारों । एक लातसों चापि खसम तेरेको मारों॥ सोवत काहु नमारिए चलिआई यह वात ।खगपतिको मेंही कियो कहति कहा तू वात॥४३॥ तुमहिं विधाता भए और कर्त्ता कोउ नाही । अहि मारोगे आप तनकसे तनकसी वाही । कहा करौं कहत न वनै अति कोमल सुकुमार। देती अवहिं जगाइकैजरिवरि होतोछार ॥४४॥ तू धौं देहिजगाइ तोहि दोपन कछु नाहीं । परी कहा तोहि द्वारि पाप अपने जरि जाहीं ॥ हमको वालक कहतिहै आप वडेकी नारि । वादतिहै विनकाजही वृथा बढावति रारि ॥ ४५ ॥ तुहीन लेहि जगाइ वहुत जो करत ढिठाई । पुनि मरिहै पछिताइ मात पित तेरे भाई॥ अजहु कह्यो करि जाहि घर मरि लेहै सुख कौन । पांच वरप के सातको आगे तोको होन ॥ ४६ ॥ झिरकि नारि दे गारि आपु अहि जाय जगायो। पगसों चापी पूछ सबैअवसानभुलायो॥चरण ममकि धरणी दली उरग गयो अकुलाइ ।काली मनमें तब कही यह आयो खगराइ ॥ ४७ ॥ देख्यो नयन उघारि तहां वालक इकठाढो। विपधर झटकी पूछ फटकि सहसो फन काढो॥ वार वार फन घातके विपज्वालाकी झार । सहसो फन फन फूंकरे नेक न तनहि लगार ॥४८॥ तव काली मन कहत पूछ चांपी एहि पगसो ।अतिहि उठो अकुलाइ डरयो वाहन हरिखगसो॥यह वालक धौं कौनको कीन्हों युद्ध अघाइ।दाव घात वहुतै कियो मरत नही यदुराइ॥४९॥ पुनि देखै हरि ओर पूछ चांपी इहि मेरी। मनमन करतविचार लेउं याको मैं घेरी॥ दाउँ परयोअहि जानिकै लियो अंग लपटाइ।काली तवगर्वितभयो प्रभुदियोदाउ वताइ॥६५०॥कहतिउरगकी नारि गर्व अतिही करि आयो। आइतपहुँचो वाल कालवश पगहि चलायो ॥ अहिनारिनसों यह कही मोहिं सम मरि कोउ नाहिं ।एक फूक विपज्वालके जल डोगर जरि जाहिं ॥५१॥ गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतही तनु विस्तारयो । हाइहाइ करि उरग वार वारही पुकारयो ॥ शरन शरन अव मरतहौं मैं नहिं जान्यो तोहिं । चटचटात अँग फूटही राखु राखु प्रभु मोहिं ॥ ५२॥ श्रवन शरन ध्वनि सुनत लियो प्रभु तनु सकुचाई । क्षमहु मोहि अपराध नजाने करी ढिठाई॥ ब्रजे कृष्ण अवताग्होम जानी प्रभु आजु । वहुत किये फन घात मैं वदन दुरावन लाजु ॥५३॥ रह्यो जानि यहि ठौर गरुडको त्रास गोसाँई।वहुत कृपा मोहिं करी दरश दीन्हो जगसाँई॥नाक फोरि फनपर चढे कृपा करी सुरराइ ॥ फन फन प्रति प्रति चरण धरि नितंत हरप वढाइ॥५४॥

धन्य कृष्ण धनि उरग जानि जग कृपा करी हरि।धन्य धन्य दिन आजु दरशते पाप गये जरि॥ धन्य कंस धनि कमल ये धन्य कृष्णअवतार।बडी कृपा उरगहि करी फनप्रति चरण बिहार॥५५॥ शेष करत जिय गर्व अंडको भार शीशधरि।ब्रह्म मुकुन्द अनंत नाम को सके पारकरि॥फनफन प्रति अति भार भरि अमित अंडमें गात। उरगनारि कर जोरिके कहत कृष्णसों बात ॥ ५६ ॥ देखत ब्रज नर नारि नंद यशुदा समेत सब। संकर्षणसों कहत सुनहु सुत कान्ह नहीं अब॥ एहि अंतर जल कमलबिच उठो कछू अकुलाइ। रोवतते बरजे सबै मोहनअग्रज भाइ॥५७॥ आवत हैं वे श्याम पुहुप काली शिर लीन्हें। मात पिता ब्रज दुखित जानि हरि दरशन दीन्हें॥निर्तत काली फन निपर देवदुंदुभी बजाइ। नटवर वपु काछेरहे सब देख्यो वहभाइ॥५८॥आवत देखे श्याम हरष कीन्होब्रजवासी। शोकसिंधु बहिगयो सुखेको सिंधु प्रकाशी॥जलबूडत नवका मिले ज्यों तनु होत अनंद। त्यों ब्रजजन हुलसे सबै आवतहैं नँदनंद ॥ ५९ ॥ सुत देखत पित मात रोम गदगद पुलकित भयो। उर उपज्यो आनंद प्रेमजल लोचन दुहुँ अयो॥देव दुंदुभीबजावहीं फन प्रति निर्तत श्याम। ब्रजवासी सबकहतहैं धन्यधन्य बलराम ॥६६०॥ उरगनारिकर जोरिकरति अस्तुति मुखठाढ़ी। गोपीजनअवलोकिरूपवहअतिरति बाढी॥ सुर अंबर ललनासहित जयध्वनि मुखमुख गाइ।बडी कृपा एहि उरगको ऐसी काहु न पाइ ॥६१॥ कृपा करी प्रह्लाद खंभ वे प्रगट भए तब।कृपा करी गजराज गरुड तजि धाइ गये जब ॥द्रुपदसुताकोकरीकृपा वसनसमुद्र बढाइ। नंदयशोदहि जो कृपा सोईकृपाएहि पाइ॥६२॥तबकाली करजोरि कह्यो प्रभु गरुडत्रास हैमोहिं। अब कहिं ते दंडवत नैन भरि देखेंगे तोहिं ॥ चरण चिह्न दरशन करत गहि रहैं तेरे पाइ। उरग द्वीपको करि विदा कह्यो करौ सुख जाइ॥६३॥प्रभु याने कियो कहा चरण जे फनफन परसे। रमाहृदय जे बसत सुरसरी शिव शिर हरसे॥जन्म जन्म पावन भयो फन पदचिह्न धराइ। पाँइ परयो उरगिनि सहित चल्यो द्वीप समुहाइ ॥ ३४ ॥ काली पठयो द्वीप सुरनि सुरलोक पठाए।आपुन आए निकसि कमल सब तटहि धराए॥जलते आए श्याम तब मिले सखा सब धाइ।मात पिता दोउ धाइके लीनो कंठलगाइ॥६५॥फेर जन्म भयो कान्ह कहत लोचन भरि आए।जहांतहां ब्रज गोपनारि आतुर ह्वै धाए॥अंकम भरिभरि मिलतहैं मनो निधनी धन पाइ। मिली धाइ रोहिणि जननि चूमति लेति बलाइ॥६६॥सखा दौरिकेमिले गये हरि हमपर रिसकारि। धनि माता धनि पिता धन्य सो दिन जेहि अवतरि॥ तुमब्रजजीवनि प्राणहो यहसुनि हँसे गोपाल। कूदिपरे चढि कदमते तुम खेलत ए ख्याल॥६७॥काली ल्याए नाथि कमल ताही पर ल्याए। जैसी कहिगए श्याम प्रगट सो हमहिं दिखाए॥कंस मरयो निश्चय भई हम जानी ब्रजराज। सिंहिनिको छौंना भलो कहा बडो गजराज॥६८॥हरि हलधर तब मिले हँसे मनही मन दोऊ। बंधुमिलत सब कहत भेद नहिं जानै कोऊ॥ मात पिता ब्रजलोगसों हरपि कह्यो नँदलाल। आजु रहो बसि सब इहां मेटहु दुख जंजाल ॥ ६९॥सुनि सबहिन सुख कियो आजु रहिए यमुनातट। शीतल सलिल सुगंध पवन सुख तरु बंसीवट॥ नँदघरते मिष्टान्न बहु पटरस लिए मँगाइ। महर गोप उपनंद जे सबको दियो बँटाइ ॥६७०॥ दुखकीन्हेंसब दूरि तुरतसुखदियोकन्हाई।हर्षभयो ब्रजलोग कंसको डर बिसराई॥ कमलकाज ब्रजमारतो कितने लेइ गनाइ। नृप गजको अब डर कहा प्रगट्यो सिंह कन्हाइ॥७१॥ नंद कह्यो करिगर्व कंसको कमल पठावहु।और कमल जल धरहु कमल कोटिक दे आवहु ॥ यह कहियो मेरी कही कमल पठाये कोटि। कोटि ढेक जलही

धरे यह विनती इक छोटि ॥७२॥ अपने सम जो गोप कमल तिन माथ चलाए। मन सबके आनँद भान्ह जलते बचिआए॥ खेलनगात अन्हातहीवासर गयो बिहाइ।सूर श्याम व्रजलोगको जहांतहां सुखदाइ ॥ ७३ ॥ राग गौंड ॥तुमजाहु बालकछांडि यमुनास्वामिमेरोजागिहै।अंगकारे मुख निकारो दृष्टि परे तोहि लागिहै ॥ तुम कोरि बालक सुवा खेलें करि दौरत दूरियां। लेहु बालक हीरा पदारथ जागिहै मेरो स्वामियां॥ना मैं नागिन सुनाकार खेले न बाले दुरत दुराइयां॥ कमकारण गेंद खेलें कमल कारण आइयां॥तब धाइ धायो जाइ जगायो मानो छूटी हस्तियां। सहमफन फुंकारछांडे जाइ कालीनाथियां ॥ जब कान्हकाली लेचले तब नागिन विनवै देवहो। अबके चेरी अहिबात दीजे करहि तुमरे सेवहो॥नव लादि पंकज वाहिर काढ्यो भयो व्रज मन भावना। मथुरानगरी कृष्णराजा सूर तिनहि बधावना ॥ ७४ ॥राग देवगंधार॥ काली विषगजन दह आए। देखि मृतक सब बालक सब ले कटाक्ष जिवाए॥ बहु उतपात होत गोकुलमें नविता रही भुलाइ।बडी बेरभई अजहु न आए गृहकृत कछु न सुहाइ॥नंदादिक सब गोप गोपि मिलि चले सकल बन धाई। दरगे जाइ उरग लपटाने प्राण तजन अकुलाई ॥ अतिगभीर धीर निज जानन संकर्षनको भाइ। वश कियो नाग सूरदास प्रभु अतिआनँद न समाइ ॥ ॥७५॥राग कान्हरो॥सबै व्रजहै यमुनाके तीरकालीनागके फनपर निर्तन संकर्षणको बीर॥लाग मान थेईथेई करि उघटत ताल मृदंग गभीरप्रेम मगन गावत गण गंधर्व व्योम बिमानन धीर॥ उरग नारि आगे भई ठाढी नैननि ढारति नीर। हमको दान देइ पति छांडहु सुंदर श्याम शरीर॥ आएनिकसि पहिरि मणि भूषण पीतवसन कटि चीर।सूर श्यामको भुज भरि भेंटन अकम देत अहीर॥७६॥ सप्तदशोऽध्याय ॥ दावानलके पानकी लीला ॥ राग कान्हरो ॥ दावानलव्रजजनपर धायो।गोकु

व्रज वृन्दावन तृण द्रुम चाहतहै चहुपास जगायो॥घेरत आवत दशौ दिशाते अति कीनें ततुक्रोध नरनारी सब देखि चकितभये दावा लग्यो चहु कोध॥ बहुत असुर घात किये आवत धावनपवन समाज। सूरदास व्रजलोग कहत इह उठ्यो दवा अति आज ॥७७॥आइगई दवअतिहिनिकटहीं। यह जानत अब व्रजन बांचिहैं कहत मने चलिये जलतटहीं॥करि विचार उठि चलन चहतहै जो देखें चहुँ पास।चकृतभए नर नारि जहां तहां भरि भरि लेन उसांस॥झरझरात भहरात लपट अति देखिअत नहीं उबार।देखत सूर अग्नि अधिकानी नभलों पहुँची झार ॥७८॥ दशहूँदिशाते बरत दवानल आवतहै व्रजजनपर धायो।ज्वाला उठी अकाश बराबरी घात आपने करि सब पायोरि चीरा ले आयो सनमुखते आदर करि नृपकंस पठायो।जारि करौं परलय क्षणभीतर व्रज वपुरो केतिक कहवायो॥धरणि अकाश भयो परिपूरणनेक नहीं कहुँ संधि बचायो। सूर श्याम बलरामहि मारन गर्व सहित आतुर ह्वै आयो॥७९॥व्रजके लोग उठे अकुलाइ। ज्वाला देखि अकाश बराबरि दशहुँ दिशाकहुँ पारु नपाइ॥झहरात बनपात गिरत तरु धरणीतरकि तडाकि सुनाइ।जल बरपत गिरिवर तर बाचे अब कैसे गिरि होतु सहाइ ॥ लटकि जात जरिजरि द्रुम बेली पटकत बांस कांस कुशनाल। उचटत फर अगार गगनलौं सूर निरखि व्रजजन बेहाल॥ ८० ॥ नंदघरनि यह कहति पुकारे।कोउ बरषत कोउ अगिनि जरावतदई परयोहै खोज हमारे॥ तब गिरिवर कर धरयोकन्हैया अब न बांचिहैं मारत जारे। जेंवन करन चली जब भीतर छींक परी तिय आजु सवारे ॥ ताको फल तुरतहि यक पायो मो उबरयो भए धर्म सहारे। अब सबको सहार होतहै छींक किये यक काज निचारे ॥ कैसेहु ए बालक दोउ उबरे पुनिपुनि

सोचति परी खँभारे।सूर श्याम यह कहत जननिसों रहि री माँ धीरज उरधारे ॥८१॥ राग गौड॥ भहरात झहरात दवानल आयो । घेरि चहुँ ओर करिशोर अंदोर वनधरणि आकाश चहुँपास छायो ॥ बरत वन बाँस थरहरत कुश कांस जरि उडतहै बांस अतिप्रबल धायो । झपटि झपटत लपट पटकि फूल फूटत फटि चटकि लट लटकि द्रुमन वायो॥अतिअगिनि झार भार धुंधारकरि उचटि अंगार झंझार छायो । बरत वनपात भहरात झहरात अररात तरुमहा धरणी गिरायो ॥ भए वेहाल सब ग्वाल ब्रजबाल तब शरन गोपाल कहिके पुकारचो । तृणा केशी शकट वकी बका अघासुर वामकर गिरिराखि ज्यों उवारचो । नेक धीरजकरो जियहि कोऊ जिनिडरौकहा यह सुरो लोचन मुदायो । मुठी भरि लियो सब नाइ मुखही दयो सूरप्रभु पियो दावाव्रजजन बचायो॥८२॥राग कान्हरो ॥ अबकेराखिलेउगोपालादशहुँदिशातेदुसहदवागिनिउपजीहैयहि काल पटकत बांस कांस कुश चटकत लटकत ताल तमाल। उचटत अति अंगार फुटत फर झपटत लपट कराल ॥ धूम धुँधि वाढी घर अंमर चमकत विच विच जाल । हरिण वराह मोर चातक पिक जरत जीव वेहाल॥जिनि जिय डरहु नयन मूँदहु सब हँसिबोले गोपाल।सूर अनल सब मदन सयानी अभयकरे ब्रजबाल॥८३॥ रागगौड ॥ दावानलअचयो ब्रजराज ब्रजजन जरत बचायो। धरणि आकाशलौं ज्वाल माला प्रबल घेरि चहुँ पास ब्रजवास आयो॥भये वेहाल सब सबदेखि नंदलाल तब हँसतही ख्याल तत्काल कीन्हों । सबनि मूँदे नयन ताहि चितये सैन तृषा ज्यों नीरदब अचे लीन्हों॥लखोअबनैनभरिबुझिगईअग्निझरि चितै नर नारिआनंदभारी।सूरप्रभु सुखदियोदवानलपीलियोकहतसबग्वालधनिधनिमुरारी८४॥राग बिहागरो॥चकितदेखियहकहिनर नारी।धरणि अकासबराबरि ज्वालाझपटतलपटकारी॥नहिं बरष्योनहिं छिरक्योकाहूकहुँधौंगयो बिलाइ।अतिआघात करतवनभीतर कैसेगयो बुझाइ॥तृणकीआगिबरतही बुझिगईहँसिहँसिकहत गुपाल।सुनहु सूर वह करनि कहनि यह ऐसे प्रभुकेख्याल॥राग बिलावल॥जाके सदा सहाइ कन्हाई। ताहि कहो काको डर भाई॥ वन घर जहांतहां सँग डोलैं । खेलत खात सबनिसों बोलैं ॥ जाको ध्यान न पावैं योगी । सोब्रजमें माखनको भोगी॥ जाकी माया त्रिभुवन छावे।सो यशुमतिकेप्रेम बधावें ॥ मुनिजन जाको ध्यान न पावे । ब्रजजन लैलै नाम बुलावैं॥सूर ताहि सुर अंमर देखैं। जीवन जन्म ब्रजहिको लेखैं॥ ८६ ॥राग कान्हरो॥ब्रजवनिता सबकहतिपरस्परनंदमहरको सुत बड वीर। देखहु धौं पुरुपारथ इनको अति कोमल तनुश्यामशरीर ॥ गयो पताल उरग गहि आन्यो ल्यायो तापर कमल लदाइ । कमलकाज नृपब्रज मारतहोकोटि जलज तेहि दिये पठाइ ॥दावागिनि नभ धरणि बराबरि दशहूं दिशते लीनो घेरि । नयन मुँदाइ कहा तेहि कीन्हों कहूं नहीं जो देखै हेरि ॥ ए उत्पात मिटत इनहीपै कंस कहा वपुरोहै छार । सूर श्याम अवतार वडो ब्रज येईहैं करतासंसार॥८७॥राग सोरठ ॥अति सुंदर नँद महरडिठोना ।निरखिनिरखि ब्रजनारिकहति सब ये जानत कछुटोना॥कपटरूपकी त्रिया निजाती तबहिं रहे अतिछौना । द्वारशिलापर पटकि तृणाको हैआयो अब पौना ॥अघा बकासुर तबहिं सँहारचो प्रथम कियो वन गौना। सूर प्रगट गिरि धरचो वामकर में जानतिवलिखौना॥८८॥राग मारू॥दावतेजरतब्रजजनउबारेपैठि जलगयो गहि उरग आन्यो नाथि प्रगट फन फननि प्रति चरण धारे॥देखैं मुनि लोक सुरलोक शिवलोकके नंद यशुमति हेतु वश मुरारी।जहां तहां करत अस्तुतिमुखनिदेव नर धन्यशब्दतिहुँजयभुवन धारी ॥सुखकियो यमुनतटएक यार रैनि प्रातही ब्रज गये गोप नारी। सूरप्रभुश्याम बलरानंमद

धाम गयो मात पित व्रजजनहिसुखदकारी॥८९॥ राग रामकली ॥हरिव्रजजनकेदुखविसरावन।कहा कंस करि कमल मँगाये कहा दवानल दावन॥जल कव गिरे उरगकवनाथ्योनहिंजानतव्रज लोग कहां वसे यक रेनि दिवस भारि कवहिंभयोयहसोग॥यहजानतहमएमंहिव्रजमेंवसहिकरत विहार। सूरश्यामजननीसोंमांगनमाखनवारंवार॥९०॥ अठारहवां अध्याय॥मंडबरध॥भैरवी॥ एकदिवसप्रलंबदाव कोलीन्हों कंसवुलाई। कह्योजाइमारोनंदढोंटादेहौंवहुतवडाई॥तेहि कहिकेआयोव्रज भीतर करत वडो उतपात।नरनारी देखत सब डरपे कीन्हो हृदय संताप॥हरि ताको दै सेनवुलायोमोपे काहेन आवत। तब वह दोउ हाथ उठाये आयो हरिदेखि धावत॥हरिदोउहाथपकरिकैताकेदियो दूरि फटकारी। गिरो धरणि पर अतिविह्वलहोइ रह्योनदेहसँभारी॥बहुरोउठ्योसँभारिअसुरवहधायो निज मुख वाई। देखि भयानक रूप असुरको सुरनरगणडराई॥चहुँवाफेरिअसुरधरिपटक्यो शब्द उठ्यो आघात।चौंकि पर्‍यो कंसासुर सुनिके भीतर चल्यो हहरात॥पुहुपवृष्टि करि देवन मिलि आनंद मोद वढाइ।व्रजजन नंद यशोदहरषितसूरसुमंगलगाइ॥९१ राग सारंग॥यशुमतिवूझतिफि रति गोपालहि। सांझ कि विरियां भई

मोहिं जिय शंक। नैननि ओट होत पर

करत गुहारी। सूर श्यामको आइ कौन

वहुत पर्‍यो री। खेलत रह्यो घोषके वाहर कोउ आयोशिशुरूपरच्योरी॥मिलिगयोमनहि सखा की नाईं लै चढाइ हरि कंध सच्यो री। धर्म सहाय होतहै जहँ तहँश्रमकरिपूरवपुण्यवच्योरी॥ गगन उडाइ गयो लै श्यामहि आइ धरणि पर आपु दर्‍यो री।सूरश्यामअवकेवचिआयेव्रजवर पर सब सुखहि मच्यो री॥ ९२ ॥ वडे भाग्यहै महर महरिकी।लैगयोपीठिचढाइअसुर इक का कहौं उवरनि या हरिकी॥ नंदघरनि कुलदेव मनावति तुमहि लाज सुत घरी पहरकी। जहां तहां तुमहिं सहाय सदा हो जीवनिहै यह श्याम शहरकी ॥हरष भए नंद करत वधाई दानदेत कहा कहौंमहरकी।पंच शब्दकी ध्वनि वाजत नाचत गावत मंगलचार वहरकी।अंकम भरि भरि लेत श्यामको व्रजनर नारि अतिहि मन हरषी। सूर श्याम संतन सुखदायक दुष्टनके उरशालक करषी॥९३॥राग सारंग ॥ खेलन दूरिजात कतप्यारे जवते। जन्म भयोहैतेरोतवहीतेइहिभांति दुलारे॥कोउ आवति युवती मिसि करिके कोउ लैजातवतामकला रे। अवलगिवचेकृपादेवनकी वहुत गएमरि शत्रु तुम्हारे॥ हाहा करतिपॉइ तेरे लागति अव जनि जाहु दूरि मेरेप्यारे।सुनहुसूर यशुमति सुतवोधतिविधिकेचरित सबै हैंन्यारे॥९४॥उन्नीसवां अध्याय॥कल्याण॥कवकीटेरतिकुँवर कन्हाई।वालसखासव टेरत ठाढे अरु अग्रज वलभाई॥दाऊतुतमअनहिंआवत करीमुखारीआई। माता दुहुँनिदतौनी करदै जलझारी भरिल्याई॥उत्तमविधिसों मुखपखरायो वोदे वसन अँगोछि। दोउ भैया कछु करौ कलेऊ लई वलाइ करपोछि॥ सद माखन दधि तुरत जमायो मधुमेवा मिष्टान। सूरश्याम वलराम संग मिलि रुचिकरि लागे खान ॥९६॥राग नट॥ चले वन धेनु चरावत कान्ह। गोपवालक कछु सयाने नंदके सुत नान्ह ॥ हर्षसों यशुमति पठाए श्याम मन आनंद। गाइ गोसुत गोप वालक मध्य श्रीनँदनंद ॥ सखा हरिको यहसिखावतछांडि जिनिकहुँ जाहु ॥सघन वृंदावन अगम अति जाइ कहूंभुलाहु ॥सूरके प्रभु हँसत मनमें सुनतही यह वात। मैं कहूं नहिं संग छाडौं वनहि वहुत डेरात॥९७॥राग धनाश्री॥हेरी देत चले सव वालक। आनंद सहित जात हरि खेलन संग मिले पशुपालक॥ कोउ गावत कोउ वेणु वजावतकोउनाचत कोउ

धावत। किलकत कान्ह देखि यह कौतुक हरषि सखा उर लावत॥भली करी तुम मोको ल्याए मैया हरपि पठाए। गोधनवृंद लिये ब्रजबालक यमुनातट पहुँचाए॥ चरति धेनु अपने अपने रँग अतिहि सघन वन चारो। सूर संग मिलि गाइ चरावत यशुमतिको सुत वारो॥९८॥देवगन्धार॥ द्रुमचढि काहेन टेरौ कान्हा गइयां दूरिगई।धाईजात सबनके आगे जे वृषभान दई॥घेरे न घिरत तुम विनु माधवजू मिलत नहीं वगदई। बिडरत फिरत सकल वनमहियां एकइ एक भई॥ छाँडि खेल सब दूरि जातहैं वोलौ जोसके थोक कई।सूरदास प्रभु प्रेम समुझिके मुरली सुनत सब आइगईं॥९९॥ राग मारू॥ कहिकहि वोलत धौरी कारी। देखो धन्य भाग्य गाइनके प्रीति करत बनवारी॥ मोटी भईं चरत वृन्दावन नंदकुँवरकी पाली।काहेन दूध देहिं ब्रजपोपन हस्तकमलकी लाली॥ वेन श्रवण सुनि गोवर्धनते तृण दीन्हो धरि चाली। तबही बेगि आइसूरज प्रभुपै क्यों भजे जे पाली॥७००॥ राग कल्याण॥जबसब गाइभईं एक ठाईं।ग्वालनघरको घेरिचलाईं॥मारग- में तब उपजी आगि।दशहू दिशा जरन सब लागि॥ग्वाल डरपि हरि शरणै आये।सूर राखि अब त्रिभुवनराये॥१॥ राग गौरी॥ साँवरो मनमोहन माई।देख सखी वनते ब्रज आवत सुंदर नंदकुमार कन्हाई॥मोरपख शिर मुकुट विराजत मुखमुरली सुर सुभग सोहाई।कुंडल लोल कपोलनिकी छबि मधुरी बोलनि वरणि न जाई॥ लोचन ललित ललाट भृकुटिविच ताकि तिलककी रेख बनाई। मनो मर्याद उलघि अधिक बल उमँगिचली अति सुंदरताई॥ कुंचितकेश सुदेश वदनपर मानौ मधुप माल फिरि आई। मदमद मुसुकात मनो घन दामिनि दुरि दुरि देत दिखाई॥ शोभित सूर निकट नासाके अनुपम अधरनिकी अरुनाई।जनु शुक सुरँग विलोकि बिंबफल चाखन कारन चोच चलाई॥२॥देखौ री नँदनंदन आवत। वृंदावनते धेनु वृंदमे वेनु अधर धरे गावत॥ तनु घनश्याम कमलदल लोचन अंगअंग छवि पावत। सुरभी कारी गोरी धूमरिधौरी लैलै नाम बुलावत॥ संग बाल गोपाल संग सब शोभित मिलिकर पत्र बजावत। सूरदास मुख निरखतही सुख गोपी प्रेम बढावत॥३॥ रजनीमुख वनते वने आवत भावत मंद गयंदकी लटकनि। बालकवृन्द विनोद हँसावत करतल लकुट धेनुकी हटकनि॥ विकसत गोपी मनो कुमुद सर रूप सुधा लोचन पुट घटकनि। पूरणकला उदित मनो उडुपति तेहि छिन विरहव्यथाकी चटकनि॥ लज्जित मन्मथ निरखि विमलछवि रसिकरंग भौंहनकी मटकनि। मोहनलाल छबीलो गिरिधर सूरदास बलि नागर नटकनि॥४॥ गोचारण राग बिलावल॥ जागिए गोपाललाल प्रगट भई हंसमाल मिट्यो अंधकाल उठौ जननि मुख दिखाई। मुकुलित भए कमलजाल कुमुदवृंद वन विहाल मेटहु जंजाल त्रिविध ताप तन नशाई॥ठाढे सब सखा द्वार कहत नंदके कुमार टेरतहैं वारवार आइये कन्हाई। गैयनि भई बडी वार भरिभरि पै थननि भार बच्छगन करें पुकार तुमबिनु यदु- राई॥तातें यह अटकपरी दुहनकाज सौंह करी उठि आवहु क्यों न हरी वोलत बलभाई। मुखतें पट झटकिडारि चंद्रवदन दै उघारि यशुमति बलिहारि वारिजलोचन सुखदाई॥ धेनुदुहन चले धाइ रोहिणि तबले बुलाइ दोहनी मुहिंदे मँगाइ तबही लैआई।बछरा थनदियो लगाइदुहतबैठिकै कन्हाइ हँसत नंदराइ तहां मात दोउ आई॥दोहनि कटु दूधधार सिखवत नंद बारबार यह छवि नहिं वारपार नंदघर बधाई।तब हलधर कह्यो सुनाइ गाइन बन चलौ लिवाइ मना लीनो मँगाइ विविधरस मिठाई॥जेंवत बलराम श्याम संतनके सुखदधाम धेनुकाज नहिं विश्राम यशुदाजल ल्याई।श्याम राम मुख पखारि ग्वालबालहिये हँकारि यमुनातट मननिचारिगाइन हँकराई॥भृग

वेणु नाद करत मुरली मुख अधर धरत जननी मन हरत ग्वाल गावत सुरसाई। वृंदावन तुरत जाइ धेनु चरति तृण अघाइ श्याम हरप पाइ निरखि सूरज वलि जाई ॥ ॥ ५ ॥ मुरलीस्तुति रागसारंग ॥ जब हरि मुरली अधर धरत । खग मोहे मृगयूथ भुलाने निरखि मदन छवि छरत ॥ पशु मोहे सुरभीहु थकी तृणदंतहि टेकि रहत ॥ शुक सनकादि सकल मन मोहे ध्यानिउँ ध्यान वहत ॥ सूरजदास भाग्य हैं तिनके जो या सुखहि लहत॥६॥राग बिलावल॥कहाँ कहा अंगन की सुधि विसरि गई।श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई॥जो जैसे सो तैसे रहिगई सुख दुख कह्यो न जाई।लिखीचित्रसी सूर सो रहिगई एकटक पल विसराइ ॥ ७ ॥राग मलार ॥सुनत वन मुरली ध्वनिकी वाजन।पपिहा गुञ्जकोकिल वनकुंजत अरु मोरनके गाजन॥ यही शब्द सुनिअतगोकुलमें मोहन रूप विराजन। सूरदास प्रभु मिली राधिका अंग अंग करि साजन ॥ ८ ॥राग मारू ॥ मेरे सांवरे जब मुरली अधर धरी। सुनि ध्वनि सिद्ध समाधि टरी ॥ सुनि थके देव विमान ।सुरवधू चित्र समान ॥ ग्रह नक्षत्र तजत न रास । याही वंधे ध्वनिपास ॥ सुनि आनँद उमँगिभरे । जलथलके अचल टरे ॥ चराचर गति विपरीति।सुनि वेनुकल्पित गीति ॥ झरनाझरत पापान । गंधर्व मोहे कलगान ॥ सुनि खग मृग मौन धरे।फलतृण सुधि बिसरे॥सुनि धेनु अति थकित रहीं। तृणदंतहु नहींगहीं॥ वछरा न पीवें क्षीर।पंछी न मनमें धीर॥द्रुम वेलि चपल भए।सुनि पल्लव प्रगटि नए।जेविटप चंचल पात । ते निकटको अकुलात ॥ अँकुलित जे पुलकित गात। अनुराग नैन चुचात ॥ सुनि चंचल पवन थके।सरिताजल चलि न सके॥सुनि ध्वनि चलीं व्रजनारि।सुत देह गेहविसारि॥ सुनि थकित भयो समीर। उलटो वह्यो यमुनानीर॥ मनमोहन मदनगोपाल। तन श्याम नयन विशाल ॥ नव नील तनु घनश्याम । नव पीत पट अभिराम ॥ नवमुकुट नवघनदाम । लावण्य कोटिक काम ॥मनमोहनरूप धरयो ।तवकामको गर्व हरयो ॥ मेरे मदनमोहन लाल । सँग नागरी व्रजवाल।।नवकुंज यमुनाकूल।देखत सूरदासजनफूल ॥ ९॥ रागपूर्वी॥तरु तमाल तरे त्रिभंगी तरुण कान्ह कुँवर ठाढेहैं साँवरे वरन । मोर मुकुट पीतांवर वनमाल विराजित देखत व्रजजन मनहरन॥ सखाअंशपर भुज दीन्हे लीन्हे मुरली अधरमधुर तानविश्वंभरन। सूरश्याम कमलनयन कौनको नकीन्हेवशविलोकनिश्रीगोवर्धनधरन॥७१०॥राग विलावल॥श्यामहृदयवरमोतिनमाला।विथकित भई निरखि व्रजवाला ॥ श्रवण थके सुनि वचन रसाला ।नैन थके दरशननँदलाला॥कंबुकंठ भुज नैन विशाला।करके उर कंचन नगजाला॥पल्लव हस्त मुद्रिका भ्राजै।कौस्तुभमणि हृदयस्थल छाजै॥ रोमावली वरणि नहिं जाई।नाभिस्थलकी सुंदरताई ॥ कटि किंकिणी चंद्रमणि संयुत।पीतांवर कटितट छवि अद्भुत॥ युगलजंघकी पटतर कोहै। तरुनी मन धीरजको जोहै ॥ जान जानुकी छवि नसँभारे। नारिनिकर मन वुद्धि विचारै ॥ रत्नजटित कंचन कलनेपुर। मंदमंद गतिचलत मधुर सुर॥युगल कमल पद नखमणि आभा। संतनि मन संतत यह लाभा॥ जो जेहि अंग सो तहां भुलानी।सूरश्याम गति काहु न जानी॥११॥अध्यायप२०॥राग गौरी॥ नँदनंदन मुख देख्यो माई। अंगअंग छवि मनहु उये रवि शशि अरु समर लजाई॥खंजन मीन कुरंग भृंग वारिजपर अति रुचि पाई। श्रुतिमंडल कुंडल विवि मकर सु विलसत सदन सदाई ॥ कंठकपोत कीर विद्रुमपर दारिम कननि चुनाई।दुइ सारँग वाहनपर मुरली आई देत दोहाई॥ मोहेथिर चर विटप विहंगम व्योम विमान थकाई। कुसुमंजलि वरपत सुर ऊपर सूरदास वलिजाई ॥१२॥ राग केदारो ॥ देखिरी

देखि आनँदकंद। चित्त चातक प्रेमघन लोचन चकोरको चंद ॥ चलित कुंडल गंड मंडल झलक ललित कपोल। सुधासर जनु मकर क्रीडत इंदु दह दह डोल ॥ सुभग कर आनन समीपै मुरलिका एहि भाइ। मनो इनै अंभोज भाजन लेत सुधा भराइ ॥ श्यामदेह दुकूल द्युति छबिलसत तुलसीमाल। तडित घन संयोग मानो सेनिका शुकजाल ॥ अलक अविरल चारु हास विलास भ्रुकुटी भंग। सूर हरिकी निरखि शोभा भई मनसा पंग॥ १३॥ राग मलार॥ देखौ माई सुंदरताको सागर। बुधि विवेक बल पार न पावत मगन होत मननागर॥ तनु अतिश्याम अगाध अंबुनिधि कटिपट पीत तरंग। चितवत चलत अधिक रुचि उपजत भवँर परत सब अंग॥ नैन मीन मकराकृत कुंडल भुजबल सुभग भुजंग। मुकुतमाल मिलि मानो सुरसरि द्वै सरिता लिये संग ॥ मोर मुकुट मणिनग आभूषण कटिकिंकिनि नखचंद। मनु अडोलवारिधिमें बिंबित राकाउडुगणवृन्द॥ वदन चंद्र मंडलकी शोभा अवलोकनि सुखदेत। जनु जलनिधि मथि प्रकट कियो शशि श्री अरु सुधासमेत॥ देखि स्वरूप सकल गोपीजन रहीं विचारि विचारि।तदपि सूर तरिसकीं न शोभा रहीं प्रेम पचिहारि१४॥ राग भैरवी॥ जैसी जैसी बातें करैकहत न आवैरी। श्यामसुंदरअतिमनमनभावैरी॥ मदनमोहन मृदु बेन बजावै री। तानतरंग रस रसिक रिझावै री॥ जंगमथावरकरैथावरचलावैरी। लहरि भुजंग तजि सनमुख आवै री॥ व्योमजन अतिगति फूल बरषावैरी। कामिनि जो धीर धरै सो को जो कहावै री॥ नंदलाल ललना ललच ललचावैरी। सूरदास प्रेम हरि हिये न समावै री॥ ॥ १५ ॥ राग कल्याण ॥ बने विशाल हरि लोचन लोल। चितैचितै हरि चारुविलोकनि मानहुँमाँगत हैं मन ओल ॥ अधर अनूप नासिका सुंदर कुंडल ललित सुदेश कपोल। मुख मुसकात महाछवि लागत श्रवण सुनत सुठि मीठे बोल ॥ चितवत रहतचकोरचंद्रज्यों नेक न पलक लगावत डोल। सूरदास प्रभुके वश ऐसे दासीसकलभईंबिनुमोल॥ १६॥ राग धनाश्री ॥ब्रजयुवती हरिचरणमनावैं। जे पद कमल महामुनि दुर्लभ ते सपनेहु न पावैं ॥ तनु त्रिभंग युग जानु एक पग ठाढे एक दरशायो। अंकुश कुलिश वज्र ध्वज परगट तरुणी मन भरमायो॥ वह छवि देखि रही एकटकही यह मन करति विचार। सूरदास मनौ अरुण कमलपर सुखमय करत विहार॥ १७॥ राग बिलावल॥ देखि सखी हरि अंग अनूप। जानुयुगल युगजंघविराजत कोवरणैयहरूप॥ लकुट लपेटि लटकि भए ठाढे एक चरण धरधारे। मनहुँ नीलमणि खंभ कामरचिएकलपेटिसुधारे॥ कबहुँलकुटतेजानु हारिलैं अपनेसहजचलावत।सूरदासमानहुकरभा करवारंबारडोलावत॥ १८॥ राग नटन रायण॥ कटितटि पीत वसन सुदेश। मनहुँ नवघन दामिनी तजि रही सहज सुवेष॥ कनक मणि मेखलाराजत सुभग श्यामल अंग। मनो हंस रिसाल पंगति नारि बालक संग॥ सुभग कटि काछनीराजतजलजकेसरि खंड। सूर प्रभु अंग निरखि माधुरि मदनतनु परचोदड॥ १९॥ राग नट ॥ तरुणीनिरखिहरि प्रति-अंग। कोउ निरखि नख इंदु भूली कोउ चरणयुग रंग॥ कोउ निरखिवपु रही थकि कोऊनिरखि युगजानु। कोउ निरखियुगजंघशोभा करति मन अनुमान॥ कोउ निरखिकटि पीतकछनीमेखला रुचिकारि। कोउ निरखि हृद नाभिकी छवि डारि तन मन वारि ॥ रुचिर रोमावली हरि-की चारु उदर सुदेश। मनो अलिसैनी विराजत वनै एकहि भेष। रही एकटक नारि ठाढी करत बुद्धिविचार। सूर आगम कियो नभते यमुन सूक्षमधार ॥ ७२० ॥ राजत रोम राजिव रेप । नीलघन मनों धूमधारा रही सूक्षमशेप ॥ निरखि सुंदर हृदयपर भृगुपद परम सलेप । मनहु शोभित अभ्रअंतर शंभु भूषण भेप॥ मुक्तमाल नक्षत्र गणसम अर्धचंद्र विशेप ॥ सजल उज्ज्वल

जलद मलयज प्रबल बलनि अलेश ॥ केकि कच सुरचापकी छवि दशन तडित सपेष । सूर प्रभु अवलोकि आतुर तजे नैन निमेष ॥ २१ ॥राग गौरी॥ हरि प्रति अंग नागरि निरखि । दृष्टि रोमावली पर रहि वनत नाहिन परखि ॥कोउ कहत यह कामश्रेनी कोउ कहति नहिं योग।कोउ कहति अलि बाल पंगति जुरे एक संयोग ॥ कोउ कहति अहि काम पठयो डसे जिनि यह काहु । श्याम रोमावलीकी छवि सूर नहीं निवाहु ॥२२ ॥राग आसावरी॥चतुर नारि सव कहति विचारि। रोमावली अनूप विराजति यमुनाकी अनुहारि ॥ उर कलिंदते धँसि जलधारा उदर धरणि पर-वाह । जाति चली अतिते जलधारा नाभि ह्रद अवगाह ॥ भुजादंड तट सुभग घटा घन वन-माला तरुकूल।मोतिनमाल दुहूँघा मानो फेन लहरि रसफूल॥सूर श्याम रोमावलिकी छवि देखति कगति विचारि।बुद्धि रचति तरि सकति न शोभा प्रेम विवश व्रजनारि॥२३ ॥राग कल्याण॥रोमावली रेख अतिराजत । सूक्षम शेद धूमकी धारा नवघन ऊपर भ्राजत ॥ भृगुपद रेख श्याम उर सजनी कहा कहौं ज्योंछाजत।मनहु मेघभीतरशशिकी द्युतिकोटि काम तनु लाजत ॥ मुकतामाल नंदनंदन उर अर्ध सुधाधर कांति । तनु श्रीखंड मेघउज्ज्वलअति देखि महाबल भांति॥ बरही मुकुट इंद्रधनु मानहुतडित दशनछवि लाजत ।एकटकरही विलोकि सूरप्रभु तनुकीहै कहहाजत॥२४॥राग सारंग॥ मुख छवि कहौं कहां लगि माई।मनो कंज परकाश प्रातहीरवि शशि दोऊजातछपाई॥अधरविंबनासा ऊपर मनौ शुक चाखनको चोंच चलाई। विकसत वदन दशन अति चमकनि दामिनिद्युति दुरिदेत देखाई ॥ शोभित श्रीकुंडलकी डोलन मकराकृतअतिश्रीबनाई।निशिदिन रटत सूरके स्वामीव्रजव-निता देहविसराई२५॥राग केदारो॥सखीरीसुंदरताकोरंग। छिनछिनमांहपरतछविऔरैकमलनयनके अंग॥परमितकरि राख्यो चाहतिहै तुमहु लागि डोलतहै संग । चलननिमेष विशेपजानियतभूलि भई मतिभंग॥श्याम सुभगके ऊपर वारों आलीकोटि अनंग।सूरदास कछु कहत न आवे गिराभई गतिपंग॥२६॥राग बिहागरो॥श्यामभुजाकी सुंदरताई । बडे विशाल जानुलोंपरसत यकउपमा मन आई ॥ मनो भुजंग गगनते उतरतअधमुखरह्यो झुलाई।चंदनखौरि अनूपमराजत सो छविकही न जाई॥रत्नजटित पहुँची कराजतअँगुरीसुंदरभारी।सूरमनो फनि शिरमणि शोभित फनफनकी छविन्यारी२७॥राग धनाश्री॥गोपीतजि लाजसंगश्यामरंगभूली।पूरणमुखचंद्रदेखि नैनकमलफूली॥ कीधौं नवजलदस्वाति चातक मन लाये।किधौं नारिवृंद सीप हृदयहपपाये॥रविछविकुंडलनिहा-रि पंकज विगसाने । किधौं चक्रवाक निरखि अतिही रतिमाने॥कीधौं मृगयूथजुरे मुरलीध्वनि रीझे।सूर श्याम मुख कुंडल छविकेरस भीजे ॥२८॥ राग सोरठ॥वडो निठुर विधना यह देख्यो । जबते आजुनंदनंदन छवि वारवार करि पेख्यो॥नख अँगुरी पगजानु जंघकटि रचि कीन्हो निर्मान। हृदयबाहु कर हस्त अंग अंग मुख सुन्दर अतिवान॥ अधर दशन रसना रसवाणी श्रवण नयन अरु भाल।सूररोमप्रतिलोचनदेतो देखनबनगोपाल॥२९॥ राग गूजरी॥श्यामअंगयुवतीनिरखि भुलानी । कोउ निरखति कुंडलकीआभायतनेहिं मांझ बिकानी॥ ललितकपोल निरखिकोउअटकों शिथि-ल भई ज्यों पानी ।देहगेहकी सुधि नहिं काहू हरपनको पछितानी॥कोउ निरखनि रही ललित नासिका यह काहू नहिं जानी। कोउ निरखति अधरनकी शोभा फुरन नहींमुखबानी॥कोउच कृत भई दशन चमक पर चकचौंधी अकुलानी । कोउ निरखति द्युति चिबुक चारुकी सूर तरुनि वितानी ॥७३०॥ राग नट ॥ श्यामकरमुरलीअतिहिविराजत । परसतअधरसुधारसप्रगटतमधुर मधुर सुर बाजत॥लटकन मुकुट भौंह छवि मटकन नैन सैन अतिछाजत।ग्रीव नवाइ अटकिवंसी

पर कोटिमदन छबि लाजत ॥ लोल कपोल झलक कुंडलकी यह उपमा कछु लागत । मानहु मकर सुधारस क्रीडत आप आप अनुरागत । वृंदावन विहरत नँदनदन ग्वालसखा सँग सोहत । सूरदास प्रभुकी छबि निरखत सुर नर मुनि सब मोहत ॥३१॥ राग धनाश्री ॥ तब लगि सबै सयान रही । जबलगि नवलकिशोरी मुरली वदनसमीर बही ॥ तब हीलौं अभिमान चातुरी पतिव्रत कुलहि चही। जबलगि श्रवणरध्र मग मिलकै नाही इहै बही । तब लगि तरुनितरल चंचलाता बुधि बल सकुचि रही। सूरदास जबलगि वह ध्वनि सुनि नाहिंन वनतकही॥३२॥ राग गौरी॥ व्रजललना देखतिगिरिधरको। एकएक अगअगपर रीझी अरुझी मुरलीधरको॥मनो चित्रकीसी लिखिकाढी सुधि नाही मन घरको । लोकलाज कुल कानि भुलानी लुब्धी श्याम सुदरको ॥कोउ रिसाइ कोउ कहै जाइ कछु डरी न काहू डरको । सूरदास प्रभुसो मन मान्यो जन्मजन्म परतरको ॥ ३३॥ राग सारग ॥ वंसी वन कान्ह बजावत। आइ सुनो श्रवणनि मधुरे सुर राग रागिनी ल्यावत ॥ सुरश्रुति तान वँधान अमित अति सप्तअतीत अनागत आवत । जनु युग जुरि वरबेष सजलमथि बदनपयोधि अमृत उपजावत ॥ मनो मोहनी भेष धरे धरि मुरली मोहन मुख मधु प्यावत। सुर नर मुनि वश किये रागरस अधरसुधारस मदन जगावत॥ महामनोहर नाथ सूर थिर चर मोहे मिलि मरम न पावत । मानहु मूक मिठाईके गुन कहि न सकत मुखशीश डोलावत॥३४॥ राग केदारो॥ वसी वन राज आज आई रण जीति । मेटतिहै अपने वल सबहिनकी रीति ॥ विडरे गजयूथ शीलसैन लाज भाजी । घूघटपट कवच कहो छूटे मान ताजी ॥ किनहू पति गेह तजे किनहू तन प्रान। किनहुन सुख शरण पायो सुनत सुयश कान ॥ कोऊ पद परसि गए अपने अपने देश । कोउ मारि रक भए हुते जे नरेश ॥ देत मदन मारुत मिलि दशौ दिशि दोहाई। सूर श्याम श्रीगोपाल वंसीवश माई ॥३५॥ राग सारग॥ जबते वसी श्रवण परी ।तबहीते मन और भयो सखिमोतन सुधिविसरी हौ अपने अभिमान रूप योवनके गर्वभरी। नेक न कह्यो कियो सुनि सजनी वादिहि आपु ढरी॥ बिन देखे अब श्याम मनोहर युगभरिजात घरी। सूरदास सुनुआरज पथते कछू न चाँड टरी॥ मुरली ध्वनि श्रवण सुनि भवन रहो नहिं परे।ऐसी को चतुर नारि धीरज मन धरै॥खगमृगतरुसुर नर मुनि शिवसमाधि ढरे।अपनी गतितजोपौनसरिताउ न टरे ॥ मोहनकेमनकोकोअपनेवशकरै। सूरदास सप्तसुरन सिंधु सुधा भरै॥३६॥ राग कान्हरो॥ माई री मुरली अतिगर्व काहू वदतिनहिं आजु। हरिको मुखकमल देख पायो सुखराजु॥वैठति करि पीठ ढीठ अधरछत्रछाहीं। चमरचिकुर राजत तह सुदर सभामाहीं॥ यमुनाके जलहि नाहिं जलधि जान देति । सुरपुरते सुर विमान भुवि बुलाइलेति॥स्थावर चर जगमजहँ करति जीतिअजीति।वेदकी विधि मेटि चलति आपनेही रीति॥ वशीवश सकल सूर सुर नर मुनि नाग। श्रीपतिहू श्रीविसारी एही अनुराग॥३७॥राग गौरी॥मुरली मोहे कुवर कन्हाई । अचवति अधरसुधावश कीन्ही अब हम कहा करे कहिमाई ॥ सर्वसु हरयो धरयो काहू औसरहु न देति अघाई। गाजति बाजति चढी दुहू कर अपने शब्द न सुनत पराई॥ जिहि तन अनल दह्यो कुल अपनो तासो कैसेहोत भलाई। अब कहि सूर कौन विधि कीजे वनकी व्याधि मांझ घर आई ॥ ३८॥ राग मलार॥ मुरली तऊ गुपालहि भावति। सुन री सखी यदपि नँदनदन नानाभाति नचावति॥राखत एक पाइ ठाढे करि अतिअधिकार जनावति ।कोमल अग आपु आज्ञागुरु कटि टेढी ह्वै आवति ॥ अतिआधीनसुजान कनौडे गिरिधरनारि नवावति। आपुन पौढि अधरसंज्यापर करपल्लवसन पदपलुटावति॥भृकुटीकुटिलकोपनासापुट हमपरकोप कुपावति।

सूरप्रसन्न जानि एकौ छिन अधर सुशीश डोलावति॥३९॥श्याम तुम्हारीमदनमुरलिका नेकसी जग मोह्यो।जे सब जीव जंतु जल थलके नाद स्वाद मन पोह्यो॥जे तीरथ तप करे तरनिसुतपन गहि पीठि न दीन्ही। ता तीरथ तपके फल लैकै श्याम सोहागिनि कीन्ही॥ धरणीधरगोत्रधंन गरयो कोमल प्राण अधार। अब हरि लटकि रहत है टेढे तनक मुरलिके भार॥ निदरि हमहिं अधरन रस पीवत पठै दूतिका माई।सूर श्याम निकुञ्जते प्रगटी चतुरी सौति भइ आई॥ ७८०॥ सखीरी मुरली लीजै चोर। जिन गोपाल कीन्हे अपने बश प्रीति सबनिकी तोर॥ छिन एक घोर फेरिवसुतासुर धरत नकबहु छोर।कबहु कर कबहुं अधरनपर कबहू कटिमे खोसत जोर॥ ना जानौं कछु मेलि मोहिनी राखी अग अंभोर। सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो रागके डोर॥४१॥ राग केदारो॥ मुरली अधर सजी बल वीर। नादप्रति वनिता विमोही डग विसारे चीर॥ खग नैन मूंदि समाधि धरि ज्यो करत मुनि तप धीर। डोलति नहींद्रुमलता विथकी मद गंध समीर॥ मृग धेनु तृण तजि रहे ठाढे बच्छ तजि मुखक्षीर। सूर मुरलीनाद सुनि थकिरह-त यमुनानीर॥४२॥ राग मलार॥जब मोहन मुरली अधर धरी। गृहव्यवहार थके आरजपथ चलत न संककरी॥पदरिपुपटअटक्यो आतुरज्यो उलटत पलट भरी।शिवसुत वाहनआइमिलेहैमनचित बुद्धिहरी॥ द्रुमिगए कीर कपोत मधुपपिक सारग सुधि विसरी॥ उडुपति विद्रुमबिंब खिसान्यो दामिनि अधिक डरी। निरखे श्याम पतंगसुतातट आनँद उमँगि भरी॥सूरदासप्रभु प्रीतिपरस्पर प्रेमप्रवाह परी॥४३॥अध्याय२१गोपिकावचन॥राग सारंग॥हम न भईं वृंदावनरेनु। जिनचरणन डोलत नँदनंदन नितप्रति चारत धेनु॥ हमते धन्य परम ए द्रुम वन बालक बच्छ अरु धेनु। सूर सकल खेलतहँसि बोलतग्वालनसँग मथिपीवत फेनु॥ ४४॥ राग केदारो॥ कहा भयो यादवजनमते ऊंचे पद कह्यो ऐन। सब जीवनको इहै एक फल छिनक मीन जल करते सैन॥ अधर मधुर पीवत मोहनको मवै कलंक नशाइ। अतिकठोरमणि काइनहीमेछेदि विशालबनाइ॥ अतरबिनसोसदा देखतहै निज कुल वश विहाइ। लिख्यो बिन अंक नही कछु करनी निरखन ताहि जो नयन लगाइ। सूरदासप्रभु बलपरसननितकामावलि अधिकाइ॥ ४५॥ राग सारंग॥ऐमोगुपाल निरखि तन मन वारौं। नवल किशोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं॥ अरुन तरुन कमलनैन मुरली कर राजै। व्रजजनमनहरन बेन मधुरमधुर बाजै॥ ललित त्रिभंग सोतन वनमाला सोहै। अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको कोहै॥ चरणरुनित नेपुर कटि किंकिणी कल कूजै॥मकराकृत कुंडल छवि सूर कौन पूजै॥ ४६॥ सुंदर मुखकी बलि बलि जाऊं। लावनिनिधि गुणनिधि शोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाऊं॥ अंगअंगप्रति अमितमाधुरी प्रगटित रस रुचि ठाऊंठाऊं॥ तामें मृदु मुसुकानि मनोहर न्याय कहत कवि मोहन नाऊं। नैनसैन दैदै जब हेरत तापर हौं विन मोल बिकाऊं। सूरदास प्रभु मदन मोहन छवि यह शोभा उपमा नहिं पाऊं॥ ॥४७॥ राग खडी॥ मैं बलि जाउँ श्याममुख छविपर। बलिबलि जाउँ कुटिल कच बिथुरी बलि बलिजाउँ भृकुटि लिलाटतर॥बलिबलिजाउँ चारुअवलोकनिबलिहारी कुंडलकी।बलिबलिजाउँ नासिका सुललित बलिहारी वा छबिकी॥ बलिबलि जाउअरुनअधरनकी विद्रुमबिंब लजावन। मैं बलिजाउँ दशनचमकनकी वारौं तडित नमावन॥मैं बलिजाउँ ललित ठोढीपर बलिमोति-नकी माल। सूर निरखि तन मन बलिहारौ बलिबलि यशुमतिलाल॥ ४८॥राग कान्हरो॥अलकन-की छवि अलिकुल गावत।खंजन मीन मृगज लज्जित भए नैन नचावनि गतिहि न पावत॥

मुख मुसकानि आनि उरअंतर अंबुज बुधि उपजावत।सकुचत अरु विगसित वा छविपर अनुदिन जनम गवांवत ॥ पूरण नही सुभग श्यामलको यद्यपि जलधर ध्यावत । वसन समान होत नहिं हाटक अग्निझांपदे आवत ॥ मुक्तादाम विलोकि विलखि करि अवलि वलाकु बनावत । सूरदास प्रभु ललित त्रिभंगी मनमथ मनहि लजावत॥४९॥ राग मारू ॥ निगमते अगम हरिकृपा न्यारी । प्रीतिवश श्यामकी राइकी रंक कोउ पुरुपकी नारि नहिंभेदकारी॥प्रीतिवश देवकीगर्भ लीन्होवास प्रीतिके हेत व्रज भेप कीन्हो।प्रीतिके हेतु यशुमति दियो पयपान प्रीतिके हेतु अवतार लीन्हो ॥ प्रीतिके हेतु वन धेनु चारत कान्ह प्रीतिके हेतु नदसुवन नामा।सूर प्रभुको प्रीतिके हेतु पाइए प्रीतिके हेतु दोउ श्याम श्यामा॥५०॥प्रीतिके वश्य एहै मुरारी।प्रीतिके वश्य नटवरभेप धार्यो प्रीतिवश करज गिरिराजधारी॥प्रीतिकेवश्य व्रजभएमाखनचोर।प्रीतिके वश्य दाँवरिवधाई।प्रीतिके वश्य गोपीरवन प्रिय नाम प्रीतिकेवश्यतरु जमलमोक्षदाई॥प्रीतिवशनदवंधन वरुण सदन गये प्रीतिके वश्य वनधाम कामी । प्रीतिके वश्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदितप्रीतिवश सदा राधिकास्वामी ॥राग धनाश्री॥देदेरी मैयादोहनीदुहिहौं मैगैया।माखन खाये बलभयोकरि नदहुँहैया॥कजरीधुमरी सेंदुरी धौरी मेरी गैया।दुहिल्याऊं मे तुरतही तू करिदे धैया॥ग्वालनकी सरि दुहतहौं बूझहु बलभैया।सूर निरखि जननी हँसी तव लेति बलैया॥५१॥राग सारग॥बाबा मोको दुहन सिखायो। तेरे मन परतीति न आवे दुहत अँगुरियन भाव बतायो ॥ अँगुरीभाव देखि जननी तव हँसिके श्यामहिं कंठ लगायो।आठवर्पको कुवर कन्हैया इतनी बुद्धि कहाते पायो ॥ मातालै दोहनी कर दीन्हो जव हरि हसत दुहनको धायो।सूर श्यामको दुहत देखि तव जननी मन अतिहर्ष बढायो॥ राग धनाश्री॥ जन [illegible]

दुहन देहु कछु [illegible]

तौ नंद दोहाई॥ झूठहि करत दुहाई प्रातहि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई । सूर श्याम कह्यो कालि दुहेगेहमहू तुममिलिहोड लगाई॥५२॥राधायशोदाके आई।राग विलावल॥ उठीप्रातहि राधिका दोहनी करल्याइ।महरि सुतासो तव कह्यो कहां चली अतुराइ॥ खरिकदुहावन जातिहौं तुम्हरी सेवकाइ। तुम ठकुराइनि घर रहौमोहि चेरी पाइ॥ रीती देखी दोहनी कतखीझन धाइ। कालि गई अवसेरकैह्यां उठी रिसाइ॥गाइगईसवप्याइकै प्रातहिनहिंआइ।ताकारण मे जातिहौं अतिकरतचँडाइ॥ यह कहि जननीसो चलीव्रजको समुहाइ।सूर श्याम गृहद्वारही गौ करत दुहाइ॥५३॥ राग विलावल॥ सुता महर वृपभानुकी नँदसदनहि आई । गृहद्वारेही अजिरमे गो दुहत कन्हाई॥ श्याम चितै मुख राधिका मनहर्प वढाई। राधा हरिमुख देखिकै तनु सुरति भुलाई ॥ महरि देखि कीरतिसुता तेहि लियो बुलाई।दपतिको सुख देखिकै सूरज वलिजाई॥५४॥आजु राधिका भोरही यशुमति-के आई। महरि मुदित हँसि यो कह्यो मथि मान दोहाई॥ आयसु लै ठाढी भई करनेति सुहाई। रीतो माट विलोवही चित जहां कन्हाई॥उनकेमनकी कह कहौं ज्यो दृष्टिलगाई। लेइ आनो एकवृप-भसो गैया विसराई ॥ नैननिमें यशुमति लखी दुहुँकी चतुराई । सूरदास दपतिदशा वरणी नहिं जाई॥५५॥महरि कह्यो री लाडिली केहिं मथन सिखायो। कहैं मथनी कहँ माट है चित कहां लगायो ॥ अपने घर योही मथै कहि प्रगट देखायो । की मेरे घर आइकै ह्यां सब विसरायो ॥ मथन नही मोहिं आवतही तुम सौंह दिवायो।तेहि कारणमें आइकै तुव बोल रखायो ॥तव नँद-घरनी मथि दह्यो यहि भांति वतायो । सूर निरखि मुख श्यामको तहां ध्यान लगायो ॥५६॥

सूरप्रसन्न जानि एकौ छिन अधर सुशीश डोलावति॥३९॥ श्याम तुम्हारीमदनमुरलिका नेकसी जग मोह्यो।जे सब जीव जंतु जल थलके नाद स्वाद मत पोह्यो॥जे तीरथ तप करेतरनिसुतपन गहि पीठि न दीन्ही। ता तीरथ तपके फल लैके श्याम सोहागिनि कीन्ही॥ धरणी धरगोवर्धन गरयो कोमल प्राण अधार। अब हरि लटकि रहत हैं टेढे तनक मुरलिके भार॥ निदरि हमहिं अधरन रस पीवत पठै दूतिका माई।सूर श्याम निकुञ्जते प्रगटी चतुरी सौति भइ आई॥ ७२०॥ सखीरी मुरली लीजै चोर। जिन गोपाल कीन्हें अपने वश प्रीति सबनिकी तोर॥ छिन एक घोर फेरिसखुनापुर धरत नकबहूं छोर।कबहूं कर कबहूं अधरनपर कबहूं कटिमें खोसत जोर॥ ना जानौं कछु मेलि मोहिनी राखी अंग अंमोर। सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो रागके डोर॥४१॥ राग केदारो॥ मुरली अधर सजी बल बीर। नादसुनि बनिता विमोही डर बिसारे चीर॥ लग नैन मूंदि समाधि धरि ज्यों करत मुनि तप धीर। डोलति नहीं द्रुमलता निश्चला मंद गत समीर॥ मृग धेनु तृण तजि रहे ठाढे बच्छ तजि सुतक्षीर। सूर मुरलीनाद सुनि थकिरहत यमुनानीर॥४२॥ राग मलार॥जब मोहन मुरली अधर धरी। गृहव्यवहार थके आरजपथ चलत न संककरी॥पदरिपुपटअटक्यो आतुरज्यों उलटत पलट मरी॥शिवसुत वाहनआइ मिलेहैंमनचित बुद्धिहरी॥ दुरिगए कीर कपोत मधुपपिक सारंग सुधि बिसरी॥ उडुपति विद्रुमबिंब खिसान्यो दामिनि अधिक डरी। निरखि श्याम पतंगसुतातट आनँद उमगि भरी॥सूरदासप्रभु प्रीतिपरस्पर प्रेमप्रवाह परी॥४३॥गोपीवचनपरस्परगोपिकावचन॥राग सारंग॥हमन भई वृंदावनरेनु। जिनचरणन डोलत नँदनंदन नितप्रति चारत धेनु॥ हमते धन्य परम ए द्रुम बनबालक बच्छ अरु धेनु। सूर सकल खेलतहँसि बोलतग्वालनसँग मथिपीवत फेनु॥ ४४॥ राग केदारो॥ कहा भयो यादवजनमते ऊंचे पद कह्यो एन। सब जीवनको इहै एक फल छिनक मीन जल करते मैन॥ अधर मधुर पीवत मोहनको सबै कलंक नशाइ। अतिकठोरमणिकाइनहीमेंछेदि बिशालबनाइ॥ अंतरबिनसोसदा देखतहैं निज कुल वंश बिहाइ। लिख्यो बिन अरु नहीं कछु करनी निरखत ताहि जो नयन लगाइ। सूरदासप्रभु वल्लभमनमनितवमावलिअधिकाइ॥ ४५॥ राग सारंग॥ऐसोगुपाल निरखि तन मन वारौं। नवल किशोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं॥ अरुन तरुन कमलनैन मुरली कर राजै। व्रजजनमनहरन बेनु मधुरमधुर बाजै॥ ललित त्रिभंग सोतन बनमाला सोहै। अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको कोहै॥ चरणरुनित नेपुर कटि किंकिणी कल कूजै॥मकराकृत कुंडल छवि सूर कौन पूजै॥ ४६॥ सुंदर मुखकी बलि बलि जाऊं। कछु रिझवत वचा वृषभानु। शोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाऊं॥ [illegible] ॥राग धनाश्री॥ दूध दोहनीलेरीमैया दाऊ ठाउठाऊं॥ तामें मृदु मुसुकानि [illegible] विधि घेया॥मुरली मुकुटपीतांबरदे मोहिं लैआई महतारी॥मुकुट ताप[illegible] धर्यो शिरकाछे पीतांबरमुरली करलियो धारी॥ राधाराधा कहि मुरलीमें खरिकहिं लई बुलाई। सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि ऐसी बुद्धि उपाई॥६५॥कुँवरिकह्योमें जाति महरिघर।प्रातहिंआई खरिक दुहावन कहति दोहनी लेकर॥ तब खरिकहिं कोऊ ग्वाल गये नहिं तिन कारण व्रजआई। जौ देखौं तौ अजिरहि बैठे गैया दुहत कन्हाई॥ननक दोहनी तनक दुहत मोहिं देखि अधिकरुचि लागी।तनक राधिका तनकसूरप्रभुदेखि महाअनुरागी॥६६॥राग सूही॥जाघरप्यारीआवतरहियो महरि हमारी बात चलावति मिलन हमारो कहियो॥एक दिवसमेंगई यमुनतट तहां उन देखी आई। मोको देखि बहुत सुख पायो मिलि अकम लपटाई॥ यह सुनिके चली कुँवरि राधिका मो को।भई

मुख मुसकानि आनि उरअंतर अंबुज बुधि उपजावत।सकुचत अरु विगसित वा छबिपर अनुदिन जनम गवांवत ॥ पूरण नहीं सुभग श्यामलको यद्यपि जलधर ध्यावत । वसन समान होत नहिं हाटक अग्निझांपदै आवत॥ मुकतादाम बिलोकि बिलखि करि अवलि बलाक बनावत । सूरदास प्रभु ललित त्रिभंगी मनमथ मनहिं लजावत॥४९॥ राग मारू॥ निगमते अगम हरिकृपा न्यारी । प्रीतिवश श्यामकी राइकी रंक कोउ पुरुपकी नारि नहिंभेदकारी॥प्रीतिवश देवकीगर्भ लीन्होवास प्रीतिके हेत ब्रज भेप कीन्हो।प्रीतिके हेतु यशुमति दियो पयपान प्रीतिके हेतु अवतार लीन्हो ॥ प्रीतिके हेतु वन धेनु चारत कान्ह प्रीतिके हेतु नंदसुवन नामा।सूर प्रभुको प्रीतिके हेतु पाइए प्रीतिके हेतु दोउ श्याम श्यामा॥७९०॥प्रीतिके वश्य एहैं मुरारी।प्रीतिके वश्य नटवरभेप धार्यो प्रीतिवश करज गिरिराजधारी॥प्रीतिकेवश्य ब्रजभएमाखनचोरप्रीतिके वश्य दाँवरिवंधाई।प्रीतिके वश्य गोपीरवँन प्रिय नाम प्रीतिके वश्यतरु जमलमोक्षदाई॥ प्रीतिवशनंदबंधन वरुण सदन गये प्रीतिके वश्य वनधाम कामी । प्रीतिके वश्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदितप्रीतिवश सदा राधिकास्वामी ॥राग धनाश्री॥दैदैरी मैयादोहनीदुहिहौं मैंगैया।माखन खाये बलभयो करि नंददुहैया॥कजरीधुमरी सेंदुरी धौरी मेरी गैया।दुहिल्याऊं मैं तुरतही तू करिदे घैया॥ग्वालनकी सरि दुहतहौं बूझहु बलभैया।सूर निरखि जननी हँसी तब लेति बलैया॥८१॥राग सारंग॥बाबा मोको दुहन सिखायो। तेरे मन परतीति न आवै दुहत अँगुरियन भाव बतायो ॥ अँगुरीभाव देखि जननी तब हँसिकै श्यामहिं कंठ लगायो।आठवर्पको कुँवर कन्हैया इतनी बुद्धि कहांते पायो ॥ माताले दोहनी कर दीन्हीं जब हरि हँसत दुहनको धायो।सूर श्यामको दुहत देखि तब जननी मन अतिहर्ष बढायो॥ राग धनाश्री॥ जननी मथतिदधि गोदुहतकन्हाई।सखा परस्परकहतश्यामसोंहमहूंते तुमकरत चँडाई॥ दुहन देहु कछु दिन अरु मोको तबकरिहौंमोसम सरि आई। जबलौं एक दुहौंगे तबलौं चारिदुहौं तौ नंद दोहाई॥ झूठहि करत दुहाई प्रातहि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई । सूर श्याम कह्यो कालि दुहेंगेहमहूं तुममिलिहोड लगाई ॥८२॥गायदोहाके आई।राग बिलावल॥ उठीप्रातहि राधिका दोहनी करल्याइ।महरि सुतासों तब कह्यो कहां चली अतुराइ॥ खरिकदुहावन जातिहौं तुम्हरी सेवकाइ। तुम ठकुराइनि घर रहौमोहि चेरी पाइ॥ रीती देखी दोहनी कतखीझत धाइ। कालि गई अवसे रकेह्यां उठी रिसाइ॥गाइगईसवप्याइकै प्रातहिनहिंआइ।ताकारण मैं जातिहौं अतिकरत चँडाइ ॥ [illegible] कहि जननीसों चलीब्रजको समुहाइ।सूर श्याम गृहद्वारही गौ करत दुहाइ ॥८३॥ राग बिलावल॥ न करिहौं नंददुहैया ॥ [illegible] आई । गृहद्वारेही अजिरमें गो दुहत कन्हाई॥ श्याम चितै मुख एक धार जहां प्यारी ठाढी ॥ मोहनकरतें धार [illegible]गति भुलाई ॥ महरि देखि कीरतिसुता मनो जलधर जलधार वृष्टि लघु पुनिपुनि प्रेम चंदपर बाढी ॥ [illegible] राधिका भोरही यशुमति- छबि भई व्याकुल मन्मथकी डाढी ।सूरदास प्रभुके वश भई सब भवनकाजते भई [illegible]
राग बिलावल॥ दुहिदीनी राधाकी गैयाँ।दोहनी नहीं देत करते हरि हाहा करतिपरतिहै पैयां॥ज्यों ज्यों प्यारी हाहा बोलति त्यों त्यों हँसत कन्हैया ।बहुरिकरौ प्यारी तुम हाहा देहौं नंददुहैया ॥ तब दीनी प्यारीकर दोहनि हाहा बहुरि करैया।सूरश्याम रस हावभाव करि दीनी कुँवरि पठैया ॥७८॥ चलन चहति पग चलै न घरको ।छांडत बनत नहीं कैसहू मोहन सुंदरवरको ॥ अंतर नेक करूं नहिं कबहूं सकुचतिहौं पुरनरको ।कछुदिन जैसे तैसे खोऊं दूरि करौं पुनि डरको॥ मन- में यह विचार करि सुंदरि चली आपने पुरको । सूरदास प्रभु कह्यो जाहु घर घात करयो नख

राग धनाश्री ॥ दुहन श्याम गैयां बिसराई। नोआ लै पग बाँधि वृषभके दोहनी मांगत कुँवर कन्हाई॥ ग्वाल एक दोहनी लै दीनी दुहो श्याम अति करी चँटाई। हँसत परस्पर तारी दै दै आजु कहाँ तुम गये भुलाई॥ कहत सखा हरि सुनत नहीं सो प्यारीसों रहे चित्त अरुझाई। सूर श्याम राधानन चितवत बडे चतुरकी गई चतुराई॥ ५७॥ राग रामकली ॥ राधा इक टक हेरी तेरे वे मेहाल मथत दधि कीन्हे हरि मनो लिखे चितेरे॥ तेरे मुख देखन शशि लाजे और कहो क्यों नाचे। नैना तेरे जलज जितेहैं खंजनते अति नाचे॥ चपलाते चमकन अति प्यारी कहा करौगी श्यामहिं। सुनहु सूर प्रेमहि दिन खोवति काज नहीं कछु तेरे धामहिं॥ ५८ ॥ राग गूजरी ॥ मेरो कह्यो नाहिन सुनति। तबहिंते एकटक रही है कहा मन धौं गुनति ॥ अबहिंते तू करति ए ढंग तोहि है कछु हौन। श्यामकी तू ऐसे ठगिलिये कछु न जाने जौन॥ सुना है वृषभानुकी री बडो इनको नाउ। सूरप्रभु नँदनंदन निरखत जननि कहति सुभाउ ॥५९॥ राग धनाश्री ॥ प्रगटी प्रीति न रही छिपाई। परी दृष्टि वृषभानुसुताकी दोउ अरुझे निरवारि न जाई॥ उघार छोरि राधिका दीनों आपु कान्ह तनुसुधि बिसराई। नोवत वृषभ निकसि गैयाँ गईं हँसत सखा कहा दुहत कन्हाई॥ चारौ नैन भए एकठाहर मनहीमन दुहुँ रुचि उपजाई। सूरदासस्वामी रतिनागर नागरि देखिगई नगराई॥ ॥ ७६० ॥ चितैयो छाडिदे री राधा। हिलिमिलि खेलि श्यामसुंदरसों करति कामको बाधा॥ क्यों बैठी रहि भवन आपने काहेको वनिआवै। मृगनैनी हरिको मनमोहति जब तू देखि दुहावै॥ कबहुँक कर ते गिरति दोहनी कबहुंक बिसरत नोई। कबहुँक वृषभ दुहतहैं मोहन ना जानो का होई॥ कौन मंत्र जानति तू प्यारी पढि डारति हरिगात। सूर श्यामको धेनु दुहनदे कहति यशोदामात ॥ ६१ ॥ राग धनाश्री॥ धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं। जोआवैतो सहजरूपसों वनि आवति वेकामहिं ॥ सूधे आइ श्यामसंग खेलो बोलो बैठो धामहिं। ऐसो ढंग मोहिं नहिं भावै लेउ न ताके नामहिं॥ घर अपने तू जाहि राधिका कहति महरि मन तामहिं। सूर आइ तू करति अचगरी को बकही निशि यामहिं ॥ ६२ ॥ राग जैतश्री ॥ बारबार तू जिनि ह्यां आवै। मैं कहा करौं सुतहि नहिं बरजति घरते मोहिं बोलावै॥ मोसों कहत तोहि बिनु देखे रहत न मेरो प्रान। छोहलगति मोको सुनि बाणी महरि तुम्हारी आन ॥ मुह पावति तबहीलौं आवति और लावति मोहि। सूरसमुझि यशुमति उरलाइ हँसति कहतिहौ तोहि ॥ ६३ ॥ राग गौरी ॥ हंसत कह्यो मैं तोसों प्यारी। मनमें कछू बिलगु जिनि मानहु मैं तेरी महतारी॥ बहुते दिवस आज तू आई राधा मेरे धाम। महरि बूझी मैं सुघरि सुनी है कछु सिखयो गृहकाम ॥ मैया जब मोहिं टहल कहत कछु सिखवत बबा वृषभानु। सूर महरिसों कहति राधिका मानो अतिहि अजान॥ ६४ ॥ राग बसन्त ॥ दूध दोहनी लै गै मैया। दाऊ टेरत सुनि मैं आऊ तबहीं बहुरि विधि घैया॥ मुरली मुकुट पीतांबर दै मोहिं लै आई महतारी। मुकुट धर्यो सिर फेंट पीतांबर मुरली करलियो धारी॥ राधाराधा कहि मुरलीमें सारिकहिं लई बुलाई। सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि ऐसी बुद्धि उपाई॥ ६५॥ कुँवरिकह्योमैं जाति महरिघर। प्रातहि आई खरिक दुहावन कहति दोहनी लैकर॥ तब खरिकहिं कोऊ ग्वाल गये नहिं तिन कारण ब्रजआई। जौं देखौं तौ अजिरहि बैठे गैया दुहत कन्हाई॥ तनक दोहनी तनकु दुहत मोहि देखि अधिक रुचि लागी। तनकु राधिका तनकु सूरप्रभु देखि महरि अनुरागी॥ ६६॥ राग गूजरी॥ जाघरप्यारी आनत रहियो महरि हमारी बात चलावति मिलन हमारो कहियो॥ एक दिवस मैं गई यमुनतट तहां उन देखी आई। मोको देखि बहुत सुख पायो मिलि अंकम लपटाई॥ यह सुनिकै चली कुँवरि राधिका मोको। भई

अपार।सूरदास प्रभुमन हरिलीन्हों मोहन नंदकुमार॥६७॥ राग गूजरी॥सैनदै प्यारीलईबोलाइ।खेलनको मिस करिकैनिकसे खरिकहिगएकन्हाइ॥यशुमतिकोकहि प्यारी निकसीघरकोनाउँसुनाई। कनकदोहनी लै तहँ आई जहँ हलधरको भाई ॥ तहां मिली सब संग सहेली कुँवरि कहां तू आई। प्रातहि धेनु दुहावन आई अहिर नहीं तह पाई॥तबहिंगई मै ब्रज उतावली ल्याई ग्वाल बुलाई।सूरश्याम दुहिदेन कह्यो सुनि राधा गई मुसकाई॥६८॥ राग धनाश्री॥ धेनु दुहन जब श्याम बोलाई। श्रवन सुनत तहां गई राधिका मन हरिलियो कन्हाई॥सखीसंगकी कहति परस्पर कहँ यह प्रीति लगाई। यह वृषभानुपुरा ये ब्रजमें कहाँ दुहावन आई॥ मुख देखत हरिको चक्रत भई तनकी सुधि बिसराई। सूरदासप्रभुके रसवश भई काम करी कठिनाई ॥ ६९॥ गाउँ बसत एते दिवसनिमें आज श्याम मैं देखे। जेदिन गए बिना ब्रजनाथहितेई वृथाकरिलेखे॥कहियेजोकछु होइ सयानी कहिवेको अनुमाने। सुंदर श्याम निकाईकोसुख नैनाईपै जानै॥ तबते रूप ठगोरी लागी युगसमान पल बितवति। तजि कुललाज सूरके प्रभुको फिरिफिरि मुखतन चितवति ॥ ॥७७०॥राग देवगन्धार ॥मोहन करते दोहनि लीनी गोपद बछरा जोरे।हाथ धेनुथन बदन त्रियातनु छीर छाछि छल छोरे॥आनन रही ललिन पयछींटै छाजति छवि तृण तोरे। मनहुँ निकसि निकलंक कलानिधि दुग्धसिंधुके बोरे ॥ दे घूंघटपट ओट नील हँसि कुँवारि मुदित मुख मोरे।मनहुँ शरदशशिको मिलि दामिनि घेरिलियो घनघोरे॥ यहिविधि रहसति बिलसति दंपति हेतु हिये नहिं थोरे।सूर उमँगि आनंदसुधानिधि मनो बिलावल फोरे॥७१॥राग रामकली॥हरसोंधेनु दुहावत प्यारी। करति मनोरथ पूरण मन वृषभानु महरकी बारी ॥ दूधधार मुखपर छवि लागति सो उपमा अतिभारी।मानो चंद कलंकहि धोवत जहँ तहँ बूँद सुधारी॥ हावभाव रस मगन ह्वै दोऊ छवि निरखति ललिता री। गौदोहनसुख करत सूर प्रभु तीनिहुँ भुवन कहा री॥७२॥रागसूहो॥ तुमपै कौन दुहावै गैया। लिहे रहत कर कनकदोहनी बैठतहौ अधपैया ॥ अतिरस कामकि प्रीति जानिकै आवत खरक दुहैया। इत चितवत उत धार चलावत एहि सिखयो है मैया॥ गुप्त प्रीति तासों करि मोहन जोहै तेरी देया। सूरदास प्रभु झगरो सीख्यो ज्यो वर खसम गुसैया॥७३॥ राग धनाश्री ॥करिलोन्यारीहरिआपनिगैयां॥नहिनबसातलालकछुतुमसोसबैग्वालइकठैयां॥नहिन अधिक तेरे बाबाके नहिं तुम हमरे नाथ गुसैयाँ। हम तुम जाति पांतिके एकै कहा भयो अधिकी द्वै गैयाँ॥ जादिनते सबरे गोपनमें तादिनते तू करत लँगरैया। मानी हार सूरके प्रभुसो बहुरि न करिहौ नंददुहैया ॥ ७४॥ राग सूहो ॥ धेनुदुहत अतिही रति बाढी।एकधार दोहनि पहुँचावत एक धार जहां प्यारी ठाढी ॥ मोहनकरते धार चलत पय मोहनीमुख अतिही छवि गाढी। मनो जलधर जलधार वृष्टि लघुपुनिपुनि प्रेम चंदपर बाढी ॥ सखी संगकी निरखति यह छवि भई व्याकुल मन्मथकी डाढी। सूरदास प्रभुके वश भइँ सब भवनकाजते भई उचाढी॥७५॥ राग बिलावल॥ दुहिदीनी राधाकी गैयाँ।दोहनी नहीं देत करते हरि हाहा करतिपग तिहँ पैयां॥ज्यो ज्यो प्यारी हाहा बोलनि त्यो त्यो हँसत कन्हैया। बहुरिकरौ प्यारी तुम हाहा देहौं नंददुहैया ॥ तब दीनी प्यारीकर दोहनि हाहा बहुरि करैया।सूरश्याम रस हावभाव करि दीनी कुँवरि पठैया ॥७६॥ चलन चहति पग चलै न घरको। छांडत बनत नहीं कैसेहू मोहन सुंदरवरको ॥ अंतर नेकु करूं नहिं कबहूं सकुचतिहौं पुरनरको। कछुदिन जैसे तैसे खोऊ दूरि करौं पुनि डरको॥ मनमें यह बिचार करि सुंदरि चली आपने पुरको। सूरदास प्रभु कह्यो जाहु घर घात करयो नरघ

उरको ॥राग मलार॥मुरि मुरि चितवति नंदगली। डग न परत व्रजनाथ साथ बिनु विरह व्यथा मचली ॥ वारवार मोहनमुख कारण आवत फिरि जु अली । चली पीठि दै दृष्टि फिरावति अंग अंग आनंद रली॥ सूरदास प्रभुपास दुहायो श्रीवृषभानु लली॥७७॥ राग बिलावल ॥शिर दोहनी चली लै प्यारी । फिरि चितवत हरि हँसे निरखि मुख मोहन मोहनी डारी ॥ व्याकुल भई गई सखियनलौं व्रजको गए कन्हाई । और अहिरसब कहाँ तुम्हारे हरिसो धेनु दुहाई ॥ यह सुनिकै चकृत भई प्यारी धरणि परी मुरझाई । सूरदास तब सखियन उग्भरिलीनी कुवरि उठाई ॥७८॥ क्यो री कुँवरिगिरीमुरझाई।यह वाणीकहि सखियनआगेमोको कारे खाई॥चलीं लिवाइसुतावृषभानुहिं घरहीतन समुहाई।डारदियो भरि दूध दोहनियां अबही नीके आई॥यह कारोसुत नंदमहरको सब हम फूंक लगाई॥सूर मखिन मुख सुनि यह वाणी तब यह बात सुनाई७९सारंग ॥मोहिलईनैननि की सैन।श्रवन सुनत सुधिबुधि बिसरी सबहो लुबधी मोहनमुख बैन ॥ आवत इतेकुमारखरिकते तब अनुमान कियो सखि मैन । निरखत अंग अधिक रुचि उपजी नखशिख सुंदरताको ऐन॥ मृदु मुसकान हर्यो मनको मनि तबते तिल न रहत चित चैन।सूर श्याम यह वचन सुनायो मेरी धेनु कही दुहिदैन॥ ७८० ॥राग धनाश्री॥सखियन मिलि राधा घर लाई । देखहु महरिसुता अपनीको कहू यहि कारे खाई।हम आगे आवति यह पाछे धरणि परी भहराई। शिरते गई दोहनी ढरिकै आपु रही मुरझाई॥श्याम भुअंग डस्यो हम देखत ल्यावहु गुणी बुलाई। रोवत जननि कंठ लपटानी सूर श्याम गुनराई ॥८१॥राग सारंग ॥ प्रात गई नीके उठि घरते मै बरजी कहां जाति री प्यारी तब खीझी रिस झरते॥शीतलअंग खेदसो बूडी सोच पर्यो मन डरते॥अतिहि हठीली कह्यो न मानति करति आपने बरते ॥ औरे दशा भई क्षण भीतर बोली गुनी नगरते। सूर गारुडी गुणकरि थाके मंत्रन लागतथरते॥८२॥ राग नटनारायण चले सबगारुडी पछिताइ।नेकहू नहिं मंत्र लागत समुझि काहु न जाइ ॥ बात बूझत संग सखियन कही हमहिं बुझाइ । कहा कहि राधा सुनायो तुम सबनिसो आइ॥महाविषधर श्याम अहिवर देखि सबही धाइ।फूंक ज्वाला हमहू लागी कुँवरि उर परी खाइ ॥गिरी धरनी मुरछि तबही लई तुरत उठाइ।सूर प्रभुको वेगि ल्यावहु बडो गारुडिराइ ॥८३॥ राग आसावरी॥ नंदसुवन गारुडी बोलावहु । कह्यो हमारो सुनत न कोऊ तुरत जाहु व्रज अब लै आवहु ॥ ऐसे गुनी नही त्रिभुवन कहुँ हम जानत हैं नीके । आयजाय तौ तुरत जियावै नेक छुवतही उठिहै जीके ॥देखो धौ यह बात हमारी एकहि मंत्र जियावै। नदमहरको सुतसूरजप्रभु जो कैसेहुकरिआलौं आवै ॥ ८४॥ राग आसावरी॥डसीरी माई श्याम भुअंगम कारे।मोहन मुख मुसकानि मनहूँ विष जाते मरे सो मारे॥फुरे न मत्र यंत्र दइ नाही चले गुणी गुण डारे। पेमप्रीति विष हिरदे लागी डारतहै तनु जारे॥ निर्विष होत नही केसेहुंकरि वहुत गुणी पचि हारे। सूर श्याम गारुडी विना को सोशिर गाडूढारे॥८५॥राग धनाश्री॥ वेगि चलो पिय कुवर कन्हाई । जा कारण तुम यह वन सेयो सो त्रिय मदनभुअंगम खाई ॥ नैन शिथिल शीतल नासापुट अंगतपति कछु सुधि न रहाई। सकसकात तनु भीजि पसीना उलटि पलटि तन तोरि जँभाई ॥ बिन देखे मूरतिको जितितित उठि दौरी जिन जहां बताई । ताहि कछू उपचार न लागत कर मीजे सहचरि पछिताई ॥ वारवार बूझ तिहि ऐसे कमलनयनकी सुंदरताई ।जोपै सूर जिवायो चाहत तो ताको अब देहु दिखाई ॥ ८६ ॥राग नट॥ सुनत तुम्हरी बात मोहन चुइचले दोउ नैन।छुटिगई लोकलाज आतुरता रहि न सकति चित चैन॥उर कांप्यो

तनु पुलकि पसीज्यो विसरिगई सुख बैन। ठाढी है जैसे तैसे धुकि परी धरणि तिहि ऐन॥कोउ शिर गहि कोउ कमल कुंकुमा कोउ धाई जल लैन। ताहि कछू उपचार न लागै डसी कठिन अहि मैन॥ हौ पठई एक सखी सयानी अब बोली दै सैन। सूर श्याम राधिका मिलै विनु कहा लगे दुखदैन॥८७॥राग केदारो॥ भरिभरि लेत लोचन नीर। तुम विना ब्रजनाथ सुंदरि विरहखेद अधीर॥कमल उरपर धरत छिनुछिनु छिरकि चंदन चीर। जालमग शशिकिरिन रोकित मलय मंद समीर॥हौं जु तुम्हरे पास पठई देखि मनसिज भीर। सूरदास सुजान श्रीपति मिलिहरहु तनु-पीर॥८८॥राग सारंग॥तनु विष रह्योहै बहु छहरिनद सुअन अति गारुडी कहतहैं पठवै धौ महरि॥ गए अवमान भीर नहिं भावै भावै नाहिं चहरि। ल्यावो गुणी जाइ गोविंदको बाढी है अति लहरि॥ देखी उरहि वीचही खाई माती है जहरि। सूर श्याम विषहर कहुँ खाई यह कहि चली डहरि॥ ॥८९॥राग छवराइ॥वृषभानुकी घरनी यशोमति पुकार्‍यो। पठै सुतकाज मैं कहतिहौ लाज तजि पॉइ परिकै महरि करति आरयो॥ प्रात खरिकहि गई आय विह्वल भई राधिका कुँअरि कहुँ डस्यो कारो। सुनी यह वात मैं आइ अतुरात ह्यां गारुडी वडो है सुत तुम्हारो॥यह वडो धर्म नँदघरनि तुम पाइहौ नेक काहे न सुतको हकारो।सूर सुनि महरि यह कहिउठी सहजही कहा तुम कहति मेरो अतिहि वारो॥ ९० ॥कान्हहि पठै महरि कहति पाइँन परि।आजु कहुँ कारे काहू खाईहै काम कुवरि॥सब दिन आवै जाइ जहां तहां फेरि फिरि। अवही खरिक गई आईहै जिय विसारि॥ निशिके उनीदे नैन तैसे रहे टारि टारि॥किधौं कहूं प्यारीको तटकी लागी नजरि। तेरो सुत गारुडी सुन्योहै वातरी महरि।सूरदास प्रभु देखे जैहै री गरलझरि॥९१॥ राग आसावरी॥ यंत्र मंत्र कहा कारि जानै मेरो। यह तुम जाइ गुणिनको वुझहु विन कारण कत करतहौ झेरो॥ आठ वरषको कुँवर कन्हाई कहा कहत तुम ताहि। किन वहकाइदई है तुमको ताहि पकरि लैजाहि॥ मैं तो चकृत भई हौं सुनिकै अति अचरज यह बात। सूर श्याम गारुडी कहांको कह आई विततात॥ ९२ राग टोडी॥ महरि गारुडी कुवर कन्हाई। एक विटिनियां कारे खाई ताको श्याम तुरतही ज्याई। वोलिलेहु अपने ढोटाको तुम कहिकै नेकदेहु पठाई।कुँवरि राधिका प्रात खरिक गई कहा कहू धौं कारे खाई।यह सुनि महरि मनहिं मुसकानी अबहिं रही मेरे गृह आई।सूर श्याम राधहि कछु कारण यशुमतिसमुझिरही अरगाई॥९३॥राग आसावरी॥तव हरिको टेरति नँदरानी। भली भई सुत भयो गारुडी आजु सुनी श्रवणन यह वानी॥ जननीटेर सुनत हरि आए कहा कहति री मैया। कीरतिमहरि वुलावन आई जाहु न कुँवरकन्हैया॥ कहूराधिका कारे खाई जाहु न आवहु झारी।यंत्रमंत्र कछु जानतहौ तुम सूर श्याम वनवारी॥९४॥राग गूजरी॥ मैया एक मंत्र मोहिं आवै।विषहर खाइ मरे जो कोऊ मोसो मरन न पावै॥एक दिवस राधासँग आई खरिक विटिनियां औरा।तहां ताहि विषहरने खाई गिरी धरणि वहि ठौर॥यह वाणी वृषभानु-घरनि कहि यशुमति तव पतिआई। सूर श्याम मेरो वडो गारुडी राधा ज्यानहु जाई॥ ९५॥ राग सुघराई॥यशुमति कह्यो सुत जाहु कन्हाई। कुवरि जिवाये अतिहि भलाई॥ आजुहि मेरे गृह खेलन आई।जात कहूं कारे तेहि खाई॥कीरति महरि लिवावन आई।जाहु न श्याम करहु अतुराई॥ सूर श्यामको चली लिवाई।गई वृषभानुपुरहि समुहाई॥९६॥ राग देवगंधार॥ हरि गारुडी तहां तव आए। यह वानी वृषभानुसुता सुनि मनहीमन अति हर्ष वढाए॥ धन्यधन्य आपुनको कीन्हो अतिहि गई मुरझाई। तनु पुलकित रोमांच प्रगट भए आनँदअंशु वहाई॥ विह्वल देखि जननि

भई व्याकुल अग विप गए समाई॥सूर श्याम प्यारी दोउ जानत अतरगतिकी भाई९७॥रागरामकली॥ रोवत महरि फिरति बितहानी । बार बार लै कठ लगावति अतिहि शिथिल भई पानी ॥ नद-सुवनके पाँइ परी लैदौरि महरि तब आई । व्याकुल भई लाडिली मेरी मोहन देहु जिवाई॥ कछु पढिपढिकरि अग परस करि विप अपनो लियो झारि । सूरदास प्रभु बडे गारुडी शिरपर गारु डारि ॥ ९८ ॥ लोचन दियो कुँवरि उघारि । कुँवरि देख्यो नदको तब सकुचि अग सँभारि ॥ बात बूझति जननिसों री कहा है यह आजु । महतते तू वची प्यारी करतिहै कहा लाजु ॥ तब कहति तोहिं कारे खाई कछु न रही सुधि गात । सूर प्रभु तोहिं ज्याइलीन्ही की कुँवरिसो नात ॥ ९९ ॥ राग सारग॥ बडो मत्र कियो कुँवर कन्हाई । बार बार लै कठ लगायो मुख चूम्यो दियो घरहि पठाई ॥ धन्य कोखि वह महरि यशोमति जहा अवतर्यो यह सुत आई । ऐसो चरित तुरतही कीन्हो कुवरि हमारी मरी जिवाई ॥ मनहीमन अनुमान कियो यह विधना जोरी भली बनाई । सूरदास प्रभु बडे गारुडी ब्रजघरघर यह घर चलाई ॥ ॥८००॥राग सुघराई॥ भलेभलेहो भले कान्ह विपही उतारो।आजुते गारुडी नाव प्रगट्यो तिहारो॥ जननि कहति मेरी सुत बारो।युवती कहति हमतन धौं निहारो॥अब को निकरै साझ सबारो । जान्यो ब्रज बसत कठिन ऐसो कारो । यह निजु मत्र जनि जियते बिसारो ॥ महरि कागे कछु करैगो पसारो । सूरदास प्रभु सबहिन प्यारो ॥ ताहीसो डसत जाको हियो है उज्यारो॥१॥ राग रामकली॥नीके विपहि उतार्यो श्याम।बडे गारुडी अब हम जाने सगहि रहत सु काम ॥ऐसो मत्र कहां तुम पायो बहुत कियो यह काम । मरी आनि राधिका जिवाई टेरत एकहि नाम ॥ हम समुझी यह बात तुम्हारी जाहु आपने धाम। सूर श्याम मनमोहन नागर हँसि वश कीन्हो वाम ॥२॥ हँसि वश कीन्हीं घोपकुमारी । विवश भई तनुकी सुधि विसरी मन हरिलियो मुरारी ॥ गएश्याम ब्रज धाम आपने युवति मदनशर मारी । लहरि उतारि राधिका शिरते दई तरुनिनपै डारी ॥ करत विचार सुदरी सब मिलि अब सेवहु त्रिपुरारी । मागहु इहै देहुपति हमको सूरश्याम बनवारी ॥ ३ ॥ अध्याय ११॥चीरहरनलीला॥राग जयतश्री॥ भवन रवन सबहे बिसरायो।नदनँदन जबतेमन हरिलियो कहति वृथा यह जनम गँवायो ॥ जप तप व्रत सयम साधनते प्रगट होत पापान। जैसेहि मिलै श्यामसुदर वर सोइ कीजे नहिं आन ॥इहै मत्र दृढ कह्यो सबन मिलि याते होइ सुहोई। वृथा जन्म जगमे जिनि खोवहु इहाअपनो नहिं कोई॥ तब परतीति सबनिके आई कीन्हा दृढ विश्वास। सूर श्यामसुदर पति पावै इहै हमारे आस॥४॥राग आसावरी ॥गौरीपति पूजति व्रजनारि । नेम धर्मसो रहति कियायुत बहुत करति मनुहारि॥इहै कहति पति देहु उमापति गिरिधर नदकुमार। शरन राखिलेहु शिव शकर तनहिं नशावत मार॥ कमलपुहुप माल्हरपत्र फल नानासुमन सुवास। शकर पूजति मन बच क्रम करि सूर श्यामकी आस॥५॥ राग रामकली ॥ शिवसो विनय करति कुमारि । जोरि कर मुख करति अस्तुति वड प्रभु त्रिपुरारि॥शीतभीत न करत सुदरि कृश भई सुकुमारि । छहौ ऋतु तप करति नीके गृहको नेह बिसारि॥ध्यान धरि कर जोरि लोचन मूँदि एक एक याम । विनय अचल छोरि रविसों करतिहै सब वाम ॥ हमहिं होहु कृपालु दिनमणि तुम विदित संसार । काम अति तनु दहत दीजे सूर श्याम भतार॥६ ॥राग नटनारायण ॥ रविसो विनय करति कर जोरें । प्रभु अतर्यामी यह जानी हम कारण जप तप जल खोरें॥ प्रगट भए

प्रभु जलही भीतर देखि सबनको प्रेम। मीडत पीठि सबनिकी पाछे पूरण कीन्हे नेम॥ फिरि देखै तो कुँवर कन्हाई रुचिसो मीजत पीठि। सूर निरखि सकुची ब्रजयुवती परी श्यामतनु डीठि ॥ ७ ॥ राग देवगंधार॥ अति तप देखि कृपा हरि कीन्हो। तनुकी जरनि दूरि भई सबकी मिलि तरुणिन सुख दीन्हो॥ नवलकिशोर ध्यान युवती मन ऊहै प्रगट दिखायो। सकुचिगई अँग बसन सभारति भयो सबनि मनभायो॥ मनमन कहति भयो तप पूरण आनँद उर न समाई। सूरदास प्रभु लाज न आनति युवतिन माँझ कन्हाई॥ ८॥ राग सारंग॥ हँसत श्याम ब्रज घरको भागे। लोगनको यह कहति सुनावति मोहन करन लँगरई लागे॥ हम अरनान करत जलभीतर आपुनमीजत पीठि कन्हाई। कहा भयो जो नँदमहरसुत हमसो करते अधिक ढिठाई॥ लरिकाई तबहीलौं नीकी चारि बरप की पांच। सूर जाइ कहिहैं यशुमतिसो श्याम करत ए नाच॥९॥ प्रेम विवश सब ग्वालि भईं। उरहन दैन चली यशुमतिको मनमोहनके रूप रईं॥ पुलकिअगअँगियाउरदरकी हार तोरि कर आपु लईं। अचल चीरि घात नख उर करि यहि मिस करि नँदसदन गईं॥ यशुमति माई कहा सुन सिखयो हमको जैसे हाल कियो। चोलीफारि हार गहि तोऱ्यो देखो उर नखघात दियो॥ आंचर चीरि अभूपण तोरे घेरि धरत उठि भागि गयो। सूर महरि मन कहति श्याम धौं ऐसे लायक कबहिं भयो॥ ८१०॥ राग गौरी महरि श्यामको बरजति काहि ना। ऐसे हाल किये हरि हमको भई कहू जग आहि न॥ और बात एक सुनहु श्यामकी अतिहि भएहैं ढीठ। वसन बिना अस्नान करति हम आपुन मीजत पीठ॥ आपु कहति मेरो सुत बारो हियो उघारि दिखायो। सुनतहु लाज कहत नहि आवे तुमको कहा लजायो॥ यह वाणी युवतिनमुख सुनिके हसिबोली नँदरानी। सूर श्याम तुमलायक नाही बात तुम्हारी जानी॥११॥ राग गौरी॥ बात कहौ जो लहै बहै री। बिना भीति तुम चित्र लिखतिहौ सो कैसे निबहै री॥ तुम चाहतहौ गगनतरैया मांग कैसे पावहु। आवतही मैं तुम लखिलीन्ही कहि मोहिं कहा सुनावहु॥ चोरी रही छिनारो अब भयो जान्यो ज्ञान तुम्हारो। औरै गोपसुतन नहिं देखौ सूर श्याम है बारो॥१२॥ राग मलार॥ ग्वालिनि घरहीकी बाढी। निशि दिन देखत अपनही आँगन ठाढी॥ कबहि गुपाल कचुकी फारी कब भै ऐसे योग। अनही सग खेल ना सीखे यह जानत सब लोग॥ नितही झगरतहै मनमोहन मूरति देखि प्रेमरस चाखी। सूरदास प्रभु अटक न मानत ग्वाल सबै है साखी॥१३॥ राग गौरी॥ यहि अतर हरि आइगए। मोर मुकुट पीतांबर काछे अति कोमल छवि अग भए॥ जननि बुलाइ बाह गहिलीन्ही देखहु री मदमाती। इनहीको अपराध लगावति कहा फिरत इतराती॥ सुनिहै लोग मए अबहू करि तुमहिं कहांकी लाज। सूर श्याम मेरो माखनभोगी तुम आवति केकाज॥१४॥ राग केदारो॥ अबही देखे नवल किशोर। घर आवनही तनक भएहैं ऐसे तनके चोर॥ कछु दिन करि दधिमाखनचोरी अब चोरत मन मोर। विवश भई तनु सुधि न सँभारति कहत बात भई भोर॥ यह वाणी कहतही लजानी समुझि भई जिय ओर। सूर श्याम मुख निरखि चली घर आनँद लोचन लोर॥१५ राग नटनारायण॥ नजघर गईं गोपकुमारि। नेकहूँ कहू मन न लागत काम धाम बिसारि॥ मातपितको डर न मानतसु नत नाहिन गारि। हठ करति बिरुझाति तब जिय जननि जानत बारि॥ प्रातही उठि चली सब मिलि यमुन तट सुकुमारि। सूरप्रभु ब्रन देखि इनको नहिंन परत सँभारि॥ १६॥ राग गौरी॥ यमुनातट देखे नँदनदन। मोरमुकुट मकराकृत कुडल पीतवसन मनुचंदन॥ लोचन तृप्त भए दरशनते उरकी तपति बुझानी। प्रेममगन तब भई सुदरी उर गदगद मुख बानी॥ कमल-

नयन तटपर हैं ठाढे सकुचहिं मिलि ब्रजनारी।सूरदास प्रभु अंतर्यामी ब्रजपूरण पगधारी ॥१७॥
रागनट॥वनत
धरैं हम कैसे
भाजत सो कैसकरि पैयो । अंकम भरिभरिलेत सूर प्रभु कालि न एहि पथ ऐवो ॥ राग रामकली
कैसे वने यमुन अस्नान।नंदको सुततीर वैठोवडो चतुर सुजान॥हारतोरे चीरफारे नयनचलेचुरा-इ।कालि धोखे कान्ह मेरी पीठमीजे आइ॥कहति युवती वात सुनि सवथकित भईब्रजनारि। सूर प्रभुको ध्यान धरि मन रविहि वांह पसारि ॥ १८ ॥राग गूजरी ॥ अति तप करति घोप कुमारि। कृष्ण पति हम तुरत पावैं कामआतुर नारि ॥ नैन मूंदति दरशकारण श्रवणशब्द विचारि। भुजा जोरति अंक भरि हरि ध्यान उर अँकवारि ॥ शरद ग्रीपम डरति नाहीं करति तपु तनु गारि। सूर प्रभु सर्वज्ञ स्वामी देखि रीझेभारि॥१९॥ राग धनाश्री॥ ब्रजवनिता रविकोकर जोरैं।शीतभीत नहिं करति छहौं ऋतु त्रिविध काल यमुनाजल खोरैं॥ गौरीपति पूजति तप साधति करति रहति नित नेमू। भोगरहित निशि जागि चतुर्दशि यशुमति सुतके प्रेमू ॥ हमको देहु कृष्ण पति ईश्वर और नहीं मन आन । मनसा वाचा कर्मणा हमरे सूरश्याम को ध्यान॥ ८२० ॥नीके तप कियो तनु गारि। आपु देखत कदमपर चढि मानिलई मुरारि॥ वर्षभरिव्रिननेम संयम श्रमकियो मोहिंकाज । कैसेहु मोहिं भजे कोऊ मोहिं विरदकी लाज॥ धन्य व्रतइन कियो पूरणशीत तपनि निवारि ।काम आतुर भजें मोकोंनवतरुनि ब्रजनारि॥ कृपानाथकृपालुमय तवजानिजनकीपीर। सूरप्रभु अनुमान कीन्हों हरौंइनको चीर॥ राग बिलावल॥वसन हरेसवकदमचढाये। सोरहसहसगोप-कन्यनके अंगअभूपन सहित चोराये॥अतिविस्तार नीपतरु तामें लेले जहांतहांलपटाये।मणिआ-भरन डारडारन प्रति देखत छवि मनहीं अटकाए॥ नीलांवर पाटंवर सारी श्वेत पीत चूनरि अरु-नाए।सूरश्याम युवतिन व्रत पूरन को फलकदमडार फलदाए॥२२॥ राग सूहो॥आपुकदमचढिदेखत श्याम।वसन अभूपन सव हरिलीन्हे विना वसन जल भीतर वाम॥ मूंदत नयन ध्यान धरि हरि-को अंतर्यामी लीन्हों जान । वारवार सवितासों मांगैं हम पावें पति सुंदर श्याम॥ जलते निकसि आइ तट देख्यो भूपण चीर तहां कछु नाहिं।इतउत हेरि चकृत भई सुंदरि सकुचिगईं फिरिजलही-माहिं॥नाभिप्रयंत नीरमें ठाढी थरथर अंग कँपति सुकुमारि।कोलैगयो वसन आभूपण सूर श्याम उर प्रीति विचारि॥२३॥आवहु निकसि घोपकुमारि। कदमपरतेदरश दीन्हों गिरिवरन वनवारि॥ नैन भरि व्रत फलहि देख्यो फरयो है द्रुमडार। व्रत तुम्हारो भयो पूरण कह्यो नंदकुमार ॥ सलिलते सव निकसि आवहु वृथा सहत तुपार । देतहौं किन लेउ मोसों चीर चोली हार॥ वाहँ टेकि विनय करौ मोहि कहत वारंवार। सूर प्रभु कह्यो मेरे आगे आनि करहु शृंगार ॥ २४ ॥ राग रामकली॥ग्वालिनिअपनोचीर ले री॥जलते निकसिनिकसितट ह्वैकरजोरि शीशदे री॥कतहौ शीत सहति ब्रजसुन्दरि व्रत पूरण भे री ।मेरे कहेआइ पहिरौ पट कृशतनु हेमजरे री॥हौं अंतर्यामी जानत सव अति यह पे जकरे री।करिहौं पूरणकाम तुम्हारो शरद रास टेरी॥ संतत सूरस्वभाव हमारो कत भय काम डरी ।कवनेहु भाव भजे कोउ हमको तिन तनु ताप हरे री ॥२५॥ हमारो अंवर देहु मुरारी।लै सव चीर कदम चढि वैठे हम जलमांझ उघारी॥तुम तौकहावतहौ नँदनंदन हम वृपभानदुलारी।तुम्हरो तौ अंवर जवहीं देहौ जलते निकसि होहु सव न्यारी॥तटपर विना वसन क्यों आवें लाज लगतिहै भारी। चोली हार तुमहिंको दीन्हों चीर हमहिं देहु डारी ॥तुम

यही बात अचंभो भापत नांगी आवहु नारी। सूरश्याम कछु छोह करौ जू शीत गई तन मारी ॥ ॥२६॥ राग आसावरी॥ हाहा करति घोपकुमारि। शीततें तन कँपत थरथर बसन देहु मुरारि ॥ मनहिं मन अतिही भयो सुख देखिकै गिरिधारि।जोपुरुष तियअंग देखै कहत दोप है भारि॥ नेक नहिंतुम छोह आवत गई हिमसब मारि।सूरप्रभु अतिही निठुर हो नंदसुत बनवारि॥२७॥ राग बिलावल॥ लाज ओट यह दूरि करौ। जोइ मैं कहौं करौ तुम सोई सकुच बापुरेहि कहा करौ ॥ जलते तीर आइ कर जोरहु मैं देखौं तुम विनय करौ। पूरण मंत्र अब भयो तुम्हारो गुरुजनशंका दूरि करौ ॥ अब अंतर मोसों जिन राखौ बारबार हठ वृथा करौ। सूरश्याम कह चीर देतहौं मो आगे शृंगार करौ ॥२८॥ जलते निकसि तीर सब आवहु। जैसे सवितासों करजोरौ तैसेहि जोरि देखावहु ॥ नव बालाहम तरुन कान्ह तुम कैसे अंगदिखावें। जलहीमें सब बाँह टेकिकै देखहु श्याम रिझावें॥ ऐसे नहिं रीझौं मैं तुमको तटही बाँह उठावहु। सूरदास प्रभु कहत हार चोली वस्तर तब पावहु॥२९ ॥ राग बिलावल॥ हमारो देहु मनोहर चीर। कांपत शीत तनहिं अति व्यापत हिमसम यमुनानीर॥ मानहिंगी उपकार रावरो करो कृपा बलबीर । अतिही दुखित प्राण वपु परसत प्रबलप्रचंड समीर ॥ हम दासी तुम नाथ हमारे बिनवति जलमें ठाढी। मानहुं बिकसि कुमोदिनि शशिसों अधिकप्रीति उर बाढी॥ जोतुमहमें नाथ कै जान्यो यह मांगे हम देहु।जलते निकसिआइ बाहेर ह्वैबसनआपनेलेहु॥ कर धरि शीश गई हरिसन्मुख मनमें करि आनंद।ह्वै कृपालु सूरज प्रभुअंबर दीने परमानंद ८३०॥ राग जैतश्री॥ तरुनी निकसिनिकसि तट आई।पुनिपुनि कहतलेहुपटभूपण युवती श्यामबुलाई॥ जलते निकसि भई सब ठाढी कर अँगऊपर दीन्हे। बसन देहु आभूपन राखहु हाहा पुनिपुनि कीन्हे ॥ ऐसे कहा बतावतिहो मोहिं बाहँउठाय निहारो । करसों कहा अँग उर मूँदो मेरे कहे उघारो ॥ सूरश्याम सोई हम करिहैं जोइजोइ तुमसब कैहो। लैहैं दाउँ कबहुँ हम तुमसों बहुरि कहां तुमजैहो ॥३१॥ रागरामकली॥ ललना तुम ऐसे लाड़ लडाए। लेकर चीर कदमपर बैठेकिहिं ऐसे ढँगलाए॥ हाहा करति कंचुकी मांगति अंबर दिए मन भाए। कीनी प्रीति प्रगट मिलवेकी अँखियन शर्म गँवाए॥ दुख अरु हाँसी सुनहु सखी री कान्ह अचानक आए।सूरदासके प्रभुको मिलनो अब कैसे दुरत दुराए॥३२॥ राग नट॥ सोरहसहस घोपकुमारि । देखि सबकोश्यामरीझरहींभुजा पसारि बोलिलीन्हों कदमके तर इहां आवहु नारि। प्रगट भए तहां सबनिको हरि काम द्वंद्व निवारि ॥ बसन भूपन सबन पहिरे हरप भे सुकुमारि । सूरप्रभु ये गुण भले हैं ऐसे तुम बनवारि ॥ ॥ ३३ ॥ दृढव्रत कियो मेरे हेत । धन्य धनि कहि नंदनंदन जाहु सबै निकेत॥ करौं पूरण काम तुम्हरो शरद रासरमाइ। हरपभई यहसुनत गोपीरहींशीश नवाइ॥ सबनिको अँगपरस कीन्हों व्रतकियो तनुगारि । सूर प्रभु सुख दियो मिलिकै ब्रज चलीं सुकुमारि॥३४॥ राग धरो ॥ व्रत पूरण कियो नंदकुमार। युवतिनके मेटे जंजार॥ जपतप करि अब तनजिनिगारो। तुम घरनी मैं भर्तातुम्हारो॥ अंतरशोच दूरि करिडारहु । मेरो कह्यो सत्य उर धारहु॥ शरद रास तुम आश पुरावहुँ । अंकम भरि सबको उर लावहुं॥ यह सुनिसबमनहरप बढायो । मनमन कह्यो कृष्ण पति पायो ॥ जाहु सबै घर घोपकुमारी। शरदासदैहौं सुखभारी॥ सूरश्यामप्रगटे गिरिधारी॥ आनँद सहित गईं घर नारी ॥३५॥ राग असावरी ॥ शिवशंकर हमको फल दीन्हों।पुहुप पाननाना रस मेवा पटरस अर्पण लैलै कीन्हों॥ पाईं घरीयुवती सबयह कहिधन्यधन्यत्रिपुरारी।तुरतहिफल पूरन हमपायो नंदसुवन गिरिधारी॥ विनय करति सविता तुम सरि को पयअंजलि कर जोरि।

सूर श्याम पति तुमते पायो यह कहि घरहि बहोरै ॥ ३६ ॥ अथ वस्त्रहरनलीला दूसरी॥ राग सही ॥ नँदनंदन वर गिरिवर धारी। देखत रीझीं घोपकुमारी ॥ मोर मुकुट पीतांबर काछे। आवत देखे गाइन पाछे ॥ कोटि इंदु छबि वदन विराजे। निरखि अंग प्रति मन्मथ लाजे ॥ रवि शत छवि कुण्डल नहिं तूले। दशन दमक द्युति दामिनि भूले॥ नैन कमल मृगशावक मोहै। शुकनासा पटतरको को है॥ अधर विंबफल पटतर नाहीं। विद्रुम अरु वंधूक लजाहीं ॥ देखत रीझिरहीं व्रजनारी। देह गेहकी सुरति विसारी॥ यह मनमें अनुमान कियो तब। जप तप संयम प्रेम करौं अव ॥ वारवार सविताहि मनावति। नँदनंदन पति देहु सुनावति ॥ नेम धर्म तप साधन कीजे। शिवसों मांगि कृष्णपति दीजे ॥ वरष दिवसको नेम लियो सब। रुद्रहिसेवहु मन वच क्रम अब॥ दृढविश्वास व्रतहिको कीन्हों। गौरीपति पूजन मन दीन्हों ॥ षटदश सहस जुरीं सुकुमारी। व्रत साधत नीके तनु गारी ॥ प्रात उठैं यमुनाजल खोरैं। शीत उष्ण कहुँ अंग न मोरैं॥ पतिके हेत नेम तप साधैं। शंकरसों यह कहि अवराधैं॥ कमल पत्र मालूर चढावैं। नयन मूँदि यह ध्यानलगावैं॥ हमको पति दीजे गिरिधारी। वडे देव तुम हो त्रिपुरारी॥ और कछू नहिं तुमसों मांगों। कृष्णहेतु यह कहि पालागों। ऐसेहि करत बहुत दिन बीते। प्रभु अंतर्यामी मन चीते ॥ एकदिवस आपुन आए तहँ। नवतरुनी अस्नान करत जहँ॥ वसन धरे जलतीर उतारी। आपुन जल पैठीं सुकुमारी॥ कृष्णहेतु अस्नान करैं जहँ। सबके पाछे आपुन हैं तहँ। मींजत पीठि प्रेम अति वाढी। चकृत भईं युवती सब ठाढी ॥ देखे नँदनंदन गिरिधारी। व्रतफल प्रगट भये वनवारी॥ सकुचि अंग जल पैठि लुकावें। वारवार हरि अंकम लावें ॥ लाज नहीं आवतिहै तुमको। देखत वसन विना सब हमको ॥ हँसत चले तब नंदकुमार। लोगन सुनवति करत पुकार॥ हार चीर ले चले पराई। हांक दियो कहि नंददोहाई॥ डारि वसन भूपन तब भागे। श्याम करन अब ढीठो लागे ॥ भाजे कहां चलोगे मोहन। पाछे आइगई तुव गोहन ॥ तनुकी सुधि सँभार कछु नाहीं। वसन अभूपण पहिरत जाहीं ॥ चीर फटे कंचुकिबँद छूटे। लेन न वनत हारहैं टूटे ॥ प्रेमसहित मुख खीझत जाहीं। झूठहि वारवार पछितहीं ॥ गईं सबै तिय नंदमहर घर। यशुमतिपास गईं सब दरदर॥ देखहु महरि श्यामके ए गुन। जैसे हाल करे सबके उन ॥ चोली चीर हार देखरायो। आपुन भागि इतहिको आयो ॥ यमुनातट कोउ जान न पावै। संग सखा लिये पाछे धावै ॥ तुम सुतको वरजहु नँदरानी। गिरधर करत नहीं भलि वानी ॥ लाज लगति एक वात सुनावति। अंचल छोरि हियो दिखरावति ॥ यह देखत हँसिउठी यशोदा। कछु रिसि कछु मनमें करि मोदा ॥ आइगए तेहि समय कन्हाई। वाहँ गही ले तुरत देखाई ॥ तनक तनक कर तनक अँगुरिया। तुम यौवन भरि नवल बहुरिया॥ जाहु घरहि तुमको मैं चीन्ही। तुम्हरी जाति जानि मैं लीन्हीं॥ तुम चाहति सो ह्यां ना पैहौ। और वहुत व्रजभीतर लैहौ॥ वारवार कहि कहा सुनावति। इन वातन कछु जानि न आवति॥ देखहु री ए भाव कन्हाई। कहां गई तवकी तरुनाई॥ महरितुमहिं कछु दूपन नाहीं। हमको देखिदेखि मुसकाहीं॥ इनके गुण कैसे कोउ जानें। औरै करत और धरि टानें॥ देन उरहनो तुमकों आई। नीकीपहिरावनि हम पाई॥ चलीं सबै युवती घरघरको। मनमें ध्यान करतिहैं हरिको॥ वरपदिवस तप पूरण कीन्हें। नन्दसुवनको तन मनदीन्हें॥ प्रात होत यमुना फिरि आई। प्रथम रहे चढि कदमकन्हाई॥ तीर आइ युवतीभईं ठाढी। उरअंतर हरिसों रति वाढी॥ कह्यो चलोयमुनाजल खोरैं। अंगन आभूपण सब छोरैं। चोलीछोरैं हारउतारैं। करसोंशिथिल

केश निरवारैं ॥ इतउत चितवत लोग निहारें। कह्यो सबन अब चीर उतारैं ॥ बसन अभूषणधरयौ उतारी। जलभीतर सब गईं कुमारी॥माघ शीतको भीत न मानैं। पटऋतुको गुण समकरि जानैं॥ बारबार बूड़ैं जलमाहीं। नेकहु जलकों डरपति नाहीं॥ प्रातहितेयक याम नहाहीं । नेम धर्महीमें दिन जाहीं ॥ इतनो कष्ट करें सुकुमारी। पतिके हेतु गोवर्द्धनधारी॥अतितप करति देखिगोपाला। मनमें कह्यो धन्य व्रजबाला ॥ हरि अंर्यामी सब जानैं। छिनछिनकी यह सेवा मानैं ॥ व्रतफल इनहिं प्रगट देखरावों।बसन हरों लै कदम चढ़ावों ॥ तनु साधन तप कियो कुमारी । भजें मोहिं कामातुर नारी ॥ सोरह सहस गोप सुकुमारी। सबके बसन हरे बनवारी ॥ हरत बसन कछु बार न लागी। जलभीतर युवती सब नाँगी॥ भूषन बसन सबै हरिल्याये। कदमडारजहँ तहँ लटकाये ॥ ऐसो नीपवृक्ष विस्तारा। चीर हार धौं कित कहँ डारा॥ सबै समाने तनु प्रतिडारा यह लीला रचि नंदकुमारा॥ हार चीर मानों तरु फूल्यो। निरखि श्याम आपुन अनुकूल्यो ॥ नेमसहित युवती सब न्हाई। मनमन सविता विनय सुनाई॥ मूंदहिं नैन ध्यान उर धारें।नंद नँदन पति होय हमारे ॥ रवि करि विनय शिवहि मन दीन्हों।हृदयभावअवलोकनकीन्हों॥ त्रिपुरसदन त्रिपुरारि त्रिलोचन । गौरीपति पशुपति अघमोचन॥ गरलअशन अहिभूषन धारी। जटाधरन गंगा शिर प्यारी॥ करति विनय यह मांगति तुमसों। करहुकृपाहँसिकेआपुनसों॥हमपावैं सुत यशुमतिको पति।ईहै देहु करि कृपा देव रति ॥नित्यनेमकरिचलींकुमारी। एकयाम तनकोहिमजारी॥ व्रजललना कह्यो नीर जड़ाई। अतिआतुर ह्वै तटको धाई ॥ जलते निकसि तरुनि सब आई। चीर अभूषन तहां न पाईं॥ सकुचि गईं जलभीतर धाई। देखिहँसततरुचढेकन्हाई॥बारबार युवती पछिताहीं। सबके बसन अभूपन नाहीं॥ऐसो कौन सबै लै भाग्यो। लेतहु ताहि विलम नहिं लाग्यो॥ माघ तुपार युवति अकुलाहीं। ह्यां कहुँ नंदसुवन तौ नाहीं ॥ हम जानी यह बात बनाई। अंबर हरि लैगए कन्हाई ॥ हौ कहुँ श्याम विनय सुनि लीजे। अंबर देहुकृपा करि जीजे ॥ थरथर अंग कँपति सुकुमारी। देखि श्याम नहिं सके सँभारी ॥ एहि अंतर प्रभु वचन सुनाए। व्रतको फल दरशन सब पाए ॥ कहा कहति मोसों व्रजबाला। माघशीत कत होत बिहाला॥ अंबर जहां बताऊं तुमको। तौ तुम कहा देहुगी हमको ॥तन मन अर्पन तुमको कीन्हों। जो कछु हतो सो तुमहीं दीन्हों ॥ और कहा लैहो जू हमसों। हम मांगतहैं अंबर तुमसों॥यह सुनि हँसे दयालु मुरारी। मेरो कह्यो करो सुकुमारी॥जलते निकसि सबै तट आवहु।तबहि भले अंबर तुम पावहु॥भुजा पसारि दीनह्वै भाषहु। दोउकर जोरिजोरितुम राखहु॥ सुनहु श्याम इकबात हमारी। नगनकहूँदेखिये न नारी॥यह मति आपु कहां धौं पाई॥आजु सुनी यह बात नवाँई॥ऐसी साध मनहिंमेंराखहु। यह बाणी मुखते जनि भाषहु॥हम तरुनी तुम तरुण कन्हाई। विनाबसन क्यों देहिंदेखाई ॥ पुरुष जाति तुम यह का जानों। हाहा यह मुखमें जनिआनो। तौ तुम बैठिरहौ जलही सब। बसन अभूपन नहिं चाहति अब॥ तबहिदेहुँ जलबाहिर आवहु। बाहँ उठाइ अंग देखरावहु॥ कत हौ शीत सहति सुकुमारी। सकुच देहु जलहीमें डारी ॥ फरयो कदम व्रतफरनि तुम्हारो। अब कहालज्जा करति हमारो ॥ लेहु न आइ आपुने व्रतको। मैं जानत या व्रतके वतको॥नीके व्रत कीन्हो तनु गारी। व्रत ल्यायो धरिमेंगिरिधारी॥तुम मनकामन पूरण करिहौं। रासरंग रचि रतिसुख भरिहौं यह सुनिके मन हर्ष बढायो। [illegible] कन्हाई।नीरमाप हुहौंगई जडाई ॥ आभूषण सब [illegible] पाइँ तुम्हरेपग

होनदै जाडन मारे ॥ आजुहितेहम गर्सीतुम्हरीगैसेअंग देखानै उघरी ॥ अगदेखायेहिअंबरपैहौ। नातरु वैसेहि दिनम गंवहौ ॥ मैरे करे निकसि सब आवहु। थोरेहिहमसो भलो मनावहु ॥ सुहा चही तरुनी मुसुकानी।यह आपुन धोंगीरगि जानी॥जोइजोइ कहो सोतुमकरमोहीं।आजु तुम्हारे पटतर कोहै ॥ हमरी पति सब तुम्हरे हाथा। तुमहि कहौ ऐसी ब्रजनाथा॥ तपनतुगारि कियोजेहि कारण।सो फल लग्यो नीपतरु डारन॥ आवहु निकसि लेहुपटभूषन। यह लागैहमकोसबदूषन॥ अब अबर वन गसत हमसो। वारवार कहतहौं तुमसो॥ गोपिन मिलि यहबात बिचारी। अवतो टेक परे बनवारी॥ चलहुबजाइ चीर अब लेहु। लाज छाडि इनको सुख देहु ॥जलते निकसि तीरसब आई।बारबार हरि हर्षि बुलाई ॥ बैठिगई तरुणी सकुचानी। देहु श्याम हम अतिहि लजानी ॥ छांडिदेहु यह बात सयानी। वैसेहि करौ कहीजो वानी॥कर कुच अगढांकिभई ठाढी। बदन नवाइ लाज अति बाढी ॥ देहु श्याम अंबर अब डारी। हाहा दासी भई तुम्हारी॥ऐसनहीं बसन तुम पावहु। बांह उठाइ अग देखरावहु॥ कह्योमानि युवतिनकर जोरे। पुनिपुनियुवती करति निहोरे॥ धन्यधन्य कहि श्रीगोपाला। निहचै ब्रत कीन्हो ब्रजबाला॥ आवहु निकट लेहु सब अंबर। चोली हार सुरग पटंबर ॥ निकट गई सुनिके यहबानी। तरुनीनग्नअंगअकुलानी॥ भूषन बसन सबनको दीन्हो। तियके हेतु कृपाहरि कीन्हो ॥ चीर अभूषन पहिरेनारी। कह्यो ताहि एम बनवारी ॥ तब हँसि बोले कृष्ण मुरारी। मैं पति तुमसंगी सब प्यारी॥ तुमहिहेतुयह बपु ब्रज धारयो।तुमकारण बैकुंठ बिसारयो॥ अब ब्रत करितुमतनुहिन गारौ। मै तुमते कहुँहोतन न्यारो ॥ मोहि कारण तुम अति तप साध्यो। मन मनके मोको अवराध्यो ॥ जाहु सदन अब सब ब्रजबाला। अंग परसिमेटे जजाला॥ युवतिन बिदादई गिरिधारी। गई घरनि सब घोषकुमारी॥ वस्त्रहरनलीला प्रभु कीन्हो।ब्रजतरुणी मनको फल दीन्हो॥ यह लीलाश्रवणनिसुनिभावै। औरनि सिखवै आपुन गावै ॥ सूर श्याम जनके सुखदाई। हटताईमें प्रगट कन्हाई ॥३७॥ अथ पनघटकी मल्लार॥राग अडाना ॥हौं गईही यमुनजल लेन माईहोसांवरेमैमोही।सुरगने मरिसौरिकुसुमकी दाम अभिराम कठ कनककी दुलरीझलकतपीताम्बरकीसोही॥ नान्हीनान्ही बूँदनमें ठाढोरी बजावै गावै मलारकी मीठी तान मे तो लालाकी छबि नेकहु न जोही। सूरश्याममुसिकुसकानिछबीरीअँखि-यनमें रही तब न जानो हौं को ही ॥ ३८ ॥ चटकीलो पट लपटानो कटिबसीवटयमुनाके तट नागरनट। मुकुट लटकि अरु भृकुटि मटक देखी कुंडलकीचटक सो अटकिपरी हगनि लपट॥ आछो चरणनि कचन लकुट ठटकीली वनमाल फरटेके हुमडार टेढे ठाढे नँदलालछबिछाई घट घट। सूरदास प्रभुकी बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट आवै मौधिकी लपट ॥ ॥ ३९॥राग सुघराइ ॥ बजावै मुरलीकी तानसुनावैयहिबिधिकान्हरिझावै। नटवरभेषबनायेचटक सो ठाढो रहै यमुनाके तीरनित नवमृग निकटबोलावे ॥ऐसो रोजोजाइयमुनतेजलभरिल्यावै॥ मोरमुकुट कुंडल बनमाला पीताम्बर फहरावै॥ एक अग शोभा अवलोकत लोचनजल भरिआवै॥ सूर श्यामके अगअगप्रति कोटि काम छबिछावै ॥ ४० ॥राग पूरबी॥ पनघटरोकेहिरहतकन्हाई। यमुनाजल कोउ भरन न पावत देखतहीं फिरिजाई ॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई आपुन रहे छुपाई। तब ठाढे जे सखा सगके तिनकोलिये बोलाई॥बैठारे ग्वालनकोद्रुमतरआपुनफिरफिर देखत। बडी बारभई कोउन आई सूरश्याममनलेखत॥४१॥राग देवगंधार॥युवतिइकआवतदेखी श्याम। द्रुमके ओट रहे हरि आपुन यमुनातट गई बाम॥जलहलोरिगागरि भरिनागरि जबही

शीश उठायो। घरको चली जाइ ता पाछे शिरते घट ढरकायो ॥ चतुर ग्वालि कर गह्यो श्याम-को कनक लकुटिया पाई।औरनिसों करि रहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई॥गागरि लै हँसि देत ग्वालिकर रीतो घट नहिं लैहौं। सूर श्याम ह्यां आनि देहु भरि तवहिं लकुट कर देहौं॥ ४२ ॥ राग कल्याण॥लकुट करकी हौं तब देहौं घट मेरो जब भरिदैहो ।कहा भयो जो नंद बडे वृषभानु आन हमहूँ तुमसी हैं समसरि मिलिकरिकै हो ॥ एक गाँव एक ठाँवको वास एक तुम कैहौ क्यों मैं सैहौं। सूर श्याम मैं तुम न डरैहौं जवाबको जवाब दैहौं॥४३॥घट भरिदेहुलकुट तब देहौं। हमहूं बडे महरकी बेटी तुमको नहीं डरैहौं । मेरी कनकलकुटिया दै री मैं भरिदेहौं नीर। विसरिगई सुधि तादिनकी तोहि हरे सबनके चीर॥यह बाणीसु निग्वारि विवश भई तनुकी सुधि विसराइ ।सूरलकुट कर गिरत न जानी श्याम ठगौरी लाइ ॥ ४४ ॥राग हमीर ॥ घट भरि दियो श्याम उठाइ। नेक तनुकी सुधि न ताको चली व्रज समुहाइ ॥ श्यामसुंदर नयनभीतर रहे आनि समाइ । जहां जहां भरि दृष्टि देखौं तहां तहां कन्हाइ॥ उतहिते एक सखी आई कहति कहा भुलाइ । सूर अवहीं हँसत आई चली कहा गँवाइ॥४५॥राग येडँ॥ अवहिं गई जल भरन अकेली अरी हौं श्याम मोहनी घाली री।नँदनंदन मेरी दृष्टि परे आली फिरि चितवन उर शाली री ॥ कहा री कहौं कछु कहत न आवै लगी मरमकी भाली री।सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों विवश भई हौं कासों कहौं आली री॥४६॥राग धनाश्री॥सुनत बातयहसखी अतुरानी।ताहि बाहँगहिघर पहुँचाई आपु चली यमुनाके पानी ॥देखे आइ तहां हरि नाहीं चितवति जहां तहां वितानी। जलभरि ठिठकत चली घरहि तन बारबार हरिको पछितानी॥ ग्वालिनिविकलदेखि प्रभुप्रगटे हर्ष भयो तनतपति बुझानी । सुर श्याम अंकम भरि लीन्ही गोपी अंतरगतिकीजानी॥४७॥ राग आसावरी॥मिलि हरि सुख दियो तेहि बाल।तपति मिटि गई प्रेमछाकी भई रसबेहाल॥मगन ह्वै डग धरति नागरि भवन गई भुलाइ । जल भरन व्रजनारि आवति देखि ताहि बोलाइ ॥ जाति कित है डगर छाँडे कह्यो इतको आइ । सूर प्रभुके रंग राची चितेरही चित लाइ ॥ ४८ ॥ राग धनाश्री ॥ काहू तोहिं ठगोरी लाई । बूझति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं ठगमूरीखाई॥ चौंकिपरी सपने जनु जागी तब वाणी कहि सखिन सुनाई।श्यामवरन एक मिल्यो ढोंटौना तेहि मोको मोहनी लगाई॥ मैं जल भरे इतहिको आवति आनि अचानक अंकम लाई ॥ सूर ग्वारि सखियनके आगे बात कहे सब लाज गँवाई ॥ ४९॥ राग येडी ॥आवत ही यमुना भरेपानी। श्यामवरन काहूको ढोटा निरखि वदन घर गई भुलानी॥ उन मोतन मैं उनतन चितयो तब-हीते उन हाथ विकानी । उर धकधकी टकटकी लागी तनु व्याकुल मुख फुरत न वानी ॥कह्यो मोहन मोहनी तू कहि या व्रजमें नहिं मैं पहिचानी।सूरदास प्रभु मोहन देखत जनु वारिधि जल बूँद हेरानी ॥ ५० ॥ नेक न मनते टरत कन्हाई । यकऐसेहि छकिरही श्यामरस तापर इह इहि बात सुनाई॥वाको सावधान करि पठयो चली आपु जलको अतुराई । मोर मुकुटपीतांबर काछे देख्यो कुँवर नंदको जाई॥ कुंडल झलकत ललित कपोलनि सुंदर नैन विशाल सुहाई। कह्यो सूर प्रभु ए ढँग सीखे ठगत फिरतहो नारि पराई॥ ५१॥कहा ठग्यो तुम्हरो ठगिलीन्हों। क्यों नहिं ठग्यो और कहा ठगिहो औरहिके ठग तुमको चीन्हों॥ कहो नाउँ धरि कहा ठगायो सुनिराखेंयह बात।ठगके लक्षनमोहिंवताबहु कैसे ठगके घात।ठगकेलक्षण हमसोंसुनिएमृदुमुस-कनि मन चोरत।नैनसैन दै चलत सूरप्रभु अंग त्रिभंग करि मोरत॥५२॥राग सूहौ॥अतिहि करत

तुम श्याम अचगरी। काहूकी छीननहो गेंडुरी काहूकी फोरतहो गगरी ॥ भग्नदेहु यमुनाजल हमको दूरि करो बाते ए लंगरी।पेंड चलन न पावे कोऊ रोकिरहत लरिकन ले टगरी।बाटबाटसव देखत आवतयुवतीडरन मरतिहि सिगरी।सूरश्याम तेहिगारी दीनोजोकोउ आवे तुमरी वगरी५३॥ राग रामकली॥नीके देहु नमेरी गिंडुरी।लैजेहो धरि यशुमतिआगे आवहु री सवमिलि एकझुंडरी॥ काहू नही डरात कन्हाई बाट बाट तुम करत अचगरी। यमुनादह गेंडुरी फटकारी फोरी सब शिरकी अस गगरी॥भली करी यह कुँवर कन्हाई आजु मेटिहों तुम्हरी लंगरी। चली सूर यशुमतिके आगे उरहन ले तरुनी व्रज सगरी॥५४॥आनि न देहु ढोटोना ढीठ गेंडुरीपराईतेरे कोऊ कहा करेगो धों लरिहे हमसो भोजाई ॥ मेरे मगकी ओर गईते जल भरिभरि वरते फिर आई। सूर श्याम गेडुरी दीजे न तो यशुमतिसो केहों जाई॥५५॥राग धनाश्री॥आपुन चढे कदम-पर धाई। वदन सकोरिभौंह मोरतहै हांक देत करि नद दोहाई ॥ जाइ कहो मैयाके आगे लेहु सबे मिलि मोहिं बँधाई। मोको जुरि मारन जब आई तब दीनी गेंडुरि फटिकाई॥ ऐसे करि मोको तुम पायो मनो इनकी मे करी चेराई । सूरश्याम ते दिन विसराए जब बांधे तुम ऊखल लाई ॥ ५६ ॥ राग आसावरी॥इहई रहो तो वदो कन्हाई। आपु गई यशुमतिहि सुनावन देगई श्यामहि नद दोहाई ॥ महरि मथति दधि सदन आपने एहि अतर युवती सब आई। चिते रही युवतिनको आवत कहां आवतिहि भीर लगाई ॥ मे जानति तुमको हरि रिझाई ताते सब उरहन ले धाई। सूरदास रसभरी ग्वालिनी ऐसो ढीठ कियो सुत माई॥५७॥राग बिलावल॥सुनहु महरि तेरोलाडिलो अति करतअचगरी।यमुनभरन जलहमगईतहां रोकत डगरी ॥शिरते नीर ढराइदेत फोरी सब गगरी।गेंडुरि दई फटकारिके हरि करतहै लँगरी नितप्रति ऐसेईढगकरें हमसोकहै अगरी।अबवसवासनहीं वनेयहि तुवव्रजनगरी।आपुगयोचढि कदमही चितवतरही सिगरी। सूरश्यामऐसेहीसदा हमसोकरेझगरी॥५८॥ रागरामकली॥सुनको वरजि राखहुमहरि।डगर चलन न देत काहूहि फोरिडारत दहरि॥श्यामके गुण कछु न जानति जाति हमसो गहरि। इहे लालच गाइ दश लिए वसतरे व्रज थहरि ॥ यमुनतट हरि देखे ठाढे डरनिआवे वहरि। सूर श्यामहिं नेकु वरजो करतहै अतिचहरि॥५९॥तुमसो कहति सकुचतिमहरि।श्यामके गुण नही जानतिजाति हमसो गहरि॥ नेकहू नहिंसुनतिश्रवणनिकरतिहैं हम चहरि।जलभरनको-उ नही पावति रोकि राखत डहरि ॥ अति अचगरी करतमोहन पटकि गेंडुरी दहरि।सूरप्रभुको कहा सिखयो रिसनि युवती झहरि॥ ६० ॥राग धनाश्री ॥कहाकरों मोसो कहोतुमहा। जोपाउतो तुमहिं देखाऊँ हाहा करिहोअवहीं॥तुमहूगुण जानतिहोहरिके ऊखल बांधे जबहीं। सटियालेमारन जब लागी तबबरज्यो मोहि सवहीं॥ लरिकाईते करत अचगरी मेजाने गुणतबहीं। सूरदास केसे करिहों घर आवे धों हरि अवहीं ॥ ६१ ॥राग सारंग॥ मेजानतिहो ढीठ कन्हैया।आवन तो घर देहु श्यामकोजेसी करो सजेया।मोसोकरत ढिठाईमोहन मे वाकीहोंमैया। औरन काहूको वह माने कछु सकुचत बल भेया ॥ अब जो जाउ कहां तेहि पावो वासो देइ धरेया।सूर श्यामदिन दिन लगर भयो दूरिकरों लँगरैया॥६२॥ राग गौरी॥युवति वोधि सब घरहि पठाई। यहअपराध मोहिं वकसोरी इहेकहतिहों मेरी माई ॥इतते चलीवरनि सब गोपी उतते आवत कुँवरकन्हाई। बीचहि भेंट भई युवतिन हरि नेनन जोरत गए लजाई ॥ जाहु कान्ह महतारी टेरति बहुत बडाई करि हम आई।सूर श्याममुखनिरखिनिरखिहमि मे केहों जननी समुझाई ॥६३॥रागनट॥ सकुचत

गए घरको श्याम । द्वारहीते निरखि देख्यो जननि लागी काम ॥ इहैवाणी कहति मुखते कहां गयो कन्हाइ । आप ठाढे जननि पाछे सुनतहैचितलाइ॥जलभरन युवतीन पावैंघाटरोकनजाइ। सूर सबके फोरि गागरि श्याम गयो पराइ ॥६४ ॥राग नटनारायण ॥यशुमति यहकहिकैरिस पावति। रोहिणि करति रसोई भीतर कहिकहि तिनहिं सुनावति॥गारी देत बहू बेटिनको वे धाई ह्यां आवति।हाहा करति सबनिसो मैही कैसेहु छूट छडावति॥जाति पांतिमो कहा अचगरी यह कहि सुतहि धिरावति। सूर श्यामको सिखवत हारी मारेहु लाज न आवति॥६५॥रा॰ सारंग॥ तू मोहीको मारन जानति ।उनके चरित कहा कोउ जाने उनहिं कही तू मानति ॥ कदमतीरते मोहिं बुलायो गढि गढि बातें बानति । मटकत गिरी गागरी शिरते अब ऐसी बुधि ठानति ॥ फिरि चितई तू कहां रह्यो कहि मैं नहिं तोको जानति । सूर सुतहि देखतही रिस गइ मुख चूमति उर आनति ॥६६॥ रा॰ गौरी॥ झूठहि सुतहि लगावति खोरि । मैं जानति उनके ढंग नीके बातें मिलवति जोरि॥वे यौवनमदकी सब माती कहाँ मेरो तनक कन्हाई।आपुहि फोरिगागरी शिरते उरहन लीन्हेआई॥तू उनके ढिगजातकिनहि ह्वै पापिनि सब सारि।सूर श्याम अब कह्यो मानि तू है सब ढीठ गुवारि॥६७॥राग मोहन ॥मोहन बाल गोविंदा माई मेरो कहा जाने बोलि ।उरहन लै युवती सब आवति झूठी बतियाँ जोरि ॥ कोऊ कहति गेंडुरि मेरी लीन्ही कोऊ कहति गगरी गयो फोरी।कोऊ चोली हार बतावति कान्हा तेरो भोरी॥अब आवै जो उरहन लैकै तौ पठऊं मुँह मोरी।सूर कहां मेरो तनक कन्हाई आपुन यौवन जोरी॥६८॥राग कान्हरो॥व्रजघरघर यह बात चलावत। यशुमतिको सुत करत अचगरी यमुना जल कोउ भरन न पावत ॥ श्याम बरन नटवर वपु काछे मुरली राग मलार बजावत । कुंडलछवि रविकिरनहुंते द्युति मुकुट इंद्रधनुते शोभावत ॥मानत काहु न करत अचगरी गागरि धरि जल मुईं ढरकावत।सूर श्यामको मातपिता दोउ ऐसे ढंग आपुनहि पढावत॥६९॥राग गौरी॥

करत अचगरी नंदमहरको। सखा लिये यमुनातट बैठो निवहत नहिं सब लोग डहरको ॥ कोउ खीझो कोउकितने बरजो युवतिनके मनध्यान।मनक्रमवचनश्यामसुंदरते और न जानति आन॥ इह लीला सब श्याम करतहैं व्रजयुवतिनके हेत। सूर भजे जेहिभाव कृष्णको ताको सोइफल देत ॥ यमुनाजल कोउ भरन न पावै। आपुन बैठेकदमडारचढि गारी दैदै सबनिबोलावै॥काहूकीगगरी गहि फोरत काहू शिरते नीर ढरावै।काहूसो करि प्रीति मिलतुहै नैनसैन दै चितहि चुरावै॥बरबसही अँकवारि भरत धरि काहूसो अपनो मन लावै।सूर श्याम अति करत अचगरी कैसेहु काहू हाथ न आवै॥७०॥राग धनाश्री॥व्रजगवैंडे कोउ चलन न पावत। ग्वालसखा संगलीने डोलत दैदै हांक जहां तहां धावत॥ काहूकी गेंडुरी फटकारत काहूकी गगरी ढरकावत॥ काहूको गारी दै भाजत काहूको उठि अंकम ल्यावत ॥ काहू नहिं मानत व्रजभीतर नंदमहरको कुँवर कहावत।सूर श्याम नटवर वपु काछे यमुनाकेतट मुरलीबजावत॥७१॥राग टोडी॥गोकुलकेगवैंडेएकसांवरोसोढोटामाईअँखियनके पैंडे पैठिजीकै पैंडेपरचोहै। कल न परत छन गृह भयो सम वन तनमनधनप्राण सर्वस हरचोहै॥ भवन न भावै माइ आंगन न रह्योजाइ करै हाइहाइ देखो जैसे हाल करचोहै।सूरदास प्रभुनीकै गावत मधुर सुर मानहु मुरलीमें पियूषरस भरचो है ॥ ७२ ॥ राग नट ॥ राधा सखियन लई बोलाइ । चलहु यमुना जलहि जैये चली सब सुख पाइ॥ सबनि एकएक कलश लीन्हों तुरत पहुची जाइ । तहां देख्यो श्यामसुंदर कुंवरि मन हरषाइ॥नंदनंदन देखिरीझे चितैरहेचितलाइ।

सूर प्रभुकी प्रिया राधा भरत जल मुसुकाइ ॥७३॥ राग गूजरी ॥ घरहि चली यमुनाजल भरिकै। सखिन बीच नागरी विराजति भई प्रीति उर हरिकै॥ मंदमंद गति चलत अधिक छवि अंचल रह्यो फहरिकै। मोहन मोको मोहनी लगाई संगहि चले डगरिकै॥ बेनीकी छवि कहत न आवै रही नितंबनि ढरिकै। सूर श्याम प्यारीकेवश भए रोमरोम रस भरिकै॥७४॥ राग जयश्री॥ नागरि नागरि जलभरि घर लीन्हे आवै। सखियनबीच भरयोघट शिरपर तापर नैनचलावै॥ डुलति ग्रीवलटकति नकबेसरि मंदमंद गति आवै। भृकुटी धनुष कटाक्ष बाण मनो पुनिपुनि हरिहि लगावै॥ जाको निरखि अनंग अनंगत ताहि अनग बढावै॥ सूर श्याम प्यारीछविनिरखन आपुहि धन्यकहावै॥७५॥ गागरिनागरि लिये पनिघटते चली घरहि आवै। ग्रीवा डोलत लोचन लोलत हरिके चितहि चुरावै॥ ठिठकति चलै मटकि मुहँ मोरै बंकट भौंह चलावै। मनहु कामसेना अंगशोभा अंचल ध्वज फहरावै॥ गति गयंद कुच कुंभ किंकिनी मनहुँ घंट झहनावै। मोतिन हार जलाजल मानो खुमी दंत झलकावै॥ मानहु चंद महावत मुखपर अंकुश बेसरि लावै। रोमावली सूँडि तिरनीलौं नाभि सरोवर आवै॥ पग जेहरि जंजीरनि जकरयो यह उपमा कछु पावै। घटजल छलकि कपोलनि किनुका मानों मदहि चुवावै॥ बेनी डोलति दुहु नितंबपर मानहुं पूंछ हलावै। गज सरदार सूरको स्वामी देखिदेखि सुख पावै॥७६॥ सखियन बीच नागरी आवै। छवि निरखत रीझे नँदनंदन प्यारी मनहिं रिझावै॥ कबहुँक आगे कबहुँक पाछे नानाभाव बतावै। राधा यह अनुमान कियो हरि मेरे चितहि चोरावै॥ आगे जाइ कनकलकुटे लै पंथ सँवारि बतावै। निरखत छाँह जहां प्यारीकी तहँ लै छांह छुवावै॥ छवि निरखततनु वारत अपनो नागर जियहि जनावै। अपने शिर पीतांबर वारत ऐसे रुचि उपजावै॥ ओढि ओढनियां चलत देखावत यहि मिस निकटहि आवै। सूरश्याम ऐसे भावनिसों राधा मनहिं रिझावै॥७७॥ राग सारंग॥ लग लागननहिं पावत श्याम। तब एक भाव कियो कछु ऐसो प्यारीतनु उपजायो काम॥ मिस करि निकट आइ मुख हेरयो पीतांबर डारयो शिर वारि। यह छल करि मन हरयो कन्हाई कामविवश कीन्ही सुकुमारि॥ पुलकि अंग अँगिया दरकानी उर आनँद अंचल फहरात। गागरि ताकि कांकरी मारै उचटि उचटि लागत प्रियगात॥ मोहन मनमोहनी लगाई सखिन संग पहुँची घर जाइ। सूरदास प्रभुसों मन अटक्यो देह गेहकी सुधि बिसराइ॥७८॥ राग नट॥ ग्वालिनि चली यमुन बहोरि। ताहि सब मिलि कहत आवहु कछू कहति निहोरि॥ ज्वाब देति न हमहिं नागरि रही बदनहिं मोरि। ठगिरही मन कहा सोचति कोउ लियो कछु चोरि॥ भुजा धरिकरि कह्यो चलहि न आवे अबहीं खोरि॥ सूर प्रभुके चरित सखियन कहत लोचन ढोरि॥७९॥ राग मलार॥ मेरी गैल न छोडे सांवरो मैं क्यों करि पनिघट जाउँरी। यहि सकुचनि डरपतिरहौं मोहिं धरै नकोऊनाउँरी॥ जित देखौं तित दीखै री रसिया नंदकुमार री। इतउतनैन चुराइकै मोहिं पलकन करत जुहार री॥ लकुट लिये आगे चलै हो पथ सँवारत जाइ री। मोहि निहोरी लाइकै वह फिरि चितवै मुसुकाइ री॥ सो कंचुकि अंचरा उचै मेरो हियरा ताकि ललचाइ री। यमुनजल भरि गागरी लै जब शिर चलत उचाइ री॥ गागरि मारै कांकरी सो लागे मेरे गात री। गैलमाँझ ठाढो रहै मोहि खुनटे आवत जात री॥ हौं सकुचनि बोलौं नहीं लोकलाजकी शंक री। मोतन छै बेहारि चलै वह छवि भरतुहै अंक री॥ निकट आइ मुख निरखिकै सकुचै बहुरि निहारि री। अब ढग ओढी ओढनी पीतांबर मोपै वारि री॥ जब कहु लग लागै नहीं तब याको जिव अकुलाइ री। तब हठि मेरी छाँहसो

वह राखे छाँह छुआइरी ॥को जाने किन होतहे री घरगुरुजनकी शोर री।मेरो जिव गांठी बंध्यो पीतांबरकी छोर री॥अबलौंसकुच अटकाही अब प्रगट करौं अनुरागरी। हिलिमिलिके संग खेलिहौं मानि आपनो भाग री॥घर घर ब्रजबासी सबै कोउ किन करै पुकारि री ।गुप्तप्रीति परगट करौं कुलकी कानि निवारि री ॥जबलगि मन मिल्यो नहीं तब नची चौपके नाच री॥सूर श्याम संगही रहौं सब करौं मनोरथ सांच री॥८०॥राग कान्हरो॥मोहन बिन मन ना रहे कहा कहों माई री । कोटि भांति करि करि रही समुझाई री ॥ लोकलाज कौन काज मनमें नहिं आई री । हृदयते टरति नाहिन ऐसी मोहनी लाई री ॥ सुंदर वर त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री । सूरदास प्रभु बिन मोसों नेक रह्यो ना जाई री ॥ ८१ ॥ राग सूही ॥ नँदको नंदन सांवरो मेरो चित्तचोरे जाइ री। रूप अनूप दिखायइकै वह औचक गयो आइ री ॥ मोरमुकुट श्रवण कुंडल ओढनी फहराइ री । अधरनिपर मुरली धरे मधुर तान वजाइ री ॥ चंदन खौरि किए नटवर कटि काछनी बनाइ री । सूरदास प्रभु बैठे यमुना तट पूरण ब्रह्म कन्हाइ री ॥८२॥ राग गौरी ॥ परयो तबते ठग मूरि ठगौरी। देख्यो मैं यमुनातट बैठो ढोटा यशुमतिको री॥ अतिसांवरो भरयो सो साँचैकीन्हे चंदनखौरी।मन्मथकोटिकोटि गहि वारौंओढे पीतपिछौरी॥दुलरी कंठ नयन रतनारे मोमन चितै हरयो री । बिकट भ्रुकुटिकी ओरकोरते मन्मथबाण धरयो री॥दसकन दरान कनककुंडल मुख मुरली गावत गौरी । श्रवणन सुनत देहगति भूली भई बिकल मति बौरी ॥ नहिं कल परत बिना दरशनते नैननिलगी ठगौरी। सूर श्याम चित टरत न नेकहु निशि दिन रहत लगी री॥८३॥ राग कल्याण ॥ युवति इक यमुनाजलको आइ। निरखत अंग अंगप्रति शोभारीझे कुँवरकन्हाइ॥गोरे बरन चूनरी सारी अलकैं मुख बगराइ । करनि चरिचरी चुरी विराजति कर कंकन झलकाइ ॥ सहज शृंगार उठत यौवन तन बिधिसों हाथ बनाइ। सूरश्याम आये ढिग आपुन घट भरि चलि झमकाइ ॥८४॥राग गौरी॥ ग्वारि घट शिर धरि चली झमकाइ ।श्याम अचानक लट गही कहि अति कहा चली अतुराइ॥मोहनकर त्रिय मुखकी अलकैं यह उपमा अधिकाइ । मनहु सुधा शशि राहु चोरावत धरयो ताहि हरिआइ॥कुच परसो अंकम भरिलीनी दुहुँ मन हरष बढाइ । सूर श्याम मानो अमृतघटनिको देखतहे कर लाइ ॥८५॥छाँडि देहु मेरी लट मोहन । कुच परसत पुनिपुनि सकुचत नहिं कत आई तजि गोहन ॥ युवती आनि देखिहैं कोऊ कहत बंक भरि भौंहन । बार बार कह बीर दोहाई तुम मानत नहिं सोंहन ॥ यतनेहीको सौंह दिवावत मैं आयो मुख जोहन। सूरश्याम नागरि वश कीन्हो बिवश चली धरिकोहन ॥८६॥राग धनाश्री॥चली भवन मन हरि हरिलीन्हों।पग द्वै जातिठिठकि फिरि हेरति जिय यह कहति कहा हरि कीन्हों॥ मारग गई भूलिजेहि आई आवतकै नहिं पावत चीन्हों।रिसकरि खीझि सुभगलट झटकति श्याम भुजनि छटकाय सु दीन्हों ॥ प्रेमसिंधुमें मगनभई त्रिय हरिके रंग भई अतिलीन्हों।सूरदास प्रभुसों चित अटक्यो आवतनहिं इत उतहि पतीन्हों ॥८७॥ राग गौरी ॥ घर गुरुजनकी सुधि जब आई। तब मारग सूझ्यो नैननि कछु जिय अपनेतियगई लजाई॥ पहुंची आय सदन ज्योंत्यों करि नेक नहीं चित टरत कन्हाई । सखी संगकी बूझन लागीं यमुनातट अतिझिर लगाई॥ औरै दशा भई कछु तेरी कहति नही हमसों समुझाई। कहा कहौं कहत न बनिआवै सूर श्याम मोहनी लगाई ॥ ८८ ॥ राग सोरठ ॥ कैसे जल भरन मैं जाउँ । गैल मेरी परयो सखिरी कान्ह जाको नाउँ ॥ घरते निकसत बनत नाहीं लोकलाज लजाउँ । तन इहां मन जाइ अटक्यो

नदनंदन ठाउ ॥ जो रहौं घर बैठिके तौ रह्यो नाहिंन जाइ । सीख तैसी देहु तुमही करौं कहा उपाइ ॥ जात बाहिर बनत नाहीं घरन नेकु सुहाइ । मोहनी मोहन लगाई कहति सखिन सुनाइ ॥ लाज अरु मरजाद जौलौं कर निहौं यह सोच । जाहि बिन तन प्राण छांडे कौन बुधि यह पोच ॥ मनहिं यह परतीति आई दूरि करिहौं दोच ॥ सूर प्रभु हिलिमिलि रहौंगी लाज डारौं मोच ॥८९॥ राग गौरी ॥ सुनहु सखी री या यमुनातट । हौं जल भरति अकेली पनघट गही श्याम मेरी लट ॥ लै गागरि सिर मारग उगरी इन पहिरे पीरे पट । देखत रूप अधिक रुचि उपजी काछ बनी किंकिनि रट ॥ फल एक ग्वालिनिके ज्यों रन जीते फिरि महाभट ॥ सूर लख्यो गोपाल आलिंगन सफल किये कचनघट ॥९०॥ राग आसावरी ॥ कहा कहौं सखि कहत बनै नहिं नंदनँदन मेरो मन जो हर्यो । मात पिता पति बंधु सकुच तजि मगन भई नहिं सिंधु तर्यो ॥ अरुन अधर युग नयन रुचिर रुचि मदन मुदित मन संग लर्यो । देखि दशा कुलकानि लाज मन सहज सुभाइ रह्यो सु बर्यो ॥ आनँदकंद चंद मुख निशि दिन अवलोकन यह अमल पर्यो । सूरदास प्रभुसों मेरी गति जनु लुब्धक कर मीन तर्यो ॥९१॥ रागनट ॥ मेरो हरि नागरसों मन मानो । मन मोह्यो सुंदर व्रजनायक भली भई सब जग जानो ॥ बिसरी देह गेह सुधि बिसरी बिसरि गई कुलकी कानो । सूर आन पूजै या मनकी तब भावै भोजन पानो ॥९२॥ राग काफी ॥ मोही सांवरे सजनी मोहिं गृह बन कछु न सुहाइ । यमुन भरन जल मैं गई तहां श्याम मोहनी लाइ ॥ ओढे पीरी पामरी हो पहिरे लाल निचोल । भौंह नाइ कटीलिया मोहिं मोल लई बिन मोल ॥ मोर मुकुट सिर बिराजई हो अधर धरे सुरबेन । हरिकी मूरति माधुरी नाते लागि रहे दोउ नैन ॥ मदनमूर्तिके वश भये अब भलो बुरो कहु कोइ । सूरदास प्रभुको मिलि करिके मन एकै तन दोइ ॥९३॥ राग रामकली ॥ मेरे जिय ऐसी आनि बनी । बिन गोपाल और नहिं जानो सुनि सोसों सजनी ॥ कहा कांच संग्रहके कीनै हरि जो अमोल मनी । विष सुमेर कछु काज न आवै अमृत एक कनी ॥ मनवचक्रम मोहिं और न भावै अब मेरे श्याम धनी । सूरदास स्वामीके कारण तजी जाति अपनी ॥९४॥ राग गूजरी ॥ अब दृढकरि धरी यह बानि । कहा कीजे सो नफा जेहि होय जियकी हानि ॥ लोकलज्जा कांच किरिचक श्याम कंचनखानि । कौन लीजे कौन तजिए सखि तुमहिं कहो जानि ॥ मोहिं तो नहिं और सूझत बिना मृदु मुसकानि । रंग कांपे होत न्यारो हरद चूनो सानि ॥ इहै करिहौं और तजिहौं परी ऐसी बानि । सूर प्रभु पतिव्रत राखे मेटिकै कुलकानि ॥ ९५ ॥ अध्याय ॥ २३ ॥ लीला यज्ञपत्नी ॥ राग बिलावल ॥ एक दिन हरि हलधर संग ग्वालन । गये बन भीतर गोधन चारन ॥ सकल ग्वाल मिलि हरिपै आए । भूख लगी कहि बचन सुनाए ॥ हरि कह्यो यज्ञ करत तहां ब्राह्मण । जाहु उनहि ढिग भोजन मांगन ॥ ग्वाल तुरत तिनके ढिग आए । हरि हलधरके बचन सुनाए ॥ भोजन देहु भए वे भूखे । यह सुनिके ह्वैगए वे रूखे ॥ यज्ञहेतु हम करी रसोई । ग्वालन पहले देहिं न सोई ॥ ग्वाल सकल हरिपै चलि आए । हरिसो तिनके बचन सुनाए ॥ हरि हल धरसों हँसि कह्यो बानी । अविगतिकी गति उन नहिं जानी ॥ तब ग्वालनसों कह्यो बुझाई । तियन पास तुम माँगहु जाई ॥ उनके तन दृढभक्ति हमारी । मानि लेहिं वे बात तुम्हारी ॥ ग्वाल बाल तिरियनपै आए ॥ हाथ जोरिकै शीश नवाये ॥ हरि भोजन माँग्यो है तुमसों । आज्ञा दे पठये हैं सो उनसों ॥ तिन धनिभाग्य आपनो जान्यो । जीवनजन्म सफल करि मान्यो ॥ भोजन बहुप्रकार तिन्ह दीन्हो । काहू अपने सिर धरि लीन्हों । ग्वालन सँग तुरत वे धाईं । मन अपने मैं हर्ष बढाईं ॥

काहू पुरुष निवारयो आइ। कहां जात हरी अतुराइ॥तिनको कह्यो न कीन्हो कान। तनु तजि चली विरह अकुलान॥धन्यधन्य वे प्रेमसभागे। मिली जाइसबहिनतेआगे॥तब हरितिनसोंकहि समुझाई। सुनो त्रिया तुम काहे आई॥नारी पतिव्रत मानैजोई। चारि पदारथ पावे सोई॥ त्रियन कह्यो जग झूठि सगाई। हम तो हैं तुमरे शरनाई॥ प्रभु पतिव्रत तुम करो सदाई। तुमको इहै धर्म सुखदाई॥ प्रभुआज्ञाले घरको आई। पुरुष करत तिनकी जु बडाई॥ धनिधनि तुम हरिदरशन पायो। हम पढि गुनिकै सब बिसरायो॥ ब्रह्मादिक खोजत नित जिनको। साक्षात तुम देख्यो तिनको॥ वे हैं सकल जगतके स्वामी। औरं सबनके अंतर्यामी॥ अब हम चरणशरणही आए। तब हरि उनके दोष क्षमाए॥ ग्वालन मिलि हरि भोजन कीन्हों।भाव तियनको धरिहरि लीन्हो॥ भक्ति भावसों जो हरि ध्यावे। सो नरनारि अभयपद पावे॥ इह लीला सुनि गावै जोई। हरिकी भक्ति सूर तेहि होई॥९६॥ यज्ञपत्नीवचन॥ राग बिलावल॥ जानदे जानदे पियहीं गोपाल बोलाई। औरे प्रीति प्राणके लालच नाहिंन परत दुराई॥राखौ रोकिबाँधि दृढबंधन केसेहुं करो जु त्रास। वह हठ अब कैसे छूटतहै जबलगि है उर सास॥सांची कहौं कर्म मन वच करि अपने मनकी बात। देह छाँडि मिलिहौं अबहीं छिन तोहिं कैसी कुशलात॥ औसर गए बहुरि सुनि सूरज कहा कीजेगी देह। विछुरति सहति विरहके शूलनि झूठे सबे सनेह॥९७॥ राग सारंग॥देखनदै पियमदन-गोपालहि।हाहाहो पियपा लागतहौं जाइसुनों बन बेनु रसालहि॥ लकुटलिये काहेकोत्रासतपतिविन मति विरहिनि बेहालहि। अतिआतुर आरोपिअतिक दुखतोहिं कहा डरति न यमकालहि॥मनतौ पिय पहिलेही पहुँच्यो प्राण तहाँ चाहत चित चालहि। कहि तू अपने स्वारथसुखको रोकिकहा करिहै खल खालहि॥लेहुसँभारिसुखेह देहकी को राखै इतनें जंजालहि।सूर सकल सखियनते आगे अबहीं मूढ मिलतिनँदलालहि॥९८॥राग सारंग॥देखनदे वृंदावनचंदहि।हाहा कंतमानि बिनती यह कुल अभिमान छांडिमतिमंदहि॥कहि क्योंभूलि धरतजिय औरे जानत नहिं पावन नँदनँदहि। दरशन पाइ आइहौं अबहीं करन सकल तेरे दुखद्वंदहि॥ शठसमुझैयहुसमुझत नाहिंन खोलत नहीं कपटके फंदहि। देह छोडि प्राणनि भई प्रापति सूर सु प्रभु आनँदनिधिकंदहि॥९९॥राग कल्याण॥रति बाढी गोपालसों। हाहा हरिलौं जानदेहु प्रभु पद परसतिहौं भालसों॥ संगकी सखी श्यामसन्मुख भई मोहिं परी पशुपालसों। परवश देह नेह अंतरगति क्यों मिलौं नयनविशालसों॥ शठ हठ करि तूही पछितैहै इहै भेट तोहिं बालसों। सूरदास गोपी तनु तजिकै तनमय भइ नँद-लालसों॥१००॥राग सारंग॥ पिय जनि रोकहु अब जानदे।हौं हरिविरह जरे जाचतिहौं इतनी बात मोहिं दान दे॥ बैन सुनों विहरत बन देखौं इह सुख हृदय सिरान दे। पुनि जो रुचै सोई तू की-जै साँच कहतिहौं आन दे॥ जो कछु कपट किए याचतिहौं सुनहि कथा हित कान दे। मन क्रम वचन सूर अपनो प्रण राखौंगी तन मन प्रान दे॥१॥राग बिलावल॥ हरि देखनकी साध भरी। जान न दई श्याम सुंदरपै सुनु सोई तैं पोच करी। कुलअभिमान हटकि हठि राख्यो तैं जियमें कछु और धरी। यज्ञपुरुष तजि करत यज्ञविधि तामें कहि कछु चाँड सरी॥ कहँ लगि समुझाऊँ सूरज सुनि जाति मिलनकी औधि टरी।लेहु सँभारि देहपिय अपनी बिन प्राणन सब सौजधरी॥२॥ हरिहि मिलत काहेको फेरी।देखों बदन जाइ श्रीपतिको जानदेहु हौं हेहौं चेरी॥पालागौं छाँडहु अब अंचल बारबार बिनती करौं तेरी।तिरछो करम भयो पूरबको पीतम भयो पाँइकीबेरी।इहले देह मारु शिर अपने जासों कहत कंत तुम मेरी।सूरदास सो गई अगमनै सब सखियनसों हरि-

मुख हेरी॥३॥ जानँदे श्यामसुंदरहीं आज्ञ । सुनि हो कंत लोकलाजनते बिगरतुहै सब काज ॥ रारो रोकि पाँइ बंधन के रोको अरुजलनाज्ञ।हौं तो तुरते मिलौंगी हरिको तृपवबैठेगाज्ञ॥ चितवत हुती झरोखे ठाढी किये मिलनको साज्ञ। सूरदास तनु त्यागि छिनकमें तज्यो कंतको राज्ञ ॥४॥ अध्याय ॥२४॥ गोवर्धनपूजा॥ बिलावल ॥ नंदमहरसों कहति यशोदा सुरपतिकी पूजा बिसराई।जाकी कृपा बसत ब्रज भीतर जाकी दीनी भई बडाई ॥ जाकी कृपा दूध दधि पूरन सहस मथानी मथति सदाई। जाकी कृपा अन्न धन मेरे जाकी कृपा नवो निधि आई॥ जिनकी कृपा पुत्र भयो मेरे कुशलरहो बलरामकन्हाई। सूर नंदसों कहति यशोदा दिन आए अब करह चडाई॥५॥राग गौरी॥एई हैं कुलदेव हमारे। काहूनहीं और हम जानति गोधनहैं ब्रजके रखवारे॥दीपमालिकाके दिन पाचेक गोपन कहो बुलाई । बलिसामग्री करें चँडाई अब-हीं कहो सुनाई॥ लई बुलाइ महरि महरानी सुनतहि आईं धाई। नंदघरनि तब कहति सखिनसों कत ही रही भुलाई॥ भूली कहा कहो सो हमसों कहति कहा डरपाई। सूरदास सुरपतिकी पूजा तुम सबही बिसराई॥६॥ चौंकि परीं सब गोकुल नारि। भली कही सबही सुधि भूली तुमहि करी सुधि भारि ॥ कह्यो महरिसों करो चडाई हम अपने घर जाति । तुमहूं करो भोगसामग्री कुलदेवता अमाति ॥ यशुमति कह्यो अकेली हौं मैं तुमहु संग मुहि दीजो ।सूर हमति ब्रजनारि महरिसों ए हैं साँचु पतीजो ॥७॥राग कल्याण॥कही मोहि भली कीनी महरि। राजकाजहि रहत डोलत लोभहीकी लहरि॥क्षमा कीजे मोहि हो प्रभु तुमहि गयो भुलाइ। ग्वालसों कहि तुरत पठयो ल्याउ महरि बुलाइ॥नंद कह्यो उपनंद ब्रजके अरु महर वृषभान।अबहिं जाइबुलाइआनउ करत दिन अनुमान॥आइगए दिन अब हि नेरे करत मनइह ज्ञान।सूर नंद विनयकरत करजोरि सुरपति ध्यान॥ ८ ॥राग बिलावल॥ नंदमहर उपनंद बुलाए।आदर करि बैठनको दीनो महरमहर मिलि शीश नवाए।मनहीमन सब सोच करतहैं कंसनृपति कछु मांगिपठाए।राजअंशधन जो कछु उनको बिनुमाँगे सो हम देआए ॥ बूझन महर बात नँदमहरहि कौन काज हमसबनि बुलाए। सूर नंद यह कहि गोपनसों सुरपतिपूजाके दिन आए॥ ९॥ हँसत गोप कहि नंदमहरसों भली भई यह बात सुनाई। हमहिं सबनि तुम बोलिपठाए अपने जिय सब गए डराई॥ काहेको डरपे हम बोलत हसत कहत बातें नंदराई।बडो सनेह कियो हम तुमको ब्रजबासी हम तुम सब भाई॥ करो विचार इन्द्रपूजाको जो चाहो सो लेहु मँगाई।बरषदिवसको दिवस हमारो घरघरनेरज करौ चँडाई ॥ अन्नकूट विधि करत लोग सब नेमसहित करिकरि पकवान्ह।महरि जोरि कर बिनय इन्द्रसों सुर अमरकरि कीजे कान्ह॥१०॥गावत मंगलचार महरघर । यशुमति भोजन करति चडाई नेवज करिकरि धरति श्यामडर ॥ देखे रहो न छुवै कन्हैया कह जाने वह देवकाज पर। और नही कुलदेव हमारे के गोधन केवे सुरपतिवर ॥करति विनय करजोरि यशोदा कान्हहि कृपा करौ करुणाकर। और देव तुमसरि कोउ नाहीं सूर करौ सेवा चरणनतर॥११॥राग सूहौ॥ बाजति नदअवास बधाई बैठे खेलत द्वार आपने सातबरषके कुवर कन्हाई ॥ बैठे नंदसहित वृषभानुहि और गोप बैठे सब आई।थापे देत घरनकेद्वारे गावति मंगल नारि सुहाई॥पूजा करत इन्द्रकी जानी आए श्याम तहां अतुराई।बूझत बारबार हरि नंदहि कौनदेवकी करतपुजाई॥ इन्द्र बडे कुलदेव हमारे उनते सब यह होत बडाई।सूर श्याम तुमरे हितकारण यह पूजा हमकरत सदाई॥१२॥राग आसावरी॥नंद कह्यो घर जाहु कन्हाई। ऐसेमेंतुम जैहो जिनि कहुँ अहो महरि

सुत लेहु बुलाई ॥ सोइ रहौ हमरे पलिकापर कहति महरि हरिसों समुझाई । वरपदिवसको महामहोत्सव को आवे को कौन सुनाई ॥ और महरढिग श्याम बैठिके कीनो एक विचार बनाई । सपने आजु मिल्यो मोकों इक वडो पुरुप अवतार जनाई ॥ कहनलग्यो मोसों ए बातें पूजतहौ तुम काहि मनाई । गिरि गोवर्धन देवनको मणि,सेवहु ताको भोग चढाई॥भोजन करे सबनिके आगे कहत श्याम यह मन उपजाई । सूरदास गोपन आगे यह लीला कहिकहि प्रगट सुनाई॥१३॥ राग धनाश्री सुनी ग्वाल यह कहत कन्हाई । सुरपतिकी पूजाको मेटत गोवर्धनकी करत वडाई ॥ फैलिगई यह बात घरनि घर हरि कह जानें देवपुजाई । हलधर कहत सुनौ ब्रजवासी यह महिमा तुम काहु न पाई ॥कोउकोउ कहत करौ अब ऐसोइ कोउ यह कहत कहै को भाई । सूरदास कोउ सुनि सुख पावत कोउ वरजत सुरपतिहि डराई ॥ १४ ॥ मेरो कह्यो सत्य के जानों । जो चाहौ ब्रजकी कुशलाई तौ गोवर्धन मानौ॥दूध दहीं तुम कितनो लेहौ गोसुत बढें अनेक । कहा पूजि सुरपतिको पावे छांडिदेहु यह टेक ॥ मुँहमांगे फल जो तुम पावहु तौ तुम मानहु मोहि । सूरदास प्रभु कहत ग्वालसों सत्य वचन कहिदोहि॥१५ ॥छांडि-देहु सुरपतिकी पूजा।कान्ह कह्यो गिरि गोवर्धनते और देव नहिं दूजा॥गोपनि सत्य मानि यह लीनी वडे देव गिरिराजा । मोहिं छांडि पर्वत पूजतहैं गर्व कियो सुरराजा ॥ पर्वतसहित धोइ ब्रज डारौं देउँ समुद्र वहाई । मेरी वलि औरहि लै पर्वत इनकी करौं सजाई ॥ राखौं नहीं इन्हें भूतलमें गोकुल देउँ बुडाई । सूरदास प्रभु जाके रक्षक संगहि संग रहाई॥ १६ ॥राग विलावल॥ गोकुलको कुल देवता श्रीगिरिधर लाल । कमलनयन घन सॉवरो वपु वाहु विशाल ॥ हलधर ठाढ कहतहैं हरिजूके ख्याल। करता हरता आपुही आपुहि प्रतिपाल ॥ वेगि करौ मेरो कह्यो पकवान रसाल । वह मघवा वलि लेतुहै नित करिकरि गाल॥ गिरि गोवर्धन पूजिये जीवन गोपाल । जाके दीने वाढहीं गैया गण जाल ॥ सव मिलि भोजन करतहैं जहँ तहँ प-शुपाल । सूर सुरहि डरपत रहे जिय जिय प्रति वाल ॥ १७ ॥राग सारंग ॥ तात गोवर्धन पूजहु जाय । मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन वहुत वनाय ॥ यहि पर्वत तृण ललित मनोहर सदा चरें सुखगाय। कान्ह कहो सोइ कीजिये जैसेमववाजाइरिसाय॥ भरिभरि शकटचलेगिरि-सन्मुख अपनेअपने चाय।सूरदास प्रभुअपवशभोगीधरिस्वरूपहरिराय ॥ १८॥राग विलावल॥ब्रज घरघर अति होत कोलाहल। ग्वाल फिरत उमँगे जहँ तहँ सब अतिआनंद भरे जु उमाहल ॥ मिलत परस्पर अंकम दैदै शकटनि भोजन साजत । दधि लवनी मधुमाट धरत लै राम श्याम सँग राजत ॥ मंदिरते लै धरत अजिरपर पटरसकी जिवनार । डालन भरि अरु कलश नए भरि जोरतहैं परकार ॥ सहस शकट मिष्टान्न अन्न वहु नंदमहर घरहीको । सूर चले सब लै घरघरते संग सुवन नँदजीको ॥ राग नट ॥ अतिआनँद ब्रजवासी लोग । भांतिभांति पकवान शकट भरि लैलै चले छहौं रस भोग ॥तीनि लोकको ठाकुर संगहि तासों कहत सखा हमयोग।आवत जात डगर नहिं पावत गोवर्धनपूजा संयोग॥ कोउ पहुँचे कोउ रेंगत मगमें कोउ घरमैंते निकसे नाहिं । कोउ पहुँचाइ शकट घर आवत कोउ धरतभोजन लेजाहिं॥मारगमें कोउनितत आवत कोउ गावत अपने रसमाहिं। सूर श्यामको यशुमति टेरति वहुत भीर है हरि न भुलाहिं॥ १९ ॥ राग कान्हरो ॥ शकट साजि सब ग्वाल चले गिरिगोवर्धन पूजाकेकाज । घरघरते मिष्टान्न चले लै भाँति भाँति वहु वाजन वाज॥अतिआनंदभरे गुण गावत उमडे फिरत अहीर। पैंडो नहिं पावत

मुख हेरी॥३॥ जानदे श्यामसुंदरलौं आज्ञ। सुनि हौ कंत लोकलाजनते बिगरतुहै सब काज्ञ॥ राखो रोकि पाँइ बंधन के रोको अरुजलनाजुरहौ तो तुरते मिलौंगी हरिको वृषवरैठेगाज्ञ॥ चितवत हुती झरोखे ठाढी किये मिलनको साज्ञ। सुन्दाम तनु त्यागि छिनकमें तज्यो कंसको राज्ञ॥४॥ अध्याय ॥२४॥गोवर्द्धनपूजाविचारबल ॥ नंदमहरसों कहति यशोदा सुरपतिकी पूजा बिसराई। जाकी कृपा बसत व्रज भीतर जाकी दीनी भई बडाई॥ जाकी कृपा दूध दधि पूरन सहस मथानी मथति सदाई। जाकी कृपा अन्न धन मेरे जाकी कृपा नवो निधि आई॥ जिनकी कृपा पुत्र भयो मेरे कुशलरहो बलरामकन्हाई। सूर नंदसों कहति यशोदा दिन आए अब करहु चडाई॥५॥राग गौरी॥एई हैं कुलदेव हमारे। काहूनही और हम जानति गोधनहैं व्रजके रखवारे॥दीपमालिकाते दिन पाँचेक गोपन कहो बुलाई। बलिसामग्री करें चँडाई अब-हीं कहो सुनाई॥ लई बुलाइ महरि महरानी सुनतहि आई धाई। नंदघरनि तब कहति सखिनसों कत हो रही भुलाई॥ भूली कहा कहो सो हमसों कहति कहा डरपाई। सूरदास सुरपतिकी पूजा तुम सबही बिसराई॥६॥ चौंकि परी सब गोकुल नारि। भली कही सबही सुधि भूली तुमहिं करी सुधि भारि॥ कह्यो महरिसों करो चँडाई हम अपने घर जाति। तुमहू करो भोगसामग्री कुलदेवता अमाति॥ यशुमति कह्यो अकेली हौं मैं तुमहु संग मुहि दीजो। सूर हँसति व्रजनारि महरिसो ए है साचु पतीजो॥७॥राग कल्याण॥कही मोहि भली कीनी महरि। राजकाजहि रहत डोलत लोभहीकी लहरि॥क्षमा कीजे मोहि हौं प्रभु तुमहि गयो भुलाइ। ग्वालसो कहि तुरत पठयो ल्याउ महरि बुलाइ॥नंद कह्यो उपनंद व्रजके अरु महर वृषभान।अबहि जाइबुलाइआनउ करत दिन अनुमान॥आइगए दिन अबहि नेरे करत मनइह ज्ञान।सूर नंद विनय करत कर जोरि सुरपति ध्यान॥ ८ ॥राग बिलावल॥ नंदमहर उपनद बुलाए।आदर करि बैठनको दीनो महरमहर मिलि शीश नवाए॥मनहीमन सब सोच करतहैं कंसनृपति कछु माँगिपठाए।राजअंशधन जो कछु उनको बिनुमाँगे सो हम देआए॥ बूझत महर बात नंदमहरहि कौन काज हमसबनि बुलाए। सूर नंद यह कहि गोपनसों सुरपतिपूजाके दिन आए॥ ९॥ हसत गोप कहि नंदमहरसों भली भई यह बात सुनाई। हमहिं सबनि तुम बोलिपठाए अपने जिय सब गए डराई॥ काहेको डरपे हम बोलत हसत कहत बातें नँदराई।बडो सनेह कियो हम तुमको व्रजबासी हम तुम सब भाई॥ करो बिचार इन्द्रपूजाको जो चाहो सो लेहु मँगाई।बरपदिवसको दिवस हमारो घरघरनेवज करौं चँडाई॥ अन्नकूट बिधि करत लोग सब नेमसहित करिकरि पकवान्ह।महरि जोरि कर विनय इन्द्रसों सूर अमरकरि कीजे कान्ह॥१०॥गावत मंगलचार महरघर। यशुमति भोजन करति चडाई नेवज करिकरि धरति श्यामडर॥ देखे रहौ न छुवै कन्हैया कहं जानें वह देवकाज पर। और नहीं कुलदेव हमारे के गोधन के वे सुरपतिवर॥करति विनय करजोरि यशोदा कान्हहि कृपा करौ करुणाकर। और देव तुमसरि कोउ नाही सूर करौ सेवा चरणनतर॥११॥राग सूही॥ बाजति नदअवास बधाई बैठे खेलत द्वार आपने सातबरषके कुवर कन्हाई॥ बैठे नदसहित वृषभानुहि और गोप बैठे सब आई।थापे देत घरनकेद्वारे गावति मंगल नारि सुहाई।पूजा करत इन्द्रकी जानी आए श्याम तहां अतुराई।बूझत बारबार हरि नंदहि कौनदेवकी करतपुजाई॥ इन्द्र बडे कुलदेव हमारे उनते सब यह होत बडाई।सूर श्याम तुमरे हितकारण यह पूजा हमकरत सदाई॥१२॥राग आसावरी॥नंद कह्यो घर जाहु कन्हाई। ऐसेमेंतुम जैहो जिनि कहुं अहो महरि

सुत लेहु बुलाई ॥ सोइ रहो हमरे पलिकापर कहति महरि हरिसों समुझाई । वरषदिवसको महामहोत्सव को आवै को कौन सुनाई ॥ और महरढिग श्याम बैठिके कीनो एक विचार बनाई । सपने आज्ञ मिल्यो मोकों इक बडो पुरुष अवतार जनाई ॥ कहनलग्यो मोसों ए बातैं पूजतहौ तुम काहि मनाई । गिरि गोवर्धन देवनको मणि,सेवहु ताको भोग चढाई॥भोजन करै सबनिके आगे कहत श्याम यह मन उपजाई । सूरदास गोपन आगे यह लीला कहिकहि प्रगट सुनाई॥ १३॥ राग धनाश्री सुनी ग्वाल यह कहत कन्हाई । सुरपतिकी पूजाको मेटत गोवर्धनकी करत बडाई ॥ फैलिगई यह बात घरनि घर हरि कह जानै देवपुजाई । हलधर कहत सुनो ब्रजवासी यह महिमा तुम काहु न पाई ॥कोउकोउ कहत करौ अब ऐसोइ कोउ यह कहत कहै को भाई । सूरदास कोउ सुनि सुख पावत कोउ बरजत सुरपतिहि डराई ॥ १४ ॥ मेरो कह्यो सत्य कै जानो । जो चाहो ब्रजकी कुशलाई तौ गोवर्धन मानो॥दूध दहीं तुम कितनो लेहो गोसुत बढैं अनेक । कहा पूजि सुरपतिको पावै छांडिदेहु यह टेक ॥ मुँहमांगे फल जो तुम पावहु तौ तुम मानहु मोहि । सूरदास प्रभु कहत ग्वालसों सत्य वचन कहिदोहि॥ १५ ॥छांडि-देहु सुरपतिकी पूजा॥कान्ह कह्यो गिरि गोवर्धनते और देव नहिं दूजा॥गोपनि सत्य मानि यह लीनी वडे देव गिरिराजा । मोहिं छांडि पर्वत पूजतहैं गर्व कियो सुरराजा ॥ पर्वतसहित धोइ ब्रज डारौं देउँ समुद्र बहाई । मेरी बलि औरहि लै पर्वत इनकी करौं सजाई ॥ राखौं नहीं इन्हें भूतलमें गोकुल देउँ बुडाई । सूरदास प्रभु जाके रक्षक संगहि संग रहाई॥ १६ ॥राग बिलावल॥ गोकुलको कुल देवता श्रीगिरिधर लाल । कमलनयन घन सँावरो वपु बाहु विशाल ॥ हलधर ठाढ कहतहैं हरिजूके ख्याल। करता हरता आपुही आपुहि प्रतिपाल ॥ वेगि करो मेरो कह्यो पकवान रसाल । वह मघवा बलि लेतुहै नित करिकरि गाल॥ गिरि गोवर्धन पूजिये जीवन गोपाल। जाके दीने बाढहीं गैया गण जाल ॥ सब मिलि भोजन करतहैं जहँ तहँ प-शुपाल। सूर सुरहि डरपत रहै जिय जिय प्रति वाल ॥ १७ ॥राग सारंग ॥ तात गोवर्धन पूजहु जाय । मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय ॥ यहि पर्वत तृण ललित मनोहर सदा चरैं सुखगाय। कान्ह कहो सोइ कीजिये जेसेमघवाजाइरिसाय॥ भरिभरि शकटचलेगिरि-सन्मुख अपनेअपने चाय।सूरदास प्रभुअपवशभोगीधरिस्वरूपहरिराय ॥ १८॥राग बिलावल॥ब्रज घरघर अति होत कोलाहल। ग्वाल फिरत उमँग जहँ तहँ सब अति आनंद भरे जु उमाहल ॥ मिलत परस्पर अंकम दैदै शकटनि भोजन साजत । दधि लवनी मधु माट धरत लै राम श्याम सँग राजत ॥ मंदिरते लै धरत अजिरपर षटरसकी जिवनार । डालन भरि अरु कलश नए भरि जोरतहैं परकार ॥ सहस शकट मिष्टान्न अन्न बहु नंदमहर घरहीको । सूर चले सब लै घरघरते संग सुवन नँदजीको ॥ राग नट ॥ अतिआनँद ब्रजबासी लोग । भांतिभांति पकवान शकट भरि लैलै चले छहों रस भोग ॥ तीनि लोकको ठाकुर संगहि तासों कहत सखा हमयोग। आवत जात डगर नहिं पावत गोवर्धनपूजा संयोग॥ कोउ पहुँचे कोउ रेंगत मगमें कोउ घरमेंते निकसे नाहिं । कोउ पहुँचाइ शकट घर आवत कोउ धरतभोजन लेजाहिं॥ मारगमें कोउनिर्तत आवत कोउ गावत अपने रसमाहिं। सूर श्यामको यशुमति टेरति बहुत भीर है हरि न भुलाहिं॥ १९ ॥ राग कान्हरो ॥ शकट साजि सब ग्वाल चले गिरिगोवर्धन पूजाकेकाज । घरघरते मिष्टान्न चले लै भाँति भाँति बहु बाजन बाज॥अतिआनंदभरे गुण गावत उमडे फिरत अहीर। पैंडो नहिं पावत

तह कोऊ व्रजवासिनकी भीर ॥ एक चले आवत व्रजतनको एक व्रजते वनकाज । सूरदास तह श्याम सवनिको देखियतहै गिरराज॥१२०॥राग नटनारायण॥चली घरघरनिते व्रजनारि।मनौ इंद्रवधून पगति शोभा लागति भारि॥पहिरि सारि सुरंग पँचरँग छदश करि शृंगारि। वढे इच्छा सवनिके मन श्यामरूप निहारि ॥ ललिता चंद्रावली सहित राधा सँग कीरति महतारि । चले पूजा करन गिरिकी सूर सँग नर नारि ॥ २१ ॥ वहुत जुरे व्रजवासी लोग । सुरपतिपूजा मेटि गोवर्धन कीनो यह सयोग॥योजन वीस एक अरु अगरो डेरा इहि अनुमान । व्रजवासी नर नारि अंत नहिं मानो सिंधुसमान॥ इक आवत व्रजते इतहीको इक इतते व्रज जात।नंद लिए तव ग्वाल आइ गए तहां प्रात॥२२॥राग आसावरी॥ नंद करत गिरिकी पूजाविधि । भोजन सव लै धरे छहों रस कान्हसग अष्टौ सिधि॥लेलेआवत ग्वाल घरनित भोजन वहुतप्रकार।व्यंजन देखि वहुत सुख पावत तुरत करौ जिवनार ॥ जो हरि कहत करत सोई विधि पूजाकी वहु भांति ॥ माखनदधि पय तक धरत लै जोरिजोरि सव पांति॥को वरनै नानाविधि व्यंजन जे वनए नँदराइ। सूर श्यामकी लीला अद्भुत वरणै नहिं सुरचारि॥२४॥राग नटनारायण॥विप्र वुलाइ लिये नँदराइ। प्रथमअरंभ यज्ञको कीनो उठे वेदध्वनि गाइ ॥ गोवर्धनशिर तिलक वंदियो मेटि इंद्रठकुराइ। अन्नकूट ऐसो रचि राख्यो गिरिकी उपमा पाइ॥भाँतिभांति व्यंजन परसाए कापै वरण्यो जाइ। सूर श्यामको कहत ग्वाल गिरि जवहिं कहौ बुझाइ॥२५॥राग बिलावल॥इन्द्र सोचकरि मनहिं आपने चकृत पुनिपुनि वुद्धि विचारत।कहा करत देखौं इनको मै कौन विलछु लगन पुनि मारत॥अव ए करें आपने मन सुख मोको वनै सम्हारे । तवलौं रहौं पूजि निवरे ये वचिहैंवैर हमारे ॥इतनो सुख इनके कर रहे दुख है वहुत अगाध । सूरदास सुरपतिकी वाणी झूठी मनकी साध ॥२५॥ राग गौरी॥ चढि विमान सुरगण नभ देखत।करत श्याम नृतन यह फिरिफिरि गिरि गोवर्धन पेखत ॥थकित भए सव जहँ तह मुनिजन ठौरठौर नर नारि । चितरहे सव श्यामवदन तन गति मति सुरति विसारि॥पूजा मेटि इन्द्रकीपूजत गिरिगोवर्धनराज। सूरदास सुरपतिगर्वितभयो मै देवन गिरराज॥२६॥राग कदारो ॥कहत कान्ह नदवावा आवहु। भोजन परसि धरे सव आगे प्रेमसहित गिरिराज मनावहु ॥ औरनंद उपनंद वुलाए कह्यो सवनिसों भोग लगावहु। सपने मे देखो यहि मूरति यहे रूप धरि ध्यान मनावहु ॥इकमनइकचित करि अर्पन करो प्रगट देव तुम दरशन पावहु।सूर श्याम कहि प्रगट सवनिसों अपने कर लैलै जु जिमावहु॥ २७॥ विनती करत सकल अहीर। शकट भरिभरि ग्वाल लैलै गिरपर डारत क्षीर॥चल्यौ वहि चहुँपासते पय सुरसरी जल धारि। वसन भूषन लै चढाए भीर अति नर नारि। मृदि लोचन भोग अर्प्यो प्रेमसों रुचि भारि॥सवनि देखी प्रगट मूरति सहसभुजापसारि॥रुचिसहित गिरि सवनिआगे करनिलैलैखाइ। नंदसुतमहिमा अगोचर सूर क्यो कहै गाइ ॥ २८ ॥ राग नट ॥गिरिवर श्यामकी अनुहारि।करत भोजन अति अधिकई भुजा सहस पसारि॥नंदको कर गहे ठाढे यहै गिरिको रूप।सखी ललिता राधिकासो कहति देखि स्वरूप॥यहै कुंडल यहै माला यहै पीत पिछौरि । शिखरशोभा श्यामकी छवि श्यामछवि गिरि जोरि॥नारि वदरौला रही वृषभानुवर रसवारि। तहाते उहि भोग अर्पेउ लियो भुजा पसारि ॥ राधिका छवि देखि भूली श्याम निरखी ताहि।सूरप्रभुवश भई प्यारी कोर लोचन चाहि॥२९॥धनाश्री ॥देखहु री हरि भोजन खात ॥ सहसभुजाधरि उत जेंवतहै इतहिकहत गोपनिसो वात॥ ललिता कहत देखिहो राधा जो तेरे मनवात समाइ।धन्यधन्य सव गोकुलवासी

संग रहत त्रिभुवनके राई ॥ जेंवत देखि नंद सुख पायो अति आनँद गोकुल नर नारी। सूरदास स्वामी सुखसागर गुण आगर नागर देतारी॥२०॥राग गौरी॥इह लीला सब करत कन्हाई।उत जेंवत गिरि गोवर्धनसंग इत राधासों प्रीति लगाई ॥ इतगोपनसों कहत जिमावहु उत आपुहि जेंवत मन लाई। आगे धरे छवीं रस व्यंजन बदरौलाको लियो मँगाई॥ अगर विमान चढे सुख देखत जय ध्वनि करि सुमननि,बरपाई। सूर श्याम सबके सुखदाता भक्तहेतु अवतार सदाई ॥२१॥ गोपनिसों यह कहत कन्हाई। जो मैं कहत रह्यो भयो सोई सपनंतरकी प्रगट बताई ॥ जो मांग्यो चाहौ सो मांगौ पावहुगे जो जा मन आई। कहत नंद सब तुमही दीनों मांगतहौं हरिकी कुशलाई ॥ करजोरे नंद आगे ठाढे गोवर्धनकी करत वडाई।ऐसे देव कहूं नहिं देखे सहसभुजा धरि खात मिठाई॥ सदा तुम्हारी सेवा करिहौं और देव नहिं करौं पुजाई। सूर श्यामको नीके राखहु कहत महर ये हलधर भाई ॥२२॥ अपने अपने टोल कहत ब्रजबासी आई। भावभक्ति लै चली सुरपतिको आसी आई॥ शरदकाल ऋतु जानि दीपमालिका बनाई। गोपनके उनमाद फिरत उनमदे कन्हाई ॥ घर घर थापे दीजिये घर घर मंगलचार। सात वर्पको सांवरो खेलत नंददुआर ॥१॥२॥बैठि नंद उपनंद बोलि वृपभानु पठाए। सुरपति पूजा देखि जानि तहँ गोविंद आए॥ वारवार हाहा करहिं कहि बाबा यह बात। घरघर भोजन होतहै कौन देवकी जात ॥ ॥ ३ ॥ श्याम तुम्हारी कुशल जानि एक मंत्र उपैहौं। पटरस भोजन साजि भोग सुरपतिको देहौं ॥ नंद कह्यो चुचुकारिके जाइ दमोदर सोइ। वर्पदिवसको दिवस है महामहोत्सव होइ॥ ४॥ हरिबोले सब गोप मंत्र बहुरच्यो फिरि कीनो।एक पुरुप मोहि आइ आज्ञु सपनो निशि दीनो॥ सब देवनको देवता गिरिगोवर्धन राज्ञु। ताहि भोग्रु किनि दीजिये सुरपतिको कह काज्ञु॥ ५ ॥ बाढें गोसुत गाइ दूध दधिको कहालेखो।यह परचा विद्मान नैन अपने किन देखो॥तौ देखत बलि खाइगो मुँहमाँगे फलदेइ।गोपकुशलजो चाहिये गिरिगोवर्धन सेइ॥६॥दिवस दिवारी प्रातही सब मिलि पूजन जाइ।नंद प्रतीति न मानहू तुम देखत बलि खाइ॥गोपन करचो विचार शकट प्रति सबही साजे [illegible]। एक धाटते उवटिचल एकनदी सुरभीर। एक न [illegible] चले एक घरको फिरि जाहीं। गावत गुण गोपाल ग्वाल उमँग न समाहीं ॥८॥ गोपनको सागर भयो गिरि भयो मंदरचार। रत्न भई सब गोपिका श्याम बिलोवनहार॥ ब्रज चौरासी कोश परे गोपनके डेरा। लावें चौवन कोश आज्ञु ब्रजवासिन घेरा ॥ ९ ॥ सबहीके मन साँवलो देखौ सबनि मझारि।कौतुक देखन देवता आए लोक बिसारि॥लीने विप्र बुलाइ यज्ञ आरंभन कीनो। सुरपतिपूजा मेटि भोग गोवर्धन दीनो ॥ १० ॥ प्रथम दूध अन्हवाइ बहुरि गंगाजल डारे।बडो देवता जानि कान्हको मतो बिचारे ॥जैसे बने गिरिराजजू तैसो उनको कोट। मगन भए पूजा करैं नरनारी बडछोट॥११॥ सहस भुजा उर धरे करे भोजन अधिकाई । नख शिखलौं पर्यंत मनो दूसरो कन्हाई ॥ राधासोंललिताकहै तेरे हियन समाइ।गहे अंगुरियाताकीढोंटा भोजनखाइ॥१२॥पीतरुमाल्यो श्वेत कंठ मोतिनकी माला। भूपण भुजा अनूप झलमलति नैन बिशाला ॥ श्यामकि शोभा गिरि बन्यो गिरिकी शोभा श्याम। जैसे पर्वत धातुको सँग भैया बलराम ॥ १३ ॥ जैसिय कनकपुरी ज्ञु दिव्य रतननिसों छाई। बलि दीनी परभात छाँह पूरब चलि आई॥चहूंओर चक्रा धरे चंदहि पटतर सोइ। ठौर ठौर वेदीरची बहुविधि पूजा होइ॥ १४॥ जहांतहां दधिधरचो

कहाँ कहा उज्ज्वलताई । उदधि शिखर है रह्यो भातमें देह छपाई ॥ बदरौला वृषभानुके एक विलोवन हारि । ताकी बलि वहि देवता लीन्ही भुजा पसारि ॥ १९ ॥ लै सब भोजन अरपि अरपि गोपन कर जोरे । अगणित कीने स्वाद दास बरणे कछु थोरे ॥ यहि विधि पूजा पूजिकै गोविंद पूंछो जाइ । कान्ह कह्यो हँसि सूरसों लीला सरस बनाइ ॥ १६ ॥ राग गौरी ॥ श्याम कहत पूजा गिरिमानी । जो तुम भक्तिभावसों अर्प्यो देवराज सब जानी ॥ तुम देखत भोजन सब कीनो अब तुम मोहिं पत्यानें । बडो देव गिरिराज गोवर्धन इनें रहो तुम माने ॥ सेवा भली करी तुम मेरी देव कही यह बानी । सूर नंद मुखचूमत हरिको यह पूजा तुम ठानी ॥ २३ ॥ और कछू मांगो नँद हमसों । जो मांगो सो देउँ तुरतही यहै कहत गोपनसों ॥ बल मोहन दोऊ सुत तेरे कुशल सदा ये रहिहैं । इनको कह्यो करत तुम रहियो जब जोई ये कहिहैं ॥ सेवा बहुत करी तुम मेरी अब तुमसब घर जाहू । भोग प्रसाद लेहु तुम मेरो गोप सबै मिलि खाहू ॥ सपनो मँहाँ कह्यो श्यामसों करहु हमारी पूजा । सुरपति कौन बापुरो मोते और देव नहिं दूजा ॥ इंद्र आइ बरषै जो ब्रजपर तुम जिनि जाहु डराई । सुनहु सूर सुन कान्ह तुम्हारो कहिहैं मोहि सुनाई ॥ २४ ॥ राग सारंग ॥ भली करी पूजा तुम मेरी । बहुत भाव करि भोजन अर्प्यो इह सब मानिलई मैं तेरी ॥ सहसभुजा धरि भोजन कीनों तुम देखत विदमान । मोहिं जानतहै कुँवर कन्हैया यही नहीं कोउ आन ॥ पूजासबकीमानि मैं लीनी जाहु घरनिब्रजलोग । सूर श्याम अपने कर लीने बांटत जूठनि भोग ॥ २५ ॥ राग बिलावल ॥ विनती करत नंद कर जोरे पूजा कह हम जानें नाथ । हम हैं जीव सदा मायाके दरश दियो हम किए सनाथ ॥ महापतितमैंतुम पावन प्रभु शरण तुम्हारीआयो तात । तुमसे देव [illegible] अरु तुमहिं भोक्ता हरता करता तुमहीं [illegible] ॥ २६ ॥ यह पूजा मोहिं कान्ह बताई । भूल्योफिरत द्वार देवनिके त्रिभुवनपति तु[illegible] गोवर्धन आपुहि कृपा करी स्वप्नंतर श्यामहिं दरश दियो तुम आई । ऐसे प्रभु कृपालु करुणा[illegible]दन तन अति करी बडाई ॥ गिरिपाँयन लै हरिको पारत हलधरको पांयन लै नाई । सूर श्या[illegible]तभयो तुम्हारे इनको कृपा करी गिरिराई ॥ २७ ॥ ग्वाल कहत धनिधन्यकन्हैया । बडो देवता प्रग[illegible] आगे यह कहिकहि सब लेत बलैया ॥ धन्यधन्य गिरिराजनके मणि तुमसम आन न दूजा । तु[illegible]सपने कछु नाहिं हमारे को जानें तुमपूजा ॥ गोप सबै मिलि कहत श्यामसों जो कछु कह्यो सो की[illegible] देव श्याम कहिकहियह वाणी देव मानि सुखलीनो ॥ २८ ॥ राग गौडमलार ॥ गोपनँदउपनंद वृषभा[illegible] विनय सब करत गिरिराजसों जोरिकर गए तनुपाप तुव दरश पाए ॥ देवता बडो तुम प्रगट द[illegible] दियो प्रकट भोजनकियोसबनिदेख्यो । प्रकट वाणीकही राजगिरितुमसहीऔरनहिंतिहुँभुवन[illegible] पेख्यो ॥ हँसत हरिमनहिमन तकत गिरिराजतन देवपरसनभए करोकाजा । सूरप्रभु प्रगट लील[illegible] सबनिसों चले घरघरनि अपने समाजा ॥ २९ ॥ देखि थकित गण गंधर्व सुरमुनि । धन्यनंदको सुकृत पुरातन धन्य कही कहि जैजैजे धुनि ॥ धन्यधन्य गोवर्धन पर्वत करत प्रशंसा सुरमुनि पुनिपुनि । आपुहिखात कहतहै गिरिकोयहमहिमादेखी न कहूंसुनि ॥ यहैकहत अपनेलोकनि गएधनिब्रजवासी वशकीनों उनि । सूर श्यामधनिधनि ब्रजविहरत धन्यधन्य सबकहतहैंगुनिगुनि ॥ ४० ॥ राग नटनारायणी चले ब्रजघरनिको नरनारि । इंद्रकी पूजामिटाई तिलक गिरिको सारि ॥ पुलकअँग न समातउरमें महरमहरि समाज । अब बडे हम देव पाए गिरिगोवर्धनराज ॥ इन हितेब्रज चैन रहिहै मांगि भोजन खात । यहै घेरा चलत ब्रजजन सबनिमुख यह बात ॥ सबै सदनन आइ पहुँचे करत केलिविलास ।

सूर प्रभु यह करीलीला इंद्र रिस परकास॥४१॥ अध्याय ॥ २५॥ इंद्रोपचार राग सारंग॥ ब्रजके वासिन मो विसरायो। भली करी वलि मेरी जो कछु सो लै सब पर्वतहि जिमायो॥मोसों गर्व कियो लघु प्राणी ना जानिये कहा मन आयो।त्रिदशकोटि अमरनको नायक जानिबूझि इन मोहिं भुलायो॥ अब गोपन भूतल नहिं राखौं मेरी बलि मोको न चढायो।सुनहु सूर मेरे मारत धौं पर्वत कैसे होत सहायो ॥ ४२ ॥ राग सोरठ ॥प्रथमहि देउँ गिरिहि वहाइ ।वज्रघातनि करौं चूरन देउँ धरणि मिलाइ॥ मेरी इन महिमा न जानी प्रगट देउँ दिखाय ।जलवरपि ब्रज धोइ डारौं लोग देउँ वहाइ॥ खात खेलत रहे नीके करि उपाधि बनाइ॥ वरप दिवस मोहिं देत पूजा दई सोउ मिटाइ ॥ रिस सहित सुरराज लीन्हें प्रबल मेघ बुलाइ ।सूर सुरपति कहत पुनिपुनि परौ ब्रजपर धाइ ॥ ४३ ॥ राग मेघमलार ॥सुनत मेघवर्तक साजि सैन लै आए । जलवर्त वारिवर्त पवनवर्त वज्रवर्त आगिवर्तक जलद संग ल्याए ॥ घहरात तररात गररात हहरात झहरात पररात माथ नाए। कौन ऐसो काज बोले हम सुरराज प्रलयके साज हमको बुलाए॥ वरपदिन संयोग देत मोको भोग छुद्रमति ब्रज-लोग गर्व कीनो । मोहिं गए विसराइ पूज्यो गिरिवर जाइ ब्रजपर धाइ आयसु ये दीनो ॥ कितक ब्रजके लोग रिस करत किहिं योग गिरि लियो भोग फल तुरत पैहैं।सूर सुरपति सुन्यो वयो जैसो लुन्यो प्रभु कहा गुन्यो गिरिसहित वैहैं ॥४४ राग मलार॥ विनतीसुनहुदेवमघवापति। कितिक वात गोकुल ब्रजवासी वारवार रिस करत जाहि अति ॥ आपुन बैठि देखियो कौतुक वहुतै आयसु दीनो । छिनमें वरपि प्रलयजल पाटौं खोजु रहै नहिं चीनो ॥ महाप्रलय हमरेजल वरपे गगन रहे भरि छाइ। अक्षय वृक्ष वट वढतु निरंतर कहा ब्रज गोकुल गाइ ॥ चले मेघ माथे करि धरिकैं मनमें कोध वढाइ । उमडत चले इंद्रके पायक सूर गगन रहे छाइ ॥ ४५ ॥ राग गौडमलार॥ मेघदल प्रबल ब्रजलोग देखैं। चकित जहँ तहँ भए निरखि बादर नए ग्वाल गोपाल डरि गगनपेखैं॥ऐसे बादर सजल करतअति महावल चलत घहरात करि अंधकाला । चकृत भए नंद सब महर चकृत भए चकृत नरनारि हरि करत ख्याला॥घटा घनघोर घहरात अररात दररात सररात ब्रजलोग डरपैं।तडित आघात तररात उतपात सुनि नरनारि सकुचितनु प्राणअरपैं ॥ कहा चाहत होन भई न कबहूं जौन कबहुं आँगनभौन विकलडोलैं। मेटिपूजाइंद्र नंदसुतगोविंदसूरप्रभु [illegible] चढिधावहिं।प्रथमबहाइदेउँ गोवर्धनता पाछेब्रज खोदि [illegible] ।फल उनकहँतुरत देखावहिं।इंद्रहि पेलिकरी गिरिपूजा सलिल वरपि ब्रजनाउँ मिटावहिं॥ वलसमेत निशिवासरवरपहुँ गोकुलवोरिपतालपठावहिं।सूरदास सुरपति आज्ञा यह भूलत कतहूं रहन न पावहिं॥४७॥ रागमेघमलार॥ बादर घुमडि उमडि आए ब्रजपर वर्पत कारे धूमरे घटा अतिही जल । चपला अति चमचमाति ब्रजजन सब डर डरातटेरत शिशु पिता मात ब्रज गलवल ॥गर्जत ध्वनि प्रलयकाल गोकुल भयो अंधकार चकृत भए ग्वाल वाल घहरत नभ करत चहल।पूजामेटि गोपाल इंद्र करत इहै हाल सूरश्याम राखहु अब गिरिवर वल॥४८॥राग गौडमलार गिरिपर वरपनआए बादर।मेघवर्त जलवर्तसैन सजि आये लैलै आदर॥ सलिल अखंड धार धर टूटत कियो इंद्र मन सादर । मेघ परस्पर यहै कहत हैं धोइ करहु गिरि खादर॥देखि देखि डरपत ब्रजबासी अतिहि भए मनकादर । यहै कहत ब्रज कौन उबारै सुरपति किए निरादर ॥सूर श्याम देखे गिरि अपने मेघनि कीनो दादर । देव आपनो नहीं सँभारत करत इंद्रसों ठादर ॥४९॥ राग मलार॥गए वितताइ ब्रज नरनारि।धरत संतत धाम बासन नाहिं

सुरति सम्हारि॥ पूजि आए गिरि गोवर्धन देति पुरुषनि गारि। आपनो कुलदेव सुरपतिधरयो ताहि बिसारि॥ दियो फल यह गिरि गोवर्धन लेहु गोद पसारि।सूर कौन सम्हारिलैहै चढयो इंद्र प्रचारि॥९९०॥ राग सोरठ ॥व्रजके लोग फिरत बितनाने।गैयनि लै बन ग्वाल गए ते धाए आवत व्रजहि पराने॥कोउ चितवत नभतन चकृत ह्वै कोउ गिरिपरत धरनि अकुलाने। कोउ लै ओट रहत वृक्षनकी अंधधुंध दिशि बिदिशि भुलाने॥ कोउ पहुँचे जैसे तैसे गृह कोउ ढूंढत गृह नहिं पहिचाने। सूरदास गोवर्धन पूजा कीनेकर फल लेहु बिहाने॥९१॥ राग नट॥ तरपन नभ डरपत व्रज लोग। सुरपतिकी पूजा बिसराई लै दीनो पर्वत को भोग॥ नंदसुवन यह बुधि उपजाई कौन देव कह्यो पर्वतयोग।सूरदास गिरि बडो देवता प्रगट होइ ऐसेसंयोग॥९२॥ व्रजनरनारि नंद यशुमतिसों कहत श्याम ए काज करे। कुलदेवता हमारे सुरपति तिनकोसब मिलिमेटिधरे॥ इंद्रहि मेटि गोवर्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरे। संतत फिरत जहाँ तहँ बासन लरिकनु लैलै गोद भरे॥ को करिलेइ सहाइ हमारो प्रलयकालके मेघ अरे। सूरदास प्रभु कहत नारि नर क्यों सुरपति पूजा बिसरे॥९३॥ राग बिलावल॥ राखिलेहु गोकुलके नायक।भीजत ग्वाल गाइ गोसुत सब विषम बूंद लागत जनु सायक॥बरषत मुसलधार सेनापति महामेघ मघवाके पायक। तुम बिनु ऐसो कौन नंदसुत यह दुख दुसह मिटावन लायक॥ अघमरदन बकबदन-बिदारन वकी बिनाशन सब सुखदायक। सूरदास प्रभु ताकी यह गति जाके तुमसे सदा सहायक॥ ९४॥ अध्याय॥ २६॥ तथा॥२७॥ मलार॥शरण राखिलेहो नंदताता। घटा आई गरजि युवति गई मन लरजि बीज्जु चमकति तरजि डरत गाता॥ और कोऊ नहीं तुम त्रिभुवन धनी बिकल ह्वैके कही तुमहिं नाता। सूर प्रभु सुनि हँसत प्रीति उरमें बसत इंद्रको कसत हरि जगतधाता॥९५॥रागबिलावल॥राखिलेहु अब नंदकिशोर।तुम जु इंद्रकी मेटी पूजा बरषतहै अति जोर॥ व्रजवासी तुम तन चितवतहैं ज्यों करि चंद्र चकोर।जनि जिय डरौ नैन जनि मूँदौ धरिहौं नखकी कोर॥ करि अभिमान इंद्रझरिलायो करत घटा घनघोर।सूरश्याम कहि तुमको राखौं बूँद न आवे छोर॥९६॥रागमलार॥माधवजू कांपत डरत हियो। दामिनि चाप बूंद सायक मनौ द्वै योधा लै संग॥ह्वै गयो सरस समीर दुहुं दिशि धनुष धुजा बहु रंग। शोभित सुभट प्रचारि पैज करि भिरत न मोरत अंग॥कहत तुम्हार कियो नंदनंदन सुरपतिको व्रत भंग। बरषत प्रलयमेघ धर अंबर डरपत गोकुल गाउँ। समरथ नाथ शरण हौं तुम बिनु और कौनपै जाउँ॥ जो तुम अनल व्यालमुख राखे श्रीपति सुहृद सुभाइ। हमरे तो तुमही चिंतामणि सब बिधि दाइ उपाइ॥ जनि डर करहु सबै मिलि आवहु या पर्वतकी छाहैं। वर्षनमें गोपाल बुलाए अभय किये दै बाहे॥ एक हाथ गोवर्धन राख्यो सात दिवस बलवीर। सूरदास प्रभु व्रजवासिनके ए हरता सब पीर॥९७॥ माधव मेघ घेरि कितो आए। घरको गाय बहोरो मोहन ग्वालन टेर सुनाए॥ कारी घटा सधूम देखियति अति गति पवन चलायो। चारौं दिशा चितै किन देखो दामिनि कौंधा लायो॥ अति घन श्याम सुदेश सूर प्रभु कर गहि शैल उठायो॥ राखे सुखी सकलव्रजवासी इंद्रको कोप नशायो॥ ९८॥ आजु व्रज महाघटा घन घेरो। अब व्रज राखि कान्ह इहि औसर सब चितवत मुख तेरो॥ कोटि छयानवे मेघबुलाएआनि कियोव्रजडेरो। मुसलधार टूटे चहुँदिशिते ह्वैगयो दिवस अँधेरो॥ इतनी कहत यशोदानंदन गोवर्धन तन हेरो। कियो उपाय गिरिवर धरिवेको मनहिं तिपकरि टखेरो॥ सात दिवस जल वर्षि सिराने हारि

मानि मुख फेरो । श्रीपति कियो सहाय सूर प्रभु बूँद न आवत नेरो॥५९॥राग मधमलार॥गगन मेघ घहरात थहरात गात । चपला चमचमाति चमकि नभ भहरात राखिले क्यों न व्रजनंदतात॥सुनत करुणाबैन उठि हरि चले ऐन नैनकी सेन गिरितन निहारयो।सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरिराज तुमको उबारयो॥करजके अग्र भुज वाम गिरिवर धरयो नाम गिरिधर परयो भक्तकाजै।सूर प्रभु कहत विरजवासीनसों राखि तुमलिए गिरिराज राजै॥९०॥राग गौरी॥श्याम लियो गिरिराज उठाई । धरिधीरज हरि कहत सबनिसों गिरि गोवर्धन कियो सहाई॥नंद गोप ग्वालनके आगे देव कह्यो यह प्रगट सुनाई। काहेको व्याकुल भए डोलत रक्षा करीदेवता आई॥ सत्यवचन गिरिदेव कहतहै कान्ह लेइ मुहि कर उचकाई । सूरदास नारी नर व्रजके कहत धन्य तुम कुवँरकन्हाई॥९१॥ राग मलार॥वामकरधरेक्योंगिरिराज। गोपीगाइग्वाल गोसुतसवदुख बिसरयो। सुखकरत समाज॥ आनँद करत सकल गिरिवरतर दुख डारयो सबही बिसराइ।चकृत भए देखत यह लीला सबै परत हरिचरणन धाइ॥गिरिवर टेकिरहे वायें कर दक्षिणकर लियो सखनिउठाइ। कान्ह कहत ऐसो गोवर्धन देख्यो कैसो कियो सहाइ॥गोपग्वाल नंदादिक जहँलौं नंद सुवन लिए निकट बुलाइ। सूरदास प्रभु कहत सबनिसों तुमहूं मिलि टेकौ गिरिआइ॥९२॥गिरिजनि गिरै श्यामके करते।करत विचार सबै व्रजवासी भय उपजत अति डरते॥लैलै लकुट ग्वाल सब धाए करत सहाय उठेहैं तुरते। यह अति प्रबल श्याम अति कोमल रवँकि रवँकि उर परते॥सप्तदिवस करपरगिरि धारयो वरपि वरपि हारयोअंवरते।गोपीग्वाल नंदसुतराख्यो वरपत मेघधार जलधरते॥ यमलार्जुन दोउ सुतकुवेरके तेउउखारेजरते । सूरदासप्रभुइंद्रगवन कियो व्रज राख्योहैवरते॥९३॥ राग मलार॥ नीके धरो नँदनंदन वलवीर।गिरिजनिपरै टरै नखते तब कौन सहैगो भीर॥चहुँदिशि पवन झकोरत घोरत मेघघटा गंभीर । उनै उनै बरपत गिरिऊपर धार अखंडित नीर॥ अंध-धुंध अंबरते गिरिपर मानों परत वज्रके तीर। चमकि चमकि चपला चकचौंधति श्याम कहत मनधीर॥कर जोरत कुलदेव मनावत व्रजके गोपअहीर।पय पकवानविहान पूजिहैं लैंदधिमधुघृत खीर॥ गोपी ग्वाल गाइ गोसुत सबरहैंसुखसहित शरीर। सूर श्याम गिरि धरयो वामकर मेघ भए अति सीर॥९४॥गिरिवर नीके धरयो कन्हैया।देखतरहो टरै जनि नखते भुजा तनकसी भैया॥ जबजब गाढ परत व्रजलोगन तब करिलेत सहैया। जननि यशोदा कर लै चांपति अतिश्रम होति रि दैया॥देखत प्रगट धरयो गोवर्धन चकित भए नंदरैया। पिता देखिव्याकुलमनमोहन तब एक बुद्धि उपैया॥ आवहु तात गहहु गोवर्धन गोपन संग लिवैया। जहां तहां सबहुन गिरि टेक्यो कान्हहि बोधदिवैया॥श्यामकहत सब नंदगोपसों भलोकरयो उचकैया।सूरदासप्रभुअंत-र्यामी नंदहि हरष बढैया॥९५॥ गिरिवर धरयो सखा सब करते। सब मिलि ग्वाल लकुटियनि टेको अपने भुजके वरते॥सात दिवस मूसलजल धारा बरपतुहैनिशिदिन अंबरते। अंतरिक्ष जलजात कहाँ ये कोधसहित फिरि बरपतझरते॥गाइ गोप नंदादिक राख्यो बृथाबृन्दसब नेकु न थरते। सूर गोपालराखि गिरिवरतर गोकुल नर नारी व्रजघरते॥९६॥ बरपत मेघवर्त व्रज ऊपर।मूसल धार सलिल वरपतुहै बून्द न आवत भूपर॥ चपला चमकि चमकि चकचौंधति करति शब्द आघात। अंधाधुध पवनवर्तक घन करत फिरत उत्पात॥ निशिसम गगन भयो आच्छादित वरपिवरपि झर इंदु।व्रजवासी सुखचैन करतहैं करगिरिधर गोविंद॥ मेघ वरपि जल सबै बढाने विविगुण गए सिराइ। वैसोइ गिरि वैसोइ व्रजवासी दूनो हरप बढाइ॥ सात दिवस जल वर्षि निशा दिन व्रज

सुरति सम्हारि ॥ पूजि आए गिरि गोवर्धन देति पुरुषनि गारि । आपनो कुलदेव सुरपतिधर्यो ताहि विसारि ॥ दियो फल यह गिरि गोवर्धन लेहु गोद पसारि॥सूर कौन सम्हारिलेहैं चढ्यो इंद्र प्रचारि ॥९५०॥ राग सोरठ ॥व्रजके लोग फिरत वितताने। गैयनि लैवन ग्वाल गए ते धाए आवत व्रजहि पराने ॥ कोउ चितवत नभतन चकृत ह्वै कोउ गिरिपरत धरनि अकुलाने । कोउ लै ओट रहत वृक्षनकी अंधधुंध दिशि विदिशि भुलाने ॥ कोउ पहुँचे जैसे तैसे गृह कोउ ढूंढत गृह नहिं पहिचाने । सूरदास गोवर्धन पूजा कीनेकर फल लेहु विहाने॥५१ ॥ राग नाट॥ तरपत नभ डरपत व्रज लोग । सुरपतिकी पूजा विसराई लै दीनो पर्वत को भोग ॥ नंदसुवन यह बुधि उपजाई कौन देव कह्यो पर्वतयोग॥सूरदास गिरि वडो देवता प्रगट होइ ऐसेसंयोग॥५२॥ व्रजनरनारि नंद यशुमतिसों कहत श्याम ए काज करे। कुलदेवता हमारेसुरपति तिनकोसब मिलिमेटिधरे॥ इंद्रहि मेटि गोवर्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरे। संतत फिरत जहाँ तहँ वासन लरिकनु लैले गोद भरे ॥ को करिलेइ सहाइ हमारो प्रलयकालके मेघ अरे । सूरदास प्रभु कहत नारि नर क्यों सुरपति पूजा विसरे ॥५३॥ राग बिलावल ॥ राखिलेहुगोकुलके नायक।भीजत ग्वाल गाइ गोसुत सब विषम बूँद लागत जनु सायक।।बरषत मुसलधार सेनापति महामेघ मघवाके पायक । तुम विनु ऐसो कौन नंदसुत यह दुख दुसह मिटावन लायक ॥ अघमरदन बकवदन-विदारन बकी विनाशन सब सुखदायक । सूरदास प्रभु ताकी यह गति जाके तुमसे सदा सहायक ॥ ५४ ॥ अध्याय ॥ २६॥ तथा ॥२७॥ मलार ॥शरण राखिलेहो नंदताता । घटा आई गरजि युवति गई मन लरजि बीज़ु चमकति तरजि डरत गाता ।। और कोऊ नहीं तुम त्रिभुवन धनी विकल ह्वैके कही तुमहि नाता। सूर प्रभु सुनि हँसत प्रीति उरमें बसत इंद्रको कसत हरि जगतधाता ॥५५॥रागबिलावल॥राखिलेहु अब नंदकिशोर।तुम जु इंद्रकी मेटी पूजा वरपतहैं अति जोर ॥ व्रजवासी तुम तन चितवतहैं ज्यों करि चंद्र चकोर।जनि जिय डरौ नैन जनि मूँदो धरिहौं नखकी कोर॥ करि अभिमान इंद्रझरिलायो करत घटा घनघोर।सूरश्याम् कहि तुमको राखौं बूँद न आवे छोर॥५६॥रागमलार॥माधवजू कांपत डरत हियो । दामिनि दिवस जल वरपि सिराने ताते भए निरास । सूरदास सुरपति शा[illegible] ॥स॥ ॥ ७४ ॥ अमरराज सब अमर बुलाए। आज्ञा सुनि घरघरते आए कछु विलंब ना लाए ॥ कौन काज सुरराज हमारो हमको आयसु होइ । देखौ मेघवर्त्तकनिकी गति व्रजते आए रोइ ॥ गोवर्धनकी करी पुजाई मुहि डार्यो विसराइ। मेघवर्त्तजलवर्त्त पठाए आवहु व्रजहि वहाइ ॥ धार अखंडित वरषि सात दिन व्रज पहुँची नहिं बुंद । सुनि कही गोकुलप्रगटे हैं पूरणब्रह्म मुकुंद॥ मोसों क्यों न कही तुम तबहीं गोकुलमें व्रजराज।सूरदास प्रभु कृपा करहिंगे शरन चलौ दिवराज॥ ॥७५॥ राग सोरठ॥ शरण गए जो होइसु होइवे करतावेई हैं हरता अवनरहौंमुखगोई॥व्रजअवतार कह्यो हे श्रीमुख तेई करत विहार । पूरण ब्रह्म सनातन वेई मैं भूल्यो संसार ॥ उनके आगे चाहौं पूजा ज्यों मणि दीपप्रकाश।रविआगे खद्योत उज्यारी चंदनसंग कुवास॥कोटिइंद्र छिनहीमें राचैं छिनमें करैंविनाश।सूर रच्योउनहींकोसुरपति मैंभूल्यो तिहि आश॥७६॥रागसारंग॥ प्रगटभए व्रज त्रिभुवनराइ ।युगयुग वीति त्रिगुण बुधि व्यापी शरन चलौ सुरपति अकुलाइ॥ सपनेकोधनजागि परे ज्यों त्यों जानी अपनी ठकुराइ। कहत चल्यो यह कहा कियो मैं जगतपितासों करीढिठाइ॥ शिव विरंचि रवि इंद्र वरुण यम लिए अमरगण संग लगाइ।वारवार शिर धुनत जातु मग कैहौं कहा वदन दिखराइ ॥ वे हैं परमकृपालु महाप्रभु रहौं शीश चरणनतर नाइ । सूरदास प्रभु पिता

मानि मुख फेरो । श्रीपति कियो सहाय सूर प्रभु बूँद न आवत नेरो॥५९॥राग मधमलार॥गगन मेघ घहरात थहरात गात। चपला चमचमाति चमकि नभ भहरात राखिले क्यों न व्रजनंदतात॥सुनत करुणाबैन उठि हरि चले ऐन नैनकी सैन गिरितन निहारचो।सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरिराज तुमको उबारचो॥करजके अग्र भुज वाम गिरिवर धरचो नाम गिरिधर परचो भक्तकाजै।सूर प्रभु कहत विरजवासीनसों राखि तुमलिए गिरिराज राजै॥६० ॥राग गौरी॥श्याम लियो गिरिराज उठाई। धरिधीरज हरि कहत सबनिसों गिरि गोवर्धन कियो सहाई॥नंद गोप ग्वालनके आगे देव कह्यो यह प्रगट सुनाई। काहेको व्याकुल भए डोलत रक्षा करीदेवता आई॥ सत्यवचन गिरिदेव कहतहै कान्ह लेइ भुहि कर उचकाई । सूरदास नारी नर व्रजके कहत धन्य तुम कुँवरकन्हाई॥६१॥ राग मलार॥वामकरधरेक्योंगिरिराज। गोपीगाइग्वाल गोसुतसबदुख विसरचे। सुखकरत समाज॥ आनँद करत सकल गिरिवरतर दुख डारचो सवही विसराइ। चकृत भए देखत यह लीला सबै परत हरिचरणन धाइ॥गिरिवर टेकिरहे वायें कर दक्षिणकर लियो सखनिउठाइ। कान्ह कहत ऐसो गोवर्धन देख्यो कैसो कियो सहाइ॥गोपवाल नंदादिक जहँलों नंद सुवन लिए निकट बुलाइ । सूरदास प्रभु कहत सवनिसों तुमहूं मिलि टेको गिरिआइ॥६२॥गिरिजनि गिरै श्यामके करते।करत विचार सबै व्रजवासी भय उपजत अति डरते॥लैलै लकुट ग्वाल सब धाए करत सहाय उठेहैं तुरते । यह अति प्रबल श्याम अति कोमल रवँकि रवँकि उर परते॥सातदिवस करपरगिरि धारचो वरपि वरपि हारचोअंवरते।गोपीग्वाल नंदसुतराख्यो वरषत मेघधार जलधरते॥ यमलार्जुन दोउ सुतकुवेरके तेउउखारेजरते । सूरदासप्रभुइंद्रगवन कियो व्रज राख्योहेवरते॥६३॥ राग मलार॥ नीके धरो नँदनंदन बलवीर।गिरिजनिपरे टरे नखते तब कौन सहैगो भीर॥चहुँदिशि पवन झकोरत घोरत मेघघटा गंभीर । उनै उनै वरषतु गिरिऊपर धार अखंडित नीर॥ अंध-धुंध अंवरते गिरिपर मानो परत वज्रके तीर। चमकि चमकि चपला चकचौंधति श्याम कहत मनधीर ॥ कर जोरत कुलदेव मनावत व्रजके गोपअहीर। पय पकवानविहान पूजिहैं लैदधिमधुघृत [illegible]॥ गोपी ग्वाल गाइ गोसुत [illegible]

त्रि॥ [illegible]॥चक्र दंडकभुअमंडन॥वक्री वचन वेकंवदनविदारन । वरुन विपाद नद निस्तारन॥ऋपिमख तृणा तारकातारन।वनव्रसि तातवचन प्रतिपालन॥कालीदमन केशिकरपातन। अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन ॥ रघुपति प्रबलपिनाक विभंजन । जगहित जनकसुतामनरंजन॥ गोकुलपति गिरिधर गुणसागर।गोपीरमन रासरतिनागर॥करुणामय कपिकुलहितकारी।वालि-विरोध कपटमृगहारी॥ गुप्त गोपकन्या व्रतपूरन।दुष्टन दुख भक्तन दुखचूरन॥रावण कुम्भकर्ण शिरछेदन।तरुवर सात एक शर वेधन ॥ शंखचूड चाणूर सँहारन ।शक्र कहै मोहि रक्षाकारन॥ उत्तरकृपा गीधहितकारी।दरशन दे शवरी उद्धारी॥जे पद सदा शंभुहितकारी।जे पद परसि सुरसरी गारी ॥ जे पद रमा हृदय नहिं टारी।जे पद तिहूँ भुवन प्रतिपारी॥ जे पद अहि फनफनप्रति धारी। जे पद वृंदाबनहिं बिहारी ॥जे पद शकटासुरसंहारी।जे पद पांडवगृह पगुधारी॥जे पद रज गौतम तिय तारी। जे पद भक्तनके सुखकारी॥सूरदास सुर याचत ते पद । करहु कृपा अपने जनपर सद८२॥राग आसावरी ॥अस्तुति करिसुर घरनि चले।यहै कहत सब जात परस्पर सुकृत हमारे प्रगट फले॥शिव विरँचि सुरपतिकहँ भापत पूरण ब्रह्महि प्रगट मिले। धन्य धन्य यह दिवस आजुको जातहैं मारग करत मिले ॥ पहुँचे जाइ आपुने लोकनि अमरनारि सब हरप भरे।सूर श्यामकी

घरघरआनंद । सूरदास ब्रज राखिलियो धरि गिरिवर करनँदनंद ॥ ६७॥बादर ब्रजपर आनि अरे । तबते बाम करजपरराख्यो बहुरि फेरि घुमरे ॥ सात दिवस मूसल जलधारा सायर समुद्र भरे । नहिं परवाह नंदके ढोंटहि पूरत वेनु धरे॥ लियोउठाइ कोपिकै गिरिवर सकलशरन उवरे। सूरदास चलिचलि चरणनकीसुरपति पाइँ परे॥ ६८॥बरपिबरपि ब्रजतन घनहेरत।मेघवर्त अपनी सेनाको खीझतहै फिरि टेरत॥कहा वरपि अवलौं तुम कीनो राखत जलहि छपाइ ।मूसलधार वरपि जल पाटो सात दिवस भए आइ ॥रिस करिकरि गर्जत नभ वर्पन चाहत ब्रजहि बहाइ। सूर श्याम गिरि गोवर्धन धरि ब्रजजनको सुखदाइ ॥ ६९ ॥ वरपि वरपि हहरे सब बादर। ब्रजके लोगन धोइ बहाबहु इंद्र हमहिं कहि आदर ॥ कहा जाइ कैहैं प्रभु आगे करिहैं बहुत निआदर । हम वर्षत पर्वत जल सोखत ब्रजवासी सब सादर॥ पुनि रिस करत प्रलयजल बरपत कहत भए सब कादर। सूर गाइ गोसुत सब राख्यो गिरिवर धरिब्रजनागर ॥ ९७०॥ राग धनाश्री॥कहा होतजलमहाप्रलयको । राख्यो सैंतिसैंतिजहिकारज बचत नहीं कहुँ पयको॥भुवपर एकबुन्द नहिंपहुँची निझरिगए सब मेह।बासर सात अखंडित धाराबरपत हारे देह ॥बरुन भयो बिननीर सबनिको नाम रह्योहै बादर । सूरचले फिरि अमर-राजपर ब्रजतेभए निरादर॥७१॥ राग मल्हार॥मघवनि हारिमानि मुखफेरो।नीकेगोप बडेगोवर्धनजब नीके ब्रजहेरो॥नीके गाइ बच्छ सब नीकेनीके बालगोपाल।नीको बन वैसी ये यमुना मनमन भयो बिहाल॥गोकुल ब्रज वृंदावन मारग नेक नहीं जलधार। सूरदासप्रभु अगणितमहिमा कहा भयो जल सार॥७२॥नटनारायण॥ मघवन जाइ कही पुकारि। दीनह्वै सुरराज आगे अस्त्र दीने डारि॥ सात दिन भरि वरपि ब्रजपरगई नेक न झार । अखंडधार सलिल निझरो मिटी नहीं लगार॥ धरणिनेकु न बूँद पहुँच्योहरपे ब्रजनरनारि। सूरमेघन इंद्रआगे करत यहै गुहारि॥७३॥राग गौरी॥ तुम वरपे ब्रज कुशल परयो । तुम वरपत जल महाप्रलयको यह कहि मनमन सोच परयो ॥ एक घरी जाके वरपेते गगन अच्छादित होइ। ते मघवाविह्वल मोआगे बात कहतहैंरोइ॥सात म काहे तुमको राखो बूंद न आवे [illegible] दिवस जल वरपि सिराने ताते भए निरास । सूरदास सुरपति शोक[illegible] भयो सुरन बुलायो पास॥ ॥ ७४ ॥ अमरराज सब अमर बुलाए। आज्ञा सुनि घरघरते आए कछु बिलंब ना लाए॥ कौन काज सुरराज हमारो हमको आयसु होइ । देखौ मेघवर्तकनिकी गति ब्रजते आए रोइ ॥ गोवर्धनकी करी पुजाई मुहि डारयो बिसराइ। मेघवर्तजलवर्त पठाए आवहु ब्रजहि बहाइ ॥ धार अखंडित वरपि सात दिन ब्रज पहुँची नहिं बुंद। सुरनि कही गोकुलप्रगटे हैं पूरण ब्रह्म मुकुंद॥ मोसों क्यों [illegible] कृपा करहिंगे शरन चलौ दिवराज॥ ॥७५॥ राग [illegible] हरता अबनरहौंमुखगोई॥ब्रजअवतार कह्यो है श्रीमुख तेई करत विहार । पूरण ब्रह्म सनातन वेई मैं भूल्यो संसार ॥ उनके आगे चाहौं पूजा ज्यों मणि दीपप्रकाश।रविआगे खद्योत उज्यारी चंदनसंग कुवास॥कोटिइंद्र छिनहीमें रा चैं छिनमें करें विनाश।सूर रच्योउनहींकोसुरपति मैभुल्यो तिहि आश॥७६॥रागसारंग॥ प्रगटभए ब्रज त्रिभुवनराइ ।युगयुग वीति त्रिगुण बुधि व्यापी शरन चलौ सुरपति अकुलाइ॥ सपनेकोधनजागि परे ज्यों त्यों जानी अपनी ठकुराइ। कहत चल्यो यह कहा कियो मैं जगतपितासों करीढिठाइ॥ शिव विरंचि रचि इंद्र वरुण यम लिए अमरगण संग लगाइ।बारबार शिर धुनत जातु मग कैहौं कहा वदन दिखराइ ॥ वे हैं परमकृपालु महाप्रभु रहौं शीश चरणनतर नाइ ।सूरदास प्रभु पिता

मान में ओछी बुद्धि करी लरिकाइ॥७७॥ इंद्र शरणचले ॥ राग कान्दरो॥सुरगणसहितइंद्रव्रज आवत। धवलवरन ऐरावति देख्यो उतरि गगनते धरणि धँसावत॥ अमर शिव रवि शशि चतुरानन हय गय वसह हंस मृग जावत। धर्मराज वनराज अनल दिव शारद नारद शिवसुत भावत॥मेंढामढी मगर गुडरारो मोर आपु मन वाह गनावत।व्रजके लोग देखि डरपे मन हरिआगे कहिकहिजु सुनावत॥ सात दिवस जलबरपि सिरान्यो आवत चल्यो व्रजहि अत्रावत। वेग करत जहांतहँ ठाढे व्रजवासिनको नहीं बचावत॥ दूरहिते वाहनसों उतरयो देवन सहित चल्यो शिर नावत। आइ परयो चरणनतर आतुर सूरदास प्रभु शीश उठावत॥ ७८॥ सुरपति चरण परयो गहि धाइ। युगयुण घोइ शेषगुण जान्यो शरणहि राखिलेहु शरनाइ॥ हम बिसरे तुमरी मायामें तुम विनु नाहीं और सहाइ। शरनशरन पुनिपुनि कहिकहि मोहिं राखिराखि त्रिभुवनके राइ॥ मोते चूक परी बिनुजाने में कीने अपराध बनाइ। तुम माता तुमहीं जगदाता तुम भ्राता अपराध क्षमाइ॥ जो बालक जननीसे विरुझे माता ताको लेइ मनाइ। ऐसेहि मोहिं करो करुणामय सूर श्याम ज्यों सुतहितमाइ७९॥राग बिलावल॥व्याकुलदेखिइन्द्रकोश्रीपतिउभयभुजाकरिलियोउठाइ। अभय निभय कर माथे दीनो श्रीमुखवचन कह्योमुसिक्याइ॥ कहाभयो जु चढेव्रजऊपरमें तुरतहि करिलियो सहाइ।हमको जानि नहीं तुम कीनों बिन जाने यह करी ढिठाइ॥ अब अपने जिय सोच करौ जिनि यह मेरी दीनी ठकुराइ। सूर श्याम गिरिधर सब लायक इंद्रहि कह्यो करौ सुख जाइ॥ ९८०॥राग नट॥ सुरगण करत अस्तुति मुखनि। दरशते तनुताप खोयो मेटि अघके दुखनि॥ अंग पुलकित रोम गदगद कहत वाणी मुखनि। वामभुजकर टेकिराख्यो करज लघुके नखनि॥प्रेमके वश तुमहिं कीन्हों ग्वालबालक सखनि। योगिजन बन तपन जापन नहीं पावत भखनि॥ धन्य नँद धनि मातु यशुमति चलत जाके रुखनि। सूर प्रभुमहिमा अगोचर जाति कापे लखनि॥८१॥राग भैरव॥जय माधव गोविंद मुकुन्द हरि।कृपासिंधु कल्याण कंसअरि॥ प्रणतपाल केशव कमलापति। कृष्ण कमललोचन अनन्यगति॥ श्रीरामचन्द्र राजीवनैन वर। शरणसाधु श्रीपति सारँगधर॥ वनमाली विट्ठल वामन बल।वासुदेव वासी व्रजभूतल॥खरदूषण त्रिशिराशिरखंडन।चरणचिह्न दंडकभुअमंडन॥बकी बधन बकवदनविदारन। वरुन विपाद नंद निस्तारन॥ऋषिमख तृणा तारकातारन॥वनबसि तातबचन प्रतिपालन॥कालीदमन केशिकरपातन। अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन॥ रघुपति प्रबलपिनाक विभंजन। जगहित जनकसुतामनरंजन॥ गोकुलपति गिरिधर गुणसागर।गोपीरमन रासरतिनागर॥करुणामय कपिकुलहितकारी।बालि-विरोध कपटमृगहारी॥ गुप्त गोपकन्या व्रतपूरन।दुष्टन दुख भक्तन दुखचूरन॥रावण कुम्भकर्ण शिरछेदन।तरुवर सात एक शर वेधन॥ शंखचूड चाणूर सँहारन।शक्र कहै मोहि रक्षाकारन॥ उत्तकृपा गीधहितकारी।दरशन दे शबरी उद्धारी॥जे पद सदा शंभुहितकारी।जे पद परसि सुरसरी गारी॥ जे पद रमा हृदय नहिं टारी।जे पद तिहूँ भुवन प्रतिपारी॥ जे पद अहि फनफनप्रति धारी। जे पद वृंदावनहिं बिहारी॥जे पद शकटासुरसंहारी।जे पद पांडवगृह पगुधारी॥जे पद रज गौतम तिय तारी। जे पद भक्तनके सुखकारी॥सूरदास सुर याचत ते पद। करहु कृपा अपने जनपर सद८२॥राग आसावरी॥अस्तुति करि सुर घरनि चलेयहे कहत सब जात परस्पर सुकृत हमारे प्रगट फले॥शिव विरँचि सुरपतिकहँ भापत पूरण ब्रह्महि प्रगट मिले। धन्य धन्य यह दिवस आजुको जातहैं मारग करत मिले॥ पहुँचे जाइ आपुने लोकनि अमरनारि सब हरप भरे॥सूर श्यामकी

लीला सुनिसुनिअतिहितमंगलगान करे॥८३॥राग मलार॥दिखियत दोउ घन उनए । उतवर्न वामन भक्तिवश्य इत नर इक रोप भए ॥ उत सुरचाप कला प्रचंड इत तडित पीत पट श्याम नए । उत सेनापति वरपि सुमलसम इत प्रभु अमियदृष्टि चितए ॥ युगलवीच गिरिराज विराजत कर जु उठाइ लए । मनु विवि मरकत वीच महा नग चतुर नारि बनए ॥ लुटत शक्रके शीश चरणतर युग गुण गत समए । मानहु कनकपुरीपतिके शिर रघुपति फेरि दए ॥ भए प्रसन्न सकलसुरपुरको प्रमुदित फेरि गए। सूरदास गिरिधर करुणामय इंद्र थापि पठए ॥ ८४ ॥ देखो भाई वदननिकी वरियाई । मदनगोपाल धरयो गिरिवरकर इंद्रढीठ झरि लाई॥जाकेराजसदासुख कीनों तासो कौन वडाई । सेवकु करै स्वामिसोसरवरिइनिवातनि पतिजाई॥ इंद्रढीठवलिखाइ हमारी देखौ अकल गमाई। सूरदास तोहिको काको डर जिहिवन सिंह कन्हाई ॥८५॥रागसोरठ॥ जहां तहां तुम हमहिं उवारयो॥ग्वालसखा सव कहत श्यामसो धनि यशुमति अवतारयो॥ तृणावर्त्त ब्रजपर चढिआयो लाग्यो देन उडाइ। अतिशिशुतमें ताहि सँहारयोपरयोशिलापरआइ॥ फलजनवे वालकसंग खेलत केशी आयो साथ॥वाहिमारितुम हमहिउवारयो ऐसे त्रिभुवननाथ॥ कागासुर शकटासुर मारयो पय पीवत दनुनारि।अघा,असुरते हमहिनिकास्योवकावदनधरिफारि॥ कालीदहजल अचै गए मरि [illegible]

हमको नदनँदनको गारो । [illegible]

फाहू निडर चरावत चारो । विगरे सव हमरे शिर ऊपर वलको वीर रखवारो ॥ तवही हमहिं भरोसो आयो केशी तृणावर्त्त जव मारयो । सूरदास प्रभु रंगभूमिमें हरि जीत्यौ नृप हारयो ॥ ॥८७॥राग मलार ॥तुम सुरपतिको मान हरयो॥वरपत शुंडदंडधर धारा छिन छिन एकमें प्रलय करयो । ऐरावतआरूढ अप्रधन लघुता जानि जु रोपभरयो॥देखे दीन दुखित नंदादिक लीला गिरिवर कर जु धरयो॥सूरदास करुणामय माधव ब्रजसुख उनको गर्व हरयो॥८८॥राग बिलावल॥ ब्रजयुवतीब्रजजन ब्रजवासी कहत श्यामसरि कौन करै॥ब्रज मारत ब्रजनाथहि आगे वज्रायुध मन क्रोध करै॥वलसमेत वरप्यो ब्रजऊपर वलमोहनकी सुधि न करै॥हारे मानि हहरयो हरिचरणनि हरपि हिये अव हेतु करै॥गरजिगरजि घहरात गुसांकरि गिरिवारो यह पेज्ञ करै॥सूरदास गिरिधर करुणामय तुमबिनु को प्रभु क्षमाकरै८९॥राग मेघमलार॥ श्याम गिरिराजजन्मो धरयोकरसों॥अतिहि विस्तार अतिभार तुम वार अति वामभुज टेकि लघुजात करसो॥ कहत सवग्वाल धनिधन्य नँद-लाल ब्रज धन्य गोपाल वल कितिक करसों॥धन्य यशुमति मात जिन जन्यो तुम तात चोरि माखन खात वाँधि करसो॥कान्ह हँसिके कह्यो तुमसवन गिरि गह्यो रह्यो हो ब्रज यह्यो लकुट करसो। सूर प्रभुके चारितकहा वल गिरिधरत चरणरजलेत सुरराजकरसो९०राग मलार॥हाहारे हठीले हरि। अपनी जननीको कह्यो करि इँद्र वरपिगयो अव गिरिवर धरि॥ सात द्यौस कीनी छाँह नेकु न पिरानी वाहँ अतिहि कठिन कछु राख्योरे छननि करि॥सुनिकैयशोदाधाइ निकटगोपाल राइ कररे सँवेसहाइ नैन रहे जलभरि॥कुलके देवै मनाए देवेको द्विजे वुलाये दियो जाहि जोई भायो जियो रे कन्हैया प्यारो जाके राज सुख करि॥सूरदास प्रभु गिरिधरको कौतुक देखि कामधेनु आयो धायो इंद्र अपडर डरि॥९१॥राग सोरठ॥जव करते गिरि धरयो उतारि॥श्याम कह्यो वहुरो गिरि पूजहु ब्रजजन लिए उवारि॥ यह सुनतहि मन हर्ष बढ़ायो कियो पकवानु सवारि। वहु मिष्टान्न वहुत विधि भोजन वहु व्यंजन अनुहारि॥परसि धरेगोवर्धनआगे जेवत अति रुचि भारि॥सूर श्याम

गिरिधर वर मांगत रविसों वोपकुमारि ॥ ९२ ॥राग कान्हरो ॥ घरघरते ब्रजयुवती आवति। दधि अक्षत रोचन धरि थारनि हरषि श्यामशिर तिलक वनावति ॥ वारंबार निरखि छवि अँगअँग श्यामरूप उरमाहँ दुरावति ॥ नंदसुवन गिरि धरचो वामकर यह कहिके मन हरप बढावति ॥ जेहिं पूजत सब जन्म गँवायो सो केसेहुं पग छुवन न पावति । सूर श्याम गिरिधरन मांगि वर कर जोरति कहि विधिहि मनावति ॥९३॥ राग सोरठा॥नीके घरणिधरचो गोपाल।प्रलयघन जल वरपि सुरपति परचो चरण विहाल ॥ करत अस्तुति नारि नर ब्रज नंद अरु सब ग्वाल । जहांतहां सहाय हमको होतहैं नँदलाल ॥ जाहि पूजत डरत मनमें ताहि देख्यो दीन । त्रिदशपति सब सुरको नायक सो भयो आधीन । देखि छवि अति नंदसुतकी नारितन मन वारि।सूरप्रभु करते गुवर्धन धरचो धरणि उतारि ॥९४॥राग नट॥करते धरचो धरणीधरन । देखि व्रजजन चकित ह्वैरहे रूप रतिपतिहर-न ॥ लेत वेर न धरत जान्यो कहत ब्रजनर वरन । तनु ललित भुज अतिहि कोमल कियो वल वहु करन ॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवण कुण्डल वरन । वन जलद सुरचापकी छवि अमल स्वजनन तरन ॥ वरपि निकरे मेघ पाइक वहुत कीने अरन । सूर सुरपति हारि मानी तव परचो दुहुँ चरन॥९५॥राग विलावल॥घरनिवरनि ब्रज होत वधाई ॥ सातवरपके कुँवर कन्हैया गिरिवर धरि जीत्यो सुरराई ॥ गर्वसहित आयो ब्रज वोरन यह कहि मेरी भक्ति घटाई । सात दिवस जल वरपि सिराने तव आयो पाइँनतर धाई ॥ कहँकहँ संकट नहिं मेटत नर नारी सव करत वडाई ॥ सूरश्याम अवके ब्रज राख्यो ग्वाल करत सव नंददोहाई॥९६॥राग नट॥क्योंराख्यो गोवर्धन श्याम। अति ऊंचो विस्तार अतिहि वहु लीनो उचकि करज भुजवाम॥यह आवात महापरलय जल डर आवत मुख लेतहि नाम। नीके राखिलियो ब्रज सिगरो ताको तुमहि पठायो धाम ॥ ब्रज अवतार लियो जवते तुम यहै करत निशि वासर याम । सूरश्याम वनघन हगकारण वहुत करत श्रम नहिं विश्राम ॥ ९७ ॥राखिलियो ब्रज नंदकिशोर । आयो इंद्र गर्व करि चढिके सात दिवस वरपत भयो भोर ॥ वाम भुजा गोवर्धन राख्यो अतिकोमल नखहीकी कोर।गोपी ग्वाल गाइ ब्रज राख्यो नेकु न आई बूंद झकोर॥अमरापति चरणन लै पारचो जव वीते युग युनको जोर। सूरश्याम करुणा कै ताको पठैदियो घरमानि निहोर ॥ ९८ ॥ राग मलार ॥ मेरो मोहन जल प्रवाह क्यों टारचो । वूझत मुदित यशोदा जननी इंद्र कोप करि हारचो ॥ मेघवर्त्त जल वरपि निशा दिन नेकु न नैन उघारचो। वार वार यह कहति कान्हसों कैसे गिरि नख धारचो ॥ सुरपति आनि गिरचो गहि पांइन ताको शरन उवारचो । सूर श्याम जनके सुखदाता करते धरणि उतारचो ॥ ९९ ॥ राग सोरठ॥ मेरे सांवरे मैं वलिजाऊँ भुजनकी । क्यों गिरि सवल धरचो कोमलकर वूझतिहौं गति तनकी ॥ इंद्र कोपि आयो ब्रजऊपर वहुत पैज करि हारे। ठाढे गोप कहत भैयाहो तैं हम भले उवारे ॥ थार तमोर दूध दधि रोचन हरपि यशोदा ल्याई। करे शिर तिलक चरण रजवंदित मनहु रंक निधि पाई॥ चरणन कमल परत ब्रजसुंदरि हरषिहरपि मुसु-काई । फिरिफिरि दरश करति एही मिस प्रेम न प्रीतिअघाई॥गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सववारवार अकुलाहीं । निरखिनिरखि सुंदरसुखशोभा प्रेम तृषा न वुझाहीं ॥ सूरदास सुरपति शंकित ह्वै सुरन लिये सँग आयो ।तुम जु अनंत अखिल अविनाशी काहू मरम न पायो॥१०००॥राग सोरठ॥ गिरिवर कैसे लियो उठाई ।कोमल करचांपति यशुदा यह कहि २ लेत वलाई॥ महाप्रलय जल तापर राख्यो एक गोवर्धन भारी ।नेंक नहीं हाल्यो नखपरते मेरो सुत हंकारी ॥ कंचनथार दूव दधि रोचन सजि तमोर लै आई।हरपति तिलक करति मुख निरखति भुजभरि कंठलाई॥

रिस करिकै सुरपति चढि आयो देतो ब्रजहि बहाई। सूर श्यामसों कहति यशोदा गिरिधर बडो कन्हाई ॥ १ ॥ धरणीधर क्यों गह्यो दिन सात। अतिही कोमल भुजा तुम्हारी चांपति यशुमति मात ॥ ऊँचो अति विस्तार भार बहु यह कहिकहि पछितात। वह अघात तेरे तनक तनक कर कैसे राख्यो तात ॥ मुख चूमति हरि कंठ लगावति देखि हँसे बल भ्रात। सूरश्यामको कतिक बात यह जननी जोरति नात ॥ २ ॥ राग कान्हरो ॥ जननी चांपति भुजा श्यामकी ठाढे देखि हसत बलराम। चौदह भुवन उदरमें जाके गिरिवर धर्यो बहुत यह काम॥ कोटि ब्रह्मांड रोम रोमनि प्रति जहांतहां निशि बासर धाम। जोइ आवति सोइ देखि चकृत ह्वै कहत करे हरि कैसे काम॥ नाभिकमल ब्रह्मा प्रगटाये देखि जलार्णव तज्यो विश्राम। आवत जात बीचही भटक्यो दुखित भयो खोजत निज धाम ॥ तिनसों कहत सकल ब्रजवासी कैसे कर राख्यो गिरि श्याम। सूरदास प्रभु त्रिभुवननायक फिरिफिरि जन्म लेत नंदधाम॥३॥ राग गौरी ॥ मात पिता इनके नहिं कोई। आपुहि करता आपुहिहरता त्रिभुवन गए रहतहै जोई॥ कितक वार अवतार लियो ब्रज ए हैं ऐसे वोई। जल थल कीट ब्रह्मके व्यापक और न इनसरि होई ॥ वसुधाभार उतारनकारन आपु रहत तनु गोई। सूर श्याम माताहितकारी भोजनमांगत रोई ॥४॥ अथ गोवर्धनकी दूसरी लीला॥ राग बिलावल ॥ नंदहि कहति यशोदा रानी। सुरपतिपूजातुमहिभुलानी॥ यह नहिं भली तुम्हारीवानी। मै गृहकाज रही लपटानी॥ लोभहि लोभ रहेहो सानी। देवकाजकी सुधि बिसरानी ॥ महरि कहति पुनिपुनि यह बानी। पूजाके दिन पहुँचे आनी॥ सूरदास यशुमतिकी वानी। नंदहि खीझिखीझि पछितानी ॥१ ॥ नंद कह्यो सुधि भली देवाई। मै तौ राजकाज मन लाई ॥ नितप्रति करत इहे अधमाई। कुलदेवतासुरतिविसराई ॥ कंस दई इह लोक बडाई। गाउँदशक सिरदार कहाई॥ जलधिबूँद ज्यों जलहि समाई। माया जहकी तहां विलाई ॥ सूरदास यह कहि नँदराई। चरण तुम्हारे सदा सहाई ॥ २ ॥ कहत महरि तब ऐसी वानी। इंद्रहिकी दीनी रजधानी॥ कंस करत तुम्हरी अति कानी। यह प्रभुकी है आशिषवानी॥ गोपन बहुत बड़ाई मानी। जहां तहां यह चलति कहानी॥ तुम घरमथिय सहस मथानी। ग्वालिनि रहत मदानिततानी ॥ तृण उपजत इनहींके पानी। ऐसे प्रभुकी सुरति भुलानी॥ सूर नंद मनमें तब आनी। सत्यकहत तुमदेवकहानी॥३॥ महर लियो इक ग्वाल बुलाई। गोपनंद उपनंद बुलाई॥ अरु आनो वृषभानु लिवाई। तुरतजाहु तुम करहु चडाई ॥ यह सुनि ग्वाल गए तह धाई। नंदमहरकी कही सुनाई ॥ नेक करहु अब जिनि विलमाई ॥ मोहिं कह्यो सब देहु पठाई ॥ यह सुनिकै सब चले अतुराई। मनमन सोच करत पछिताई॥ कंसकाज जियमांझ डराई। राजअंश धन दियो चलाई ॥ सूर नंदगृह पहुँचे आई। आदर करि बैठे नँदराई॥४॥ गोप सबै उपनंद बोलाए। कौन काजको हम हकराए ॥ सुनतेही हम आतुर आए। कंस कछू कहि मांगिपठाए॥ इहेजानि अतिआतुर आए। सबमिलि कह्यो बहुत डरपाए ॥ कालिहि राजअंश दे आए। ग्वाल कहत तुरतहि उठि धाए॥ महर कह्यो हम तुम डरवाए। हसिहँसि कहत अनंद बढाये ॥ हम तुमको सुखकाज मँगाए। बारबार यह कहि दुख पाए॥ सूरइंद्रपूजा बिसराये। यह सुनतहि शिर सबनि नवाये ॥ ५॥ पूजा सुनत बहुत सुख कीन्हो। भली करी हमको सुधि दीन्हो ॥ यह बाणी सबहिन सुख लीन्हो। बडे देव सबदिनको चीन्हो॥ इनहीते ब्रजवास बसीनो। ॥ हम सब अहिरजाति मतिहीनो ॥ पूजाकीविधि करत सबैमिलि। जेहिजेहि भांति सदा जैसी चलि॥ विदा मागि नंदसो गृह आए। घरनिघरनि यह बात चलाए ॥ सूरदास

गोपनकी वानी । व्रज नर नारि सवन यह जानी ॥ ६ ॥ नंदघरनि व्रजवधू बोलाई ॥ यहसुनिकै तुरतहि सब आई ॥ कौन काज हम महरि हँकारी । तुम नहिं जानत यौवन भारी ॥ बिहँसि कहति कहा देतिहौ गारी । सुरपतिपूजा करो सवारी ॥ देखो हम सब सुरति बिसारी । औरो हमहिं बूझिए गारी ॥ यह सुनि हरषित भइ नँदनारी। सखियनवचन कह्यो जब प्यारी॥सूर इंद्रपूजा अनुसारी । तुरत करो सब भोग सँवारी ॥ ७ ॥ घरनि चलीं सब कहि यशुमतिसों देव मनावति वचन विनतिसों॥तुमविन और नहीं हमजानैं । मुखमुख अस्तुति करत बखानैं॥ जहां तहां व्रजमंगल गाने।वाजत ढोल मृदंग निसाने॥बहुत भांति सब करि पकवाने।नेवज करि धरि सांझ विहाने ॥ छुवत नहीं देवकाज मकाने । देवभोगको रहत डेराने ॥ सूरदास हम सुरपति जानैं । और कौन ऐसो जेहि मानैं॥ ८ ॥ नंदमहरघर होत वधाई। करत सबैविधि देव पुजाई॥नेवजकरत यशोदाआतुर। अष्टो सिद्धि घरहि अति चातुर॥मेदा उज्ज्वल करिकै छान्यो। वेसन दारि चनककरि वान्यो॥ घृत मिष्टान्न सबै परिपूरन।मिश्रित करत पागको चूरन ॥ कटुआ करत मिठाई घृतपक। रोहिणि करत अन्नभोजन तक॥संग और व्रजनारी लागी। भोजन करतहैं बडीसभागी॥ महरि करत ऊपर तरकारी । जोरत सब विधि न्यारी न्यारी ॥सूरदास जो मांगत जबहीं।भीतरते लै देतहै तबहीं ॥९॥ महरि सबै नेवज लै संतति। श्याम छुवै कहुँ ताकोडरपति॥ कान्हहि कहति यहां जनि आवै।लरिकनको यहदेव डरावै॥ श्यामरहे आंगनहिंडराई।मनमन हँसत मातसुखदाई ॥मैयारीमोहिदेव देखैंहे।इतनो भोजन सबवह खैहै॥ यह सुनिकै खीझति नँदरानी। बारवार सुतसों विरुझानी॥ ऐसी वात न कहौ कन्हाई। तू कत करत श्याम लँगराई ॥ कर जोरत अपराध छमावति । बालकको यह दोष मिटावति ॥ सूरदास प्रभुको नहिं जानै। हँसत चले मनमैं न रिसानै ॥ १० ॥ युवती कहति कान्ह रिस पायो। जान देहु सुरकाज बतायो॥ बालक आय छुवै कहुँ भोजन । उनकी पूजा जानै को जन ॥ यह कहिकहि देवता मनावति । भोगसमग्री धरत उठावति ॥ उनकी कृपा गऊगण घेरे।उनकी कृपा धाम धन मेरे॥ उनकी कृपा पुत्रफल पायो । देखहु श्यामहि खीझि पठायो ॥ सूरदास प्रभुअंतर्यामी । ब्रह्माकीट आदिके स्वामी ॥ ११ ॥ नंदनिकट तब गए कन्हाई।सुनत बात तहँ इंद्रपुजाई॥महर नंद उपनंद तहाँ सब । बोलिलिए वृषभानुमहर तब ॥ दीपमालिका रचि रचि साजत । पुहुपमाल मंडली बिराजत ॥ बरष सातके कुँवर कन्हाई । खेलत मन आनंद बढाई ॥ घरघर देति युवतिजन हाथा।पूजादेखि हँसतव्रजनाथा॥ मो आगे सुरपतिकी पूजा । मोते और देव को दूजा ॥ शत शत इंद्र रोमप्रति लोमनि । शतलोमनि मेरे इकरोमनि ॥ सूरश्याम ए मनसों बातैं । लीनो भोग बहुत दिन जातैं ॥ १२ ॥ सुरपति पूजा जानि कन्हाई । बारवार बूझत नँदराई॥कौन देवकी करत पुजाई । सो मोसों तुम कहहु बुझाई॥महर कह्यो तब कान्ह सुनाई।सुरपति सब देवनके राई॥ तुमरे हित मैं करत पुजाई।जातें तुम रहो कुशल कन्हाई॥सूर नंद कहि भेद बताई। भीर बहुत घर जाहु सिखाई॥ १३॥ जाहु घरहि बलिहारी तेरी । सेज जाइ सोवो तुम मेरी ॥ मैं आवतहौं तुम्हरे पाछे । भवन जाहु तुम मेरे बाछे ॥ गोपन लीन्हें कान्ह बुलाई । मंत्र कह्यो एक मनहि समाई॥आजु एक सपने कोउ आयो । शंखचतुर्भुज चारि बतायो॥मोसों यह कहिकहिसमुझायो।यहपूजातुमकिनहिंसिखायो॥सूरश्याम कहि प्रगट सुनायो।गिरि गोवर्धन देव बतायो॥१४॥ यह तब कहनलगे ढिगराई। इंद्रहिपूजे कौन बडाई॥कोटि इंद्र हम छिनमें मारैं।छिनहीमैंफिरि कोटि सँवारैं॥जाके पूजे फल तुम पावहु।ता देवहि

तुम भोग लगावहु ॥ तुमआगेवह भोजन खैहै।मुंहमांग्योफल तुमको देहै॥ ऐसोदेवप्रगट गोवर्धन ।जाके पूजे बाढै गोधन॥समुझिपरी कैसी यह बानी।ग्वाल कही यह अकथ कहानी ॥ सूर श्याम यह सपनो पायो।भोजनकोन देवहीखायो॥१५॥मानहु सयो सत्य यह बानी जो चाहौ ब्रजकी रजधानी॥ जोतुम मुंहमांग्यो फल पावहु।तो तुम अपने करन जेंवावहु॥भोजन सब गैहैं मुहमांगे ।पूजत सुरपतितिनकेआगे॥मेरीकहीसत्यकरिमानहु।गोवर्धनकीपूजा ठानहु । सूर श्याम कहिकहि समुझायो । नंद गोप सबके मन आयो॥ १६ ॥ सुरपतिपूजा मेटि धराई। गोवर्धनकी करत पुजाई ॥पांचदिनाल्यौं करी मिठाई। नंदमहरघरकी ठकुराई॥जाके घरनी महरि यशोदा।अष्ट सिद्धि नव निधि चहुकोदा॥ घृतपक बहुत भांति पकवाना।व्यंजन बहु को करै बखाना ॥ भोग अन्न बहुभार सजायो । अपने कुल सब अहिर बोलायो॥ सहस शकट भरि भरत मिठाई।गोवर्धनकी प्रथम पुजाई॥सूर श्याम यह पूजा ठानी। गिरिगोवर्धनकी रजधानी ॥ १७ ॥ ब्रज घर घरसब भोजन साजत ।सबके द्वार बधाई बाजत॥शकट जोरि लै चले देवबलि ।गोकुलब्रजवासी सब हिलिमिलि॥ दधिलवनी मधु साजि मिठाई॥ कहलगि कहौं सबै बहुताई॥घरघरतें पकवान चलाए । निकसि गांवके गैंडे आये॥व्रजवासी तहँ जुरे अपारा। सिंधुसमान पार ना वारा॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत ।शकटभरे सब भोजन आवत ॥ सहस शकट चले नंदमहरके । और शकट कितन घरघरके॥सूरदास प्रभु महिमासागर। गोकुल प्रगटे हैं हरिनागर॥ १८॥इक आवत घरते चले धाई। एक जात फिरि घर समुहाई ॥ इक देखत इक दौरे आवत । एक गिरावत एक उठावत॥ एक कहत आवहु रे भाई। बैल देतहैं शकट गिराई ॥ कौन काहिको कहै सँभारि जहाँ तहाँ सब लोग पुकारे ॥ कोउ गावत कोउ निर्तत आवै।श्याम सखासंग खेलत धावै ॥ सूरदास प्रभु सबके नायक । जो मन करै सो करिबे लायक॥१९॥सजि शृंगार चलीं ब्रजनारी। युवतिन भीर भई अति भारी॥जगमगात अगनि प्रति गहनो । सबके भाव दरश हरि लहनो॥यहि मिस देखनको सब आई ।देखत एकटक रूप कन्हाई ॥ वै नहि जानत देवपुजाई ।केवलश्यामहिसों लव लाई॥को सग जानि कहा को बोलत।नंदसुवनते चित नहिडोलत॥सूरभजहरिजोजेहि भाउ।मिलत ताहि प्रभु तेहि सुभाउ ॥ २०॥गोपनंद उपनंद गए तहँ । गिरि गोवर्धन बडे देव जहँ ॥ शिखर देखि तब रीझे मनमन।ग्वाल कहत आजुहि अचरज बन ॥ अतिऊंचो गिरिराज विराजत । कोटि मदन निरखत छवि लाजत ॥ पहुँचे शकटनि भरिभरि भोजन ।कोउ आए कोउ नहि कहुँ खोजन ॥ तिनके काज अहीर पठाए। विलम करह जिनि तुरत धराए ॥ आवत मारग पाये तिनको । आतुर करि बोले नँद जिनको ॥ तुरत लिवाइ तिनहि तहां आए। महर मनहि अति हरष बढाए ॥ सूरदास प्रभु तहँ अधिकारी । बूझतहैं पूजा परकारी ॥२१ ॥ आइ जुरे सब ब्रजके वासी।डग परयो कोश चौरासी॥एक फिरत कहुँ ठौर न पावै।एते पर आनंद बढावै॥ कोउ काहूसों बैर न ताके।बैठत मन जहं भावत जाके॥ खेलत हँसत करैं कौतूहल। जुरे लोग जहँ तहां अकूहल ॥ नंद कह्यो सब भोग मँगावहु । अपने कर सब लैलै आवहु ॥ भोग बहुत वृषभानुहि घरको । को करि बरनै अतिहि बहरको ॥ सूर श्याम जो आयसु दीन्हो।विप्र बुलाइ नंद तब लीन्हो ॥ २२ ।।तुरत तहां सब विप्र बोलाए। यज्ञअरंभ तहां करवाए ॥ सामवेद द्विज गान करत तहँ। देखत सुर विथके अमरन जहँ ॥ सुरपतिपूजा तबहि मिटाई । गिरि गोवर्धन तिलक चढाई ॥कान्ह कह्यो गिरि दूध अन्हावहु । बडे देवता इनहि मनावहु ॥ गोवर्धन

दूधहि अन्हवाए। देवराज कहँ माथ नवाए॥ नये देवता कान्ह पुजावत। नर नारी सब देखन आवत॥ सूर श्याम गोबर्धन थाप्यो। इंद्र देखि रिसकरि तनु कांप्यो॥२३॥देखिइंद्र मन गर्व बढायो। ब्रजलोगनसबमोहिंबिसरायो॥अहिरजाति ओछीमति कीन्ही। अपनी ज्ञाति प्रगट करिदीन्ही॥ पूजत गिरिहि कहामन आई।गिरिसमेतब्रज देउँ बहाई॥देखौं धौं कितनो सुख पैहै। मेरे मारत काहि मनैहै॥ पर्वत तब इनको क्यो राखत। बारंबार कहै इह भापत॥ पूजत गिरि अतिप्रेम बढाए। सपनेको सुख लेत मनाए॥सूरदास सुरपतिकी बानी। ब्रज बोरौ परलयके पानी ॥२४॥श्याम कह्यो तब भोजन लावहु। गिरिआगे सब आनि धरावहु॥ सुनत नंद तहँ ग्वाल बोलाए। भोगसमग्री सबै मँगाए॥ पटरसके बहुभांति मिठाई। अन्नभोग अतिही बहुताई॥ व्यंजन बहुत भाँति पहुँचाए। दधि लवनी मधु माट धराए॥ दही बरा बहुतै परसाए।चन्द्रहि सम पटतर तेहि पाए॥ अन्नकूट जैसो गोवर्धन। अरु पकवान धरे चहुँकोनन॥ परसत भोजन प्रात-हिते सब। रवि माथेते ढर किगयो अब॥ गोपन कह्यो श्याम ह्यांआवहु। भोग धर्योसब गिरिहि जिमावहु॥सूर श्याम आपुनही भोगी। आपुहिमाया आपुहि योगी॥२५॥कान्हकह्योनंद भोग लगावहु। गोपमहर उपनद बोलावहु॥नैन मूंदि कर जोरि मनावहु।प्रेमसहित देवहि न चढावहु॥ मनमें नेक सुटक जनि राखहु। दीन बचन मुखतेतुमभापहु॥ ऐसीविधिगिरि परसन ह्वैहै। सहस भुजा धरि भोजन खैहै॥सूरदास प्रभु आपुपुजावत।यह महिमाकैसे कोउ पावत॥२६॥श्यामकही सोई सब मानी। पूजाकी विधि हम अब जानी॥ नैनमूंदिकर जोरि बोलायो। भावभक्तिसों भोग लगायो॥बडे देव गिरिराज सबनके। भोजन करहु कृपाकरि इनके॥सहसभुजा धरिदरशनदीन्हों। जैजै ध्वनि नभ देवन कीन्हो॥ भोजन करत सबनके आगे। सुर नर मुनि सब देखन लागे॥ देखि थकित ब्रजकी सब बाला। देखत नंद गोप सब ग्वाला॥सूर श्याम जनके सुखदाई।सहस भुजा धरि भोजनखाई॥२७॥जेंवत देव नद सुखपायो॥कान्ह देवता प्रगटदेखायो॥ ब्रजवासी गिरिजेंवत देख्योजीवन जन्म सफल करि लख्यो॥ललिता कहति राधिकाआगे।जेंवतकान्ह नदकर लागे। मैं जानी हरिकी चतुराई। सुरपति मेटि आपु बलि खाई॥ उत जेंवत इत बातन लागे।कहत श्याम गिरि जेवन लागे॥मैं जो बात कही सो आई।सहसभुजा धरि भोजन खाई॥ और देव इनकी सरि नाही। इत बोधत उत भोजन खाही॥सूरदास प्रभुकी यह लीला। सदा करत ब्रजमें यह क्रीला ॥ २८ ॥ यह छवि देखि राधिका भूली। बात कहत सखियनसो फूली॥ अपुहि देव आपुही पुजेरी। आपुहि भोजन जेंवत ढेरी॥ अति आतुर जेंवतहैं भारी। एक वृषभानु बिलोवनहारी। नाम ताहि बदरौला नारी। ताकी बलि लई भुजा पसारी॥ उत गिरिसंग खात बलि सारी। बदरौलाकी बलि रुचिकारी॥सूरदास प्रभु जेवँनहारी। गिरि वपुरेसो को अधिकारी॥२९॥इतहि श्याम गोपन सँग ठाढे। भोजन करत अधिक रुचि बाढे॥ गिरितन शोभा श्याम बिराजै। श्यामहि छवि गिरिवरकी छाजै॥ गिरिवर उर पीतांबर डारे। मोतिनकी उर माला भारे॥ अँग भूपण श्रवणन मणिकुण्डल। मोरमुकुट शिर अलक है झुण्डल॥ छवि निरखत सब गोपकुमारी। गोवर्धन छवि श्यामअनुहारी॥ सूरश्याम लीला रसनायक। जन्मजन्म भक्तन सुखदायक॥३०॥ भोजन करत देव भए परसन। माँगहु नद तुम्हारे जो मन॥ भली करी तुम मेरी पूजा। सेवक तुमते और न दूजा॥जो मांगो सोइ फलमैं देहौं।जहां भाव ताहीपै रैहों॥मैसेयावश भयो तुम्हारे। जोइ फल चाहो लेहु सँवारे॥ यह सुनि चकृत भए नर नारी। भोजन कियो प्रथमही भारी॥

अब देखौ मुख बात करन है। ऐसेदेवकहांत्रिभुवनहै॥ कान्हकह्यो कछु मांगहु इनसों। गिरिदेवता देत परसनसों॥सूरश्याम देवता आप है।ब्रजजनकेभवतापहरतहै॥२१॥नंद यशोकहामांगोंस्वामी। तुम जानत सब अंतर्यामी॥ अष्टसिद्धि नवनिधि तुम दीनो। कृपासिंधु तुमरोईकीनो॥ कुशल रहें बलराम कन्हाई। हम इहि कारण करैं पुजाई॥ देवनको मणि गिरिवर तुम हौ। जहँतहँ व्यापक पूरन सम हौ॥तुम हरता तुमकरता सबके। देखिथकित नर नारिनगरके॥बडो देवता श्याम बतायो। प्रगट भए सब भोजन खायो॥सूर श्यामके जोइ मन आवै। सोइसोइ नानारूप बनावै॥ २२॥ मांगिलेहु कछु और पदारथ। सेवा सबै भई अब स्वारथ॥ फल मांग्यो बलराम कन्हाई। ये द्वै रहैं कुशल जु सदाई॥ इनहीते हम तुमको जान्यो। तब तुम गिरि गोवर्धन मान्यो॥ करत वृथाही इंद्र पुजाई। मेरी दीनी है ठकुराई॥कान्ह तुम्हारे मोको जाने। इनको रहौ सबै तुम माने॥इंद्र आइ चढिहै व्रजऊपर। यह कहिहैं नहिं गरौं भूपर॥नेकक इनहिंमारौं हैहे। श्याम उठाइ मोहि कर लैहै॥ सूरश्यामगिरिवरकीबानी।ब्रजजनसुनतसत्यकरि मानी॥२३॥ कौतुक देखत सुर नर भूले। रोमरोम गदगद मन फूले॥सुर विमान सुमनन बरषाए। जयध्वनि शब्द देव नर गाए॥ देव कह्यो ब्रजबासिनसों तब। पूजा भली करी मेरी सब॥ जाहु सबै मिलि सदन करौ सुख। श्यामकह्योगिरिगोवर्धनमुख॥ ग्वाल करत अस्तुतिभव ठाढे। भाव प्रेम सबक चित बाढे॥ भवन जाहु कहि श्रीमुखबानी। भोजनशेष श्याम कर आनी॥ बाँटि प्रसाद सबनिको दीन्हो।ब्रजनारी नर आनँद कीन्हो॥ सूरश्याम गोपन सुखकारी। चलौ सबो ब्रजको नर नारी॥२४॥दोउ कर जोरि भए सब ठाढे। धन्यधन्य भक्तनके चाढे॥ तुम भोगता तुमहिं प्रभु दाता। अखिलब्रह्मांड लोकके ज्ञाता॥तुमकोभोजनकौनकरावै। हितके वश तुमको कोउपावै॥तुमलायकहमरे कछु नाहीं॥सुनत श्याम ठाढे मुसकाहीं॥ललितासखी देवता चीन्हो। चंद्रावली राधिकहि दीन्हो॥देव बडो इह कुँवरकन्हाई॥कृपाजानि हरि ताहि चिन्हाई॥सूर श्याम कहि प्रगट सुनाई। भये तृप्त भोजन दिनगाई॥२५॥परसन चरण चलत मन वरषा। जात चले सब घोष शहरको॥ सुखसमेत मग जातचले सब। दूनी भीर भई तबते अब॥कोउ आगे कोउ पाछे आवत॥मारगमें कहूँ ठौर न पावत॥प्रथमहिंगयो डगरतिनपायो॥पाछेकेलोगन पछितायो॥ घरपहुँचे अबहीं नहिं कोई॥मारगमें अटके सब लोई॥डेरो परयो कोस चौरासी॥इतनेलोग जुरे ब्रजवासी॥ पैडे चलन नहीं कोउ पावत॥कितक दूरिब्रज पूंछत आवत॥सूरश्याम गुणसागर नागर॥ उत्तम लीला करी उजागर॥२६॥कोउ पहुँचे कोउ मारगमाहीं। बहुत गए घर बहुतक जाहीं॥ काहूके मन कछु दुख नाहीं। अरसपरस हँसि हँसि लपटाहीं॥ आनँद करत सबै ब्रज आए। निकट आनि लोगन नियराये॥ भीर भई बहु खोरि जहाँतहँ। जैसे नदी मिलन सागरमहँ॥नर नारी सरिता सब आगर॥सिंधु मनौ इह घोष उजागर॥मथनहार हरि रतन कुमारी॥चंद्रवदनराधा सुकुमारी॥ सूरश्याम आए नँदशाला। पहुँचे घरनि आइ नर बाला॥२७॥बडो देवता कान्ह पुजायो। ग्वाल गोप हँसि अंग मिलायो॥कान्ह धन्य धनि यशुमति जायो॥ ब्रज धनि धनि तुमते कहवायो॥धन्य नंद जिन तुम सुतपायो॥धनिधनि देव प्रगट दरशायो॥पूजामेटि इंद्र गिरि पूज्यो। परसन हमहि सदा प्रभु हूज्यो॥ कहाइंद्र बपुरो केहिलायक। गिरिदेवता सबहिके नायक॥ सूरदास प्रभुके गुण ऐसे। भक्तन बश दुष्टनको तैसे॥२८॥हरि सबके मन यह उपजाई।सुरपति निंदतगिरिहि बडाई॥वर्षवर्ष प्रति इंद्र पुजाई। कबहूं परसन भयो न आई॥पूजत रह्यो वृथाही सुरपति॥

सब मुख यह वाणी वर निंदति ॥ वडो देव यह गिरि गोवर्धन । इहै कहत गोकुल व्रजपुरजन॥ तहाँ दूत इक इन्द्र पठायो। व्रजकौतुक देखन वह आयो॥घरघर कहत बात नर नारी ।दूत सुन्यो सो श्रवण पसारी ॥ मानत गिरि निंदत सुरपतिको। हँसत दूत व्रजजन गई मतिको ॥ सूर सुनत इतनी रिस पाये । उठि तुरतहि सुरलोकहि आये ॥ ३९ ॥ ब्रह्म दई जाको ठकुराई । त्रिदशकोटि देवनके राई ॥ गिरिपूज्योतिनिहीविसराइ । जातिबुद्धि इनके मनआइ॥ शिव विरंचिजाकोकहै लायक । जाके में मघवासे पायक॥ यह कहतहि आये सुरलोकहि। पहुचे जाइ इन्द्रके ओकहि॥ दूतन ऐसिय जाइ सुनाई । बैठे जहां सुरनकेराई ॥ कर जोरे सन्मुख भै आई। पूछि उठे व्रजकी कुशलाई ॥ दूतन व्रजकी बात सुनाई। तुमहि मेटि पूज्यो गिरि जाई ॥ तुमहि निदारि गिरिवरहि बडाई । इन्द्र सुनतहि रहे देह कपाई ॥ सूर श्याम इह बुद्धि उपाई । ज्यो जानें व्रजमें यदुराई॥४०॥ग्वालन मोसो करी ढिठाई ।मोको अपनी जाति देखाई॥ तेंतिस कोटि सुरनको राई । तिहू भुवनभरि चलत बडाई॥ साहबसो जोकरै धुताई । ताको नहि कोऊ पतिआई ॥ इनि अपनी परतीति घटाई । मेरे बैर बांधिहै भाई॥नई रीति इन अबहिं चलाई। काहू इनहिं दियो बहिकाई ॥ ऐसी मति इन अबके पाई। काके शरन रहैगे जाई॥इन दीनो मोको बिसराई। नद आपनी प्रकृति गवाई ॥ जानी बात बुढाई आई।अहिर जाति कोई न पत्याई ॥मातपितानहि मानैं भाई ।जानिबूझि इन करी धिगाई।मेरी बलि पर्वतहि चढाई।गिरिवरसहितेव्रजहि वहाई॥ सूरदास सुरपति रिस पाई । कीडीतनु ज्यो पांख उपाई ॥ ४१ ॥ मोको निंदि पर्वतहि बदत । चारी कपट पछिज्यो फदत॥मरनकाल ऐसी बुधि होई । कछू करत कछुवे यह जोई ॥ खेलत खात रहे व्रजभीतर। नान्हे लोग तनक धन ईतर ॥ समयसमय वरषौ प्रतिपालौं। इनकी बुधि इनको अब घालौं ॥ मेरे मारतकौन राखिहैं। अहिरनकेमन यहै कांखिहैं॥जो मन जाकेसोइ फल पावै । नीब लगाइ आंब क्यो खावै ॥ विषके वृक्ष विषहि फल फलिहै । तामे दाख कहां क्यो मिलिहै॥अग्निर्त देखै करनावे। कहा करै तेहि अग्नि जरावै ॥ सूरदास इह सब कोउ जानैं। जो जाको सो ताको मानै ॥ ४२ ॥ पर्वत पहिले खोदि बहाऊं ।व्रजजन मारि पताल पठाऊं॥फूलि फूलि जेहि पूजा कीन्हो ।नेक न राखौं ताको चीन्हो॥ नद गोप नैनन यह देखें। बडे देवताको सुख पेखें ॥ निंदत मोहिं करी गिरिपूजा । जासो कहत और नहिं दूजा॥ गर्व करत गोवर्धन गिरिको । पर्वतमाह आइ वह फिरको ॥ डोंगरिको बल उनहिं बताऊ । ता पाछे व्रज खोदि वहाऊ॥राखौ नहीकाहु सब मारौं।व्रज गोकुलकोखोजि निवारौं॥को जानें कह गिरि कहँगोकुल भुवपर नहिं राखौं उनको कुल ॥सूरदास इह इन्द्र प्रतिज्ञा। व्रजवासिन सब करी अवज्ञा ॥४३॥ सुरपति क्रोधकियो अतिभारी । फरकत अधर नैन रतनारी ॥ भृतनि बोलाये दैदै गारी।मेघनि ल्यावो तुरत हँकारी ॥ एक कहत धाए सौंचारी । अति डरपे तनुकी सुधि हारी॥मेघवर्त जलवंत बोलावहु । सेन साजि तुरतहि लै आवहु ॥ कापर क्रोध कियो अमरापति ।महाप्रलय जियजानि डरे अति॥ मेघनसों यह बात सुनाई ।तुरत चलौ बोलै सुरराई॥ सेनासहित बोलाए तुमको।रिस करि तुरत पठाए हमको ॥ वेगि चलौ कछु विलम न लावहु । हमहिं कह्यो अबही लै आवहु॥ मेघवर्तसब सैन्य बोलाए । महाप्रलयके जे सब आए ॥ कछु हर्षे कछु मनहिं सकाने। प्रलय आहि की हमहिं रिसाने ॥ चूक परी हमते कछु नाही ! यह कहिकहि सब आतुर जाही ॥ मेघवर्त जलवर्त वारिवर्त्त । अनिलवर्त्त नभवर्त्त प्रवर्त्त ॥ बोलत चले आपनी बानी।

प्रभुसन्मुख सब पहुँचे आनी॥ गर्जि गर्जि घहरातहि आए। देवदेव कहि माथ नवाए॥ सूरदास डरपत सब जलधर। हमपर क्रोध किधौं काहूपर॥ ४४॥ चितवतहीं मन गए झुराई। सकुचि कह्यो कापर रिस पाई॥ क्षमा करहु आयसु हम पावैं। जापर कहौ ताहिपर धावैं॥ सेनसहित प्रभु हमहिं बोलाए। आज्ञा सुनत तुरत उठि धाए॥ऐसोकवनजाहि प्रभु कोपे। जीवनामसबतुम्ह-रेइ गोपे॥ सूर कही यह मेघन बानी। यह सुनिसुनि रिस कछुक बुझानी॥ ४५॥ मेघनिसों बोले सुरराई। अहिरन मोसों करी ढिठाई॥ मेरी दीन्हीं करत बडाई। जानिबूझि मोहिं दियो भुलाई॥ सदा करत मेरी सेवकाई। अब सेवत पर्वतकहँ जाई॥ इहीं काज तुमको हँकराये। भली करी सेना लिये आए॥ गाइ गोप ब्रज सबै बहावहु। पहिले पर्वत ढोंढ़ि ढहावहु॥जब यह सुनी इंद्रकी बानी। मेघन मन तब धीरज आनी॥ सूरदास यह सुनि घन तमके। कापर क्रोध करत प्रभु जमके॥४६॥ रिसलायक तापर रिस कीजे। यहि रिसते प्रभु देही छीजे॥ तुम प्रभु हमसे सेवक जाके। ऐसो कवन रहे तुम ताके॥ छिनहींमें ब्रज धोइ बहावैं। डूंगरको कहि नाउं न पावैं॥ आपु क्षमा करिये दिवराई। हम करिहैं उनकी पहुनाई॥ यह सुनिके हरपित चित कीन्हों। आदरसहित पान कर दीन्हों॥ प्रथमहिं देहु पहार बहाई। मेरी बलि वोही सब खाई॥ सूर इंद्र मेघनि समुझावत। हरखि चले घन आदर पावत॥४७॥ आयसु पाइ तुरतही धाये। अपनी सेना सबनि बुलाये॥ कह्यो सबनि ब्रजऊपर धावहु। घटाघोर करि गगन छपावहु॥ मेघ-वर्त जलवर्तक आगे। और मेघ सब पाछे लागे॥ गरजिउठेब्रजऊपर जाई। शब्द कियो आघात सुनाई॥ ब्रजके लोग डरे अतिभारी। आजु घटा दीखतिहै कारी॥ देखतदेखत अति अधिकायो। नेकहिमें रवि गगन छपायो॥ ऐसे मेघ कबहुँ नहिं देखे। अतिकारे काजर अवरेखे॥ सुनहु सूर ए मेघ डरावन। ब्रजवासी सब कहत भयावन॥ ४८॥ गरजि गरजि ब्रज घेरत आवैं। तरपि तरपि चपला चमकावैं॥ नर नारी सब देखत ठाढे। ये बादर परलयके काढे॥ दरदरात घहरात प्रबल अति। गोपी ग्वाल भए ऑरेगति॥ कहा होन अबहीं यह चाहत। जहँतहँ लोग इहै अवगाहत॥ खन भीतर खन बाहिरआवत। गगन देखि धीरज बिसरावत॥ सूरश्याम यह करी पुजाई। तातेसुरपति चढ्यो रिसाई॥४९॥ फिरत लोग जहँतहँ बितताने। कोहै अपनेकौन बिराने॥ ग्वाल गए जे धेनु चरावन। तिनहिं पर्‍यो बनमांझ परावन॥ गाइ बच्छकोउनसँभारें। जियकी सबको परी खँभारें॥ भागे आवत ब्रजही तनको। बिपति परी अति बन ग्वालनको॥ अंध धुंध मग कहूं न सूझे। ब्रजभीतर ब्रजहीको बूझे॥ जैसे तैसे ब्रज पहिचानत। अटकरही अटकर करि आनत॥ खोजत फिरें आपने घरको। कहा भयो भैया घोप शहरको॥ रोवत डोलें घरहि न पावें। द्वारद्वार घरको बिसरावें॥ सूर श्यामसुरपतिबिसरायो। गिरिकेपूजे यहफल पायो॥५०॥ यमुनाजलहिगईजोनारी। डारि चलीं शिर गागरि भारी॥ देखो मैं बालक कत छांड्यो। एक कहत अंगन दधि मांड्यो॥ एक कहत मारग नहिं पावति। एक सामुहे बोलि बतावति॥ ब्रजबासी सब अतिअकुलाने। कालिहि पूज्यो फल्यो बिहाने॥ कहां रहेअबकुँवरकन्हाई। गिरिगोवर्धनलेहिंबोलाई॥ जेंवत सहसभुजाधरिआवे। अब ढैभुज हमको देखरावे॥ यहदेवता खातहीलौंके। पाछेपुनि तुम कौनकहाँके॥ सूरश्यामसपनोप्रग-टायो। घरके देव सबनि बिसरायो॥५१॥ गर्जत घन अतिही घहरावत। कान्ह सुनत आनंद बढावत॥ कौतुक देखत ब्रजलोगनके। निकट रहत संगहि सँग जनके॥ यकसंतत घरके सब बासन। लीने फिरत घरहिके पासन॥ एक कहत जिनकी नहिं आसा। देखत सबै दुष्टके नाशा॥

सूर श्याम जानत ए गासा। कह पानी कह करै हुतासा ॥ ५२ ॥ मेघवर्त मेघनि समुझावत । वारबार गिरितनहिं बतावत ॥ पर्वतपर वरपहु तुम जाई । इहै कही हमको सुरराई ॥ ऐसे देहु पहार बहाई । नाउँ रहै नहिं ठौर जनाई ॥ सुरपतिकी वलि ये सब खाई ॥ ताके फल पावै गिरि-राई ॥ जेंवत कालि अधिक रुचि पाई ।सलिल देहु जेहिं तृपा बुझाई॥दिना चारि रहते जगऊपर। अब न रहन पावहु या भूपर ॥ सूर मेघ सुरपतिहि पठाये । ब्रजके लोगन तुमहिं वहाये ॥ ५३ ॥ बर्षतहैं घन गिरिके ऊपर। देखि देखि ब्रजलोग करत डर॥ ब्रजबासी सब कान्ह बतावत ।महा-प्रलय जल गिरिहि ढहावत ॥ झरहरात झारत झरि लावत।गिरिहि धोइ ब्रज ऊपर आवत॥ बिकल देखि गोकुलके वासी । दरश दियो सबको अविनाशी॥अविनाशीको दरशन पाये । तब सब मन परताप बढाये॥ नंद यशोदा सुतहित जानै । और सबैसुख अस्तुति गानै॥बर्षत गिरि झरपत ब्रज ऊपर । सो जल जँहतँह पूरन भूपर॥सूरदास प्रभु राखिलेहु अब।जैसे राखे अघावदन तब॥५४॥ राखिलेहु अब नंदकुमारा।गोसुत गाइ फिरत बिकरारा॥वर्षत बूँद लगे जनु सायक। राखि लेहु अब गोकुलनायक ॥ तुमबिनु कौन सहाय हमारे । नंदसुवन अब शरण तुम्हारे ॥ शरणशरण जब ब्रजजन बोले। धीरवचनदैदै दुख मोले॥यह बोले हँसि कृष्ण मुरारी ।गिरि कर धरि राखौंनर नारी॥ सूर श्याम चितए गिरिवर तन। विकल देखिकै गोसुत ब्रजजन॥५५॥गोवर्धन लीन्हो उचकाई। देखि विकल नर नारि कन्हाई ॥ अपने सुख ब्रजजन वितताये । बुन्द कइक ब्रजपर बरषाये ॥ वे डरपत आपुन हरपत मन । राखे रहैं जहाँ तहँ ब्रजजन ॥ घरिक देखि मनहीं सुख दीन्हों । वामभुजा धरि गिरिवर लीन्हों॥ सूरश्याम गिरि करगहि राख्यो। धीरधीर सबसोंकहि भाख्यो ॥५६॥श्याम धरचो गिरि गोवर्धन कर । राखिलिए ब्रजके नारी नर ॥ गोकुल ब्रज राख्यो सब घर घर। आनँद करत सबै ताही तर॥ बरपत मुसलाधार मघवावर। बूंद न आवत नेकहु भूपर ॥ धार अखंडित बरपत झरझर ॥ कहत मेघ धौं वहुब्रज गिरवर ॥ सलिल प्रलयको ढूंढत तरतर । बाजत शब्द नीरको धरधर॥ वे जानतजलजातहै दरदर । बीचहि जरतजात जल अंबर॥ सूरदास प्रभु कान्ह गर्वहर ।बरपत कहत गयो गिरिको जर ॥ ५७ ॥ बोलि लिए सब ग्वाल कन्हाई । टेकहु गिरि गोवर्धनराई ॥ आज सबै मिलि होहु सहाई । हँसतदेखि बलराम कन्हाई ॥ लकुटलिए कर टेकत जाई । कहत परस्पर लेहु उठाई ॥ वरपत इंद्र महाझरि लाई। अतिजल देखि सखा डरपाई॥ नँदनंदन बिन को गिरि धारै।ऐसेबल बिन कौन सँभारै॥नरखतेगिरे कौन गिरिराखै। बारबार कहिकहि यह भाषै ॥ सूरश्याम गिरिवर करलीन्हों । वर्षत मेघ चकृत मन कीन्हों ॥५८॥ बात कहत आपुसमें बादर ।इंद्र पठाएकरि हम आदर ॥ अब देखत कछु होत निरा-दर। वरपिवरपि ,घन भए मनकादर ॥ खीझत कहत मेघ सवहिनसों । वरपि कहा कीन्हो तवहिनसों ॥महाप्रलयको जल कहँ राखत ।डारिदेहु ब्रजपर कहा ताकत ॥ क्रोध सहित फिरि बर्पन लागे । ब्रजवासी आनँद अनुरागे ॥ग्वाल कहत तुम धन्य कन्हैया। वाम भुजा गिरि लिए उठैया॥ सूर श्याम तुमसरि कोउ नाहीं। वर्षत घन गिरि देखि खिसाहीं ॥५९॥ प्रलय मेघआए लेवाने।आपुसहीमें सबै रिसाने॥सात दिवस जल वरपि बुढाने।चकृत भए तनसुरतिभुलाने॥फिरि देखत जल कहां टराने।झुरिझुरिसबबादर विततानै॥बूँद नहींवन नेक बचाने।जलद अपुनकोंधृग करि माने॥ फिरि सब चलेअतिहिविकलाने।मनमें हारिमानि सकुचाने॥ सूरश्याम गोवर्धनराने । मूरख सुरपति अजहुँ न जाने ॥ ६०॥ मेघ चलेमुख फेरि अमरपुर।करी पुकार जाइ आगे सुर॥

भ्रमते टूटिगये सबके उर । जलबिनु भए मवै घन धवर । की मारी कै शरण उबारी । हममें कहा रह्यो अव गारी । जहँतहँ बादर रोवत बोले । श्रम अपने प्रभुआगे खोले ॥ मात दिवस नहिं मिटी लगारा । बरष्यो सलिल अखंडित धारा ॥ महाप्रलयजल नेक न वरष्यो । ब्रजवासी नीके अब निदरष्यो ॥ वैसोइगिरि वैसेइ ब्रजवासी । नेक नहुँ नहिं धरणिप्रगासी ॥ सूर सुतन सुरपती उदासी । देखन ए आए जलराशी ॥ ६१ ॥ चकृत भयो व्रज चाह सुनाई । पुनिपुनि वृझत मेघ बुलाई ॥ कहां गयो जल प्रलयकालको । कहा कहौं सब तन बेहालको ॥ कहा करें अपनो बल कीन्हो । व्याकुल रोइरोइ तब दीन्हो ॥ दंड एक वरषै मन लाइ । पृष्ण होत गगनलौं आइ ॥ पर्वतमें है कोउ अवतार । सुरपति मन यह करतविचार ॥ सूर इंद्र सुरगण हँकराये । आज्ञा सुनत तुरत उठि आये ॥ ६२ ॥ सुरपतिआगे भए सब ठाढे । चिंता सबहिनके मन बाढे ॥ कौन काज सुरराज बोलाए । सकुचसहित भृत्य ते आए ॥ कहा कहौं कछु कहत न आवे । मघवनकी गति सुरन बतावे ॥ ब्रजवासिन मोको बिसरायो । भोजन लै सब गिरिहि चढायो ॥ मोको मेटि पर्वतहि थाप्यो ॥ तब में थरथराय रिस कांप्यो ॥ सूरदास यह सुरन सुनाई । या कारज तुमलिए बोलाई ॥ ६३ ॥ सुरनकही सुरपतिके आगे । सन्मुख कहत सकुच हम लागे ॥ सकुचत कत सो बात सुनावहु । नीके करि मोको समुझावहु ॥ नीकी भांति सुनौ सुर गई । ब्रजमें ब्रह्म प्रगट भए आई ॥ तुम जानत जब धरणि पुकारी । पापहि पाप भई अति भारी ॥ पाछे शेष संग श्री प्यारी । ते ब्रजभीतर हैं वपुधारी ॥ ब्रह्मकथा कहि आदि पसारी । तिनमोहमकीनीअधिकारी ॥ सुरदास प्रभु गिरि कर धारी । यह सुनि इंद्र डरयो मन भारी ॥ ६४ ॥ यह मोको तबही न सुनाई । मैं यहुते कीन्ही अधमाई ॥ पूरन ब्रह्म रहे ब्रज आई । काहू तौ मोहिं सुधि न दिवाई । सुरनि कही नहिं करी भलाई । आजु कह्यो जय महत गँवाई ॥ यह सुनि अमर गए मुरझाई । सुनत राज हम जानिनपाई ॥ अबसुनिए आपुनमनलाई । ब्रजहि चलौ नहिं और उपाई ॥ वे हैं कृपासिंधु करुणाकर । क्षमा करहिंगे श्रीसुंदरवर ॥ और कछू मनमें जिनि आनहु । हमजो कहैं सत्य करि मानहु ॥ सूर सुरन यह बात सुनाई । सुरपति शरण चले अकुलाई ॥ ६५ ॥ जब जान्यो ब्रज देव मुरारी । उतरिगई तब गर्वखुमारी ॥ व्याकुल भयो डरयो जिय भारी । अनजानतकीन्ही अधिकारी ॥ वे ठिरहे ते नहिंबनिआवे । ऐसोकोजोमोहिं बचावे ॥ वार वार यह कहि पछितावे । जाउँ शरण बलमनहि धरावे ॥ जाइ परौं चरणन गिरधारी । की मारौ की मोहि उधारौ ॥ अमरन कह्यो करौ अबसारी । ऐरावतकोलेहु हकारी ॥ सूर शरणसुरपति चले धाई । लिये अमरगण संग लगाई ॥ ६६ ॥ करत विचार चल्यो सन्मुख ब्रज । लटपटात पग धरणि धरत गज ॥ कोटि इंद्र जाके रोमनि रज । नज अवतार लियो माया तज ॥ उतरि गगन पुहुमी पर आए । श्वेतवरन ऐरावति लाए ॥ ब्रजवासी सब देखन पाए । चकृत भए मन मनहि भ्रमाए ॥ कहत सुनी लोगन सुख वाता । येई हैं सुरपतिसुरज्ञाता ॥ देखि सेन ब्रजलोग सकात । यह आयो कीन्हे कछु घात ॥ सूर श्यामकोजाइसुनाए । सुरपतिसेन साजि ब्रज आए ॥ ६७ ॥ निकट जानित्यागे वाहनको । सकुचत चले कृष्ण सन्मुखको । कछु आनंद कछुक मनमें दुख । हर्ष विषाद तक्योहरिसन्मुख ॥ परयो धाइ चरणन गिरनाई । कृपासिंधु राखहु शरणाई ॥ किए अपराध बहुत बिन जाने । प्रभु उठाइलिए कछु मुसकाने ॥ श्रीमुख कह्यो उठहुसुरराजा । बदन उठाइ सकत नहिं लाजा ॥ ये दिन वृथा गएबिनकाजा । तुमको नहिं जान्यो ब्रजराजा ॥ सूर श्याम लीन्हे उरलाई । अशरनशरन निगम यह गाई ॥ ६८ ॥ हँसि हँसि कहत कृष्ण मुखबानी । हम नाहिन रिस तुमपर आनी ॥ तुम कत

अति शका जिय जानी । भली करी ब्रजराख्यो पानी ॥ यह सुनि इंद्र अतिहि सकुचान्यो । ब्रज अवतार नही मैं जान्यो ॥ राखिराखि त्रिभुवनके नाथा। नहि मोते कोउ अवर अनाथा॥ फिरि फिरि चरण धरत लैमाथा । क्षमा करहु राखहु मोहिं साथा ॥ रविआगे खद्योत प्रकाशा। मणिआगे ज्यो दीपक नाशा॥कोटि इद्र रचि कोटि बिनाशा । मोहिं गरीबकी केतिक आशा॥ दीनवचन सुनि भवके बासा । क्षमा भयो जल परे हुतासा ॥ अमरापति चरणन तर लोटत । रही नही मनमे कहुँ खोटत ॥ उभय भुजा करि लियो उठाइ । सुरपति शीश अभय कर नाइ॥ हँसि दीन्ही प्रभु लोकवडाई । श्रीमुख कह्यो करो सुख जाई॥धन्यधन्य जनके सुखदाई । जय जय ध्वनि देवन मुख गाई ॥ शिव बिरचि चतुरानन नारद ।गौरीसुत दोऊसँग शारद॥रविशशि वरुण अनल यमराजा । आजु भए सब पूरन काजा॥ अशरनशरन सदा तुव बानो।यहलीलाप्रभु तुमही जानो ॥ मातासो सुत करै ढिठाई । माताफिरिताको सुखदाई ॥ ज्यो धरनीहल खोदि विनाशै। सन्मुख सतगुण फलहि प्रकाशै ॥ कर कुठारलैतरुहिगिरावै।वहकाटैवहछायाछावै॥जैसे दशन जीभ दलिजाइ । तब कासो सो कहै रिसाइ ॥धनिव्रजधनिगोकुलवृन्दावन । धनि यमुना धनि लता कुजघन॥धन्य नदधनिजननियशोदा।बालकेलिहरिकेरसमोदा॥अस्तुति सुनि मनहर्ष बढ़ायो। साधुसाधुकहिसुरनिसुनायो॥तुमहिजाइजबमोहिजगायो।तुम्हरेहि काजदेहवरिआयो ॥ तुमै राखि असुरन सहारो । तनु धरि धरणीभार उतारो ॥ आवत जात बहुत श्रम पायो । जाहु भवन करि कृपा पठायो ॥ कर शिर धरि धारि चले देवगन । पहुँचे अमरलोक आनँद मन ॥ यह लीला सुर घरनिसुनाई । गाइउठी सुरनारि बधाई ॥ अमरलोक आनद भए सब। हर्षसहित आए सुरपति जब॥सूरदास सुरपति अति हरप्यो । जैजैध्वनि सुमननि ब्रज बरप्यो॥६९॥हरिकरते गिरिराज उतारचो । सात दिवसजलप्रलयसँभारचो ॥ ग्वाल कहत कैमेगिरिधारचो।कैसे सुरपति गर्व निवारचो॥ वज्रायुध जल वर्पि सिराने । परचो चरण तब प्रभुकरि जाने॥ हम संग सदा रहतहैं ऐसे । यह करतूति करत तुम कैसे ॥ हम हिलिमिलि तुम गाइ चरावत । नद यशोदा सुवन कहावत ॥ देखिरही सब घोप कुमारी । कोटि काम छविपर बलिहारी ॥ कर जोरत रवि गोद पसारैं । गिरिवरपति प्रभु होहिं हमारैं ॥ ऐसो गिरि गोवर्द्धन भारी । कब लीन्हो कबधरचो उतारी ॥ तनकतनक भुज तनक कन्हाई । यह कहिउठी यशोदा माई॥ कैसे पर्वत लियोउचकाई ।भुज चापति चूमति बलिजाई॥बारबार निरखि पछिताई। हँसतदेखि ठाढेबल भाई॥इनकी महिमा काहु न पाई । गिरिवर धरचो इहैबहुताई ॥ एक एक रोम कोटि ब्रह्मडा । रवि शशि धरणीधर नन खडा ॥ यहिब्रज जन्म लियो कै बारा। जहांतहां जल थल अवतारा ॥ प्रगटहोत भक्तहिके काजा । ब्रह्म कीट सम सबके राजा ॥ जहँ जहँ गाढ परै तहँ अवै । गरुड छांडि तब सन्मुख धावै ॥ ब्रजहीमे नित करत बिहार । सहज स्वभाव भक्त हितकार ॥ यहलीला इनको अति भावै। देह धरत पुनि पुनि प्रगटावै ॥ नेकु तजत नहिं ब्रज नर नारी॥इनके सुख गिरि धरत मुरारी॥ गर्बवत सुरपति चढिआयो ।नामकरज गिरिटेकि दिखायो॥ ऐसे हैं प्रभु गर्वप्रहारी । मुख चूमति यशुमति महतारी ॥ यह लीला जो नितप्रति गावै॥ आपुन सिखि औरनि सिखरावै ॥ सुनै सीख पढि मनमें राखै । प्रेमसहित मुखते पुनि भाखै॥ भक्ति मुक्तिकी केतिक आसा। सदा रहत हरि तिनके पासा ॥ चतुरानन जाको रस मानै । शेष सहस मुख जाहि बखानै ॥ आदि अत कोऊ नहिं पावै । जाको निगम नेत निति गावै ॥ सूरदास

प्रभु सबके स्वामी। शरन राखि मोहिं अंतर्यामी ॥७०॥ राग गोरठ ॥ तेरे भुजन बहुत बल होइ कन्हैया। बारबार भुज देखि तनकसे कहति यशोदा मैया॥श्यामकहत नहिंभुजापिरानी ग्वालन कियो सहैया॥लकुटन टेकि सबन मिलि राख्यो अरु बाबा नंदरैया॥मोसों क्यों रहतो गोवर्धन अतिहि बडो वह भारी॥सूरश्यामयहकहिपरबोध्योदेखिचकृतमहतारी ॥७१॥ राग देवगंधार ॥ सब मिलि पूजो हरिकी बँहियाँ॥जो नहिं लेत उठाइ गोवर्धनको बांचत ब्रजमहियाँ॥कोमल कर गिरि धरयो घोष पर शरद कमलकी नहियाँ।सूरदास प्रभु तुमरे दरशको अनंद होत ब्रजमहियाँ ॥१॥ अध्याय ॥२८॥ अथ नंदको वरुण लेगये॥राग बिलावल ॥उत्तम शुक्ल एकादशि आई। भक्ति मुक्ति दायक सुखदाई ॥ निराहार जलपान विवर्जित। पाप न रहत धर्मफल अर्जित ॥ नारायणहित ध्यान लगायो। और नहीं कहुँ मन बिरमायो ॥ बासर ध्यान करत सब बीत्यो। निशि जागरण करन मन चीत्यो ॥ पाटंबर दिवि मंदिर छायो। शालिग्राम तहां बैठायो ॥ धूप दीप नैवेद्य चढायो। पुहुपमंडली तापर छायो ॥ प्रेमसहित करि भोग लगायो। आरति करि तब माथो नायो ॥ सादर सहित करी नंद पूजा। तुम तजि देव और नहिं दूजा॥तृतिय पहर जब रैनि गमाई। नंदमहरिसोंकहीबुझाई॥ दंड एक द्वादशी सकारे। पारनकी विधि करो सबारे ॥ यह कहि नंद गए यमुनातट। लै धोती विधि कियो कर्म पट ॥ झारी भरि यमुनाजल लीनो। बाहिरजाइ देहकृत कीनो ॥ लै माटीकर चरन पखारी। अति उत्तमसों करी सुरारी॥ अँचव लै पैठे नंद पानी। जल भाजन दूतन तब जानी ॥ बरुनपास लाए ततकालहिं।नंदहि बाँधि लैगये पतालहिं॥जान्यो वरुण कृष्णके तातहिं। मनहीमन हर्षित इहि बातहिं ॥ भीतर लै राखे नंद नीके। अंतपुर महलनरानीके॥ रानीसबन नंदको देख्यो। धन्य जन्म अपनो करि लेख्यो॥ जिनके सुत त्रैलोकगुसाईं। सुर नरमुनि सबकेहैं साईं ॥ वरुण कही मन हर्ष बढाए। बडी बात भई नंदहि ल्याए॥ अंतर्यामी जानतवाता। अब आवत ह्वैहैं जगत्राता॥जाको ब्रह्मा अंत न पायो। जाको मुनि जन ध्यान लगायो॥जाको नेति निगम गावतहैं। जाको सुनिनरजन ध्यावतहैं ॥ जाको ध्यानधरैं शिव योगी।जाको सेवतसुरपति भोगी ॥ जो प्रभुहै जलथल सब व्यापक। जो है कमदर्पको दापक ॥ गुणअतीत अविगत अविनाशी। सो ब्रजमें खेलत सुखराशी ॥धनि मेरे भाग नंदहि ल्याए।करुणामय अब आवत धाए ॥ महरि कही तब सब ग्वालनिको। बडी बार भइ नंदमहरको ॥ गए ग्वाल तब नंद बोलावन। देख्यो जाइ यमुनजलपावन॥जहँतहँग्वाल ढूंढि घर आए। धोती अरुझारी ले लाए॥मनमनशोच करैअकुलाए। कहि यशुदासों नंद न पाए॥धोती झारी तटमें पाई।सुनत महरिमुख गयो सुखाई॥ निशा अकेले आजु सिधाए।काहू धौं जलचर धरि खाए॥यह कहि यशुमति रोइपुकार्यो।मोहनरजत कत रैनिसिधार्यो॥ब्रजजन लोग सबैउठिधाए॥यमुनाके तट नंद न पाए॥बनबन ढूंढत गाउँ मझारि। नंदनंद कहि लोग पुकारैं॥खेलतते हरि हलधर आए।रोवत मात देखि दुख पाए॥ कत रोवतहै यशुदा मैया।पूछत जननीसों दोउ भैया॥ कहत श्याम जनि रोवहु माता।अबही आवतहैं नंद ताता॥मोसों कहिगए अबही आवन। रोवै मति मैं जात बोलावन ॥ सबके अंतर्यामी हैहारे। लैगयो बांधि बरुन नंदहि धारि॥यह कारज मैं वाको दीन्हो॥ वाके दूतन नंदन चीन्हो॥ बरुनलोक तबही प्रभु आए।सुनत बरुन आतुर ह्वै धाए ॥ आनँद कियोदेखि हरिको मुख। कोटि जन्मके गए सबै दुख ॥ धन्य भाग्य मेरे बडे आजु। चरणकमल दरशन सुखकाजु॥पाटंबर पाँवडे डसाए। महलन बंदनवार बँधाए ॥ रत्नखचित सिंहासन धारयो। तिहिपर कृष्णहि लै बैठारयो॥

अपने कर प्रभु चरण पखारे । जे कमला उरते नहिं टारे॥ जे पद परसि सुरसरी आई । तिहूंलोक है विदित बडाई ॥ ते पद बरुन हाथ ले धोए। जन्म जन्मके पातक खोए॥ कृपासिंधु अब शरन तुम्हारी। इहि कारण अपराध बिचारी ॥ आपु चले हरि नंदहि देखन । बैठे नंद राजवर भेपन॥ नृपरानी सब आगे ठाढीं। मुखमुख ते सब अस्तुति काढीं ॥ पाँइन परीं कृष्णके रानी। धन्य जन्म सबहिन कहि मानी॥ धन्य नंद धनि धन्य यशोदा। धनि [illegible] गोकुलकी नारी। पूरन ब्रह्म तहां बपु धारी ॥ शेप सहस [illegible] बडाई ॥ देखि नंद तब करत बिचारा । यह कोउ आहि बडो अवतारा ॥ नंद मनहि अति हर्ष बढ़ायो । कृपासिंधु मेरे गृह आयो ॥ बरुनहि दीनी लोक बडाई । तुम हौ एहि पतालके राई ॥ कहा देत मोहिं लोक बडाई । बृंदावन रज करौ सदाई॥ बरुन थाप नंदहि ले आए । महर गोप सब देखन धाए॥ नंदहि बूझत हैं सब बाता । हम अति दुखित भए सब गाता॥ एकादशी कालिह मैं कीनों। निशि जागरन नेम यह लीनों॥ तीन पहर निशि जागि गँवाई । तब लीनी मैं महरि बुलाई॥ एकदंड द्वादशी सुनाई । ता कारण मैं करी चँडाई ॥ एकदंड द्वादशि कैयो पल। रैनि अछत मैं गयो यमुनजल॥ गयो यमुन कटिलौं भीतर भरि। बरुनदूत ले गयो मोहिं धरि॥ तहँते जाइ कृष्ण मोहिं ल्यायो। हम कोउ बडे पुरुष है पायो॥ इनकी महिमा कोउ न जानै । बरुन कोटिमुख कहे बखाने ॥ रानिन सहित परचो चरणनतर। बंदनवार बँधे महलनि घर ॥ मेरो कह्यो सत्यके मानों । इनको नर देही जिनि जानों ॥ यशुमति सुनि चकृत इह बानी । कहत कहा यह अकथ कहानी॥ ब्रज नर नारि सुनत जे गाथा । इनते हम सब भए सनाथा ॥ मया मोह करि सबै भुलाए। नंदहि वरुनलोकते ल्याए ॥ नंद एकादशि बरणि सुनाई । कहत सुनत सबके मन भाई ॥ जो या पदको सुनै सुनावै। एकादशिव्रतको फल पावै॥ यह प्रताप नंदहि दिखराई। सूरदास प्रभु गोकुलराई॥ १॥ राग कान्हरो॥ नंदहि कहति यशोदा रानी । मोहिं बरजत निशि गए यमुनतट पैठे जाइ अकेले पानी॥ अब तो कुशल परी पुण्य निते द्विजन करौ बहुदान। बोलि लेहु बाजने बजावहु देहु मिठाई पान॥ गावति मंगल नारि बधाई बाजत नंददुआर। सुनहु सूर यह कहति यशोदा नंद बचे इहिबार ॥२॥ राग बिलावल॥ कहत नंद यशुमति सुनि बात। अब अपने जिय सोचु करति कत जाके त्रिभुवनपति सो तात ॥ गर्ग सुनाइ कही जो बाणी सोई प्रगट होतिहि जात । इनते नहीं और कोउ समरथ एईहैं सबहीके तात ॥ मायारूप मोहिनी लगाइ डरि भूले सबै जे गाथ । सूर श्याम खेलतते आए माखनदे माँ हाथ॥ ३॥ राग गौरी ॥ तबहिं यशोदा माखन ल्याइ । मैं मथिके अबहीं धरि राख्यो तुम्हरे काज मेरे कुँवर कन्हाइ॥ माँगिलेहु एही बिधि मोसे मो आगे तुम खाहु। बाहेर जिन कबहूं खैये सुत डीठि लगैगी काहू॥ तनकतनक कछु खाहु लाल मेरे ज्यों बढिआवै देह। सूर श्याम अब होहु सयाने बैरिनके मुख खेह॥ ४॥ अथ दानलीला॥ राग बिलावल ॥ भक्तनके सुखदायक श्याम । इस्त्री पुरुष नहीं कछु नाम ॥ संकटमें जिनि जहां पुकारे । तहां प्रगटि तिनको उद्धारे ॥ सुख भीतर जिमि सुमिरन कीन्हों । तिनको दरश तहां हरि दीन्हों ॥ दुख सुख में जो हरिको ध्यावै । तिनको नेक न हरि बिसरावै ॥ चितदै भजै कौनहू भाउ । ताको तैसो त्रिभुवन राउ ॥ कामातुर गोपी हरि ध्यायो । मन बच कर्महिसों मन लायो। षटऋतु तप कीनों तनु गारी । होहिं हमारे पति गिरिधारी॥ अंतर्यामी जानत सबकी। प्रीति पुरातन शाली तबकी॥ बसन हरे गोपिन सुख दीनों। नाना बिधि कौतुकरस कीनो ॥ युवतिनके इह ध्यान सदाई । नेक न अंतर होइ कन्हाई। घाट

बाट यमुनातट रोकै । मारग चलत जहां तहं टोकै ॥ काहूकी गागरि धरि फोरै । काहूसों हँसि बदन सकोरै ॥ काहूको अकम भरि भेंटै । कामव्यथा तरुणिनके मेटै ॥ ब्रह्मकीटआदिकेस्वामी। प्रभुहैं [illegible] ॥ ब्रजयुवती नहिं नेक [illegible] देखैमदनगोपाला॥ अँग अँग सजि शृंगार वर कामिनि। चली मनहुयूथनि जुरि दामिनि॥ कटिकिंकिनिनूपुरबिछियाधुनि । मनहु मदनके गजघंटा सुनि ॥ जाति माट मटुकी सिर धरिकै । मुखमुख गान करति गुण हरिकै ॥ चन्द्रवदनि तनु अति सुकुमारी । अपने मन मन कृष्ण पियारी ॥ देखि सबनि रीझे बनवारी । तब मनमें इक बुद्धि बिचारी ॥ अब दधि दान रचौं इक लीला। युवतिन संग करौं रस लीला ॥ सूर श्याम सँग सखन बोलायो। यह लीला कहि सुख उपजायो ॥ ५ ॥ राग जयतश्री ॥

सुनत हँसी सुख होहि दान दहीको लाग्यो। निशिदिनमथुरा दधि बेचैश्यामदानअबमांग्यो॥ प्रात होत उठि कान्ह टेरि सब सखनि बोलाए । तेइतेइ लीने साथ मिले जे प्रकृति बनाए॥ डगरि गए अनजानही गह्यो जाइ बन बाट । पेडपेड तरुके लगे ठाटि ठगनको ठाट ॥ ६ ॥ इहां ग्वालि बनि बनि जुरी सब सखी सहेली । सिरनि लिए दधिदूध सबै यौवन अलबेली ॥ हँसन परस्पर आपुमें चली जाहिं जिय भोर । तबहि आनि घातहि परी छेकिलिए चहुंओर ॥ ॥७॥ देखि अचानक भीर भई सब चकृत किशोरी । ज्यों मृगशावकयूथमध्य बागुरि चहुंओरी॥ शकितह्वै ठाढी भईं हाथ पाँव नहिं डोल । मनहु चित्रकीसी लिखी मुखहि न आवै बोल॥ ८॥ तब उठि बोले ग्वाल डरहु जिनि कान्ह दुहाई। ठग तस्कर कोउ नाहि दान यदुपति सुखदाई॥ आवत निशि दिनही रहो श्यामराज भय नाहिं।जो कछु लागै दानको तुमयाटिदेहुनेहिमाहीं ९॥ तब हँसि बोली ग्वालि नाम जब कान्ह सुनायो। चोरी भरयो न पेट आनिअबदानलगायो॥तब उलटी पलटी फबी जब शिशुरहे कन्हाइ।अब ओहि कछु धोखे करौंतो छिनकमाहँपतिजाइ १०॥तब उठि बोले कान्ह रही तुम पोच सदाई । महरि महर सुखपाइ शंकतजि करहु ढिठाई ॥ अब यह धोखो मेटिकै छांडिदेहु अभिमान । करि लेखो अब दानको दियहि पाइहौ जान ॥ ११ ॥ तब हँसि बोली ग्वालि डरनि तुम तजी ढिठाई। बहुते नद निकाज भयो तुब तप अधिकाई ॥कालिहि घर घर डोलते खात दही चुराइ । राति कछू सपनो भयो प्रात भई ठकुराइ ॥ १२ ॥ भली कही नहिं ग्वालि बातको भेद न पायो । पितारचित धन धाम पुत्रके काजहि आयो ॥ तुमसे प्रजा बसाइकै रासैहैं इह पाइ । ते तुम हम सरबस भई अब मिलहु छोंडि चतुराइ ॥ १३ ॥ तब झुकि बोली ग्वालिनात किन कहौ सम्हारे । ऐसो को बढिगयो प्रजाह्वै बसैतुम्हारे ॥ हमहू तुमनृपकसके बसै बास इक ठाउँ।देखौ धौं घरजाइकै हम तजैं तुम्हारो गाउँ॥१४॥गाउँ हमारो छोंडि जाइ बसिहौ केहिकेरे।तीन लोकमे कौन जीन नाहिन बश मेरे ॥कसहि को गनती गनै जाके हमहि कहाहु । दिये दान पै बांचिहो नातरु नहीं निबाहु॥१५॥छोटे मुँह बडी बात कहो किनि आपु सँभारे। तीन लोक अरु कंस कबहिं बश भए तुम्हारे ॥ यह बाणी तिनसो कहो जो कोउ होइ अजान।ऐसे होहु जु रावरे हम जानति परवान॥११६॥लेखो जेहे भूलि कहूंकी बात चलावत। झूठी मिलवत आनि सुनत हमको नहिं भावत ॥हमसो लीजे दानके दाम सबै परखाइ । थैली मांगि पठाइए पीतांबर फटिजाइ ॥ १७ ॥ काहेको सतरात बात में सांची भाषत । झूठी सुन तुम ग्वारि बातमेरी गहि नारखत ॥ कह्यो मानि लेखो करौ देहु हमारो दान।सौंह बबा मोहि

नंदकी ऐसी देउँ न जान ॥ १८ ॥ नद दोहाई देत कहा तुम कंस दोहाई । काहेको अठिलात कान्ह छाँडौ लरिकाई । पहिली परिपाटी चलौ नई चली क्यो आजु। नृपति जानि जो पावई पुनिपै होइ अकाजु॥१९ ॥लरिका मोको कहति नाहिं देखी लरिकाई। पय पीवत सहारि पूतना स्वर्ग पठाई॥अघा बका शकटा तृणा केशीपुख कर नाश।गिरि गोवर्धन कर धरचो यहमेरीलरि-काइ॥२०॥ मवे भली तुम करी हमें अब कहत कहा हो। ऐसी बात करो हो मोहन जैसी होइ लहाहो॥हँसी पलक ऊँचारिकी बीननलागे याम ।वनमें राखी रोकिकै नारि पराई श्याम ॥२१॥ हँसी करतही तुमहि भली गइ मति ब्रजनारी । तुम हमको हम तुमहि दई बिन काजहि गारी॥ बात कहो कछु जानिकै वृथा बढावत शोर।सदाजाहु चोरटी भई आजु परी फद मोर ॥ ॥२२॥ माँगि लेहु दधि देहिं दानको नाउ मिटावहु । देत दुहाई नदराइकी दान न मदा लगावहु॥ हमहिं कहतहो चोरटी आपु भयेहो साहु । चोरी करत बडे भए मही छाक लै खाहु॥२३॥ दही लेतहो छीनि दान अगनिको लेहीं । लेहीं रूपहि दान दान यौवनपै केहौ॥तुम सब कचन भार लै मेरे मारग जाहु। महीदही दिखरावहू कैसे होत निबाहु॥२४॥जाहुभलेहो कान्ह दानअँग अगको माँगत। हमरो यौवन रूप आंखि इनके गडि लागत॥सबै चलीझहराइकै मटुकीशीशउठाइ । रिसकरि कसि कटि पीतपट ग्वारि गही हरि धाइ॥२५॥मटुकी लई छिडाइ हार चोलीबद तोरचो । भुजभरि धरि अकवारि बांह गहिकै झकझोरचो॥माखन दधि लियोछीनिकै कह्यो ग्वाल सब खाहु ।मुख झगरति आनद उर घिरषतहैं घर जाहु ॥२६॥देखो हरिको काम पटकि चोली बद तोरयो।हमको भरि अकवारि बांह धरि धरि झकझोरयो॥यशुमतिसो कहिये चलो अब प्रगटी तरुनाइ । दधि माखन सब छीनिलै ग्वालनि दए खवाइ ॥२७॥ जाइ कहो जू भली बात मैयाके आगे ।तुमको जोवन रूप दानदेती नहिंमांगे॥तुम जो कहौजाइकै जननीनहीपत्याइ। सूर सुनहु री ग्वालिनी आवहुगी पछिताइ ॥ २८ ॥ राग काफी॥ ऐसे दान न मागिये जो हमपै दियो न जाइ। वनमें पाइ अकेली युवतिनि मारग रोकत धाइ॥ घाट बाट अवघट यमुनातट बातें कहत बनाइ ।कोऊऐसो दान लेतहै कौने सिखै पठाइ॥हमनाहिंजानतितुम थोनाहोरैहो गारी खाइ। जो रस चाहो सो रस नाही गोरस पियहु अघाइ॥औरनसो लैलीजियेगिरिधरतबहमदेहिं बोलाइ।सूर श्याम कत करतअचगरी हमसो कुवर कन्हाइ॥२९॥ राग नट॥दानलेहु देहु जानकाहेको कान्ह देतहो गारी। जो कोऊ कह्यो करैरी हठि याही मारग आवे ब्रजनारी ॥ भली करी दधि माखन खायो चोली हार तोरि सब डारी।जोबन दान कहू कोउ माँगत यह सुनि लाजन मारी ॥ होत अवार दूरि घर जैवे पैयां लागें डरतिहैं भारी । हमहिं तुमहिं कैसोई झगरो सूर सुजान हम गवारी ॥ ३० ॥रागभैरव॥ भोरहिते कान्ह करत मोसो झगरो । औरन छाडि परे हठ हमसो दिनप्रति कलह करत गहि डगरो॥ अन बोहनी तनक नहि देहो ऐसेहि छीनि लेहु वरु सगरो । सब कोऊ जात मधुपुरी बेचन कौने दियो दिखावहुकगरो॥अंचलऐंचि ऐंचिराखतहो जान देहु अब होतहै दगरो । मुख चूमति हसि कठ लगावति आपुहि कहति न लाल अचगरो॥ सूरसनेह ग्वारि मन अटक्यो छांडहु दियो परत नहिं पगरो । परम मगन है रही चितै मुख सबते भाग याहिको अगरो॥३१॥ रागकान्हरो॥दान लेहौ सब अगनिको। अति मदगलित तालफलते गुरु इनि युग उरज उतगनिको ॥ खजन कज मीन मृगशावक भवर जवर भ्रुवभगनिको । कुदकली वधूक विवफल वर ताटक तरगनिको॥ कोकिल कीर कपोत किसलता हाटक हस

फनिगनिको।सूरदास प्रभु हमि वश कीन्हों नायक कोटि अनंगनिको॥३२॥ राग कार्या॥ कान्ह भलेहो भलेहो। अंगदान हममों तुम मांगत उलटी रीति चलेहो॥कौन दोष कीन्हों माखन छीनो काहेको तुम ओरहि भाव मिलेहो।दान लेहु कछु और कहतहो कौन प्रकृतिही-लेहो॥ हारे तोरयो चीरहि फाग्यो बोलन बोल हठीलेहो।ऐसो हाल हमारो कीन्हों जातीहती दही लेहो॥ हमहेंतुम्हरे गाउकी कछुयाते ऐंड गही लेहो। सूरदास प्रभु आँग भए अब तुम नहिं होहु पहीलेहो ॥३३॥ राग पूर्वी॥तूमोसोंदान मागिकिनु लेहो नंदकेलाला। ऐमीबातनिझगरेठानोहो मूरख तेरो कौन हवाला॥ नंदमहरकी कानि करतहें छांडिदेहु ऐसो ख्याला।सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हो हँसतहि ग्वारिनि भई बिहाला ॥३४॥ राग गूजरी॥ सूधे दान काहे न लेत । और अटपटी छांडि नदसुत रहहु कपावत चेत ॥ वृंदावनकी वीथिनि तकि तकि रहत गुमान समेत। इनि बातनि पति पावत मोहन जानत होहु अचेत ॥ अबलनि ग्वकि खंकि पकरतहो मारग चलन न देत। मोईतुम कछु कहि न जनावत कहा तुम्हारे हेत॥आजु न जानदेहुं री ग्वालिनि बहुत दिननिको नेत। सूरदास प्रभु कुजभवन चलि जोर उरनि नख देत॥ ३५॥ राग कान्हरो ॥जोवनदान लेउगोतुमसो।जाकेबल तुमवदतिन काहुहि कहा दुगवति हमसों॥ऐमो धन तुम लियेफिरतिहो दानदेत मतराति।अतिहि गर्वते रह्यौ न मोसों नितप्रति आनतिजाति॥ कंचन कलश महारसभारे हमहू तनक चखावहु। सूर सुनहु करि भाग मगति कत हमहि न मोल दिखावहु॥३६॥ कहा कहत तू नदढिठोना।सखी सुनहु री बातें जैसी करत अतिहिअचभौना॥ वदन सकोरत भौंह मरोरतनैननिमें कछु टोना॥ जोवनदान कहाधों मांगत भई कहुं नहिं होना॥ हम कहे बात सुनहु मनमोहन कालि रहे तुम छौना। सूरश्याम गारि कहा दीजे इह बुधिते घर खोना॥३७॥राग पूर्वी॥ऐसे जिन बोलहु नदलाला। छाँडिदेहु अचरा मेरो नीके जानत औरसी बाला॥ बार बार मैं तुमहि कहतिहो परिहै बहुरि जजाला। जोबनरूप देखललचाने अबहीते ए ख्याला॥तरुणाई तनु आवन दीजे कित जिय होत बिहाला। सूरश्याम उरते कर टारहु टूटै मोतिनमाला ॥ ३८ ॥ राग हथर॥ कहागति प्रकृति परी हो कान्ह तुम्हारी धरत कहा कत गखत घेरे। जे बतियां तुम हँसि हसि भापत इहै चले चहैं फेरे ॥अब सुनिहै इह बात आजुकी बनमें कान्ह जुवति सब नेरे।सकुचतिहैं घरघर बेराको नेक लाज नहिं तेरे॥अतिहि अवेरभई घर छाडे चितै हँसत मुखतन हरि हेरे।सूरदास प्रभु झुकत कहा हो चेरी हैं कहुकेरे ॥ ३९॥ रागटोडी॥कहा कहतु तुमसों मैं ग्वारिनि।दान देहु सब जाहु चली घर अतिकत होत गँवारिनि॥ कबहू बातनही घरखोवति कबहुं उठति देगारिनि।लीन्हे फिरतिरूपत्रिभुवनको ऐनोखीवनिजा-रिनि॥पेलाकरति देति नहिं नीके तुमहो बडी बंजारनि। सूरदास ऐसो गुन जाके ताके बुद्धि पसारनि ॥४०॥इरिया कान्हरो॥ कान अब नारि गह्योहै जानि।मांगत दान दहीको अबलौ लेकछु अबरे ठानि ॥औरनिसो तुम कहा लियो है सो सब हमहि देखावहु आनी॥मांगतहैं दधि सो हम देहै कहत कहा यह बानी॥छांडि देहु अचरा फटि जैहै तुमको हम नीके पैहिचानी।सूर श्याम तुम रति पति नागर नागरि अतिहि सयानी ॥४१॥ रागकान्हरो॥ लेहौ दान अग अगनको। गोरे भाल लाल सेंदुरछवि मुक्ता वर शिर सुभग मगको॥नकवेसरि खुटिला तरिवनको गरहमेल कुच युग उतंगको। कठ सिरी दुलरी तिलरी उर माणिक मोती हार रगको ॥ बहु नगलगे जरावकी अगिया भुजा बहूटनि वलय संगको। कटि किंकिणिको दान

जु लैहौ तिन रीझत मन अनंगको। जेहरि पग जकरचो गाढे मनो मेद मंद गति यह मतंगको। जोवन रूप अग पाटंवर सुनहु सूर सब यह प्रसंगको॥४२॥ राग टोडी ॥ अरी यहढीठ कान्ह बोलि न जानै बरवस झगरो ठानै। जो भावत सोइ सोइ कहि डारत ऐसो निधरक नहि कहूं देख्यो रूप जोवन अनुमानै। अग अगनै दान लेत नहिं घरकेको पहिचानै। हम दधि बेचन जातिहैं मथुरा मारग रोकि रहत गहि अंचल कसकी आन न मानै॥ ऐसी बात सँभारि कहौ हरि हम तुमको पहिचानै। सूर श्याम जो हमसो मांगत सो पैहौ कहूं और त्रियनपै ये बातें गढि दानै॥ ४३॥ ॥ राग मलार॥ तोहिं कमरी लकुटिया भूलिगईपीतवसन दुदु करन बलासी। गोकुलकी गाइनि चरैवो छोडि दीन्हौ कीन्हौ नवलवधू सग नवल नेह आयो परम विलासी॥ गोरस चोराइ खाइ वदन दुराइ राखे मन न धरत वृंदावनको मवासी। सूरश्याम तोहिं घरघर सब जानै इहां कोहै तिहारी दासी॥ ४४॥ वे बातें भूलिगईं नदमहरके सुवन करतहौ अचगरी। वनवन धेनु चरावत फिरत निशि वासर धावत वैन वजावत दानी भए गहि डगरी॥ वनमें पराई नारि रोकिराखी वनवारी जान नहीं देत ह्यां कौन ऐसी लंगरी। मांगत योवनदान भलेहो जभले कान्ह मानतन कंसआन कोयसिहै ब्रजनगरी। कवहुं गहत दधि मटुकी अचानक कवहुं गहतहो अचानक गगरी॥ सूर श्याम जहँतहा खिझावत जो मनभावत दूरि करो लंगर सगरी॥४५॥ राग पूरवी ॥ तुमकबतेभयेहो जु दानी। मटुकी फोरि हार गहि तोरचो इन बातन पहिचानी॥ नदमहरकी कान करतिहौ नातर करती मेहमानी। भूलिगए सुधि ता दिनकी जब वांधे यशोदा रानी॥ अबलौंसही तुम्हारी ढीठो तुम यह कहत डरानी। सूर श्याम कछु करत न बनिहै नृप पावै कहुं जानी॥ ४६॥ दधि मटुकी हरि छीनिलई। हार तोरि चोली बद तोरचो जोबनके बल ढीठ भई॥ ज्यो ही ज्यो हम सूधे बोलत त्यों त्यो अतिही सतरगई। बाद करति अबही रोवहुगी वार वार कहि दई दई॥ अंश परायो देहु न नीके मांगतही सब करत खई। सूर सुनहु मैं कहत अजहुँ लौं प्रीति करहु जो भई सो भई॥ ४७॥ राग काफी ॥ कन्हैया हार हमारो देहु। दधि लवनी घृत जो कछु चाहो सो तुम ऐसेहि लेहु॥ कहा करें दधि दूध तिहारो मोसो नाही काम। जोवनरूप दुराइ धरयोहै ताको लेति न नाम॥ नीके मन ह्वै मांगत तुमसो वैर नहीं उर नाखति। सूर सुनहु री ग्वारि अयानी अंतर हमसो राखति॥४८॥ राग गौरी॥ हमको लाज न तुमहि कन्हाई। जो हम एहि मारग सब आई तौ तुम हमसो करत ढिठाई॥ हाहा करति पाइतुम लागति रीती मटुकी देहु मगाई। काको वदन प्रातही देख्यो घरते हम छीकतहु न आई॥ उतहि जात ही सखी सहेली मैंही सबको इतहि फिराई। सूरश्यामअधमईहमहि सब लागेतुमहिभलाई॥४९॥ राग विलावल ॥ मै भरुहाये लागतहौ। कनककलशरसमोहिचखावहु जो मैंतुमसोमागतहौ॥ वोही ढंग तुमरहे कन्हाई उठी सबै झिझिकारि। लेहुअशीशसबनकेमुखते कतहि दिवावतगारि॥ नीके देहु हार दधि मटुकी बात कहत नहिंजानत। कैहै जाइ यशोदासो प्रभु सूर अचगरी ठानत॥ ॥५०॥ हार तोरि विथराइ दियो। मैया पै तुम कहन चली कत दधिमाखनसब छीनिलियो॥ रिस करि धाइ कंचुकी फारी अब तो मेरो नाउँ भयो। कालि नहीएहिमारग पैहौ ऐसो मोसोवैर ठयो॥ भलीबात घरजाहु आजु तुम मांगत जोवन दान नयो। सूरदास मुखही रिस युवतिन उर उर अतर काम जयो॥५१॥ राग नट॥ मोहिं तोहिं जानिबी नँदनंदन जब वृंदावनते गोकुल जैबो। सखिन कहति छीनिलि मेरी मटुकिया गारी देवो॥ सुहँमोरिबोबाउअधिकाई सोलैबो। एक गाँउ

एकहि संग वसिये कैसे री यहि मग ऐवो ॥ युवतिनको मुख देखि रहतहौ ललचाने कैसेपैवो। कैसे हार तोरि मेरो डारयो विमरतनहिं रिसकरधैवो ॥ सुन री सखी ढीठ नंदनंदन चलोसबै यशोमतिसो हम लरिवो।सूर श्याम दधि माखनलीन्हो हारनदेहौ घेरसमुझिकहिवो॥५२॥राग सारग॥ तै कत तोरयो हार नौसरिको। मोती वगरि रहे सब वनमें गयो कानको तरिको॥ एअवगुणजुकरत गोकुलमें तिलक दिये केसरिको॥ढीठगुवालदहीकेमाते वोढनहार कमरिको॥जाइ पुकारै यशुमति आगे कहत जो मोहन लरिको। सूरज श्याम जानि चतुराई जेहि अभ्याम मदुनरिको ॥ ५३॥ राग विलावल॥सुनहु श्याम हम अब चली यशोमतिके आगे। तौ चदिहो हमको अबहीं तुमको घरि मागे ॥ इक इक करि विथगइके मोतिन लर तोरयो । यह सुनि सुनि मुसकाइके हरि भौंह सकोरयो ॥ चली महरिपै सुदरी उरहनले हरिको । अबहीबोलिबँधाएलगग्यहलरिको॥गईनंद घरको सबै यशुमति जहां भीतर। देखि महरिको कहि उठी सुत कीन्हो ईतर ॥ मारग चलन न पाइए री हरिके आगे। सूरदास प्रभु त्रासते ब्रज तजि हम भागे॥५४॥ अपने री कुँवर कन्हाईसो माई तू कहति काहि न। आनकी आन कहत नित हमसो उन मनकी कछु जानति नाहिन ॥ बहुत वचति ब्रजराजकी कानि न हिसति कहां लौं जाहिन। ऐसो भयो कुल कौन तिहारे यौवन दान लियो मोपै चाहिन ॥ अतिउत्पातकहांलौंकीजे पीपरको वनदाहिन। आनकी आन कहत नित हमसो उन मनकी कछुजानतनाहिन ॥ काहूविलोप निवानि सिखायो मैं अब पहिचानति ताहिन। वूझिवौ देखिधौंकौनमयानीहरिमेरोमन चुरवायो कापहिचाहिन॥ जाइ नमिलोसूरकेप्रभुकोअरुझेनसोंअरुझाहिन ॥५५॥ राग सबगई ॥ यशुमति तेरोवारो अतिहि अचगरो। दूध दही माखन ले ढारि दियो सगरो ॥ भोरहोत नितप्रति कौहै झगरो। ग्वालबाल संग लये जाइ गहै डगरो ॥ हम तुम एक सम कौन काते अगरो। लियो दियो कछु सोऊ डारि देहु कगरो॥सूरदास प्रभु सब गुणनि अगरो। और कहूजाइहैं छाँडिब्रजवगरो॥ ५६ ॥राग यही॥मैंतुम्हरे मनकी सब जानी। आपु सबै इतरातिहैदोपन देत श्यामको आनी॥ मेरो हरि कहँ दशहि वरपको तुम्हरी यौवन मद उदमानी। लाज नही आवति इन लँगरिनि कैसे धौं कहि आवति वानी ॥ आपुहि हार तोरि चोली बँद उर नखघात बनाइ निशानी। कहौं कान्हकी तनक अँगुरियां यह कहि वार वार पछिनानी ॥ देखहु जाइ और काहूको हरिपर सबै रहत मँडगनी। सूरदास प्रभु मेरोनान्होतुमतरुणीडोलतिअठिलानी॥५७॥राग जयतश्री ॥ जबदधि वेचन जाहिं तबमारगरोकि रहैग्वालिनि देखति धाइरी अचल आइ गहै॥ अहोनदकी नारि गारि ऐसी क्योंदीजे।एकठौरबस वास सुनहु ऐसी नहिं कीजे ॥ सुत वेसोतुमहृतोखीझतिकोरहे यहिगाँउजैहनजतजि अनतही बहुरि सुनो नहिं नाउँ ॥५८॥कहाकहति डरपाइ कछू मेरो घटिजैहै। तुम वाँधति आकाश वात झूठी को सैहै॥ यौवन दिन द्वै सबहिको तुमऐसीइतराति । झूठेहि कान्हहि दोपदैतुमहीब्रज तजि जाति ॥ ५९ ॥ हम यह झूठीकहीऔरसोवूझि न देखौ। हमसो माँगतदानकरहिकोडिनकोलेखौ॥ मटुकी डारे शीशते मर्कट लेडबुलाइ।महाढीठमाने नहीसखन सहित दधि खाइ॥ ६०॥ग्वारिन ढीठि गँवारि कान्ह मेरो अति भोगे। तेरे गोरस बहुत भयो री मेरे थोरो॥ वोलत लाज नहीं तुमहिं सबही भई गँवारि। ऐसी कैसे हरि करै कतहि बढावति रारि॥ ६१॥ अहो यशोदा महरि पूतकी मानी पींवे। हमहिं कहाहै होत बहुत दिन मोहन जीवे ॥ सुतके कर्म न जानईकरै आपनी टेक। दश गैयन करि कोउ अधिक अहिर जाति सब एक ॥ ६२ ॥ कहा गैयनकी चली कहा

अब चली जातिकी। चकृत भई मैं तुमहिं कहन अनमिलत बातकी ॥ जैसी मोसों कहतिहौ को सुनिकै पतिआइ। कौन प्रकृति तुमको परी मोहिं कहौ समुझाइ ॥६३॥ अहो यशोदा बात कालिकी सुनी कि नाही।वंशीवटकी छांह गही हरि मेरी बाही। हौं सकुचनि बोली नही बहु सखियनकी भीर। गहि बहियां मोहि लै चले हंससुताके तीर ॥ ६४ ॥ येरी मदमत ग्वालि फिरति जोवन मदमाती। गोरस बेचन हारि गृजरी अति इतराती॥ अनमिलती बात कहति सुनिपैहै तेरो नाँह। कहँ मोहन कहँ तू रहै कबहि गही तेरी बाँह ॥ ६५ ॥ सांची सब मैं कहति झूठ नहिं कहिहौं तुमसों। सुतकी राखति कानि विलग मानतिहौ हमसों ॥ कुंजनमे क्रीडा करै मनु वाहीको राज। कंस सकुच नहिं मानई रहत भयो शिरताज ॥ ६६ ॥ ऐसी बातै कहति मनहुँ हरि बरष तीसको। दुसह सह्यो नहिं जाइ नेक डर करहु ईशको ॥ धनि धनि तुम यह कहतिहो मोको आवे लाज। माखन मांगत रोइके तेहि दोष देत बिन काज ॥ ६७ ॥ हरि जानतहै मंत्र यंत्र सीखो कछु टोना। बनमैं तरुण कन्हाइ घरहि आवत है छोना ॥ एक दिवस किन देखहू अंतर रहौ छपाइ। दशको है धौं बीसको नैननि देखौ जाइ॥६८॥जाहु चली घरआपने नैननि भरि हम देख्योहै।तीस बीस दश बरष एक दिन सब लेख्योहै॥डीठि लगावति कान्हको जरैबरै वे आंखि। धिंगरि धीग चाचरि करैं मोहि बुलावति साखि॥६९॥धीग तुम्हारो पूत धीगरी हमको कीन्ही।सुतको हटकति नाहिं कोटि इक गारी दीन्ही॥महतारी सुत दोउ बने वे मग रोकत जाइ।इनहिं कहन दुखआइये ये सबको उठतिरिसाइ॥७०॥कहा करौ तुमबात कहूकी कहु लगावति।तरुणिन इहै सोहात मोहिंकैसे यह भावति॥बहुत उरहनोमोहिं दियो अब ऐसो जनि देहु। तुम तरुणी हरि तरुण नहि मन अपने गुणिलेहु॥ निरउत्तर भईं ग्वालि बहुरि कहि कछू न आयो। मन उपज्यो कछु लाज गुप्त हरिसो चित लायो॥ लीला ललित गोपालकी कहतसुनत सुखदाइ। दान चरित सुख देखिके सूरदास बलिजाइ॥७२॥ १०३६॥ राग रामकली ॥ नँदनंदन इक बुद्धि उपाई। जे जे सखा प्रकृतिके जाने ते सब लए बोलाई॥ सुबल सुदामा श्रीदामामिलि और महर सुत आए।जो कछु मंत्र हृदय हरिकीन्हौं ग्वालन प्रगट सुनाए ॥ व्रजयुवती नितप्रति दधि बेचन बनि बनि मथुरा जाति।राधा चन्द्रावलि ललितादिक बहु तरुणी यकभांति॥ कालिंदी-तट कालि प्रातही द्रुम चढि रहौ लुकाइ।गोरस लै जबही सब आवै मारग रोकहु जाइ ॥ भली बुद्धि इह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाइ। सूरदास प्रभु प्रीति हृदयकी सब मनगए जनाइ ॥ ॥ ७३ ॥ प्रातहिउठी गोपकुमारि। परस्परबोली जहां तहाँ यह सुनी बनवारि ॥ प्रथमही उठिसखा आये नंदके दरबार।आइयेउठिकै कन्हाई कह्योबारंबार॥ग्वालटेर सुनत यशोदा कुँवरदियोजगाइ। रहेआपुन मौनसाधे उठे तब अकुलाइ ॥ मुकुट शिर कटि कसि पितांबर मुरलि लीन्ही हाथ। सूर प्रभु कालिंदी तटगए सखा लीने साथ ॥ ७४ ॥ राग रामकली ॥ भली करी उठि प्रातहि आए। मैं जानत सब ग्वारि उठी जबतब तुम मोहिं बोलाए॥ अब आवति ह्वैहैं दधि लीन्हें घर घर ते व्रजनारी।हँसे सबै कर तारी दैदै आनँद कौतुक भारी॥प्रकृति प्रकृति अपने ढिग राखे सगी पांच हजार। और पठाइ दिये सूरज प्रभु जे जे अतिहि कुमार ॥७५ ॥राग बिलावल॥हँसत सखनियहकहत कन्हाई।जाइ चढौ तुम सघन द्रुमनि पर जहँ तहँ रहौ छिपाई ॥तबलौं बैठिरहौ मुहँ मूंदे जब जानहु अब आई। कूदिपरौगे द्रुमनि द्रुमनिते दैदै नंद दोहाई ॥चकित होहिं जैसे युवती गण डरनि जाहिं अकुलाई। बेनु बिषान मुरलि ध्वनि कीजो शंख शब्द बहनाई ॥ नितप्रति जाति

हमारे मारग इह कहियो समुझाई । सूर श्याम माखन दधि दानी यह सुधि नाहिन पाई ॥ ७२ ॥
श्याम मखन ऐसो समुझावन । ब्रजबनिता [illegible] ॥ कालि
जात यहि मारग देखी तब यह बुद्धि उपाई। [illegible] तलाई॥
तुमसो कछु दुरावत नाहीं कहत प्रगटकरि बात। सुनहु सूर लोचन मेरे नितु गधा मुख अकुलात॥
॥ ७७ ॥ ब्रजयुवती मिलि करति बिचार । चलो आजु प्रातहि दधि बेचन नित तुम करति
अबार । तुरत चलो अबहीं फिरि आवें गोरस बेचि सबारे। माखन दधि घृत साजतिमटुकी मथुरा
जान बिचारे ॥ पटद्गसहस शृंगार करतिहै अंग अंग सब निरखि सँवारति। सूरदास प्रभु
प्रीति सबनिकी नेकन हृदय बिसारति॥७८॥ रागधनाश्री॥युवती अंग शृंगार सँवारति। बेनी गूथि
मांग मोतिनकी शीशफूल शिर धारति ॥ गोरे भाल बिंद बेंदुपर टीका धरयो जराइ। वदन
चंद्र पर रवि तारागण मानो उदित सुभाइ॥सुभग श्रवण तरिवन मणि भूषित यह उपमा नहिं पार।
मनहुँ काम रचि फंद बनाए कारण नंदकुमार ॥ नासा नथ मुकुताकी शोभा रह्यो अधर तट
जाइ। दाडिम कनशुक लेत बन्यो नहिं कनक फंद रह्यो आइ ॥ दमकत दशन अरुण धरणीधर
चिबुक डिठौना भ्राजत।दुलरी अरु तिलरी बन्द तापर सुभग हमेल बिराजत॥ कुच कंचुकी हार
मोतिन अरु भुजन बिजयठे सोहत। डारन चुरी करनफुंदना बनि कंज पास अलि जोहत ॥
क्षुद्रघंटिका कटि लहँगा रंग तन तनसुखकी सारी। सूर ग्वालि दधि बेचन निकरी पग नूपुर-
ध्वनि भारी॥७९॥राग नटनारायणी ॥दधि बेचन चली ब्रजनारि ।शीश धरि धरि माट मटुकी
बडी शोभा भारि॥निकसि ब्रजके गईं गोंडे हरष भई सुकुमारि । चलीगावति कृष्णके गुण हृदय
ध्यान बिचारि॥ सबनके मनजो मिलें हरि कोउ न कहति उघारि।सूर प्रभु घट घटके व्यापी
जानि लई बनवारि ॥ ८० ॥ राग जयतश्री ॥ हरिदेखी युवती आवतिजब। सखन कह्योतुमजाइचढौ
द्रुम बैठि रहौ दुरि जहा तहां सब ॥ चढे सबै द्रुम डार ग्वाल गण सुनत श्याम मुख बानी। धोखे
धोख रहे सबै हम श्याम भली यहजानी ॥ नव सत साजि शृंगार युवति सब दधिमटुकी लिये
आवत । सूर श्याम छबि देखन रीझे मन मन हरष बढावत॥८१॥ राग धनाश्री॥सखा और संगलिये
कन्हाई।आपुन निरखि गये आगेकों मारग रोक्यो जाई॥यहि अंतर युवती सब आईं बन लाग्यो
कछु भारी। पाछे युवति रही तिन टेरत अबहिं गई तुम हारी ॥ तरुणी जुरि यक संग भईं सब
इत उत चलीं निहारत।सूर दास प्रभु सखा लिये सँग ठाढे इहै बिचारत॥८२॥ राग गौरी॥ग्वारिनि
तब देखे नंदनंदन।मोर मुकुट पीतांबर काछे खोरि किये तनु चंदन॥तबयह कह्यो कहाँ अबजैहौ
आगे कुँवर कन्हाई।यह सुनि मन आनंद बढायो मुख कहै बात डराई॥कोउ कोउ कहति चलौ री
जाई कोउ कहै फिरि घर जाई। कोउ कोउ कहति कहा करिहै हरि इनको कहाँ पराई ॥ कोउ
कोउ कहति कालिही हमको लूटि लई नँदलाल। सूर श्यामके ऐसे गुणहैं घरहिफिरो ब्रजबाल
॥ ८३ ॥ राग सोरठा॥ग्वालन सैन दियो तब श्याम । कूदि कूदि सब परत द्रुमनते जात चली घर
बाम॥सैन जानि तब ग्वाल जहा तहँ द्रुम द्रुम डार हलाए। बेनु बिषान शब्द मुरली ध्वनि
सब एकशब्द बजाए ॥चकृत भईं तरु तरु प्रति देखति डारनि डारनि ग्वाल । कूदि कूदि सब
परे धरणिमें घेरि लईं ब्रजबाल ॥नित प्रतिजातदूध दधि बेचन आजुपकरि हम पाई।सूर श्याम को
दान देहु तब जैहौ नंद दोहाई ॥ ८४ ॥ राग नट ॥ग्वारिनि यह भली नहिंकरति।दूध दधि घृत
नितहि बेचत दान देते डरति ॥ प्रातही ले जाति गोरसबेचि आवति राति । कहौ कैसे जानिये

तुम दान मारे जाति॥ कालिंदी तट श्याम बैठे हमहिं दियो पठाय। यह कह्यो हरि दान माँगहु जाति नितहि-चुराइ ॥ तुम सुता वृषभानुकी वै वडे नंदकुमार । सूर प्रभुको नाहिं जानति दान हाट वजार ॥ ८५ ॥ राग कान्हरो ॥ यह सुनि हँसीं सकलव्रजनारी । आनि सुनहु री बात नई इक सिखयेहैं महतारी ॥ दधि माखन खैबेको चाहत मांगि लेहु हम पास । सूधे बात कहीं सुखपावें बांधन कहत अकास ॥ अब समुझी हम बात तुम्हारी पढे एक चटशार। सुनहु सूर यह बात कहौ जिनि जानति नंदकुमार ॥ ८६ ॥ राग धनाश्री॥बात कहति ग्वालिनि इतराति । हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतराति ॥ इहै बडो दुख गाँव वासको चीन्हे कोउ न सकात । हरि मांगतहैं दान आपनो कहत मांगि किन खात ॥ हाट बाट सब हमहिं उगाहत अपनो दान जगात।सूरदासको लेखो दीजे कोउ न कहे पुनि बात॥८७ ॥ राग कान्हरो ॥ कौन कान्ह को तुम कहा मांगत । नीके करि सबको हम जानति बातें कहत अनागत ॥ छांडिदेहु हमको जनि रोकहु वृथा बढावति रारि।जैहैबात दूरि लौं ऐसी,परिहै बहुरि सँभारि॥ आजुहि दान पहरि ह्यां आए कहां दिखावहु छाप ।सूर श्याम वैसेहि चलौ ज्यों चलत तुम्हारोबाप ॥८८ ॥राग कान्हरो॥ कान्ह कहत दधिदान न दैहौ।लैहौं छीनि,दूध दधि माखन देखतही तुम रैहौ ॥ सब दिनको भरि लेहुँ आजुही तब छांडौं मैं तुमको।उघटतिहौ तुम मात पितालौं नहिं जानो तुम हमको॥ हम जानतिहैं तुमको मोहन लैलै गोद खिलाए । सूर श्याम अब भए जगाती वे दिन सब बिसराए ॥ ८९ ॥ अजहूं मांगिलेहु दधि देहौ । दूध दही माखन जो चाहो सहज खाहु सुख पैहौ ॥ तुम दानीहै आए हमपर यह हमको नहिं भावत ।:करौ तहीं लै निबहै जोई जाते सब सुख पावत ॥हमको जानदेहु दधि बेंचन पुनि कोउ नाहिन लैहै।गोरस लेत प्रातही सब कोउ सूर धरयो पुनि रैहै॥ ९०॥ राग कान्हरो ॥दान दियेबिन जान नपैहौ । जब देहौं ढराइ सब गोरस तबहिं दान तुमदेहौ॥ तुमसों बहुत लेनहै मोको यह लै ताहि ,सुनावहु । चोरी आवति बेंचि जाति सब पुनि गोरस बहुरो कहँ पावहु ॥ मांगत,छाप कहा दिखराऊं को नहिं हमको जानत। सूरश्याम तब कह्यो ग्वारिसों तुम मोको क्यों मानत॥ ९१ ॥ राग रामकली ॥कहा हमहिंरिसकरत कन्हाई। यह रिस जाय करौ मथुरापर जहां है कंस बसाई ॥ हम अब कहां जाय गुहरावैं बसत तुम्हारे गाउँ। ऐसे हाल करत लोगनके कौन रहे यहि ठाउँ ॥ अपने घरके तुम राजा हौ सबको राजा कंस । सूर श्याम हम देखत ठाढे अब सीखे ए गंस ॥९२॥ राग देवगंधारी॥कापरदानपहिरि तुम आए। चलहु जु मिलि उनहींपै जैएजिन तुमरोकन पंथ पठाए ॥ सखासंग लीन्हेजु संति-के फिरत रेनि दिन बनमें धाए । नाहिन राज कंसको जान्यो बाट रोकते फिरत पराए ॥ लीन्हे छीनि बसन सबहीके सबही लै कुंजनि अरुझाए । सूरदास प्रभुके गुण ऐसे दधिके माट भूमि ढरकाए ॥ ९३ ॥ राग सूही ॥जाइ सबै कंसहि गुहरावहु । दधि माखन घृत लेत छँडाए आजुहि मोहि हजूर बोलावहु ॥ ऐसेको कह मोहिं बतावति पल भीतर गहि मारौं। मथुरापतिहि सुनोगी तुमहीं जब वाके धरि केश पछारौं ॥ बार बार दिन हमहिं बतावत अपनो दिन न बिचारो । सूर इंद्र व्रज जबहिं बहावत तब गिरि राखि उबारो ॥९४ ॥ राग गूजरी ॥ गिरि वर धरयो आपने घरको । ताहीके बल तुम दान लेतहौ रोंकि रहतहौ हमको ॥ अपनेही मुख बडे कहावत हमहू जानति तुमको ।यह जानति पुनि गाइ चरावत नितप्रति जातहौ बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखो आभूषन सब बनको ।सूरदास कांधे कामरिहू जानति हाथ

लकुट कंचनको॥ ९५॥ राग बिलावल॥ यह कमरी कमरी कारि जानति। जाके जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनी अनुमानति॥ या कमरीके एक रोमपर वारों चीर नील पाटंबर। सो कमरी तुम निंदति गोपी जो तीनिलोक आडंबर॥ कमरीके बल असुर संहारे कमरिहिते सब भोग। जाति पांति कमरी सब मेरी सूर सबहि यह योग॥ ९६॥ राग बिलावल॥ धनि धनि यह कामरिहो मोहन श्यामललकी। इहे ओढि जात बनहि इहे सेज करतहौ तुम मेह बूंद निरवारन इहै छांह घामकी॥ इहै उठि गुन करतहे पुनि शिशिर शीत इहे हरति गहनेले धरति ओट कोट वामकी। इहे जाति इहै पाँति परिपाटी यह सिखवति सूरदास प्रभुके यह सब बिसरामकी॥ ९७॥ अब तुम सांची बात कही। एतेपर युवतिनको रोकत मांगत दान दही॥ जो हम तुमहि कह्यो चाहतही सो श्रीमुख प्रगटायो। नीके जाति उघारि आपनी युवतिन भले हँसायो॥ तुमकमरीके ओढनहारे पीतांबर नहिं छाजत। सूरदास कारेतनु ऊपर कारी कमरी भ्राजत॥ ९८॥ मोसों बात सुनहु ब्रजनारि। एक उपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आजु उघारि॥ कबहूँ बालक मुँह न दीजिये मुँह न दीजिये नारि। जोइ मनकरे सोइ करिडारे मूँड चढतहे भारि॥ बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देति कर तारि। सूर कहा ए हमको जानें छाछिहि बेचनहारि॥ ९९॥ यह जानति तुम नंदमहरसुत। धेनु दुहत तुमको हम देखति जबहि जात खरिकहि इत॥ चोरी करत रहौ पुनि जानति घर घर ढूँढत भांडे। मारग रोकि भये अब दानी वे ढँग कबते छांडे॥ और सुनहु यशुमति जब बांधे तब हम कियो सहाइ। सूरदास प्रभु यह जानति हम तुम ब्रज रहत कन्हाइ॥ ११००॥ राग आसावरी॥ को माता को पिता हमारे। कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे॥ कब माखन चोरी करि खायो कब बांधे महतारी। दुहत कौनकी गैया चारत बात कही यह भारी॥ तुम जानति मोहिं नंद ढुटौना नंद कहां ते आए। मैं पूरन अविगति अविनाशी माया सबनि भुलाए॥ यह सुनि ग्वालि सबै मुसकानी ऐसेउ गुण हौ जानत। सूर श्याम जो निदरयो सबही मात पिता नहिं मानत॥ १॥ राग सोरठ॥ तुमको नंदमहर भरुहाए। माता गर्भ नहीं तुम उपजे तौ कहो कहांते आए॥ घर घर माखन नहीं चुरायो ऊखल नहीं बँधाए। हाहा करि यशुमतिके आगे तुमको हमहि छुडाये॥ ग्वालनि संग संग वृन्दावन तुम नहिं गाइ चराये। सूर श्याम दशमास गर्भ धरि जननि नहीं तुम जाये॥ २॥ राग टोडी॥ भक्तहेतु अवतार धरयो। कर्म धर्मके वश मैं नाहीं योग जग्य मनमें न करयो॥ दीनगुहारि सुनौं श्रवणनि भरि गर्व वचन सुनि हृदयजरौं। भाव अधीन रहौं सबहीके और न काहू नेक डरौं॥ ब्रह्मा कीट आदिलौं व्यापक सबको सुख दे दुखहि हरौं। सूर श्याम तब कही प्रगटही जहां भाव तहँते न टरौं॥ ॥३॥ राग धनाश्री॥ कान्ह कहांकी बात चलावत। स्वर्ग पताल एक करि राखो युवतिनको कहि कहा बतावत॥ जो लायकतौ अपने घरको बनभीतर डरपावत। कहा दान गोरसको हैहै सबै न लेहु देखावत॥ रीती जान देहु घर हमको यतनेही सुख पावत। सूरश्याम माखन दधि लीजे युवतिन कत अरुझावत॥ ४॥ माखन दधि कहा करों तुम्हारो। मैं मनमें अनुमान करौं नित मोसों कैहै बनिज पसारो॥ काहेको तुम मोहिं कहतहो जोवन धन ताको करि गारो। अब कैसे घरजान पाइहौ मोको यह समुझाइ सिधारो॥ सूर बनिज तुम करत सदाई लेखो करिहौं आजु तिहारो॥ राग सहरी॥ ऐसी कहा बनिजको अटकी। मुख मुख हेरि तरुनि मुसकानी नैन सैन देदे सब मटकी॥ हमहू कह्यो दान दधिको कहा मांगत कुँवर कन्हाई। अबलौं कहा मौन

धरि बैठे तबहीं नहींसुनाई॥हँसि वृपभानुसुता तब बोली कहा बनिज हम पास।सूर श्याम लेखो करि लीजे जाहिं सबै ब्रजवास॥५॥राग बिलावल ॥ कहौ तुमहि हमको कहा बूझति।लैले नाम सुनावहु तुमहीं मोसों काहे अरुझति ॥ तुम जानति मैंहू कछु जानत जो जो माल तुम्हारे।डारिदेहु जापर जो लागै मारग चलौ हमारे॥इतनेहीको सोर लगायो अब समुझी यह बात। सूरश्यामके वचन सुनहु री कछु समुझतिहौ बात ॥ ६ ॥ इनहीं धौं बूझौ यह लेखो । कहा कहैंगे श्रवणनि सुनिये चरित नेक तुम देखो ॥ मनमन हरप भई सब युवती मुख ये बात चलावति । ज्यों ज्यों श्याम कहत मृदुबानी त्यों त्यों अति सुख पावति ॥ कोउ काहूको भेद न जानत लोग सकुच उर मानत । सूरदास प्रभु अंतर्यामी अंतर्गतिकी जानत ॥ ७ ॥ कहो कान्ह कह गथले हमसों। जा कारण युवती सब अटकीं सो बूझतहैं तुमसों ॥ लौंग नारियर दाख सुपारी कहा लादे हम आवें। हींग मिरच पीपरि अजवाइनि ये सब बनिज कहावें ॥ कूट काइफर सोंठि चिरेता कटजीरा कहुं देखत। आलमजीठ लाख सेंदुर कहुँ ऐसेहि बुधि अवरेखत॥ बाइविरंग बहेरा हर्रे कहुं बेल गोंद ब्यापारी। सूर श्याम लरिकाई भूली जोवन भए मुरारी ॥ ८ ॥ ॥ राग ढही ॥ कवनबनिज कहिमोहिंसुनावति।तुम्हरोगथलादोंगयंदपरहींगमिरचपीपरिकहागावति ॥ अपनो बनिज दुरावतहौ कत नाउँ लियो यतनोही। कहा दुरावतिहौ मोआगे सत जानत तुव गोही॥बहुत मोलको यावा तुम्हरो कैसे दुरत राए। सुनहु सूर कछु मोल लेहिंगे कछु इक दान भराए ॥ ९॥राग टोडी ॥दधिको दान मेटि यह ठान्यो।सुनहु श्याम अतिचतुर भएहौ आजु तुमहि हम जान्यो॥जो कछु दूध दह्यो हम देती लैखाते तुम ग्वाल।सोऊ खोइ हाथते बैठे हँसति कहति ब्रजबाल । यह सुनि श्याम सबनि करते दधि मटकी लई छँडाई। आपन खाइ सखनको दीन्हों अति मन हरप बढाई॥कछु खायो कछु भुँइ ढरकायो चितै रहीं ब्रजनारि।सूर श्याम बनभीतर युवतिन एढंगकरतमुरारि॥१०॥राग रामकली ॥प्यारी पीतांबर उर झटक्यो।हरितोरी मोतिनकी माला कछु गर कछुकर लटक्यो ।ढीठो करन श्याम तुम लागे जाइ गही कटि फेंट।आपु श्याम रिस कारि अंकम भरि भई प्रेमकी भेट॥ युवतिन घेरि लियो हरिको तब भरि भरि धरि अँकवारि। सखा परस्पर देखत ठाढे हँसत देत किलकारि॥हांक दियो करि नंददोहाई आइगए सबग्वाल। सूर श्यामको जानत नाहीं ढीठभई हैं बाल ॥११॥राग भैरव ॥ हम भई ढीठ भले तुम्ह ग्वाल। दीन्हों ज्वाब दईको चहो देखोरी यह कहा जंजाल॥बनभीतर युवतिनकोरोंकतहम खोटी तुम्हरे ये हाल। बात कहनको यो आवतहै बडे सुधर्मा धर्महिपाल ॥ साखि सखाकी ऐसिन भरिहौ तब आवहु ते जीतिभुआल। आयेहै चढि रिसकरि हमपर सूर हमहि जानत बेहाल ॥१२॥रागबिलावल ॥ जानी बात तुम्हारी सबकी।लरिलाईके ख्याल तजो अब गई बात वह तबकी ॥ मारग रोंकत रहे यमुनको तेहि धोखेहौ आये । पावहुगे पुनि कियो आपनो युवतिन हाथ लगाये ॥ जो सुनिहै यह बात मात पितु तब हमसे कहा कैहैं ।सूर श्याम मोतिन लर तोरी कौन ज्वाब हम देहैं ॥ १३ ॥राग बिलावल नट ॥ आपुन भई सबै अब भोरी ।तुम हरिकी पीतांबर झटक्यो उन तुम्हरी मोतिन लर तोरी ॥ मांगत दान ज्वाब नहिं देती ऐसी तुम जोवनकी जोरी। डर नहिं मानति नँदनंदनको करति आनि झकझोराझोरी॥ यक तुम नारि गँवारि भली हौ त्रिभुवन में इनकी सरि को री। सूर सुनहु लैहे छँडाइ सब अबहिं फिरौगी दौरी दौरी॥१४ ॥राग नट ॥कहा बडाई इनकी सरि मे।नंद यशोदाकेप्रतिपाले

जानति नीकेकरि मैं ॥तुम्हरे कहे सवन डर मान्यो हरिहि गई अति डरि मैं ॥ वसुदेव डारि रातिही भागे आयेहैं शुभघरिमें । अंग अंगको दान करतहैं सुनत उठी रिस जरिमें। तव पीतांवरझटकि लियो मैं सूर श्यामको धरि मैं ॥ १५ ॥राग गौरी॥ याते तुमको ढीठ कही । श्यामहि तुम भई झिरकन हारी एतेपर पुनि हारि नही॥नवते हमहिं देतहौ गारी हमको दाहति आपु दही । वनिज करति हमसों झगरतिहौ कहा कहें हम वहुत सही ॥ समुझि परी अव कछु जिय जान्यो ताते हौ सव मौन रही। सूर श्याम व्रज ऊपर दानी यहि मारग अव तुम निवही॥१६॥
॥ राग कल्याण ॥तुम देखत रैहौ हम जैहैं।गोरस वेंचि मधुपुरीतें पुनि येही मारग ऐहैं।ऐसेही वैठे सव रैहौ बोलै ज्वाव न दैहैं । धरिलैहैं यशुमतिपे हरिको तव धौं कैसे कैहैं॥काहेको मोतिनलर तोरी हम पीतांवर लैहैं। सूर श्याम इतरात इते पर घर वैठे तव रैहैं॥१७॥मेरे हठ क्यों निवतन पैहौ । अवतो रोकि सवनिको राख्यो कैसे करि तुमजैहौ॥दान लेउँगो भरि दिनदिनको लेखो करि सव दैहौ । सौंह करतहौं नंदववाकी मैं कहाँतव जैहौ ॥ आवत जात रहत येही पथ मोसों वैरवढैहौ,।सुनहु सूर हमसों हठ मांडति कौन नफा करि लैहौ॥१८॥ राग कान्हरा॥कौन वात यह कहत कन्हाई। समुझति नहीं कहा तुम मांगत डरपावत करि नंद दोहाई॥ डरपावहु तिनको जे डरपहिं तुमते घटि हम नाहीं ।मारग छांडिदेहु मनमोहन दधि वेचन हम जाहीं ॥ भली करी मोतिनलर तोरी यशुमतिसों हम लैहैं।सूरदास प्रभु इहीं वनत नहिं इतनो धन कहां पैहैं ॥१९॥ एकहार मोहिं कहा देखावति। नखशिखते अंग अंग निहारहु ए सव कतहि दुरावति ॥ मोतिन माल जराइको टीको कर्णफूल नकवेसर। कंठसिरी दुलरी तिलरीको और हार एक नवसर ॥ सुभग हमेल कनक अँगिया नग नगन जरितकी चौकी। वाहुडाड कर कंकन वाजू वंद यंतेपर तौकी॥छुद्रघंटिका पग नूपुर जेहरि विछिया सव लेखौ । सहज अंग शोभा सव न्यारी कहत सूर ये देखौ ॥ २० ॥राग जैतश्री॥याहूमें कछु वांट तुम्हारो । अचरज आइ सुनहु री माई भूषण देखि न सकत हमारो॥कहो ढिठाई हिएते आपुन की यशुमति की नंद ।घाटधरचो तुम इहै जानिके करत ठगनके छंद॥जितनो पहिरिआपु हम आई घरहै याते दूनो ।सूर श्याम हौ वहुत लोभाने धन देख्यो धौं सूनो ॥ २१ ॥ राग गौरी वांट कहा अव सवे हमारो। जवलौं दान नही हम पायो तवलौं कैसे होत तिहारो ॥ आभूषणकी कौन चलावत कंचनघट काहे न उघारो। मदनदूतमोहिं वात सुनाई इनमें भरचो महारस भारो ॥ एक ओर यह अंग भूषण सव एक ओर यह दान विचारो। सुनहु सूर कहा वांट करैं हम दान देहु पुनिजहां सिधारो ॥२२ ॥राग कल्याण ॥ श्याम भये ऐसे रसनागर। दिन द्वै घाट रोकि यमुनाको युवतिनमें तुमभए उजागर ॥ कांधे कामरि हाथ लकुटिया गाइ चरावन जाते। दही भातकी छाक मँगावत ग्वालन सँग मिलि खाते ॥अव तुम कर नवलासी लीने पीतांवर कटि सोहत । सूर श्याम अव नवल भए तुम नवल नारि मन मोहत॥ १३ ॥राग गौरी॥दान देतकी झगरो करिहो। प्रथमहि यह जंजाल मिटावहु ता पाछे तुम हमहि निदरिहौ ॥ कहत कहा निदरेसे हौ तुम सहज कहति हम वात। आदिवुन्यादि सवै हम जानति काहेको सतरात ॥रिसि करिकरि मटुकी शिर धरि धरि डगरि चलीं सव ग्वालिनि ।सूर श्यामअंचलगहिझरकी जैहो कहां वजारिनि॥२४॥राग कल्याण॥अव तुमको मैं जान न दैहौं॥दान लेउँ कौडी कौडीकरि वैर आपनो लैहौं॥गोरस खाइ वच्योसो डारचो मटुकी डारीफोरि। देदे गारि नारि झकझोरी चोलीके वँद तोरि ॥हँसत सखा कर तारी देदै वनमें रोकी नारि।सुनत

लोग घरते आवहिंगे सकिहौ नहीं सम्हारि ॥ घरके लोगनि कहा डरावत कंसहि आनि बुलाइ । सूर सबै युवतिनके देखत पूजाकरौंबनाइ॥२५॥ राग गौरी ॥ जो तुमहीहौ सबकेराजा तो बैठौ सिंहासन चढिकै चमर छत्र शिरभ्राजा ॥ मोरमुकुट मुरलीपीतांबर छाँडिदेहु नटवरको साजा । वेतु विपान शृंग क्यों पूरत वाजे नौवति वाजा॥यह जो सुनै हमहु सुख पावैंसंगकरैंकछुकाजा । सूरश्यामऐसी वातैं सुनि हमको आवति लाजा ॥ २६॥ राग कल्याण॥ तुम्हारे चित रजधानी नीकी । मेरे दास दासनिके चेरे तिनको लागति फीकी ॥ ऐसी कहि मोहिं कहा सुनावति तुमको ईहे अगाध । कंस मारि शिर छत्र धरावौं कहा तुच्छ यह साध ॥ तवहीं लौं यह संग तिहारो जवलगि जीवत कंस । सूर श्यामके मुख यह सुनि तब मनमन कीन्हों संस ॥२७॥ राग जैतश्री ॥ भली करी हरि माखन खायो । इहाँ मानि लीनी अपने शिर उवरो सो ढरकायो ॥ राखी रही दुराइ कमोरी सोलैप्रगट देखायो । यह लीजे कछु और मँगावैं दान सुनत रिसपायो ॥ दान दियेविनु जान नपैहौ कबमैंदान छुटायो । सूर श्याम हठ परे हमारे कहो न कहा लदायो॥२८॥ रागधनाश्री॥लेहौं दानइननकोतुमसों॥ मत्तगयंद हंस हम सोहैं कहा दुरावतितुम सो॥केहरिकनककलशअमृतकेकैसे दुरैदुरावति। विद्रुम हेम वज्रके किनुका नाहिन हमहि सुनावति ॥खग कपोत कोकिला कीर खंजनहूं शुकमृगजानति। मणि कंचनके चित्र जरेहैं एतेपर नहिं मानति ॥ सायक चाप तुरय वनिजतिहौ लिये सबै तुम जाहू। चंदन चमर सुगंध जहाँ तहँ कैसे होत निवाहू ॥ यह वनिजति वृषभानुसुतातुम हमसों वैर बढावति । सुनहु सूर एतेपर कहतिहैं हम धौं कहालदावति॥२९॥ राग सोरठ॥ यह सुनि चकृत भईं व्रजवाला। तरुणी सब आपसमें बूझति कहा कहतगोपाला ॥ कहां तुरंग कहां गजकेहरि कहांहंस सरोवर सुनिये । कंचनकलश गढाये कव हम देखे धौं यह गुनिये ॥ कोकिल कीर कपोत बननमें मृग खंजन शुक संग । तिनको दान लेतहैं हमसों देखहु इनको रंग ॥ चंदन चौंर सुगंध बतावत कहांहमारे पास । सूरदास जो ऐसे दानी देखिलेहु चहुँ पास ॥३०॥ राग गुनकली ॥ भूलिरहे तुम कहाँ कन्हाई । तिनको नाउं लेत हम आगे जो सपने कहुँ दृष्टि न आई ॥ हैवर गैवरसिंह हंस बर खग मृग कहँ हम लीन्हें । सायक धनुष चक्र सुनि चकृत चमर न देखे चीन्हें ॥ चंदन और सुगंध कहतहौ कंचन कलश बतावहु । सूर श्याम ये सब जो ह्वैहैं तबहिं दान तुम पावहु ॥ ॥३१॥ राग गूजरी ॥ इतने सबै तुम्हारे पास । निरखि न देखहु अंग अंग अब चतुराईके गांस ॥ तुरतही निरुवारि डारहु करति कहत अबेर । तुम कहो कछु हमहुँ बोलें घरहि जाहु सबेर । कनक तुम परतक्ष देखहु सजे नवसत अंग । सूर तुमसोरूपजोबन घरयोएकहि संग ॥ ३२ ॥ राग बिलावल ॥ प्रगटकरौंसब तुमहिंबतावै।चिकुरचमरघूंघटहैबरबर भुवसारंग देखावैं॥३२॥ वाणकटाक्षनयनखंजन मृग नासा शुक उपमाउं । तरिवन चक्र अधर विद्रुम छवि दशन वज्र कनठाउ ॥ग्रीव कपोत कोकिला वाणी कुच घट कनक सुभाउ। जोवन मद रस अमृत भरेहैं रूप रंग झलकाउ॥ अंग सुगंध बसन पाटंबर गनि गनि तुमहि सुनाउँ।कटि केहरि गयंदगति शोभा हंससहित पकताउँ॥केरकिये कैसे निबहतिहैं घरहिगए कहा पाउँ । सुनहु सूर यह वनिज तुम्हारे फिरि फिरि तुमहि मनाउँ ॥३३॥ राग नट ॥माँगत ऐसे दान कन्हाई।अब समुझीहमबाततुम्हारी प्रगटभई कछु धौंतरुनाई॥यहिलालच अँकवारि भरतहौ हार तोरि चोली झटकाई।अपनी ओरदेखि धौं लीजे ता पाछे करिये बरिआई॥ सखालिये तुम घेरतपुनिपुनिबनभीतर सब नारि पराई।सूरश्याम ऐसी नबूझिये इनिवातनिमर्यादा जाई॥ ३४ ॥ राग नट ॥ हमपर रिसकरतिव्रजनारि। बात सूधेहम बतावत आपु उठत पुकारि ॥ कतहुं

मर्यादा घटावति कबहुं देहै गारि ।प्राततेँ झगरो पसारो दानदेहुनिवारि।।बडेघरकी बहूबेटीकरति वृथा झनारि।सूर अपनो अनपाने जाहिंघरझगरमारि।।३५।।राग सारंग।।तुमहिडलटि हमपरमतगने। जो कछु हमको कहन बूझिए सो तुम कहि आगे अतुगने।। यह चतुराईकहापढी हरिथोरेदिन अति भये सयाने । तुमको लाज होतकी हमको बात परें जोकहुमहगने ।। ऐसोदानओरपे मांगहु जो हमसों कहा छनिआने । सूरदास प्रभु जानदेहु अब बहुरि कहोगे कालि विहाने ॥ ३६ ॥ श्यामहि बोलि लियो ढिग प्यारी।ऐसी बात प्रगट कहुं कहिये सखनि मांझ कत लाजन मारी।। एक ऐसेहि उपहास करत सब तापर तुम,यह बात पसारी ।जाति पांतिके लोग हँसिहिंगे प्रगट जानिहैं श्याम भतारी ॥ लाजन मारतहौ कत हमको हाहा करनि जाति बलिहारी ।सूर श्याम सर्वज्ञ कहावत मात पितासो थावत गारी ॥३७॥ जबहि श्यामरि यह बात सुनाई । सखा सबनि तबहीं लखि लीन्हीं सदा श्यामके प्रकृत सुभाई।।सुनहुप्यारिएक बात सुनावों जो तुम्हरेमनआवै। तुम प्रति अंग अंगकी शोभा देखनहरि सुख पावै ॥ तुम नागरी नवल नागर वे दोउमिलिकरौ विहार।सूरश्यामश्यामातुम एके कहा हसिहैसंसार।।३८।।राग ॥नदसुतनयहबातकहावत।आपुन जोवनदान लेनहे तापर जोइ सोइ सखनि सिखावत ॥ वे दिनभूलिगए हरि तुमको चोरी माखन खाते । खीझतहो भरि नयन लेतहे डरडरातभजि जाते ॥ यशुमति जबउखलसो बांधति हमही छोरति जाइ।सूर श्याम अब बडे भयेहो जोवनदानसुहाइ।।३९।।राग ॥ लरिकाईकीबात चला- वति । कैसी भई कहा हमजानें नेकहु सुधिनहिंआवति।। कब माखन चोरी करि खायो कबबांधे धौं मैया।भले बुरेको मात पिता तब हरषतही दिनजैया ॥ अपनी बात खबर करि देखहु न्हात यमुनके तीर।सूर श्याम तब कहत सबनिके कदम चढाए चीर ॥४०॥राग गूजरी॥ सब रही जल मांझ उघारी।बारबार हाहा करि थाकीं मैं तट लिये हकारी ॥ आई निकसि बसनबिनु तरुनी बहुत करी मनुहारी । कैसे हाम भए तब सबके सो तुम सुरति बिसारी ॥ हमहि कहति दधि दूध चुराये अरु बांधे महतारी । सूर श्यामके भेद बचन सुनि हँसि सकुचीं ब्रजनारी ॥४१॥ कहा भए अति ढीठ कन्हाई ।ऐसी बात कहत सकुचत नहिं कहा धौं अपनी लाज गँवाई।।जाहु चले लोगनिकेआगेझूठी बाणी कहत सुनाई।तुम हँसि कहत ग्वाल सुनिके सब घरघर कैहजाई।।बहुत होहुगेदशहिबरसके बात

योगीको योगीहै दरशौ कामीको है कामी ॥हमको तुम झूठे करिजानति तौ काहे तप कीन्हो । सुनहु सूर अब निडर भई कत दान जात नहिं [illegible] कन्हाई। और कहा सो सब सहि लेहैं जो कछु भली बु [illegible] रिसाई। तुम नीके ढँग सीखे बनमें रोकत नारिपराई ॥ आवन जान न पावत कोऊ तुम मगमें बटवाई । सूरश्या महमको निरसावतखीझतजहिनीमाई ॥ ४४ ॥ काहेको तुमझेरलगावति । दानदेहुघरजाहु बेचि दधि तुमहीको यह भावति ॥ प्रीति करौ मोसों तुम काहेन बनिज करति ब्रजगाउँ। आवहु जाहु सबै यहि मारग लेत हमारो नाउँ।लेखो करौ तुमहिअपने मनजोइ देहौसोइलेहौ। सूरसुभाइ चलहुगी जब तुम पुनिधौं मैं कह कैहौ।।४५।।राग ॥सुनहु आइके हरिगुण माई।हम भई बनि- जारिनि आपुन दानि भए कुंवर कन्हाई ॥ कहा बनिज ले आई धौं हम ताको मागत दान।कालि- हिके ढग पुनि आएहैं नहिं जानत कछु आन ॥ तुम गवांरि ऐसी मग आवति जानि बूझि गुण

इनिके ।सूर श्याम सुंदर बहु नायक सुखदायक सबहिनके॥ ४६॥ राग टोडी॥काहेको हमसों हरि लागत । बातहि कछू खोल रस नाहीं को जाने कहा मांगत ॥ कहा स्वभाव परचो अवहींते इनि बातन कछु पावत।निपट हमारे ख्याल परे हरि वनमें नितहि खिझावत ॥ पैंडो देहु बहुत अब कीनों सुनत हँसहिंगे लोग।सूर हमहिं मारग जिनि रोकहु घरते लीजे योग॥ ४७ ॥ राग सूही॥अब-लों इहे करचो तुम लेखो । मोको ऐसी बुद्धि बतावत-करकंकण दर्पण ले देखो ॥आपुहि चतुरि आपुही सब कछु हमको करति गवाँर। ओगहे लेत फिरों इनके घर ठाढे हैहें द्वार ॥ घाटे छांडि जैहो तबलेहों ज्वाव नृपति कहा देहों। जादिनते यहि मारग आवति तादिनते भरिलैहों॥ इनि-की बुद्धि दान,हम पहिरो काहेन घर घर जैहौ । सूर श्याम तब कहत सखिनसों जान कौनविधि पैहो ॥ ४८॥ राग टोडी ॥ भली भई नृप मान्यो तुमहू। लेखो करैं जाइकंसहिपेचलैंसंगतुमहमहू॥ अबलों हम जानीही घरही पहिरचोहे तुमदान।कालि कह्यो हो दान लेनको नंदमहरकी आन ॥ तो तुम कंस पठाएहैं ह्यां अब जानी यह बात।सूर श्याम सुनि सुनि यह बाणी भौंह मोरि मुसकात॥ ॥ ४९॥ राग आसावरी॥ कहा हँसत मोरतहो भौंह। सोई कह्यो मनहिकहिआईतुमहिंनंदकीसौंह॥ और सौंह तुमको गोधनकी सौंह माइ यशुमतिकी । सौंह तुमहि बलदाऊकी है कही बात वा मनकी ॥ वार वार तुम भौंह सकोरचो कहा आपु हँसि रीझे । सूर श्याम हम पर सुख पायो की मनहीं,मन खीझे॥५०॥राग रामकली॥हँसत सखनसोंकहतकन्हाई।मैयाकी बाबाकी दाऊजीकी सौंह दिवाई ॥ कहति कहा काहे हँसि हेरचो काहे भौंहसकोरचो।यहअचरज देखो तुम इनिको कब हम वदन मरोरचो॥ऐसी बातनि सौंह दिवावति अधिक हँसी मोहिंआवत। सूर श्याम कहि श्रीदामासों तुम काहेन समुझावत॥५१॥राग धनाश्री ॥श्रीदामागोपिन समुझावत । हँसत श्यामके तुम कहा जान्यो काहे सौंह दिवावत ॥ तुमहूं हँसो आपनेसंग मिलि हमनहिंसौंह दिवावें । तरुणिनकी यह प्रकृति अनेसी थोरेहि बात खिसावें ॥ नान्हे लोगनि सौंह दिवावहु वै दानी प्रभुसबके । सूर श्यामकोदानदेहु री मांगतठाढेकबके॥५२॥राग जैतश्री॥हम जानतिवे कुँवर कन्हाई । प्रभु तुम्हरे मुख आजु सुनी हम तुम जानत प्रभुताई ॥ प्रभुता नहीं होति इनि बातनि मही दहीके दान । वे ठाकुर तुम सेवक उनके जान्यो सबको ज्ञान॥ दधियामेतिनलरतोरचौं घृत माखन सोउ लीजे ।सूरदास प्रभु अपने सदका घरहि जान हम दीजे॥ ५३॥ तुम घर जाहु दानको दैहै । जोहि बीरादैमोहिंपठायोसो मोसों कहालैहै॥तुम गृह जाइ बैठि सुखकरिहो नृप गारी को सैहै । अबहीं बोलि पठावैगो री तासन्मुख को जैहै॥जान कहै तुमको तुम जैहौ विधिना कैसे सैहै । सूर मोहिं अटक्योहै नृपवर तुमविनु कौन छँडैहै ॥ ५४ ॥ नृपकोनाँउ लेततेही मुख जेहि मुख निंदा कालि करी । आपुन तो राजनिकेराजाआजु कहा सुधि मनहि परी॥भले श्याम ऐसी तुम कीनी कहा कंसको नाउँलियो ।जब हम सौंह दिवावनलागीं तबहिं कंसपर रोपकियो॥ जाको निंदि बंदिये सो पुनि वह ताकोनिदरै । सूरसुनीवह बातकालिकी तबजानीइनिकंसडरै ॥ ॥५५ ॥राग आसावरी ॥कहा कहति कछुजानिनपायो।कब कंसहि धौं हम करजोरचोकबवाको हम माथ नवायो ॥ कबहूं सौंह करत देख्यो मोहिं लेत कबहुँ मुखनाऊं ।निपटहिग्वारिगँवारि भई तुम बसतिहमारे गाऊं ॥ कहा कंस केतने लायकको जाको मोहिं देखावति।सुनहु सूरयहिनृपके हमहैं इह तुम्हरे मन आवति॥५६ ॥राग टोडी ॥ कौन नृपति जाके तुमहौ।ताको नाउँ सुनावहु हमको यह सुनिके अति पावभौ॥ यह संसार भुवन चौदह भरि कंसहिते नहिं दूजो।सो नृपकहारहत

सुनि पावैं तब ताहीको पूजो ॥ कहा नाते केहि गाँउ बसनहे ताहीके ह्वैरहिए। सूरदास प्रभु कहे बनैगी झूठ हमहि निदरिए ॥ ५७ ॥ मोसों सुनहु नृपतिको नाउँ। तिहुँ भुवन भरि गम्यहै जाको नर नारी सब गाउँ ॥ गण गंधर्व यक्ष याहीके अवग्नहींसरिताहि॥उनकी अस्तुति करौं कहांलगि मैं सकुचतहौं जाहि॥तिनहीको पठयो मैं आयो दियो दानको बीरा। सूरह पञो- धन धन सुनिके देखत भयो अधीरा ॥ ५८ राग गौरी ॥ पाई जाति तुम्हारे नृपकी जैसे तुम तैसे ढोठ हैं। कहां रहे दूरि जाइ आजुलौं एई ढंग गुणके सोठ हैं ॥ यह अनुमानकियोमनमैंहमएक- हि दिन जनमें दोठ हैं। चोरी अपमारग बटपारयो इनि पटतरके नहिं कोउ हैं॥श्यामबनीअब जोरी नीकी सुनहु सखी मानत तोउ हैं। सूर श्याम जितने रँग काछत युवती जन मनके गोठहैं ॥ ५९ ॥ ठगति फिरति ठगिनी तुम नारी। जोइ आवति सोइ सोइ कहहागनि जानि जनावत दै दै गारी ॥ फँसिहारिनि बटपारिनि हम भईं आपुन भए सुधर्मा भारी। फंदा फाँसि कमानबानसों काहू डारत देख्यो मारी॥जाकेमन जैसोई बरतैमुखवानीकहिदेतउचारी। सुनहुसूरप्रभुनीकेजान्यो ब्रज युवती तुम सब बटपारी ॥६०॥ राग धरी ॥ अपने नृपको इहैसुनायो। ब्रजनारीबटपारिनिहैं सब चुगली आपुनि जाइ लगायो॥राजा बडे बात यह समुझीतुमकोहमपरयोंसपठायो। फँसिहा- रिनि कैसे तुब जानी हम कहुँ नाहिन प्रगटदेखायो॥ब्रजवनिताफँसिहारीजोसबमहनारीकाहैन गनायो॥फंदा फाँसि धनुप बिपलाइहु सूरश्यामनहिहमहिबतायो॥६१॥राग भैरव॥ फंदाफाँसिबता- वहु जो। अंगनि धरे छपाइ जहां जो प्रगट करौ सब दीहौं तो ॥ प्रथमहि शीश मोहिनी डारति ऐसे ताहि करत बशहो। बिपलाइ दरशावति लै पुनि देह दशापुनि बिसरनि ज्यों ॥ ता पाछे फंदा गर डारति एहि भांतिनि करि मारतिहो।सुनहु सूर ऐसे गुणतुम्हरे मोसों कहाउचारतिहो ॥६२॥ प्रगट करौ यह बात कन्हाई। बान कमान कहां केहि मारयो काके गर हम फांसि लगाई॥ काके शिर पढि मंत्र दियो हम कहां हमारे पाशदिनाई। मिलवत कहां कहांकी बातें हँमन कहति अति गइ सकुचाई॥तब मानें सबहमहुँ बतावहु कहो नहीं जो नंद दोहाई। सूर श्याम तब कह्यो सुनहुरी एक एक करि देउँ बनाई ॥ ६३ ॥ राग रागिनी ॥ मोसों कहादुरावतिनारी। नयनशयनदैचितहि चुरावति इहै मंत्र टोना शिरडारी ॥भौंह धनुप अंजन गुन बान कटाक्षनि डारति मारि। तरिवन श्रवन फांसि गर डारति कैसेहु नहीं सकत निरवारि ॥ पीन उरज मुख नैन चलावति इह बिष- मोदक जात न झारि। घालति छुरी प्रेमकी बानी सूरदास को सकै सँभारि॥६४॥ राग टोडी ॥ अपनोगुण औरनि शिरडारत। मोहन जोहन मंत्र यंत्र टोना सब तुमपर बारत॥ तनुत्रिभंग अंग अंगमरोरनि भौंह बंक करि हेरत। मुरली अधर बजाइ मधुर सुर तरुनी मृगगन घेरत॥नटवरभेष पीतांबर काछे छैलभए तुम डोलत। सूर श्याम गवरे ढंगए अधरनिको ढँगबोलत॥६५॥ जानी बात मौन धरि रहिए। इहै जानिहमपर चढि आए जोभावैसोकहिए ॥ हम नहिंबिलग तुम्हारो मान्यो तुम जनि कछु मन आनो। देखहु एकदोइजनिभापहु चारिदेखिदुइमानो॥दौबल देति सबै मोहीको उन पठयो मैं आयो। सूर रूप जोबनकी चुगली नैननि जाइ सुनायो ॥ ६६ ॥ राग बिलावल ॥ तब रिसकरिकै मोहि बोलायो। लोचन दूत तुमहिं इहि मारग देखतजाइसुनायो॥सोइ सब महलनते सुनि बानी जोबन महलनि आयो। अपने कर बीरा मोहि दीन्हों तुरत मोहि पहि- रायो ॥ बैठ्योहै सिंहासन चढिकै चतुराई उपजायो। मनतरंग आज्ञाकारी भृत तिनको तुमहि लगायो॥ तिनको नाम अनंग नृपतिवर सुनहु बात सुखपायो। सूर श्यामसुख बात सुनत यह

युवतिन तनु बिसरायो॥६७॥राग सही॥ब्रज युवती सुनि मगन भईं। यह वानी सुनि नदसुवन मुख मन व्याकुल तन सुद्धिगईं ॥ को हम कहां रहति कह आई युवतिनके यह सोच परयो । लागी कामनृपतिकी भांटी जोवन रूपहि आनि अरयो ॥ तृपितभईं तरुणी अनगडर सकुचि रूपजोव नहि दियो। सूरश्याम अब शरन तुम्हारे हृदय सबनि यहध्यानकियो॥६८॥राग जैतश्री॥ मनयह कहति देह बिसाराये। यह धन तुमहीको सँचि राख्यो तेहि लीजे सुखपाये॥ जोवनरूप नही तुम लायक तुमको देत लजाति। ज्यो बारिधि आगे जल कनिका बिनय करति एहि भांति ॥ अमृत-रस आगे मधुरचक मनहि करत अनुमान। सूर श्याम शोभाकी सींवाँको पटतरको आन ॥६९ ॥ अतर्यामी जानिलई । मनमे मिले सबनि सुख दीन्हो तब तनुकी कछु सुरति भईं ॥ तब जान्यो वनमे हम ठाढी तनु निरख्यो मन सकुचिगईं। कहति परस्पर आपुसमे सब कहां रही हम काहि रईं॥ श्याम बिना ये चरित करै को यह कहिकै तनु सौंपदईं। सूरदास प्रभु अतर्यामी गुप्तहि जोबनदान लईं ॥७०॥राग रामकली॥यह कहिउठे नदकुमार। कहा ठगिसीरहीग्वाला परयो कोन विचार॥ दानको कछु कियो लेखो रही जह तह सोचि। प्रगट करि हमको सुनावहु मेटि जिहिदे दोचि॥बहुरि यहि मग जाहु आवहु राति सांझ सकार। सूरऐसो कौन जोपुनि तुमहिरोक-नहार॥७१॥राग गूजरी॥हमहि और सो रोकैकोनारोकनहारोनदमहर सुत कान्हनामजाकोहैतौन॥ जाके बलहै कामनृपतिको ठगत फिरत युवतिनको जौन। टोनाडारिदेत शिर ऊपर आपुरहतठाढो है मौन॥सुनहु श्याम ऐसी न बूझिए बानिपरी तुमको यह कौन। सूरदास प्रभु कृपा करहु अब कैसेहु जाहिं आपने भौन॥७२॥राग सूही॥ दान मानि घरको सब जाहु। लेखो मै कहुँकहुँ जानतहौं तुमसमुझे सब होत निबाहु॥पछिली देहु निवारि आजु सब पुनि दीजो जब जानौ कालि।अब मै कहत भलीहौ तुमसो जो तुम मोको मानौ ग्वालि ॥ वृन्दावन तुम आवत डरपति मै देहौ तुमको पहुँचाइ। सुनहु सूर त्रिभुवन वश जाके सो प्रभु युवतिनके वश आइ ॥ ७३ ॥ को जानै हरि चरित तुम्हारे। अबहु दान नही तुम पायो मन हरिलिये हमारे॥लेखोकरिलीजै मनमोहन दूधदह्यो क[illegible]यक लीजे दान उगाहु॥ तुम खेहो माखनदधि मोहन हमसब दे[illegible] अब दधिदानी कहिकहि प्रगट सुनावैं॥ ७४ ॥राग गुंड॥कान्ह मा[illegible]। दूध ल्याईं अवटि अबहिं हम खाहु तुम सफल करि जन्म लेखे॥ सखा सब बोलि बैठारि हरि मडली वनहिके पात दोना लगाये। देत दधि परुसि ब्रजनारि जेंवत कान्ह ग्वालसँगबैठि अति रुचि बढाये।धन्यदधिधन्यमाखन धन्यगोपिका धन्यराधा वश्यहै मुरारी। सूर प्रभुके चरित देखि सुरगन थकित कृष्ण सँग सुख करति घोषनारी ॥७५॥राग जैतश्री॥ माखन दधि हरि खात ग्वालसँग। पातनिके दोना सबके कर लेत पतौखनि मुख मेलत रँग ॥ मटुकिनते लैलै परुसतिहै हर्षभरी ब्रजनारि। यह सुख तिहू भुवन कहुँ नाही दधि जेंवत बनवारि ॥ गोपी धन्य कहति आपुनको धन्य दूध दधि माखन। जाको कान्ह लेन मुख मेलत कियो सबनि सभापन ॥ जो हम साध करति अपने मन सो सुख पायो नीके। सूर श्याम पर तन मन वारति आनँद जी सबहीके ॥ ७६ ॥ राग देवगधार॥ गोपिकाअतिआनंदभरी। माखन दधि हरिखातप्रेमसो निरखति नारि खरी ॥ कर लैलै मुख परस करावत उपमा बढी सुभाइ। मानहु कंज मिलतहू शशिको लिये सुधाकर आइ ॥ जाकारण शिव ध्यान लगावत शेष सहस मुख गावत। सोई सूर प्रगट ब्रजभीतर राधामनहि चुरावत ॥ ७७ ॥रागरामकली॥राधासो माखनहरि मागत। औरनिकी

मटुकीको खायो तुम्हरो कैसो लागत॥लैआई वृषभानुसुता हँसि सदलोनहिं मेरी । लै दीन्हां अपने कर हरिमुख खात अल्प हँसि हेरी॥ सबहिनते मीठो दधिहै यह मधुरे कह्यो सुनाइ । सूरदास प्रभु सुख उपजायो व्रजललनामनभाइ७७राग रामकली मेरे दधिको हरिस्वाद न पायो ।जानतइनगुजरिनि-कोसोहैल्यो छिडाइमिलि ग्वालनिखायो।धौरी धेनु दुहाइछानि पयमधुर आंचमेंअवटिसिरायो॥ नई दोहनी पोंछि पखारी धरि निर्धूम खिरनिपरतायो। तामें मिलि मिश्रित मिश्री करि दै कपूर पुट जावन नायो ॥ सुभग ढकनियां ढांपि बांधि पट जतन राखि छींके समदायो ॥ हौं तुम कारण लै आई गृह मारगमें न कहूं दरशायो । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि कियो कान्ह ग्वालिनि मन-भायो ॥७९॥राग नट॥गोपिन हेतु माखन खात ।प्रेमके वश नंदनंदन नेक नहीं अघात ॥ सबै मटुकी भरी वैसिहि प्रेम नहीं सिरात। भाव हृदये जान मोहन खात माखन जात॥ एक कर दधि दूध लीने एककर दधि जात।सूर प्रभुको निरखि गोपी मनहि मनहिसिहात ॥८० ॥राग बिलावल ॥ गोपी कहति धन्य हम नारि । धन्यदूध धनिदधिवनिमाखन हम परुसतिजेंवत गिरधारि॥।धन्य घोष धनि निशि धनिवह घरि धनि गोकुल प्रगटे वनवारि ।धन्यसुकृतपाछिलोधन्यधनि धन्य नंद यशुमति महतारि ॥ धनिधनि ग्वाल धन्य वृंदावन धन्यभूमि यह अति सुखकारि। धन्य दान धनि कान्हमँगैया धन्य सूर तृण द्रुम वन डारि॥८१॥राग नट॥गण गंधर्व देखि सिहात । धन्य व्रजललनानि करते ब्रह्म माखन खात॥नहीं रेख न रूप नहिं ततु वरन नहिंअनुहारि ।मात पितु दोऊ न जाके हरत मरत न जारि ॥ आपु करता आपु हरता आपु त्रिभुवन नाथ । आपही सब घटके व्यापी निगम गावत गाथ ॥ अंगप्रति प्रतिरोम जाकेकोटिकोटि ब्रह्मंडा।कीट ब्रह्म प्रपंतजल थल इनहिंते यह मंड ॥ विश्वविश्वभरन एई ग्वालसंग विलास । सोइ प्रभु दधिदान मांगत धन्य सूरजदास ॥८२॥राग रामकली॥कंसहेतु हरि जन्म लियो।पापहि पाप धरा भइ भारी तब हमसबनि पुकार कियो ॥ शेषशैन जहँ रमासंगमिलितहां अकाश भई यह वानी॥ असुर मारि भुवभार उतारौं गोकुलप्रगटौं आनी ॥ गर्भ देवकीके तनु धरिहौं यशुमतिको पय पीहौं । पूरब तप बहु कियो कष्टकरिइनको बहुत ऋनीहौं॥यह वानी कहि सूर सुरनको अब कृष्ण अवतार। कह्यो सबनि व्रजज-न्म लेहु सँग हमरे करहु विहार८३राग गौरी॥ब्रह्म जिनहिं यहआयसुदीन्हों। तिनतिन संगजन्मलियो व्रजमें सखी सखा करि परगट कीन्हों॥ गोपी ग्वाल कान्ह दुइ नाहीं ये कहुँ नेक न न्यारे जहांजहां अवतारधरत हरिये नहिं नेकबिसारे॥एके देह विहार करि राखे गोपीग्वाल मुरारि।यहसुख देखिसूरके प्रभुकोथकितअमरसँगनारि॥ ८४॥ राग गौरी॥अमरनारिअस्तुतिकरेंभारी। एकनिमिषव्रजवासिन को सुख नहिं तिहुँभुवन विचारी॥धन्य कान्ह नटवरवपु काछे धन्य गोपिका नारी।एक एकते गुण रूप उजागरि श्याम भावती प्यारी ॥ परुसति ग्वारि ग्वार सब जेंवत मध्य कृष्ण सुखकारी । सूरश्याम दधिदानी कहि कहि आनँद घोपकुमारी ॥८५॥राग बिलावल ॥ धन्य कृष्ण अवतार ब्रह्म लियो। रेखन रूप प्रगट दरशन दियो॥जल थलमें कोउ और नहीं वियो।दुष्टन वधि संत-निको सुख दियो ॥१॥जो प्रभु नरदेही नहिं धरते। देवै गर्भ नहीं अवतरते ॥ कंसशोक कैसे उर टरते । माता पिता दुरित क्यों हरते॥२॥ जो प्रभु व्रजभीतरनहिंआवें। नंदयशोदा क्योंसुख पावें॥ पूरवतप कैसे प्रगटावें । वेदवचन कैसे ठहरावें॥३॥ जो प्रभु भेष धरेंनहिं वालक।कंसहोइ पूतना घालक ॥ अँगुठा पिवत शकटसंहारक। तृणा अकाश शिलापर डारक॥ ४ ॥ जोप्रभु व्रज माख-

न न चोरावें । क्यों गोपिनको आपु जनावें॥भुजा उलूखल नहीं बँधावें॥ जमलामोक्षकौनविधि पावें॥५॥ सो प्रभु दधिदानी कहवावें। गोपिनको मारग अटकावें ॥ करिलेखो के दानसुनावें। आपुन खीझें उनहिं खिझावें ॥६॥ व्रजवासी जो धन्य कहावें । जहां श्याम दधिदान लगावें॥ मांगि खात आनंद बढावें ।युवतिनसों कहि कहि परुसावें ॥७॥ तेई हरि नटवर वपु काछे । मोर मुकुटपीतांबरआछे॥ग्वालसखाठाढेमनपाछे॥सूरश्याम गोपिन सुख साछे॥८॥८६॥राग सूही॥ यह महिमा येईपे जानें । योग यज्ञ तप ध्यान न आवत सो दधि दान लेत सुख मानें ॥ खात परस्पर ग्वालन मिलिकै मीठोकहि कहि आपु वखाने। विश्वंभर जगदीश कहावत ते दधिदोनामाँझ अघाने ॥ आपुहि हरता आपुहि करता आपु बनावत आपुहि भाने। ऐसे सूरदासके स्वामी ते गोपिनके हाथ विकाने ॥ ८७॥राग रामकली॥ धनि वडभागिनी व्रजनारि। खात लै दधि दूध माखन प्रगट जहांमुरारि ॥ नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि ।शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि॥ देखि सुख व्रजनारि हरिसंग अमर रहे भुलाइ । सूर प्रभुके चरित अगनित वरनिकापैजाइ॥८८॥राग बिलावल॥व्रजवनितायहकहतिश्यामसोंमाखनदूधदह्योअरुल्यावें।मटुकिनते हम देहिं खाहु तुम देखिदेखि नैननि सुख पावें॥गोरस वहुत हमारे घरघर दान पाछिलो लेहु । खायो जौन दान आजुहिको मांगतहै सव देहु ॥ सवै लेहु राखहु जिनि धाकी पुनि न पाइहौ मांगि। आजुहि लेहु सवै भरिदैहैं कहति तुम्हारे आगे॥ कह्यो श्याम अव भई हमारी मनहिं भई परतीति। जव चैहैं तव मांगिलेहिंगे हमहिं तुम्हें भइ प्रीति ॥ वेचहु जाइ दूध दधि निधरक घाट वाट डर नाहीं ।सूर श्याम वश भई ग्वारिनी जात वनत घर नाहीं ॥ ८९ ॥ राग गोडी ॥ सुनहु सखी मोहन कहा कीन्हों । एक एकसों कहति वात यह दान लियो की मन हरि लीन्हों ॥ यह तौ नाहिं वदी हम उनसों बूझहुँ धौं यह वात । चकृत भई विचार करत यह विसरिगई सुधिगात ॥ उमचिजाति तवहीं सव सकुचति वहुरि मगन हैजाति । सूर श्यामसों कहौं कहा यह कहत न वनत लजाति॥९०॥राग धनाश्री॥श्यामसुनहु एकवात हमारी । ढीठो वहुतकियोहमतुमसों सो वकसो हरि चूक हमारी॥ मुख जो कही कटुक सव वानी हृदय हमारे नाहीं।हँसिहँसि कहति खिझावति तुमको अतिआनँद मनमाहीं॥ दधिमाखनको दान औरजो जानो सवै तुम्हारो । सूर श्याम तुमको सव दीनों जीवनप्राण हमारो ॥ ९१ ॥ नंदकुमार कहा यह कीन्हों। बूझति तुमहिं कहौं धौं हमसों दान लियो की मन हरिलीन्हों ॥कछू दुराव नहीं हम राख्यो निकट तुम्हारेआई। येतेपर तुमहीं अव जानौ करनी भली बुराई ॥ जो जासों अंतर नहिं राखे सो क्यों अंतर राखे । सूर श्याम तुम अंतर्यामी वेद उपनिषद भाषे ॥९२॥ राग गोडी॥सुनहु वात युवती इक मेरी।तुमते दूरि होत नहिं कतहूँ तुम राखौ मोहिं घेरी ॥ तुम कारण वैकुंठ तजतहौं जनम लेत व्रज आई। वृंदावन राधासँग गोपी यह नहिं विसरयो जाई॥ तुम अंतर अंतर कहा भाषति एक प्राण द्वै देह। क्यों राधा व्रज वसे विसारयो सुमिरि पुरातन नेह॥ अव घर जाहु दान मैं पायो लेखो कियो न जाइ। सूर श्याम हँसिहँसि युवतिनसों ऐसी कहत वनाइ॥९३॥राग नट॥ घर तनु मनहिं विना नहिं जात।आपु हँसिहँसि कहतहो जू चतुरईकी वात ॥ तनहिंपर है मनहिं राजा जोइ करै सोइ होइ। कहौ घर हम जाहिं कैसे मन धरयो तुम गोइ ॥ नयन श्रवन विचार सुधि वुधि रहे मनहिंलुभाइ। जाहिं अवही तनहिं लै घर परत नाहिंन पाइ ॥ प्रीतिकरि दुविधा करी कत तुमहि जानौं नाथ । सूरके प्रभु दीजिये मन जाहिं घर लैसाथ ॥ ९४ ॥राग कान्हरो॥ मनभीतर है वास हमारो । हमको

मटुकीको खायो तुम्हरोकैसो लागत॥लैआई वृषभानुसुता हँसि सदलोनिहिं मेरी। लै दीन्हां अपने कर हरिमुख खात अलप हँसि हेरी॥ सबहिनते मीठो दधिहै यह मधुरे कह्यो सुनाइ। सूरदास प्रभु सुख उपजायो व्रजललनामनभाइ॥७७॥ राग रामकली॥ मेरे दधिको हरिस्वाद न पायो। जानत इन गुजरिनि-कोसोहै लयो छिडाइ मिलि ग्वालनिखायो॥ धौरी धेनु दुहाइछानि पयमधुर आंचमें औटि सिरायो॥ नई दोहनी पोंछि पखारी धरि निर्धूम खिरनिपरतायो। तामें मिलि मिश्रित मिश्री करि दै कपूर पुट जावन नायो॥ सुभग ढकनियां ढांपि बांधि पट जतन राखि छीके समदायो॥ हौं तुम कारण लै आई गृह मारगमें न कहू दरशायो। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि कियो कान्ह ग्वालिनि मन-भायो॥७९॥ राग नट॥ गोपिन हेतु माखन खात। प्रेमके वश नंदनंदन नेक नहीं अघात॥ सबै मटुकी भरी बैसिहि प्रेम नहीं सिरात। भाव हृदये जान मोहन खात माखन जात॥ एक कर दधि दूध लीने एककर दधि जात। सूर प्रभुको निरखि गोपी मनहि मनहि सिहात॥८०॥ राग बिलावल॥ गोपी कहति धन्य हम नारि। धन्यदूध धनिदधिधनिमाखन हम परुसति जेंवत गिरधारि॥ धन्य घोष धनि निशि धनिवह घरि धनि गोकुल प्रगटे बनवारि। धन्य सुकृत पाछिलो धन्य धनि धन्य नंद यशुमति महतारि॥ धनिधनि ग्वाल धन्य वृंदावन धन्य भूमि यह अति सुखकारि। धन्य दान धनि कान्ह मँगैया धन्य सूर तृण द्रुम बन डारि॥८१॥ राग नट॥ गण गंधर्व देखि सिहात। धन्य व्रजललनानि करते ब्रह्म माखन खात॥ नहीं रेख न रूप नहिं तनु बरन नहिं अनुहारि। मात पितु दोऊ न जाके हरत मरत न जारि॥ आपु करता आपु हरता आपु त्रिभुवन नाथ। आपही सब घटके व्यापी निगम गावत गाथ॥ अंगप्रति प्रतिरोम जाके कोटिकोटि ब्रह्मंड। कीट ब्रह्म प्रगत जल थल इनहित यह मंड॥ विश्वविश्वंभरन एई ग्वालसंग विलास। सोइ प्रभु दधिदान मांगत धन्य सूरजदास॥८२॥ राग रामकली॥ कंसहेतु हरि जन्म लियो। पापहि पाप धरा भइ भारी तब हमसबनि पुकार कियो॥ शेषशैन जहँ रमासंगमिलितहां अकाश भई यह बानी। असुर मारि भुवभार उतारौं गोकुल प्रगटौं आनी॥ गर्भ देवकीके तनु धरिहौं यशुमतिको पय पीहौं। पूरव तप बहु कियो कष्टकरि इनका बहुत ऋनहिं॥ यह बानी कहि सुर सुरनकों अब कृष्णा अवतार। कह्यो सबनि व्रजजन्म लेहु सँग हमरे करहु विहार॥८३॥ राग गौरी॥ ब्रह्म जिनहिं यह आयसु दीन्हो। तिनतिन संग जन्म लियो व्रजमें सखी सखा करि परगट कीन्हो॥ गोपी ग्वाल कान्ह दुइ नाहीं ये कहुँ नेकु न न्यारे। जहां जहां अवतार धरत हरि ये नहिं नेक बिसारे॥ एकै देह विहार करि राखे गोपी ग्वाल मुरारि। यह सुख देखि सूरके प्रभुको थकित अमर सँग नारि॥८४॥ राग गौरी॥ अमरनारि अस्तुति करें भारी। एक निमिष व्रजवासिनका सुख नहिं तिहुँभुवन बिचारी॥ धन्य कान्ह नटवर वपु काछे धन्य गोपिका नारी। एक एकते गुण रूप उजागरि श्याम भावती प्यारी॥ परुसति ग्वारि ग्वार सब जेंवत मध्य कृष्ण सुखकारी। सूर श्याम दधिदानी कहि कहि आनँद घोषकुमारी॥८५॥ राग बिलावल॥ धन्य कृष्ण अवतार ब्रह्म लियो। रेखन रूप प्रगट दरशन दियो॥ जल थलमें कोउ और नहीं बियो। दुष्टन वधि संतनिको सुख दियो॥१॥ जो प्रभु नरदेही नहिं धरते। देवै गर्भ नहीं अवतरते॥ कंसशोक कैसे उर टरते। माता पिता दुखित क्यों हरते॥२॥ जो प्रभु व्रजभीन रनहिं आवैं। नंदयशोदा क्योंसुख पावैं॥ पूरबतप कैसं प्रगटावैं। वेदवचन कैसे ठहरावैं॥३॥ जो प्रभु भेष धरैं नहिं बालक। कंसहोइ पूतना घालक॥ अँगुठा पिवत शकटसंहारक। तृणा अकाश शिलापर डारक॥४॥ जो प्रभु व्रज माख-

न न चोरावै । क्यो गोपिनको आपु जनावै॥भुजा उलूखल नही बँधावै॥ जमलामोक्षकौनविधि पावै॥५॥ सो प्रभु दधिदानी कहवावै। गोपिनको मारग अटकावै ॥ करिलेखो कै दानसुनावै। आपुन खीझि उनहि खिझावै ॥६॥ ब्रजवासी जो धन्य कहावै । जहां श्याम दधिदान लगावै॥ मांगि खात आनद बढावै ।युवतिनसो कहि कहि परुसावै ॥७॥ तेई हरि नटवर वपु काछे । मोर मुकुटपीतांबरआछे॥ग्वालसखाठाढेमत्रपाछे॥सूरश्याम गोपिन सुख साछे॥८॥८६॥राग सुही॥ यह महिमा येईपै जानै । योग यज्ञ तप ध्यान न आवत सो दधि दान लेत सुख मानै ॥ खात परस्पर ग्वालन मिलिकै मीठोकहि कहि आपु वखानै। विश्वंभर जगदीश कहावत ते दधिदोनामांझ अघानै ॥ आपुहि हरता आपुहि करता आपु वनावत आपुहि भानै। ऐसे सूरदासके स्वामी ते गोपिनके हाथ विकानै ॥ ८७ ॥राग रामकली॥ धनि वडभागिनी ब्रजनारि। खात लै दधि दूध माखन प्रगट जहां मुरारि ॥ नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि ।शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि॥ देखि सुख ब्रजनारि हरिसंग अमर रहे भुलाइ । सूर प्रभुके चरित अगनित वरनिकापैजाइ॥८८॥राग बिलावल॥ब्रजवनितायहकहतिश्यामसोमाखनदूधदह्योअरुल्यावै।मटुकिनते हम देहिं खाहु तुम देखिदेखि नैननि सुख पावै॥गोरस वहुत हमारे घरघर दान पाछिलो लेहु । खायो जौन दान आजुहिको मांगतहैं सव देहु ॥ सवै लेहु राखहु जिनि धाकी पुनि न पाइहो मांगि। आजुहि लेहु सवै भरिदेहैं कहति तुम्हारे आगे॥ कह्यो श्याम अव भई हमारी मनहिं भई परतीति। जव चैहे तव मांगिलेहिंगे हमहिं तुम्हें भइ प्रीति ॥ वेचहु जाइ दूध दधि निधरक घाट वाट डर नाही। सूर श्याम वश भई ग्वारिनी जात वनत घर नाही ॥ ८९ ॥ राग सोडी ॥ सुनहु सखी मोहन कहा कीन्हो । एक एकसो कहति वात यह दान लियो की मन हरि लीन्हो ॥ यह तौ नाहि यदी हम उनसो बूझहुं धौ यह वात । चकृत भई विचार करत यह बिसरिगई सुधि गात ॥ उमचिजाति तवही सव सकुचति वहुरि मगन ह्वैजाति । सूर श्यामसो कहौं कहा यह कहत न वनत लजाति॥९०॥राग धनाश्री॥श्यामसुनहु एकवात हमारी । ढीठो वहुतकियोहमतुमसो सो वकसो हरि चूक हमारी॥ मुख जो कही कटुक सव वानी हृदय हमारे नाही।हँसिहँसि कहति खिझावति तुमको अतिआनद मनमाही ॥ दधिमाखनको दान और जो जानो सवै तुम्हारो । सूर श्याम तुमको सव दीनों जीवनप्राण हमारो ॥ ९१ ॥ नदकुमार कहा यह कीन्हो। बूझति तुमहिं कहौ धौं हमसो दान लियो की मन हरिलीन्हो ॥कछू दुराव नही हम राख्यो निकट तुम्हारेआई। येतेपर तुमही अव जानौ करनी भली बुराई ॥ जो जासो अतर नहिं राखै सो क्यो अंतर राखै । सूर श्याम तुम अतर्यामी वेद उपनिषद भाषे ॥९२॥ राग सोडी ॥सुनहु वात युवती इक मेरी। तुमते दूरि होत नहिं कतहूं तुम राखौ मोहिं घेरी ॥ तुम कारण वैकुठ तजतहौं जनम लेत ब्रज आई। वृंदावन राधासँग गोपी यह नहिं विसरयो जाई॥ तुम अतर अंतर कहा भाषति एक प्राण द्वै देह। क्यो राधा ब्रज वसे विसारयो सुमिरि पुरातन नेह॥ अव घर जाहु दानमे पायो लेखो कियो न जाइ। सूर श्याम हँसिहसि युवतिनसो ऐसी कहत वनाइ॥९३॥राग नट॥ घर तनु मनहिं विना नहिं जात।आपु हँसिहँसि कहतहौ जू चतुरईकी वात ॥ तनहिंपर है मनहिं राजा जोइ करै सोइ होइ। कहो घर हम जाहिं कैसे मन धरयो तुम गोइ ॥ नयन श्रवन विचार सुधि वुधि रहे मनहिंलुभाइ। जाहिं अवही तनहि लै घर परत नाहिंन पाइ ॥ प्रीतिकरि दुविधा करी कत तुमहि जानौं नाथ । सूरके प्रभु दीजिये मन जाइं घर लैसाथ ॥ ९४ ॥राग कान्हरो॥ मनभीतर है वास हमारो । हमको

मटुकीको खायो तुम्हरोकैसो लागत॥लैआई वृषभानुसुता हँसि सदलोनीहै मेरी । लैदीन्हीं अपने कर हरिमुख खात अल्प हँसि हेरी॥ सबदिनते मीठो दधिहै यह मधुरे कह्यो सुनाइ । सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रजललनामनभाइ७७राग रामकलीमेरे दधिको हरिस्वाद न पायो ।जानतइनगुजरिनि-कोसोहैलयो छिडाइमिलि ग्वालनिखायो।धौरी धेनु दुहाइछानि पयमधुर आंचमेंअवटिसिरायो॥ नई दोहनी पोंछि पखारी धरि निर्धूम खिरनिपरतायो।तामें मिलि मिश्रित मिश्री करि दै कपूर पुट जावन नायो ॥सुभग ढकनियां ढांपि बांधि पट जतन राखि छींके समदायो ॥ हौं तुम कारण लै आई गृह मारगमें न कहूं दरशायो । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि कियो कान्ह ग्वालिनि मन-भायो ॥७९॥राग नट॥गोपिन हेतु माखन खात ।प्रेमके वश नंदनंदन नेक नहीं अघात ॥ सबै मटुकी भरी वैसिहि प्रेम नहीं सिरात। भाव हृदये जान मोहन खात माखन जात॥ एक कर दधि दूध लीने एककर दधि जात।सूर प्रभुको निरखि गोपी मनहि मनहि सिहात ॥८०॥राग बिलावल॥ गोपी कहति धन्य हम नारि । धन्यदूध धनिदधिधनिमाखन हम परुसतिजेंवत गिरधारि॥१॥धन्य घोष धनि निशि धनिवह घरि धनि गोकुल प्रगटे बनवारि ।धन्यसुकृतपाछिलोधन्यधनि धन्य नंद यशुमति महतारि ॥ धनिधनि ग्वाल धन्य वृंदावन धन्य भूमि यह अति सुखकारि। धन्य दान धनि कान्हमँगैया धन्य सूर तृण द्रुम वन डारि॥८१॥राग नट॥गण गंधर्व देखि सिहात । धन्य ब्रजललनानि करते ब्रह्म माखन खात॥नहीं रेख न रूप नहिं तनु वरन नहिंअनुहारि ।मात पितु दोऊ न जाके हरत मरत न जारि ॥आपु करता आपु हरता आपु त्रिभुवन नाथ । आपही सब घटके व्यापी निगम गावत गाथ ॥ अंगप्रति प्रतिरोम जाकेकोटिकोटि ब्रह्मंड।कीट ब्रह्म प्रयंतजल थल इनहिंते यह मंड ॥ विश्वविश्वंभरन एई ग्वालसंग विलास । सोइ प्रभु दधिदान मांगत धन्य सूरजदास ॥८२॥राग रामकली॥कंसहेतु हरि जन्म लियो।पापहि पाप धरा भई भारी तब हमसबनि पुकार कियो ॥ शेषशैन जहँ रमासंगमिलितहां अकाश भई यह बानी। असुर मारि भुवभार उतारौं गोकुल प्रगटौं आनी ॥ गर्भ देवकीके तनु धरिहौं यशुमतिको पय पीहौं । पूरब तप बहु कियो कष्टकरिइनको बहुत कहूंनाहिं॥यह बानी कहि सूर सुरनको अब कृष्णा अवतार। कह्यो सबनि ब्रजजन्म लेहु सँग हमरे करहु बिहार८३राग गौरी॥ब्रह्म जिनहिं यहआयसुदीन्हों। तिन तिन संगजन्मलियो ब्रजमें सखी सखा करि परगट कीन्हों॥ गोपी ग्वाल कान्ह दुइ नाहीं ये कहुँ नेक न न्यारे जहांजहां अवतारधरत हरिये नहिं नेकविसारे॥एकै देह बिहार करि राखे गोपीग्वालमुरारि।यहसुख देखिसूरके प्रभुकोथकितअमरसँगनारि॥ ८४॥ राग गौरी॥अमरनारिअस्तुतिक[illegible] [illegible] को सुख नहिं तिहुँभुवन विचारी॥धन्य कान्ह[illegible] गोरस कीच ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १० ॥ कान्ह रूप उजागरि श्याम भ[illegible] आँगनबारी । कापहि मांगत दान भए कबते अधिकारी ॥ मात सूर श्याम [illegible] सब [illegible] पिता जसे चलैं तैसे चलिये आपु । कठिन कंस मथुरा बसे को कहि लेइ सँतापु ॥ हौं वृंदावन चंद्र कहा कहत नंदलाडिले॥ ११ ॥ कहे न जाइ उताल जहां भूपाल तिहारो । अग्नि पान किये सांवरे केतिक कोउ करे हमारो ॥ शेष सहसफन नाथि ज्यों सुरपति करे निरंस। जो पूछो सति भाउ बपुरो कंस॥कहत ब्रजनागरी ॥१२॥ जाके तुम सुकुमारताहि हम नीके जानें। गर्भसाटि यशुदालियोतब आदि अद्यावलिमानें ॥ बातनि बडे न हूजिये सुनहु श्याम उतपाति॥ कब हरिबालक तुम आए राति॥कहत नंदलाडिले॥१३॥अरी ग्वारि मैमंत बचन बोलत जुअनेरो। कमलकोम अलिभोर-भए गर्भ कब लियो बसेरो॥प्रबल असुर पुहुमी बडे विधि कीन्हे यु ख्याल। नंद कहतहै तुमसों ढोटा। दधि [illegible] गुपाल ॥ कहत ब्रजनागरी १४॥तुम [illegible]

न न चोरावें । क्यों गोपिनको आपु जनावें॥भुजा उलूखल नहीं बँधावें॥ जमलामोक्षकौनविधि पावें॥५॥ सो प्रभु दधिदानी कहवावें। गोपिनको मारग अटकावें ॥ करिलेखो कै दानसुनावें। आपुन खीझें उनहि खिझावें ॥६॥ व्रजवासी जो धन्य कहावें । जहां श्याम दधिदान लगावें॥ मांगि खात आनंद बढावें ।युवतिनसों कहि कहि परुसावें ॥७॥ तेई हरि नटवर वपु काछे । मोर मुकुटपीतांबरआछे॥ग्वालसखाठाढेसबपाछे॥सूरश्याम गोपिन सुख साछे॥८॥८६॥राग सूही॥ यह महिमा येईपे जानें । योग यज्ञ तप ध्यान न आवत सो दधि दान लेत सुख मानें ॥ खात परस्पर ग्वालन मिलिके मीठोकहि कहि आपु बखाने। विश्वंभर जगदीश कहावत ते दधिदोनामाँझ अघाने ॥ आपुहि हरता आपुहि करता आपु बनावत आपुहि भाने। ऐसे सूरदासके स्वामी ते गोपिनके हाथ बिकाने ॥ ८७ ॥राग रामकली॥ धनि बडभागिनी व्रजनारि। खात लै दधि दूध माखन प्रगट जहां मुरारि ॥ नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि ।शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि॥ देखि सुख व्रजनारि हरिसंग अमर रहे भुलाइ । सूर प्रभुके चरित अगनित वरनिकापैजाइ॥८८॥राग बिलावल॥व्रजवनितायहकहतिश्यामसोंमाखनदूधदह्योअरुल्यावें।मटुकिनते हम देहिं खाहु तुम देखिदेखि नैननि सुख पावें॥गोरस बहुत हमारे घरघर दान पाछिलो लेहु । खायो जौन दान आजुहिको मांगतहैं सब देहु ॥ सबै लेहु राखहु जिनि थाकी पुनि न पाइहौ मांगे। आजुहि लेहु सबै भरिदैहैं कहति तुम्हारे आगे॥ कह्यो श्याम अब भई हमारी मनहिं भई परतीति। जब चैहें तब मांगिलेहिंगे हमहिं तुम्हें भइ प्रीति ॥ बेचहु जाइ दूध दधि निधरक घाट बाट डर नाहीं । सूर श्याम वश भई ग्वारिनी जात बनत घर नाहीं ॥ ८९ ॥ राग येडी ॥ सुनहु सखी मोहन कहा कीन्हों । एक एकसों कहति बात यह दान लियो की मन हरि लीन्हों ॥ यह तौ नाहिं बदी हम उनसों बूझहुँ धौं यह बात । चकृत भई बिचार करत यह बिसारिगई सुधिगात ॥ उमचिजाति तबहीं सब सकुचति बहुरि मगन ह्वैजाति । सूरश्यामसों कहौं कहा यह कहत न बनत लजाति॥९०॥राग धनाश्री॥श्यामसुनहु एकबात हमारी । ढीठो बहुतकियोहमतुमसों सो बकसो हरि चूक हमारी ॥ मुख जो कही कटुक सब बानी हृदय हमारे नाहीं।हँसिहँसि कहति खिझावति तुमको अतिआनँद मनमाहीं ॥ दधिमाखनको दान और जो जानो सबै तुम्हारो । सूर श्याम तुमको सब दीनों जीवनप्राण हमारो ॥ ९१ ॥ नंदकुमार कहा यह कीन्हों । बूझति तुमहिं [illegible] हरिलीन्हों ॥कछू दुराव नहीं हम राख्यो निकट तुम्हारेआई।

दूध लै हँसत मिलैं इकसाथ॥कहत व्रजनागरी॥ २६ ॥ [illegible] नहिं राखे सो क्यों अंतर राखे । काचपोत गिरिजाइ नंदघर गथौ न पूजे॥ बिनही लीने आपिये सो कामरिको [illegible] मेरी।तुमते जाइगी कान्ह तुम्हारो मोल॥कहतनंदलाडिले॥२७॥शिवविरंचिसनकादिआदितिनहूं नहिं जानी। शेप सहसफन थक्यो निगम कीरति न बखानी ॥ तेरी सों सुनि ग्वालिनी इहै मेरे मनमांह । भुवन चतुर्दश देखिए वा कामरिकी छांह ॥ शेप न पायो अंत पुहुमि जाकी फनवारी । पवन बुहारत द्वार सदा शंकर कुतवारी॥धर्मराज जाकी पवरि सनकादिक प्रतिहार । मेघ छ्यानवे कोटि सब जल ढोवहिं प्रतिवार॥कहत व्रजनागरी॥ २८ ॥जिनहि इतो परताप गाइ सो कतहि चरावै।परदाराके जाइ आपु कत लज्जा पावै॥ वरके बाढे रावरे बातें कहत बनाइ । ग्वारनिपै लै खातहैं जूठी छाक छिनाइ॥कहत नँदलाडिले॥२९॥धेनुरूप मम देह करत कौतूहल न्यारे। गोकुल गुप्त बिलास जानि को सकै हमारे॥या वृंदावन ग्वारिनी जित तित अमृतबेलि । तिहूंलोकमें गाइ ये

लेकरि तुमहिं छिपायो कहा कहति यह दोष तुम्हारो ॥ अजहूं कहीं गेह हमअनतहि तुमअपनो मन लेहु । अब पछितानी लोकलाज डर हमहिं छांडि तुम देहु॥ बदली होइ जाहिते अपनी ताको कीजे त्याग । धोखे कियो वास मन भीतर अब समुझे भइ जाग॥ मन दीन्हो मोको तब लीन्हो मन लेहो में जाउ॥ सूर श्यामऐसीजनिकहिये हमयहकहीसुभाउ॥ ९५॥ तुमहिविना मन धिक अरु धिक घर । तुमहि विना धिकधिक मातापितु धिक कुलकानिलाजडर॥ धिकसुत पतिधिकजीवन जगको धिक तुमविन संसार॥ धिकसो दिवस पहर घटिका पल धिक धिक यह कहि नंदकुमार॥ धिकधिकश्रवणकथा विनु हरिकेधिकलोचनविनरूप॥ सूरदासप्रभु धिक तुमविनुघरधिकयोंवनभीतरके कूप॥ ९६॥ अथ दानलीला ॥ राग रामकली ॥ सुनि तमचुरको शोर घोषकी बागरी। नवसत साजि शृंगार चली वन नागरी ॥ १॥ नवसतसाजि शृंगार अंग पाटंबर सोहे। एकते एक विचित्र रूप त्रिभुवन मन मोहे ॥ इंदा विंदा राधिका श्यामा कामा नारि। ललिता अरु चंद्रावली सखिनमध्य सुकुमारि ॥२॥ कोउ दूध कोउ दह्यो मह्यो लै चली सयानी । कोउ मटुकी कोउ माट भरी नवनीत मथानी ॥ गृहगृहते सब सुंदरी जुरि यमुनातट जाइ । मनहि हरष मनमें कियो उठीं श्यामगुण गाइ॥३॥ यह सुनि नंदकुमार सैन दै सखा बोलाए। मन हरषित भये आपु जाइ सब ग्वाल जगाए ॥ यह कहिके तब साँवरे राखे द्रुमनि चढाइ । और सखा कछु संग लै रोकिरहे मग जाइ॥ ४॥ एक सखी अवलोकतही सब सखी बोलाई । यहि वनमें इक बार लूटि हम लई कन्हाई॥ तनक फेर फिरि आइए अपने सुखहि विलास॥ यह झगरो सुनि होइगो गोकुलमें उपहास॥५॥ उलटि चली सब सखी तहां कोउ जान न पावै । रोकिरहे सब सखा और बातनि विरमावै ॥ सुबल सखा तब यह कह्यो तुम ग्वालिनि हरियोग। कैसे बातें दुरति हो तुम उनके संयोग ॥ ६॥ किनहुश्रृंगकोउ वेनु किनहु वनपत्र बजाये । छांडि छांडि द्रुमडार कूदि धरनी धसि धाये ॥ सखिनमध्य इत राधिका सखामध्य बलवीर । झगरोठान्यो दानको कालिंदीकेतीर॥ कहत नँदलाडिले॥ ७॥ देनागिनि दधिदान कान्ह ठाढे वृंदावन। और सखा हरिसंग वच्छ चारत अरु गोधन॥ वे वडे नदकेलाडिले तुम वृषभानुकुमारि। दह्यो मह्योके कारने कतहि बढावति रारि ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ८॥ सूधे गोरस मांगि कछू लै हमपे खाहू। ऐसे ढीठ गवार कान्हवरजतनहिंकाहू॥ एहिमग गोरसलैसबै दिनप्रति आवहिं जाहिं॥ हमहिं छाप देखरावहू दानचहतकेहिपाहिं॥ कहत नँदलाडिले॥ ९॥ इतेमान सतरात ग्वारि हम जान न देहैं। अनउत्तरकहाकहतितुमहिंवशकान्ह भयेहैं॥ [illegible] वनवीच । पुहुमि माहँ ढरकाइहैं [illegible] ॥ [illegible] गोरस कीच ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १० ॥ कान्ह अचगरयो [illegible] [illegible] सब आँगनवारी । कापहिं मागत दान भए कबते अधिकारी ॥ मात [illegible] पिता जैसे चलें तैसे चलिये आपु । कठिन कंस मथुरा बसै को कहि लेइ संतापु ॥ कहत नंदलाडिले॥ ११ ॥ कहे न जाइ उताल जहां भूपाल तिहारो । हो वृंदावन चंद्र कहा कोउ करे हमारो ॥ शेष सहसफन नाथि ज्यो सुरपति करे निरंस॥ अग्नि पान किये सांवरे केतिक बपुरो कंस॥ कहत ब्रजनागरी ॥१२॥ जाके तुम सुकुमार ताहि हम नीके जानें। जो पूछो सति भाउ आदि अब्यानविभाने ॥ वातनि वडे न हूजिये सुनहु श्याम उतपाति॥ गर्भसाटि यशुदालियोतव तुम आए राति॥ कहत नंदलाडिले॥ १३॥ अरी ग्वारि मैमत वचन बोलत जुअनेरो। कब हरिबालक भए गर्भ कब लियो बसेरो॥ प्रबल असुर पुहुमी बडे विधि कीन्हे ये ग्वाल। कमलकोस अलिभोर ए त्यो तुम भुरयो गुपाल ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १४॥ तुम भुरएहो नंद कहत है तुमसो ढोटा। दधि

ओदनके काज देह धरि आए ॥ गढिगढि मिलवत लाडिले भली नही यह श्याम । या धोखे जिनि भूलहू हम समरथकी वाम ॥ कहत नँदलाडिले ॥१५॥ तुम समरथकी वाम कहा काहूको करिहौ । चोरी जाती वेचि दान सब दिनको भरिहौ ॥ जो प्रभु देह न धरें दीन खल कौनउ धारें। कंसकेश को गहे विघ्न व्रजको को टारें ॥ कहा निगम कहि ध्यावतो कहा मुनिजन धरते ध्यान । दरशपरश विन नामगुनको पावें पद निर्वान । कहत व्रजनागरी ॥१६॥ जो पै दरशनपरस नाम गुण केलि कन्हाई । तुम निर्भयपद देत वेदविधि इहै वताई॥ योग युक्ति तप ध्यावहीतिनगति कौनदयाल । जलतरग ज्यो मीनगति विधे कर्मके जाल ॥ कहतनदलाडिले ॥१७॥ जटाभस्म तनुदहै वृथा करि कर्म वँधावे। पुहुमि दाहिनी देहि गुफावसि मोहि नपावे॥ तजि अभिमानजोगा-वहीगदगदसुरहि प्रकाश । तासु मगन हो ग्वालिनी ता घट मेरो वास॥ कहत व्रजनागरी ॥ १८॥ जुपे चाहि ले श्याम करत उपहास घनेरो । हम अहीरि गृह नारि लोक लज्जाके जेरो ॥ ता दिन हम भई वावरी दियो कठते हार।तवतेघरघेराचल्यो श्याम तुम्हारोजार॥कहत नँदलाडिले ॥१९॥ सखा सवनि मिलि कह्यो ग्वारि एक वात सुनावे । तो तनु ज्योति सुभाउ रूप उपमा को पावे॥ गुप्त प्रीति विधना करी रसिक सॉवरेयोग । यह विचार सुनि ग्वारिनी न्याउ हँसेगो लोग॥ कहत व्रजनागरी॥२०॥ ऐसी वातें कान्ह कहत हमसोय हेते।चोरी खाते छांछिनयनभरिलेतगहेते ॥ देत उरहनो रावरे वछग दॉवरि जोरि।जननी उखलवांधतीहमही देती छोरि॥ कहतनँदलाडिले॥२१॥ वालकरूप अजान कहा काहू पहिचाने।अनउत्तरकोउ कहे भली अनभलीन मानै॥वहदिनसुमिरौ आपनो न्हाति यमुनके पानि । सब मिलि मो हाहा करी वस्त्र हरयो मैं जानि ॥ कहत व्रज-नागरी ॥ २२॥ वहुत भए हौ ढीठ देत मुखऊपर गारी। जेहि छाजे तेहि कहो इहां कोउ दासि तुम्हारी ॥ तुमसो अव दधिकारने कौन वढावे रारि । काहेको इतगतहौ रोकि पराई नारि ॥ कहत नँदलाडिले ॥ २३ ॥ लियो उपरना छीनिदूरि डारनि अटकायो । दियो सखनि दधि वॉटि माट पुहुमी ढरकायो ॥ फेंट पीनपट सॉवरे कर पलाशके पात। हँसत परस्पर ग्वाल सब विमल विमल दधिखात॥ कहत व्रजनागरी ॥२४॥ कान्ह वहोरि न देहु दही काहेको माते । वसिये एकहि गाउ कानि राखतिहै ताते॥ तव न कछु वनिआइहे जव रिसहैं सब नारि। करि लरिकनिके चर करत यहपुनि धरिहैं लाड उतारि॥ कहत नँदलाडिले॥२५॥ गहि अचल झकझोरि तोरि हारावलि डारी। मटुकी लई उतारि मोरि भुज कचुकि फारी ॥ लैलै ठाढे ग्वार सब दोना एकएक हाथ।खातजातदधि दूध लै हँसत मिले इकसाथ॥ कहत व्रजनागरी ॥ २६ ॥ झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहिं कीजे। कानपोत गिरिजाइ नदघर गयौं न पूजे॥ विनही लीने आपिये सो कामरिको तोल।लाख मुँदरिया जाइगी कान्ह तुम्हारो मोल॥ कहतनदलाडिले॥२७॥ शिवविरचिसनकादिआदितिनहू नहिं जानी। शेष सहसफन थक्यो निगम कीरति न वखानी ॥ तेरी सो सुनि ग्वालिनी इहै मेरे मन-मांह । भुवन चतुर्दश देखिए वा कामरिकी छांह ॥ शेष न पायो अन्त पुहुमि जाकी फननारी । पवन वुहारत द्वार सदा शकर कुतवारी॥ धर्मराज जाकी पवरि सनकादिक प्रतिहार । मेघ छवान-वें कोटि सब जल ढोनहिं प्रतिवार॥ कहत व्रजनागरी॥ २८ ॥ जिनहि इतो परताप गाइ सो कनहि चरावे।परदाराके जाइ आपु कत लज्जा पावे॥ घरके वाढे रावरे वातें कहत वनाइ । ग्वारनिपै लै खातहैं जूठी छाक छिनाइ॥ कहत नँदलाडिले॥२९॥ धेनुरूप मम देह करत कौतूहल न्यारे। गोकुल गुप्त निवास जानि को मर्म हमारे॥ या वृदावन ग्वालिनी जित तित अमृतवेलि । तिहूलोकमें गाइ ये

मेरे रसकी [illegible] । अधर नयन रस [illegible] वलइत-रातहो देहुँ न नख भरि तोहिं॥कहत नँदलाडिले॥३१॥ चितैवदन मुसकाइ हाथ दधिपून दोना। इत सुंदरी विचित्र उतहि घनश्याम सलोना ॥ अतितामस तोहि ग्वालिनी मैं मत्र जानतआदि । खोटी करनी जाहि मेरकी मोड़ करे उपादि ॥ कहत ब्रजनागरी ॥३२॥ तोहिं न छांडौ कान्ह दान तुमको नहिं देहौं । विना कहे ब्रजलोग कहा काहू पतिऐहौं ॥ लाज नहीं तुम आवई बोलत जब मतराइ । कहूं कंस सुनि पाइहै गहत फिरहुगे पाइ ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३३ ॥ सुनत हँसे नँदलाल ग्वारि जिय तामस मान्यो । सींच्यो अमृतबैन कोप कंपन नहिं जान्यो ॥ कहां वमतिहो वावरी सुनहु न मुग्ध गँवारि । ब्रजवासी कहा जानिहौतामसको व्यवहारि॥ कहत ब्रजनागरी ॥३४॥ जननी जन परिहग्यो तात कुलधर्म नशायो । गोपराइके गेह पुत्र ह्वै नाम धरायो ॥ इतनेते इतनो कियो खाटी छांछि पिवाइ । तुमहि दोष नहिं लाडिले ओछे गुण क्यों जाइ॥कहत नंदलाडिले ॥३५॥ अविगत अगम अपार आदि नाही अविनासी । परम पुरुष अवतार माया जिनकी है दासी ॥ तुमहि मिलेओछे भएकहा रही करि मौन । तुम्हरेआगे न्याबँहै दुइमे ओछो कौन ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३६ ॥ हमहि ओछाई भई जनहि तुमको प्रतिपाले। तुम पूरे मब भांति मात पितु संकट घाले ॥ कहा चलत उपरानटे अजहुं खिसी न गात । कंस सौंह दे पूछिये जिन पटके ह्वै सात॥ कहत नंदलाडिले ॥३७॥ कंसकेश निग्रहौं पुहुमिको भार उतारौं ।उग्रसेनशिर छत्र चमर अपने कर ढारौं ॥ मथुरा सुरनि बसाइहौं असुर करौं यमहाथ । दनुज वदन विरदावलीसांचो त्रिभुवननाथ ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३८ ॥ तब न कंस निग्रह्यो पुहुमिको भार उतारयो। चोरी जायो मातु गोद गोकुल पगधारयो ॥ अब बहुतै बातें कहौ दही दूधके मात । जो ऐसे बलवत हौ मथुरा काहे न जात ॥ कहत नंदलाडिले ॥ ३९ ॥ जो जैहौ मधुपुरी बहुरि गोकुल नहिं ऐहौ ।यह अपनो परताप नंद यशुमतिहि सुनैहौ ॥ वचनलागि मैं हे कियो यशुमतिको पयपान ।मोहि ग्वार जनि जानहु ग्वारिनि सुनहु निदान॥कहत ब्रजनागरी ॥४०॥ हम ग्वाली तुम तरनिरूप रम रविशशि मोहै। तीनलोक परताप छत्र सिंहासन सोहै ॥ गयो गर्व गति ग्वालिनी देखि चरित तेहि काल। हम अहीर ढीगे दई तुम जेजे मदनगोपाल ॥ और दिननते आजु दही हम उत्ता ल्याई । देखत ज्योति विलास दई मुख वचन ढिठाई ॥ कान्ह बिलग जिनि मानहु राखहु पिछलो नेहु। दही दूधकी को गने कछु हमहूपैते लेहु ॥ धन्य नंदको गेह धन्य गोकुल जहँ आये। धनि गोपनकी नारि जहा तुम रोकन धाये ॥ धनिधनि झगरो आजुको इह मुख नाहिन पार। नदनँदन पर कीजिये तन मन धन बलिहार ॥ लै दधि आगे धरयो कान्ह लीजै जो भावे। खाइ जाइ मजार काज एकौ नहिं आवे॥ हम अनखी या बातको लेत दानको नाउँ। सहजभाव रहो लाडिले बसत एकही गाउँ । कहत नँदलाडिले ॥ ४१ ॥ अभरन दियो मगाइ कियो गोपिन मनभायो । हिलिमिलि वढ्यो सनेह आपु कर माट उठायो॥ नंदनंदन छवि देखिके गोपिन वारो प्रान। कुजकेलि मनमें वसी गायो सूर सुजान॥४२॥ ११६०॥ राग बिलावल ॥जबहिं कान्ह यह बात सुनाई। ब्रजयुवती अति गई मुरझाई ॥ कंस सँहारन मथुरा जैहौं बहुरौ फिरि ब्रजको नहिं ऐहौ॥ देवै गर्भवास हौं लीन्हौं। तुमको गोकुल दरशन दीन्हो ॥ नंद यशोदा अति तप कीन्हो । मोसो पुत्र

मांगि तब लीन्हों ॥ मोसो दूजो और न कोई । हरता करता मेंही सोई ॥ तुमसो सुत पयपान कराऊं । यह तुमसों मैं माँगि पाऊं ॥ मोसो सुत तुमको मैं देहौं । मथुरा जनमि गोकुलहि ऐहौं ॥ नंद यशोदा बचन बँधायो । ताकारण देही धरि आयो ॥ यह बाणी सुनि ग्वारि झुरानी । मीन भये मानो बिन पानी ॥ इहै कथा तब गर्ग सुनाई । सोई आपु कहन री माई ॥ नरदेही करि मोहि न जानो । ब्रह्मरूप करि मोको मानो ॥ षोडश वरष मिले सुख करिहौं । मथुरा जाइ देव उद्धरिहौं ॥ केश गहे अरि कंस पछरिहौं । असुर कठोर यमुन लै डरिहौं ॥ रंगभूमि करि मल्लन मारौं । प्रबल कुवलियादंत उपारौं ॥ सुनहु नारि हरिमुखकी बानी । यह सुनिसुनि तरुणी विकलानी ॥ तन मन धन इनपर सब वारहु । जोबनदान देहु रिसि टारहु । षोडश वर्ष गए धौं जैहैं । ब्रजते जाइ मधुपुरी रैहैं ॥ राजा उग्रसेनको करिहैं । कनकदंड आपुन कर धरिहैं ॥ मात पिता वसुदेव देवकी । यशुमति धाइ कहतिहैं इनकी ॥ अब तिनके बंधन मोचहिंगे । दरशबिनापुनि हम लोचहिंगे ॥ मथुरा नारिनको सुख देहैं । तब घट प्राण कहो क्यों रैहैं ॥ कहत हँसी यह बात अयानी । जानतिहौ तुम कछुक सयानी ॥ जोबन दान लेहिंगे तुमसों । चतुराई मिलवतिहैं हमसों ॥ इनके गांस कहा री जानो । इतनी कही एक जनि मानो ॥ जो चाहै सो दीजै इनको । ज्यो विन देखे रहत न जिनको ॥ आपुआपु यह बात विचारैं । नारि नारि मन धीर न धारैं ॥ आगे धरैं दूध दधि माखन । प्रथमहिं यह कीजै संभाषन ॥ बडे चतुर तुम अहो कन्हाई । तरुनि सबनि कहि इहै सुनाई ॥ जानी बात तुम्हारे मनकी । दूरि न कीजै यह रिस तनकी ॥ सबनि धरयो दधि माखन आगे । लेहु सबै अब बिनही माँगे ॥ तुव रिस करत देखि सुख पावैं । याते बारहिं वार खिझावैं ॥ तनु जोवन धन अर्पन कीन्हों । मन दै मन हरिको सुख दीन्हों ॥ सुभग पात दोना लिये हाथनि । बैठे सखा श्यामएकसाथनि ॥ मोहन खात खवावत नारी । माँगिलेत दधि गिरिवर-धारी ॥ आपुहि धन्य कहति ब्रजनारी । रुचिकरि माँगि खात बनवारी ॥ और खाउ मोहन दधिदानी ॥ यह कहि कहि तरुणी मुसुकानी ॥ सुख दीनो हरि अंतर्यामी । ब्रज युवतिनके पूरनकामी ॥ देखत रूप थकित ब्रजनारी । देह गेहकी सुद्धि विसारी ॥ सूर श्याम सबके सुखकारी । कह्यो जाहु घर घोषकुमारी ॥ ६१ ॥ राग रामकली ॥ युवती ब्रज घर जान विचारति । कबहुँक मटुकी लेत शीशपर कबहुँ धरणि फिरि धारति ॥ देखत श्याम सखासब देखत चितैरहीं ब्रजनारि । रीती मटुकिनमें कछु नाहीं सकुचति मनहिं विचारि ॥ तब हँसि बोले श्यामजाहु घर तुमको भई अबार । सकुचति दान पाछिलेको तुम मैं करिहौं निर्वार ॥ यह कहिके हरि ब्रजहि सिधारे युवतिन दान मनाई । सूर श्याम नागर नारिनके चित लैगए चुराई ॥ ६२ ॥ राग बिलावल ॥ भलाईआ ॥ रीती मटकी शीश लै चलीं घोषकुमारी । एक एककी सुधि नहीं को कैसी नारी ॥ बनहीमें बेंचति फिरैं घरकी सुधि डारी । लोक लाज कुलकानिकी मर्यादा टारी ॥ लेहुलेहु दधि कहतिहैं बनशोर पसारी । द्रुम सब घर करि जानहीं तिनको दे गारी ॥ दूध दह्यो नहिं लेहुरी कहिकहि पचिहारी । कहति सूर घर कोउ नहीं कहां गई दईमारी ॥ ६३ ॥ राग सोरठि ॥ या घरमें कोउ है की नाहीं । बारबार बूझति बृक्षनको गोरस लैहौ कि नाहीं ॥ आपुहि कहति लेहु नाहीं दधि और द्रुमन तर जाती । मिलति परस्पर विवश देखि तेहि कहति कहा इतराती ॥ ताको कहति आपु सुधि नाहीं सो पुनि जानत नाहीं । सूर श्याम रसभरी गोपिका बनमें यों वितताहीं ॥ ६४ ॥ रीती मटुकी शीश धरैं । बनकी घरकी सुरति न काहू लेहु दही यह कहत फिरैं ॥ कबहुँक जाति कुंज भीतरको तहाँ

श्यामकी सुरति करै। चौंकि परति कछु तनु सुधि आवति जहाँ तहाँ सखि सुनति ररै॥ तब यह करति कहाँ मैं इनिसों भ्रमि भ्रमि बनमें वृथा मरै। सूर श्यामके रस पुनि छाकति वैसेहीढग बहुरि ढरै॥६५॥ राग नट॥तरुणी श्यामरस मतवारि॥प्रथम जोवनरस चढायो अतिहि भई खुमारि॥ दूध नहिं दधि नहीं माखन नहीं रीतो माट। महारस अंगअंग पूरण कहा घर कहा बाट॥ मातु पितु गुरुजन कहाको कौन पति को नारि। सूर प्रभुके प्रेम पूरन छकिरहीं व्रजनारि॥६६॥राग रामकली॥गोरस लेहु री कोउआइ।द्रुमनिसों यहकहतिडोलतिकोनलेइबुलाइ॥ कबहुँ यमुनातीरको मन जातिहैं अकुलाइ। कबहुँ बंसीवटनिकट जुरि होति ठाढी धाइ॥ लेहु गोरसदान मोहन कहा रहे छपाइ। डरनि तुम्हरे जाति नाहीं लनदह्यो छिडाइ॥ मागिलीजै दान अपनो कहतिहैं समुझाइ। आइहो पुनि रिस करत हरि दह्यो देत वहाइ॥ एक एकहि बात बूझत कहा गए कन्हाइ। सूरप्रभुके रगराची जियगयो भरमाइ॥६७॥ राग जैतश्री॥ बैठिगई मटुकी सब धरिकै। यह जानत अबहीं आवत ग्वाल सखा संग हरिकै॥ अचलमों दधिमाट दुरावति दृष्टि गई तहां परिकै। मथनिमटुकिया रीती देखी तरुनी गई भभरिकै॥ कहिकहि उठी जहां तहँ सब मिलि गोरस गयो कहुँ ढरिकै।कोउकोउ कहै श्याम ढरकायो जानदेह री जरिकै॥ यहि मारग कोऊ जिनि आवहु रिस करि चली डगरिकै। सूर सुरति तनुकी कछु आई उतरत काम लहरिकै॥६८॥ रागनट॥ चकृत भई घोषकुमारि। हम नहीं घर गईं तबते रही निचारि निचारि॥ घरहिते हम प्रात आई सकुचि वदन निहारि। कछु हसति कछु डरति गुरुजन देतिहैं हँगारि॥ जो भई सो भई हम कह रहीं इतनी नारि।सखासँग मिलि खाइ दधितबही गए बनवारि॥ इहालोंकी बात जानति यह अचभो भारि।इहै जानति सूरके प्रभु गए गिर कछु डारि॥६९॥राग धनाश्री श्यामबिना यह कौन करै। चितवतही मोहनी लगावत नैक हँसनिपर मनहिं हरै॥ रोकिरह्यो प्रातहि गहि मारग लेखो करि दधिदान लियो। तनुकी सुधि तबहीत भूली कछु पढिकै शिर नाइदियो॥ मनके करति मनोरथपूरण चतुर नारि एहिभाति क[illegible]। सूर श्याम मन हरयो हमारो तहि बिनु कहु कैस निबहै॥७०॥ मन हरिसों तनु घरहिंचलावति। ज्यों गज मत्त जाल अंकुशकर वर गुरुजन सुधि आवति॥हरिरसरूप इह मद आवत डर डारयो ज महावत। गेह नेहबधन पग तोरयो प्रमसरोवर धावत॥ रोमावलीसूंड विनिकुच मनो कुंभस्थल छबिपावत। सूर श्यामकेहरि सुनिकै जोवनगज दर्प नशावत॥७१॥युवतिगई घर नेक न भावत। मात पिता गुरुजन पूछत कछु औरै और बतावत॥ गारी देति सुनति नहिं नेकहु श्रवणशब्द हरि पूरे। नैन नहीं देखति काहूको जो कहुँ होहिं अधूरे॥ वचन कहति हरिहीके गुनको उतही चरण चलावै। सूर [illegible] बिनु [illegible]र न भावै कोउ जितनो समुझावै॥७२॥ सोरठ॥ लोकसकुच कुलकानि तजी [illegible] न[illegible] धावै तैसे श्यामभजी॥ मात पिता बहुत्रास दिखायो नैक न डरी लजी। [illegible] लागति बहुते बुद्धि मजी॥ मानत नहीं लोकमर्यादा ह[illegible]के [illegible]नी। सूर [illegible] रजी॥७३॥बारबार जननी समुझावति। [illegible]म ज[illegible] [illegible]॥अपन कुलकी सखरि करो धौं सकुच [illegible] काहे डर लगावति॥ यह सुनिकै मन [illegible]ढरायो तहिडर नात न आननि॥ जान- [illegible] सूर यहि बात डगनी माना उर लै लागति

॥ ७४ ॥राग सारंग ॥नेक नहीं घरमों मन लागत। पिता मात गुरुजन परबोधत नीके वचन बाणसम लागत॥तिनको धिग धिग कहति मनहिंमन इनको बनै भलेही त्यागत । श्यामविमुख नर नारि वृथा सब कैसे मन इनिसों अनुरागत ॥ इनको वदन प्रात दरशै जिनि बारवार विधिसों यह मांगत। यह तनु सूर श्यामको अर्प्यो नेक टरत नहिं सोवत जागत॥७५॥राग धनाश्री ॥ पलकओट नहिं होत कन्हाई । घर गुरुजन बहुतै विधि त्रासत लाज करावत लाज न आई ॥ नयन जहां दरशन हरि अटके श्रवण थके सुनि वचन सोहाई। रसना और नहीं कछु भाषत श्यामश्याम रट इहे लगाई ॥ चित चंचल संगहिसँग डोलत लोकलाज मर्याद मिटाई । मन हरिलियोसूरप्रभु तबहीं तनु वपुरेकी कहाबसाई॥७६॥राग बिलावल ॥चलीं प्रात हीगोपिका मटुकिनले गोरस। नयन श्रवन मन चित बुधि ये नहिं काहूके वश ॥तनु लीन्हें डोलत फिरैं रसना अटक्यो जस। गोरस नाम न आवई कोऊ लैहै हरिरस॥जीव परयो या ख्यालमें अरु गए दशा दश। बझे जाइ खग-वृंद ज्यों प्रिय छवि लटकनि लस॥छांडिदेहु डरात नहिं कीन्हो पावै तस। सूर श्याम प्रभु भौंह-की मोरनि फांसी गस॥७७॥राग कान्हरो ॥ दधिवेचत ब्रजगलिन फिरैं । गोरसलेन बोलावत कोऊ ताकी सुधि नेकहु न करैं॥उनकी बात सुनत नहिं श्रवणनि कहति कहा ये घर न जरैं । दूधदह्यो ह्यां लेत न कोऊ प्रातहिते शिर लिये ररैं ॥ बोलि उठति पुनि लेहु गोपालहि घर घर लोक-लाज निदरैं। सूर श्यामको रूप महारसजाके बल काहू न डरैं॥७८॥गोरसको निजनाम भुलायो। लेहुलेहु कोऊ गोपालहि गलिनगलिन यह शोर लगायो ॥ कोउ कहै श्याम कृष्ण कहै कोऊ आजु दरश नाहीं हम पायो ।जाके सुधि तनकी कछु आवति लेहु दही कहि तिनहि सुनायो॥ एक कहिउठत दान मांगत हरि कहूँ भई की तुमहिं चलायो । सुनहुसूर तरुणी जोवनमद तापर श्याम महारस पायो॥७९॥ग्वालिनि फिरति बेहालहिसों । दधि मटुकीशिर लीन्हे डोलति रसना रटति गोपालहिसों॥गेह नेह सुधि देह बिसारे जीव परचो हरिख्यालहिसों । श्यामधामनिजत्रास रच्यो रचि रहित भई जंजालहिसों॥छलकत तक्र उफनि अँग आवत नहिं जानति तेहिकालहिसों। सूरदासचित ठौरनहींकहुँ मन लाग्योनँदलालहिसों॥८०॥राग मलार ॥ कोऊमाई लैहैरीगोपालहि। दधिको नाम श्यामसुंदर रस बिसरिगई ब्रजबालहि॥ मटुकी शीशफिरत ब्रजबीथिन बोलत वचन रसालहि । उफनत तक्रचहूँदिशि चितवति चित लाग्यो नँदलालहि ॥ हँसति रिसाति बोलावति बरजति देखहु उलटी चालहि ॥ सूर श्यामबिनु और न भावै या बिरहिनि बेहालहि ॥ ८१ ॥ राग गौडमलार ॥ ग्वालिनि प्रगटयो पूरन नेहु। दधिभाजन शिरपर धरे कहति गुपालहि लेहु॥ बन बीथिन निजपुर गली जहीं तहीं हरिनाउँ। समुझाई समुझत नहीं सिख दै बिथक्यो गाउँ ॥ कौन सुनै काके श्रवण काकी सुरति सकोच। कौन निडर डर आपको को उत्तम को पोच॥ प्रेम पिये बरबारुनी बलकत बल न सँभार । पग डगमग जित तित धरति मुकुलित अकल लिलार॥ मंदिरमें दीपक दिये बाहेर लखै न कोइ। तिन्हें प्रेम परगट भए गुप्त कौनपे होइ॥ लज्जा तरलतरंगिनी गुरुजन गहरी धार । दुहूँ कूल तरुनी मिलीं तिहि तरत न लागी बार॥ विधि भाजन ओछो रच्यो शोभासिंधु अपार । उलटि मगन तामें भई तब कौन निकासनिहार॥ जैसे सरिता सिंधुमें मिली जु कूल बिदारि। नाम मिटयो सलिले भई तब कौन निवेरै वारि॥ चित आकर्ष्यो नंदसुत मुरली मधुर बजाइ। जिहि लज्जा जग लज्जियो सो लज्जा गई लजाइ॥ प्रेम मगन ग्वालिनि भई सूर सु प्रभुके संग । नैन बैन मुख नासिका ज्यों कँचुलि तजै भुजंग॥८२॥

राग सुनराइ ॥छोटी गटुकिया मधुर चाल लेचलोरी गोरस वेचन ग्वाल।हरवगइ उठि आइ प्राततें बिथुरी अलक अरु वसन मरगजे तैसीये सोहति कुभिलानीमाल॥गेह नेह सुधि नेक नआवति मोहिरही तजि भव जजाल। औरै करति और कहिआवति मनमोहनकेपरी ख्याल॥जोइजोइ बूझन है री कहा यामें कहति फिरति कोऊ लेहु गोपाल । सूरदास प्रभुके रसवश भई चतुर ग्वालिनी तनु मनु गति वेहाल ॥८३॥ राग कान्हरो ॥ दधि मटुकी शिरधरे ग्वालिनी कान्हकान्ह करती डोले । विवश भई तनु न सँभारे री गोरससुधि विसरिगई आपु विकानी विनु मोले ॥ जोइजोइ पूछत यामे है री कहा लेहुलेहु करति फिरति डोल डोले ॥ सूरदास प्रभुके रस वश भई ग्वालिनी विरहावश तनुगति भई डोलै ॥८४॥ राग धनाश्री ॥ बेचतिही दधि ब्रजकीखोरि । शिरको भार सुरति नहि आवति श्यामश्याम टेरत भई भोरि ॥घरघर फिरति गोपालहि बेंचति मगन भई मन ग्वारि किशोरि । सुदर वदन निहारन कारन अतर लगी सुरतिकी डोरि ॥ ठाढी भई बिथकि मारगमे मँझ हाट मटकी सो फोरि । सूरदासप्रभु रसिकशिरोमणि चित चिंतामणि लियो अजोरि ॥८५॥ राग बिलावल॥ नरनारी सब बूझनजाई।दही मही मटुकीशिर लीन्हे बोलतिहो गोपाल सुनाई ॥ हमहिं कहा तुम करति कहा यह फिरति प्रातहीते हो आई । गृह द्वारो कहु है की नाहो पिता मात पति बधु न माई ॥ इतते उत उतते इत आवति विधि मर्यादा सबै मिटाई । सूर श्याममन हरयो तुम्हारो हम जानी इह बातबनाई॥८६॥ रागधनाश्री॥ कहति नदघर मोहिं बतावहु । द्वारहि मांझ बात इह कहती है कहाँ मोहिं दिखावहु॥याही गाँव किधौं औरै कहुँ जहां महरको गेह । बहुत दूरिते मैं आईहौं।कहि काहे न यश लेहु ॥ अतिही सभ्रम भई ग्वालिनी द्वारेही पर ठाढी।सूरदास स्वामीसो अटकी प्रीति प्रगट अतिबाढी ॥ ८७॥ राग गुडमलार ॥ ग्वारिनि नदहुआर नदगृह बूझै।इतहिते जाति उत उतहितेफिरिइत निकटहु जाति नहिं नेक सूझै॥भई बेहाल ब्रजबाल नँदलालहित अ[illegible]

लाज देखत लजी श्यामको भजी कछु डर न कीन्हो [illegible]

नहीं सुधि धाम कहुँ है किनाहीं। सूरप्रभुको मिली मेटि भलिअनभली चन हरदी रगी देहछाहीं ८८॥ राग रामकली ॥ तब एक सखी प्रीतम कहति।प्रेम ऐसो प्रगट कीन्हो धीर काहेनगहति॥ ब्रज घरनि उपहास जहँतहँ समुझि मन किनु रहति।बात मेरी सुनत नाहिन कतहिनिंदासहति ॥ मातु पितु गुरुजननि जान्यो भली खोई महनि। सूरप्रभुको ध्यानचितधरिअतिहि काहे बहति॥८९॥ राग धनाश्री ॥ आपुकहानतिबडीसयानी॥तबतूकहतिसबनिसोंहसिहँसिअबतूप्रगटहिभईदिवानी॥ कहँगई चतुराई तेरीअतिहीकाहे भईअयानी। गुप्त प्रीति परगट तें कीन्ही सुनति कछू घरघरकी बानी ॥एकहि बेर तजी मर्यादा मात पिता गुरुजनहिं भुलानी।सुनहु सूर ऐसी न बूझिये शीश धरेमटुकीनितत्तानी॥९०॥राग नट॥सुनु री ग्वारिसुगुधगवाँरि।श्यामसों हित भलेकीन्होराखिसकै उघारि॥ ओछी बुधि तै करीसजनी लाज दीन्ही डारि।लाजआवति मोहिं सुनिरी तोहि कहत गँवारि॥कृष्णधन कहाप्रगट कीजेदियो ताहि उघारि।अजहु काहेन समुझि देखति कह्यो सुनुरी नारि ॥ ज्वाब नाहिन आवईसुख कहतिहो जो पुकारि।सूर प्रभुकोपाइकै यह ज्ञान हृदय विचारि ॥९१॥राग कान्हरो ॥ कछुकेहै कोमानहिरै है। कहाकहतिहौतोसोकनकीताकोज्वाब कछूमोहि देहै॥ सुनिहै मात पितालोगनिसुख यह लीलाउनि सबैजनैहै। मातहिते आई दधिबेंचनघरहिआजुजैहै कि नजैहै॥मेरोकह्योमानिहैनाहीऐसेहिभ्रमिभ्रमिद्योसनितैहै।सुपतौसोलिसुनोतेरी बानीभलीबुरी

कैसी घर केहै ॥ गुप्तप्रीति काहे न करि हरिसों प्रगट किए कछु नफा बढेहे । सूर श्यामसो प्रीति निरतर लाज किये अतर कछु हैहै ॥ ९२॥ कहा कहति तू मोहि री माई। नदनँदन मन हरि लियो मेरो तबते मोको कछु न सोहाई॥अबलौ नहि जानति मैं कोही कबते तू मेरे ढिग आई । कहाँ गेह कहां मात पिताहै कहां सजन गुरुजन कोभाई॥कैसी लाज कानि है कैसी कहा कहतिहैहै रिसि-आई। अबतौ सूर भजी नदलालहि की लघुता कीहोउ बडाई ॥ राग धनाश्री॥बारबार मोहिकहासुना-वति। नेकहु टरत नही हृदयते अनेक भांति मनको समुझावति ॥ दो बल कहा देति मोहि सजनी तूतो बडी सुजान। अपनीसी मैं बहुते कीन्ही रहति न तेरी आन॥ लोचन और न देखत काहू और सुनत नहिं कान । सूर श्यामको बेगि मिलावहु कहति रहत घट प्रान ॥ ९३ ॥ सबै हिरानी हरि-मुख हेरे । घुँघट ओट पटओट करे सखि हाथौ हाथ न मेरे ॥ को है लाज कौनको डर है कहाकहै भौतेरे। को अब सुनै श्रवन है काके निपट निगमके टेरे॥मेरे नैननहो नैननकी जोपै जानत फेरे। सूरदास हैं चेरी कीनी मन मनसिजके चेरे॥९४॥राग नट॥ मेरे कहेमे कोऊ नाही । कहा कहौं कछु कहि नहिं आवै एकहु नही डराही ॥ नयन ए हरिदरशनलोभी श्रवण शब्द रसाल। प्रथमही मन गयो तनुतजि तब भई बेहाल ॥इंद्रियनपर भूप मनहै सबनि लिये बुलाइ।सूर प्रभुकोमिले सब ए मोहिं करिगये बाइ॥९५॥राग गौरी॥कहा करौमन हाथ नही । तू मोसो यह कहत भलीरी अपनो चित मोहिं देत नही ॥ नयन रूप अटके नहिं आवत,श्रवन रहे सुनि बात तही । इद्री धाइमिली सब उनको तनुमें जीव रह्यो सँगही ॥ मेरे हाथ नही ये कोऊ घटलीन्हैं इक रही मही । सूरश्याम संगते कहू टरत न आनि देहि जो मोहि तुही॥९६॥राग सारंग ॥बिकानी हरि मुखकी मुसकानि। परवशभई फिरति सँग निशिदिन सहज परी यह बानि॥नैननिनिरखि बसीठी कीन्हीमनुमिलयो पय पानि । गहि रतिनाथ लाज निजपुरते हरिको सौंपी आनि ॥ सुनि सखि समुखि नदनदनकी दासी सबजगजानि।जोइजोइ कहत करत सोई कृत आयसु माथे मानि॥ गयोज्ञातिअभिमान मोह मद पति परजन पहिचानि। सूर सिंधु सरिता मिलि जैसे मनसा बूँद हिरानि ॥ ९७॥ अबतो प्रगट भई जग जानी । वा मोहनसो प्रीति निरतर क्यो ब रहैगी छपानी॥ कहा करौ सुदरि मूरति इनि नयननिमांझ समानी । निकसत नही बहुत पचि हारी रोमरोम अरुझानी ॥ अब कैसे निरवारि जातिहै मिली दूध ज्यो पानी । सूरदास प्रभु अतर्यामी उरअतरकी मानी ॥ ९८ ॥ कहा करैगो कोऊ मेरो । हौ अपने पतिव्रतहि न टरिहौं जग उपहास करौ बहुतेरो ॥ कोउ किन लै पाछे मुख मोरे कोउ कहै श्रवन सुनाइ न टेरो । हौं मति कुशल नाहिनै काची हरिसग छांडि फिरो भवफेरो ॥ अबतो जी ऐसी बनिआई श्यामधाम मैं करौं बसेरो । तेहिरँग सूर रँग्यो मिलिकै मन होइ न श्वेत अरुन फिरि पेरो ॥ ९९ ॥ रागधनाश्री ॥ माई री गोविंदासो प्रीतिकरत तबहीं काहेनहट-की री। यहतौ अब बात फैलगई बईबीज बटकी री॥ घरघर नित इहै घेर बानी घटघटकी ।मै तो यह सबै सही लोकलाज पटकी ॥मदकै हस्ती समान फिरति प्रेम लटकी ॥ खेलतमे चूकि जाति होति कला नटकी । जल रजु मिलि गांठि परी रसना हरिरटकी ॥ छोरेते नही छुटति कइक बेर झटकी ॥ मेटे क्योहू नमिटतिछाप परी टटकी। सूरदास प्रभुकी छबि हिरदे मेरे अटकी ॥ १२००॥ राग आसावरी ॥ मैं अपनो मन हरिसो जोरचो । हरिसो जोरि सबनिसो तोरचो ॥ नाच कछचो तब घूँघुट छोरचो । लोकलाज सब फटकि पिछोरयो ॥ आगे पाछे नीके हेरचो। मांझबाट मटुकी शिर फोरचो ॥ कहि कहि कासो करति निहोरयो। कहा भयो कोऊ मुख मोरचो ॥सूरदास प्रभुसो

चित जोरयो । लोकवेद तिनुकासो तोरयो॥१॥सखीरी श्यामसों मन मान्यो । नीके करि चित कमलनैनसों घालि एकठो सान्यो ॥ लोकलाज उपहास नमान्योन्योतिअपुनही आन्यो। या गोविंदचंदकेकारनवैर सबनिसोंठान्यो ॥ अब क्योंजातिनिबेरिसखी रीमिलोएकपय पान्यो। सूरदास प्रभुमेरो जीवन हैपहिली पहिचान्यो ॥२॥ नंदलालसों मेरो मन मान्यो कहा करैगो कोई री। मैं तो चरणकमल लपटानी जो भावै सो होईरी॥ बाप रिसाइमाइघर मारैहैंसै बिरानो लोग री ।अब तौ श्यामहिसोंरतिबाढी बिधिनारच्यो संयोग री ॥ जाति महतिपतिजाइनमेरी अरु परलोक नशाईरी।गिरिधरवर मैं नेक नछाँडौं मिलीनिशान बजाईरी ॥ बहुरिकबहिं यह तनु धरिहैं कहाँ पुनि श्रीबनवारी री।सूरदास स्वामीके ऊपर यह तनुडारौंवारी री॥३॥ राग सारंग ॥ करनदे लोगनको उपहास ।मन क्रम बचन नंदनंदनको नेक नछाँडौं पास ॥ सब या ब्रजके लोग चिकनियां मेरे भाए घास ।अबतोइहै बसी री माई नहिं मानौंगी त्रास॥ कैसे रह्योपरै री सजनी एकगाँवको वास ।श्याममिलनकी प्रीतिसखी री जानत सूरजदास॥४॥राग रामकली॥ एक गाउँको बास धीरज कैसेके धरौं । लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि जतन करौं ॥ वै येहि मग नितप्रति आवतहैं हौं दधि लै निकरौं। पुलकित रोम रोम गदगद उर आनँद उमँगि भरौं॥ पल अंतर चलिजात कलपभरि बिरहाअनल जरौं । सूर सकुच कुलकानि कहाँलगि आरजपथहि डरौं॥५॥मेरो मन हरि चितवनि अरुझानो । फेरत कमलद्वार ह्वै निकसे करत शृंगार भुलानो ॥ अरुन अधर दशननि द्युति राजति मोहन मुरि मुसकानो । उदधितनया सुत पांति कमलके बंदन भुरके मानो ॥ सुभग कपोललोल मणिकुंडल इह उपमा केहि बानो । उभय अंक अति पान अमीरस मीन ग्रसत विधि भानो ॥ यहि रस मगन रहति निशि वासर हारि जीति नहिं जानों ।सूरदास चितभंगहोत क्यों जोजेहिरूप समानो ॥६॥राग रामकली॥ हौं सँग साँवरेके जैहौं । होनी होइ सो होवै अबहीं यश अपयश काहू न डरैहौं॥ कहा रिसाइ करै कोउ मेरो कछु जो कहै प्राण तेहि देहौं। देहौं त्यागि राखिहौं यह व्रत हरिरति बीज बहुरि कब बैहौं ॥का यह सूर अजिर अवनी तनु तजि अगास पियभवन समैहौं । का यह ब्रजवापीक्रीडा-जलभजिनँदनंदसबै सुखलैहौं॥ ७॥ राग धनाश्री॥तैंमेरेहितकहतसहीरी। यह मोकोसुधिभलीदिवाई तनु बिसरे मैं बहुत वहीरी॥ जबते दानलियोहरि हमसों हँसिहँसि री कछु बात कहीरी। काकेघर काके पितु माता काके तनुकी सुरतिरहीरी ॥ अब समुझति कछु तेरीबाणीआई हौंलइदईमहीरी। सुनहु सूर प्रातहिते आई यह कहिकहि जिय लाज गहीरी ॥ ८ ॥ सुनरी सखी बात एकमेरी । तोसों धरौं दुराइ कहाँ केहि तू जानहि सब चितकी मेरी ॥ मैं गोरस लै जाति अकेली कालि कान्ह बहियाँ गहि गेरी । हारसहित अचरा गहोगाढे एक कर गही मटुकिया मेरी॥ तब मैं कह्यो खीझि हरि छांडहु टूटैगी मोतिनलर मेरी। सूर श्याम ऐसे मोहि रिझई कहा कहति तू मोसों मेरी ॥ ९ ॥तऊ न गोरस छांडिदयो । चहुँ फल भवन गह्यो सारँगरिपु बाजि धरा अथयो ॥ अमी बचन रुचि रचतकपट हठि झगरो फेरि ठयो।कुमुदिनि प्रफुल्लितहौं जियसकुची लैमृगचंद जयो ॥ जानिनिशा शशिरूप बिलोकत नवलकिशोरभयो । तबते सूर नेक नहिं छूटत मनअपनाइलयो॥ १० ॥ राग नट॥ सखी वहगई हरिपै धाइ । तुरतही हरिमिलो ताको प्रगटकहीसुनाइ॥ नारि एक अति परमसुंदरि बरनि कापै जाइ। प्रातते शिर धरे मटुकी नंदगृह भरमाइ ॥ लेहु लेहु गोपाल कोऊ दह्यो गई भुलाइ । सूर प्रभु कहुँ मिलै ताको कहति करि चतुराइ॥११॥ राग कान्हरो॥

नंदग्रामको मारग बूझें है कोऊ दधि बेंचनहारी।सुनहु न श्याम कठिन तनुगारें बिधुवदनी अरु हाट-कढारी॥ अब याको सुर ताहि विरंचे जाहि विरंचि शीश पग धारी। कमलकुरंग चलत बरुना भष राख्यो निकट निषंग सँवारी॥गति मगलशावक ता पाछे जावक मुक्ता चुनत बिसारी। सूरदास प्रभु कहत बने नहिं सुखसंपति वृषभानुदुलारी॥१२॥राग बिलावल॥शिर मटुकी मुख मौन गही।भ्रमिभ्रमि विवश भई नवग्वालिनि नवलकान्हके रस उमही॥ तनुकी सुधि आवति जब मनहीं तबहिं कहति को लेत दही। द्वारे आइ नंदके बोलति कान्ह लेहु किन सरस मही॥ इत उत ह्वै आवति फिरि इहई महरि तहाँ लगि द्वार रही। अबर बोलावत ताहि न हेरत बोलति आनि नंद दरही॥ अंग अंग यशुमति तेहि चरची कहा करति यह ग्वारि बही। सुनहु सूर यह ग्वारि भ्रमानी कबकी एही ढंग रहीं॥ १३ ॥राग रामकली॥ कबकी मह्यो लिये शिर डोले॥ झूठेही इत उत फिरि आवे इहां आनि पे बोले॥ मुँहसों भरी मथनियाँ तेरी तोहिं रटत भई सांझ। जानतिहौ गोरसको लैबो याही बाखरि मांझ॥ इत धौं आइ बात सुनि मेरी कहे बिलग जिनि माने। तेरे घरमें तुही सयानी और बेचि नहिं जाने॥ भ्रमतहि भ्रमत भ्रमिगई ग्वालिनि बिकलभई बेहाल।सूरदास प्रभु अंतर्यामी आइ मिले गोपाल॥ १४॥ भयो मन माधवकी अवसेर। मौनधरे मुख चितवति ठाढी ज्वाब न आवे फेर॥ तब अकुलाइ चली उठि बनको बोले सुनत न टेर। बिरहविवशचहुंघा भरमतिहै श्यामकहा कियो झेर॥ अबहूं बेगिमिलो नँदनंदन दान करोनिरबेर।सूरश्यामअंकम भरिलीन्ही दूरिकियो दुख ढेर॥१५॥राग बिलावल॥सांची प्रीति जानि हरि आए। पूरन नेह प्रगटदरशाए॥लई उठाइ अंक भरि प्यारी। भ्रमि भ्रमि श्रम कीन्हों तनु भारी॥मुखमुख जोरिअलिंगन दीन्हों॥बारबारभुजभरिभरि लीन्हों॥वृंदावन घन कुंजलतातर। श्यामा श्याम नवल नवला वर॥ मनमोहन मोहनि सुखकारी। कोकक्कलागुण प्रगटे भारी॥ छूटे बंद अलक शिर छूटे। मोतिनहार टूटि सुख लूटे॥सूरश्याम बिपरीत बढाई। नागरि सकुचि रहीलपटाई॥१६॥ राग रामकली॥ यहकहिमौनसाध्योग्वारि। श्यामरस घटपूरि उछलित बहुरि धर्यो सँभारि॥ वैसेही ढंग बहुरि आई देहदशा बिसारि। लेहु री कोऊ नंदनंदन कहै पुकारि पुकारि॥सखीसों तब कहति तू री को कहांकी नारि। नंदके गृह जाउँ कित ह्वै जहाँहैं बनवारि॥ देखि याको चकृत भई सखि बिकल भ्रम गई मारि। सूर श्यामहि कहि सुनाऊं गए शिर कहा डारि॥ ॥ १७॥राग नट॥ श्यामाश्याम करत बिहार। कुंजगृह रचि कुसुमशैया छबि बरनि को पार॥ सुरति सुख करि अंग आलस सकुचि वसन सँभारि। परसि पद भुज कंठ दीन्हे बेठेहैं बर नारि॥ पीत कंचन बरन भामिनि श्याम तनु अनुहारि। सूर घन अरु दामिनी मिलि प्रगट सुख बिस्तारि॥ १८॥ राग कान्हरो॥ राधा बसनश्यामतनुचीन्ही। सारँगबदनबिलास बिलोचन हरि सारंग जानि रति कीन्ही॥ सारँग वचन कहत सारंगसों सारँगरिपु दै राखति झीनी। सारँगपानि कहत रिपु सारँग सारँग कहा कहति लियो छीनी।सुधापान करि कुच नीकी बिधि रह्योशेप फिरि मुद्रा दीन्ही। सूर सुदेश आहि रतिनागर भुज आकर्षि बान कर लीन्ही॥ १९॥ तुमसों कहा कहों सुंदरघन। या ब्रजमें उपहास चलतहै सुनिसुनि श्रवन रहति मनहीमन। जा दिन सबनि बछरु नोई करि मो दुहिदई धेनु बंसीबन। तुम गही बाँह सुभाइ आपने हौं चितई हँसि नेक बदनतन॥ ता दिनते घर मारग जित तित करत चवाउ सकल गोपीजन। सूर श्यामसों सांच पारिहौ यह पतिवरत सुनहु नँदनंदन॥२०॥राग भैरव॥ कहाकहौंसुंदर घन तुमसों। घेग हौं

चलानत घर घर श्रवण सुनत जिय सुनसों ॥ भेनी मात पिता बंधन गुरु गुरुजन यह कहैं मोसों । राधा कान्ह एक मेग विलसत मनहोमन अपसोसों॥ कबहुँक कहो मननिपरित्यागों वृझनिहोअ र गोसो । सूर श्याम दरशन विन पाये नयन देत मोहिं दोसों ॥२१॥ राग रामकली ॥ बात यह तुमसों कहत लजाऊँ । सुनि न जात घरघरको येरा काहुसुन न समाउँ ॥ नर नारी मन इहै चलानत राधा मोहन एक । मात पिता सुनि सुनि अति त्रासत मैं एके वे अनेक ॥ आपुजनहि द्वारेंह्वैनिकसत देखत सबै सुगात ।निंदति तुमहिं सुनावतिमोको सुनत न नेक सोहात॥ धिग नर धिग नारी [illegible] ॥२२॥ राग गूजरी ॥ श्या- [illegible] ॥ कोपि करनाल लेत कर बंधु वधनको धावैं । मात कहै कन्या कुलको दुख जनि कोऊ जग जावै ॥ विनती एक करौं कर जोरे यदि वीथिन जिनि आवै। जे जनमव आपुनकोजाननते जय जन्मन पावै॥मनक्रम वचन कहतिहौं सांची मैं मन तुमहिं लगायो । सूरदास प्रभु अंतर्यामी क्यों न कहु मनभायो ॥ २३ ॥ राग रामकली॥ हँसि बोले गिरिधर रसवानी । गुरुजन खिझत कतहिरिसपाननि काहेकोपछितानी ॥ देहधरेको धर्म इहै है भजन कुटुँव गृहवानी । कहन देहु कहि कहा करैंगे अपनी सुरति हिरानी ॥ लोकलाज काहेको छांडति व्रजही वसे भुलानी। सूरदास घटद्वै करि मन ये भेद नहीं कछु जानी ॥२४॥ राग ज्यतश्री॥ भजनसि काके बोल सहौं । तुम विन श्याम और नहिं जानों सकुचनि तुमहिं कहौं ॥ कुलकी कानि कहाँलौं करिहौं तुमको कहां लहौं । धिगमाताधिग पिता विमुख तुव भावै तहां वहौं॥कोऊ करें कहै कछु कोऊ हरप न शोक गहौं।सूरश्याम तुमको विनु देखे तनमन जीव दहौं॥२५॥ व्रजहि वसे आपुहिविसरायो । प्रकृति पुरुष एकैकरि जानहु वातनि भेद करायो ॥ जल थल जहां रहौ तुम विनु नहिं वेद उपनिषद गायो । द्वै तनु जीव एक हम तुम दोऊ सुख कारण उपजायो॥ब्रह्मरूप द्वितिया नहिं कोई तव मन त्रिया जनायो। सूरश्याम मुख देखि अल्प हँसि आनँदपुंज वढायो ॥२६ ॥ राग रामकली ॥तव नागरि मन हरप भई । नेह पुरातन जानि श्यामको अति आनदमई॥ प्रकृति पुरुष नारी मैं वे पति काहे भूलिगई। को माता को पिता वंधु को यह तो भेट नई ॥ जन्म जन्म युग युग यह लीला प्यारी जानिलई । सूरदास प्रभुकी यह महिमा याते विवश भई ॥ २७ ॥ राग सूहो ॥ सुनहु श्याम मेरी इक विनती । तुम हरता तुम करता प्रभुज मात पिता कौने गनती ॥ गैवर भेति चढावत रासभ प्रभुता मेटि करत हिनती । अवलौ करी लोक मर्यादा मानहु थोरहि दिनती ॥ वहुरि वहुरि व्रज जन्म लेतहौ इह लीला जानी किनती । सूरश्याम चरणनितें मोको राखत रहै कहा मिनती ॥ ॥ २८ ॥राग धनाश्री ॥ देह धरेको यह फल प्यारी । लोकलाज कुलकानि मानिये डरिये वंधुपिता महतारी ॥ श्रीमुख कह्यो जाहु घर सुंदरि वडे महर वृषभानुदुलारी । तुम अवसेर करत सव ह्वैहैं जाहु वेगि देहैं पुनि गारी ॥ हमहूँ जाहिं व्रज तुमहु जाहु अव गेह नेह क्यो दीजे,डारी । सूरदास प्रभु कहत प्रियासों नेक नहीं मोते तुम न्यारी ॥२९॥ राग धनाश्री ॥ देहधरेकोकारणसोई। लोक लाज कुल कानि न तजिये जाते भलो कहै सबकोई ॥ मातपिताके डरको मानै मानैंसजन कुटुँव सव लोई । तात मात मोहूको भावत तनु धरिकै मायावश होई ॥ सुनि वृषभानुसुता मेरी वानी प्रीति पुरातन राखहु गोई । सूर श्याम नागरिहि सुनावन मैं तुमएक नहीं हो दोई॥३०॥ राग सारंग॥ अव कैसे दूजे हाथ विकाऊं । मन मधुकर कीन्हो वा दिनते चरणकमल निज ठाऊं ॥ जो जानौं

और कोई करता तऊ न मन पछिताऊं।जो जाको सोई सो जानै अघतारन नर नाऊं॥जबपरतीति होइ या युगकी परमिति छुटत डेराऊं।सूरदास प्रभु सिंधु शरण तजि नदी शरन कत जाऊं ॥३१॥राग बिलावल॥ घर पठई प्यारी अंकम भरि।कर अपने मुख परसि त्रियाके प्रेमसहित दोऊ भुज धरिधरि॥सँग सुख लूटि हरष भई हिरदय चली भवन भामिनि गजगति ढरि। अंग मरगजी पटोरी राजति छबि निरखत रीझत ठाढे हरि ॥ बेनी डुलति नितंबनि पर दोउ छीन लंकपर वारो केहरि । फिरि चितयो तब प्यारी पियतन दुहूँ मनै आनंद हरष करि ॥ राधा हरि आधाआधा तनु एकै द्वै ब्रजमें ह्वै अवतरि।सूरश्याम रसभरी उमँग अँग वहछबिदेखिरह्योरतिपति डरि॥३२॥राग बिलावल॥घरहि जाति मन हरष बढाये । दुख डारयो सुख अंग भारभरि चली लूटिसो पाये ॥ भौंह सकोरति चलति मंदगति नेक वदन मुसुकाए ।तहँ एक सखी मिली राधाको कहति भये मनभाए॥ कुंजभवन हरिसंग विलसि रस मनके सुफल कराए । सूर सुगंध चुनावन हारे कैसे दुरत दुराए॥३३॥राग जयतश्री॥कहा फूली आवत री राधा। मानहुँ मिली अंक भरि माधव प्रगटत प्रेम अगाधा ॥ भृकुटी धनुष नैन सर साधे वदन विकास अगाधा । चंचल चपल चारु अवलोकनि काम नचावति ताधा ॥ जेहि रस शिव सनकादि मगन भए शंभु रहत दिन साधा ।सो रस दिये सूर प्रभु तोको शिवा न लहति अराधा ॥ ३४॥ राग सोरठ ॥ राधेसो रस बरनि न जाई । जा रसको सुर भान शीश दियो सो तैं पियो अकुलाई ॥ पचिहारे सब बाल कमलमुख चंद्रवदन ठहराई । अजहुँ कमंध फिरत तेहि लालच सुंदरि सैन बुझाई ॥ मोहनते रसरूप आगरी कटति न जानि निकाई । सूरदास पपिहाके मुखमें कैसे सिंधु समाई॥३५॥राग नट॥मोसो कहा दुरावति राधा।कहां मिली नँदनंदनको जिन पुरयोमनकोसाधा॥ व्याकुलभई फिरतही अबही कामव्यथा तनुबाधा।पुलकित रोमरोम गदगद अब अँगअँग रूपअगाधा ॥ नहिं पावत जो रस योगीजन तब तप करत समाधा ।सुनहु सूर तेहि रस परिपूरन दूरि कियो तनुदाधा॥३६॥ राग आसावरी॥कहाकहति तूभई बावरी॥तू हँसि कहति सुनै कोउऔरै कहा कीन्हो चाहति उपाव री॥ सो तो सांच मानि यह लैहै हमहिं तुमहिं बाते सुभावरी।मेरी प्रकृति भलेकरि जानति मे तोसों करिहौं दुराव री॥ऐसी कैसे होइ सखी री वर पुनि मेरो हैबचावरी। सूर कहति राधा सखि आगे चकित भई सुनि कथा रावरी॥३७॥राग सारंग॥श्याम कौन कारेकी गोरे । कहां रहत काके वे ढोटा वृद्ध तरुण की वोहै भोरे॥ इहई रहत कि और गाउँ कहुँ मैं देखे नाहिन कहुँ उनको।कहे नही समुझाइ बात इह मोहि लगावतिहौ तुम जिनको॥कहांरहौंमैवे धौं कहँकि तुम मिलनतिहौ काहे ऐसी । सुनहु सूर मोसी भोरीको जोरिजोरि लावतिहौ कैसी ॥ ३८ ॥ जाहु चली में जानी तोको । आजुहि पढिलीन्ही चतुराई कहा दुरावति मोको ॥ एही ब्रज तुम हम नँदनंदन दूरि कबहुँ नहिं जेह । मेरे फद कबहुँतौ परिहौ मुजरा तबहीं देहैं॥उनहिं मिले वितपन्न भई अब वे दिन गए भुलाई । सूरश्यामसँगते उठि आई मोसों कहति दुराई॥३९॥ राग सोरठ ॥हैंमत कहत कीधौं सतभाव।तेरीसों मैं कछू न समुझतिकहा कह्यो मोहि बहुरि सुनाउ॥ मेरी शपथ तोहि री सजनी कबहूँ कछु पायो यहि भाउ ।देख्यो नयन सुन्यो कहुँ श्रवणनि झूठे कहति फिरतिहौ दाउ ॥यह कहती औरे जो कोऊ तासो मैं करती अपडाउ।सूरदास यह मोहि लगावति सपनेहुँ जासो नहिं दरशाउ॥ ४० ॥रागधनाश्री॥ राधे तेरो वदन विराजत नीको। जब तू इतउत बक विलोकति होत निशापति फीको॥भृकुटी धनुष नैन शर साधे शिर केसरिको टीको।

मनु घूँघटपटमें दुरि बैठो पारधिपति रतिहीको॥गनि मैंमत नागज्यों नागरि करे कहतिहौं टीको। सूरदास प्रभु विविधभांतिकरि मन रिझयोहरिपीको॥४१॥राग बिहागरो॥राजतिराधेअलक भलीरी। मुक्ता मांग तिलक पनगिनि शिर सुतसेमत भष लेन चली री॥कुमकुम आड स्रवत श्रमजल मिलि मधु पीवत छविछीट चली री। चारु उरोज उपर यों राजत अरुझे अलिकुल कमलकली री॥ रोमावलि त्रिवली उर परशत वंश चढे नट काम बलीरी। प्रीति सोहाग भुजा शिग्मंटन जघनसघन विपरित कदली री॥जानक चरण पंचशरसायक समर जीति लै शरन चली री॥सूरदास प्रभुको सुख दीन्हो नखशिखराधे सुखनिफलीरी४२॥रागकेदारी॥सजनी कत यहबात दुरेहौ।ऐसीमोहिकहे जिनि कबहू झूठेपर दुख पैहौ॥तोतेपीतम और कौनहै जाके आगे कहौं। मोकोउघटाएकछुपैहौ वहुरि नाउँ नहिं लैहौं॥ यह परतीति नही जिय तेरे सो कहा तोहि चुरैहौ। सूरश्याम धौं कहां रहत है काहेको तहां जैहौ॥ ४३ ॥राग धनाश्री॥चतुर सखी मन जानिलई।मोसों तौ दुरायहकीन्हो याके जिय कछुत्रास भई॥तव यह कह्यो हँसत री तोसो जिनिमनमें कछु आनै।मानी बात कहां वे कह तू हमहूँ उनहिं न जानै॥ अबै तनक तू भई सयानी हमआगेकी वारी।सूरश्याम ब्रजमें नहिं देखे हँसत कह्यो घरजा री ॥४४॥राग बिलावल॥ सकुचसहित घरको गई वृषभानु-दुलारी। महरि देखि तासों कह्यो कहँ रही री प्यारी॥घर तोहि नेक न देखऊँ मेरी महतारी।डोलत लाज न आवई अजहूँ है वारी॥ पिता आजु रिस करतहै देदे कहै गारी।सुता बडे वृषभानु-की कुल खोवनहारी ॥वंधन मारन कहतहें तेरे ढंग कारी।सुरश्यामसँग फिरतिहै जोबनमतवारी॥४५॥राग शुद्धसारंग॥कहारी कहति तू मातु मोसों।ऐसी वहिगई कोश्यामसँग फिरे जो वृथा रिस करति कहा कहौं तोसो॥कही कौने बात बोलिये तेहि मात मेरे आगे कहै ताहि देखौं।तात रिस करत भ्राता कहै मारिहौं भीति विन चित्र तुम करति रेखो॥तुमहु रिस करति कछु कहा मोहिं मारिहौ धन्य पितु भ्रात माता अरुनहीं। ऐसे लायक नदमहरको सुत भयो तिनहिं मोहिंकहति प्रभु सूर सुनही॥४६॥राग गूजरी ॥ काहेको परघर छिनछिन जाति।गृहमें डाटि देतिसिखजननी नाहिन नेक डराति॥ राधा कान्ह कान्ह राधा ब्रज ह्वैरह्यो अतिहि लजाति। अब गोकुलकोजैवो छाँडो अपयशहू न अघाति॥ तू वृषभानु वडेकी बेटी उनके जाति न पांति। सूर सुता समुझावति जननी सकुचत नहिं मुसकाति ॥४७॥राग कान्हरो ॥खेलनको मैं जाउँ नहीं। और लरिकनी घरघर खेलति मोहीको पै कहति तुही॥ उनके मात पिता नहिं कोई खेलति डोलति जहीं तहीं। तोसी महतारी वहि जाई मैं रैहों तुमही विनहीं॥ कवहू मोको कछू लगावति कवहुँ कहति जिन जाहु कहीं।सूरदास बातें अनखोही नाहिन मोपे जात सही॥४८॥राग सारंग॥मनही मन रीझति महतारी। कहा भई जो वाढ़ि तनक गई अवही तौ मेरी है वारी॥ झूठेही यह बात उडी है राधा कान्ह कहत नर नारी।रिसकी बात सुताके मुखकी सुनत हँसी मनही मन भारी॥ अवलौं नही कछू इहि जान्यो खेलत देखि लगावै गारी। सूरदास जननी उर लावति मुख चूमति पोछति रिस टारी॥४९॥रागसुघरा॥सुता लये जननी समुझावति। सग बिटिनिअनके मिलि खेली श्यामसाथ सुनिसुनि रिस पावति॥ जाते निंदा होइ आपनी जाते कुलको गारी आवति। सुनि लाडिली कहति यह तासो तोको याते रिस करि धावति॥अब समुझी मैं बात सबनकी झूठेही यह बात उडावति। सूरदास सुनिसुनि यह बातें राधामन अतिहरष बढावति॥ ५० ॥ राग नट ॥राधा विनय करति मनहीमन सुनहु श्याम अतरके यामी।मात पिता कुल

कानिहि मानत तुमहि न जानतहे जगस्वामी॥ तुम्हरो नाम लेत सकुचतहे ऐसंठोर रही हौआनी। गुरुपरिजनकी कानि मानियो वारंबार कही मुख वानी॥ कैसे संग रहौ बिमुखनके यह कहिकहि नागरि पछितानी।सूरदास प्रभुको हिरदय धारि गृहजनदेखिदेखि मुसुकानी॥५१॥राग धनाश्री॥जब प्यारी मन ध्यान धरयो। पुलकित उर रोमांच प्रगट भए अचर टरि मुख उघरिपरयो ॥ जननी निरखिरही ता छबिको कहन चहै कछु कहि नहिं आवै॥ चकृत भई अँगअग विलोकत दुख सुख दोऊ मन उपजावै॥पुनिमन कहति सुता काहूकी कीधों यह मेरीहै जाई।राधा हरिके रंगहि राची जननी रही जिये भरमाई॥ तब जानी मेरी यह बेटी जिय अपने तब ज्ञान कियो । सूरदास प्रभु प्यारीकी छवि देखि चहति कछु सीख दियो॥५२॥ राग सोरठ॥ राधा दधिसुत क्यों न दुरावति। हौंजु कहति वृषभानुनंदिनी काहेको तू जीव सतावति॥जलसुत दुखी दुखीहै मधुकर द्वै पछीदुख पावत।सारंगदुखीहोत सारंगबिनु तोहि दया नहिं आवत॥सारंग रिपुको नेक ओट कहि ज्यों सारग सुखपावत। सूरदाससारंग केहिकारण सारंगकुलहि लजावत॥५३॥ राग बिहागरो॥ मेरीसिख श्रवण काहेन करति।अजहुं भोरी भई रहे कहति तोसो डरति॥ शशि निरखि मुख चलत नाहिंन नयन निरखि कुरंग। कमल खंजन मीन मधुकर होतहे चितभंग॥ देखिनासा कीर लज्जितअधरदशन निहारि। बिंब अरु बधूक विद्रुम दामिनी डर भारि॥ उरनिरखि चक्रवाक बिथके कटिनिरखिबन-राज। चाल देखिमराल भूले चलत तबगजराज॥ अंग अंग अवलोकि शोभा मनहिं देखिविचा-रि।सूर मुख पट देति काहेन वरप दश युग भारि॥५४॥ राग सूहा बिलावल॥अब राधा तू भई सयानी। मेरी सीख मानि हिरदय धरि जहं तहँ डोलति बुद्धि अयानी॥ भई लाजकीसीमातनुमें सुनि यह बात कुँवारि मुसकानी।हँसति कहा मै कहति भलीतोहिं सुनत नही लोगनकी वानी॥आजुहितेकहुँ जान न दैहौं मा तेरी कछु अकथ कहानी।सूर श्यामके संग न जैहौ जाकारण तू मोहिं सुगानी॥५५॥ रागटोडी॥भलीवात बाबा आवनदे। कान्ह लगाइ देति मोहिं गारीऐसे बडे भएकवते वे॥ कालि मोहिं मारगमें रोकी जातरही सखियनसग दधिलै। कहनलगे मेरो देहुखिलौना तादि-न लै भागी चुराइकै॥छठि आठें मोहि कान्ह कुँवरसो तिनको कहति प्रीतितोसो है। सूर जननि सुनिसुनि यह बानी पुनिपुनि मुख निरखति विहँसतिहै॥५६॥ राग गौरी॥बडी भईनहिगईलरि-काई।वारेहीके ढग आजुलो सदा आपनी टेक चलाई॥ अवही मचलिजाइगी तब पुनि कैसे मोसों जाति बुझाई। मानी हारि महरि मन अपने वोलिलई हेमिकै दुलराई॥ कठ लगाइलई अतिहितसो पुनिपुनि कहि मेरी रिसहाई। सूरदास अतिचतुर राधिका राखिलई नीके चतुराई॥५७॥राग गुडमलार॥श्याम नगजानि हिरदे चुरायो।चतुर बरनागरी महामणिलखिलियो प्रियसखी संग नाहिन जनायो॥कृपिनि ज्यो धरति धन ऐसेडिठकियोमनजननि सुनिबातहसिंकठलायो। गांसदियो डारि कह्यो कुँवरि मेरी वारि सूर प्रभुनाम झूठे डरायो॥५८॥ राग कल्याण॥ सखियनइहै विचार परयो। राधा कान्ह एक भए दोऊ हमसो गोप करयो॥वृंदावनते अबही आईअतिजिय हरष बढाये। औरै भाव अग छवि औरै श्याम मिले मनभाये॥ तब वह सखी कहति मैं बूझी मोतन फिरि हँसि हेरयो। जबहि कही सखि मिले तोहिं हरि तब रिस करि मुख फेरयो॥ औरै बात चलावनलागी मैं वाको पहिचानी। सूर श्यामके मिलन आजही ऐसी भई सयानी॥५९॥ राग सोरठ॥सुनहु सखी राधाकीवातें। मोसोकहति श्यामहै कैसेऐसी मिलई घाते॥ की गोरे की कारे रँग हरि की जोबन की भोरे।कीयहिगाउँ बसतकी अनतहि दिनदिनि बहुत की थोरे॥कीतृ कहति बात हँसि मोसो की बूझति सतिभाऊ। सपनेहूं उनको नहिं देखे वाके सुनहु उपाऊ॥ मोसो कहीं

कौन तोसी प्रिय तोसों बात दुरैहौ । सूर कही राधा मो आगे कैसे मुख दरशैहौ॥६०॥ राग गौरी॥ वह निधरक मैं सकुचिगई। तब यह कह्यो जाहि घर राधा मैं झूठो ते सांच भई ॥ त्यौंरी मोहन मोतन चितवै नेक रही तो करे खई। कामभंडार लूटि नीके करि निदरिगई मैं चकृत भई॥ घर धौं जाइ कहा अब कैहै अब कछु अवरै बुद्धि नई। सूर श्यामअंगसंग रँग राची मनमानो सुख लूटिलई॥६१॥ राग बिलावल॥सुनिसुनि बात सखी मुसकानी । अबहीं जाइ प्रगट करिदैहैं कहाँ रहै यह बात छपानी ॥ औरनिसों दुराव जो करती तौ हम कहती भली सयानी। दाईआगे पेट दुरावति वाकी बुद्धि आज मैं जानी ॥ हम जातहि वह उघरि परैगी दूध दूध पानीसो पानी। सूरदास अब करति चतुरई हमहिं दुरावति बातन ठानी॥६२॥ रागरामकली॥ अपनो भेद तुम्हें नहिं कैहै। देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै॥ बड़े गुरूकी बुद्धि पढी वह काहूको न पत्यैहै। एकौ बात मानिहै नाहीं सबकी सौंहैं खैहै॥ मैं नीकेकरि बूझिरहीहौं अब बूझे रिस पैहै।सुनहु सूर रसछकी राधिका बातन वैरबढैहै॥६३॥ राग बिलावल ॥कहा वैर हमसों वहकरिहै। वाकी जाति भलै करि पाई हमको कहा निदरिहै॥ कैहै कहा चोरटी हमसों बातैंनातउघरिहै। दूरि करौ लँगराई वाकी मेरे फंद जो परिहै॥ हमसों वैर किये कहा पैहै काज कहा पुनि सरिहै। सूरदास मटुकी शिरलीन्हें बहुरि वैसही रहिहै॥६४॥ चलहु सखी जैये राधाघर। बूझे बात कहा धौं कैहै निधरक है कीधौं मनमें डर॥ कीधौं हमहिं देखि भजिजैहै की उठि हमको मिलिहै। कीधौं बात उघारि कहैगी की मनहीमन गिलिहै॥ कीधौं हँसि बोलै की रिस करि कीधौं सहजसुभाई। कीधौं सूरश्यामरसमाती जोवन गर्व बढाई॥६५॥ युवती जुरि राधा ढिग आई। लखिलीनी तब चतुरनागरी ये मोपर सब हैं रिसहाई ॥ आदर नहीं कियो काहूको मनमें एक बुद्धि उपजाई। मौन गह्यो नहिं बोलतितिनसों बैठिरही करिकै चतुराई॥ आपुहि बैठिगईं ढिग सिगरी जब जानी यह तौ चतुराई। सूरदास वे सखी सयानी और कहूंकी बात चलाई॥६६॥ राग जैतश्री ॥ चतुर चतुरकी भेद भई। वैतौ निठुर मौनह्वै बैठी इन सबहिन लखि ताहि लई॥ मुहांचही युवतिनतब कीन्हीं देखो उलटी रीति भई। कहा हमारो मन यह राखै अरु हमहींपर सतरिगई॥ बूझहुयाहि खूट धरिकै तू कहा आजु यह मौन लई। सुनहु सूर हमसों कहा परदा हम करिदीन्हीं साट सई॥६७॥ रागगौड॥ राधिका मौनव्रत किन सधायो। धन्य ऐसौ गुरू कानके लागते मंत्र दे आजुही वह लखायो॥ कालि कछु और प्रातहि कछु औरही अबहिं कछु और ह्वैगई प्यारी। सुनत यह बात दौरिआईं सबै तोहिं देखत भईं चकृत भारी ॥ अब कहो बात या मौनको फल कहा सुनिजु लीजे कछू हमहु जानें। एकही संग भई सबै जोवन नई अब होहु गुरु हम तुमहिं मानें॥ देहि उपदेश हमहू धरैं मौन सब मंत्र जब लियो तब हम न बोली। सूर प्रभुकी नारि राधिका नागरी चरचिलीन्हो मोहि करति ढोली॥६८॥ राग मारू॥ की गुरुकहौं कि मौन छांडौ। हमहिं मूरखवदति आपुएढंग सदति पाइ अबमदतिहठकतहिमांडौ॥एकहीसंगहमतुमसदारहतिहिंआजुहीचटकितूभई न्यारी। भेद हमसोंकियोऔरकोऊ बियो कहाधौं कहैकहा देहि गारी॥ कहा तोहि भयोतेरी प्रकृति कौनेहरी रीति यह नई तैंहीचलायो।सूरसुनिनागरी गुणनकीआगरी निठुरईसों बात कहिसुनायो॥६९॥राग गौरी॥ तुमप्रीतम की बैरनि मेरी। वासोंकहति मिलीजो मारग यहमोसोंअतिकहीअनेरी॥कहति कहा श्यामहिं मिलिआई मैं चकिरहीसौंह मोहिं तेरी। मेरे अँगछवि औरकहति कछु युवती सुनत रहीं मुख हेरी॥मैंजिनकोसपनेहूनदेखेतिनकीबात कहत फिरिफेरी। सूरदास गुणभरी

राधिकामहिमा कोजाने यहिकेरी॥७०॥राग कल्याण॥तुमसो कछुदुरावहै मेरो। कहांकान्ह कहांमिसुनि सजनी ब्रजवरघर यह चलतहै चेरो॥औग कहत सब मोहिं न व्यापे तुमहुकहो यह वानी।आदर नही कियो याहीते तुमपर अतिहि रिसानी॥ हमतौ नही कह्योकछुतोसो ताहीपर रिस करती। सूर तबहिं हमसो जो कहती तेरी वां ह्वै लरती॥७१॥ राग रामकली॥ सखीतू राधहि दोपलगावति। तेरी श्याम कहां ए देखे बातन वैर बढावति॥हमआगे झूठी नहिं कैहै सखियन सैन बतावति। ऐसी बात अरी मुख तेरे कैसी धौं कहि आवति॥ भेदहि भेद कहतिहै बातें ऐसे मनहि जनावति। सूर श्याम तैं देखे नाही कीधौ हमहि दुरावति॥७२॥राग नटनारायण॥ काकोकाको मुख माई बातनको गहिए।पांचकी सात लगायो झूठी झूठीकैबनायो सांची जो तनक होइ तौलो सबसहिये॥ बातनि गहो अकास सुनत न आवे सांस बोलि तो कछू न आवे ताते मौन गहिये।ऐसे कहे नर नारिविनाभीति चित्रकारि काहेको देखे मैं कान्ह कहा कहौं सहिये॥ घरघर इहै घर वृथा मोसो करें बैर यहसुनि श्रवणनि ह्रदय सहि दहिये। सूरदास बरु उपहास सहों ईसुर मेरे नदसुवन मिलें तोपे कहा चहिये॥७३॥राग गुडमलार॥दुरत नहिं नेह अरु सुगध चोरी। कहा कोउ कहै तू सुनतिकाहे न रहै तनहि कत दहै सुनि सीखमोरी॥लोग तोहि कहतहै पापको गहतहै कहाधौंलहतहै सुनहु भोरी। खरिकहू नहि मिले कहै कह अनभले करनदे गिले तू दिननि थोरी॥ नंदको सुवन अरु सुता वृषभानुकी हसत सब कहै चिरजिवे जोरी। सूर प्रभु कहां तू कहां वे अपने भवन मे लखी तोहि तोसीनबोरी॥७४॥राग बिलावल॥कैसेहै नदसुवन कन्हाई। देखे नहीनयनभरिकनहूं ब्रजमें रहत सदाई॥ सकुचतिहौ एकबात कहत तोहि सो नहिं जात सुनाई।कैसेहुँ मोहिंदेखावहु उनको यह मेरे मन आई॥ अतिही सुदर कहियत हैं वैमोको देहि बताई।सूरदासराधाकी बानी सुनत सखी भरमाई॥७५॥राग धनाश्री॥सुनहुसखी राधाकीबानी।ब्रजबसिहारे देखे नहिंकबहूँ लोग कहत कछु अद्भुतबानी॥ ये अब कहति देखावहु हरिको देखहु री यह अकथ कहानी। जो हम सुनत रही सो नाही अब ऐसेहि यह बात बहानी॥ज्वाब नदेत बनै काहूसो मनमे काहु न मानी। सूर सबै तरुणीसुखचाहतचतुरचतुरईठानी॥७६॥राग बिलावल॥ सुनिराधे तोहि श्यामदेखावैं। जहां तहां ब्रजगलिन फिरतहै जबही वे यहि मारग आवैं॥जबहीहमउनको देखेंगी तहांई तोहिंबोलैहैं। उनहूके लालसा बढ़त यह तो देखे सुख पैहैं॥ दरशनते धीरज जब रैहै तब हम तोहि बतैहैं। तुमको देखि श्यामसुदर घन मुरली मधुर बजैहैं॥तनु त्रिभग करि अगअंगमो नानाभाउ जनैहैं। सूरदास प्रभु नवल कान्हवर पीतांबर फहरैहैं॥७७॥ रागगुंडमलार॥नदनंदन दरशन जब पैहो। एक द्वै तीनि तजि चारि बानी पांच छह निदरि तबहिं सातैं भुलैहो॥ आठहू गांठि पारिहै नवहु दशदिशा भूलिहौ ग्यारहो रुद्रजैसे।बारहौ कला ते तपनि तपते मिटत तेरहो रतन मुख छविन तैसे॥ निपुन चौदह बरन पद्रहौ सुभग अति बरष षोडश सतरहा न रैहै। जपत अठारहो भेद उनईस नहिं बीसहू बिसो तें सुखहि पैहे॥ नैनभरि देखि जीवन सफल करि लेखि ब्रजहिमें रहति ते नहीजाने।सूरप्रभुचतुर तुमहूमहाचतुरहो जैसितुम तैसेवोऊसयाने॥७८॥राग देवगधार॥ मन मन हँसति राधिका गोरी। ऐसे श्याम रहत ब्रजभीतर बूझतिहै भै भोरी॥ तुम उनको कहुँ देखेहैकी सुनी कहतिहौ बात। चतुराई नीके गहि राखी कहत सखी मुसिकात॥ कबहूं तो काहू फदपरिहौ तबही लीजो चीन्हि।सूरश्यामको पीतांबर बेसरि लीजो मेरी छीनि॥७९॥राग नट॥यह सुनि हँसि चली ब्रजनारि। अतिहि आई गर्व कीन्हें गई घर झखमारि॥ कबहूँ तो हमदेखिहैं

एक संग राधा कान्हाभेदहमसों कियो राधा निठुर भई निदान्हो॥वीस बिरियां चोरकी तौ कबहुं मिलिहै साहु। सूर सब दिन चोरको कहु होतहै निरबाहु॥८०॥ राग कान्हरो॥ भेद लियो चाहति राधासों। बैठिरहीं अपने घर चुपकै काम कहा काहू याधासों॥यह मन दूरि धरो अपनो लै अति घर बोलि गई कह कीन्हों।कैसे निर्भय रही सबनिसों भेद न काहुहि दीन्हों॥यह कैसे फँद परे तुम्हारे याके घात न जानों।सूर सबै तुम बडी सयानी मोहिं नहीं तुम मानों॥८१॥राग बिलावल॥ फेरिपाइ देखों मै धरिहों।सुनु री सखी प्रतिज्ञा मेरी तेरी दिन तासों लरिहौं॥हमको निदरि रहीहै राधा रिसनि रही मैं जरिहों। तब मेरे मन धीरज एहै चोरीकरत पकरिहों॥ राति दिवस मोहि चैन नहीं अब इनको देखन फिरिहों।।सूरदास स्वामीके आगे नीके ताहि निदरिहों॥८२॥ राग नटनारायण॥ गोपी इहै करति चवाउ। देखों धौं चतुरई वाकी हमहिं कियो दुराउ॥ लरिकईते करत एढग तबै रह सतिभाउ।अब करनि चतुरई जाने श्याम पढाये दाउ॥ कहांलों कारिहै अचगरी सबैए उपजाउ।आजु याची मौन धरिजो सदा होत बचाउ॥दिवसचारिक भोर पारहु रही एक सुभाउ। सूर कालिहि प्रगट हैहै करनंद अपडाउ॥८३॥राग सहा बिलावल॥कहा कहति तू बात अयानी। तुम इह कहति सबै वह जानति हम सबते वह बडी सयानी॥ सात वरप-ते ये ढग सीखे तुमनी यह आजुहिहै जानी॥याके छंद भेद को जानै मीनकबहि धौं पीवनपानी॥ हरिकि चरिगसयेउहि सीखे दोऊ हैं ये वारहवानी।कालिगई याके घर सब मिलि कैसी बुद्धि मौन-की ठानी॥केती कही नेकु नहिं बोली फिरीआइ तब हमहिं खिसानी।सूरश्यामसंगतिकीमहिमा काहूको नेकहु न पत्यानी॥८४॥राग मारू॥तब राधा सखियननैं आई।आवत देखि सबनि मुख मूँदो जई तह रहीं अरगाई॥ मुख देखत सब सकुचि गई यह कहां अचानक आई। करति रही चुगुली हम याकी तरुनी गईं लजाई॥अति आदर करि बैठक दीन्हों कह्यो कहां तुम आई। कहा आजु सुधि करी हमारी सूर श्याम सुखदाई॥८५॥ राग धनाश्री॥मै कह आजु निंदरी आई। बहुते आदर करति सबैमिलि पहुनेकी करिये पहुनाई॥ कैसी बात कहति तू राधा बैठनकोनहिं कहिये। तुम आई अपने घरते ह्यां हमहूँ मौन धरि रहिये॥ जानिलई वृषभानुसुता हँसि कह्यो तरक तुम कीन्हो। सूरदास ता दिनको बदलो दाउ आपनो लीन्हों॥८६॥रागधनाश्री॥ दाउबाउ तुमही सब जानति।सदा मानि तुमको हम आईं अबहूं तैसे मानति।तुम यह बात गांस करि राख्यो हमको गई भुलाई।ता दिन कह्यो नहीं मैं जानों मानि लई सति भाई॥ चोर सबनिचोरीकरि जानै ज्ञानीमन सब ज्ञानों। सूरदास गोपिनकी वाणी राधासुनि मुसकानी॥८७॥सखी तुम बातकही यह सांची।जाके हृदय जौन कहै मुखते तौन कैसे हरि कौन कहिलौं करखांची॥हरपिब्रजनारि भरिलिन्ह अँकवारि सब कहति तू कहा इह बात जानै।हम हसति कहति तू रिस कहा गहतिरी नागरी राधिका विलगु मानै॥तुमहिं उलटी कहो तुमहिं पलटी कहो तुमहिं रिस करति मैं कछु न जानों।सूर प्रभुको नाममोहि तुमही कह्योश्रवन यहसुन्योंतुम कछू मानों॥८८॥ अथ ग्रीष्मलीला॥सखिनसहित यमुना-विहार॥ टोडी॥पुनि कहियो अब न्हान चलोगी। तब अपनो मनभायो कीजो जब मोको हरि संग मिलोगी॥उहै बात मनमें गहि राखी मैं जानति कबहुं नबिसरोगी। बडी बार मोको भई आए न्हान चलनकीबहुरि लरोगी॥गहिगहिबांह सबनि करि ठाढी कैसेहू घरते निसरोगी॥सूरराधिका कहति सखिनसों बहुरि आइ घरकाज करोगी॥८९॥राग मारू॥राधिका संग मिलिगोपनारी।चलीं हिलिमिलि सबै रहसि बिहसति तरुनि परस्पर कौतुहल करत भारी॥ मध्य ब्रजनागरी रूप रस

आगरी घोष उजागरी श्याम प्यारी। जुरीं ब्रजसुंदरी दशन छवि कुंदरी काम ततु दुंदरी करन-हारी ॥ अंग अँग सुभग अति मग चलति गजगति कृष्णसों एकमति यमुन जाहीं।कोउ निकसि जाति कोउ ठठकि ठाढी रहति कोउ कहति संग मिलि चलहु नाहीं ॥ युवति आनंदभरी भई जुरिकै खरी नई छरहरी सुठिवैस थोरी। सूरप्रभु सुनि श्रवण तहां कीन्हों गवन तरुणि मन रवन सब ब्रजकिशोरी ॥९०॥ राग नटनारायण॥ गईं ब्रजनारि यमुनातीर। देखि लहरितरंग हरषीं रहत नहिं मनधीर ॥ संग राजति कुँवरि राधा भई शोभा भीर।स्नानको वे भईं आतुरसुभगजलगंभीर॥ कोउ गई जल पैठि तरुनी और ठाढी तीर। तिनहि लई बोलाइ राधा करति सुख तनकीर ॥ एक एकहि धरति भुजभरि एक छिरकति नीर। सूर राधा हँसतिठाढी बढी छवि तन चीर॥९१॥ राग जयतश्री ॥ राधा जल विहरत सखियन संग।ग्रीवप्रयंत नीरमें ठाढी छिरकत जल अपने अपने रंग ॥ मुखपर नीर परस्पर डारति शोभा अतिहि अनूप बढी तब। मनहु चंद्र गन सुधा गई खनि डारतहैं आनंद भरे सब॥ आई निकसि जानु कटिलों सब अँजुरिनते जल डारत।मानहुँ सूर कनकवल्ली जरि अमृत पवन मिस झारत॥९२॥ राग नट ॥ यमुनाजल विहरतब्रजनारी। तट ठाढ़े देखत नँदनंदन मधुर मुरलि करधारी ॥ मोरमुकुट श्रवणनमणिकुंडल जलजमाल उरभ्राजत। सुंदर सुभग श्याम तनु नव घन विच वगपांति विराजत । उर बनमाल सुभग बहुभांतिनु श्वेत लाल सित पीत।मानों सुरसरितट बैठे शुक वरनवरन तजि भीत।पीतांबर कटिमें छुद्रावलि बाजत परम रसाल। सूरदास मनों कनक भूमि ढिग बोलत रुचिर मराल ॥ ९३ ॥ राग बिहागरो ॥ नटवर भेष काछे श्याम। पद कमल नख इंदु शोभा ध्यान पूरण काम॥ जानु जंघ सुघटनि कर-मो नाहिं रंभा तूल। पीतपट काछनी मानहु जलजकेसर झूल। कनक छुद्रावली पंगति नाभि कटिके भीर।मनहुँ हंस रसाल पंगति,रहेहैं ह्रद तीर॥झलक रोमावली शोभा ग्रीव मोतिन हार। मनहु गंगा बीच यमुना चलीमिलि त्रिय धार॥बाहुदण्ड विशालतट दोउ अंगचंदनुरेनु।तीरतरु वनमालकी छवि ब्रजयुवति सुखदेन। चिबुक पर अधरनि दशनद्युति बिंबु बीज जलाइ। नासिका शुक नयन खंजन कहत कवि सरमाइ ॥ श्रवण कुंडल कोटि रवि छवि भ्रुकुटि कामकोदंड। सूर प्रभु है नीपकेतर शीश धरे श्रीखंड॥ ९४ ॥राग पूर्वी॥उपमा धीरज तज्यो निरखि छवि। कोटिमदन अपनोबल हार्यो कुंडलकिरनि बीच जो छप्योरवि॥खंजन कंज म-धुप विधु तडितघन दिनकर रहत कहूं दवि । हरिपटतर दै हमहि लजावत सकुच नहीं आवत खोटे कवि॥अरुन अधर दशननि दुति निरखत विद्रुमशिखर लजाने सब। सूर श्याम आछे वपु काछे पटतर मेटि बिराने अब॥९५॥राग गौरी॥उपमा हरि तन देखि लजाने। कोउ जलमें कोउ बनमें रहे दुरि कोऊ गगन समाने॥मुख निरखत शशि गयो अंबरको तडित दशन छवि हेरो। मीन कमल करचरन नयन डर जलमों कियो बसेरो॥भुजा देखि अहिराज लजाने बिवरनि पैठे धाइ। कटिनिरखत केहरि डर मान्यो बनबन रहे दुराइ॥गारीदेहि कविनके वर्णत श्री अंगपटतर देत। सूरदास हमको विरमावतनाउँ हमारो लेत॥ ९६॥ राग सारंग ॥ ऐसे गोपाल निरखितिलतिल तनु वारौं। नवकिशोर मधुर मूरति शोभा उर धारौं॥अरुण तरुण कंज नयन मुरली कर राजे। ब्रजजन मन हरन वेन मधुर मधुर बाजे।ललितवर त्रिभंग सुतन वनमाला सोहैं। अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको को है॥ चरण रुनित नूपुर कटिकिं किन कलकूजे। मकराकृत कुंडलछवि सूरकौन पूजे ॥९७॥राग कान्हरो॥बनि मोतिनकी माल मनोहर। शोभित श्याम सुभग उर ऊपर

मनो गिरिते सुरसरी धसी धर ॥ तट भुजदंड भौंर भृगुरेखा चंदन चित्रि तरंगनि सुंदर। मणिकी किरणि मीन कुंडल छवि मनों मकर मिलन आवत त्यागे सरात ऊपर रोमावलिगजतमणिवर तीखन ज्योति सितावर । संतहि ध्यान स्नान करत नित कर्मकीच धोवत नीकेकर ॥ यज्ञोपवीत विचित्र सूर सुनि मध्यधार धारा जो वानीवर । शंख चक्र गदा पद्म पानि मनो कमल कलहंसनि कीन्हे घर९८॥ राग नटनारायण ॥ राधेनिरखिभूलीअंग।नंदनंदनरूपपरगतिमतिभई तनुपंग॥ इत सकुचअति सखिनको उत होत अपनी हानि।ज्ञानकरि अनुमान कीन्हों अबहि लेंहै जानि॥ चतुर सखियन परखि लीन्ही समुझि भई गँवारि।सबै मिलि इतन्हान लागीं।ताहि दियो विसारि॥ नागरी मुख श्याम निरखत कबहुँ सखियन हेरि । सूर राधा लखतिनाही इन दई अब टेरि॥९९॥ रागकान्हरो॥ जब जान्यो येन्हाति सबै।हरि प्रति अंग अंगकी शोभाऐं लियनमगहै लेउँ अबै॥कमल कोशमें आनि दुरावो बहुरि दरश धौं होइ कबै । यह मन करि युवतिन तनु हेरति सकुचतिहैं पुनिनहीं फबै॥कबहुँक कहैं तजों मर्यादा इनिसोंमें करि गोप तबै।सूर श्याम तबही मनमानै संगहि रैहों जाइ जबै॥रागगौरी॥ चित राधारतिनागरओर।नयन वदन छवि यों उपजत मानों शशिअनुराग चकोर॥सारस सर अचवनको मानहु फिरत मधुप युग जोर।पान करत त्रियतन मानत पलकन देत अकोर ॥ लिये मनोरथ मानि सकल ज्यों रजनि गए पुनि भोर। सूर परस्पर प्रीतिनिरंतर दंपतिहैं चितचोर ॥ राग कल्याण ॥ यह कछु भोरेहिभाइभई । निरखतवदन नंदनंदनको अवरहती सोगई ॥ हिरदै जामि प्रेम अंकुर जरि सत पतार गई।सो द्रुम पसरि शिखर अंबरलों सब जग छाइलई॥ वचन सुजत्र मुकुल अवलोकनि गुननिधि पुहुप मई । परस परम अनुराग सींचि सुफलगी प्रमोदजई ॥ मनके सकल मनोरथ पूरण समर भरी नई।सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि रस रीति ढई ॥१००॥ राग रामकली॥ चितवन रोकेहू न रही।श्याम सुंदर सिंधु सन्मुख सरित उमँगि वही॥ प्रेम सलिलप्रवाह भँवरनि मिलि कबहुँ न थाह लही । लोभ लहरि कटाक्ष घूंघट पट करार ढही ॥ थके पल पथ नाव धीरज परत नहिंन गही।हिलिमिलि सूरस्वभावश्यामहि फेरिहून चही॥ राग जैतश्री ॥ देखीहरि राधा उत अटकी । चितैरही एकटक हरिही तन ना जाइये कौन अँग लटकी ॥ कालि हमें कैसे निदरतिही मेरे चितवह टरति न खटकी । न्हातरही कैसे संग मिलिके चित चंचल विरहाकी चटकी॥बात करत तुलसी मुख मेले नयन शयन दै मुँह मटकी।सूर श्यामके रूपभुलानी राधाके चित सुधि न घटी॥१॥ राग विलावल॥ चितै रही राधा हरिको मुख।भ्रुकुटीबिकट विशालनयनयुग देखत मनहिं भयो रतिपति दुख॥ उतहि श्याम एकटक प्यारी छवि अंगअंग अवलोकत । रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ नोकत ॥ सखिन कह्यो वृषभानुसुतासो देखे कुँवरकन्हाई। सूर श्याम एई हैं ब्रजमें जिनकी होति बडाई ॥२॥ राग रामकली॥ हमहि कह्यो हो श्याम देखावहु। देखहु दरश नयनभरि नीके पुनि पुनिदरश न पावहु ॥ बहुत लालसा करतरही तुम वे तुम कारण आए। पूरी साध मिली तुम उनको याते हमहिं बोलाये॥ नीके सगुण आजु ह्यां आई भयो तुम्हारो काज । सुनहु सूर हमको कछुदेहो तुमहि मिले ब्रजराज ॥३॥ राधा कह्यो आजु इन जानी ।वारबार में हरितन चितई तबही ये मुसकानी॥ कालि कह्यो में इनसो वैसे अबतो बात न ठानी । इहि चतुरई परी मोहीपर मनमन अतिहिलजानी॥ मेरी बात गई इनिआगे अबहि करति विनपानी ।सूरदास प्रभु कहा कहौं मैं तृअब हाथ विकानी॥४॥ राग विलावल॥ मैं अतिही यह पोच करी । ये मेरी मर्यादा लैहैं ता दिन इनसों बहुत लरी ॥ सुंदर श्याम कमलदल लोचन तुम अब

होहु सहाइ। ऐसी कही बात इन आगे मेरी पति जिन जाइ॥ तव यक बुद्धि रची मनही मनअति आनंद हुलास। सूर श्याम राधा आघातन कीन्हो बुद्धि प्रकाश॥ ५॥ राग गूजरी॥ राधा चलन भवनहि जाहिं। कबहिकी हम यमुन आई कहहि अरु पछिताहि॥ कियो दरशन श्यामकी तुम चलोगी की नाहि। बहुरि मिलिहो चीन्हि राखहु कहति सब मुसकाहि॥ हम चली घर तुमहुँ आवहु सोच भयो मनमाहि। सूर राधासहित गोपी चलीव्रज समुहाहि॥ ६॥ राग बिलावल॥ कहि राधा हरि कैसेहैं। तेरेमन भायेकी नाही कीसुंदरकी नैसेहैं॥ की पुनि हमहि दुराव करोगी कीकैहौ वे जैसे हैं। की हम तुमसो कहतरही ज्यो सांच कहौकी तैसेहैं॥ नटवर भेष काछनी काछे अगनि रतिपति सेसेहैं। सूर श्याम तुम नीके देखे हम जानति हरि ऐसे हैं॥ ७॥ राधा मनमें इहै बिचारति। ये सवमेरे ख्याल परीहै अवही बातनले निरुवारति॥ मोहूते ये चतुर कहावतियेमनहीं मन मोको नारति। ऐसे वचन कहौगी इनको चतुराई इनकी मैं झारति॥ जाके नंदनंदन गिर समरथ वार वार तनु मन धन वारति॥ सूर श्यामके गर्व राधिका सूधे काहूतन न निहारति॥ ८॥ राग सूही॥ राधा हरिके गर्व गहीली। मद मंद गति मत्त मतंग ज्यो अंग अग सुखपुंज भरीली॥ पग द्वै चलति ठटकि रहैठाढी मौन धरे हरिके रसगीली। धरनी नख चरननि कुरवारति सौतिन भागसुहाग डहीली॥ नेक नहीं पियते कहुँ बिछुरति तातेनाहिंन काम दहीली। सूरसखी बूझेयह कैहो आजु भईइह भेटपहीली॥ ९॥ राग आसावरी॥ क्योराधा फिरिमौन गह्योरी। जैसे नउआ अध झँवर खर तैसेहि तैंयह मौन कह्योरी॥ बातनही मुखते कहि आवति की तेरौमनश्याम हरयो री। जानि नहीं पहिचानि न कबहूँ देखतही चित तिनहि ठरयोरी॥ साँची बात कहौतुम हमसो कहा सोच सो जियहि परयोरी। सूर श्यामतन देखि रही कहा लोचन इकटकते न टरयोरी॥ १०॥ राग धनाश्री॥ कहा कहति तुम बात अलेखे। मोसो कहति श्याम तुम देखे तुम नीकें करिदेखे॥ कैसो बरन भेषहै कैसो कैसे अग त्रिभग। मो आगे वह भेद कहौ धौंकैसोहै तनु रग॥ मैदेखे कीनाही देखे तुम तो वारहजार। सूर श्याम द्वै अँखियनदेखति जाको वार न पार॥ ११॥ राग कान्हरो॥ हम देखे यहि भाँति कन्हाई। शीशश्रीखडअलकबिथुरे मुख श्रवणनि कुडल चारु सोहाई॥ कुटिल भ्रुकुटि लोचन अनियारे सुभग नासिकाराजत। अरुन अधर दशनावलिकी द्युति दाडम कन तन लाजत॥ ग्रीवहार मुक्ता वनमाला बाहुदड गजशुड। रोमावली सुभग वगपगति जात नाभि ह्रद झुण्ड॥ कटि पटपीन मेखला कचन सुभग जघ युग जान। चरन कमल नखचद्र नही सम ऐसे सूर सुजान॥ १२॥ राग बिलावल॥ वनेहैं बिशाल कमलदल नैन। ताहूमे अति चारु बिलोकनि गूढभाव सूचत सखि सैन॥ वदन सरोज निकट कुचित कच मनहुँमधुप आएमधुलैन। तिलक तरनिशशि कहत कछुक हसि बोलत मधुर मनोहर बैन॥ मदननृपतिको देश महामद बुधि बल बसि न सकत उर चैन। सूरदास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत चरितचुनौतीदैन॥ १३॥ राग देवगन्धार॥ मोहन वदन बिलोकत अँखियन उपजत है अनुराग। तरनि ताप तलफत चकोरगति पिवत पियूष पराग॥ लोचन नलिन नये राजत रति पूरण मधुकर भाग। मानहु अलि आनद मिले मकरद पिवत रतिफाग॥ भँवरिभाग भ्रुकुटी पर कुमकुम चदनविन्दु विभाग। चातक सोम शक्र धनु घनमें निरखत मनु वैराग॥ कुचित केश मयूर चंद्रिका मडल सुमन सुपाग। मानहु मदन धनुष शर लीन्हें वरषत है वन बाग॥ अधरबिंब बिहँमान मनोहर मोहन मुरली राग। मानहु सुधापयोनि घेरि घन ब्रजपर वरषन लाग॥ कुडल मकर कपोलनि झलकत श्रम सीकरके दाग। मानहु मीन मकर मिलि क्रीडत शोभित शरद

तड़ाग। नासा तिलक प्रसून पदविपर चिबुक चारु चित खाग। दाड़िम दशन मंदगति मुसकनि मोहत सुर नर नाग॥ श्रीगोपाल रसरूप भरीहै सूर सनेह सोहाग। ऐसी शोभा सिंधु विलोकत इन अँखियन केभाग॥ १४॥ राग धनाश्री॥ हम देखे यहिभांति गोपाल। छंदकपट कछु जानति नाही मृषी हैं ब्रजकीसब बाल॥झूठीकीसांची नहिं भापे सांची झूठी कबहु न होइ।सांचीकीझूठी करिडारें यह सोई जानें धनि जोइ॥ इतननिमें दुराव कछु नाहीं भेदाभेद विचार। सूरदासतै झूठीमिलवैतिनकीगतिजानैकरतार॥ १५॥राग आसावरी॥ झूठीबात न होतिभलाई।चोरजुआर संग वरु करिये झूठेको नहिं कोउ पतिआई॥ सांचीकी झूठी करिडारें पंचनमें मर्यादा जाई। बोलि उठी एक सखी बीचही तें कह जानें लाज बड़ाई॥यामेंकछु नफाहै इनको जातेमनऐसी-ये भाई।सूरस्वभाउपर्योऐसोईकोजानैरीबुद्धिपराई॥१६॥राग धनाश्री॥ऐसेहमदेखेनंदनंदन।श्याम सुभग तनु पीत बसन जनु मनहु जलदपर तड़ित सुछंदन॥ मंद मंद मुरली मुख गरजनि सुधावृष्टि बरषत आनंदन।विविध सुमन बनमाला उर मनु सुरपति धनुप नहीं येहि छंदन॥मुक्तावली मनहुँ बगपगति सुभग अंग चरचित छवि चंदन। सूर नीप तरुवरतर ठाढे प्रभु सुरनरमुनि वंदन॥१७॥राग देवगंधार॥तुमको कैसे श्याम लगे।न्हातरहीं जलमें सब तरुनी तब तुम नैनाकहां रागे॥ अंग अंग अवलोकन कीन्हों कौन अंग पर रहे पगे। भूल्यो स्नान ज्ञान तनु भूली नदसुवन इततें न डगे॥ जानति नहीं कहूँ नहिं देखे मिलिगई ऐसे मनहि सगे। सूर श्याम ऐसे ते देखे मैं जानति दुख दूरभगे॥१८॥राग गौरी॥ तुम देखे मैं नहीं पत्यानी।मैंजानति मेरी गति सबही इहे सांच अपने मन आनी जो तुम अंग अंग अवलोक्यो धन्य धन्य मुख अस्तुति गानी। मैं तौ अंग अंग अवलोकति दोऊ नयन भये भरपानी॥कुण्डल झलक कपोलनि आभा इतनहिं मांझ बिकानी।एकटक रही नैन दोउ रूंधे सूरश्यामको नहिं पहिचानी॥१९॥ राग नट॥मेरी अँखियांअजान भई।एक अंगअवलोकत हरिकेऔरे अंगरई॥ये भूली ज्योंचोर भरे घर नौनिधि नहीं लई। फिरत पलटत भोर भए कछु लई न छांडिदई॥ पहिलेहि रति करिकै आरति करि ताहि गई। सूर सकति हठि दोष लगावति पल पल पीर नई॥२०॥राग सारंग॥ विधातहि चूक परी मैं जानी। आजु गोविंदहि देखि देखि हौं इहै समुझि पछितानी॥ रचि पचि सोचि सँवारि सकल अंग चतुर चतुरई ठानी। दृष्टि न दईरोमरोमनि प्रति इतनिहि कला नशानी॥ कहाकरौं अतिसुख द्वै नयना उमँगि चलत पग पानी। सूर सुमेर समाइ कहां धौं बुधिबासना पुरानी॥२१॥राग धनाश्री॥द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे। तुम प्रतिअंग विलोकन कीन्हो मैं भई मगन एक अँग हेरे॥ अपनो अपनो भाग्य सखीरी तुम तनमय मैं कहूँ न नेरे। जो बुनिये सोई पुनि लुनिये और नहीं त्रिभुवन भट भेरे॥श्यामरूप अवगाहि सिंधुते पार होत चढि डोगन केरे। सूरदास तैसे ए लोचन कृपा जहाज बिना को पेरे॥२२॥राग आसावरी॥ पावै कौन लिखे बिन भाल॥ काहूको षटरस नहिं भावत कोउ भोजनकहुँ फिरत बिहाल॥ तुम देख्यो हरि अंग माधुरी मैं नहिं देख्यो कौन गोपाल।जैसे रंक तनक धन पाए ताहिमहां वह होत निहाल॥तुमहि मोहि इतनो अंतरहै धन्य धन्य ब्रजकी तुम बाल।सूरदास प्रभुकी तुम संगनि तुमहिं मिले यह दरश गोपाल॥ ॥२३॥राग कल्याण॥सुनहु सखी राधाकी बानी।हमको धन्य कहति आपुन धृग यह निर्मल अति जानी॥आपुन रंक भई हरिधनको हमहि कहति धनवंत। यह पूरण हम निपट अधूरी हम असंत यह संत॥ धृग धृग हम धृग बुद्धि हमारी धन्य राधिका नारि। सूर श्यामको एहि

पहिचानी हम भईं अंत गँवारि॥२४॥राग गुंडमलार॥ धन्य राधा धन्य बुद्धि हेरी।धन्य माता धन्य पिता धनि भगति तुव धिग हमहिं नहीं सम दासि तेरी ॥ धन्य तुव ज्ञान धनि ध्यान धनि परमान नहीं जानति आन ब्रह्मरूपी । धन्य अनुराग धनि भाग धनि सौभाग धन्य जोवन रूप अति अनूपी ॥ हम विमुख तुम सुमुख कृष्णप्यारी सदा निगम मुखसहस अस्तुति बखानैं । सूर श्यामा श्याम नवल जोरी अटल तुमहिं बिन कान्ह धीरज न आनैं ॥ २५ ॥ राग बिहागरो ॥ जैसे कहे श्याम हैं तैसे । कृष्णरूप अवलोकनको सखि नयन होहिं जो ऐसे ॥ तैं जु कहति लोचन भरिआये श्याम कियो तेहि ठौर । पुण्यस्थली जानि सु विराजे बात नहीं है और ॥ तेरे नयन वास हरि कीन्हों राधा आधा जानि । सूर श्याम नटवर वपु काछै निकसे वहि मग आनि ॥ २६॥राग कान्हरो ॥ अचानक आइगए तहां श्याम । कृष्णकथा सब कहत परस्पर राधासंग मिली ब्रजबाम ॥ मुरली अधर धरे नटवरवपु कटि कछनीपर वारौंकाम । सुभग मोर चंद्रिका शीशपर आइगए पूरण सुख धाम ॥ तरु तमालतरु तरुन कन्हाई दूरि करत युवतिनतनुताम। सूर श्याम वंशीध्वनि पूरत श्रीराधाराधा लैं नाम॥२७॥ राग सूही बिलावल ॥ थकित भई राधा ब्रजनारि । जो मन ध्यान करति अवलोकन ते अंतर्यामी बनवारि ॥ रतनजटित पग सुभग पाँवरी नूपुरध्वनि कल परम रसाल। मानहुँ चरणकमलदललोभी निकटहि बैठेबालमराल॥ युगलजंघ मरकतमणिशोभा विपरित भांति सँवारे।कटिकाछनीकनकछुद्रावलि पहिरे नंददुलारे॥ हृदयविशाल माल मोतिनबिच कौस्तुभमणिअतिभ्राजत। मानहु नभ निर्मल तारागन तामधि चंद्र विराजत।दुहुँकर मुरलि अधर परसाये मोहन राग बजावत ॥ चमकत दशन मटकि नासापुटलटकि नयन मुख गावत ॥ कुंडल झलक कपोलनि मानहुँ मीन सुधासर क्रीडत ।भृकुटी धनुप नैन खंजन मानो उडत नहीं मन ब्रीडत ॥ देखि रूप ब्रजनारि थकित भईं क्रीटमुकुट शिर सोहत । ऐसे सूर श्याम शोभानिधि गोपीजन मन मोहत ॥ २८॥ राग कल्याण ॥ जबते निरखे चारु कपोल । तबते लोकलाज सुधि बिसरी देराखे मनबोल॥निकसे आनि अचानक तिरछे पहिरे नील निचोल।रतन जटित शिर मुकुट विराजत मणिमय कुंडल लोल ॥ कहा करौ वारिजमुखऊपर बिथके पटपद जोल ।सूरश्यामकरिये उत्कर्षा वश कीन्हीबिनमोल॥२९॥राग पूरवी॥चारु चितौनि चंचल डोल । कहि न जाति मनमें अति भावति कछु जो एक उपजत गति गोल ॥ मुरली मधुर बजावत गावत चलत करजु अरु कुण्डल लोल। सब छवि मिलि प्रतिबिंब विराजत इंद्रनील मणि मुकुर कपोल॥ कुंचित केश सुगंध सुबसु मनु उडिआए मधुपनके टोल । सूर सुभग नासिका मनोहर अनुमानत अनुराग अमोल॥३०॥राग गौरी॥ नँदनंदन बृंदावनचंद।यदुकुलनभ तिथिद्वितियदेवकी प्रगटे त्रिभुवनबंद ॥ जठरकुहूते बहरि वारिनिधि दिशिमधुपुरी सुछंद । वसुदेव शंभु शीश धरि आने गोकुलआनँदकंद ॥ ब्रज प्राची राकातिथि यशुमतिशरद सरस ऋतु नंद । उडुगन सकलसखा संकर्षन तम दनुकुल योनिकंद॥ गोपीजनतेहि धरत चकोरगति निरखि मेटि पल द्वंद । सूर सुदेश कला षोडश परिपूरन परमानंद ॥३१॥ राग गौरी ॥ देखि सखी हरिको मुख चारु । मनहु छिडाइलियै नँदनंदन वा शशिको सत सारु॥ रूप तिलक कच कुटिल किरनि छवि कुंडल कल विस्तारु । पत्रावलि परिवेष सुमन सरि मिल्यो मनहु उडदारु॥ नयनचकोर विहंग सूरसुनि पियत न पावत पारु । अब अंबर ऐसो लागत है जैसो झूठोथारु॥ ३२ ॥ रागकान्हरो॥ देखि री हरिके चंचल तारे । कमल मीनको कहँ एती छवि खंजनहू न जात अनुहारे॥ वे देखि निरखि नमित

मुरलीपर कर मुख नयन एक भए वारे । मनु सरोज विधु बेर बिरचिकरि करत नाद वाहन चुचुकारे॥उपमा एक अनूपम उपजत कुंचित अलक मनोहर भारे।बिडरत बिछुकि जानि रथते मृग जनु सशंकि शशि लंगर रारे । हरि प्रतिअंग विलोकिमानि रुचि ब्रजवनितानि प्राण धन वारे। सूर श्यामसुख निरखि मगन भई यह विचारि चितअनत न टारे॥२३॥ राग सोरठ॥हरिमुखनिरखत नैन भुलाने । ये मधुकर रुचि पंकज लोभी ताहीते न उडाने॥ कुंडल मकर कपोलनके ढिग जनु रवि रैनि विहाने। भ्रुव सुन्दर नेननि गति निरखत खंजन मीन लजाने॥अरुणअधर ध्वज कोटिवज्रद्युति शशिगन रूप समाने।कुंचित अलक सिलीमुख मानो लै मकरंद निदाने॥तिलक ललाट कंठ मुकुतावलि भूपनमय मनि साने।सूरदास स्वामी अँग नागर ते गुण जात न जाने॥ ॥ २४॥राग केदारो॥देखिरी नवल नंदकिशोर। लकुटसों लपटाइ ठाढे युवतिजन मन चोर ॥ चारु लोचन हँसि विलोकनि देखिके चित भोरामोहनी मोहन लगावत लटकि मुकुट झकोर॥श्रवण ध्वनि सुर नाद मोहत करत हिरदे कोर। सूर अंग त्रिभंग सुंदर छवि निरखि तृण तोर ॥२५॥ रागकान्हरो॥ब्रजवनिता देखति नँदनंदन।नवघन नील वरन ता ऊपर खौर कियो तनु चंदन॥कनकवरन कटिपीत पिछोरी उर भ्राजत वनमाला ।निर्मल गगन श्वेत वादरपर मनो दामिनीजाला। मुक्तामाल विपुल वग पंगति उडत एक भई जोति। सूर श्याम छवि निरखति युवती हरप परस्पर होति॥ २६॥ राग सूही॥ प्रातसमय आवत हरि राजत । रत्नजटित कुंडल सखि श्रवणनि तिनकी किरननि सुरतन लाजत ॥ सातें राशि मेलि द्वादशमें कटि मेखला अलंकृत साजत । पृथ्वी मथि पिता सो लैकर मुख समीप मुरली ध्वनि बाजत ॥ जलधि तात तेहि नाम कंठ केकिनके पंख मुकुट शिर भ्राजत । सूरदास कहैं सुनहु गूढ हरि भक्तनि भजत अभक्तनि भाजत ॥२७॥राग नट॥हरितन मोहिनी माई । अंग अंग अनंग शत शत वरनि नहिं जाई ॥ कोउ निरखि शिर मुकुटकी छवि सुरति विसराई। कोउ निरखि विथुरी अलक मुख अधिक सुखदाई॥कोउ निरखि रही भालचंदन एकचित लाई।कोउ निरखि विथुरी भ्रुकुटिपर नैन ठहराई॥ कोउ निरखिरही चारुलोचन निमिप भरमाई।सूरप्रभुकी निरखि शोभा कहत नहि आई ॥२८॥राग सारंग॥हरिमुख किधौं मोहनी माई ।अवलोकत अघात नहिं मेरे नैन, ठगे ठगोरी लाई॥ कुण्डलकिरनि निकट भ्रूलोचन आरति मीन दृग सम चपलाई।श्रवनरंध्र नहिं निपुन दास जनु कामकुवैनी कलित बनाई ॥ छाजत रदन रदन दकी छवि मंद माधुरी गिरा सुहाई। जया कुसुम दल मनहु कमलपर तडितजुत कोश कोकिला गाई ॥ सबविधि वशीकरनकी वाकी वलिनबलाक अनुज वलझाई ।सूरदास प्रभु वदन विलोकत जकित थकित चित अनत न जाई ॥ २९ ॥ राग गुंडमलार॥ श्याम सुखराशि रसराशि भारी । रूपकी राशि गुराशि यौवनराशि थकित भई निरखि नवतरुनि नारी ॥ शीलकी राशि जसराशि आनंदराशि नीलनव जलद छवि वरनकारी । दयाकी राशि बिद्याराशि वलराशि निर्दयराशि दनुजकुल प्रहारी ॥ चतुराई राशि छलराशि कलराशिहरि भजै जेहि हेतु तेहि देनहारी । सूरप्रभुश्याम सुखधाम पूरण काम लसति कटि पीत मुखमुरलिधारी ॥ राग बिहागरो ॥सुंदर बोलत आवत बैन।नाजानौं तेहि समय सखीरी सबतन श्रवन कि नैन ॥ रोमरोममें शब्द सुरतिकी नखशिख ज्यों चखऐन। येते मान बनी चंचलता सुनी न समुझी सैन ॥ तबतकि जकि ह्वैरही चित्रसी पल न लगत चितचैन। सुनहु सूर यह सांच कि संभ्रम सपन किधौं दिन रैन ॥४०॥ राग मलार॥ नैना माई भूले अनतन

जात। देखि सखी शोभा जो बनी है माधवके मुसकात॥ दाडिम दशन निकट नासा शुक चोंच चलाइ न खात। मनो रतिनाथ हाथ भृकुटी धनु ता अवलोकि डरात॥ वदन प्रभा मुख चंचल लोचन आनँद उर न समात। मानहु भौंह जुवारथ जोते शशि न चलत मृग मात॥ कुंचित केश मधुर ध्वनि मुरली सूरदास सुर सात। मनहु कमलपर कोकिल कूजत अलिगण उपर उडात॥४१॥ राग कान्हरो॥ श्याम कमलपद नखकी शोभा। जे नखचंद्र इंद्र शिर परसे शिव विरंचि मन लोभा॥ जे नखचंद्र सनक मुनि ध्यावत नहिं पावत भरमाहीं। ते नख चंद्र प्रगट ब्रजयुवती निरखि निरखि हरषाहीं॥ जे नखचंद्र फनीन्द्र हृदयते एकौ निमिष न टारत। जे नखचंद्र महामुनि नारद पलक न कहूं विसारत॥ जे नखचंद्र भजन खल नाखत रमा हृदय जेहि परसत। सूर श्याम नखचंद्र विमल छवि गोपीजन मिलि दरशत॥४२॥ राग आसावरी॥ श्यामहृदय जल सुतकी माला अतिहि अनूपम छाजे री मनहु बलाकपांति नवघनपर यह उपमा कछु भ्राजे री॥ पीत हरित सित अरुण मालवन राजत हृदय विशाल री। मानहु इंद्रधनुप नभमंडल प्रगट भयो तिहिकाल री॥ भृगुपदचिह्न उरस्थल प्रगटे कौस्तुभमणि ढिग दरसत री। वैठे मनु वरवधू एकसँग अर्धनिशा मिलि हरषत री॥ भुजाविशाल श्यामसुंदरकी चंदनखौरि चढाए री। सूर सुभग अँगअँगकी शोभा ब्रजललना ललचाए री॥४३॥ राग मलार॥ निरखि सखि सुंदरताकी सीव। अधर अनूप मुरलिका राजनि लटकि रहनि अधग्रीव॥ मंदमंद सुर पूरत मोहन राग मलार बजावत। कबहुँक रीझि मुरलिपर गिरिधर आपुहि रस भरि गावत॥ हर्षत लखि दशनावलि पंगति ब्रजवनिता मन मोहत। मर्कतमणि पुट बिच मुकुताहल वदन धरे मनु सोहत॥ मुख विकसत शोभा एक आवत मनो राजीव प्रकाश। सूर अरुण आगमन देखिकै प्रफुलित भए हुलास॥४४॥ राग टोडी॥ गोपीजन हरिवदन निहारति। कुंचित अलक बिथुरि रहे भुवपर तापर तनमन वारति॥ वदन सुधा सरसीरुह लोचन भृकुटी दोउ रखवारी। मनोमधुप मधुपानहि आवत देखि डरत जिय भारी॥ एक एक अलक लटकि लोचनपर यह उपमा एक आवत। मनहु पन्नगिनि उतरि गगनते दलपर फन परसावत॥ मुरली अधर धरे कल पूरत मंदमंद सुरगावत। सूर श्याम नागर नारिनिकेचंचल चितहि चोरावत॥४५॥ राग सूहीबिलावल॥ देखिसखी यह सुन्दरताई। चपलनैन बिच चारुनासिका यकटक नैन रही तहां लाई॥ करति बिचार परस्पर युवती उपमा आनति बुद्धि बनाई। मानहु खंजन बिच शुक बैठो यह कहिकै मन जात लजाई॥ कछु एक तिलक प्रसूनकी आभा मन मधुकर जहां रह्यो लुभाई। सूरश्याम नासिका मनोहर यह सुंदरता उन कहां पाई॥ ४६॥ राग रामकली॥ मनोहर है नैननकी भांति। मानहुं दूरिकरतबल अपने शरद कमलकी कांति॥ इंदीवर राजीव कसेसे जीते सब गुण जाति। अतिआनंद सप्रौढा नाते विकसत दिन अरु राति॥ खंजरीट मृग मीन बिचारति उपमाको अकुलाति। चंचल चारु चपल अवलोकनि चितहि न एक समाति॥ जबलगि परत निमेष अंतरा युग समान पल जात। सूरदास वह रसिक राधिका निमिष परति अनखात॥ ४७॥ आजु सखी देखे श्याम नए री। निकसे आनि अचानक अबही इत फिरिफिरि चितए री॥ मैं तबते पछिताति इहै तनु नैन नबहुत भए री। जो बिधिना इतनी जानतहै कत दृग दोइ दये री॥ सबदै लेउँ लाख लोचनकहे जो कोउ करत नये री। हरिप्रतिअंग विलोकनको मन मैं पन कै पठए री॥ अपने चोप बहुत कहँ पइये येहरिसंग गये री॥ थकेचरण सुनि सूरमनोगुण मदनबाण विधये री॥ ४८॥ राग गूजरी॥ देखिरी हरिके चंचल नैन। खंजन मीन मृगज चपलाई नहिं पटतर एकसैन॥ राजिवदल इंदीवर शतदल

कमलकुशेशय जाति। निशि मुद्रित प्रातहि ए विगमत ए विगमत दिनगति॥ अरुण श्वेत सित झलक पलकप्रति कोवरणै उपमाइ। मनो सरस्वति गंगा यमुना मिलि आगम कीन्हो आइ॥ अवलोकनि जलधार तेज अति तहां न मन ठहरात। सूर श्याम लोचन अपार छवि उपमा सुनि शरमात॥४९॥ राग सोरठ॥ देखु सखी मोहन मन चोरत। नैनकटाक्ष विलोकन मधुरी सुभग भृकुटिबिबि मोरत॥ चंदनखौरि ललाट श्यामके निरखत अति सुखदाई। मानहु अर्धचन्द्रतट अहिनी सुधा चोरावन आई॥ मलयज भाल भृकुटिकी रेखा करि उपमा एक ल्यावत। मनो एकसग गंग यमुन नभ तिरछी धार बहावत॥ भृकुटी चारु निरखि ब्रजसुंदरि यह मन करति विचार। सूरदास प्रभु शोभा-सागरकोउ नपावतपार॥५०॥ राग रामकली॥ देखिरी देखि कुण्डललोल। चारुश्रवणनि ग्रहित कीन्हो झलक ललित कपोल॥ वदन मंडलसुधा सरवर निरखि मन भयो भोर। मकर क्रीडत गुप्त परगट रूप जल झकझोर॥ नैन मीन भुजंगिनी भुअ नासिका थलबीच। सरस मृगमद तिलक शोभा लसतिहै गलबीच॥ मुखविकास सरोज मानहु युवतिलोचन भृंग॥ निधुरि अलकै परी मानहु प्रेमलहरि तरंग॥ श्याम तुम छबि अमृत पूरण रच्यो काम तडाग। सूर प्रभुकी निरखि शोभा ब्रजतरुणि बडभाग॥ ५१॥ राग धनाश्री॥ हरिमुख निरखति नागरि नारि। कमलनैनके कमल वदनपर वारिज वारिज वारि॥ सुमति सुंदरी परस प्रियारस लंपट माडी आरि। हारि जोहारि जो करत वसीठी प्रथमहि प्रथम चिन्हारि॥ राखत ओटकोटि यतननिकरि झांपति अँचलझवारि। खजन मनहु उडनको आतुर सकत न पख पसारि॥ देखि स्वरूप श्यामसुंदरको रही न पलकसँभारि। देखहु सूर अधिकसुरतितिन अजहु न मानी हारि॥५२॥ हरिमुख किधौं मोहनी माई। बोलत वचन मनसो लागत गति मति जाति भुलाई॥ कुटिल अलक राजत भ्रुव ऊपर जहँ तहँ रहे बगराई। श्याम फांसि मन कर्ष्यो हमरो अब समुझी चतुराई॥ कुंडल ललित कपोलनि झलकत इनकी गति मैं पाई। सूर श्याम युवती मनमोहन ये संगकरत सहाई॥५३॥ राग नट॥ निरखति रूप नागरि नारि। मुकुटपर मनअटकि लटक्यो जात नहिंनिरुआरि॥ श्यामतनुकी झलक आभा चंद्रिका झलकाइ। वारवारविलोकि थकि रही नयनहीठहराइ॥ श्याम मर्कतमणि महानग शिखिनि निर्त्तत मोर। देखि जलधर हर्ष उरपर नहीं आनद थोर॥ कोउ कहति सुरचाप मानो गगन भयो प्रकाश। थकित ब्रजललना जहां तहँ हरष कबहुँ उदास॥ निरखि जो जेहि अंग राची तहीं रही भुलाइ। सूर प्रभु गुणराशिशोभा रसिक जन सुखदाइ॥ ५४॥ राग बिहागरो॥ देखिरी देखि शोभाराशि। काम पटतरकहादीजे रमा जिनकी दासि॥ मुकुटशिर श्रीखंड मोहे निरखि रही ब्रजनारि। कोटि सुरकोदंड आभा छिरकि डारे वारि॥ केशकुंचित निधुरि भुवपर बीच शोभा भाल। मनहु चन्द्रहि अमल जान्यो राहु घेरो जाल॥ चारुकुंडल सुभग श्रवणनि को सकै उपमाइ। कोटिकोटि कला तरनि छवि देखि ततु भरमाइ॥ सुभग मुखपर चारु लोचन नासिका यहि भाँति। मनो खंजनबीच शुक मिलि बैठे हैं एक पांति॥ सुभग नासा तर अधरछवि रसभरे अरुनाइ। मनो बिंब निहारि शुक भ्रुव धनुष देखि डेराइ॥ हँसत दशननि चमकताई वज्रकन रुचिपांति। दामिनी दारिम नहीं सम कियो मन अतिभ्रांति॥ चिबुकपर चितवत चोरावत नवल नंदकिशोर। सूर प्रभुकी निरखि शोभा भई तरुनी भोर॥ ५५॥ राग सोरठ॥ तनमन नारि डारतवारि। श्यामशोभासिंधुजान्यो अंगअंग निहारि॥ पचि रहीं मन ज्ञान करिकरि लहति नाहिंन तीर। श्यामतन जलराशि पूरण महा गुण गंभीर॥ पीत पट

फहरानि मानो लहरि उठत अपार।निरखि छबिथकितीरबैठी कहूं वार न पार॥चलतअंगत्रिभंग करिकै भौंह भाव चलाइ। मनो विचविच भौंर डोलत चित परत भरमाइ ॥ श्रवण कुंडल मकर मानो नैन मीन विशाल ।सलिल झलकनि रूपआभा देखरी नँदलाल ॥ बाहुदंड भुजंग मानो जलधिमध्य विहार । मुक्तमाला मनो सुरसरि है चली द्वय धार ॥ अंगअँग भूषण विराजत कनकमुकुट प्रभास। उदधि मथि नग प्रगट कीन्हो श्रीसुधा परगास ॥ चकृत भई तिय निरखि शोभा देहगति बिसराइ। सूर प्रभु छबिरासि नागर जानि जानि न जाइ॥५६॥राग सारंग॥ बैठी कहा मदनमोहनको सुंदर वदन विलोकि । जा कारण घूंघटपट अब लौ अँखियां राखी रोकि॥ फबि रही मोरचंद्रिका माथे छबिकी उठत तरंग । मनहु अमरपतिधनुष विराजत नवजलधरके संग ॥ रुचिर चारु कमनीय भाल कुंकुमको तिलक दिये। मानहु अखिल भुवनकी शोभा राजत उदय किये ॥ मणिमय जडित लोल कुंडलकी आभा झलकत गंड । मनहुँकमल-ऊपर दिनकरकी पसरी किरनि प्रचंड ॥ भृकुटी कुटिल निकट नैननके चपल होत यहि भांति । मनहु तामरस पारस खेलत बालभृंगकी पांति ॥ कोमल श्याम कुटिल अल-कावलि ललित कपोलन तीर ।मानहु सुभग शरद इंदुऊपर मधुपनिकी अति भीर ॥ अरुण अधर नासिका निकाई वदत परस्पर होड । सूर सो मनसा भई पांगुरी निरखि डगमगे गोड॥५७॥ राग केदारो॥करि मन नंदनंदन ध्यान। सेइ चरणसरोज शीतल तजि विषै रस पान ॥ जानुजघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड ।काछिनी कटि पीतपट दुति कमलकेसर खंड ॥ मनुमराल प्रवाल छौना किंकिनी कलराउ। नाभिह्रद रोमावली अलि चले सैन सुभाउ॥ कठ मुक्तामाल मलयज उर बने वनमाल ।सुरसरीके तीर मानो लता श्याम तमाल ॥ बाहु पानि सरोज पल्लव गहे मुख मृदु वेनु।अतिविराजत वदन विधुपर सुरभि रंजित रेनु ॥ अरुण अधर कपोल नासा परमसुंदर नैन। चलित कुडल गडमंडल मनहु निर्तत मैन ॥ कुटिल कच भ्रू तिलकरेखा शीशशिखि श्रीखंड।मनु मदन धनुशर सँधाने देखि धनु कोदंड ॥ सूर श्रीगोपालकी छबि दृष्टि भरिभरि लेत।प्राणपतिकी निरखि शोभा पलक परन नदेत॥ ५८ ॥ राग नट नारायण॥सजनी निरखि हरिको रूप। मनसि वचसि विचारि देखो अंगअग अनूप॥कुटि-लकेश सुदेश अलिगन वदन शरदसरोज।मकर कुडल किंकिनी छबि दुरति फिरति मनोज ॥ अरुण अधर कपोल नासा सुभग ईपदहास।दशनकी द्युति तडित नवशशि भ्रुकुटि मदनविलास। अंगअंग अनग जीते रुचिर उर वनमाल।सूर शोभा हृदय पूरण देत सुखगोपाल॥५९॥ राग नट॥ नैननि ध्यान नंदकुमार ।शीश मुकुटश्रीखड भ्राजित नहीं उपमा पार॥ कुटिल केश सुदेश राजत मनहु मधुकरजाल । रुचिरकेसरि तिलक दीन्हो परम शोभा भाल॥भ्रुकुटि बंकट चारु लोचन रही युवती देखि । मनो खंजन चाप डरिडरि उडत नहिं तेहि पेखि ॥ मकर कुडल गड झलमल निरखि लज्जित काम ।नासिकाछबि कीर लज्जित कवि न बरनत नाम ॥ अधर विद्रुम दशन दाडिम चिबुकहै चितचोर ।सूर प्रभुमुख चंद्र पूरण नारिनैन चकोर ॥ १६००॥राग केदारो॥हमारे श्याम लालहो ।नैन विशालहोमोही तेरी चालहो॥ मोरमुकुट डोलनि मुख मुरली कल मद । मनो तमाल शिखा शिखि नाचत आनंद ॥ मकराकृतकुंडल छबि राजत लोल कपोल । ईपद अधर मुसुकनि बिच मधुर २ बोल ॥ चपल चितवनि मनोहर राजत भ्रुवभंग। धनुप वाण डारिकै वशहोत कोटि अनंग ॥ वदनसुधाको सरोवर कुटिल अलकवारि। व्रजयुवती मृगिनीरचि तिनके

फल पारि ॥ पीतांबर छवि निरखत दामिनि द्युति लजाइ । चमकि चमकि सावन मनो वनमें दुरिजाइ ॥ चरण कमल अवलंबित गजित वनमाल । प्रफुलित ह्वै लता मनो चढी तरुतमाल॥सूरदास वा छविपै वारौं तन मन प्राण।गिरिधरपिय देखि देखि कहाकरौंअनुमान ॥१॥ राग सारंग॥देख सखी सुंदरघनश्याम।सुंदर मुकुट कुटिल कचसुंदर सुंदरभालतिलकछविधाम॥सुंदर भ्रुव सुंदर अति लोचन सुंदर अवलोकनि विश्राम ।अतिसुंदर कुंडल श्रवणनिवर सुंदर झलकनि रीझत काम ॥सुन्दर चारु नासिका सुंदर सुंदर मुरली अधर उपाम। सुंदर दशन चिबुक अति सुंदर सुंदर हृदय विराजत दाम॥ सुंदर भुजा पीत कटि सुंदर सुंदर कनक मेखला झाग ।सुंदर जंघ जानु पद सुंदर सूरउधारन नाम ॥२॥ राग धनाश्री॥ देखिदेखि रीनंदकुलकेउधारी। मात पितु दुरित उद्धरन व्रज उद्धरन धरनि उद्धरन शिर मुकुटधारी ॥ पतित उद्धरन अपने भक्त उद्धरन दीन उद्धरन कुंडलनि धारी । जगत उद्धरन तिहुँ लोकके उद्धरन बलिहि उद्धरन पग पीठ धारी॥पूतना उद्धरन दनुजकुल उद्धरन तृणा उद्धरन मुख मुरलिधारी । शकट उद्धरन केशी प्रबल उद्धरन बका उद्धरन अरुण अधर धारी ॥ अघा उद्धरन गाइ ग्वालके उद्धरन वृषभ उद्धरन वनमालधारी।वच्छ उद्धरन ब्रह्मा उद्धरन येइ प्रभु यज्ञके पति यज्ञोपवीत धारी॥काली उद्धरन फनफन सहित उद्धरन दवा उद्धरन अंग मलयधारी।ग्राह उद्धरन गजराज उद्धरन ये शिला उद्धरन कटि पीत धारी॥यदुकुल उद्धरन द्रौपदी उद्धरन रुक्मिणी उद्धरन कर लकुट धारी। सिंधु उद्धरन सीता प्यारी उद्धरन जय विजयके उद्धरन धनुषधारी ॥ त्रास उद्धरन प्रहलादके उद्धरन प्रबलनरसिंह अवतार धारी। हिरणकश्यप उद्धरन हिरण्याक्षके उद्धरन वेद उद्धरन बलभुजाधारी ॥ धरम उद्धरन यज्ञ कर्म उद्धरनप्रभु सुभग कटि किंकिनी पीतधारी ।सूर उद्धरन सुरलोकके उद्धरन हरि कंस उद्धरन एई मुरारी ॥ ३ ॥ नंदनँदन मुख देख्यो नीके।अंगअंग प्रति कोटि माधुरी निरखि होत सुख जीके ॥ सुभग श्रवण कुंडलकी आभा झलक कपोलनि पीके । दहदह अमृत मकर क्रीडत मनौं यह उपमा कछु हीके॥और अंगकीसुधि नहिं जानें करे कहतिहौंलीके। सूरदास प्रभु नटवर काछे रहतहैं रतिपति वीके ॥४॥राग रामकली॥देखि री देखि कुंडल झलक। नैन द्वै छवि धरौं कैसे लगत तापर पलक ॥लसत चारुकपोल दुहुँबिच सजललोचन चारु। मुख सुधासर मीन मानौं मकरसंग विहार॥कुटिल अलक सुभाइ हरिके भुवनिपर रहे आइ । मनो मन्मथ फाँदि फंदनि मीन विधि तट ल्याइ॥चपल लोचन चपल कुंडल चपल भ्रुकुटीबंक। सखी व्याकुल देखि अपने लेत बनत न शंक ॥ सूर प्रभु नँदसुवनकी छवि बरनि कापै जाइ। निरखि गोपीनिकरि थिथकी विधिहि अति रिस पाइ ॥ ५ ॥ राग जयश्री ॥ विधिना अतिही पोच कियो री। कहा बिगार कियो हम वाको व्रज काहे अवतार दियो री॥यह तौ मन अपने जानत हौं येते पर क्यों निठुर हियो री । रोमरोम लोचन एकटक करि युवतिन प्रति काहे न ठयोरी॥ अँखियाँ द्वै छविकी चमकनि वह हम तौ चाहति सबै पियोरी । सुनि सजनी यह करनी अपनी अपनेही शिर मानि लियो री ॥ हम तौ पाप कियो भुगते को पुण्य प्रगट क्यों निठुर हियो री । सूरदास प्रभुरूप सुधानिधि पुटथोरो विधि नहीं वियोरी॥६॥ राग धनाश्री॥ सुनरीसखी वचन एक मोसों । रोम रोम प्रति लोचन चाहति द्वै सावित हैं तोसों ॥ मैं विधना सों कहौं कछू नहिं नितप्रति तिमको कोसों । यों जो नीके दोऊ रहते निरखत रहती होसों ॥ एक एक अंग अंग छवि धरती मैं जो कहती तोसों ।सूर कहा तू कहति

अयानी काम परयो सब जोसो ॥ ७ ॥ रागकान्हरो ॥ कहा काहूको दोष लगावे । निमिषौ कहा कहति कहो विधिसो कहा नैननि पछितावे ॥ श्याम हितू कैसे करि जानति औरो निठुर कहावे । क्षणमे और और अँग शोभा जो ए देखन पावे ॥ जबही एकटक करि अवलोकत तबही वे झलकावे । सूर श्यामके चरितलखे को एई बैर बढावे ॥८॥ रागनट ॥ लहनी करमके पाछे । दियो अपनो लहे सोई मिलै नहि पाछे ॥ प्रगटहीहै श्याम ठाढे कौन अग केहि रूप । लह्यो काहू कहो मोसो श्याम है ठगभूप ॥ प्रेम जाचक धनी हरिसे नैन पुट कह लेहि । अमृतसिंधु हिलोरि पूरण कृपा दरशन देहि ॥ पाइए सोई सखी री लिखो जितनो भाल । सूर उत कछु कमी नाही छबि समुद्र गोपाल ॥९॥ राग सूही बिलावल ॥ देखि सखी अधरनकी लाली । मणि मरकतते सुभग कलेवर ऐसेहै बनमाली ॥ मनो प्रातकी घटा सॉवरी तापर अरुन प्रकाश । ज्यो दामिनि बिच चमकि रहत है फहरत पीत सवास ॥ कीधौं तरुन तमाल बेलि चढि युग फल बिब सु पाक्यो । नासा कीरआय मनो बैठो लेत बनत नहिं ताक्यो ॥ हसत दशन एक शोभा उपजत उपमा यदपि लजाइ । मनो नीलमणि पुट मुकुतागन बदन भरि बगराइ ॥ किधौ बज्रकन लाल नगनि खचि तापर विद्रुम पांति । किधौ सुभग बधूक कुसुमपर झलकत जलकन काति ॥ किधौअरुनअबुजबिच बैठी सुदरताई आई । सूर अरुण अधरनकी शोभा वर्णत बरनिनजाई ॥१०॥ राग धनाश्री ॥श्यामरूपदेखनकी साध मेरी माई। कितनोपचिहारिरहीदेतनहिंदिखाई॥ मनतौ निरखत सुअग मे रही भुलाई । मोसो यह भेद कहो कैसे बहि पाई ॥ आपुन अंग अग बिधो मोको बिसराई । बार बार कहत इहै तू क्यो नहि आई ॥ अबहू लै जात साथ वाहि बोलै लाई । सूर श्याम छबि अगाध निरखत भरमाई ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ सुनहु सखीमैबूझतितुमकोकाहू हरिको देखेहै । कैसो तन कैसो रँग देखियत कैसी विधि करि भेपेहै ॥ कैसो मुकुट कुटिल कच कैसे सुभग भाल भ्रुव नीकेहै । कैसे नैन नासिकाकैसीश्रवणनिकुडल पीकेहै ॥ कैसेअधरदशन दुति कैसी चिबुक चारु चित चोरतहै । कैसे निरखि हँसत काहू तन कैसे बदन सकोरत है ॥ कैसी उरमाला है शोभित कैसी भुजा बिराजतहै । कैसेकर पहुँची हैकैसी कैसी अँगुरिआ राजत हैं ॥ कैसी रोमावली श्यामके नाभि चारु कटि सुनियतहै ॥ कैसी कनकमेखलाकैसीकछनी यह मन गुनियतहै ॥ कैसे जघ जानु कैसे दोउ कैसी पद नख जानतिहै । सूर श्याम अँग अगकी शोभा देखे की अनुमानतिहै ॥१२॥ राग रामकली ॥ ऐसे सुने नद कुमार । नख निरखि शशि कोटि वारत चरण कमल अपार ॥ जानु जघ निहारि रभा करनि डारत वारि । काछनीपर प्राण वारत देखि शोभा भारि ॥ कटि निरखि तनु सिंह वारत किकिनी जु मराल । नाभिपर ह्रद आपुवारत रोमावलि अलिमाल ॥ हृदय मुकुतामाल निरखत वारि अवलिबलाक । करजकरपरकमलवारत चलति जह तह साक ॥ भुजापर वर नाग वारत गये भागि पताल । ग्रीवकी उपमा नही कछु लखति परम रसाल ॥ चिबुकपर चित वारि डारत अधर अबुज लाल । बधूक विद्रुम बिब वारत ते भये बेहाल ॥ बचन सुनि कोकिलावारत दशन दामिनि काति । नासिकापर कीर वारत चारु लोचन भाति ॥ कज खजन मीन मृग शावकनि डारति वारि । भ्रुकुटि पर सुर चाप वारत तरनि कुंडल हारि ॥ अलकपर वारत अँध्यारी तिलक भाल सुदेश । सूर प्रभु शिर मुकुटधारे धरे नटवर भेष ॥१३॥ राग सारग ॥ ऐसी विधि नदलाल कहत सुने माई री । देखे जो नैन रोम रोम प्रति सुभाई री ॥ विधिने द्वै नैन रचे अग ठानि ठान्यो । लोचन नहिं बहुतदिये जानिकै भुलान्यो ॥ चतुरता

प्रवीनता विधाताकों जानैं । अब कैसे लगत हमहि बाते न अयाने॥ त्रिभुवनपति तरुन कान्ह नट-
वर वपु काछे । हमको द्वै नैन दिये तेऊ नहिं आछे ॥ ऐसो विधिको विवेक कहो कहा
वाको । सूर कवहुँ पाऊ जो कर अपने ताको ॥ १४ ॥ राग नट ॥ मुखपर चंद्र डारौं वारि ।
कुटिल कच पर भौंर वारौं भौंह पर धनु वारि ॥ भाल केसरि तिलक छविपर
मदन शत शर वारि ॥ मनु चली वहि सुधा धारा निरखि मन धौं वारि ॥ नैन खज-
न मृग मीन वारौं कमलके कुलवारि ॥ मनो सुरसति यमुन गंगाउपमा डारौं वारि॥ निरखिकुंडल
तरनि वारौं कृप श्रवननि वारि ॥ झलक ललितकपोल छविपर मुकुर शतशत वारि ॥ नासिका पर
कीर वारौं अधर विद्रुम वारि।दशन ए कन वज्र वारौं बीज दाडिम वारि॥ चिबुकपर चित वित्त
वारौं प्राण डारौं वारि। सूरहरिकीअंगशोभाकोसकैनिरवारि॥१५॥ राग सोरठ॥ श्याम उर सुधादह
मानौं । मलय चंदन लेप कीन्हें वरन यह जानौं॥ मलय तनु मिलि लसतिशोभा महाजल गंभीर।
निरखि लोचन भ्रमत पुनि रधरत नहिं मन धीर॥ उरज भँवरी भँवर मानो मीनमणिकी कांति। भृगुच-
रण हृदय चिह्न ये सब जीव जल बहुभांति॥ श्यामबाहु विशाल केसरि खौरि विविधि बनाइ। महज
निकसे मगर मानो कूल खेलत आइ ॥ सुभग रोमावलीकी छवि चली दहते धार । सूर प्रभुकी
निरखि शोभा युवति वारवार॥१६॥ मनु मधुकर पद कमल लुभान्यो । चित्त चकोर चन्द्र नख
अटक्यो यकटक पल न भुलान्यो ॥ विनही कहे गये उठि मोतें जात नहीं मैं जान्यो । अबदेखो
तनमें ये नाही कहा जियहि धौं आन्यो ॥ तबते फेरि तके नहिं मोतन नखचरणन हित मान्यो।
सूरदास वे आपु स्वारथी परवेदन नहिंजान्यो॥१७॥ रागमारू॥ श्याम सखि नीके देखे नाही। चित-
वतही लोचन भरिआए बार बार पछिताही ॥ कैसेहु करि यकटक राखति नेकहिमें अकुलाही ।
निमिष मनो छविपर रखवारे ताते अतिहि डराही ॥ कहा करें इनको कहा दोपन इन अपनीसी
कीन्ही । सूर श्याम छविपर मन अटक्यो उन सब शोभा कीन्ही ॥१८॥ राग गौरी॥ मन लुबध्यो
हरिरूप निहारि। जादिन श्याम अचानक आयो तबते मोहिं विसारि ॥ इंद्रिन संग लगाइ गयो
ह्यां डेरा निकसे झारि ।ऐसे हाल करति री कोऊ रहीअकेली नारि ॥ फेरि न मेरीउहिसुधि लीन्ही
आपु करत दुख भारि । सूर श्यामको उरहनो देहौं पठवत काहे न मारि ॥१९॥ अथ अनुरागसमयके
पद॥ रामकली ॥ पुनि पुनि कहतिहैं ब्रजनारि । धन्य बडभागिनी राधा तेरे वश गिरिधारि॥ धन्य
नंदकुमार धनि तुम धन्य तेरी प्रीति।धन्य तुम दोउ नवलजोरी कोक कला निजीति॥ हमविमुख
तुम कृष्ण संगिनि प्राण एक द्वै देह । एक मन एकबुद्धि एकचित दुहुनि एक सनेह॥ एकछिनुनिन
तुमहि देखे श्याम धरत न धीर । मुरलिमेंतुवनाम पुनिपुनि कहतहैं बलबीर ॥श्याममणि मैं परखि
लीन्हो महाचतुर सुजान।सूर प्रभुके प्रेमहीवश कौन तोसरि आन ॥२०॥राग विहागरो॥राधा परम
निर्मल नारि। कहतिहौं मन कर्मना करि हृदय दुविधाटारि॥ श्यामको एक तुही जान्यो दुराचरनी
और। जैसे घट पूरण न डोलै अध भुलौ डगडौर॥ धनी धन कबहूं न प्रगटे धरे धनहि छिपाइ ।
तै महानग श्यामपायो प्रगटि कैसे जाइ॥ कहतिहौ यह बात तोसो प्रगट करिहौं नाहिं। सूर सखी
सुजान राधा परस्पर मुसकाहि ॥२१॥ राग गौरी॥ श्यामको तैंही है पहिचाने । सांची प्रीति जानि
मनमोहन तेरेंहि हाथ विकाने॥ हम अपराध कियो कहि तुमसो हमहीकुलटी नारि।तुमसोउनसो
बीच नही कछु तुम दोऊ वरनारि ॥ धन्य सुहाग भाग हैं तेरी धनि बडभागी श्याम । सूरदास
प्रभुसे पति जाके तोसी जाके वाम॥२२॥ राग सोरठ ॥ राधा श्यामकी प्यारी । कृष्णपति सर्वदा

तेरे तू सदा नारी ॥ सुनत वाणी सखीमुखकी जिय भयो अनुराग । प्रेमगदगद रोम पुलकित समुझि अपने भाग ॥ प्रीति परगट कियो चाहै वचन बोलि न जाइ । नंदनंदन कामनायक रहे नैननि छाइ ॥ हृदयते कहुँ टरत नाहीं कियो निहचल वास । सूर प्रभु रसभरी राधा दुरत नाहिं प्रकाश॥ २३ ॥राग जयतश्री॥सुनि सजनी मेरी एक बात। तुम तौ अतिही करतिबडाई मन मेरो सरमात ॥ मोसों हँसति श्याम तुम एकै यह सुनिकै मरमात । एक अंगको पार न पावति चकित होइ भरमात ॥ वह मूरति द्वै नयन हमारे लिखी नहीं करमात । सूर रोमप्रति लोचन देतो विधनापर तरमात ॥२४ ॥राग कल्याण॥ जो विधना अपवश करिपाऊं तौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो अपनी साध पुराऊं ॥ लोचन रोमरोमप्रति माँगौं पुनिपुनि त्रास दिखाऊं । यकटक रहैं पलक नहिं लागैं पद्धति नई चलाऊं ॥ कहा करौं छबिराशि श्यामघन लोचन द्वै नहिं ठाऊं । एतेपर ये निमिष सूर सुनि यह दुख काहि सुनाऊं ॥ २५ ॥राग बिलावल॥ कहाकरौं विधि हाथ नहीं। वहसुख यह तनुदशा हमारी नैननिको रिस मरत महीं ॥ अंगअंग नीकी विधि वनये द्वै नैना देखति जबहीं ।ऐसो कौन ताहि धरिआनै कहा करौं खीझति मनहीं ॥ बडो सुजान चतुरई नीकी जगतपिता कहियत सबहीं । सूर श्यामअवतारजानि व्रज लोचन बहुत न दिये हमहीं ॥ २६ ॥ अब समुझी यह निठुर विधाता । ऐसेहि जगतपिता कहवावत ऐसे घात करै सोदाता॥कैसो ज्ञान चतुरई कैसी कौन बिबेक कहांको ज्ञाता । जैसो दुख हमको एहि दीन्हों तैसे याको होत निपाता । द्वैलोचन तनुमें करिदीन्हों याहीते जान्यो पितु माता । सूर श्यामछबिते अघात नहिं बारबार आवत अकुलाता ॥२७॥राग सूही बिलावल॥ द्वै लोचन सावित नहिं तेउ। विनु देखे कल परत नहीं छन येतेपर कीन्हेंयह टेउ ॥ बारबार छवि देख्यो चाहत साथी निमिषमिलेहैं येउ।ते तो ओट करत छिनहीछिन देखतही भरिआवत दोउ॥कैसे मैं उनको पहिचानौं नैनबिना लखिये क्यों भेउ । ये तौ निमिष परत भरि आवत निठुर विधाता दीन्हें येउ ॥ कहा भई जो मिली श्यामसों तू जान्यो जानै सबकोउ। सूर श्यामको नाम श्रवन सुनि दरशन नीके देत न वोउ॥२८॥ राग सूही ॥ श्यामहिं मैं कैसे पहिचानौं।क्रमक्रमकरि एक अंग निहारति पलकओट ताको नहिं जानौं ॥ पुनि लोचन ठहराइ निहारति निमिषमेटि वहछवि अनुमानौं । औरै भाव और कछु शोभा कहो सखी कैसे उर आनौं॥ छिनछिन अंग अंग छवि अगणित पुनि देखौं फिरिकै हठ ठानौं।सूरदास स्वामीकी महिमा कैसे रसना एक बखानौं॥२९॥राग सारंग ॥ श्यामसों काहेकी पहिचानि । निमिष निमिष वह रूप न वह छबि रति कीजे जेहि जानि ॥ यकटक रहत निरंतर निशिदिन मन मतिसों चित सानि । एकौ पल शोभा कि सींवाँ सकत न उरमहँ आनि ॥ समुझि न परै प्रगटही निरखत आनँदकी निधि खानि । सखि यह विरह संयोगकि मम रस दुख सुख लाभ कि हानि॥ मिटति न घृतते होम अग्निरुचि सूर सुलोचनि बानि । इत लोभी उत रूप परमनिधि कोउ न रहत मिति मानि ॥३०॥राग रामकली॥ कहा करौं नीकेकरि हरिको रूपरेख नहिं पावति। संगहिसंग फिरति निशिवासर नैननिमिष न लावति ॥ वेधी दृष्टिज्यों डोर गुडीवश पाछे लागी धावति।निकट भये मेरीयै छाया मोको दुख उपजावति ॥ नखशिख निरखि निहारयोइ चाहति मन मूरति अति भावति । जानौ नही कहांते निजछवि अगअगमें आवति॥अपनी देह आपको वैरिनि दुरतनदुरीदुरावति । सूर श्यामसोंप्रीति निरंतरअंतर मोहिंकरावति॥३१॥राग धनाश्री ॥ जोदेखौंतोप्रीतिकरौंरी।संगहिरहौ फिरौ निशिवासर चितते नेक नही बिसरौं री।कैसे दुरति दुराये मेरे उनबिन धीरजनहीधरौंरी ।

प्रवीनता विधाताकी जानें। अब कैसे लगत हमहि याते न अयाने॥ त्रिभुवनपति तरुन कान्ह नट-
वर वपु काछे। हमको द्वै नैन दिये तेऊ नहिं आछे॥ ऐसो विधिको विवेक कहौ कहा
वाको। सूर कबहुं पाऊं जो कर अपने ताको॥ १४॥ राग नट॥ मुखपर चंद्र डारौं वारि।
कुटिल कच पर भौंर वारौं भौंह पर धनु वारि॥ भाल केसरि तिलक छविपर
मदन शत शर वारि॥ मनु चली वहि सुधा धारा निरखि मन धौं वारि॥ नैन खंज-
न मृग मीन वारौं कमलके कुलवारि॥ मनो सुरसति यमुन गंगाउपमा डारौं वारि॥ निरखिकुंडल
तरनि वारौं कूपश्रवननि वारि॥ झलक ललितकपोल छविपर मुकुर शतशत वारि॥ नासिका पर
कीर वारौं अधर विद्रुम वारि॥ दशन ए कन वज्र वारौं बीज दाडिम वारि॥ चिबुकपर चित वित्त
वारौं प्राण डारौं वारि। सूरहरिकीअंगशोभाकोमकेनिरवारि॥ १५॥ राग सोरठ॥ श्याम उर सुधादह
मानो। मलय चंदन लेप कीन्हें वरन यह जानो॥ मलय तनु मिलि लमतिशोभा महाजल गंभीर।
निरखि लोचन भ्रमत पुनि२धरत नहिं मन धीर॥ उरज भँवरी भँवर मानों मीनमणिकी कांति॥ भृगुच-
रण हृदय चिह्न ये सव जीव जल वहुभांति॥ श्यामबाहु विशाल केसरि खौरि विविधि वनाइ॥ सहज
निकसे मगर मानों कूल खेलत आइ॥ सुभग रोमावलीकी छवि चली दहते धार। सूर प्रभुकी
निरखि शोभा युवति वारंवार॥ १६॥ मनु मधुकर पद कमल लुभान्यो। चित्त चकोर चन्द्र नख
अटक्यो यकटक पल न भुलान्यो॥ विनही कहे गये उठि मोते जात नही मैं जान्यो। अबदेखौ
तनमें वे नाही कहा जियहि धौं आन्यो॥ तवते फेरि तके नहिं मोतन नखचरणन हित मान्यो।
सूरदास वे आपु स्वारथी परवेदन नहिंजान्यो॥ १७॥ रागमारू॥ श्याम सखि नीके देखेनाही। चित-
वतही लोचन भरिआए वार वार पछिताही॥ कैसेहू करि यकटक राखति नेकहिमें अकुलाही।
निमिप मनो छविपर रखवारे ताते अतिहि डराही॥ कहा करें इनको कहा दोपन इन अपनीसी
कीन्ही। सूर श्याम छविपर मन अटक्यो उन सब शोभा कीन्ही॥ १८॥ राग गौरी॥ मन लुवध्यो
हरिरूप निहारि। जादिन श्याम अचानक आयो तवते मोहिं विसारि॥ इंद्रिन संग लगाइ गयो
ह्यां डेरा निकसे झारि। ऐसे हाल करति री कोऊ रहीअकेली नारि॥ फेरि न मेरीउहिसुधि लीन्हीं
आपु करत दुख भारि। सूरश्यामको उरहनो देहौं पठवत काहे न मारि॥ १९॥ अथ अनुरागसमयके
पद॥ रामकरी॥ पुनि पुनि कहतिहैं व्रजनारि। धन्य वडभागिनी राधा तेरे वश गिरिधारि॥ धन्य
नंदकुमार धनि तुम धन्य तेरी प्रीति॥ धन्य तुम दोउ नवलजोरी कोक कला निजीति॥ हमविमुख
तुम कृष्ण सगिनि प्राण एक द्वै देह। एक मन एकबुद्धि एकचित दुहुनि एक सनेह॥ एकछिनुविन
तुमहि देखे श्याम धरत न धीर। मुरलिमेंतुवनाम पुनिपुनि कहतहै वलवीर॥ श्याममणि मै परखि
लीन्हो महाचतुर सुजान॥ सूर प्रभुके प्रेमहीवश कौन तोसरि आन॥ २०॥ राग विहागरो॥ राधा परम
निर्मल नारि। कहतिहौं मन कर्मना [illegible] आय तहांकन्हाइ।
औंर। जैसे घर [illegible] तनु सुरति गँवाई॥ सूधे मारग गई भुलाई॥ विनदेखे कल परे न माई।
[illegible]नालगाई॥ ४०॥ तवहीते हरिहाथ विकानी॥ देहगेह सुधि सवै भुलानी॥ अंगशि-
थिल भई जैसे पानी। ज्यो त्यो करि गृह पहुँची आनी॥ वोले तहौं अचानक वानी।
द्वारे देखे श्याम विनानी॥ कहा कहो सुनि सखी सयानी। सूर श्याम ऐसी मति ठानी॥ ४१॥
राग धनाश्री॥ जा दिनते हरि दृष्टि परे री॥ ता दिनते इन मेरे नैननि दुखसुख सब बिसरेरी॥ मोहन
अंग गोपाललालके प्रेम पियूप भरे री। धसे उहां मुसुकानि बाहुले रचि रुचि भवन करे री॥

तेरे तू मदा नारी॥ सुनत वाणी सखीमुखकी जिय भयो अनुराग। प्रेमगदगद रोम पुलकित समुझि अपने भाग॥ प्रीति परगट कियो चाहै वचन बोलि न जाइ। नंदनंदन कामनायक रहे नैननि छाइ॥ हृदयते कहुँ टरत नाही कियो निहचल वास। सूर प्रभु रसभरी राधा दुरत नाहिं प्रकाश॥ २३ ॥ राग जयतश्री॥ सुनि सजनी मेरी एक बात। तुम तौ अतिही करतिवडाई मन मेरो सरमात॥ मोसों हँसति श्याम तुम एकै यह सुनिकै मरमात। एक अंगको पार न पावति चकित होइ भरमात॥ वह मूरति द्वै नयन हमारे लिखी नहीं करमात। सूर रोमप्रति लोचन देतो विधनापर तरमात॥२४॥ राग कल्याण॥ जो विधना अपवश करिपाऊं तौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो अपनी साध पुराऊं॥ लोचन रोमरोमप्रति माँगौं पुनिपुनि त्रास दिखाऊं। यकटक रहैं पलक नहिं लागैं पद्धति नई चलाऊं॥ कहा करौं छविराशि श्यामघन लोचन द्वै नहिं ठाऊं। एतेपर ये निमिप सूर सुनि यह दुख काहि सुनाऊं॥ २५॥ राग बिलावल॥ कहाकरौं विधि हाथ नही। वहसुख यह तनु-दशा हमारी नैननिको रिस मरत मही॥ अंगअंग नीकी विधि वनये द्वै नैना देखति जवहीं। ऐसो कौन ताहि धरिआनै कहा करौं खीझति मनहीं॥ वडो सुजान चतुरई नीकी जगतपिता कहियत सवहीं। सूर श्यामअवतारजानि ब्रज लोचन वहुत न दिये हमही॥ २६॥ अब समुझी यह निठुर विधाता। ऐसेहि जगतपिता कहवावत ऐसे घात करै सोदाता॥ कैसो ज्ञान चतुरई कैसी कौन विवेक कहांको ज्ञाता। जैसो दुख हमको एहि दीन्हों तैसे याको होत निपाता। द्वैलोचन तनुमें करि-दीन्हों याहीते जान्यो पितु माता। सूर श्यामछविते अघात नहिं वारवार आवत अकुलाता॥२७॥ राग सूही बिलावल॥ द्वै लोचन सावित नहिं तेउ। विनु देखे कल परत नहीं छन येतेपर कीन्हेंयह टेउ॥ वारवार छवि देख्यो चाहत साथी निमिपहिंमिलेहैं येउ। ते तौ ओट करत छिनहीछिन देखतही भरिआवत दोउ॥ कैसे मैं उनको पहिचानौं नैनबिना लखियै क्यो भेउ। ये तौ निमिप परत भरि आवत निठुर विधाता दीन्हें येउ॥ कहा भईजो मिली श्यामसों तू जान्यो जानै सवकोउ। सूर श्यामको नाम श्रवन सुनि दरशन नीके देत न वोउ॥२८॥ राग सूही॥ श्यामहि मैं कैसे पहि-चानौं। क्रमक्रमकरि एक अंग निहारति पलकओट ताको नहिं जानौं॥ पुनि लोचन ठहराइ निहा-रति निमिप मेटि वह छवि अनुमानौं। औरै भाव और कछु शोभा कहौं सखी कैसे उर आनौं॥ छिनछिन अंग अंग छवि अगणित पुनि देखौं फिरिकै हठ ठानौं। सूरदास स्वामीकी महिमा कैसे रसना एक वखानौं॥२९॥ राग सारंग॥ श्यामसों काहेकी पहिचानि। निमिप निमिप वह रूप न वह छवि रति कीजै जेहि जानि॥ यकटक रहत निरंतर निशिदिन मन मतिसो चित सानि। एकौ पल शोभा कि सीवाँ सकत न उरमहँ आनि॥ समुझि न परै प्रगटही निरखत आनँदकी निधि खानि। सखि यह विरह सयोगकि मम रस दुख सुख लाभ कि हानि॥ मिटति न घृतते [illegible] रूप परमनिधि कोउ न रहत मिति मानि

जरचो री॥ ४८॥ राग अडानो॥ मेरो मनतबतेन फिरचारी। [illegible] संगहिसंग फिरति निशिवा न टरचो री॥ जोबनरूपगर्व धन सचिसचि हौं उरमें जु धरचो री। कहाकहे [illegible] भये मेरीये सरबस हाथ परचो री॥ बिनु देखे मुख मनुहारिको यह निशिदिन रहत अरचो री। सूरदा[illegible] लाजते कछुअ न काज सरचोरी॥ ४९॥ राग सारग॥ यह सबमैंही पोच करी। श्यामरूपनिरखत नैननि भरि भौहनि फंद परी॥ वे किशोर कमनीय मुगध मैं लुबुधतहू न डरी। अव छवि गई समाइ हियेमें टारतहू न टरी॥ अति सुख दुख संभ्रम व्याकुलता विधुमुखसनमुखरी। बुधि विवे-क वल वचन विवशह्वै आनँद उमँगि भरी॥ यद्यपि शूल सहत सुनि सूर सु अंगहउदेनअगी।

जाउ तहीं जहँ रहैं श्यामघन निरखत पलकपलक नहीं गी॥सुनि री सखी दशा यह मेरी सोकहि धौं अब कहा मरौं री। सूर श्याम लोचनभरि देखौं कैसे इतनी साध भरौं री ॥३२॥ राग बिलावल ॥ हरि दरशनकी साध मुई। उडियें उडी फिरति नैननि सँग फर फूटे ज्यों आक रुई ॥ जानौं नहीं कहाँ ति आवति यह मूरति मनमाहँ उई। बिनदेखेकी व्यथा विरहिनीअति जुगजगति न जाति छुई ॥ कछुनै कहत कछु कहि आवत प्रेमपुलकि श्रमस्वेद चुई। सूरति सूर धानअकुरसी बिनुरूपा ज्यों मूल तुई॥३३॥ राग धनाश्री॥ सुन री सखी दशा यह मेरी। जबतें मिले श्यामघन सुंदर संगहि फिरति भई जनु चेरी ॥ नीके दरश देत नहिं मोको अंगन प्रति अनगकी टेरी। चपलातें अतिही चचलता दशन चमक चकचौंधि घनेरी ॥ चमकत अंग पीतपट चमकत चमकति माल मोतिनकेरी।सूर समुझि विधिनाकी करनी अतिरिस करति सौंह मुह तेरी॥३४॥राग मारू॥ आजुके दिनाको सखी अनि नहीं जो लाख लोचन अँगअग होते । पूरती साध मेरे हृदय माझ देखत सबै छवि श्यामको ते॥ चित्तलोभी नैनद्वार अतिही सूक्ष्म कहा वह सिंधु छवि है अगाधा॥ रोम जितने अग नैन होते सग रूप लेती निदरि कहति राधा ॥ श्रवण सुनिसुनि दहैं रूप कैसे लहैं नैन कछु गहै रसना न ताके। देखि कोउ रहै कोउ सुनि रहै जीभविन सो कहैं कहा नहिं नैन जाके ॥ अगनितु है सबै नही एकौ फबै सुनत देखत जबै कहन लोरैं। कहै रसना सुनत श्रवन देखत नैन सूर सब भेद गुनि मनहि तोरैं॥ ३५ ॥ राग धनाश्री ॥ इनहूँमे घटिताई कीन्ही । रसना श्रवण नैनके होत की रसनाहीको नहिं दीन्ही ॥बैर कियो विधना हमकों रचि याकी जातिअँध हम चीन्ही।निठुर निर्दयी याते औरन श्यामबैर हमसोंहि लीन्ही॥ या रसहीमेंमगन राधिकाचतुरसखी तबही लखि भीनी।सूर श्यामके रगहि राची टरत नहीं जलते ज्यों मीनी॥३६॥राग गौंड ॥ धन्य धन्य बडभागिनि राधा।नीके भजी नदनदनको मेटि भजनजन बाधा॥नवल श्याम नवला तुमहू हौ दोउ तुम रूप अगाधा।मै जानी यह बात हृदयकी रही नही कछु साधा॥संगहि रहतिसदा पियप्यारी क्रीडत करति उपाधा। कोककला वितपन्न भई हौ कान्हरूप तन आधा॥प्रेम उमगि तेरे मुख प्रगटयो अरस परस अनलाधा।सूरदास प्रभु मिलि कृपाकरि गये दुरित दुखदाधा॥३७॥राग धनाश्री॥ कहि राधिकाबात अब सांची।तुमअब प्रगट कही मोआगे श्यामप्रेमरस मांची॥तुमको कहां मिले नँदनदन जब उनके रगराची।खरिक मिले की गोरस बेचत की जिपदहते बाची॥कहे बनै छाडौ चतुराई बात नही यह काची। सूरदास राधिका सयानी रूपराशि रस राची॥३८॥राग गौरी ॥ कबरी मिले श्याम नहिं जानौं।तेरी सौं कहिकहत सखी री अबहू नहिं पहिचानौं॥खरिक मिलेकी गोरस बेचत की अबही की कालि।नैननि अतर होत न कबहू कहति कहारीआलि॥ एकौ पल हरि होत न न्यारे नीके देखे नाही । सूरदास प्रभु टरत न टारे नैननि सदा बसाही ॥ ३९ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम मिले मोहि ऐसे माई। [illegible] एक तहां आये तहान्हाई। देखनही मोहनी लगाई॥तू [illegible] सूर श्याम [illegible] ॥ [illegible] गइ भुलाइ॥बिनदेखे कल परै न माई। [illegible] श्यामपायो प्रगटि [illegible] तनु सुरति गँवाई।सूधे मारग गइ भुलाइ॥ ... अंगशिसुजान राधा पर [illegible] लगाई ॥ ४० ॥तबहीतें हरिहाथ बिकानी।देहगेह सुधि सबै भुलानी॥ मनमोहन [illegible] मिल भइ जैसे पानी । ज्यों त्यों करि गृह पहुँची आनी ॥ बोले तहाँ अचानक बानी । द्वारे देखे श्याम बिनानी ॥कहा कहौं सुनि सखी सयानी । सूर श्याम ऐसी मति ठानी ॥४१॥ राग धनाश्री ॥ जा दिनते हरि दृष्टि परे री।ता दिनते इन मेरे नैननि दुखसुख सब बिसरेरी॥मोहन अग गोपाललालके प्रेम पियूष भरे री । घने उहां मुसुकानि बाहुले रचि रुचि भवन करे री ॥

पठवतिहौं मन तिनहिं मनावन निशि दिन रहत अरे री। ज्यों ज्यों मान करति उलटावत त्यों त्यों होत खरे री॥ पचिहारी समुझाइ सोचि पचि पुनिपुनि पाँइ परे री। सो सुख सूर कहांलौं वरनौं यकटकते न टरे री॥ राग सारंग॥ जवते प्रीति श्यामसों कीन्हीं। तादिनते मेरे इन नैननि नेकहु नींद न लीन्हीं॥सदा रहैं मन चाक चढयौसो और न कछू सोहाइ।करत उपाइबहुत मिलिबेको इहै बिचारत जाइ॥ सूर सकल लागत ऐसीयह सोदुखकासों कहिये। ज्यों अचेत वालककी वेदन अपनेही तन सहिये॥४२॥ राग अडानो॥ को जाने हरि कहा कियो री।मन समुझति मुख कहत न आवे कछुएक रसलोचन जु पियो री॥ ठाढीहुती अकेली आँगन आनि अचानक दरश दियो री। सुधि बुधि कछु न रही तेहिअवसर मेरो मनकिधौं पलटि लयो री॥ ता सुखहेतु दहति दुख दारुण छिन छिन जरति जुडात हियो री। सूर सकल आनत उर अंतर उपमाको पावति न वियोरी॥४३॥ राग सारंग॥ मेरेहरिअँगनाह्वै जु गए री। निकसेआइअचानकसजनीइतफिरिफिरि चितये री॥ अतिदुखमें पछिताति यहैकहि नैनन बहुतठये री।जोविधि इहै कियो चाहतहौंद्वैमुहि कत वनएरी॥सव देखेउँ लाख लोचनसखि जो कोउजडत नए री।थाके सूर पथिक मगमानो मदन व्याधविधएरी॥४४॥ राग कान्हरो॥पीतांवरकीशोभासखीरीमोपेकहीनजाई।सागरसुतापति आयुध मानो वनरिपु रिपुमें देति दिखाई॥जाअरि पवनताहिमहिंसुत स्वामी आभा कुंडल कोटिदिखाई। छायापति तनु वदन विराजत बंधुक अधरनगए लजाई॥नाकिनायकु वाहनकी गति मुरली सुधुनि वजाई।सूरदासप्रभु हरिसुतवाहन तासुत हरिलै सरह वनाई॥४५॥ राग सारंग॥ टरतिनटारेइहछवि मनमें चुभी। श्याम सुघन पीतांवर दामिनि चातक अँखियाहो जाइ तुभी॥ है जलधार हार मुकुता मनों वक पंगति कुमुद माल सुभी। गिरा गंभीर गरज मनु सुनि सखी खानि के श्रवन देखुभी॥ मोहन वानीहौं ठगी रही इकटकहौं जु उभी। सूरदास मोहन मुख निरखत उपजी सकलतनकामगुँभी॥४६॥राग विलावल॥नंदकेलालहरयोमनमोराहौवैठीपोवतिमोतिअनलरकां-करि डारि चले सखि भोर॥ बंक विलोकनि चाल छवीली रसिक शिरोमणि नंद किशोर। कहिकाको मन रहत श्रवण सुनि सरस मधुर मुरलीकी घोर। इंदु गोविंदु वदनके कारन चितवति नैन विहंग चकोर। सूरदास प्रभुके जु मिलनको कुच श्रीफलहो करति अकोर॥ ॥४७॥ राग अडानो॥ मेरो मन गोपाल हरचो री। चितवतही उर पैठि नैनमगनाजानोंधौं कहा करचो री॥ मात पिता पति बंधु सजन जन सखिआँगन सब भवन भरचो री। लोक वेद प्रतिहार पहरुआ तिनहूंपे राख्यो न परचो री॥ धर्म धीर कुलकानि कुंचि करितेहि तारौदै दूरि धरचो री। पलक कपाट कठिन उर अंतर इतेहु जतन कछुवै नसरचोरी॥बुधिबिवेकबल सहित सच्यो पचि सुधन अटल कबहूं न टरचो री। लियो चुराइ चितैचित सजनीसूर सो मोतन जात जरचो री॥४८॥ राग अडानो॥ मेरो मनतवतेनफिरचोरी।गयो जुसंग श्यामसुंदरकेतहांतेकवहूं न टरचो री॥जोवनरूपगर्व धन सचिसचि हौं उरमें जु धरचो री।कहाकहौं कुलशीलस कुचसचि सरवस हाथ परचो री॥ विनु देखे मुख मनुहारिको यह निशिदिन रहत अरचो री।सूरदासयावृथा लाजते कछुअ न काज सरचोरी॥४९॥ राग सारंग॥यह सबमेंही पोच करी। श्यामरूपनिरखत नैननि भरि भौंहनि फंद परी॥वे किशोर कमनीय सुगध मैं लुवुधतहूं न डरी। अव छवि गई समाइ हियेमें टारतहू न टरी॥ अति सुख दुख संभ्रम व्याकुलता विधुमुखसनमुखरी।बुधि विवेक बल वचन विवशह्वै आनँद उमँगि भरी॥ यद्यपि शूल सहत सुनि सूर सु अंगहउदैनअरी।

तबपि मुख मुरलिका विलोकति उलटि अनंग जगी ॥ ५० राग आसावरी ॥ सखी री ना जानौं तबहीतें मोको श्याम कहाधौं कीन्हो री।मेरी दृष्टिपरेजादिनतेज्ञानजान हरिलीन्हो री॥द्वारेआइ गए औचकहीं मेंआंगनही ठाढी री । मनमोहनमुख देखिरही तब कामव्यथा तनु वाढी री॥नैन सैन दैदै हरि मोतन कछुएक बात बतायो री । पीतांबर उपरेना करगहिअपने शीशफिरायोरी॥ लोकलाज गुरुजनकी शंका कहत न आवै बानी री।सूरश्याम मेरेआंगन आए जात बहुत पछिता- नी री॥५१॥सोरठ॥ मन हरिलीन्हों कुंवर कन्हाई । जबते श्याम द्वारह्वैनिकसे तबतेरी मोहि घर न सुहाई ॥ मेरे हित आइ भयेहरि ठाढे मोतेकछु न भई री माई । तबहीतें व्याकुल भई डोलति वैरी भए मातपित भाई ॥ मो देखतशिरपाग सँवारीहँसि चितयेछवि कही न जाई। सूरश्यामगिरि- धर वर नागर मेरो मन लगए चोराई॥ ५२॥राग धनाश्री॥प्रेमसहितहरि तेरेआये। कछुसेवातैंकरीकि नाही कीधौं वैसहि उनहिपठाये॥काहेतें हरिपाग सँवारी क्यों पीतांबर शीश फिराये।गुप्तभावतो- सों कछु कीन्हों घर आए काहे बिसराये ॥ अतिही चतुर कहावत राधा बातनहीं हरि क्योंन भुराये । सूर श्यामको बस करि लेती काहेको रहत पछताये ॥५३॥ गुरुजनमें बैठी आये हरि वंदी सबाग्न मिस पाइलागी॥चतुर नायकछु पाग मसकि मनहीमन रीझे गुप्तभेद प्रीति तनजागी॥ हस्तकमल हरि हेरि हृदय धरे भामिनि इत आप कंठलागी। सूरदास अति चतुर नागरी पिय अति नागर दुहुँ कह्यो मनमें सुहाग भागी॥ ५४ ॥ श्याम अचानक आइगये री । मैं बैठीगुरु- जन बिच सजनी देखतही मेरे नैन नयेरी ॥ तबइक बुद्धि करी मैं ऐसी वेंदीसों कर परसकियो री । आपु हसे उत पाग मसकिहरि अंतर्यामीजानिलियो री ॥ लैकर कमल अधरपरसायोदेखि हरषि पुनि हृदय धर्यो री । चरण छुवे दोउ नैन लगाये मैं अपने भुज अंकभर्यो री ॥ ठाढे रहे द्वार अति हित करि तबहीते मन चोरि गयोरी । सूरदास कछु दोष न मेरो उत गुरुजन इत हेतु नयो री॥५५॥करत मोहि कछुवै तो न बनी । हरि आए चितवतहिरही सखिजैसेचित्रधनी॥ अति आनंद हरष आसन उर कमल कुटी अपनी । न्योछावर अंचलको फहरनि अर्धनैन जल धार घनी ॥ गुरुजन लाज कछू न सकी कहि सुनि मन बुधि सजनी ।हृदयहर्षं गि कुचकलशप्र- गट भये टूटी तरकि तनी ॥ अब उपजति अति लाज मनहि मन समुझति निजकरनी। सूरदास मेरी जडमति सगल प्रभु मांझ गुनी ॥ ५६ ॥ सेवा मानि लई हरि तेरी।अब काहे पछिताति राधिका श्याम जात करि फेरी ॥गुरुजनमें भावहि की पूजा और कहा कछु टेरी। मोहन अति सुख पाय गये री चाहति हौ कह मेरी॥तेरे वशभए कुँवर कन्हाईकरतिकहा अवसेरी।सूरश्याम तुमको अतिचाहतनतुम प्यारीहरिकेरी॥ ५७॥ राग आसावरी ॥राधाभाव कियो यह नीको तुम बंदी उन पाग छुआई।ऐसे भेद कहा कोउजानैतुमहीजानौगुप्तदुराई॥तुम जुहार उनको जब कीन्हों तुम- को उनहु जुहार कियो । एकै प्राण देह द्वै कीन्हें तुम वे एकै नहीं वियो ॥ तुमपगपरसिनैनपर राख्यो उनि करकमलनि हृदय धरचो। सूर श्याम हृदय तुम राखे तुमउनको लै कंठभरयो ॥५८॥ राग विहागरो॥ अरीमाईएकगाँवकेबसत एकबारहरि कीन्हो पहिचानि।निशिदिनरहैदरशकी आशा मिले अचानक आनि॥ भाग्य दशा आंगनही आये सुंदरसरबसजानि। नीके करिदेखनहुँनपाए बहिनजाइ कुलकानि। कल न परत हरि दरशन बिन री मोहिपरीयहबानि। सूरजदासबिकानी री हौं नंदसुवनके पानि ॥ ५९ ॥ कहा करों गुरुजन डर मान्यो । आए श्याम कौनहित करिके मैं अपराधिनि कछू न जान्यो ॥ ठाढे श्याम रहे मेरे आंगन तबते मन उन हाथ बिकान्यो । चूकपरी

मोको सबही अंग कहा करों गई भूलि सयान्यो ॥ वे उतहीको गये हरप मन मेरी करनीसमुझि अयान्यो । सूर श्याम सँग मन उठि लाग्यो मोपर वारंवार रिसान्यो ॥ ६० ॥ राग सारंग॥ अचानक आये री हरिमेरे चितै तव होंरही छवि निहारि । कुंडल लोल कपोल रहे कचश्रमजल- सों कर कंजसों टरि ॥ गुरुजन बिच में आँगन ठाढीअतिहितदरशन दियो मया करि सूरदास स्वामी अंतर्यामी वे हँसि चितये सुख करि॥६१॥राग गौरी॥मैं अपने कुलकानिडरानी।कैसेश्याम अचानक आये मैं सेवा नहिं जानी ॥उहे चूक जिय जानि सखी सुनि मन लैगए चुराइ । तनते जात नहीं मैं जान्यो लियो श्याम अपनाइ॥ऐसे ढंग फिरतहरिघरघरभूलकियोअपराध।सूरश्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहौं अनुराध६२॥राग काफी॥मोहीसांवरेसजनी तवते गृह मोको न सोहाई। द्वार अचानकह्वै गये री सुंदर वदन दिखाई ॥ ओढे पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल । भौंहेकांट कटीलियां सखिवश कीन्ही विनमोल॥मोरमुकुटशिर सोहई अरुअधर धरेमुखबैन ।मोहनमूरति हृदय वसै छवि लागिरही दोउनैन ॥ श्यामरूपमें मन गिध्यो भलो बुरो कहो कोइ।सूरदासप्रभु संग गयो मन मनों उनहींकोहोइ॥६३॥ मोहनविनुमननरहै कहा करौं माई री। कोटिभांतिकरि करि रही समुझाई री ॥ लोकलाज कौनकाज मानत यदुराईरी।हृदयते टरतनाहिंमुखसुंदरताईरी॥ ऐसेहै त्रिभंगी नवरंगी सुखदाई री। सूर श्याम विन न रहौं ऐसी वनिआईरी॥६४॥मेरोमननरहै कान्ह विना नैन तपै माई । नवकिशोर श्याम वरन मोहनी लगाई॥वनकीधातुचित्रित तनु मोर चंद्र सोहै । वनमाला लुब्ध भँवर सुर नरमुनि मोहै॥नटवर वपु भेप ललितकटि किंकिनि राजै । मणि कुंडल मकराकृत तरुन तिलक भ्राजै॥ कुटिलकेश अति सुदेश गोरज लपटानी । तडित वसन कुंद दशन देखिहौं भुलानी॥ अरुन श्वेत कुंभ वज्रखचित पदिक शोभा। मणिकौस्तुभकंठ लसत चितवत चित लोभा॥अधर सधर मधुर बोल मुरलीकलगावै। भ्रुवविलास मंदहास गोपिन्ह जिय भावै॥ कमलनैन चितके चैन निरखि मन वारो। प्रेम अंश अरुझि रहो उरते नहिं टारों ॥ गोप भेप धरि सखी री संगसंग डोलौं । तन मन अनुराग भरी मोहन संग बोलौं ॥ नवकिशोर चितके चोर पलकओट न करिहौं। सुभग चरन कमल अरुन अपने उर धरिहौं ॥ असन वसन शयन भवन हरिबिनु न सुहाइ ।बिनु देखेकल न परै कहा करौं माइ ॥ यशोमति सुत सुन्दर तनु निरखि हों लोभानी । हरिदरशन अमल पर्यो लाजन लजानी॥ रूपराशि सुख विलास देखत वनि आवे । सूरप्रभु रूपकी सीवा उपमा नहिं पावे ॥६५॥राग गौरी॥मनमेरो हरि साथ गयो री । द्वारे आय श्याम घन सजनी हँसि मोतनते संग लयो री ॥ ऐसे मिल्यो जाइ मोको तजि मानहुँ उनही पोपि जयो री । सेवा चूकपरी जो मोते मनउनकोधौं कहाकियो री ॥ मोको देखि रिसात हते यह तेरे जिय कछु गर्व भयो री । सूर श्याम छवि अंग भुलानो मन वच कर्म मोहिं छोंडि दयो री ॥ ६६ ॥राग रामकली ॥ मैं मन बहुत भांति समुझायो । कहा करौं दरशनमें अटक्यो बहुरि नहीं घटआयो॥ इन नैननके भेद रूपरस उरमें आनि दुरायो।वर- जतही वेकाज सु पत ज्यों पलट्यो जोन सिधायो ॥ लोक वेद कुल निदरिनिडरह्वै करतआपनो भायो । मुख छवि निरखि वाँधि निशि खग ज्यों हठि अपुनपो वँधायो ॥ हरिको दोप कहा कहि दीजै यह अपने वल धायो । अति विपरीति भईसुनि सूरप्रभु मुरझ्यो वदन जगायो ॥६७॥ रागविलावल॥ मनहि विना कहा करौं सही री। घर तजिकै कोउ रहत पराये मैं तवहीते

फिरत यही री ॥ आइ अचानकही लैगएहरि वाग्वागमें हटकिन्ही री।मेरो कह्यो सुनत काहेको लेगये हरि हरिके उतही री॥ऐसी करत कहूंरी कोऊ कहाकरौं मेंहारि रही री ।सूरश्यामकोयह न बूझिये ढीठ कियो मनको उनहीं री॥६८॥ राग गौरी॥माखनकी चोरी तें सीखे करनलगेअब चितहूकी चोरी । जाके दृष्टिपरे नंदनंदन सोउ फिरति मोहन डोरी डोरी ॥ लोकलाज कुलकानि मेटि करि बन बन डोलति नवलकिशोरी । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि जबते देखे निगम वानि भई भोरी॥६९॥राग आसावरी॥क्यो सुरझाऊं री नंदलालसों अरुझिरह्यो मनमेरो। मोहन मूरति करूँ नेकु न बिसरति कहिकहि हारि रही केमेहु कहत न फेरो ॥ बहुत यतन घेरिघेरि राखति फेरिफेरि रहत सुनत नहिं टेरो । सूरदास प्रभुके संग रसवश भई डोलत निशि वासरकहुँनिरखत पायोन डेरो ॥ ७० ॥ राग विलावल ॥ मैं अपनो मनहरतनजान्यो । कव धौं गयो संग हरिके वह कीधौं पंथ भुलान्यो ॥कीधौं श्याम हटकिहैगरह्योकीधौंआपु रतान्यो। कहेते सुधि करी नमेरी मोपरकहा रिसान्यो ॥ जवहीते हरि ह्यां ह्वै निकरे वैरतबहिते ठान्यो। सूरश्याम सग चलन कह्यो मोहिं कह्यो नहीं तब मान्यो ॥७१॥राग सूही॥ श्याम करतहैमनकी चोरी । कैसे मिलत आनि पहिलेही कहि कहि वतियां भोरी ॥ लोकलाजकी कानि गमाई फिरत गुडीवश डोरी ।ऐसेढगश्याम अब सीखे चोर भयो चितकोरी॥माखनकीचोरीमहिलीन्हों बात रही वह थोरी ।सूरश्याम भए निडर तबहिते गोरस लेत अजोरी॥ ७२ ॥राग गौड़ी॥सुनहु सखी हरि करत न नीकी। आपस्वारथहि मन मोहन पीर नहीं औरनकी॥ वेतो निठुरसदा भजानति बात कहत मनहीकी । कैसे उनहि वश करि पाऊं रिस मेटौं सब जीकी ॥ चितवत नहीं मोहिं सपनेहूं कोजानैउनहीकी।ऐसेमिले सूरकेप्रभुको मनहुँ मोललैलीकी॥७३॥राग आसावरी माई री कृष्ण नाम जबते श्रवण सुन्यो री तबते भूली री भवनवावरीसी भईरी। भरिभरि आवैं नैन चित न रहत चैन वैननिहु सुध्यो भूली मनकी दशा सब औरे ह्वैगई री॥ कोमाताकोनपिता कौन भैनी कौन भ्राता कौन प्राण कौन ज्ञान कौन ध्यान मदन हई री।सूर श्यामजबते परेरीमेरे दृष्टिवामकाम धाम,निशियामलोकलाजकुलकानिनईरी ॥७४॥राग रामकली॥राधेतेंहरिकेरंगराची। तोते चतुर और नहिं कोऊ बात कहौंमे सांची॥ तें उनको मन नहीं चुरायो ऐसी है तू काची। हरितेरोमन अवहि चुरायो प्रथम तुहीहैनाची॥तुम अरुश्याम एकहो दोऊ वाकोनाहीवाची ।सूर श्याम तेरे वश राधा कहति लीक मैं खांची ॥७५॥रागधनाश्री॥तू काहेकोकरति सयानी ।श्याम भए वश पहिले तेरे तब तू उनके हाथ विकानी ॥ वाको नहीं रही नेकहु अब मिली दूध ज्यों पानी।नँदनंदन गिरिधर बहुनायक तू तिनकी पटरानी ॥ तोसी कौन बडिभागिनि राधा यह नीके करि जानी ।सूर श्याम सँगहिलिमिलि खेलोअजहूं रहति वौरानी ॥७६ ॥राग सोरठ ॥ मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई । तबहीते मैं भईबौरानी कहा करो री माई॥ कुटिल अलक भीतर अरुझाने अब निरुवारि न जाई। नैन कटाक्ष चारु अवलोकनि मोतन गये समाई॥ निलजभई कुलकानि गॅवाई कहा,ठगोरी लाई ।वारवार कहति मैं तोको तेरे हिये न आई॥ अपनीसी बुधि मेरी जानति उतनी मैं कहांपाई। सूरश्याम ऐसी गति कीन्ही देह दशा विसराई ॥ ७७ ॥राग रामकली॥ राधा हरि अनुराग भरी । गदगद मुख वाणी परकाशत देह दशा विसरी॥कहति इहै मन हरि हरिलेगये एही परनिपरी । लोक सकुचशंका नहिं मानति श्यामहिरंग ढरी ॥ सखी सखीसों कहति बावरी येहि हमको निदरी।सूर श्याम सेगसदारहतिहै बृझेहुन करी॥७८॥राग सूही विलावल॥

तुम जानति राधाहै छोटी। चतुराई अँग अंग भरीहै पूरण ज्ञानन बुद्धिकी मोटी॥ हमसों सदा दुरावति सोइहि बात कहै मुख चोटी पोटी। कबहुँ श्यामते नेक न बिछुरति किये रहति हमसों हठ ओटी॥नँदनंदनयाहीके वश हैं विवश देखि वँदौछवि चोटी। सूरदास प्रभु वे अति खोटे यह उनहूते अतिही खोटी॥७९॥राग बिलावल॥सखीकहति तू बात गँवारी। याकी सरिकैसेकोउहैहै जाकेवशहैं श्रीवनवारी॥व्रजभीतर इह रूप आगरी व्रतलीन्हों दृढगिरिवर धारी। प्रीति गुप्तहीकीहै नीकी यापर मैं रीझीहौं भारी॥सांची कहौ नेह ऐसोई पाछे मोको दीजो गारी॥सूरदास राधा जो खोटी तौ देखो यह कृष्ण पियारी॥ ८०॥ राग गूजरी॥ सुनहु सखी राधासरिको है। जे हरिहैं रतिपति मनमोहन याको मुख सो जोहै॥ जैसे श्याम नारि यह तैसी सुंदर जोरी सोहै। इह द्वादश वेऊ दशद्वैके व्रज-युवतिन मनमोहै। मैं इनको घटिवढि नहिं जानति भेद करैसो को है। सूर श्याम नागर इह नागरि एक प्राणतनुद्वैहै॥ ८१॥ राग गूजरी॥ सुनि सजनी ए ऐसे लागत। एक प्राण युग तन सुख कारण एको निमिष न त्यागत॥ बिछुरत नहीं संगते दोऊ बैठे सोवत जागत। पूरवनेह आज यह नाहीं मोसों सुनहु अनागत॥ मेरी कही सांचि तुम जानो कीजे आगत स्वागत। सूर श्याम राधावर ऐसे प्रीति हिते अनुरागत॥८२॥ राग जैतश्री॥सखी सखीसों धन्य कहैं। इनको हम ऐसे नहिं जाने व्रजभीतर ए गुप्त रहैं॥ धन्य धन्य तेरी मति साँची हम इनको कछु और कहैं। राधा कान्ह एकहैं दोऊ तो इतनो उपहास सहैं। वे दोऊ एक दूसरी तू है तोहूको सखि श्याम चहैं। सूर श्याम धनि अरु राधा धनि तुहूं धन्य हम वृथा वहैं॥८३॥राग धनाश्री॥ धन्य धन्य यह तेरी बानी। तैं नीके हरिको पहिचानें अब हम तुमको जानी॥ राधा आधा देह श्यामकी तू उनकी बिचवानी। राधाहूते अधिक श्यामसों तेरी प्रीति पुरानी॥ जो हरिकी संगिनि तू नाहीं आदि नेह क्यों मानी। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि यह रसकथा बखानी॥८४॥ रागपूर्वी॥ हे माई राधा मोहन सहज सनेही। सहज रूप गुण सहजलाडिली एकप्राणद्वै देही॥ सहज माधुरी अंग अंगप्रति सहज सदा वन गेही। सूर श्याम श्यामा दोउ सहजहि सहज प्रीति करिलेही॥८५॥ रागआसावरी॥राधा नंदनँदन अनुरागी।भव चिंता हिरदै नहिंएको श्याम रंग रस पागी॥ हरद चून रँग पय पानी ज्यों दुविधा दुहुँकीभागी।तनमन प्राण समर्पण कीन्हों अंगअंग रतिखागी॥ व्रजवनिता अवलोकन करिकरि प्रेम विवश तनत्यागी। सूरदास प्रभुसोंचितलाग्यो सोवततेमनु जागी॥ राग मारू॥गोपी श्यामरंग राची।देह गेह सुधि बिसारीबढीप्रीति सांची॥दुबिधाउरदूरि भई गई मति वह काची। राधाते आपु विवश भई उघरि नाची॥ हरितजिजो और भजे पुहुमि लीक खांची॥मात पिता लोक भीत वाकी नहिं बाची॥ सकुच जबहिं आवै उर बारबार झांची। सूरश्याम पद पराग ताहीमें माची॥ ८६॥ राग मारू॥ श्याम जल सुजल व्रजनारि खोरैं। नदी माला जु जल तट भुजा अति सबल धार रोमावली यमुन भोरैं॥ नयन ठहरात नहिं बहत अति तेजसी तहां गयो चित्त धीरज सँभारैं। मन गयो तहीं आपुन रहीं निकट जल एक एक अंग छवि सुधि बिचारैं। करति अस्नान सब प्रेम बुडकी देहि समुझि जिय होइ भजि तीर आवैं। सूर प्रभु श्याम जलराशि व्रजवासिनी करति अनुमान नहिं पार पावैं॥ ८७॥ ॥ राग बिलावल॥ श्यामरंग राची व्रजनारी। और रंग सब दीन्ही डारी॥ कुसुमरंग गुरुजन पितुमाता। हरितरंग भैनी अरु भ्राता॥ दिनाचारि में सब मिटि जैहैं। श्यामरंग अजरायल रहैं॥उज्ज्वलरंग गोपिका नारी।श्यामरंग गिरिवरके धारी॥ श्यामहिमेंसबरंग बसेरो।

प्रगट बताइ देउ कहि झेरो ॥ अरुणश्वेत सित सुदर तारे। पीतरंग पीनांनगधारे॥ नानारंगश्याम गुणकारी । सूरश्याम रँग गोपकुमारी॥८८॥ राग बिहागरो॥ श्याममलोनेरूपमें अरी मन अरयो। ऐसे हू लटक्यो तहां ते फिरि नहिं मटक्यो बहुत जतन मैं कर्यो ॥ ज्यो ज्यों सेचति त्यों त्यों मगनहोत ऐसी धरनि धरयो । मोसोवेग्करतउनकीआं दरयोजाइ ढरयो॥ज्यों शिवज्ञत दरशन रविपाये जेही गरनि गरयो। सूरदास प्रभुरुपथक्यो मन कुजल पंक परयो॥८९॥ राग देशाष॥निशि दिना इनि नैननिको री नदलालकीलागीरहैलालमाई । मुरलीरसतानभरीश्रवननरी जबतेरी परी कैसेहू टरति नही हृदयते विहारि यदुराई ॥ कहाकहौं तोसोयह सजनीमनमेरो लग्योचोराई॥ सूरश्यामको नाम धरौ पुनि धरयो न जाइ सुधि न रहे तनुमाई ॥९०॥ देख सखी मेरोमन न रहै श्यामविना । अतिहि चतुर जान जाननि मनि वह छविपर में भई लीना ॥ अपनी दशा कहौं मैं कासो वन वन डोलति रैनिदिना । मनतो चोरि लियो पहिलेहीझुरिझुरिहै रही छीना॥वे मोहन मनहरत सहजही हरिले ताको करत हीना । सूरदास रसिक रसीले बहुनायक कहै नाउंजीना ॥ ॥९१॥राग सारंग॥नैननि नींदो गईरी निशिदिन पलपल छतियां लाग्यो रहै धरको।उत मोहन मुख मुरली सुनत सुध्यो नरही इत बैरा घरको ॥ ननदी तान दिये विनुगारी नैकहू रहतिसासु सपनेहूंमें आनि गोउति काननिमे लए रहै मेरे पाईनको खरको।निकसनहू ना पाइये रीकासोदुख कहिये देवहू न पाइयेरी सूरदास प्रभुके तन मेरोज्यो ऐसी भयो जैसो हाथ पाथरतरको॥९२॥ राग सुघराई॥मोहन मुरलीबजाइहौंरिझाई।तिनही मोहीरी होमोही रीसांझ समै देखेकन्हाई॥आनि निकसे मेरे आँगनहू तबते चितवत यहपीर भई री । काकी देह गेह सुधि काके हेहरि कैसे मै ही री ॥ तेरे कहे कहतिहौ बानी मे हरिहाथ बिकानी तबते यकटक जोइरही री । मिलन नहीं नहिं सगते त्यागत कहाकरौ बूझो तोहीरी ॥ सूर श्यामतबते नहिं आये मन जबते हरिलीन्हौं वैतो ऐसेहैं द्रोही री॥राग अडानो॥९३॥व्रजकी खोरिठाढोसाँवरो ढोटानानबहौं मोहीगीहौ मोहीरी। जबते मैं देखे श्यामसुदररी चलि न सकत पगदइहै कामनृप द्रोही री ॥ कौलै आइ कौने चरन चलाइ कौने बहियां गही मोधो कोही री।सूरदास प्रभु देखे सुधि रही नहिं अति बिदेहभईअबमें बूझति तोही री ॥ राग सुघराई॥आंखिन मे बसे जियरे मे बसे हियरे में बसत निशि दिन प्या- रो । मनमें बसे तनमें बसे रसनामे बसे अग अग मे बसत नदवारो ॥ सुधिमें बसे बुधिहूमें बसे उरजनमें बसत पिय प्रेम दुलारो । सूर श्याम बनहू मे बसत घरहूमें बसत सग ज्यो जलरग न होत न्यारो॥९४॥ राग सोरठ॥नँदनदन बिन कलन परै।अति अनुराग भरी युवती सब जहांश्याम तहां चित ढरै ॥भवन गई मन तहाँ न लागै गुरु गुरुजन अति त्रास करै । वे कछु कहै करैं कछु औरै सासु ननँद तिनपर झहरै॥इहै तुमहि पितु मात सिखायो बोल करतिनहिं रिसन जरै। सूरदास प्रभुसे चित अरुझ्योयह समुझो जियज्ञानधरै॥९५॥राग जैतश्री॥ सासुननँद घरत्रासदेखावै। तुम कुलवधु लाज नहिं आवति बार बार यह कहि समुझावै ॥ कबही गई न्हान तुम यमुना यह कहिकहि रिस पावै। राधासो तुम सग करतिहौ व्रज उपहास उडावै॥वेहै बडमहरकी बेटी तो ऐ- सी कहवावै । सुनहुं सूर यह उनही फावै ऐसी कहति डरावै ॥९६॥राग सारग॥हम अहीर व्रजवा- सी लोग।ऐसे चलो हँसै नहिं कोऊ घरमे बैठि करा सुख भोग ॥ दही मही लवनी घृत बंचोसबै करौ अपने उतयोग। शिरपर कस मधुपुरी बैठो छिनकहिमें करिडारै सोग॥फूकि फूकि धरणी पग धारो अब लागी तुमकरन अयोग । सुनहुसूर अबजानोगी तब जब देखै राधा सयोग ॥९७॥

राग धनाश्री॥तुम कुलवधू निलज जिनि ह्वैहो। यह करनी उनहींको छाजै उनके संग न जेहो ॥ राधा कान्ह कथा ब्रज घरघर ऐसे जनि कहवैहो ॥ यह करनी उन नई चलाई तुम जनि हमहिं हँसैहो । तुमही बडे महरकी बेटी कुल जिन नाम धरैहो। सूरश्याम राधाकी महिमा इहै जानि सरमैहो ॥९८॥राग टोडी॥यह सुनिकै हँसि मौन रही री। ब्रज उपहास कान्हराधाको यह महिमा जानी उनही री ॥ जैसी बुद्धि हृदय है इनके तैसीयै मुख बात कही री। रविके तेज उलूक न जानै तरनि सदापूरन नभही री॥ विषकोकीट विषहि रुचि मानै जानै कहा सुधारसही री। सूरदासतिलतेलसुवादीस्वादकहा जानैघृतही री॥९९॥राग सोरठ॥अहिरजातिगोधनकोमानैं।नँदनंदन सुरनरमुनि वंदन तिनकी महिमा क्यो ये जानैं॥धनि राधा उपहास धन्य यह सदा श्यामहीके गुणगानैं। परमपुनीत हृदय अतिनिर्मल वारवार वाजही वखानैं ॥ श्यामकामकी पूरनहारी ताको कुलटीकरिपहिचानैं।सूरदासऐसेलोगनकोनाउँनलीजेहोत विहानैं॥१५००॥राग विहागरो॥विधिना सगति मोहिं यह दीनी। इनको नाम प्रात नहिं लीजे कहा निठुरई कीनी ॥ मनमोहन गोहन विन अवलो मानो विते युगचारि।विमुखनमेंत कवधौ छूटौ कव मिलिहौ बनवारि॥ एकएकदिन विहात कैसेहूँ अब तौ रह्यो न जाइ। सूर श्यामदरशन विन पाये वारवार अकुलाइ॥ १ ॥ विमुखजननिको संग न कीजै। इनके विमुख वचन सुनि श्रवननि दिनदिन देही छीजै ॥ मोको नेक नही ये भावत परवशको कहा कीजै।धिग जीवन ऐसो बहुदिनको श्यामभजन पल जीजै॥ धिग ये घर धिग ये गुरुजनको इनमें नही वसीजे। सूरदासप्रभुअंतर्यामी इहै जानिमन लीजै ॥२॥राग नट॥ राधा श्यामरंग रँगी। रोमरोमनि भिदिगयो सव अंगअंग पगी ॥ प्रीति दै मन लैगए हरि नंदनंदन आप। श्यामरस उनमत्त नागरि दुरत नहि परताप ॥ चली यमुना जाति मारग हृदय इहै विचार। सूर प्रभुको दरश पावै निगम अगम अपार॥३॥राग धनाश्री॥चितको चोर अबहिं जो पाऊं।हृदय कपाट लगाइ जतनकरि अपने मनहिं मनाऊं ॥ जबहि निशंकहोति गुरुजनते तेहि औसर जो आवै। भुजनि धरौ भरि सुदृढ मनोहर बहु दिनको फलपावै ॥ लै राखौ कुचबीच चापिकरि प्रतिदिनको तनुताप विसारौं। सूरदास नँदनंदको गृहगृह डोलनिको श्रम टारौं ॥ ४ ॥ रागबिलावल॥ इतते राधा जाति यमुनतट उतते हरि आवत घरको। कछिकाछिनी भेष नटवरको बीच मिली मुरलीधरको ॥ चितैरही मुखइंदु मनोहर वा छबिपर वारति तनको । दूरिहुतें देखतही जाने प्राणनाथ सुंदर घनको॥ रोम पुलकि गदगद वाणी कहि कहाँजात चोरे मनको। सूरदास प्रभु चोरी सीखे माखनते चितवित धनको ॥ ५ ॥ इह न होइ जैसे माखन चोरी। तववह मुख पहिचानि मानि सुख देती जान हानि हुती थोरी॥उनहि दिननि सुकुँवार हते हरिहौ जानत अपनो मन भोरी। ब्रजबसि बास वडेके ढोटा गोरसकारण कानि न तोरी॥अबभए कुशल किशोर नंदसुत हौं भई सजग समान किशोरी। जात कहाँ बलि बाँह छडाए मूसेमन संपति सव मोरी॥ नखशिखलौ चित चोर सकल अँग चीन्हेपर कत करत मरोरी। एक सुनि सूर हरयो मेरो सर्वस अरु उलटीडोलौ सँगडोरी ॥ ६ ॥ राग गौरी॥ भुजा पकरिठाढे हरि कीन्हें। बाँह मरोरी जाहुगेकैसे मै तुमको नीके करि चीन्हें ॥ माखनचोरी करत रहे तुम अब तौ भए मनचोर। सुनत रही मन चोरतहैं हरि प्रगट लियो मन मोर ॥ ऐसे ढीठ भएतुम डोलत निदरे ब्रजकी नारि। सूरश्याम मोहू निदरौगेदेत प्रेमकीगारि ॥७॥ राग सारंग॥ बहुबलु किनकु जानौ यदुराइ। तुम जोतरकिमोहि अबलापै तौ चलिहौ भुजाछडाइ ॥ कहिअत हौ अति चतुर सकल अँग आवत बहुत

उपाइ । तौ जानौं जो अबके ए ढँग को सँके देते जाइ ॥ सूरदास स्वामी श्रीपतिको भावत अतर भाइ। सहि न सके रतिवचन उलटि हँसि लीनी कठ लगाइ॥ ८ ॥ राग ईमन॥ मै तुमरे गुण जाने श्याम । औरनको मन चोरि रहे हो मेरो मन चोरे किहि काम ॥ वे डरपति तुमको यों काहे मोको जानत वैसी बाम। मै तुमको अवही बांधौगी मोहिं बूझि जैहौ तब धाम॥ मन लैहौ पटुनाई करिहौ राखौ अटकि द्योस अरु याम । सूरश्यामयह कौनभलाई चोररह्यो तहांतुम्हरोनाम ॥९॥ राग कल्याण॥ ब्रजमे ढीठभए तुम डोलत । अब तो श्याम परे फँग मेरे सूधे काहे न बोलत ॥ मन दीजै मर्यादा जैहै रहत चतुरई कीन्हें। दुखकरि देहु कि सुखकरि दीजै अबतौ बनिहै दीन्हे॥ ऐसे ढँग तुम करत कन्हाई जीतिरहे ब्रजगाउँ । सूर आजु बहुते दुख पाये मन कारण पछिताउँ ॥१०॥ राग गुडमल्हार॥ सुन री कुलकीकानि ललनसोमैं झगरो मांडौगी। मेरेइनके कोउ बीचपरौ जिनि अधर दशन खांडौगी ॥ चतुर नाइकसो काम परयोहै कैसे है छांडौगी। सूरदासप्रभु नदनँदनको रसलै डांडौंगी॥११॥ रागकान्हरो॥ चोरीके फल तुमहिंदिखाऊं। कचनखभ डोरकचनकी देखो तुमहिं बँधाऊं ॥ खडो एक अग कछु तुमरो चोरी नाउँ मिटाऊं। जो चाहो सोई सब लैहौ यह कहि डांड मँगाऊं ॥ बीच करन जो आवे कोऊ ताकी सौंह दिवाऊं । सूरश्याम चोरनके राजा बहुरि कहा मे पाऊं ॥१२॥ राग गंधारी॥ रहि री लाज नहि काज आज हरि पाये पकरन चोरी । मूभि मूसे लैगए मन मागन जो मेरे धन होरी ॥ बांधौं कचनखभ कलेवर उभै भुजा दृढ डोरी। चांपौं कठिन कुलिश कुच अतर सँके कौन धौ छोरी ॥ खडौ अधर भूलि रस गोरस हरे न काहूको री। दडौ कामडड परघरको नाउँ न लेइ बहोरी॥ तब कुलकानि आनि भई तिरछी क्षमि अपराध किशोरी । शिर परपानि धराइ सूरडरमकुचि मोचि शिरडोरी॥१३॥ राग बिहागरो ॥ बीचकियो कुल लज्जा आई । सुनि नागरि बकसी यह मोको सन्मुख आए धाई ॥ ककपरी हरिते मे जानी मनले गए चुराई । ठाढे रहे सकुचि तो आगे गरयो वदन दुराई ॥ तुम ही बडे महरकी बेटी काहे गई भुलाई। सूरश्यामहै चोर तुम्हारे छोंडि देहु ठगपाई॥१४॥ राग गौरी॥ कुलकी लाज अकाज कियो। तुम बिन श्याम सोहात नही कछु कहा करौं अति जरत हियो ॥ आपु गुप्त करि राखी मोको मे आयसु शिर मानिलियो । देह गेह सुधि रहत बिसारे तुमते हितु नहिं और बियो ॥ अब मोको चरणनि तर राखो हँसि नँदनदन अंग छियो। सूर श्याम श्रीमुखकी बाणी तुमपै प्यारी बसत जियो ॥ १५ ॥ राग जैतश्री॥ मात पिता अति त्रास दिखावत । भ्राता मारन मोहिं धिरावै देखे मोहि न भावत ॥ जननी कहति बडेकी बेटी तोको लाज न आवत । पिता कहै कैसी कुल उपजी मनहीमन रिस पावत ॥ भैनी देखि देति मोहिं गारी काहे कुलहि लजावति। सूरदास प्रभुसो यह कहिकहि अपनी बिपनिजनावति ॥ १६ ॥ राग बिहागरो॥ सुदर श्यामकमलदल लोचन । बिमुख जननकी सगतिको दुख कबधौं करिहौ मोचन ॥ भवन मोहिं भाठीसो लागत मरति सोचही सोचन । ऐसी गति मेरी तुम आगे करतकहा जिय दोचन॥ धिग वे मातपिता धिग भ्राता देतरहत मोहि खोचन । सूर श्याम मन तुमहिं लुभानो हरदि चूनरँग रोचन ॥१७॥ राग रामकली॥ कुलकी कानि कहांलौ करिहौं। तुम आगे मैकहौ न साची अबकाहू नहिं डरिहौं॥ लोग कुटुंब जगके जे कहियत पेला सबहि निदरिहौं। अब यह दुख सहि जात न मोपे बिमुख वचन सुनि मरिहौं ॥ आपु सुखी तो सब नीके है उनके सुख कहा सरिहौं। सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणि अबके हौं कछु लरिहौं ॥ १८ ॥ राग कान्हरो॥ प्राणनाथहोमेरी सुरतिक्यो न करो। मैजो दुख

पावतिहौ अपने तन मन मेरी सुरति करौ। दीनदयालु कृपा करो मोको काम द्वंद्व दुख और विरह हरौ॥तुम बहुवरनि रवन में जानति याहीके धोखे मोसों काहेको लरौ। सूरदास स्वामी तुमहो अंतर्यामी मनसा वाचा ध्यान तुमसो धरौ॥ १९ ॥राग रामकली॥हौ या मायाही लागी तुम कततोरत। मेरो ज्यो तिहारे चरननिही लाग्यो धीरज क्यों रहै रावरे मुख मोरत। को ले बनाइ बातैं मिलवति तुम आगे सो किन आइ मोसों अब जोरत। सूर श्याम पिय मेरे तौ तुमहि जिय तुम विनु देखे मेरो हियो कोरत॥२०॥रागबिलावल॥सुनहु श्याम मेरी एक बात। हरिप्यारीके मुखतन चितवत मनहीं मनहु सिहात॥ कहा कहति वृषभानुनंदिनी बूझतहैं मुसुकात। कनकवरन सुंदरी राधिका कटि कृश कोमलगात॥ तुमही मेरे प्राण जिवन धन अहो चंद्र तुअ भ्रात। सुनहु सूर जो कहति रही तुम कहौ न कहा लजात॥ २१ ॥राग गुंड॥ नागरी श्यामसों कहत बानी। सुनहु गिरिधर नवल शीशश्रीखंडधर जयति सुर नागरस सहस बानी॥ रुद्रपति छुद्रपति लोकपति वोकपति धरनिपति गगनपति अगम बानी। अखिल ब्रह्मांडपति तिहुँभुवनअधिपति नीरपति पवनपति अगम बानी॥ सिंहके शरन जंबुक त्रास करे अब कृष्ण राधा एक जग बतानी॥सूरप्रभु श्याम तुवनामकरुणाधामकरौमनकाम सुनिदीनवानी॥२२॥राग गुंडमलार॥विहँसि राधाकृष्णअंक लीनी।अधरसों अधरजोरि नैनमोनैन मिलि हृदेसों हृदय लगि हरप कीन्ही॥कंठ भुजजोरि नारि उछंगलीन्ही भवन दुखटारि सुख दियो भारी।हरषि बोले श्यामकुंजवन घन धाम तहां हमतुम संग मिलेप्यारी॥ जाहु गृह परमधन हमहु जैहे सदन आइ कहुँपास मोहि सेन देहौ।सूर यहभाव दे तुरतही गमन करि कुंजगृह सदनतुम जाइ रैहौ॥२३॥राग गुंडमलार॥यह सुनत नागरीमाथनायो। श्याम रसवश भरे मदनजियमें डरे सुंदरीबातको भेद पायो।खरे ब्रजयमुनविच दुहुँनि मन अति सकुच और कछु बने नहिंबुद्धिठानी। तबहि ब्रजनारिआवतदेखियमुनाते एकब्रजहिते जु राधा लजानी॥ श्याम हँसिके चले तुरत ग्वालनि मिले कहां सब रहे कहि हांक दीन्हों। भाव यह करि गए सूरप्रभु गुन नए नागरी रसिकजियजानिलीन्हो॥२४॥ राग टोडी ॥ राधा हरिकेभावहि जान्यो। इह बात कैहौ इन आगे मनही मन अनुमान्यो॥उन देखी राधा मग ठाढी श्याम पठाए टारि। बूझतही कछु बुद्धि रचैगी बडी चतुर यह नारि॥ इत वृषभानुसुता मन सोचति मोहि देखि हरिसंग। सूर अबहिं बातनि करि धरिहैं जानति इनके रंग २५॥ राग गुंडमलार ॥ चतुर वर नागरी बुद्धि ठानी। अबहि मोहिं बूझिहैं इनहि कैहौ कहा श्याम सँग आजु मोहिं प्रगटजानी॥ भावकरि गए हरि ग्वाल बूझत रहे जानि जियलई अति चतुर रासी। यह रची बुद्धि एक कहा ए कहैं मोहिं मेरेमन सबै घोपवासी॥उतहुँकीइतहुँकी सबै जुरिएकठी कहति राधाकहां जाति है री।सूरप्रभुको अबहिं देखे हम तेरे ढिग कहां गए तिनहिंपछितातिहैरी॥२६॥ राग गूजरी ॥कान्हकहाबूझत है तुमको। ह्यांहीते लखि लीन्ही तबही कहा दुरावति हमको॥मन लेगए चुराइ तुम्हारो सो अपनो तुम पायो। अपनो काज सारि तुम लीन्हों हम देखतहि पठायो॥सदा चतुरई फबती नाही अतिहीं निझरि रहीहो। सूर श्यामधौ कहां रहतहैं यह कहिकहियुतहीहो ॥ २७ ॥ राग अलहिया ॥ कहति रही तब राधिकाजब हरिसग पेखो। बेसरि लीज्यो छीनिकै मुख तन कहा देखो॥ देही बेसरि की नहीं की लेहिं छडाइ। चतुराई प्रगटी अबै ऐसीही माइ॥ बार बार नागरि हमे तरुनी वेहानी। ऐसेहि बेसरि लेहुगी सब भई अयानी॥ हम मूरख तुम चतुरहो कछु लाजन आवै। सूर श्याम सँग नहीं रही अब कहा दुरावै॥ २८॥ राग सोरठ॥ इहै कहन मोको तुम आई। इतते ये

उतते तुम सब मिलि काहे ऐसी धाई॥ बेसरि एक लेहुगी को को पीतांबर न देखावहु॥बेसरि अरु पीतांबर लै तब घर घर जाइ सुनावहु॥ तारी एक बजत की दोऊ इतनोइ ज्ञान बिचारो। सुनहु सूर ए बेसरि लैहैं जानो ज्ञान तुम्हारो॥२९॥रागजयतश्री॥सुनि राधा तोसों हम हारी। तेरे चरित नही कोइ जानैं बशकीन्हों गिरिधारी॥अबहीं कान्ह टारिकरि पठए धनि तेरी महतारी। अंग अंग रचि कपट चतुरई विधिना आपु सँवारी॥अबहीं प्रगट दुहुँनि हम देख्यो जानतिहैं मोगारी। सूर श्यामके यह बुधि नाहीं जितनी है तो वारी॥३०॥रागकन्हरा॥श्याम भले अरु तुमहु भली हो। बेसरि छीनतिहौ बेकाजहिं जाहु नयरहि चली हो॥ कैसे दौरिपरी मेरेपर मानहुँ संग मिली हो। और भई सब बनकी बेली आपुन कमलकली हो॥ तब कहती गहि बाँह दुहुँनकी जो तुम चतुर अली हो।सूरदास राधा गुणआगरि नागरि नारिछलीहो॥३१॥अलहिया राग बिलावल॥अब हमसों सांचीकहो वृषभानुदुलारी।कछु तो तोसों कहतहैं ठाढे गिरिधारी॥हाहाहमसों सोइ कहोदेहो जिनि गारी। हमको देखतही गए उत ग्वाल हंकारी॥ भेदकरै जो लाडिली तोहि सौंह हमारी।तूठाढी काहे रही सग मेरी प्यारी॥सहज होइ तू कहिअबै उरतेरिस टारी।सूर श्यामकी भावती कहै कहीं कहा री॥ ३२॥रागधर्ौ ॥मैं यमुना तन जात सही री।ब्रजते आवत देखि सखिनको इन कारण ह्यां परखि रही री॥उतते आइगए हरि तिरछे मैं तुमहीतन चितै रहीरी। बूझनलगे कान्ह ग्वालन-को तुमतो देखे उनहि नहीं री॥कछु उनसों बोली नहि सन्मुख नाहि तहां कछु बैन कहीरी। सूर श्याम गए ग्वालनि टेरत ना जानौं तुम कहागही री॥३३॥रागसोरठ॥तुम मेरी बेसरिकोधाई।सकुचि गई सुनिसुनि यह बानीतरुनिन राधा भले लजाई॥यह तौ बात लगति कछु सांची हमपर न्याइ रिसाई। टेरत कान्ह गए ग्वालनको श्रवन परी ध्वनि आई॥बेसरि नाउं लेत सरमानी तब राधा झहरानी।सूरदास ब्रजनारि मनहि मन यह गुनिगुनि पछितानी॥३४॥ राग गजरी॥राधा तू अति-हीहै भोरी। झूठेहि लोग उठावत घर घर हम जान्यो अति लोरी॥कंठ लगाइ लई रिस छांडो चूक परी हम बोरी। तुम निर्मल गंगाजलहूते दुरत नहीं यह चोरी॥ घर, जेहौं की यमुना जेहौं हम आवैं सँगगोरी।सूरदासप्रभुप्यारीभुरी राधाचतुर दिननकी थोरी॥ ३५॥रागआसावरी॥ अहो सखी तुम ऐसी हो। अबलौ तुम कुलटी करि जानति मोको गीसब तैसीहो॥ अपने मनजैसीतैसेइ सब मोहु जनावत तैसी हो। जोरीभलीबनैगीहरिसोंत्यांहनिहारो कैसी हो॥अबलागीमोकोदुलरावन प्रेमकरतिढरिबैसीहो।सुनहु सूर तुमरैछिनछिन मति बडीप्रेमकी गैसी हो॥३६॥॥ राग सोरठ॥हमति नारि सब घरहि चली।हम जानीराधाहैखोटीहमखोटी राधिका भली॥इतते युवति जाति यमुना जे निनको मगमें परखिरही। श्याम कहूते आइ कढे ह्यां चले गए उत हेरतही॥ इतनीतबहि नहीं यह जानी झूठेहीसबआनिगही।सूरश्यामअपनेरँगआयेहमयाको नहि भली कही॥३७॥रागबिलावल राधा श्याम सनेहिनी हरि राधा नेही। राधा हरिके तन बसे हरि राधा देही॥ राधा हरिके नैनमें हरि राधा नैननि। कुंजभवन रति युद्धके जोरति बल मैननि॥ और न काहूको रुचै घरघर गए दोऊ। मात पिता सतिभाइसों यह जानै न कोऊ।कैसेहु करि करि दिन गयो निशि कटत न क्योंहू। दोउ रस बिरह मगन भए निशि भई अगोंहू॥ विरह सरोवर बूडई अंधकार सिवार। सुधि अवलंबन टकही कहुँ वार न पार॥ तमचुर टेरि पुकारई बूडे जिनि कोई॥ सूरप्रात नवका मिल्यो आनन्द मन ,,इ॥३८॥राग धनाश्री॥मन मृग बेध्यो मोहन नैनबानसों।गूढ भावकीसैन अचानक तकितान्यो भ्रुकुटी कमानसो॥ प्रथम नादबल घेरि निकट लै मुरली सप्तकसुर संधान-

सों।पाछे बंक चितै मधुरे हँसि घात किये उलटे सुठानसों॥सूर सुमार बिथा या तनुकी घटतनहीं औषधी आन सों॥ह्वैहैसुख तबहीं उरअंतर आलिंगन गिरिधर सुजानसों॥३९॥राग बिलावल ॥ कान्ह उठे अति प्रातही तलबेली लागी । प्रिया प्रेमके रस भरे रति अंतर खागी॥श्याम उठत अवलोकिके जननी तब जागी । सुन्दर वदन विलोकिके अंग अंग अनुरागी ॥ माता पूँछति सुअनको बलि गई मेरे बारे । कहा आजु अचरज कियो तुम उठे सवारे ॥ झारी जल दँतवन दियो छबि परत न बारयो । उत्तम जलले प्रेमसों सुत वदन पखारयो॥करी मुखारी अतुरई नागरि रसछाके । सूर श्याम ऐसीदशा त्रिभुवन वश जाके॥४०॥राग बिलावल॥उत वृषभानुसुता उठी वह भाव बिचारे । रैनि बिहानी कठिनसों मन्मथ बल भारे॥ग्रीव मुतसरी तोरिकै अचरासों बांध्यो। इहै बहानो करिलियो हरि मन अनुराध्यो॥ जननी उठी अकुलाइके क्यों राधा जागी। कहां चली उठि भोरही सोवै न सभागी ॥ अब जननी सोऊं नहीं रवि किरनि प्रकाशी॥तूहु उठेकाहे नहीं जागे ब्रजवासी ॥ आपु उठी आँगन गई फिरि घरही आई। कबधौं मिलिहैं श्यामको पल रह्यो न जाई ॥ फिरि फिरि अजिरहि भवनही तलबेली लागी॥सूर श्यामके रसभरी राधा अनुरागी ॥ ॥४१॥ राग गुडमलार ॥ सुतासों कहति वृषभानु घरनी । कहा तू राधिका भोरते फिरति है तेरी गति मोपे नहिं जाति बरनी॥तोरि मोतिसरी तब गुप्त करि धरयो कहुँ एहि मिसि सकुचि रही मुख न बोले। मनहु खंजन चपल चन्द फंदा परयो उडत नहिं बनत इत उतहि डोले ॥ कहा तेरी प्रकृति परी धौं लाडिली अबहिते कहां तू जाहिगी री । सूर कहे जननि बोले नहीं आज तू परुसि धरिहौं खाइगी री ॥४२॥राग नट॥ जननी पुनि पुनि ग्रीव निहारे । देखों नहीं मुतसरी माला सो जिनि कतहूं डारे॥ बोले नहीं बात यह सुनि रही मनलागी मुसफान। अबही मोको खीझि पठैहै पनिहै काको जान ॥ भली बुद्धि मेरे चित आई कृष्णप्रीति है साँची । सूरदास राधिका नागरी नागरके रँगराँची ॥ ४३ ॥राग सोरठ॥ जननी अतिहि भई रिसहाई। बार बार कहै कुँवरि राधिका मोतिसरी कहां गमाई ॥ बूझेते तोहि ज्वाब न आवै कहा रही अरगाई ।चौसरहार अमोल गरेको देहु न मेरी माई ॥ कालिहिते रीतो गर तेरो डारि कहूँ तू आई। सुनहु सूर माता रिस देखतराधा हँसति डेराई ॥ ४४॥ राग बिलावल॥सुन रीमैंयाकालही मोतिसरीगँवाई। सखिन मिले यमुना गई धौं उनहि चुराई ॥ कीधौं जलहीमें गईयह सुधिनहिं मेरे । तबते मैं पछितातिहौं कहति न डर तेरे ॥ पलकनहीं निशि कहुँ लगी मोहिशपथ रीतेरी । येहि डरते मैं आजुही अति उठी सवेरी॥ महरि सुनत चकृत भई मुख ज्वाब न आवै । सूर राधिका गुनभरी कोउ पार न पावै॥४५॥राग गुंडमलार॥क्रोध करि सुतासों कहति माता । तोहिं बरजत मैं री अचगरी रिसपरी गर्व गंजन नामहै बिधाता॥तेरो दोष नहीं भ्रमती तू जहीं तहीं नदी डोंगर बन बन पात पाता । मातपिता लोककी कानि मानै नहीं निलजभई रहतिनहींलाज गाता ॥ भली नहिं उन करी शीशतोको धरी जगतमें सुता तू महरताता। बात सुनिहैश्रवण भई बिनही भवन सूर डारैमारि आजु भ्राता॥४६॥राग धनाश्री॥जाहु तहीं मोतिसरी गमाई।तबहींसों घर पैठन पैहौ अब ऐसे ढँग आई॥जो बरजों आपुन सोई करै देखो री गुन माई। एकएक नग सतसत दामनिके लाख टका दे ल्याई ॥ जाके हाथ परयो सो देहै घर बैठे निधि पाई ।सूरसुनत री कुँवरि राधिका तोको नहीं भलाई॥ ४७ ॥राग गौडी॥भरि भरि नैन लेतिहै माता । मुखते कछु आवै नहिं बाता ॥ रीतो ग्रीव निहारत जबही । हियो उमँगिआवतहै तबही ॥ मोतिसरीते

मुख परम विराजै। मानों शशि पारसविच भ्राजै ॥ मोतिसरी माला कहां गँवाई। जीव विना करिहै वह भाई॥जायौ देखि कहूंधौं पावै। सूर जोग्कर विधिहि मनावै॥४८॥रागगुंडमलार ॥कहा वह मोतिसरी जो गँवाई री। वावासों और लेहौं मँगाई री॥वे कहा करैंगी सुनि रीसरी।तादिना तूहीधौं कितिक भाषै री ॥ नैन भरिलेति कह और नाहीं री। छोर मोतिसरीको मोहिं रिभा-ही री॥संदूकन भरिधरे ते न खोलै री।कहा मोसों खीझरखोलै री॥सुना वृषभानुकी हरपमनहीरी। सूर प्रभु मैन दे बोले वनही री॥४९॥रागगौरी॥सुनि राधा अब तोहि न पत्यैहौं। और हार चौकी हमेल अब तेरे कंठ न नैहौं॥लाख टकाकी हानि करी तैं मो अब तोसों लैहौं।हार विना ल्याये लरिहो री घर नहि पैठन देहौं ॥ जब देखों ग्रीवहे मोतिसरी तबहीं तो सचुपैहौ। नातर सूर जनमभरि तेरो नाउँ नही मुख लैहौं ॥ ५० ॥ राग कल्याण ॥ सुनि री राधा अतिलड़बौरी यमुन गई जब सग कोन ही। बूझति नहीं जाइ अपनिनको न्हातरही जब जोन जोन ही ॥ काको नाउँ धरौं तो आगे ललिता चंद्रावली नहीं नहीं। बहुत रहीं संग सखी सहेली कहीं कहा मैं सैन सेनहीं ॥ देखौंजाइ यमुनतटहीमें जहां धरिके मैं न्हात रही ही। सूरजाइ बूझौं धौंवाको ब्रजयुवती एक देखिरही ही॥५१॥राग कल्याण॥जैहै कहां मोतिसरी मेरी।अब सुधि भई लई वाहीने हँसत चली वृषभानुकिशोरी ॥ अबही मैं लीन्हे आवतिहौं मेरे संग आवै जिनिकोरी। देखौंधौं कह करिहै वाको बडे लोग सीखतहैं चोरी॥ मोको आजु अबेर लागिहै ढूंढ़ंगी ब्रज घर घर खोरी। सूर चली निधरकहै सबसों चतुर राधिका बातन भोरी ॥ ५२ ॥ नंदसुअन बारबार रवनीपथ जोहै री।लोचन हरि करि चकोर राधामुख चंद ओर देखत नहि तिमिर भार मनही मन मोहै री ॥ नैना दोउ भृगरूप वदन कमल शरदरूप तरनिको प्रकाश मिलन बिनाचपल डोलै री। लोचन मृग सुभग जोर राग रूप भए भौंर भौंह धनुष शर कटाक्ष सुगति व्याध तोलै री ॥ कीधौं एक बच्छ चारु प्यारी मुख रूप सार श्याम देखि रीझे मन इहै सांच मानी।सूरश्याम सुखदधाम राधाहेजहिनामआतुरपियजानिगवनप्यारीअतुरानी॥५३॥राग देवगंधार॥श्यामअतिराधाविरहभ-रे। कबहु सदन कबहुं आंगनही कबहु पौरि खरे॥जननी आतुर करति रसोई देखि देखिहरि जात। कहा अबेर करति तू अब री भूख लगी अतिमात ॥ मैं बलिजाउं श्यामघन सुंदर अब बैठौ तुम आई। सूर सखा सँग सबै बोलावहु हलधर नही बताई॥५४॥राग बिलावल ॥महरि कह्यो नँदला-डिले सँग सखा बोलावहु। करैं कलेऊ आइकैहलधरहुबोलावहु ॥ हलधर ल्योबोलाइकै मोहन करि आदर। दाऊजी चलिजैइये यह कहि मनसादर॥कान्ह जाइतुम जेवहू मोको रुचिनाहीं। सखा संगहरिलैगएबैठे एकठाही ॥ षटरस व्यंजन को गनै बहुभांति रसोई। सरस कनिक वेसन मिलै रुचिरोटी पोई ॥ प्रेमसहित परुसन लगी हलधरकी माता।ग्वाल सखा सब जोरिकै बैठे नँदताता ॥ सखामवै जेंवन लगे हरि आयसु दीन्हों। सूरदासप्रभु आपुहुकरजोरहि लीन्हों ॥५५॥राग आसावरी॥नंदमहरघरके पिछवारे राधा आइ बतानीहो। मनो आंबदल मोरदेखिके कुहकि कोकिला बानीहो ॥ झठेहिनामलेत ललिताको काहे जाहु परानीहो। वृंदावन मग जाति अकेली शिरलिये दही मथानीहो ॥ मैं बैठी परखति ह्यां रैहों श्याम तबहिते जानीहो।कोककला गुणआगरिनागरिसुरचतुरई ठानीहो॥५६॥राग रामकली॥श्यामसखाजेंवतहीछांडि। करकोकौरडारि पनवारे नागर आपु चले अति चाडि ॥ चकृतभई देखत जननीदोउ चकृतभए सबग्वाल। अति आतुर तुम चले कहांहो हमहि कहो गोपाल ॥ अबही एक सखा यह कहि गयो गाइ रही

वन व्याइ। सुनहु सूर मैं जेवन बैठो वह सुधि गई भुलाइ॥५७॥रागगौरी॥ धौरी मेरी गाइ बियानी। सखन कह्यो तुम जेंवहु बैठे श्याम चतुरई ठानी॥गाइ नही ह्यां बछरा नाही वहँहैराधारानी॥मनमें हँसत मनही मन कहि कहि ऐसे गुणनि निधानी॥जननी भेद नही कछु जाने बारबार अकुलानी। सूर श्याम भूखो उठि धायो मेरे न गाइ बियानी ॥५८॥रागकल्याण॥ सैनदै नारिगईबनधामको। तबहि करकौर दियो डारिनहिं रहिसकै ग्वाल जेवत तजे मोहि गई श्यामको ॥ चछे अकुलाइ बनधाइ ब्यानी गाय देखिहो जाइमनहरप कीन्हो। प्रिया निरखति पथ मिले कबहरिकितगयेयहि अंतर हसि अक लीन्हो॥अतिहि सुखपाइ अतुराइ मिलेधाइ दोउ मनो अति रक नव निधिपाई सूर प्रभुकी प्रिया राधिका अति नवल नवल नदलालके मनहि भाई ॥ ५९ ॥रागधनाश्री ॥ पिछ- वारे ह्वै बोलि सुनायो । कमलनयन हरि करत कलेऊ करनाहिन आतन लायो ॥ गाइ एक बन ब्याइ रहीहै येहि मिस आतुर उठिधायो । बेनु न कियो लकुट नहिं लीन्हों हरबराइ कोउ सखन बोलायो ॥ चौंकि परे चकृत ह्वै जित कित सत्य आहिकी सपन भयो ज्ञायो । फूले फिरत शकना मानत मानहु सुधा किरनि छबि छायो ॥ मिलि बैठे सकेत लतातर कियो सबै जितनो मनभायो। सूरदास सुदरी सयानी उलटि अक गिरिधर पर नायो॥६०॥राग देवगंधार॥दोऊ राजत रति रण- धीर । महासुभट प्रगटे भूतल वृपभानु सुता बलबीर ॥ भौहैं धनुप चढाइ परस्पर सजे कवच तनुचीर ।गुण सधान निमेप घटत नहिं छुटे कटाक्षनितीर ॥ नखनेजा आकृत उरलागे नेक न मानत पीर । मुरली धरनि डारि आयुधले गहे सुभुज भटभीर॥ प्रेम समुद्र छांडि मर्यादा उमँगि मिले तजि तीर। करत बिहार दुहू दिशते मानो सीचत सुधा शरीर ॥ अति बल जोबन धाइ रुचिर रचि बदन मिली श्रमनीर । सूरदास स्वामी अरु प्यारी बिहरत कुज कुटीर ॥६१॥ राग कान्हरो॥नवल निकुज नवलनवला मिलि नवलनिकेतनि रुचिर बनाये। बिलसत बिपिन बिलास बिबिधवर बारिजबदन बिकच सचुपाये। लागत चद्रमयूप सुतौ तनु लताभवन रध्रनि मग आये॥ मनहुँ मदननछीपर हिमकर सींचत सुधाधार मत नाये ॥ सुनि सुनि सूचति श्रवन सुदरी मौन किये मोदति मनलाये। सूरसखीराधा माधौ मिलि क्रीडतहैं रतिपतिहि लजाये॥६२॥राग कल्याण ॥ हरपि पिय प्रेम तिय अक लीन्हों। पिये बिनरसनकरि उलटिधरि भुजनभरि सुरति रति पूर प्रति निबलकीन्हो॥आपने कर नखनिअलक कुसारही कबहुँ बाँधेअतिहि लगतलोभा।कबहुँमुख मो चुबन देत हरप ह्वै अधर भरि दशन वह उनहि शोभा॥ बहुरि उपज्यो काम राधिकापति श्याम मगन रस ताम नहिं तनु सँभारैं। सूर प्रभु नवलनवला नवलकुजगृह अन्त नहिं लहत दोउ गति बिहारे ॥६३॥राग नट॥नागर श्याम नागरी नारि।सुरतिरतिरणजीत दोऊ अगमन्मथधारि॥श्याम तनु घन नील मानो तडित तन सुकुमारि । मनो मर्कत कनक सयुत खच्यो काम सँवारि ॥ कोकगुन करि कुशल श्यामा उत कुशलनन्दलाल ।सूर श्यामअनगनायक बिबशकीन्होबाल ॥ ॥६४॥राग मलार॥ उलहरि आयो शीतल बूँद पवन पुरवाई । बाढे द्रुम सघन बन दोउहो चहुँ ओर घटा छाई॥अनमने भए कन्हाई भीजत देखि राधिका माधव कारी कामरि ओढाई॥अति दरेरकी झरेर टपकत सबअँबराई॥कांपत तनु प्रियाके पिय हँसिकै ग्रीवा लगाई । भए एक ठौर सूर श्याम श्यामा भरि कोर अरस परस रीझत उपरे नाहीमे समाई॥६५॥राग मलार॥ दीजैकान्ह काँधेहूको कवर । नान्ही नान्ही बूँदन बरपन लागी भीजत कुसुभी अबर ॥ बार बार अकुलाइ राधिका देखि मेव आडबर।हँसि हँसि रीझि बैठि रहे दोऊ ओढि सुभग पीताम्बर॥शिवसनका-

दिक नारद शारद अंत न पावें तुम्बर। सूर श्याम गतिलखि न परत कछु खात ग्वालिन तजि सवर॥ ६६॥ रागगौरी॥ सुरति अंत बैठे बनवारी। प्यारी नैन जुरत नहिं सन्मुख सकुचि ईसन गिरिधारी॥ वसन सँभारि तन लेत गये दोउ आनँद उर न समाइ। चितवत दुरिदुरि नैन लजौंही सो छबि बरनि न जाइ॥ नागरि अंग मरगजी सारी कान्ह मरगजे अंग। सूरज प्रभु प्यारी बश कीन्ही हार मान रति रंग॥ ६७॥ राग सोरठ॥ रीझे श्याम नागरी छबिपर। प्यारी एक अंग पर अटकी यह गति भई परस्पर॥ देह दशाकी सुधि नहिं काहू नैन नैन मिलि अटके। इन्दीवर राजीव कमल पर युग खंजन जनु लटके॥ चकृत भए तनुकी सुधि आई बनही में भई राति। सूर श्याम श्यामा विहार करि सो छबिकी एक भांति॥ ६८॥ राग आसावरी॥ कान्ह कह्यो बन रैनि न कीजे सुनहु राधिका प्यारी हो। अति हितसों उरलाइ कह्यो अब भवन आपने जारी हो॥ मात पिता जिय जान न कोई गुप्त प्रीति रस भारी हो। करते कौर डारि मैं आयो देखत दोउ महतारी हो॥ तुम जो प्यारी मोही लागत चन्द्र चकोर कहारी हो। सूरदास स्वामी इन बातन नागरिरिझई भारी हो॥ ६९॥ राग कल्याण॥ प्यारी उठि पियके उर लागी। आलस अंग लटकि लट आई देखि श्याम बड़भागी॥ सुरति मान निशि बीती मानो हँसनि प्रात भयो जागी। अति सुख कंठ लगाइ लई हरि अरस परस अनुरागी॥ नवतनमें घनवेली दामिनि सहज भेंटि मिलि पागी। सूरदास प्रभुको अंकम भरि कामद्वन्द्व तनु त्यागी॥ ७०॥ राग गौरी॥ कहा करौं पग चलत न घरको। नैन निठुर जिन देखे जात न लुब्धे अरुन अधरको॥ श्रवण कहत वे वचन सुने नहिं रिस पावत मो परको। मन अटक्यो रस मधुर हँसनि पर डरत न काहू डरको॥ इंद्री अंग अंग अरुझानी श्यामरंग नटवरको। सुनहु सूर प्रभु रही अकेली कहा करौं सुंदर वरको॥ ७१॥ श्याम अपनी चितवनिरंजो अरु मुखकी मुसकानि। तुम्हरे तनक सहजके कारन सहियत सरबस हानि॥ इजे विजे दोउ आपुसमें निरये विधना आनि। नियमान सबही इन देखन वशकरबेकी बानि॥ आपुनही डहकाय अपुनपो कहियत कहा नखानि। सूर सुगधरैंबाइ गाठिको रही थीं रईमानि॥ ७२॥ राग विहागरो॥ अतिहित श्याम बोले बैन। तुम वदन देखे बिना ये तृप्तहोत न नैन॥ पलक नहिं चितते टरति तुम प्राणवल्लभ नारि। सुनति श्रवननि वचन अमृत हरष अंतर भारि॥ मात पित अवसेर करिहैं गवन कीजे गेह। सूर प्रभु प्रिय तिया आगे प्रगटिप्रेम नेह॥ ७३॥ श्याम प्रगट कीन्हो अनुराग। अति आनंद मनहि मन नागरि वदति आपने भाग॥ सुदरघन उत व्रजहि सिधारे इतहि गमन करि नारि। दंपति नैन रहे दोउ भरि भरि गये सुरति रति सारि॥ जननी मन अवसेर करतिही हरि पहुँचे तेहि काल। सूर श्यामको मात अंकभरि कहति जाउँ बलिलाल॥ ७४॥ मैं बलि जाऊं कन्हैयाकी। करते कौन डारि उठिधायो व्यात सुनी बनगैयाकी॥ धौरी गाइ आपनी जानी उपजति प्रीति लवैयाकी। तातो जल समोइ पग धोवति श्याम देखि हित मैयाकी॥ जो अनुराग यशोदाके उर मुखकी कहति नन्हैयाकी। यह सुख सूर और कहूँ नाही सौंह करत बलभैयाकी॥ ७५॥ राग ईमन॥ कान्ह प्यारे वारने जाऊं श्याम सुंदर मूरति पर। छबिसो छबीली लटकि वदनपर॥ चन्द्रिकाकी लटकनि अतिहि विराजत मुरली सुभग करेकर। सुदरनैनविशाल भौंहसुरचापमनो तिलकविराजित ललित भालपर। सूरश्याम सरस अतिवानक बन्यो बनमाला अतिही उर राजत कटि तट सोहत पीतांबर॥ ७६॥ राग विहागरो॥ वह तो मेरी गाइ न होई। सुन मैया मैं वृथा भरम्यो बन

जो देखों नेनन भरिजोई ॥ वृंदावन ढूँढ्यो यमुनातट देख्यो वन डोंगरी मंझारी।सखा संगकोउ नहीं अकेलो कांधे कामरि कर लकुटधारी ॥ वहतौ धेनु और काहूकी युवती एक मिलीधौं कोन। सूर संग मेरे वह आई मोको उहि पहुँचायो भौन ॥ ७७॥ रागरामकली ॥ राधा अतिही चतुर प्रवीन । कृष्णको सुख दे चली हँसि हंसगति कटिछीन ॥ हारके मिस इहां आई श्याम मणिके काज।भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रीव्रजराज॥गाँठि आँचर छोरिके मोतसरी लीन्ही हाथ । सखी आवत देखि राधा लई ताको साथ॥युवति बूझति कहां नागरि निशि गई एकयाम। सूर ब्यौरो कहि सुनायो मैं गई तेहि काम॥७८॥ राग कान्हरो॥ ऐसी री निधरक तू राधा । व्रज घरघर बनबन डोली तू नहीं कियो कहुँ बाधा ॥ मोको संग बोलि तू लेती करनीकरी अगाधा। प्रातहिते तूअबआवतिहै रैनि याम लगि आधा॥पायो हार किधौ पुनिनाहींदेखौंरीमोहिं साधा । आंचर हेरिग्रीव देखरायो दामन मोलउपाधा ॥ मनमन कहति बात यह मिलवति गई श्याम अवराधा॥सूर सखी लखिलीनी ताको यहतौहै कछु दुविदाधा॥७९॥राग धनाश्री॥कहिराधाकिनहार चोरायो । व्रजयुवतिनि सबहिन में जानति घरघर लैले नाम बतायो ॥ श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमदा नारी।सुखमा शीला अवधा नंदा वृंदा यमुना सारी॥कमला तारा विमला चंदा चंद्रावलि सुकुमारी ।अमला अवला कंजा मुकुता हीरा नीला प्यारी॥ सुमना बहुला चंपा जुहि-ला ज्ञाना भाना भाऊ।प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगा हरपा जाऊ॥दर्वा रंभा कृष्णा ध्याना मैना नैना रूपा। रत्ना कुमुदा मोहा करुना ललना लोभानूपा॥इतनिनमेंकहि कौने लीन्हो ताको नाउं बता-उ । सूर श्याम हैं चोर तिहारे मैं जानति सब दाउ ॥८०॥ शंकराभरन ॥ सुरति रति मानि आइ पियपै तें गजगति गामिनी । मरगज हार बिथुरे बार देखियत आइगई एक याम यामिनी ॥ और शोभा सोहाइ अंगअंग अरसाइ बोलतिहै कहा अलसामिनी।सूरदास छवि निरखति रही रसवश ह्वैगी धनि धनि धनि तू भामिनी ॥८१॥राग कान्हरो॥उरझारीलटैंछूटी आननपरभीजी फुलेलनसों आली हरिसंग केलि । सोधे अरगजी अरु मरगजी सारी केसरि खोरि बिराजित कहुँकहुँ कुचनि पर दरकी अँगिया घन वेलि॥आलस हैं भरे नैनबैन अटपटात जात ऐंडात जम्हात गातअंगमोरि बहियां झेलि । सूरज प्रभुप्यारी प्यारेसंग करि रसविलास अरसपरस दोउ अंकौ मेलि॥ ८२ ॥ राग ललित ॥ आइ तू डगमगात ऐंडात जँभावति रगमगी रंग मगी रंग भरिके। चंद उदै मुख देखतहौं कर दर्पन प्रतिबिंब निहारि धौं पीक लीक नैननि छवि परके ॥ बिथुरे अलक सुथरे मुख ऊपर अति आनंद उर हारिके । सुखकेलि करिकै सूरज प्रभु रसिकराइ रसवश कीन्ही बनाइ नवला नवल रीझे मन ढरिकै॥८३ ॥राग बिलावल ॥सुनि री राधा अबहिं नई। बातैं कहाबनावति मोसों हमहूंते तुम चतुर भई ॥ कहां ग्वालि कहँ हार तुम्हारो कहां तहां तू आजु गई। मनहींजानि-लेहु मैं जान्यो जाके रंग तू सदा रई ॥ तेरे गुण परगट करिहौं मैं ऐसी रीति कहूँ न भई।सूर श्याम जबते सँग कीन्हों तबहीते मैं जानिलई॥ ८४ ॥राग बिलावल ॥ इन बातन कछु पावति री। बिनदेखे लोगनसों सुनिसुनि काहे बैर बढावति री॥ मोको जहां अकेली देखति तबहींये उपजा-वति री । व्रजयुवतिनकी संगति त्यागो पुनिपुनि क्रोध करावति री ॥ कैसी बुद्धि तुम्हारीसबकी ऐसिहि तुमको भावति री॥सूरशीशतृणदेबूझतिहौंसांचकहतकीबनावति री ॥८५॥राग गुंडमलार॥ करति अवसेर वृषभानुनारी । प्रातते गई बासर गयो बीति एकयामनिशिगईधौं कहांवारी॥हार-केत्रास में कुँवरि त्रासी बहुत तिहि डरन अजहुँ नहिं सदन आई।कहाँ मैं जाउँ कहाँ धौं रही रूसिकै

सखिनसों कहति कहीं मिली माई॥ हार बहिजाइ अतिगई अकुलाइकै सुताके नाउँ इक उहै मेरे। सूर यह बात जो सुनें अवहीं महर कहेंगे मोहिं ये ढंग तेरे॥८६॥राग सोरठ ॥राधाउर हरात गृह आई। देखतही कीरति महतारी हरषि कुँवरि उर लाई॥ धीरज भयो सुता माता जिय दूरि गयो तनु सोच। मेरीको में काहे त्रासी कहा कियो यह पोच ॥ लै री मैया हार मोतसरी जाकारण मोहिं त्रासी। सूर राधिकाके गुण ऐसे मिलि आई अविनाशी॥८७॥ राग बिहागरो॥ परमचतुर वृषभानुदुलारी। यह मति रची कृष्णमिलिबेको परमपुनीत महा री। उत सुख दियो नंदनंदनको इतहि हरष महतारी। हार इतो उपकार करायो कबहुँ न उरते टारी ॥ जे शिव सनक सनातन दुर्लभ ते वश कियो मुरारी। सूरदास प्रभु कृपा अगोचर निगमनहूँ ते न्यारी ॥ ८८ ॥ राग भैरवी॥ श्याम भए वश नागरिके। नैन कटाक्ष बंक अवलोकनि रीझे घोष उजागरिके ॥ चित मधुकर रस कमलकोशको प्यारी वदन सुधागरिके। लोकलाज संपुट नहिं छूटत फिरि फिरि आवत वागरिके ॥ मिलन प्रकाश मनावत मन मन कहा कहौं अनुरागरिको।सूर श्याम वशवाम भए हैं धनि ऐसी वडभागरिको॥८९॥राग आसावरी॥श्याम भए वृषभानुसुतावशऔर नहीं कछु भावै हो।जो प्रभु तिहूं भुवनकोनायक सुरमुनि अंत न पावै हो॥जाको शिव ध्यावतनिशि वासर सहसानन जेहि गावै हो।सो हरि राधावदन चंदको नैनचकोर त्रसावै हो॥जाको देखिअनंग अनागतनागरिछबि भरमावैहो।सूरश्यामश्यामावश ऐसेज्यों सँगछांहडुलावै हो॥९०॥राग जैतश्री ॥कबहूं श्यामयमुनतट जात।कबहूं कदम चढत मग देखतमन राधाविन अति अकुलात।कबहुं जात वन कुंजधामको देखि रहत कछु नहीं सुहात।तब आवत वृषभानुपुराको अति अनुराग भरे नँदतात॥प्यारी हृदयप्रगटही जानति तब मन मांझ सिहात।सूरदास प्रभु नागरिके उर नागर श्यामल गात ॥ ९१ ॥ राग गूजरी ॥ राधाश्याम श्यामराधारँग।पियाप्यारीको हृदयेराखतप्यारी रहतिसदाहरिके सँग॥नागरि नैन चकोर वदन शशि पिय मधुकर अंबुज सुंदरि मुख। चाहत अरस परस ऐसे करि हरि नागरि नागरि नागरसुख ॥ सुख दुख सोचि रहत मनहीमन तब जानत तनकोयहकारन।सुनहुँ सूरकुलकानिजीयदुखदोउफलदोउकरतविचारन॥९२॥राग सूहाबिलावल॥ यमुनाचली राधिका गोरी। युवति वृंद विच चतुरनागरी देखे नंदसुअन तेहि खोरी ॥ व्याकुलदशाजानिमोहनकी मनही मन डरपी उन ओरी।चतुर काम फंग परे कन्हाई अब धौंइनहि बुझावै को री॥ इतसखियनसों बात बनावति अति ह्वैगई तनकसी भोरी। सूर उतहि हरि भाव वतावत धीरधरो मिलिहै दोउ जोरी ॥ ९३ ॥ राग जयतश्री ॥तब राधाइकभावबतावति। मुखमुसकाइ सकुचिपुनिलीन्हो सहज चली अलकै निरुवारति ॥ एक सखी आवत जललीन्हें तासोंकहति सुनावति।टेरिकह्यो घर मेरे जैहो मैं यमुनाते आवति ॥ तब सुखपाइ चले हरि घरको हरि प्यारीहि मनावत।सूरज प्रभु वितपन्न कोकगुन तातेहरिहरिध्यावत ॥ ९४ ॥राग धनाश्री ॥श्यामकोभावदेगईराधा। नारि नागरिन काहू लख्यो कोउ नहीं कान्हकछु करतहैनहुअनुराधा ॥ चितैहरिवदन याकोहँसत मैं लखी वेउ तहिं गए कछु हरष किये। भावतो भावके सौंगनाहीं सने ये महाचतुर चतुरईलिये ॥ आजुही रैनि दोउ संग ये मिलहिंगे रहे कहि परसपर मनहि जानी। सूर व्रजनागरी नारि नागरिनसँग फिरीव्रज तुरत लैयमुनपानी॥९५॥राग टोडी॥भावदियोआवेगेश्याम।अंगअंग आभूषन साजति राजति अपने धाम ॥रतिरण जानि अनंग नृपतिसोंआपनृपतिराजति वलजोरति। अति सुगंध मर्दन अँगअँग ठनिवनिवनिभूषनभेपति॥वीराहारचीरचोलीछविसेना सजिशृंगार।

पान वचन सन्नाह कवच दै जोरो सूर अपार ॥९३॥ राग कान्हरो॥प्यारीअंगशृंगारकियो। वेनीरची सुभग कर अपने टीका भाल दियो॥ मोतियन मांग सँवारि प्रथमही केसरि आड सँवारि। लोचन आँजि श्रवण तरवन छबि को कवि कहे निवारि॥ नासा नथ अतिही छबि राजत बीरा अधरनि रंग। नवसत साजि चीर चोली बनि सूर मिलनि हरि संग॥९७॥ राग कल्याण॥ नागरि नागरपंथनिहारै।उदै बाल शशि अस्तभयो अब जियजिय इहै विचारै॥कीधौ अबही आवत ह्वैहैं की आवन नहिं पैहैं। मात पिताकी त्रास उतहि इत मेरे घरहि डरैहैं॥ अंग शृंगार श्यामहित कीन्हें वृथा होन ये चाहत। सूर श्याम आवै की नाही मन मन इह अवगाहत॥ ९८॥ राग कान्हरो॥ श्यामा निशिमें सरस बनी री। मृगरिपु लंक तासु रिपु गज ता ऊपर मधु वेलि ठनी री।कीर कपोत मधुप पिक तुवर रिपु सुत रेख बनी री। उडुपति बिंब धरे अति शोभा सुख बाला जोरि चिनी री॥कनक खंभ रचि नवसत साजे जलधर भख जब श्रवन सुनी री। करगहि सत्र सात परिसारँग दंपतिहीकी सुरति ठनी री॥ उमापतिहि रिपुको ललचानी बनरिपु तनमें अधिक जरी री।सूरदास प्रभु मिलो राधिका तन मन शीतल रोमभरी री॥राग बिहागरो॥ राधा रचिरचि सेज सँवारति। तापर सुमन सुगंध बिछावति बारबार निहारति॥ भवन गवन करिहैं हरि मेरे हरष दुखहि निरुवारति। आवैं कबहुँ अचानकहीं जो सुभग पावडे डारति॥ यह अभिलाषहिमें हरि प्रगटे पुरुष भवन सकुचानी। वह सुख श्रीराधा माधोको सूर उरहि यह जानी॥ ९९॥ कहाकहौं सुखकह्यो न जाइ। वह अभिलाष श्यामकी आवनि दुहुँ उर आनंद उर न समाइ॥ द्वादशकान्ह द्वादशी आपुन वह निशि वै हरि राधा योग। वह रसकी झझकनि वह महिमा वहमुसकनि वैसोसयोग।वैहितबोल परस्पर दोऊ ठटकत कहत प्रेम पहिचानि।सूरश्याम कर वाम भुजा धरि उछगलई वह सुख पहिचानि॥१६०० ॥रागकान्हरो॥ श्याम सकुच प्यारी उरजानी। लई उछगि वाम भुज भरिके बार बार कहि बानी॥ निरखति सकुच वदन हरिप्यारी प्रेमसहित दोऊ ज्ञानी। करत कहापियअति उताइली में कहुँ जात परानी॥कुटिल कटाक्ष वक्र करि भ्रुकुटी आनन मुरि मुसकानी।सूरश्यामगिरिधर रतिनागर नागरि राधारानी॥ १ ॥नागरि नागर करत बिहार। कामनृपति सैना दुहुँ अगनि शोभा वार न पार॥अधरअधर नैननिनैननिभ्रुव भाल कियो इकठौर। मनइंदीवर कमल कसेसे चारि भँवर रंग और॥ बंदन भाल बिहसनि दोऊ अरस परस बरनारि। मनो बिच चंद चकोर परस्पर कमल अरुन रविधारि॥ हावभाव रति अति उपजायो पियप्यारी मन एक। सूरदास स्वामी स्वामिनि मिलि कोक कलानि अनेक॥२॥राग गुडमलार॥श्यामा श्याम परम कुशल जोरी। मनो नव जलद पर दामिनिकी कला सहज गति मेटि श्रुति भई भोरी॥ अलक बिथुरी श्याम मुख पर रहे मनो बल राहु शशि घेरि लीन्हो। चितै मुख चारु चुबन करनि सकुच तजि दशन छत अधर पिय मगन दीन्हो॥ परत श्रम बूँद टप टपकि आनन बाल भई बेहाल रतिमोह भारी। बिधुपर सुदत बिध्वत अमृत चुवत सूर विपरीत रति पीडि नारी॥ ३॥ राग हुरग॥ कुजके निकट कुज सुरति निरखि सो सेज राजत सुख गात। छूटिगई तनकी चोली दरकि तरकि गये चारो याम रजनी बिहानी भोर रे भोर प्रात॥ आलससो उठि बैठे अरस परस दोउ दंपति अति मन मगन मुसकात। सूर आस पूरी श्यामा श्याम बनी जोरी निशिरस सुधि आये नैन नैननिजात॥ ४ ॥ राग ललित॥ राजत दोउ रतिरंग भरे। सहजप्रीति विपरीति निशा सब आलस सेज परे॥ अति रणवीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे। अंग अंग बल अपने अरिनिसो रति संग्राम लरे॥ मगन मुरछि रहे खेत सेज पर इन

उत कोउ न परै ।सूर श्याम श्यामा रति रणतें एक पग पल न टरै ॥ ५ ॥ राग बिभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत विहार । उन उनकी पहिरी मोतिनकी माला उन उनको पहिरचो नवसरिहार ॥ लटपट पेंच सँवारति प्यारी अलक सँवारत नंदकुमार ।सूरदास प्रभु नागरि नागर विपरीतें भूषण शृंगार ॥ ६ ॥ राग ललित ॥ करि शृंगार दोऊ अलसाने । प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पौढे लपटाने ॥ रति रण युद्ध याम त्रय नीके सेज परे उठि पुनि मुरझाने । मानों शूर खेत सम लरिकै गिरे उठत फिरि गिरे लजाने ॥७॥ राग ललित॥ बोले तमचुर चारों यामको गजर मारचो पौन भयो शीतल तम तमता गई । प्राची अरुनानी धानि किरिन उज्यारी नभ छाई उडगन चंद्रमा मलिनता लई ॥ मुकुले कमल वच्छ बंधन बिछोहि ग्वाल चरे चलीं गाय द्विज पंती करको दई॥सूरदास राधिका सरसबानी बोलिकेहेजागो प्राणप्यारे भ्र सवारेकी समै भई ॥ ८ ॥ राग बिभास ॥ चिरई चुहचुहानी चंदकी ज्योति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवानकी । तारका दुरानी तमघटेचुरबोलेश्रवणभनक परी ललितके तानकी ॥ भृंग मिले भारजा बिछुरी जोरी कोक मिले उतरीपनचअनकामकेकमानकी। अथवत आये गृह बहुरि उवत भान उठौ प्राणनाथ महा जान मणि जानकी ॥ ब्रज घर घर इहै करत चवाव लोग बार बार कहनि करनि पग आनकी।सूरदास प्रभु नदसुवन सिधारो धामसुनत उठनि छबि कृपाके निधानकी॥९॥ राग बिलावल ॥ जागिये प्राणपति रैनि बीती।चंद्रकी द्युतिगई पहे पीरीभई सकुच नाहीं दई अतिहि भीती॥मात पितु बंधु गुरुजन अबहि जानिहैं लखें जिनि कहूं यह लाज भारी । सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही मोहि घेरे रहति सबै नारी ॥ उठे मुसुकाइ अकुलाइ अतुगइके निकसि गए श्याम ब्रजनारि जान्यो । सूर प्रभु नंदनदन दरश दे गये निरखि यकटक रही पल भुलान्यो ॥१०॥ राग बिलावल॥प्रगट दरश दे गए कन्हाई।राधागृहते निकसत देखे यह उनकी मन साध पुगई ॥ शीश मुकुट मोतिन उरमाला पीतांबर पट सहज फिगई । श्याम बरन तन निरखि भुलानी अंग अंग छबि कह्यो न जाई ॥ करति सोच राधा मन अपने आलस भरे गये हरि माई । सूर श्याम निशि नेक न सोये इहै कहति पुनि पुनि पछिताई ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम गये देखे जिनि कोई । सखियनसों निबहन पुनि पैहौं इनि आगे राखौं रसगोई ॥ देखे आइ द्वारके नागरि जहाँ तहाँ ब्रजनारी। सकुचि गई युवतिनके देखत दुखकीन्हीं जिय भारी ॥ मन चिंता अतिही उपजायो बारबार पछितानी । सूर श्यामसों प्रीति गुप्तही आजु सबनि इन जानी॥१२॥ राग बिलावल ॥ बारबार राधा पछितानी । निकसे श्याम सदन मेरेते इन अटकरि पहिचानी॥ नितही नित बूझति ये मोसों मैं इनपर सतराति । अबतो हरि प्रगटही देखे पुनिपुनि कहति लजाति॥यक ऐसेहि झकझोरति मोको पायो नीको दोउ । सूर आजु केहि भांति दुराऊं सोचति करति उपाउ॥१३॥सोच परचो मन राधिका कछु कहत न आवै । कछु हरषे कछु दुख करै मन मौज बढावै॥निशि रस रंगहिमेंपगीतनु सुधि बिसरावै । कबहुँ बिचारति निठुर है सखि ज्वाब न आवै॥अबहीं मोको बूझिहैं युवती चतुरावै॥ तिन सन्मुख केहों कहा प्रभुसूर मनावै॥१४॥राग नारायण ॥कबहूं मगन हरिके नेह । श्याम संग निशि सुरतिको सुख भूलि अपनी देह॥जबहिं आवति सुधिसखिनकी रहति अति सरमाइ । तब करति हरि ध्यान हिरदे चरण कमल मनाइ॥होइज्यों परबोध उनको मेरीपति जिन जाइ।निदरि निदरि सबको रहीहूं आजुलौं यहि भाइ।अबहिं सब जुरि आइहैं ह्यां तुम बिना न उपाइ।सूरप्रभु .

ऐसी करौ कछु बहुरि न जाहुं लजाइ॥१५॥राग येढी॥ज्वाब कहा मैं देहौं उनको। की आवति अबहीं की छिनकहि चोर कहैंगी मोको॥ कैसे हूं पति रहै विधाता अब यह करौं सँभारि। घेरेहि रहति दुराऊं कबलों ऐसी नागरि नारि॥ नैना भए चकोर रहत हैं मुख शशि पूरण श्याम। सुनहु सूर यहदशाहमारीये ब्रजकीसब बाम॥१६॥राग जैतश्री॥ये सब मेरेहि खोज परी। मैंतो श्याम मिलीनहिं नीके आजु रही निशि संग हरी॥ युवतीहैं सब दई सँवारी घर वनहू में रहति भरी। कैसे धौं यह साध मिटैगी कहां मिलैंजो एक घरी॥ प्रगट करैं तो बनति नहीं कछु लोक सकुच कुल लाज मरी। ते पगगट अबहीं इन देखे सूरज प्रभु ब्रजराज हरी॥१७॥राग धनाश्री॥तब नागरि मन हरष बढायो। परमकुशल राधा हरि प्यारी हृदय बुद्धि उपजायो॥ अब आवैं केसेहु अँग बूझे ज्वाब मनहि ठहरायो। अति आनंद पुलक तनुकीन्ही सोच मोच विसरायो॥प्रगट गए जैसे नँदनंदन उहै ध्यान उपजायो। सूरदास प्रभु रूप वखानों इनको जो दरशायो॥१८॥राग ललित॥ राधा हरिके गर्व भरी। सखियनको आगम जब जान्यौ बैठी रही खरी॥ उत ब्रजनारि संग जुरिकै वै हँसति करति परिहास। चलौ न जाइ देखिये री वै राधाको जु अवास॥ कैसो वदन शृंगार कौन बिधि अंगदशा भइ कैसी। सूर श्याम सँग निशि रस कीये निधरक ह्वैहै वैसी॥ ॥१९॥राग जैतश्री॥सुनो सखी राधाके मनकी यह करनी सखियन नहिं जान्यौ। जब हम जाति चली यमुनाको तबही मैं वाको पहिचान्यो॥ तबहि सैन दे श्याम बुलायो गृह आवन को भाउ। उनके गुण धौंको नहिं जानत चतुर शिरोमणि राउ॥ सुनहु सखी अंतर नहिं कीजिय मूड परे अपनेही। सूरश्याम सुख हमहि दुरावति आजु मिले सपनेही॥२०॥राग सारंग॥ तुम जो कहति राधिका भोरी। आजु रही अब कहां दुराई कौन दिननकी थोरी॥ जे छोटीतेई हैं खोटी साजति माजति जोरी। बेंदी भाल नयन नित आंजति निरखि रहति तनु गोरी॥ चमकति चलै बदन मटकावै ऐसी जोबन जोरी। सूर सखीतेहि कहतिअयानीमनमोहनहिंठगोरी॥ २१॥राग रामकली॥राधाको मैं तबहीं जानी। अपने कर जे मांग सँवारे रचि रचि वेनी बानी॥मुख भरि पान मुकुर लै देखति तिनसों कहति अयानी। लोचन आंजि सुधारति काजर छाँह निरखि मुसुकानी॥ वारबार उरजनि अवलोकति उनते कौन सयानी। सूरदासजैसीहैतैसीमैंवाकोपहिचानी॥२२॥राग गुंडमलार॥राधिका सदन ब्रजनारि आई। रही मुख मूँदिकै वचन बोलै नहीं नैनकी सैन दैदै बुलाई॥ इनितबहिं लखि लई रचतिहै चतुरई बुद्धि रचिकै अबहिं और केहै। चोर चोरी करै आपने जघबल प्रगटकैहै तुमहिं नहिं पत्यैहै॥ भौंह देखो निरखि ज्वाब देहै कौन तुमहुँ राखति गर्व बोलि देखौ। सूर प्रभु संगते अति निधरक भई नैन मुख और तुम नहीं पेखौ॥२३॥ राग सूही॥ आजु कहा मुख मूँदि रही री।सुनति नहीं हो कुँवरि राधिका कापर रिसकरि मौनगही री। हमको यह काहे न सुनावति हम हैं तेरी संग सखीरी। यह कहि कहि मुसकात परस्पर चतुर नारि यह तबहिं लखी री॥ कीधौं ध्यान करति देवनिको कीधौं ऐसी प्रकृति परी री।सूर जबहिं आवति हम तेरे तब तब ऐसी धरनि धरी री॥२४॥रागबिलावल॥बार बार युवती सब राधासों भाखैं।तुम दुराव करती हौ हम तुमसों राखैं॥इतनो सोच परचोकहा मुख ज्वाब न आवै।हमतोहैं तेरी सखी सो कहि न सुनावै॥कछु दिनते तेरी दशा तनु रहति भुलाये।निठुर भई कापरइतोकह सूर सुभाये॥२५॥राग गुंडमलार॥राधिका कहति ये करति हांसी। रहति मुखमुख हेरि नैनकीसैन दै कहति मोको कृष्ण उपासी॥ सुनहुँ री सखी मैं कहा तुमसों कहौं कहा बूझति मोहिं कहति

उत कोउ न परे । सूर श्याम श्यामा रति रणतें एक पग पल न टरे ॥ ५ ॥ राग बिभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत विहार । उन उनकी पहिरी मोतिनकी माला उन उनको पहिरयो नवसरिहार ॥ लटपट पेंच सँवारति प्यारी अलक सँवारत नंदकुमार । सूरदास प्रभु नागरि नागर विपरीतें भूषण शृंगार ॥ ६ ॥ राग ललित ॥ करि शृंगार दोऊ अलसाने । प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पौढे लपटाने ॥ रति रण युद्ध याम त्रय नीके सेज परे उठि पुनि मुरझाने । मानों शूर खेत सम लरिके गिरे उठत फिरि गिरे लजाने ॥७॥ राग ललित ॥ बोले तमचुर चारों यामको गजर मारयो पौन भयो शीतल तम तमता गई । प्राची अरुनानी धानि किरिन उज्यारी नभ छाई उडगन चंद्रमा मलिनता लई ॥ मुकुले कमल वच्छ बंधन बिछोहि ग्वाल चरे चलीं गाय द्विज पंती करको दई ॥ सूरदास राधिका सरसबानी बोलिकहै जागो प्राणप्यारे जु सवारेकी समै भई ॥ ८ ॥ राग बिभास ॥ चिरई चुहचुहानी चंदकी ज्योति घटनी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवानकी । तारका दुरानी तमघटे चुरबोले श्रवणभनक परी ललितके तानकी ॥ भृंग मिले भारजा बिछुरी जोरी कोक मिले उतरीपनचअबकामकेकमानकी । अथवत आये गृह बहुरि उवत भान उठौ प्राणनाथ महा जान मणि जानकी ॥ व्रज घर घर इहे करत चवाव लोग बार बार कहनि करनि पग आनकी ॥ सूरदास प्रभु नंदसुवन सिधारो धामसुनत उठनि छबि कृपाके निधानकी ॥ ९ ॥ राग बिलावल ॥ जागिये प्राणपति रैनि बीती । चंद्रकी द्युतिगई पहे पीरीभई सकुच नाहीं दई अतिहि भीती ॥ मात पितु बंधु गुरुजन अबहि जानिहैं लखें जिनि कहूं यह लाज भारी । सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही मोहि घेरे रहति सबै नारी ॥ उठे मुसुकाइ अकुलाइ अतुराइके निकसि गए श्याम व्रजनारि जान्यो । सूर प्रभु नंदनंदन दरश दे गये निरखि चकटक रही पल भुलान्यो ॥ १० ॥ राग बिलावल ॥ प्रगट दरश दे गए कन्हाई राधागृहते निकसत देखे यह उनकी मन साध पुराई ॥ शीश मुकुट मोतिन उरमाला पीतांबर पट सहज फिराई । श्यामबरन तन निरखि भुलानी अंग अंग छबि कह्यो न जाई ॥ करति सोच राधा मन अपने आलस भरे गये हरि माई । सूर श्याम निशि नेक न सोये इहै कहति पुनि पुनि पछिताई ॥ ११ ॥ राग बिलावल ॥ श्याम गये देखे जिनि कोई । सखियनसों निबहन पुनि पैहौं इनि आगे राखीं रसगोई ॥ देखे आइ द्वारके नागरि जहाँ तहाँ व्रजनारी । सकुचि गई युवतिनके देखत दुखकीन्ही जिय भारी ॥ मन चिंता अतिही उपजायो बारबार पछितानी । सूर श्यामसों प्रीति गुप्तही आजु सबनि इन जानी ॥१२॥ राग बिलावल ॥ बारबार राधा पछितानी । निकसे श्याम सदन मेरेते इन अटकरि पहिचानी ॥ नितही नित बूझति ये मोसों में इनपर सतराति । अबतो हरि प्रगटही देखे पुनिपुनि कहति लजाति ॥ यक ऐसेहि झकझोरति मोको पायो नीको दोउ । सूर आजु केहि भांति दुराऊं सोचति करति उपाउ ॥१३॥ सोच [illegible]
कछु कहत न आवै । कछु हरषे कछु दुख करै मन [illegible]

ऐसी करौ कछु बहुरि न जाहुं लजाइ॥१५॥राग सोरठ॥ज्वाब कहा में देहौं उनको। की आवति अवहीं की छिनकहि चोर कहैंगी मोको ॥ कैसे हूं पति रहे विधाता अब यह करौं सँभारि । घेरेहि रहति दुराऊं कबलों ऐसी नागरि नारि ॥ नैना भए चकोर रहत हैं मुख शशि पूरण श्याम। सुनहु सूर यहदशाहमारीये व्रजकीसव वाम॥१६॥राग जैतश्री॥ये सब मेरेहि खोज परी। मैंतो श्याम मिलीनहिं नीके आजु रही निशि संग हरी॥ युवतीहैं सब दई सँवारी घर बनहू में रहति भरी। कैसे धौं यह साध मिटैगी कहां मिलैंजो एक घरी ॥प्रगट करें तो बनति नहीं कछु लोक सकुच कुल लाज मरी। ते परगट अवहीं इन देखे सूरज प्रभु व्रजराज हरी ॥१७॥राग धनाश्री॥तब नागरि मन हरष वढायो। परमकुशल राधा हरि प्यारी हृदय बुद्धि उपजायो ॥ अब आवैं कैसेहु अँग बूझें ज्वाब मनहि ठहरायो। अति आनंद पुलक तनुकीन्ही सोच मोच बिसरायो॥प्रगट गए जैसे नँदनंदन उहै ध्यान उपजायो। सूरदास प्रभु रूप बखानों इनको जो दरशायो ॥१८॥राग ललित॥ राधा हरिके गर्व भरी। सखियनको आगम जब जान्यौ बैठी रही खरी ॥उत व्रजनारि संग जुरिकै वै हँसति करति परिहास। चलौ न जाइ देखिये री वै राधाको जु अबास ॥ कैसो वदन शृंगार कौन बिधि अंगदशा भइ कैसी । सूर श्याम सँग निशि रस कीये निधरक ह्वैहै वैसी ॥ ॥१९॥राग जैतश्री॥सुनो सखी राधाके मनकी यह करनी सखियन नहिं जान्यो। जब हम जाति चली यमुनाको तबही में वाको पहिचान्यो ॥ तबहि सैन दे श्याम बुलायो गृह आवन को भाउ। उनके गुण धौंको नहिं जानत चतुर शिरोमणि राउ॥ सुनहु सखी अंतर नहिं कीजिय मूड परे अपनेही। सूरश्याम सुख हमहि दुरावति आजु मिले सपनेही॥२० ॥राग सारंग॥ तुम जो कहति राधिका भोरी। आजु रही अब कहां दुराई कौन दिननकी थोरी ॥ जे छोटीतेई हैं खोटी साजति माजति जोरी। वेंदी भाल नयन नित आंजति निरखि रहति तनु गोरी ॥ चमकति चले वदन मटकावे ऐसी जोबन जोरी। सूर सखीतेहि कहति अयानी मनमोहन हिंठगोरी॥ २१॥राग रामकली॥राधाको में तबहीं जानी। अपने कर जे मांग सँवारे रचि रचि वेनी वानी॥मुख भरि पान मुकुर लै देखति तिनसों कहति अयानी। लोचन आंजि सुधारति काजर छाँह निरखि मुसुकानी ॥ वारवार उरजनि अवलोकति उनते कौन सयानी। सूरदासजैसीहैतैसीमैंवाकोपहिचानी॥२२॥राग गुंडमलार॥राधिका सदन व्रजनारि आई। रही मुख मूँदिकै बचन बोलै नहीं नैनकी सैन दैदै बुलाई ॥ इनितवहिं लखि लई रचतिहै चतुरई बुद्धि रचिकै अबहिं और केहै।चोर चोरी करे आपने जंघबल प्रगटकैहै तुमहिं नहिं पत्यैहैं ॥ भौंह देखो निरखि ज्वाब देहै कौन तुमहुँ राखति गर्व बोलि देखौ । सूर प्रभु संगते अति निधरक भई नैन मुख और तुम नहीं पेखौ॥२३॥ राग सूही ॥ आज कहा मुख मूँदि रही री।सुनति नहीं हो कुँवरि राधिका कापर रिसकरि मौनगही हृदय श्याम सुखधाममें अभिमान बसायो । राधा के यह जानिकै अंतर्धान भए परस्पर चतुर अभिमान हैतहां गोबिंद नाहीं ॥तहां नेकहूं नहिं रहे नहीं दरशन दीन्हों । सूरश्यामअंतरभयजब गर्वहि चीन्हों॥ ४४ ॥ राग धनाश्री॥राधा चकित भई मनमाहीं ।अबहीं श्याम द्वारहैझांकेह्यांआये क्यों नाहीं ॥ आपुन आइ तहां जो देखे मिले न नंदकुमार। आवत हे फिरि गये श्याम घन अति ही भयो विचार॥ सूने भवन अकेली मैंही नीकेउझकि निहारयो। मोते चूक परी मैंजानीताते मोहिं बिसरायो ॥ एक अभिमान हृदय करि वैठी एते पर झहरानी । [illegible] आयेद्वारके तब व्याकुल पछितानी ॥ ४५ ॥ राग सारंग॥मैं अपने जिय गर्व [illegible]

राधा। आजुही प्रात इक चरित देख्यो नयो तबहिते मोहिं यह भई बाधा॥ कहीं जो एक करि देखती नैन भरि भोरते भोर ह्वै रही माई। सूर प्रभु श्याम की श्यामता मेघकी यहै जिय सोच कछु नहिं सोहाई॥२६॥ राग रामकली॥ कर धरकी धर सैर सखी री। की मक सीपजकी बगपंगतिकी मयूर की पीड पखी री॥ की सुरचाप किधौं वनमाला तडित किधौं पटु पीत। किधौं मंदगरजनि जलधरकी पगनूपुर रवनीत॥ की जलधरकी श्याम सुभग तनु इहै भोरते सोचति। सूर श्याम रसभरी राधिका उमँगि उमँगि रसमोचति॥२७॥ राग रामकली॥ आजु सखी अरुणोदय मेरे नैनन धोख भयो। की हरि आजु पंथयहि गौने की धौं श्याम जलद उनयो। की बगपंगति भ्रांति उरपरकी मुक्तमाल बहुमोल। की धौं मोर मुदित नाचत की बरहि मुकुट की डोल॥ की घनघोर गंभीर प्रात उठि की ग्वालनकी टेरनि। की दामिनि कौंधति चहुँदिश की सुभग पीनपट फेरनि॥ की वनमाल लाल उरराजत की सुरपति धनु चारु। सूरदास प्रभु रस भरि उमँगी राधा कहति विचारु॥२८॥ राग बिलावल॥ सुनहु सखी राधा कहनावति। हम देख्यो सोई इन देखे ऐसेहि दोष लगावति॥ यह पुनीत हमही अपराधिनि तनु अपराध बढावत। श्यामाश्याम सबकेसुखदायकताते कहि मनभावत॥ इतनेहि रही और जिनि भापहु अजहूं लाज न आवत। सूर श्याम राधा जो एकै तऊ नहीं कहि आवत॥२९॥ राग सूही बिलावल॥ राधाको कछु और सुभाउ। हम देखति हरिकी औरहि रँग यह निरखति सतिभाउ॥ यह है बिन कलंककी सांची हम कलंकमें सानी। हम हरिकी दासी सम नाहीं यह हरिकी पटरानी॥ याकी स्तुति हमकहा करहिं रसना एक न आवे। सूरश्याम कोई नहिं जाने भजन प्रताप बतावे॥३०॥ राग गुंडमलार॥ राधिका हृदयते दोष टारी। नंदके लाल देखे प्रात काल ते मेघ नहिं श्याम तनु छबि विचारी॥ इंद्रधनु नहीं वन दाम बहु सुमनके बगपंक्ति नहीं वर मोतीमला। शिखी यह नहीं शिरमुकुट श्रीखंड पछ तडित नहिं पीत पट छबि रसाला॥ मंद गर्जनि नहीं चरण नूपुर शब्द भोरहीं आजु हरिगवन कीन्हों। सूर प्रभु भामिनी भवन कारि गवन मनरवन दुखके दवन जानिलीन्हों॥३१॥ भोरजे गयेतेइ श्यामबैरी। धोखो मोहिं भयोतबलखे नहिं एक कारि नीलघनमेघ छबिचीन्ह तनु ले री॥ शिखीकी भांति शिरपीड डोलत सुभगचापते अधिक वन मालशोभा। सांवरीघटा बगपांतिहूतेरुचिर मोतिवरदामउर देखिलोभा॥ तडिततेपीतपटु फीट मकराई गरज नहिं प्राततहीं ग्वालबोले। सूरप्रभु सखी यह बात सांची कही पवनवशमेघ ज्यों अंग डोले॥३२॥ राग कल्याण॥ धन्यहो धन्यतुम घोषनारी। मोहिंधोखो गयो दरश तुमको भयो तुमहि मोहिं देखो री बीच भारी॥ जा दिना संग में गई अस्नानको यमुनके तीर देखे कन्हाई॥ पीड श्रीखंड शिर भेष नटवर कछे अंग इक छ्या मैंही भुलाई॥ एकद्योस आइ ठाढे भए द्वार हरि आजहू द्वारहै गए मेरे। सूर प्रभु ता दिना तुमहिंकहि दियोमोहिं आजमैंलखेसोउकहे तेरे॥३३॥ राग आसावरी॥ तुम कैसे दरशन पावति री कैसे श्याम अंगअवलोकति क्यों नैननको ठहरावत री॥ कैसे रूप [illegible] पखातिहो वे तो अति झलकावत री। भोको जहां मिलत हैं माई तहैं तहैं अति भरमावत री॥ मैं कबहूं नीके नहिं देखे कहा कहौं कहत न आवत री। सूर श्याम कैसे तुम देखतिमोहिं दरश नहिं द्यावत री॥३४॥ राग आसावरी॥ धन्य धन्य वृषभानुकुमारी। धनि माता धनि पिता धन्य तुम धनि तोसी उपजाई री॥ धन्य दिवस धनि निशा तबहिंकी धन्य घरी धनि याम। धन्य कान्ह तेरे वश जे हैं धनि कीन्हें वश श्याम॥ धनि मति धनि गति धनि तेरो हित धन्य भक्ति धनि भाउ। सूर श्याम पति धन्य नारि तू धनि धनि एक सुभाउ॥३५॥ राग जैतश्री॥ तोहिं श्याम

हम कहाँ देखावें। तुमते न्यारे रहत कबहुँ वे नेक नही बिसरावें ॥ एक जीव देहीद्वै राची यह कहि कहि जु सुनावें। उनकी पटतर तुमको दीजे तुम पटतर वे पावैं ॥ अमृत कहा अमृत गुण प्रगटे सो हम कहा बतावें। सूरदास गूँगेको गुर ज्यों बूझति कहा बुझावें ॥३६॥ राग टोडी ॥ सुनि राधा यह कहा बिचारै। वे तेरे रँग तू उनके रँग अपनो मुख काहे न निहारै॥ जो देखै तौ छांह आपनी श्यामहृदय ह्वां छाया। ऐसी दशा नंदनंदनकी तुम दोउ निर्मल काया॥ नीलांबर श्यामलतनुकी छबि तुवछबि पीत सुवास। घन भीतर दामिनी प्रकाशत दामिनिघन चहुँ पास। सुनरी सखी बिलछ कहों तोसों चाहति हरिको रूप। सूर सुनहु तुम दोउ समजोरी एक एक रूप अनूप॥३७॥ राग धनाश्री ॥ सुनि ललिता चंद्रावलि बात। मोसो श्याम नेह मानतहैं तुमसों कहति लजात॥ तुमतो सदा रहति हरिसँगही भेद कहो यह मोहिं। हाहा करति पाईंहों लागति शपथहै मेरी तोहिं ॥ काहेको इतरात सखीरी तोते प्यारी कौन। सूर श्याम तेरे वश ऐसे ज्यों पर्वतवश पौन ॥ ॥ ३८ ॥ राग नट ॥ पिय तेरे वश योंरी माई। ज्यों संगहिसँग छाँह देहबश प्रेम कह्यो नहिं जाई॥ ज्यों चकोर वश शरद चंद्रके चक्रवाक वश भान। जैसे मधुकर कमलकोश बश त्यों वश श्याम सुजान॥ ज्यो चातक वश स्वाति बूंदके तनके बश ज्यों जीय। सूरदास प्रभु अतिवश तेरे समझि देखि धौं हीय॥३९॥ राग धनाश्री॥ तू रीछांह किये हरि राखति। अपनेमन तू जानतिनीके मुख मोसों यह भापति॥ अतिवश रहत कान्ह री तोको मुकुर हाथ लै देखो। तैसीयै मनमोहनकी गति उहै भाव मन लेखो ॥ तुम हौ बाम अंग दक्षिण वे ऐसे करिएक देह। सूर मीन मधुकर चकोरको इतनो नही सनेह ॥ ४० ॥ राग देशाख॥ नंदनंदन वश तेरे री। सुनि राधिका परम बडभागिनि अनुरागिनि हरिकेरे री ॥ जा दिनते तोहिं खरिक मिले हरि धेनु दुहावन आईरी। ता दिनते वश भये कन्हाई कहा ठगोरी लाई री॥ अब तू कहति कहा मो आगे बातन मोहिं भुलावे री। सूरदास ललिताकी बाणी सुनि सुनि हरप बढावे री ॥४१ ॥ राग टोडी॥ ललिता मुख सुनि सुनि वे बानी। मैं ऐसी जियमें यह आनी॥ औंर नही कोउ व्रज मोसरिकी। हौं राधा आधा अँग हरिकी॥ अपनेही वश पियको करिहों। कहूं जात देखौं तब लरिहों ॥ घरघर सबै गईं व्रजनारी। यहि अंतर आये गिरिधारी ॥ हरि अंतर्यामी अविनाशी। जानि राधिका गर्व उदासी ॥ सूर श्याम राधा तन हेरचो। नागरि देखतही मुख फेरचो॥४२॥ राग सारंग॥ बरज्यो नहिं मानत उझकत फिरत हौ कान्ह घर घर। तुम मिषही मिष देखत फिरत युवतिनके बदन कौन कौनके घर ॥ कोउ अपने घर काम काज जैसे तैसे तुम आवत हौ दर दर। सूरदास प्रभु अतिहि अचगरी देत डोलत नेक नहो जियमें डर॥४३॥ राग बिलावल ॥ यह जान्यो जिय राधिका द्वारे हरि लागे। गर्व कियो जिय प्रेम को ऐसे अनुरागे॥ बैठिरही अभिमानसों यह ठौर न पायो। हृदय श्याम सुखधाममें अभिमान बसायो। राधा के यह जानिके आपुन पछिताही। जहां गर्व अभिमान हैतहां गोबिंद नाही ॥ तहांनेकहूँ नहिं रहै नहीं दरशन दीन्हो। सूरश्याम अंतरभयेजब गर्वहि चीन्हों॥४४॥ राग धनाश्री॥ राधा चकित भई मनमाहीं। अबही श्याम द्वारहैझांकेह्यांआये क्यों नाही ॥ आपुन आइ तहां जो देखे मिलेन नंदकुमार। आवत हे फिरि गये श्याम घन अति ही भयो विचार॥ सूने भवन अकेली मैंही नीके उझकि निहारचो। मोते चूक परी मैंजानीताते मोहिं बिसरायो ॥ एक अभिमान हृदय करि बैठी एते पर झहरानी। सूरदास प्रभु गयेद्वारके तब व्याकुल पछितानी ॥ ४५ ॥ राग सारंग॥ मैं अपनें जिय गर्व कियो। वेअंतर्यामीसबजानतदेख

सायक तानि ॥ पिनाकि पति सुत तासु वाहन भपक भप विषखानि । शाखामृग रिपु वसन मलयज हित हुताशन वानि ॥ धर्मसुतके अरि सुभावहि तजत धरि शिर पानि। सूरदास विचित्र बिरहिनि चूक मनमन मानि ॥ ५६ ॥राग टोडी॥सुनि सजनी यह करनी तेरी। हमसों भेद करै हित उनसों ऐसे गुन उनकेरी ॥ आजुहिते ऐसे ढँग आये अबहींतो दिन हैं री। ऐसे टूटिपरी उनऊपर तुमही कीन्हों वैरी ॥ अजहूँ कह्यो मानिहै मेरे कीधौ नहीं करै री ॥ सूर श्यामसों मानु करै किन काहे वृथा मरै री ॥५७॥ राग सोरठ॥ तैंही उनको मूड चढायो । भवन विपिन सँगहीसँग डोलें ऐसेहि भेद लखायो ॥ पुरुषभँवर दिनचारि आपने अपनो चाउ सरायो। नँदनंदन बहुरवनि रवन वै इहै जानि बिसरायो ॥ अपनी बात आपने करहै हमको तब न सुनायो। सुनहु सूर बिनमान कहौ किन अपनो पिय अपनायो ॥५८॥राग कान्हरा॥ रैनिमो जागत बिहानी मोहनसों मैं मान कियो ताते भई अधिक तनुतपति। सेज सुगंध तलप लागत पावकहूँ दाह सखीरी त्रिविध पवन उडुपति॥ ऐसीके व्यापी हौं मन्मथ मेरो जी जानै माई श्यामश्याम कहि रैनि जपति। वेगि मिलाउ सूरके प्रभुको भूलिभिमान करौं कबहूं नहिं मदन बानते कँपति ॥ ५९ ॥ राग धनाश्री॥मानबिनानहिं प्रीतिरहैरी।धाइमिलेकी गतितेरीसीप्रगट देखि मोहिंकहाकहै री॥ अपनो चाउ सारि उन लीन्हों तू काहे अब वृथा बहै री । बैठि रहे काहे नहिं हढ ह्वै फिरि काहे न तू मान गहै री ॥ अपनो पेट दियो तैं उनकोनाकबुद्धि तियसवैकहै री। सूरश्याम ऐसेहैं माई उनको बिनु अभिमान लहै री॥६०॥राग मलार॥सजी क्यों मान मन न मेरे हाथ पियकी सुरति करि उमँगी भरत। मोसोंमानत वामश्याम,गुनिगुनि अभिलाप करत॥ जो मोकानि न मानि आनि जुवरत तिन बिनु न सरत। अपमानतहू मुदित मूढ यश अपयशहू न डरत ॥ रिसमें रस विपदे चरचत नँदलाल हठि प्राणहरत। भ्रममें तो रिस करत न रसवश मोहिसों उलटि सरत । स्वारथ सब इंद्री समहूं पर बिरहा धीर धरत। सूरदास घरकी फूटैडी कैसेधीरधरत॥६१॥ राग कान्हरो॥ चारिचारि दिन सबै सुहागिनि ह्वैचुकी मैं स्वरूप अपनी। कोउ अपने जिय मान करै माई मोहितौ छूटति अति कँपनी ॥ मेरो कह्यो करि मान हृदय धरि छांडिदेहु अति तपनी। सूर श्याम तबही मानैंगे तबहिं करेंगे जपनी ॥ ६२ ॥ हमारी सुरति बिसारी बनवारी हम सरवस दैदै हारी। सखिपै वे न भये अपने सपनेहुँ वै मुरारी गिरिधारी ॥ वै मोहन मधुकर समान अनबोली मन लावत री। धावत हम व्याकुल विरह व्यापि दिन प्रति नीरज नैना ढारि ढारि ॥ हम तन मन दै हाथ बिकानी वै अति निठुर रहत हैं मुरारि। सूरदास प्रभु सुनहु सखी बहु रवनिरवन पिय हमयकव्रत धरि मदन अगिनि तनु जारिजारि॥६३॥ राग गौरी॥ मैं अपनीसी बहुत करी री। मोसों कहा कहति तू माई मनके सँग मैं बहुत लडी री। राखौं अटकि उतहिको धावे उनकोंवे सिय परनि परी री ॥ मोसों वैर करै रति उनसों मोको छांडी द्वार खडीरी। अजहूं मान करौंमनपाऊं यह कहि इतउत चितै डरी री। सुनहू सूर पांच मत एकै मोमें मैंही रही परी री ॥६४॥ राग गौरी ॥ मन जिनि सुनै बात यह माई। कौनै लग्यो होइगो कितहूं कहिदैहै कोजाई॥ ऐसे डरति रहति हौं वाको चुगुली जाइ करैगो । उनसों कहि फिरि ह्यां आवैगो मोसों आनि लरैगो। पंच संगलीन्हें वह डोलत कोऊ मोहिं न मानैं। सूरश्याम कोउ उनहिं सिखायो वै इतनो कहजानैं॥६५॥रागईमन॥ मेरो मन कहिवेको है। जवहींते हरिदरशन कीन्हें नैनभेद कियो हुंजो है ॥ इंद्री सहित चित्तहू लैगयो रही अकेली हमही। येतेपर तुम मान करावत तौ मन देहु न तुमही॥ मोको दोवल देति

तही उन चरचि लियो॥कासों कहौं मिलावै अब को नेक न धीरज धरत हियो॥वे तो निठुर भये या सुधित अहंकार फल इहै दियो॥तब आपुनको निठुर करावति प्रीतिसुमरि भरिलेतहियो।सूर श्याम प्रभु वे बहुनायक मोसी उनकेकोटि त्रियो ॥४६॥ राग बिहागरो॥श्याम विरह वन मांझ हेरानी। संगी गये संग सब तजिकै आपुन भई देवानी॥श्याम धाम में गर्बहि राखति दुगचारि-नी जानी। ताते त्यागि गये आपुहि सब अंग २ रति मानी॥अहंकार लंपट अपकाजी संग न रह्यो निदानी।सूर श्याम बिन नागरि राधा नागर चित्त भुलानी॥४७॥राग बिहागरो॥महाविरहवन मांझ परी। चकृत भई ज्यों चित्रपूतरी हरि मारग बिसरी॥ संग बटपार गर्व जब देख्यो साथी छोंडि पराने। श्याम सहज अँग अंग माधुरी तहां वे जाइ लुकाने॥ यह वन माँझ अकेली व्याकुल संपति गर्व छँडाये।सूर श्याम सुधि टरत न उरते यह मनो जीव बचाये॥४८॥ राग मारू॥विरहवन मिलन सुधि त्रास भारी।नैन जल नदी पर्वतउरज येइ मनो सुभग बेनीभईअहि-नि कारी॥ नैन मृग श्रवन वन कूप जहँ तहँ मिले भ्रम गली सघन नहिं पार पावै। सिंह कटि व्याघ्र अंग अंग भूषन मनो दुसह भये भार अतिही डरावै॥शरनकरि अब्रडरि डरलहन कोउ नहीं अंग सुख श्याम बिन भये ऐसे।सूर प्रभु नाम करुनाधाम जाइ क्यों कृपा मारग बहुरि मिले कैसे॥४९॥राग टोडी॥राधा भवन सखी मिलि आई। अति व्याकुल सुधि बुधिकछु नाहीं देहदशा बिसराई। बांह गही तेहि बूझन लागी कहा भयो रीमाई। ऐसी बिवश भई तुम काहे काहे न हमहि सुनाई। कालिहि और बरन तोहिं देखी आजु गई मुरझाई। सूर श्याम देखे कीबहुरो इनहि ठगोरी लाई॥५०॥राग हमीर॥श्याम नाम चकृत भई श्रवन सुनत जागी-आये हरि यह कहि कहि सखिन कंठलागी॥मोते यह चूक परी मैं बडी अभागी॥अबके अपराध क्षमहु नये मोहिं त्यागी॥ चरण कमल शरन देहु बार बार मांगी।सूरदास प्रभुके वश राधा अनु-रागी॥ ५१ ॥राग बिहागरो ॥सखी रही राधा मुख हेरी। चकृत भई कछु कहन न आवै करन लगीं अवसेरी॥ बार बार जल परसि बदनसों बचन सुनावत टेरी।आजु भई कैसी गति तेरी ब्रजमें चतुर निवेरी॥तब जान्यो यहतौ चंद्रावलि लाज सहित मुख फेरी। सूर तबहिं सुधि भई आपनी मेटी मोह अँधेरी॥५२॥राग जैतश्री॥कहा भयो तू आजु अयानी।अतिही चतुर प्रवीन राधिका सखियनमें तू बडी सयानी॥कहिधौं बात हृदयकी मोसो ऐसी तू काहे बितानी। मुखमलीन तनुकी गति औरै बूझति बारबार सो बानी॥ कहादुराव करौंरी तोसोमैंतोहरिके हाथबिकानी। सूर श्याम मोको परत्यागी जा कारण मैं भई देवानी॥५३॥[illegible] पेमनेके [illegible] कथा श्यामकी करनी तोआगे कहि [illegible] महो [illegible] अब मैं तासों कहा दुराऊं। अपनी दरशाऊं। जानि लई मेरे [illegible] तुमहिं कहि [illegible] सुनाऊं॥मै बैठीही भवन आपने आपुन द्वार दियो न रहै कितनो [illegible] ती री [illegible] की उन गर्वप्रहारन उनको नाऊं॥तबहीते व्याकुलभई डोलति चित हृदय राखतिहौ वे तो [illegible] सुझाऊं। सुनहु सूर गृह वन भयो मोको अब कैसे हरि दरशन पाऊं॥ ५४ ॥ [illegible] राग नटनारायण॥सखीमिलि करो कछु उपाउ।मार मारन चढ्यो बिरहिनिनिदरिपायोदांउ॥हुताशन धुजजात उन्नत बह्यो हरिदिशवाउ। कुसुमशर रिपुनंद वाहन हरषि हरषिन गाउ॥ बारिभवसुत तासु भावरि अब न करिहौ काउ। बार अबकी प्राणप्रीतम बिजे सखी मिलाउ॥ ऋतुविचारि जु मान कीजै सोउ यहि किनजाउ। सूर सखी सुभाउ रैहो संग शिरोमणि राउ॥५५॥राग नट॥ मिलवहु पार्थ मित्रहि आनि। जलजसुताके सुतकी रुचि करे भई हितकी हानि॥ दधिसुतासुत अवलि उरपर इंद्र आयुध जानि। गिरिसुता पति तिलक करकस हनत

सायक तानि ॥ पिनाकि पति सुत तासु वाहन भपक भप विपखानि । शाखामृग रिपु वसन मलयज हित हुताशन बानि ॥ धर्मसुतके अरि सुभावहि तजत धरि शिर पानि। सूरदास विचित्र बिरहिनि चूक मनमन मानि ॥ ५६ ॥राग टोडी॥सुनि सजनी यह करनी तेरी। हमसों भेद करै हित उनसों ऐसे गुन उनकेरी ॥ आजुहिते ऐसे ढँग आये अबहींतो दिन हैं री। ऐसं टूटिपरी उनऊपर तुमही कीन्हों वैरी ॥ अजहूँ कह्यो मानिहै मेरे कीधौं नहीं करै री ॥ सूर श्यामसों मानु करै किन काहे वृथा मरै री ॥५७॥ राग सोरठ॥ तैंही उनको मूंड चढायो । भवन विपिन सँगहीसँग डोलैऐसेहि भेद लखायो ॥ पुरुषभँवर दिनचारिआपने अपनो चाउ सरायो। नँदनंदन बहुरवनि रवन वे इहैजानि बिसरायो ॥ अपनी बात आपने कराहे हमको तब न सुनायो। सुनहु सूर बिनमान कहौ किन अपनो पिय अपनायो ॥५८॥राग कान्हरा॥ रैनिमो जागत बिहानी मोहनसोंमें मान कियो ताते भई अधिक तनुतपति ।सेज सुगंध तलप लागत पावकहूँ दाह सखीरी त्रिविध पवन उडुपति॥ऐसीके व्यापी हौं मन्मथ मेरो जीजानै माई श्यामश्याम कहि रैनि जपति।वेगि मिलाउ सूरके प्रभुको भूलिभिमान करौं कबहूं नहिं मदन बानते कँपति ॥ ५९ ॥ राग धनाश्री॥मानबिनानहिं प्रीतिरहैरी।धाइमिलेकी गतितेरीसीप्रगट देखि मोहिंकहाकहै री॥ अपनो चाउ सारिउन लीन्हों तू काहे अब वृथा वहै री । वैठि रहे काहे नहिं हठ है फिरि काहे न तू मान गहै री ॥ अपनो पेट दियो तैं उनकोनाकबुद्धि तियसबैकहै री। सूरश्याम ऐसेहैं माई उनकोबिनु अभिमान लहैरी॥६०॥राग मलार॥सजी क्यों मान मन न मेरे हाथ पियकी सुरति करि उमँगी भरत । मोसोंमानत वामश्याम,गुनिगुनि अभिलाप करत ॥ जो मोकानि न मानि आनि ज्युवरत तिन बिनु न सरत। अपमानतहूं मुदित मूढ यश अपयशहू न डरत ॥ रिसमें रस विपदे चरचत भँदलाल हठि प्राणहरत। भ्रममें तो रिस करत न रसवश मोहिसों उलटि सरत । स्वारथ सब इंद्री समहूं पर बिरहा धीर धरत। सूरदास घरकी फूटेडी कैसेधीरधरत॥६१॥ राग कान्हरो॥ चारिचारि दिन सबै सुहागिनि ह्वैचुकी मैं स्वरूप अपनी। कोउ अपने जिय मान करै माईमोहितौ छूटति अति कँपनी ॥ मेरो कह्यो करि मान हृदय धरि छांडिदेहु अति तपनी। सूर श्याम तबही मानैंगे तबहिं करैंगे जपनी ॥ ६२ ॥ हमारी सुरति बिसारी बनवारी हम सरबस दैदै हारी॥ सखिपै वे न भये अपने सपनेहुँ वे मुरारी गिरिधारी ॥ वे मोहन मधुकर समान अनबोलीमन लावत री। धावत हम व्याकुल विरह व्यापि दिन प्रति नीरज नैना ढारि ढारि ॥ हम तन मन दै हाथ बिकानी वे अति निठुर रहत हैं मुरारि । सूरदासप्रभु सुनहु सखी बहु रवनिरवनपिय हमयकब्रत धरि मदन अगिनि तनुजारिजारि॥६३॥ राग गौरी॥ मैं अपनीसी बहुत करी री। मोसों कहा कहति तू माई मनके सँग मैं बहुत लडी री। राखौं अटकि उतहिको धावै उनकोवैसिय परनि परी री ॥ मोसों बैर करै रति उनसों मोको छांडी द्वार खडीरी। अजहूं मान करौंमनपाऊं यह कहि इतउत चितै डरी री। सुनहू सूर पांच मत एकै मोमें मैंही रही परी री ॥६४॥ राग गौरी ॥ मन जिनि सुनै बात यह माई। कौरै लग्यो होइगो कितहूं कहिदैहै कोजाई॥ ऐसे डरति रहति हौं वाको चुगुली जाइ करैगो । उनसों कहि फिरि ह्यां आवैगो मोसों आनि लरैगो। पंच संगलीन्हें वह डोलत कोऊ मोहिं न मानैं।सूरश्याम कोउ उनहिं सिखायो वे इतनो कहजानैं॥६५॥रागईमन॥ मेरो मन कहिवेको है। जबहींते हरिदरशन कीन्हें नैनभेद कियो जो है ॥ इंद्री सहित चित्तहू लैगयो रही अकेली हमही। येतेपर तुम मान करावत तौ मन देहु न तुमही॥ मोको दोपल देति

कहाहो तुम तौ सबै अयानी।सूर श्यामकोवेगि मिलावहुहारिआपनीमानी॥६६॥राग रामकली॥ सारँग सारंगधरहि मिलावहु। सारँग विनय करत सारंगसों सारंग दुख विसरावहु॥ सारंग समय दहत अति सारंग सारंग तिनहिं दिखावहु। सारंगपति सारंगधर जैहै सारंग जाइ मनावहु॥ सारंग चरण सुभग कर सारंग सारंग नाम बोलावहु।सूरदास सारंग उपकारिनि सारंग मरत जिवावहु॥६७॥ राग बिहागरो॥ मोते यह अपराध पर्यो। आये श्याम द्वार भये ठाढे में अपने जिय गर्व धर्यो॥ जानिबूझि मैं यह कृत कीन्हों सो मेरही शीश पर्यो। मन अपने ढँग हीमें मोसों वारंवार लर्यो॥ मैं अति विमुख रही ये सन्मुख नीके उनहि टर्यो। सूरदास मन आपु स्वारथी अपनो काज कर्यो॥६८॥ राग सोरठ॥ मनजो कह्यो करे री माई। तेरी कहीबात सब होती मिलौ उनहिंको धाई॥ निलज भई तनुसुधि विसराई गुरुजन करत लराई। इत कुलकानि उतहि हरिको रस मनतो अति अपुडाई॥ आप स्वारथी सबै देखियत है मोकों दुखदाई। सूरदास प्रभु चित अपनो करि तनकहिं गये रिसाइ॥६९॥ राग देवगंधार॥ मैं अबहीं करौं मान पैमन थिर न रहै। कोटियतन करि करि पचिहारी मोहिं बिसारिगये को उनसों जुकहै॥मोकों निदरिमिल्योहै हरिको येतेपर तनु मदन दहै। सूर श्यामसँग नेक न त्यागत सोवत जागत यह अपमान सहै॥७०॥मनहिं कह्यो करि मानपै कह्यो न करै।वारवार हरिसों गुहरावत मोहिं मँगावत पुनिपुनि आनि लरै॥ वदहूमें इंद्री बशताके लै निकस्यो मोहिं कौन डरै। सुनि सजनी मैं रही अकेली विरहदहेली इत गुरुजन झहरै॥ अब बिनु मिले बनत नहिं आली निशिदिन पलपल रह्यो न परै। सूर श्याम बहुरवनि रवन जो भलेही रहें वे चित यह नहीं धरै॥७१॥ राग बिलावल॥ भूलि नहीं अब मान करौं री। जाते होइ अकाज आपनो काहे वृथा मरौं री॥ ऐसे तनमें गर्व न राखौं चिंतामणि विसरौं री। ऐसीबातकहै जो कोऊ ताके संग लरौं री॥ आरजपंथ चले कहा सरिहै श्यामहि संग फिरौं री॥ सूरश्याम जो आप स्वारथी दरशन नैन भरौं री॥७२॥राग आसावरी॥ चूकपरी मोते मैं जानी मिलें श्याम वकसाऊं री। हाहा करि दशननि तृण धरिधरि लोचनजलनि ढराऊं री॥ चरणगहौंगाढेकरिकरसों पुनिपुनि शीश छुवाऊं री॥ सुख चितवौं फिरि धरणि निहारों ऐसी रुचि उपजाऊं री॥ मिलौंधाइ अकुलाइ भुजनिभरि उरकी तपति जनाऊं री। सूर श्याम अपराध क्षमहु अब यह कहिकहि जु सुनाऊं री॥७३॥राग गौरी॥माई मेरो मन पियसों यों लग्यो ज्यों सँग लागी छांहि।मेरो मनपियके जीव बसतहै पियको जीव मोमें नाँहिं॥ज्यों चकोर चंदाको निरखे इतउत दृष्टि न जाहिं।सूरश्याम बिनु छिनछिन युगसम क्योंकरि रैनिबिहाहिं॥७४॥ राग जयतश्री॥ उनको यहअपराध नहीं वे आवतहैं नीके मेरे मैंही गर्व कियो तनहीं॥ मेरे गर्वते सह्यो कछू नहिं एक भई तनुदशा नहीं। सुख मिटिगयो हिये दुखपूरन अबरोहों इनहीं बिनहीं॥ अब जो दरश देहिं कैसेहू फिरत रहौं सँगहीं सँगहीं। सूरदास प्रभुको हियरेते अंतर करौं नहीं छिनहीं॥७५॥राग बिलावल॥ अबके जो पिय पाऊं तो हिरदय मांझ दुराऊं।हरिको दरशन पाऊँ अभूषण अंग बनाऊं॥ऐसोकोजो आनि मिलावै ताहि निहाल कराऊं।जो पाऊं तौ मंगल गाऊं मोतिनचौक पुराऊं॥रसकरि नाचौं गाऊं बजाऊं चंदन भवन लिपाऊं।जो मोहन बश मेरे होवहिं हीरालाल लुटाऊं॥मणि माणिक न्यवौछावरि करिहौं सो दिन सुदिन कहाऊं। केतकि करनबेलि चम्मेली फूलन सेज बिछाऊं॥ तापर पियको पौढाऊं मैं अचरा वायु डुलाऊं। चंदन अगर कपूर अरगजा प्रभुके खौरि बनाऊं॥ जो विधना कबहू यह करतो कामको काम पुराऊं।सूर श्याम बिनदेखे सजनी कैसे मन अपनाऊं॥७६॥

॥राग सोरठ॥अरी मोहिं पिव भावे को ऐसी जो आनि मिलावै। चौदह विद्या प्रवीन अतिही सुंदर नवीन बहुनायक कौन मनावै ॥ नेक दृष्टि भरि चितवे मो विरहिनिको माई कामद्वंद्व विरह तपनि ततुते बुझावै । सूरदास प्रभु मोको करहिं कृपा अब नितप्रति विरह जरावै॥॥७७॥राग बिलावल॥धीरज करि री नागरी अब श्यामहिं ल्याऊं । अतिव्याकुल जिनि होहि री सुख अबहिं कराऊं ॥ देखि दशा सहि नहिं सकी मनहीं अकुलानी । मैं राधाकी प्रिय सखी यह कहि पछितानी॥ झुरि झुरि पियरी भईहै यह तौ सुकुमारी। ऐसी चूक परीहै मोपै कहा करौं गिरधारी ॥ प्यारीको मुख धोइकै पट पोंछि सँवारचो। तरक बात बहुतै कही कछु सुधि न सँभारचो ॥ सावधान करिकै गई ल्याऊं गिरिधरको। सूर तहां आतुर गई पाये हरिवरको ॥७८॥ राग टोड़ी॥ललिता मुख चितवत मुसुकाने। आपु हँसी पिय मुखअवलोकत दुहुँनिमनहिंमन जाने॥ अति आतुर धाई कहाँ आई काहे वदन झुराये। बूझतहैं पुनिपुनि नँदनंदन चितवत नैन चुराये॥ तब बोली यह चतुर नागरी अचरजकथा सुनाऊं। सूरश्याम जोचलौ तुरतही नैननिजाइदिखाऊं॥७९॥राग सारंग॥अद्भुत एक अनूपम बाग । युगल कमलपर गज क्रीडतहै तापर सिंह करत अनुराग॥हरिपर सरवर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले कंज पराग । रुचिर कपोत बसे ता ऊपर ता ऊपर अंमृत फल लाग ॥ फलपर पुहुप पुहुपपर पल्लव तापर शुक पिक मृग मद काग । खंजन धनुप चंद्रमा ऊपर ता ऊपर इक मणिधर नाग ॥ अंग अंगप्रति औरऔर छवि उपमा ताको करतनत्याग।सूरदास प्रभु पिवहु सुधारसमानोअधरनिकेबडभाग८०राग रामकली॥पद्मिनिसारँग एक मझारि । आपहि सारंग नाम कहावे सारंगवरनी वारि॥ तामेंएक छबीलो सारंग अधसारंग उनहारि । अध सारँग पर सकलइ सारंग अधसारंग विचारि॥तामहिं सारंग सुत शोभित है ठाढी सारंग संभारि।सूरदास प्रभु तुमहूंसारंग वनी छबीली नारि॥८१॥राग रामकली॥विराजतअंग अंग इति बात। अपने कर करि धरे विधाता पटखग नव जलजात ॥ द्वै पतंग शशि बीस एक फनि चारि विविधरँग धात । द्वै पिक बिंब बतीस वज्रकन एक जलजपर थात ॥ इक सायक इक चाप चपल अति चिबुकमें चित्त विकात।दुइ मृणाल मातुल ऊभे द्वै कदलिखंभ विनपात॥ इक केहरि इक हंस गुप्त रहें तिनहिं लग्यो यह गात । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको अति आतुर अकुलात॥८२॥राग सारंग ॥आजु मैं देखी एक वाम नईसी। ठाढी हुती अंगनाद्वारेविधना रची किधौं मदनमई सी ॥ हमतन चिते सकुचि अंचल दे वारिज वदन परि वारि वईसी ।मनौ द्वै ढंग चले हैं दृगनिलै ललित वलित हरि मनहिं नई सी॥जनु पावसते निकसि दामिनी नेक दमकि दुरि ओट लई सी । भोजन भवनकछू नहिं भावत पलकन मानो करत खई सी ॥ यह मूरति कबहूँ नहिं देखी मेरी अँखियन कछु भूल भई सी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहन मोहनी अचई सी॥८३॥राग सारंग॥वरणौंश्रीवृपभानुकुमारी।चितदे सुनहु श्यामसुंदरछवि रति नाहीं अनुहारी ॥ प्रथमहिं सुभग श्याम बेनीकी शोभा कही विचारि। मनो फनिग रह्यो पीवनको शशि मुख सुधा निहारि ॥ कहिये कहा शीश सेंदुरको किंधौं रही पचिहारि ।मानो अरुन किरनि दिनकरकी पसरी तिमिर विदारि ॥ भ्रुकुटी विकट निकट नैननिके राजत अति वरनारि । मनहुँ मदन जग जीति जेर करि राख्यो धनुप उतारि ॥ ताबिच वनी आड केसरिकी दीन्ही सखिन सँवारि।मानो वंदि इंदुमंडलमें रूप सुधाकी पारि॥ चपल नैन नासाबिचशोभा अधरसुरंगसुढार।मनोमध्य खंजन शुक वैठयो लुवध्योविंवविचारि॥

तरिवन मधर अधर नकवेसरि चिवुक चारि रुचिकारि।कठमरीदुलरी तिलरीपग्नहिउपमा चारि ॥ सुरगगुलाय माल कुचमण्डल निरखत तन मन वारि । मानों दिशि निर्धूम अग्निके तप वैठी त्रिपुरारि॥जो मेरे कृतमानहु मोहन का ग्ल्याउ मनुहारि।सूरससिकतनहींपैन दिहौ मुरली सकी मभारि॥८४॥राग मलार॥लाल उनि सुनी मनोहर वसी । नहिं सभार अजन्न युनतिन वल मदन भुजगम डसी॥ कैसे ल्याऊं सगीत सरोवर मगनभई गति हमी। अकेरटरि चलहु आपुनपै मेलि भौंह ह्व फसी॥वृदावनर्की माल कलेवर लता माधुरी गसी । सूरदास प्रभु मनसुख दाता ले भुजबीच प्रशसी॥८५॥राग धनाश्री ॥मनसिज माधव मानिनिहि मारिहैं।कोटि पग्लवअरतपर्म्मा अरनिरखिनिमुखको तारिहैं ॥ किसलय कुसुम कुतसम मायक पायक पवन विचारिहैं।द्रुम नछी यह दीप युग रनी जनति अनल निय जारिहैं ॥ भँवर जु पक चकृत चामरकर भरि वडुप खग डारिहैं । पुनि पुनि बाज साज सुनि सुदरि त्रसित तिनहिं देखे मारिहैं ॥ विरह विभूति वढी वनितानपु शीश जटा वनवारिहैं । मुखशशि शेप रह्यो मित मानों भई तबै भ उनहारिहैं ॥ जोनहतेपर चलहु कृपानिधि तो वह निजकर सारिहैं । सूरदाम प्रभु रसिकशिरोमणि तुमतजि काहिपुकारिहैं८३॥राग सारग॥ सिवन अवधि सुदरी वधो जिन । मुकुतामांग अनगगगनमें नवमतमाजे अर्ध श्याम घन । भाल तिलक उडुपति न होय इह कवरिग्रथित अहिपति न सहमफन । नहिं विभूति दधिसुत न कठजड इह मृगमद चदनचरचिततन॥नहिं गजचर्मसे असितकचुकीदेखि विचारि कहा नदीगन । सूर सुहरिअबमिलहुकृपाकरि यरवमसरमकरतहठ हममन८७राग सारग॥नेकुकुज कृपा करि आइये । अतिरिस कृशह्वैरही किशोरी करि मनुहारि मनाइये ॥ कर कपोल अतर नहिं पावत अतिउसासतन ताइये।छूटेचिहुरवदन कुँभिलानी सुहथसँवारिबनाइयो॥इतनो कहा गाठिको लागत जो बातनि यशपाइये।रूठेहिआदरदेतमयाने इहेसूरजसगाइये८८राग धनाश्री॥प्रियमुख दखो श्याम निहारि । कहि न जाइ आननकी शोभा रही विचारि विचारि॥क्षीरोदकपचटह्यतो कार सन्मुख दियो उघारि । मनो सुधाकर दुग्धसिंधुतेकढ्यो कलक पखारि॥मुक्तामाग शीशपर शोभित गजत दुहि आकारि।मानो उडगन जानि नवल शशि आये करन जुहारि॥भालबाल सेंदुर बिंदुपर मृगमद दियो सुधारि।मनो वधूक कुसुमऊपर अलि वैठो पखपसारि॥ चचलनैन चहुदिश चितवत युगखजन अनुहारि । मनहु परस्पर करत लराई कीर बचाई रारि ॥ वेसरिके मुकतामें झाई वरन विराजत चारि । मानो सुरगुरु शुक्र भौम शनि चमकत चद्र मझारि ॥ अधर बिंव दशननकी शोभा दुति दामिनि चमकारि। चिवुक बिंदु बिच दियो विधाता रूपसींव निरुवारि॥ ज्योति पुज पटतर देवेको दीजे कहा अनुहारि । जनु युग भानु दुहू दिश उगए तम दुरि गयो पतारि॥ लाल सुमाल हार हीरावलि मखियन गुही सुढारि । मनहुँ धुई निर्धूम अग्निपर तप बैठे त्रिपुरारि ॥ सन्मुख दृष्टि परे मनमोहन लजित भई सुकुमारि । लीन्ही उमँगि उठाइ अकमभरि सूरदासबलिहारि॥८९॥राग नट॥भुजभरि लईहृदय लाइ । विरहव्याकुल देखि वाला नयन दोउ भरि आइ ॥ रैनि वासर वीचहींमें दोउ गए मुरझाइ। मनो वृक्ष तमाल वेली कनक सुधा सिचाइ ॥ हरप डहडह मुसुकि फूले प्रमफलनि लगाइ॥काम मुरछनि वेलि तरुकी तुरतही विसराइ ॥ देखि ललिता मिलनि वह आनद नही समाइ ।सूरके प्रभु श्याम श्यामा त्रिविध ताप नशाइ॥९०॥राग रामकली॥ललिता प्रेमविवश भई भारी।वह चितवनिवहमिलनि परस्परअतिशोभा वरनारी ॥यकटक अगअग अवलोकति उत वश भए विहारी । वह आतुर छवि लेत देति वे

इकते इक अविकारी ॥ ललिता सग सखिन शोभा सखि देख्यो छवि पियप्यारी।सुनहु सूर जो अग्नि होम घृत ताहूते यह न्यारी॥९१॥राग धनाश्री॥देखिसखी राधा अकुलानी।ऐसे अगअग छवि लूटत मिलेहु श्यामको नही पत्यानी ॥जैसे तृपावत जलअचवत वहतो पुनि ठहरात।यह आतुर छवि लै उर धारति नेक नही तृपितात॥ जो चकोर इकटक निशि चितवत याकी सरि सोउ नाहिं । ज्यो घृतहोम वह्निकी महिमा सुप्रगट यामाही॥९२॥राग केदारो॥ यद्यपि राधिकाहरिसग- हावभाव कटाक्ष लोचन करत नानारग॥हृदय व्याकुल धीर नाही वदन कमल विलास। तृपामें जल नाम सुनि ज्यो अधिक अधिकहि प्यास ॥ श्यामरूप अपार इत उत लोभ पुट विस्तार। सूर मिलनन लहत कोउ दुहुँनि वल अधिकार॥९३॥राग केदारो॥राधेहि मिलेहु प्रतीत न आवति॥ यदपिनाथ विधुवदन विलोकति दरशनको सुख पावति ॥ भरिभरि लोचन रूप परमनिधि उरमे आनि दुरावति । विरहविकल मति दृष्टि दुहू दिशि सचि सरधा ज्यो धावति॥ चितवत चकित रहति चितअतर नैननिमेप न लावति। सपनो आहि कि सत्य ईश इह बुद्धि वितर्क बनावति ॥ कबहुक करत विचार कौन हौ को हरि केहि यह भावति। सूर प्रेमकी बात अटपटीमनतरगउपजा- वति॥९४॥रागरामकली ॥देखेहु अनदेखेमे लागत। यद्यपि करत रग भरे एकहि इकटक रहे निमिप नहि त्यागत॥इत रुचि दृष्टि मनोज महासुख उत शोभागुण अमित अनागत। वाढ्यो वैर कर्ण अर्जुन ज्यो दुइमह एक भूलि नहिं भागत ॥ उत सन्मुख सो सावधान सजि इत सनाह अँग अँग अनुरागत। ऐसे सूर सुभट ए लोचनअधिकोअधिक श्याम सुखमागत॥९५॥ राग काहरो॥ देखियत दोउ अहँकार परे। उत हरिरूप नैन याके इत मानहु सुभट अरे ॥ रुचिर सुदृष्टि मनोज महासुख इन इत एककरे। उन उत भूपणभेद विविध रचि अँग अँग धनुप धरे॥ ए अतिरतिरणरोप न मानत निमिप निपग झरे। वाहु व्यथहि न वदत पुलकारुह सव अग सरस- चरे॥ व श्री ए अनुराग सूर सजि छिनुरवढत खरे। मानहु उमगि चल्योचाहतहे सागरसुधाभरे ॥९६॥राग विहागरो॥नखशिखते अगअग रूप छवि देखिदेखिनैना न अघाने।निशिअरु दिन,यक टकही राखे पलक लगाइ न जाने॥छवितरग अगनित सरिताएँ जलनिधि लोचन तृप्तिन माने। सूरदास प्रभुशोभाको अति लालिची रहेललचाने॥९७॥राग विभास॥ललिना सग सखिनको लीन्हे। दपतिसुख देखत अति भावत एकटक लोचन दीन्हे॥प्यारी श्यामअगकी शोभा निदरे देख्योइ चाहति । उत नागर नागरिनैननिको निदरि रूप अवगाहति ॥ उत उदार शोभाकी सीवा इत लोभहि नहिं पार।सूर श्याम अँगअँगकी शोभा निरखत वारहिंवार॥९८॥राग गुडमलार॥निदरि अग छवि लेति राधा । यह कहति किंतिक शोभा करेंगे श्याम मेटिहौं आज मन सबै साधा॥ उतहि हरि रूपकी राशि नहिं पार कहुँ दुहुनि मन परस्पर होड कीन्हो। इतहि लुब्धे वै उतहि उदार- चित दुहुँन वल अत नहिं परत चीन्हो ॥ जुरे रणवीर ज्यो एकते एक सरस सुरत कोउ नही दोउ रूप भारी।सूर स्वामीस्वामिनीराधिकासरस निरस कोउ नही लखिलईनारी॥९९॥राग मारू॥ रुँधे रति सग्राम खेत नीके। एकते एक रणवीरजोधा प्रबल सुरत नहिं नेक अति सबल जीके॥भौं- ह कोदड शर नैन जोधानुकी काम छूटनि कटाक्षनि निहारें। हँसनि द्विज चमक करिवरनि लोहन झलक नखन छत घात नेजा मैमारे॥पीतपट डारि कचुकी मोचित करनि कवच सन्ना- ह ए छुटे तनते। भुजा भुज धरत मनो द्विरद शुडनि लरत उर उरनि भिरे दोउ जुरे मनते॥ लटकि लपटानि मानो सुभट लरिपरे खेत रति सेज चुनितान कीन्हो। सूर प्रभु रसिक

प्रिय राधिका रसिकिनी कोकगुन महित सुख लूटिलीन्हो ॥ १७०० ॥राग नट ॥किशोरी अँग अँग भेंटी श्यामहिं । कृष्ण तमाल तरलभुज शाखा लटकि मिली जैसे दामहिं॥ अचरज एक लतागिरि उपजे सोउ दीने करुणामहिं। कछुक श्यामता मांवल गिरिकी छायो कनकअगामहिं॥ गिरिवर धरन सुरति रतिनायक गति जीते संग्रामहिं । सूर कहे ये उभय सुभटबिच क्योंजु बसे रिपु कामहिं॥ राग नट॥रसना युगल रस निधि बोलिकनक बेलि तमाल अरुझी सुभुज बंधन खोलि ॥ भृंगयूथ सुधाकरनि मनो घनमें आवत जात । सुरसरीपर तरनितनया उमँगि तट न समात॥कोकनदपर तरनि तांडव मीन खंजन संग।करति लाजे शिखर मिलिके युग्म संगम रंग॥ जलदते तारा गिरत मनो परत पयनिधि माहिं । युग भुजंग प्रसन्नमुख ह्वै कनकवट लपटाहिं ॥ कनक संपुट कोकिलारव विवश ह्वै दे दान। विकच कजअनारलगि अधर लसि करतपयपान दामिनी थिर घनघटा न्हर कबहुं ह्वै एहि भांति । कबहु दिन उद्योत कबहूं होत अतिकुहुराति ॥ सिंह मध्य सनाद मणिगण सरस सरके तीर । कमल मनु बिननाल उलटे कछुकतीक्षन नीर॥ हंस सारस शिखर चढि दोउ करत नाना नाद। मकर निजपद निकट विहरत मिलन अतिअह्लाद॥प्रेम हित करि क्षीरसागर भईमनसा एक। श्याम मणिके अंग चंदन अमीके अभिषेक ॥ सूरदास सखीसभा मिलि करत बुद्धि विचार। समय शोभा लगि रही मनो स्रमको संसार ॥ राग रामकली ॥शोभा सुभग आनन ओरात्रासते तनुत्रसित तिरछेचितैदेतअकोर ॥निरखिसन्मुख कियो चाहत वदन बिधुकी जोर। तुलाबिच लै केश तौले गरुअ आनन गोर॥ दरशपति रुचि मुदित मनसिज चपल दृग दृग कोर । कोस क्रीडत मीन मानों नीर नीरज भोर ॥ श्यामसुंदर नैन युग वर झलक कज्जल कोर।सुधा सर संकेन मानो कूप दानव ओर ॥ श्रवण मणि ताटंक मजुल कुटिल कुंतल छोर । मकर संकट काम वापी अलक फंदनि डोर ॥ चिकुर अध नव मोतिमडल तरल लट तृण तोर ।जनु बिष्वसित व्यालबालक अमीकी झकझोर । श्रमस्वेद सीकर गंड मंडित रूप अंबुज कोर।उमँगि ईषद श्रम तज्यो पीयूष कुंभ हिलोर॥ हँसत दशननि चमक बिज्जुल लसित कठिन कठोर । मुदित मधुपन विंदगन मकरंद मध्य न थोर ॥ निरखि शोभा समर लज्जित इदु भयो भ्रमभोग।सुर धन्य सुतन किशोरी धन्यनंदकिशोर॥॥राग बिलावल॥ धन्य कान्ह धनि राधा गोरी । धनि वह भाग सुहाग धन्य वह धन्य नवल नवला नव जोरी ॥ धनि यह मिलनि धन्य यह बैठनि धनि अनुराग नही रुचि थोरी। धनि यह अरस परस छवि लूटनि महाचतुर मुख मोरे भोरी ॥ प्यारी अंग अंग अवलोकति पिय अवलोकत लगत ठगोरी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए नागरि एर;डारत तृण तोरी ॥ ॥राग धनाश्री॥ नागरि छविपर रीझत श्याम । कबहुँक वारतहैं पीतांबर कबहुँक वारतमुकुतादाम॥ कबहुँक वारतहैं कर मुरली कबहुँक वारत मोहन नाम । निरखि रूप मुख अंत लहत नहिं तनु मनु वारत पूरणकाम॥ बारंबार सिहात सूर प्रभु देखिदेखि राधासी वाम। इनको पलकओट नहिं करिहौं मन इह कहत वासरहु याम॥राग बिलावल॥श्यामनिरखिप्यारीअगअंग।सकुचिरहतमुखतन नहिं चितनत जेहि वश रहत अनंत अनंग ॥ चपल नैन दीरघ अनियारे हावभावनानामतिभंग॥ वारो मीन कोटि अंबुजगण खंजन वारत कोटि कुरंग ॥लोचन नहिं ठहरात श्यामके कबहुअंग नैना मुख रंग।सूरदास प्रभु यों प्यारीवश ज्यों वशडोर फिरत सँग चंग॥ राग सोरठ॥श्याम भए राधा वश ऐसे । चातक स्वाति चकोर रहत ज्यों चकवाक रविजैसे ॥ नाद कुरंग मीन जलकी गति

ज्यों तनुके बस छाया। यकटक नैन अंगछवि पोहै थकित भए पति जाया॥उठे उठत बैठे बैठ-तहँ चले चलत सुधि नाहीं। सूरदास बडभागिनि राधा समुझि मनहिं मुसुकाहीं॥ राग आसावरी॥ निरखि श्याम प्यारीअंग शोभा मन अभिलाष बढावतहैं। प्रिया अभूषण मांगत पुनिपुनि अपने अंग बनावतहैं॥ कुंडलतट तरिवन लै साजत नासा वेसरि धारतहैं॥ बेंदी भाल मांग शिर पारत वेनी गूँथि सँवारतहैं॥प्यारीनैननिको अंजन लै अपने लोचन अंजतहैं। पीतांवर ओढनीशीशदे राधाको मनरंजतहैं॥कंचुकि भुजनि भरत उर धारत कण्ठ हमेल भ्रजावतहैं। सूर श्यामलालचतिय तनुपर करि शृंगार सुख पावत हैं॥राग नट॥श्यामा श्याम छबिकी साध। मुकुट मंडल पीतपटछवि देखि रूप अगाध॥प्रिया हाहा करति पुनि पुनि देहुप्रीतम मोहि। अंग अंग सँवारि भूषण रहति वह छबि जोहि॥ काछि कछनी पीत पटु कटि किंकिनी अतिशोभ। हृदय वनमाला बनावत देखि छवि मन लोभ॥ श्रवण कुंडल धारि शोभा शीश रचि श्रीखंड। सूर श्याम सुहागिनी रुचि कनक कर लै दंड॥राग रागिनी कर्णाटकी॥ श्रीगोपाललालजी बन्सीनेकमैंपाऊं।हो मदनगुपाल तुम्हारी मुरलीमें नेकु वजाऊं॥ टेक॥ मुरलीबजाऊं रिझाऊं गिरिधर गाऊं आज सुनाऊं। जेइ जेइ तान तुमसी गीतगावत तेइ कर्णाटी गौरी मैं गाय सुनाऊं॥ हो०॥ तहां लगि गान गाऊं मोहन जहां लगि सात सुरन मैं पाऊं। सुरन विमान थकित करि राखों कालिंदी थिर नीर बहाऊं॥हो०॥ वेनी शीशफूल पहिरो हरि मैं शिर मुकुटबनाऊं। तुम वृषभानुसुता है बैठो मैं नंदलाल कहाऊं॥ हो०॥ तिहारो आभूषणमैं पहिरौअपनोतुमहिंपहिराऊं। तुम मानिनिको मान करि बैठो मैं गहि चरण मनाऊं॥ हो०॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको भक्ति भाव नीके करि पाऊं। कीजे कृपा अनेक अनुचर पर अनुपम लीला गाऊं॥ हो०॥ राग नट॥ तिहारी लाल मुरली नेक वजाऊं। जो जिय होत प्रीति कहिवेकी सो धरि अधर सुनाऊं॥ जैसी तान तुम्हारे मुखकी तैसिय मधुर उपाऊं। जैसे फिरत रंध्र मगु कँगुरी तैसे मैंहुँ फिराऊं॥जैसे आपुअधर धरि फूंकत मैंअधरनि परसाऊं। हाहाकरति पाय हौ लागति बांस बँसुरिया पाऊं॥ सारंग नट पूरवी मिलिके राग अनूपम गाऊं।तुम्हरे भूषण मोको दीजै अपने तुमहि बनाऊं॥ तुम वैठो दृढ मान साजिकै मैं गहि चरण मनाऊं। तुम्ह राधेहौं माधोई माधो ऐसी प्रीति जनाऊं॥ यह अभिलाष बहुत मेरे जिय नैननि इहै देखाऊं। सूरश्याम गिरि-धरन छवीले भुजभरि कंठ लगाऊं॥ राग नट॥ हरिजी मुरली तुम्हैं सुनाऊं। तुम सुरपुरखोप्राण-नाथ प्रभु हौं अँगुरियन चलाऊं॥ मधुरे सुर गति राग रागिनी भलीतान उपजाऊं। जेहि जेहि भांति रिझहैं नँदनंदन तेहि तेहि भांति रिझाऊं॥ अंश बाहु धरि करिविक्रम ज्यों ते मनु सुखहौं पाऊं। सूरज अटक्यो मन चलैन पगु मन अभिलाप वढाऊँ॥ राग नट॥ प्यारी कर बांसुरी लई। सन्मुख होइ तुम सुनहु रसिक पिय ललित त्रिभंग भई॥ उठत राग रागिनी तरंगन छिनु छिनु उपजि नई। आलवाल नँदलाल श्रवनवर जनु मोहनी वई॥ नमित सुधाकर वदम अमित छवि मनमोहन चितई। मानहुँ मत्त चकोर मेचक मृग तनु सुधि विसरिगई॥ कटि पीतांवरछाइ नाह-को छलवल कै रिझई। सूर सखी हँसि कमलनैन कह:राधे अंक दई॥राग गूजरी॥ मुरली लई करते छीनि। ता समय छवि कहीजाति न चतुरनारि नवीन। कहति पुनि पुनि श्याम आगे मोहि देउ सिखाइ। मुरलिपर मुख जोरि दोऊ अरस परस वजाइ॥ कृष्ण पूरत नाद उच्चरत प्यारी रिसकरि गात। वारवारहि अधर धरि धरि वजत नहिं अकुलात॥ प्रिया भूषण श्याम

पहिरत श्यामभूषण नारि। सूर प्रभु करि मानु बैठे त्रिय करति मनुहारि ॥ राग बिलावल ॥ कहति नागरी श्यामसो तजौ मानु हठीली। हमते चूक कहा परी त्रिय गर्व गहीली ॥ हँसतहिमें तुम रिस कियो कहा प्रकृति तुम्हारी। बारबार कर धरतिहैं कहिकहि सुकुमारी ॥ वृथा मान नहिं कीजिये शिर चरणन धारति। आनन आनन जोरिकै पिय मुखहि निहारति ॥ निठुर भई हौ लाडिली कबके हम ठाढे। तुम हमपर रिसि करतहौ हमहै तुव चाढे॥ श्याम कियो हठ जानिकै इक चरित बनाऊ। सुनहु सूर प्यारी हृदय रस विरह उपाऊं ॥ राग बिलावल ॥लाल निठुरह्वै बैठि रहे। प्यारी हाहा करति न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवन मुसकन धरणी नखन करोवत।आपु हँसति पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत ॥ कहा करन ए बोलत नाही पिय यह खेल मिटावहु। सूर श्याम मुख कोटि चंद्रछवि हमिकै मोहिं देखावहु॥राग धनाश्री ॥ नागरि हँसति हृदय डर भारी। कबहुँ अंक भरि लेति उरज बिच कबहुं करति मनुहारी ॥ मान करत नीके नहिं लागे दूरिकरो यह ख्याल। नेक नहीं चितवत राधा तन निठुर भए नँदलाल ॥ शीश धरति चरणनि लै पुनि पुनि त्रियको रूप निहारत। सूरदास प्रभु मान धरयो दृढ धरणी नखनविदारत॥राग गुंड॥निरखित्रियरूप पिय चकित भारी। किधौंवे पुरुष मैं नारिकी वे नारि मेहिं हौं पुरुष तनु सुधि बिसारी॥आपतन चिंत शिर मुकुट कुंडल श्रवन अधर मुरली माल बन बिराजै। इतहि प्रियरूप शिर मांग बेनी सुभग भाल बेंदी बिंदमहाछाजै ॥ नागरी हठ तजौ कृपाकरि मोहिं भजौ परी कह चूक सो कहौ प्यारी। सूर प्रभु नागरी रसविरह मगन भई देखि छवि हँसत गिरिराजधारी ॥ राग धनाश्री॥ निरखत पियप्यारीअंगअंग विरहशोभा। कबहूं पियचरण परति कबहूं भुज अंक भरति कबहूं जिय डरति वचन सुनिबेकी लोभा ॥ कबहुं कहति पियसो पिय कबहुं कहति प्यारी हो हाहा करि पाइ परति विकल भई बाला। कबहुंउठति कबहुं बैठ पाछे ह्वै रहति कबहुं आगे ह्वै वदन हेरि परी विरह ज्वाला ॥ काहे तुम कियो मान बोले बिन जात मान दंपति हैं सग दशा ऐसी उपजाई। रीझि मिय सूर श्याम अंकम भरि लई बाम विरह द्वंद मेटि हरष हृदय उपजाई ॥ राग धनाश्री ॥ प्रिया पिय लीन्ही अंकमलाइ। खेलनमें तुम विरह बढायो गई कहा चितताइ ॥ तुमही कहो मान करिबेको आपुहि बुद्धि उपाइ। काहे विवश भई बिन कारण ऐसी गईडराइ ॥ सुन प्यारी हम भाव बतायो अंतर गए जनाइ।बारबार अलिंगन दीन्हो अबहिं रही मुरझाइ ॥ सीची कनकलता सूरज प्रभु अमृत वचन सुनाइ। अति सुखदै दुखको बिसरायो राधारवन कन्हाइ॥राग गुंडमलार ॥ श्याम तनु पिया भूषण विराजै।कनकमणि मुकुट कुंडल श्रवन बनमाल अधर मुरली धरे नारि छाजै॥ निरखि छबि परस्पर रीझे दोउ नारि वर गयो तजि विरह उर प्रेम पागे।सूरप्रभु नागरी हमति मन मन रसति बसत मन श्यामके बडे भागे॥ राग नट॥नागरि भूषण श्याम बनावत।श्रीनागर नागरि अँगशोभा कियो निरखि मन भावत ॥ श्यामा कनक लकुट कर लीन्हे पीतांबर उर धारे। उत गिरिधर नीलांबर सारी घूँघट वोट निहारे ॥ वचन परस्पर कोकिल वाणी श्याम नारि पति राधा।सूर स्वरूप नारि पति काछे पति नारी तनु साधा ॥राग नट॥नीके श्याम मान तुम धारयो।तुम बैठे हनुमान ठानि मैं देख्यो मान तुम्हारो॥ यह मन साध बहुतही मेरे तुम बिन कौन निवारो।नागरि पियतन अपनी शोभा बारहि बार निहारे ॥ बेनी मांग भाल बेंदी छवि नैननि अंजन रंग। सूरनिरखि पिय घूंघटकीछबि पुलक नमानति अंग॥राग धनाश्री ॥कुंजबनगमनदंपतिबिचारो।नारिको वेशकरिनारिकोमनहिहरि

मुकुर लै भावती छबि निहारै ॥ भामिनी अग वह निरखि नटवर भेप हसतही हँसत सब मेटि डारे । सहज अपनो रूप धरो मन भावती और भूपण तुरत अगधारे ॥ नियाकोरूपधरिसिगराधा कुँवरि जात व्रज खोरि नहिं लखत कोऊ । सूर स्वामीस्वामिनी वने एकसे कोउ न पटतरअरस परस दोऊ ॥ राग गौरी॥ नँदनदन त्रिय छबि तनु काछे। मनो गोरी साँवरी नारि दोउ जातसहजमे आछे ॥ श्याम अग कुसुँभी नई सारी फलगुजाकीभांति । इत नागरि नीलांबर पहिरेजनु दामिनि घन कांति ॥ आतुर चले जात वनधामहि अतिमन हरप वढाए । सूर श्याम वा छबिको नागरि निरखतिनैन चुराए ॥ राग कान्हरो ॥ मनही मन रीझतिहै राधा वारवार पिय रूप निहारै । निरखि भाल वेंदी सेंदुरकी वा छबि पर तन मन धन वारै ॥ यह मन कहति सखी जिन देखैं वूझेपर कहा कैहों । तिहू भुवन शोभा सुखकी निधि कैसे उनहि दुरैहौं ॥ पग जेहरि विछिअनकी झमकनि चलत परस्पर वाजत । सूर श्याम श्यामा सुख जोरी मणि कचन छबि लाजत ॥ राग कल्याण ॥ श्यामा श्याम कुजवन आवत । भुज भुजकठ परस्पर दीन्हे यह छबि उनही पावत ॥ इतते चद्रावली जात व्रज उतते ए दोउ आए । दूरिहिते चितवत उनही तन इकटक नैन लगाए ॥ एक राधिकादूसरिकोहैयाको नहिं पहिचानो । व्रज वृपभानुपुरा युवतिनको इकइक करि मैं जानों ॥ यह आई कहुँ और गाँवते छबि सांवरी सलोनी। सूरआजु इह नई वतानी एकै अग न विलोनी॥ ॥राग सोरठ॥ राधा सकुचि श्याम मुख हेरति। चद्रावली देखिकै आवति व्रजही कोपियफेरति ॥ जाहु जाहु मुखते कहिभापति करते कर नहिं छूटति। उतहि सखी आवत सकुचानी इतहि श्याम सुख लूटति ॥ दुखसुख हरप कछू नही जानति श्याम महा रसमाती।सूरउतहि चद्रावलिइकटक उनहीके रँग राती॥ राग गौरी॥ यह वृपभानुसुता वह को है । याकी सरि युवती कोउनाहीयह त्रिभुवनमनमोहै॥ अतिआतुर देखनको आवति निकट जाय पहिचानो । व्रजमें रहति किधौं कहुँ औरै वूझेते तव जानों ॥ यह मोहनी कहांते आई परम सलोनी नारि । सूर श्याम देखत मुसुकानी करीचतुरई भारि ॥ राग गौरी ॥ इनते निधरक और न कोइ। कैसी बुद्धि रचीहै नोखी देखी सुनी न होइ ॥ इह राधासो हाथविधाता बुद्धि चतुरई ठानी। कैसे श्याम चुराइ चली लै अपने भूपण ठानी ॥ और कहा इनिको पहिचाने मोपे लखे न जात।सूरश्याम चद्रावलि जाने मनही मन मुसुकात॥ राग कान्हरा ॥ सकुच छांडि अव इनहि जनाऊं । एतौ चले आपने काजहि मैं काहे न समझाऊं ॥ मनही मनमें जीति जाहिंगे जानि बूझि निदराऊं। यह चतुरई काछिके आये सो अव प्रकट देखाऊं ॥ वडे गुणज्ञ कहावत दोऊ इनको लाज लजाऊं । सूर श्याम राधाकी करनी महिमा प्रगट सुनाऊं ॥राग सारग॥ कहिराधा ये कोहै री। अति सुदरि साँवरी सलोनी त्रिभुवन जन मन मोहैरी॥ और नारि इनकी सरि नाही कहों न हमतन जोहै री।काकी सुता वधू है काकी काकी युवती धौं है री॥ जैसी तुम तैसी है एऊ भली वनी तुमसों है री ।सुनहु सूर अति चतुर राधिका एई चतुरनी की गोहै री ॥ राग ईमन ॥ मथुराते ये आईहै। कछु सम्वन्ध हमारी इनसो ताते इनहि बुलाई है॥ ललिता सग गई दधि वेचन उनही इनहिं चिन्हाई है। उहै सनेह जानि रीसजनी भवनआजुहमआई है ॥ तवहीकी पहिचान हमारी ऐसी सहज सुभाई है । सूर मोहिं देखन इहां आवत आपु सग उठि धाई है ॥ राग सोरठ ॥ इनको व्रजही क्यों नवुलावहु । की वृपभानुपुरा की गोकुल निकटहि आनि वसावहु ॥ वोऊ नवल नवल तुमहू हौ मोहनको दोउ भावहु।मोकोदेखिकियोअतिघूघट काहे न लाज छुडावहु ॥ यह अचरज देख्यो नहिं कवहू युवतिहि युवति दुरावहु । सूर सखी

राधासों पुनि पुनि कहति जु हमहिं मिलावहु॥ राग हमीर॥ सांवरे तनु कुसुंभी सारी सोहत है नीकी
री। मानो रतिपति सँवारि बनी खनी जीकी री ॥ राधाते अतिहि सरस श्याम देखिपावे री ।
ऐसी यह नारि और नारि मन चुरावे री ॥ घूंघट पट वदन ढांकि काहे इन राख्यो री। चितवहु
मोतन कुमारि चंद्रावलि भाख्यो री॥आपुहि पट दूरिकियो तरुणिवदन देखरी।मनहीमन सफल
जानि जीवन जग लेखे री ॥ नैन नैन जोरति नहिं भावसों लजानेरी। सूर श्याम नागरिमुखचित-
वत मुसुकाने री ॥राग बिलावल॥मथुरामें वस वास हमारो । राधाते उपकार भयो यह दुर्लभ दरशन
भयो तुम्हारो ॥ वार वार कर गहि गहि निरखत घूँघट वोट करो किन न्यारो । कवहुँक कर
परसत कपोल छुइ चुटकि लेत ह्यां हमहिं निहारो ॥ कछु में हूं पहिचानति तुमको तुमहिमिलाऊं
नंददुलारो । काहेको तुम सकुचति हो जी कहा काह हैनाम तुम्हारो ॥ ऐसी सखी मिली तोहिं
राधा तौ हमको काहे न विसारो ।सूरदास दंपति मन जान्यो यासे कैसेहोत उवारो॥ राग रामकली॥
राधा सखी मिली मनभाई ।जबते इनसों नेह लगायो वहुत भई चतुराई॥ और भई इतने तुमको
सखी गृहजनसों निठुराई । काहूके मनमें नहिं आनति हमहुँ सवन विसराई ॥ तुम हो कुशल
कुशल हैं एऊ आपु स्वारथी माई । सूर परस्पर दंपति आतुर चतुर सखी लखिपाई॥ राग रामकली॥
इह सखि अवलों कहां दुराई । गति दिवस हम कवहुँ न देखी अव जु कहांते आई ॥
त्रिभुवनकी शोभा सव गुणनिधि है विधि एक उपाई । विद्यमान वृषभानु-
नंदिनी सहचरि सव सुखदाई ॥ अपने मन तकि तकि तनु तोलति पिय जन सुंदर-
ताई । दुसर रूपकी राशि राधिका कहाँ कौन प्रभुताई ॥ राचिरही रस सुरति
सूर दोउ निरखी नैन निकाई । चीन्हे हो चलेजाहु कुंजगृह छांडिदेहुचतुराई ॥राग रामकली॥ ऐसी
कुँवरि कहां तुम पाई।राधाहूँते नख शिख सुंदरि अवलों कहां दुराई ॥ काकी नारि कौनकी
वेटी कौन गाउंते आई । देखी सुनी न व्रज वृंदावन सुधि बुधि रहति पराई ॥ धन्यसुहाग भाग
या को यह युवतिनके मनभाई । सूरदास प्रभु हरषि मिलेहँसि लेउर कंठलगाई॥ राग शुद्धमलार॥ नंद-
नंदन हँसे नागरी मुख चितै हरषि चंद्रावली कंठ लाई । वामभुज रवनि दक्षिण भुजा सखी-
पर चलेवन धाम सुख कहि न जाई॥ मनो विविदामिनीवीच नव घन सुभगदेखिछविकामरति-
सहित लाजे । किधौं कंचनलता वीच तमाल तरुभामिनी वीच गिरिधर विराजे।गएगृहकुंजअलि-
गुंजसुमनन पुंज देखिआनंदभरे सूरस्वामी।राधिका रवन युवतीरवन मनहरन निरखि छविहोत मन
काम कामी ॥राग वैराटी॥ वसेरी हेली नयननिमि पटइंदु । नँदनंदन वृषभानुनंदिनी सखी सहित
शोभित जगवंदु। द्वादशही पतंग शशि सौ वीस पट फणि चौवीस धातुचतुरंगछंदु ॥ द्वादशही
पिकु विंव सौ वानवे वज्रकनपटकमलनि मुसिक्यात मंदु॥द्वादशहीमृणाल कदलीखंभद्वादशद्वाद-
शते मातु लेहि गिनंदु। द्वादशही सायक द्वादश चाप चपलई खग व्यालीस माधुरी फंदु॥चौवि-
सही चतुष्पद शोभा अति कीनी मानो चलत चुवतकरभा मकरंदु ॥नील गौर दामिनि विन
पीत घन षोडश राजत अनूपम छवि श्रीगोकुलचंद । साठि जलजहीअरु द्वादश सरवरअंगही
अंग सरस रस कंदु । सूर श्यामपर तनुमनुहि वारतललिता इतिदेखिभयोआनंदु॥ राग केदारो॥ कुंज
सुहावनो भवन वाने ठनि वैठे राधारवन । वरनवरन कुसुम प्रफुल्लित शशिकोकिरनिजगमगात
तसोई वहै त्रिविध पवन ॥ आलिंगन पिक मंगल गावत ध्वनि सुनिसुनि मगनहि भावत देखत
दम्पति विवश अयन । सूरदास प्रभु पिय प्यारी दोउ राजत साजत सखी वारति रति पति

शयन ॥राग बिलावल ॥सँग शोभितवृषभानुकिशोरी । सारंग नैन बैनवरसारंगसारंग वदनकहे छवि कोरी॥ सारंग अधर सधर करसारंग सारंग जति सारंग मति भोरी । सारंग दशन वसन पुनि सारंग सारंग वसन पीतपट डोरी ॥सारंग चरन पीठपर सारंग कनक खंभ अहि मनहुँ चढो री । सारंग वरन पीठि पर सारंग सारंग गति सारंग कटि थोरी ॥ सारंग पुलिन रजनि रुचि सारंग सारंग अंग सुभग भुज जोरी । विहरत सघन कुंज सखि निरखति सूर श्याम घन दामिनि गोरी॥ राग बिलावल॥कुंजभवन राधा मनमोहन ।रति विलासकरि मगनभए अति निरखतनैनलजोहन॥ त्रियतनुको दुख दूरि कियो पिय देदै अपनी सोंहन। वार वार भुज धरि अंकम भरि मिलि बैठ दोउ गोहन॥पीतांबर पटसों मुख पोंछत हरषि परस्पर जोहन।सूर श्याम श्यामा मन रिझवत पीन कुचनि टकटोहन॥राग बिहागरो ॥ बनहि धाम सुख रैनि विहाई।तैसिय नवल राधिकानागरितैसेइ नवल कन्हाई॥ जैसोइ पुलिन पवित्र यमुनको तैसोइ मंद सुगंध । जैसोइ कंठ कोकिला कुहुकनि तैसोइ सुख सम्बंध॥ रति विहार करि पिय अरु प्यारी प्रात चले ब्रजधाम । सूरदास दोउ बांहां जोरी राजत श्यामा श्याम ॥राग ललित॥नवल निकुंज नवल रम दोऊ राजत हैं रंग भीने।कुसुमनि सेज भोर उठि आवत आलसयुत अशनि भुज दीने ॥ अरुन नैन कुच रेख विराजत श्रम जल वसन पलटि तनु लीने । सूरज प्रभु पिय प्यारीको सुख निरखत सखिन सहित ललिता दृगदीने॥ ॥ राग कान्हरो ॥वरन वरन वादर मनहरन उदय करन वनधामते निकसत ऐसे दोऊ लागे॥श्याम घटा मध्य मानो दामिनि भामिनि राजति लाजति दुरिजाति कबहुँ प्रकट होत हारी तामें अरुन भए नैन सोसवे निशिके जागे॥मोर मुकुट पीतवसन इंद्रधनुप वीच वीच मंद मंद गरजि बोलनि पिय रंग अनुरागे। सूरदास प्रभु पिय प्यारीकी छवि गावत पावत कवि उपमा जे तेउ वडभागे राग अडानो ॥ वांहांजोरी निकसे कुंजते प्रात रीझिरीझि कहें वात ।कुंडलझलमलात झलकतविवि गात चकचौंधीसी लागति मेरे इन नैननि आली रपटत पग नहिं ठहरात ॥ राधा मोहन बने घन चपला ज्यों चमकि चमकि मेरी पूतरीनमें समात । सूरदास प्रभुके वे वचन सुनहु मधुरमधुर अव मोहिंभूली रीपांचऔरसात॥राग बिलावल॥नवलकिशोर किशोरीबांहांजोरीआवतहैंरतिरंगअनुरागे। कबहुँ चरनगति डगति लगत छवि नैन बैन अलसात जम्हात ऐंडात गति आनंद निशासुख जागे॥ वानक देखत रीझि रही हौं चंदन वंदन माल बिना गुन अंजन पीक पलट लागे । सूरदास प्रभु प्यारी राजतआवत भ्राजत बनेहैं मरगजे बागे॥राग सारंग॥अरुझिरहेमुकुताहलनिरवारतसोहत घूँवर-वारे वार। रतिमानी सँग नँदनंदनके छूटे वंदकंचुकी टूटे हार॥निशिके जागे दोउ नैना ढरकिरहे चलति जोवन मदभार।सूर श्यामसँग इह सुखदेखत रीझे वारंवार॥राग बिलावल॥नवलश्यामनवला श्रीश्यामा।दोउ राजतबांहांजोरीचलेजातब्रजधामा॥याछविकीउपमादेवेको त्रिभुवननहिंअभिरामा दामिनि घनपटतरदीवेको सकुचतकविलियेनामा॥सुधा शरीर परस्पर दोऊसुखदायकदिनजामा। सूरदासप्रभुनागरनागरिजीतेरतिपति कामा ॥राग ललित॥दोउवनते ब्रजधामगये।रतिसंग्राम जीति पिय प्यारी भूपण सजति नए॥ वे ब्रजगये आपु अपने गृह चितते कोउ न टारत।मन वाचा कर्मना एक दोउ एकौ पल न विसारत।जैसे मीन नीर नहिं त्यागतएखंडित ए पूरन।सूरश्यामश्यामादोउ देखो इत उत कोउन अधूरन॥राग धनाश्री ॥बहुरि फिरि राधासजति शृंगार।मानहु कामहार पहिराव-ति अंग रण जीते सुरति अपार॥ कटि तट सुभटनि देत रसन पट भुज भूपण उरहार। कर कंकन काजर नकवेसरि दीन्हों तिलक लिलार ॥ वीरा विहँसि देत अधरनिको सन्मुख सहे प्रहार । सूर

दास प्रभुकेजु विमुख भए बांधति कायरवार॥राग कान्हरो॥आज अति राधा नारि बनी। प्रतिप्रति
अंग अनंगजात रसबरा त्रैलोक्य बनी॥शोभित केश विचित्र भांतिद्युति शिखि गिरउ हरनी।रची
मांग सभाग रागनिधि कामधामसरनी॥अलक तिलकराजत अकलंकित मृगमद अंक बनी। खुभी
नजराय फूलदुति यों मनों दुर्द्धर गति गजनी ॥ भौंह कमान समान वान मनो द्वै युग नैनअनी ।
नासा तिलक प्रसून बिंबधर अमल कमल वदनी ॥ चिबुक मध्य मेचक रुचि राजति बिंद
कुंद रदनी । कंचु कंठ विधि लोक विलोकत सुन्दरि एक गनी ॥ बाँह मृणाल लाल कर पल्लव
मद गज गति गवनी । पतिमन मणि कंचन संपुट कुच रोमराजि तटनी ॥ नाभि भँवर त्रिवली
तरंग गति पुलिन तुलिन ठटनी । कृशकटि पृथु नितंब किंकिनि युत कदलिखंभ जघनी ॥
रचि आभरण शृंगार अंग सजि रतिपति ज्यों सजनी । जीते सूर श्याम गुण कारण मुख न मुरघो
लजनी॥राग बिलावल॥नँदनंदन वश कीन्हेराधा भवनगए चित नेक नलागत।श्यामाश्याम रूपम-
दिर सुख अंतरते सो नेकु न त्यागत॥जा कारण बैकुंठ विसरगत निज अस्थल मनमें नहिंभावत।
राधा कान्ह देह धरि पुनि पुनि या सुखको वृन्दावन आवत॥ विछुरन मिलन विरह सुख नवतन
दिन दिन प्रीति प्रकाशत । सूर श्याम श्यामा विलासरस निगम नेति नित भाषत ॥ ॥राग टोड़ी॥
निगम नेति नेति गावतहैं जाको । राधा वश कीन्हींहै ताको ॥ निशि वनधाम संग रहे दोऊ ।
एकै संग नेक टरे न कोऊ ॥ प्रात गए घर घर रस पागे । अरस परस दोऊ अनुरागे ॥ अपनी
अपनी दशा विचारे । भाग बडे कहि वारवारे ॥ प्यारी फेरि अभूपण साजति । बैठी रंगमहलमें
राजति ॥ज्यों चकोर चंदाको आतुर। त्यों नागरि वश गिरिधर चातुर॥आये उझकि झरोखे
झाक्यो । करत शृङ्गार सुंदरी ताक्यो ॥ जालरंध्र मग नैनलगायो।सूरश्याम मनको फलपायो॥
रागभैरों॥आधोमुखनीलांवरमोढ़ोकिविथुरीअलकें सोहैं॥एकदिशा मनोमकरचांदिनीएक दिशा
सघन बीजरी ऐसे हरिमन मोहै॥कबहुँककरपल्लवनसोकेशनिरुवारतिपाछे लेडारतिनिकसनशशि
संपूरण सन्मुख जब जोहै । सूरदास प्रभु यह छवि न्यारे दुरिदेखतहैं त्रिभुवनमें उपमा कोकोहै॥
राग टोड़ी॥एक कर दर्पण एक कर अंचरा कजराहि सँवारति ललना मुखकालिम दूरि करतिहै
उलटि भँवर फिरि कमल परत । शीशफूल अतिराजत नगनिजड्यो ताकी उपमाकहे शेषशीश
मणि मनो धरत ॥ करनफूल करननिहिं सँवारति अलकें निरवारति वदन बिंदु ललाट धरत ।
सूर श्याम दुरिदेखत दर्पणको मुख यकटकते पलकहु न टरत ॥राग शुद्धमलार ॥करति शृंगार वृप-
भानु वारी। रहे यकटक जाल रंध्र मग हेरिकै श्याम मन भावती परमप्यारी ॥ कबहुँ वेनी
रचति फूलसों मिले कच कबहुँ रचि मांग मोती सँवारै। कबहुँ राखति शीशफूल लटकाइकै
कबहु वदन बिंदु भाल भारै ॥ कबहुँ केसारे आड रचति दर्पण हेरि कबहुँ भ्रूनिरखि रिसकरि
मरोरै । निरखिअपनो रूप आपुहीविवश भई सूर परछाँहको नैनजोरै ॥ राग टोड़ी॥इह सुदरी
कहाते आई । बार बार प्रतिबिंब निहारति नागरि मन मन रही लुभाई ॥ करते मुकुर दूरि
नहिं डारति हृदय मांझ कछु रिस उपजाईदेखे कहू नैन भरि याको नागर सुदर कुँवरकन्हाई॥
मेरी कहा चलै या आगे यह धौं आज्ञु अरसते आई । सूरदास याको या ब्रजमें ऐसी को
वैरनि जो ल्याई ॥ राग हमीर॥मुकुर छाह निरखि देहकी दशा गँवाइ।बोली धौं कौनेकीआपुनही
गमन कियो ऐसीको वैरनिहै या ब्रजमेंमाइ ॥विथकी अंगअंग निरखि वारवारहै परखि ललिता
चन्द्रावलि कहँ इतनी छविपाइ । मनमें कछु कहन चहै देखतही ठठुकिरहै सूर श्याम निरखत द्युति

तनु सुधि विसराइ॥राग बिलावल॥कहति छाँहसोंनागरी कोहैतू माई।मिली नहींब्रजगाँवमेंरी कहो कहां ते आई॥नाम कहहै सुंदरी कहि सोंह दिवाई।कहो न मेरे साथहै मुख वचन सुनाई॥दिननि हमहूँ तुम सखरी तुव छवि अधिकाई। और संग नहिं कोउ लई यह कहि डरपाई॥ जानति हौं यह नहिं सुनी ह्यांकी अधमाई। अभरन लेत छिडाइकै ब्रज ढीठ कन्हाई॥ सदन जाहु मेरे कहे पटु अंग छपाई। सूर श्याम जो देखिहै करिहै बरिआई॥राग धनाश्री॥मैं उनके गुण नीके जानति।सदन जाहु मर्यादा जैहै कह्यो न काहे मानति॥अपनी दशा कहौं तो आगे जैसीविपति बनाइ। मथुरा चली जाति दधि बेचन घेरि लई इन आइ॥ गोरस लियो अभूपण छीन्यो तुम एक हम अनेक। सूर श्याम जो देखन पैहै करिहै अपनी टेक॥ राग बिलावल॥ तेरे हित को कहतिहों मानो जिनि मानो।तू आई हैआजुहीउनको का जानो॥ऐसो ढीठ नहीं कहूंत्रिभुवनमें माई। नारिपराई देखिकै हँसि लेत बोलाई॥ सो अपने सहजहि मिलै उनके गुण ऐसे। भूपण लेत मँगाइके औरौ गुण नैसे॥ काहू को नहिं डरपही मथुरापति घरके। मनको भायो करत हैं कबहूं नहिं हरकै॥ तुम सुंदरि काकी वधू घर जाहु सवारी। सूर श्याम सुनि सुनि हँसैं मनही मन भारी॥राग मारू॥ नागरी चरित पिय चकित भारी। अंगकी छबि निरखि प्रथमही विवस ह्वै प्रतिबिंब निरखत देह सुधि विसारी॥एक राधा दूसरी वाहि जानि जिय नागरी पास आवत लजाही।नैन ठहराइ ठहराइ पुनि पुनि रहै कहै नहिं कछू हरपत डराही॥ पुनि उठत जागि देखै मुकुर नारि कर ललचात अंकभरि लैन लोरै। सूर प्रभु भावतीके सदा रसभरे नैन भरि भरिप्रिया रूप चोरै॥राग गुंडमलार॥धन्य हरि नैन धनि रूपराधा। धन्य वह मुकुर धनि धन्य प्रतिबिंब मुख धन्य दंपति रहतिभेपआधा॥धन्यशृंगारधनिधन्यनिरखनि श्याम धन्य छवि लूटि लूटत मुरारी। सूर प्रभु चतुर चतुरी नवल नागरीरहै प्रतिबिंब पर नैन जोरी॥ रागकेदारो॥ श्यामाजू आपनोरूपदेखिरीझिरीझि नेकहु दर्पण दूरि नकरति। अपनी छवि जु निहारति अपनों तन मन वारति विवस ह्वै प्रतिबिंब के पांइन परति॥कबहूँ श्यामकी सकुच मानति यह जिय अनुमानति यासों जिनि प्रीति करै एही डर डरति। सूरदासप्रभुप्यारी-की छवि निरखत न्यारे ह्वै दृष्टिन इतउत टरति॥राग आसावरी॥नाम काहसुंदरी तुम्हारो क्यों मो-सो नहिं बोलति हौ। हँसे हँसति चितएचितवति तुम तनु डोलै तनु डोलति हो॥ परमचतुर मैं जानति तुमको मोपर भौंह मरोरति हौ। लटकति सुभग नासिका वेसरि पुनिपुनि बदनसकोरति हौ॥ अरुन अधर चित हरन चिबुक अतिदामिनि दशनलजावति हौ। ऐसे वचनसुखकीमाधुरी काहे न हमहि सुनावति हौ॥ कहो वचन काकी तुम घरनी काकेमनको चोरति हौ। सुनहु सूर सहजहि कीधौं रिस मोसोंलोचनजोरति हौ॥राग सोरठ॥ कछुरिस कछु नागरि जियधरकी। यह तो जोबन रूप गहीली शंकन मानति हरकी॥यह विपरीत होनहै चाहत ब्रज यह आयसुमानी।यह तौ गुणनि उजागरि नागरिवैतो चतुरबिनानी॥कर दर्पण प्रतिबिंब निहारति चकित भई सुकुमारी। सूर श्यामअंगनिरखतवा छवि मगननागरिभोरीभारी॥राग बिलावल॥ सुताविवसवृपभानुकी देखी गि-रिधारी। लोचन यकटक दैरही प्रतिबिंब निहारी॥ अपनी छविपर आपनो तनमनधन वारै। वारवार हाहा करै त्रिय नाम न सारै॥ बूझति ताको कौन तू को है री प्यारी। मैं देखी तौआजु-ही सुंदरि गुणभारी॥ त्रिभुवन में कोऊ नहीं तेरी उपमा री। यह कहि सुख मन सोचई भई सौति हमारी॥ दृष्टि परै जिनि श्यामके तबही वश ह्वैहै। सोच करै पछिताति है सँगही

संग रहे ॥ ऐसी सुंदरि नारिको जबहीं वे पैहे । दोउ भुज भरि अँकवारि के हँसि कंठ लगैहे ॥॥ यह बैरिनि मोको भई यों कहते आई। मोतन यकटक हेरई मैं रहीलजाई॥ श्यामहि वश करिलेइगी मैं जानी भाई । देखि दशा यह बामकी प्रतिबिंब भुलाई ॥ इकटक नैन टरै नही छविकी अधिकाई। पिय हरषे आनंद भरे शोभा यह पाई ॥ कबहुँ चलत त्रिय पामको फिरि रहत लुभाई। सूरश्याम तृण तोरही मनमन मुसुकाई ॥ राग बिहागरो ॥ नागरि रही मुकुर निहारि । आनि औचक नैन मूँदे कमल कर गिरिधारि ॥ चौंक चकृत भई मनमें श्यामको जिय जानि। मैं डरतिही अबहिं जाको मिले ताको आनि ॥ तबहिं तनुकीसुरति आई लख्यो तनु प्रतिछाहिं। सकुचि मनहीमन दुरावति परस्पर मुसुकाहिं ॥ समुझि चितमें कहति सखिअनि विपुल लेल नाम । सूर प्रभु उर शीश परसे बीच बेनी श्याम॥ राग बिहागरो ॥ मूँदिरहे पिय प्यारी लोचन। अति हित बेनी उर परसाए वेष्टित भुजा अमोचन॥ कंचनमणि सुमेर अँग दोऊ शोभा कहीनजाइ। मनो पन्नगी निकसि ताबिच रही हाटक गिरि लपटाइ ॥ चपलनैन दीरघ अति सुंदर खजनते अधिकाई । अति आतुर भयकारण धाई धरती कनन समाई॥ मन हरषति मुख रिझति सखिन कहि चतुर चतुरई भाव । सुर श्याम मनकामनके फल लूटतहै एहि दाव॥ राग रामकली॥ करत मन-काम फल लूटिदोऊ। रहे दोउ नैन पिय मूदि कोमल करनि बरनि नहिं सकत नह उपम कोऊ ॥ हृदय भरि वाम सुखधाम मोहन काम मनो घन दामिनि झकोर लीन्हें ॥ महा आनंद सुखसिंधु उछलत दोऊ सूर प्रभु नागरी तुरत चीन्हें॥ राग कान्हरो ॥ बैठी रही कुंवरि राधा हरि अँखिया मूंदी आइ। अतिहि विशाल चपल अनियारे नहिं पिय पानि समाइ॥ तन खोलत खन ढांकतना गरि मुख रिस मन मुसुकाइ । ज्यों मणि धर मणि छांडि बहुरि फिरि फन तर धरत छपाइ ॥ श्याम अगुरिअनि अतर राजत आतुर दुरि दरशाइ । मानो मरकतमणि पिंजरनिमें बिनि खंजन अकु-लाइ ॥ कर कपोल विच सुभग तरौना शोभा बढी सुभाइ । मनो सरोज द्वै मिलन सुधानिधि विवि रवि संग सहाइ ॥ अपने पानि पकरि मोहनके कर धरि लिए छिडाइ । कमल चकोर चचरि जनु द्वै शशि दिनकर जुरति सगाइ ॥ उपमा काहि देउ को लायक देखी बहुत बनाइ । सूरदास प्रभु दंपति देखत रतिसों काम लजाइ ॥ राग गुंडमलार॥ श्यामभुज वाम गहि सन्मुख आने । भले ज भले मैं सखी धोखे रही रहे लोचन मूँदि अति करपिराने ॥ दौरि पैठे भवनकहि कबहिं कीन्हो गवन नारि मनरवन तुमहो कन्हाई । सूरप्रभु हरषि प्यारी अंक भरिलई मुकुरकी कथा तब कहि सुनाई ॥ राग गूजरी॥ नागरि यह सुनिके मुसकानी । को जानै पिय महिमा तुम्हरो नैननि चितै लजानी ॥ मैं बैठी प्रतिबिंब बिलोकति अपने सहज सुहाइ । आपुन कहो अचानक आये तुव गति लखी न जाइ॥ इक सुन्दरदूजे अति नागर तीजे कोकप्रवीन। सूरदास प्रभु अबहो तौ तुम यशुमति सुवन नवीन ॥ रागबिलावल॥ हँसत चले तब कुँवर कन्हाई । मनके करे मनोरथ पूरण राधाके सुखदाई ॥ उत हरषत हरि भवन सिधारे नागरि हरष बढाई । जब आवत सुधि मुकुर बिलोकनि तब तब रहति लजाई ॥ यहि अंतर सखियन सँगलीन्हें चद्रावलि तहँ आई। सूर तुरत राधिका सबनिको आदर करि बैठाई॥ राग रामकली ॥ अति आदरसों बैठक दीन्हों। मेरेगृह चद्रावलि आई अतिही आनँद कीन्हो॥ श्याम सग सुख प्रगट्यो चाहति पुनि धीर-ज धरि राखति । जोइ जोइ कहति वचन गदगदसो बारबार मुख भाषति॥ सखी सगकी कहति राधिका आजु कहा तें पायो। सुनहु सूर इतने आदरसो कबहु नही बोलायो ॥ राग आसावरी॥ हम

तेरे नितही प्रति आवैं सुनहु राधिका गोरी हो ।ऐसो आदर कबहुँ न कीन्हों मेरी अलकसलोरी हो॥काहे आजु हरष जिय उपज्यो कहा विभव तुम पायो हो। कीधौं आजु मिले नँदनंदन पछिलहु दुख बिसरायो हो॥उमँग्यो प्रेम रहत नहिं रोके सखियन कहति सुनावै हो । सूर श्याम मेरे भवन पधारे यह कहिकहि मन भावै हो॥ राग बिहागरो॥ आये श्याम अबहिं मेरे गेह।कही जाति न सखी मोपै मिले जौन सनेह ॥ करति अंग शृंगार बैठी मुकुर लीन्हें हाथ । आइ पाछे भए ठाढे चतुर वर ब्रजनाथ ॥ भाव इक मैं कियो भोरे ताहि कहत लजाउँ। निरखि अपनी छाँहको प्रिय और जानि डराउँ ॥ जालरंध्रनि रहे ठाढे निरखि कौतुक श्याम।नैन औचक आनि मूँदे सुनहु हरिके काम ॥ देतिहौं उरहनों तुमको भये डोलत चोर। सूर प्रभु आये अचानक भवन बैठी भोर॥ राग बिलावल ॥श्याम संग सुख लूटति हौ।सुनि राधे रीझे हरि तोको अब उनते तुम छूटति हौ॥ भली भई हरिके रस पागी वे तुमसों रति मानतहैं।आवत जात रहत घर तेरे अंतरही पहिचानत हैं ॥ तुम अति चतुर चतुर वे तुमते रूप गुणनि दोउ नीके हो।सूरदास स्वामी स्वामिनि दोउ परमभावते जीके हो॥राग अडानो॥ भलेही मेरे लालन आये री आजु मैं फूली अंग न समाई। गाऊं बजाऊं रसप्रेम भरि नाचौं तन मनधन न्यवछावर करि डारों एहि विधि करति बधाई॥धनि धनि भाग धनिधनि री सुहाग धनि अनुराग धनि धन्य कन्हाई ।धनि धनि रैनि धनि धनि दिन जैसो आजु धनि घरी धनि पल धनि धनिधनिमाई॥धनि गेह धनिदेहधनि री शृंगार वह धनि प्रतिबिंब धनि रहीमैं भुलाई। धनि धनि सूरप्रभु धनि अवलोकनि धनि नैन मूँदे कर धनिधनि पिय सुखदाई॥राग ईमन॥बनि बनि आवत हैं लाल भाग बडेरो मेरे।दरश देखनको अति सुखउपजतऔर सन्मुख जब हेरे॥तब मैं हँसति जब मंद मुसुकात वे आनंद मानि पियआवत नेरे।सूरदास प्रभुकी सुरतिहैमहारसालटरतिनसांझसवेरे॥राग ईमन॥ श्यामअचानकआए री।पाछेतेलोचनदोउमूँदेमोको हृदय लगाए री ॥ लहनो ताको जाके आवै मैं बडभागिनिपाए री।यह उपकार तुम्हारोसजनीरूसे कान्ह मिलाए री ॥ ल्याइ तुरत जादिन तू हरिको मैं अपराध क्षमाए री। सूरदास प्रभु नैननि लागे भावत नहिं बिसराए री॥अथ नैननि समयके पद॥राग थोडी ॥हरि अनुराग भरी ब्रजनारी । लोक सकुच कुलकानि बिसारी॥सासु ननँद हारी देगारी।सुनत नहीं कोउ कहत कहारी॥सुत पति नेहजगत इहजान्यो।ब्रजयुवती तिनुकासो मान्यो॥काचो सूततोरिसो डारयो।उरगकंचुकी फिरि न निहारयो॥ज्यों जलधार फिरे पुनिनाहीं।जैसेनदीसमुद्रसमाहीं॥जैसेसुभट खेतचढिधावै।जैसे सती बहुरि नहिं आवै ॥ऐसे भजी नंदनंदनको । सकुची नहिं त्यागत गृह जनको ॥ सूरज प्रभु सब घोषकुमारी । ज्यों गज पंक न सकें निवारी ॥ राग सोरठ॥ एहिअंतर तेहि खोरिहीनँदनंदन आए। सखिन सहित ब्रजनागरी पल बिनु टकलाए॥ मोर मुकुट शिरसोहई श्रवणनि वर कुंडल । ललित कपोलनि झलमले सुंदर अति निर्मल ॥ तरुनि गई चकचौंधिकै नहिं नैन थिराही ॥सूरश्याम छबि निरखिकै युवती भरमाही ॥ राग सोरठ ॥ देखो श्याम अचानक जात । ब्रजकी खोरि अकेले निकसे पीतांबर कटिपर फहरात ॥ लटकत मुकुट मटक भौंहनिकी चटकत चलत मंद मुसुकात । पग द्वै जात बहुरि फिरि हेरत नैन सैन देकै नँदतात॥ निरखत नारि निकर विथकित भए दुख सुख व्याकुल झुलति सिहात । सूर श्याम अँगअंग माधुरी चमकि चमकि चकचौंधत गात ॥ राग सोरठ ॥ सघन कल्पतरुतर मनमोहन । दक्षिण चरन चरनपर दीन्हें तनु त्रिभंग मृदु जोहन ॥ मणिमय जडित मनोहर कुंडल शिखी चंद्रिका शीश रही फबि। मृगमद तिलक अलक

घुँघरारी उर बनमाल कहौं जो वे छबि ॥ तनु घन श्याम पीत पट शोभित हृदय पदिककी पांति दिपत दुति । वन तनु धात विचित्र विराजित वंशी अधरनि धरे ललित गति ॥ कञ्ज मुद्रिका कर कंकन छबि कटि किंकिणि नूपुर पग भ्राजत । नख शिख कांति बिलोकि सखी री शशि औ भान मगन तनुलाजत॥नखशिख रूप अनूप बिलोकति नटवर भेष धरे जु ललित अति। रूपराशि यशुमतिको ढोंटा वरणि सकै नहिं सूर अलपमति ॥राग सोरठ॥लोचन हरत अंबुज मान। चकित मन्मथ शरन चाहत धनुष तजि निज बान॥ चिकुर कोमल कुटिल राजत रुचिर विमल कपोल। नील नलिन सुगंध ज्यों रस थकित मधुकर लोल । श्याम उर पर परम सुंदर सजल मोतिन हार। मनो मर्कत शैलते बहिचली सुरसरि धार ॥ सूर कटि पट पीत राजत सुभग छबि नँदलाल। मनो कनकलता अवलि विच तरल विटप तमाल ॥ राग रामकली॥मोहन माई री हठकरि मनहि हरत। अंग अंग प्रति और और गति अतिही छवि जु धरत ॥ सुंदर सुभग श्याम कर दोऊ तिनसों मुरली अधर धरत । राजत ललित नील कर पल्लव उभे उरग मनो सुभट लरत॥ कुंडल मुकुट भाल भ्रुव लोचन मनों शरद शशि उदै करत। सूरदास प्रभु तनु अवलोकत नैन थकेइत उत न टरत॥राग रामकली ॥ मन तो हरिही हाथ बिकानो। निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो॥नैननि साँटि करी मिलि नैननि उनहींसों रुचि मानो । बहुत जतन करि हौं पचिहारी इतको नहीं फिरानो । सहज सुभाइ ठगौरी डारि शीश फिरत अरगानो॥सूरदास प्रभु रसबश गोपी बिसरि [illegible] गये नैन हैं मेरे । अब इनसों बहि भेद कियो कछु एउ भए [illegible] नोको येऊ दिन मिलि घेरे।क्रमक्रम गए कछो नहिं काहू श्याम संग अरुझे रे॥ज्यों दीवाल गिले पर-कारक डारतही युग डेरे । सूर लटकि लागे अँग छबि पर निठुर न जात उखेरे॥ राग बिलावरी॥ सजनी मनहिं अकाज कियो।आपुन जाइ भेद करि हमसों इन्द्रिन्ह बोलि लियो॥मैं उनकी करनी नहिं जानी मोसों वैर कियो॥जैसे करि अनाथ मोहिं त्यागी ज्यों त्यों मानि लियो॥अब देखौ उनकी निठुराई सो गुनि मरति हियो॥सूरदास ए नैन रहे हैं तिनहू कियो वियो ॥राग बिलावरी ॥ मेरे जिय इहई सोच परयो॥मनके ढंग सुनो री सजनी जैसे मोहिं निदरयो॥आपुन गयो पंच सँग लीन्हें प्रथमहि इहै करयो । मोसों वैर प्रीति करि हरिसों ऐसी लगनि लरयो॥ज्यों त्यों नैन रहे लपटाने तिनहूँ भेद भरयो॥सुनहु सूर अपनाइ इनहूँको अवलौं रह्यो डरयो॥राग गौरी॥मन बिगरयो ए नैन बिगारे। ऐसो निठुर भयो देखौ री तब ए मोतें टरत न टारे॥इन्द्री लई नैन अब लीन्हें श्यामहि गीधे भारे।ए सब कहौ कौनके मेरे खानाजाद विचारे॥इतनेते इतनेमें कीन्हें कैसे आजु विसारे। सुनहु सूर जे आप स्वारथी ते आपुनही मारे॥राग गौरी॥आपु स्वारथीकी गति नाहीं॥विधिना ह्यां काहे अवतारे युवती गुनि पछिताहीं॥जनमें संग संग प्रतिपाले संगहि बडेभए॥जबउनको आसरो कियो जिय तबहीं छोडि गए॥ऐसेहैं एस्वामिकारजी तिनको मानतश्याम। सुनहुसूरअब परगट कहिये ऐसेउनके काम॥राग कान्हरो॥ हमते गए उनहूते खोवें। ह्यांते खदिदेहिं वे हमतनहम उन तन नहिंजोवें॥जैसी दशा हमारी [illegible] रोवें॥आवहु इहै मतोरीकरिए नि [illegible]

राग धनाश्री ॥मनके भेद नैन गए माइ ।लुब्धे जाइ श्यामसुन्दर रस करीनकछू भलाई॥जबहीं श्याम अचानक आए इकटक रहे लगाई । लोक सकुच मर्यादा कुलकी छिनहीमें बिसराई॥ व्याकुल

फिरति भवन वन जहँ तहँ तूल आक उधराइ । देह नहीं अपनीसी लागति यह है मनो पराइ॥ सुनहु सखी मनके ढँग ऐसे ऐसी बुद्धि उपाइ। सूर श्याम लोचन वश कीने रूप ठगोरी लाइ॥ राग नट॥ नैन न मेरे हाथ रहे। देखत दरश श्यामसुंदरको जलकी ढरनि वहे ॥ वह नीचेको धावत आतुर ऐसेहि नैन भए वहतौ जाइ समात उदधिमें ए प्रतिअंग रए ॥ वह अगाध कहुँ वार न पार न एउ शोभा नहिं पार। लोचन मिले त्रिवेनी ह्वैके सूर समुद्र अपार॥ राग बिहागरो॥ मनते ए अति ढीठ भए। वे तो आइ बोलते कबहूं एउ गए सुगए॥ ज्यों भुवंग काँचरी बिसारत फिरि नहिं ताहि निहारत। तैसेहि जाइ मिले इकटक ह्वै डरत लाज निरवारत॥ इंद्रिन सहित मिल्यो मन तबहीं नैन रहे मोहिं शालत । सूर श्याम सँगही सँग डोलत औरनिके घर घालत॥ राग सोरठ॥ लोचनगए निदरिकेमोकों। तोहूको व्यापी री माई कहा कहतिहै मोकों ॥ मैं आई दुख कहन आपनी तेरे दुखअधिकारी। जैसेदीनदी-नसों याचै वृथा होइ श्रम भारी॥ मन अपनो वश कैसेहुँ कीजै याहीते सचुपावै । सूरदास इंद्रिन समेत अरु लोचन अबहिं मँगावै॥ राग गौरी॥ नैना नीके उमहि रहे। मन जब गयो नहीं मैं जान्यो ए दोउ निदरि गहे ॥ एतौ भए भावते हरिके सदा रहत इनमाहीं । कर मीडति शिर धुनति नारि सब यह कहि कहि पछिताहीं ॥ मूरखके ज्यों बुद्धि पाछिली हमहूं करि दियो आगे। अबतो मिले सूरके प्रभुको पावतिहो अब मांगे॥ राग पूरबी॥ नैना नहिं आवैं तुव पास। कैसेहूं करि निकसे ह्यांते अतिही भए उदास ॥ अपने स्वारथके सब कोई मैं जानी यह बात। यह शोभा सुख लूटि पाइकै अब वै काहि पत्यात ॥ षटरस भोजन त्यागि कहोको रूखी रोटी खात। सूरश्यामरसरूपमाधुरी एतेपर न अघात॥ राग जैतश्री॥ नन परे रस श्याम सुधामें। शिव सनकादि ब्रह्मनारदमुनि एलुब्धेहैं जामें॥ ऐसो रस विलास नाना विधि खात खवावत डारत। सुनहु सखीवैसी निधितजिकैक्यों वै तुमहि निहारत ॥ जिनि वह सुधापान सुख कीन्हों ते कैसे कटु देखत। त्यों ए नैनभए गर्वीले अब काहे हम लेखत ॥ काहेको अपसोचमरतिहो नैन तुम्हारे नाहीं। मिले जाइ सूरजके प्रभुको इत उत कहूं न जाहीं॥ राग भैरव ॥ नैनपरेहरिपाछेरी। मिलि अतिहिअतुराइ श्यामकोरीझनटवरकाछेरी॥ निमिष नहीं लागत इकटकही निशिवासर नहिं जानत री। निरखत अंग अंगकी शोभा ताही पर रुचि मानत री ॥ नैन परे परवश री माई उनको इनि वश कीन्हे री। सूरज प्रभु सेवा करि रिझए उन अपने करि लीन्हे री॥ राग कल्याण॥ नैना हरि अंगरूप लुब्धे री माई। लोकलाज कुलकी मर्या-दा बिसराई॥ जैसे चंदा चकोर मृगीनाद जैसे। कंचुरि ज्यों त्यागि फनिग फिरत नहीं तैसे॥ जैसे सरिताप्रवाह सागरको धावै। कोऊ श्रम कोटि करै तहां फिरि न आवै॥ तनुकी गति पंगुकि-ए सोचति ब्रजनारी। तैसेई मिले जाइ सूरजप्रभु ढारी॥ राग कल्याण॥ लोचन भए श्याम वश्यकहा करौं माई री । जितही वे चलत ततहि आपु जात धाई री॥ मुसुकनि दै मोललिए किए प्रगट चेरी। जोइ जोइ वे कहत करत रहत सदा नेरी॥ उनकी परतीत श्याम मानत नहिं अजहूं। अलकनि रजुबांधि धरे भाजे जिनि कबहूं॥ मन लै इन उनहि दयो रहत सदा सँगही। सूर श्याम रूप राशि रीझे वा रँगही॥ राग बिहागरो ॥ नैना भए बजाइ गुलाम। मन बेच्यो लै वस्तु हमारी सुनहु सखीएकाम ॥ प्रथम भेद करि आयो आपुन माँगि पठायो श्याम। बेचि दिये निधरक हरि लीन्हें मृदुमुसुकनि दै दाम ॥ यह वाणी जहँ तहँ परकाशी मोल लिएको नाम । सुनहु सूर यह दोष कौनको यह तुम कहो न वाम ॥ रागमारू ॥ कियो वह भेद मन और नाहीं। पहिलेही जाइ हरिसों कियो भेद वहि और वे काज कासों बताहीं ॥ दूसरे आइके इन्द्रियनि लैगयो ऐसे अपदाँव सब इनहिं

कीन्हें। मैं कह्यो नैन मोको संग देहिंगे इन्हहुँ लै जाइ हरिहाथ दीन्हें ॥जोकहूं कछु सो मनहिं-सो कहि रहे इहां कछु श्यामको दोष नाहीं । सूर प्रभु नैन लै मोल अपनग किए आपु बैठ ग्हन तिनहि माही ॥ राग बिलावल ॥ कहाभए जो ऐसे लोचन मेरे तोकछु काजनहीं। मैंतोव्याकुलभई पुकारति वे सँग लै जु गए मनहीं ॥ त्रिभुवनमें अति नाम जगायो फिरत श्याम सगही सँगहीं । अपने सुखको कहा चाहिये बहुरि न आए मोतनही ॥सो सुप्रन परिवारचलावे एतौलोभीधृग इनही । एते पर ए सूर कहावत लाज नहीं ऐसे जनही ॥ राग कान्हरो॥इनबातन कहु होत बडाई। लूटतहैं छबिरासि श्यामकी मनो परी निधि पाई ॥ थोरेहीमें उघरि परेंगे अतिहि चले इतराई। डारत खात देत नहिं काहू वोछे घर निधि आई॥ यह सपतिहैं तिहूं भुवनकी सबै इनहि अपनाई। धोखे रहत सबके स्वामी काहू नहीं जनाई॥राग बिलावल॥नैन परे हैं बहुलूटनिमें में नोगेनिधिपाए। छोह लगत वह समुझिके इन हमहिं जिवाए ॥ इनके नेक दया नहीं हम पर रिस पावै । श्याम अक्षयनिधि पाइके तउ कृपण कहावें ॥ ऐसे लोभी ए भए तब इनहि न जान्यो । सगहि सग सदा रहें अतिहित करि मान्यो ॥ जैसी हमको इन करी यह करै न कोई । सूर अनल कर जो गहै डाढै पुनि सोई॥राग कान्हरो ॥नैन आपने घरके री।लूटन देहु श्याम अँग शोभा जो हम-पर वे तरके री॥यहजानी नीके कर सजनी नहीं हमारे डरके री । वे जानत हम मरि को त्रिभुवन एसे रहत निधरके री ॥ ऐसी रिस आवत है उन पर करें उनहि घर घरके री। सूर श्यामके गर्व भुलाने वे उनपर है ढरके री॥राग गौरी॥ नैना कह्यो न मानें मेरो।मो बरजत बरजत उठिधाए बहुरि कियो नहिं फेरो ॥ निकसे जलप्रवाहकी नाईं पाछे फिरि न निहारयो । भवजजाल तोरि तरुनके पछवरदय बिदारयो ॥ तबहीते यह दशा हमारी जब एउ गए त्यागी। सूरदास प्रभु-सो पै लुब्धे ऐसे बड सभागी ॥ राग टोडी ॥ इन नैननि मोहिं बहुत सतायो। अबलौंकानिकरीमें सजनी बहुतै मूड चढायो ॥ निदरे रहत गहे रिस मोसों मोही दोषलगायो। लूटत आपुन श्री अँग शोभा मनो निधनि धन पायो॥ निशदिन ए करत अचगरी मनहि कहा धौंआयो। सुनहु सूर इनको प्रतिपालन आलस नेक न आयो ॥ राग रामकली ॥ लोचन भए श्यामकेचेरे। एते पर सुख पावत कोटिक मो तन फेरि न हेरे ॥ हाहा करत मरत हरि चरणन ऐसे वश्य भए उनही ।उन-का बदन बिलोकत निशि दिन मेरो कह्यो न सुनही॥ ललित त्रिभंगी छबि पर अटके फटके मो-सों तोरि ।सूरदशा यह मेरी कीन्हीआपुनहरिसोजोरि॥राग धनाश्री ॥हरिछबि देखिनैनललचाने। इकटक रहे चकोर चद ज्यों निमिष बिसरि ठहराने ॥ मेरो कह्यो सुनत नहिं श्रवनन लोक-लाज न लजाने । गये अकुलाइ धाइ मो देखत नेकहु नहीं सकाने ॥ जैसे सुभटजातरणसन्मुख लडत न कबहुँ पराने। सूरदास ऐसी इन कीनी श्याम रग लपटाने॥राग गुडमलार॥नैनतोकहेमेंनहीं मेरे । बारही बार कहि हटकिगरहति निकसिगये हरिसगनहिं रहे घेरे ॥ ज्यो व्याध फदते छूटत खग उडिचलत तहां फिरि तकत नहिं ग्राम माने। जाइ बन द्रुमनिमें दुरत योंहीगये श्यामतनु रूप बनमें समाने ॥ पालि इतने किए आज उनके भए मोल करिलए अब श्याम उनको। सूर यह कहति ब्रजनारि व्याकुल प्रेम नैन लैगये पछितात मनको ॥ राग जैतश्री ॥ नैना हाथ न मेरे आली। इतहै गये ठगोरी लावत सुदर कमलनैन बनमाली ॥ वे पाछे ए आगे धाये मैं बरजत बरजत पचिहारी । मेरे तन ह्वै फेरि न चितए आतुरता वह कहौंकहा री ॥ जैसे बरत भवन तजि भजिए तैसेहिगये फेरिनहिंहेरयो।सूरश्यामरस रसे रसीलेपयपानीकोकरैनिबेरयो॥राग रामकली॥

श्याम रँग रँगे रँगीले नैन। धोए छुटत नहीं यह कैसेहु मिलैं पघिलि ह्वै मैन॥ औचकही आँगन ह्वै निकसे दै गये नैननि सैन। नख शिख अंग अंगकी शोभा निरखि लजत शत मैन॥ ए गीधे नहिं टरत वहांते मोसों लैन न देन। सूरज प्रभुके सँग सँग डोलत नेकहु करत न चैन॥ राग ईमन ॥नैन भए हरिहीके री। जबते गए फेरि नहिं चितए ऐसेगुण इनही-के री॥ और सुनौ उनके गुण सजनी सोऊ तुमहिं सुनाऊं री। मोसों कहत तुहूं नहिं आवे सुनत अचंभो पाऊं री॥ मन भयो ढीठ इनहिके कीन्हे ऐसे लोन हरामी री। सूरदास प्रभु इनहिं पत्याने आखिर बडे निकामी री॥ राग बिलावल॥नैन लुब्धे रूपको अपने सुख माई। अपराधी अपस्वारथी मोको बिसराई॥मन इंद्री तहँई गए कीन्ही अधमाई।मिले धाइ अकुलाइकै मैं करति लराई॥अति-हि करी उन अपतई हरिसों समताई। वे इनसों सुख पाइकै अति करत बडाई॥अब वे भरुहाने फिरैं कहुँ डरत न माई। सूरज प्रभु मुँह पाइकै भए ढीठ बजाई॥ राग सारंग॥ढीठ भए ए डोलत हैं मौन रहत मोपर रिसपाइ हरिसों खेलत बोलत हैं॥ कहा कहौं निठुराई उनकी सपनेहुँ ह्यां नहिं आवत हैं। लुब्धे जाइ श्याम सुंदरको उनहीके गुण गावत हैं॥ जैसे उन मोको परतेजी कबहूं फिरि न निहारत हैं। सूर भलेको भलो होइगो वे तो पंथ बिगारत हैं॥ राग बिलावल॥ सुन सजनी तू भई अयानी। या कलियुगकी बात सुनाऊं मैं तोहिं जानति बडी सयानी॥जो तुम करौ भलाई को-टिक सो नहिं मानै कोई। जे अनभले बडाई ताकी मानै जोई सोई॥ प्रगट देखि कहुँ दूरि बताऊं हमहूँ श्यामको ध्यावैं। सुनहु सूर सब व्याकुल डोलैं नैन तुरत फल पावैं॥ राग बिलावल॥नैन करैं सुख हम दुख पावैं। ऐसो को परवेदन जानै जासों कहि जु जनावैं॥ ताते मौन भलो सबहीते कहिकै मान गँवावैं।लोचन मन इन्द्री हरिको भजि तजि हमको रिस पावैं॥ वे तौ गए आपने करते वृथा जीव भरमावैं। सूर श्याम हैं चतुरशिरोमणि तिनसों भेद सुनावैं॥ राग धनाश्री॥ इन नैननि-की कथा सुनावैं। इनको गुण अवगुन हरिआगे तिन लै भेद जनावैं॥ इनसों तुम परतीत बढ़ा-वत ए हैं अपने काजी। स्वारथ मानिलेत रति करिकै बोलत हांजी हांजी॥ ए गुण नहिं मानत काहूको अपने सुख भरिलेत। सूरज प्रभु ए ऐसेहैं सब फिरि पाछे दुख देत॥ राग सोरठ॥ये नैनायों आहिं हमारे। इतनेते इतने हम कीन्हें वारेते प्रतिपारे॥ धोवति पुनि अंचल लै पोछति आंजति इनहिं बनाई। बडे भए तबलों न मानि यह जहं तहं चलत भगाई॥ ऐसे सेवक कहां पाइ-हौ इहै कहै हरिआगे। ए अब ढीठ भये ह्यां डोलत इनहिं बनैपरि त्यागे॥सूर श्याम तुम त्रिभुवन-नायक दुखदायक तुम नाहीं॥ ज्यों त्योंकरि यह हमहिं मिलावहु इहै कहति बलिजाहीं॥ राग सही॥ नैननिको अब नहीं पत्याऊँ।बहुरयो उनको बोलति हौं तुम हाइ हाइ लीजै नहिं नाऊँ॥ अब उनको मैं नाहिं बसाऊं मेरे उनको नाहीं ठाऊँ।व्याकुल भई डोलिहौं ऐसेहि वे जहँ रहैं तहां नहिं जाऊँ॥खाइ खवाइ बडे जब कीन्हें बसे जाइ अब औरहि गाऊँ। अपनो कियो फलहि पावैंगे मैं काहे उनको पछिताऊँ। जैसे लोन हमारो मान्यो कहा कहौं कहि काहि सुनाऊँ। सूरदास मैं इनबिन रैहौं कृपा करैं उनको शरमाऊँ॥ राग सही॥सतर होति काहेको माई। आए नैन धाइके लीजै आवत अब ह्यां वे बेहाई॥जिनि अपनो घर डर परित्याग्यो तौ उनि वहां कछू निधि पाई। परे जाइ वा रूप लूटि मैं जानतिहौं उनकी चतुराई॥ बिनकारण तुम शोर लगावति वृथा होति कापर रिसयाई। सूर श्याममुखमधुर हँसनिपर बिवस भए चेतन बिसराई॥ राग बिहागरो॥ लोचन आइ कहां ह्यां पावैं।कुंडल झलक कपोलनि रीझे श्याम पठाए-उनहीं आवैं॥ जिनि पायो अमृत घट पूरण छिनु छिनु खात अघात। ते

तुमसों फिरिके रुचि मानें कहति अचंभव बात ॥ हम लंपट वे भए रहतहैं ब्रज घरघर यह बानी। हमहूँको अपराध लगावहिं एऊ भई देवानी॥ लूटहिं ए इंद्रीमन मिलिकै त्रिभुवन नाम हमारो।सूर कहा हरि रहत कहाँ हम यह काहे न विचारो॥राग धनाश्री॥नैननते यह भई बडाई।घरघर इहै चवाव चलावत हमसों भेट न माई ॥ कहां श्याम मिलि बैठी कबहूं कहनावति ब्रज ऐसी । लूटहिं ए उपहास हमारो यह तो बात अनैसी ॥ एई घर घर कहत फिरतहैं कहा करें पचिहारी। सूर श्याम यह सुनत हसतहैं नैन किये अधिकारी ॥राग सारंग॥नैन भए अधिकारी जाइ । यह तुमबातसुनी सखि नाहीं मन आए गए भेद बताइ॥जब आवें कबहूं ढिगमेरे तबतब इहै कहतहैं आइ॥हमहीं लै मिलयो हम देखत श्यामरूपमें गए समाइ॥ अब दोऊ पछितात बात कहि उनहूंको वे भए बलाइ। अपनो कियो तुरत फल पायो जैसी मन कीन्ही अधमाइ ॥इंद्री मन अब नैनन पाछे ऐसे उन वश किए कन्हाइ ।सूरदास लोचनकी महिमा कहा कहैं कछु कही न जाइ ॥राग रामकली॥ जबते हरि अधिकार कियो । तबहींते चतुरई प्रकाशी नैनन अतिहि कियो ॥इंद्रिनपर मन नृपति कहावत नैनन इहै डरात । काहेको मैं इनहि मिलाए जानि बूझि पछितात ॥ अब सुधि करत हमारी लागे उनकी प्रभुता देखि।हियो भरत कहि इनहि ढराऊं वे इकटक रहे पेखि॥अबमानीहौंदोष आपनी हमहीं बेच्यो आइ। सूरदास प्रभुके अधिकारी एई भए बजाइ ॥राग बिलावल॥यद्यपि नैन भरत हरि जात । इकटक नेक नहीं कहुं टारत तृप्ति न होत अघात ॥ अपनेही सुख भरत निशादिन यद्यपि पूरणगात । लैलै भरत आपने भीतर औरहि नहीं पत्यात ॥ जोइ लीजै सोई है अपनो जैसे चोर भगात । सुनहु सूर ऐसे लोभी धनि इनको पितु अरु मात ॥ ॥रागसोरठ॥नैना अतिही लोभ भरे । संगहि संग रहत वे जहँ तहँ बैठन चलत खरे ॥ काहूकी परतीति न मानत जानत सबहिन चोर । लूटत रूप अटूट दामको श्यामवश्यभयो भोर ॥ बडे भाग मानी यह जानी कृपिण न इनते और । ऐसी निधि मैं नाउँ न कीन्हों कह लैहै कहँ ठौर ॥ आपन लेहिं औरहूं देते यश लेते संसार । सूरदास प्रभु इनहि पत्याने को कहे बारहि बार ॥राग कान्हरो॥ऐसे आपस्वारथी नैन ।अपनोईपेटभरतहैं निशिदिनऔर नलेन नदेन ॥वस्तु अपार परयो वोछे करए जानत घटिजैहै। को इनसों समुझाइ कहे यह दीन्हेही अधिकैहै॥सदा नहीं रैहो अधिकारी नाउ राखि जो लेते । सूर श्याम सुख लूटे आपुन औरनहूको देते ॥ ॥राग बिलावल॥जे लोभी ते देहिं कहारी। ऐसे नैननहीं मैं जानेजैसे निठुर महा री॥ मन अपनो कबहूं बरु ह्वैहै ए नहिं होहिं हमारे ।जबते गए नंदनंदन ढिग तबते फिर न निहारे॥ कोटि करौं वे हमहिं न मानें रीझे रूप अगाध॥सूर श्यामजो कबहूं त्रासें रहै हमारी साध ॥राग नट॥ नैना भये घरके चोर। लेत नहिं कछु बनै इनसो देखिछबि भए भोर ॥ नहीं त्यागत नहीं भागत रूप जाग प्रकाश । अलक डोरनि बाँधि राखे तजो उनकी आश॥मैं बहुत करि बरजि हारी निदरि निकसे हेरि । सूरश्याम बँधाइ राखे अंगके छबि घेरि॥ राग बिलावल ॥ भली करी उन श्याम बँधाए । बरज्यो नहीं करयो उन मेरो अति आतुर उठि धाए ॥ अल्पचोर बहुमाल लुभाने संगी सबन धराए । निदरि गए तैसो फल पायो अब वे भए पराए ॥ हमसो इन अति करी ढिठाई जो करि कोटि बुझाए। सूर गए हरि रूप चुरावन उन अपवश करि पाए॥राग बिहागरो॥लोचन चोर बांधे श्याम।जातही उन तुरत पकरे कुटिल अलकनि दाम॥ सुभग ललित कपोल आभा रीझे दाम अपार ।और अंग छबि लोग जागे अब नहीं

निरवार॥ संग गए वे सबे अटके लटक अंग अनूप। एक एकहि नहीं जानत परे शोभा कूप ॥ जो जहां सो तहां डार्यो नेक तनु सुधि नाहिं। सूर गुरुजन डरहि मानत इहै कहि पछितांहिं ॥ ॥ राग जैतश्री॥ लोचन भए पखेरू माइ ।लुब्धे श्याम रूप चाराको अलक फंद परे जाइ। मोर मुकुट टाटी मानो यह बैठनि ललित त्रिभंग । चितवनि ललित लकुट लासा लट कांपे अलक तरंग ॥ दौरि गहनि मुख मृदु मुसुकावनि लोभ पींजरा डारे ।सूरदास मन व्याध हमारो गृह बनते जु विसारे॥ राग गुंडमलार ॥कपट कन दरश खग नेन मेरो चुनत निरखनि तुरत आपुही उडि मिले पर्यो चारा पेट मंत्र केरे॥निरखि सुंदर वदन मोहनी शिर परी रहे एकटक निरखि डरत नाहीं । लाज कुलकानि बश फेरि आवत कबहुँ रहत नहिं नेकहू उतहि जाहीं॥मृदु हँसनि व्याध पढि मंत्र बोलनि मधुर श्रवण ध्वनि सुनत इत कौन आवें। सूरप्रभु श्याम छबि धामही- में रहैं गेह बन नाम मनते भुलावें ॥ राग मारू ॥ नैन खग श्यामनीके पठाए। किये वश कपट कनमंत्रके डारिकेलएअपनाइ मनो इनपठाए॥वेगिधेउनहिंसों रूपरस पान करि नेकहू टरत नहिं चीन्हि लीन्हें। गये हमको त्यागि वहुरि कबहूं न फिरे केचुरी उरग ज्यों छोंडि दीन्हें॥ एक ह्वै- गए हरदीचून रंगज्यों कौनपे जात निरुवारि माई । सूर प्रभुकृपामय कियो उन वास रुचि निज देह बन सघन सुधि भुलाई॥ राग बिहागरो॥नैना ऐसे हैं विश्वासी। आप काज गौने हमको तजि तबते भए निरासी ॥ प्रतिपालन करि बडे कराये जानि आपनो अंग।निमिष निमिषमें धोवति आंजति सिखए भाव तरंग ॥ हम जान्यो हमको ये ह्वैहें ऐसे गए पराई। सुनहु सूर वरजतही वरजत चेरे भए धजाइ ॥ राग जैतश्री ॥ नेना भए प्रगटही चेरे। ताको कछु उपकार न मानत हम ए किए वडेरे ॥ जो वरजों यह बात भली नहिं हँसत न नेक लजात । फूले फिरत सुनावत सबको एतेपर न डरात ॥ इहाँ कहो हमको जिनि छाँडो तुम विनु तनु बेहाल।तमकि- उठे यह बात सुनतही गीधे गुण गोपाल ॥ मुकुट लटक मोहनकी मटकनि कुंडल झलक कपोल। सूर श्याम मृदु मुसुकनि ऊपर लोचन लीन्हें मोल॥राग सोरठ॥लोचनभृंग भए री मेरो।लोकलाज बन घन वेली तजि आतुरह्वै जु गडेरे ॥ श्यामरूप रस वारिज लोचन तहां जाइ लुब्धे रे ।लपटे लटकि पराग विलोकनि संपुट लोभ परे रे ॥ हँसनि प्रकाश विभास देखिके निकसत पुनि तहां पैठत । सूर श्याम अंबुज कर चरणनि जहँ तहँ भ्रमि भ्रमि पैठत ॥राग रामकली ॥ लोचनभृंगको- सरसपागे । श्याम कमलपदसों अनुरागे॥सकुचकानि बनबेली त्यागी॥चले उडाइ सुरति रति पागी ॥ मुक्तिपराग रसहि इन चाख्यो । मन सुख फूल रसहि इनि नाख्यो॥इनते लोभी और न कोई । जो पटतर दीजे कहि सोई ॥ गए तबहिते फेरि न आए। सूर श्याम वेगहि अटकाए॥ राग सारंग॥नैना पंकज पंग खचे।मोहन मदन श्याम मुख निरखत भ्रूवविलास रचे ॥ बोलनि हँसनि विराजमान अतिश्रुति अवतंस सचे।जनुपिनाककीआशलागि शशि सारंग शरनबचे॥चंदचकोर चातक ज्यों जलधर हर रिपु हरषि नचे ॥ पुहुपवास ले मधुप शैलवन धनु करि भवन रचे ॥ परमप्रीतिके कुंड महागज काढत वहुत पचे। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको मुनिजन मानि मचे ॥ राग सारंग॥नैना वींधे दोऊ मेरो।मानों परे गयंद पंकमहिं महासबल बलकेरे॥ निकसत नहीं अधिक बल कीने जतन न धने घनेरे । श्यामसुंदरके दरश परसमें इत उत फिरत न फेरे ॥ लंपट लवनि अटक नहिं मानति चंचल चपल अरेरे । सूरदास प्रभु निगम अगम सुनि सुनि सुमिरत बहुतेरे॥राग धनाश्री॥मेरे नैन कुरंग भए।जोवन वनते निकसि चले ए मुरली नाद रए॥रूप व्याध

कुंडलदुति ज्वाला किंकिनि घंटा घोष। व्याकुल ह्वै एकहि टक देखत गुरुजन तजि संतोष ॥ भौंह कमान नैन शर साधनि मारनि चितवनि चार। ठौर रहैं नहिं टरत सूर वै मंद हँसनि शरधार ॥ राग रामकली ॥ नैन भए वश मोहनके।ज्यों कुरंग वश होत नादके टरत नहींताग्रोहनते।ज्योंमधुकर वश कमलकोशके ज्यों वश चंद चकोर। तैसेहि ए वश भयेश्यामके गुडी वश्य ज्यों डोर।।ज्योंवश स्वातिबून्दके चातक ज्यों वश जलके मीन।सूरजप्रभुकेवश्य भए ए छिनुरप्रतिजुनवीन॥ राग देवी ॥ ऐसेवश्यनकाहुहिकोउ। जैसेवश नँदनंदनकोए नैनामेरेदोउ॥ चन्द्रचकोर नहीं मरिइनकी एको पल न विसारत। नाद कुरंग कहा पटतर इन व्याध तुरतही मारत ॥ ए वश भए सदा सुख लूटत चतुर चतुरई कीन्हों।सूरदास प्रभु त्रिभुवनके पति ते इन वश करि लीन्हों॥ राग जैतश्री ॥ ए नैना अपस्वारथके। और इनहि पटतर क्यों दीजे वे हैं सब परमारथके॥ विना दोष हमको परित्याग्यो सुख कारण भए चेरे। मिले धाइ बरज्यो नहिं मान्यों तके न दायि न डेरे॥ इनको भलो होइगो कैसे नैक न सेवा मानी। सूर श्याम इनपर कहा रीझे इनकी गति नहिंजानी ॥राग षट्ठी ॥ नैना लोनहरामी ए।चोर ढुंढ बटपार अन्याई अपमारगी कहावैं जे॥ निलज निर्दयी निशंक पातकी जैसे आप स्वारथी तजिकै। वारेते प्रतिपालि बढाए बडे भए गए तब तजिकै॥हमको निदरि करत सुखहरिसँगवैडनिलीन्हेहितकरिकै॥मिले जाइसूरजकेप्रभुको जैसे मिलत नीर अरुपै॥ राग जैतश्री ॥ नैन मिले हरिको ढरि भारी। जैसे नीर नीर मिलि एकै कौन सकै ताको निरुवारी॥वातचक्र ज्यों तृणहि उडत ले देहसंग ज्यों छांह। पवन वश्य ज्यों उडत पताका ए तैसे छवि मांह। मन पाछे ए आगे धावत इंद्री इनहि लजाने। सूर श्याम जैसे इन जाने त्यों काहू नहिं जाने ॥ राग नट ॥ लोचन भए अतिही ढीठ।रहतहैं हरि संग निशि दिन अतिहि नवल अढीठ ॥ वदत काहू नहीं निधरक निदरि मोहिं न गनत। बार बार बुझाइ हारी भौंह मोपर तनत ॥ज्यों सुभट रण देखि टरत न लगत खेत प्रचारि। सूर छवि सन्मुखहि धावत निमिष अस्त्रनि डारि ॥राग बिलावल॥ सुभट भए डोलत ए नैन। सन्मुख भिरत मुरत नहिं पाछे शोभा शूर डेरन ॥ आपुन लोभ अस्त्र ले धावत पलक कवच नहिं अंग।हाव भाव रस लरत कटाक्षनि भृकुटी धनुष अपंग॥ महावीर ए उत अंग अंग बल रूप सैन पर धावत । सुनहु सूर ए लोचन मेरे यकटक पलक न लावत॥ राग जैतश्री ॥ सेवा इनकी वृथा करी।ऐसे भए दुखदायक हमको एही सोच मरी ॥ घूँघट ओट महलमें राखति पलक कपाट दिए। ए जोइ कहैं करैं हम सोई नाहिन भेद हिए ॥ अब पाई इनकी लँगराई रहते पेट समाने। सुनहु सूर लोचन बटपारी गुण जोइ सोइ प्रगटाने॥राग गौरी ॥नैना हैं री ए बटपारी।कपट नेह करिकरि इन हमसों गुरुजनते करी न्यारी ॥ श्याम दरश लाडू करि दीन्हो प्रेम ठगौरी लाइ। मुख परसाई हँसन मधुरता डोलत संग लगाइ ॥ मन इनसों मिलि भेद बतायो विरह फाँस गरे डारी। कुललज्जा संपदा हमारी लूटि लई इन सारी ॥ मोह विपिनमें पडी कहरतिहौं नेह जीव नहिं जात। सूरदास गुण सुमिरि सुमिरि वे अंतरगति पछितात॥ राग बिहागरो ॥ तिनको श्याम पत्याने सुनियत।हांऊ जाइ अकाज करेंगे गुण गुनि गुनि शिर धुनियत॥विवश भई तनुकी सुधि नाहीं विरह फाँस गयो डारि। लगनि गांठि बैठी नहिं छूटति मगन मूरछा भारि॥ प्रेमजीव निसरत नहिं कैसेहु अंतर अंतर जानति। सूरदास प्रभु क्यों सुधि पावैं बार बार गुण गावति॥रागसारंग॥रोमरोम ह्वै नैन गए री। ज्यों जलधर पर्वतपर बरषत बूंद बूंद ह्वै झरनि दए री ॥ ज्यों मधुकर रस

कमल पान करि माते तजि उनमत्त भये री। ज्यों कांचुरी भुअंगम तजही फिरि न तकै जुगए सुगए री॥ऐसी दशा भई री इनकीश्यामरूपमेंमगन रए री॥सूरदास प्रभु अगणित शोभानाजानौं केहि अंगछएरी॥ राग सारंग॥नैननिरखिअजहूँ न फिरे री॥हरिमुख कमलकोश रस लोभीमनहुमधुप मधु माति गिरे री॥ पलकनि शूल सलाकसहीहै निशि वासरदोउ रहत अरे री। मानहुबिवर गए चलि कारे तजि कंचुरी भयेनिररेरी॥ ज्यों सरिता पर्वतकी खोरी प्रेम पुलक श्रमस्वेद झरे री॥बूंद बूंद ह्वै मिले सूर प्रभुना जानो केहिघाटतरे री॥राग सारंग॥नैनगए सु फिरे नहिंफेरि।यद्यपिघेरिघेरि में राखति रहे नहीं पचिहारी टेरि॥कहाकहौं सपनेहुँ नहिंआवतवश्यभएहरिहीके जाई। मोते कहा चूक उनिजानी जाते निपटगए बिसराई॥ छिनहूकी पहिचानि नमानी उनको हम प्रतिपाले प्रेम। जो तजि गए हमारे वैसेइ उन त्याग्यो हमहैं वोहिनेम।मात पिता संगहि प्रतिपाले सँगही संग रहे निशियाम।सुनहु सूर ए बालसँघाती प्रेम बिसारि मिले हरिश्याम॥राग नट॥नैननि देखिबेकी ठौर। नन्द गोपकुमार सुंदर किएचंदन खौर॥ शीशपिंड शिखंड भ्राजत नखशिखा छबिऔर।सुभगगावनि मृदुबजावनिवेन सुललितगौर॥कुटिलकच मृगमदतिलकछबि वचन मंत्रठगौर।सूरप्रभुनटरूप नागरनिरखिलोचनचौर॥ राग मलार॥तबतेनैनरहे यकटकही। जबतेश्याम त्रिभंगललितगतिजात भई इन तकही॥मुरलीधरेअरुनअधरनि पर कुंडल झलक कपोल।निरखत यकटक पलक भुलानोमानो बिकाने मोल॥ हमको वे काहे न बिसारैंअपनी सुधि उन नाहिं।सूर श्याम छबिसिंधुसमाने वृथा तरुनि पछिताहिं॥राग मलार॥नैना नैननिमाँझ समाने। टारे न टरत एक मिलि मधुकर सुरसमत्त अरुझाने॥ मन गति पंगु भई सुधि बिसरी प्रेम पराग लुभाने। मिले परस्पर खंजन मानों झगरत निरखि लजाने॥मन वच क्रम पलवोट न भावत छिनु युग वरस समाने।सूर श्यामके वश्य भए ए जेहि बीते सो जाने॥ राग गौरी॥ मेरे माई लोभी नैन भए। कहाकरौं ए कह्योनमानेबरजतही जो गए॥ रहत न घूँघटवोट भवनमें पलक कपाट दए। लए फँदाइ बिहंगम मानो मदन व्याध बिधए॥ नहिं परमिति मुखइंदुसुधानिधि शोभा नितहि नए। सूर श्याम तनु पीतवसन छबि अंग अनंग जितए॥ राग बिहागरो॥ नैना लोभहिं लोभ भरे। जैसचोर भरे घरहीमें बैठत उठत खरे॥ अंग अंग शोभा अपार निधि लेत न सोच परे। जोइ देखैं सोइ सोइ निर्मोले करलै तहीं धरे॥ त्यों लुब्धे ए टरत न टारे लोकलाज न डरे। सूर कछू उनिहाथ न आयो लोभ जाग पकरे॥राग सोरठ॥नैना वोछे चोर सखी री। श्याम रूपनिधि नोखे पाई देखत गए भरी री॥ अंग अंग छबि चित्त चलायो सो कछु रहति परी री। कहा लेहिं कह तजौं विवश भए तेसियकरनि करी री॥ पुनिपुनि जाइ एक एक लेते आतुर धरणि धरी री। भोरे भए भोरसो ह्वैगयो धरे जगार परी री॥ जो कोउ काज करे बिन बूझे पेलि महत्त हरी री। सूर श्याम वश परेजाइकेज्यों मोहिं तजी खरी री॥ राग मलार॥नैना मारेहू पर मारत। राखी छबि दुराइ हृदयमें तिनको हिय भरि डारत॥ आपुन गए लभी कीन्ही अब उनहि इहाते टारत। बरवशही ले जान कहतहैं पेज आपनी सारत॥ऐसे खोज परचो यह लेहैं आवत जातन हारत।उनके गुण कैसे कहि आवे सूर पयारहि झारत॥ राग मलार॥नैना खोज परेहैं ऐसे।नेक रही हरिमूरति हृदय डाह मरतहैंजैसे॥ मनतौं गयो इंद्रियन लैके बुधि मति ज्ञान समेत।जिनकी आशसदा हम राखें तिन्ह दुख दीन्हो जेत॥ आपुन गए कौन सो चाले करत ढिठाई और। नेक रही छबि दुति हिरदेमें ताहि लगावत ठौर॥ गए रहे आए एहि कारज भरि ढारतहैं ताहि। सूरदास नैननिकी महिमा कोहै

कहिये काहि ॥राग सारंग॥नैना यहि ढग परे कहा करौं माई। आए फिरि कौन काज कबहिं मैं बुलाई ॥ अबलौं इह आश रही मिलिहि ये आई। भाँवरि मी पारि फिरैं नारि ज्यों पराई॥ आवत हैं ताहि लेन ऐसे दुखदाई। मारे को मारत हैं बडे लोग भाई ॥ अतिही ए करत फिरत दिनही ढिठाई। सूरदास प्रभु आगे चलौं कहै जाई ॥ रागगौरी॥ यह तौ नैननिही जु कियो। सर्वस जो कछु रह्यो हमारे सो है हारिहि दियो॥ बुधि विवेक कुलकानि गँवाई इन्द्रिन कियो वियो। आपुन जाइ बहुरि आयो यह चाहत रूप लियो ॥ अवलाग्यो जिय घातकरनको ऐसो निठुर हियो। सुनहु सूर प्रतिपालकेको गुण वैरइ मानि लियो॥ राग नट ॥मेरे नैन चकोर भुलाने। अहनिशि रहत पलकसुधि विसरे रूप सुधा न अघाने॥ पल घटिका घरी याम दिनहिदिन युगही युग बरजाने। स्वाद परयो निमिषौ नहिं त्यागत ताही मांझ समाने॥ हरि मुख बिधु पीवत ए व्याकुल नेकु नहीं थकाने। सूरदास प्रभु निरखि ललित नतु अगअग अरुझाने॥राग सारंग॥ हरिमुख विधु मेरी अँखियां चकोरी। राखे रहति वोट पटजतननि तऊ न मानत कितक निहोरी॥ बरबसही इन गही मूढता प्रीत जाय चचलसो जोरी। विवश भए चाहत उडिलागन अटकत नेक अजनकी डोरी॥ बरबसही इनगही चपलता करत फिरत हमहूसो चोरी। सूरदास प्रभुमोहन नागर वरपिसुधारस सिंधु झकोरी ॥राग बिहागरो॥ लोचन लालचते न टरे। हरि सारगसो सारग गीधे दधिसुत काज जरे॥ ज्यो मधुकर वश परे केतकी नहिं ह्याते निकरे। ज्यों लोभी लोभहिं नहिं छांडत ए अति उमँगि भरे ॥ सन्मुख रहत सहत दुख दारुण मृग ज्यों नहीं डरे। वह धोखे यह जानत है सब हितचितसदा करे ॥ ज्यों पग फिर फिर परत प्रेमवश जीवत मुरछि मरे। जैसे मीन अहारलोभते लीलत परे गरे ॥ ऐसेहि ए लुब्धे हरि छबिपर जीवत रहत भिरे। सूर सुभट ज्यो रण नहिं छांडत जबलौं धरनि गिरे॥रागनट॥ मेरे नैननि कोउ समुझावे री। अपनो घर तुम छाडि डोलत मेरे सौं लै आवे री॥ इहै बूझि देखौ नीकेकरि जहा जात कछु पावे री। वृथा फिरत नटके गुण देखत नानारूप बनावेरी॥ देखतके सब साँचि लागत ताहि छुवन नहिं पावै री। सूर श्याम अँगअग माधुरी शतशत मदन लजावे री ॥राग नट॥ हरि छवि अग नटके ख्याल नैन देखत प्रगटसबकोउ कनकमुकुता लाल॥ छिनकमें मिटिजात सोपुनि और करत विचार। त्योंही एछवि और औरे रचत चरित अपार ॥ लहै तबजो हाथआवे दृष्टिनहिं ठहरात। वृथा भूले रहत लोचन इनहि कहैको बात ॥ रहतनिशिदिनसगहरिके हरपनहीं समात। सूर जबजब मिलेहमको महाविह्वलगात॥राग कान्हरो॥ भई गई ए नैनन जानत। फिरि फिरिजात लहत नहिं शोभा हारेहूँ हारि न मानत॥ बूझहु जाइ रहत निशि वासर नेक रूप पहिचानत। सुनहु सखी सतरात इते पर हमपर भौंहि तानत ॥ झूठे कहत श्यामअग सुदर बातें गढिगढि बानत। सुनहु सूर छविअति अगाधगति निगम नेति जेहि गावत॥ राग बिहागरो॥ श्यामछवि लोचनभटकि परे। अतिहि भए बेहाल सखीरी निशिदिन रहत खरे॥ हमते गए लूटिलेवे को चनहि परयो अवसोच। अपनो कियो तुरत फल पायो राखति घघट वोट॥ इकटक रहत पराए बश भए दुख सुख समुझि न जाइ। सूर कहौ ऐसो को त्रिभुवन आने सिंधु थहाइ ॥राग नट॥ नैन भये वोहितके काग। उडि उडि जात पार नहिं पावे फिरि आवत नहिं लाग॥ ऐसी दशा भई री इनकी अब लागे पछितान। मो बरजत बरजत उठि धाये नहिं पायो अनुमान॥ वह समुद्र वो उवा सनए धरैं कहा सुखराशि। सुनहु सूर ए चतुर कहावत वह छवि महा प्रकाशि॥राग गौरी॥ हारि जीत नैना नहिं जानत। धाए जात तहींको फिरि फिरि वै किननो अपमानत ॥ परे रहत द्वारे शोभाके वोहै गुण गुणि गानत। हरपत रहत मननिको निदरे नेकहु

लाज न आवत॥ अबतो रहत निपसई कीन्हें यद्यपि रूप न जानत। दुख सुख विरह संयोग समेत जनु सूरदास यह गावत॥ राग रामकली॥नैना मानपमान सह्यो। अति अकुलाइ मिले री वरजत यद्यपि कोटि कह्यो॥ जाकी बानि परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो। ज्यों मर्कट मूठी नहिं छांड़त नलिनी सुवा गह्यो॥ जैसे नीरप्रवाह समुद्रहि बह्यो सुबह्यो सुबह्यो। सूरदास इनि तैसिय कीन्हीं फिरि मोतन न चह्यो॥ राग सोरठ॥ यह नैननिकी टेव परी। जैसे लुबधति कमलकोशमें भ्रमराकी भ्रमरी॥ ज्यों चातक स्वातिहि रटलावै तैसिय धरनि धरी। निमिप नहीं मिलवत पल एकौ आपु-दशा बिसरी॥ जैसे नारि भजे परपुरुपहि ताके रंग ढरी। लोक वेद आरजपथकी सुधि मारगहू न डरी॥ ज्यों कंचुकी त्यागि वोहि मारग अहिघरनी न फिरी। सूरदास तैसेहि ए लोचनकी धौं परनि परी॥ राग बिहागरो॥नैना गये न फिरे री माई। ज्यों मर्यादा जाति सुपतकी बहुरचो फेरि न आई॥ जैसे बाल्य दशा वितावै फिरे नही तरुनाई। ज्यों जल ढरत फिरत नहिंपाछेआगेहिआगे जाई॥ ज्यों कुलवधू वाहिरी परिकै कुलमें फिरि न समाई। तैसी दशा भई इनहूँकी सूरश्यामशर-नाई॥ राग सूही॥जबते नैन गये मोहिं त्यागि। इंद्री गईगयोतनुतेमनउनहिंविनाअवसेरीलागि॥ वे निर्दयी मोह मेरे जिय कहा करौ मैं भई बेहाल। गुरुजन उतै इहां इनि त्यागी मेरे बाँटे परचो जंजाल॥ इतकी भई न उतकी सजनी भ्रमतभ्रमत मैं भई अनाथ। सूर श्यामको मिलेजाइ सब दरशन करि वे भये सनाथ॥ राग बिलावल॥नैना मेरे मिलि चले इंद्रीमनसंग। मोकोव्याकुलछाडिकै आपुन करें रंग॥ अपनो यह कबहुँ न करे अधमनिकेकाम। जनमगमायोसाथहीअबभईनिकाम॥ धिग जन ऐसे जगतमें यह कहिकहि पछिताति। धर्म हृदय जिनके नहीं धिगधिग तिनकी जाति॥ मनसावाचाकर्मनामोहिगएविसारि। सूरसुमिरिगुननैनकेविलपतिव्रजनारि॥ राग बिलावल॥ नैननिसों झगरो करिहौं री। कहा भयो जो श्याम संग हैं बांह पकरि सन्मुख लरिहौं री॥ जनमहिते प्रति-पालिबडे कियेदिनदिनको लेखो करिहौं री। रूपलूटि कीन्हों तुम काहे अपने बांटेको धरिहौंरी॥ एक मात पितु भवन एक रहे मैं काहे उनको डरिहौ री। सूर अंश जो नहीं देहिंगे उनके रँग मैं ढूढरिहौंरी॥ राग आसावरी॥मोहूते वे ढीठ कहावत। जबहींलोमेंमौन धरेहौं तबलौं वेकामनापुरा-वत॥ मैं उनको पहिलेहिकरिराख्यो वेमोको काहे बिसरावत। आपकाजको उनहिं चले मिलि वांट देत रोई अब आवत॥ बहुते कानि करी मैं सजनी अब देखो मर्याद घटावत। जोजैसो तैसो त्योंचलिए हरिआगे गढि बात बनावत॥ मिले रहे नहिं उनको चाहति मेरो लेखोक्योंन बुझावत। सूर श्यामसँगगर्वबढायो उनहींके बल बैर बढावत॥ राग धनाश्री॥नैना न रहें रीमेरेअटके। कछु पढिदिये सखी एहिढोंटा घूँघरवारी लटके॥ कन्नल कुलुफ मेलि मंदिरमें पलक संदूक पट अटके। निगम नेति कुललाज टूटि सब मन गयंदके उटके॥ मोहनलालकरो वश अपने ह्वो निमेपके मटके। पुरनर नारिन सुरपुरतुरते सूर लगाए नटके॥ राग कान्हरो॥ नैना अटके रूपमें पल रहत निसारे। निशिवासर नहिं संग तजे भरिभरि जल ढारे॥ अरुन अधर द्युति चमकही चपला चकचौधनि। कुटिलअलक छविधुंवरे सुमनासुत शोधनि॥ चंपकलीसी नासिका रंग श्यामहिं लीन्हें। नैन विशाल समुद्रसो कुंडल श्रुति दीन्हें॥ तहँ ए रहे भुलाइकै कछु समुझि न जाई। सूर श्याम वेवश किए मोहनी लगाई॥ राग जैतश्री॥ लोचन भूलिरहे तहां जाई। अंगअंग छवि निरखि माधुरी इकटक पल विसराई॥ अति लोभी अचवत अघातहैं तापर पुनि ललचात। देत नहीं काहूको नेकहु आपुहि ँरत खात॥ ओछे हाथ परी अपारनिधि काहू काम न आवे। सूर सवै

इनको क्यों सौंप्यो यह कहिकहि पछितावे ॥ राग धनाश्री ॥ नैनन यह कुटेव पकरी। लूटैं श्याम रूप आपुनहीं निशि दिन पहर घरी ॥ प्रथमहिं इन यह नोखे पाई गए अतिहि इतराइ। मिले अचानक वडभागी हैं पूरण दरशन पाइ ॥ लोभी बडे कृपण को इनसरि कृपा भई यह न्यारी। सूरश्याम उनको भए भोरे हमको निठुर मुरारी ॥ राग गौरी ॥ सुन सजनी मोसों इक बात । भाग विना कछु नहीं पाइए तू काहे पुनिपुनि पछितात ॥ नैनन बहुत करी री सेवा पल पल घरी पहर दिन राति। मन वच क्रम दृढता इनकी है धन्यधन्य इनकी है जाति ॥ कैसे मिले श्याम इनको ढरि जैसे सुतके हितको मात । सूरदास प्रभु कृपासिंधु वे सहज बडे हैं त्रिभुवनतात ॥ राग भैरव ॥ नैन श्यामसुख लूटतहैं । इहै बात मोको नहिं भावे हमते काहे छूटतहैं ॥ महाअक्षय निधि पाय अचानक आपुहि सबै चुगवतहैं। अपने हैं ताते यह कहियत श्याम इनहिं भरुहावतहैं ॥ यह संपदा कहो क्यों पचिहै वालसँघाती जानतहैं। सूरदास जो देते कछुइक कहो कहा अनुमानतहैं॥ राग रामकली ॥ सजनी मोते नैनगए। अब लौं आश रही आवनकी हरिके अंग छए ॥ जबते कमलवदन उन दरश्यो दिनदिन और भए। मिले जाय हरदी चूने ज्यों एकहि रंग रए ॥ मोको तजि भए आपु स्वारथी वा रस मत्त भए । सूर श्यामके रूप समाने मानो बूंद तए॥ राग बिहागरो ॥ नैन गएरी अति अकुलात। ज्यों धावत जलनीचे ग।ग कहूं नहीं ठहरात ॥ कहा कहौं ऐसी आतुरता पवन वश्य ज्यों पात । ज्यों आये ऋतुराज सखी री द्रुमन तेज झहरात ॥ आइ वसी ऐसी जिय उनके मैं व्याकुल पछितात । सूरदास कैसेहुं न बहुरे गीधे श्यामल गात॥॥ राग रामकली ॥ लोभीनैन हैंये मेरे। इतहि श्यामइदारमनकेरूपनिधि टेरे ॥ जातही उन लूटि खाई तृपा जैसे नीर। क्षुधामें ज्यों मिलत भोजन होत जैसे धीर॥ वे भए री निठुर मोको अब परी यह जान। अष्ट सिधि नव निद्धि हरितजि लेहिं ह्यां कह आन ॥ आपने सुखके भए वे हैं जो युगअनुमान । सूर प्रभु करि लियो आदर बडे परम सुजान ॥ राग आसावरी ॥ नैननते हरि आपस्वारथी आजवात यह जानी री। एउनको वे इनको चाहत मिले दूध अरु पानी री ॥ सुनियत परमउदार श्याम घन रूपराशि उनमाहीं री। कीजे कहा कृष्णकी संपति नैन नहीं जु पत्याहीं री॥ विलसत डारत रूप सुधानिधि उनकी कछु न चलावें री। सुनहु सूर हम स्वातिबूँदलौं रटलागी नहिं पावें री ॥ राग सारंग ॥ जाते परयो श्याम घननाउं। इनते निठुर और नहिं कोई कवि गावत उपमाउँ॥ चातकके रट नेह सदा वह ऋतुअनऋतु नहिं हारत। रसना तारूसों नहि लावत पीवै पीव पुकारत ॥ वे बरषत डोंगर वन धरणी सरिता कूप तडाग। सूरदास चातकमुख जैसेबूंद नहीं कहुँ लाग॥ राग मलार ॥ श्यामघन ऐसे हैं री माई । हमकोदरश नहीं सपनेहू घरे रहत निठुराई॥ षटऋतु व्रत तनु गारि कियो क्यों चातक ज्योंरट लाई । उनमें है चित सदा हमारो नेक नहीं बिसराई ॥ इंद्री मन लूटत लोचन मिलि इनको वे सुखदाई । सूर स्वाति चातककीकरनी ऐसे हमहि कन्हाई॥ राग सारंग ॥ नैनन हरिको निठुर कराए। चुगली करी जाइ उनआगे हमते वे उचटाए॥ इहै कह्यो हम उनहिं बोलावत वे नाहिंन ह्यां आवत । आरज पंथ लोककी शंका तुमतन आवत पावत ॥ यह सुनिकै उन हमहि बिसारी राखत नैनन साथ । सेवावश करिकै लूटतहैं बात आपने हाथ ॥ संगहि रहत फिरत नहिं कबहूं आपस्वारथी नीके ।सुनहु सूर वे एऊ तैसेइ बड़े कुटिल हैं जीके ॥ कपटी नैननते कोउ नाहीं । घरको भेद औरके आगे क्यों कहिवेको जाहीं ॥ आप गए निधरक है हमते वरजि वरजि पचिहारी। मनका-

मना भयो परिपूरण हरि रीझे गिरिधारी ॥ इनहिं बिना वे उनहिं बिना ए अंतर नाहीं भावत। सूरदास यह युगकी महिमा कुटिल तुरत फल पावत ॥ राग बिलावल॥ कहा भए जो आपस्वारथी नैनन अपनी निद्य कराई। जो यह सुनत कहत सोइ धृग धृग तुरतहि ऐसी भई बडाई। कहा चाहिए अपने सुखको इनतो सीखी इहै भलाई। अजहूँ जाइ कहै कोउ उनसो काहेको तुम लाज गँवाई ॥ अचरज कथा कहतिहो सजनी ऐसी इह तुमसो चतुराई। सुनहु सूर जे भजि उवरेहे तिनको तुम अब चाहति माई ॥ राग बिहागरो ॥ सजनी नैना गए भगाइ। अवातीरको नीडवरे री कैसे फिरिहैं धाइ ॥ बरत भवन जैसे दहियतहै निकसे त्यों अकुलाइ। सोइ अपनो नहिं पथिक पंथके वासा लीन्हो आइ ॥ ऐसी दशा भईहै इनकी सुखपायो ह्वां जाइ। सूरदास प्रभुको ए नैना मिले निसान बजाइ॥ राग बिलावल॥ मोहन वदन बिलोकि थकितभए माईरीएलोचनमेरे। मिले जाइ अकुलाइ अगमने कहा भयो जो घूँघट घेरे॥ लोकलाज कुलकानि छाँडिकरिबरबस चपल चपरि भए चेरे। काहेको बादिहि बकति बावरी मानत कौनमतेअब तेरे॥ ललितत्रिभंगी तनु छबि अटके नाहिंन फिरत कितोऊ फेरे ॥ सूरश्याम सन्मुखरति मानत गए मगबिसरि जाहिं नहिं डेरे॥ राग रामकली॥ थकितभए मोहनमुख नैन। घूघट वोट न मानत कैसेहुबरजतबरजत कीन्हो गौन॥ निदरि गई मर्यादा कुलकी अपनो भायो कीन्हो। मिले जाइ हरि आतुरह्वैकैलूटिसुधारस लीन्हो ॥ अब तू बकति बादिरी माई कह्यो मानि रहि मौन। सुनहु सूर अपनो सुख तजिकै हमहिं चलावै कौन ॥ राग देवगधार॥ मेरे इन नैनन इते करे। मोहनवदनचकोर चन्द्र ज्यों यकटक-ते न टरे ॥ प्रमुदित मणि अवलोकि उरग ज्यो अति आनंद भरे। निधिहि पाइ इतराइ नीच ज्यो त्यों हमको निदरे॥ मृदु मुसुकानि मनो ठग लडुआ मिपि गति मति सुध बिसरे। फिरि लगे अँग अग सो हरिके समुझि न सुधि पकरे॥ ज्यों अटके गोचर घूँघट पट शिशु ज्यों अरनि अरे। धरे न धीर अनमने रुदनबल सो हठकरनिपरे। रही ताडि खिझिलाइ लकुट लै एकहु डर न डरे। सूरदास गथ खोटो काहे पारखि दोष धरे ॥ राग जैतश्री ॥ नैनन दशा करी यह मेरी। आपुन भए जाइ हरिचेरे मोहिं करत हैं चेरी ॥ जूठो खइए मीठे कारण आपुहि खात लडावत। और जाइ सो कौनन फेको देखन तौ नहिं पावत ॥ काज होइ तौ इहाँ कीजिए वृथा फिरै को पाछे। सूरदास प्रभु जब जब देखत नट सवाँगसो काछे ॥ ॥राग बिलावल॥ को इनकी परतीति बखाने। नैना धौं काहेते अटके कौन अंग ढरकाने॥ उनके गुण वारेहिते सजनी मै नीकेकरि जाने। चेरेभए जाइ ए तिनके कैसे उनहि पत्याने॥ छिन छिनमें औरे गति जिनकी ऐसे आप सयाने। सूर श्याम अपने गुण शोभा को नहिं वश करि आने॥ राग रामकली॥ नैननि कठिन बानि पकरी। गिरिधर लाल रसिक बिन देखे रहत न एक घरी॥ आव-तही यमुनाजल लीन्हें सखी सहज डगरी। वे उलटे मग मोहिं देखके हौ उलटी उत लै गगरी॥ वह मूरति तबते इन बलकरि लै उरमांझ धरी। ते क्यो तृप्ति होत अब रंचक जिनि पाई सिगरी ॥ जग उपहास लोकलज्जा तजि रहे एक जकरी। सूर पुलक अँगअंग प्रेम भरि श्याम संग तकरी ॥ राग रामकली ॥ नैननि बानि परी नहिं नीकी। फिरत सदा हरि पाछे पाछे कहा लगनि उन जीकी॥ लोकलाज कुलकी मर्यादा अतिही लागति फीकी। जोवीनति मोकोगी सजनी कहो काहि यह हीकी ॥ अपने मन उन भली करीहै मोहि रहे हैं बीकी। सूरदास ए जाइ लुभाने मृदु मुसुकनि हरि पीकी ॥ राग धनाश्री ॥ऐसे निठुर नही जग कोई॥ जैसे निठुर

भये डोलतहैं मेरे नैना दोई ॥ निठुर रहत ज्यों शशि चकोरको ये उन बिन अकुलाहीं । निठुर रहत दीपक पतंग उडि ज्यों जरि बरि मरिजाहीं ॥ निठुर रहत जैसे जल मीनहि तैसिय दशा हमारी ।सूरदासधृगधृगतिनकोहैजिनकेनाहींपीरपरारी ॥ राग धनाश्री ॥ नैनामानैंनहिंमेरोबरज्यो । इनके लिए सखी री मेरो बाहर रहे न घर ज्यो॥यद्यपिजतन कियेराखतिहीतदपिनमानतहरज्यो। परबश भई गुडी ज्यों डोलति परयो पराए कर ज्यो ॥ देखे बिना चटपटी लागति कछू मूंड पढि परज्यो । को बकि मरे सखीरी मेरे सूरश्यामके थरज्यो ॥ राग नटनारायण ॥ नैनाकह्योमानत नाहिं । आपनेहठ जहां भावत तहांको ए जाहिं ॥ लोकलज्जा बेदमारग तजत नहीं डराहिं । श्याम रसमें रहत पूरण पुलक अंगन माहिं ॥ पियहिके गुण गुणत उरमें दरश देखि सिहाहिं । बंदत हमको नेक नाहीं मरहिं जो पछिताहिं ॥ धरनि मन बिच धरी ऐसी कमना करि ध्याहिं। सूर प्रभुपदकमल अलि ह्वै रैनि दिन न भुलाहिं ॥ राग आसावरी ॥ परी मेरे नैनन यह बानि। जब लगि मुख निरखत तब लगि सुख सुंदरताकी खानि ॥ ए गीधेबींधेन रहत सखि तजी सबनिकी कानि.। सादर श्रीमुखचंद्र बिलोकत ज्यों चकोर रति मानि ॥ अतिहि अधीर नीर भरि आवत सहत न दरशनहानि ।कीजेकहा बांधिकरिसौंपी सूरश्यामके पानि ॥ राग जैतश्री ॥ नैननऐसी बानि परी । लुब्धे श्याम चरणपंकजको मोको तजी खरी ॥ घूँघटओट किए राखतिहौ अपनीसी जु करी ।गए पेलि ताको नहिं मान्यो देखो ज्यों निदरी ॥ गए सुगए फेरि नहिं बहुरे का धौं जियहि धरी । सुनहु सूर मेरे प्रतिपाले ते बश किए हरी ॥ राग सारंग ॥नैनन हौं समुझाइ रही। मानत नहीं कह्यो काहूको कठिन कुटेव गही॥अनजानतही चितै बदनछबि सन्मुख शूल सही । तनु बिसरयो कुलकानि गवांई जग उपहास सही ॥ ऐतेपर संतोप न मानत मर्यादा न गही । तनु बिसरयो बपुश्याम सिंधुमें कछु न थाह लही ॥ रोमरोम सुंदरता निरखत आनँद उँमगि ढही।सूरदास इन लोभिनके सँग बन बन फिरत बही॥ राग रामकली ॥ नैना कह्यो न मानैं मेरो।हारि मानिकै रही मौन ह्वै निकट सुनत नाहिं टेरो।ऐसे भए मनो नहिं मेरे जबहिं श्याम मुख हेरो।मैं पछिताति जबहिं सुधि आवति ज्यों दीन्हों मोहिं डेरो ॥ एतेपर कबहूं जब आवत झगरन लरत घनेरो । मोहूं बरबस उतहि चलावत दूत भयो उनकेरो ॥ लोक बेद कुलकानि न मानैं अतिही रहन अनेरो । सूर श्याम धौंकहाठगोरी लाइकियोधरि चेरो॥ राग कल्याण ॥कबहुं कबहुँ आवत ए मोहिं लेन माईरी। आवतही इहै कहत श्याम तोहिं बोलाई री ॥ नेकहू न रहत बिरमि जात तहां धाई री ।मानो पहँचान नहीं ऐसे बिसराई री ॥ उनको सुख देत मोहिं बहिबेको पाई री ॥ सूर श्याम सँगही सँग निशिबासर जाई री॥ राग बिलावल ॥मेरे नैननही सब दोप।जिनही काज औरको सजनी कतकीजे मन रोप॥यद्यपि हौं अपने जिय जानति अरु बरजे सब घोप ॥ तद्यपि वा यशुमतिके सुत बिन कहूं न सुख संतोप॥कहि पचिहारि रही निशिबासर औरकंठ करि सोप।सूरदासअबक्यो बिसरतुहै.मधुरिपुको परितोप ॥ राग सोरठ ॥मेरे नैना दोप भरे । नँदनंदन सुंदर बर नागर देखत तिनहिं खरे ॥ पलक कपाट तोरिकै निकसे घूँघट वोट न मानत । हाहा करि पाँइन परि-हारी नेकहु जो पहिचानत ॥ ऐसे भए रहत ए मोपर जैसे लोग बटाउ । सोऊ तौ बूझेते बोलत इनमें इह निठुराउ॥ए मेरे अब होहिं नहीं सखि हरिछबि बिगरि परे । सुनहु सूर एसेउ जन जग-में करता करनि करे॥ राग रामकली ॥नैना मोको नहीं पत्याहिं। जे लुब्धे हरिरूप माधुरी और गनन ए नाहिं ॥ जिनि दुहि धेनु औटि पय चाख्यो ते मुखपरसैं छाका।ज्यों मधुकर मधुकमल

कोश तजि रुचि मानतहै आक॥ जे पटरस मुख भोगकरतहैंते कैसे खरिखात । सूरसुनहुलोचन हरिरसतजि हमसों क्यो तृपितात॥राग देवगंधार॥ मेरे नेननहींसबखोरि । श्यामवदनछवि निरखि जुअटके बहुरेनहींबहोरि॥जोमें कोटि जतन करिराखति घूंघट वोट अगोरि।ज्यों उडि मेलिवधिक खग छिनमें पलकपिंजरनतोरि॥बुधि विवेक वलवचनचातुरी पहिलेहि लईअजोरि।अतिआधीन भई सँग डोलति ज्यों गुड्डीवश डोरि ॥ अबधों कौन हेतु हरि हमसों बहुरि हँसत मुख मोरि । मनहु सूर दोउ सिंधुसुधा भरिउमँगि चले मिति फोरि ॥राग गौरि॥ यह सब नेननहीको लागे । अपनेही घर भेद करो इन वरजतही उठि भागे॥ ज्योंवालक जननीसों अरुझत भोजनको कछु माँगे । त्योंही ए अतिही हठ ठानत इकटक पलक न त्यागे ॥ कहत देहु हरिरूप माधुरी रोवत हें अनुरागे। सूर श्याम धौं कहा चखायो रूपमाधुरीपागे॥राग धनाश्री॥लोचन टेक परे शिशु जैसे। मांगतहैं हारिरूप माधुरी खोज परे हैं नेसे॥बारंबार चलावत उतही रहन न पाऊं वैसे । जात चले आपुनही अवलौं राखे जैसे तैसे ॥ कोटियतन कहिकहि परवोधति कह्यो नमानहिं कैसे। सूर कहूं ठगमूरी खाई व्याकुल डोलत ऐसे ॥राग जैतश्री॥ इन नेननकी टेव न जाइ । कहा करों वरजतही चंचल पर मुख लागत धाइ ॥ वाट घाट जहां मिलत मनोहर तहां मुखचलत छपाइ । गीधे हेम चोर ज्यों आतुर यह छवि लेत चुराइ ॥ मनहु मधुप मधुकारण लोभी हरिमुखपंकज पाइ। घूँघट पटवश जलहि मीन ज्यों अधिक उठतअकुलाइ॥ निलजभए कुलकानि न मानततिन- सों कहा बसाइ । सूर श्याम सुंदर मुखरा बिन देखेरह्यो न जाइ॥राग सोरठ॥जाकेजैसी टेव परीरी। सो तौ टरै जीवके पाछे जोजो धरनि धरी री ॥ जैसे चोर तजै नहिं चोरीबरजेहु वहे करैरी। धर- ज्यो जाइ हानि पुनि पावत कतही वकत मरी री॥ यद्यपि व्याधवंधे मृग प्रगटहि मृगिनी रहै खरीरी । ताहू नादवश्य ज्यों दीन्हों शंका नहींकरी री॥ यद्यपि में समझावति पुनिपुनियहकहि कहि जु लरी री । सूर श्यामदर्शनते इकटक टरत न निमिषघरी री॥राग सारंग॥ ए नैना मेरेढीठ भए री । घूंघट ओट रहत नहिं रोके हरिमुख देखन लोभ गएरी ॥ जो मैं कोटि जतन करि राखे पलक कपाटनि मूंदि लए री । उतरे उमँगि चले दोउ हठकरि करौं कहा मैं जान दए री ॥ अतिहि चपल वरज्यो नहिं मानत देखि वदन तन फेरि नए री । सूर श्याम सुन्दर रस अटके मानहुँ लोभी उहइँ छए री॥राग नट॥नैना ढीठ अतिही भए । लाज लकुट दिखाइ त्रासी नेकहू न नए ॥ तोरि पलक कपाट घूंघट वोट मेटि गए । मिले हरिको जाइ आतुर जे हैंगुणनिमए॥ मुकुट कुंडल पीत पट कटि ललित भेष ठए। जाइ लुब्धे निरखि वह छवि सूर नंद जए ॥ राग बिलावल॥नैना झगरत आइके मोसों री माई । छूट धरतहैं धाइके चलि श्याम दुहाई ॥ मैं चकृत ह्वै ठगिरहीं कछु कहत न आवै । आपुन जाइ मिले रहें अब मोहिं वोलावे ॥ गए दरश जो देहिं वे तहां अपनी छाया । और कछू वह है नहीं री उनकी माया ॥ कपटिनके ढँग ए सखी लोचन हरि कैसे । सूर भली जोरी वनी जैसेको तैसे ॥ राग षटी ॥ नैननको मत सुनहु सयानी । निशि दिन तपत सिरात न कबहूं यद्यपि उमँगि चले पानी ॥ हों उप- चार अमित उर आनति खल भई लोकलाज कुलकानी । कछु न सोहाइ दहति दरशन दव वारिजवदन मंद मुसुकानी ॥ रूप लकुट अभिमान निडर ह्वै जग उपहासन सुनतलजानी । बुधि विवेक वल वचन चातुरी मनहुँ उलटि उनमांझ समानी ॥ आरजपथ गुरु ज्ञान गुप्तकरिविकल भई तनुदशा हिरानी । याचत सूर श्याम अंजनको वह किशोर छवि जीवदितानी॥ राग सारंग॥

नैन न भलो मतो ठहरायो।जबहीं मैं बरजति हरि सँगते तबहीं तब हठरायो ॥ जरत रहत एते पर निशि दिन छिनु बिनु जनम गँवायो।ऐसी बुद्धि करन अब लागे मोको बहुत सतायो ॥ कहा करौं मैं हारि धरी जिय कोटिजतन समुझायो । लुब्धे हेमचोरकीनांई फिरिफिरि उतही धायो ॥ मोसों कहत भेद कछु नाहीं अपनोइ उदर भरायो।सूरदास ऐसे कपटिनको विधिना हाथ छडायो ॥ राग बिहागरो ॥ मेरे नैना अटकिपरे । सुंदरश्याम अंगकीशोभानिरखत भटकिपरे॥ मोरमुकुट लट घूँघरवारे तामें लटकि परे । कुंडल तरनिकिरनिते उज्ज्वल चमकनि चटकि परे ॥ चपल नैन मृग मीन कुंज जित अलिज्यों लुब्धि परे ।सूर श्याममृदु हँसनि लोभाने हमते दूरि परे ॥ राग बिहागरो ॥ नैनन साधैयहैरही । निरखत वदननंदनंदनकोभूलिनतृप्तिकही ॥ पचिहारे उनकी रुचि कारण परमिति तौ न लही।मगन होत अब श्यामसिंधुमें कतहूँ न थाह लही॥ रोम रोम सुंदरता निरखत आनँद उमँगि बही । दुख सुख सूर विचार एक करि कुलमर्याद ढही ॥ ॥ राग नट ॥ नैनन साध रही सिराइ।यद्यपि निशि दिन संगहि डोलत तद्यपिनहींअघाइ।पलक नहिं कहुँ नेकलागत रहत इकटक हेरि । तऊ कहुँ तृपितात नाहीं रूप रसकी ढेरि ॥ ज्यों अगिनिघृत तृप्ति नाहीं तृषानहींबुझाइ।सूरप्रभु अति रूप दानी नैन लोभ न जाइ॥राग कल्याण ॥ श्यामअंग निरख नैनकहूँ अघात नाहीं ।एकहि टक रहे जोरि पलपल नहिं सकत तोरि जैसे चंदा चकोर तैसी इन पाहीं॥छवि तरंग सरितागण लोचन ए सागर जनु प्रेम धार लोभ गहनि नीके अवगाही।सूरदास एते पर तृप्ति नहीं मानत ए इनकी सोइ दशा सखी बरणी नहिं जाही ॥ राग बिहागरो ॥ लोचन सपनेके भ्रम भूले । जोछविनिरखत सो पुनिनाहीं भरमहिंडोरेझूले॥इक टक रहत तृति नहिं कबहूं एते पर हैं फूले । निदरे रहत मोहिं नहिं मानत कहत कौन हमतूले ॥ मोते गए कुम्हीके जरलौं ऐसे वे निरमूले।सूर श्याम जलराशि परे अब रूप रंग अनुकूले॥ राग गौरी॥ मेरे नैना ई अति ढीठ।मैं कुलकानि किये राखतिही ये हठि होत बसीठ ॥ यद्यपि वे उतकुशल समर बल ए इत अतिबल हीठ । तदपि निदरि पटजातपलकछिदि जूझत देत न पीठ॥अंजनत्रास तजत तमकन तकि तानत दरशन डीठ । हेरेहू नहिं हटत अमित बल वदन पयोधि पईठ ॥ आतुर अडत अरुझि अँगअँग अनुरागनमिति मननीठ । सूर श्यामसुंदररस अटके नहिं जानत कटु मीठ ॥राग बिलावल॥नहीं ढीठ नैननते और।कितनो मैं बरजति समुझावति उलटिकरत हैं झौर ॥ मोसों लरत भिरत हरि सन्मुख महा सुभट ज्यों धावत । भौंह धनुष शर सरस कटाक्षन मारु करत नहिं आवत ॥ मानत नहीं हारि जो हारत अपने मन नहिं टूटत । सूरश्याम अँग अँगकी शोभा लोभ सैनसों लूटत॥राग बिहागरो॥लोचन लालची भारी । इनके लए लाज या तनकी सबै श्यामसों हारी ॥ बरजत मात पिता पति बंधव अरु आवै कुलगारी । तदपि न रहत नंदनंदनबिन कठिन प्रकृतिहठि धारी।नखशिख सुभग श्यामसुंदरके अंगअंग सुखकारी । सूरश्यामको जो न भजै सो कौनकुमति है नारी ॥राग कल्याण ॥ अतिरसलंपट नैनभये चाख्यो रूप सुधारस हरिको लुब्धे उतहि गये॥ ज्यों व्यभिचारि भवन नहिंभावत औरहिपुरुप रई । आवत कबहूँ होत अति व्याकुल जैसे गवन नई॥ फिरि उतहीको धावत जैसे छुटत धनुपते तीर । चुभै जाय हरिरूपवोपमें सुंदर श्यामशरीर ॥ ऐसे रहत उतहिको आतुर मोसों रहत उदास । सूर श्यामके मन वच क्रम भए रीझे रूप प्रकाश ॥राग हरी॥ए नैना अति चपल चोर । सरबस मूसि देत माधवको सुधि बुधि सुघन विवेकन मोर॥ अनजानत कल बैन श्रवण

सुनि चितै रहत उत उनकी वोर । मोहन मुख मुसुकाइ चले मानों भेद भयो यह लायो अंकोर॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै जो कीजै सो इनको थोर। सूर संग सोवत न परी सुधि पायो मरम वियोगन भोर ॥ राग गौरी ॥ नैन करत घरहीकी चोरी । चोरन गए श्यामअँगशोभा उतशिरपरी ठगोरी॥ अपवश करि इनको हरि लीन्हें मोतन फेरि पठाए । जो कछु रही संपदा मेरे सुधि बुधि चोर लिवाए ॥ ए धाए आए निघरकसों लैगए संग लगाइ । सूर श्याम ऐसे हैं माई उलटी चाल चलाइ ॥ राग सारंग ॥ नैनन प्राण चोरि लै दीने । समुझत नहीं बहुत समुझाए अति उत-कंठ नवीने ॥ अति हौ चतुर चातुरी जानत सकल कला जु प्रवीने । लोभ लिये परवश भइ माई मीन जु वंसी भीने ॥ कहा कहौं कहिबे नहिं लायक मते रहत भर-हीने ॥ आपु बँधाइ पुंजि लै सौंपी हरिरस गतिके लीने । ज्यों डोरे वश गुडी देखि-यत डोलत संग अधीने । सूरदास प्रभु रूपसिंधुमें मिले सलिल गुण कीने ॥ राग नट॥ ये लोचन लालची भए री । सारंगरिपुके रहत न रोंके हरिस्वरूप गिधए री ॥ काजर कुलफ मेलि मैं राखे पलक कपाट दए री । मिलि मनदूत पैजकरि निकसे बहुरि श्यामपै दौरिगए री ॥ ह्वै आधीन पंचतेन्यारे कुललज्जा न नए री । सूर श्यामसुंदररस अटके मानो उहईं छए री ॥ राग बिहागरो ॥ लोचन लोभ-हिमें ये रहत । फिरैं अपनेकाजहीको धीर नाही गहत ॥ देखि मृगनि कुरंग धावत तृप्ति नाहीं होत। ए लहत ना हृदय धावत तऊ नाहिंन वोत ॥ हठी लोभी लालची इनते नहीकोउ और । सूर ऐसे कुटिलको छबि श्याम दीन्हों ठौर॥ राग रामकली ॥लोचन मानत नाहिंन बोल। ऐसे रहतश्यामके आगे मनुदै लीन्हें मोल ॥ इत आवत दै जात देखाई ज्यों भँवरा चकडोर । उतते सूत्र न टारत कतहूँ मोसों मानत कोर॥ नीके रहे सदा मेरे वश जाइ भए ह्वां जोर । मोहन शिर मोहिनीलगाई जब चितए उनि वोर ॥ अब मिलिगए श्याम मन माने निशि वासर इक ठौर। सूरश्यामके चोर कहावत राखेहैं करिगौर॥ राग रामकली ॥नैना उनही देखे जीवत ।सुंदर वदन तडाग रूप जल निर-खनि घुटभरि पीवत ॥ राखे रहत और नहिं पावै उन मानी परतीति । सूर श्याम इनसों सुख मानत देखे इनकी प्रीति ॥ राग गूजरी ॥ नैना नाहिंन कछू विचारत । सन्मुख समर करत मोहनसों यद्यपि हैं हठिहारत ॥ अवलोकत अलसात नवल छबि अमित तोप अति आरत। तमकि तमकि तरकत मृगपति ज्यों घूँघट पटहि विदारत ॥ बुधि बल कुल अभिमान रोप रस जोवत भपहि निवारत । निदरे विरह समूह श्यामअँग पेखि पलक नहिं पारत ॥ श्रमित सुभट सकुचत साहस करि पुनि पुनि सुखहि सम्हारत । सूर स्वरूप मगन झुकि व्याकुल टरत न इकटक टारत ॥ ॥ राग बिहागरो ॥श्याम रंग नैना राचेरी।सारंग रिपुते निकसि निलजभए अबपरगटह्वैनाचेरी॥ मुरली नाद मृदंग मृदंगी अधर बजावन हारा।गायन घर घर घेर चलावत लोभ नचावन हार।। चंचलता नृत्यनि कटाक्षरस भाव बतावत नीके। सूरदास ए रीझे गिरिधर मन माने उनहीके ॥ ॥राग रामकली॥नाचत नैन नचावत लोभ । यह करनी इननई चलाईमेटिसकुच कुलशोभ॥ घूँघट घट त्याग्यो इन मन क्रम नाचहिपर मन मान्यो । घरघर घेरि मृदंग शब्दकरि निलजकाछनी बान्यो ॥ इंद्री मन समाज गायन ए ताल धरे रहैं पाछे । सूर प्रेमभावनिसों रीझे श्याम चतुर वर आछे ॥ राग धनाश्री॥ नैनन सिखवत हारि परी । कमलनैन मुख विनु अवलोके रहत न एक घरी ॥ हा कुलकानि मानि सुनि सजनी घूघट ओटकरी॥ वे अकुलाइ मिले हरि लेमन लै तनहूकी बुद्धि हरी ॥ तबते अंगअंग छबि निरखत सो चितते न टरी । सूर श्याममिलिलोक

वेदकी मर्यादा निदरी ॥ राग बिलावल ॥ इन नैननसों री सखीमैं मानी हारि । माट सकुच नहिंमानही बरजारनि मारि ॥ डरत नहीं फिरि फिरि अरैं हरि दरशन काज । आपु गए मोहू कहै चलि मिलि ब्रजराज ॥ घूंघट घरमें नहिं रहें कहि रही बुझाइ । पलक कपाट निदारिकै उठि चले पराइ ॥ तबते मौनभई रहौं देखत ए रंग । सूरज प्रभु जहं जहं रहै तहँ तहँ ए संग ॥ राग गूजरी ॥ नैना बहुत भांति हटके । बुधि बल छल उपाइ करि थाकी नेक नहीं मटके । इत चितवत उतही फिरि लागत रहत नहीं अटके । देखतही उडि गए हाथते भए बटा नटके ॥ एकहि परनि परे खगज्यो हरिरूप मांझ लटके । मिलि जाइ हरदी चूना त्यों फिरि न सूर फटके ॥ राग जैतश्री ॥ बहुत भांति नैना समुझाए । लपट तदपि सकोच न मानत यदपि घूंघटपट अटकि दुराए ॥ निरखि नवल इतराहिं जाहिं मिलि विविसजन अजन जनुपाए । श्याम कुंवरके कमल वदनको महामत्त मधुकर ह्वै धाए ॥ घूंघट वोट तजी सरिता ज्यों श्यामसिंधुके सन्मुख धाए । सूर श्याम मिल कारि पलकनसों निनमोलहि हठि भए पराए ॥ राग सोरठ ॥ नटके बटा भए ए नैन । देखतिहौं पुनि जात कहांधौं पलक रहत नहिं ऐन ॥ स्वांगीसे ए भए रहतहैं छिनहीछिन ए और । ऐसे जात रहत नहिं रोके हैहूते अति दौर ॥ गए सु गए गए अब आए जात लगी नहिं वार । सूर श्याम सुदरता चाहत जिनको वारनपार ॥ राग बिहागरो ॥ मोते नैन गए री ऐसे । देखे बधिक पिंजराते खगछूटिभजत-हैं जैसे ॥ सकुच फांसिमें फँसे रहत हैं ते धौं तोरे कैसे । मैं भूली यहि लाज भरोसे राखतिही ए वैसे ॥ श्यामरूप वनमांझ समाने मोपै रहें अनैसे । सूर मिले हरिको आतुरह्वै ज्यों सुरभी सुत तैसे ॥ राग जैतश्री ॥ लोचनभए पराए जाइ । सन्मुख रहत टरत नहिं कबहू सदा करत सिनकाइ ॥ ह्वा तौ भए गुलाम रहतहैं मोसों करत ढिठाइ । देखत रहति चरित इनके सब हरिहि कहौंगी जाइ ॥ जिनका मैं प्रतिपालि बड किए ते तुम वशकारि पाइ ॥ सूर श्यामसों यह करि लैहौं अपने बल पकराइ ॥ राग टोडी ॥ अब मैंहू यहि टेक परी ॥ राखो अटकि जान नहिं पावैं क्यो मोरा निदरी ॥ मौन भई मैं रही आजुलौं अपनोइ मन समुझाऊं ॥ एऊ मिले नैनही डागरि देखति इनहु भगाऊं ॥ सुन री सखी मिले ए कबके इनहीको यह भेद । सूरदास नहिं जानी अबलौं वृथा करति तनुखेद ॥ राग धनाश्री ॥ नैना भए पराए चेरे । नंदलालके रंग गए रँगि अब नाहिन वश मेरे ॥ यद्यपि यतन किये जुगवतिही श्यामल शोभा घेरे । तऊ मिलि गए दूध पानी ज्यों निवरत नहीं निबेरे ॥ कुल अंकुश आरजपथ तजिकै लाज सकुच दिये डेरे । सूरश्यामकेरूप भुलाने कैसहुँ फिरत न फेरे ॥ राग रामकली ॥ जाकी जैसी बानि परी री । कोउ कोटि करै नहिं छूटै जोजहि धरनि धरी री ॥ बारेहीते इनके एढंग चंचल चपल अनेरे । गरजतही बरजत उठि दौरे भए श्यामके चेरे ॥ ये उपजे वोछे नक्षत्रके लपट भए वजाइ । सूर कहा तिनकी संगति जे रहैं पराए जाइ ॥ राग आसावरी ॥ नैननको री इहै सुहाइ । लुब्धे जाइ रूप मोहनको चेरे भए बजाइ ॥ फूले फिरत गिनत नहिं काहू आनँद उर न समात । इहै बात कहि सबन सुनावति नेकहु नहीं लजात ॥ निशि दिन करि सेवा प्रतिपाल बड भए जब आइ । तब हमको ये छाडि भगाने देखो सूरसुभाइ ॥ राग कान्हरो ॥ देखत हरिको रूप नैना हारे री पै हारि न मानत । भए भटकि बलहीन क्षीनतनु तऊ अपनी जे जानत ॥ दुरत न पटुकी वोट प्रगट हे बीच पलक नहिं आनत । छुटिगये कुटिल कटाक्ष अलक मनो टूटि गए गुण तानत ॥ भाल तिलक भ्रुव चाप आप लैसोइ सधान सँधानत । मन क्रम वचन समेत सूर प्रभु नहिं अपबल पहिंचानत ॥ राग सही ॥ हारिजीतिदोऊ समइनके लाभहानि

काको कहियत है लोभ सदा जियमें जिनके ॥ ऐसी परनि परी री जाके लाज कहा ह्वैहै तिनके। सुंदर श्याम रूपमें भूले कहा वश्य इन नैननि के॥ऐसे लोगनको सब मानत जिनकी घरघर हैं भनके। लुब्धे जाइ सूरके प्रभुको सुनत रही श्रवणनि झनके॥ अथ अँखियाँ समयके पद ॥ राग धनाश्री॥ अँखियनके इहई टेव परी। कहा करौं वारिजमुख ऊपर लागति ज्यों भ्रमरी॥ चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों बिसराति नहिंन घरी। यद्यपि हटकि हटकि राखतिहौं तद्यपि होति खरी॥ गडि जुरही वा रूप जलधिमें प्रेमपियूपभरी। सूरतहां नगअंग परसरसलूटति निधि सिगरी॥ राग धनाश्री॥ अंखियां निरखि श्याम मुख भूलीं। चकित भई मृदु हँसनि चमक पर इंदु कुमुद ज्यों फूलीं ॥ कुललज्जा कुलधर्म नाम कुल मानत नाहिंन एको। ऐसे ह्वै ये भजीं श्यामको वरजत सुनति न नेको ॥ लुब्धीं हरिके अंग माधुरी तनुकी दशा बिसारी। सूर श्याम मोहनी लगाई कछु पढिकै शिरडारी॥ राग जैतश्री ॥ अंखियां हरिके हाथ बिकानी। मृदु मुसुकानि मोल इन लीन्हीं यहसुनि सुनि पछितानी॥ कैसे रहत रहीं मेरे वश अब कछु औरै भांति। अब वै लाज मरति मोहिं देखत बैठी मिलि हरिपांति॥ स्वपनेकीसी मिलनि करतहैं कब आवति कब जाति ।सूर मिलीं ढरि नंदनँदन को अनत नहीं पतियाति ॥ राग बिहागरो॥ अंखियनि ऐसी धरनि धरी। नंदनँदन देखे सचुपावैं मोसों रहति डरी ॥ कबहूं रहति निरखि मुख शोभा कबहुँ देह सुधि नाहीं। कबहूं कहति कौन हरि को मैं यों तनमय ह्वै जाहीं ॥ अँखियाँ ऐसे भजीं श्यामको नहीं रह्यो कछु भेद। सूर श्यामकी परम भावती पलक न होत बिछेद॥ राग रामकली॥ अँखिअन श्यामअपनी करी। जैसेही उन मुहं लगाई तैसेही ए ढरी॥ इनकिए हरि हाथ अपने दूरि हमते परी। रहति वासर रैनि इकटक छाँह घाम खरी ॥ लोकलाज निकास निदरी नहीं काहुहि डरी। ए महा अति चतुर नागरि चतुर नागर हरी ॥ रहति डोलति संग लागी डटति ज्यों नहिं टरी। सूर जब हम हटकि हटकति बहुत हमपर लरी ॥ राग बिहागरो ॥अँखिअनि तबते बैर धरयो।जब हम हटकति हरिदरशन-को सो रिस नहिं बिसरयो ॥ तबहींते उन हमहिं भुलाई गई उतहिको धाइ। अबतौ तरकितरकि ऐंठतिहैं लेनी लेति बनाइ ॥ भई जाइ वे श्यामसुहागिनि बड भागिनि कहवावैं। सूरदास वैसी प्रभुता तजि हमपै अबवे आवैं॥ राग जैतश्री ॥ धन्यधन्य अँखियाँ बडभागिनि । जिन बिनश्याम रहत नहिं नेकहु कौन्हीं बने सुहागिनि ॥ जिनको नहीं अंगते टारत निशिदिन दरशन पावैं। तिनकी सरि कहि कैसे कोई जे हरिके मनभावैं ॥ हमहींते ए भई उजागरि अब हमपर रिस माने। सूर श्याम अति विवश भए हैं कैसे रहत लुभाने ॥ राग बिलावल ॥ ए अँखियां बडभागिनी जिनरीझे श्याम। अँगते नेक न टारहीं वासर अरु याम॥ ए कैसी हैं लोभिनी छबि धरतिचुराइ। और न ऐसी करिसकै मर्यादा जाइ ॥ यह पहिले मनही करी अबतो पछिताति। उनके गुण गुणिगुणि झुरै याहू न पत्याति ॥ इंद्री वश न्यारी परी सुख लूटति आँखि। सूरदास जेसँगरहैंतेऊमरैं झांखि॥ राग बिलावल ॥ अँखिअनितेरीश्यामको प्यारीनहिंऔर।जिनकोहारि अँगअँगमें करिदीन्हों ठौर॥ जो सुख पूरण इन लह्यो कहा जानै और। अम्बुजहरिमुखजारको दोउ भौंरीजोर॥ यहि अंतर श्रवणन परी मुरलीकी शोर। सुरचकितभई सुंदरीशिर परीठगोर॥ राग बिहागरो ॥ अँखिअनकी सुधि भूलिगई।श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई॥जो जैसे तैसेहि रहिगई सुख दुख कह्यो न जाइ। लिखी चित्रकीसी सब ह्वैगई इकटक पल बिसराइ ॥ काहू सुधि काहू सुधि नाहीं सहज मुरलिका गान। भवनरवनकी सुधि न रहीतब सुनत शब्द यह कान ॥ अँखिअनते

मुरली अतिप्यारीवह वैरनि यहसौति। सूरपरस्पर कहतगोपिका यह उपजी उदभौनि॥राग सारंग॥ अधररस मुरली लूटन लागी। जा रसको पटऋतु तनु गारयो सो रस पिवत सभागी॥ कहां रही कहँते इह आई कौने याहि बुलाई। चकृत कहा भई व्रजवासिनि यह तौ भली न आई॥ सावधान क्यों होत नहीं तुम उपजी बुरी बलाइ। सूरदास प्रभु हमपर याको कीन्ही सौति बजाइ॥ राग सारंग॥ आवतही याके ये ढंग। मनमोहन बस भए तुरतही ह्वैगए अंग त्रिभंग॥ मैं जानी यह टोना जानति करिहै नाना रंग। देखो चरित भंज हरि कैसे या मुरलीके संग॥ बातनमें कह ध्वनि उपजावति सुरते तान तरंग। सूरदाससे दूर सदनमें पैठो बडो भुजंग॥अध्याय २९ बंशी ध्वनि सुनिगोपीमोहन॥रासलीलाध्याध्यायी राग टोंडी॥ मुरली सुनत भई सब बौरी। मनहुँ परी शिरमांझ ठगौरी॥ जो जैसे सो तैसे सोरी। तनु व्याकुल सब भईं किशोरी॥ कोउ धरणि कोउ गगन निहारे। कोउ कर करते बासन डारे॥ कोउ मनहीं मन बुद्धि विचारे। कोउ बालक नहिं गोद सँभारे॥ घर घर तरुनी सब बिततानी। मन मन कहति कौन यह बानी॥ छुटि सब लाज गई कुलकानी। सुत पति आरजपंथ भुलानी॥ लैलै नाम सबनिको टेरे। मुरली ध्वनि घरहीके नेरे॥ कोउ जेंवत पतिहीतन हेरे। कोउ दधिमें जावन पय फेरै॥ कोउ उठि चली जसही तैसे। फिरि आवहिं घरहीमें पैसे॥ घर पाछे मुरलीध्वनि ऐसे। आँगन गए नही वह जैसे॥ गृह गुरुजन तिनहूं सुधि नाहीं। कोउ कतहू कोउ कतहूं जाहीं॥ कोउ निरखत कोउ काहूमाहीं। मुरछ्यो मदन तरुणि सब डाहीं॥ व्याकुल भईं सबै व्रजनारी। मुरलीसो बोली गिरिधारी॥ चली सबै जहँ तहँ सुकुमारी। उपजी प्रीति हृदय हरि भारी॥ मुरली श्याम अनूप बजाई। विधि मर्यादा सबनि भुलाई॥ निशि बनको युवती सब धाई। उलटे अंग अभूषण ठाई॥ कोउ चलि चरण हार लपटाई। काहू चौकी भुजनि बनाई॥ अँगिया कटि लहँगाउर लाई। यहशोभावरणी नहिं जाई॥ कोउ उठिचली जातिहै कोऊ। कोउ मग गई मिली मग कोऊ॥ सूरदास प्रभु कुंजविहारी। शरदरास रसरीति बिचारी॥राग गुंडमलार॥ शरदनिशि देखि हरि हरप पायो। विपिनवृंदावनसुभगफूलेसुमनरासरुचि श्यामके मनहिं आयो॥ परमउज्ज्वल रैनि छिटकिरही भूमिपर सद्य फल तरुन प्रति लटकि लागे। तैसोई परमरमणीक यमुनापुलिन त्रिविध बहै पवन आनंद जागे॥ राधिकारवन वन भवन सुख देखिके अधर धरि वेनु सुललित बजाई। नाम लैलै सकल गोपकन्यानके सबनके श्रवन वह ध्वनि सुनाई॥ सुनत उपज्यो मैन परत काहु न चैन शब्द सुनि श्रवन भई विकल भारी। सूर प्रभुध्यान धरिके चलीं उठि सबै भवनजन नेह तजि घोपनारी॥७९॥राग बिहागरो॥ सुनहु हरि मुरली मधुर बजाई। मोहे सुर नर नाग निरंतर व्रजबनिता मिलि धाई॥ यमुना नीर प्रवाह थकित भयो पवन रह्यो मुरझाई। खग मृग मीन अधीन भए सब अपनी गति बिसराई॥ द्रुमबल्ली अनुराग पुलकतनु शशि थक्यो निशि न घटाई। सूर श्याम वृन्दावन विहरत चलहु सखी सुधि पाई॥ ८० ॥ राग बिहागरो ॥ मुरली सुनत उपजी बाइ। श्यामसों अति भाव बाढो चलीं सब अकुलाइ॥ गुरुजननसों भेद काहू कह्यो नही उघारि। अर्ध रैनि चलीं घरनिते यूथ यूथनि नारि॥ नंदनंदन तरुनि बोली शब्द निशिके हेत। रुचि सहित बनको चलीं ये सूर भई अचेत॥८१॥ राग गुंडमलार॥सुनत मुरलीश्रवन डर न कीन्हों। श्यामपै चित्त पहुचाइ पहिले दियो आप उठि चली सुधि मदन दीन्हों॥ कहत मनकामना आजु पूरण करें नंदनंदन सबनि वन बुलाई। जानि लायक भजी तरुनि सुत पति तजी

काहु नहिं लजी अति प्रेम धाई ॥ तज्यो कुलधर्म गोधन भवन जन तजे पगी रस कृष्ण विन कछु न भावे। सूर प्रभुसो प्रेम सत्य करिकै कियो मन गयो तहा इनको बुलावे ॥ ८२ ॥ राग गौरा ॥ मुरली मधुर बजायो श्याम। मन हरि लियो भवन नहिं भावै व्याकुल ब्रजकी वाम ॥ भोजन भूपणकी सुधि नाही तनुकी नही सँभार। गृह गुरुलाज सुतसो तोरयो डरी नही व्यवहार॥ करत शृंगार विवश भई सुदरि अगनि गई भुलाई। सूर श्याम वन वेणु बजावत चितहित रास रमाई ॥ राग गुडमलार ॥ करत शृंगार युवती भुलाही। अग सुधि नही उलटे वसन धारही एक एकनि कछू सुरति नाही ॥ नैन अजन अधर अजही हरपसो श्रवण ताटक उलटे सँवारैं। सूर प्रभु मुख ललित वेणु ध्वनि वन सुनत चली बेहाल अचल न धारैं ॥ राग नट ॥ हरि मुख सुनत वैन रसाल। विरह व्याकुल भई बाला चली जहँ गोपाल ॥ पय दुहावन चली कोऊ रह्यो धीरज नाहिं। एक दुहनी दूध जावनको शिरावत जाहि ॥ एक उफनतही चली उठि धरयो नही उतारि। एक जेवन करत त्याग्यो चढे चूल्हे दारि ॥ एक भोजन करि सपरन गई वैसहि त्यागि। सूर प्रभुके पास तुरतहि मन गयो उठि भागि॥८४॥ राग रामकली॥ मन गयो चित्त श्यामसो लाग्यो। नाना विधि जेवन कारि परस्यो पुरुप जेवावत त्याग्यो ॥ इक पय प्यावत चलि तजि बालक छोह नही तब कीन्हो। चली धाइ अकुलाइ सकुच तजि वोलि वेनु ध्वनि लीन्हो ॥ इक पति सेवा करत चली उठि व्याकुल तनु सुधि नाही। सूर निदरि विधिकी मर्यादा निशि वनको सब जाही ॥ राग जैतश्री ॥ जबही वन मुरली श्रवण परी। चकृत भई गोपकन्या सब काम धाम विसरी ॥ कुल मर्याद वेदकी आज्ञा नेकहु नही डरी। श्याम सिंधु सरिता ललनागन जलकी ढरनि ढरीं ॥ अग मर्दन करिवेको लागीउबटन तेल धरी। जो जेहि भांति चली सो तैसेइ निशि वनकुज खरी॥ सुत पति नेह भवन जन शका लज्जा नही करी। सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हो नागर नवलहरी॥८६॥ राग केदारो॥ सुनि मुरली शब्द ब्रजनारि। करति अंग शृंगार भूली काम गयो तनु मारि ॥ चरण-सो गहि हार बांध्यो नैन देखति नाहिं। कचुकी कटि साजि लहँगा धरति हृदयमाहिं ॥ चतुरता हरि चोरि लीन्ही भई भोरी बाल। सूर प्रभु रतिकाममोहन रसरुचि नँदलाल॥ ८७॥ राग रामकली॥ ब्रजयुवतिन मन हरयो कन्हाई। रास रग रस रुचि मन आन्यो निशि वन नारि बुलाई ॥ तव तनु गारि बहुत श्रम कीन्हो सो फल पूरण देन। वेणुनाद रस विवश कराई सुनि ध्वनि कीन्हो गौन ॥ जाको मन हरि लियो श्याम धन ताहि सँभारै कौन। सूरदास ज्यो नारि कठ मिलि करै सु भावै जौन ॥ ८८ ॥ राग धनाश्री ॥ चली वन वेणु सुनत जब धाइ। मात पिता बधव इक त्रासत जाति कहां अकुलाइ ॥ सकुच नही शकाहू नाही रैनि कहां तुम जाति। जननी कहति दईकी घाली काहेको इतराति ॥ मानति नही और रिस पावति निकसी नातो तोरि। जैसे जलप्रवाह भादो-को सो को सकै वहोरि ॥ ज्यो केचुरी भुवगम त्यागत मात पिता यो त्यागे। सूर श्यामके हाथ विकानी अलि अनुज अनुरागे ॥८९ राग गुडमलार ॥ सुनत मुरली अलि न धीर धरिकै। चली पित मात अपमान करिकै ॥ लरत निकसी सवे तोरि फरिकै। भई आतुर वदन दरश हरिकै ॥ जाहि जो भजै सो ताहि रातै। कोऊ कछु कहै सब निरस बातै ॥ ता बिना ताहि कछु नही भावै। और तो जोरि कोटिक दिखावै॥ प्रीतिकी कथा यह भीति जानै। और करि कोटि बातै बखानै॥ ज्यो सलिल सिंधु बिनु कहुँ न जाई। सूर वैसी दशा इनहूँ पाई ॥९० राग सूही बिलावल ॥ घरघर-ते निकसी ब्रजबाला। लैलै नाम युवति जन जनके मुरलीमें सुनि सुनि ततकाला॥ इक मारग

मुरली अतिप्यारीवहवैरनि यहसौति। सूरपरस्पर कहतगोपिका यह उपजी उदभांति॥ राग सारंग॥ अधररस मुरली लूटन लागी। जा रसको पटऋतु तपु गारचो सो रस पिवत सभागी॥ कहां रही कहँते इह आई कौने याहि बुलाई। चकृत कहा भई व्रजवासिनि यहतौ भली न आई॥ सावधान क्यों होत नहीं तुम उपजी बुरी बलाइ। सूरदास प्रभु हमपर याको कीन्ही सौति बजाइ॥ राग सारंग॥ आवतही याके ये ढंग। मनमोहन वस भए तुरतही ह्वैगए अंग त्रिभंग॥ मैं जानी यह टोना जानति करिहैं नाना रंग। देखो चरित भजे हरि कैसे या मुरलीके संग॥ बातनमें कहँ ध्वनि उपजावति सुरते तान तरंग। सूरदाससे दूर सदनमें पैठो बडो भुजंग॥ अध्याय २९ मुरली ध्वनि सुरगोपीमोहन॥ रासक्रीडापंचाध्यायी राग टोडी॥ मुरली सुनत भई सब बौरी। मनहुँ परी शिरमांझ ठगौरी॥ जो जैसे सो तैसे सौरी। तनु व्याकुल सब भई किशोरी॥ कोउ धरणि कोउ गगन निहारै। कोउ कर करते बासन डारै॥ कोउ मनहीमन बुद्धि विचारै। कोउ बालक नहिं गोद सँभारै॥ घर घर तरुनी सब बितताना। मन मन कहति कौन यह बानी॥ छुटि सब लाज गई कुलकानी। सुत पति आरजपंथ भुलानी॥ लैलै नाम सबनिको टेरे। मुरली ध्वनि घरहीके नेरे॥ कोउ जेंवत पतिहीतन हेरै। कोउ दधिमें जावन पय फेरै॥ कोउ उठि चली जैसहीतैसे। फिरि आवहि घरहीमें पैसे॥ घर पाछे मुरलीध्वनि ऐसे। आँगन गए नहीं वह जैसे॥ गृह गुरुजन तिनहूं सुधि नाहीं। कोउ कतहू कोउ कतहूं जाहीं॥ कोउ निरखत कोउ काहूमाहीं। मुरछ्यो मदन तरुणि सब डाहीं॥ व्याकुल भई सबै व्रजनारी। मुरलीसों बोली गिरिधारी॥ चली सबै जहँ तहँ सुकुमारी। उपजी प्रीति हृदय हरि भारी॥ मुरली श्याम अनूप बजाई। विधि मर्यादा सबनि भुलाई॥ निशि बनको युवती सब धाई। उलटे अंग अभूषण ठाई॥ कोउ चलि चरण हार लपटाई। काहू चौकी भुजनि बनाई॥ अँगिया कटि लहँगा उर लाई। यहशोभा वरणी नहिं जाई॥ कोउ उठि चली जातिहैं कोऊ। कोउ मग गई मिली मग कोऊ॥ सूरदास प्रभु कुंजबिहारी। शरदरास रसरीति बिचारी॥ राग गुडमलार॥ शरदनिशि देखि हरि हरष पायो। विपिनवृंदावनसुभगफूलेसुमनरासरुचि श्यामके मनहिं आयो॥ परमउज्ज्वल रैनि छिटकिरही भूमिपर सद्य फल तरुन प्रति लटकि लागे। तैसोई परमरमणीक यमुनापुलिन त्रिविध बहे पवन आनंद जागे॥ राधिकारमन कहत भवन सुरत देखिके अधर धरि वेनु सुललित बजाई। नाम लैलै सबन्द्रुबो तहां आज अवसेर श्रवन वह ध्वनि सुनाई॥ सुनत उपज्यो मैन परस्पर काहु सबनि बताई॥ जाहु जाहु घर तुरत भारी। सूर प्रभुध्यान धरिके चलेउरवाइ। की गोकुलते गमन कियो तुम इन बातन है नहीं सुनहु हरि मुरली श्यामअधाम कहतभई कहा करत गिरिधर चतुराई। सूरनाम लै लै जन जनके नीर प्रवाहरबारि लगाई॥ ९७॥ राग बिहागरा॥ यह जिनि कहौ घोपकुमारि। हम चतुरई नहीं कीन्हीं तुम चतुर सब ग्वारि॥ कहां हम कहां तुम रही व्रज कहां मुरलीनाद। करतिहौ परिहासहमसों तजौ यह रसवाद॥ बडेकी तुम बहू बेटी नामलै क्यों जाइ। ऐसेही निशि दौरि आई हमहिं दोष लगाइ॥ भली यह तुम करी नाहीं अजहुँ घर फिरिजाहु। सूर प्रभु क्यों निडरि आई नहीं तुम्हरे नाहु ९८॥ राग जैतश्री॥ मात पिता तुम्हारे धौं नाहीं। बारबार कमलदललोचन यह कहि कहि पछिताहीं॥ उनके लाज नही बन तुमको आवन दीन्ही राति। सब सुंदरी सबै नवयौवन निठुर अहिरकी जाति॥ की तुम कहि आई की ऐसेहि कीन्ही कैसी रीति। सूर तुमहि यह नाहीं बूझी बडी करी विपरीति॥ ९९ ॥ राग रामकली॥ अब तुम

काहु नहिं लजीं अति प्रेम धाईं॥ तज्यो कुलधर्म गोधन भवन जन तजे पगीं रस कृष्ण बिन कछु न भावे। सूर प्रभुसों प्रेम सत्य करिके कियो मन गयो तहां इनको बुलावे॥ ८२॥ राग सोरठ॥ मुरली मधुर बजायो श्याम। मन हरि लियो भवन नहिं भावे व्याकुल ब्रजकी बाम॥ भोजन भूषणकी सुधि नाहीं तनुकी नहीं सँभार। गृह गुरुलाज सूतसो तोरयो डरीं नहीं व्यवहार॥ करत शृंगार विवश भई सुंदरि अंगनि गईं भुलाई। सूर श्याम बन वेणु बजावत चितहित रास रमाई॥ राग गुंडमलार॥ करत शृंगार युवती भुलाहीं। अंगसुधि नहीं उलटे वसन धारहीं एक एकनि कछू सुरति नाहीं॥ नैन अंजन अधर अंजहीं हरषसों श्रवण ताटंक उलटे सँवारें। सूर प्रभु मुख ललित वेणु ध्वनि बन सुनत चलीं बेहाल अंचल न धारें॥ राग नट॥ हरि मुख सुनत बैन रसाल। विरह व्याकुल भई बाला चलीं जहँ गोपाल॥ पय दुहावन चलीं कोऊ रह्यो धीरज नाहिं। एक दुहनी दूध जावनको शिरावत जाहिं॥ एक उफनतही चलीं उठि धरयो नहीं उतारि। एक जेंवन करत त्याग्यो चढे चूल्हे दारि॥ एक भोजन करि संपूरन गई वैसहि त्यागि। सूर प्रभुके पास तुरतहि मन गयो उठि भागि॥ ८४॥ राग रामकली॥ मनगयो चित्तश्यामसोंलाग्यो। नानाविधिजेंवनकरि परस्यो पुरुष जेंवावत त्याग्यो॥ इक पय प्यावत चलि तजि बालक छोह नहीं तब कीन्हों। चली धाइ अकुलाइ सकुच तजि बोलि वेनु ध्वनि लीन्हों॥ इक पति सेवा करत चली उठि व्याकुल तनु सुधि नाहीं। सूर निदरि विधिकी मर्यादा निशि वनको सब जाहीं॥ राग जैतश्री॥ जबहीं वन मुरली श्रवण परी। चकृत भई गोपकन्या सब काम धाम बिसरी॥ कुल मर्याद वेदकी आज्ञा नेकहु नहीं डरीं। श्याम सिंधु सरिता ललनागन जलकी ढरनि ढरीं॥ अंग मर्दन करिवेको लागीउबटन तेल धरी। जो जेहि भांति चली सो तैसेइ निशि वनकुंज खरी॥ सुत पति नेह भवन जन शंका लज्जा नहीं करी। सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों नागरनवलहरी॥ ८६॥ राग केदारो॥ सुनि मुरली शब्द ब्रजनारि। करति अंग शृंगार भूली काम गयो तनु मारि॥ चरण-सों गहि हार बांध्यो नैन देखति नाहिं। कंचुकी कटि साजि लहँगा धरति हृदयमाहिं॥ चतुरता हरि चोरिलीन्हीं भई भोरी बाल। सूर प्रभु रतिकाममोहन रासरुचि नँदलाल॥ ८७॥ राग रामकली॥ ब्रजयुवतिन मन हरयो कन्हाई। रास रंग रस रुचि मन आन्यो निशि वन नारि बुलाई॥ तब तनु निठुर वचन जिनि ... सो फल पूरण देन। बेणुनाद रस विवश कराई सुनि ध्वनि कीन्हों गौन॥ ... हैं धाम॥ अंतर कपट दूरि करि इँभारे कौन। सूरदास ज्यों नारि कंठ मिलि करें सु भावे सब गावत अपनो नाम सँभारो॥ हमको शरण आ... । मात पिता बंधव इक त्रासत जाति सूरदास प्रभु निजदासनिको चूककहा पछिताहिं॥ ६॥ राग गौरी॥ तुमपाऊँरी कहति दईकी घाली जाइ लेहैं ब्रजमें हम यह दरशन त्रिभुवनमें नाहिं॥ तुमहूते ब्रज हितूकोउ नहिं कोटिब्रह्म भादों-मानें। काके पिता मातहैं काके काहू हम नहिं जानें॥ काके पति सुत मोह कौनको घरहै कहा पठावत कैसो धर्म पापहै कैसो आश निराश करावत॥ हमजानें केवल तुमहीको और वृथा संसार। सूरश्याम निठुराई तजिए तजिय वचन बिनसार॥ ७॥ राग जैतश्री॥ तुमहो अंतर्यामि कन्हाई। निठुर भए कत रहत इतेपर तुम नहिं जानत पीर पराई॥ पुनि पुनि कहत जाहु ब्रजसुंदरि दूरि करो पिय यह चतुराई। आपुहि कही करो पतिसेवा ता सेवाको हैं हम आई॥ जो तुम कहो तुमहिं सब छाजे कहा कहैं हम प्रभुहि सुनाई। सुनहु सूर इहई तनु त्यागें हमपै घोष गयो नहिं जाई॥ ८॥ राग बिहागरो॥ कैसे हमको ब्रजहि पठावत। मनतो रह्यो चरण लपटानो जो एतनी यह

देह चलावत ॥ अटके नैन माधुरी मुसकनि अमृत वचन श्रवणनको भावत । इंद्री सबै मनहिके पाछे कही धर्म कहि कहा बतावत॥ इनको करी आपनो लायकतौ क्यों हम नाहीं जिय भावत। सूर सैन दे सरवस लूट्यो मुरली लैलैनाम बुलावत॥९॥ राग कान्हरो ॥भवननहीं अब जाहिंकन्हाई। सुजन वंधुते भई बाहिरी अब कैसे वे करत बडाई। जो कबहूं वे लेहिं कृपाकरि धृग वे धृग हम नारि । तुम विछुरत जीवन धृग राखें कहो न आपु विचारि ॥ धृग यह लाज विमुखकी संगति धनि जीवन तुम हेत । धृग माता धृग पिता गेह धृग धृग सुतपतिको चेत ॥ हम चाहति मृदु हँसनि माधुरी जाते उपज्यो काम । सूर श्याम अधरनरस सींचहु जरति विरह सब वाम॥ ॥ १० ॥ राग कान्हरो ॥सुनहु श्याम अब करहु चतुरई क्यों तुम वेणु बजाइ बुलाई। विधि मर्याद लोककी लज्जा सबै त्यागिहम धाई आई ॥ अब तुमको ऐसी न बूझिये आश निराश करोजिनि साई। सोइ कुलीन सोई बडभागिनि जो तुव सन्मुख रहै सदाई ॥ ते धनि पुरुष नारि धनि तेई पंकजचरणरहेंदृढताई । सूरदासकहिकहानखानैंयहनिशियहअँगसुंदरताई॥ ११॥ राग रामकली॥ विनती सुनिये श्यामसुजान । अतिहि मुख अपमान कीन्हों दृढ न इनते आन॥ अबकरौदुखदूरि इनको भजौं तजि अभिमान। विरह द्वंद्व निवारिडारो अधररस देपान॥मनहिमनयहसुखकरतहरि भए कृपानिधान । सूरनिश्चयभजीमोकोंनहींजानतिआन॥१२॥ राग बिलावल॥मोहिंबिनाएऔरन जानें ॥ [illegible]।

साधुसाधु

गृहधर्म । सूर श्याममुख कपट हृदय रति युवतिनके अति भर्म॥१३ ॥ राग गुण्डमलार॥तजौ नँद- लाल अति निठुरई गहि रहे कहा पुनिपुनि कहत धर्म हमको । एकही ढंग रहे वचन सब कटु कहे वृथा युवतिन दहे मेटि मनको ॥ विमुख तुमते रहैं तिनहि हम क्यों गहैं तहाँ कह लहैं दुख देहिं भारी । कहा सुत पति कहा मात पित कुल कहा कहा संसार वन वन विहारी॥ हमहिंमसुझाइ यह कहो मूरख नारि कहो तुम कहां नहिं भर्म जानैं । सुनहु प्रभु सूर तुम भले की पे भले सत्य करि कहा हमअबहिं मानैं॥ १४ ॥ राग रामकली॥ तुमहि विमुखधृगधृग नर नारि।हमतौ यहजानति तुव महिमा को सुनिए गिरिधारि ॥ साँची प्रीति करी हम तुमसों अंतर्यामी जानो ॥ गृह जनकी नहिं पीर हमारे वृथा धर्म हमठानो ॥ पाप पुण्य दोउपरित्यागे अब जो होइ सुहोई । आशनिराश सूरके स्वामी ऐसी करे न कोई॥ १५ ॥राग जैतश्री॥ आश जिनि तोरहु श्याम हमारी। वेन नाद ध्वनि सुनि उठि धाई प्रगटत नाम मुरारी ॥ क्यों तुम निठुर नाम प्रगटायो काहे विरद भुलाने । दीन आजुहमते कोउ नाहीं जानि श्याममुसुकाने ॥ अपनेभुजदंडन कर गहिए विरह सलिल- में भासी ।बारबार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अविनासी ॥ प्रीति वचन नवकाकरिराख्योअंकम भरि बैठावहु। सूर श्यामतुमबिनु गतिनाहीं युवतिनपारलगावहु॥ १६॥ राग नट॥चितदैसुनहुअंबुज- नैन । कृपणके गथ भयो हमको सरस अमृत बैन ॥ हम गुणी नवबाल रिझवति तुम तरुण धनराशि । कैसेहूं सुखदान दीजै विरह दारिद नाशि । करहु यह यश प्रगट त्रिभुवन निठुर कोठी खोलि । कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमवचननि बोलि ॥दीनवाणी श्रवण सुनि सुनि द्रए परम कृपाल। सूर एकहु अँग न काची धन्यधनि ब्रजबाल ॥ १७ ॥ राग बिहागरो॥हरिसुनि दीन वचन रसाल । विरह व्याकुल देखि बाला भरे नैन विशाल ॥चारु आनन लोरधारा वरणि कापै जाइ। मनहुं सुधातडाग उछले प्रेम प्रगटि देखाइ ॥ चंद्रमुख परि निडरि बैठे सुभग जोर चकोर ।पियत

मुख भरि भरि सुधा शशि गिरत तापर भौंर ॥ हरप वाणी कहत पुनि पुनि धन्य धनि व्रजबाल । सूर प्रभु करि कृपा जोह्यो सदय भए गोपाल॥१८ ॥ राग विहागरो ॥श्याम हँसि बोले प्रभुता डारि । बारंबार विनय कर जोरत कटिपट गोद पसारि ॥ तुम सन्मुख में विमुखतुम्हारो में असाध तुम साध । धन्यधन्य कहिकहि युवतिनको आप करत अनुराध ॥ मोको भजी एकचित ह्वैके निदरि लोक कुलकानि।सुत पति नेह तोरितिनुकासो मोही निजकरि जानि॥जाके हाथपेट फल ताको सो फल लह्योकुमारि। सूरकृपापूरणसोंबोलेगिरिगोवर्धनधारि॥१९॥राग सूहीबिलावल॥ कहत श्याम यह श्रीमुखबानी । धन्यधन्य दृढ नेम तुम्हारो विनदामन मोहाथबिकानी॥निर्दय वचन कपटके भाषे तुम अपने जिय नेक न आनी । भजी निशंक आय तुम मोको गुरुजनकी शंका नहिं मानी॥ सिंह रहे जंबुक शरणागत देखी सुनी न अकथ कहानी।सूरश्यामअंकम भरि लीन्हीं विरह अग्नि झर तुरत बुझानी॥२० राग मारू ॥कियो जेहि काज तप घोपनारी।देउँ फल हौं तुरत लेहु तुम अब घरी हरप चित करहु दुख देहु डारी ॥ रासरस रचौं मिलि संग बिलसहु सबै विहँसि हरि कह्यो यों निगमवानी । हँसत मुखमुख निरखि वचन अमृत वरपिप्रियारसभरे सारंगपानी ॥ व्रजयुवती चहुँ पास मध्य सुंदर श्याम राधिका वाम अति छवि विराजै । सूर नव जलद तनु सुभग श्यामलकांति इंद्रवधु पांति बिच अधिक छाजै ॥ २१ ॥ राग नट ॥ हरि मुख देखि भूले नैन। हृदय हरपित प्रेम गद्गद मुख न आवत बैन ॥ काम आतुर भजी गोपी हरि मिले तेहि भाइ । प्रेमवश्य कृपालु केशव जानिलेत सुभाइ ॥ परस्पर मिलि हँसत रहसत हरपि करत बिलास । उमँगि आनंद सिंधु उछल्यो श्यामके अभिलाप॥ मिलति इकइक भुजनि भरि भरि रास रुचि जिय आनि।तेहिसमय सुख श्यामश्यामा सूर क्यों कहिगानि॥ २२॥राग विहागरो॥ रास रुचि जबहिश्याम मन आनी ।करहु शृंगार सँवारि सुंदरी हँसत कहत हरि बानी॥जोदेखें अँग उलटे भूपण तब तरुनिन मुसुकानी।बारबार पिय देखिदेखि मुख पुनिपुनि युवति लजानी ॥ नवसत साजि भई सब ठाढी कोछवि सकै बखानी ॥ वहछविनिरखि अधीर भई तनु कामनारि बिततानी ॥ कुच भुज परसि करी मनइच्छा कछु ननुतृपा बुझानी । सुनहु सूर रस रास नायका सुंदरि राधा रानी ॥ २३ ॥ राग सोरठ ॥ अंचल चंचल श्याम गह्यो । लैगए सुभगपुलिन यमुनाके अँग अँग भेप लह्यो ॥ कल्प तरोवर तर वंसीवट राधा रति गृहधाम । तहां रास रस रंग उपायो सँग शोभति व्रजवाम॥ मध्य श्याम घन तडित भामिनी अतिराजत शुभजोरी । सूरदास प्रभु नवल छबीले नवल,छवीली गोरी ॥२४ ॥ राग टोडी ॥जहां श्यामघन रास उपायो । कुमकुमजल सुख वृष्टि रमायो ॥ धरणीरज कपूरमय भारी। विविध सुमन छवि न्यारीन्यारी॥युवतीझुरिमंडली विराजें॥बिचबिच कान्ह तरुनिबिच भ्राजें ॥ अनुपम लीला प्रगट देखायो ।गोपिनकोकीयोमन भायो ॥ बिच श्रीश्याम नारि बिच गोरी । कनकखंभ मर्कत खचि थोरी ॥शोभा सिंधु हिलोर हिलोरी । सूर कहा मति वरणै थोरी ॥ २५ ॥ राग गुंडमलार ॥ रास मंडल बने श्याम श्यामा । नारि दुइ पाम गिरिधर बने दुहुँनि बिच सहस शशि वीस द्वादश उपामा ॥ मुकुटकी छवि निरखि कहा उपमा कहौं नैन जानत नहीं देह जानै । सुभगतन मेघ ता बीच चपला चमक निरखि नृत्यत मोर हरप मानै॥करतिआनंदपियसंगलक्ष्मीपुंज बढत रसरंगछिनछिनहिओरै। सूर प्रभु राम रसनागरी मध्य दोउ परस्पर नारि पति मनहि चोरै ॥ २६ ॥ परस्पर श्याम व्रजवाम सोहैं । शीशशीखंड कुंडल जडित मणि श्रवण निरखि छवि श्याम मन तरुणिमोहैं॥

नासिका ललित वेसरि वनी अधर तट सुभग ताटंक छवि कहि न जाई । धरणि पग पटकि कर झटकि भौंहनि मटकि मनहिंमन तहां रीझे कन्हाई ॥ तव चल्न हरि मटकि रही युवती भटकि लटकि लटकन सटकि छवि विचारैं । कहति प्रभु सूर बहुरौ चलौ वेमही हमहु वैसे चलै जो निहारैं ॥ २७ ॥ निरखि व्रजनारि छवि श्याम लाजे । विविध वेनी रची मांग पाटी सुभग भाल वेंदीविंदु इदु लाजे ॥ श्रवण ताटंक लोचन चारु नासिका हंस खजन कीर कोटि लाजे।अधर विद्रुम दशन नहीं छवि दामिनी सुभग वेसरि निरखि काम लाजे ॥ चिवुक तर कंठ श्रीमाल मोतीन छवि कुच उँचनि हेमगिरि अतिहि लाजे । सूरकी स्वामिनी नारि व्रजभामिनी निरखि पिय प्रेम शोभा सुलाजे ॥ २८ ॥ राग विहागरो ॥ वनी व्रजनारिशोभा भारि । पगनि जेहरि लाल लहँगा अंग पचरँग सारि ॥ किंकिणी कटि कुनित कंकन करचुरी झनकार । हृदय चौकीचमकि वैठी सुभग मोतिनहार ॥ कंठश्री दुलरीविराजत चिवुक श्यामल विंद । सुभग वेंदी ललित नासा रीझिरहे नँदनंद ॥ श्रवणपर ताटककी छवि गोर ललित कपोल । सूर प्रभु वश अति भएहैं निरखि लोचनलोल ॥ २९ ॥ राग जतश्री ॥ सुरगण चढि विमान नभदेखत । ललनासहित सुमन गण वरषत जन्म धन्य व्रजहीको लेखत ॥ धनि व्रजलोग धन्य व्रजवाला विहरत राम गोपाल । धनि वसीवट धनि यमुनातट धनि धनि लता तमाल ॥ सबते धन्य धन्य वृंदावन जहां कृष्णको वास । धनि धनि सूरदासके स्वामी अद्भुत रच्यो रास ॥ ३० ॥ राग विलावल ॥ नैन सफल अब भए हमारे । देवलोक नीसान वजाए वरषत सुमन सुधारे ॥ जैजैध्वनि किन्नरमुनिगावतनिरसतयोग विसारे । शिव शारद नारद यह भाषत धनि धनि नंददुलारे ॥ सुरललना पतिगति विसराए रही निहारिनिहारि।जात न वनै देखि सुख हरिकोआईलोक विसारि॥यह छवितिहू भुवन कहुँ नाहीं जो वृंदावन धाम । सुंदर त्रयगुण रसकी सींवा सूर राधिका श्याम ॥ ३१ ॥ राग आसावरी ॥ हमको विधि व्रजवधू नकीन्ही कहा अमरपुर वास भए । वार वार पछितात यहै कहि सुख होतो हरि संग रए ॥ कहा जन्म जो नहीं हमारो फिरि फिरि व्रज अवतार भलो । वृंदावन द्रुम लता हूजिए करतासो माँगिए चलो ॥ यह वाछना होइ क्यों पूरण दासी है वरु व्रज रहिए।सूरदास प्रभुअतर्यामी तिनहि विना कासो कहिए॥३२॥ राग विहागरो॥धन्यनंद यशुदाके नंदन।धनि श्रीखंड पिंड शिर लटकनि धनि कुंडल धनि मृगमद चंदन॥धनि राधिका धन्य सुंदरता धनि मोहनकी जोरी ।ज्यो घनमध्य दामिनीकी छवियह उपमा कहाँथोरी॥धनि मंडली जुरी गोपिनकी ताबिच नंदकुमार । राधा श्याम सव गोपकुमारी क्रीडत रास विहार ॥ पटदश सहस गोपकी नारी पटदश सहस गुपाल । काहूसों कहुँ अँतर नाहीं करत परस्पर ख्याल ॥ धनि व्रजवास आश यह पूरण कैसे होतिहमारी । सूर अमरललनागण अमर विथको लोक विसारी॥३३॥ राग मलार॥मानो माई घनघन अंतरदामिनि। घन दामिनि दामिनिघनअंतर शोभित हरि व्रजभामिनि ॥ यमुन पुलिन मल्लिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि। सुंदरशशि गुण रूप राग निधि अंग अंग अभिरामिनि ॥ रच्यो रास मिलि रसिकराइसो मुदित भई व्रज भामिनि। रूपनिधान श्यामसुंदर घन आनँद मनविश्रामिनि॥ खंजन मीनमराल हरनछवि भान भेद गजगामिनि । को गति गुनही सूर श्यामसँगकामविमोहोकामिनि॥३४॥ राग मलार॥ देखो माई रूप सरोवर साज्यो । व्रजवनिता वरवारि वृंदमें श्री व्रजराज विराज्यो ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोल । कुच चकवाक विलोकि वदन विधु बिछुरि रहे अन-

बोल ॥ मुक्तामाल वालबगपंगति करत कुलाहल कूल । सारस हंस मध्य शुकसैना वैजयंति समतूल ॥ पुरइनि कपिश निचोल विविध रँग विहँसत सचु उपजावे । सूर श्याम आनंदकंद-की शोभा कहत न आवे॥३५॥राग सुघ॥तरुतमाल गोपाल लालवनमाल गिरिधरहृदय विशाल । कबहुँक गोधन सँग लै बालक कबहुँ फिरत सँग सखा ग्वाल । धनि व्रजनायक सबगुण लायक कियो महरि पोषी प्रतिपाल । कबहुँक वनिके रहैं जु वनए गोरस दान लेन तत्काल ॥ पैठि पतालहि नाथ्यो काली फनप्रति नृत्यत विविधताल।धनि भूषन धनि मुकुट जरयो नग हीरा चूनी लाल॥धन्य सूर प्रभुता धरे राजे सँगसँग वनिताजाल। कुंडल लोल कपोल विराजत दशन चमक सपनाल॥३६॥ राग कान्हरो ॥भालतिलक शोभित शिर केसरि नैना विविधि बने।कटि कछनीचंदन खौरि श्यामवरन घनसुंदर ऐसे नटनागरके जेए री वारने॥त्रिभंगी ह्वै नृत्य करत व्रजयुवतिन मंडली विच दुहुँदुहुँ विच श्याम बने । मोरमुकुट शीश धरे राजतहै सूर प्रभु निरखिनिरखि अमरन भजै जैजैध्वनि भनै॥३७॥राग धनाश्री॥रासमंडलमध्य श्याम राधा।मनो घनवीच दामिनी कौधति सुभग एक हैं रूप द्वै नाहिं बाधा ॥ नायका अष्ट अष्टहु दिशा सोहही बनी चहुँपास सब गोपकन्या। मिले सब संग नहिं लखति कोउ परस्पर बने षटदशसहस कृष्ण सैन्या॥सजे शृंगार नवसात जग-मग रह्यो अंगभूषणरैनि बनी तैसी।सूर प्रभु नवल गिरिधर नवल राधिका नवल व्रजसुता मंडली जैसी ॥३८॥राग भैरव॥युवति अंग छवि निरखत श्याम। नंदकुमार श्रीअंगमाधुरी अवलोकति व्रजवाम ॥ परी दृष्टि कुच उचनि पियाकी वह सुख कह्यो न जाई।अँगिया नील मांडनी राती निरखत नैन चुराई ॥वे निरखति पिय उर भुजकी छवि पहुँचनि पहुँची भ्राजति।करपल्लवन मुद्रिका सोहत त। छविपर मन लाजति ॥ बदन बिंद निरखि हरि रीझे शशिपर वालविभास। नंदलाल व्रजलालकि छबि क्यो वरणे सूरजदास ॥३९॥ राग गौरी ॥श्यामतनु राजतपीत पिछौरी। उर वनमाल काछनी काछे कटि किंकिनि छवि रोरी ॥ वेनी सुभग नितंबनि डोलत मंदगामिनी नारी। सूथन जघन बांधि ना।। बँद तिरनीपर छबि भारी॥नखनि रंग जावककी शोभा देखत पियमन भावत । सूर-दास प्रभुतनु त्रिभंग ह्वै युवतिन मनहि रिझावत॥४०॥राग सारंग ॥नीलांबर पहिरे तनु भामिनि जनु घनमें दमकतहै दामिनि । शेष महेश लोकेश शुकादिक नारदादि मुनिकी है स्वामिनि॥शशि-मुख तिलक दियो मृगमदको सुटिला सुभी जरायजरी । नासा तिल प्रसून बेसरि छवि मोतियन माँग सुहागभरी ॥ अति सुदेश मृदु चिकुर हरत चित गूँथे सुमन रसालहि। कबरी अति कमनीय सुभग शिर राजति गौरी वालहि॥ सिगरी कनक रत्न मुक्तामणि लटकनि चितहि चुरावे। मानो कोटिकोटि शत मोहनि पाँइनि आनि लगावे ॥ कामकमान समान भौंह दोउ चचल नैनसरोजै । अलिगंजन अंजन दे रेखा बरषत बाण मनोजै ॥ कंबुकंठ नाना मणिभूषण उर मुक्ताकी माल। कनक किंकिणी नूपुर कलरव कुंजत वाल मराल ॥ चौकी हेम चंद्रमणि लागी हीरारतन जराय खची । भुवन चतुर्दशकी सुंदरता राधेके मुख मनहुँ रची ॥ सजल मेघ घन साँवल सुंदर वामअंग अति सोहै। रूप अनूप मनोहर मोहै ता उपमा कहि कोहै ॥ सहज माधुरी अंगअंग प्रति सुवश किए व्रजनाथ धनी।अखिललोक लोकेश बिलोकत सब लोकनमहिं एक गनी ॥ कबहुँक हरि-सँग नृत्यनि श्यामा श्रमकन बूँद विराजत यों। मानहु अधरसुधाके कारण शशि दूजो मुकताहल्यो ॥ रमा उमा अरु शची अरुंधति दिन प्रति देखन आवें। निरखि कुसुम सुरगण है वर्षत प्रेम मुदित यश गावें ॥ रूपराशि सुखराशि राधिका शील महागुणराशी। कृष्णचरण ते पावहिं श्यामा

जे तुव चरण उपासी ॥ जगनायक जगदीश पियारी जगतजननि जगरानी । नित विहार गोपाललाल सँग वृन्दावन रजधानी॥अगतिनकी गति भक्तनकी पति श्रीराधापद मंगलदानी। अशरनशरनी भवभयहरनी वेद पुराण वखानी ॥ रसना एक नहीं शत कोटिक शोभा अमित अपारी । कृष्णभक्ति दीजै श्रीराधे सूरदास वलिहारी॥४१॥राग विहागरो॥नृत्यत श्याम नानारंग। मुकुट लटकनि भृकुटि मटकनि धरे नटवर अंग ॥ चलत गति कटि क्वनित किंकिनि-घूँघरू झनकार । मनो हंस रसाल वानी अरसपरस विहार॥लसति कर पहुँची सो पुंजय मुद्रिका अति ज्योति । भावसों भुज फिरत जवहीं तवहिं शोभा होति॥कवहुँ नृत्यत नारि गतिपर कवहुँ नृत्यत आपु॥सूरके प्रभु रसिककी मणि रच्यो रास प्रतापु॥४२॥राग विहागरो॥गति सुघंग नृत्यत व्रजनारी। हावभाव नैनासैना दैदै रिझवति गिरिधारी ॥ पगपग पटकि भुजनि लटकावति फंदा करनि अनूप॥चंचल चलत झूमिये अंचल अद्भुत है वह रूप ॥ दुरि 'निरखत अंगरूप परस्पर दोउ मनहिंमन रिझवत॥हँसिहँसि वदन वचन रस प्रगटत स्वेद अंग जल भीजत॥वेनी छूटि लटैं धगरानी मुकुट लटकि लटकानो । फूल खसत शिरते भए न्यारे सुभग स्वातिसुत मानो ॥ गान करति नागरि रीझे पिय लीन्हीं अंकम लाइ॥रसवश ह्वै लपटाइरहे दोउ सूर सखी वलिजाइ॥ ॥४३॥राग गौरी॥नृत्यत अंगअभूषण वाजत॥गति सुधंगसों भाव देखावत इकते इक अति राजत॥ कहत न वनै रह्यो रस ऐसो वर्णत वरणि न जाइ । जैसेइ श्याम तैसिय गोपी अतिही छवि अधिकाइ॥कंकन चुरी किंकिनी नूपुर पग पैजनि विछिया शोभित॥अद्भुत ध्वनि उपजत इन मिलिकै भमि २ इत उत जोवत ॥ सुनिसुनि श्रवण रीझि मनहीमन गधा रासरसज्ञा । सूर श्याम सबके सुखदायक लायक गुणनि गुणज्ञा॥४४॥राग केदारो ॥उघटत श्यामनृत्यत नारि। धरे अधर उपंग उपजै लेतहै गिरिधारि ॥ ताल मुरज रवाव वीना किन्नरी रससार । शब्दसंग मृदंग मिलवत सुघर नंदकुमार॥नागरी सव गुणनि आगरि मिलि चलति पियसंग । कवहुँगावति कवहुँ नृत्यत कवहुँ उघटति रंग ॥ मंडली गोपाल गोपी अंगअँग अनुहारि। सूरप्रभु धनि नवल भामिनि दामिनी छविडारि ॥४५॥ राग विहागरो॥ नृत्यत हैं दोउ श्यामा श्याम । अंग मगन पियते प्यारी अति निरखि चकित व्रजवाम ॥ तिरप लेति चपलासी चमकति झमकति भूषण अंग । या छविपर उपमा कहुँ नाहीं निरखत विवश अनंग ॥ श्रीराधिका सकलगुण पूरण जाके श्याम अधीन । संगते होत नहीं कहुँ न्यारी भई रहति अतिलीन॥रससमुद्र मानो उछलत भयो सुंदरताकी खानि॥सूरदास प्रभु रीझि थकितभये कहत न कछू वखानि ॥४६॥राग कल्याण॥ कवहुँ पिय हरषि हिरदय लगावै ॥ कवहुं लैलै तान नागरी सुघरप्रति सुघर नँदसुवनको मन रिझावै ॥ कवहुँ चुंवन देति आकर्षि जिय लेति करति विनचेत सव हेतु अपने । मिलति भुज कंठ दै रहति अँग लटकिकै जात दुख दूरि ह्वै झझकि सपने ॥ लेति गहि कुचनिविच देत अधरनि अमृत एक कर चिवुक इक शीश धारै । सूर प्रभु स्वामिनी श्याम अति सन्मुख ह्वै निरखि मुख नैन इकटक निहारै ॥४७॥ राग आसावरी ॥ जो सुख श्याम करत वृंदावन सो सुख तिहुँपुर नाहीं हो । हमको कहाँ मिलत रज उनकी यह कहिकहि अकुलाहीं हो ॥ सुनहु प्रिया श्रीसत्य कहतहौं मोते और न कोई हो । नंदकुमार रासरससुख विन वृंदावन नहिंहोई हो॥ हरता करताको प्रभु मैंही वह सुख मोते न्यारो हो॥ सूर धन्य राधावर गिरिधर धनि सुख नंद-दुलारो हो ॥४८॥ राग विहागरो॥ रसवश श्याम कीन्ही नारि । अधर रस अचवत परस्पर संग सव

व्रजनारि ॥ काम आतुर भजीं बाला सबनि पुरई आश । एकइक व्रजनारि इकइक आप करचो प्रकाश ॥ कबहुँ नृत्यत कबहुँ गावत कबहुँ कोकविलास । सूरके प्रभु आश नायक करत सुख दुख नाश ॥ ४९ ॥ राग कल्याण ॥ हरपि मुरली श्याम नाद कीन्हों । करपि मनतिहुँ भुवन सुनिथकि रह्यो पवन शशिहि भूल्यो गवन ज्ञान लीन्हों ॥ तारकागण लजे बुद्धि मनमन सजे तवहि तनुसुधि तजे शब्द लाग्यो।नाग नर मुनि थके नभ धरणितनतके शारदा स्वामि शिव ध्यान जाग्यो॥ध्यान नारद टरचो शेष आसन चल्यो गई वैकुंठ ध्वनि मगन स्वामी । कहत श्रीप्रियासों गधिकारवन ए सूर प्रभु श्यामके दरशकामी ॥ ५० ॥ राग बिहागरो॥ मुरली ध्वनि वैकुंठ गई । नारायण कमला सुनि दंपति अति रुचि हृदय भई ॥ सुनहु प्रिया यह बाणी अद्भुत वृंदाबन हरि देख्यो । धन्य धन्य श्रीपति मुख कहिकहि जीवन व्रजको लेख्यो।रासविलास करत नँदनंदन सो हमते अति दूरि । धनि बन धाम धन्य व्रजधरनी उडि लागे ज्यों धूरि॥यह सुख तिहूं भुवनमें नाहीं जोहारे-सँग पल एक । सूर निरखि नारायण इकटक भूले नैननिमेक॥ ५१॥ राग कल्याण॥जबहरि मुरली-नाद प्रकाश्यो। जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशों दिशि पूरण ध्वनि आच्छादित कीन्हों । निशिवर कल्प समान बढाई गोपिनको सुख दीन्हों ॥ मैमत भए जीव जल थलके तनुकी सुधि न सँभार । सूर श्याममुख बैन मधुर सुनि उलटे सब व्यवहार ॥ ५२ ॥ राग पूरबी॥ मुरली गतिविपरीतिकराई । तिहूंभुवन भरि नादसमानो राधारवन बजाई ॥ बछरा थन नाहीं मुख परसत चरत नहीं तृण धेनु । यमुना उलटी धार चली बहि पवन थकित सुनि बेनु ॥ विह्वल भए नहीं सुधि काहू सुर गंधर्व नर नारि । सूरदास सब चकित जहां तहँ व्रजयुवतिन सुखकारि ॥ ५३ ॥ राग केदारो॥ मुरली सुनत अचल चले । थके चर जल झरत पाहन विफल वृक्षन फले॥ पय स्रवत गोधननि थनते प्रेमपुलकित गात । झुरे द्रुम अंकुरित पल्लव विटप चंचलपात॥ सुनत खग मृग मौन साध्यो चित्रकी अनुहारि । धरणिउमँगि न माति धरमें यती योग विसारि ॥ ग्वाल गृहगृह सहज सोवत उहै सहज सुभाइ। सूर प्रभु रसरासके हित सुखद रैनि वढाइ॥५४॥राग केदारा॥रासरस मुरलीहीते जान्यों। श्यामअधरपरबैठि नाद कियो मारग चंद्र हिरान्यो॥ धरणि जीव जल थलके मोहे नभमंडल सुर थाके । तृण द्रुम सलिल पवन गति भूले श्रवण शब्द परचो जाके॥ बच्यो नहीं पाताल रसातल कितिक उदै लौं भान । नारद शारद शिव यह भापत कछु तनु रह्यो न सयान ॥ यह अपार रस रास उपायो सुन्यो न देख्यो नैन । नारायण ध्वनि सुनि ललचाने श्याम अधर सुनि बैन ॥ कहत रमासों सुनिसुनि प्यारी विहरत हैं बन श्याम। सूर कहाँ हमको वैसो सुख जो विलसति व्रजवाम॥५५॥ जीती जीती है रनवंसी । मधुकर सूत वदत वंदी पिक मागध मदन प्रशंसी ॥ मथ्यो मान बल दर्प महीपति युवतियूथ गहि आने । ध्वनिको खंड ब्रह्मंड भेद करि सुर सन्मुख शर ताने ॥ ब्रह्मादिक शिव सनक सनंदन बोलत जे जे थाने । राधापति सर्वस अपनो देपुनिताहाथबिकाने॥ खग मृग मीन सुमार किए सब जड जंगम जित भेप । छाजत छत मद मोह कवच कटि तजत न नैन निमेप॥ अपनी अपनी ठकुराइनिकी काढतिहै भुवरेख । बैठी पीठ पानि गर्जति है देति सबनि अवशेप । रविको रथ ले दियो सोमको षटदश कला समेत। रच्यो यज्ञ रसरास राजसू वृन्दाविपिन निकेत ॥दान मान परधान प्रेमरस बध्यो माधुरी हेत । अधिकारी गोपाल तहां है सूर सबनि सुख देत॥५६॥ अथ श्रीकृष्णविवाह वर्णन ॥ राग सारंग॥जाकोव्यासवर्णत रास।हैगंधर्ववि-

वाह चितदै सुनो विविध विलास ॥ कियो प्रथम कुमारि यह व्रत धरयो हृदय निवास । नंदसुत पति देव देवी पूज मनकी आस॥ दियो तव परसाद सबको भयो सबन हुलास । सब नयना तरुन वर तर यमुनजल हरि पास ॥ धरयो लग्न जो शरद निशिकी सुधि करी गुरु रास । मोरमुकुट समीर मानों कनक कंकन रास॥वेणुध्वनि सुनि श्रवण मायक कमलवदन प्रकास । रूपप्रति प्रति रूप कीन्हें भए अंश निवास॥अधर निधि वेधीर करिकै करत आनन हास । फिरत भाँवरि वश्य भूषण अग्नि मानो भास ॥ सुरनारि कौतुक लागि आई छांडि सुत पति पास। जिय परी ग्रंथ कौन छोरै निकट ननद न सास॥निरखि श्रुतिमति कुसुमअंजलि वरषि प्रसुन अकास । लेतया रस रासको रस रसिक सूरजदास ॥८७॥ राग वही ॥यह व्रत हिय धरि देवी पूजी।हँकछु मन अभिलाष न दूजी॥दीजे नंदसुवन पति मेरे। जोपै होइ अनुग्रह तेरे ॥ वरष दिनन भरि तप तनु कियो।तब करि अनुग्रह देवी वर दियो॥ राग छंद॥करि अनुग्रह वर जोदीन्होरूप युवतिन तप कियो।त्रैलोक-भूषण पुरुष सुंदर रूप गुण नाहिंन बियो ॥ उबटि खोरि शृंगारि सखिअन कुँवरि चोरी आनियो । जाहित कियो व्रतनेम संयम सोवरी विधि बानियो॥ १ ॥ मोरमुकुटरचि मौरबनायो। माथेपर धरि हरि वरुआयो ॥ तनु श्यामल पट पीत दुकूले । देखत घन दामिनि मन भूले ॥ ॥राग छंद॥ दामिनी घन कोटि वारौं जब निहारौं वहछवी। कुंडल बिराजतगंडमंडल नहीं शोभा शशि रवी॥ और कौन समान त्रिभुवन सकल गुण जेहिमाहिआं। मनो मोर नाचत संगडोलत मुकुटकी परिछाहिआं ॥ २ ॥ गोपीजन सब नेवते आई । मुरलीध्वनि ते पठइ बुलाई ॥ बहु विधि आनँदमंगल गाए। नवफूलनके मंडप छाए ॥ राग छंद ॥ छायेजुफूलन कुंज मंडप प्रीतिग्रंथि हिए परी ।अति रुचिर रूप प्रवीण राधा निकट वृन्दा शुभ घरी ॥ गाए जु गीत पुनीत बहु विधि वेद रव सुदरि ध्वनी।नंदसुत वृषभानुतनया रासमें जोरी बनी॥३॥ मिलि मनदै सुख असन बैसे । चितवनि बार किए सब तैसे॥तापरि पाणिग्रहण विधि कीन्ही ।तब मंडल भरि भावरि दीन्ही॥ राग छंद॥ देत भाँवरि कुंज मंडप पुलिनमें वेदी रची । बैठे जु श्यामा श्याम वर त्रैलोककी शोभा खची ॥ उत कोकिलागण कर कोलाहल इत सकल व्रजनारियाँ । आई जुनि-वती दुहूँ दिशि मनो देति आनँद गारियाँ॥ ४ ॥ भए जो मन्मथ सैन्य बराती । द्रुम फूले वन अनवन भाँती॥सुर वंदीजनसबजस गाए।भवबाजे मिरदंगबजाए॥राग छंद॥बाजहिंजेबाजनसकल नभ सुर पुहुपअंजलि वरषहीं । थकिरहे व्योम विमान मुनिगन जैशवद करि हर्षहीं ॥ सूरदा-सहि भयो आनद पुजी मनकीसाधा ।श्रीलालगिरिधर नवलदूलह दुलहनी श्रीराधा॥राग बिहागरो॥ प्रथम व्याहविधि हैरह्यो कंकनचार विचारि । रचिरचिपचिपचि ग्रंथि बनायो नवल निपुनव्रजना-रि ॥ नहिं छूटे मोहन डोरनाहो ॥ बडेहोवहुतबछोरियोहो ये गोकुलके राइ। कौ कर जोरिकरौ विनतीकै छुवौ श्रीराधाजीके पांइ॥यह न होइ गिरिकोधरिबोहोसुनहुकुँवरगोपीनाथ।आपुनको तुम बडे कहावत कांपन लागेहैं दोउ हाथ॥ बहुरि सिमिटि व्रजसुंदरी मिलि दीन्हीगांठि बनाइ । छोरहु वेगिकिआनहु अपनीयशुमतिमाइबोलाइ॥सहजसिथिलपल्लवतेहरिजूलीन्होछोरिसवारि। किलकि उठी सब सखी श्यामकी अब तुम छोरो सुकुमारि॥पचिहारीकैसेहुनहिंछूटतबँधीप्रेमकी डोरि । देखि सखी यह रीति दुहूँनकी मुदित हसी मुख मोरि ॥ अब जिनि करहु सहाय सखी री छोडहु सकल सयान।दुलहिनि छोरि दुलहको कंकन की बोलि बबा वृषभान ॥ कमल कमल कर वरनिएहो पानि पियगोपाल । अलि कुल साचिसे लगे रोमकटीले नाल॥ लीला रास

गोपाललालकी जो रसरसिक बखान।सदा रहो इह अविचल जोरी वलि वलि सूर समान ॥५८॥ ॥ राग सारग ॥ कान्ह तुम्हारी माइ महाबल मबजगअपवश कीन्होहो। नेकचितै मुसुकाइकै उनि सबको मन हरि लीन्होहो ॥ कछु कुलधर्म न जानिए वाके रूप सबै रँग राचे हो । बिन देखे समुझे सुने जग ठगत न कोऊ बाचे हो॥पहिरे राती कचुकी शिर श्वेत उपरना सोहेहो । कटि नीलो लहँगा कस्यो गो को जो निरखि न मोहेहो॥बोली चतुरानन ठगे सब अमर उपरना राते हो।अतरौटा अवलोकिकै सब असुर महामद माते हो॥एकनि दिन दरशन ठगे निशि एकनलै सँग सोवेहो। एकनँले मदिर चढे रचि एकनि विरचि विगोवे हो॥अकथ कथा वाकी सबे कछु कहौ तो कहिय न जाहीहो।छैलनके सँग यो फिरे जैसे तनु सँग छाही हो॥सुनि ताकी सब अपतई शुक सनकादिक भागे हो।नेक दृष्टि पथ पारि गई शकर शिर टोना लागे हो॥ योग युक्ति बिसरी सबै उर काम क्रोध मद जागे हो।लोकलाज सब छांडिके उठि धाइ चले सँग नाँगेहो॥और कहाँ लगि वर्णिये परपुरुप न उबरन पावैहो। जो सोवत अतिनीदमे हो तहऊँ जाइ जगावैहो ॥ यहिविधि इह डहकै सबै भरि जल थलहु जीव जेतेहो। चतुर शिरोमणि श्याम सुन्यो कनि कहौ कहांलगि केतेहो ॥ यदि लाजन मारिए सदा हारे जब सब कहत माय तुम्हारी हो । सूरदास प्रभु बरजिकै किनि मेटहु कुलकी गारी हो॥५९॥राग काफी॥सनकादिक नारद मुनिशिव विरचि जान।देवदुदुभी मृदग बाजे वर निसान॥बारने तोरन बँधाए हरि कीन्हो उछाह ।ब्रजकी सब रीति भई बरसाने व्याह ॥डोरन कर छोरनको आई सकल धाइ।फूली फिरे सहचरी आनँद उर न समाइ॥गजवर गति आवनि पग धरनि धरत पाव। लटकत शिर सेहरो मनो शिखि श्रीखड सुभाव ॥ शोभित सग नारि अग सबै छवि विराज । गज रथ बाजी बनाइ चवँर छत्र साज ॥ दुलहिनि वृपभानु सुता अग अग भ्राज। सूरदास प्रभु दूलह देखो श्रीव्रजराज ॥ ६० ॥ राग सारग ॥ दूलह देखोगी जाइ उतरे सकेत वट केहि मिस देखन पाउ । फूल गुथि माला लै मालिनि ह्वै जाउ॥नदनदन प्यारेको विरिआ करि लाऊ।तमोलिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउ॥अपने गोपाल लालके मै बागे रचि लेउँ । बजाजिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ ॥ वृदावनचंदको मैं भूपण गढि लेउँ।सुनारिनि ह्वै जाउँ निरखि नैननि सुख देउ ॥ चदन अरगजा सूर केसर धरि लेउँ।गधिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ॥६१॥राग बिहागरो॥ वृपभानुनदिनी अतिछवि बनी।श्रीवृन्दावनचद राधा निर्मल चांदनी॥श्याम अलक बिच मोती दुति मगा ॥ मानहु झलमलिन शीश गंगा । श्रवण ताटक सोहै निकुरकी कांति। उलटि चल्यो है राहु चक्रकी भांति ॥ गोरे लिलाट सोहै सेंदुरको बिंद । शशिकी उपमा देत कविको है निंद ॥ चपल उनीदे नैन लागत सोहाये । नासिका चपकलीको द्वै अलिधाये ॥ वदन मजनते अजन गयो दूरि ।कलंक रहित शशि पुनि कला पूरि॥ गिरिते लता भई यह हम सुनि । कचन लताते द्वै गिरि भए पुनि॥ कचनसे तनु सोहै नीलांबरसारी ।कुहूनिसामध्य जनु दामिनि उजियारी ॥ नख शिख शोभा मोपे बरणि न जाई।तुमसीतुमही राधा श्याम मनभाई॥यह छवि सूरदास सदा रहै बानी । नंदनदनराजा राधिकादे रानी॥६२॥रागदेवगधार॥दोऊ राजत श्यामा श्याम।ब्रजयुवती मडली विराजत देखति सुरगन वाम॥धन्य धन्य वृदावनको सुख सुरपुर कौने काम। धनि वृपभानु सुता धनि मोहन धनि गोपिनको नाम ॥ इनकी को दासी सरि ह्वैहै धन्य शरदकी याम केसेहु सूर जनम ब्रज पावे यह सुख नहिं तिहुँ धाम॥६३॥राग केदारो॥विराजत मोहन मडलराम।श्यामा सुधा मनोहर

मानो क्रीडत विविध विलास ॥ ब्रजयुवती सत यूथ मंडली मिलि कर परस करै । भुज मृणाल भूषण तोरण युत कंचन खंभ खरै ॥ मृदुपद न्यास मंद मलयानिल विगलित शीश निचोल । नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोल ॥ विपुल पुलक कंचुकि बंद टूटे हृदय अनंद भए । कुच युग चक्रवाक अवनी तजि अंतर गैनि गए । दशन कुंद दाडिम द्युति दामिनि प्रगटत ज्यो दुरिजात । अधर बिंब मधु अमी जलदकन प्रीतम वदन समात ॥ गिरत कुसुम कबरी केशनते टूटतहैं उरहार । शरद जलद मनो मंद किरन कन कहूँ कहूँ जलधार ॥ प्रफुलित वदन सरोज सुंदरी अति रस रंग रँगे । पुष्कर पुंडरीक पूरन मनो खंजन केलि खगे । पृथु नितंब करभीर कमल पद नखमणि चन्द्र अनूप । मानहु लुब्ध भयो वारिज दल इंदु किए दशरूप ॥ श्रुति कुंडल धर गिरत न जानति अति आनंद भरी । चरण परसते चलत चहूँ दिशि मानहु मीन करी॥ चरणरुनित नूपुर कटि किंकिनि करतलतालरसाल ।दरनीतनय समेत सहज सुख मुख गति मधुर मराल ॥राजत ताल मृदंग बांसुरी उपजति तान तरंग । निकट विटप मनो द्विजकुल कूजत वय वल बढे अनंग ॥ सकलविनोद सहित सुरललना मोहे सुर नर नाग । विथकित उडपति विंद विराजत श्रीगोपाल अनुराग ॥ याचत दास आस चरणनकी अपनी शरन बसाव । मन अभिलाष श्रवण यश पूरित सूरहि सुधा पिआव ॥६४॥ राग सुही॥ रासरसिक गोपाललाल ब्रजपाल संग विहरत वृंदावन। सत सुरन मुरली बाजत गाजत भ्राजत राजत अधरनि ध्वनि सुनि मोहे सुर नर गंधर्व गन ॥ तरुण कान्ह तरु तमालके तट तरुणि गोपिका यूथ निकट पट पीतांबर नीलांबर तन तन ॥ नृत्य करत उघटत संगनि पद ताथेई थेई ता कहत सूर प्रभु निरखि परस्पर रीझत मनमन ॥ ६५ ॥ राग बिहागरो ॥ आज निशि शोभित शरद सुहाई । शीतल मंद सुगंध पवन बहे रोमरोम सुखदाई॥ यमुनापुलिन पुनीत परमरुचि रचि मंडली बनाई । राधा वाम अंगपर कर धरि मध्यहि कुँवर कन्हाई ॥ कुंडल संग ताटंक एक भए युगल कपोलनि झाई ।एक उरग मानो गिरि ऊपर द्वै शशि उदय कराई ॥ चारि चकोर परे मनो फंद चलतहैं चंचलताई । उडुपति गति तजि रह्यो निरखि लजिसूरदास बलि जाई॥६६॥ ॥राग केदारो ॥ आजु हरि ऐसे रास रच्यो । श्रवणसुन्यो न कहूँ अवलोक्यो यह सुख अवलौंकहा सच्यो॥प्रथमहि सचे समाज साज सुर सबै मोहे कोउ न बच्यो।एकहि बार थकित थिर चर कियो कोजानै को कबहि नच्यो॥गत गुण मद अभिमान अधिक रुचि लै लोचन मन तहँइं खच्यो॥ शिव नारद शारदा कहत यों हम इतने दिन बादि पच्यो ॥ निरखि नैन रसरीति रजनि रुचि काम कटक फिरि कलह मच्यो । सूर धनुप धीरज न धरयो तब उलटि अनंग तच्यो ॥ ॥ ६७ ॥ आजु हरि अद्भुत रास उपायो । एकहि सुर सब मोहित कीन्हें मुरली नाद सुनायो ॥ अचल चले चल थकित भए सब मुनिजन ध्यान भुलायो । चंचल पवन थक्यो नहिं डोलत यमुना उलटि बहायो ॥ थकित भयो चंद्रमासहित मृग सुधासमुद्रबढायो।सूरश्याम गोपिनसुख दायक लायक दरश दिखायो ॥ रागसोरठ॥ मोहनयह सुख कहाधरचो । जो सुख रासरेनिउपजायो त्रिभुवन मनहि हरचो॥मुरलीशब्द सुनत ऐसो को जो व्रतते न टरचो । बचे न कोउ मोहित सब कीन्हें प्रेम उद्योत करचो ॥ उलटि काम तनु काम प्रकाश्यो अद्भुत रूप धरचो । सूरदास शिव नारद शारद कहत न बनो परचो॥८६॥ राग बिहागरो ॥आजु निशि रास रंग हरि कीन्हो। ब्रजवनिता बिच श्याममंडली मिलि सबको सुख दीन्हो ॥ सुरललना सुरसहित विमोहे रच्यो

मधुरसुर गान ॥ नृत्य करत उघटत नानाविधि सुनि मुनि बिसरच्यो ध्यान । मुरली सुनत भए सब व्याकुल नभधरनीपाताल॥ सूर श्याम काको नकिएवशरचिरसरासरसाल॥६९॥राग केदारो॥ बनावत रासमंडल प्यारो । मुकुटकी लटकझलककुंडलकी निरतत नंददुलारो ॥ उर बनमाल सोहै सुंदर वर गोपिनके सँग गावै । लेत उपज नागर नागरि सँग बिच बिच तान सुनावै ॥ वंसी-वट तट रास रच्यो है सब गोपिन सुखकारो । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकोभक्तनप्राण अधारो॥ ॥ ७० ॥राग बिहागरो ॥ दूलह दुलहिनि श्यामा श्याम । कोककला वितपन्न परस्पर देखत लज्जित काम ॥ जा फलको व्रजनारि कियो व्रत सो फल पूरण पायो । मनकामना भयो परिपूरण सबहित मानि मनायो ॥ राग रागिनी प्रगट देखायो गायो जो जेहि रूप । सप्त सुरनके भेद बतावति नागरि रूप अनूप ॥ अतिहि सुघर पियको मन मोह्यो अपवश करति रिझावति । सूर श्याम मोहन मूरतिको बारबारउर लावति ॥७१॥ राग रामकली ॥ श्यामा श्याम रिझावति भारी । मन मन कहति और नहिं मोसी पियको कोऊ प्यारी ॥ ध्रुवा छंद धुरपद यश हरिको हरिही गाय सुनावति । आपुन रीझि कंतको रिझवति यह जिय गर्व बढावति ॥ नृत्यति उघटति गति संगीत पद सुनत कोकिला लाजति । सूर श्याम नागर अरु नागरिललनासुलपमंडलीराजति॥७२॥राग रामकली ॥ रिझवतिपियहिबारबार।निरखिनैननलजात हरिके नही शोभापार ॥ चलि सुलप गज हंस मोहति कोक कला प्रवीन । हंसि परस्पर तान गावति करति पियहि अधीन ॥ सुनत वनमृग होत व्याकुल रहत चकृत आइ । सूर प्रभु वश किए नागरि महाजाननि राइ ॥ ७३ ॥ प्यारी श्याम लई उर लाइ । उरज उरसों परसको सुख वरणि कापै जाइ ॥ कनक छवि तन मलय लेपन निरखि भामिनि अंग । नासिका शुभ बास लैलै पुलक श्याम अनंग ॥ देत चुंबन लेत सुखको मानि पूरण भाग । सूर प्रभु वश किए नागरि वदति धन्य सुहाग ॥७४॥राग बिहागरो॥रीझे परस्परवरनारि। कंठभुजभुज धरे दोऊसकत नहिंनिर वारि ॥ गौर श्याम कपोल सुललित अधर अंमृत सार । परस्पर दोउ पियत प्यारी रीझि लेत उगार ॥ प्राण इक द्वै देह कीन्हें भक्त प्रीति प्रकास । सूर स्वामी स्वामिनी मिलि करत रंग विलास ॥ ७५ ॥ गावत श्याम श्यामा रंग । सुघर गति नागरि अलापति सुर धरति पियसंग॥ तान गावति कोकिला मनो नाद अलि मिलि देत। मोर संग चकोर डोलत आप अपने हेत ॥ भामिनी अंगजोन्ह मानो जलद श्यामलगात । परस्पर दोउ करत क्रीडा मनहि मनहि सिहात । कुचनि बिच कच परम शोभा निरखि हँसत गोपाल ॥ सूर कंचन गिरि बिचनि मनो रह्यो है अधकाल ॥७६॥ मोहन मोहनीरस भरे । भौंहमोरनि नैन फेरनि तहांते नहिं टरे ॥ अंग निरखि अनंग लज्जित सकै नहिं ठहराइ। एककी कहा चलै शतशत कोटि रहतलजाइ॥ इते पर हस्तकनि गति छवि नृत्य भेदअपार । उडत अंचल प्रगटि कुच दोउ कनकघट रससार ॥ दरकि कंचुकि तरकि माला रही धरणी जाइ । सूर प्रभु करि निरखि करुणा तुरत लई उचाइ ॥७७॥ राग जैतश्री॥ प्रेमसहित माला कर लीन्ही । प्यारी हृदय रहत यह जानी भुवपर नहीं पतीन्ही ॥ पीतवसन लै श्रमजल पोछ्न पुनिलै कंठ लगाइ । चरणन कर परसतहैं अपने कहत अतिहि श्रम पाइ ॥ कुच श्रम देखि पवन मुखहीकै फूंकि झुरावत अंग। सूरदास प्रभु भौंह निहारत चलत त्रियाके रंग ॥ ॥ ७८॥राग भैरव॥हाहाहो पिय नृत्य करो।जैसे करि मैं तुमहि रिझाई त्यो मेरो मन तुमहू हरो॥ तुम जैसे श्रम वायु करतहो तैसे मैंहू डुलावोगी। मैं श्रम देखि तुम्हारे अंगकोभुजभरि कंठलगा-

बोंगी ॥ मैं हारी त्योंही तुम हारो चरण चापि श्रम मेटोंगी । सूर श्याम ज्यों उछंगि लई मोहिं यों मेहुं हँसि भेटोंगी ॥ ७९॥ राग रामकली ॥ नृत्यत श्याम श्यामा हेत । मुकुट लटकनि भृकुटि मटकनि नारि मन सुखदेत ॥ कबहुं चलत सुधंग गतिसों कबहुं उघटत बैन । लोलकुंडल गंड मंडल चपल नैननि सैन ॥ श्यामकी छबि देखि नागरि रही इकटक जोहि । सूरप्रभु उर लाइ लीन्हो प्रेमगुण करि पोहि ॥८०॥ रागमलारकमेद ॥ अरुझि कुंडललट बेसरिमें पीतपट बनमाल बीच आनि उरझेंहै दोउ जन । प्राणनसों प्राण नैन नैननसो अटकि रहे चटकीली छबि देखि लपटात श्याम घन ॥ होड होडी नृत्य करें रीझि रीझि अंक भरें ताता थेई थेई उघटहैं हरषि मन । सूरदास प्रभु प्यारी मंडली युवति भोरी नारिको अंचल लेले पोंछतहैं श्रमकन ॥ ८१ ॥ ॥ राग अडानो ॥ मोहनलाल संग ललनायों सोहै ज्यों तरुनमालकेढिग सुभगसुमन जरदको । वदन कांति अनूप भांति नहिं संभारति नीलांबर गगन में नवघन बिच प्रगटचो शशि मनो शरदको ॥ मुक्तालड तारागन प्रतिबिंबित बेसरिको चूने मिलि रंग जैसे होत है हरदको । सूरदास प्रभु मोहन गोहनकी छबि बाढी मेटति दुख निरखि नैनमैंमनरंदरदको ॥८२॥ राग पूर्वी ॥ नँदनंदन सुघराई मोहन बंशी बजाई । सरिगमा पधनिसा संसप्त सुरनि गाई । अतिअनूगीत संगीत सुघर और तान मिलाई । सुर ध्याय ताल ध्याय नृत्य ध्याय निपुणराय मृदंग बजाई ॥ सूर प्रभु नवल बाल सकल कलागुण प्रवीण अरस परस रीझि रिझाई ॥८३॥ राग बिहागरो ॥ पियके संग खेलत अधिक श्रम भयो आउ री ह्यांको बयारि । अपनो अंचल ले सुखउ री रुचिर वदन श्रमकनके वारि ॥ नृत्यत उलटि गए अँग भूषन बिथुरी अलक बाँधी सँवारि । सूर रची रचना वृंदावन ब्रजयुवतिन सुखरूो बनवारि ॥ ८४ ॥ राग केदारो ॥ प्यारी देखि बिह्वल गात । नंदनंदन देखि रीझे अंक भरि लपटात ॥ कबहुं लेहि उछंग बाला कहि परस्पर बात । प्रेम रस करि भरे दोउ नैन मिलि मुसुकात ॥ रास रस कामना पूरन रैनि नहीं बिहात । सूर प्रभु सँग ब्रजतरुणि मिलि करत सुखन सिहात ॥८५॥ राग कल्याण ॥ रच्योरासरंग श्यामसबही सुख दीन्हो । मुरली धुर करि प्रकाश खग मृग सुनि रस उदास युवतिन तजि गेहवास बनहि गवन कीन्हो । मोहे सुरअसुर नाग मुनिजन मन भए जाग शिव शारद नारदादि चकृत भए ज्ञानी । अमरगन अमरनारि आई लोकनि बिसारि ओकलोकत्यागिकहति धन्य धन्य बानी ॥ थकित भयो गति समीर चंद्रमा भयो अधीर तारागन लज्जितभए मारग नहिं पावें । उलटियमुन बहति धार बिपरीत सबहीबिचार सूरज प्रभु संगनारिकौतुक उपजावें ॥८६॥ राग टोडी ॥ नंदकुमार रासरस कीनो । ब्रजतरुनिनि मिलिके सुखदीनों ॥ अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो । कियो श्याम सबहिन मन भायो ॥ बिच गोपी बिच मिले गोपाल । मणिकंचन सोहनि शुभमाल ॥ राधा मोहन मध्य बिराजें । त्रिभुवनकीशोभा येभ्राजें ॥ रास रंग रस राच्यो भारी । हाव भाव नानागति भारी ॥ रूप गुणनि करिपरम उजागरि । नृत्यत अंग थकित भई नागरि ॥ उमँगि श्याम श्यामा उर लाई बारंबार कह्यो श्रमपाई ॥ कंठ कंठभुजदोऊ जोरे । घन दामिनिछूटतनहिंछोरे ॥ सूरश्याम युवतिन सुखदाई । युवतिनकेमन गर्व बढाई ॥ ८७ ॥ राग गूजरी ॥ नव नागरिअतिगर्व बढायो । मो समान त्रिय और नहीं कोउ गिरिधर मैंहीवशकरि पायो ॥ जोइजोइकहति करत सोइ सोइ पिय मेरे हित यह रास उपायो । सुन्दर चतुर और नहिं मोसी देह धरेको भाव जनायो ॥ कबहुँक बैठि जाति हरि कर धरि कबहुँक कहति मैं अति श्रम पायो । सूर श्याम गहि

कंठरहीत्रियकंध चढौयहवचनसुनायो॥८८॥रागबिलावल॥कहै भामिनीकंतसोंमोहिं कंधचढावहु। नृत्यकरत अतिश्रम भयो ता श्रमहि मिटावहु॥धरणी धरत बनैं नही पग अतिहि पिराने। त्रिया-वचन सुनि गर्वके पिय मन मुसुकाने॥ मै अविगत अज अकल हौ यह मर्म न पायो। भाव-वश्य सबपै रहौं निगमनि यह गायो॥ एक देह द्वै प्रान है दुविधा नहिं यामें। गर्व कियो नरदेह-ते मै रहौ न तामें॥ सूरज प्रभु अंतर भए सगते तजि नारी। जहांतहां ठाढी रही सब घोप-कुमारी॥ ८९॥ अध्याय॥३०॥ अथ श्रीकृष्णअंतर्धानलीला॥ राग रामकली॥ गर्व भयो व्रजनारिको तवही हरि जाना।राधाप्यारी संग लिए भये अंतर्धाना॥गोपिन हरि देख्यो नही तब गई अकु-लाई। चकित होइ पूछनलगी कहां गए कन्हाई॥ कोउ मर्म जानै नही व्याकुल सब वाला। सूर श्याम ढूढत फिरैं जिततित व्रजवाला॥९०॥ राग बिहागरो॥ तब हरि भए अंतर्धान॥ जब कियो मन गर्व प्यारी कौन मोसी आन॥ अति थकित भई चलत मोहन चलि न मोपै जाइ। कंठभुज गहिरही यह कहि लेहु जबहि चढाइ॥गए संग बिसारि रिसमें विरस कीन्हो वाल। सूर प्रभु दुरि चरित देखत तुरत भई बेहाल॥९१॥ राग सोरठ॥ श्याम गए युवतीसँग त्यागि। चकित भई तरुणिन सँग जागि॥ प्यारी संग लगाइ विहारी। कुंजलतातर कतहूं डारी॥ संग नहीं तहँ गिरिवर धारी। दशहुदिशा तन दृष्टि पसारी॥ परी मुरुछि धरनी सुकुमारी। काम वैर लीन्हों शरमारी॥त्राहित्राहि कहिकहि बनवारी। भइ व्याकुल तनुदशा बिसारी॥ नैनसलिल भीजी सब सारी। सूर संग तजि गए मुरारी॥९२॥ अध्याय॥३१॥ तथा। ३२॥ गोपीविरह॥ राग बिहागरो॥ व्याकुल भई घोपकुमारि। श्याम तजि सँगते कहां गए यह कहति व्रजनारि॥दशौदिश नभ द्रुम-न देखति चकित भई बेहाल। राधिका नहिं तहाँ देखी कह्यो याके ख्याल॥ कछुक दुख कछु हरप कीन्हो कुंज लेगई श्याम। सूर प्रभु सगमही देखो करे ऐसे काम॥९३॥राग धनाश्री॥ विकल व्रजनाथवियोगन नारि।हाहा नाथ अनाथ करौ जिन टेरति बाँह पसारि॥ हरिजूके लाड गर्वजो तनुमखी मकी न वचनसँभारि। जनिअतहैअपराधहमारो नहिंकछु दोप मुरारि॥ढूँढतिबाट घाट वन घन तन मुरछि नैन जलधारि। सूरदास अभिमान देहको बैठी सरवसहारि॥९४॥ राग नट॥ बाये कर द्रुम टेके ठाढी। बिछुरे मदनगोपाल रसिक मोहिं विरह व्यथा तनु बाढी॥ लोचन सजल वचन नहि आवै श्वास लेति अति गाढी।नंदलाल ऐसी हमसों करी जलते मीन धरिकाढी॥ तव कित लाड लडाइ लडइते वेनी कुसुम गुहि गाढी। सूर श्याम प्रभु तुमरे दरशविनु अब न चलत दृग आढी॥ ९५॥ राग सारंग॥अकेली भूलि परी वनमाँहिं। कोऊ बायु वही कतहूंकी छूटिगई पियबाँहिं॥जहँजहँ जाउँ तहां डर लागत डगर न पावत नाँहि। सूरदास प्रभु तुमरे दरशविनु वेइ क-दम वे छाँहिं॥९६॥राग बिहागरो॥वन कुंजन चली व्रजनारि। सदा राधा करति दुविधा देतिरसकी गारि॥ मगही लै गई हरिको सुख करत घनधाम॥ कहां जैहैं ढूँढि लैहैं महारसकी वाम॥ चरणचिह्ननि चली देखति राधिकापगनाहिं। सूर प्रभुपगपरसि गोपी हरपिमन मुसुकाहिं॥९७॥ राग कान्हरो॥ हँसिहँसि युवती कहति परस्पर प्यारीको उरलाइ गए री। श्याम कामतनु आतुरताई ऐसे वामा वश्य भए री॥पुनि देखत राधिका चिह्न पग पियपग चिह्न न पावै।की पियको प्यारी उर लीन्हो यह कहि भ्रम उपजावै॥ वे गिरिधर उरधरिक्यो लेहीं वे गिरिधरउर लीन्हो॥सूरभई आतुर व्रजनारी पियप्यारीपग चीन्हो॥९८॥ राग बिलावल॥ जो देखेद्रुमकेतरसुरछी सुकुमारी। चकितभई सब सुदरी यहतौ राधानारी॥ याहीको खोजति सबै यह रही कहांरी। धाइपरीसब

सुंदरी जो जहांतहां री ॥ तनकी तनकहु सुधि नहीं व्याकुल भई बाला ।यहतौ अति बेहाल है कहा गए गोपाला॥बारबार बूझति सबै नहिं बोलति बानी । मृग श्याम काहे तजी कहि मन पछितानी॥९९॥राग सारंग॥राधे कतनिकुंज ठाढीरोवति॥इंदुज्योतिमुसागनिंदकीचकित चहूँदिशि जोवति॥द्रुमशाखा अवलंब बेलि गहि नखसों भूमि खनोवति। मुकुलित कच तन घनकि ओट ह्वै अँसुवनि चीर निचोवति॥सूरदास प्रभु तजी गर्वतेभये प्रेम गतिगोवति॥१८००॥राग भैरव॥ क्यों राधा नहिं बोलतिहै ।काहे धरणि परी व्याकुल ह्वै काहे नैन न खोलतिहै ॥ कनकबेलिसी क्यों मुरझानी क्यो बनमाझ अकेली है ।कहां गए मनमोहन तजिकै काहे विरहदहेलीहै॥श्याम नाम श्रवणनि ध्वनि सुनिकै सखियन कंठ लगावतिहै । सूर श्याम आए यह कहिकहि ऐसे मन हरषावतिहै ॥१॥राग बिहागरो॥कहा रहे अब लौं तुम श्याम। नैन उघारि निहारिरही तहां जो देखे ब्रजवाम॥लागी करन विलाप सबनसों श्याम गए मोहिं त्यागि । तुमको नहीं मिले नँदनंदन बूझतिहै तब जागि ॥ निरखि बदन वृषभानु कुँवरिको मनो सुधा बिन चंद । गया विरह देखि विरहानी यह गति बिन नँदनंद॥या बनमें कैसे तुम आई श्याम संग है नाहीं। कछु जानति कहा गए कन्हाई तहाँ तोहिं लैजाहीं॥मैं हठ कियो वृथारी माई जिय उपज्यो अभिमान। सूर श्याम ऊपर मोहिं आनी ह्वैगए अतर्धान॥२॥ राग बिहागरो॥ मैं अपने मन गर्व बढायो । इहै कह्यो पिय कंध चढौंगी तब मैं भेद न पायो॥यह बाणी सुनि हँसे कंठभरि भुजनि उछंगि लई । तब मैं कह्यो कौन है मोसी अंतर जानिलई ॥कहों गए गिरिधर मोकोतजि ह्यां कैसे मैं आई ।सूर श्याम अंतर भए मोते अपनी चूक सुनाई॥३॥राग बिहागरो॥ रुदन करति वृषभानुकुमारी । बारबार सखियन उर लावति कहा गए गिरिधारी ॥ कबहू गिरति धरणि पर व्याकुल देखि दशा ब्रजनारी ॥ भरि अँकवारि धरति सुरसपाटति देति नैन जल ढारी ॥ त्रिया पुरुषसों मान करतिहैं जाने निठुर मुरारी। सूरश्याम कुल धर्म आपनो लयरहत बनवारी॥४॥राग गौरी॥नँदनंदनउनको हमजानति। ग्वालन संग रहत ज माई यह कहिकहि गुण गानति ॥ बनबन धेनु चरावतवासर निशा सघन डर नाहीं ॥ देखि दशा वृषभानुसुताकी ब्रजतरुणी पछिताहीं ॥कहा भयो त्रिय जो हठ कीन्हों यह न बूझिए श्यामहिं॥सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरिदूरिकरहु मन तामहिं॥५॥राग कल्याण॥गयिरा सा कह्यो धीर मनधरिरी।मिलैगे श्याम व्याकुल दशा जिनिकरै हरषजिय करौ दुखदूरिकरि री ॥ आपु जहँतहँ गई विरह सब पगिरई कुँवरिसों कहि गईं श्यामल्यावैं।फिरति बनबन विकल सहस सोरह सकल ब्रह्मपूरन अकल नहीं पावैं ॥ कहाँ गए यह कहति सबै मग जोवहीं कामतनु दहति ब्रजनारिभारी । सूर प्रभु श्यामदुरि चरितदेखहिं सकलगर्व अंतरहृदय हेत नारी॥६॥राग बिलावल॥ श्याम सबनिको देखहीं वे देखति नाहीं । जहांतहां व्याकुल फिरें तनु धीरज नाहीं ॥ कोउ वंशीवटको चली कोउ बन घन जाहीं । देखि भूमि वह रासकी जहँतहँ पगछाहीं॥ सदा हठीली लाडिली कहिकहि पछिताहीं । नैन सजल जल ढारिकै व्याकुल मनमाहीं॥ एक एक ह्वै ढूँढहीं तरुनी विकलाहीं । सूरज प्रभुकहुँ नहिं मिले ढूँढति द्रुमपाहीं॥७॥ राग रामकली ॥कहि धौंरीबन बेलि कहू तुम देखेहैं नँदनंदन । बूझहुँ धौं मालती कहू तैं पाएहैं तनुचंदन ॥ कहि धौंकुंदकदंम बाकुल वट चंपक ल्ता तमाल ।कहि धौं कमल कहां कमलापति सुंदर नयन विशाल ॥ श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृंदावन छायो री ॥ गर्व जानि पिय अंतर ह्वै रहे सो मैं वृथा बढायो री॥ अब बिन देखे कल न परत छिन श्यामसुंदर गुणगायो री । मृग मृगनी द्रुम

बन सारस खग काहू नहीं बतायो री॥मुरली अधरसुधारस ले तरु रहेयमुनके तीर।कहितुलसीतुम सब जानतिहो कहँ घनश्यामशरीर॥ कहि धौंमृगी मयाकरि हमसोंकहि धौंमधुप मराल। सूरदास प्रभुके तुम संगी हौ कहाँ परमदयाल ॥८॥ कहूं न देख्यो री मधुबनमें माधौ। कहाँ धौं गमन कीन्हों कहाँ धौं बिलमि रहे नैन मरत दरशनकी साधौ ॥ जबते बिछुरे श्याम तबते रह्यो न जाइ सुनौ सखी मेरोइ अपराधौ। सूरदास प्रभु बिनु कैसे जीवहिं माई घटत घटत घटि रह्यो प्राण आधो॥९॥ राग आसावरी॥ कहूं न पाऊंरी सब ढूँढ़ि बनघन श्यामसुंदरपर वारौं तन मन। नेनन चटपटी मेरे तबते लागी रहति कहां प्राणप्यारो निर्धनको धन ॥ चंपक जाई गुलाब बकुल फूले तरुप्रति बूझति कहुँ देखे नँदनंदन। सूरदास प्रभु रासरसिक बिनु रास-रसिकिनी बिरहबिकल करि भई हैं मगन॥ १०॥राग काफी॥ कोऊ कहुँ देखे री नंदलाल।साँवरी सलोना ढोटा नैन बिशाल॥ मोर मुकुट बनमाल रसाल। पीतांबर सोहै मोहै मनगोपाल॥निशि बन गई जहां सबे ब्रजबाल। अंतर्धान भए रचि ख्याल॥द्रुमद्रुम ढूँढत भई बेहाल। सूर श्याम बिनु बिरह जंजाल॥११॥राग सारंग॥तुम कहुँ देखे श्याम बिसासी।नैक मुरलिका बजाइ बाँसकी लैगए प्राण निकासी॥कबहुंक आगे कबहुंकपाछेपगपगभरतउसासी। सूरश्यामके दरशनकारण निकसीचंद्रकलासी॥१२॥बागेसरी॥राग कान्हरो॥मोहनमोहनकहिकहिटेरैंकान्हहवौयहिबनमेंरे।कहियत हो तुम अंतर्यामी पूरण कामी सबकेरे॥ ढूँढतिहैं द्रुम बेली बाला भई बेहाल करति अव-सेरे। सूरदासप्रभु रासबिहारी श्रीबनवारीवृथा करत काहे झेरे॥ १३ ॥ राग अडानो॥कहो कान्ह ए बातैं हैं तिहारी बनवारी सुखहीमें भए न्यारे। इक सँग एक समीप रहतहैं तिन तजि कहां सिधारे॥ अब करि कृपा मिलौ करुणामय कहियतहो सुखकारे। सूरश्याम अपराध क्षमहु अब समझी चूक हमारे॥१४॥राग परजी॥केहि मारगमेंजाऊँ सखीरीमारग मुहिं बिसरयो। नाजानौं कित ह्वैगए मोहिं जात न जानि परयो ॥ अपनो पिय ढूंढति फिरौं री मोहिं मिलबेको चाव। कांटो लाग्यो प्रेमको पिय यह पायो दाव॥ बन डोंगर ढूंढति फिरी घरमारग तजि गाउँ। बूझौं द्रुम प्रति रूख राय कोउ कहे न पियको नाउँ ॥ चकित भई चितवत फिरी ब्याकुल अतिहिं अनाथ। अबकैजो कैसेहुं मिलौ तौ पलक न तजिहौं साथ॥हृदयमाहँ पियघर करौं रीनैननबैठक देउँ। सूरदास प्रभुसँग मिलौंबहुरि रास रसलेउँ॥१५॥राग श्रीराग॥कान्ह प्यारो कहुँ पायो री।श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृन्दावन छायो री ॥ गर्व जानि पिय अंतरह्वै रहे सो मैंवृथा बढ़ायो री। अब बिनुदेखे कलन परत छिन श्यामसुंदर गुण गायो री॥ मृग मृगिनी द्रुम बनसारस खग काहू नहीं बतायो री। सूरदासप्रभु मिलहुकृपाकरियुवतिन टेरि सुनायो री॥१६॥रागबिहागरो॥ हो कान्ह मैं तुम्हें चाहौंतुम काहे ना आवो।तुम धनतुमतन तुममन भावो॥कियो चाहों अरसपरस करौं नहिं मान।सुन्यो चाहौं श्रवण मधुर मुरलीकी तान ॥ कुंज कुंज जपति फिरी तेरे गुण-नकी माल। सूरदासप्रभु बेगि मिलौ मोहिं मोहन नँदलाल ॥ १७॥ राग काफी ॥ सखी मोहिं मोहन लाल मिलावे। ज्यों चकोर चंदाको इकटक भृंगी ध्यान लगावे॥ बिनु देखे मोहिं कल न परे री यह कहि सबन सुनावे। बिन कारण मैं मान कियो री अपनेहिमन दुखपावे ॥ हाहाकरि करि पाँइन परि परि हरिहरि टेर लगावे।सूर श्याम बिनु कोटि करो जो और नहीं जिय आवे॥ ॥ १८॥ राग आसावरी॥हौंतो ढूंढिफिरिआई री माईरी सिगरोवृन्दावनकहुँनहींपाएरीनँदनंदन।अन-तहि रहे जाइ कौनेधौंराखे छपाइ मोको न कछु सुहाइ कहांजाइ रहे कामकंदन॥ मोहीतेपरी रीचूक

सुंदरी जो जहांतहां री ॥ तनकी तनकहु सुधि नहीं व्याकुल भई बाला ।यहतौ अति बेहाल है कहां गए गोपाला॥बारबार बूझति सबै नहिं बोलति बानी । सूर श्याम काहे तजी कहि मन पछितानी॥९९॥राग सारंग॥राधे कतनिकुंज ठाढीरोवति।इंदुज्यो तिमुखारविंदकीचकित चहूँदिशि जोवति॥द्रुमशाखा अवलंब बेलि गहि नखसों भूमि खनोवति। मुकुलित कच तन घनकि ओट ह्वै अँसुवनि चीर निचोवति॥सूरदास प्रभु तजी गर्वतेभये प्रेम गतिगोवति॥१८००॥राग भैरव॥ क्यों राधा नहिं बोलतिहै ।काहे धरणि परी व्याकुल ह्वै काहे नैन न खोलतिहै ॥ कनकबेलिसी क्यों मुरझानी क्यों बनमांझ अकेली है ।कहां गए मनमोहन तजिकै काहे विरहदहेलीहै ॥श्याम नाम श्रवणनि ध्वनि सुनिकै सखियन कंठ लगावतिहै । सूर श्याम आए यह कहिकहि ऐसे मन हरपावतिहै ॥१॥राग बिहागरो॥कहां रहे अब लौं तुम श्याम।नैन उघारि निहारिरही तहां जो देखै ब्रजवाम॥लागी करन विलाप सबनसों श्याम गए मोहिं त्यागि । तुमको नही मिले नँदनंदन बूझतिहै तब जागि ॥ निरखि बदन वृपभानु कुँवरिको मनो सुधा बिन चंद । राधा विरह देखि विरहानी यह गति बिन नँदनंद॥या बनमें कैसे तुम आई श्याम संग हैं नाहीं। कछु जानति कहां गए कन्हाई तहां तोहिं लैजाहीं ॥मैं हठ कियो वृथा री माई जिय उपज्यो अभिमान । सूर श्याम ऊपर मोहिं आनी ह्वैगए अंतर्धान॥२॥ राग बिहागरो॥ मैं अपने मन गर्व बढायो । इहै कह्यो पिय कध चढौगी तब मैं भेद न पायो॥यह बाणी सुनि हँसे कंठभरि भुजनि उछंगि लई । तब मैं कह्यो कौन है मोसी अंतर जानिलई ॥कहां गए गिरिधर मोकोतजि ह्यांकैसे मैं आई ।सूर श्याम अंतर भए मोते अपनी चूक सुनाई॥३॥राग बिहागरो॥ रुदन करति वृपभानुकुमारी । बारबार सखियन उर लावति कहां गए गिरिधारी ॥ कबहूं गिरति धरणि पर व्याकुल देखि दशा ब्रजनारी ॥ भरि अँकवारि धरति मुखपोछति देति नैन जल ढारी ॥ त्रिया पुरुपसों भाव करतिहै जाने निठुर मुरारी। सूरश्याम कुल धर्म आपनो लयेरहत बनवारी॥४॥राग गौरी॥नँदनंदनउनको हमजानति। ग्वालन संग रहत जे माई यह कहिकहि गुण गानति ॥ बनबन धेनु चरावत वासर त्रिया वचन डर नाही ॥ देखि दशा वृपभानुसुताकी ब्रजतरुणी पछिताही ॥कहा भयो त्रिय जो हठ कीन्हो यह न बूझिए श्यामहिं।सूरदास प्रभुमिलहुकृपाकरिदूरिकरहु मन तामहिं॥५॥राग कल्याण॥राधिका-सों कह्यो धीर मनधरिरी।मिलेंगे श्याम व्याकुल दशा जिनिकरे हरषजिय करौ दुखदूरिकरि री ॥ आपु जहँतहँ गई विरह सब परिगई कुँवरिसों कहि गईं श्यामल्यावैं।फिरति बनबन विकल सहस सोरह सकल ब्रह्मपूरन अकल नहीं पावैं ॥ कहाँ गए यह कहति सबै मग जोवही कामवश नंदनंदन ब्रजनारिभारी । सूर प्रभु श्यामदुरि चरितदेखहिंसकलगर्व हत्यो तनु विरह प्रकाश्यो प्यारी श्याम सबनिको देखही वे देखतिं उराने दाजे चूक लईइनि मानि ॥राग केदारो॥ अहो तुम बंशीनटकअलौ नँदलाल । दुर्बल मलिन फिरत हम बन बन तुम बिनु मदनगोपाल ॥ द्रुम बेली पूंछति सब झकति देखति ताल तमाल।खेलत रास रंग भरि छांडी लैजु गये एकबाल ॥ सूरदास सब गोपी पछिली क्रीड़ा करति रसाल । गोपी वृन्दमध्य जगजीवन प्रगट भए तेहिकाल ॥ ॥ २७ ॥ हरिबिनु लागत है बन सूनो।ढूँढति फिरति सकल ब्रजयुवती दहत काम दुखदूनो॥तजि सुत पति सुनि श्रवणनिधाई मुरलिनादमृदु कीनों । व्यापत मकर मीन अति आतुर मनहुँ मीन जल हीनो ॥ चितवति चकित दिशन दिश हेरति मनमोहन हरलीनो ।द्रुम बेली पूछैं सब सुंदरि नवल जान कहु चीनो ॥कदली वोट निचोरत अंचल अधर सुधारस पीनो। सूर श्यामप्रियप्रेम

वन सारस खग काहू नहीं वतायो री॥मुरली अधरसुधारस ले तरु रहेयमुनके तीर।कहितुलसीतुम सब जानतिहौ कहँ घनश्यामशरीर॥ कहि धौंभृगी मयाकरि हमसोंकहि धौंमधुप मराल। सूरदास प्रभुके तुम संगी हौ कहाँ परमदयाल ॥८॥ कहूं न देख्यो री मधुवनमें माधौ। कहाँ धौं गमन कीन्हों कहाँ धौं विलमि रहे नैन मरत दरशनकी साधौ ॥ जबते विछुरे श्याम तबते रह्यो न जाइ सुनौ सखी मेरोइ अपराधौ। सूरदास प्रभु विनु कैसे जीवहिं माई घटत घटत घटि रह्यो प्राण आधो॥९॥ राग आसावरी ॥ कहूं न पाऊंरी सब ढूँढ़ि वनघन श्यामसुंदरपर वारौं तन मन। नैनन चटपटी मेरे तवते लागी रहति कहां प्राणप्यारो निर्धनको धन ॥ चंपक जाई गुलाब बकुल फूले तरुप्रति बूझति कहुँ देखे नँदनंदन। सूरदास प्रभु रासरसिक विनु रासरसिकिनी विरहबिकल करि भई हैं मगन॥ १०॥राग काफी॥ कोऊ कहुँ देखे री नंदलाल।साँवरो सलोना ढोंटा नैन विशाल॥ मोर मुकुट वनमाल रसाल। पीतांबर सोहै मोहै मनगोपाल॥निशि वन गई जहां सबै ब्रजबाल। अंतर्धान भए रचि ख्याल॥द्रुमद्रुम ढूँढत भई बेहाल। सूर श्याम विनु विरह जंजाल॥११॥राग सारंग॥तुम कहुँ देखे श्याम विसासी।नेक मुरलिका बजाइ बाँसकी लैगए प्राण निकासी॥कबहुँक आगे कबहुँकपाछेपगपगभरतउसासी। सूरश्यामके दरशनकारण निकसीचंद्रकलासी॥१२॥वागेसरी ॥राग कान्हरो॥मोहनमोहनकहिकहिटेरैंकान्हहवोयहिवनमेंरे।कहियत हौ तुम अंतर्यामी पूरण कामी सबकेरे॥ ढूँढतिहैं द्रुम वेली वाला भई वेहाल करति अवसेरे। सूरदासप्रभु रासविहारी श्रीवनवारीवृथा करत काहे झेरे॥ १३ ॥ राग अडानो॥कहो कान्ह ए वातें हैं तिहारी वनवारी सुखहींमें भए न्यारे। इक सँग एक समीप रहतहैं तिन तजि कहां सिधारे॥ अब करि कृपा मिलो करुणामय कहियतहौ सुखकारे। सूर श्याम अपराध क्षमहु अब समझी चूक हमारे॥१४॥राग परागी॥केहि मारगमेंजाउँ सखीरीमारग मुहिं बिसरयो। नाजानों कित ह्वैगए मोहिं जात न जानि पग्यो ॥ अपनो पिय ढूंढति फिरौं री मोहिं मिलवेको चाव। कांटो लाग्यो प्रेमको पिय यहपायो दाव॥ वन डोंगर ढूंढति फिरी घरमारग तजि गाउँ। बूझों द्रुम प्रति रूख राय कोउ कहै न पियको नाउँ॥ चकित भई चितवत फिरी व्याकुल अतिहि अनाथ। अबकैजो कैसेहुंमिलौ तौ पलक न तजिहौं साथ॥हृदयमाहँ पियघर करौ रीनैननवैठक देउँ।सूरदास प्रभुसँग मिलौंबहुरि रास रसलेउँ॥१५॥राग श्रीराग॥कान्ह प्यारो कहुँ पायो री।श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृन्दावन छायो री॥ गर्व जानि पिय अंतरह्वै रहे सो मैंवृथा [illegible] री। [illegible] विनदेखे कल न परत छिन श्यामसुंदर गुण रायो री॥ मृग मृगिनी द्रुम वनसारस होत लजात। श्रीराधिका निडार अव[illegible]कारियुवतिन टेरि सुनायो री॥१६॥रागविहागरो॥ मिलि सँग गोपी गोपाल। सूरदास प्रभु सब गुण लायक [illegible]॥कियो चाहों अरसपरस रास श्याम सुजान। प्रथम मुरलीनाद करिहरि हरयो सबको ज्ञान॥ सबनिउलटो [illegible] गणदेव सुर नरआदि।ब्रजवधूमनकाम पूरण कियो पुरुष अनादि॥सहज सुख निशि ग्वाल सोवत सो रची षटमास।हेतु युवती सुख बढावन कियो पूरण आस॥ मेटि अंतर्धानकोदुख उहैराख्यो भाउ। सूर प्रभुमहिमाअगोचर निगम अंत न पाउ॥२५॥ राग नट॥मोहन रच्यो अद्भुतरास।संग मिलि वृषभानुतनया गोपिका चहुँ पास॥ एकही सुर सकल मोहे मुरलि सुधा प्रकाश। जलहु थलके जीव थकिरहे मुनिन मनहि उदास ॥थकित भए समीर सुनिकै यमुन उलटी धार। सूर प्रभु ब्रजवाम मिलि मन निशा करत विहार॥२६॥विहरत रासरंग गोपाल।नवलश्यामहि संग

अंतर भए हैं जाते तुमसों कहति बातें मैंहीं कियो द्वंदन । सूरदास प्रभु बिनु भई हौं बिकल आली कहां रहे बनमाली सुर नर मुनि जन बंदन ॥ १९ ॥ राग बिलावल ॥ मिलहु श्याम मोहिं चूक परी । तेहि अंतर तनुकी सुधि नाहीं रसना रट लागी न टरी ॥ धरणि परी व्याकुल भई बोलति लोचन धारा अंसु झरी । कबहूं मगन कबहुँ सुधि आवति शरन शरन कहि बिरह जरी॥ कृष्णकृष्ण करि टेरि उठतिहैं युगसम बीतत पलक घरी । सूर निरखि ब्रजनारिदशा यह चकित भई जहँतहां खरी ॥ २० ॥ देखि दशा सुकुमारिकी युवती सब धाई । तरु तमाल बूझति फिरें कहिकहि मुरझाई ॥ नँदनंदन देखे कहूं मुरली कर धारी । कुंडल मुकुट बिराजई तनु कुंडल भारी। लोचन चारु बिशाल हैं नासा अति लोनी ।अरुण अधर दशनावली छबि बरणें कोनी ॥ बिंब पँवारे लाजहीं दामिनिद्युति थोरी । ऐसे हरि हमको कहौ कहूं देखेहो री ॥ अंगअंग छबि कहा कहैं देखे बनि आवे । सूर सुगूँगे खाइ ऊख क्यों स्वाद बतावे ॥२१॥ ॥ राग बिलावल ॥ अति व्याकुल भई गोपिका ढूंढति गिरिधारी। बूझतिहैं बन बेलिसों देखेबनवारी॥ जाईजूही सेवती करना कनिआरी । बेलि चमेली मालती बूझति द्रुमडारी॥ खझा मरुआ कुंदसों कहैं गोद पसारी । बकुल बहुलि बट कदमपे ठाढी ब्रजनारी ॥ बार २ हाहा करें कहु हौ गिरिधारी । सूर श्यामको नाम लै लोचन जल ढारी ॥ २२ ॥ कहूं न पावें श्यामको बूझन बन बेली । सबै भई व्याकुल फिरें तन मदन दहेली ॥ मृगनारीसों बूझहीं बूझेंसुकुमारी। कमल सरोवर बूझहीं बिरहा तनु भारी॥कनक बेलिसी सुंदरी द्रुमके तर डारी । मानों दामिनि धरणि परी की सुधा पनारी॥ इत उतते फिरि आवहीं जहँ राधा प्यारी। सूर श्याम अजहूं नहीं करि मिलन कृपा री ॥२३ ॥ राग बिहागरो॥करतिहैं हरिचरित्र ब्रजनारि । देखि अतिही बिकल राधा इहै बुद्धि बिचारि ॥ एक भई गोपालको बपु ऐक भई बनवारि। एक भई गिरिधरनसमरथ एक भई दैत्यारि ॥ एक भई वे धेनु वछरा एक भई नँदलाल। एक भई जमला उधारन इक त्रिभंग रसाल॥एक भई छबि राशि मोहन कहत राधा नारि। एक कहति उठि मिलहु भुज भरि सूर प्रभु री प्यारि॥२४॥रागजैतश्री॥ सुनत ध्वनि श्रवण उठीअकुलाइ।जो देखें नँदनंदनहींवे सखियन भेष बनाइ॥ कहा कपट करि मोहिं देखावति कहां श्याम सुखदाइ ।कृष्ण कृष्ण शरणागत कहि कै बहुरि गिरी भहराइ॥ पुनि दौरीं जहं तहँ ब्रजबाला बन द्रुम शोर लगाइ । सूरदास प्रभु अंतर्यामी बिरहिनि लेहु जिवाइ ॥२५॥ राग कान्हरो॥कृपासिंधु हरि क्षमा करौ हो ।अनजाने मन गर्व बढायो सो अपने जिनि हृदय धरौ हो ॥सोरह सहस पीर तन एके राधा जिव सब देह । ऐसी दशा देखि करुणामे प्रगट्यो हृदय सनेह ॥ [illegible] हत्यो तनु बिरह प्रकाश्यो प्यारी व्याकुल जानि । सुनहु सूर [illegible] । जहांतहां [illegible] दीजे चूक लई इनि मानि ॥ राग केदारो ॥ अहो तुम आनि [illegible] लाडिली कहिकहि [illegible] नँदलाल । दुर्बल मलिन फिरत हम बन बन तुम बिनु मदनगोपाल ॥ द्रुम [illegible] देखति ताल तमाल।खेलत रास रंग भरि छांड़ी लेजु गये एकबाल ॥ बेली पूंछति सब उझकति देखति ताल तमाल।खेलत रास रंग भरि छांड़ी लेजु गये एकबाल ॥ गोपी वृन्दमध्य जगजीवन प्रगट भए तेहिकाल ॥ सूरदास सब गोपी पछिली क्रीड़ा करति रसाल । गोपी वृन्दमध्य जगजीवन प्रगट भए तेहिकाल ॥ ॥ २७ ॥ हरिबिनु लागत हैं बन सूनो।ढूँढति फिरति सकल ब्रजयुवती दहत काम दुखदूनो॥तजि सुत पति सुनि श्रवणनिधाई मुरलिनादमृदु कीनों । व्यापत मकर मीन अति आतुर मनहुँ मीन जल हीनो ॥ चितवति चकित दिशन दिश हेरति मनमोहन हरलीनो । द्रुम बेली पूछे सब सुंदरि नवल जार कहुँ चीनो ॥ कदली खोट निचोरत अंचल अधर सुधारस पीनो । सूर श्यामप्रियप्रेम

उमगि रस हसि आलिंगन दीन्हो ॥ २८ ॥राग बिहागरो॥राधेभूलिरही अनुराग। तरुतरु रुदनकरत मुरझानी ढूँढि फिरी वनबाग॥कुँवरि ग्रसित श्रीखंड अहित श्रम चरण शिलीमुख लाग। बाणी मधुर जानि पिक बोलत कदम करारत काग॥ कर पल्लव किसलय कुसुमाकर जानि ग्रसित भए कीर। राका चंद्र चकोर जानके पिवत नैनको नीर॥व्याकुल दशा देख जगजीवन प्रगट भए तेहि काल। सूर श्याम हित प्रेम अंकुर उर लाइ लई भुज वाल ॥२९॥राग कल्याण ॥न्याय तजी श्यामा गोपाल। थोरी कृपा बहुत करि मानी पांवर बुधि ब्रजबाल॥ मैं कछु कपट सबनसो कीन्हो अपयशते न डेरानी। हम एकही संग एकहि मत सबकोउ नहिं बिलगानी॥ हम चातक वन नँदनदन वरपन लागे हित कीन्हो।तुवडी प्रबल पवनसम सजनी प्रेमबीच दुख दीनो॥ जानि दीन दुखी सब सुखके निधि मोहन वेनु बजायो। सूर श्याम तब दरश परश करि मिलि संताप नशायो ॥ ॥ ३० ॥राग कान्हरो ॥ प्रगट भऐ नदनदन आइ।प्यारी निरखि विरहअतिव्याकुलकरतेलईउठाइ॥ उभय भुजा भरि अकम दीन्हो राखी कठ लगाइ।प्राणहुते प्यारी तुम मेरे यहकहिदुखबिसराइ॥ हॅमत भए अंतर हम तुमसो सहज खेल उपजाइ।धरणी मुरझि परी तुम काहे कहांगई चतुराइ॥ राधा सकुचि रही मन जान्यो कह्यो न कछू सुनाइ। सूरदास प्रभु मिलि सुख दीन्हो दुख डारयो बिसराइ ॥ ३१॥राग कान्हरो नँदनंदन उर लाइलई।नागरिप्रेम प्रगटतनु व्याकुल तबकरुणाहरिहृदय भई। देखि नारि तरुतर मुरझानी देहदशा सब भूलिगई। प्रिया जानि अकम भरि लीन्हीं कहिकहि ऐसी काम हई॥ वदन बिलोकि कठ उठिलागी कनकवेलि आनंद जई।सूर श्याम फल कृपादृष्टि भए अतिहि भई आनद मई॥अध्याय ॥ ३३ ॥ श्रीकृष्णमिले गोपिनको फेर रास लीला व जलक्रीडा॥ राग सही ॥ अतरते हरि प्रगट भए। रहत प्रेमके वश्य कन्हाई युवतिनको मिलि हर्ष दए ॥वैसहि सुख सबको फिरि दीन्हो उहै भाव सब मानिलियो। वह जानति हरिसंग तबहिते उहैबुद्धिसब उहै हियो॥उहै रासमडल रस जानति विचगोपी बिच श्याम धनी।सूर श्याम श्यामामधिनायक उहै परस्पर प्रीति वनी॥३२॥ राग सारग ॥बहुरि श्याम सुखरास कियो। भुजभुजजोरिजुरीब्रजबाला वैसेही रस उमँगि हियो॥ वैसेहि मुरलीनाद प्रकाश्यो वैसहि सुर नर वश्य भए। वैसे उडुगण सहित निशापति वैसेहि मारग भूलिगए॥वैसेहिदशा भई यमुनाकी वैसेहि गतिजतिपवनथक्यो। वैसेहि नृत्य तरंग बढायो वैसेहि बहुरोकामजक्यो ॥ उहै निशा वैसेहिमनयुवतीवैसेहीहरिसबनि भजे।सूरश्यामवैसेइमनमोहनवैसेहिप्यारीनिरखिलजे॥३३॥राग बिहागरो॥ श्यामछविनिरखतनागरिनारि।प्यारीछविनिरखतमनमोहनसकत न नैनपसारि॥पियसकुचतनहिं दृष्टि मिलावत सन्मुख होत लजात। श्रीराधिका निडरि अवलोकत अतिहि हृदय हरषात॥ अरसपरस मोहनिमोहन मिलि सँग गोपी गोपाल। सुरदास प्रभु सब गुण लायक दुशमनके उर शाल ॥ ३४॥रचीरस रास श्याम सुजान। प्रथम मुरलीनाद करिहरि हरयो सबको ज्ञान॥ सबनिउलटी रीति कीन्हो देव सुर नरआदि।ब्रजवधू मनकाम पूरण कियो पुरुष अनादि॥ सहज सुख निशि ग्वाल सोवत सो रची पटमास।हेतु युवती सुख बढावन कियो पूरण आस॥ मेटि अंतर्धानकोदुख उहैराख्यो भाउ। सूर प्रभुमहिमाअगोचर निगम अत न पाउ॥ ३५॥ राग नट॥मोहन रच्यो अद्भुतरास।संग मिलि वृषभानुतनया गोपिका चहुँ पास॥ एकही सुर सकल मोहे मुरलि सुधा प्रकाश। जलहु थलके जीव थकिरहे मुनिन मनहि उदास ॥थकित भए समीर सुनिके यमुन उलटी धार। सूर प्रभु ब्रजवाम मिलि मन निशा करत विहार॥३६॥विहरत रासरंग गोपाल।नवलश्यामहि संग

शोभित नवल सब ब्रजबाल॥ शरद निशि अति नवल उज्ज्वल नवलता बनधाम। परम निर्मल पुलिन यमुना कल्पतरु विश्राम॥ कोश द्वादश रासपरमिति रच्यो नंदकुमार। सूर प्रभु सुख दियो निशि रमि कामकौतुक हार॥३७॥राग मलार॥ श्रमरसश्रमित भई ब्रजबाला निशिसुखदै यमुना तट लैगए भोर भयो तेहि काल॥मनकामना भए परिपूरण रहीन एकौ साधा॥षोडससहस नारिसंग मोहन कीन्हो सुखआगाध॥यमुनाजल विहरतनँदनंदन संगमिली सुकुमारि॥सूर धन्यधरनीवृंदावन रवितनयासुखकारि॥३८॥राग गुंडमलार॥ संग ब्रजनारि हरि रासकीन्हों। सबनकी आश पूरनकरी श्यामले त्रियनिपियहेतसुखमानिलीन्हो॥ मेटिकुलकानिमर्याद विधिवेदकीत्यागि गृहनेह सुनि वैनधाई। फनी जेंजकरी मनहि मन जेघरीगव काहुनकरी आपमाई॥ज्यो महामत्त गजयूथ करनीलिए कूल मरकोरि डर कही माने। सूरप्रभु नंदसुत निदरि निशिरस करयो नाग नरलोक सुर सबै जानें॥ ३९॥ अथ जलक्रीडा॥ राग गुंडमलार॥ रैनि रसरास सुखकरत बीती। भोरभए गए पावन यमुनके सलिल न्हात सुख करत अति बढी प्रीती॥ एक इक मिलति हँसि एक हरि संग रसि एक जल मध्य इक तीरठाढी। एकइक डरति इक एक भरि कै चलति एक सुख लरति अति नेह गाढी॥ काहु नहिं डरति जलथलहु क्रीडा करति हरति मन निदरि ज्यों कन नारी। सूर प्रभु श्याम श्यामा संग गोपिका मिटी तनुसाध भई मगन भारी॥४०॥ राग गौरी॥ यमुनजल क्रीडतहैं नँदनंदन। गोपीवृंद मनोहर चहुँ दिश मध्य अरिष्ट निकंदन॥ पकरे पाणिपरस्पर छिरकत शिथिल सलिल भुजचंदन। मानो युवति पूजि अहिपतिको लग्यो अंक दै वंदन॥ कुच भरि कुटिल सुदेश अलकनि चुवति अग्रगति मदन। मानहु भरि गडूष कमलते डारत अलि आनंदन॥ भुज भरि अंक अगाध चलन लै ज्यों लुब्धक खग फंदन। सूरदास प्रभु सुयश बखानत नेति नेति श्रुति छंदन॥४१॥ राग कान्हरो॥ विहरतहैं यमुनाजल श्याम। राजतहैं दोउ बाहां जोरी दंपति अरु ब्रजबाम॥ कोउ ठाढी जल जानु जंघलो कोउ कटि हिरदै ग्रीव। नह सुख बरणि सकै ऐसो को सुंदरताकी सींव॥ श्यामअंग चंदनकी आभा नागरि केसरि अंग। मलयज पंक कुमकुमा मिलिकै जल यमुना इक रंग॥निशिश्रममिटयो मिट्यो तनुआलस परसि यमुन भई पावन। सूर श्याम जल मध्य युवति गन जन जनके मन भावन॥ ४२ ॥ जलक्रीडा सुख अति उपजायो। रास रंग मनते नहिं भूलत उहै भेद मन आयो॥ युवती कर करजोरि मंडली श्याम नागरी बीच। चंदनअंग कुमकुमा छूटत जलमिलिकट भई कीच॥ जो सुखश्याम करत युवती संग सो सुख तिहुँपुर नाही॥सूर श्याम देखत नारिनकोरीझिरीझि लपटाही॥४३॥ ॥राग बिलावल॥ विहरत नारि हँसत नँदनंदन। निर्मल देह छूटि तनु चंदन॥ अति शोभा त्रिभुवन जन वंदन। पावत नहिं गावत श्रुति छंदन॥कंचन पीठ नारि अति शोभा। वे उनको वे उनको लोभा॥ कबहुँ अंकभरि चलत अगाधहि॥ अरस परस भेंटत मन साधहि॥ कोउ आगे कोउ पाछे धावे। युवतिनसों कहि ताहि मँगावे॥ ताको गहि अथाह जल डारें। सुख व्याकुलतारूप निहारें॥कंठ लगाइ लेत पुनि ताही। देत अलिंगन रीझत जाही॥सूर श्याम ब्रज युवतिन भोगी। जाकोध्यानतशिव मुनियोगी॥४४॥राग टोडी॥ऐसे श्यामनव्य राधाके। नामलेतपावन आधाके॥ प्यारी श्याम अंजली डारे। वा छबिको चितलाइ निहारे॥ मनो जलद जलडारत ढारे। मन मनही तन मन धन वारे॥ निरखि रूप नहिं धीर सम्हारे। सूर श्यामके अंकम धारे॥ ४५॥ राग ललित॥ राधे छिरकति छींटछबीली॥कुच कुमकुम कंचुकि बंद टूटे लटकिरही लटगीली॥बदन

शिर ताटंक गंड पर रतन जटित मणिलीली । गति गयंद मृगराज सुकटिपर शोभित किंकिणि ढीली ॥मच्यो खेल यमुना जल अंतर प्रेम मुदित रस झीली । नंदसुवन भुज ग्रीव विराजत,भाग सुहाग भरीली ॥ वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुंदुभि सरस बजीली।सूर श्याम श्यामा रस क्रीडत यमुन तरंग थकीली ॥४६॥राग रामकली॥श्यामाश्याम सुभग यमुना जल निर्भ्रम करत विहार। पीत कमल इंदीवरपर मनो भोरहि भए निहार॥श्रीराधा अंबुज कर भरिभरि छिरकत बारंबार। कनकलता मकरंद झरत मनु हालत पवन सँचार ॥ अतसीकुसुम कलेवर बूँदें प्रतिबिंबित निरधार।ज्योति प्रकाश सुघनमें खोलत स्वाति सुघन आकार॥ धाइ धरे वृषभानु सुता हरि मोहे सकल शृंगार। विद्रुम जलद सूर मनों विधु मिलि स्रवत सुधाकी धार ॥ ४७ ॥ राग रामकली ॥ यमुनजल गिरिधर करत विहार । इत उत गोपवधू मिलि छिरकत हस्तकमल सुखसार॥काहूकी कंचुकी छूटी काहूके बिथुरे हैं बार ॥ काहु खुभी काहू नकबेसरि काहूके टूटेहैं हार ॥ सूरदास कहँलों बरणौ मैं लीला अगम अपार॥४८॥ रीझे श्याम,नागरि रूप। तैसिये लट बगरि ऊपर स्रवत नीर अनूप।स्रवत जल कुच परत धारा नही उपमा पार।मनो उगलत राहु अमृत कनक गिरिपर धार॥ उरज परसत श्याम सुंदर नागरी सरमाइ । सूर प्रभुतनकाम व्याकुल गए मननि जनाइ ॥ ४९ ॥ राग सारंग ॥देख री उमँग्यो सुख आज।जल विहार विनोद सुखरुचि रतनको है साज॥भीजि पट लपट्यो सुभग उर रही केसर जयन। अरस परस स्वभाव मानो जगे निशिके नयन ॥ कछुक कुंचित केश माई सरस शोभा भयो । सुभग राजत कामद्रुमको मनो अंकुर नयो ॥ युवति गण सब यूथ जितकित भरत अवल नीर । सूर सुभग गोपाल तन व्रज सुखद श्याम शरीर ॥५०॥ ॥राग रामकली॥श्यामा श्याम अंकम भरी ।उरज उर परसाइ भुज भुज जोरि गाढे धरी ॥तुरत मन सुख मानि लीन्हो नारि तेहि रँगढरी । परस्पर दोउ करत क्रीडा राधिका नवहरी॥ऐसहीसुख दियो मोहन सबै आनँद भरी। करति रग हिलोर यमुना प्रेम आनँद झरी ॥ रास निशिश्रमदूरि कीन्हो धन्य धनि यह घरी।सूर प्रभु तट निकसि आए नारि सँग सब खरी ५१ ॥राग गूजरी॥ ठाढे श्याम यमुना तीर। धन्य पुलिन पवित्र पावन जहां गिरिधर धीर॥ युवति बनि बनि भई ठाढी और पहिरे चीर। राधिका सुख श्याम दायक कनकवरन शरीर ॥लालचोलीनीलडँडि- आ सग युवतिन भीर। सूरप्रभु छवि निरखि रीझे मगन भयो मन कीर॥ ५२ ॥ राग नट ॥ ललकत श्याम मन ललचात । कहत हैं घर जाहु सुंदरि मुख न आवत बात ॥ सहसपटदशगो- पकन्या रैनि भोगी रास । एक छिन भईकोउनन्यारी सबनिपुरईआस ॥ विहँसिसबघरघरपठाईं व्रजगई व्रजबाल। सूर प्रभु नँदधाम पहुँचे लख्योकाहु न ख्याल॥५३॥राग बिलावल व्रजवासीसब सोवत पाये।नंदसुवनमति ऐसीठानी घरलोगनउन जाइजगाए॥उठे प्रात गाथा मुखभापतआतुर रैनि विहानी। ऐंडत अगजम्हातवदनभरि कहतसबै यह बानी॥जो जैसे सो तैसे लागेअपनेअपने काज । सूर श्यामके चरितै अगोचर राखी कुलकीलाज ॥ ५४ ॥ राग जैतश्री॥व्रजयुवती रस रास पगी। कियो श्याम सबको मनभायो निशि रतिरंग जगी ॥ पूरण ब्रह्म अकल अविनाशी सबनि संग सुख दीन्हो । जितनी नारि भेप भए तितने भेद न काहू चीन्हो ॥वह सुख टरत न काहू मनते पतिहित साध पुराई। सूर श्याम दूलह सब दुलहिनि निशि भावरि दे आई ॥ राग सोरठ॥ साध नही युवतिन मन राखी। मनवांछित सबन फल पायो वेद उपनिपद साखी ॥भुजभरिमिली कठिन कुच चापे अधर सुधारस चाखी। हाव भाव नैनन सैननदै वचनरचन मुख भाषी ॥शुक

भागवत प्रगट करि गायो कछू न दुबिधा राखी। सूरदास ब्रजनारि संगहरि बाँकी रही न कोऊ काखी ॥ ५६ ॥राग कान्हरो॥ धनि शुक मुनि भागवत बखान्यो। गुरुकी कृपा भई जब पूरण तब रसना कहि गान्यो॥धन्य श्याम वृंदावनको सुख संत मयाते जान्यो। जो रस रास रंग हरि कीन्हें वेद नहीं ठहरान्यो ॥ सुर नर मुनि मोहित सब कीन्हें शिवहि समाधि भुलान्यो। सूरदास तहां नैन बसाए और न कहूं पत्यान्यो॥५७॥राग धनाश्री॥ शरद सोहाई आई राति।दह दिशि फूलिरही बन जाति॥ देखि श्याम मन अति सुख भयो॥ शशिगो मंडित यमुना कूल। बरषत विटप सदा फल फूल॥त्रिविध पवन दुखदवनहे॥श्रीराधा रवन बजायो बेन।सुनि ध्वनि गोपिन उपज्यो मेन॥जहां तहांते उठि चलीं॥चलत न काहुहि कियो जनाव। हरि प्यारीसों बाढ्योभाव॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १॥ घर डर बिसरयो बढ्यो उछाह। मन चीते हरि पायो नाह॥ ब्रजनायक लायक सुने॥दूध पूतकी छांडी आश।गोधन भरता करे निराश॥साँचे हित हरिसों कियो॥ खान पान तनुकी न सँभार। हिलग छँडाई गृह व्यवहार॥ सुधि बुधि मोहन हरि लई॥ अंजन मंजन अँगन शृंगार। पट भूषण छूटे शिर बार॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २॥ एक दुहावतते उठि चली। एक सिरावत मग महँ मिली॥ उतसहकंठा हरिसों बढी॥ उफनत दूध न धरयो उतारि। सीझी थूली चूल्हे दारि॥ पुरुष तात ज्यों जेवतहुते॥ पय प्यावत बालक धरि चली। पतिसेवा तजि करी न भली॥ धरयो रह्यो जेवन जिते॥तेल उबटना त्याग्यो दूरि।भागन पाई जीवन मूरि॥ रासरसिक गुण गाइहो॥३॥ अंजतही इक नैन बिसारयो। कटि कंचुकि लहँगा उर धारयो॥हारलपेट्यो चरणनसों॥श्रवणन पहिरे उलटे तार॥तिरनी पर चौकी शृंगार॥ चतुर चतुरता हरिलई॥जाको मन जहां अटके जाइ। ता वनिताको कछु न सोहाइ ॥कठिन प्रीतिको फंदहे॥ श्यामहि सूचत मुरलीनाद। सुनि धुनि छूटे विषे सवाद॥ रासरसिक गुण गाइहो॥४॥ एक मात पित रोकी आनि। सही न हरि दरशनकी हानि॥ सबहीको अपमानके॥जाको मन मोहन हरि लियो।ताकोकाहूकछुना कियो॥ ज्यों पतिसों त्रिय गतिकरे॥ जैसे सरिता सिंधुहि भजे। कोटिक गिरि भेदतनहिलजे॥ तैसी गति तिनकी भई॥इकजे घरते निकसी नहीं।हरि करुणा करि आये तहीं ॥रासरसिकगुण गाइहो ॥ ५ ॥निरस कवौं न कहँरसरीति।रसिकहिलीलारसपरतीति॥यहमतशुकमुखजानियो॥ ब्रजवनिता पहुँची पियपास। चितवत चंचल भृकुटिविलास॥हँसिबूझी हरिमानदे॥कैसेआई मारग मांझ। कुलकी नारि न निकसै सांझ॥ कहा कहँ तुम योगहो॥ब्रजकीकुशलकहाँबड-भाग। क्यों तुम छाँड सदन सोहाग॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥ ६ ॥ अजहूं फिरिअपनेघरजाहु। परमेश्वर करि मानों नाहु॥वनमें निशि बसिए नहीं॥श्रीवृन्दावन तुम देख्यो आइ।सुखद कुमोदिनि प्रफुल्लित जाइ॥ यमुनाजलसीकरघनो॥घरमहँयुवती धर्महि फवै। तातिनसुतपतिदुःखित सवै॥ यह विधना रचना रची॥ भरताकी सेवा सतसार। कपट तजे छूटे संसार॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥७॥ बिरध अभागी जो पति होई। मूरखरोगी तजैन जोई॥ पतित बिलक्षक छाँडिए॥ तजि भरतारहि जारहि लीन। ऐसी नारि न होइ कुलीन॥ यशविहीन नरकहि परे॥बहुत कहा समुझाऊं आज। हमहूं कछु करिवे गृहकाज॥ हमतेको अति जाननहे॥श्रीमुखवचनसुनत बिलखाइ। व्याकुल धरणि [illegible] ॥८॥दारुण चिंता बढी नथोर। क्रूखचन कहे नंदकिशोर॥ [illegible] रुदन करत नदी बढी गंभीर। हरि

करि आनहि जानै पीर। कुच थभन अवलन है❀तुम्हरी रही बहुत पिय आश। बिन अपराध न करहु निराश॥कैतौ रुखाई छांडिये❀निठुर वचन जिनि बोलहु नाथ। निजदासी जिनि करहु अनाथ॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ९ ॥ मुख देखत सुख पावत नैन। श्रवण सिरात सुनत मृदु बैन॥ सैननहीं सरवस हर्‍यो ❀ मद हँसनि उपाजयो काम। अधरसुधा ध्वनि करि विश्राम॥ वरपि सींचि विरहानला ❀ मुरली सुनतै भई सवाइ। तवते और न कछू सोहाइ॥ कहां घोष हम जाहिं क्यो❀सजन बधु को करिहै कानि। तुम बिछुरत पिय आतमहानि॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥१०॥ बेनु बजाइ बुलाई नारि। सहि आईकुल सबकी गारि॥ मन मधुकर लपट भयो❀सोऊ सुदरि चतुर सुजान।आरज पथ सुनै तजि गान॥ तिन देखत पुरुषउ लजे❀बहुत कहा वरणो यह रूप। और न त्रिभुवन शरण अनूप॥ बलिहारी या रानिकी❀सुन मोहन विनती दै कान।अपयश होइ किये अपमान॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ॥ ११ ॥ तुम हमको उपदेश्यो धर्म। ताको कछू न पायो मर्म॥ हम अबला मतिहीन हैं ❀ दुख-दाता सुत पति गृह बधु। तुम्हरीकृपाबिनु सब जग अधु॥ तुमते प्रीतम और को❀तुमसोप्रीति करहिं जे धीर। तिनहि न लोक वेदकी पीर॥ पाप पुण्य तिनके नहीं❀ आगापाग बंधीहमबाल। तुमहिं विमुख ह्वैहै बेहाल॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १२॥ विरद तुम्हारो दीनदयाल। कर-साकर धरि करि प्रतिपाल॥ भुजदडनि खडहु व्यथा❀ जैसे गुणी देखावै कला। कृपण कबहुँनहि मानै भला॥ सदय हृदय हमपर करौ❀ब्रजकी लाज वडाई तोहि। करहु कृपा करुणाकर जोहि॥ तुमहिं हमारे गति सदा❀दीन वचन जव युवतिन कहे। सुनत वचन लोचन जल बहे॥रासरसिक गुण गाइहौं॥१३॥ हँसि बोले हरि बोली बोडि। करजोरे प्रभुआसन छोडि॥ हौं असाधु तुम साधु हौ❀ मो कारण तुम भई निशक। लोकवेद बपुरा को रक॥ सिंहशरन जबुक वसे❀ विनदाम-न हौं लीन्हो मोल। करत निरादर भई न लोल॥ आवहु हिलिमिलि खेलिये❀ ब्रजयुवतिन घेरे ब्रजराज। मनहुँ निशाकर किरनसमाज॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ १४॥ हरिमुख देखत भूले नैन। उर उमँगे कछु कहत न बैन॥ श्यामहि गावत कामवश ❀ हँसत हँसावत करि परि-हास। मनमे कहत करैं अब रास॥ अचल गहि चञ्चल चल्यो ❀ ल्यायो कोमल पुलिनमँझार। नखशिख भूषण अग सँवार। पट भूषण युवतिनसजे❀ कुचपरसत पुजई सबसाध। रससागर मनो मदन अगाध॥ रास रसिक गुण गाइहौं॥ १५॥ रसमें विरस जु अन्तर्धान। गोपिनके उपजै अभिमान॥ विरहकथामें कौन सुख❀द्वादश कोस रास परमान।ताको कैसे होत बखान॥आस पास यमुना हिली❀तामें मानसरोवर ताल। कमल विमल जल परम रसाल॥ सेवहिं खग मृग सुखभरे❀निकट कल्पतरु वशीवटा। श्रीराधा रति कुजनि अटा॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ॥ १६॥ नव कुमकुम रज वरषत जहां। उडत कपूर धूरि जहँ तहा॥ और फूल फल को गनै ❀ तहँ घनश्याम रास रस रच्यो। मर्कतमणि कचनसो खच्यो॥ अद्भुत कौतुक परगट कियो ❀ मडलजोरि युवति जहां बनी। दुहुँ दुहुँ बीच श्याम घन धनी। शोभा कहत न आवई❀ घूघट मुकुट विराजत शीस। शोभित शशिमनो सहस बतीस॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ॥ १७॥ मणि कुडल ताटक विलोल। बिहँसत लज्जित ललित कपोल॥ अलक तिलक बेसरि बनी❀ कठशिरी गजमोतिनहार। चचरि चुरि किंकिणिझनकार॥ चौकी चमकति उरलगी❀ कौस्तुभमणि राजति रुचिपोति। दशन दमक दामिनिते ज्योति॥सरस अधर पल्लव बने❀चिबुक

मध्य श्यामल रुचि विंद। देखि सबनि रीझे गोविंद ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ १८॥ सघन विमान गगन भरिरहे। कौतुक देखन अमर उमहे॥ नैन सुफलसबके भए ❀ बाजे देवलोक नीसान। बरषत सुमन करत सुर गान ॥ मुनि किन्नर जयजयध्वनि करें ❀ युवतिन विसरेपतिगतिगेह। प्रेममगन सब सहितसनेह ॥ यह सुख हमको हो कहाँ ❀ सुंदरता सब सुखकी खानि। रसना एक न परत बखानि ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥१९॥ नीलकंचुकीमांडनि लाल। भुज निनवे आभूषण माल ॥ पीत पिछौरी श्यामतनु ❀ अँगुरिन मुँदरी पहुँची पानि। कछि कटि कछनी किंकिनि बानि ॥ उर नितंब बेनी तुरे ❀ नारावंधन सुथन जंघन। पाँयन नूपुरबाजतसंघन ॥ नखन महावर सुलिख्यो ❀ श्रीराधा मोहन मंडल माँझ। मनहु विराजत चंदा साँझ ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २० ॥ पग पटकत लटकत लट बाहु। मटकत भौंहन हस्त उछाहु ॥ अंचल चंचल झूमका ❀ दुरिदुरि देखत नैनन सैन। मुखकी हँसी कहत मृदु बैन ॥ मंडित गंड प्रस्वेदकण ❀ चाँरी डोरी विगलित केश। झूमत लटकत मुकुट सुदेश ॥ फूल खसत शिरते घने ❀ कृष्णवधू पावन यश गाइ। रीझत मोहन कंठ लगाइ ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २१ ॥ बाजत भूषण ताल मृदंग। अंग दिखावत सरस सुधंग ॥ रंग रह्यो न कह्यो परे ❀ नूपुर किंकिनि कंकण चुरी। उपजत मिश्रित ध्वनिमाधुरी ॥ सुनतसिरानेश्रवणमन ❀ मुरली मुरजरबाब उपंग। उघटत शब्द विहारीसंग। नागरि सब गुण आगरी ❀ गोपीमंडल मंडित श्याम। कनक नीलमणि जनु अभिराम ॥ रासरसिक गुण गाइहौं ॥ २२ ॥ तिरप लेति सुंदर भामिनी। मनहु विराजत घनदामिनी। या छविकीउपमा नहीं ❀ राधाकीगतिपरत न लखी। रससागरकी सीवाँ नखी ॥ बलिहारी वारूपकी ❀ लेति सुघर औघर गति तान। दे चुंबन आकर्षति प्रान॥ भेंटति मेटनि दुख सबै ❀ राखति पियहि कुचनविचआनि दि अधरामृत शिरपर पानि ॥ रासरसिकगुण गाइहौं ॥ २३ ॥ हरषित वेणु बजायो छैल। चंद्रहि विसरी नभकी गैल ॥ तारागण मनमें लज्यो ❀ मुरलीध्वनि बैकुंठहि गई। नारायण सुनि प्रीति जु भई ॥ कहत वचन कमला सुनौ ❀ श्रीकुंजविहारी विहरत देखि। जीवन जन्म सफलकरि लेखि ॥ इहसुख तिहुँपुरहेकहाँ ❀ श्रीवृंदावन हमतेदूरि। कैसे धौं उड़िलागे धूरि॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥२४॥कोलाहल ध्वनि दहदिश जाति। कल्पसमान भई सुखराति ॥ जीवजंतु मेंमतसबै ❀ उलटि बह्यो यमुनाको नीर। बालक बच्छ न पीवें क्षीर॥ राधारमन ठगे सबै ❀ गिरिवर तरुवरपुलकित गात। गोधन थनते दूध चुचात ॥ सुनि खग मृग मुनिव्रत धर्यो ❀ महि फूली भूल्यो गति पौन। सोवत ग्वाल तजत नहिं भौन। रासरसिक गुण गाइहौं ॥२५॥ राग रागिनी मूरतिवंत। दूलह दुलहिनि सरस बसंत ॥ कोक कला संगीत गुरु ❀ सतसुरनकी जाति अनेक।नीके मिलवति राधा एक॥मन मोह्यो पियको सुघरि ❀ छंदध्रुवनिके भेद अपार। नाचति कुँवरि मिले झपतार ॥ कह्योसबै संगीतमें ❀ पिकनि रिझावति सुन्दर सुपद। सरस स्वल्पध्वनि उघटत सुखद॥रासरसिक गुण गाइहौं॥२६॥चलति सु मोहति गति गज हंस। हँसतपरस्पर गावत गंस॥तान मान मृगमथनके ❀ गौरी चंदनचरचित बाहु॥लेत सुदाम पुलकतनु नाहु॥ दे चुंबन हरिसुख लियो ❀ श्यामल गौर कपोल सुचारु। रीझि परस्पर लेत उगारु ॥ एक प्राण द्वैदेहहैं ❀ नाचत गावत गुणकी खानि। श्रमित भए टेकत पिय पानि॥ रासरसिक गुणगाइहौं ॥ २७ ॥ पिक गावत अलि नादहि देत। मोर चकोर फिरत सँग हेत ॥ सघन सुमन हारहें मनो ❀ कच कुच बिंदरसे हँसि श्याम। चलत भौंह नैननअभिराम ॥ अंगन

कोटि अनंग छवि ❀ हस्तकभेद ललित गति लई। अंचल उडत अधिक छवि भई॥ कुचविगलित मालागिरी ❀ हरि करुणाकरि लई उठाइ। पोंछत श्रमजल कंठलगाइ॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥२८॥ तिनहिं लिवाइ यमुनजल गए। पुलिन पुनीत निंकुजनि ठए॥ अंगश्रमित सबके भए ❀ जैसे मदगज कूल विदारि। तैसे सँग ले खेली नारि॥ शंक न काहूकीकरी ❀ मेटी वेद लोककुलमेंडि। निकसि कुँवरि खेल्यो करि पेंडि॥ फवी सबै जो मन धरी ❀ जल थल क्रीडत व्रीडतवही। तिनकी लीला परत न कही॥ रास रसिक गुण गाइहौं॥ २९॥ कह्यो भागवत शुक अनुराग। कैसे समुझे विन बडभाग॥ श्रीगुरुसकलकृपाकरी ❀ सूर आश करि वरण्यो रास। चाहतहौं वृंदावन वास॥ श्रीराधावर इतनी कर कृपा ❀ निशिदिन श्याम सेउँमें तोहिं। इहे कृपा करि दीजैमोहिं॥ नवनिंकुज सुखपुञ्जमय ❀ हरि बंसी हरि दासी जहां। हरि करुणा करि राखहु तहां॥ नित विहार आभार दै ❀ कहतसुनत बाढत रसरीति। वक्ता श्रोता हरिपद प्रीति॥ रासरसिक गुण गाइहौं॥ ३०॥ १८५६॥ राग धनाश्री॥ मैं कैसे रस रासहि गाऊं। श्रीराधिका श्यामकी प्यारी तुव विन कृपा वास ब्रज पाऊं। अन्य देव सपनेहु न जानौं दंपतिको शिर नाऊं। भजन प्रताप शरन महिमाते गुरुकी कृपा दिखाऊं॥ नवनिंकुज वन धाम निकट इक आनँदकुटी रचाऊं। सूर कहा विनती करि विनवै जन्मजन्म यह ध्याऊं॥ ५७॥ राग बिहावल॥ तुमहीमोको ढीठकियो। नैन सदा चरणनतर राखे सुख देखत नहिं गनत वियो॥ प्रभु तुम मेरी सकुच मिटाई जोइ सोइ माँगत पेलि। मांगौं चरण शरण वृंदावन जहां करत नित केलि॥ यह वाणी भजनकी श्रवण विन सुनत बहुत शरमाऊं। श्रीवृषभानुसुता पति सेऊं सूर जगत भरमाऊँ॥ ५८॥ राग बिहागरो॥ रासरस लीला गाइ सुनाऊं। यह यश कहै सुनै मुख श्रवणन तिन चरणन शिर नाऊं॥ कहा कहौं वक्ता श्रोता फल इक रसना क्यों गांऊं। अष्टसिद्धि नवनिधि सुख संपति लघुता करि दरशाऊं॥ जो परतीति होइ हिरदयमें जगमाया धिग देखै। हरिजनदरशहरिहिसमपूजे अंतर कपट न भेपै॥ धनिधनि वक्ता तेहि धनि श्रोता श्याम निकट हैं ताके। सूर धन्य तिनके पितु माता भावभजनहै जाके॥ ५९॥ राग बिलावल॥ वृंदावन हरि रास उपायो। देखि शरदनिशि रुचि उपजायो॥ अद्भुत मुरलीनाद सुनायो। युवति सुनत तनुदशा गँवायो॥ मिलि धाई मनको फल पायो। जंगम चले जु चलनि थिरायो॥ उलटी यमुना धार वहायो। सुनि धुनि चंचल पवन थकायो॥ सुर नर मुनिको ध्यान भुलायो। चंद्र गगनमारग बिसरायो॥ रूप देखिमनकामलजायो। रसमेंअंतरविरस जनायो॥ युवतिनके तनु विरह बढायो। बहुरि मिले हित अति उपजायो॥ हावभावकरिसबन रिझायो। कल्प रैनि रसहित उपजायो॥ प्रातसमय यमुनातट आयो। नारिनके निशि श्रमहिं मिटायो॥ युवतिन प्रति प्रति रूप बनायो। शिव नारद शारदयह गायो॥ ध्यान टर्यो चित तहां लगायो। राधावर निज नाम कहायो॥ सूरदास कछु कहिके गायो। रमाकंत जासुको ध्यायो। सो सुख नंदसुवन ब्रज आयो॥ ६०॥ गोपी पदरज महिमा विधि भृगुसों कहीं। वरप सहस्रन कियो तप मैं तोऊ न लही॥ यह सुनिके भृगु कह्यो नारद आदिक हरि भक्ता। मांगैं तिनकी चरणरेणु तोहिं यह जुगुता॥ सो निज गोपीचरणरज वांछित हौ तुम देव। मेरे मन संशय भयो कहो कृपा करि भेव॥ ब्रजसुंदरि नहिं नारि ऋचा श्रुतिकी सबआहिं। मैंअरुशिव पुनि लक्ष्मी तिनसम कोऊ नाहिं॥ अद्भुत है तिनकी कथाकहौंसोमैंअवगाइ। ताहिसुनैजोप्रीतिकै सो हरि पदहि समाइ॥ प्राकृत लै भए पुरुप जगत सब प्रकृत समाइ। रहैएकवैकुंठलोकजहांत्रि-

भुवन गइ ॥ अक्षर अच्युत निर्विकार है निरंकार है जोई ।आदि अंत नहिं जानिअत आदि अंत प्रभु सोई ॥ श्रुति विनती करि कह्यो सबै तुमही हौ देवा ।दूरि निरंतर तुमहिं हौ तुम निज जानत भेवा ॥ या विधि बहु अस्तुति करी तब भइ गिग अकाश । मांगो वर मनभावते पुरवों सो तुम आस । श्रुतिन कह्यो कर जोरि सनै आनंद देहु तुम । जो नारायण आदि रूप तुम्हरो सो लख्यो हम ॥ निर्गुण रहित जो निज स्वरूप लख्यो न ताको भेव । मन वाणीते अगम अगोचर देखरावहु सो देव ॥वृंदावन निजधाम कृपाकरि तहां देखायो। सब दिन जहां वसंत कल्पवृक्षनसों छायो ॥ कुंज अद्भुत रमणीक तहां वेलि सुभग रहीं छाइ । गिरि गोवर्धन धातुमय झरना झरत सुभाइ ॥ कालिंदीजल अमृत प्रफुल्लित कमल सुहाइ । नगन जटित दोउ कूल हंस सारस तहँ छाइ॥क्रीडत श्याम किशोर तहां लियें गोपिका साथ । निरखि सो छवि श्रुति थकित भईं तब बोले यदुनाथ ॥ जो मन इच्छा होइ कहो सो मोहिं प्रगट कर । पूरण करौं सो काम देउं तुमको मैं यह वर ॥ श्रुतिन कह्यो है गोपीका केलि करैं तुमसंग। एवमस्तु निज मुख कह्यो पूरण परमानंद ॥ कल्पसार सतब्रह्म जबै सब सृष्टि उपावै । अरु तेहि लोगन वर्ण आश्रम धर्म चलावै ॥ बहुरि अधर्मी होहिं नृप जग अधर्म बढि जाइ ।तब विधि पृथ्वी सुर सकल करैं विनय मोहिं आइ॥ मथुरामंडल भरतखंड निजधाम हमारो । धरौं तहां मैं गोप भेष सो पंथ निहारो ॥ तब तुम होइकै गोपिका करिहौ मोसों नेह । करौं केलि तुमसोंसदा सत्य वचन मम येह॥ श्रुति सुनिकै हरिवचन भाग्य अपनी बहुमानी । चितवन लागे समय दिवस सो जात नजानी ॥ भारभयो जब पृथ्वीपर तब हरि लियो अवतार। वेदऋचा होइगोपिका हरिसों कियो विहार ॥ जो कोइ भरता भाव हृदय धरि हरि पद ध्यावै । नारि पुरुष कोउ होइ श्रुति ऋचा गति सो पावै ॥ तिनके पदरज जो कोई वृंदावन भ्रमाहिं । परसैं सोऊ गोपिकागति पावै संशय नाहिं ॥ भृगु तातें मैं चरणरेणु गोपिनकी चाहत । श्रुतिमति वारंवार हृदय अपने अवगाहत ॥ यह महिमा रज गोपिका जब विधि दई सुनाइ । तब भृगु आदिक ऋषि सकल रहे हरिपद चित लाइ ॥सर्वशास्त्रको सार इतिहास सर्व जो।सर्व पुराणको सार युत श्रुतिनको ॥ वंदनरज विधि सबै कह्यो विधि दियो ऋषिन्ह बताइ। व्यास त्रिपद वामनपुराण कह्यो सूर सोइ अब गाइ ॥६१॥ राग गूजरी ॥श्यामा श्यामके उर वसी।रैनिनृत्यतरिझिपियमन तडितते छवि लसी ॥ श्याम ता रस मगन डोलत सबत्रियनमें जसी । कोककलाप्रवीन सुंदरि कंठ गुण कर कसी ॥ करत सदन शृंगार वैठी अंग अँग प्रति रसी। सूर प्रभु आए अचानक देखि तिनको हँसी ॥ ६२ ॥ राग रामकली ॥पिय निरखत प्यारी हँसिदीन्हों। रीझेश्यामअंगअँगनिरखत हँसि नागरि उर लीन्हों ॥ आलिंगन दे अधर दशन खंडि कर गहि चिवुक उठावत। नासासों नासा लै जोरत नैन नैन परसावत ॥ यहि अंतर प्यारी उर निरख्यो झझकि भई तबन्यारी। सूर श्याम मोको दिखरावत उर लाए धरि प्यारी ॥६३॥ अथ राधाको मान ॥ राग टोडी ॥ अब जानी पिय वात तुम्हारी । मोसों तुम मुहँकी मिलवतहौ भावतिहै वह प्यारी॥ राखे रहत हृदयपर जाको धन्य भाग्य हैं ताके । ऐसी कहूँ लखी नहिं अवलोंवश्यभएहौयाके ॥ भली करी यह वात जनाई प्रगट देखाई मोहि ।सूर श्याम यह प्राणपियारी उरमें राखी पोहि ॥ राग धनाश्री ॥ ६४ ॥ सुनत श्याम चकृत भए बानी । प्यारी पियमुख देखि कछुकहँसिकछुक हृदय रिस मानी ॥ नागरि हंसति हंसी उरछाया तापर अति झहरानी।अधरकंप रिसभौंहमरोरयोमनही-

मन गहरानी॥इकटक चितै रही प्रतिबिंबहि सौतिशाल जिय जानी। सूरदास प्रभु तुम बडभागी बडभागिनिजेहि आनी॥६५॥प्यारी सांच कहति की हाँसी।काहेको इतनो रिस पावति कत तुम होहु उदासी॥पुनिपुनि कहति कहा तबहींते कहा ठगीसी ठाढी । इकटक चितैरही हिरदै तन मनो चित्र लिखि काढी ॥समुझी नही कहा मन आई मदन त्रसे तुम आगे। सूर श्याम भए काम आतुरे भुजा गहन पिय लागे॥६६॥मोहिं छुवौ जिनि दूरि रहौजू ॥ जाको हृदय लगाइ लई है ताकी बाँह गहौजू॥तुम सर्वज्ञ और सब मूरख सो रानी अरु दासी।मैं देखति हिरदय वहबैठीहम तुमको भइ हांसी ॥ बाँह गहत कछु शरम न आवत सुख पावत मनमाहीं। सुनहु सूर मोतनको इकटक चितवति डरपति नाहीं॥ ६७ ॥राग बिलावल॥ कहा भई धन बावरी कहि तुमहिं सुनाऊं । तुमते को है भावती कोहृदय बसाऊं ॥ तुमहिं श्रवण तुम नैन हौ तुम प्राणअधारा । वृथा क्रोध त्रिय क्यों करौ कहि बारंबारा ॥ भुज गहि ताहि बतावहू जो हृदय बतावति । सूरज प्रभु कहै नागरी तुमते को भावति॥६८॥राग नट ॥ माधो नाहिंन डरति जो हृदय बसति । ऐसी ढीठ मेरे जानि तुमहिं कीन्ही है कान्ह मो सन्मुख देखति न त्रसति॥ झुकेते झुकति भाल भ्रुकुटीकुटिल किये रूखीहै रहत हँसते हँसति।तबहीते इकटक चितवत और सिसकत हौं डरते इत उत नधसति॥ जाहीसों लगत नैन ताही खगत बैन नख शिखलौ सब गात ग्रसति । जाके रँग गचे हरि सोई है अंतरसंग काँचकी करोतीके जलज्यों लसति॥बिहँसि बोले गोपाल सुनि री ब्रजकी बाल उछंग लेत कत धरणि खसति। अपनी छाया निहारि काहेको करति आरि कामकी कसौटी सूर कपते कसति॥६९॥ राग कान्हरो ॥ काहेको हौ बात बनावत । अब तुमको पिय मैं पत्याति हौं छांह आपनीधरणि बतावत ॥ वा देखत हमको तुम मिलिहौ काहेको ताको अनखावत।जैहै कहूं निकसि हिरदैते जानि बूझि तेहि क्यों उचटावत ॥ जो वह कहै करौ तुम सोई कहा मोहिं पुनि पुनि समुझावत । सूर श्याम नागर वह नागरि भले भले जू मोहिं खिझावत ॥ ७० ॥ ॥ राग गुंडमलार ॥ वृथा हठ दूरि किनि करौ प्यारी। कहा रिस करति ह्यां छांह अपनी देखिउरको: उनहीं रिस जरति भारी ॥ तुमहिं धन रहति मन नैनमें तुम बसति कनकसो कसिलेहुकहाबैठी । चतुरई कहां गई बुद्धि कैसी भई चूक समझे बिना भौंह ऐंठी ॥ यह सुनत रिसभरी रही नहिं तहाँ खरी ओटह्वै झरहरी मानकीन्हों ।जाहु मनमन कह्योमें बहुत सुख लह्यो सौतिदेखराइ मोहिं सूर दीन्हों ॥ ७१ ॥ राग कल्याण ॥ कियो अतिमान वृषभानुबारी । देखि प्रतिबिंब पियहृदयनारी॥ कहा ह्यां करत लैजाहु प्यारी। मनहिमन देत अति ताहि गारी॥सुनत यह वचन पिय विरह बाढो। कियो अति नागरी मान गाढो ॥ काम तनु दहत नहिं धीरधारै। कबहुँ बैठत उठत बारबारै । सूर अतिभए व्याकुल मुरारी । नैन भरिलेत जलदेत ढारी ॥ ७२ ॥राग बिहागरो॥मानकरयो त्रियबिन अपराधहि । तनुदाहति बिनकाज आपनो कहत डरत जिय बादहि॥कहारही मुख मूँदि भामिनी मोहिं चूक कछु नाहीं।झझकि रही क्यों चतुर नागरी देखि आपनीछाहीं॥ अजहूँदूरिकरौरिस उरते हृदये ज्ञान बिचारौ । सूर श्याम कहिकहि पचिहारे हठ कीन्हों जिय भारौ ७३ ॥राग सोरठ॥ काम श्यामतनु चरप कियो । मनो धरयो नागरि जिय गाढौसुख्यो कमल हियो॥ व्याकुल भए चले वृंदावन मिली दूतिका आनि । बारबार हरिवदन निहारति सकै न दुख पहिचानि ॥ कैसी दशा आज्ञु मैं देखति कहौ न मोहिं सुनाइ।सूर श्याम देखे तुमव्याकुल आए कहा गँवाइ॥ ॥७४॥ राग गौरी ॥ व्याकुलबचन कहतहैं श्याम । वृथा नागरी मानबढायो जोरकियोतनुकाम ॥

यह कहतहि लोचन भरिआए पायो विरह सहाइ।चाहत कह्यो भेद ता आगे वाणी कही न जाइ ॥ और सखी तेहि अंतर आई व्याकुल देखि मुरारि।सूर श्याम मुख देखि चकित भई क्यों तनु रहे बिसारि॥७५॥राग बिहागरो ॥ कहति दूतिका सखिन बुझाइ ।आजु राधिका मान करयो है श्याम गए कुँभिलाइ॥करसोंकर धरि लाल लईगहि सखिन सहित वनधाम ।सुख दै कह्यो लिए आवतिहौं संग विलसियो श्याम ॥मो आगेकी महरि विटनियां कहाकरै वह मान।सुनहु सूर प्रभु किनकि बात यह करै न पूरण काम॥ ७६ ॥ राग भैरव ॥ श्याम कुंज बैठारि गई ॥ चतुर दूतिका सखियन लीन्हें आतुरताई जानिलई ॥मनहींमन इकरचि चतुराई इहै कहौंगी बात नई । अबहीं लै आवतिहौं ताको इहै भई कछु बहुत दई ॥करि आई हरिसों परतिज्ञा कहा कहै वृषभानुजई । सूर श्यामसों मान करयो है आजुहि ऐसी कहा भई ॥ ७७ ॥ रागनट ॥ सखिन संग लै तहां गई ।दूतिकामुख निरखि राधा जानि हिरदय लई॥अतिचतुर वृषभानुतनया सहज बोलि लई । सहज वचन प्रकाश कीन्हों कहा कृपा भई ॥तुरतही यह कहि सुनायो श्याम बोलै तोहिं। सूर प्रभु वन बोलि पठई तोहिं कारण मोहिं॥७८॥राग बिहागरो ॥ काहेको बन श्याम बोलाई । याही-ते तुम धाई आई ॥ कहा कहौं तोको री माई। तुमहूँ भली अरु भले कन्हाई ॥ अबइक नई मिली है आई । ताहीको अब लेहिं बुलाई ॥ ताको राखी हृदय दुराई । तोको ह्यांते टारि पठाई ॥ सूर श्याम ऐसे गुण राई । उनकी महिमा कही न जाई ॥ ७९ ॥ रागधनाश्री ॥ आजु कछू घर कलह भयोरी । वही आजु अनमनी बत्यानी यह कहि मान ठयो री ॥ मोसों कछुक कह्यो नहिं मोहन सहज पठाई लेन । कहा पुकार परी हरि आगे चलो न देखो नैन ॥ तेरो नाम लेत हरिआगे कहत सुनाइरे।सूर सुनहु काको काको राध तैं धौं लियो छँडाइ ॥ ८० ॥राग सही ॥ वृन्दावन हरि बैठे धाम। काहेको राध हरयो सबनको काहे अपनो कियो कुनाम ॥ डारिदेहु कह लियो परायो मेरो कह्यो मानि री वाम । तबहीते उन शोर लगायो तोको बोलीहैं यहि काम ॥ चलहु तुरत जिनि झेर लगावहु अबहीं आइ करौ विश्राम । सूर श्याम तेरी धौं झगरत तू काहे तिनसों करै ताम ॥८१॥राग जैतश्री॥ यह कछु नोखी बात सुनावति । काको राध धौं मैं लीन्हों है बारबार वन मोहिं बोलावति॥मेरी धौं हरि लखत कौनसों इतीमया मोहिं कीन्हीं । जैसेहैं हरि तेरे भाइ में नीकेकरिचीन्ही ॥ कोबैठो को भवन जाहु की मैंउनपै नहिं जाउँ । सूरदास प्रभुको री सजनी जन्म न लैहौं नाउँ ॥८२॥ राग गौरी ॥ मैं कहा तोहि मनावन आई। प्रगट लिए सबको व्रज बैठी कहा करति अधिकाई॥जाइ करौ ह्यां बोध सबनिको मोपर कत सतरानी ।श्यामलखत तबहींते उनसों तिनपर अतिहिरिसानी ॥ बारबार तू कहा कहतिरी व्रज काको मैं लीन्हों। सूरदास राधा सहचरिसों न्याव निदरिकै दीन्हों॥८३॥राग सोरठ॥ तैं कछु नहिं काहूको लीन्हों। प्रगट कहौं तबही मानौंगी न्यावनिदरिमोहिं दीन्हों॥ तब वदिहौं ऐसेहि ह्यां कैहै जई बैठे सब वैरी। मेरे कहे बहुत रिस पावति संपतिसबकी लेरी॥इकइक करि सब तोहिं दिखाऊं कहि आवहु वनजाइ। की दीजो की पुनि सब लीजो सूर श्यामपै आइ ॥८४॥राग सही॥जिनजिन जाइ श्यामके आगे तेरी चुगली बहुत करी । बारबार जिनसों हरिखीझे तेरी धौं है महूं लरी ॥ श्याम भेद करि मोहिं पठाई तू मोहींपर खीझपरी । जाइ करो रिस वैरिनिआगे जाके जाके राधहि हरी॥ धरति अकाश वनहुके आए देखत तिनको अतिहि डरी।सूर श्यामबिनु न्याव चुकै क्यों तिनपरतू अतिही झगरी॥८५॥राग धनाश्री॥ते जनपुकारे

हरिपै जाइ। जिनकी यह सब सौंज राधिका तैं तेरे तनु लई छँडाइ॥ इंदु कहै हाँ वदन विगोयो अलकन अलि समुदाइ। नैननि मृग वचनन पिक लूटे बिलपत हरिहि सुनाइ॥ कमलकेरि केहरिकपोत गज कनक कदलि दुखपाइ। विद्रुम कुंदभुजंग संगमिलि शरण गए अकुलाइ॥ अतिअनीति जियजानिसूरप्रभुपठईमोहिंरिसाइ। बोलीहैव्रजनारिवेगिचलिअबउत्तरदेआइ॥८६॥ राग कल्याण॥ चल राधे हरि रसिक बुलाई। कमलनयन कछु मर्म कह्यो नहिं मोहन वदन करन पुट आई॥ अँगअँग सर्वसु हरन लगी री रचि विरंचि तुवचनक बनाई। अब जो पुकार करततेरेतनु जितनी उनकी शोभ चुराई। मांग उरग नवतरनि तरौना तिलकभालशशिकी ससकाई। भ्रुकुटी शरधनु साधि वचन वर सुरपुर परिहैं मदन दोहाई॥ दाडिम वज्र पंक्ति पंकजदल दामिनि घन दुतिरदन दोहाई। कंबुकपोत कंठनिशिवासर बाहुबली कटिकंजलताई॥ उरभयभेपशेप अंबरजनु मनो छवि कटि मृगराज सुहाई। हंस पुकार करत सूरजप्रभु दीनबंधु ह्वै लेन पठाई॥ ८७॥ राग कान्हरो॥ मान करौ तुम और सवाई। कोटि करौ एकै पुनि ह्वैहौ तुम अरु वे मनमोहन माई॥ मोहनसों सुनि नाम श्रवणही मगन भई सुकुमारी। मान गयो रिस गई तुरतही लजित भई मन भारी॥ धाइ मिली दूतिका कंठसों धन्यधन्य कहि बानी। सूर श्याम बन धाम जानिकै दरशनको अतुरानी॥८८॥ राग बिलावल॥ हँसिकै कह्यो दूतिकाआगे श्यामहि सुख दै री तू जाई। करि अस्नान अभूपण अँगभरि मैं आवति तो पाछे धाई॥ यह सुनि हर्ष भई अतिही सखि गई तहां जहँ श्याम। अति व्याकुल तनुकी सुधि नाहीं विह्वलकीन्हों काम॥ की बनमें कीघरहीबैठे की बासर की याम। सूर श्याम रसना रट लागी राधाराधा नाम॥ ८९॥ राग रामकली॥ श्याम नारिके विरह भरे। कबहुँक बैठत कुंज द्रुमनतर कबहुँक रहत खरे॥ कबहुँक तनुकी सुरति विसारत कबहुँक तनु सुधि आवत। तब नागरिके गुणहि विचारत तेइ गुण गुनिगुनि गावत॥ कहूं मुकुट कहुँ मुरलि रही गिरि कहुँ कटि पीत पिछौरी। सूर श्याम ऐसी गति भीतर आई दूतिका दौरी॥ ९०॥ ॥राग बिलावल॥ श्यामभुजा गहि दूतिका कहि आतुर बानी। काहेको कदरातहौंमैंराधाआनी॥ विरह दूरि करिडारिए सुख करौ कन्हाई। त्रियानाम श्रवणनिसुन्यो चितएअकुलाई॥ मिलेदूतिकहि अंक दै लोचन भरिआए। प्यारीप्यारी बोलिकै युवती उर लाए॥ तब बोली हँसि दूतिका पिय आवति नारी। सूर श्याम सुनिबोलवेहरपेबनवारी॥९१॥ राग गुजरी॥ धीर धरो प्यारीअध आवति। मैं जु गई परतिज्ञा करिकै सो कहि बात जनावति॥ मनचिंता अब दूरिकरौ जू कह्यो नकहमोहिंदेहौ। बनि आवति वृषभानुनंदिनी भुजभरि अंकम लैहौ॥ यह सुंदरता और नहीं कहुँ बडभागीसो पावै। सूर श्याम दूतिका वचन सुनि करयुग काम मनावै॥ ९२॥ राग जैतश्री॥ यहसुनिकै मन श्याम सिहात। पुलकित अंग रहै नहिं धीरज पुनिपुनि पंथ निहारत जात॥ कुंजभवन कुसुमनकी सेज्या अपने हाथ निवारत पात। जे द्रुम लता लटकि तनु लागत ते ऊंचे धरि पुलकित गात॥ प्यारीअंग अतिकोमल जानत सेजकलीचुनिडारत। सूर श्याम रीझत मनहींमन सुधिकरि छविहि निहारत॥ ९३॥ रागकल्याण॥ दूतिका हँसति हरि चरित हेरै। कबहुँ कर आपने रचतसुमनन सेज कबहुँ मग निरखि कहूँ भयो झेरै॥ कामआतुर भरे कबहुँ बैठत खरे कबहुँ आगे जाइ रहत ठाढे। चतुर सखि देखि पुनि राधिकापै गई झेर क्योंकरतिधन कंतचाढे॥ सुनत प्यारी हँसी पियाके मन बसी रूप गुण कर यशी प्रेमगसी। सूर प्रभुनाम सुनि मदन तन बल भयो अंग प्रति छवि उपर रमा दासी॥ ९४॥ राग धनाश्री॥ धनि वृषभानुसुता बडभागिनि। कहा निहारति अंग

अंग छवि धन्य श्याम अनुरागिनि॥ और त्रिया नखशिख शृंगार सजि तेरे सहज न पूरे। रति रंभा उरवसी रमासी तोहिं निरखि मन झूरे॥ ए मन कैन सुहागिनि नाहीं तू है कंतहि प्यारी। सूर धन्य तेरी सुंदरता तोसी और न नारी॥९५॥ सहज रूपकी राशि नागरी भूषण अधिक विराजे। सुख सौरभ संमिलित सुधानिधि कनकलतापर छाजे॥ वदनारविंद धारमिलि शोभित धूमिल नील अगाध। मनहुँ बाल रवि सम समीर शंकित तिमिर कुटिल्ह आध॥ माणिक मध्य पास चहुँ मोती पंगति झलक सिंदूर। रेंग्यो जनु तम तट तारागण उगत घेरयो सूर॥ की मन्मथरथ चक्र कि तरिवन रवि रथ रचित साज। श्रवणकूपकी रहट घटिका राजत सुभगसमाज॥ नासा नथ मुक्ता बिम्बाधर प्रतिबिंबित असमूच। बांध्यो कनक पासि शुक सुंदर करि कबीज गहि चूंच॥ कहँलगि कहौं भूषणनभूषित अंगअंगके रूप। सूर सकलशोभाश्रीपतिके राजिवनैन अनूप॥९६॥ राग कान्हरो॥ विराजत राधा रूप निधान। सुंदरताको पुंज प्रगटही को पटतर त्रिय आन॥ सिंदुर शीश मांग मुक्तावलि कचकवरी अविनान। मनहुं चंद्र मुख कोपि हन्यो रिपु राहु विपम बलवान॥ तरल तिलक ताटंक गंडपर झलकत कल विय कान। मानहु शशि सहाय करिवेको रण विरचे द्वै भान॥ दीरघनैननासिकाबेसरिअरुणअधर छविवान। खंजन शुक नहिं बिंब समितको लखित भए अजान॥ को कहि सके उरोजन की छवि कंचनमेरु लजान। श्रीफल सकुचि रहे दुरिकानन सिखरहियो विहरान॥ रोमवलि त्रिवलीछवि छाजत जनु कीन्ही यह ठान। कृश कटि सबल डंड बंधन मनों विधि दीन्हो बंधान॥ अंग अंग आभूषणकी छवि कापे होइ बखान। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि विलसहु श्यामसुजान॥९७॥ रागसारंग॥ राजत तेरे वदन शशी री। किरनि कटाक्षबाणवर सांधे भौंहकलंक कमानकसी री॥ पीनपयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसी री। चक्रवाकरवगचंचुपुटीते मनुसेवल मंजीरखसी री॥ ज्यों नाभी सर एक नाल नव कनककमल विवि रहे बसी री। सूरज श्रीगोपालपियारी मेरी अघ तम धराधसीरी॥९८॥ राग गूजरी॥सुनिराधेतेरेअंगनऊपरसुंदरतानचची। लोकचतुर्दशनीरसलागत तू रसरास रची॥ नखशिख विशिख कुसुमकी सेना को तुम अवधि रची। सहज माधुरी रामन वर्षत रतिरणकीच मची॥ तोसी नारि श्यामसे नायक विधि बेकाज पची। सूर सुमेरु कूटकी सरवरक्योंपूजैघुंघची॥९९॥ राग नट॥राधे देखितेरोरूप। पटई हौं हरिशंकि मनु दलसउयोमनसिज भूप॥ चाल गज शृंखला नूपुर नीवि नव रुचि ढाल। किंकिनी घंटा घोप माधो भये भे बेहाल॥ कंचुकी भूषण कवच सजि अति कुच कसे रणवीर। अंचलध्वजा अवलोकि नाहीं धरत पिय मन धीर॥ भौंहि चाप चढाइ कीन्हो तिलक शर संधान। नैनकी तकि देखि गिरिधर तज्योहै मदमान॥ चमर चिकुर सुदेश घूँघट छत्र शोभित छोह। ज्यों कह्यो त्योंही मिलाऊं दे दयालुहि वोह॥ राधिका अति चतुर सुंदरि सुनि सु वचन विलास। सूर रुचि मनसा जनाई प्रगटि मुख मृदुहास॥॥१९००॥ राग कल्याण॥आजु अंजनदियो राधिका नैनको। मीन रागहीन मृगलजित खंजनचकित अधिक चंचलमरस श्याम सुखदेनको॥ लसति दाडिम दशन भौंह मन्मथ फंद स्वलपलट लटकि रही रहत नहिं चैनको। कसनि कंचुकि बंद उर मुकुतमालमुखनिरखि उडराजतजियोसुरपेनको॥ रुनित नूपुर चरण क्षुद्रकटि घंटिका कनक तनु गोरछवि उमँगि उफरैनको। सूर सुनिसून उठि नवल गिरिधर सेज चलीहै गजगति मनो मदनगढ लेनको॥१॥ राग रामी॥ रसिक शिरमोर ढोरि लगावत गावत राधाराधा नाम। कुंजभवन बैठे मनमोहन अलिगोहन सोहन बोलत मुख

तेरोई गुणग्राम ॥श्रवण सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलित तन मन रोमरोम सुखराशि वाम । सूरदास प्रभु गिरिवर धरको चली मिलन गजराज गामिनी झनक रुनुक वनधाम ॥ २ ॥ ॥राग देवगंधार॥चली किन मानिनि कुंजकुटीर । तुवबिन कुँवर कोटि बनिता तजि सहतवदनकी पीर ॥ गद्गदसुर पुलकित विरहानल नैन विलोकत नीर । क्वासि क्वासि वृषभानु नंदिनी बिल॰ पत विपिन अधीर।वंसी विशिखमाल व्यालावलि पंचानन पिक कीर।मलयज गरल हुताशनमारुत शाखामृग रिपुवीर।।हियमें हरपि प्रेम अतिआतुर चतुरचलहुपियतीर।सुनि भयभीतवज्रके पिंजर सूर सुरतिरणधीर॥३॥राग कल्याण नवेलीसुनिनवलपियानवनिकुंजहेरी।भावतेलालसोंभावतीकेलिकरि भावती भावतो रसिक रस लेरी । त्यागि अभिमान गुणरूप सोभाग रति मानिनी मनुहारि मैन सुख देरी । एक ब्रजवास आवत जात देखियत आपनी जातिपति पैंड घेरी ॥ ललित उदार हित पीर करि कीर मति धीर तनु मेटि मन्मथको भेरी । कला चौंसठि संगीत शृंगाररस कोक-विधि चंद प्रगट भेदसे सैरी ॥ सुरतिसागर साज सवत जस रसलाज अंग अनुकूलरतिराज रण जैरी । कामशर कनक कुच प्रगट भृङ्गी चिह्न दागि मैले कंत आपनो केरी ॥ जासु आलाप सुनि दारुसे पल्लवे पुहुप मधुधार कर भारभर नैरी । मुरलिका गान तुवनाम मधुराधुनी सुधागुण सिंधु नहिं गनत निज मेरी । हीनजल मीन ज्यों दरशविन कमल लै प्राण प्रीतम नहीं धीरज धरे री॥प्रीतिकी रीति गति होतिहेरीहरपिनिरखिरतिकरि चिबुक अशनि ढे री।अधरमधुलोभ,पंथान चितवत चकित कमल गुह्यालदल तल रचे री ॥अरुण शीतल मृदु पातदल सरि करत सेज चढि दल मही चरणके बैरी । तुव कामकेलि कमनीय कामिनिवृंद चंद चकोर चातक स्वाति तै री ॥ सूर सुनि श्रवण तजि भवन करि गवन मन रवन तनु तवहि कहँ सगति गे री ॥ ४ ॥ रागमल्हारौ ॥मनो गिरिवरते आवति गंगा। राजति अतिरमणीकराधिका यहि विधि अधिकअनू-पम अंगा॥ गौर गात द्युति विमल वारिनिधि कटितट त्रिवली तरल तरंगा । रोमराजि मनो यमुन मिली अध भवँर परत मानो भ्रुवभंगा ॥ भुजबल पुलिन पास मिलि बैठे चारुचकवे उरज उतंगा । मनो मुख मृदुल पाणि पंकेरुह गुरुगति मनहुँ मराल विहंगा ॥ मणिगण भूषण रुचिर तीरवर मध्यधार मोतिनमे मंगा । सूरदास मनो चली सुरसरी श्रीगोपाल सागर सुख संगा ॥ ॥ ५ ॥ राग सही ॥नाहिंन नैन लगे निशि यहि डर। जबतेंजाइ कह्यो हँसि हरिसों समर सोचउनके जिय धरधर ॥ भौंह कमान तिलक भलुका करि रुचि सुदेश सीमंत सुरँग सर । वलय ताटंक चक्र नख नेजा दामिनिसे चमकत रद असि बर । गज उरोज वरबाजि विलोचन वंकट विशद विशाल मनोहर ॥ लाल ढाल अंचल चंचल गति चमर चिकुर राजत ता ऊपर। अंगअंग सज सुभट सहायक बने विविध भूषण बानेवर ॥ कामिनि आजुहि आनि रहेगी कामकटक लैकुंज झँडातर । चरन रुनित नूपुर रणतूरा सुनत श्रवण कांपहिंगे थरथर ॥ तब जानवी किशोर जो-र रुपि रहौ जीति करि खेत सबै पर । ऐंचि करौ जो कहौं किशोरी वे जो भीत है रहे बैठि घर ॥ यहे मतो मुखमुख जोरही तहीं करहु पार लै पकरि पियहि कर। सहचरि चतुरातुर लै आई चाँह बोल देकरि कहत वह छर। रोप सुरत तन मिलि अंकम भरि ले लटकी दे दंत पियाधर ॥ जुरत सुरत संग्राम मच्यो छबि छूटिछूटि कच टूटि हार लर ।अति सनेह दुहुँ बिसरि देह भिरि मैन मह्ल मुरझाइगिरेधर॥ विविधविलासकोशवशकीने राधा नारि नंदनंदनवर। निगमन नेति कह्यो निर्गुण सो कह गुणाधि वरणिहैसुर नर ॥ ६ ॥ राग टोडी ॥ फूलनको महल

फूलनकी सेज्या फूले कुंजविहारी फूली राधाप्यारी।फूले वे दंपतिनवल मगन फूले फूले करेंकेलि न्यारी न्यारी॥फूली लता वेलि विविध सुमनगण फूले आनन दोउ हैं सुखकारी। सूरदास प्रभु प्यारी पर वारत फूले फूल चंपक वेलि निनारी॥७॥राग धनाश्री॥ आज रंग फूले कुँवर कन्हाई। कबहुँक अधर दशन भरि खंडित चाखत सुधा मिठाई॥कबहुंक कुचकर परसि कठिन अति तहां वदन परसावत।मुख निरखति सकुचति सुकुमारी मनहीमन अति भावत॥ तब प्यारी मुख गहि कर टारति नेक लाज नहिं आवत। सूरदास प्रभु कामशिरोमणि कोककला दरसावत ॥ ८ ॥ राग बिहागरो॥देखो सात कमल इकठौर। तिनको अति आदर देवेको धाय मिलेहैं और॥ मिलत मिले फिरि चलत न बिछुरत अवलोकत यह चाल। न्यारे भए बिराजतहैं मन अपने सहज सनाल॥ हरि तम श्याम निशा निशिनायक प्रगट होत [illegible] अजहुँ रहति अनबोले। इतनी जतन किए नँदनंदन त[illegible] स्वामी पर्यंकपरिह्वां आई॥ ९॥ राग केदारो॥ पियको भावति राधा नारि। उलटि चुंबन देति रसिकन मकुच दीन्हो टारि॥परस्पर दोउ भरे श्रमजल फूकि फूंक झुगत।मनो बूझिअनगजवाला प्रगट करत लजात॥ बहुरि उठे सँभारि भट ज्यो अँग अनंग सभारि। सूर प्रभु वनधाम निहरत बने दोउ वरनारि॥ १० ॥राग रामकली॥विहरत वनदोउ मन इकफरे। एक भाव इक भए लपटिकै उर उर जोरि धरे॥ मनो सुभट रण एकसंग झुरि करिनर नहीडरे। अधर दशनक्षत नखछत उरपर घायन फरहि परे॥ यह सुख यह उपमा पटतर को रतिसंग्राम लरे। सूर सखी निरखत अंतर भई रतिपति काज सरे॥ ११ ॥ आजु अति शोभित हो घनश्याम। मानहुँ है जीते नँदनंदन मनसिजसो संग्राम॥ मुकुलित कच न समात मुकुटमें रोप अरुण दोउ नैन। श्रम सूचत मानो आलस गति बोलन बनत न बैन। नखक्षतशोणित प्रस्वेद गातते चंदन गयो कछुछूटि। मदन सुभट केसर सुदेश मनु लगे कनचपट फूटि॥ दशन अकपर प्रगट पीक मनो सन्मुख सहे प्रहार।सूरदासप्रभु परमसूरमें जाने नंदकुमार॥ १२ ॥ राग कल्याण॥ सकुचिमन परस्पर वसन लीन्हें। प्यारी पिया निपुन कोकगुन कलामें उनिधनहिं फतनल अनलकीन्हें॥ स्वेदकन गंडमंडलनि नासानि तट पिय निरखि पीतपट पोछिडारचो। निरखि प्यारी पोंछि वेसही पियमदन कछु सकुच कछु हरषिकै निहारचो॥नागरी डरत पिय पीत पटडर धरे बहुरि जिनि आपनी छाँह देखे। सूर प्रभु स्वामिनीअंग छवि दामिनी झलक प्रतिबिंब परमान भेष॥ ॥ १३ ॥राग रामकली॥ सँग राजति वृषभानुकुमारी। कुंज सदन कुसुमनि सेज्यापर दंपति शोभा भारी॥ आलस भरे मगन रस दोऊ अंग अंग प्रति जोहत। मानहुँ गौर श्याम के शशि तम बैठे सन्मुख सोहत॥ कुंजभवन राधा मनमोहन चहूँ पास व्रजनारी। सूर रही लोचन इकटक करि डारति तन मन वारी॥ १४ ॥राग नट॥ इकटक रही नारि निहार। कुंज घर श्रीश्याम श्यामा बैठे करत विहार॥ नैन सैन कटाक्षसो मिलि करत रंग बिलास। नहीं शोभा पार पावति वचन सुख सुख हास॥ तरुणि श्रीवृषभानुतनया तरुण नंदकुमार। सूर सो क्यो वरणि गावै रूपरस सुखसार॥ १५ ॥राग धनाश्री॥चितै राधा रतिनागर ओर। नैन वदन छवि यो उपजत मनो शशि अनुराग चकोर॥ सारस रस अचवनको मानो तृपित मधुप युग जोर। पान करत कहुँ तृप्ति न मानत पलक न देत अकोर॥ लिये मनोरथ मानि परस्पर जानिगई भयोभोर। सूरश्यामश्यामा आपुसमें करत रहत चितचोर॥ १६ ॥ राग बिलावल॥

देखो शोभासिंधु समाति। श्यामा श्याम सकल निशि रसवश जागे होत प्रभात॥ लै पाहनसुत कर सन्मुख दे निरखिनिरखि मुसुकात। अचरज सुभग वेद जलजातक कनक नीलमणि गात॥ उदित जराउ हार पंचति यों रवि शशि किरनि तहांसे दुरात। चंचल खग वसु अष्टकंजदल शोभा वरणि न जात॥ चारि कीरपर पारस विद्रुम आनि अलीगण खात।सुखकी राशि युगल मुख ऊपर सूरदास बलिजात॥ १७ ॥राग रामकली॥देख सखी पंच कमल द्वै शंभु। एक कमल ब्रज ऊपर राजत निरखत नैन अचंभु॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हें कमल सुकोमल अंग। युगल कमल सत कमल विचारत प्रीति न कबहूं भंग॥पट जु कमल मुख सन्मुख चितवत बहुविधि रंगत-रंग। तिनमें तीन सोमवंशी वश तीनि शाप सुख अंग॥ जेइ कमल सनकादिक दुर्लभ जिनहीं निकसी गंग। तेई कमल सूर नितचितवत निपट निरंतर संग॥१८॥राग नट॥देख सखि चारिचंद्र इक जोर। निरखति बैठि नितंबिनि पियसँग सुरसुताकी ओर॥ द्वै शशि श्याम नवल घन सुंदर द्वै कीन्हें विधि गोर। तिनके मध्य चारि शुक राजत द्वै फल आठ चकोर॥ शशि सुरंग-पर बाल कुंदकलि अरुझिरह्यो मन मोर। सूरदास प्रभु अति रतिनागर बलिबलि युगलकिशोर॥ १९॥ राग नट॥देखरी प्रगट द्वादश मीन। पट इंदु द्वादशतरणि शोभित विमल उडुगण तीन॥ पटअष्ट अम्बुज कीर पटमुख कोकिला सुर एक। दश दोइ विद्रुम दामिनी पटतीनि व्यालविशेक॥ त्रिवलि पट श्रीफल विराजत परस्परवर नारि। ब्रज कुँवरि गिरिधर कुँवरपर सूर जन बलिहारि॥ २०॥ राग नट॥दंपति कुंजद्वार खरे। शिथिल अँग मरगजे अंबर अतिहि रूप भरे॥ सुरतही सब रैनि बीती कोकपूरण रंग। जलद दामिनि संग सोहत भरे आलस अंग॥ चकृत ह्वै ब्रजनारि निरखत मनो चंद्र चकोर। सूर प्रभु वृषभानुतनया विलसिरतिपतिजोर॥२१॥राग ललित॥ सघन कुंजते उठे भोरही श्यामाश्याम खरे।जलद नवीन मिली मनो दामिनि बरषि निशा उसरे॥ शिथिल वसन तनु नील पीतद्युति आलसयुत पहिरे। श्रमजल बूंद कहूं कहुँ उडुगण बदरन वरन करे॥ भूषण विविधभांति मँडवारी रतिरस उमँगि भरे। काजर अधर तमोर नैन रँग अँगअँग झलक परे॥ प्रेमप्रवाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे। शोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुख जात तरे॥ २२॥ राग बिलावल॥राजत दोउ निकुंज खरे। श्यामानव किशोर पिय नव रँग अति अनुराग भरे। अति सुकुमारि सुभग चंपकतनु भूषण भृङ्ग अरे। मर्कत कमल शरीर सुभग हरि रति जिय वेप करे॥ चंचित चारु कमलदल मानो पियके दशन समाति। मुख मयंक मधु पियत करन कसि ललना तउ न अघाति॥लाजत मदन दुराइ मधुन मृदु मुसकनि मन हरिलेत। छूटी अलक भुअंगनि कुचतट पैठी त्रिवलि निकेत॥ रिस रुचि रंग विरहके मुखलीं आने सोम समेति। प्रेम पियूष पूरि पोंछति पिय इत उत जान न देति॥ बदन उघारि निहा-रि निकट करि पियके आनि धरे। विप शंका नख रहत मुदित मनो मनसिज ताप हरे॥ युगल किशोर चरणरज वंदौं सूरज शरण समाहि। गावत सुनत श्रवणसुखकारी विपदुरीत दुरिजाहिं॥ ॥ २३॥ राग नट॥जो सुख श्याम प्रियासंग कीन्हों।सो युवतिन अपनोहि करिलीन्हों॥दुविधा हृदय कछू नहिं राख्यो। अति आनंद वचन मुख भाष्यो॥ इहै कहति तब की अब नीके। सकुचि हँसी नागरि सँग पीके। नैनकोर पियहृदय निहारचो। उन पहिलेहि पितांबर धारचो। सूरदास इह लीला गावै। हरिपदशरण अक्षै फल पावै॥२४॥राग नट॥धनि ब्रजसुंदरीधनि श्याम। धन्य धनि वृषभानुतनया राधिका जेहि नाम॥ गेह गेहनि गई तरुणी श्याम गए नँदधाम।

भवन गई वृषभानुतनया कोककला सुजाम ॥ करत मनकामना पूरण एक निशि सब याम । सूर प्रभु जा सदन जात न सोइ करत तनु ताम ॥ २५ ॥ अथ खंडितासमय ॥ राग बिलावल ॥ नाना रंग उपजावत श्याम । कोउ रीझति कोउ खीझति बाम ॥ काहूके निशि बसन बनाई । काहू मुख द्वै आवत जाई ॥ बहुनायक ह्वै बिलसत आप । जाको शिव नहिं पावहिं जाप ॥ ताको व्रजनागरि पति जानै । कोउ आदर कोऊ अपमानै ॥ काहूसों कहि आवत सांझ । रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहुं रैनि सब संग बिहात । सुनहु सूर ऐसे नंदतात ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ अब युवतिनमों प्रगटे श्याम । अरस परस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सबहिनके धाम ॥ जादिन जाके भवन न आवत सो मनमें यह करति विचार । आजु गए औरहि काहूको रिस पावति कहि बड़े लबार ॥ यह लीला हरिके मन भावति खंडित वचन कहत सुख होत । सांझ बोलदै जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ २७ ॥ राग रामकली ॥ ठाढ़े नंदद्वार गोपाले। बोलि लीन्हें देखि ललिता सैन दै तनकाल ॥ हंसत गए हरि गेह ताके कोउ न जानत और । मिली हरिके लाइ उरभरि चापि कुचन कठोर ॥ कह्यो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम । सूर प्रभु फहि आजु नागरि आइहैं हम जाम ॥ २८ ॥ राग बिलावल ॥ ललिताको सुख दै गए श्याम । आज बसेंगे रैनि तुम्हारे प्राणपियारी हो तुम बाम ॥ यह कहिके अनतहि पगधारे बहुनायकके भेद अपार । सांझ समय आवन कहिआए सौंह बहुत करि नंदकुमार । वह बैठी मारग हरि जोवति इकइक पल बीतत इक याम । सूर श्याम आवनकी आशा सेजसवारी व्याकुलकाम ॥ २९ ॥ राग गौरी ॥ सांझहिते हरिपथ निहारै । ललिता रुचि करि धाम आपने सुमन सुगंधनि सेज सवारै ॥ कबहुक होत बारने ठाढ़ी कबहुंक गनति गगनके तारे । कबहूंक आइ गली मग जोवत अजहूं न आए श्याम पियारे ॥ वे बहुनायक अनत लुभाने और बामके धाम सिधारे । सूर श्यामबिनु बिलपति बाला तमचुर शब्द जहां तहं पुकारे ॥ ३० ॥ ललिता तमचुरटेर सुन्यो । वे बहुनायक अनत लोभाने नहिं आए जिय कहा गुन्यो ॥ बिनकारण देअाश गए पिय बारबार तिय शीश धुन्यो । सेज सवारि पथ निशि जोवत अन्त आनि भयोचंदपुन्यो ॥ तब बैठी मनमारि आपनो कछु रिस कछु मन सोच परचो । सूर श्याम याते नहिं आए मात पिताको त्रास धरचो ॥ ३१ ॥ राग जैतश्री ॥ सोच परचो नागरि मनमाहीं । कीकाहूकेअनतलोभाने की पितुमात त्रास मनमाहीं ॥ वे निशि बसे महल शीलाके सुख सब रैनि गँवाई । उठे अकुलाइ भोर भयो जान्यो तब नागरिसुधि आई ॥ सहज चले गोपीसों कहिके जिय सकुचे अति भारी सूर श्याम ललिताग्रह आए चितरहीमुह प्यारी ॥ ३२ ॥ राग ललित ॥ प्यारी चितरही मुख पियको । अंजन अधर कपोलनि बदन लाग्यो काहू तियको ॥ तुरत उठी दर्पण कर लीन्हे देखो बदन सुधारो । अपनो मुख उठि प्रात देखिके तब तुम कहूं सिधारो ॥ काजर सिंदन अधर कपोलन सकुचे देखि कन्हाई । सूर श्याम नागरि मुख जोवत वचन कह्यो नहिं जाई ॥ ३३ ॥ शीलाके घरते ललिताके आए ॥ राग आसावरी ॥ दर्पण लै प्यारी मुख आगे कहति पिया छबि हेरोजू । मेरी सौं हाहा कहि पुनिपुनि इत काहे मुख फेरोजू ॥ सकुचत कहा बोलके सांचे मेरे गृहतौ आएजू ॥ रैनि नही तौ अबजु कृपा भई धनि जिन स्वांग कराएजू ॥ मेरी कही तिलग जिनि मानो मैं तुव करत बड़ाईजू । सूरश्यामसन्मुख नहिंचितवत रहेधरणि शिरनाईजू ॥ ३४ ॥ राग ललित ॥ क्योंमोहन दर्पण नहिं देखत। क्योंधरणी पगनखनकरोनत क्यो हमतन नहिं पेखत ॥ क्यो ठाढ़े बैठतक्यों

नाहीं कहा परी हम चूक । पीतांबर गहि कह्यो बैठिए रहे कहा ह्वै मूक ॥ उघरिगयोउरते उपरैना नखछत बिनगुनमाल । सूर देखि लटपटी पागपर जावककी छबिलाल ॥३५॥ राग इंमन ॥ ऐसी कहाँ रँगीले लाल । जावकसों कहाँ पाग रँगाई रँगरेजिन मिलिहै को बाल ॥ बंदन रंग कपोलन दीन्हों अधर अरुण भए श्याम रसाल । जिन तुम्हरे मन इच्छा पुरई धनिधनि पिय धनिधनि वह बाल ॥ माला कहाँ मिली बिनगुनकी उरछत देखि भई बेहाल । सूर श्याम छबि सबै बिराजी इहै देखि मोको जंजाल ॥ ३६ ॥ राग गुंडमलार ॥ काहेते सकुचत पिय दृष्टिनहीं तुम जोवत मोहनरूप विहारी । निकसे समाचार सब सोवत घूमति आँखि तिहारी ॥ नैन जगे पल लगे जातहैं पौढत तल्प हमारी । विविध कुसुम रचना रचि पचिकै अपने हाथ सवाँरी ॥ कहत सूरडर तप्यो भोर भयो हम बैठी रखवारी ॥ ३७ ॥ राग बिलावल ॥ ज्वाब नहीं पिय आवई क्यों कहाँ ठगाने मैंतवहीं-की बकतिहों कछु आजु भुलाने ॥ हाँ नाहीं नहिं कहतहो मेरीसों काहे । आए क्यों चकृत भए मोको रिसि दाहे ॥ कहाँ रहे कासों बन्यो तहई पगधारो । सूर श्याम गुणरावरे हिरदे न बिसारो ॥ ३८ ॥ राग बिलावल ॥ काहेको कहि गए आइहैं काहे झूठी सौंहैं खाए । ऐसे मैं जाने नहिं तुमको जे गुणकरि तुम प्रगट देखाए ॥ भलीकरी दरशन हरि दीन्हें जन्मजन्मके ताप नशाए । तबचितए हरि नेक त्रियातन इतनेहि सब अपराध क्षमाए ॥ सूर दास सुंदरी सयानी हँसि लीन्हें पिय अंकम लाए ॥ ३९ ॥ राग बिलावल ॥ नैनकोर हरिहेरिकै प्यारी वश कीन्ही । भाव कह्यो आधीनको ललिता लखिलीन्ही ॥ तुरत गयो रिस दूरिह्वै हँसि कंठ लगाए । भली करी मनभावते ऐसेहु मैं पाए ॥ भवनगई गहि बाँहले जागे निशिजाने । अंग शिथिलनिशि श्रमभयो मनहीमन ज्ञाने ॥ अँगसुगंध मर्दन कियो तुरतहिं अन्हवाये । अपनेकर अँग पोंछिकेमन साध पुराये ॥ चीर अभूपणअंगदैबैठे गिरिधारी ॥ रुचिभोजन पियको दियो सूरज बलिहारी ॥ ४० ॥ राग कल्याण ॥ कियो मनकाम नहिं रही बाकी । प्रियारिसदूरिकै दियो रसपूरिकै अनँगबल दूरिकै गोपजाकी । नंदसुत लाडिले प्रेमके चाडिले सौंह दै कहतहैं नारि आगे । तुम परम भावती प्राणहूँते खरी सुख नहीं लहत मैं तुमहिं त्यागे ॥ तुमहिं धन तन तुमहिं तुमहिं मनहीं बसौ और त्रिय नहीं मो मनहिं भावै । सूर प्रभु चतुर-बर चतुर नागरिनके चतुरई वचन कहि मन चुरावैं ॥ ४१ ॥ राग भैरव ॥ इहै भाव सब युवतिनसों । ऐसे वचन कहत सब आगे भूलि रहति मनमोहनसों । बिन देखे रिसभाव बढावत मिलिआईं दैं सौंहनिसों । मुख देखत दुखरहत नहीं तनु चितवत मुरि दोउ भौंहनसों ॥ और त्रिया अँग चिह्न बिराजत रिस मनहीं मन छोहनसों । सूर श्याम सब गोपकुमारी टरति नहीं कहुँ गोहन-सों ॥ ४२ ॥ राग बिलावल ॥ ललिताको सुख दे चले अपने निजधाम । बीच मिली चंद्रावली उन देखे श्याम ॥ मोरमुकुट कछनी कछे नटवर गोपाल । रही वदन तनु हेरिकै अति हित ब्रजबाल ॥ गली साँकरी कोउ नहीं आतुर मिलि धाइ । कहां कहां पिय रहतहौ हमको बिसराइ ॥ श्याम कह्यो हँसि बामसौं तुम्हरे निशिबास । सूर हृदयकीकल्पनासुनिभईहुलास ॥ ४३ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम बामको सुख दे बोले रैनि तुम्हारे आऊंगो । मात पिता जिय त्रास धरतहौं तऊ आइ सुख पाऊंगो ॥ तुव मिलवेकी साध भुजा भरि उरसों कुच परसाऊंगो । नैन विशाल भाल उरबैठे ते तुव हाथ गहाऊंगो ॥ तव तनु परसि कामदुख मेटों जीवन सफल कराऊंगो । सुनहु सूर अधरन रस अँचवों दुहुँ मन तृषा बुझाऊंगो ॥ ४४ ॥ राग गूजरी ॥ सुनि सुनि वचन नारि मुसुकानी । गई सदन अति ह्वै उतावली आनँदसहित लजानी ॥ फूली फिरति कहति नहिं काहू मीन मिल्यो

भवन गई वृषभानुतनया कोककला सुजाम ॥ करन मनकामना पूरण एक निशि सब वाम । सूर प्रभु जा सदन जात न सोइ करत तनु ताम॥ २५॥ अथ खंडिताशमय ॥राग बिलावल॥नाना रँग उपजावत श्याम । कोउ रीझति कोउ खीझति वाम ॥ काहूके निशि बसत बनाई।काहू मुख द्वै आवत जाई॥ बहुनायक है विलसत आप।जाको शिव नहिं पावहिं जाप ॥ ताको ब्रजनारी पति जानें । कोउ आदर कोऊ अपमानें ॥ काहूसों कहि आवत सांझ । रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहुं रैनि सब संग विहात । सुनहु सूर ऐसे नँदतात ॥ २६ ॥ राग बिलावल ॥ अब युवतिनसों प्रगटे श्याम ।अरस परस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सबहिनके धाम॥ जादिन जाके भवन न आवत सो मनमें यह करति विचार। आजु गए औरहि काहूको रिस पावति कहि बड़े लबार ॥ यह लीला हरिके मन भावति खंडित वचन कहत सुख होत । सांझ बोल्दि जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ २७॥ राग रामकली ॥ठाढे नंदद्वार गोपाले।बोलि लीन्हे देखि ललिता सैन दे ततकाल ॥ हँसत गए हरि गेह ताके कोउ न जानत और । मिली हरिके लाइ उरभरि चापि कुचन कठोर ॥ कह्यो मेरे धाम कबहू क्यों न आवत श्याम । सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइहैं हम जाम ॥२८॥ राग बिलावल ॥ ललिताको सुख दे गए श्याम।आज बसेंगे रैनि तुम्हारे प्राणपियारी हौ तुम वाम॥ यह कहिके अनतहि पगधारे बहुनायकके भेद अपार। सांझ समय आवन कहिआए सोंह बहुत करि नंदकुमार। वह बैठी मारग हरि जोवति इकइक पलबीतत इक याम ।सूर श्याम आवनकी आशा सेजसँवारी व्याकुलकाम ॥ २९ ॥ राग गौरी ॥ सांझहिते हरिपंथ निहारे । ललिता रुचि करि धाम श्यामके सुमन सुगंधनि सेज सँवारि ॥ कबहुंक होत वारने ठाढी [illegible] भावति । कबहुं भवन कबहूँ आइ गली मग जोवत अजहुँ न [illegible] जरात अति व्याकुल आकुलता। मनमों अति । [illegible] यह कहित्र गुण तोवति ॥ ४९ ॥ राग ललित ॥ऐसेहि ऐसेहि रैनि धाम सिधारे। [illegible] मलीनचिरैयाबोली सुनी कागकी बानी॥ वे लुब्धेअनतहि काहूकेमनकी आश भुलानी।कपटी कुटिल क्रूर कहा जानें श्यामनामजिय आनी॥कोकिल श्याम श्यामअलि देखो श्यामरंगहैपानी।श्यामजलद अहिश्यामकहावत सूर श्याम सोवानी ॥५०॥राग शुद्धमल्लार॥वामसँग श्याम त्रययाम जागे । कोक विद्या निपुण सकलगुणमे सुघुन सुरति संग्राम जुरि नहींभागे॥अंग आलस भरे नैन निद्राढरे नेक सेज्या परे निशा बीती। सूर प्रभु नंदसुत चले अकुलाइके गए ता धाम रसकाम जीती ॥ ५१ ॥राग विभास ॥ चंद्रावलि धाम श्याम भोर भए आए।इत रिस करि रही वाम रैन जगी चारि याम देख्यो जो द्वार कान्ह ठाढे सुखदाये ॥ मंदिरते रहि निहारि मनहीमन देत गारि ऐसे कपटी कठोर आए निशि बीते।रिस नहिं सकी सँभारिबैठि चली द्वारि नारि ठाढे गिरिधारि निरखि छबि नख शिखहीते ॥ बिनुगुन बनि हृदय माल ताविचनखछतरसाल लोचन दोउ दरशिलाल जैसी रिस गाढी।जावकरँग लग्योभालबंदन भुजपरविशाल पीकपलक अधर झलक वाम प्रीति गाढी ॥ क्योंआए कौन काज नाना करि अंग साज उलटे भूषण शृंगार निरखत हौं जाने । ताहीके जाहु श्याम जाके निशि बसे धाम मेरे गृह कहा काम सूरदास गानें ॥ ५२ ॥ राग बिलावल ॥ तहीं जाहु जहिं रैनि बसे हो। काहेको दाहन हौ आएअंगअंग देखति चिह्न जैसेहो॥अरगजे अंग मरगजी माला बसन सुगंधभरेसे हो । काजर अधर कपोलन बंदन लोचन अरुन धरेसे हो ॥ पलकनिपीकमुकुर लै देखो एकौ नहीं अनैसेहो । सूरदास प्रभु

नाहीं कहा परी हम चूक । पीतांबर गहि कह्यो बैठिए रहे कहा ह्वै मूक ॥ उघरिगयोउरते उपरैना नखछत विनगुनमाल । सूर देखि लटपटी पागपर जावककी छबिलाल ॥३५॥ राग इमन ॥ ऐसी कहाँ रँगीले लाल । जावकसों कहाँ पाग रँगाई रँगरेजिन मिलिहै को बाल ॥ वंदन रंग कपोलन दीन्हों अधर अरुण भए श्याम रसाल । जिन तुम्हरे मन इच्छा पुरई धनिधनि पिय धनिधनि वह बाल ॥ माला कहाँ मिली विनगुनकी उरछत देखि भई बेहाल । सूर श्याम छबि सबै बिराजी इहै देखि मोको जंजाल ॥ ३६ ॥ राग गुंडमलार ॥ काहेते सकुचत पिय दृष्टि नहीं तुम जोवत मोहनरूप विहारी । निकसे समाचार सब सोवत घूमति आँखि तिहारी ॥ नैन जगे पल लगे जातहैं पौढत तल्प हमारी । विविध कुसुम रचना रचि पर्यंक अपने हाथ सवाँरी ॥ कहत सूर उर तप्यो भोर भयो हम बैठी रखवारी ॥ ३७ ॥ राग विलावल ॥ ज्वावनहीं पिय आवई क्यों कहाँ टगाने मैंतबहीं- की बकतिहौं कछु आजु भुलाने ॥ हाँ नाहीं नहिं कहतहौं मेरीसों काहे । आए क्यों चकृत भए मोको रिसि दाहे ॥ कहाँ रहे कासों बन्यो तहँई पगधारो । सूर श्याम गुणरावरे हिरदे न बिसारो ॥ ३८ ॥ राग विलावल ॥ काहेको कहि गए आइहैं काहे झूठी सौंहैं खाए । ऐसे में जाने नहिं तुमको जे गुणकरि तुम प्रगट देखाए ॥ भलीकरी दरशन हरि दीन्हें जन्मजन्मके ताप नशाए । तबचितए हरि नेक त्रियातन इतनेहि सब अपराध क्षमाए ॥ सूर दास सुंदरी सयानी हँसि लीन्हें पिय अंकम लाए ॥ ३९ ॥ राग विलावल ॥ नैनकोर हरिहेरिकै प्यारी वश कीन्ही । भाव कह्यो आधीनको ललिता लखिलीन्ही ॥ तुरत गयो रिस दूरिह्वै हँसि कंठ लगाए । भली करी मनभावते ऐसेहु मैं पाए ॥ मेघलगाई गहि बाँहले जागे निशिजाने । अंग शिथिलनिशि श्रमभयो मनहीमन ज्ञाने ॥ अँगसुगंध [illegible] । अपनेकर अँग पोंछिकेमन साध पुराये ॥ चीर अभूषणअंगदैबैठे भाल दिए ॥ चंदन खौरि मेटि अब आए [illegible] ॥ ४० ॥ राग कल्याण ॥ कियो मनकाम नहिं लिए ॥ लालीदै पीरी ले आए देखत पुलकि जिए । सूरदासप्रभु [illegible] ॥ राग सूही ॥ जागे होजू रावरे नैना क्यों न खोलो । भये प्रियाके वशनिसि [illegible] नंदसुत लाडिले प्रेमके उठि आए भूले कहा डोलो ॥ चंदन मिटाये तनु अतिही अलसात नागरीकी पीकलीक लागी तो कपोलौ । पीतांवर भूलिआए प्यारी जीको पटु ल्याए भोर भए उठे सूर किए आए दोलौ ॥५९॥ ॥ राग विलावल ॥ पीतांवर पट कहा भयो । नीलांबरओढेहौ आए अति दुहुँ डहो नयो ॥ तैसोइअंग वसन रंग तैसोइ कहा कहौं यह शोभा । तैसिय बनी मरगजीकेसर ता त्रियके मनलोभा ॥ एते पर क्यों बोलत नाहीं कहा खोइसे आए । सूर श्याम यह अब मैं जानी नागरिचित्त चुराए ॥ ६० ॥ ॥ राग भैरव ॥ हाहाहो पिय बातकहो । आप कछू जिय तरक गहत हौ तौ तुम मोसों मौनगहौ ॥ कहा चूक हमको पिय लागै रूसिरहेहौ काहेजू । तबहींते वैसेहि हो ठाढे मोतनको नहिं चाहेजू ॥ अब हमको अपराध क्षमैगे कृपा करो मुख बोलोजू । सूर श्यामअब तजो निठुरई गाँठि हृदयकीखोलोजू ॥ ॥६१॥ राग विलावल ॥ रूखेहौ पिय रूखेहौ । उत्तरको उत्तर न देतहौ देखतही न कछू खेहौ ॥ वह चितवनि न होइ नैननकी वचनहुते उतहू खे हौ । वह मुखकमल विकास नहीं रति सायक शरहि विदूपेहौ ॥ की छुटि गई संपदा करते की ठगठगे कछूसेहौ । मेरेहु जान सूर प्रभु साँचे मदन चोर मिलि मूसेहौ ॥ ६२ ॥ मदनचोरसों जानि मुसायो । अपनी लाली खोइ पीककीलाली पलकनि पायो ॥ ह्यांते गए चतुरई लीन्हें सो सब उनहिं छपायो ॥ आलस अवल जम्हात अंग ऐंडात गात दरशायो । कंचन खोय काँच लै आये विढतो भलो फबायो । सूर कहूँ वर पर मन नाही जैसे हाल करायो ॥ ६३ ॥ राग काफी ॥ लाल उनींदे नयना आलस भरिआए । अरुझि काम-

जनु पानी।बारंबार श्यामरति रसकी कही प्रगट फरि बानी॥ यामर कल्पसमान न बीतत कैसे-हुँ रैनि तुलानी। सूर देखि गति गत पतंगको अवधि जानि हरपानी॥४५॥राग कल्याण॥राधिका-गेह हरिदेह बासी। और त्रिय घरनघर तनु प्रकाशी॥ब्रह्मपूरण एक द्वितिय नहिं कोऊ। राधिका सबै हरि सबै कोऊ॥ दीपसें दीप जैसे उजारी। तैसेही ब्रह्म घरघर बिहारी॥ खंडिता वचन हित यह उपाई। कबहुँ कहुँ जात कहुँ नहिं कन्हाई॥जन्मको सफल हरि इहे पावैं।नारि रसवचन श्रवणन सुनावैं॥ सूर प्रभु अनतही गमन कीन्हों। तहां नहिं गए जहँ वचन दीन्हों॥ ४६॥ राग टोड़ी॥श्याम गए सुखमाके धाम।देखत हर्ष भई मन बाम॥ आतुर मंदिर गए समाइ। प्यारी प्रेम उठी झहराइ॥ श्याम भामिनी परम उदार।कोककला रस करत बिचार॥ बोलत पिय नहिं आवति पास। गद्गद बानी कहति उदास॥ धाइ जाइ पति अंकम लाइ। हाहा कहि रलैत बलाइ॥ अति आतुर पतिके नति काम। कहा प्रकृति पाई यह बाम॥ बाँह गहत कीन्हों घन मान। तब हारे कीन्हें एक सयान॥ तब प्यारी चरणन शिर धारी। कामव्यथा जान्यो सुकुमारी॥ अल्प हँसी मुख हेरि लजानी। सूरज प्रभु त्रियमनकी जानी॥ ४७॥राग गुंडमल्लार॥श्याम कर भामिनीमुख सँवारचो।बसन तनु दूरि करि सबल भुज अंक भरि कामरिस बा परि निदरि धारचो। अधर दशनन भरे कठिन कुच उरलरे परे सुखसेज मन मुरछि दोऊ।मनो कुंभिलाइ रहे मैनसे मछ दोउ कोक परवीन घटि नहीं कोऊ। अंग विह्वल भए नैन नैनन नए लजित रतिअंत त्रिय कंत भारी। सूर धनि धन्य सुखमा नारिवश श्याम याम युग भई पतिते न्यारी॥४८॥राग बिहागरो॥ चंद्रावली श्याममग जोवति। कबहुँ सेज करझारि सँवारति कबहूँ मलयरज भोवति॥कबहुँ नैन अलसात जानिके जल लै लै पुनि धोवति। कबहुँ भवन कबहूँ आँगन ह्वै ऐसे रैनि बिगोवति॥ कबहुँक बिरह जरति अति व्याकुल आकुलता मनमों अति। सूर श्याम बहुरवनि रवन प्रिय यह कहि तब गुण तोबति॥ ४९॥ राग ललित॥ऐसेहि ऐसेहि रैनि बिहानी। चंद्र मलीनचिरैयाबोली सुनी कागकी बानी॥ वे लुब्धेअनतहि काहूकेमनकी आश भुलानी।कपटी कुटिल क्रूर कहा जानें श्यामनामजिय आनी॥कोकिल श्याम श्यामअलि देखो श्यामरंगहैपानी।श्यामजलद अहिश्यामकहावत सूर श्याम सोबानी॥५०॥राग गुंडमलार॥बामसँग श्याम त्रययाम जागे। कोक विद्या निपुण सकलगुणमें सुपुन सुरति संग्राम झुरि नहीं भागे॥अंग आलस भरे नैन निद्राढरे नेक सेज्या परे निशा बीती। सूर प्रभु नंदसुत चले अकुलाइके गए ता धाम रसकाम जीती॥ ५१॥राग बिभास॥ चंद्रावलि धाम श्याम भोर भए आए।इत रिस करि रही बाम रैन जगी चारि याम देख्यो जो द्वार कान्ह ठाढे सुखदाये॥ मंदिरते रहि निहारि मनहीमन देत गारि ऐसे कपटी कठोर आए निशि बीते।रिस नहिं सकी सँभारिबैठि चली द्वारि नारि ठाढे गिरिधारि निरखि छबि नखशिखहीते॥ बिनुगुन बनि हृदय माल ताविचनखछतरसाल लोचन दोउ दरशिलाल जैसी रिस गाढी।जावकरँग लग्योभालवदन भुजपरविशाल पीकपलक अधर झलक बाम प्रीति गाढी॥ क्यों आए कौन काज नाना करि अंग साज उलटे भूषण शृंगार निरखत हौं जाने। ताहीके जाहु श्याम जाके निशि बसे धाम मेरे गृह कहा काम सूर-दास गाने॥ ५२॥ राग बिलावल॥तहीं जाहु जहिं रैनि बसे हो। काहेको दाहन हौं आएअंगअंग देखति चिह्न जैसेहो॥अरगजे अंग मरगजी माला बसन सुगंधभरेसे हो। काजर अधर कपोलन बंदन लोचन अरुन धरेसे हो॥पलकनिपीकमुकुर लै देखो एको नहीं अनैसेहो। सूरदासप्रभु

पीठ घले गडे नागरि अक भरेसे हो ॥५३॥ राग सारग ॥ तहँइ जाहु जहँ रैनि रहे वसि। केतन कत दामिनि पद प्रगटत आए मारन दुअन वान कसि॥ सिथिल सरोज रोर सुठि शोभित शीशहुते कछु पाग रही धसि। जावक रस मनों भवर अरिगण पिवा मनाई पद ललाट घसि॥ विन गुण माल मराल तरनि गति मगन चाल पद परत रहत खसि। चदनचरचित कुच उर उपटित मनु नवघनमें उदित दोउ शशि॥ सखियन समाचार लिखि पठए तन कागज नख लिखनि रुधिर मसि॥ सूरदास प्रभु श्रीगोपाल हे मानों जागत गई निशा नशि ॥५४॥ राग बिलावल ॥ तहँई जाहु जहां निशा वसे हो। जानत हौं पिय चतुर शिरोमणि नागरि नागर रासरसे हो॥ घमत हौं मनो प्रिया उरगिनी नव विलास श्रमसे जु डसे हो। काजर अधरनि प्रगट देखियत नागवेलि रँग निपट लसेहो॥ श्याम उरस्थल उपर रेखा मनहुँ गगन शशि उदित दिसेहो। लटपटी पाग महावरके रँग मानिनिपगपर शीश घसे हो॥ विगलितवसन मरगजी माला पीठ वलयके चिह्न लसेहो। सूरदास प्रभु प्रियावचन सुनि नागरनगधर नेकहसेहो ॥५५॥ तहँ जाहु जहँ रैनि हुते। काहे दुराव करत मनमोहन मिटे चिह्न नहिं अग जुते॥ विनही गुन उरहार विराजत परम प्रीति हिय लाइ सुते। विथुरी अलक अटपटे भूषण काम कुटिल कुचबीच गुवे॥ दशनदाग नखरेख वनीहे भामिनिभवन भले भुगुते। सूर सुदेश अधरमधु पीके लोचन अलस उनीदहुते ॥५६॥ तहइ जाहु जहाँ रैनि गँवाई। काहेको मुँह परसन आए जानतिहौं चतुराई॥ वाके गुण मनते नहिं टारत बोलत नाही वैन। या छविपर में तन मन वारों पीक विराजित नैन॥ भली करी यह दरश दिखायो ताते नैन सिराने। सूर श्याम निशिको सुख लूट्यो हमको भया विहाने॥५७ राग सुघराई॥ आए लाल ललित भेष किये। पीक कपोल अधर पर काजर जावक भाल दिए॥ चदन खौरि मेटि अव आए कुमकुम रग हिए। पीतांवर तहां डारि कौनको नीलांवरहि लिए॥ लालीदे पीरी ले आए देखत पुलकि जिए। सूरदास प्रभु नवल रसीले वोऊनवल त्रिए ॥५८॥
॥राग सही॥ जागे हौज गवरे नैना क्यो न खोलौ। भये त्रियाके वशनिसि जागे सरवस भोरभये उठि आए भूले कहा डोलौ॥ चदन मिटाये तनु अतिही अलसात नागरीकी पीकलीक लागीतौ कपोलौं। पीतांबर भूलिआए प्यारीजीको पटु ल्याए भोर भए उठे सूर किए आए दोलौ ॥५९॥
॥राग बिलावल॥ पीतांवर पट कहा भयो। नीलांवरओढेहौ आए अति दुहुँ डहो नयो॥ तैसोइअग वसन रग तैसोइ कहा कहौं यह शोभा। तैसिय वनी मरगजीकेसर ता त्रियके मनलोभा॥ एते पर क्यों बोलत नाही कहा खोइसे आए। सूर श्याम यह अब मैं जानी नागरिचित्त चुराए॥६०॥
॥ राग भैरव॥ हाहाहो पिय वात कहौ। आप कष्ट जिय तरक गहत हौ तौ तुम मोसो मौन गहौ ॥ कहा चूक हमको पिय लागे रूसिरहेहौ काहेजू। तवहीते वैसेहि हो ठाढे मोतनको नहिं चाहेजू॥ अब हमको अपराध क्षमैंगे कृपा करो मुख बोलोजू। सूर श्यामअव तजो निठुरई गांठि ह्रदयकीखोलोजू॥ ॥६१॥ राग बिलावल॥ रूखेहौ पिय रूखेहौ। उत्तरको उत्तर न देतहौ देखतही न कछू खेहौ॥ वह चितवनि न होइ नैननकी वचनहुते उतहूखे हौ। वह मुखकमल विकास नही रति सायक शरहि विदूपेहौ॥ की छुटि गई सपदा करते की ठग ठगे कछूसेहौ। मेरेहु जान सूर प्रभु साचे मदन चोर मिलि मूसेहौ ॥ ६२॥ मदनचोरसो जानि मुसायो। अपनी लाली खोइ पीककी लाली पलकनि पायो॥ ह्यौंते गए चतुरई लीन्हें सो सब उनहिं छपायो॥ आलस अबल जम्हात अग ऐंडात गात दरशायो। कचन खोय काच ले आये ठिठतो भलो फवायो। सूर कहूँ घर पर मन नाही जैसे हाल करायो ॥ ६३॥ राग काफी॥ लाल उनीदे नयना आलस भरि आए। अरुझि काम-

कीवेलिसों कीने विस्माए ॥ सिथिल पाग दस्तारकी जानकरँग भीने। पाँइ परे अपनश करे तव मरवम दीने ॥ लाली मेरे लालकी सनही तन ढीले। लाली लै लालनगए आएमुखपीले॥ विनगुन माल हियें लसै प्रिय प्रीति निसानी। ससि स्माल हमको दई तुम देहु विरानी ॥ पग डगमग इतको धरौ उतको हग धाए। अभ्यतर अंतर वसे पिय मोमन भाए ॥ उलटि तहां पग धारिए जासो मन मान्यो। उपदकजतजि वेलिसों लटि प्रेम नजान्यो ॥ तव हँसिबोले श्यामजीतुमतकोप्यारी। तुमविनु करु मोको नही अतिही सुखकारी ॥ वचनचतुई छांडिदेहु कहाये पढि आए। सूरश्याम गुणगरिही नीके प्रगटाए॥६४॥ राग सुघरई॥ आए लाल यामिनी जागे मे भोरा नील कलेवर कोमल उपर रगडिगए कुच जे कठोर॥ निसि वसिरहे मानिनीके गृह छांडउठिआएभोर॥ सूरदासप्रभु नचन वनावत अरचोरत मन मोर॥६५॥ आए लाल ललित भेप किये। पीक कपोल अधरपर काजर जानक भाल दिए ॥ चदनखौरि मेटि अव आए कुमकुम रग हिए। पीतांवर कहांडारि कौनको नीलांवरहि लिए ॥ लाली दे पियरी लैआए देखत पुलकि जिए। सूरदास प्रभु नवलरसीले वोऊ नवल त्रिए ॥ ६६ ॥ मैं जानी जिय जई रति मानी। तुम आएही ललना जव चिरिआं चुहचुहानीं ॥ मुखकी वात कहा कहाँ ठानी वात नहीं पहिचानी। यतेपर अँखियांरससानी अरुपगिया ए पटानी॥ भाले जानकरग वनानी अधरे अंजन परगट जानी। विनगुण वनी मालसव अगन उलटी सकल निसानी ॥ सूरदासप्रभुगुननिधानी अतरगतिकोमेंमरजानी। धनितियतुमकोजोसुखदानी सगम जागत रैनि विहानी ॥६७॥ राग विभास॥ मे जानी पिय वात तुम्हारी। भोरभए मेरेगृह आए ऐसे भोरे भारी ॥ छांआए मुख परमन मेरे हृदय टरति नहिं प्यारी। कपट चतुरई दूरि करौजू अपयश लेनरु मारी ॥ कहा सांच मैं खोवत करते झूठे कहा फवानति। सूर श्याम नागर नागरि यह हम तुम्हरे मन आवति ॥ ६८ ॥ राग कर्णी॥ रैनि रीझे की वान कहाँ। काहेको मकुचत मनमोहन ठाढे क्यो न रहौ ॥ पीतांवर कहा भयो तुम्हारो कीयौं लियो गहौ। नीलांवर पहरावनि पाई सन्मुख क्योन चहौ ॥ तव हँसि चले श्याम मंदिर तन कछु जिय लाज गहौ। सूर श्याम छांई अव रहिए अति पुनीत तुमहौ ॥६९॥ राग विलावल॥ तुमरीझे की उनहिं रिझाए। हाहा यह पिय प्रगट सुनाए कोटिक सौंह दिवाए ॥ जानक भाल चिह्न में जान्यो हठ कारि पाँय लगाए। नैनन पीक मया उनि कीन्ही अजन अधरलगाए॥ विनुगुन माल मिली कह तुमको ककन पीठि देखावहु। सूर श्याम हमतो यों जानति तुमहू कहि न सुनावहु ॥ ७० ॥ माधव नीकी विधिसो आए। नखरेखा उर मंडित मानो द्वितिया चद उगाए ॥ विगलित वसन पाग डोलतिहे केहरि चाल चलाये। सवँसु आनिजु रहे सूरप्रभु उत मेरे मन भाए ॥ पाउँ धारिए वामधाम जहँ चारोयामगँनाए॥७१॥ राग विलावल॥ आजुहरिपायोहेमुँहमाँग्यो। जवतेतुमसो विचार्‌यो मनसिज देखिलजारचो त्याग्यो ॥ कहुँ जावक कहुँ वने तमोर रग कहुँ अग सेंदुर दाग्यो। मानौं रन छूटे घायलको जहँ तहँ शोणित लाग्यो ॥ नख मानो चद्र वाण साजिके झझकारत उर आग्यो। सूरदासमानिनिरण जीत्यो स्मर सग डरि रणभाग्यो ॥७२ ॥ आजु हरि रैनिउनींदे आए ॥ अजन अधर ललाट महाउर नैन तमोर खनाए। विनुगुन माल विराजत उर पर चदन खौरि लगाए। मगन देह गिर पाग लटपटी जावक रग रँगाए ॥ हृदय सुभग नखरेखविराजत कंकन पीठि वनाए। सूरदास प्रभु इहे अचभव तीन तिलक कहां पाए॥ ७३ ॥ आजु हरि आलसरग भरे। कवहुँक वाह जोरि ऐडावत वहुत जम्हात खरे ॥ वैठोगे की पाव धारिए देखत नैन

सिराने। साँझ आइके दरशन दीन्हों की अब होत बिहाने॥ कबके द्वार भए पिय ठाढे भोरे वडे कन्हाई। सूर श्याम ह्यां सुरति करत वह ह्यां तुम झेर लगाई॥ ७४॥ सौंह करनको भोरही तुम मेरे आए। रैनि करत सुख अनतही ताके मन भाए॥ अँग अंग भूपण औरसे माँगे कहुँपाए। देखि थकित यह रूपको लोचन अरुनाए। मान कियो वोहि मानिनी धनि पाइँ पराए॥ यह चतुराई कहँ पढी उनहीं समुझाए। सूरदास प्रभु सांचिले उपमा कविगाए॥ ७५॥ राग गौरी॥ तुमको कमलनैन कवि गावत। वदन कमल उपमा यह सांची ता गुनको प्रगटावत॥ सुंदरकर कमलनकी शोभा चरणकमल कहवावत। और अंग कहि कहा बखानों इतनेहि को गुण गावत॥ श्याम नाम अद्भुत यह वाणी श्रवण सुनत सुख पावत। सूरदास प्रभु ग्वालसँगाती जानी जाति जनावत॥ ७६॥ तुम न्याय कहावत कमलनैन। कमल चरणकर कमल वदनछवि अरज सुनावत मधुर बैन॥ प्रात प्रगट रति रविहि जनावत हुलसत आवत अंक देन। निशि दे द्वार कपाट सदनवधु मधु पति ध्यावत परमचैन॥ मिलेहु मांझ उदास अनत चित वसत सदा जल, एक ऐन। सूर कपट-फल तबहिं पाइहौ अपनी अरप जब देहै भैन॥ ७७॥ राग भैरव॥ धीर धरहु फल पावहुगे। अपनेही पियके सुख चांडे कबहूं तौ वश आवहुगे॥ हमसों कहत औरकी औरै इन बातन मन भावहुगे। कबहुँ राधिका मान करेगी अंतरविरह जनावहुगे॥ तब चरित्र हमहीं देखैंगी जैसे नाच नचावहुगे। सूर श्याम अतिचतुर कहावत चतुराई बिसरावहुगे॥ ७८॥ राग देवगंधार॥ यह कहि प्यारी भवन गई। रीझे श्याम देखि वा छविपर रिस मुख सुंदरई॥ द्वारकपाट दियो गाढे करि कर आपने बनाई। नेक नहीं कहुं संधि बचाई पौढिरही तबजाई॥ यहि अंतर हरि अंत-र्यामी जो कछु करै सु होई। जहां नारि मुख मूँदी पौढिरही तहां संग रहे सोई॥ जो देखे ह्यां संग विराजत चली त्रिया झहराई। एक श्याम आंगनही देखै इक गृह रहे समाई॥ उतकोवैअति विनय करतहैं इक अंकम भरिलीनी। सूर श्याम मनहरन कहावहु मन हरिके वश कीनी॥ ७९॥ राग कल्याण॥ तब नागरि रिस भूलिगई। पुलकि अंक अँगिया उर दरकी अंग अनंग जई॥ अंकम भरि पिय प्यारी लीन्हीं निशिसुख वासर दीन्हों। मान छँडाइ हुलास बढायो सुफल मनो-रथ कीन्हों॥ तब निजधाम श्याम पगधारे तहां सहचरी आई। सूरज प्रभु रसभरी नागरी देखि रही मनलाई॥ ८०॥ राग आसावरी॥ चंद्रावली हरपसों बैठी तहां सहचरी आई हो। औरैवदन और अँगशोभा देखिरही चख लाई हो॥ कहा आज अतिहरपित बैठी कहा लूटिसी पाई हो। क्यों अँग शिथिल मरगजी सारी यह छवि कही न जाई हो॥ मोसों कहा दुराव करतिहै कहा रही शिर नाईहो। मैं जानी तोहिं मिले सूर प्रभु यशुमति कुँवरकन्हाईहो॥ ८१॥ राग आसावरी॥ चंद्रावली करतिचतुराई सुनत वचन मुख मूँदिरही। ज्वाब नहीं कछु देति सखी क्यों हौं नाहीं कछु बैन कही॥ गूँगेगुरकी दशा भई है पूरण श्याम सोहाग सही। आये श्याम सदन सुखभारी दुख निवारि आनंद करी। वहै ध्यान हरिके अनुरागी वह लीला चितते न टरी॥ तब बोली मोसों कछु बूझति कहा कहौंमुख बनै नहीं। सूर श्याम युवतीमन मोहन तिनको गुण नहिं परत कही॥ ८२॥ राग बिलावल॥ हाहा कहि चंद्रावलि मोसों हरिके गुण मैंहू सुनिलेउँ। श्रवणन मग सुनि हृदय प्रकाशौं पुनि पुनि उत्तर देउँ॥ की तोहिं मिले तीरयमुनाके की तोहिं मिले भवनही माँझ। कहां तोहिं मेरे गृह आए मानो अस्त होत रवि साँझ॥ कहूं वामके धाम बसे निशि भोर सदन गए मेरे आइ। सूर श्यामजो चरित उपायो कहनचहौं मुख कह्यो न जाइ॥ ८२॥ राग गौरी॥ अब तो कहे बनैगी

माई। कहा श्याम अचरज सो कीन्हो कहत कह्यो नहिं जाई ॥ कैसे लाल अनतते आए कैसे तेरे गेह। कैसे मान कियो क्यों मिटिगए कैसे बढ्यो सनेह ॥ तब गद्गद बाणी मुख प्रगटी सुन सजनी दे कान। सूरजप्रभुके चरित सुनाऊंजेमेबिसरयोमान ॥८४॥ राग बिलावल ॥ प्रातसमैमेरेमोहन आए। कुंचित केश कमल मुख ऊपर हृदय रह्यो बन अलिकुल छाए॥डगमग चाल परत न मृध पग इहि बिधि तो मेरे मन भाए। कहुँ कहुँ पीक कहुं काजर कहुं नखरेखा अति बनत सुहाए ॥ मो तन बीच निरखि मुसुकाने छोरिपीतपटअंक दुराए। सूरश्याम माधव बलिबलि अब श्यामजानि हो पाए ॥८५॥ राग गौरी ॥ मैं हरिसोंहो मानकियोरी। आवतदेखि आन बनितारति द्वारकपाटदियो री॥अपनेही कर सांकर [illegible] यो गिमनिद्दियो री॥ जब झुकि चली भवनते [illegible] न आवे हेतुगोविंद थियो री ॥ बिसरि गई सब रोष हरष मन पुनि फिरि मदन जियो री। सूरदास प्रभु अति रति-नागर छलिमुखअमृतपियो री ॥ ८६॥ राग बिलावल ॥ तबहीते भयो हरपढियो री। बेसे आइ बनि ए कीन्हें मदन पैठि मन चोरि लियो री॥अग बामछबि शेष देखिके रिस उपजी जियभारी॥क्रोध गयो उर आनँद उपज्यो सुख तनुदशा बिसारी ॥ ऐसे चरित कौनको आवे जंकीनेगिरिधारी। सूर श्याम रतिपतिके नायक सब लायक बननारी ॥८७॥ राग भैरव ॥ नंदनंदनसुखदायक हैं नैन सैनदे हरत नागिमन काम कामतन, दायक हैं॥ कबहू रैनि बसत काहूके कबहूँ भोर उठि आवत हैं। सुनहु सूर जेइजेइ मन भावत तेइतेइ रँग उपजावत हैं ॥ ८८ ॥ राग बिलावल ॥ अनतहि रैनि रहे कहुँ श्याम। भोर भए आए निजधाम ॥नागरि सहजरही मनमाहीं। नंदसुवन निशि अनत न जाहीं॥महरमदनकी मेरे गेह। हिरदय है प्रिय इहे सनेह॥आये श्याम रही मुख हारि। मनमनकरन लगी अवसेरि ॥ रतिरस चिह्न नारिके बानि। सूर हँसी राधा पहिचानि॥८९॥ राग रामकली ॥ आज बने पिय रूप अगाध। परउपकार हेतु तनुधार्‍यो पुरवत सब मन साध॥धर्मनीति यह कहोंपढी जू हमहू बात सुनावहु। कहाँ कहां काको सुख दीनो काहेन प्रगट बतावहु ॥ धनि उपकार करत डोलतहो आजबात यह जानी॥सूर श्यामगिरिधर गुणनागर अंग निरखि पहिचानी॥९०॥ राग गूजरी

पियछबि निरखि हँसति त्रियभारी॥कहां महाउर पाग रँगाई यह शोभा इक न्यारी॥अरुणनयनअल-सात देखियत [illegible] पीक लपटानो। अधर दशनछत बदन राजत वधुकपर अलिमानो ॥ हृदय [illegible] ।सूर रेखा तेहितीर।त्रिगुण माल सुरके स्वामी कुंकुम श्यामशरीर॥९१॥ रुचिर मोतिनकी माला नखर उर [illegible]॥धन्यधन्य जासों अनुरागे तब जानीनहिंऔरबियो॥भले राग बिलावल॥ धन्य आजु यह दरशो [illegible] जु ली करी। यह मेरे जिय अतिहि अचंभित तौ बिछुरत श्याम वह भली भावती भले भली मिलि [illegible] आजुहारनिके रिस पावैगी। सूर श्याम अतिचतुर क्यो एक घरी॥ जाहु तहीं सुख दीनो मोको वे [illegible] बने भोरइहां। काहेको इतनो शरमाने रैनिर-कहावत बहुरो मननमिलावेगी ॥९२॥ क्यो आये उठि [illegible] मानो मम्हारोजू। उन आए ह्यां नाहींजा-है फिरि जाहु तहां॥ हमको कहा इती गरुआई उनहीं क्यों न [illegible] भाग्यो। को हमहूकोहै। सूर श्याम तिनहीं न्यो अजहूंलो पगधारी जू ॥ हमहूं बोलि वहोई लीजो डर उनके ॥ गुन माले मन रारे काम। ह्यां तुम आए सुख दीजे जो बिलसें संग तुमकोलै ॥ ९३ ॥ राग रामकली ॥ उनहींको [illegible] ॥ हृदय [illegible] भूलीहों यहिरूप। धनि होगे नाही बात सुनतही नाही श्याम ॥ देखौ अंगअंग प्रतिशोभा [illegible] पाए ॥ ७३मायाकरी बहुतहरिआज्ञा पिय बने बनी वेऊ हैं इकइक रूप अनूप॥ सो छबिमोहिं देखन आए [illegible] की राग बिलावल ॥ रसिकरसिक ई सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि वहाँ रसिकनी बन्यो समाज॥ ९४ ॥ रा[illegible] न अरु सो नवजोबनि ॥निपरी। नैननते अब न्यारे हूजै तबहीते अनि रिसनि भरी॥ तुम जोवे

येतेपर सब गुणनि भरी । लाज नहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि त्रिय झहरी ॥ अंजन अधर कपोलन वंदन पीक पलक छबि देखि डरी । सूरश्याम रतिचिह्न देखावन मेरेआए भलेजु हरी॥ ॥ ९५ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम त्रियासन्मुख नहिं जोवत । कबहुँ नैनकी कोरनिहारत कबहुँवदन पुनि गोवत ॥ मनमन हँसत त्रसत तनु परगट सुनत भावती बात । खंडित वचन सुनत प्यारीके पुलक होत सब गात ॥ इह सुख सूरदास कछु जानै प्रभु अपनेको भाव । श्रीराधा रिस करति निरखि मुख सो छविपर ललचाव ॥ ९६ ॥ पियको सुख प्यारी नहिं जानै । जोइ आवत सोइसोइ कहिडारत जाहुजाहु तुम गानै॥ काहेको मोहिं डाहन आए रैनि देत सुख वाको । भली नवेली नोखी पाई जो जाको सो ताको ॥ चंदन वंदन प्रियअँग कुमकुम शेप लिए.ह्यां आए । सूर श्याम यह तुमहिं बड़ाई औरनको शरमाए॥ ९७ ॥ राग बिलावल ॥ औरनकोछबि कहादेखावत। तुमहीको भावत मनमोहन हम देखत रिसपावत॥आपुनको भइ बडी प्रतिष्ठा जावकभाल लगाए। याको अरथ नहीं कोउ जानत मारत सबन लजाए।पियनिधरक हमअतिसकुचतहेंदर्पणलैमुखदेखो। सूर श्याम क्यों बोलत नाहीं क्यों हमतननहिं पेखो९८राग गौरी॥श्याम हँसे प्यारीमुखहेरो। रिसहि उठी झहराइ कह्यो यह बश कीन्हों मनमेरो॥जायहँसोपियताहीआगे मेरीझीअतिभारी। ऐसे हँसिहँसि ताहि रिझावहु देउँ कहाअब गारी॥होत अबार गमन अबकीजे धरणीकहानिहारत। सूर श्याम मनकी मैं जानी ताके गुणहिं विचारत ॥९९॥ राग देवगंधा ॥मैं जानी पियमनकीबात। धरनी पगनख कहा करोवत अब सीखे ए घात ॥ तुम जानत जिय हमहिं सयाने अरु सबलोग अयाने । रैनि बसत कहुँभोर हमारे आवत नहीं लजाने॥ यह चतुरई पढी ताहीपै सो गुण हमते न्यारो । धनि धनि सूरदासके स्वामी काहे हम न बिसारो ॥ २०० ॥ मैं जानेहौं गृ लल्ना तहीं न सिधारिए जहां नयो नेहरा । मुँहकी हलभलई मोहूसों करन आए जियकी जासों ताहीसों तुमबिन सूनो वाको गेहरा ॥ निशिकेसुखकी कहेदेत अधर नैना उर नख लागे छबि देहरा । बेगि सबारे पाँइ धारिए सूरके स्वामी नतरभीजेगोपियरोपट आवतहै पिय मेहरा ॥१॥राग मलार॥ ठाढे रहो आँगनही हो पिय जोलौं मेह न नखशिख भीजो । परनदेहु बडीबडी बूँदें तुम चीर उतारि और वस्त्र पहिरो तब गेहदेहरी पांव दीजो॥ कहिए बात रैनिकी सांचीता पीछे सौंहैं कीजो । सूर श्याम तुम हो बहुनायक देह सुधारि मोहिं छीजो ॥ २ ॥ मोहूसोंनिठुरईठानीमोहन प्यारे काहेको आवन कह्यो सांचे । प्रीतिके वचन वाचे विरहअनल आंचे अपने गरजको तुम एक पांइ नाचे ॥ भले होजू जाने लाल अरगजे भीने माल केसरितिलक भाल मैनमंत्र काचे । निशिचिह्न चीन्हें सूरश्याम रतिभीनेताहीके सिधारोपियजाके रंग राचे॥३॥ राग मालकौशिक ॥तुम जिनि सकुचो प्यारेलाल मेरे जात्रियसों रति मानी ताहीकेरहोअब।मैं इतनेहीमें भलोमानो मीतम जो मेरे आँगन पाँव धारे आपन जब ॥ नैन तृप्त भए दरश देखतही श्रवण तृप्त भएवचन सुने तब । सूरदास प्रभु चरण छुए कहति रोमरोम पुलकित अंग भए सब ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ नैन चपलता कहां गँवाई । मोसों कहा दुरावत नागर नागरि रैनि जगाई ॥ ताहीके रँग अरुण भए हैं धनि यह सुंदरताई । मनो अरुण अंबुजपर बैठे मत्त भृंग रस आई ॥ उडि न सकत ऐसे मतवारे लागत पलक जँभाई । सुनहु सूर यह अंगमाधुरी आलसभरे कन्हाई ॥५॥राग बिलावल॥ नैनकी चंचलता कहा कीन्हें भीने रंग कौनके हो श्याम हमहूँसों करत दुरावत । औरनिको वदन देखिवेको नेम लियो ताके पलकनि राखे भार भरे नए आवत ॥ पुहुपगंध लोभ

भँवर उडिन सकत फिरि बैठन जा समीप रति मानी संग लिए आवत गतिकीरति गावत । सूरदास प्रभु प्यारे प्यारी रसवश कीन्हें मुखकी हमहि बनावत ॥ ६ ॥ राग कान्हरो ॥ जाके रस रैनि आजु जागे हो लालजाई। जावक तिलक भाल दीयो है नंदलाल विनुगुन बनी माल कहत अनोखी अरु बातनि बनाई ॥ अधर अंजनदाग मिट्यो है पीक पगग और मिटी चंदनकी ललाई । अंग अंग शिथिल भएहो प्रेम सूरके स्वामी मिटि गई चंचलताई ॥ ॥ ७ ॥ रंग भरि आएहो मेरे ललना बातैं कहतहो अटपटी । अति अलसात जम्हातहो प्यारे पिय प्रगट त्रिया परताप छुटत नहिन अंतरकी गटी ॥ यह चतुराई अधिकाई कहाँ पाई श्याम वाके प्रेमकी गढि पढ़ेहो पटी । सूरदास प्रभु गिरिधर बहुनायक तन मन नैन चटपटी ॥ ८ ॥ ॥ राग ईमन ॥ डोलत महलमहल इहै टहल हम जानति तुम बहुनाइक पिये। आयेहो सुरति किए ठाटकरस लिये सकसकी धकधकीहिये। छूटे बंदन अरु पागकी बाँधनि छूटी लटपटे पेच अट-पटे दिये । सूरदास प्रभु हो बहुनायक मेरे पाँवधारे बैठो जु बैठो भली किये ॥ ९ ॥ महल महल अब डोलतहो । इहै कामते धाम बिसार्यो बूझे काहे न बोलतहो॥ बहुनायककी आजु मैंजानी कहा चतुरई तोलतहो । निशिरस कियो भोर पुनि अटके शिथिल अंग पुनि डोलतहो ॥ टटके चिह्न पाछिले न्यारे धकधकात उर जोलतहो॥ जाहु चले गुन प्रगटसूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हो ॥ १० ॥ अँग अँग रंग भरे आएहो । रंगभरी पाग भालरँग शोभा रँग रँग नैन पगाएहो॥ रँग कपोल रँग पलकनि शोभा अधरन श्याम रँगाए हो । नखछत रंग चारु उर रेखा रतिरँग रैनि जगाए हो॥ कंकण वलय पीठि गडि लागे उरपर छाप बनाए हो॥ सूर श्याम बामारँग पागे अनुरागे मन भाए हो ॥ ११ ॥ राग बिलावल॥ बारबार मैंकहतिहौं पिय तहाँ सिधारो । आएहो मन हरनको हरि नाम तुम्हारो॥ भली बनी छबिआजुकी क्यों लेतजम्हाई। रैनिआजसोएनहीं रति काम जगाई ॥ वह रति तुम रतिनाथ हो हम कैसे भावें । सूरश्याम तेबहुगुणी जे तुमहि रिझावें॥ १२ ॥ राग सोरठ ॥ सकुचत श्याम कहत मृदुबानी । किनि देख्यो किनि कही बात यह मो हुजूर कहै आनी ॥ याते वचन बोलि नहिं आवत रिस पावतहो भारी। जोरि कहति बातें तुमआगे खोटी ब्रजकी नारी॥ तुमहूंते ऐसी को प्यारी सौंहकरोंजोमानो। सुनहु सूर जो बूझति मोकोमैंकाहुनपहिचानौं ॥ १३ ॥ राग बिलावल॥ को पतिआइ तुम्हारी सौंहनि । वा तियकोअनुराग देखियत प्रगट सावरी भौंहनि॥ तुलसीको कहि नीम प्रगट कियो मोहीते करि बोहनि। प्रात आइ मन पोपन लागे आए घालन कोहनि॥ सुँहहींकी हमसों मिलवत जिय बसन जहाँ मनमोहनि । सूर सुबस घर छाँडि हमारो क्यों रति मानत खोहनि ॥ १४ ॥ राग भैरव॥ बिन बोले पिय रहिए जू । नाहीं कही कहें कहा ताको अब ऐसे जिनि दहिए जू ॥ मौनरहौतो कछूगैंबाबहु इन बातन कछुलहिए जू । सौंह कहा करिहो सुनि पावहि सन्मुख ह्वै यों कहिए जू॥ एतेपर कहा बादनलागे कैसे रिस मन सहिए जू । सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि रसिकहि सबगुण चहिए जू॥ १५ राग बिलावल॥ आइगई ब्रजनारी तहाँ । सौंह करत पिय प्यारीआगे आनँद बिरहमहाँ ॥ प्यारी हँसि देखी सखियनको अंतर रिस है भारी। नैनसैन दे अंग देखावति पिय शोभा अधिकारी ॥ श्याम रहे मुख मूँदि सकुचिकै युवति परस्पर हेरैं । सूरदास प्रभुअँग अनूपछबि कहँपायो केहिकेरैं॥ १६॥ तब नागरी कहति सखियनसों एतेपर क्यों सौंह करें । दरशन प्रात देतहैं हमको निशि औरनके चित्त हरैं॥ तुमहीं देखिलेहु अंगवानक एतेपर क्यों सही परैं । कृपा करें अब तहीं सिधारैं मो

आगेते अब जु टरै॥ यह छवि देखि सनाथ भई मै अब ताहीपर जाइ ढरैं। सूर श्याम रिस देखि चले डरि कहौ सखीअब ध्यान फिरैं ॥१७॥राग बिहागरो॥श्याम गएत्रियमानकियो।देखोमोहिंदोप तुम देती उन ऐसे मन चोरिलियो ॥जाहु सदन तुमहू सब अपने मै बैठी हौं धाम ।जानदेहु अब ह्या जनि आवैं ऐसेनको कहा काम ॥ अनतहि बसत अनतही डोलत आवत किरिन प्रकास। सुनहु सूर पुनि तौकहिआवैतिनगि गएता पास ॥१८॥ अथ राधाजूको मान ॥ राग बिलावल॥यहकहि-कै प्रिय धाम गई। रिसनि भरी नख शिख लौं प्यारी जोवन गर्व मई ॥ सखी चली गृह देखि दशा यह हठ करि बैठी जाइ ।बोलत नही मान करि हरिसो हरि अतर रहे आइ ॥ यहि अतर युवती सब आई जहां श्याम घर द्वारे। प्रिया मान करि बैठिरही है रिस करि क्रोध तुम्हारे॥तुम आवत अतिही झहरानी कहा करी चतुराई।सुनत सूर ए बात चकित पिय अतिहि गए मुरझाई॥ ॥१९॥राग बिहागरो॥बहुरि नागरी मान कियो।लोचनभरिभरिढारिदियेदोउ अतितनुबिरहहियो॥ देखतही देखत भए व्याकुल त्रिय कारण अकुलाने। वे गुन करत होत अब काचे कहियत परम सयाने॥ यह सुनिकै दूती हरि पठई देखि जाय अनुमान।सूर श्याम यह कहतहि पठई तुरत तजहि जेहि मान॥२०॥राग कदारो॥दूती दई श्याम पठाइ। और मुख कछु बातन आवै तहां बैठी जाइ ॥ प्रिया मन परवाह नाही कोटि आवै जाहिं। सौति साल सलाइ बैठी डुलति इत उत नाहिं ॥ भीति बिन कह चित्र रेखै रही दूती हेरि। सूरप्रभु आतुर पठाई करत मन अवसेरि ॥ ॥ २१ ॥ राग कान्हरो॥दूती मन अवसेर करै। श्याम मनावन मोहिं पठाई यह कतहू चितवैनटरै॥ तब कहि उठी मान अति कीन्हो बहुत करी हरि कहो करौ।ऐसे बिन वे नही जानिहैं अबकबहूँ जनि उनहिं ठरौ ॥ मैं आवति यमुनातटते व्रज सखी एक यह बात कही। सुनहु सूर मैं रहि न सकी गृह कही श्यामकी प्रकृति सही॥२२ ॥ राग बिहागरो॥अब द्वारेते टरत न श्याम।अबपरघर-की सौंह करत हैं भूलि करो नहिं ऐसे काम ॥ अब तू मान तजै जिनि उनसो इहै कहन आई तेरे धाम। अब समुझी औरी समुझ्यो वै हम जब कहैं करैं तब ताम॥ अब मोको यह जानि-परी है काहूके न बसे कहुँ याम। सूरदास दूतीकी बाणी सुनति धरति मनही मन वाम ॥२३॥ राग सूहो ॥ जब दूती यह वचन कह्यो। तब जानी हरि द्वारे ठाढे उर उमँग्यो रिस नहीं रह्यो॥ काहेको हरि द्वार खरेहैं किन राखे कहि जीभ गरै। मौन गहे मैंही कहिआवौं तू काहेको रिसनि जरै ॥ चतुर दूतिका जानि लई जिय अब बोली गयो मान सबै। सूर श्यामपै आतुर आई कहत आनकी आनफबै ॥२४॥राग केदारो॥ काहिमनाऊंश्यामलालबालजोरैनहिंडीठि। मुखहूजोबोलै तौ ममहीकी लहिये ऐसी तिहारी अदीठि॥ अपनी सी बहुत कही सुनिसुनि उनसबै सही बारू-की बूंद ताको कहा करै बसीठि। सूरदास पिय प्यारी आपुही जाइ मनाय लीजै जैसी बयारि वहै तैसी ओडिए जू पीठि ॥ २५ ॥ललन तुम्हारी प्यारी आजु मनायो न मानति। बूझिनपरति जानि का बैठी कियो जु इत रिस तुमही लैकोटिअवगुणगानति॥भरिभरिअँखियननीरलेतिपैढा-रति नाही अतिरिस कँपति अधर फरकि करि भ्रुकुटी तानति। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि आपुन चलिए तौ भली बानति ॥२६॥राग पूरबी ॥ हौंकैसेकैल्याऊंजोमरमपाऊंश्यामवाकीमान मानो गढवै भयो। तनु कचनगिरि प्रगट कियो तामें वसन कोटि रच्यो अचल ड्योढी ओट दियो॥ वचन पौरिआ बोलन खोलै मुखपौरि मूंदिरह्यो॥ मोहन भौंहैं कमान नैना रिसके बान ताते जाइ न निकट गयो ॥ साम दाम दण्ड भेद सबै मैं करि देख्यो सूरदास प्रभु चतुर कहावत

भवर उडिन सकत फिरि बैठन जा समीप गति मानी संग लिए आनत रतिकीरति गानत । सूरदास प्रभु प्यारे प्यारी रसवश कीन्हें मुखकी हमहि वनावत ॥ ६ ॥ राग कान्हरो ॥ जाके रस रैनि आजु जागे हो लालजाई। जावक तिलक भाल दीयो है नंदलाल विनुगुन बनी माल कहत अनोखी अरु बातनि बनाई ॥ अधर अंजनदाग मिट्यो है पीक पगग और मिटी चंदनकी ललाई। अंग अंग शिथिल भएहो प्रेम सूरके स्वामी मिटि गई चचलताई ॥ ॥ ७ ॥ रंग भरि आएहो मेरे ललना बातें कहतहो अटपटी । अति अलसात जम्हातहो प्यारे पिय प्रगट त्रिया परताप छुटत नहिंन अतरकी गटी ॥ यह चतुराई अधिकाई कहां पाई श्याम वाके प्रेमकी गढि पढेहो पटी । सूरदास प्रभु गिरिधर बहुनायक तन मन नैन चटपटी ॥ ८ ॥ ॥ राग ईमन ॥ डोलत महलमहल इहे टहल हम जानति तुम बहुनाइक पिये। आयेहो सुरति किए ठाटकरख लिये मकमकी धकधकीहिये। छूटे चंदन अरु पागकी बांधनि छूटी लटपटे पेच अट-पटे दिये । सूरदास प्रभु हो बहुनायक मेरे पांवधारें बैठो जु बैठो भली किये ॥ ९ ॥ महल महल अब डोलतहो । इहे कामते धाम बिसारयो बूझे काहे न बोलतहो॥ बहुनायककी आजु मेंजानी कहा चतुरई तोलतहो । निशिरस कियो भोर पुनि अटके शिथिल अंग पुनि डोलतहो ॥ टटके चिह्न पाछिले न्यारे धकधकात उर जोलतहो॥ जाइ चले गृन प्रगटसूर प्रभ कहा चतुरई छोलत हो ॥ १० ॥ बोलतहँ दे परिरंभण दान ॥ प्रथम समागमते नानाविधि चरित तिहारे गान। सूरश्यामकह वर अतर सुनि सुयश आपने कान ॥ ११ ॥ राग सारंग॥ श्यामातृअति श्यामहि भावे। बैठतउठत चलत गउचारत तेरिय लीला गावे ॥ पीते पीत वसन भूषण सजि पीतधातु अंग लावे।चद्रानन सुनि मोर चन्द्रिका माथे मुकुट बनावे ॥ अति अनुराग सैन संभ्रम मिलि संग परमसुख पावे।बिछु-रत तोहि क्यासि राधा कहि कुंजकुजप्रति धावे॥ तेरो चित्र लिखे अरु निरखे वासरविरहगॅवावे। सूरदास रसरमी रसिकसो अतर क्योंकरि आवे॥१२ ॥ राग बिहागरो ॥मनमन पछितायो रहि-जेहै। सुनि सुदरि यह समों गएते पुनि न झूल सहिजेहै ॥ मानहु मीन मँजीठ प्रेमरँगतेसेहीगहि-जेहै । काम हर्ष हैरे हरि अतर देखतही वहिजेहै ॥ इते भेदकी बात सखी री कत कोऊ कहिजेहै। वस्त भवन खनि कूप सूर त्यो मदन अगिनि दहिजेहै ॥ १३ ॥ राग केदारो ॥ तेई नैन सुहावनेहो नेक न भावत न्यारे री । पलक ओट प्राणजाते तेरे री ध्यानचकोरचदामेरेनेनचित-वनिपर चेरे री॥ कमल कुरग जु मधुप उपमा नहिं आवे चचलरहत चितेरे री । सूरदास प्रभुकी तुहि जीवनि कलहि करत त्रिय झेरे री ॥ १४ ॥ राग आसावरी ॥ बनत नहीं राधे मानकिए।नद-लाल आरतके पठई सोंह करतिहों शीश छुए॥ जाकेपद कमल कर लीने मनवचक्रमचितउन्हें दिये । ता प्रभुकी पठई हों आई तूजु गर्वकी मोट लिये ॥ हरिमुख कमल सच्यो रस सजनी अति आनद पीयूष पिये । सूरदास सकल सुख हरिसँग कृपा विमुख के काल जिए ॥ १५॥ राग सारंग ॥ जबजब सुरति करत । तबतब डबडबाइ दोउ लोचन उमँगि भरत ॥ जैसे मीन कमलदलको चले अधिक अरत। पलक कपाट न होत तरहीते निकसि परत ॥ आंसु परत ढरिढरि उरऊपर मुक्ता मनहुं झरत। सहज गिरा बोलत न बनत हित हेरिहरत ॥ राधा नैन चकोर बिना मुख मानहु चद्र जरत। सूरश्याम तुम्हरे दरशन बिन नाहिंन धीर धरत ॥ ॥ १६ ॥ रागसारग ॥ चिते चलि ठुठुकि रहत । तव पद चिह्न परसि रसवश भए आधे वचन कहत ॥ किसलय कुसुम पराग अरुण फेन अछत। कटक जनु भू कठिनजानियत कष्ट लहत॥

आगेते अब जु टरैं॥ यह छबि देखि सनाथ भई मैं अब ताहीपर जाइ ढरैं। सूर श्याम रिस देखि चले डरि कहौ सखीअब ह्यांन फिरैं ॥१७॥राग बिहागरो॥श्याम गएत्रियमानकियो।देखोमोहिंदोप तुम देती उन ऐसे मन चोरिलियो ॥जाहु सदन तुमहूं सब अपने मैं बैठी हौं धाम।जानदेहु अब ह्यां जनि आवैं ऐसेनको कहा काम ॥ अनतहि बसत अनतही डोलत आवत किरिन प्रकास। सुनहु सूर पुनि तौकहिआवैंतिनगि गएता पास॥१८॥ अथ राधाजूको मान॥ राग बिलावल॥यहकहि-के त्रिय धाम गई। रिसनि भरी नख शिख लौं प्यारी जोवन गर्व मई ॥ सखी चलीं गृह देखि दशा यह हठ करि बैठी जाइ।बोलत नहीं मान करि हरिसों हरि अंतर रहे आइ ॥ यहि अंतर युवती सब आईं जहां श्याम घर द्वारे। प्रिया मान करि बैठिरही है रिस करि क्रोध तुम्हारे॥तुम आवत अतिही झहरानी कहा करी चतुराई।सुनत सूर एबात चकित पिय अतिहि गए मुरझाई॥ ॥१९॥राग बिहागरो॥बहुरि नागरी मान कियो।लोचनभरिभरिढारिदियेदोउ अतितनुबिरहहियो॥ देखतही देखत भए व्याकुल त्रिय कारण अकुलाने। वै गुन करत होत अब काचे कहियत परम सयाने॥ यह सुनिकै दूती हरि पठई देखि जाय अनुमान।सूर श्याम यह कहतहि पठई तुरत तजहि जेहि मान॥२० ॥राग केदारो॥दूती दई श्याम पठाइ। और मुख कछु बातन आवै तहां बैठी जाइ ॥ प्रिया मन परवाह नाहीं कोटि आवैं जांहि। सौंति साल सलाइ बैठी डुलति इत उत वश तीनि लोक जाके है सो तो वश माई री तू मुखध्वनि सुनाइ मोहिलरी॥४१॥...॥ तुव को है री कौन पठाई तेरी को मानै।तू जो कहति श्याम कौनसे देखे नसुनेकोपहिचानै॥और कहति कहि नेम लियो ह्यां को वैसी वे जानै। सूरदास प्रभु रसिक वडे तोकोपठईअतिस्यानै॥ ॥४२॥ राग सारंग॥ अति हठ न कीजे री सुनि ग्वारि। हौं जु कहति तू सुन याते शठ सरे नएकौं द्वारि ॥ एक समय मोतियनके धोखे हंस चुनतहै ज्वारि।कीजै कहा काम अपनेको जीतिमानिए हारि ॥ हौं जो कहतिहौं मान सखी री तनको काज सँवारि। कामी कान्ह कुँवरके ऊपर सरबस दीजै वारि ॥ यह जोवन वर्षाकी नदी ज्यों बोरति कतहि करारि। सूरदास प्रभु अंत मिलहुगी ए बीते दिन चारि॥४३॥॥राग रामकली॥कहा तुम इतनेहिको गर्वानी। जोवन रूप दिवस दशहीको ज्यों अँजुरीको पानी ॥ करि कछु ज्ञान अभिमान जानदे है अब कौन मति ठानी। तन धन जानि याम युग छाया भूलति कहा अयानी॥ नवसै नदी चलत मर्यादा सूधी सिंधु समानी। सूर इतर ऊपरके बरपे थोरेहि जल इतरानी॥४४॥राग धूरिया॥तू चलिप्यारी री एतोहठ छांडिमानिरी॥ परम विचित्र गुण रूप आगरी अतिहि चतुर त्रिय भारी री॥ मदनमोहनतन मदन दहतहै तेरी उनकी पीरन न्यारी।सूरदासप्रभुविरहविकलहैं नेक न निरखि निहारी री॥४५॥राग बिहागरो॥वादि बकति काहेको तू कत आई मेरे घर।वे अति चतुर कहा कहिये जिन तोसीमूरख लैनपठाईतनु वेधति वचनन शर ॥ उतकी इत इतकी उत मिलवति समुझति नाहिन प्रीतिरीति कोही तूको है गिरिवर धर। सूरदास प्रभु आनि मिलैंगे छुहैं पगअपने कर॥४६॥ज्योंज्यों मैं निहोरे करौं त्यों त्यों यों बोलति है री अनोखी रूसनहारी ॥ बहियां गहत सतराति कौनपर मगधरी उँगरीकौन-पै होत पीरी कारी॥ कौन करत मान तोसी और न त्रिय आन हठ दूरिकरिधरि मेरेकहे आरी। सूरदास प्रभु तेरो पथ जोवत तोहिं तोहिं रट लागी मदन दहत तनु भारी ॥४७॥ राग मलार ॥ तऊ तो गँवारि अहीरि। तोसों कछु नँदनंदन हँसि कह्यो इतनेहीको तू कबकी अन उत्तर बोलति कह्यो नहिंन मानतिही री।श्यामसुंदर हँसि हँसि देत सुनि सुनि करत कानि इक-

एकहि ग्वारिनि जु ग्ही री । कहा कहौ हरिसों अब तोसीकोमुँहल्गाइचारिफेरिडारौतोहिंपियके एक रोमपरही री। सूरदास प्रभुको कहा कहि बरणों एती कबहू काहूकी न सही री॥४८॥ राग नट॥ एकतौ लालन लाडनि लडाइ दूजे यौवन बावरी । उनके गरब जिनि भूलिरहै री हमसों करि लीन्हें सुख अनेकदिन दिन चारि होत अधिक चावरी ॥ मेरो कह्यो तू मानि री माई सब त्रियानको इहै सुभाव रीमैं जु कहति करि सूर श्यामसों हिलिमिलि रहिए उठनबैसको इहै दाँव री ॥ ४९ ॥ राग कान्हरो ॥ रहि री मानिनिमाननकीजै। यहजोवनअँजुरीकोजलहैज्योंगोपाल मांगि त्यो दीजै ॥ छिनुछिनु घटति बढति नहिं रजनी ज्योंज्यों कला चंद्रकी छीजै । पूरब पुण्य सुकृतफल तेरो काहे न रूप नैनभरि पीजै ॥ सौंह करत तेरे पाँइनकी ऐसे जियनि दशो दिन जीजै । सूर सु जीवनि सुफल जगतकी बेरी बाँधि बिनश करिलीजै ॥ ५० ॥ सुन प्यारीराधिका सुजान । कहिधौं कौन काज सरिहै री यहि झूठेअभिमान ॥ जिनके चरण रमा नित लोलिन सब गुण रूप निधान। तिनके मुखके वचन मनोहर सो तू करति न कान ॥ परमचतुर सुंदर सुखकारी तोसी त्रिया न आन । कीजै कहा कृष्णकी संपति बिना भोग बिनदान ॥ ऐसी व्यथा होत निशि हरिको जिनि हठि करो बिहान । नाहिंन कढत ऑंगके काढे सूर मदनके बान ॥ ॥ ५१ ॥ राग रामकली ॥ आज हठि बैठी मान किए । महाक्रोध रसअंश तपत मिलि मनु बिष निपम पिये ॥ अधमुख रहति विरहव्याकुल सिख मूरि मंत्र नहिं मानै। मूक न तजै सुनि जाति ज्यो सुधि आए तनु जानै ॥ एक लीक बसुधापर काढी नभतन गोद पसारी । जनु बोहित तजिके पैरनको दधि ज्यो अननि निहारी ॥ ज्यो अतिदीन सुखी सबही अंग कतहू शांति न पावै । त्यो बिन पियहि त्रिया प्रातहिते एकै बात मनावै ॥ कबहुँक धुकति धरनि श्रम जलभरि महाशरद-निसास। इकटक भई चित्र पूतरि ज्यो जीननकी नहिं आश ॥ तब उपचार कियो मैं करकस लेरस पारयो कान । मुरछा जगी नहीं मुख बोली लै बैठी फिरि मान॥ हौ तौ थकी करति बहु जतननि जीकी व्यथा न पाई। बूझहु लाल नवल नागर तुम एकै सैन बताई ॥ शिव आकार दिखायो कछु इक भाव दोष रस नाहीं। सूरदास प्रभु रसिक-शिरोमणि लै मेली परछाहीं ॥ ५२ ॥ राग देवगंधार ॥ त्रिया पिय नाहिं मनायो मानै । श्रीमुख वचन मधुर मृदुवाणी मादक कठिन कुलिशते जानै॥ शोभित सहित सुगध श्याम कच कलकपोल अरुझानै । मनहु विधुंतुद ग्रस्यो कलानिधि तजत नहीं बिन दानै । बालभाव अनुसरति भरति दृग अग्र अशुकन आनै । जनु खंजरीट युगल जठरातुर लेत सुभष अकुलानै ॥ गोरेगात लसत जो असितपट औंर प्रगट पहिचानै । नैन निकट ताटककी शोभा मंडल कविन बखानै । मानो मन्मथ फंद त्रासते फिरत कुरंग सकानै ॥ नासापुटनि सकोचति लोचति बिकट भृकुटि धनु तानै। जनु शुक निकट निपट सरसाये पटपट सुभग पराने ॥ जनु खद्योत चमक चलि शकित कुहू निशितिमिर हिराने।यह सुनिकेअकुलाइ चलेहरि कृतअपराध क्षमानै॥सूरदास प्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलिमुसकानै ॥५३॥ राग धनाश्री॥ मानि मनायो मोहन री । सकुच समेति चली उठि आतुर बनकी गैल गही॥ विधिमुख निरखि बिमुख करि लोचनपुनि बिधुवदन चही ॥ दरशत परसत रूप आज निज भू नख लेखि कही । पुहुप सुरंग सारंग रिपु ओट देखी तन चतुर लही ॥ पानि सुपरसत शीश परस्पर मुसकाने तबही । तृण तोरयो भुजजात जिते गुन

काढति रेख मही। सूर श्याम बहुरोमिलि विलसहु जातिअवधि अबही॥५४॥राग सारंग॥चलीवन मान मनायो मानि। अंचल ओट पुहुप दिखरायो धरयो शीशपर पानि ॥ शुचितन चितै नैन दोउ मूँदे मुखमहँ अँगुरी आनि। यह तो चरित गुप्तकी बातें मुसकाने जिय जानि॥ रेखा तीनि भूमिमर खाँची तृण तोरयो कर तानि। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि विलसहु श्याम सुजानि ॥५५॥राग गुंड॥सैनदैकह्यो वनधाम चलिए श्याम इहे करि कामअब आनिमिलिहौ।भावहीकह्यो मन भाव दृढ राखिवो दे सुख तुमहिं संग रंगरलिहौं॥ जानि पिय अतिहि आतुर नारि आतुरी गई वनतीर तनुशुद्धि हेती। सूर प्रभु हरष भए कुंजवन तहाँ गए सजत रतिसेज जे निगम नेति ॥ ॥५६॥ राग गुंडमलार॥ श्याम वनधाम मग वाम जोवै। कबहुँ रचि सेज अनुमान जियजिय करत लता संकेततर कबहुँ सोवै ॥ एक छिन इक घरीघरी इक याम सम याम वासरहुते होत भारी। मनहिमन साध पुरवन अंग भाव करि धन्य भुज धनि हृदय मिले प्यारी ॥ कबहि आवै सांझ सोच अति जिय माँझ नैन खग इंदु ते रहे दोऊ। सूर प्रभु भामिनी वदन पूरण चन्द्र रस परम मनहिं अकुलात वोऊ ॥ ५७ ॥ राग नटनारायणी॥ दूती संग हरिके रही। श्याम अति आधीन ह्वै के जाहु तासो कही॥ वेगि आनि मिलाइ मोको परम प्यारी नारि॥ देखि हरितनु कामव्याकुल चली मनहिं विचारि॥गई तहँ जहँ करति राधा अंग अंग शृंगार। सूरके प्रभु नवल गिरिधर संग जानि विहार॥ ५८ ॥राग विहागरो ॥ राधा सखी देखि हरषानी। आतुर श्याम पठाई याको अंतर्गतकी जानी॥ वह शोभा निरखत अँग अँगकी रही निहारि निहारि। चकित देखि नागरि मुख वाको तुरत शृंगारनि सारि॥ ताहि कह्यो सुख दै चलि हरिको मैं आवति हौं पाछे।वैसेहि फिरी सूरके प्रभुपै जहां कुंज गृह काछे॥ ॥५९॥ राग केदारो॥ दूती देखि आतुर श्याम। कुंजगृहते निकसि धाए काम कीन्हो ताम॥बोलि उठीरसाल बाणी धन्य तुव वड़भाग। अवहि आवति वनी वाला किए मन अनुराग॥ कहावरणौं अग शोभा नैन देखौं आज। सूर प्रभु नेक धरौ धीरज करौं पूरण काज॥ ६० ॥ राग ईमन॥ वडे भाग्यके मोटे हौ।ऐसी त्रिया और को पावै बने परस्पर जोटेहौ॥वैसिय नारि सुंदरी छोटीतैसेइ तुम चलि छोटे हौ। पूरवपुण्य सुकृतफलकी वह आपु गुननकरि घोटे हौ॥ परम सुशील सुलक्षण नारी तुमहिं त्रिभंगी खोटे हौ। सूर श्याम उनके मन तुमही तुम वहुनायक कोटे हौ ॥६१ ॥ राग काफी॥ सुनिहो मोहन तेरी प्राणप्रियाको वरणौ नदकुमार। जो तुम आदिअंतमेरो गुण मानहु यह उपकार॥ चद्रमुखी भौंहें कलकबिच चदनतिलक लिलार। मनु वेनी भुवगिके परसत स्रवत सुधाकी धार॥ नैन मीन सरवरआननमें चंचल करत विहार। मानो कर्णफूल चाराको खैंचत बारबार॥ बेसरि बनी सुभगनासापरमुक्ता परम सुढार। मनो तिल फूल अधर बिंबधार दुहुँ विच बूँद तुपार॥ सुठि सुठान ठोढी अतिसुंदर सुंदरताको सार। चितवत चुअत सुधारस मानो रहिगई बूँद मँझार॥ कंठशिरीउर पदिक विराजत गजमोतिनको हार। दहिनावर्त्त देत मनो ध्रुवको मिलि नक्षत्र की मार॥ कुचयुग कुंभ शुंडि रोमावलि नाभि सु हद आकार। जनु जल सोखिलयो से सविता जोबन गज मतवार॥ रत्नजटित गजरा बाजूबँद शोभा भुजन अपार। फुदा सुभग फूल फूले मनो मदन विटपकी डार। छीन लक कटि किंकिणी ध्वनि बाजत अति झनकार॥ मौर बाँधि बैठो जनु दूलह मन्मथ आसन तार। युगल जघ जेहरि जरावकी राजत परम उदार। राजहंस गति चलति किशोरी अति नि-

तनके भार ॥ छिटकि रह्यो लईगा रँग तारँग तन सुखनत सुकुमार । सूर सुअग मगंध समूहनि भँवर करत गुजार ॥ ६२ ॥राग नट ॥ आज राधिका रूप अन्हायो । देखत वनै कहत नहिं आवै मुखछबि उपमा अंत न पायो ॥ अलवेली अलक तिलक केसरिको ता विच सेंदुर बिंदु बनायो । मानो पूर्न्यो चंद्र खेत चढि हरि सुरभानसों घायल आयो ॥ काननकी वारी अतिराजत मनहु मदन रथचक्र चढायो । मानहु नाग जीति मणि माथे भरिसोहागको छत्र तनायो ॥ चकित भौंह चपल अतिलोचन वेसरि रसमुकुताहलछायो । मानो मृगनि अमीभाजन भरि पिवत न वन्यो दुहुँ ढरकायो ॥ अधरदशन रसना कोकिल ज्यों तिमिरजीति विचचिबुक लगायो। मनहुँ देखि रवि कमलप्रकाशत तापर भृंगीसावक स्वायो ॥ कचुकि श्याम सुगंध सँवारी चौकीपर नग वन्योबनायो । मानो दीपक उदित भवनमें तिमिर सकुचि शरणागत आयो॥ भूषण भुजा ललित लटकन वर मनहु मिले अलिपुंज सुहायो । एतेहुपर रूठि सूर प्रभु लै दूती दर्पण देखरायो॥६३॥ राग बिलावल॥देखत नवलकिशोरी सजनी उपजत अति आनद।नखसत सजे माधुरी अँगअँग वश कीन्हें नँदनद॥कचुकठ ताटकगडपर मडितवदनसरोज।मोहनके मनबांधिवेकोमनो पूरी पासि मनोज॥नासापरम अनूपम शोभित लज्जित कीर विहग। मनो विधु अपने कर वनायके तिलप्रसूनके अग॥ भुजविलास करक्कण शोभित मिलिराजत अवतस।तीन रेखकचनके मानो यहु वनाइ पियअश ॥कुकुम कुचन कचुकीअंतर मगलकलश अनग । मधुपूरण राखे पियकारण मधुर मधुपके अग॥ कीरति विशद निमल श्यामाकी श्रीगोपाल अनुराग। गावत सुनत सुखद कर मानो सूर दुरे दुखभाग ॥६४॥राग जैतश्री॥नवनागरीहो सकलगुणआगरीहो ।हरिभुजग्रीवाहो शोभाकी सींवाहो श्याम छवीली भावती गौरश्यामछविपावती॥ सैसवतामेंहेसखीजोवनकियो प्रवेश। कहा कहौं छबि रूपकी नखशिख अंग सुदेश॥ श्रीपति केलि सरोवरी सैसव जल भरि पूरि । परगट भई कुचस्थली सोख्यो जोवन सूरि ॥छुटेकेशमज्जनसमय देखि विरुधअहिभोर। भोर कहू निशिमें रमे उतरि चले अहि ओर॥शीश सुचिक्कन केशहो विच सीमत सँवारि।मानहुँ किरनि पतगते भयो दुधाँ तमहारि॥केसरि आड लिलाटहो विच सेंदुरको बिंदु।चक्र तजे ता नैन मृग जनु वैठो रथ इदु॥नैनन ऊपरकहाकहौं ज्योंराजत भ्रुवभंग ।जुग वनावत चद्रमा चपल होत सारग॥ चपकलीसी नासिका राजत अमलअदोस।तापर मुक्ता यो वन्यो मनो भोर कनओस॥ मुक्ता आपु विकाइहो उरमें छिद्रकराइ।अधरअमृतदिततपकरैअधमुख ऊरधपाइ॥अधरनकी छवि कहतहौं सदा श्याम अनुकूल । विंवपँवारे लाजहीं हरपत वरपत फूल ॥ पाति कांति दशनावली रहे तमोल रँग भीज । बदन सो शशिमें वए मनो सौदामिनिके वीज ॥ गुजाकीसी छवि लई मुक्ता अति वडभाग ।नैननकी लई श्यामता अधरनको अनुराग ॥ वेसरि मुक्तामनि-न धनि धनि नासा व्रज नारि । गुरु भृगुसुत विच भौमहो शशिसमीप ग्रह चारि॥खुटिलासुभग जराइके मुकुता मणि छवि देत । प्रगट भयो घनमध्यते शशि मनो नखत समेत ॥ सुंदर सुघरकपोलहो रहे तमोर भरिपूर । कचन सपुट द्वै पला मानहु भरे सिंदूर ॥ चिबुक डिठो-ना जव दियो मो मन धोखे जात। निकस्यो अलि शिशु कुजते मनहुँ जानि परभात॥ जेहि मारग वनवाटिका निकसति आनि सुभाइ ।मधुप कमलवन छांडिके चलत सग लपटाइ ॥ जहांजहां तू पगधरै तहांतहां मन साथ। अति अधीन पिय हैरहे तन मन दे तेरे हाथ ॥ देखि वदनके रूपको मोहन रह्यो लुभाइ । इकटक रह्यो चकोरज्यों दृष्टि न इतउत जाइ ॥ तोहि-श्यामसों है

सखी बढी निरंतर प्रीति। तू तन मन धन श्यामके तैं हरि पाए जीति ॥ मदनमोहन तू वश करे अति प्रवीन नँदलाल । सूरदास गावे सदा कीरति विशद विशाल॥६५॥राग नट॥ राधासंगललिता लिए। श्याम आतुर जानि वाला गवन आतुर किए॥किंकिणीध्वनि श्रवण सुनि हरि अतिहि पुलकित हिए। नारिआवत जानि गिरिधर नही धीरज जिए॥चले आतुर धाइ आगे संग सहचरि विए । सूर प्रभु रतिरंग राधे देखि रीझी तिए॥६६॥ पियछविनिरखत नागरी अँगदशाभुलानी अतर्गत आनँदभरी ललिता हरषानी॥सहचरिसो कहि सुमन लै हरि भेंट भराए। अति अधीन पिय ह्वैरहे वश परे डराए ॥ मारग सुमन विछावही पग निरखि निहारे।फूलेफूले मग धरे कलिआं चुनिडारे।ऐसे वश पिय वामके सुख सूरज जानै। जो जेहि भावनि हरिभजे तेहितैसोइ मानै ॥६७॥राग पूर्वी॥पीछे ललिता आगे श्यामा प्यारी ताआगे पिय मारग फूल बिछावत जात।कठिनकठिन कली वीनि करत न्यारीप्यारीके चरणकोमल जानि सकुच अति गडिवेहिडरात॥दीरघ लता अपने कर निरुवारत ऊंचे लै डारत द्रुम बेली पात । सूरदास प्रभुकी ऐसी अधीनता देखत मेरे नैन सिरात ॥६८॥ राग कान्हरा ॥ वडे वडे वार ऍडिन परसत श्यामा पीछे अपने अचलमें लिए ।वेणी गूथन मिस फूल सुगंध फेट भरे डोलत बोलत नाहिन सकुच हिए॥अरु कुसुमी सारीमें अलक झलक गोरे तनु मनो अहि कुल चंदन वदन सो पूजा किए। सूरदास प्रभु निय मिलि नैन प्राण सुख भयो चितए करुखिअनि अनकनि दिए ॥ ६९ ॥ राग रामकली ॥ वरन वरन वन फूलि रह्यो । हर्षित ह्वै वृषभानुनदिनी सँग सब सखिन कह्यो ॥ कुसुमकली देखत रुचि उपजत यह कहि तिनहिं सुनावति । आपुन चुनति गोदलै धारति युवतिन कहति चुनावति॥ हसत परस्पर दैदै तारी श्याम लिए करबाही। सूरदास प्रभु काम आतुरे और ध्यान चित नाही ॥ ७० ॥ डोलत बाँकी कुंजगली । व्रजवनिता मृगशावक नैनी वीनति कुसुम कली ॥कमल वदनपर विथुरि रही लट कुंचित मनहुँ अली । अधर बिंब नासिका मनोहर दामिनि दशन छली ॥ नाभि परसलौ रस रोमावलि कुच युग बीच चली।मनहुँ विवरते उरग रिग्यो तकि गिरिके संधिथली।पृथुनितंब कटि छीन हंसगति जघन सघन कदली । चरणमहावर नूपुरमणिमयराजत भाँति भली॥ओटभए अवलोकिपरस्पर बोलत अली अली । सूर सु मोहन लाल रसिकसँग वन घन मांझ रली ॥ ७१ ॥ राग भूरवा ॥ सखियन सँग राधे कुवरि वीनति कुसुमकलियाँ । एक वयक्रम एकहि वानक रूप गुणकी सींव मन भावत सुंदर श्यामलालके कर सोहति रँगीली डलियाँ ॥ एक अनूपम माल वनावति एक परस्पर वेनी गूथति भ्राजति कुंज महलियाँ ।सूरदास प्रभु सँग मिलि कौतुक देखत हरषि हरषि प्यारी अंकम भरिया ॥ ७२ ॥ राग कल्याण॥ लैगए धाम बन श्याम प्यारी। रहे पलटाइ दोउ भुजनि लपटाइकै कह्यो पिय वचन हौ निठुर नारी । बिहँसि वृषभानुतनया कहति हम निठुर तुम सुहृद वात वह जिनि चलावो।निठुर अरु सुहृद सो मनहिंमन जानिहै कहा यह कथाकी सुरति धावो ॥ परस्पर हसे दोउ रसे रति रंगमें करत मनकाम फल पुरुष नारी । सूर प्रभु कोकगुणमें निपुणहैं वडे कामवल तोरि रस रह्यो भारी ॥ ७३ ॥ राग सूही विलावल॥गिरिधर नारि अबल अति कीन्ही । सवल भुजा धरि अंकम भरिभरि चापि कठिन कुच ऊपर लीन्ही ॥ कोक अनागत क्रीडापर रुचि दूरि करत तनुसारी । कमल करनि कुच गहत लहत पुट देखो वह छवि न्यारी ॥ वारवार ललचात साध कारे सकुचति पुनिपुनि वाला । सूर श्याम यहकाम

करो जिनि धनिधनि मदनगोपाला॥७४॥राग रामकली॥सुता दधि पतिसों क्रोधभरी। अम्मर लेत भई खिझि बालहि मारगमग लरी॥ तब श्रीपति अति बुद्धि विचारी मणि लै हाथ धरी। वै अति चतुर नागरी नागर लै मुख मांझ करी॥ चाखत चरण शेष चलि आयो उदयाचलहि डरी। सूरदास स्वामी लीला उर अकम लगि उबरी॥ ७५॥ सकुचि तनु उदधि-सुता मुसकानी। रवि सारथी महोदर तापति अवर लेत लजानी॥ सारग पाणि मृदि मृगनैनी मणि मुखमाह समानी। चरण चापि महि प्रगट करी पिय शेष शीश सहिदानी। सूरदास तब कहे करे अब लाज बहुरि तब यह मति ठानी। भुज अकम भरि चापि कठिन कुच श्याम कठ लपटानी॥ ७६॥राग बिलावल॥ वह छबि अब निहारत श्याम। कनटुक चुंबन देत उरज धरि अति सकुचत तब बाम॥ सन्मुख नैन न जोरति प्यारी निलज भए पिय ऐसे। हाहा करति चरण कर टेकति कहा करत ढग नैसे॥ बदि कामरस भरे परस्पर रति विपरीत बढाइ। सूर श्याम रतिपति विह्वल करि नागरि रहि मुरझाइ॥ ७७॥ पिय प्यारी तनु श्रमित भए। सकुचि उठी नागरि पट लीन्हो श्याम लजाइ गए॥सावधान रति अग भए पिय प्यारीतन नहिं हेरत। नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भ्रुकुटी बकन फेरत॥ ऐसे गुण तुम किनहिं सिखाए तरुणीकटि कसिदीन्ही। सूर कहति पियसों त्रिय बातैं आज तुमहिं मै चीन्ही॥७८॥राग धनाश्री॥हरि श्याम त्रियबाह गही।अपनेकर सारी अँग साजत यह इक साध रही॥ सकुचत नारि वदन मुसकानी उतको चितै रही।कोककला करि पूरण दोऊ त्रिभुवन और नही॥ कुजभवन सँग मिलि दोउ बैठे शोभा एक चही।सूर श्याम श्यामाशिर वेनी अपने करन गुही॥ ७९॥ मोहन मोहनीअग शृंगारत। वेनी ललित करि गुथत निरखत सुंदर माग सँवारत। शीशफूल धरि पाटी पोछत फूदनि झँवा निहारत। वदन बिंद जराइकी बेंदी तापर बने सुधारत॥ तरिवन श्रवण नैन दोउ आँजत नासा वेसरि साजत। बीरी मुख भरि चिबुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत॥ नखशिख सजति शृंगार भावसो जावक चरणन सोहत। सूर श्याम त्रिय-अग सँवारत निरखि आप मन मोहत॥८०॥ राग ललित॥ऐसेहि सुख सब रैनिबिहानी।भोरभए व्रजधाम चले दोउ मन मन नारि सिहानी॥ प्यारी गई वृषभानुपुरा तब श्याम जात नँदधाम। सुखमा महल द्वारही ठाढी इन देखी वह बाम॥प्रात चले वनते व्रज आए मन मन करत बिचार। सुनहु सूर ठठकत सकुचत ता गृह गए नदकुमार॥ ८१॥ अथखडिताखंडिता सुखमा घर आए। रागदेवगंधार॥ कितते आएहो नँदलाल। लै भवनमें सब भेद बूझो सुनिहौ वचन रसाल॥ ऐसी कौन बालजा धोखे तुम आइ द्वार ह्वै झाके।मिटत नही चितवनि हित चितकी उहै टेव नितनितकी सँपहिचाने नैना नाके॥कबहुँ जम्हात कबहु अँग मोरत अटपटात मुखबात न आवै रैनिकहू धौ थाके।सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि रसिकरसिकईजानी नामलेहुरहे जाके॥८२॥राग ललित॥वनतनतेआए अति भोर।राति रहे कहुँ गाइन घेरत आएहोज्यो चोर॥अगरउलटे आभूषणवनहूमेंतुमपावत।बढभागी तुमते नहिं कोई कृपा करत जहँ आवत॥ औचक आइगृए गृह मेरे दुर्लभ दरशन दीन्हो। सूर श्याम निशि हौ कहुँ जागेपानतिअँगअँग चीन्हो॥८३॥राग बिलावल॥लाल उनीदे नैनाभए राजतहैं रतनारे नैना मानहुँ नलिन नए॥पीक कपोल ललाट महावर वदन वलित खए। जनु ततुजामैं सद्य अरुनदल कामके बीज बए॥ त्रिगुन हार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेशढए।अजन अधर सुमत्र लिख्यो रति दीक्षा लेन गए॥ सूर श्याम विथुरे कच मुखपर नख नाराच हए। ता ऊपर आनद

इंदु जनु मानहुँसमर जए॥८४॥रागबिलावल॥रैनि जागेअतिरसपागेअनुरागेनवत्रियसंग॥मोसन्मुख कत आएहो दहन पिय रसमसे नैन अटपटे बैननि तहाँई जाहु जाके रंग॥ विन गुन वनी माल पीक कपोलनि लाल जावक तिलकभाल कीन्हें रसवश अंग।सूरदास प्रभु रजनी विहाइ आए मेरे जीति अनंग॥८५॥राग विभास॥भोरभए मुख देखि लजाने।रतिके केलि वेलि सुख सींचतिशोभित अरुणनैनअलसाने॥काजररेख वनी अधरनपरनैन कपोलपीक लपटाने।मनहुँ कंजऊपर बैठेअलि उड़ि नसकत मकरंद लोभाने॥हेहियहार अलंकृत विनुगुन आइ सुरतिरण जीति सयाने। सूरदास प्रभु पांइधारियेजानतिहौंपरहाथ विकाने॥८६॥राग सारंग॥अरुणोदयवेला अरुणनैन॥निशिजागे अलसात श्यामधौं मोहन बोलत मधुरे बैन ॥ आनन जलप्रसेव गतचलियों आए मधुकरमधुहि लैन। वारवार रजनीमुख सींचति उमँगिउमँगि रसप्रीति देन॥क्रीडत सघनकुंज वृंदावनबंशीवट यमुनाके ठेन।सूरदासप्रभुसवविधिनागरपीवतहोरस परमचैन॥८७॥राग विहागरो॥आजुनिशिकहाँ हुते प्यारे।तुमरी सों कछु कहिन जाति छवि अरुण नैन रतनारे॥मेचक अधर निमेप पीक रुचि सो चिह्न देखि तुम्हारे ।हृदय हार विनही गुण लंकृत मृगमद मिल्यो लिलारे ॥दशन वसन पर छाप हृदय छवि दई वृपभानु सुतारे। अरु देखो मुसुकाइ इतेपर सरवसु हरत हमारे ॥ सूर श्याम चतुरई प्रगटभई आगेते होहु न न्यारे॥८८॥कहो श्याम कहाँरैनिगँवाई॥ अब ए चिह्न प्रगटदेखि- अत है मोसों कौन करत चतुराई ॥लटपटी पाग अलक जो विथुरी वात कहत आवत अलसाई ॥ तुमसों चतुर सुजान नागरी जाके रस तुम रहे लोभाई॥ सूरदास प्रभु तहँहि सिधारो नूतन प्रीति जहां उपजाई॥८९॥अथ सुखमाके घर सखी एक थाई॥ राग विभास॥सुनत सखी तहँ दौरि गई। सुने श्याम सुखमाके आए धाइं तरुणि नई ॥ कोउ निरखति मुख कोउ निरखत अँग कोउ निरखत रँग और। रैनि कहूं फँग पगे कन्हाई कहति सबै करि रौर ॥ तब कहिउठी नारि सुखमा यह भाग्य हमारे आए। सूर श्याम धनि वाम तुम्हारी जिन निशि वश करि पाए ॥ ९० ॥ राग सारंग ॥ क्यों अब दुरतहैं प्रगट भए। कहतहैं नैन निशाके जागे मानो सरसिज अरुण नए॥ जावक भाल नागरस लोचन मसिरेखा अधरनि जो ठए। वलया पीठि वचन अलि सोहै विन गुण कंठ हार वनए॥ भुज ताटंक ग्रीव सोहै चंदन चिह्न कपोल दशन ग्रसए। आलिंगन चंदन कुच चर्चित मानो द्वै शशि उरहि उए॥ चरण सिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल समर जए। सरवत सकल अंग शोणित है श्यामा नखसायक जो दए ॥ राजत वसन पीत उर राते अति आतुर होइ उलटि लए। सूर सखी कैसे मनमाने सुंदर श्याम कुटिलनगए॥९१रागबिलावल॥ माई आजु लाल लटपटात आए अनुरागे । शोभित भूपण अंगअंग अलस भरे रैनि उनींदे जागे॥ लटपटे शिर पेच पागछूटे बंदन वागे। सूर श्याम रसिकराइ रसवश कीन्हे सुभाइ जागे जहां सोइ त्रिया बडभागे॥ ९२॥ राग विभास ॥ हो माई आज अनत जागे री मोहन भोरहिमेरेकी- न्हों है आवन। शोभित भूपण अंगअंग आलसभरे लैले लागे अनमिली मिलावन ॥ अब कैसे पतिआति हौ प्रीतम सांचे हो सौहनि वोल निवाहन बातैं वनावन। सूर श्यामरसिकराइजावक- चिह्न लगाइ अब आये मोहन असल सलावन ॥ ९३ ॥ राग सुघराई आज वन्यौ वनरंग पियारो। ब्रजवनिता मिलि क्यों न निहारो॥ लटपटी पाग महाउर लागी।कुँवरिमनावतिअतिवडभागी॥ पीक कपोल अधर मसिलागे। आलसवलित सबै निशि जागे॥कहुँ चंदनकहुँ बंदनकी छवि। रैनि रंग अँगअंग रह्यो फबि॥ सूर श्यामके यह छवि देखो। जीवनजन्म सफलकरिलेखो॥९४॥

आज बने नव रंग छबीले। डगमगात पग अँग अँग ढीले ॥ जावक पाग रँगी धौं कैसे। जैसे करी कहौ पिय तैसे॥ बोलत वचन बहुत अलसाने। पीक कपोलनसों लपटाने ॥ कुमकुम हृदय भुजन छवि वंदन। सूर श्याम नारिन मन फंदन ॥९५ ॥राग गौरी॥आजबनेव्रजते वन आवत।यद्यपि हैं अपराध भरे हरि देखि तऊ मोहिं भावत॥नखरेखा मुक्तावलिके तट अंग अनूपः लसी। मनो सुरसरी ईश शीशते ले विधुकला धसी॥केलि करत काहू युवती कर कुमकुम भरि उर दीन्हों। मनो भारती पंचधार ह्वै नभते आगम कीन्हों॥बीच बीच कमनीय अंगपर श्यामल रेख रही। सूरसुता मनो कनक भूमिपर धार प्रवाह वही॥ निरखत अंग सूरकेप्रभुको प्रगटत भई त्रिवेनी। मन वच कर्म दुरित नाशनको मानहु स्वर्ग निसेनी ॥९६॥ राग रामकली॥ सखी शोभा अनूपम अति राजै। नैन कोनकी अंजन रेखा पटतर कहूं न छाजै॥ खंजरीट मनो ग्रसित पन्नगी यह उपमा कछु आवै। दुग्ध सिंधुकी गरल सुधा ज्यों कोटिक भ्रम उपजावै॥ की सुरसरिता सूरतनय तट की पय पिवति भुअंगिनि। की अति मान मानि सागरते उलटी यमुन तरंगिनि॥समरारीको सुयशकुयश की प्रगट एकही काल। किधौं रुचिर राजीवकोशते निकसि चली अलिमाल॥ सूरदास दासिनि हितकर की हरि हलधरकी जोरी। राधावर निशि रसिकशिरोमणिकविकुलपरीठगोरी॥९७॥राग अडाने॥लालआयेहौउनींदेआपुनपौढियेपलकामेरेपलोटिहौं पाइ। मेरी सकुच जियगं कत आनत हौंतो आज्ञाकारिणि हौं तुम जिनि जानो मोसों औरनिकेसे सुभाइ॥ यह अचरज आवत इनि वातन मान करत नहिं मानत मोसों आए मान मनाइ। सूर श्याम ता वामहि वश करि लीन्ही कंठलगाइ॥९८॥आजु अति रैनि उनींदे लाल। तुम पौढो मैं चरण पलोटौं जिय जनि जानो ख्याल ॥सुमन सुगंधसेजहै डासीदेखति अंग विहाल। मेरे कहे न्हाहु कछु भोजन करौ न मदनगोपाल॥ निशि श्रम भयो पीर मोहि आवत सुनत परस्पर बाल। सूर श्याम सुनि वचन कपट प्रिय भरिलीन्ही अंकमाल॥ ९९ ॥ राग बिलावल ॥ श्यामहि सुख दे राधिका निजधाम सिधारी। चितते कहुँ उतरत नहीं श्रीकुंजविहारी॥ रैनि विपिन रतिरस रह्यो सो मनहि विचारे। पियसँगके अँग चिह्न जे दर्पणहि निहारे॥ यहि अंतर चंद्रावली राधागृह आई। अंग सिथिल छबि देखिके जहँतहँ भरमाई॥ कह्यो चहति कहत न बने मनमन अनुमाने।सूर श्यामसँग निशिवसी निहचैन्यहजाने॥२१००॥राग आसावरी॥चंद्रावलि सखियन सँग लीन्हें राधाके गृह आई हो। आजु अंग शोभाकछु औरै हरि सँग रैनि महाई हो॥ अबतो नहीं दुराव रह्यो कछु कहो सांचहम आगे हो।अधर दशनछत उरजनि नख छत पीक पलक दोउ पागे हो॥ हम जानी तुम कहा प्रगट करि श्यामसंग सुख माने हो। सुनहु सूर हम सखी परस्पर क्यों न रैनि यश गाने हो॥१॥ राग बिलावल॥कहति सखिनसों राधिका तुमकहति कहा री। मेरीसौं की हँसतिहौ सुनि चकित महारी॥ पीककपोलन यों लग्यो मुख पोछनलागी। कहां श्याम कहां मैं रही कबधौं निशि जागी॥उरज करज निजकरजको गर हार सँवारत। सहज कछुक निशिमें जगी वचनन शर मारत॥कहति औरकी औरई मैं तुमहिं दुरैहौं। सूर श्यामसँग जो मिलौं तुमसों नहिं कैहौं॥२॥राग बिलावल॥आजुबनी नवरंग किशोरी।रसिक कुँवर मोहन बिन जोरी॥ बिथुरी अलक शिथिल कटि डोरी॥कनकलता मनो पवन झकोरी॥अधर दशनछत कछु छवि थोरी। दर्पण ले देख्यो मुख गोरी॥ सुख लूटत अतिही भई भोरी। सूर सखी डारत तृण तोरी॥ ३॥ राग गौरी॥ आजु बनी वृषभानुकुमारी। गिरिधर वर राधा

तू नारी ॥ हमसो करत दुराव वृथा री । इन बातन तू लहति कहा री ॥ आलस अंग मरगजी सारी। ऐसी छबि कहि कालि कहां री ॥ सूरदास छबिपर बलिहारी । धन्यधन्य तुम दोउवरनारी ॥४॥ राग सारंग ॥ बानक बनी वृषभानुकिशोरी। नखशिखसुंदर चिह्न सुरतके अरु मरगजी पटोरी॥ उर भुज नील कुचुकी फाटी प्रगटे हैं कुचकोरी। नवघनमध्य देखिअत मानहु नवरवि रथ निसुथोरी। आलस नैन शिथिल कज्जल बलमनिताटंकन मोरी। मानहु खंजन हंस कंजपर लरतचूचपढतोरी॥ बिथुरी लट लटकी भ्रुकुटीपर बिकट मॉग नग रोरी। मानहुँ कर कोदंड काम अलि सैन कमल हित जोरी ॥ अति अनुराग पियत पियूष हरि अधर सिंधु ह्रद थोरी। सूर सखी निशि संग श्यामके प्रगट प्रात भई चोरी ॥ ५॥ राग सारंग ॥ राधे तू अति रंगभरी। मेरे जान मिली मनमोहन अचरा पीक परी ॥ हौ जानतिहौ फौज मदनकी लूटिलई सगरी। छूटी लट टूटी नकबेसरि मोतिनकी दुलरी ॥ अरुण नैन मुख शरद निशाकर कुसुम गलित कबरी। सूरदास प्रभु गिरिधरके सँग सुरतसमुद्र तरी ॥ ६ ॥ राग नट ॥ मै जानीहैरी तेरेजियकी बात सोई अरु गातचिह्नकहेदेत माई। आलस तनु मोरे भुज जोरे जम्हाइ री अटपटात माई री लागत मोहिं सुहाई वाही पियके मन भाई ।॥ बैन ऐन नैन सैन देखिये रसीले शृंगार हार बार बिथरिरहे री रति कँपति देति क्यो न जनाई। सूरदास प्रभुकी सुन जरी आली तेरे अंगअग भयो उदोत वह हिलनि मिलनि खिलनिकी तेरे प्रेमप्रीतिजनाई॥७॥ राग गौरी ॥ नहि दुरतहरिपियको परस। उपजतहै मनको अति आनँद अधरनरँग नैननको अरस ॥ अंचल उडत अधिकछबि लागत नखरेखा उर बनी बरस । मनो जलधरतर बालकलानिधि कबहुँ प्रगटि दुरि देत दरश ॥ बिथुरी अलक सुदेश देखियत श्रम जलते मिट्यो तिलक सरस। सूर सखी बूझेहुँ न बोलती सो कहि धौ तोहिं कौन तरस॥ ॥८॥ राग बिलावल॥ तोहिं छबि राजैरीब्रजराजकेसगजागेकी। करसोकरजोरि मिलीजम्हातअरु ऐंडात होति दुरि मुरिरही अलक लसी आगेकी ॥ कबहुंकबहुं पलक झपकिझपकि आवत तेमन भावत अँखियां अरुण भई प्रेमपागेकी । सूरदास प्रभुको जु प्रगट उमँगि देखत श्यामसुदर उर लागेकी ॥९॥ राग देशाख॥ अरी मैं जानिपाए चिह्नदुरेनदुराए। अति अलसात जम्हात पियारी श्यामके काम पुराए ॥ कहा दुराव करति री प्यारी कोटि करे मुख नैन झुराए। सुमनहारसी मरगजी डारी पिय रंग रैनि जगाए ॥ प्रगट नही तू करति डरति कहि सुरति सेज रति काम लराए। सूर श्याम तोहिं रसवश कीनी जात न मन बिसराए ॥ १० ॥ राग सारंग ॥ काहेकोदुरावति नैन नागरी। जानतिहौं नँदलाल रसिक पिय मिलि सब रैनिजागरी॥ सुरतसमैके मुखतमोर मिलि लोचन परस लाग री। मनहुँ शरदविधु भए पद्मयुग युग मुकुलित अनुरागरी॥ उरज करज मानो शिवशिरपर शशिसारग सुभाग री। अरुण कपोल अक अलकै मिलि उरग कामिनी आगरी ॥ हरि पुनि चतुर चतुर अति कामी केतु रूपकी आगरी। सूरदास प्रभु वश करिलीन्हें धनि त्रिय तेरो सुहाग री॥११॥ राग टोडी॥ लालसोरतिमानीजानीकहेदेतनैनारीरंगभोए। चचलअचलकतहि दुरावति रूपराशि अति मानहु मीन महाउर धोए॥ पीक कपोलन तरिवनके ढिग झलमलात मोतिनछबि जोए। सूरदासप्रभुछबिपररीझेजानतिहौंनिशिनेकन सोए॥१२॥ राग आसावरी॥ देख री नखरेख बनी उर। अचल उडत अधिक छबिउपजति मनहुउदित शशि दुति दुतियावर॥ शोभा कहा कहत बनिआवहि निरखिनिरखि नैननिसन पावति। लागति पाइ दशौ दिशिमेलति लिए रजनिकर अलिन बदावति॥ सुनि श्रवणन उनमान करतिहौ निगम नेति यह लखनि लखी री।

मानो विधु जु विधुतु ग्रहणडर आयो तेरे शरण सखीरी ॥ मोतिन माल मुकति मनवांछित हरि हर हरिहि जु आज जपत जप । मनहु दक्ष ऋषिशापनिवारण उभै ईश जिय जानि करत तप ॥ छाँडि सकुच साँचो कहि मोसो हौं जानति मन परम पराए । सूरदास प्रभु मिलन प्रगट भयो पियको परसु कैसे दुरत दुराए॥ १३ ॥राग बिलावल ॥सुरतसमैके चिह्न राधिका राजतरगभरे।जहँजहँ रतिरणकोप कियो प्रीतम कर दशन धरे ॥ आउमिटी टूटी अलक आलसवश लोचन लरि लुकत खरे । मानहु धनुष धरे कर माज्यो जनु तूणके बाण झरे ॥ सिंधुसुता तनु रोमराजि मिलि राजत वरण खरे । मानहु विधु मनकामना तीरथ तप करि तीर परे ॥ दशन अंक सहि पीक प्रगट मुख सन्मुखहु न डरे।सूर श्याम शोभासुखसागर सबअँग भरनिभरे॥१४॥राग बिलावल ॥ भामिनि शोभा अधिक भईरी । सुपक बिंब शुकखंडित मंडित अधरसुधा मधु लाल लई री ॥ राजित रुचिर कपोल महावर रद मुद्रावलि नाहदई री । मनहुँ पीकदल मींचि स्वेदजल आलवाल रतिबेलि बई री ॥ कंचुकिबंद विगलित सुललित छबि उच कुचनि नखरेख नई री । मनहु सिंदूर पूर द्युति दरशित कंचनकुंभ दरार लई री ॥ आलस भ्रुकुटि अलक टूटी मनु लूटि पनच सत जङ्ग जई री । नैन सु रने कटाक्ष लगे शर शिथिल भई मति मैन ढई री ॥ ढीली नीवी गोरी अति भोरी पियके सँग रँग राग रई री । सूरज श्रीगोपालविलासिनि चंद्रवदनि आनदमई री ॥ १५ ॥ द्वै कर जोरि लेत जमुहाई । शोभा कहति वनति नहिं मोपै आजु सखी पियसंगत आई ॥ सोइ आभा पुनि फेरि फवतहै विधि आपुन रुचि रचित बनाई । मानहुँ कुमुदिनि कनक मेर चढि शशि सन्मुख मृदु महित सिधाई । शोभित चिकुर ललाट वदनपर कुंचित कुटिल अलक निठुराई । नागवधू मनु अमीकोशते लै मधुपान अमर ह्वै आई ॥ झुकिझुकि परत प्रेममदमाती उमँगिउमँगि तन देति दिखाई । सूरदास प्रभुससीमयानी चुटकिनि दतनहिं लखि पाई॥१६॥ राग धनाश्री॥आलसभरि शोभित भामिनी। राजत सुभग नैन रतनारे हरिसंग जागत गई यामिनी॥नाहडँचाइ जोरिजमुहानी ऐंडानी कमनीय कामिनी। भुज छूटे छबि यो लागी मनो टूटि भई द्वैटूक दामिनी॥कुचउतंग वररचित कंचुकी विलसति निरखी उदरखामिनी । देखिअति मनहु मदननृप तन हरि रसजीते राधा नामिनी ॥ निठुरी अलक शिथिल कटिडोरी नखछत छरित मरालगामिनी । द्विगुन सुरति सजि श्रीगुपाल भजि समुदित सूरजदास स्वामिनी ॥ १७ ॥ राग नट ॥ खंजन नैन सुरँगरसमाते।अतिशयचारुविमलचंचल चंचल पलपिंजरा न समाते॥जसे कहूँ सोइ बात कहीसखिरहे इहाँकेहिनाते। सोइ सज्ञादेखति औरासी विकल उदास कलाते ॥ चलिचलि आवत श्रवणनिकट अति सकुचत टक फँदाते । सूरदास अजनगुणअटके नतरु कवैउडिजाते॥१८॥राग बिलावल॥भोरहि शोभा शिरसिंदूर।युगलपदा घनघटा बीच मनो उदय कियो नवसूर ॥ मन्मथरथ आनदकंद मुख चंद्रकलापरिपूर। चक्रताटंक निशंक सु द्दग मृग जनु रन तम सम जूर ॥ सुंदर वर नासिका देशपर नेसरि मुक्ताहूर । किधौं तूल तिलफूल निकरकन किधौं असुरगुरुहूर । रद सद दामिनि अधरसुधा मधु रपा झपा झकि झूर॥ वचनरचन माधुरी सधरपर कवन कोकिला कूर । उच्च सरोज मनोज नृपतिके जोवन काटि कँगूर ॥ हरि मरि कटितटि लरकिजाइ जिनि निशद नितंब गरूर । कदलीजंघ मराल मदगति रूप अनूपसमूर।सूरदासशोभास्वामिनिपर वारतसचितृण तूर॥१९॥राग रामकली॥ मोसोकहा दुरावति प्यारी । नंदलालसँग रैनि वसी री कोककलागुणभारी॥लोचनपलक पीकअधरनको कैसे

दुरत दुराए । मनो इंदुपर अरुण रहे बसि प्रेम परस्पर भाए ॥ अधर दशनछतकी अति शोभा उपमा कही न जाइ । मनो कीरफल बिंब चोंच दे भख्यो न गयो उडाइ ॥ कुच नखरेख धनुपकी आकृत मनो शिवशिर शशि राजे ॥ सुनत सूरप्रियवचनसखीमुखनागरिहँसिमनलाजे ॥ २० ॥ राग धनाश्री ॥ प्यारी सुनत सखीमुखवानी हँसि मुसकाइ रही। नैनन रही लजाइ मुदित चित मानी वात सही॥तोसों कहा दुराव करौ री तू प्राणनते प्यारी। कहाकहौ वहमिलिनिश्याम-की क्रीडा कहति उघारी॥ रतिसुख अंतरची इकलीला कहौं कि धरौं दुराइ।सूरदास प्रभुके गुण आली चित्तहि रह्यो समाइ ॥ २१ ॥ राग सोरठ ॥राधा अब जिनिकछूदुरावै।हाहाकरिचरणनशिर नावति अपनी सौंह दिवावै ॥ उहे कथा मोसों कहि प्यारी चरित कहा री कीन्हों ।जा रसमें तू मगनभईहै कौन अंग सुख दीन्हों ॥ उच्छलतभए सुधा उरघटते मुखमारग न सँभारे ।सूरश्यामरस छकी राधिका कहत न बने बिचारे ॥ २२ ॥राग गुंडमलार॥श्यामरतिअंतरसइहैकीन्हों।कहतपुनि पुनि कहा अंग अंबर जहू मैं रहीसकुचि गहि आप लीन्हों ॥ कियो तब मैं कहा लरी सारंगसों सार्ङ्गधर धरति तब चरण चापी ।शेष सहसों फननि मणिनकी ज्योति अति त्रासतेकंठलपटाइ कांपी ॥रही उनकी टेक चलै मेरी कहा धरनि गिरिराज भुज सबल धारी । सूरप्रभूके सखी सुनहु गुण रैनिकेवेपुरुष में कहाकरौंनारी॥ २३॥॥ राग नट॥ आजहौअधिकहँसीमेरीमाई।कामविवशमो-सों रति बाढी अवलोकतमुरझाई ॥ रवि शशि कांति उग्र भवन में ठाढीही इकठाँई। विस्मय बढि प्रतिबिंब प्रतिह प्रति अंक दई यदुराई॥करअंचर मुख मुदित रही हौं दीन देखि हँसि आई॥ सूरदास प्रभुनिश्चयजानी तवहिं उलटिउरलाई२४॥राग आसावरी॥धन्यधन्यवृपभानुकुमारीगिरिवर-धर वश कीन्हे री। जोइजोइ साध करी पिय रसकी सो सब उनको दीन्हे री ॥ तोसी त्रिया और को त्रिभुवन पुरुप श्यामसे नाहीं री । कोककला पूरण तुम दोऊ अब न कहूं हरि जाहीं री । ऐसे बश तुम भई परस्पर मोसों प्रभू दुरावै री ।सूर सखी आनँद न सम्हारति नागरि कंठ लगावै री ॥२५॥राग बिलावल॥श्याम गए उठि भोरही वृंदाके धाम।कामाके गृह निशि बसे पुरयो मनकाम ॥ सांझ गए कहि आइहैं बहुनायक नाम। सेज सँवारति आश ले ऐसेहि गई याम॥ अरुणउदय द्वारे खरे देखत भई ताम । रिसनि रही झहराइके मनहींमन वाम॥ चिह्न और अंग नारिके विनगुन उर दाम। सूरदास प्रभु गुणभरे आलस तनु झाम॥२६॥अथ वृन्दागृहगमन॥राग बिलावल॥लालन आए रैनि गँवाई । निशि भई छीन बोलि तमचुर खग ग्वालन ढीली गाई॥ अरुन किरनि सुख पंकज विग-लित मधुप लियो रसजाई। चंद्रमलीन भयो दिनमणिते कुमुद गए कुँभिलाई॥ आजकी रैनि गई मुहिं जागत तुम बिनु कछु न सोहाई । सूर श्याम या दरश परस बिनु निशि गई नींद हेराई॥२७॥ राग बिलावल॥नीकेआए गिरिवरधारी नागर। तुम्हरी चिंताते अरुन नैन भएसकल निशाकेजागर॥ रतिके समाचार लिखि पठए सुभग कलेवर कागर। जियकी कृपा हम तबहीं जानी भोर भुलाए आगर ॥ बलि बलि गई मुखारविंदकी सुरति सिंधु रससागर । जाके रसबश भए सूर प्रभु ऐसी कौन उजागर ॥ २८ राग बिभास॥ तुम्हारे पूजिये पिय पाँइ । बहुत बात उपजति है तुमको कहत बनाइ बनाइ ॥ अरुण अधर श्याम भये कैसे आए पट लपटाइ ॥ चारु कपोल पीक कहाँ लागी उरज पत्र लिखाई॥ नंदकुमार जहाँ निशिजागे तहँ सुख देखों जाई। सूरदास सब भाँति अटपटी अब मन क्यो पतिआई॥२९॥राग बिलावल॥मोहनकाहेकोलजात।मूँदि कर मुख रहे सन्मुख कहि न आवत बात ॥अहि लता रँग मिट्यो अधरन लग्यो दीपक जात।

रुचिर कुसुम नवबृक्ष मानो मग्नय गथ कुम्हिलात ॥ नैन मुद्रित भृकुच जैसे उदय शशि जलजात ।
निकसि चल युग पूतरी जनु अलि उरझि अधगात ॥ चारि याम जु निशि उनींदे अलसनग
हि जँभात । सूर ऐसी मदन मूरति निरखि गति मुसुकात ॥ सकल निशि जागेके हैनैन । जानति
हौं अति किए कोकनद आन रजनि सुख चैन ॥ लटपटी पाग चाल गति उलटी रमन अटपटे
बैन । लगत पलक उघरत न उघारे मनु खंडित रमऐन ॥ तमचुर टेरतही उठि धाए अरु इनी
दुखदैन । जानी प्रीति सूर प्रभु अब हम सुरति भई गति मैन ॥२०॥ आजु औरछवि नंदकिशोर ।
मिलि रिस रुचि लोचन भए रोचन चितवत चित्तपगई ओर ॥ शोभित पीठि प्रगट करकंकन
शोभित हार हिए बिनु डोर । शोभित पीतवसन दोउ राते अधरन अंजन नैन तमोर ॥ नखशिख
ज्यों शृंगार अटपटे पाए मनहु पराए चोर । फूले फिरत दिखावत औरन निडर भए दै हँसनि
अकोर ॥ कहत न बनै सुनतहु न आवै वेसनि बरणत कबिन कठोर ॥ अचरज क्यों न होत इन बा-
तन सूर महण देखे जनु भोर ॥२१॥ राग बिलावल खंड ॥ अनिहि अरुणहरिनैनतिहारे । मानहु रतिरसभए
रगमगे करत केलि पिय पलक न पारे ॥ मंदमंद डोलत शरसिनमें शोभित मध्य मनोहर तारे ।
मनहु कमल संपुटमहँ बींधे उड़ि न सकत चंचल अलिवारे ॥ अलसलातरतिरैनिजनावतअनियस-
मत्त भ्रमन अनियारे । मानहु सकल जगत जीतनको कामबाणखरसानसँवारे ॥ अटपटातअलसात
पलकपट मूँदत कबहूँ करत उघारे । मनहुँ मुदित मर्कतमणि आँगन खेलत खंजरीट चटकारे ॥
बारबार अवलोकि कुरुखियन कपटनेह मन हरत हमारे । सूर श्याम सुखदायक लोचन दुखमोचन
रैनन रतनारे ॥२२॥ राग बिलावल ॥ नहिं नदुरत नैना रतनारे । मधुप कुसुमपरशोभितसुंदरश्यामशिली-
मुखतारे ॥ कुटिल अलक रही बिथुरि बदनपर सकुचसहित हरि नयन निहारे । भौंहशिथिलमनुम-
दन धनुष गुन गरे कोकनद बान बिसारे । मूँदइ आनत नैन अलसबश छीन भए उघरत न
उघारे । सूरदास प्रभु सोइ कहौ तुम को भामिनि जह रति रण हारे ॥२३॥ रति संग्राम
बीरस माते । है हरि शूर शिरोमणि अजहूँ नहिन सँभारत ताते ॥ आनहि बरन
भए दोउ लोचन अपने सहज बिनाते । मानहु भीर परी जोधनकी भए क्रोध अति राते ॥
परिमल लुब्ध मधुप जहँ बैठत उठि न सकत तेहिठाते । मनहु मदनके है शर पा-
ए फोक बाहिरे घाते ॥ बैठिजात अलसात उनींदे क्रम रउठत तहाते । मनु मूरछा कटाक्ष बाणम-
ल कढि न सकत हियराते ॥ डगमगात घूमत जनु घायल शोभा सुभट कलाते । सूरदास प्रभु
रतिरणजीति अब सकात धौं काते ॥२४॥ नैन उनींद भए रँग राते । मनहु सुरंग सुमनपर
सजनी फिरत भृंग मदमाते ॥ प्रेम पराग पाँसुरी पल दल प्रफुल्लित मदन लताते । सुभग सुवास
बिलास बिलोकनि प्रगट प्रीति करि ताते ॥ तैसोइ मारुत मद जम्हानरि मिली मुदित छबियाते ।
सींचे सूरश्याममानिनिकर हितसो केलिकलाते ॥२५॥ राग रामकली ॥ आए सुरति रंगरसमाते । मानहु
छिन बिश्राम नमित पिय श्रमित भएहै ताते ॥ डगमगातमगधरत परत पग उठन न बेगि तहाते । मनु
गजमत्त चरण साकर करि गहि आनत तेहिठाते ॥ उर नखउत ककनउत पाछे शोभितहै रुहिराते ॥
मदन सुभटके बाण लागि मनो निकसि गए वोहि घाते ॥ साचे करत आपने बोलनि टरत न म-
र्यादाते । सूर श्याम कहि गए आइहैं पग धारे तेहि नाते ॥२६॥ राग बिलावल ॥ अरुण नैन राजत
प्रभु मोरे । रतिसुख सुरति किए ससिसँगमनो जीतिसमरमन्मथशर जोरे ॥ अति उनींद अलसात
कमगति गोलक चपल सिथिल कछु थोरे । मनहु कमलके कोश तमी तमउञ्ज रहत छबि रिपुदल
दौरे ॥ शोभित सुभग सजल प्रतिकारे सगम उनितारे तनु डोरे । मनो भारती भँवर मीन शिशु

जात तरल चितवत चित चोरे॥वरणि न जाइ कहाँ लगि वरणौं प्रेमजलधिवेला वल वोरे । सूरदास सो कौन त्रिया जिनि हरिके अंगअंग वल तोरे॥ ३७॥काहेको पिय भोरही मेरे गृह आए । इतने गुण हमपे कहाँ जे रैनि रमाए ॥ ताहीके पगुधारिए चकृत मैं जाने । विनगुण गडिमालरही नहिं कहुँ विहराने ॥ आएहो सुखदेनकोऐसेइ हितकारी । सूरश्यामतुम योगको को वैसीनारी॥३८॥ कृपा करी उठिभोरहीं मेरेगृहआए। अव हम भइ वडि भागिनी निशिचिह्न देखाए॥जावकभालनसों दियो नीके वश पाए । नैन देखि चकृत भई क्यों पान खवाए ॥ अधरन परकाजर वन्यो वहु रंग कहाए । वंदन विंदुली भालकी भुज आप वनाए ॥ यहमोसों तुमहीं कहो उरछत अरुनाए। सूर श्याम यशराशिहो धनि त्रिया हँसाए ॥३९॥ राग भैरव ॥ जाहु तहां कहा सोचतहौ। जासँग रैनि विहात न जानी भोर भए तेहि मोचतहौ ॥ औरनकोछिनथुग वीततहैतुमनिहचीते नागरहौ । झूमत नैन जम्हात वारही रतिसंग्राम उजागरहौ ॥ मैंअव कहतितिहारे हितकीताहीके गृह सोइरहौ॥सूर श्यामवैसीत्रियकोहैवहरस वाही वनन लहौ॥४०॥हमहींपरपियरूखेहौ॥वोलत नहीं मूकक्यों ह्वैरहेअँग रँगहीनकछूखेहौ॥तवनिरखतऔरहिहितकीर्धांहमसों कहुँतुमलूखेहौ।तव हँसि वदन मिलत आजुहि कछु और भए निठुर पूपेहौ ॥ डगमगात पग उतहि परतहे चित चंचल उत हूपेहौ।सूरदास प्रभुसाँचभापि गए त्रियाअंग वल सूपे हौ ॥ ४१॥ राग विलावल॥हरपि श्याम त्रियवाँह गही। चूक परी हमको यह वकसो आवनको कहि गए सही ॥रिसन उठी झहराइ झटकि भुज छुवत कहा पिय शरम नहीं। भवन गई आतुर ह्वै नागरि जोआईमुखसबैकही॥ मेरे महल आजुते आवहु सौंह नंदकी कोटि लही । सूर श्याम जव लौं जग जीवौं मिलौं नहीं वरु कामदही ॥४२॥राग नटनारायण॥नागरि निठुर मान गह्यो । पीठ दै रिस काँपि वैठी फिरिन उतहि चह्यो ॥ श्याम मन अनुमान कीन्हों रिसनिव्याकुल नारि । तिनकही रिस खोइडारौं यह प्रतिज्ञा धारि॥सखी एक स्वभावअपने गए ताके गेह । यहचरित सव कह्यो तासों चतुरि लख्यो सनेह ॥ गई आतुर नारितांके लख्योनैननि कोर ।चकित वाला नंदसुतविन लखो हठकोछोर॥ भुजा गहि कहि कियो का रिस कहिसही व्रजग्वारि ।सूर प्रभुसों मान कीन्हों हृदयदेखिविचारि ॥४३॥राग कान्हरो॥ वाँह गह्यो कहि आँगन ल्याई । वहुनायक उनको नहिं जानति वडी चतुरही माई॥ मैं जो कहति श्रवण सुनि चित धरि जोवन धन सपनेको । चलुगहि भुजा मिलै किनहरिसों कहा निठुर भई तोको ॥ तूँही गहति न वाँह जाइके मोसों वाँह गहावति।सुनहु सूर मैंसौंह करींहै तू मोहिं तिनहिं मिलावति ॥ ४४ ॥ कहा कहति तू मिलिहि रहीहै । मोसों करति कहा चतुराई उन इह भेद कहीहै ॥ जो हठ करचो भली नहिं कीन्ही ए दिन ऐसे नाहीं।की इहई पियको न वोलावै की तहई चलिजाहीं ॥ वे सव गुणलायक तूनागरि जोवन दिनद्वैचारि।सूर श्यामको मिलि सुख लेहि न पुनि पछितैहै नारि ॥ ४५ ॥ वहुरि पछितैहै री व्रजनारि । देखि जाइ ठाढे मग जोवत सुंदर श्याम मुरारि॥ऐसी निठुर नेक नहिं चितवति चंचल नैन पसारि। कहा गर्व या झूठे तनको देखि हाथ लै वारि ॥ तजि अभिमान मानरी मानिनि मैंजुकरतिमनुहारि । सूर हंस स्वातीसुतधोखे कवहुँक खात जुवारि॥ ४६॥ राग केदारो॥ मोसों मानि भावै न मानि लाल मनाइहै री तेरी आँखिन में पैयत है । कत सकुचति मैं तौ सव जानति ऐसी प्रीति क्यों दुरैयतहै ॥ मेरो विलग मानति यह जानति या वातनमें कछु पैयतहै । सूर श्याम न्यारे न वूझिये यह मोको नहिं भावै काहेको अनखैयतहै ॥४७॥ राग विलावल ॥वहुरि मिलौ-

गी कालिही चित समुझि सयानी। मेरो कह्यो न क्यों करै क्यों भई अयानी ॥ अनलहि औषधि अनलहै सब जानिरहीहौ। काहेको हठ करतिहौ वेकाज वहीहौ ॥ धरणीधर व्याकुल खरे री गर्व गहेली। सूर कह्यो सुनि मानिले मैं कहति सहेली॥ ४८ ॥ राग सोरठ॥ श्याम धरयो त्रिय मोहन रूप। दूती प्रिया संग इक लीन्हें अंग त्रिभंग अनूप ॥ अंतर द्वार आइ भए ठाढे सुनत त्रियाकी वातें। सरस वचन जु कहति मति आगे कह्यो मिलौं केहि नातें ॥ कपटी कुटिल क्रूर कहि आनन यह सुनि सुनि मुसकाने। सूरदास प्रभुहें बहुनायक तुहीं कहति यह वाने ॥ ४९ ॥ राग मलार॥ जौलौं माई हौं जीवन भरि जीवौं। तवलगि मदनगोपाललालके पंथ न पानी पीवौं॥ करौं न अंजन धरौं न मरकत मृगमदतनु न लगाऊं। हस्त वलयकटिना पट्ट मेचक कंठ न पोति वनाऊं॥सुनौं न श्रवणन अलि पिकवाणी नैन न नवघन देखौं। नील कमल कर धरौं न कवहूँ श्याम सरीखे लेखौं ॥ इतनी कहत आइगए मोहन लिये प्रिय दूती संग। छूटिगई रिसटेक मानकी निरखि रसिकके अंग॥ अति रति लीन भई भामिनि संग तव कर गहि कर लीन्हों। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि मिलि जु सुधा सुख दीन्हो ॥ ५० ॥ राग धनाश्री ॥ कवि गावत हरि मोहन नाम। गाढो मान दूरि करि डारयो हरष भई मन वाम॥ ऐसे चरित और को जानै धन्य धन्य नदलाल। जो ए गुण तौ हरत त्रियन मन अतिहरषित भई वाल॥ मिटयो काम तनु-ताप तुरतही रिझई मदनगोपाल। सूर श्याम रसवश करिलीन्ही इहै रच्यो इक ख्याल ॥ ५१ ॥ राग मलार ॥सखीरी कठिनमानगढटूटयो। श्रीगोपालविहसनिवलआनसचल्योअतिहिगोलनको जटयो ॥ करि प्रतिहार तज्यो सुर गोपुर कांच कोट सम फूटयो। काम अग्नि उपजी उर अंतर मौन सुभटको तव रण छूटयो॥ कुच लोचन दोउ लरे सौंह ह्वै भौंह कमान कुटिल शर छूटयो। विद्दाचारि गोपालकीसूरतजि सर्वस लुटयो ॥५२॥ राग गुंडमलार ॥श्यामगुणराशिमानिनिमनाई। रह्यो रस परस्पर मिटयो तनु विरहज्वर भरी आनंद त्रिय उर न माई ॥ कवहुं रति सहज कवहू करति विपरीत यामरहुते सव रैनि वीती। श्रमित दोउ अंग भए अतिहि विह्वल परे सेज रति-पति अधिक वढी प्रीती ॥ भोर भए चले निज मदन पितु मातके फिरे सकुचे देखि नंद द्वारे।सूर प्रभु श्याम सकुचि गए प्रमदाधाम कहत ए गुण भले हरि तुम्हारे॥ ५३ ॥ सुवमाके धामते आपनम दाके धाम ॥ राग गुंडमलार ॥ कहांहे श्याम कहैं गमन कीन्हो। कहां तुमरहत कवहूंदरश देतनहिं धोखे गए आय हम मानिलीन्हो ॥ नैन आलसभरे चरणउतलरखरे कहाहोडरेसे कहो मोसों। रैनिकहुँ वसे त्रिय कौनसों रसेहो उर करज कसे सो कहो गोसो॥भले जुभले नँदलाल वेऊ भली चरण-जावक पाग जिनहिं रंगी। सूर प्रभुदेखिअँगअँग वानक कुशल में रही रीझिवह नारि चंगी ॥५४॥ राग कल्याण॥ सुनत हंसिचलहारे सकुचिभारी।यह कह्यो आज हम आइहैं गेहतुव तरकजिनिकहौ हम समुझि डारी। नारि आनँदभरी रागसी ह्वै ढरी द्वार अपने खरी अगपुलकी। गए कहि सूर प्रभु रैनि वसिहैं आजु सजति शृंगार कछु सकुच कुलकी॥५५॥ अंगशृंगार सुंदरिवनावै।मिलौंगी श्याम निजधाम करि आजही रैनि विलसौं काम मन मनावै ॥ सरस सुमना जात शीश करसों करति सीमंत अलक पुनि पुनि सँवारे। मांग सूधी पारि निरखि दर्पण रहति ग्रथि कवरी छांह पट निहारे। कमल खजन मृगज मीन लोचन जिते सारंगसुत लेति तहां ओजै । हार उर धरति नख शिखहु भूषण भरति सूर प्रभु मिलनहित नारि राजे॥५६॥राग कान्हरो॥विधुवदनी अरु कमल निहारै। सुमनासुत ले कमलन मजित धनपति धामको नाम सवारे ॥ तरनि तान वनितासुत ता छवि कमलन रुचि रवि ग्रथिन नारे। कमल कमलपर रेख वनावति सारंगरिपु पाहन गति

ढारै॥ उर हारावलि मेलति कमलन मनहुँ इंदु पारसढिग पारे।सूरश्यामकेनामहिजीतनकमला-पतिके पदहि विचारे ॥५७॥राग आसावरी ॥अँगशृंगार सँवारि नागरी सेज रचतहरि आवहिंगे। सुमन सुगध रचत तापर लै निरखि आइ सुख पावहिंगे॥ चंदन अगर कुमकुमा मिश्रितश्रमते अंग चढावहिंगे। मै मन साध करौंगी सँग मिलि वै मनकाम पुरावहिंगे॥रतिसुखअतभरौंगीआलस अंकम भरि उर लावहिंगे।रसभीतर मैं मान करौंगीवे गहि चरण मनावहिंगे ॥ आतुर जवदेखो पिय नैनन वचन रचन समुझावहिंगे । सूर श्याम युवतीमनमोहन मेरे मनहिं चुरावहिंगे ॥ ५८ ॥ नंदसुवन वहुनायकी अनतहि रहे जाई । वह अभिलाष करतरही ताको विसराई॥वासरऐसेहीगयो निशि याम तुलानी ।नारि परी अति सोचमें विरहा अकुलानी ॥आवन कहिगए सांझही अजहू नहि आए । कीधौं कतहूं रमिरहे फेग परे पगए॥वेईहैं वहुनायकी लायक गुणभारी। सूरश्याम कुमुदाभवन सुधि करि पगधारी॥ ५९ ॥ राग केदारो॥ रहे हरि रैनि कुमुदागेह । परस्पर दोउ प्रेम भीजे वढयो अतिहि सनेह ॥ एकक्षण इक याम वितवति कामरसवश गात।ताहि वीतत याम युग-सम गनत तारा जात ॥ उनहिं वैसेइ याहि ऐसे,रजनि गई भयो भोर।सूर मोसौं करिचतुरई गए नंदकिशोर ॥ ६० ॥ राग नट ॥कुटिलई हरिकरी मोसो। चित्तचिंताभरी सुंदरि करति मन गोसो॥ कहिगए निशि आइहैं हरि अनत विरमे जाइ ।रैनि वीती उदित दिनकर देखि त्रिय मुरझाइ ॥ भवनही मनमारि वैठी सहज सखि इक आइ । देखि तनुअतिविरहव्याकुल कहतिवचनसुनाइ॥ वोलि ढिग वैठारि ताको पोछि लोचन लोर ।सूर प्रभुके विरह व्याकुल सखी लखि मुखओर ॥६१ ॥ राग गौरी॥आजु तोहिं काहे आनंद थोर । यह विपरीति सखी तो महियां इन्दु विन्दु इकठोर ॥ हरदावन सतत अधिकारी ज्यो विधु चंद्रचकोर । दधि गृह युगल तु क्यो न वनावति विगसत अंबुज भोर॥ कंपित श्वास त्रास अति मोकति ज्यों मृग केहरि कोर। सूरदास स्वामी रतिनागर तौन हरयो मनमोर॥६२॥राग गौरी॥आजु विनु आनदको मुख तेरो।कहा रही मनमारि भोरही अतिव्याकुल मनमेरो॥मोसो गोपकरैजिनिसुदरि नहिं पावतिवह भाव।सुनौं वात कैसीउप-जीहै कछु जिनि करे दुराव ॥तव वोली मधुरी वाणीसो कहा कही री तोहिं।तेरे श्याम भले गुण नागर कपटी कुटिल कठोहिं॥ निशिवसिवेकी अवधि वदी मोहि साँझ गए कहि आवन।सूर श्याम अनतहि कहुँ लुब्धे नैन भये दोउ सावन॥६३॥राग सोरठ॥ऐसे गुण हरिकेरी माई। मैंपहि-चानि रहीहौ नीके कुटिल शिरोमणिराई ॥ अव मोसौं उनसो कह वनिहै कछु मैं गई भुलावन। आपुहि कालिह कृपा यह कीन्ही अजिर करिगए पावन॥तोसों मिलै कहूं मेरी सौं तिनसो तृयह कहिए । सूरदास प्रभु वोलनिसांचे लाज कछूजिय गहिए ॥६४॥राग विहागरो॥सखी री औरसुन-हु इक वात ।आजु गोपाल हमारे आए उठि करि नहिं मिसि प्रात॥ कतहूं रैनि उनींदे मोहन अपने गृहतन जात । आगे द्वार नद हैं ठाढे ताते गए न सकात ॥डगमगात डग धरत परत पग आलसवत जम्हात। मानहु मदन दंड दै छांडे चुटकी दैदै गात ॥ जो मैं कह्यो कहां रहे मोहन तौ सन्मुख मुसकात। ताते कछू न उत्तर आयो सूर श्याम सकुचात ॥ ६५ ॥ राग केदारो॥ तव हरि यह चतुरई करी । कह्यो मेरे धाम आवन टार दै गए हरी ॥ आपुही श्रीमुख गए कहि सही कैसी परी।सेज रचि सव रैनि जागी तव रिसनि हौं जरी॥श्यामदेखे द्वार ठाढे मनहिं मन झरहरी।कहत सूरसुनाइ हरिकोधन्ययहशुभघरी॥६६॥राग विलावल॥सखीनिरखि अँग अगश्यामके। कहुँ चदन कहुवंदन रेखा कहु काजर छबि लखत वामके ॥ आलसभरे नैन रतनारे चतुरनारि

मेग जगे यामके ।अपने मन हरि सोच करत यह परी त्रिया फग कठिन तामके ॥ मान कियो मोतन फिरि बैठी आए है यह सुनत नामके। सूर श्याम इक बुद्धि विचारी मनमोहन गति महित कामके ॥ ६७ ॥ राग सूही ॥ श्याम सैनदै सखी बोलाई। यहकहि चलीजाउगृहअपनेतूतोमान कियो री माई ॥ अंतर जाइ भए हरि ठाढे सखी सहज निकसी तहँ जाई ।मुख निरखत दोउ हँसे परस्पर भवन जाहु मे लेउँ मनाई ॥ अंग दिखाइ गई हँसि प्यारी सुरतिचिह्न नीकी सुघराई । सूरप्रभुगुन पार लहै को जानीबूझि करीरिसहाई॥६८॥राग बिलावल॥ इहैकहीकहिमाँनरही।मन मन कहति दरश अब दीन्हों निशि सवरैनि डही॥मधुरे वचन सुनाइ सखीसों रिसबश भरे कही। आए कहां जाहि ताहीके चतुर त्रिया ढिगही ॥ वाबिन उनको कौन मिलेगी नहिं कोउ फिरति वही ।सूरज प्रभु इतको जिनि आवें पग धारें उतही ॥ ६९ ॥ राग गौरी ॥ सखी गई कहि लेउ मनाई। ज्ञाननमणि विद्यामणि गुणमणि चतुरनमणि चतुराई॥प्रिया हृदय यह बुद्धि उपाई ह्यां तो नही कन्हाई । आतुर चली यमुन जलसोरन काहू संग नलाई ॥ पहुँची जाइ सुरवितनयातट न्हाइ चली अतुराइ ।सूर श्याम मारग भए ठाढे बालक मोहनराइ ॥७०॥ राग बिलावल॥ पाँचवरसके लाल ह्वै त्रियमोहन आए। नागरि आगे ह्वैगई तब बोलि सुनाए॥कह्यो कहां री जातिहै काकी तू नारी। मोहिं पठाई श्याम लेजाकी तू प्यारी ॥ यह सुनि नारिचकित भई आपुन तहां आए । तब करसों कर गहिलियो देखत मन भाए ॥ अगम चरित प्रभु सूरके ते लखे न कोई । श्यामनाम श्रवणन पर्यो हरषी सुख जोई॥७१॥राग रामकली ॥ हरषी निरखि रूप अपार ।गह्यो करसों सदन ल्याई जानि गोपकुमार ॥श्याम मोको बोलि पठई कहत है यह लाल ।भवनलै इन भेद बूझों सुनो वचन रसाल ॥ हृदय आनँद भई बाला प्रेमरस बेहाल । कुंअरि अंतःपुर गईले रच्यो हरि तहां ख्याल ॥ तरुण ह्वै करि उरज परसे दियो अंचल टारि। सूर प्रभु हँसि लई प्यारी भुजन अकम धारि ॥७२॥राग सोरठ॥मुख निरखत त्रिय चकित भई । जो देखी अति तरुण कन्हाई यह को लखे दई ॥ छाँडिदेहु ऐसे मन मोहन हँसिमन लजित भई। ऐसे छंद रचत पिय धनि धनि कीन्ही करनि नई ॥अंकम भरि त्रिय कंठ लगाई कुच उर चापि
 गई॥७३॥राग बिलावर॥श्याममनाई मानिनीहरषित
 ॥ *सुता महर वृषभानुकी सुधि कीनी श्याम ।ताको* सुख दे हरि चलेप्यारीके धाम ॥ प्यारी आवत पिय लखे चितई मुसकाइ।जिय डरपे मोहिं देखिके सुख कह्यो न जाइ॥अब न पियहि उचटाइहों मोको सरमात। त्रास करत मेरी जिती आवत सकुचात॥आनि द्वारठाढे भएनायक बहुनाम।सूर प्रभुअंग सहजही निरखति रुचिसो वाम॥७४॥ ॥राग गुंडमलार॥श्याम उर वाम निज धाम आए।उतहि प्रमदा धाम सखी सहजहि गई अंगके चिह्न कछु और पाए ॥ देखि हरषी नारि सकुच दीन्ही डारि अतिहि आनँद भरी श्याम रंगी । सखी बूझति ताहि हँसनजाखुसचाहि श्यामको मिली री बनी चंगी ॥ कहन लागी कहा कहत तूआज मोहिं
जैसे
मरगजं वसन अधर दशनान छत कहु कहुँ नीकी लागी चंदन रेख ॥ काहेको मोहिं दुरावति सजनी जानी अरसपरस छविशेष।सूरदास प्रभु नंदसुवन सँग अबहीं सुरति रंग कोसो भेष॥७६॥ राग बिलावल॥अबतू कहादुरावैगी।मोहिंकहतनहिकाहिकहैगीकबलौंबातलुकावैगी॥मोसीऔरकौन

प्रिय तेरे जासों प्रेम जनावैगी॥मेरीसो उनकीसौंतोको कहा दुराए पावैगी।औरनसीमोहूकोजानति मोते वहुरि रमावैगी॥सूर श्याम तोहिं वहुरि मिलैहौ आखिरतौप्रगटावैगी॥७७॥प्रमदाअतिहर्षित भई सुनि बात सखीके।रोमरोम पुलकित भई उपजी रुचि हीके॥कहति अवहि ह्याँते गए नंदसुवन कन्हाई। चरित कहा उनके कहौं मुख कह्यो न जाई॥ साँझगए कहि आइहैं मोसोंरीआली।अनत विरमि कतहूं रहे वहुनायक ख्याली॥ रैनिरही मैं जागिकै भोरहिउठिआए। मान कियो रिस पाइकै पलमाँह छँडाए॥ अगणित गुण प्रभु सूरके कहि तोहि सुनाऊं। अवहिंचरित करिकै गए तेही गुण गाऊं॥७८॥ राग रामकली॥ आजुसखीयमुना मगमोहनमोहिं छली छँदलाइ। कोतू आहि कौनकी वनिता वात एक सुनि आइ॥ विहँसि कह्यो मोहिं श्याम पठायो सुनत विरह गतिभूली। रति जल जलज हियो हुलस्यो मन पलक पासुरी फूली॥ जानि कुमार गह्यो करसो कर ल्याई भवन वोलाइ। नैन मूंदि अचल गहि डारयो मैं माधो मिलि आइ॥ छैल छुयो उर वदन विलोक्यो सकुचि रही मुसकाइ। छाँडहु सूर श्याम तुम्हरी अव आवनि जानि न जाइ॥७९॥राग धनाश्री॥ आवत ही मैं तोहिं लख्यो री।तुमहु भली उनको मैं जानति अधर विंव मनो कीर भख्योरी॥ अँग मरगजी पटोरी देखी उर नखछत छविभारी। धनि वे नंदसुवन धनि नागरि कियो सुरतिरण हारी॥ हँसतगई सखी भवन आपने मन आनद वढाए। सूर श्याम राधिका धामके द्वारे शीश नवाए॥८०॥ राग सारंग॥ राधिका श्यामतनदेखिमुसक्यानी।हारविन गुण वन्योअधर काजर रेख नैन तमोर तुतरातनानी॥ पागलटपटी वनी उरह छूटी तनी अंगकी गति देखि मन लजानी।उलटि कंकन पीठि वाहु विट्ठल ढीठ चतुरई चतुर्भुज अधिक ठानी॥ पाणि पल्लव अधर दशन गहिरही वैन वोली वचन हारि मानी। वलि वलि सूर प्रभु अगभरि प्राणपति नागरी नवल उरघालि सानी॥८१॥ राग विलावल॥ भली करी पिय ऐसेहु मेरे गृह आए। लीन्हें कठ लगाइ कै वडभागिनि पाए॥ कहा सोच जिय करतहौ भुजगहि कर लीन्हो। गई भवन भीतर लिये तहँ वैठक दीन्हो॥ श्याम सकुचि अँग हेरही नागरि पहिचानी। चिह्न निहारत उर कहा आवतही जानी॥ या छविपर उपमा कहाँ जो त्रिभुवन होई। तुम जानत यह रूपको अरु लखै न कोई॥ चदन वदन पानरंग अधरन काजर छवि।सूर श्याम उर करजको को वरणि सकै कवि॥८२॥ काहेको पिय सकुचतहौ। अव ऐसो जिनिकाम करौ कहुँ जो अतिही जिय अकुचतहौ॥ अवकीचूक नही जिय मेरे और दिननको जानि रहौ। सौंह करौ मेरी मो आगे डरडारौ जिन मौन गहौ॥ यह सुनि श्याम हरषि कुच परसे वारवार शिव सौंह करी।सूर श्याम गिरिधर गुण नागर वात आजुते सहीपरी॥८३॥ राग गुडमलार॥श्याम सौंह कुच परस कियो। नंदसदनते अवही आवत और त्रियनको नेमलियो॥ ऐसी शपथ करौ काहेको जो कछुआजुकरी सु करी। अवजुकालिते अनत सिधारो तव जानौगे तुमहि हरी॥ मैं सतिभाव मिली हँसि तुमको कहा आजुकी सौंह करौ। सूर श्याम जो भई सुभई ज अवते सवको नेमधरौ॥८४॥ राग गुडमलार॥अहो राजत राजीवनैन मोहन छवि उरग लता रग लाग। जेहि वनितारसवश कीन्हें निशि प्रगट होत अनुराग॥ सिथिल अग अरु सिथिल पाग वनी सिथिलचरणगति आज। मनहु सेज रेवा ह्रदते उठि आवतहै गजराज॥ भाल मध्य जावकरँग देखत लागतिहै मोहिं लाज। तुम अपने जिय यो जानतहौ तिलकलोक जई राज॥ हस वधु रव लोचन ललना मिलित निशाकृति काज। वदन चंद वियसवि जानि नहिं वढत किरनि मनलाज॥ भवनजीन

सुत लग्यो अधरपर यह छवि कही न जाइ। मनो बंधूक सुमन ऊपर बिय अलिसुत बैठेआइ॥ कुच कुमकुम अवलेप तरुनि किए शोभित श्यामल्गात। गत पतंग राका शशि बिय संग घटा सघन शोभात॥ श्याम हृदय लछने ता ऊपर लगी कज्जलकृत रेप। मनहुँ वसंतराज रुचि कीरति अरुण किसलतरु भेप॥कामबाण वर लिए पंच चितवत प्रति अँग अँग लाग। अब न जान गृह देउँ पियारे जब आए तब भाग॥ तादिनते वृषभानुनंदिनी अनत जान नहिं दीन्हें। सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन यहि विधि रसवशकीन्हें॥८५॥अथ बडोमानसमय॥ राग बिलावल॥ सखियन संग लै राधिका निकसी ब्रजखोरी। चली यमुनअस्नानको प्रातहि उठि गोरी॥ नंदसुवन जागृहसमें तेहि बोलन आई। जाइ भई द्वारे खरी तब कढे कन्हाई॥ औचक भेट भई तहां चकृत भए दोऊ। ये इतते वे उतहिते नहिं जानतकोऊ॥ फिरीसदनको नागरी सखि निरखत ठाढी। स्नान दानकी सुधि गई अति रिस तनु बाढी॥श्याम रहे मुरझाइके ठग मूरीग्वाई। ठाढे जहके तहँ रहे सखियन ममुझाई॥ इतनेहीके ह्वैगए गहिबाँह लैआई। सूरज प्रभुको लै तहां राधा दिखराई॥राग रामकली॥ राधहि श्याम देखी आइ। महामान दृढाय बैठी चिते कांपे जाइ॥ रिसहि रिस भईमगनसुंदरि श्याम अति अकुलात। चकितह्वै जकि रहे ठाढे कहि न आवैबात॥देखिव्याकुलनंदनंदन सखी करति विचार। सूरप्रभुदोउ मिलैंजसेकरोसोइउपचार॥८५॥राग कान्हरो॥सखी एकगई मानिनि पास। लखति नहिं कछु भाव ताको मिटीमनकीआस॥ कहौं कासो कौन सुनिहै रिसनि नारि अचेत। बुद्धि सोचति त्रिया ठाढी नेक नहीं सुचेत॥श्याम व्याकुल अतिहिआतुर यहि कियो दृढ मान॥सूर सहचरिकहतिराधा बडीचतुरसुजान॥८७॥राग कान्हरो॥ नहितेरोअतिहीहठनीको। मेरो कह्यो सुनहु ब्रज सुंदरि मान मनायो नागर पियको॥सोइ अतिरूप सुलक्षणनारी रीझे जाहि भावतो जीको॥प्यासे प्राण जाइँ जो जलबिनु पुनि कह कीजे सिंधु अमीको॥तो गुमान तजहुगी भामिनि रविकी रसमि कामफल फीको॥कीजे कहा समय बिनु सुंदरिभोजन पीछेअचवनघीको॥ सूरस्वरूप गर्व जोवनके जानतिहो अपने शिर टीको॥जाके उदय अनेक प्रकाशन शशिहि कहा डर कमलकलीको॥८८॥राग सारंग॥ चितयो चपल नैनकीकोर॥मन्मथबाण दुसह अनियारे निकसे फूटि हिए वहि ओर॥ अति व्याकुल धुकि धरणि परे जिमि तरुण तमाल पवनके जोर। कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहूँ चंद्रिका मोर॥ ग्वन बूडत खनहीखन उछलत बिरह- सिंधुके परे झकोर। प्रेम सलिल भीज्यो पीरोपट फट्यो निचोरत अंचल छोर॥ फुरै न वचन नैन नहिं उघरत मानहुँ कमल भए बिनभोर। सूर सुअधर सुधारस सींचहु मेटहु मुरछा नंद- किशोर॥८९॥राग नट॥राधे तेरे नैन किधौं मृगवारे।महतनयुगल भौंह युग जोते भजत तिलकरथ डारे॥ यदपि अलक अंजन गहि बांधे तऊ चपल गति न्यारे।घूंघटपट बागरज्यो बिडवतजतन करत शशि हारे॥ खुटिला युगल नाक मोती मणि मुक्तावलि ग्रीव हारे।दोउ रुख लिये दीपकर मानो किये जात उजियारे॥मुरलीनाद सुनत कछु धीरज जिय जानत चुचकारे।सूरदास प्रभु रीझि रसिक पिय उमन प्राण धनवारे॥९०॥राधे तेरे नैन किधौंरी बान।यों मारे ज्यों मुरछि परे धर क्यों करि राखै प्रान॥ खगपर कमल कमल पर केदलि केदलि पर हरि ठान। हरि पर सर सरवर पर कलसा कलसा पर शशिभान॥शशिपर बिंब कोकिला ताबिच कीर करत अनुमान॥ बीच बीच दामिनि दुति उपजत मधुपयूथ असमान॥तूनागरि सब गुणनि उजागरि पूरण कला- निधान॥सूरश्याम तो दरशन कारण व्याकुल परे अजान॥९१॥राग नट॥राधे तेरे नैन किधौं बटपारे।

चितवत दृष्टि वाण भरि मारत घूमत ज्यों मतवारे ॥करि अंजन मनो पियमनरंजन खंजन नैन सँवारे । चलिमुसक्याय श्यामसुंदरपै नाचत ज्यों नट वारे॥ थकित भए देखत नँदनंदन तिनसों कहिके हारे।सूरदासप्रभुतुम्हरे मिलनकोकोटिमान पचिहारे॥९२॥राग सारंग॥चपलभामिनिके भौंहैं वंक।अलक तिलक छवि चित्र लिखीसी श्रुति मंडल नाटंक ॥ तेरो रूप कहाँलौं वरणौं नागरताको अंग । उरसुदेश रोमावलि राजत मृगअरिकोसो लंक ॥तेरे नैन सुभट अनियारे नगवरधरन निशंक।सूरजचरितचुनौतीपठवतभयोमदन मनरंक९३राग मलार॥यहऋतुरूसिवेकीनाहीं। वरषत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरषि मिलाहीं ॥जे तमाल ग्रीपमऋतु डाहीं ते तरुवरलपटाहीं। जे जलविन सरिता ते पूरण मिलन समुद्रहि जाहीं॥ जोवन धन है दिवस चारिको ज्यों बदरीकी छाहीं । मैं दंपति रस रीति कहीहे समुझि चतुर मनमाहीं॥ यह चित धरहु सखी री राधिका दै दूतीकोवाहीं । सूरदास हठि चलहु राधिका सँगदूती पियपाहीं॥९४॥राग बिलावल॥ दधिसुतवदनी राधिका दधि दूरि निवारो । दधिसुत दृष्टि मेलि दधिसुतमें दधिसुत पतिसों क्यों न विचारो॥ घरहिछाँडिके घरहि पकरिले घरहु लता घनश्याम सवाँरो ।हार पहिरि कहि हार पकरि करि हार गुवर्धननाथ निहारो ॥ समुझि चली वृपभानुनंदिनी आलिंगन गोपाल पियारो । विद्यमान कलहंस जात गलि सूरदास अपनो तनु वारो ॥९५॥राग सोरठ॥राधे हरिरिपु क्यों न छपावति। मेरुसुतापति ताके पति सुत ताको क्यों न मनावति ॥ हरि बाहन ता बाहन उपमा सो तैं धरे दृढावति । नव अरु सात वीस तोहिं शोभित काहेगहरुलगावति॥ सारँग वचन कह्यो करिहरिको सारँग वचन निभावति ।सूरदास प्रभु दरश विना तुव लोचन नीर वहावति ॥९६॥राग नट॥राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति । शैलसुतापति तासु सुतापति ताके सुतहि मनावति ॥ हरिबाहन शोभा यह ताकी कैसे धरे सुहावति। द्वै अरु चारि छहौ वै वीते काहेको गहरु लगावति॥ नौ अरु सात राज तहँ शोभित ते तु कहि क्यों दुावति । सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको श्रीरंग भरि आवति ॥९७॥ राग सारग ॥राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति। सारँगसुतवाहनकीशोभासारँगसुतन वनावति ॥शैलसुतापति ताके सुतपति ताके सुतहि मनावति । हरिबाहनके मीत तासु पति तापति तोहिं बुलावति ॥ राकापति नहिं कियो उदौ सुनि यासमये नहिं आवति। विधिविलास आनंदरासिक सुख सूर श्याम तेरे गुण गावति ॥ ९८ ॥ राधा तैं बहु लोभ करयो।लावनरथतापति आभूपण आनन ओप हरयो। भ्रुकुटि कोदंड अवनि धरि चपला विवश ह्वै कीर अरयो । पिक मृणाल अलिअरित रूप सम,ते वपु आप धरयो ॥ जलचरगति मृगराजसकुचिजियसोचनजाइ परयो। सूरदास प्रभुको मिलि भामिनि निशि सव जात टरयो॥ ९९ ॥राग गौरी॥ राधे यामेंकहा तिहारो। मुख हिमकर तनु हाटक बेनी सो पन्नग अँगकारो ॥ गतिमराल केहरि कटि कदली युगल जंघ अनुहारो । नैन कुरंग वचन कोकिलके नासा शुक कहां गारो ॥ विद्रुम अधर दशन दाडिमकन करो न तुम निरवारो । सूरदास प्रभु त्रिभुवनपतिको एको न उनहिं उबारो॥२००॥ राग बिहागरो ॥ तोहिं किनरूठब सिखई प्यारी।नवल वैस नव नागरि श्यामा वैनागरगिरिधारी॥ सिगरी रैनि मनावत वीती हाहा करि हौं हारी । एतेपर हठ छांडत नाहीं वृषभानुदुलारी ॥शरद समय शशि दरशि समर सर लागे उन तन भारी। मेटहु त्रास दिखाय वदनविधु सूर श्याम हितकारी ॥ १ ॥राग ईमन॥ आजु तेरे तनमें नयो जोवन ठौरठौर सु वनायो पिय मिलिमेरेमनकाहे रूसि रही बे काज । अधिक राखे बडाई तोहि तोहि करें माई और सब त्रियनमें तू अधिकाई

अरु तिनमें भाग सुहाग विराजत आज ॥ रिस दूरि करि छिआ मानि मेरे कहे तोहिं रूमने न आवै लाज। सूर प्रभुको औसर अतिही भई अबेर गी वेग चलि सजि शृंगार काढि माठी सगवारो आइके साज ॥ २ ॥राग पूर्वी॥देख री कमलनैन मधुरमधुर बैननि हँसिहँसि कबके करत मनु-हारि । जब हरि नीचे चितवत भरिभरि अँखियन लाडिली वारति मानकी रिस निवारि॥ अति आसक्त जानि मनमोहन रीझि मान दान दै प्रीति विचारि । सूरदास प्रभुके चरणन पूज री आली प्रेम उमगि अंसु ढारि ॥३॥राग ईमन॥अनबोली क्यों न रहै री आली तू आई मोसों बात बनावन। बहुत सही हौं घरआए तेऊपर जात न तू लागी है पाछिली सुरति दिवावन ॥ वे अति चतुर प्रवीण कहा कहौं जिन पटई तोको बहरानन। सूरदास प्रभु जियकी दोनों की जानति कांच करोतीमें जल जैसे ऐसे तू लागी प्रगटावन॥४॥राग कान्हरो॥तू आई है बात बनावन । जाहि न द्यांति वैठिरही है ए आई है मोहिं मनावन ॥ आरि करत कहि मोहिं सुनावत जाइ रहै नहि ताके ।को उनकी ह्यां बात चलावै इतनो हित है काके ॥ इक रिस जरति मनहिं मन अपने तोहीको वै भावत ।सूरदास दरशन ता गृहको उहै ध्यान मन भावत ॥ ५॥राग केदारो॥यह कहि क्रोध मगन भई । रही एकटक सांस बिन तन विरह विवश भई ॥ बारबार सखी बुलावति कहा भई दई । नारि नउमी दशा पहुँची ह्वै अचेत गई॥ श्याम व्याकुल धरणि मुर्छे त्रिया रोष हई। सूर प्रभु गए तीर यमुना काम जरनि टई ॥ ६ ॥राग कान्हरो॥ रिसमें रसकी बात सुनाई । चतुर सखिन यह बुधि उपजाई ॥क्रोध मगन त्रिय चतुर जगाई । जागते दूतिका बोली तोको श्याम बुलाई ॥ उमधि गई तनु सुरति सँभारी फिरि बैठी लै मान ।कान्ह गए यमुनातट व्याकुल यह गति देखि अजान॥काहेको विपरीति बढावति यहकहि गई हरिपास । देख जाइ सूरके स्वामी कुंजद्रुमनतर बास॥ ७॥राग बिहागरो ॥ हरिमुख राधाराधा बानी । धरणीपरेअचेतनहीं सुधिसखी देखि विकलानी ॥ बासर गयो रैनि इक बीती बिन भोजन बिनपानी । बाँह पकरि तब सखिन जगायो धनिधनि शारँगपानी ॥ ह्यां तुम विवश भए हौ ऐसे ह्यां तौ वै विवशानी । सूर बने दोउ नारि पुरुष तुम दुहुँकी अकथ कहानी ॥ ८ ॥राग अडानो ॥ लाल अनमने कत होतहौ तुम देखो धौं देखो कैसेकैसेकरि ल्याइहौं। जलनिकटकीबारुजेसेगाढेगहि ऐसी कठिन होती त्रियाकी प्रकृति हांतो करहीकर पघिलाइहौं ।रिस अरु रुचि हो समुझिदेखि-हौं वाकेमनकी ढरनि वाकी भावती बात चलाइहौं। सूरदास प्रभु तुमहिं मिलैहौं नेक न ह्वैहौंन्यारेजैसेपानीमें रंगमिलाइहौं॥९॥ राग भैरव ॥ सखी गई हरिकोसुखदै ।व्याकुलजानिचतुरई कीन्ही अब आवति प्यारीको लै ॥ आतुरगई मानिनीआगे जाइ कह्यो अजहूँ रिस है। मोहन रहे मुरछि द्रुमके तर त्रिभुवनमें ह्वैहै यश है ॥ अजहूं कह्यो मानि री भामिनिउठिचलिमिलिपियको जिय लैहै। सूर मानगाढो त्रियकीन्होकहैबातकोउकोटिकलै॥१०॥राग सारंग॥ तूचलिरीत्रनबोली श्याम । कमलनैनके तू अति वल्लभ सुरति करी हरि आतुरकाम ॥ मुरलीमें तुव नामप्रकाशत तेरे हितको सुन री बाम। कोमलकरनि सुमन बहु तोरत रुचिसों सेज रचत गृह धाम ॥ मन क्रम वचन शपथ चरणनकी बिसरत नही तुम्हारो नाम।सूरदासप्रभुको मिलि भामिनि जो पायो चाहत विश्राम॥११॥राग गमकली॥रसिक राधे बोली नंदकुमार । दरशनको तरसत हरिलोचन तू शोभाकी धार ॥ खंजरीट मृग मीनमधुप मिलि रंभा रचि अनुसार। गोरि सकुचि शशि विरथ कियो रथ मेरु उलट्यो वडि तार॥ कौन हेतुते मिट्यो सितासित विछुरी कौन विचार। मन्दाकि-

नि मानो शिर धरिकै रुद्रनि करी पुकार॥राख्यो मेलि पीठिते परधन हर जु कियो बिनहार। सूरदास प्रभुसो हठकीन्हों उठिचल क्योंन सवार॥ १२ ॥ राग सारंग ॥ बोलतहैं तोहिं नंदकिशोर। मान छाँडि सखीनेक चितैरी पैयांलागों करौं निहोर॥ तरिवन तिलक बनी नकबेसरिचख काजर मुख सुरँग तमोर। सब शृंगार बन्यो यौवनपर लै मिलिमदनगोपालअकोर ॥ लताभवनमें सेज बिछाई बोलत सकल बिहंगम मोर।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको ज्यो दामिनिघनचंदचकोर ॥१३॥ राग केदारो ॥ चल राधे बोलत नंदकिशोर । ललित त्रिभंग श्यामसुंदर घन नाचत ज्यों बन मोर ॥ छिनछिन बिरस करतिहे सुंदरि क्यों बहरत मन मोर । आनँदकंद चंद वृंदावन तू करि नैन चकोर ॥ कहा कहौ महिमा तुअ भागकी पुण्य गनत नहिं ओर। सूर सखी पियपै चलि नागरि लै मिलि प्राण अकोर ॥ तोहिं बोलै री मधु केशी मथन। यमुनाकूल अनुकूल तृपारन चकित बिलोकत सकल पथन ॥ न करु बिलंब भूषण कृत दूषण चिहुर बिहुर नाना करन गथन । समुद कुमुद गति मकर मिलन दुति पसित भए सब नाथ नथन ॥ निकुंजनिकी सैन साजे एकाकी रमत सखी बियो न सथन । अति जु कुसुमवास सखी री तुम्हारी आश हरिजू रचि धरे अपने हथन॥युग जु जातपल श्रीगोपालके कुटिल तगकिरी चढे है रथन ।सूरदास अतिगति कामरत बासर गतभयोतुम्हरीकथन ॥ १४ ॥ राग सारंग ॥माननि मानमनायोमोर।हौंमाई पठई हौं तोपै प्रीतम नंदकिशोर ॥ तेरे बिरह वृषभानुनंदिनी मोहन बहरावत ढोर । तानतरंग मुरलिमें लैलै नाम बुलावत तोर ॥ बलि तुहि जाउं बेगि लै मिलऊ श्याम सरोज बदन तुव गोर ।सूरदास ऐसी दृष्टि सुधानिधि चरणकमल कमलाचितचोर ॥ १५ ॥ माननिनेकचितैयहि ओर । नाशत तिमिर बदन प्रकाशते ज्यों राजत रवि भोर ॥ तुव मुख कमल मधुप मेरो मन बिंध्यो नैनकी कोर । वक्रबिलोक माधुरी मुसुकनि भावतहै प्रिय तोर ॥ अंतर दूरिकरौ अंचलको होइ मनोरथमोर।सूर परस्पर रहौप्रेमवशदोउमिलिनवलकिशोर॥ १६ ॥ राग नट ॥कहि पठई हरिबात सुचितदै सुनि राधिका सुजान। तैजु बदन झाँप्यो झुकि अंचल इहै न दुख मेरे मनमान॥ यहपै दुसह जु इतनेहि अंतर उपजि परै कछु आन।शरदसुधा शशिकी नवकीरति सुनियत अपने कान॥ खंजरीट मृग मीन मधुप पिक कीर करतहैं गान । बिद्रुम अरु बंधूक बिंब मिलि देत कविन छबिदान ॥ दाडिमदामिनि कुंदकली मिलि बाढ्यो बहुत बखान । सूरदास उपमा नक्षत्र गन सब शोभित बिनभान॥ १७ ॥ राग सारंग ॥ रही दै घूँघटपटकी ओट। मनो कियो फिरिमान मवासो मन्मथ बंकट कोट ॥ नहसुत कील कपाट सुलक्षण दै दृग द्वार अगोट । भीतर भाग कृष्णभूपतिको राखि अधर मधु मोट ॥ अंजन आड तिलक आभूषण सचि आयुध बड छोट । भ्रुकुटीसूरगहीकरसारंगनिकरकटाक्षनिचोट॥ १८ ॥ राग बिलावल ॥तैं जुनीलपटओटदियोरी ।सुन राधिका श्यामसुंदरसो बिनहि काज अतिरोप कियो री॥ जलसुत बिंब मनहु जल राजत मनहुँ शरद शशि राहु सियो री । भुमिघिसनि किधौकनकखंभ चढिमिलिरसहीरस अमृतपियो री ॥ तुम अतिचतुर सुजान राधिका कत राख्यो भरि मानु हियो री । सूरदास प्रभु अँग अँग नागरि मनो काम कियो रूप बियो री ॥ १९ ॥ सारँगरिपुकी ओट रहे दुरि सुंदर सारँग चारि । शशि मृग फनिग ध्वनिग दोउ अँगसँग सारँगकी अनुहारि ॥ तामें एक और सुत सारँग बोलन बहुरि बिचारि । परकृत एक नामहै दोऊ किधौं पुरुष किधौं नारि ॥ ढाकति कहा प्रेमहितसुदरिसारँगनेकउघारि।सूरदास प्रभु मोहे रूपहि सारँगबदननिहारि ॥२०॥यहितेरे वृंदावन

याग। सुन राधिका कदमविटपनकी शाखाएक अमीफल लाग॥ श्याम अरुणकछु अधिक पीन छबि बरणि जाइ नहिं अंगविभाग।अतिसुपक मुरलीके परसत चुइचुइ उमँगिपरत रसराग।।व्रजवनिता वर बारि कनकमय रोके रहत सुधासुरनाग। तुवप्रताप छुइसकत न सुंदरि सुर मुनिमर्कटकोकिल काग॥ मैं मालिनि जतननिजल ज्ञुगयोसींचनसु हथपरे कर दाग। सूर सु श्रमउठिभेटिपरस्पर पिउ पियूपपाएवडभाग॥२१॥राग सारंग॥देखिश्यामकोवदनशशिमाई मोहिंअपनपौभूल्यो। विद्यमान या दृष्टिसरोवर मोहन वारिज फूल्यो॥वारि अगाध सघन वृंदावन चंचल लता तरंग। निगम मृणाल समृति पत्रावलि गावत मुनिजन भृङ्ग॥सुरभी सुभग हंस गोवृपमृग जलचर जीव अनंत। सुर कछु यह हाँ री अद्भुत लीला कमलाकंत ॥२२ रागविलावल॥ अव राधे नाहिन व्रज नीति। नृपभयोकान्हकाम अधिकारीउपजी है ज्योंकठिन कुरीति॥ कुटिलअलकभ्रुवचारुनैन मिलि सचरे श्रवणसमीप सुमीति। वक्रविलोकनिभेदभेदिया जोइकहतसोइकरतप्रतीति॥ मोचपिशुन लस दशनसभासद प्रभु अनंग मंत्री बिनभीति। सखि विन मिलें तौनावनिएहै कठिन कुराज राजकी ईति॥ मंदहास मुख मंद वचन रुचि मंदचाल चरणन भइमीति।नखशिखते चित चोर सकलअँग जस राजा तस प्रजा वसीति॥ तेरो तनु धनरूप महागुण सुंदर श्याम सुनी यह कीर्ति।सुकरिसूर जेहि भातिरहैपति जिनि वल वाँधि बढावहु छीति॥२३॥राग नट॥राधेतेरेरूपकी अधिकाइ। जो उपमा दीजे तेरे तनु तामें छवि न समाइ। सिंह सकुचि सर व्यथा मरति दिन बिन सोइ नीर सुकाइ। शशि उर घटत हेम पावक परि चंपककुसुम रहे कुम्हिलाइ॥ इभ तूटत अरु अरुण पकभएविधिना आन बनाइ।कद्रुज पैठि पताल दुरेरहि खगपति हरिवाहन भएजाइ॥हंसदुरयो।सर दुम्यो सरोरुह गज मृग चले पराइ।सुरज दास विचारि देखि मन तोर रसन पिक रही लजाइ॥२४॥राग मलार॥ राधे तेरो रुप न आनसो॥ सुरभीसुतपतिताको भूपण सुत धनउदितनपुंजे भानसो। अमी रसाल कोकिला जु साधे अंबुज चित अंकुराभिरामसो॥विद्रुमअधरदशन दाडिम विज भ्रुकुटी किए सुठानसो। सूरदासप्रभुसोंकवमिलिहौसुफलरूप कल्यानसो॥२५॥रागसारंग॥ राधे यह छवि उलटि भई। सारगऊपर सुंदर कदली तापर सिंह ठई॥ ताऊपर द्वै हाटक वरणीं मोहन कुभ मई॥ तापर कमल कमलविच विद्रुम तापर कीर लई। ताऊपर द्वै मीन चपल हैं सउती साध रही। सूरदास प्रभु देखिअचभो कहत नपरत कही॥ २६ ॥राग केदारो॥लागो या वदनकी बलाइ। खंजन तेरे खरे कटाक्षनि न्याउ गुपाल विकाइ॥ का पटतर द्यों चंद्र कलंकी घटत बढत दिन लाजलजाइ। जा शशिकीतुमआरि करतहौ चंद्र निहारो आइ॥ढोटाजोपैखरो अटपटो वात कहत बनाइ।सूरदासप्रभुतुम्हरेमिलनतेतनुकी तपत बुझाइ॥२७॥राग बिलावल॥जलसुतप्रीतमसुतरिपुबंधन आयुध आनन विलख भयो री। मेरुसुतापति वसत जु माथे कोटि प्रकाश रिसाइ गयो री॥ मारुतसुतपति अरिपुर वासी पितु वाहन भोजन न सोहाइ। हरसुत वाहन अशन सनेही मानहु अनल देह दव लाइ॥ उदधिसुतापति ताकर वाहन ता वाहन कैसे समुझावे। सूर श्याम मिलि धर्मसुवनरिपु ता अवतारहि सलिल वहावे॥२८॥ राग नट॥लोचनश्यामजूके सायक। नैन चितै वृपभानुनदिनी वश करि गोकुलनायक॥ यहै जानि पठई नँदनंदन तुम सब विधि सुखदायक। तू व्रजनाथशिरोमणि सजनी श्यामसुँदर पिय लायक॥ लग लागे पागे उर अंतर कठिन शिलीमुख पायक।सूरदासप्रभुमोहन जोरी करी कुंज मनभायक॥२९॥राग सारंग॥ जबते श्रवण सुन्यो तेरो नाम। तबते हा राधा राधा हरि इहै जु मंत्र जपत दुरि दाम॥ बस

निकुंज कालिंदीके तट सुरभी सखा छांडि सुखधाम। विरह वियोग महायोगी ज्यों जागतही बीतत युगयाम ॥ कबहुँक किसलय पीठ सुचिर रुचि,कबहुँक गान करत गुणग्राम । कबहुँक लोचन मूँदि मौन ह्वै चित चिंतत अँगअँग अभिराम ॥ तर्फत नैन हृदय होमत हवि मन वच क्रम औरै नहिं काम। तरफत नैनहु देत मनोहर ब्रह्मभोज बोलत विश्राम।सूरश्यामकृशगातसवहि त्रिधिदरशनदैपुरवैपियकाम॥३०॥ राग अडानो॥ मोहननीकोरीअतिनीको।तासोंनरूसनकीजे हितके मनाइ लीजे हँसतहसत दूरि करे न रिस जीको॥अति हिमा निनीजजेतेऊमेंमनाइदईअतिहि कठिन हठ देख्यो री तो तीको। दूसरी यामिनि गईत्योत्योंवृहठीलीभईसूरनिरखिमुखदेखो प्यारी पीको॥३१ ॥ राग बिहागरो ॥औरसखी इक श्याम पठाई।हरिको विरहदेखिभईव्याकुलमान मनावन आई ॥ बैठी आइ चतुरई काछे वह कछु नही लगार। देखतिहौ कछु और दशा तुव बूझति बारंबार। मनमन खिझति मानिनी याको कौने इहां पठाई । सूर सबन कछुमान मनायो सो सुनिके इह आई॥ ३२॥ राग बिहागरो॥ अजहूं मान तजत नहिं प्यारी।मदननृपतिके सैन साजिके घेरे आनि विहारी ॥ इतने कटक देखि मनमोहन भीत भए भय भारी । कुसुमबाण जित तितते छूटत खगरव घटा सवारी ॥ पल्लव पट निशान भँवरा भर मंजरी सलिल साटी । सूरदास प्रभुके सहायको उठि चलि वेगि हकाटी ॥ ३३ ॥ राग सारंग॥ वेगि चलौ वलि कुंवरि सयानी । समय वसंत विपिन रथ हँगे मदन सुभट नृप फौज पलानी॥ चहुँदिशि चांदनि निशा चंचली मनो धवलधर धूरि उडानी। सोरहकला छपाकरकी छवि शोभित शीश छत्र शिर तानी ॥बोलनि हँसनि चपल वंदीजन मनहु प्रशंसत पिक वर वानी । धीर समीर रटत वरअलिगण मनहुँकमोदिकमुरलिसुठानी ॥कुसुमशरासनअधिकविराजतकठिन मानगढ अति अभिमानी ।सूरदास प्रभुकी है यह गति करहु सहाय राधिका रानी ॥३४ ॥ राग मलार॥सुन री सयानी त्रिय रूसिवेको नेम लियो पावसदिनन कोउ ऐसो है करत री। दिशिदिशि घटा उठी मिलि री पियासों रूठी निडर हियो है तेरो नेक न डरत री॥चलिए री मेरी प्यारी मोको मान देनहारी प्राणहूते प्यारे पति धीर न धरत री। सूरदास प्रभु तोहिं दियो चाहे हितचित हसि क्यों नमिलै तेरो नेम है टरत री॥३५॥सेज रचिपचि साज्यो सघन कुंजनिकुंज चित चरणन लाग्यो छतिया धरकि रही। हाहा चल प्यारी तेरो प्यारो चौकिचौकि परे पातकी खरक पिय हियमें खरक रही ॥ बात न धरत कान तानतिहै भौंहबान तऊ न चलति बाम अँखिया फरक रही । सूरदास मदन दहत पिय प्यारी सुनि ज्योंज्यों कह्यो त्योंत्यों वरु उतको सरकि रही ॥ ३६ ॥ तूतो मोसो बात न कहति माई चलौगी कहांते। काहेको गहरु कीजै बिन थर कहा लीजै दीजै जाइ उत्तर में आईहौ जहांते ॥ अनोखी मानिनी नई पाहन पूतरी भई बैन न वदति और जरति नहांते ।आई हौं शपथ खाइ जात न परत पॉइ सूरदास प्रभु नवल पहॉते ॥ ३७॥राग सारंग॥उतते वे पठवत इतते ए नहिं मानत हौ तौ दुहुनि बिच चकडोरी कीनी।क्रोध भेप मुख सुदेश नैनन छवि न कहि आवै आतुर ह्वै उठिधाई रावरे लीनी॥तामरस लोचन हावभाव विन करे माने न मानिनी मान रंगभीनी।सूरजप्रभु राइशिरोमणिआपुहि चलि देखौक्योननायका नवीनी॥३८॥ हौं पिय रीझि आई गईही मान छुडावन पिय रीझि आई ।ऐसी छवि राजतहै मोपै सो वरणीनहिं जाई ॥ आपुन चलिए वदन देखिए जौलौं रहे निठुराई।सूर श्याम प्यारी अति राजति रावरीय दुहाई ॥३९॥राग कल्याण॥मैं तुम्हे हँसत खेलत छांडिगईअबन्यारेअनबोले रहेदोऊ ।इततुमरूखे ह्वै

रहे गिरिधर उत अनमनी अंचल उरमाइ मुख जंघ लगाइ रही ओऊ ॥ नीची दृष्टि करी धरणी नखनि करोवति एहो पिया तवहीं एकएक पृथक्तन चितै रही आहि कहाहो करी अब लोऊ । सूरदास प्रभुप्यारी अंकभरि जाइ लीजैछोडोछोडो कहनदेहु औरनमानैकोऊ४०राग ईमन॥अजहूँ रैनि तीन यामहे ज काहेको हरवरात श्यामज्ञ ।मेंतो वाकीप्रकृतिलिएकेहोवातजोपरिसदेखिहौंतो घरिक लागिहै तिहारी प्यारी लाडिली वामदेजु॥पेजकिएजाति ताहिअबलिएआनतिहौंमेरेतो तिहारे सुख सुख है याते कौन काम है जू ।सुनहु सूरज प्रभु अबकेमनाइ ल्याऊं बहुरि रूठायहौ ज तौ मेरी रामराम है जू ॥ ४१ ॥ राग सारंग॥ जहांबैठेमाधौतहांवृबुलाईराधेयमुनानिकटशीतल छहिआं आछी नीकी लागति कुसुंभि सारी गोरे तन परमचतुर चलि हरिपहिआं ॥ दूती एक गई मोहनपै जाइ कह्यो यह पियपहिआं । सूरदास सुनि चतुर राधिका श्याम रैनि वृंदावन- महिआं॥४२॥राग सही॥झूमकसारीतनगोरोहो।जगमगिरहोजराइकोटीकोछबि कीउठतझकोरोहो। रत्नजडितके सुभग तरौना मनहु जात रवि भोरे हो।दुलरीकठ निरखि पियइकटक दृगभएहेच- कोरेहो।सूरदासप्रभुतुम्हरे मिलनकोरीझिरीझितृणतोरहो४३॥राग ईमन॥ विरसकीजेनभामिनिरसमें रिसकी यात। हौं पठई तोहिलैन साँवरे तोहिविनु कछु न सोहात॥हाहाकरतितेरेपायनपरतिहौं छिनछिन निशि घटिजात। सूर श्याम तेरो मग जोवत अति आतुर अकुलात॥४४राग विलावल॥उठ राधे कत रैनि गँवावै । महिसुत गतितजि जलसुतगति ले सिंधुसुतापति भवन नभावै॥अलि वाहनको प्रीतम वाला ता वाहन रिपु ताहि मतावै । सो निवारि चलि प्राणपियारी धर्म सुनहि मति भाव न पावै ॥ शैलसुतासुतवाहन सजनी ता रिपु ता मुख शब्द सुनावै । सूरदास प्रभु पथनिहारत तोहिऐसो हठक्योंबनिआवै॥४५॥राग विहागरो ॥ उत्तरनदेतमोहनीमौनह्वैरहीरीसुनि सब वात नैकहु न मटकी री। अबधौं चलैगी कब रजनी गई री सब शशिवाहनवरनीवेदेखिलट- कीरी ॥ चैन गी करे थरे री मानि कपोल भव नख लिखे तिलहु न कछु मटकी री।मुगुध वधूरी शठ कहेको करोहेहठ परमभावती तून [illegible] तमचुर रटकी री ।सूर सखि जाइचलि [illegible] ॥४६॥राग सारंग॥जिनि हठ करहु सारँगनैनी॥सारँगससिसारगपरसारँग ता सारँगपरसारँगवेनी॥ सारँगरसन दशन पुनि सारँग सारग सुत दृग निरखी पैनी ॥सारँग कही सु कौनविचारौसारग- पति सारँग रचि मैनी ॥ सारँग सदनहि लै ज्यु वरन गई अजहूँ न मानति गत भई रैनी । सूरदास प्रभु तुव मगजोवै तूअघकरिपु तारिपुसुखदैनी॥४७राग विहागरो॥शर्वरीसवै बिहानीतोहिमनानति रावारानी। शुक्र उदय होन लाग्यो जागे तमचुर टरिआई जु मृगानी।प्रफुलित ममल गुंजारकरत अलि पहुफाटी कुमुदिनि कुँभिलानी।सूर श्यामवन मुरछि परेहैमाननिशारो सोपेक्योंझहरानी४८ राग विहागरो॥श्यामा प्यारी बोलन लागे तमचुर घटिगई रजनी।अरी वे मनमोहन व्रजनायकठाढे सजनी ॥ ठाढे रैं हरि कुंज द्वारे ललित वेणु बजाइ हो । श्रवण सुनत कैसे रहत कैसे तोहिं गेह सुहातहो। तुम कुँवरि वृषभानुकी कछु नेह प्रीति न जानहू । कहि पठई हरि तोहिं काहे न चित्तमें कछू आनहू॥नदनंदन कह्यो एसे सुदरीह्यां आइहो।और नहिं कछु काजवनमें नेकमधुर सुर गाइहो ॥ सूर प्रभुहि विचारि मनमें प्रीतिसों उर लाइए । यहै पुनि पुनि मैं कहति राधिका मनवांछित फल पाइए॥४९राग केदारो॥मोहन तेरेअधीनभएरी इतिरिसकवते कीजतरीगुणआगरी नागरी।तेरेअनउत्तर सुनिसुनि श्याम हसिहँसिदेत नैकचित इत भागआगरी॥तेरोई भागसुहाग तेरोई अनुराग तेरेही माथे रति री तू सुन रूपउजागरी।सूरदास प्रभु तेरो मग जोवत तुहीतुही रट लागी जैसेमृगिनी भूलीनागरी॥५०राग नट॥कौनकुमतिआई री जोकह्योनमानति ।छाँडिमानसुन

बात सयानी कत हरिसों हठ ठानति॥यह निशि वृथा विहाय पियाविन सोच नहीउरआनति। बोउत श्याम श्याम दामिनिको मनो शरद ऋतु जल घटत न जानति॥धनुप कलाप सही सब सिखि कै भई सयानी गानति।सूर सुंदरी आपुही कहा तू शर संधानति ॥५१॥तू सुन कानदेरी मुरलीध्वनि तेरे गुण गावैं श्याम कुंज भवन । सन्मुख ठाढे है ताहीको अक भरत तेरे तनु परसे ज्यो आवतु पवन ॥तेरो स्वरूप आनि उरअंतर नैन मूंदि निकसन कहत न करतगवन।सूर-दास प्रभुकेतू तन मन रमिरही रोमरोमप्रति याहीते नाम पायो राधारवन॥५२॥राग केदारो॥ प्यारी है प्रीतम आरति करतु।तुम्हरे काजे कुंवरि राधिका मेरे पांइनि परतु॥ बरहीमुकुट लुढतअवनी-पर नाहिंन निजभुजभरतु।वारंवार रहटकेवट ज्यों भरिभरि लोचन ढरतु॥अति आधीन मीनज्यो जलविनु नाहिंन धीरज धरतु।सूरसुजान सखी सुन तुम विनु मन्मथ पावक जरतु॥५३॥राग सारंग॥ मृगनैनी तू अंजन दे। नवल कुंज कालिंदसुतातट पीको सर्वसु लै॥ शोभित तिलक मृगमद रुचि शुचि भुव वंक चितै ॥ हाटक घाटै सुधा पियनको नागिनि लट लटकै।नैन निरखि अंग अंग निरखियो अनख पिया जु तजै॥बादर वसन उतारिवदन यों चंदा जों न छपै।खंजन मीन अंजन दे सकुचेकविसो काहिं गनै॥सूरश्यामको वेगि दरश देहु काम मदनजुडहै॥५४॥राग नट॥राधे कत रिस सरस तई।तिष्ठति जाइ वारवारनि पै होति अनीत नई॥नित तुव जलनि सिंधुसुतमान-त मृगमद श्याम दई । जल थल खगनि सुमन गुरु दोऊ द्विज दुति किरन भई ॥ विहरत कुंज विलासिनि पद्मिनि सकुच नसे तकई। दुखी दुरे फल ग्राहि विरहिनी अतिअपराध बई ॥ अब तुम जाहु निकुंज भामिनी नातरु करत खई।परसै सूर चतुर चिंतामणिविपुल विलास मई॥५५॥ राग देवगधार ॥मानिनि मानत क्यों न कह्यो । प्रथम श्याममन चोरि नागरी अबक्यो मानगह्यो॥ जानति कहा रीति प्रीतमकी वन जन जोग मह्यो। रुद्र वीर रवि शेप सहसमुख तिनहुँ न अंत लह्यो ॥ बैठे नवल निकुंज मंदिरमें सो रस जात बह्यो। सूरज सखि मोहनमुख निरखहु धीरज नाहिं रह्यो ॥५६॥राग नट॥ कुंजभवनमें ठाढे देखो अँखियनभरितवमैंजाऊंगी वलि। मोपै न देखे परे खरे द्रुमडार गहे अकेले नेक तू ठाढीहो ढिग चलि॥ तेरोरी वदन प्रफु-लित अंबुज हरिजूके नैना मैं देखे अतिआतुरअलि । सूरदास नँदनंदन प्यारे नेक न कीजै हाहा दूरिकरोमानैमिलि॥५७ राग केदारो ॥ तेरेमानवनहुतेरीमानिनिनीकोलागतऐसेहिजौलौलालहिलै आऊं। औरनकी हाँसी खेल तिहारी रुपय माय विरसमे यह रस नैनन आनि देखाऊं॥ उलटि पियपै जाऊंनौतम चोप वढाऊं सोरह कलाको शशि कुहु विगसाऊं । सूरदास प्रभु गिरिधरन-सोंहिलिमिलिवेकोयहसुखरूपअनूपमपाऊं॥५८॥राग विहागरो ॥कहतश्यामसोजाइमनावोमेरेकहे न मानैजू। कहा रही मौन चालि न कहूं अनुमानैजू ॥ कहा मनमें घालि बैठी भेद मैनहिं लखि सकी। आप ह्यां वह वहां बैठी जात आवत हौ थकी॥ नेकहू जो कह्यो मानै कोटि भांतिन मैं कही।हाहा करि मनुहारि करिकरि सुनतही अतिरिस गही॥ कहा बैठे चले वनिहैं आपुहू नहिं मानिहौ । तुमकुँवर वरहीके वाढे अबकछू जियजानिहौ ॥ वेगि चलिए अनखिजैहै तुम इहां उह वहां जरतिहै। वाके जिय और हैहै कपट करि हठ धरतिहै ॥ राधिका अति चतुर जानौ जाइ ता ढिगही रहौ । कहा जो मुख फेरि बैठी मधुरमधुर वचन कहौ। सूरप्रभु अब बनै नाचे काछ जैसो तुम कछ्यो। कहियत गुण प्रवीन राधाकोघहीमें विप भछ्यो॥५९॥ सुनि यह श्याम विरहभरे। वारंवारहि गगन निहारत कबहूँ होतखरे॥ मानिनी नहिं मानमोच्यो

दूसरी निशि आजु। तब परे मुरछाइ धरणी काम कर्यो अकाजु॥सखिन तब भुज गहि उचाए कहा नागर होत।सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपने गोत॥६०॥राग बिलावल सही॥श्याम चतुरई कहाँ गवाई। अब जाने घरके बाढेहौ तुम ऐसे कहा रहे मुरझाई॥बिना जोर अपनी जोबनके ऐसे पुन कियो चाहत। आपुन रहत अचेत भए क्यों रत मानिनि मन दाहत॥ रहई रहौ कहँगी तुमको कनई जाइ रहे बहुनायक।सूर श्याम मनमोहन कहियत तुम हौ सबहीगुणके लायक॥६१॥राग रामकली॥तब हरि रच्यो दूतीरूप। गए जहँ मानिनी राधा त्रियास्वांग अनूप॥ जाइ बैठे कहत सुख यह तू इहा तब श्याम। मैं सकुचि तहँ गई नाहीं फिरी कहि पति वाम॥ सहज बातें कहत मानो अब भई कछु और। तू इहां वे वहां बैठे रहत एकहि ठौर॥ कहाँ मोसों कहा उपजी वे रटत तुव नाम। सुनतिहि कछु बचन राधा सूर प्रभु तनवाम॥ ६२॥ गर्वे तैं अति मान कर्यो। यह कहि हरि पछितात मनहिमन पूरब पाप पर्यो॥ पहिली अपनी कथा चलायो जब त्रिय भेष धर्यो। तब तेहि रूप अनूप सुसुरि सुनि त्रिभुवन चित्त हर्यो। मोहे असुर महामद माते सुर मुख अमृत भर्यो। शिव गणसहित समेत महामुनि को व्रतते न टर्यो॥ ताननकी छबि निरखि सुर शिव छल ज्यों ज्ञान गर्यो।जेहि जाग्यो जगकाम सु मायो तैं हठ ज्ञान जर्यो॥६३॥राग बिहागरो॥इतो श्रम नाहिन तबहू भयो। धरणीधर विधि वेद उधार्यो मधुसो शत्रु हयो॥ द्विजरूप कियो दुसहदुख मेट्यो बलिको राज लयो।तोर्यो धनुष स्वयंबर कीनो रावन अजित जयो॥ अघ बक वत्स अरिष्ट केशि मथि दावानल अचयो॥त्रिय-वपुधर्यो असुर सुरमोहे को जग जो नहयो॥जानोनहीं रहा यारसमजे हिशिरमहजनयो।सूर सुबल अबता हिमनानतमो हिमननिमरिगयो॥६४॥राग मलार॥समुझिरीनाहिननईसगाई।सुनराधिके तोहि माधौ सों प्रीति सदाचलिआई॥ जाजब मान कियो मोहनसों बिकल होत अधिकाई। बिरहानल मन लोक जरतहै आपु रहत जलसाई॥ सिंधु मथ्यो सागर नल बांध्यो रिपुगणजीति मिलाई॥ अब मो त्रिभुवननाथ नेहबश बन बाँसुरी बजाई। प्रकृति पुरुष श्रीपति सीतापति अनुक्रम कथा सुनाई। सूर इती रसरीति श्यामसों तैं ब्रजबसि बिसराई॥६५॥ राधिका तजि मान मयाकरु। तेरे चरण शरण त्रिभुवनपति मेटि कल्प तू होहि कल्पतरु॥ जिनके चरण कमल मुनि बंदत सो तेरे ध्यान धरे धरणीधर।अहोबावरी कहाते कीन्हो प्रीतम पठैदियो वैरनिघर॥ तुम नागरि वे श्री नागर वर तुम सुंदरि वे श्रीसुंदरवर। वे हरि तो दुख हरत सबनको तू वृषभानुसुता हरिको हर॥ जो शुकि कछुक कह्यो चाहतिहै उनहिं जानि सखि मोहीसों डर।नतरहौं सूर निरखि नैनन भरि आधो उघरि लाल ललिताक्षर॥६६ राग बिलावल॥श्याम चतुरई जानतहौ।एगुण तुमअजहू नहिछा-डो इन छदनिमि मानतिहौ॥ तुमरस्सवादकरन अबलागे जे सबतेउ पहिचानतिहौ। वे बातें अब दूरि गईं तू ते गुणगुणिगुणिमाननिहौ॥यह कहि बहुरि मानगहिबैठी जियहीजियअनुमानतिहौ। सूर करौजोरजोइमनभावे इहैबातकरिमानतिहौ॥६७॥राग बिहागरो॥ यहकहिबहुरिमानकियो। रिसनि थरथर होति बाला योग नेम लियो॥ कहति मनमन बहुरि मिलिहौं अब न करौं विलास। ध्यान धारे विधिको मनावै लेति उरध उसाँस॥त्रियाको जिनि जन्म पाऊ जिनि करै पतिनारि। जनम तो पाषाण माँगौं सूर गोद पसारि॥६८॥ ॥राग बिलावल॥श्यामचले पछिताइकै अति कीन्हो मान। व्याकुल रिस तन देखिकै मन गयो सयान॥ बैठे शीश नवाइकै निनधीरज प्रान। दूती तुरत बोलाइकै पठइ दे आन॥बिरहाके बश हरि परे त्रिय कियो अनुमान।धीर धरौ मैं जातिहौं करिये कछु ज्ञान॥ सावधान करिकै गई दूतिका सुजान। सूर महा वह

”

मानिनी मानो पापान ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ ६९ ॥प्यारी अश परायो दै री। मेरी सिख सुन रसिक राधिका मनमें न्याउ चितै री ॥ आप आपनी तिथिवाई दुहि अचवत अमरसवै री। हर सुरेश सुर शेप समुझि जिय क्यो प्रभु पान करै री ॥ वह झूठो शशि जानि बदन विधु रच्यो विरचि इहे री। सौप्यो सुपति निचारि श्याममित सो तू रही लटि लै री॥ जाकी जहां प्रतीति सूर सो सर्वस तहा सचै री।सिधु सुधानिधि अर्पिअवहिंउठि विधु पुनि नही पचै री ॥ राग बिहागरो ॥ राधिका हरि अतिथि तुम्हारे। रतिपतिअशन काल गृह आए उठि आदर करि कहे हमारे॥ आसन आधी सेज सरकि दै सुख पैहै पद हरपि पखारे। अर्घ्यादिक आनद अमृतमें ललित लोल लोचन जलधारे॥ धूप सुवास ततक्षण वशकरिमनमोहत हँसि दीप उजारे। वचनरचन भुवभग अवर अँग प्रेम मधुर रस परसिन न्यारे॥ उचितकेलिकटु तिक्त त्यागि पट अमल उलटि अकमहठि हारे। नखछत छार कसाई कुचग्रह चुबनसंपिमर्पि सवारे ॥ अधरसुधा उपदश सीक शुचि विधु पूरणमुखवास सचारे। सूर सुकृत सतोपि श्यामको बहुत पुण्य यह व्रत प्रतिपारे॥७१॥ राग धनाश्री ॥अब मोहिं जानिए सो कीजे।सुन राधिका कहत माधो यो जो बूझिए दड सो लीजे ॥ उरउर चापि वॉधि भुजबधन नखनाराच मेम तकि दीजे। भौह चढाइ रिमाइ दशन दशि अधरसुधा अपने मुख पीजे ॥जिनि करै निलब भामिनी सुरस सोई करो जेहि गात पसीजे। ग्रथि गुणनि गहि गूढ गाठि दै छुटै न कबहूँ श्रमजल भीजे॥ सुन सखि सुमुखि पॉइ लागतिहौं दपति अरसपरस तनु छीजे।सूर श्यामसँग रम मिलिविलसहु जीवन सफल यहै सुख लीजै ॥७२॥ राग गुडमलार ॥गह्यो दृढ मान वृपभानुनारी। डुलै वरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनसा डुलै कचन मेरु रहि निहारी॥ रैनि रवि उठो वासर चद्र होइ वरु डुलै सव नखत यह होइ भाखै। धरणि पलटै सिंधु मर्यादको तजै शेपशिर डुलनहि मान नाखै॥बाझ सुत जनै इकठो काठ पछ्वै विफल तरु फलै विन मेघ पानी।सूर प्रभु यह सुनो वरु अचलचल थके मनहिं मन दूतिका कहति वानी॥७३॥राग कान्हरो॥दूती यह अनुमान करै। कासो कही सुनै को गेरी कैसे कह्यो परै॥हरि पठई मोको आतुर करि यह जिय सोचकरै।कैसे वचन कहौ या आगे यह अनुमान करै॥चतुर चतुरई फवै न यासो सुनि रिस अतिहि करै। सूर सहजही मान मनाऊँ जो यहकवहुँ करै॥७४॥मानलीला॥राग मलार॥मान मनायो राधा प्यारी।दहियतमदन मदननायकही पीर पीरते न्यारी॥तू जु झुकतदैऔर रूसने अनकहि कैसे रूपी। विनही गिरिर तमक तामसते तुव मुख कमल विदूपी॥सुनियतनिरद रूप रसनागरि लीन्ही पलटि कछूसी।तेरे हती प्रेम सपति सखी सो सपति केहि मूसी। उन तन चितै आपतन चितवहुअहोरूपकीराशी। पिय अपनो ना होइ तऊ ज्यो ईस सेइए कासी॥तुमतो प्राण प्राणप्रछभके वे तुव चरणउपासी। सुनिहैं कोउ चतुर नारि कत करत प्रेमकी हासी॥ज्योज्यो मौन भई तुमउनके वाढी आतुरताई। कान्ह आन वनितारत सुनिसुनि जिय बैठी निठुराई॥ हिए कपाट जोरिजडि ताके बोलतनही बुलाई। हा राधाराधा रट लागी चित चातककी नाई॥ जोपै मानत भावरि नाहीं भावरि मानन होई। हियते वादि प्रेमरति वति हौ अत भावतो सोई ॥ जो गोरी पियनेहगरन तौ लाखकहैकिन कोई।काहू लियो प्रेमपरचो वह चतुर नारि है सोई ॥ क्त होरही नारि नीची करि देखन लोचनझूलै। मानहु कुमुद रूठि उडुपति सो किए धर्म मुख फूले॥वे तौ हित वृपभानुनदिनी सेनत यमुनाकूलै। तेरे तनक मान मोहनके सबै सयानप भूलै॥ अहो इदुवदनी सुन सजनी

दूसरी निशि आजु। तब परे मुरछाइ धरणी काम कर्यो अकाजु॥सखिन तब भुज गहि उचाए कहा बावरे होत।सूरप्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपने गोत॥६०॥राग बिलावल मूही॥श्याम चतुरई कहाँ गँवाई। अब जाने घरके बाढेहो तुम ऐसे कहा रहे मुरझाई॥विना जोर अपनी जोबनके कैसे सुख कियो चाहत। आपुन दहत अचेत भए क्यों उत मानिनि मन दाहत॥ उहई रहो कहेगी तुमको कतहूँ जाइ रहे बहुनायक।सूर श्याम मनमोहन कहियत तुम हो सबहीगुणके लायक॥६१॥राग रामकली॥तब हरि रच्यो दूतीरूप। गए जहँ मानिनी राधा त्रियास्वांग अनूप॥ जाइ बैठ कहत मुख यह तू इहाँ बन श्याम। मैं सकुचि तहँ गई नाहीं फिरी कहि पति बाम॥ सहज बातें कहत मानो अब भई कछु और। तू इहां वे वहां बैठे रहत एकहि ठौर॥कहो मोसों कहा उपजी वे रटत तुव नाम। सुनतिहि कछु वचन राधा सूर प्रभु वनधाम॥ ६२॥ राधे तैं अति मान कर्यो। यह कहि हरि पछितात मनहिंमन पूरब पाप पर्यो॥ पहिली अपनी कथा चलायो जब त्रिय भेप धर्यो। तब तेहि रूप अनूप सुमुखि सुनि त्रिभुवन चित्त हर्यो। मोहे असुर महामद माते सुर मुख अमृत भर्यो। शिव गणसहित समेत महामुनि को व्रतते न टर्यो॥ तातनकी छवि निरखि सूर शिव छत ज्यों ज्ञान गर्यो।जेहि जार्यो जगकाम सु माधौ तेरे हठ जात जर्यो॥६३॥राग बिहागरो॥इतो श्रम नाहिंन तबहूं भयो। धरणीधर विधि वेद उधार्यो मधुसो शत्रु हयो॥ द्विजनृप कियो दुसहदुख मेट्यो बलिको राज लयो।तोर्यो धनुप स्वयंवर कीनो रावन अजित जयो।

वपुधर्यो असुर सुरमोहे को जग जो

अबतोहिमनावतमोहिसबबिसरिगयो॥६४॥राग मल्हार॥समुझिरीनाहिननईसगाई।सुनराधिकेतोहि माधौ सों प्रीति सदाचलिआई॥ जबजब मान कियो मोहनसों बिकल होत अधिकाई। बिरहानल सब लोक जरतहैं आपु रहत जलशाई॥ सिंधु मथ्यो सागर बल बाँध्यो रिपुरणजीति मिलाई॥ अब सो त्रिभुवननाथ नेहबश बन बाँसुरी बजाई। प्रकृति पुरुष श्रीपति सीतापति अनुक्रम कथा सुनाई। सूर इती रसरीति श्यामसों तैं व्रजबसि बिसराई॥६५॥ राधिका तजि मान मयाकरु। तेरे चरण शरण त्रिभुवनपति मेटि कल्प तू होहि कल्पतरु॥ जिनके चरण कमल मुनि बंदत सो तेरो ध्यान धरे धरणीधर।अहोबावरी कहा तैं कीन्हो प्रीतम पठैदियो बैरनिघर॥ तुम नागरि वे श्री नागर वर तुम सुंदरि वे श्रीसुंदर वर। वे हरि तो दुख हरत सबनको तू वृषभानुसुता हरिको हर॥ जो झुकि कछुक कह्यो चाहतिहि उनहिं जानि सखि मोहीसों लर।तबहीं सूर निरखि नैनन भरि आयो उघरि लाल ललिताक्षर॥६६ राग बिलावल॥श्याम चतुरई जानतहो।एगुण तुमअजहूं नहिछांडो इन छंदनिमें मानतिहो॥ तुमरसबादकरन अबलागे जे सबतेज पहिचा[illegible]॥६७॥ दूरि गईं जु ते गुणगुणिगुणिगानतिहो॥[illegible]॥जानि मदनमोहनतनु बातबातअधिका- सूर करोजोइजोइमनभावै[illegible]।तह समुझहु भले सयानी। मनकी चोप मान कीजतु कह थोरेही [illegible] मूँदि पटसों हठि भामिनि नेक न बदन उघारै। हरि हित वचन रसाल कठिन पाहन ज्यों दून उतारै॥ धरे श्रीवपट सन्मुख ठाढे नेक न कोप निवारै।जा आधीन देव सुर नर मुनि सो दीनता पुकारै॥ खन गावै खन बेन बजावै कमलभृंगकी नाहीं। खन पायनतन हाथ पसारै छुवन न पावै छाहीं॥ खनखन लेहि बलाइ बामकी लालच करि ललचाहीं।कहेआनकी आन सौंह दे खनखन हाहा खाहीं॥ कबहुँक निकट बैठि कुसुमावलि अपनेकरपहिरावै।जोइजोइ बात भावतिहि भावे सोइसोइ बात चलावै॥जितहिजितहि रुख करै लडैती तितही आपुनआवै।

मानिनी मानो पापान ॥ ॥ राग धनाश्री ॥ ६९ ॥प्यारी अश पगयो देरी। मेरी सिख सुन रसिक राधिका मनमे न्याउ चितै री ॥ आप आपनी तिथिवाई दुहि अचवत अमरसवै री। हर सुरेश सुर शेप समुझि जिय क्यो प्रभु पान करै री ॥ वह झूठो शशि जानि बदन विधु रच्यो विरचि इहै री। सौप्यो सुपति विचारि श्याममित सो तूं रही लटि लै री ॥ जाकी जहां प्रतीति सूर सो सर्वस तहां सचै री।सिंधु सुधानिधि अर्पिअवहिउठि विधु पुनि नही पचै री ॥ राग बिलावल ॥ राधिका हरि अतिथि तुम्हारे। रतिपतिअशन काल गृह आए उठि आदर करि कहे हमारे ॥ आसन आधी सेज सरकि दै सुख पैंहे पद हरपि पखारे। अर्घ्यादिक आनद अमृतमें ललित लोल लोचन जलधारे॥ धूपसुवास ततक्षण वशकरिमनमोहत हँसि दीप उजारे।वचनरचन भ्रुवभंग अवर अँग प्रेम मधुर रस परसिन न्यारे॥ उचितकेलिकटु तिक्त त्यागि पट अमल उलटि अकमहठि हारे। नखछत छार कसाई कुचग्रह चुवनसर्पिमर्पि सवारे ॥ अधरसुधा उपदश सीक शुचि विधु पूरणमुखवास सचारे। सूर सुकृत सतोपि श्याम-को बहुत पुण्य यह व्रत प्रतिपारे॥७१॥ राग धनाश्री ॥अव मोहि जानिए सो कीजे।सुन राधिका कहत माधो यों जो बूझिए दड सो लीजै ॥ उरउर चापि बाँधि भुजबधन नखनाराच मैम तकि दीजे। भौह चढाइ रिसाइ दशन दशि अधरसुधा अपने मुख पीजे ॥जिनि करै विलब भामिनी सुरस सोई करौ जेहि गात पसीजे। ग्रथि गुणनि गहि गूढ गांठि दै छुटै न कबहूँ श्रमजल भीजे॥ सुन सखि सुमुखि पाँइ लागतिहौ दपति अरसपरस तनु छीजे।सूर श्यामसँग रम मिलिविलसहु जीवन सफल यहै सुख लीजे ॥७२॥ राग गुडमलार ॥गह्यो दृढ मान वृषभानुवारी। डुलै वरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनसो डुलै कचन मेरु रहि निहारी॥ रैनि रवि उठौ वासर चद्र होइ वरु डुलै सव नखत यह होइ भाखे। धरणि पलटै सिंधु मर्यादको तजै शेपशिर डुलैनहि मान नाखे॥ वांझ सुत जनै उकठो काठ पह्लवै विफल तरु फलै विन मेघ पानी।सूर प्रभु यह सुनौ वरु अचलचल थके मनहिंमन दूतिका कहति वानी॥७३॥ राग कान्हरो॥दूती यह अनुमान करै। कासो कहौ सुनै को गेरी कैसे कह्यो परै॥हरि पठई मोको आतुर करि यह जिय सोचकरै।कैसे वचन कहौं या आगे यह अनुमान करै॥चतुर चतुरई फबै न यासो सुनि रिस अतिहि करै। सूर सहजही मान मनाऊँ जो यहकवहुँ करै॥७४॥ मानलीला॥राग मलार॥मान मनायो राधा प्यारी।दहियतमदन मदननायकही पीर पीरते न्यारी॥तू जु झुकतहैऔर रूसने अवकहि कैसे रूपी। विनही शिशिर तमक तामसते तुव मुख कमल विदूपी॥सुनियतविरद रूप रसनागरि लीन्ही पलटि कछूसी।तेरे ... सखी सो सपति केहि मूसी। उन तन चितै आपतन चितवहुअहोरूपकीराशी। माही। चारन धेन फेन माथ पावने ... कासी॥तमती प्राण प्राणवल्लभके वे तुव चरणउपासी। वैठन गोप सभाही। भूपण मोर पयूपन मुरली तिनके प्रेम कहाहाई तमउनके वाढी आतुरताई। कुरग वँधेसे।चातक रटै चकोर न सोवै मीन विना जल जैसे॥ जहां मान तहां मा? वोलतनही न गनिये ऐसे। प्रेममांझ जो करहिंरूसनो तिनहिंप्रेम कहिकैसे ॥ कापतरिसनपीठि दैवैठी मणिमाला तन हेरयो। निरखि आप आभास सयानीवहुरि नैनमुख फेरयो॥ लिएफिरतउरमाझदुराए जानत लोग अँधेरो। एते मान भावती तो कत मान मनावत मेरो ॥ तेरीसौं आभास तिहारो यहां और को जोरै॥ लै दर्पण मणिघरयो पांइतर देखि दुहुँनिमि कोहै॥लघु अपराध दासको त्रासै ठाकुरको सव सोहै। निरखिनिरखि प्रतिविंव उहै तनु नैन नैनमिलि मोहै ॥ नेक मोहिंमुसकात

कत पलकन पल जोरो।तुव मुख दरश आशके प्यासे हरिके नयन चकोरे ॥ तेरे बल भामिनी वदत नहिं उपजत काम हिलोरे।सुनियन इते चतुर नागर ते तनक मान भये भोरे ॥ तब दूती फिरि गई श्यामपै श्याम वहां पग धरिए । जेहि हठ तजे प्राणप्यारी सो जतन सवारे करिए ॥ वे वैसे तुम ऐसे वैसे कहो काज का सरिए। कीजे कहा चाव अपनी कत इहां मसूसन मरिए॥ अपनी चोप आप उठि आए ह्वैरहे आगे ठाढे । भूलिगयो सब चतुर सयानप हुते जो बहु गुण गाढे॥ डोलत नहिं बोलत न बुलाए मनहुं चित्र लिखि काढे । परचोनकामनारिनागरसों ईश्वरहीके बाढे ॥ निबह्यो सदा आरहीको हठ यह जो प्रकृति तुम्हारी। आपुनहीअधीनह्वैठाढे देखि गोवर्धनधारी ॥ प्राणहि पियहि रूसनो कैसो सुन वृषभानुदुलारी । कहूं न भई सुनी नहिं देखी रहे तरंग जल न्यारी ॥ रिस रूसनो मिलन पलकनको अति कुसुंभरँग जैसो।रहै न सदा छुटत छिनभीतर प्रात ओस तृण तैसो ॥ वे हैं परममलीन किए मन उठि कहि मोहन वैसे । घर आए आदर न न किए बैठी दूध अँचैसे ॥ वे तो भँवर भावते मनके औरबेलिके लोभी । कीजे मान मदनमोहनसों बात कहे हँसि नोखी॥ तुम जानहु की लाल तुम्हारो तुमहिं उनहिं है ऐसी।याहीते तुम गर्व भरीहो वे ठाढे तुम वैसी ॥ जोवनजल वर्षाकिनदीज्योंचारिदिनाकोआवे।अंनअवधिही लौ नातो जो कोटिक कलह उठावे ॥ वल्लभको वल्लभको मिलिर्वो तुमहिं कौन समुझावे । लै चलि भवन भावतेहिं भुज गहि को कहि गारि दिवावे ॥ झुकि ठेली ह्यांते रिसहाती कौने सिखे पठाई । लै किन जाहि भवन अपने ह्यां लरन कौनसों आई ॥ कांपतिरिसन पीठिदे बैठी सहचरि और बुलाई । कछु सीरी कछु ताती बाणी कान्हहि देत दोहाई ॥ कबहुंक लै धरि दर्पण मोहन ह्वै रहे आगे ठाढो । इत नागरी उतहि वै नागर इन बातनको चाढो ॥ बडे बडाईको प्रतिपालें वडो वडाई छीजे । ताके वडी वडी शरणागत वैर वडेसों कीजे ॥ तू वृषभानु बडेकी बेटी तेरे ज्याए जीजे । रासहुवैर हिए गहि मोसों वैरि हिर्पा ठिन दीजे॥ भामिनिऔरभुअंगिनि कारी इनके विषहि डरेए । राचेहूं विरचे सुख नाहीं भूलि न कबहूं पत्येए॥इनके वश मन परे मनोहर वहुत जतन करिपैए । कामी होइ काम आतुर तेहि कैसेके समुझैए ॥जि जे प्रेमछके में देखे तिनहिं न चातुरताई । तेरे मान सयान सखी तोहिं कैसेके समुझाई ॥ बहुरी भए सहचरी मोहन ताके अपनी घातें ।लागे काम सखीके धोखे कहत कुंजकी बातें ॥सुधि करि देखि रूसनो उनको जब खाई हाहा तें ।आप पीर परपीरन जानति भूली जोवन मातें॥कबहु न भयो सुन्यो नहिं देख्यो तनुते प्राण अबोले ।होत कहाहै आलसहू मिस छिन घूँघटपट खोले॥पावति कहा मानमें तू री कहा गँवावतिहै हँसि बोले।कालिहि प्राणनाथ तुमप्यारी फिरिहो कुंजनिडोले॥ कहा रही अतिक्रोधहिए धरि नेक न दया दयानी।प्रगटयोजानि मदनमोहनतनु बातबातअधिकानी ॥ हितकी कहे अनख लागतिहै समुझहु भले सयानी ।मनकी चोप मान कीजतु कह थोरेही गरुवानी ॥ रही मूँदि पटसों हठि भामिनि नेक न वदन उघारे। हरि हित वचन रसाल कठिन पाहन ज्यों दून उतारे ॥ धरेमीनपट सन्मुख ठाढे नेक न कोप निवारे।जा आधीन देव सुर नर मुनि सो दीनता पुकारे ॥ खन गावै खन बेन बजावै कमलभृंगकी नाही । खन पायनतन हाथ पसारे छुवन न पावै छाहीं ॥खनखन लेहि बलाइ बामकी लालच करि ललचाहीं ।कहेआनकी आन सौंह दे खनखन हाहा खाहीं॥ कबहुंक निकट बैठि कुसुमावलिअपनेकरपहिरावे।जोइजोइ बात भावतिहि भावे सोइसोइ बात चलावे ॥जितहिजितहि रूप करे लैडेती तितही आपुनआवे।

नाचत जाके डर त्रिभुवन तेहि नेकहु मान नचावै॥जिन नैनन देखत सुख भूलेते दुख नैनसमोवै । जो मुख सकल सुखनिको दाता सो मुख नेक न जोवै ॥ जेहि लिलाट त्रिभुवनको टीको सो पाँइनतन सोवै । राजहिं जाहि सनक अरु शंकर विरंचे ताहि बिगोवै॥ एतेमान भये वश मोहन बोलत कटुक डराई । दीपक प्रेम क्रोध मारुत छिन परसत जिनि बुझिजाई ॥ ताते कारि हरि छल दूतीको कहत बात सकुचाई । कपटी कान्ह पत्याहि न राधे तोहिं वृषभानुदोहाई ॥ पठई मोहिं दई उरमाला जहां कहूँ रति मानी । हौं बहराइ इतहि आई री आली तोहिं डरानी ॥ काहेको रूसनो बयो है मोसों कहो कहानी । नवनागर पहिचानि राधिका यह छल अधिक रिसानी॥जनिए कहा कौन अपराधिनि आनि कान है लागी।सुनिसुनि उठीसुंदरीके जिय प्रगट कोपकी आगी ॥ यद्यपि रसिक रसाल रसीली प्रेमपियूषन पागी।कितीदईशिख मंत्र साँवारे तउ हठ लहरि न जागी॥कहिए कहा नंदनंदनसों जैसे लाड लडाई । कौन न भई मानिनी उनसों जेते मान मनाई ॥ नवनागर तबहीं पहिचाने नागरि नागरताई।इन छँदबंदनि छंदै पैए प्रेम न पायो जाई ॥ हारे अबलासों बल मोहन तजत न पाणि कपोलै।मानहु पाहनकी प्रतिमासी नेक न इतउत डोलै ॥ इन द्योसनि रूसनो करतिहौ करिहौ कबहिं कलोलै । कहां दियो पढि शीश श्यामके खैंचि आपनो सो लै॥तोहिं हठ पर्यो प्राणवल्लभसों छूटत नहीं छुड़ाए । देखहु मुरछि पर्यो मनमोहन मनहु भुअंगिनि खाए ॥ काहेको अपराध लेतिहै करति कामको भायो । नेक निरखि उठि कुँवरि राधिका जो चाहतिहै ज्यायो ॥ बहुरौ लियो जगाइ मनोहर युवतिन जतन बनायो । विरहताप वरदाप हरनको सरस सुगंध चढायो॥ जिते करे उपचार मनहु तनु जरत माँझ घृत नायो । कामअग्निते बिना कामिनी, कहिं कौनै सचु पायो ॥ जिनके हित तू त्रिभुवन गाई ठकुरानी करि पूजी । आनँदअंग संग सुख बिलसत बननायक हैं कूजी ॥ अनुदिन कामविलास विलासिनि वे अलि तू अंबूजी। ऐसेपियसों मान करतिहै तोसी मुग्ध न दूजी ॥ मेरो कह्यो मानती नाहिन ह्यां अरु कौनकहेगो ।राखत मान तिहारो मोह न ऐसी कौन सहैगो ॥ जानहुगी तब मानहुगी मन जब तनु मदन दहैगो।करतिहौ मान मदनमोहनसों माने हाथ रहैगो ॥ नख लिखि कह्यो जाहु तहँई उठि जाके हाथ बिकाने । राचे रहत रैनि दिन मोहन हरद चून ज्यों साने ॥ मुख मेरो हौं मान मनावत मन अंतहि रुचि माने। गावत लोग विरद सांचोई हरिहित कौन गिराने ॥ तुम मम तिलक तुमहिं मम भूषण तुमहिं प्राण धन मेरे । हौं सेवक शरणागत आए जानहु जतन घनेरे ॥तेरीसों वृषभानुनंदिनी एक गांठि सौफेरे । हितसों वैर नेह अनहितसों इहै न्याव है तेरे ॥ परधन रवन दवन दारुन द्रुम डोलनि कुंजनमाहीं । चारन धेन फेन मथि पीवन जीवन रोकत खाहीं ॥ डासन कास कामरी ओढन बैठन गोप सभाहीं । भूषण मोर पयूषन मुरली तिनके प्रेम कहाहीं॥ प्रेम पतंग परे पावक में प्रेम कुरंग बँधेसे ।चातक रटै चकोर न सोवै मीन बिना जलजैसे॥ जहां मान तहां मान मनायो प्रेम न गनिये ऐसे । प्रेममांझ जो करहिंरूसनो तिनहिंप्रेम कहिकैसे ॥ कांपत रिसनपीठि दैबैठी मणि माला तन हेर्यो । निरखि आप आभास सयानीबहुरि नैनमुख फेर्यो॥ लिएफिरतउरमाँझदुराए जानत लोग अँधेरो । एते मान भावती तो कत मान मनावत मेरो ॥ तेरीसौं आभास तिहारो यहां और को जोहै॥ लै दर्पण मणिधर्यो पांइतर देखि दुहूँनिमें कोहै॥लघु अपराध दासको त्रासै ठाकुरको सब सोहै । निरखिनिरखि प्रतिबिंब रहे तनु नैन नैनमिलि मोहै ॥ नेक मोहिंमुसकात

जानि मनमोहन मन सुख आन्यो। मानो दव द्रुम जरत आश भयो उनयो अंबर पान्यो॥ जो भाई सो सौंह दिवाई तब सूधे मन मान्यो। दियो तमोर हाथ अपने करि तब हरि जीवन जान्यो॥ हँसिकरि कह्यो चलौ हरि कुंजन हौं आवतिहौं पाछे। भृकुटी मुकुट पीत उपरैना लालकाछनी काछे॥ गोदोहनकी बेर जानि सँग लिए बछरुआ आछे। जो न पत्याहु जाहु मुरलीधर हमहिं तुमहिं है माछे॥ सघनकुंज अलिपुंज तहां हरि किसलय सेज बनाई। आतुर जानि मदनमोहन तनु कामकेलि चलि आई॥हँसे गोपाल अंक भरिलीनी मनहुँ रंक निधि पाई॥रति विपरीति प्रीति पियप्यारी वर्णत वरणि न जाई॥आलिंगन चुंबन परिरंभन दियो सुरतिरस पूरो। छिटकिरही श्रमबूंद वदनपर अरु पाइन सुभि चूरो॥ मुखके पवन परस्पर सुखवत गहे पानिपिय जूरो॥वृज्झत जानी मन्मथचिनगी फिरिमनो दियो मरूरो॥आलसमगन वदनकुँभिलानो बाला निर्बल कीन्ही। थकित जानि मनमोहन भुज भरि प्रिया अंक भरिलीन्ही॥ गोरे गात मनोहर उरजन लसत फुलल कंचुकी भीन्ही। मनु मनु कलस श्यामताईकी श्याम छापसी दीन्हीं॥इत नागरी नवल नागर उत भिरे सुरतिरणसोऊ॥नैनकटाक्ष बाणअसिवर नख यदपि निदाने दोऊ॥ टूटे हार कंचुकी दरकी घाइल मुरे न कोऊ। प्रगट्यो तेज तरनि पदवीकी लाज लजाने दोऊ॥ यहि डर रहत पितांबर वोढे कहा कहौं चतुराई। भोरयो काम प्रेमहू भोरयो भुरई बेम भुराई॥ पति अरु प्रिया प्रगट प्रतिबिंबित ज्यों जल दर्पण झाई। अब जिनि कहै हिएमें कोहै बहुरि परी कठिनाई॥ करजोरे विनती करै मोहन कहौ पाँइ गिर नाऊंहीं सेवक निज प्राणप्रियाको यह कहि पत्र लिखाऊं॥ तेरी सौं वृषभानुनंदिनी अनुदिन तुव गुण गाऊँ। अब जिन मान करहि मोसों हो इहै मौज करिपाऊं॥ हँसिकरि उठिप्यारी उर लागी मान मनदुख पायो॥तुम मन देहु आन बनिता तो मैं मन काहि लगायो॥ लै बुलाइ उर लाइ अंकभरि पछिलो दुख बिसरायो। श्याम मान है प्रेम कसौटी प्रेमहि मानसहायो॥ टूटे बंद छुटी अलकावलि मरगज तनकेबागे। अंजन अधर भाल जावकरँग पीक कपोलन पागे॥ बिनगुन माल पीठि गडि कंकन उपटि उठे उर लागे। रसिक राधिकाके सुखको सुख लूट्यो श्याम सभागे॥ नवल गोपाल नवेली राधा नये नेह वश कीन्हें॥ प्राणनाथसो प्राणपियारी प्राणलटकिसो लीन्हें॥विविध विलासकला रसकी विधि उभै अंग परवीनो। अतिहितमानमान तजि मानिनि मनमोहनसुखदीनो॥ राधा कृष्ण केलि कौतूहल श्रवण सुनै जे गावैं। तिनके सदा समीप श्याम नितही आनंद बढावैं॥ करत न जाइ जठर पातक जिहिको यह लीला भावै।जीवनमुक्त सूर सो जगमें अंत परमपद पावै॥७५॥राग गुंडमलार॥ राधिका वश्यकरि श्याम पाए।विरह गयो दूरिजियहरपहरिकेभयो सहम मुख निगम जिन नेति गाए॥ मान तजि मानिनी मैनको बल हरयो करत तनु कनके त्रास भारी। कोक विद्या निपुण श्याम श्यामा विपुल कुंजगृह द्वार ठाढे मुरारी॥ भक्तहित हेतु अवतारलीला करत रहत प्रभु तहा निज ध्यान जाके।प्रगट प्रभु सूर व्रजनारिके हित वेधे देन मनकाम फल संग ताके॥७६॥हिंडोरलीलाका सुख॥ श्रीकृष्ण राधिका गोपिन संग झूलईंग॥राग मान॥ वृंदावनश्यामलघन नारि संग सोहे जू। ठाढे नवकुंजनतर परमचतुर गिरिधर वर राधापति अरसपरस राधा मन मोहे जू॥ नीपछाह यमुनतीरव्रजललना सुभग भीर पहिरे अँग विविध चीर नवसन सब साजे। वार वार विनय करति मुख निरखति पाइ परति पुनिपुनि कर धरति हरति पियक मन काजे॥ विहँसति प्यारी समीप घनदामिनि संग रूप कंठ गहति कहति कन झल-

नकी साधा। यमुनपुलिन अति पुनीत पिय इहां हिंडोर रचौ सूरज प्रभु हँसति कहति ब्रज-तरुनी राधा॥७७॥राग राग्रौ मल्लारी॥हिंडोरेहरिसँगझूलिएहोअरुपियकोदेहिंझुलाय।गई बीतिग्रीपम शरद हितु ऋतु सरस वर्षा आय ॥अव इहै साधपुरावहू हो सुनहु त्रिभुवनराइ। गोपांगना गोपालजू-सों कहति गहिगहि पाइ ॥ गढनहार हिंडोरनाको ताहि न लेहु वोलाइ। बन बननि कोकिल कंठ निरखत करत दादुर शोर। घनघटा पीरी श्वेत वगपंगति निरखिये नभ ओर॥ तैसिये दमकति दामिनी तैसोइ अंमर घोर। तैसोइ रटत पपीहरा बिच तैसोइ बोलत मोर ॥ तैसि हरीहरी भूमि हुलसति होति नहिं रुचि थोर। तैसिए रँग सुरँग बिधिवधू लेतिहै चितचोर॥तैसिए नन्हीं बूँदनि बरपतु झमकिझमकि झकोरि। तैसिऐ भरि सरिता सरोवर उमँगि चलीं मिति फोरि॥ सुनि बिनय श्रीपति बिहँसि बोले विश्कर्मा श्रुतिधारि। खचि खंभ कंचनके रचि पचि राजति मरुवा मयारि।पटुली लगे नगनाग बहुरंग बनीडाँडी चारि।भँवरा भवैंभजि केलि भूले नागर नागरि नारि॥ पहिरि चुनिचुनि चीरचुहिचुहिचूनरी बहुरंग।कटि नीललहँगा लालचोली उवटिकेसारि अंग॥ नवसात सजि नई नागरी चलीं झुंडझुंडनि संग॥मुख श्याम पूरणचंदको मनो उमँगि उदधि तरंग। तहँ त्रिविध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सुभाइ। उर उड़त अंचल उघरि मुख मिलि नैन नैन लगाइ॥ तैसो यमुना पुलिन परम पुनीत सब सुखदाइ। तैसिऐ गोपी कंठ लगावति मोहन मोहनराइ॥गिरिराजधारन गोपिकनसों करत कौतुक केलि।झूलत झुलावतकंठ लावत बढी आनँद वेलि॥ कवहुँ रहसत मचत लै सँग एक एक सहेलि। झकझोरि झमकत डरत प्यारी प्रीतम अंकम मेलि॥तेहि समय सकुचि मनोजकी छविजक्यो धनुशर डारि।अंमर विमानन सुमनवरपत हरपि सुरसँगनारि ॥मोहे सुरगण गंधर्व किन्नर रहे लोक बिसारि।सुनिसूरश्यामसुजानसुंदरसवन-के हितकारि॥ ७८॥ राग सारंग ॥सुरँग हिंडोरना माई झूलतश्यामाश्याम।दोयखंभबिश्वकर्मा बनाए कामकुंद चढाइ। हरित चूनी जटित नग सब लाल हीरा लाइ॥ बहुत विद्रुम बहुत मुक्ता ललित लटके कोर। बहुरंग रेशम वरुह वरुही होत राग झकोर॥श्यामश्यामासंगझूलतसखीदेतिझुलाय। सब सरस शृंगार कीने रूप वरणि न जाइ। लालसारी नीललहंगा श्वेतअँगिया अंग। रोमावली नहिं मनो यमुना त्रिवलि तरल तरंग॥कहूं यूथनि युवति ठाढी कहूं ठाढेग्वाल। कहूंतरुणीगीत गावैं कहुँ करैं सब ख्याल॥ कहूं दादुर कहूं चातक कहूं बोलैं मोर। चहुँओर चितै चकोरहिगए देखि री इहि ओर॥ दशन दाडिम दमकि विकसी हँसी जब मुसुकाइ। दमकि दामिनि निरखि लज्जित वहुरि गई छिपाइ॥ मीन खंजन कंज मानो उडत नाहिन भोर। विंबके ढिग कीर बैठे गहत नाहिन ठौर॥ देखि सखी उरोज कंचन शंभु धरचो वनाय। नहिं होहिं श्रीफल सुंदरीके कमलकली सोहाय॥ बीच मुक्ताहार मिलि सुरसरि जनु उतरी धाय। वार चकईपारचकवा दिनहु मिलत न आय॥ लखि लंक कह्यो न जाय सखि री अंग देखिरि चारु।भृंगभ्रमभ्रमवनगयो कटि गयो केहरि हारु॥चाल देखि मराल लज्जित गएसरतजिगेह।अनुमानिकेअभिमान गजशिरअजहुँ डारत खेह॥ राग रागिनी सँचिमिलाईगावैंसुघरगुंडमल्लार।सुहवीसारंगटोडीभैरवीकेदार॥मालवाई राग गौरी अरुआसावरीराग। कान्हरोहिंडोलकौतुकतानबहुबिधिलाग॥देखिसखिरीएकअचरज राहु शशि इक ठोर। उडत अंचल लपटिवेनी दपटि झपटे मोर॥कनकजटित जराइ बीरेकविजो उपमा पाइ। सूर शशि हैं एक ब्रज मनो उगे तीनों आय॥ ७९ ॥ राग मलार॥ यमुना पुलिनहि रच्यो रंग सुरंग हिंडोरनो। रमत राम श्याम संग ब्रजबालक सुखपावतहँसिबोलनो॥द्वैखंभकंचन-

के मनोहर रत्नजडित सुहावनो। पटली बिच विद्रुम लागे हीगलाल रचावनो ॥ सुदर डाँडी चुनी बहुत लायो कोटिक मदन लजावनो। मरुवा मयारि पिरोजा लाल लटकत सुदर सुढिर ढगावनो॥ मोतिनहिं झालरि झूमका राजत बिच नीलमणि बहुभावनो। पचरंग पाट कनक मिलि डोरी अतिहि सुघर बनावनो। स्फटिक सिंहासन मध्य राजत द्वादकसहित सजावनो॥ हीगलालप्रवाल पिरोजा पगति बहु मणि पचित पचावनो। मनो सुरपुरतेहि सुरपति पठइ दियो पठावनो॥ विश्वकर्मा सुतिहार श्रुतिधर सुलभ सिल्प दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नाशे व्रज वधू मनभावनो॥ सुनि श्यामा नवसत सगसखीले बरसाने तेहि आवनो। जब आवत बलराम देख्यो मधु मगलतन हेरनो। तब मधुमगल कहि ग्वालसो गैयाहो भैया फेरनो॥ उठ सकर्पण करि शृग वेणु ध्वनि धौरी काजरी धेनु टेरनो॥ गैयां गईं बगगइ सघन वृदावन वर्मावट यमुनातट घेरनो। पहिरे चीर सुही सुरग सारी चुहचुह चूनरी बहुरगनो॥ नील लहँगा लाल चोली कसि उबटि केसरि सुरगनो। नवसत सजि शृगारनागरि मरिगमय भूपण मगनो॥ सादर मुख गोपाललालको चित चकोर रस सगनो। श्यामा श्याम मिले ललितादिहि सुख पावत मनमोहनो॥ गावत मलारी सुराग रागिनी गिरिधरलाल छवि सोहनो। पचरग बरन पाटहि पनिग बिच बिच फोंदा गोहनो॥ नाचति भरी सगीत परस्पर पहिरि पवित्रा सोहनो॥ माथे मोरमुकुट चद्रिका राजहि वृदा वैजती माल कज प्रमावनो। कुडल लोल कपोलनके ढिग मानो रविप्रकाश करावनो॥ अधर अरुण छवि कोटि मन्न द्युति शशि गुण रूप समावनो। मणिमय भूषण कठ मुक्तावलि देखत कोटि अनग लजावनो॥ सखि हरपि झूलें वृपभानुनदिनी शोभित सँग नँदलालनो। मणिमय नूपुर कुनित करुन किंकिनी झनकारनो॥ ललिता विशाखा व्रजवधू झुलावैं सुरुचि सार सारको सारनो। गौर श्यामल नील पीत छवि मानो घन दामिनि सचारनो॥ तसोइ नन्हीनन्ही बूँदनि बरपै मधुरमधुर ध्वनि घोरनो। तैसीही हरीहरी भूमि हुलसावनि मोरमगलसुख होत न थोरनो॥ जहाँ त्रिविध मद सुगध शीतल पवन गवन सुहावनो। तहँ विहरत उडत सुगधमुं उडत मधुप सुहावनो॥ चढि विमानन सुर सुमन बरपै जैजैध्वनि नभ पावनो। श्यामाश्याम विहरत वृदावन सुरललना ललचावनो॥ शुक शेप शारद नारदादिक विधि शिव ध्यान न पावनो। सूर श्याम सुप्रेम उमँग्यो हरियश सुलीला गावनो॥ राग शुद्धमलार॥ हिंडोरनो माई झूलत गोकुलचद। सग राधा परमसुदरि सत्रन करत अनद॥ द्वै खभ कचनके मनोहर रतनजडित सुरग। चारिडाँडी परम सुदरि निरखि लजित अनग॥ पटली पिरोजा लाल लटकत झूमका बहुरग। मरुवे तिमाणिक चुनी लागी बिचबिच हीग तरग॥ कल्पद्रुम तर छांह शीतल त्रिविध मद समीर। वर लता लटकहि भार कुसुमनि परसि यमुनानीर॥ हस मोर चकोर चातक कोकिला अलि कीर। नवनेह नवल किशोर राधा नवलगिरिधर धीर॥ ललिताविशाखा देहि झोटा रीझिअँगनसमाति। अति लाडिली सुकुमारि डरपति श्यामतन लपटाति॥ गौर श्यामल अग मिलि दोउ भए एकहि भाति। नील पीत दुकूल द्युति घन दामिनी दुरिजाति॥ कुजपुज झुलै झुलावत सहचरी चहुँ ओर। मनो कुमुदिनि कमल फूले निरखि युगुलकिशोर॥ व्रजवधू तृण तोरि डारति देति प्राण अकोर। जन सूरको व्रजवास दीजे नागर नन्दकिशोर॥ ८१॥ राग रानी श्रीहटी॥ हिंडोरे झूलत श्यामा श्याम। व्रजयुवती मडली चहुँघा निरखति विथकित काम॥ कोउ गावति कोउ हरषि झुलावति कोउ पुरवति मनसाध। कोउ सँग मचति कहति कोउ मचिहौ उपजी

रूप अगाध ॥ कोउ डरपति हाहा करि बिनवति प्यारी अंकम लाय । गाढे गहति पियहि अपने कर पुलकित अंग डराय ॥ अब जिनि मचो पांय लागतिहौं मोको देहु उतारि । यह सुनि हँसत मचत अति गिरिधर डरत देखि अति नारि ॥ प्यारी टेरि कहत ललितासों मेरीसौ गहि राखि । सूर हँसति ललिता चंद्रावलि कहा कहति पिय भाखि ॥८२॥ राग राज़ीरामगिरी ॥ हिंडोरना माई झूलतहैं गोपाल। संग राधा परम सुंदरि चहूंघां व्रजबाल ॥ सुभग यमुनापुलिन मोहन रच्यो रुचिर हिंडोर। लाल डाँडी फटिक पटुली मणिन मरुवा घोर ॥ भँवरा मयारिनि नील मरकत खचे पाँति अपार। सरल कंचन खंभन सुंदर रच्यो काम सुतिहार॥भाँति भाँतिन पहिरि सारी तरुणि नवसत अंग । सुंदरी वृपभानुतनया नैन चपल कुरंग ॥ हँसति पियसँग लेति झूमक लखति श्यामल गात । मनो घनमें दामिनी छबि अंगमें लपटात ॥ कबहुँ पुलकति कबहुँ डरपति हँसति निरखति नारि ॥ कबहुँ देति झुलाइ गोपी गावहीं नवनारि ॥ सूर प्रभुके संगकोसुख वरणि कापै जाइ । अमर वर्षत सुमन अंबर विविध अस्तुति गाइ ॥ ८३ ॥ राग राज़ीमलारी ॥ यमुनापुलिन रच्यो हिंडोर । घोष ललना संग तरुणी तरुण नवल किशोर॥ एक सँग लै मचत मोहन एक देत झुलाय ।एक निरखति अंग माधुरि एकएक उठिगाय ॥ श्यामसुंदर गोपिकागण रहीं घेरि बनाय । मनो जलदको दामिनी गण चहति लेन लुकाय॥ नारिसँग बनवारि गावत कोकिला छबि थोर । डुलत झूलत मुकुट शिरपर मनो नृत्यत मोर ॥ सुभग मुख दुहुँ पास कुंडल निरखि युवती भोर । चक्रवाक चकोर लोचन करिरहीं हरि ओर ॥ थकित सुर ललना सहित नभ श्याम निरखि विहार। हरपि सुमन अपार वरपत मुखहि जैजैकार ॥ कहत मन मन इहै वांछा भए न वन द्रुमडार । देह धरि प्रभु सूर विलसत ब्रह्म पूरण सार ॥८४॥ राग केदारो॥ हिंडोरने हरिसँग झूलन आई।पचरँग वरन पाटको डँडिया अतिही बानक सौंजु बनाई ॥ झूलति युवति नंदललना सँग एक वैस इकदाई । सूरदास प्रभु मोहन नागर आपुन झूलि झुलाई ॥८५॥ राग ईमन॥झूलन आई रंग हिंडोरे।पचरँग वरन कुसुंभी सारी पहिरे कंचुकी सौंधे बोरे॥मुक्तामाल ग्रीवते लर छुटि छबिके उठत झकोरे।सूरदास प्रभु मन हरिलीन्होंचपलनयनकी कोरे ॥ ८६ ॥ राग बिहागरो ॥ ललना झूलति रंग हिंडोरे । शोभा तनु श्याम गोरे।नील पीतपट घन दामिनि डोरे।शोभासिंधु मन बोरे।गोपीजन चहुँओरे ।नैननसों नैन जोरे॥झुलवति थोरे थोरे।पवन गवन आवे सौंधेकी झकोरे॥तन मन वारौं छबिपर तृण तोरे। सूर प्रभु चित चोरे नेक अंग मोरे ॥ सुन मुरलीकी घोरें । सुखधू शीश ढोरें ॥ ८७ ॥ राग मलार ॥ झूलत श्याम श्यामा संग । निरखि दंपति अंगशोभा लजित कोटि अनंग ॥ मंद त्रिविध बयारि शीतल अंग अंग सुगंध । मचत उडत सुबासु सँग गण रहे मधुकर वंध ॥तैसिये यमुना सुभग जहँ रच्यो रंग हिंडोर । तैसियै व्रजवधू वनि हरि चित्त लोचन कोर॥ तैसो वृन्दाविपिनघनवन कुंजद्वारविहार। विपुल गोपी विपुल बनगृह रवन नंदकुमार ॥ नित्य लीला नित्य आनँद नित्य मंगल गान।सूर सुर मुनि मुखन अस्तुति धन्य गोपी कान्ह॥८८॥राग मलार॥हिंडोरे हरिसँग झूलहिं घोपकुमारि। व्रजवधू विधि क्योंनकीनी कहति सब सुरनारि॥मरुवालगे नग ललितलीला सुविधिशिल्पसँवारि।वज्रकी कीलैंलगीं सुठि सुभग शोभाकारि॥खंभजांबूनदसुविद्रुम रचीरुचिरमयारि।मनु सुता रविकी दिखावति भुजा युगुल पसारि॥ मणिलाल माणिक जटित भँवरा सुरँग रंग रसार।शुक शेप नारद शारदा उपमा कहै को पार॥डाँडी खचि पचि पचि मर्कत मय पांति सुढार। उवत

रथ रविते धसी यमुना धरे विविधारु॥विविधारु धारा धसी अघक्यों फटिक पटुली संग।वसिनि-कसि तिरछी वीच है मिलि गगनते जनु गंग । ढिग जरित भरि मंजीर इतउन चरण पंकजरंग। प्रतिबिंब झलमल झलक मिलि सरस्वती आनिविनंग ॥बनमहलकेद्वाररच्योनवरंग रंगहिंडोर। मनो कोटि मन्मथ मोद मोहन तरुणि तरुण किशोर॥ वदनतन चित चोरि चितवत झलकलो-चनकोर । शरद विधु मधु लुब्धको मनु उडिउडि मिलत चकोर ॥उडि मिलत तहां चकोर अति छबि ललित चलित सुखैन। मनहु अंबुजवासको सँग मिलित मधुकर ऐन॥झुमकि झूमकि लेति दे द्रुमडी मचे रुचिकैन । गावति सुकंठ राग रानी नागरि गिरिधरकी जिन सैन॥ कनक नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकार । तहँ कुँवरि वृषभानुकी सँग सोहे नंदकुमार॥ नील पीतदुकूल सॉवलगौर अंग विकार । मनहु नौतन घन घटामें तडित तरल अकार ॥ अनिमेष दृग दिए देखहीं सुर मंडली वरनारि । मानहु शृंगार नवीन तनप्रति रची कंचन वारि ॥ हँसि हावभाव कटाक्ष घूंघट गिरत लेति सम्हारि ।मनु हरनमुनि शोभा सु ले रति काम डारति वारि ॥अधरउरव झमकि झकोर इतउत झलक मोतिनमाल। ऋतु समय सावन जानि मनि बगपाँति उडत विशा-ल ॥ श्री शीश फूल अमोल तरिवन तिलक सुंदर भाल । सारी सुरँग मिलिनील लहँगा शुभित कंचुकि लाल ॥ मन मुदित मोदित मानिनी मुख माधुरी मुसुकानि । ढरहरति ढरनि हिंडोर डॉडी डरति धरि दुहुँ पानि ॥ उर उडत अंचल छोर छबि दुति पीतपट फहरानि । कहै सूर सो उपमा नहीं कहुँनेति निगमहु गानि॥८९॥ राग मलार ॥ गोपीगोविंदकेहिंडोरे झूलन आय।रंगमहलमें जहँ नँदरानी खेलति सावनी तीज सुहाय॥ श्रीखंड खंभ मयारि सहित सु सुमग मरुवा बनाइ । तापर किंतिक जृम्भमत भँवरा डॉडी जटित जराइ॥ हेम पटुली मध्य हीरा पूजि रोचन लाइ।सखी विविध विचित्र राग मलार मंगलगाइ॥नंदलाल पावसकाल दामिनि नागरी नवसंग। बोलत जु दादुर अरु पपीहा करति कोकिल रंग॥ तहँ बरहिनृत्यत वचन मुखदुतिअलि चकोर विहग । वलि भाइ सहित गोपाल झूलत राधिका अर्धंग ॥ जलभरित सरवर सघन तरिवर इंद्र धनुष सुदेश । घन श्याम मध्य सफेद बग जुरि हरित महि नहुँ देश॥गगन गजत चीजु तरपति मधुर मेह अशेश । झूलहिं ते विह्वल श्याम श्यामा शीश मुकुलित केश॥ताटंक तिलक सुदेश झलकत रचित मनी लाल । आकृती विकृती वदन प्रहसित कमलनैन विशाल॥कर जु मुद्रिक किंकिनी कटि चाल गजगति बाल । सूर मुररिपु रंग रँगे सखी सहित गोपाल ॥ ९० ॥ राग सुहवी ॥ झूलत सुंदर युगल किशोर।नंदनंदन वृषभानुनंदिनी पियत सुधारस नयन चकोर॥ भ्रुकुटी वक्र धनुष श्रीशोभित तिलक भाल मनो सायक जोर। मंदमंद मुसुकात श्यामघन निरखन करत कटाक्षन कोर ॥ अंजनको पति रंजन लागे राजत अधरन दशन तमोर । मृगमद आड बने करकंकन मोतिन हार शृंगार न डोर ॥ लियो शिरते पटु झटकि मनोहर उघरिगए कुच कलश कठोर । सूर सु निरखि भए वश प्रीतम तव प्यारीसो करत निहोर ॥९१॥ अध्याय ।३४॥ विद्याधर शापमोचन वृंदावनविहार शंखचूडदानववधवर्णन ॥ राग बिलावल ॥ नंद सब गोपी ग्वाल समेत । गए सरस्वतीकेतट एक दिन शिव अंबिका पूजा हेत ॥ पूजा करत सकल दिन बीत्यो होइगई तहँ सांझ। व्रजवासी सब श्रमित होइके सोइरहे वनमांझ ॥ अर्ध निशा इक उरग आयके लपटिगयो नँदपाइ।चौंकि परचो दुख पाइ पुकारचो हाहा कृष्ण छुडाय ॥ ग्वालन मिलि श्रीकृष्ण जगाए छुवत पांइ अहि दीनों छोड । विद्याधरको रूप धारि

कह्यो नाथ करै को तुमरी होड ॥ सब देवनके देव तुमहिं हो मैं देख्यो अब जोई ॥ ऋपि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हों भयो अनुग्रह सोई ॥ हरिआज्ञाको पाय नाय शिर गयो आपने लोक। सूरदास हरिके गुण गावत व्रज आए व्रजलोग ॥ ९२ ॥ जागो मोहन भोर भयो। वदन उघारि श्याम तुम देखो रविकी किरनि प्रकाश कियो॥संगी सखा ग्वार सब ठाढे खेलतहैं कछु खेल नयो । आँगन ठाढी कुँवरि राधिका उनको कहा दुराइ लयो ॥ हँसि मोहन मुसुकाय कह्यो कबहूँ वृषभानुके गेह गयो । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको सर्वसु लै हरि आपु दयो॥९३॥ मैं हरिकी मुरली वन पाई । सुनयशुमति सँग छाँडि आपनो कुँवर जगाइदैन हौं आई ॥ सुनतहि वचन विहँसि उठि बैठे अंतर्यामी कुँवर कन्हाई। इहके संग हुती मेरी पहुँची दे राधे वृषभानुदोहाई ॥ मैं नाहिंन चित लाय निहारो चलौ ठौर सब देहुँ बताई। सूरदास प्रभु मिलि अंतर्गति दुहुँन पढी एकै चतुराई ॥९४॥ राग कान्हरो ॥ विहरत कुंजन कुंजबिहारी । वग शुकविहँग पवन थकि थिर रह्यो तान अलापत जब गिरिधारी ॥ सरिता थकित थकित द्रुमवेली अधर धरत मुरली जब प्यारी । रवि अरु शशि देखो दोउ चोरन शंकागहि तब वदन उज्यारी॥आभूपण सब साजिआपने थकित भईव्रजकीकुलनारी॥सूरदासस्वामीकीलीला अब जोवै वृषभानुकुमारी॥९५॥ राग गुंडमलार ॥ गगनउठीघटाकारीतामेंबगपंगतिन्यारीन्यारी । कान्हकृपाकरिदेखियेसुरचापकी छवि बरनबरन रँगधारी ॥ वीचवीच दामिनी कौंधति जनु चंचल नारी । बिटबाहर गृहगृह प्रति दुरिजाति आवति विकल मदनकी जारी ॥ वन बरुही चातक रटैं द्रुम द्युति सघन संचारी। सूर श्याम हित जानिकै तब काम कोविद निजकर कुटी सँवारी॥९६॥राग सारंग॥अद्भुत कौतुक देखि सखी री श्रीवृंदावनमें होड परी री। उत घनउदित सहित सौदामिनि इतहि मुदित राधिका हरी री ॥ उत बगपांति शोभित इत सुंदर धामविलास सुदेश खरी री। वहां घन गर्ज इहां ध्वनि मुरली जलधर उत इत अमृत भरी री ॥ उतहि इंद्रधनु इत बनमाला अति विचित्र हरिकंठ धरी री । सूर साथ प्रभुकुँवरि राधिका गगनकीशोभादूरि करी री ९७॥ राग सोरठ॥नवल नागरि नवल नागर किशोर मिलि कुंजकोमल कमलदलन सेज्या रची । गौर साँवल अंग रुचिर तापर मिले सरसमणिमृदुल कंचन खची॥ सुरनीमी बंधुहित पिय मानि पियके भुजनमें कलहमोरुण मची । सुभग श्रीफल उरोज पाणि परसत रोपहू करि गर्व दृग भाग्य भामिनि लची ॥ कोक कोटि करभ सरसिकहरि सूरज विविध कलमाधुरी किमपि नाहिन बची।प्राण ये मन रसिक ललितादि लोचन चसकि पिवति मकरंद सुखराशि अंतर सची ॥९८॥राग नट॥ राधे जलसुत करजु धरे। अतिही अरुण अधिक छवि उपजति तजतहंस सगरे॥चुगत चकोर चले हैं सन्मुख झझके रहे खरे । तब मुसिकाय वृपभानुनंदिनी दोऊ मिलि झगरे ॥ रवि अरु शशि दोऊ एकै रथ सन्मुख आनि अरे। सूरदास प्रभु कुंजविहारी आनँद उमगि भरे ॥ ९९ ॥ राग कान्हरो॥श्यामा वदन देखि हरि लाज्यो । यहै अपूर्व जानि जिय लघुता खीन इंदु [illegible] दव भाज्यो॥क्रीडत कुंज अटा रजनीमुख प्रेम मुदित नवसत अँग साज्यो । विधु लंछन जानत सुर नर सब मृगमद तिलकहु लाज्यो॥विथकित रथ चकित अवलोकन सुंदरि सँग हरिराज विराज्यो । विस्मय मिटि शशि पेखि समीपहि कहि अब सूर उभै हरि गाज्यो ॥ २३०० ॥ कंदुक केलि करत सुकुमारी।अतिहि सूक्ष्मकटितटआई जिमि विशदनितंब पयोधर भारी॥अचल चंचल फटी कंचुकी विलुलित वर कुच सटी उघारी।मनु नवजलद बंधु कीनो विधु निकसी नभसि क-

रथ रविते धसी यमुना धरे त्रिविधार॥ त्रिविधार धारा धसी अवरयो फटिक पटुली संग। रविनि-कसि तिरछी बीच है मिलि गगनते जनु गंग। ढिग जरित मरि मंजीर इतउत चरण पंकजरंग। प्रतिबिंब झलमल झलक मिलि सरस्वती आनि विनग ॥ वनमहलकेद्वाररच्योनवरंग रंगहिंडोर। मनो कोटि मन्मथ मोद मोहन तरुणि तरुण किशोर ॥ वदनतन चित चोरि चितवत झलक लो-चनकोर। शरद विधु मधु लुब्धको मनु उडिउडि मिलत चकोर ॥ उडि मिलत तहा चकोर अति छबि ललित चलित सुबैन। मनहु अंबुज बासको सँग मिलित मधुकर ऐन॥ झुमकि झूमकि लेति दै झुमडी मचै रुचिकैन। गावति सुकठ राग रागिनी नागरि गिरिधरका जिन सैन॥ कनक नूपुर कुनित क रुन किंकिनी झनकार। तहँ कुँवरि वृषभानुकी सँग सोहै नंदकुमार॥ नील पीतदुकूल सॉवल गौर अंग निकार। मनहु नौतन घन घटामें तडित तरल अकार ॥ अनिमेष दृग दिए देखहीं मुख मंडली वरनारि। मानहु शृंगार नवीन तरुप्रति रची कंचन नारि ॥ हँसि हावभाव कटाक्ष घूंघट गिरत लेति सम्हारि। मनु हरन मुनि शोभा सु लै रति काम डारति वारि ॥ अधर उरच झमकि झकोर इतउत झलक मोतिनमाल। ऋतु समय सावन जानि मनि वगपाँति उडत विशा-ल ॥ श्री शीश फूल अमोल तरिवन तिलक सुंदर भाल। मांगी सुरँग मिलि नील लहँगा शुभित कंचुकि लाल ॥ मन मुदित मोदित मानिनी मुख माधुरी मुसुकानि। ढरहगति ढरति हिंडोर डॉडी डरति धरि दुहुँ पानि ॥ उर उडत अंचल छोर छबि दुति पीतपट फहरानि। कहँ सूर सो उपमा नही कहुँनेति निगमहु गानि ॥८९॥ राग मलार ॥ गोपीगोविंदके हिंडोरे झूलन आय। रंगम-हलमें जहँ नँदरानी खेलति सावनी तीज सुहाय ॥ श्रीखंड खंभ मयारि सहित सु सुमर मरुवा बनाइ। तापर किंतिक गृभ्रमत भँवरा डांडी जटित जराइ॥ हेम पटुली मध्य हीरा पुंजि रोचन लाइ। सखी विविध विचित्र राग मलार मंगलगाइ॥ नंदलाल पावसकाल दामिनि नागरी नवसंग। बोलत जु दादुर अरु पपीहा करति कोकिल रंग ॥ तहँ बरहि नृत्यत नचन मुख दुतिअलि चकोर विहग। ललि भाइ सहित गोपाल झूलन राधिका अर्धंग ॥ जलभरित सरवर सघन तरुवर इंद्र धनुष सुदेश। घन श्याम मध्य सफेद बग जुरि हरित महि चहुँ देश॥ गगन गजंत बीजु तरपति मधुर मेह अशेश। झूलहिं ते विह्वल श्याम श्यामा शीश मुकुलित केश॥ ताटंक तिलक सुदेश झलकत खचित चुनी लाल। आकृती विकृती वदन प्रहसित कमलनैन विशाल॥ कर जु मुद्रिक किंकिनी कटि चाल गजगति बाल। सूर मुररिपु रंग रंगे सखी सहित गोपाल ॥ ९० ॥ राग सूहवी ॥ झूलत सुंदर युगल किशोर। नँदनंदन वृषभानुनंदिनी पियत सुधारस नयन चकोर॥ भृकुटी वक्र धनुष श्रीशोभित तिलक भाल मनो सायक जोर। मंदमंद मुसुकात श्यामघन निर-खत करत कटाक्षन कोर ॥ अंजनको प्रति रंजन लागे राजत अधरन दशन तमोर। मृगमद आड बने ककरकन मोतिन हार शृंगार न [illegible] सखी श्याम लोचन छबि प्रगटत मिलन उभय मनोहर उचरिगए कुच [illegible] हरोंप कछु सकुचत निरखत युवति लेन चित चोरी ॥ थकित सुमन दृग अरुन उनींद कुरख कटाक्ष करत मुरि थोरी। खंजन मृग अकुलात घात उर श्याम व्याध बाँध रति डोरी॥ लाल अलक ताटंक अकंदै श्याम गंड उनटित वर छोरी। मनहु शेष मधुसर करमरजु काढत उभय रूप धरि तोरी ॥ कोमल कठिन कपोल अमल अति तहँ रुपटित क्रीडा रद रोरी। मदनरागपर गैल सँचारी छापतापमोचन मधु घोरी ॥ नैन बैन कर चरण चिकुर चलशिथिल उभय श्रम स्वेद नचोरी। मनु सेना संग्राममध्यते प्रीति अमी दै जाइ बहोरी॥

कह्यो नाथ करै को तुमरी होड ॥ सब देवनके देव तुमहिं हो मैं देख्यो अब जोई ॥ ऋषि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हों भयो अनुग्रह सोई ॥ हरिआज्ञाको पाय नाय शिर गयो आपने लोक। सूरदास हरिके गुण गावत व्रज आए व्रजलोग ॥ ९२ ॥ जागो मोहन भोर भयो। वदन उघारि श्याम तुम देखो रविकी किरनि प्रकाश कियो॥संगी सखा ग्वार सब ठाढे खेलतहैं कछु खेल नयो । आँगन ठाढी कुँवरि राधिका उनको कहा दुराइ लयो ॥ हँसि मोहन मुसुकाय कह्यो कबहूँ वृषभानुके गेह गयो । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको सर्वसु लै हरि आपु दयो॥९३॥ मैं हरिकी मुरली वन पाई । सुनयशुमति सँग छाँडि आपनो कुँवर जगाइदैन हौं आई ॥ सुनतहि वचन विहँसि उठि बैठे अंतर्यामी कुँवर कन्हाई । इहके संग हुती मेरी पहुँची दे राधे वृषभानुदोहाई ॥ मैं नाहिंन चित लाय निहारो चलौ ठौर सब देहुँ बताई। सूरदास प्रभु मिलि अंतर्गति दुहुँन पढी एकै चतुराई ॥९४॥ राग कान्हरो ॥ विहरत कुंजन कुंजविहारी । वग शुकविहँग पवन थकि थिर रह्यो तान अलापत जब गिरिधारी ॥ सरिता थकित थकित द्रुमवेली अधर धरत मुरली जब प्यारी । रवि अरु शशि देखो दोउ चोरन शंकागहि तब वदन उज्यारी॥आभूषण सब साजिआपने थकित भईव्रजकीकुलनारी॥सूरदासस्वामीकीलीला अब जोवै वृषभानुकुमारी॥९५॥ राग शुद्धमलार ॥ गगनउठीघटाकारीतामेंवगपंगतिन्यारीन्यारी । कान्हकृपाकरिदेखियेसुरचापकी छवि वरनबरन रँगधारी ॥ वीचवीच दामिनी कौंधति जनु चंचल नारी । बिदबाहर गृहगृह प्रति दुरिजाति आवति विकल मदनकी जारी ॥ वन वरुही चातक रटैं द्रुम द्युति सघन संचारी। सूर श्याम हित जानिकै तब काम कोविद निजकर कुटी सँवारी॥९६॥राग सारंग॥अद्भुत कौतुक देखि सखी री श्रीवृंदावनमें होड परी री। उत घनउदित सहित सौदामिनि इतहि मुदित राधिका हरी री ॥ उत वगपांति शोभित इत सुंदर धामविलास सुदेश खरी री। वहां घन गर्ज इहां ध्वनि मुरली जलधर उत इत अमृत भरी री ॥ उतहि इंद्रधनु इत वनमाला अति विचित्र हरिकंठ धरी री । सूर साथ प्रभुकुँवरि राधिका गगनकीशोभादूरि करी री ९७॥ राग सोरठ॥नवल नागरि नवल नागर किशोर मिलि कुंजकोमल कमलदलन सेज्या रची । गौर साँवल अंग रुचिर तापर मिले सरसमणिमृदुल कंचन खची॥ सुरनीमी बंधुहित पिय मानि पियके भुजनमें कलहमोरुण मची । सुभग श्रीफल उरोज पाणि परसत रोपहू करि गर्व दृग भाग्य भामिनि लची ॥ कोक कोटि करभ सरसिकहरि सूरज विविध कलमाधुरी किमपि नाहिन बची।प्राण ये मन रसिक ललितादि लोचन चसकि पिवति मकरंद सुखराशि अंतर सची ॥९८॥राग नट॥ राधे जलसुत करजु धरे । अतिही अरुण अधिक छवि उपजति तजतहंस सगरे॥चुगत चकोर चले हैं मन्मथ झझके रहे खरे । तब मुसिकाय वृषभानुनंदिनी दोऊ मिलि झगरे ॥ रवि अरु माथे बने राजत रुचिरसुद[illegible] भरे । [illegible]दास प्रभु कुंजविहारी आनँद उमगि भरे ॥ ९९ ॥ दृग वान चपल अति भाल तिलक जनु वान री॥भौंरहात [illegible] खीन इंदु एही दुख[illegible] मणिगण जडित मनोहर कुंडल राजत लोल कपोल री । कालिंदीमें [illegible] पवन अडोल री॥सुभग नासिका मुक्ता शोभित झलमलात छवि होत री। भृगुसुत मानो अमल विमल सखि घनमें किए उदोत री ॥ अरुण अधर सु श्रमित मुख बोलत ईषद कछु मुसुकात री। मानहु सुपकबिंबते प्रगटत रस अनुराग चुतात री ॥ दशनदमक दामिनिसी चमकति शोभा कहत न आवै री । याहीते दाडिम उर विगलित तिनकी सम नहिं पावै री॥चिबुकचारुमर्कतमणि

रा अनियारी॥नख तिलक ताटंक निकट तट उभय परस्पर शोभ शृंगारी।जलरुह हंस मिलि मनो नाचत ब्रज कौतुक वृषभानुदुलारी ॥ मुक्तावलिको हार लोलगति तापर लटपटात लट कारी । तामें मो लर मनो तरंगिनि निशिनायक तम मोचनहारी ॥ अरु कंकन किंकिण नूपुर छवि निशापान ममद्युति रतिनारी।श्रीगोपाललालउर लाईनलिनलिमूर मिथुन कृतभारी॥ १॥राग नट ॥ देखे चारि कमल इकसाथ।कमलनि कमल गहे लानतिहि कमलहि मध्यसमात ॥ सारंगपर सारंग खेलत देसारंग री सो हँसि हँसि जात।सारँग श्याम ओगह सारंग सारँगसों करे बात ॥ आगे सारंग राखि सारंगको सारंगगहि सारँगको जात। तोले रासि सारँग सारँगको सारँग ले आइवा हाथ॥ सोइ सारँग चतुराननदुर्लभ सोई सारग शंभु मुनि ध्यात । सेवत सूरदास सारँगको सारँग ऊपर बलि बलि जात ॥२॥ राग नट ॥हरि उर मोहनि बेलिलसी।तापर उरग ग्रसिततरशोभित पूरन अंग शशी ॥ चापति कर भुजदंडरेख गुनअंतरबीच कसी । कनककलशमधुपानमनोकरभुजनि उलटि धर्सी ॥तापर सुदरअचर झांप्यो अरुन दशनमी । सूरदासप्रभुतुमहिंमिलनजनुदामिनि विगरि हसी॥३॥ राग कान्हरो॥मोहनीमोहनकी प्यारी।रूपउदधिमथिकीनिविहठिपचिरचीयुनति न्यारी ॥ चपरकनक कलेवरकी द्युति शशिनिमदनसमतारी । खंजरीटमृगमीनकिगुरुतानिननमेने निनारी ॥ भृकुटी कुटिल सुदेश शोभ अति मनहु मदन धनु धारी। भाल विशाल कपोल मधुप छवि नासा जित मदगारी ॥अधर निरखि बंधूक निरादर दशन कुंद अनुहारी ।परमरसालश्याम सुखदायक वचनन सुनि पिकहारी॥ कुँवरि अहो जनु हेमखभलगि ग्रीव कपोतविमारी । बाहु मृणाल जु उरज कुंभ गजनिम्ननाभि सुभगारी ॥ मृगारिपुरक्षीन कटी गजति युग जंघ मरम अति भारी । अरुण रुचिर जु निडाल रसनसम चरणनखी ललितारी ॥एक समय करपर धरि मुक्ता ग्रसन मरालविचारी । सारंगमत्त जानिमानेगहि भयहिशुनिपिनविसारी ॥ जहं जहं दृष्टिपरति तहं अरुझत भरि नहिं जातचितारी॥सूरदासप्रभु रसवश कीन्हे अंग अंग सुखकारी ॥४॥रागनट॥ उरपर देखियतहे शशि साता।सोवति हुती जुकुंवरि राधिकाचौंकिपरी अधरात॥खंडखंड होइगिरे गगनते वास पतिनिके भ्रात।कै बहु रूप लिए सारंगते दधिसुत आवत जात॥ विधु बहुरेविधुकिए शिखंडी शिवमेंशिवसुतजात । सूरदासधारेको धरणी श्यामसुनायह बात॥५॥राग बिलावल॥ आजु वन राजत युगलकिशोर।दशन वसन खंडित मुख मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ डगमगात पग धरत शिथिलगति उठे कामरस भोर ।रतिपति सारँग अरुणमहाछवि उमँगि पलक लगे भोर॥ श्रुति अवतंस विराजत हरिसुत सिद्ध दरश सुतओर । सूरदास प्रभु रस वश कीन्ही परी महारण जोर ॥६॥ राजत युगल किशोर किशोरी । प्रातसमय देखियत ग्रीव भुज श्याम शिथिल आलस गति गोरी ॥ रहे उघटि बलहीन विलासिनि वरणोंकहा मदन रँग बोरी। मनो अंग अँगसुफल के हित द्युति वसत मारत झकझोरी॥ शशिमुख सखी श्याम लोचन छवि प्रगटत मिलत उभय पदकोरी । मनु रवि बेलि इरपि कछु सकुचत निरखत युवति लेत चित चोरी ॥ थकित सुमन दृग अरुन उनींद कुरुसकटाक्ष करत धुरि धोरी । खंजन मृग अकुलात घात उर श्याम व्याध बाँधे रति डोरी॥नाल अलक ताटंक अकंदे श्याम गंड उनटित वर छोरी । मनहु शेष मधुसर करमरजु काढत उभय रूप धरि तोरी ॥ कोमल कठिन कपोल अमल अति तहँ उपटित क्रीडा रद रोरी । मदननृपपर रोल सँचारी छापतापमोचन मधु चोरी ॥ नैन बैन कर चरण चिकुर चलशिथिल उभय श्रम स्वेद नचोरी। मनु सेना संग्राम मध्यते प्रीति अमी दै जाइ बहोरी॥

थाके रंग रणकी छवि छाजत हारि मानि नहिं रहत निहोरी। सूर सुभट दोउ खेत न छांडत मानहु आइ खडे दल जोरी ॥७॥ राग सारंग॥ देखौ माधौ राधा की रत। सुरत समें संतोष न मानत फिरि फिरि अंक भरत॥ मुखके अनिल सुखावत श्रमजल यह छवि मनहिं हरत। मानहु काम अग्नि निर्ज्वाला भई ज्यों ज्वाला फेरि करत॥ दुतिय प्रेमकी राशि लाडिली पलकन बीच धरत। सूर श्याम श्यामा सुख क्रीडत मनसिज पाईं परत॥८॥ राग सारंग॥ नैननको फल सुफल राधिका प्यारी। श्रमजल भर बूंद वदन मृदु अरविंद प्रसेद मकरद अलि अलकअनुसारी॥ नैन मेचक रेख अधर रंग विशेष नासिका जलज मनहुँ गुंजारी। भौंह मन्मथ धनुष पूरि त्रिभुवन विजय तिलक तीक्षण सीमंत सार सारी॥ ताटंक दुति छुटि केश बिथुरी लटैं घट कुंकुंरतर उदित उजियारी। गंड सूक्ष्म इंदु मनहु दिनकरउदै सकुचे सतदल सूछकैं निवारी॥ दशन हीरकी पांति बिच बिच मुसकाति बरणि न जात मृदुवचन किलकारी। विमल मुक्तामाल लसत उच्चकुचन पर मदन महादेव मनो दई है लचारी॥ दोउ वमत एक ठौर काज निविसत भोर विरुद्ध त्यागि बात बनी अति भारी। कमल विकच करनावली मुद्रिका वलय पुट भुज वेलि शुक चारी॥ स्कंध वेनी धरे मान मनसिज हरे श्रीगुंजमध्य कुंज सुरंग सारी। निम्ननाभी लेश कटि अति सुदेश बनी अधार जंघनिअतिभारी॥ मनहु मन्मथ अजित करि हरिहि देत होत नादकिंकिणि झनकारी। अति विशद गुरुनितंब चौरबांधे कोउ नाहिन समतारी॥ मंदगति युगल पटलपर अमल पद्म पानि पदतर न तुम्हारी। अभिमानपूरन बंक सूर प्रभु यदपि थकितभयेगिरि निरखि गिरिधारी॥ ओटनिरखैसखी मनहुचित्रितलिखी युक्ति संयोगपर जाहि बलिहारी॥९॥ राग केदारो॥ नागरताकी राशि किशोरी। नवनागरकुलमूलसाँवरो वरवशकियो चितै मुख मोरी॥ रूप रुचिर अँगअंग माधुरी बिनभूषण भूपितब्रजगोरी। छिनछिन कुशल सुगंध अंगमे कोककरभसर सिंधु झकोरी॥ चंचलरसिकमधुपमोहनमनराखेकनककमल कुच कोरी। प्रीतम नैनयुगल खंजन खग बांधे विविधनितंबन डोरी॥ अवनी उदरनाभिसरसी-में मनहु कछुक मादक मधुरोरी। सूरदास पीवत सुंदर वर मीन सुदृढ निगमनिकी तोरी॥ १०॥ ॥ राग केदारो॥ आज्ञु तनु राधा सज्यो शृंगार। नीरजसुत सुतवाहनको भख श्याम अरुणरँगकौन बिचार॥ मुद्रापति अचवन तनयासुत उरहि वनावहि हार। गिरिसुत तिन पति विवश करनको अक्षत लै पूजत रिपुमार॥ पंथपिता आसनसुत शोभित श्याम घटा वग पंक्ति अपार। सूरदास प्रभु हंससुतातट क्रीडत राधा नंदकुमार॥ ११॥ राग ललित॥ देख सखी सायक बलजोर। बीस कमल परगट देखियतहै राधा नंदकिशोर॥ सोरहकला सँपूरण मोहो ब्रज अरुणोदय भोर। तामें सखि द्वै कमल लागिरहे चितवत चारि चकोर॥ मनु मदमत गजराज अरे हैं कोटि मदन भै भोर। सूरदास बलिबलि या छबिकी अलकनकी झकझोर॥१२॥ राग सारंग॥ मोरनकेचँदवा माथे बने राजत रुचिरसुदेश री। वदनकमल ऊपर अलिगण मनो घूँघरवारे केश री॥ भौंह धनुष दृग बान चपल अति भाल तिलक जनु बान री। भोरहोत रवि अधकारको कियोउरधसंधानरी॥ मणिगण जडित मनोहर कुंडल राजत लोल कपोल री। कालिंदीमें रवि प्रतिबिंबित चंचल पवन अडोल री॥ सुभग नासिका मुक्ता शोभित झलमलात छवि होत री। भृगुसुत मानो अमल विमल सखि घनमें किए उदोत री॥ अरुण अधर सु श्रमित मुख बोलत ईषद कछु मुसुकात री। मानहु सुपकबिंबते प्रगटत रस अनुराग चुतात री॥ दशनदमक दामिनिसी चमकति शोभा कहत न आवे री। याहीते दाडिम उर विगलित तिनकी सम नहिं पावेरी॥ चिबुकचारुमर्कतमणि

ला अनियारी॥नरल तिलक ताटंक निकट तट उभय परस्पर शोभ शृंगारी।जलरुहहंस मिलिमनो नाचत ब्रज कौतुक वृषभानुदुलारी ॥ मुक्तानलिको हार लोलगति तापर लटपटात लट कारी। तामें सो लट मनो तरंगिनि निशिनायक तम मोचनहारी ॥ अरु कंकन किंकिणि नूपुर छवि निशापान समद्युति गतिनारी।श्रीगोपाललाल उर लाईंवलिबलिसूर मिथुन कृतभारी॥१॥राग नट॥ देखे चारि कमल इकसाथ।कमलनि कमल गहे लावतिहै कमलहि मध्यममात ॥ सारंगपर सारंग खेलत है सारंग ही सों हसि हँसि जात।सारंग श्याम ओगह सारंग सारंगमों करि यात ॥ आरि सारंग राखि सारंगको सारंगगहि सारंगको जान। तोले गरिव सारंग सारंगको सारंग ले आऊवा हाथ॥ सोइ सारंग चतुरानन दुर्लभ सोइ सारंग शंभु मुनि ध्यान । सेवत सूरदास सारंगको सारंग ऊपर वलि बलि जात॥२॥ रागनट॥हरि उर मोहनि बेलिलसी।तापर उरग ग्रसितनवशोभित पूरन अंश शशी॥ चापति कर भुजदंड रेख गुनअंतरवीच कसी। कनककलशमधुपानमनोकरभु-जनि उलटिधसी ॥ तापर सुंदरअचर झाप्यो अंकित दंगतसी। सूरदासप्रभुतुमहिंमिलनजनुद्रुति विगरि हँसी॥३॥ राग कान्हरो॥मोहनीमोहनकीप्यारी।रूपउदधिमथिकीनिधिहठिपचिरचीसुरति न्यारी॥ चंपककनक कलेवरकी द्युति शशिनवदनसमतारी । खंजरीटमृगमीनकिगुरुतानिननसबै निवारी॥ भ्रुकुटी कुटिल सुदेश शोभ अति मनहु मदन धनु धारी। भाल विशाल कपोल मधुप छवि नासा जित मदगारी ॥अधर विंब बंधूक निरादर दशन कुंद अनुहारी।परमरसालश्याम सुखदायक वचनन सुनि पिकहारी॥ कुँवरि अही जनु हेमखंभलगि ग्रीव कपोतविमारी । बाहु मृणाल जु उरजकुंभ गजनिम्ननाभि सुभगारी॥मृगारिपुलीन कटी गजति युग जंघ मरस अति भारी। अरुण रुचिर जु विडाल रसनसम चरणतली ललितारी॥एक समय करपर धरि मुक्ता ग्रसन मरालविचारी। मारगमत्त जानिमानेगहि भयहिजविपिनविसारी ॥ जहँ जहँ दृष्टिपरति तहँ अरुझत भरि नहि जातचितारी॥सूरदासप्रभु रमनश कीन्हें अंग अंग सुखकारी ॥४॥रागनट॥ उरपर देखियतहै शशि सात।सोवति हुती जुकुँवरि राधिकाचौंकिपरी अधरात॥खंडखंड होइगिरे गगनते वाम पतिनके भ्रातके बहु रूप किए मारगते दधिसुत आवत जात॥ विधु बहुरे विधुकिए शिखडी शिवमेंगिवसतजात । सूरदासधारेको धरणी श्यामसुनोयह बात॥५॥राग बिलावल॥ आजु वन राजत युगलकिशोर। दशन वसन खंडित मुख मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ डगमगात पग धरत शिथिलगति उठे कामरस भोर ।रतिपति सारँग अरुणमहाछवि उमँगि पलक लगे भोर॥ श्रुति अवतंस निराजत हरिसुत सिद्ध दरश सुतओर। सूरदास प्रभु रस बश कीन्ही परी महारण जोर ॥६ राजत युगल किशोर किशोरी।प्रातसमय देखियत [illegible] गति गोरी ॥ रहे उवटि [illegible] आयो।सूरदास प्रभुसुखसागरअतिसोइसुखशेषसहसमुखगायो के हित घालि [illegible]॥ कौन परीनँदलालहिंबानि।प्रातसमैजागनकीबिरियांसोवतहैंपीतवरतानि॥ मात यशोदा कबकी ठाढी दधि ओदन भोजन लिये पान। तुम मोहन जीवन धन मेरे मुरली नेकु सुनावहु कान ॥ संग सखा ब्रजबाल खरे सब मधुबन धेनु चरावन जान ॥ यह सुनिश्रवण उठे नँदनंदन वंसी वेणु माग्यो मृदु आन॥जननी कहति लेहु मनमोहन दधि ओदन घृत आन्यो सानि।सूरजब लिवलिजाउँ वेणुकीजिहि लगिलालजगे हितमानि ॥१८॥ अध्याय:३९राग बिलावल ॥ भोर भयो जागो नँदनंद । तात निशि विगत भई चकई आनंद मई तरनिते चद

थाके रंग रणकी छवि छाजत हारि मानि नहिं रहत निहोरी । सूर सुभट दोउ खेत न छाँडत मानहु आइ खडे दल जोरी ॥७॥राग सारंग॥देखौ माधौ राधा की रत । सुरत समै संतोप न मानत फिरि फिरि अंक भरत ॥मुखके अनिल सुखावन श्रमजल यह छवि मनहिं हरत । मानहु काम अग्नि निर्ज्वाला भई ज्यों ज्वाला फेरि करत ॥ दुतिय प्रेमकी राशि लाडिली पलकन बीच धरत । सूर श्याम श्यामा सुख क्रीडत मनसिज पाइँ परत॥८॥राग सारंग॥नैननको फल सुफल राधिका प्यारी। श्रमजल भर बूंद वदन मृदु अरविंद प्रसेद मकरंद अलि अलकअनुसारी ॥ नैन मेचक रेख अधर रंग विशेप नासिका जलज मनहुँ गुंजारी । भौंह मन्मथ धनुप पूरि त्रिभुवन विजय तिलक तीक्षण सीमंत सार सारी ॥ताटंक दुति छुटि केश विथुरी लटैं घट कुर्बुरतर उदित उजियारी। गंड सूक्ष्म इंदु मनहु दिनकरउदे सकुचे सतदल सूछकै निवारी॥दशन हीरकी पांति विचविच मुसकाति वरणि न जात मृदुवचन किलकारी । विमल मुक्तामाल लसत उच्चकुचन पर मदन महादेव मनो दई हे लचारी॥ दोउ वसत एक ठौर काज निविसत भोर विरुद्ध त्यागि वात वनी अति भारी । कमल विकच करनावली मुद्रिका वलय पुट भुज वेलि शुक चारी ॥ स्कंध वेनी धरे मान मनसिज हरे श्रीगुंजमध्य कुंज सुरंग सारी॥निम्ननाभी लेश कटि अति सुदेश वनी अधार जंघनिअतिभारी ॥ मनहु मन्मथ अजित करि हरिहि देत होत नादकिंकिणि झनकारी।अति विशद गुरुनितंब चौंरबांधे कोउ नाहिंन समतारी॥मंदगति युगल पटलपर अमल पद्म पानि पटतर न तुम्हारी।अभिमानपूरन वंक सूर प्रभु यदपि थकितभयेगिरि निरखिगिरिधारी॥ओटनिरखैसखी मनहुचित्रितलिखीयुक्ति संयोगपर जाहि वलिहारी॥९॥ राग केदारो ॥ नागरताकी राशि किशोरी। नवनागरकुलमूलसाँवरो वरवशकियो चितै मुख मोरी॥ रूप रुचिर अँगअंग माधुरी विनभूपण भूपितव्रजगोरी । छिनछिन कुशल सुगंध अंगमें कोककरभसर सिंधु झकोरी॥ चंचलरसिकमधुपमोहनमनग खेकनककमल कुच कोरी । मीतम नैनयुगल-खंजन खग बांधे विविधनितंवन डोरी॥ अवनी उदरनाभिसरसी-में मनहु कछुक मादक मधुरोरी । सूरदास पीवत सुंदर वर सींव सुदृढ निगमनिकी तोरी ॥ १० ॥ ॥ राग केदारो॥ आजु तनु राधा सज्यो शृंगार । नीरजसुत सुतवाहनको भख श्याम अरुणरँगकौन विचार ॥ मुद्रापति अचवन तनयासुत उरहि वनावहि हार । गिरिसुत तिन पति विवश करनको अक्षत लै पूजत रिपुमार ॥ पंथपिता आसनसुत शोभित श्याम घटा वग पंक्ति अपार । सूरदास प्रभु हंससुतातट क्रीडत राधा नंदकुमार ॥ ११ ॥ राग ललित ॥ देख सखी सायक वलजोर। बीस कमल परगट देखियतहै राधा नंदकिशोर ॥ सोरहकला सँपूरण मोह्यो व्रज अरुणोदय भोर। तामैं सखि द्वै कमल लागिरहे चितवत चारि चकोर ॥ मनु मदमत गजराज अरे हैं कोटि सम रँग लीन्हैं ॥ लावन लाडू लागित [illegible] झकझोर॥१२॥राग सारंग॥मोरनकेचँदवा गालमसूरी ॥ मेवा मिलै कपूरन पूरी॥ शशि सम सुंदर सरस अँदरसा [illegible] केश री ॥ भौंह धनुप वरसे ॥ वहुत जलेब जलेवी बोरी । नाहिंन घटित सुधाते थो[illegible] ॥ हरप होतहै सभी । मनहु वुदवुदा उपजत अमी॥ फेनी घुरि मिसि मिली दूधसँग । मिश्री मिश्रितभई एक रँग॥ साज्यो दही अधिक सुखदाई । ताऊपर पुनि मधुर मलाई ॥ खोवा खोइ औटिहै राख्यो । सुहै मधुर मीठे रस चाख्यो ॥ वासौंधी सिखरनि अति सौंधी । मिलै मिरच मेटत चकचौंधी ॥ छाँछ छवीली धरी धुँगारी । झरहै उठत झारकी न्यारी ॥ इतने जतन यशोदा कीन्हें । तव मोहन बालक सँग लीन्हें ॥ बैठे आइ हँसत दोउ भैया । प्रेममुदित परसतिहै मैया ॥

दुति सखि राजति त्रिवली ग्रीव री । मानहु मत तीनि रेखा करि कामरूपकी मींव री ॥ उन्नत विशाल हृदय राजतहै तापर मुक्ताहार री । मानहु सांवर गिरिते सरिता अध आवत द्वै धार री ॥ भुज भुजंग मनु चंदन चरनित करगहि मुख धरि वंस री।मानहु सुधा सरोवरके ढिग कूंजत युग कलहंसरी॥ कंचन वरन पीत उपरेना शोभित सावंर अंग री । मानहु आवत आगे पाछे निशि वासर इक संग री ॥ नाभि सरोज सुधा सरसी जनु त्रिवली सिढी वनाइ री । ब्रजवधु नैन मृगी आतुरहै अति प्यासी ढिग आइ री॥कटि प्रदेश सुंदर सुदेश सखि तापर किंकिणि राजै री॥अति नितंव जंघन शोभितहै देखत मृगपति लाजै री ॥ पीनपिंडुरिया सांवल सीरी चरणाम्बुज नख लाल री । मंद मंद गति वो आवतिहै मत्त दुरदकी चाल री॥सूरदास सरवसहि निरंतर मनमोहन अभिरामरी।वृंदावनमें विहरत दोऊ मम प्रभु श्यामा श्याम री॥१३॥देखि हरिजूके नैननकी छवि। इहै जानि दुख मानि मनहु अंबुज सेवत रवि॥खंजरीट अति वृथा चपलता गयेघन मृग जल मीन रहे दवि। तहउँ जानि तनु तजत जवहि कछु पटतर देवै कहत कुकवि ॥ इनसे येइ पचि हारि रही हौं आवै नाहीं कहत कछू फवि । सूर सकलउपमा जो रही यों ज्यों होइ आवै कहत होमत हवि १४॥राग गूजरी॥किशोरी देखत नैन सिरात । वलिवलि सुखद मुखारविंदकी चंद्रविंदु दुरिजात॥अघमोचन लोचन रतनारे फूले ज्यों जलजात । राजत निकट निपट श्रवणनके पिशुन कहत मन वात ॥ गौंर लिलाट पाट पर शोभित कुंचित कच अरुझात। मानो कनक कमल मकरंदहि पीवत अलि न अघात॥ नकवेसरि वंसीके संभ्रम भौंह मीन अकुलात । मनु ताटंक कमठ) घूंघट पट जालावलि अकुलात । श्याम कंचुकी मांझ सांझ फूले कुच कलशा न समात। मानहु मत्तगयंद कुंभपर नील ध्वजा फहरात ॥ नखशिखलौं रसरूप किशोरी विलसत सावल सुकृतगात । यहसुख देखत सूर अवर सुख उडे पुराने पात॥ १५ ॥वसौ मेरे नैननमें ए जोरी।सुंदरश्यामकमलदललोचनसंगवृषभानुकिशोरी॥ मोरमुकुट मकराकृतकुंडल पीतांवर झकझोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको का वर्णों मति थोरी॥ राग विलावल ॥ शंखचूड तेहि अवसर आयो। गोपी हुतीं प्रेमरसमाती तिन ताको कछुसुद्धि न पायो ॥ चल्यो पराइ सकल गोपी लै दूरि भयो तव उन सुधि आयो। को यह लियेजात कहां हमको कृष्णकृष्णकहिकहि गोहरायो॥ गोपीटेर सुनत हरि पहुंचे दानव देखि डरायो । मुष्टिक मारि गिराइदियो तेहि गोपिन हर्ष वढायो ॥ मणि अमोल ताकेशिरताही दियेहलधरहिआयो।सूर चले वनते गृहको प्रभु विहंसत मिलिसमुदायो॥१६॥राग सोरठ॥सोइ सुख नंद भाग्यतेपायो।जोसुख ब्रह्मादिकको नाहीं सोइ सुखयशुमतिगोद खिलायो॥सोइसुखसुरभीवच्छवृंदावनसोइसुखग्वालन टेरि सुनायो । सोइ सुख यमुनाकूल कदम चढि कोपकियोकालीगहिल्यायो॥ सुखहीसुखडोलत कुंजनमें सवसुखनिधि वनते व्रज आयो । सूरदास प्रभुसुखसागरअतिसोइसुखशेषसहसमुखगायो ॥१७॥ राग विलावल ॥ कौन परीनँदलालहिवानि।प्रातसमेजागनकीविरियांसोवतहैपीतांवरतानि॥ मात यशोदा कवकी ठाढी दधि ओदन भोजन लिये पान। तुम मोहन जीवन धन मेरे मुरली नेकु सुनावहु कान ॥ संग सखा व्रजवाल खरे सव मधुवन धेनु चरावन जान ॥ यह सुनिश्रवण उठे नँदनंदन वंसी वेणु माँग्यो मृदु आन॥जननी कहति लेहु मनमोहन दधि ओदन घृत आन्यो सानि।सूरजव लिवलिजाउँ वेणुकीजिहि लगिलालजगे हितमानि ॥१८॥ अध्याय:३६राग विलावल ॥ भोर भयो जागो नँदनंद । तात निशि विगत भई चकई आनंद मई तरनिते चंद

भयो मंद॥तमचुरखगरोर अलिकरैं तवशोरवेगिमोचन करहु शुभगल फंद । उठहुभोजनकरहुशिशु खौंरि उतारि धरहु जननीप्रतिदेहु रूप निजफंद॥ त्रियन दधिमथन करहिं मधुर ध्वनि श्रवण सुनि कृष्णगुण विमल यश करत आनंद । सूर प्रभु हरिनाम उचारत जगजीवन गुण को न देखि छकित भयोछंद॥१९॥राग बिलावल॥जागिए गोपाललाल ग्वालद्वार ठाडेरैनि अंधकारगयो चंद्रमामलीन भयो तारागण देखियत नहिं तरणि किरणि बाढे॥मुकुलित भए कमलजाल गुंज करत भृंगमालप्रफुलित वन पुहुप डार कुमुदिनि कुँभिलानी। गंधर्व गुण गान करत स्नान दान नेम धरत हरत सकल पाप वदत विप्र वेद वानी ॥ बोलत नंद वार वार मुख देखैं तुव कुमार गाइन भई वड़ीवार वृंदावन जैवे। जननी कहे उठो श्याम जानत जिय रजनि ताम सूरदास प्रभु कृपालु तुमको कछु खैवे॥२०॥रसोई वर्णन॥भोजन भयो भावते मोहन।तातोइ जेंइ जाहु गो गोहन॥खीर खांड खीचरी सँवारी ।मधुर महेरि सो गोपन प्यारी॥ राइ भोग लियो भात पसाई। मूंग ढरहरी हींग लगाई ॥ सदमाखन तुलसी दै तायो।घिरत सुवास कचोरा बनायो ॥ पापर बरी अचार परम शुचि । अदरख अरु निबुवन ह्वै है रुचि॥सूरन कारि तरि सरस तरोई।सेमि सीगरी छवँकिझोरई॥ भगता भँटा खटाई दीनीं । भाजी भली भाँति दश कीनी ॥ साग चना सँग सव चौराई। सोवा अरु सरसो सरसाई ॥ बथुवा भली भाँति रचि राँध्यो । हींग लगाइ राइ दधि साध्यो ॥ पोई परवर फाग फरी चुनि। टेंटी टेंट सुछोलि कियो पुनि॥कुंदुरु और ककोरा कौरे।कचरी चार चँचेडा सौरे ॥ बने बनाइ करेला कीने ॥ लोन लगाइ तुरत तलि लीने ॥फूले फूल सहीजन छौंके । मन रुचि होइ नाजुके औंके॥फूल करील कली पाकर नम। फली अगस्त्य करी अमृत सम॥ अरु यहि अँबिली दई खटाई। जेंवत षटरस जात लजाई॥पेठा वहुत प्रकारन कीने । तिनसों सबै स्वाद हरि लीने॥ खीरा रामतरोई तामें । अरुचिन रुचिअंकुर जिय जामें ॥ सुदर रूप रतालू गतो।तरि करि लीन्हो अबही तातो ॥ ककरी कचरी अरु कचनारयो । सुरस निमोननि स्वाद सँवारयो ॥ कयौं भाँति केरा करि लीने । दै करवँदा हरदि रँगभीने ॥ वरबरील अरु बरा वहुत विधि । खारे खाटे मीठे हैं निधि ॥ पानौरा राइता पकौरी। उभकौरी मुँगछीसुठिसौरी ॥अमृत इडहर है रससागर। बेसन सालन अधिको नागर ॥ खाटी कढी विचित्र बनाई। वहुत वार जेंवत रुचि आई ॥ रोटी रुचिर कनकबेसन करि। अजवाइनि सैंधो मिलाइ धरि ॥ अबहिं अगाकरि तुरत बनाई। जे भजिभजि ग्वालन सँग खाई ॥मांडे मोंडि दुनेरो चुपरे। वह घृत पाइ आपुही उखरे ॥ पूरि सपूरि कचौरी कौरी ।सदल सु उज्ज्वल सुंदर सौरी ॥ लुचई ललित लापसी सोहै । स्वाद सुवासु सहज मन मोहै ॥ मालपुआ माखन मथि कीन्हें। ग्रह ग्रासित रविसम रँग लीन्हें॥लावन लाडू लागत नीके। सेव सुहारी घेवर घीके॥ गोझा गूँदे गालमसूरी ॥ मेवा मिले कपूरन पूरी॥ शशि सम सुंदर सरस अँदरसे। ऊपर कनी अमीजनु बरसे ॥ बहुत जलेब जलेबी बोरी । नाहिंन घटित सुधाते थोरी ॥ देखत हरप होतहै समी । मनहु बुदबुदा उपजत अमी॥ फेनी धुरि मिमि मिली दूधसँग। मिश्री मिश्रितभई एक रँग॥ माज्यो दही अधिक सुखदाई । ताऊपर पुनि मधुर मलाई॥ खोवा खोइ औटिहै राख्यो ।सुहै मधुर मीठे रस चाख्यो ॥ वासौंधी सिखरनि अति सौंधी । मिले मिरच मेटत चकचौंधी॥ छाँछ छबीली धरी धुँगारी । झरहै उठत झारकी न्यारी ॥ इतने जतन यशोदा कीन्हें। तब मोहन वालक सँग लीन्हें ॥ वैठे आइ हँसत दोउ भैया। प्रेममुदित परसतिहै मैया ॥

थार कटोरा जरित रतनके॥ भरि सब बासन विविध जतनके। पहिले पनवारी परसायो । तब आपुन कर कौर उठायो॥ जेंवत रुचि अधिकी अधिकैया । भोजनहूं बिसरति नहिं गैया॥ शीतल जल कपूर रस रचयो। सो मोहन निज रुचि करि अचयो॥ महरि मुदित नित लाड लडावें । ते सुख कहाँ देवकी पावें ॥ धरि तुष्टी झारी जल ल्याई। भरयो चुरू सरिका लै आई॥ पीरे पान पुराने बीरा। खात भई दुति दाँतनि हीरा॥ मृगमद कन कपूर कर लीने । बाँटि बाँटि ग्वालनको दीने ॥ चंदन और अरगजा आन्यो। अपने कर बलके अँग बान्यो ॥ ता पाछे आपुनहूं लायो । उबरयो बहुत सखन पुनि पायो । सूरदास देख्यो गिरिधारी। बोलि दई हँसि जूंठनि थारी॥यह जेवनार सुनै जो गावै।सो निजभक्तिअभयपदपावै॥२१॥राग बिलावल॥रामकली॥ भोजन करत मोहनराइ ।हरषि मुखतन देत मोहन आपु लेत छडाइ ॥ देखहीं मुख नंदको तब आनँद उर न समाइ । निरखि प्रभुकी प्रगटलीलाजननि लेति बलाइ॥नंदनंदन नीर शीतल अँचै उठे अघाइ।सूर जूंठनभक्तपाईदेवरहे लुभाइ२२॥राग बिलावल॥देख सखीब्रजते बन आवत ।रोहिणि-सुत यशुमतिसुतकी छवि गौर श्याम हरि हलधर गावत॥ नीलांबर पीतांबर ओढे यह शोभा कछु कही न जात । युगल जलद युग तडित मनहुँ मिलि अरस परस जोरतहैं नात ॥ शीश मुकुट मकराकृत कुंडल झलकै विविध कपोलहिं भाँति ।मनहु जलद युग पास युगल रवि तापर इंद्र-धनुषकी कांति ॥ कटि कछनी कर लकुट मनोहर गोचारन चले मन उनमानि । ग्वाल सखा बिच श्रीनँदनंदन बोलत वचन मधुरिमुसुकानि ॥ चितै रहीं ब्रजकी युवती सब आपुसहीमें करत विचार । गोधनवृंद लिए सूरज प्रभु वृंदावन गए करत विहार ॥ २३ ॥ ग्वाल वचन श्रीकृष्ण प्रति ॥ राग गौरी॥छबीले मुरली नेक बजाउ । बलि बलि जात सखा यह कहि कहि अधर सुधारस प्याउ ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभवृन्दावन दुर्लभ प्रेमतरंग । ना जानिये बहुरि कब ह्वैहै श्याम तुम्हारो संग ॥ बिनती करहिं सुबल श्रीदामा सुनहु श्याम दै कान । जा रसको सन-कादि शुकादिक करत अमरमुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोपभेष ब्रज धरिहौ फिरिहौ सुरभिन साथ। कब तुम छाक छीनिकै खैहौ हो गोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कंध कमरिया ग्वालन दई डसाइ । सौंह दिवाइ नंदबाबाकी रहे सकल गहि पाइ ॥ सुनिसुनि दीनगिरामुरलीधरचितए मुख मुसकाइ । गुणगंभीर गोपाल मुरलि कर लीन्हों तबहिं उठाय ॥ धरि कर बेनु अधर मन-मोहन कियो मधुरध्वनि गान। मोहे सकल जीव जल थलके सुनि वारयो तन प्रान ॥ चपलनयन भृकुटी नासापुटसुनि सुंदर मुख बैन। मानहु नृत्यक भाव दिखावत गति लिये नायक मैन ॥ चमकत मोरचंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल। मानहु कमलकोश रस चाखत उडिआए अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत । मानहु सुधासिंधुमें क्रीडत मकर पानके हेत॥ उपजावत गावत गति सुंदर अनाघातके ताल । सरबस दियो मदन-मोहनको प्रेम हरषि सब ग्वाल॥ शोभित बैजंती चरणनपर श्वास पवन झकोरि । मनहु श्रीव सुरसरि बहि आवत ब्रह्मकमंडलु फोरि ॥ डुलति लता नहिं मरुत मंदगति सुनि सुंदर मुखबैन। खग मृग मीन अधीन भए सब कियो यमुनजल सैन ॥ झलमलात भृगुकी पदरेखा सुभग साँवरे गात। मानो पट विधु एक रथ बैठे उदय कियो अधरात ॥ बांके चरणकमल भुज बाँके अवलोकनि जु अनूप । मानहु कल्पतरोवर बिरवा आनि रच्यो सुरभूप ॥ आयसु दियो गुपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज माँगत निरखत

रूपनिधान॥२४॥राग सारंग॥रीझतग्वालरिझावतश्याम।मुरलिबजावतसखन बोलावतसुबलसुदामा लेलै नाम ॥ हँसत सखा सब तारी देदे नाम हमारो मुरली लेत । श्याम कहत अब तुमहु बोलावहु अपने करते ग्वालन देत ॥ मुरली लेले सबै बजावत काहूपै नहि आवै रूप। सूर श्याम तुम्हरेहि मुख बाजत कैसे देखोरागअनूप॥२५॥रागटोडी ॥हरिबिरावरि वेणुकौन बजावै। जगजीवन विदित मुनिनाचन वेणु सो बजावै चतुरानन पचानन सहसानन ध्यावै॥ ग्वालबाल लिए यमुना कच्छ वच्छ चरावै । सुर नर मुनि अखिल लोक कोउ न पारपावै ॥ तारन तरन अगणित गुण निगम नेति गावै ॥ तुमको यशुमति आँगन अपने दै करताल नचावै। सूरदासप्रभु कृपाधामहैंभक्तनवश्य कहावै ॥ २६ ॥ अथ परस्पर गोपिकावच विरहअवस्था ॥ राग टोडी ॥ मुरली सुनत देहगति भूली । गोपी प्रेमहिंडोरे झूली ॥ कबहूँ चकृत होहिं सयानी । स्वेदचलै द्रव जैसेपानी॥ धीरज धरिइक इकहि सुनावहिं। यह कहिकै आपुहि बिसरावहि ॥ कबहूँ सुधि कबहूँ बिसराई । कबहू मुरली-नाद समाई॥ कबहू तरुणी सब मिलि बोलै। कबहू रहे धीर नहि डोलै ॥ कबहूँ चलै कबहुँ फिरिआवैं। कबहुँ लाज तजि लाज लजावैं ॥ मुरली श्यामसुहागिनि भारी । सूरदास प्रभुकी बलिहारी ॥२७॥ राग बिहागरो ॥ अधर धरि मुरली श्याम बजावत।सारंग गौरी नटनारायण करिकै गौरी सुरहि सुनावत ॥ आपु भए रसवश ताहीके औरन वश करवावत । ऐसोको त्रिभुवन जल थलमे जो शिर नही धुनावत ॥ सुभग मुकुट कुंडल मणि श्रवणन देखत नारिन भावत । सूर-दास प्रभु गिरिधर नागर मुरलीधरनकहावत॥२८॥ राग सारंग ॥ अधररस मुरली सौतिन लागी। जा रसको षटऋतु तप कीन्हो सो रस पिवतसभागी॥कहांरहीकहँतेइह आई कौने याहि बोलाई। सूरदास प्रभु हमपर ताको कीने सवति बजाई ॥ २९ ॥ राग केदारो ॥ मुरली मोहनी भई । करी जुकरनि देव दनुजनि प्रतिवह विधि फेरिठई ॥वह पयनिधि इन ब्रजसागर मथि प्याइपियूपनई। सिंधुसुधा हरिवदन इदुकीइह छलछीनि लई॥आपु अँचैअचवाइ सतसुर कीन्हेंदिगविजई। एकहि पुट उत अमृत सूर इत मदिरा मदनमई ॥३०॥ जोपै मुरलीकोहित मानो॥ तौ तुम वारबारऐसे कहि मनमें दोप न आनो । वासरश्यामविरह अहिग्रासित हूजत मृतकसमान । लेति जिवाय मंत्र सुरस रही करति न डर अपमान ॥ निज सकेत खिलावतिअजहूँ मिलवतिसारँगपानि । शरदनिशा रस रास करायो बोलिबोलि मृदुवानि॥ परकृत शील सुकृत उपमा रमि तासो यो कत कहिए।परमा-नदसूरदासक्योमेटिकृत न्याइइतो दुख सहिए ॥३१॥ राग मलार ॥ अधरमधुकतक मुईहमराखि । सचित किए रही सरघासो सकी न सकुचनि चाखि ॥ शशि सहि शीत जाइ यमुनातटदीन वचन दिन भाषि ।पूजि उमापतिको वर पायो मनहीमनअभिलाषि ॥ सोइ अब अमृत पीनति मुरली सबहिनकेशिरनाखि।लिएछँडाइनिडरसुनि सूरजधेनुधरिदै आँखि॥३२॥राग नट॥सखीरीमाधोहि दोप न दीजै।जोकछु करिसकिये सोई या मुरलीकोअब कीजै॥ बारबारबन बोलि मधुरध्वनि अति प्रतीति उपजाइ । मिलि श्रवणन मन मोहि महारस तनकी सुधि बिसराइ ॥मुखमृदु वचन कपट अंतर गति हम यहबात न जानी। लोक वेद कुल छोड़ि आपनो जोइजोइ कही सु मानी॥अजहूँ वहे प्रकृति याके जिय लुब्धकसंग जु साधी।सूरदास क्योही करुणामय परति नहीआराधी॥३३॥ मुरली तो यह आहिबांसकी ।बाजत श्वास परत नहिं जानतिभई रहतिपियपासकी।चेतनको चित हरति अचेतनि भूखी डोलत मासकी ॥ सूरदास सब ब्रजबासिनसो लिये रहतिहैगांसकी ॥३४॥ जादिनते मुरली करलीन्ही । तादिनते श्रवणन सुनिसुनिसखिमनकी बातसबैलैदीन्ही।लोकवेद

कुल लाजकानि तजि मर्याद वचन मितिकीन्ही।तबहीतेतनुसुधिविसराई निशिदिनरहतिगोपाल अधीन्ही॥शरदसुधानिधि शरदअंश ज्यों सींचत अमी प्रेमरसभीनी। ताऊपर शुभदरश सूर प्रभु श्रीगोपाल लोचनगति छीनी॥३५॥मुरली भई आजु अनूप। अधरबिंबबजाय करधरि मोहे त्रिभुवनभूप॥देखि गोपी गाइ गाइन देखि गृह वन कूप॥देखि मुनिजन नाग चंचल देखि सुंदररूप॥ देखि धरणि अकाश सुर नर देखि शीतल धूप। देखि सूरअगाध महिमा भए दादुर चूप॥३६॥ राग कान्हरो ॥ मुरलिया मोको लागत प्यारी॥मिली अचानकआइ कहांतेऐसी रही कहांरी॥धनिया-के पितु मात धन्य यह धन्यधन्य मृदु बोलनि। धन्य श्याम गुण गुणिकै ल्याये नागरि चतुर अमोलनि ॥ इह निर्मोल मोल नहिं याको भली न यातें कोई। सूरदास याको पटतर को तौ दीजै जोहोई ॥३७॥राग गौरी ॥मोहनमुरलीअधरधरी॥कंचनमणिमयखचितरचितअतिकर गिरिधरन परी ॥ औंघरतान बँधान सरस सुर अरु रस उमँगि भरी। हरिकर्षतमनतनयुवतिनकेनग खग विवश करी॥ पियमुखसुधा विलासविलासिनि सुरत सँगीत समुद तरी। सूरदास त्रैलोक-विजययुत दर्प मीनपति गर्व हरी॥३८॥राग केदारो ॥मुरली श्यामके करअधरबिंब रमी॥लेपि सर्वसु युवति जनको वदन बिंदतअमी ॥ पिवति न्यारे गर्व मारे नेकु नाहीं नमी॥बोलिशब्द सुसत सुर मिलि नाग मुनि गति दमी॥महाकठिन कठोर आली बांसवंश जु जमी । सूर पूरण परसि श्री-मुखनेकनाहींझमी॥३९॥राग मलार॥बाँसुरीविधिहूतेपरवीन।कहिएकाहि आहिकोऐसोकियेजगत आधीन ॥ चारि वदन उपदेश विधाता थापी थिर चर नीति। आठ वदन गर्जति गर्वीली क्यों चलिए यह रीति ॥ विपुल विभूति लई चतुरानन एक कमल करि थान। हरिकरकमलयुगलपर बैठी बाढ्यो यह अभिमान॥एकवेर श्रीपतिके सिखये उन लियो सब गुण गान। इनके तौ नँद-लाल लाडिलो लग्यो रहत नितकान॥एक मराल पीठि आरोहण विधि भयो प्रबल प्रशंस। इन तौ सकल विमान किए गोपीजन मानस हंस ॥ श्रीवैकुंठनाथ उर वासिनि चाहत जापद रैन। ताको मुख सुखमय सिंहासन करि बैसी यह ऐन ॥ अधरसुधा पी कुलव्रत टार्यो नहीं सिखा नहिं नाग। तदपि सूर या नंदसुवनको याहीसो अनुराग॥४०॥राग सारंग ॥वंसीवैरपरीजुहमारी। अधर पियूष अंश तिनहींको इन पियो सब दिन निजनिज प्यारी ॥ इकर्घो हरि मन हरति माधुरी दूजे वचन हरत अनियारी। बाँस वंश हरि वेध महाशुभ अपने छेद न जानत का री ॥ सुन्यो सुपति जानी ब्रजके पति सो अपनाइ लियो रखवारी।सुन अनीति सूरज प्रभुकेरी अधर गोपाल जेअपनेधारी॥४१॥राग मलार॥जबजबमुर-लीके मुख लागत। तबतब श्याम कमलदललोचन नख शिखते रस पागत ॥ बात न कहत रहत टेढे होइ बाँह अलिंगन मानत। भ्रुकुटी अधर बिंब नासा पुट सूधो चितवन त्यागत॥पलइक भौंह पलटिसो लीजत परगटप्रीतिअनागत।सूरदास स्वामी बंसीवश सुरछिनिमेष नजागत॥४२॥ ॥वंसीवचन राग मलार॥ ग्वालिनी तुम कत उरहन देहु । पूछहु जाइ श्यामसुंदरको जिहि विधि जुर्यो सनेहु ॥ बारेहीते भई विरत चित तज्यो गाँउ गुण गेह। एकहि चरण रही हौं ठाढी हिम ग्रीषम ऋतु मेह ॥ तज्यो मूल शाखा सो पत्रनि सोच सुखानी देह। अगिनि सुलाकत मुर्यो न अँग मन बिकट बनावत वेहु ॥ वकती कहा बाँसुरी कहि कहि करिकरि तामस तेहु । सूर श्यामइहिभाँतिरिझेके तुमहु अधररस लेहु॥४३॥राग मलार॥ ज्योंज्योंमुरलिहिमहतदियो।त्यों त्यों निदरि श्यामकोमल तन वदन पियूष पियो ॥ रोकेरहति पाणिपल्लव पुट होत न कछू

वियो। बैठति अधरन पीठ परमरुचि सकुचति नाहिं हियो॥ जान्यो जग रतिपति शिव जारचो सो यह सूर जियो।बिधि मर्याद मेटि इन जोजो रुचिआयो सोकियो॥४४॥राग सारंग॥इनमुरली कछु भलो न कीन्हो। अधर सुधा रसवर सु हमारो आपुन पियो अरुऔरन दीन्हों॥वीरुध द्रुम तृण सोहसलिलतट पूजति गौरि भयो तनु छीनो। सोमधु सूरज परसिकुटिल चित सबहिनकेदेखत हरि लीनो॥४५॥अथ श्रीकृष्ण ब्रज आवन ॥राग गौरी॥नटवर भेप धरे ब्रज आवत।मोरमुकुट मकराकृत कुंडल कुटिल अलक मुखपर छवि पावत॥भ्रुकुटी विकट नैन अति चंचल यह छवि पर उपमा इक धावत। धनुप देखि खंजन विवि डरपत उडि न सकत उठिवे अकुलावत॥ अधर अनूप मुरलि सुर पूरत गौरी राग अलापि बजावत। सुरभीवृन्द गोप बालक सँग गावत अति आनंद बढावत॥ कनक मेखला कटि पीतांबर नृत्यत मंद मंद सुर गावत। सूर श्याम प्रतिअंग माधुरी निरखत ब्रजजनके मन भावत॥४६॥राग कान्हरो॥ब्रजयुवती सब कहत परस्पर बनते श्याम बने ब्रज आवत। ऐसी छवि मैं कबहुँ न पाई सखी सखीसों प्रगट देखावत॥मोरमुकुट शिर जलजमाल उर कटि-तट पीतांवर छवि पावत। नव जलधर पर इंद्रचाप मनो दामिनि छवि बलाक बन धावत॥ जेहि जु अंग अवलोकन कीन्हो सो तन मन तहँहीं बिरमावत। सूरदास प्रभु मुरली अधर धरे आवत राग कल्याण बजावत॥४७॥ राग शुण सारंग॥ मेरे नयन निरखि सचुपावें। बलि बलि जाउँ मुखारविंदकी बनते पुनि ब्रज आवें॥ गुंजाफल अवतंस मुकुटमणि वेणुरसालबजावें।कोटि किरणि मुखमें जो प्रकाशत उडुपति वदन लजावें॥ नटवर रूप अनूप छवीलो सबहिनके मनभावें। सूरदास प्रभु चलत मंदगति विरहिन ताप नशावें॥४८॥ राग गौरी॥बलिबलि मोहनि मूरतिकी बलिबलि कुंडलबलिनैनविशाल।बलिभ्रुकुटी बलितिलक विराजत बलि मुरली बलि शब्द रसाल॥ बलि कुंडल बलि पाग लटपटी बलि कपोल बलि उर बनमाल। बलि मुसुकानि महामुनि मोहत बलि उपरेना गिरिधर लाल॥बलि भुज सखाअंस-पर मेले बलि कुलही बलि सुंदर चाल।बलि काछनी चोलनाकी बलि सूरदास बलि चरण गो-पाल॥४९॥राग जैतश्री॥ सुंदर साँवरे हो तैंचितलियोचुराइ।संगसखासाँझकेसमयेनिकसेद्वारे आइ॥ देखि अद्भुत रूप तेरे रहे नयन उरछाय।पाग ऊपर गोसमावल रंगरंग रचि बनाइ॥ अति सुंदर शुक नासिका राजत लोल कपोल। रत्नजडित कुंडल ज्यों झलकत करन कपोल॥ कटि-तट काछ विराजई पीतांबर छवि देत। अमृत कमल मुख भापई तन मन वश करिलेत॥ भौंहिं धनुप दुइ बरुनि मनो मदन शर साध। जाहि लगें सोइ जानै संग लेन बलि बांध॥ अंगअंग-पर बलिगई मुरली नेक बजाइ।सुनि सचुपावेंगोपिकासूरदासबलिजाइ॥५०॥राग बिलावल॥श्याम कछु मोतनहीं मुसुकात।पीतांबर पहिरे चरण पाँवरी ब्रजवीथिनमें जात॥ अतिवुधि बंदि बंद नखशिखलौं सोंधे भीने गात। अलकावली अधर मुख बीरा काँध कमल कर दिशह्नि फिरावत॥ धन्य भाग्य ब्रजके जो सखी री धनिधनि उनके जननी तात। धन्य जे सूरदास प्रभु निरखत अति भूखे लोचन न अघात॥५१॥ राग अडानो॥श्यामसुंदरआवेंवनतेवनेआजुदेखिदेखिनैननरीझे। शीशमुकुट डोलश्रवणकुंडल लोल भ्रुकुटीधनुप नैनखंजन झींझे॥ दशन दामिनि ज्योती उरपर माल मोती ग्वालबाल सब आवें रँगभीजे। सूर प्रभु श्याम प्रभु राम संतनके सुखद धामअंगअंग प्रति छवि निरखि जीजे॥५२॥ राग कान्हरो॥ विराजतरीबनमालगरेहरेहरिआवतबनते।पुहुपनि लाल पाग लटकिरही वाम भाग सो छवि टरत न मनते॥ मोर मुकुट शिर श्रीखंड गोरज

मुखपर मंडित नटवर भेष धरे आवत छबिते । सूरदासप्रभुकी छबि व्रजललना निरखि थकित तन मन न्यवछावरि करति आनंद बरते॥५३॥ राग गौरी ॥ व्रजको देखि सखी हरि आवत। कटि-तट सुभग पीतपट राजत अद्भुत भेष बनावत ॥ कुंडल तिलक चक्र रज मंडित मुरली मधुर बजावत। हँसि मुसुकानि नेक अवलोकनि मन्मथ कोटि लजावत ॥ पीरी धौरी धुमरी गौरी लैले नाम बोलावत । कबहूँ गान करत अपने रुचि करतल ताल बजावत ॥ कुसु-मित दाम मधुप कल कुंजत संग सखा मिलि गावत ।कबहुँक नृत्य करत कौतूहल सतक भेद दिखावत ॥ मंद मंद गति चलत मनोहर युवतिन रस उपजावत। आनँदकंद यशोदानंदन सूरदास मन भावत॥५४॥राग गौरी॥कमलमुख शोभितसुंदरबेनु।मोहनराग बजावत गावत आवतचारे धेनु॥ कुंचितकेश सुदेश वदनपर जनु साज्यो अलिसेनु।सहि न सकति मुरली मधु पीवति चाहत अपनो ऐनु॥भ्रकुटि मनो कर चाप आप ले भयो सहायक मैनु। सूरदास प्रभु अधरसुधा लगि उपज्यो कठिन कुचैनु ॥५५॥राग केदारो॥नैनन निरखि हरिको रूप।मनबुद्धि दै सुख चिंत माई कमलअयन अनूप॥कुटिल केश सुदेश अलिगण नैन शरद सरोज।मकरकुंडलकिरणिकी छबि दुरत पियत मनो-ज ॥ अरुन अधर कपोल नासा सुभग ईपद हास।दशन दामिनि जलद नवशशि भ्रुकुटि वदन विशाल॥अंग अग अनंग जीते रुचिर उर बनमाल । सूर शोभा हृदय पूरण देत सुख गोपाल ॥५६॥ राग केदारो॥हरिको वदन रूपनिधान ।दशन दाडिमबीज राजत कमलकोशसमान॥ नैन पंकज रु-चिर द्दगदल चलन भोहन बान । मध्य श्याम सुभग मानो अलिहि बैठो आन ॥ मुकुट कुंडल किरनि किरननि किय किरनकी हान ।नासिका मृगतिलक ताकत चिबुक चित्त भुलान।सूरके प्रभु निगमबाणी कौन भाँति बखान॥५७॥ राग नट ॥ माधोजूके वदनकी शोभा।कुटिल कुंतलकमलमुख मनों मधुपरस लोभा ॥ भ्रुकुटि धनु नवकंज पारस सदृश चंचल मीन । मुकुट कुंडल किरनि रवि छबि परस विगासत कीन ॥ सुरभिरेणु पराग रंजित मुरलि ध्वनि अलिगुंज । निरखि सुभग सरोज मुदित मरालसम शिशुपुंज ॥ दशन दामिनि बीच मिलि मनो जलद मध्य प्रकाश । गावत निगम वाणी नेति क्यों कहि सकै सुरजदास॥५८॥राग नट॥देखिरीदेखमोहनओर।श्यामसुभग सरोज आनन चारु चित्त चकोर॥ नील तनु मनु जलदकी छबि मुरलि सुर घनघोर। दशन दामिनि लसत वदननि चितवनि झकझोर॥ श्रवण कुंडल गंड मंडल उदित ज्यों रवि भोर। बरहि मुकुट विशाल माला इंद्रधनु छबि थोर॥ बनधातु चित्रित भेष नटवर मुदित नवल किशोर। सूर श्याम सुभाइ आतुर चितै लोचनकोर ॥५९॥ राग कल्याण ॥ माधोजूकेतनुकीशोभाकहतनाहिंबनि आवै । अचवत आदर लोचन पुट दोउ मनु नहिं तृपिता पावै ॥ सघनमेघ अतिश्याम सुभगवपु तांडत वसन बनमाल । शिरशिखंड बनधातु विराजत सुमन सुरंग प्रवाल॥ कछुक कुटिल कमनीय सघन अति गोरज मंडित केश ।अंबुज रुचि परागपर मानो राजत मधुप सुदेश ॥ कुंडल लोल कपोल किरणि गण नैन कमलदल मीन। अधर मधुर मुसकानि मनोहर करत मदनमन हीन॥ प्रति प्रति अंग अनंग कोटि छबि सुन सखि परमप्रवीन। सूरदृष्टि जहँ जहँ परति तहँ तहँ रहति है लीन॥६०॥ राग हमीर ॥इहैकोऊजानैरीयाकी चितवनिमैंकिचंद्रिकामेंकिधौंमुरलीमांझठगोरी॥ देखत सुनत मोहि जा सुर नर मुनि मृग और खगो री।अरी माई जबते दृष्टि परे मनमोहन गृह मेरो मन न लग्यो री।सूर श्याम बिनु छिन न रहौंमेरोमनउनहाथपगोरी॥६१॥राग कल्याण॥लालके रूप माधुरी नैनन निरखी नेक सखी री।मनसिजमन हरन हँसि साँवरो सुकुमारराशि नख शिख

अंगअंग निरखि शोभाकी सींव नखीरी। रँगमगी शिर सुरंग पाग लटकि रही वामभागचंपकली कुटिल अलक बिच बीच रखी री ॥ आयत दृग अरुण लोलकुंडल मंडित कपोल अधर दशन दीपतिकी छवि क्योहू नजात लखीरी। उभय भुजदंड मूल पीन अंस सानुकूल कनक मेखला दुकूलदामिनी धरखीरी ॥ उरपर मदार हार मुकुतालर बर सुढार मत्त द्विरद गति त्रियनि देहदशा करखीरी । मुकुलित वय नवकिशोर बचनरचन चितके चोर माधुरी प्रकाश अनूप मंजरी चखी री ॥सूर श्याम अतिसुजान गावत कल्यानतान सप्त सुरन कल इतेपर मुरलिका वरपीरी॥६२॥राग गौरी॥ढोटाकौनकोइहरी॥श्रुतिमंडल मकराकृतकुंडलकनक कंठदुलारी॥ घन तन श्याम कमलदल लोचन चारु चपलतुलरी । इंदुवदन मुसुकानि माधुरी अलकन अलिकुल री ॥ उर मुक्ताकी माल पीतपट मुरली सुर गौरी। पग नूपुर मणिजडित रुचिर अति कटि किंकिणिरव री॥बालकवृंद मध्य राजतहैं छवि निरखत भुलरी । सोइसर्जीवन सूरदासकी महारि रहे उर री॥६३॥राग गौरी॥इह ढोटा नंदको है री।नहींजानति बसतिव्रजमेंप्रगटगोकुलरी ॥ धरयो गिरिवर वामकर जेहिं सोई है यह री। दैत्य सब इनही सँहारे आपु भुजबल री ॥ व्रजघरनि जो करत चोरी खात माखन री । नदघरनी जाहि बांध्यो अजिर ऊखल री ॥ सुरभिगण लिए वनते आवत सवइ गुण इन री।सूरप्रभु ए सबहि लायक कंसडरजिनरी॥६४॥यशुमतिको सुतइहैकन्हाई। इनहिं गोवर्द्धन लियो उठाई॥इंद्र परयो इनहींके पाई। इनहीकी व्रज चलत वडाई ॥ बकी पिवावन इनही आई। योजन एक परी मुरझाई । इनहिं तृणा ले गयो उडाई । पटक्यो द्वार शिलापर आइ ॥ केशी सुर इनही संहारयो। अघा बकासुर इनही मारयो ॥ श्याम वरन तनु पीत पिछौरी। मुरली राग बजावत गौरी ॥ देखि रूप चकृत भई बाला । तनुकी सुधि न रही तेहि काला ॥ सूर श्यामको जानति नीके । मगन भई पूंछत सुख जीके ॥६५ ॥रागगौरी॥ आवन बनते सांझ देखे मैं गायनमांझ काहूको ढोटा री एक शीश मोरपखिआ । अतमीकुसुम जैसे चंचल दीरघ नैन मानों रसभरी जो लरति युग झखिआ ॥ केसरिकी खौरिकिए गुंजा बनमाल हिये उपमा न कहिआवे जेती तें नखिआ ॥ राजत पीत पिछौरी मुरली बजावैगौरीध्वनि सुनि भई बौरी रही पलक अँखिआ॥चल्यो न परत पग गिरिपरीसूधे मग भामिनि भवन ल्याईकर गहे कखिआ॥ सूरदास प्रभु चित्त चोरिलियो मेरे जान और न उपाव दाँवमुनौ मेरीसखिआ॥६६॥ रागदेवगंधार॥ इकदिन हरिहलधर सँग ग्वालन ।प्रात चले गोधन वन चारन॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत।कोउ सिंगी कोउ नाद सुनावत॥खेलन हँसत गए वनमहियाँ । चरनलगी जितकित सब गैयाँ॥हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे।सूर अमंगल मनके भागे॥६७॥अध्याय॥ ३६॥वृषभासुर वध केशी हेतु ॥ राग सोरठ ॥ यहि अतर वृषभासुर आयो।देखे नंदसुवन बालकसँग इहे घातहेपायो॥ गयो समाइ धेनुपति ह्वैके मनमें दाउँ विचारे। हरि तबही लखिलियो दुष्टको डोलत धेनु विडारे ॥ गैयां विडरि चली जिततितको सखा जहांतहां घेरे। वृषभ शृंगसों धरणि उकासत वल मोहन तन हेरे ॥ आवत चल्यो श्यामके सन्मुख निदरि आपु अँग सारी। कृदि पर्यो हरिऊपर आयो कियो युद्ध अति भारी ॥ धाइ परे सब सखा हाँक दै वृषभ श्यामको मारयो । पाउँ पकरि भुजसों गहि फेर्यो भूतलमांझ पछारयो ॥ पर्यो असुर पर्वतसमान ह्वै चकित भए सब ग्वाल। वृषभ जानिके हम सब धाए यह कोऊ विकराल॥देखि चरित्र यशोमतिसुतकेमनमें करत विचार । सूरदास प्रभु असुरनिकदन संतन प्राणअधार ॥६८॥ राग गौरी॥धन्यकान्हधनि धनि व्रज आये।आजु सबनि घरिके यह खातो धनि तुम हमहिं बचाए ॥।यह ऐसो तुम अतिहि

तनकसे केसे भुजन फिरायो । पलकहि माँझ सबनके देखत भाग्यो धरणि गिरायो ॥ अबलौं हम तुमको नहि जान्यो तुमहिं जगतप्रतिपालक । सूरदास प्रभु असुर निकंदन व्रजजनके दुखदालक ॥६९॥ राग कल्याण ॥ आवत मोहन धेनु चराए। मोरमुकुट शिरउर बनमाला हाथलकुटगोरजलपटाए ॥ कटिकछनी किंकिणिध्वनि बाजत चरण चलत नूपुर रवगाए। ग्वालमंडली मध्य श्याम घन पीतवसन दामिनिहि लजाए ॥ गोपसखा आवत गुण गावतमध्य श्याम हलधर छविछाए। सूरदास प्रभु असुर सँहारयो व्रज आवत मन हर्ष बढाए ॥७०॥ ये गोरेणु रंजितआवततहँमोहनलाल। श्याम सुभग तनु तडितवसन बग पंगति मुक्तहार बनमाल ॥ गोपदरज मुखपर छवि लागति कुंडल नैनविशाल । बल मोहन बनतेबनेआवत लीने गैयाजाल॥ ग्वालमंडलीमध्यविराजतराजत वेणु रसाल । सूरश्यामवनते व्रजआए जननिलिए अंकमाल॥७१॥ राग कान्हरो॥ तेरोमाई गोपाल रणशूरो । जहजह भिरतम्र चारि पेजकरि तहीं पग्तहैपूरो ॥ वृषभरूप दानवइक आयोसो क्षणमांह सँहारयो । पाव पकरि भुजसों गहि वाको भूतलमांह पछारयो ॥ कहत ग्वाल यशुमतिधनिमैया बडो पूततैं जायो। यह कोउ आदिपुरुषअवतारी भाग्य हमारे आयो ॥ चरणकमलपन दितगहिये [illegible] ॥७२॥ ॥राग सोरठ॥ [illegible] तिवारवा। [illegible] कान्हहि [illegible] ुमतिमैया [illegible]कत खीजत हरिके भाए ग्याल। पर्वत तूल देह धरिकै पलकमें कियो बेहाल ॥ तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं यहव्रजकेरखवार । सूरदासमनमोसो सबको मोहननंदकुमार॥७३॥ राग सारंग ॥ हमहिंडर कौनको री मैया॥ डोलत फिरत सकल वृन्दावन जाके मीत कन्हैया ॥ जब जब गाढ परतहै हमको तहैं करिलेत मदैया । चिरजीवहु यशुमति सुनतेरो हरि हलधर दोउ भैया ॥ इनते बडे और नहिं कोऊ इन्हि सब देत बडैया। सूरश्यामसन्मुख जेआए ते सबस्वर्ग चलैया॥७४॥ रागकान्हरो ॥ हसिजननीसो बात कहत हरि देख्यो मैं वृन्दावननीको। अतिरमणीकभूमि द्रुम बेली कुंज सघन निरखन सुखजीको॥ यमुनाके तट धेनु चराई कहत मात मनवीको। भूखमिटी वनफलकेखाएप्याम यमुनजल पीके ॥ सुनति यशोदा सुतकी बातें अतिआनंद मगनन वहीको। सूरदासप्रभु विश्वभरन ए घोर भए व्रज तनकदहीके ॥७५॥ गोविंद गोकुलकी जीवनिमेरो जाहि लगाइरहीतनमन धन दुख भलन मुख हेरे ॥ जाके गर्व बचो नहिं सुरपति रह्यो सात दिन घेरे। व्रजहित नाथ गोवर्धन धारे सुभगभुजननख नेरे ॥ जाके यश ऋषि गर्ग बखान्योकहत निगम निज टेरे । सोइ अब सुर सहितसंकर्षणपाएजतन घनेरे॥७६ ॥ अध्याय ॥ ३७ ॥ अथ केशीवध ॥ राग मारू ॥ असुरपति अतिही गर्वधरयो । सभामाँझ बैठो गर्जतहै बोलत रोष भरयो ॥ महामहा जे सुभट दैत्यबल बैठे सब उमराउ। तिहुँभुवन भरि गमि है मेरो मो सन्मुख कोआउ ॥ मो समान सेवकनहिं मेरे जाहि कहौं कछुदाव। काहि कहौं को ऐसोलायकताते मोहिं पछिताव॥ नृपतिराइ आयसुदे मोको ऐसो कवन विचार । तुम अपने चित सोचत जाको असुरनके सरदार ॥ जो करि क्रोध जाहि तन ताको तिनको है संहार । मथुरापति यह सुनि हर्षित भयो मनहिं धरयो अतिभार ॥ श्वेतछत्र फहरात शीशपर ध्वज पताक बहुवान। ऐसोको जो मोहिं न जानत तिहूँ भुवन मेरीआन ॥ असुरवंश जे महाबली सब कहौं काहि हौं जान । तनकतनकसे महर ढिटौना करि आवे बिनप्रान ॥ यह कहि कंस चित केशीतन कह्योजाइ करिकाज । तृणावर्त शकटा अरु पूतना उनके कृत सुनि लाज ॥ तोते कछु हेहै यों जानत धरि आनै ज्यो बाज। छलके

बल कै मारु तुरतही ले आवहु अब आज ॥अतिगर्वित है कह्यो असुरभट कितिक बात यहआ- हि । कह मारौं जीवत धरिलावौं एक पलकमेंताहि ॥आज्ञापाइ असुर तब धायो मनमेंयह अव- गाहि। देखौं जाइ कौन वह ऐसे कस डरतहै जाहि॥ मायाचरित करि गोपपुत्र भयो ब्रजसन्मुख गयो धाइ । बल मोहन ग्वालनबालक सँग खेलत देखे जाइ॥ धाइ मिल्यो कोउ रूप निशाचर हलधर सैन बताइ ।मनमोहन मनमें मुसुकाने खेलत फलनि जनाइ ॥ द्वै बालक बैठारि सया- ने खेल रच्यो ब्रजखोरि । और सखा सब जुरिजुरि ठाढेआपुदनुजसँग जोरि ॥ फलको नाम बु- झावन लागे हरि कहिदियो अमोरि।कध चढे जिमि सिंह महाबल तुरतहि पीच मरोरि॥तब के- शी ह्वै बरवपु काछ्यो लैगयो पीठि चढाइ। उतरि परे हरि ता ऊपरतेकीन्हो युद्धअघाइ॥ दाउ घाउ सब भाँति करतहै तब हरि बुद्धि उपाइ । एक हाथ मुखभीतर नायो पकरि केश धरि जाइ॥ चहुधा फेरि असुर गहि पटक्यो शब्द उठ्यो आघात । चौंकि परयो कंसासुर सुनिकै भीतर चल्यो परात ॥ यह कोइ नहीं भलो ब्रजजनम्योयातेबहुतडरात । जान्योकंस असुरगहिपटक्यो नंदमहरके तात ॥ और सखा रोवत सब धाए आइ गये नर नारि । ग्वालरूप सँग खेलत हरिकै लैगयो कांधे डारि ॥ धाए नद यशोदा धाई नितपति कहा गुहारि। ना जानियेआहि धौं को यह कपटरूप वपुधारि ॥ यशुमति तब अकुलाइ परी गिरि तनुकी सुधि न रहाइ ।नंद पुकारत आरत व्याकुल टेरत फिरत कन्हाइ ॥ दैत्य सँहारि कृष्ण तहँ आए ब्रजजन मरत जिवाइ।दौरि नंद उर लाय लियो सुत मिली यशोदा माइ॥खेलत रह्यो संग मिलि मेरे लैउड़िगयो अकास।आपुनही गिरिपर्यो धरणिपरमें उबरयो तेहि पास॥उर डरात जियबात कहत उहि आएहै करि नाश।सूर श्याम वर यशुमति लैगईब्रजजनमनहिहुलास॥७६॥ अथ भौमासुरवध ॥ राग बिलावल ॥ हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे बनमें ऑखिमिचाइ । शिशु होइ भौमासुरतहँआयो काहू जान न पाइ ॥ ग्वालरूप होइ खेलनलाग्योग्वालनको लैजाइ चुराइ । धरै दुहाइ कंदराभीतर जानीबातकन्हाइ॥ गुदी चाँपिकै ताहि निपात्यो परयो धरणि मुरछाइ । सूर ग्वाल मिलि हरि गृह आए देव दुंदुभी बजाइ ॥ ७८॥ राग कान्हरो ॥ कहति यशोदा बात सयानी ।भावी नहीं मिटै काहूकी कर्ताकी गति काहु न जानी ॥ जन्म भयो जबते ब्रज हरिकोकहा कियोकरिकरिखबानी। कहां कहांते श्याम न उबरयो केहि राख्यो ता अवसर आनी॥केशी शकट अरु वृषभपूतना तृणावर्त्त- की चलति कहानी । को मेरे पछिताइ मरै अब अनजानत सब करी अयानी ॥ ले बलाइ छाती- सों लाए श्याम राम हरषति नँदरानी । भूँखे भए प्रात अधखातहि तातेआजु बहुत पछितानी ॥ रोहिणि तुरत न्हवाइ दुहुँनको भोजनको माता अतुरानी । ल्याई परसि दुहूँकी थारी जेंवत बलमोहन रुचि मानी ॥ माँगि लियो शीतल जल अँचयो मुख धोयो चरणन लै पानी। बीरा खात देखि दोउ बीरा दोउ जननी मुख देखि सिहानी ॥ रत्नजटित पलकापर पौढे बरणि न जाइ कृष्ण रजधानी ।सूरदास कछु जूठनि मांगत तब पाऊ कहि दीजै बानी ॥७१॥ राग बिलावल ॥ नित्य धाम वृन्दावन श्याम । नित्य रूप राधा ब्रजबाम ॥ नित्य रास जल नित्य विहार। नित्य मान खंडिताभिसार ॥ ब्रह्मरूप एई करतार। करन हरन त्रिभुवन मँझार॥ नित्य कुंज सुख नित्यहिंडोर । नित्यहि त्रिविध समीरझकोर ॥ सदा बसत रहत जहँ बास। सदाहर्ष जहँ नहीं उदास॥ कोकिल कीर सदा तहँ रोर। सदारूप मन्मथ चितचोर ॥ त्रिविध सुमनबन फूले डार। उन्मत मधुकर भ्रमत अपार ॥ नव पल्लव बनशोभा एक। विहरत हरिसँग सखी अनेक॥ कुहूकुहू कोकिला सुनाइ। सुनिसुनि नारि भई हरषाइ॥बारबार सो हरिहि सुनावति।

ऋतु वसंत आयो मधुमानति ॥ फागुचरित रस साथ हमारे । खेलहिं मन मिलि संग तुम्हारे ॥ सुनिसुनिसूर श्यामसुसकाने।ऋतुवसंतआयोहरषाने॥८०॥ राग हिंडोल ॥ राग बसंत ॥ ग्वेइज आज वरणौ वसंत।मनहु मदन विनोद विहरत नागरी नवकंत॥ मिलन सन्मुख पाटलपटलभगत मानजुहीं।बेलि प्रथम समाज कारण मेदिनी कुच गुही ॥ केतकी कुच कलम कंचन गरे कंचुकि कसी। मालती मद चलित लोचन निरखि मृदु मुख हसी॥विरहव्याकुल मेदिनीकुल भई बदन निकाम ।पवन परिमल सहचरी पिक ज्ञान हृदय हुलास॥उतमसोचंपक चतुरअति कुंद मनो तनमाल।मधुपमणि मालमनोहर सूरश्रीगोपाल॥८१॥ राग बसंत ॥ऐसोपत्र पठायोऋतुवसंतनिजहु मान मानिनि तुरत॥ कागज नवदल अंबुज पात।देति कमलमसिभवर सुगात॥ लेखनिकाम बाणकेचाप।लिखि अनंग कसि दीनी छाप॥मलयाचल पठयो विचारि। वाचत पिक सब नेतु नारि॥ सूरदासक्यों होइ आन ।भजि हरि गोपी तजि मयान ॥ ८२ ॥ वेगि चलहु पिय चतुर सयानी । समयवसंत विपिन रथ हय गज मदन सुभट नृप फौज पलानी ॥ चहुँ दिशा चांदनी चमू चली मनहु प्रशंसित पिक बर बानी।बोलनहेमनचपलबन्दीजनमनहु धवल सोइ धुर उठानी॥ सोलह कला छपाकरकीछवि शोभित छत्रशीशगिरतानी। वीरसमीर रथतवनअलिगणमनहुकामकरमुरलि सुठानी॥कुसुम शरासन बान विराजत मनहु मानगढअनुअनुमानी । सूरदास प्रभुकीनहिंगति करहु सहाय गर्विता रानी॥८३॥राग बसंत॥देख्यो वृंदावन कमलनयन । मनुआयो है मदन गुण सुदर दयन ॥ १ ॥ भए नवद्रुम सुमन अनेक रंग । प्रति लसित लता सकुलित संग ॥ करवरे धनुष कटि कसि निसंग ।मनो बने सुभट सजि कवच अंग ॥ २ ॥जहां वान सुमति वह मलय वात। अति राजत रुचिर विलोल पात ॥ धपि धाय धरत मन तुरे गात । गतितेज वसन बाने उडात ॥३॥कोकिल कूजतहैं हंस मोर ।रथ गोल शिला पदचर चकोर ॥ वर ध्वज पताक तरतरुकेरि । निर्झरनिसान डफ भंवर भेरि ॥४॥ सूरदास इमि वदत बाल। करिशाम कृपण गिरिकोध पाल ॥ इमि चितय चारु लोचन विशाल । तेहि अपने करि थपिए गोपाल ॥५॥ राग बसंत ॥ राजत तेरे वदन शशी री। किरनि कटाक्ष वाण बरसावें भौंह कलंक कमान कसीरी ॥ पीनपयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमवाली लसी री । चक्रवाक संग चोचपुटीतें मनु सेनिवल मजीर खसीरी॥ ज्यों नाभीसर एकनालनव कनककमल विवि रहे बसीरी । सूरज श्रीगोपालपियारी मेरु नये अधतम धरा धसी री॥८४॥कोकिल बोली बन बनफूले मधुप गुंजारन लागे ।सुनिभयोभोर रोर वंदिनको मदन महीपति जागे ॥ तिन दूने अंकुरद्रुम पल्लव ज पहिले दवदागे । मानहु रतिपति रीझि याचकन बरनबरन दए बागे ॥ नई प्रीति नई लता पुहुप नए नए नयन रस पागे । नए नेह नवनागरि हरपति सूर सुरंगअनुरागे॥८५॥ देख्यो वृंदावन खेलहिं श्रीगोपाल । सबबनिठनि आईं ब्रजकी बाल ॥ नवनछी सुदर नव तमाल। नव कमल महा नव नवरसाल ॥ अपने कर सुदर रचित माल। अवलंबित नागरनंदलाल ॥ नवकेसरि नव अरगजा घोरि । छिरकति नागरि कहे नव किशोरि॥ नवगोपवधू राजहीं संग। गजमोतिन सुंदर लसित मंग॥गोपीन ग्वाल सुंदर सुदेश॥छिरकत सुगंध भये ललित भेष॥श्रीनंदनंदनके भ्रुवविलास।आनंदितगावतसूरदास॥८६ ॥ पिय देख्यो वन छवि निहारि । बारबार यह कहति नारि ॥नव पल्लव बहु सुमन रंग । द्रुमवेली तनुभयो अनंग ॥ भँवराभँवरी भ्रमत संग।यमुन करति नाना तरंग॥त्रिविध पवन मनहर्ष दयन । सदा बहत नहि हरत चयन॥सूरजप्रभु करि तुरगनयन।चलेनारि मन सुखद मयन॥आयो पिय भायो ऋतुवसंत।दंपतिमन सुखविरहिनिन अंत॥फागु रिए ब्रहु संग कंत । हाहा करिकरि तृण

गये दंत॥तुरत गए हरि लै मनाय। हरषि मिले उर कंठ लाय॥दुख डारयो तुरतहि भुलाय। सो सुख दुहुके उर न माय॥ ऋतुवसंत आगमन जानि। नारिन राखो मानबानि॥ सूरदास प्रभु मिलेआनि। रसराख्यो रतिरंग ठानि॥८८॥आयो जान्यो हरि ऋतु वसंत।ललना सुख दीन्हो तुरंत॥फूलेवरन२ सुमन पलास। ऋतुनायक सुखको विलास ॥ संग नारिचहुँ आस पास। मुरली अमृत करत भास॥ श्यामा श्याम विलास एक। सुखदायक गोपी अनेक॥तजत नही काहू छनेक। अलख निंरजन विविध भेक॥ फागुरंग रस करत श्याम। युवतिन पूरन करन काम ॥ वासरहू सुख देत याम। सूर श्याम वहु कंत वाम ॥ ८९ ॥ देखत नव ब्रजनाथ आजु अतिउपजतुहैअनुराग।मानहु मदन वसंत मिले दोउ खेलत फूले फाग ॥ झाँझि झालरिनि झारि निसान डफ भँवर भेरिगुंजार। मानहु मदन मंडली रचि पुरवीथिन विपिनि विहार ॥ द्रुमगणमध्य पलास मंजरी मुदित अग्नि-की नाईं।अपनेअपने मेरनि मानो उनि होरी हरषि लगाईं ॥ केकी काग कपोत और खग करत कुलाहल भारी।मानहु लैलै नाउँ परस्पर देत दिवावत गारी ॥कुंजकुंजप्रतिकोकिलकूजति अति रस बिमल बढी। मनु कुलवधू निलज भइ गृहगृह गावति अटनि चढी ॥ प्रफुलितलता जहाँ जहँ देखत तहाँ तहा अलि जात। मानहु सवहिनमें अवलोकत परसत गणिका गात ॥ लीन्हें पुहुपपराग पवन कर क्रीडत चहुँदिशि धाइ। रस अनरस संयोग विरहिनी भरि छाँडति मनभाइ ॥ वहुविधि सुमन अनेक रंगछवि उत्तम भाँति धरे। मनु रतिनाथ हाथसों सबही लैलै रंगभरे ॥ और कहाँ लगि कहो कृपानिधि वृंदाविपिन विराज। सूरदासप्रभुसवसुखक्रीडत श्याम तुम्हारे राज॥९०॥ सुंदर वर संग ललनाहो विहरत वसंत समय ऋतु आइ।सकल शृंगार वनाइ ब्रजसुंदरि कमलनयनपै लाइ॥ सरिता शीतल वहत मंदगति रवि उत्तरदिशि आयो। अतिरसभरी कोकिला वोली विरहिनि विरह जगायो ॥ द्वादश वन रतनारे देखियतचहुँदिशिटेसू फूले। मौरे अँवुवा अरु द्रुम बेली मधुकर परिमल भूले॥ इत श्रीराधा उत श्रीगिरिधर इत गोपी उत ग्वाल।खेलत फागु रसिक ब्रजवनिता सुंदर श्यामतमाल॥ खावासाखि जवारा कुमकुमा छिरकत भरि केसरि पिचकारी।उडत गुलालअवीरजोरतहँत्रिदिशदीपउजियारी॥तालपखावजवीनबाँसुरी डफ गावत गीत सुहाए। रसिक गोपाल नवल ब्रजवनिता निकसि चौहटेआये॥झमिझूमिझूमकसव गावति बोलति मधुरी बानी। देति परस्पर गारि मुदितमन तरुनी वाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नाग लोकपुर सवही अति सुख पायो।प्रथम वसत पंचमी लीला सूरदास यश गायो॥९१॥सुंदरवर संग ललना विहरी वसंत सरस ऋतुआई। लैलै छरी कुँवरि राधिका कमलनयनपर धाई ॥ द्वादश वन रतनारे देखियत चहुँदिशि टेसू फूले। मौरे अँवुवा अरु द्रुम बेली मधुकर परिमल भूले ॥ सरिता शीतलवहत मंदगति रवि उत्तरदिशि आयो।प्रेम उमंगि कोकिला वोली विरहिनि विरह जगायो॥ताल मृदंग बीन बाँसुरि डफ गावत मधुरी बानी। देत परस्पर गारि मुदित ह्वै तरुणी वाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नागलोक जल थल क्रीडारस पावै। प्रथम वसंत पंचमी वाला सूरदास गुण गावै॥९२॥खेलत नवलकिशोर किशोरी।नँदनंदन वृषभानुसुता चित लेत परस्पर चोरी॥ औरौ सखी जाल विच शोभित सकल ललित तनु गावति होरी। तिनकी नख शोभा देखतद्युति तरनिनाथहूकी मति भोरी॥ एक गोपाल अवीर लिए कर इक चंदन एक कुमकुम गोरमती उपर छिरकि रस सग भरि वहु कुल क्रीडा परिमिति फोरी ॥ देति अशीश सकल ब्रज त्रिभुवने युग युग अविचर जोरी। सूरदास उपमा नहिं सूचत जो कछु कहो सु थोरी ॥९३॥राग श्रीहठी,

ऋतु वसंत आयो समुझावति ॥ फागुचरित रस साथ हमारे । खेलहिं सब मिलि संग तुम्हारे ॥ सुनिसुनिसूर श्यामुसुसकाने।ऋतुवसंतआयोहरषाने॥८०॥वसंतलीला॥राग वसंत॥राधेजूआज वरणो वसंत।मनहु मदन विनोद विहरत नागरी नवकंत॥मिलत सन्मुख पाटलपटलभरत मानजुही।वेलि प्रथम समाज कारण मेदिनी कुच गुही ॥ केतकी कुच कलश कंचन गरे कंचुकि कसी। मालती मद चलित लोचन निरखि मृदु मुख हँसी॥विरहव्याकुल मेदिनीकुल भई वदन विकास ।पवन परिमल सहचरी पिक ज्ञान हृदय हुलास॥उतसखाचंपक चतुरअति कुंद मनो तनमाल।मधुपमणि मालमनोहर सूरश्रीगोपाल॥८१॥राग वसंत ॥ऐसोपत्र पठायोऋतुवसंत।तजहु मान मानिनि तुरंत॥ कागज नवदल अंवुज पात।देति कलममसिभवँर सुगात॥ लेखनिकाम वाणकेचाप।लिखि अनंग कसि दीनी छाप॥मलयाचल पठयो विचारि। वाचल पिक सब नेहु नारि॥ सूरदास क्यों होइ आन।भजि हरि गोपी तजि सयान ॥ ८२ ॥ वेगि चलहु पिय चतुर सयानी। समय वसंत विपिन रथ हय गज मदन सुभट नृप फौज पलानी॥ चहुँ दिशा चांदनी चमू चली मनहु प्रशंसित पिक वर वानी।वोलतहँसतचपलवन्दीजनमनहु धवल सोइ धूर उडानी॥ सोलह कला छपाकरकीछवि शोभित छत्रशीशशितानी।धीरसमीर रटतवनअलिगणमनहुकामकरमुरलि सुठानी॥कुसुम शरासन वान विराजत मनहु मानगढअनुअनुमानी । सूरदास प्रभुकीवेइंगति करहु सहाय राधिका रानी॥८३॥राग वसंत॥देख्यो वृंदावन कमलनयन । मनु आयो है मदन गुण सुंदर दयन ॥ १ ॥ भए नवद्रुम सुमन अनेक रंग। प्रति लसित लता संकुलित संग ॥ करधरे धनुप कटि कसि निखंग। मनो वने सुभट सजि कवच अंग ॥ २ ॥जहां वान सुमति. वह मलय वात। अति राजत रुचिर विलोल पात ॥ धपि धाय धरत मन तुरे गात। गति तेज वसन वाने उडात ॥३॥कोकिल कूंजतहैं हंस मोर।रथ शैल शिला पदचर चकोर ॥ वर ध्वज पताक तरतारकेरि । निर्झरनिसान डफ भँवर भेरि ॥४॥ सूरदास इमि वदत वाल। करिकाम कृपण शिवक्रोध काल ॥ हँसि चितय चारु लोचन विशाल। तेहि अपने करि थपिए गोपाल ॥५॥ राग वसंत ॥ राजत तेरे वदन शशी री। किरनि कटाक्ष वाण वरसावे भौंह कलंक कमान कसीरी ॥ पीन पयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमवाली लसी री । चक्रवाक खग चोंचपुटीत मनु सेनिवल मंजीर खसीरी॥ ज्यों नाभीसर एकनाल नव कनककमल विवि रहे वसी री । सूरज श्रीगोपालपियारी मेरु नये अधतम धरा धसी री॥८४॥कोकिल वोली वन वनफूले मधुप गुंजारन लागे ।सुनिभयो भोर रोर वंदिनको मदन महीपति जागे ॥ तिन दूने अंकुरद्रुम पल्लव जे पहिले दवदागे । मानहु रतिपति रीझि याचकन वरनवरन दए वागे ॥ नई प्रीति नई लता पुहुप नए नए नयन रस पागे । नए नेह नवनागरि हरपति सूर सुरँगअनुरागे॥८५॥ देख्यो वृंदावन खेलहिं श्रीगोपाल । सजबनिठनि आई व्रजकी वाल ॥ नववल्ली सुंदर नव तमाल। नव कमल महा नव नव रसाल ॥ अपने कर सुंदर रचित माल। अवलंवित नागर नंदलाल ॥ नवकेसरि नव अरगजा घोरि । छिरकति नागरि कहँ नव किशोरि॥ नवगोपवधू राजहीं संग। गजमोतिन सुंदर लसित मंग॥गोपीन ग्वाल सुंदर सुदेश।छिरकत सुगंध भये ललित भेप॥श्रीनंदनंदनके भुवविलास।आनंदितगावतसूरदास॥८६ ॥ पिय देख्यो वन छवि निहारि । वारवार यह कहति नारि ॥नव पल्लव वहु सुमन रंग । द्रुमवेली तनुभयो अनंग ॥ भँवराभँवरी भ्रमत संग।यमुन करति नाना तरंग॥त्रिविध पवन मनहर्प दयन। सदा वहत नवि हरत चयन॥सूरजप्रभु करि तुरग नयन।चलेनारि मन सुखद मयन॥आयो पिय भायो ऋतुवसंत।दंपतिमन सुखविरहिनिन अंत॥फागु खिलावहु संग कंत । हाहा करिकरि तृण

गऐ दंत॥तुरत गए हरि लै मनाय। हरषि मिले उर कंठ लाय॥दुख डारयो तुरतहि भुलाय। सो सुख दुहुंके उर न माय॥ ऋतुवसंत आगमन जानि। नारिन राखो मानवानि॥ सूरदास प्रभु मिलेआनि। रसराख्यो रतिरंग ठानि॥८८॥आयो जान्यो हरि ऋतु वसंत।ललना सुख दीन्हों तुरंत॥फूलेबरन२ सुमन पलास। ऋतुनायक सुखको विलास ॥ संग नारिचहुँ आस पास। मुरली अमृत करत भास ॥ श्यामा श्याम विलास एक। सुखदायक गोपी अनेक॥तजत नहीं काहू छनेक। अलख निरंजन विविध भेक॥ फागुरंग रस करत श्याम। युवतिन पूरन करन काम ॥ वासरहू सुख देत याम। सूर श्याम बहु कंत वाम ॥ ८९ ॥ देखत नव व्रजनाथ आजु अतिउपजतुहैअनुराग।मानहु मदन वसंत मिले दोउ खेलत फूले फाग ॥ झाँझि झालरिनि झारि निसान डफ भँवर भेरिगुंजार। मानहु मदन मंडली रचि पुरबीथिन विपिनि विहार ॥ द्रुमगणमध्य पलास मंजरी मुदित अग्नि-की नाईं।अपनेअपने मेरनि मानो उनि होरी हरषि लगाई ॥ केकी काग कपोत और खग करत कुलाहल भारी ।मानहु लैलै नाउँ परस्पर देत दिवावत गारी ॥कुंजकुंजप्रतिकोकिलकूजति अति रस विमल बढी। मनु कुलवधू निलज भइ गृहगृह गावति अटनि चढी ॥ प्रफुल्लितलता जहां जहँ देखत तहाँ तहाँ अलि जात। मानहु सबहिनमें अवलोकत परसत गणिका गात ॥ लीन्हें पुहुपपराग पवन कर क्रीडत चहुँदिशि धाइ। रस अनरस संयोग विरहिनी भरि छाँडति मनभाइ ॥ बहुविधि सुमन अनेक रंगछवि उत्तम भाँति धरे। मनु रतिनाथ हाथसों सबही लैलै रंगभरे ॥ और कहाँ लगि कहों कृपानिधि वृंदाविपिन विराज। सूरदासप्रभुसबसुखक्रीडत श्याम तुम्हारे राज॥९०॥ सुंदर वर संग ललनाहो विहरत वसंत समय ऋतु आइ।सकल शृंगार बनाइ व्रजसुंदरि कमलनयनपै लाइ॥ सरिता शीतल वहत मंदगति रवि उत्तरदिशि आयो। अतिरसभरी कोकिला बोली विरहिनि विरह जगायो ॥ द्वादश वन रतनारे देखियतचहुँदिशिटेसू फूले। मौरे अँबुवा अरु द्रुम वेली मधुकर परिमल भूले॥ इत श्रीराधा उत श्रीगिरिधर इत गोपी उत ग्वाल।खेलत फागु रसिक व्रजवनिता सुंदर श्यामतमाल॥ खावासाखि जवारा कुमकुमा छिरकत भरि केसरि पिचकारी।उडत गुलालअवीरजोरतहँ बिदिशदीपउजियारी॥तालपखावजबीनबाँसुरी डफ गावत गीत सुहाए। रसिक गोपाल नवलव्रजवनिता निकसि चौहटेआये॥झुमिझूमिझूमकसब गावति बोलति मधुरी वानी। देति परस्पर गारिमुदितमन तरुनी बाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नागलोकपुर सबही अति सुख पायो।प्रथम वसंत पंचमी लीला सूरदास यश गायो॥९१॥सुंदरवर संग ललना विहरी वसंत सरस ऋतुआई। लैलै छरी कुँवरि राधिका कमलनयनपर धाई ॥ द्वादश वन रतनारे देखियत चहुँदिशि टेसू फूले। मौरे अँबुवा अरु द्रुम वेली मधुकर परिमल भूले ॥ सरिता शीतलवहत मंदगति रवि उत्तरदिशि आयो।प्रेम उमंगि कोकिला बोली विरहिनि विरह जगायो॥ताल मृदंग बीन बाँसुरि डफ गावत मधुरी वानी। देत परस्पर गारि मुदित ह्वै तरुणी बाल सयानी ॥ सुरपुर नरपुर नागलोक जल थल क्रीडारस पावै। प्रथम वसंत पंचमी बाला सूरदास गुण गावै॥९२॥खेलन नवलकिशोर किशोरी।नँदनंदन वृषभानुसुता चित लेत परस्पर चोरी॥ औरौ सखी जाल विच शोभित सकल ललित तनु गावति होरी। तिनकी नख शोभा देखतही तरनिनाथहूकी मति भोरी॥ एक गोपाल अवीर लिए कर इक चंदन एक कुमकुम रोरी उपर छिरकि रससर भरि बहु कुल क्रीडा परिमिति फोरी ॥ देति अशीश सकल व्रज युग युग अविचर जोरी। सूरदास उपमा नहिं सूझत कछु कहो सु थोरी ॥९३॥राग श्रीहठी

आवैंगे हरि आज्रु खेलन फागु री। सगुन सँदेशो हो सुन्यो तेरं आँगन बोलैकागुरी॥मदनमोहन तेरं वश माई सुनि गये बडभागु री।बाजत ताल मृदंग झांझ डफ का सोवै उठि जागुरी॥चोवा चंदन और कुमकुमा केसरि लै पैयां लागु री। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको श्रीराधा अचलसुहागु री॥९४॥ हो आजुनंदलालसोंखेलोंगीसखीहोरी। ललिता विशाखा अंगनालियावो चांकपुगवो तुम रोरी॥ मलयज मृगमद केसरिलैलै मथिमथि भरे कमोरी। नवसत साजि शृंगार करो सब भरि भरि लेहु गुलालहि झोरी॥ ज्यों उडुगणमें इंदु बिराजत सहेलिन मध्य राधिका गोरी। इक गोरी इक साँवरी हो इक चंचल इक भोरी॥ बरजति सखी बरज्यो नहिं मानै लैपिचकारी दौरी। उन रंग लै पियऊपर डारयो पियहु रंगमें बोरी॥ ब्रह्मा इंद्र देवगण गंधर्व बरषे बहुत वाटिका खोरी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनकोचिरजीवो गधाबर जोरी॥९॥राग मालकौशिर॥नागर रसिक अरु रसिक नागरी। बलिबलि जाउँ देखि अब दंपति प्रमुदित लीला प्रथम फाग री॥ राधा दधि मथन करति अपने गृह प्रबल धरि सुकर पागरी। तब हरि उठि आए औचानक हसति शशी चसढरित गागरी। लै रसांस अंजरि भरिलीनो विदुरति दधि जु अनूपम आगरी॥ अति उमगति श्याम घन छिरके मनु बगपांति बिथुरि गई मागरी॥ मोहन मुसकि गही दौरतमें छूटि तनी छद रहित घाघरी। जनु दामिनि बादरते बिमुख वपु तरपि ततक्षण लई तलागरी॥ आनदित परम दंपति ऐसे पटने परम परत दाग री। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि का बरणौ ब्रजयुवतिभागरी॥९३॥ राग बँगाली॥ श्रीमदनमोहनजू मति डारौ केसरि पिचकारी।दधिही मथन जाहुं यमुनाजलहो मोहन तुम कुंजविहारी॥ मर्म न गुरुजन पुरजन जानैं नहिं या वृंदावनकी नारी। सासु रिसाय लरै मेरी ननंदी देखैं रग देहिं मोहिं गारी॥ मुरलिमाहिं गावत बगाली अधर सुनत अमृत बनवारी। मुदित पियत संतन सुखकारी पूरव खचित तेहिगिरिधारी॥ मृदु मुसुकानि युवति मन मोहत हो हरि माखनचोर मुरारी।सूरदास प्रभु दोउ चिरजीवो श्रीव्रजनाथ वृषभानु दुलारी॥९७॥राग धमारि॥ठाढी देखी नंद दुआरे हो सुंदरि एक दह्यो। बाढीहो प्रीति ललना गिरिधरसों गुरुजन सबहिन बिसरि दियो॥ नयनन कज्जल नासिका बेसरि मौक्तिक मोर अति राज। हार सुढार बन्यो जाको मोती रहत अधर सुख छाज॥ कटि लहँगा पहुँची बंद अँगिया फुंदना बहु विधि सोहै। रतन जराव जरी जाको जेहरि हंसचाल मृग मोहै॥ कंचन कलश भराए यमुनजल मोतियन चौक पुराये। मनहु सुर्छोना हंसन कैसे चुगन सरोवर आए॥ तुमतो व्रज आवतहो नँदनंदन सारँग बुद्धि है थोरी।सूरदास प्रभुनंदके लालको बनीहोछबीली जोरी॥९८॥राग कान्हरो॥हरि संग खेलत हैं सब फाग। यहि मिस करत प्रगट गोपी उर अतरको अनुराग॥ सारी पहिरि सुरँग कसि कंचुकि काजर देदे नैन।बनि बनि निकसि निकसि भई ठाढी सुनि माधौके बैन॥ डफ बाँसुरी रुज अरु महुअरि बाजत ताल मृदंग। अति आनंद मनोहर बाणी गावत उठत तरंग॥ एक कोध गोविंद ग्वाल सब एक कोध ब्रजनारि। छांडि सकुच सब देति परस्पर अपनी भाई गारि॥ मिलि दश पांच अली बलि कृष्णहि गहि लावति उचका-

१ मालकौशिकराग-श्यामाग पीतवासा मधुरिपुगलजो वक्षसाच्छिन्नभा अनानां कटमाळो विरचितविलय फुङ्कभैर्भावद्रिः॥ रागोप मालकौशी प्रचाति शिशिरे कठदेशे जलानां माय सर्वोदयाजो रजनि चयविद्रां तुष्ये भूपतीनाम्।

तनुभः २ बगालदाभाति यस्या अहिकपटलके शीतरश्मिर्निशांते भतु सतमिन्दी मन्दमचरचितं सर्वदेहे मद्धेयम॥ शुद्ध बासो सस्वतनुप्रकाशमतेभगाया गुणाके या सुदेवताप्रजनहृदयानन्दकर्ता प्रगाश।

सदा। ३ वदनज्योतिप्रमानसुरसरत्न रत्नान्विते कुहरे बाहोमौक्तिकरत्नहारहृदयस्त कुहरे कर्णयो॥ नानापुष्पसुवासवासिततनुः सुरंगाघृत संगीतेन विचक्षणो द्विविधदो संमोदनश्चेत्तर॥ राग कानर।

य। भरि अरगजा अवीर कनक घट देति शीशते नाय॥ छिरकति सखी कुमकुमा केसरि भुरकति बंदन धूरि। शोभित हैं मनो शरद समय घन आएहैं जल पूरि॥ दशहूँ दिशा भयो परिपूरणसूर सुरंग प्रमोद। सुरवनिता कौतूहल भूलीं निरखतिश्यामविनोद॥९९॥ राग आसावरी॥ यमुनाके तट खेलति हरि सँग राधा सहित सब गोपी हो। नंदको लाल गोवर्धन धारी तिनके नख मणि ओपी हो॥ चलहु सखी जैये तहां छिन जियरा न रहाय हो। वेणु शब्द मन हरिलियो नाना राग बजाइ हो॥ सजल जलद तनु पीतांवर छवि करमुख मुरली धारि हो। लटपटी पाग बने मनमोहन ललना रहीं निहारि हो॥ नैनसों नैन मिले करसों कर भुजा ठये हरि ग्रीवा हो। मध्यनायक गोपाल विराजत सुंदरताकी सींवा हो॥ करत केलि कौतूहल माधव मधुरी वाणी गावैं हो। पूरणचंद्र शरदकी रजनी संतन सुख उपजावैं हो॥ सकल शृंगार कियो व्रजवनिता नख शिख लोभलटानी हो। लोक वेद कुल धर्म केतकी नेक न मानत कानी हो॥ बलि जाउँ बलके वीर त्रिभंगी गोपिनके सुखदाई हो। सकल व्यथा जु हरी या तनुकी हरि हँसि कंठ लगाई हो॥ माधव नारि नारि माधवको छिरकतर चोवा चंदन हो॥ ऐसो खेल मच्यो उपरापरि नँदनंदन जगवंदन हो। ब्रह्मा इंद्र देव गण गंधर्व सबै एकरस बरपैं हो। सूरदास गोपी बड भागिन हरिसुखक्रीडा करपैं हो॥२४००॥ राग गौरी॥ मानो व्रजते कारिनि चली मदमाती हो। गिरिधर गजपै जाइ ग्वारि मदमाती हो॥ कुल अंकुश मानै नहीं मदमाती हो। शंका बढे तुराइ ग्वारि मदमाती हो॥ अवगाहै यमुना नदी मदमाती हो। करति तरुनि जलकेलि ग्वारि मदमाती हो॥ चहुँ दिशते मिलि छिरकहीं मदमाती हो। सुंड दंड गज पोल ग्वारि मदमाती हो॥ वृंदावन वीथिनि फिरैं मदमाती हो। संग मदन गजपालि ग्वारि मदमाती हो॥ कबहुँ नैन कर दै मिलैं मदमाती हो॥ तैसिय गजगति चाल ग्वारि मदमाती हो। नागवेलि चलती फिरैं मदमाती हो॥ मोदकमांझ कपूर ग्वारि मदमाती हो॥ सुगंध पुढे श्रवणन चुवै मदमाती हो। मंडित मांग सिंदूर ग्वारि मदमाती हो॥ केसरि लाई सानिकै मदमाती हो। धुँघरू घंट घुमाइ ग्वालि मदमाती हो॥ ऊपर कुच युग चंटसों मदमाती हो। मुक्तामाल तुराइ ग्वालि मदमाती हो॥ अंगअंग छिरकै श्यामको मदमाती हो। कुमकुम चंदन गारि ग्वारि मदमाती हो॥ सूरदास प्रभु क्रीडहीं मदमाती हो। सँग गोकुलकी नारि ग्वारि मदमाती हो॥१॥ राग काफी॥ खेलत अतिरससे रँगभीने हो। अति रसकेलि विशाल लाल रँगभीने हो॥ जागत सब निशिगत भई रँगभीने हो। भलेकान्ह भले आए प्रातकाल रँगभीने हो॥ वोलत बोल प्रतीतिके रँगभीने हो॥ सुंदर श्यामल गात लालरँग भीने हो॥ अति लोहित दृग रँगमगे रँगभीने हो। मानो भोर भए जलजात लाल रँगभीने हो॥ पिये अधर मधुपान मत्त रँगभीने हो। कहत कहूँकी कहूँ बात लाल रँगभीने हो॥ केश शिथिल वरवेश सिथिल रँगभीने हो। शशि मुख सिथिल जँभात लाल रँग भीने हो॥ चाल सिथिल भुवमाल सिथिल रँग भीने हो। अंगअंग अलसात लाल रँगभीने हो॥ सकुचत हो कत लाडिले रँगभीने हो। दुरत न उर नखघात लाल रँगभीने हो॥ सूरदास प्रभु नँदकिशोर रँगभीने हो। बहुनायक विख्यात

१ श्यामांगी मुहुरे घरेण दधती हार गळे मौक्तिक ताटंकान्वितकर्णकंकणकरा दिव्यांबरै संयुता॥ रंभाया घनकाननेषु रमती ग्रावापयती शुकमाखायपंपि किन्नरैरपि सुरैर्गीता निशति दिवि॥ रागी आसावरी।

वीणाहाटकंकणे च दधती पद्मासिपत्रानना धत्त कंरवपत्रकोमलपर्णं शास्त्रे पर पंडिता॥ मालश्री रविसंयुता त्रिभुवने गीतार्थपुंसां मिया भूपालीसहिता मिपाय करुणामाकुर्वती श्रीहठी।

लाल रँगभी नेहो॥१॥राग गौरी॥गोकुल सकलग्वालिनीहोघरघर खेलफागु मनोरा झूमकरो।तिन मे श्रीराधा लाडिलीहो जिनको अधिक सुहाग मनोरा झूमकरो॥१॥ झुंडनिमिलिगावतिचली हो झूमक नंददुवार मनोरा झूमकरो। आजुपरव हँसि खेलौ हो मिलि संग नंदकुमार मनोरा झूमकरो॥२॥ रसिकराइ सुंदर वरहो श्रीराधा जिन प्राण मनोरा झूमकरो। मोहन दरश दिखावहु हो डरहु तो नंदकी आन मनोरा झूमकरो॥३॥प्रगटप्रीतिगोकुल भईहो अब कैसे करत दुराव मनोरा झूमकरो। हम न दरश विन जीवहीं हो कोउ कछु करहु उपाव मनोरा झूम करो॥४॥ यशुमतिसुत चित चुभि रहीहो वह तुमही मुसुकान मनोरा झूमकरो। अब न अनत रुचि ऊपजैहो सहजपरी यह वानि मनोरा झूमकरो॥५॥दुरत श्याम धरि पाएहो राधा धाय भरी अँकवारि मनोरा झूमकरो।कनक कलश केशरि भरीहोलै धाईं व्रजनारि मनोरा झूमकरो॥६॥भरहु भरहु सखि श्यामही होपीत पिछौरी पागमनोरा झूमकरो।देह गेहसुधि विसरी हो नंदनंदन अनुराग मनोरा झूमकरो॥७॥ छूटे केश कंचुक वंदहो टूटे मोतिन मालमनोरा झूमकरो॥ चोवा चंदन अरगजा हो उडत अवीर गुलाल मनोरा झूमकरो॥८॥ करकट ताल वजावहीहो छिरकत सब व्रजनारि मनोरा झूमकरो।हँसि हँसि हरिपर डारहीहो अरुन नयनफुलवारिमनोरा झूमकरो॥९॥सुर नर मुनि कौतुक भूलेहो आनँद वरषे फूल मनोरा झूमकरो। गगन विमानन छायोहो झेहनसूझे नाहिनसूरमनोराझूमकरो॥१०॥सूर गोपालकृपाविनुहो यहरसलहै न कोइ मनोरा झूमकरो।श्रीवृषभानु किशोरी हो श्याममगन मन होइ मनोरा झूमकरो॥११॥राग सारंग॥ आली री नँदनंदन वृषभानु कुवरिसो वाढ्यो अधिक सनेह। दोऊ दिशिपै आनँद वरषत ज्यों भादौंको मेह॥ सब सखियाँ मिलिगईं महरिपै मोहन माँगो देहु। दिनाचारि होरीके औसरबहुरि आपनो लेहु॥ झुकिझुकि परतिहैं कुँवरि राधिका देति परस्पर गारि। अब कहाँ दुरे साँवरे ढोटा फगुवा देहु हमारि॥ हँसिहँसि कहति यशोदा रानी गारी मति कोउ देहु।सूरजदासश्यामके वदले जो चाहौ सो लेहु॥४॥रागटोडी॥ या गोकुलकेचौहटेरँगभीजीग्वालिनि।हरिसँगखेलैं फाग नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि॥ डरति न गुरुजन लाज नैन सलोनेरी रँग राचीग्वालिनि। दुंदुभिबाजैं गहगहे रँगभीजी ग्वालिनि॥ नगर कोलाहल होइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। उमह्यो मानुप घोप यां रँग भीजी ग्वालिनि॥ भवन रह्यो नहिं कोइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। डफ वाँसुरी सुहावनी रँग भीजी ग्वालिनि॥तालमृदंगउपंगनैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। झाँझ झालरी किन्नरी रँगभीजी ग्वालिनि॥आवझनरसुहचगनैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। उतहि संग सब ग्वाल लिए रँग भीजी ग्वालिनि॥ सुंदरनंदकुमार नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। उत श्यामा नवयौवना रँग भीजी ग्वालिनि॥अंबुजलोचन चारु नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि। टेसूके कुसुम निचोइकैरँग भीजी ग्वालिनि॥ भरे परस्पर आनि नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। चोवा चंदन अरगजा रँगभीजी ग्वालिनि॥कुमकुम चंदन सानि नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। रत्नजटित पिचकारियो रँगभीजी ग्वालिनि॥ कर लिए गोकुलनाथ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। छिरकहिं मृगमद कुमकुमा रँगभीजी ग्वालिनि॥ जो राधेके साथ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। सुरगपीतपट रँगिरह्योरँगभीजी ग्वालिनि॥सुभग साँवरे अंग नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि।नीलवसन भामिनिवनीरँगभीजी ग्वालिनि॥ कंचुकि कुसुम सुरंग नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। अरुण नूतनपल्लव धरे

रँगभीजी ग्वालिनि ॥ कूजित कोकिल हस नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि। नृत्य करत अलिकुल मिले रँगभीजी ग्वालिनि॥अति आनद अबीर नैनसलोन री रँगराची ग्वालिनि चढि विमान सुर देखही रँगभीजी ग्वालिनि।देहदशा बिसराइनैन सलोन री रँगराचीग्वालिनि॥ राधा रसिकरसज्ञ हो रँगभीजी ग्वालिनि। सूरदास बलि जाइ नैन सलोन री रँगराची ग्वालिनि ॥ ५ ॥ राग गौरा ॥ खेलत हो हो हो हो होरी। अतिसुख प्रीति प्रगट भई उत हरि इतहि,राधिका गोरी। हो हो हो हो होरी बाजत ताल मृदग झॉझ डफ बिच बिच बॉसुरी ध्वनि थोरी ॥ १ ॥ गावत देदै गारि परस्पर उत हरि इत वृषभानु किशोरी। मृगमद साखजवाद कुमकुमा केसरि मिलै मिलै मथि घोरी ॥ २ ॥ गोपी ग्वाल गुलाल उडावत मत्त फिरैं रतिपति मनो धौरी। भरति रग रति नागरि राजति मानहु उमगि बिलावल फोरी ॥३॥ छुटिगई लोकलाज कुलशंका गनत न गुरु गोपिनको कोरी।जैसे अपनेमे रमतेमे चोर भोर निरखत निशि चोरी ॥ ४ ॥ उन पट पीत किए रँगराते इन कचुकी पीत रँग बोरी। रही न मन मर्याद अधिक रुचि महचारि सकति गॉठि गहि जोरी ॥ ५ ॥ बरणि न जाइ बचनरचना रचि बहु छवि झकझोरा झकझोरी। सूरदास शारदा सरलमतिसो अवलोकि भूलि भई भोरी ॥ ६ ॥ ६ ॥ राग गूजरी ॥ब्रजकी वीथिन वीथिन डोलत।मदगोपाल सखा सग लीने हो हो हो लै बोलत ॥ ताल मृदग बीन डफ बासुरी बाजत गावत गीत। पहिरे बसन अनेक बरन तनु नील अरुन सित पीत ॥ सुनि मन नारि निकसि ठाढी भई अपने अपने द्वार। नवसत साजे प्रफुलित आनन जनु कुमुदिनी कुमार॥ चपल नैन अतिचतुर चारु तुम जनु फुलवारी लाई। देखतही नदनद परमसुख मिलत मधुप लौं धाई ॥ गावत गहि भुजबल चहुँदिशि जुरि अनि रिस मुह अकुलात। मानहु कमल कोश अलिअतर भँवर भ्रमत बन प्रात॥छाँडति भरि भायो अपनो करि राजत अग विभाग।मानहुउडि निचलेहैं अलि कुल आश्रित अग पराग॥ अतर कछु न रह्यो तेहि अवसर अति आनद प्रमाद। मानहु प्रेम समुद्र सूर सुख लै उपटित मर्याद ॥ ७ ॥ ऊचोसो गोकुल नगर जहँ हरि खेलत होरी। चल सखि देखन जाहिं पिया अपनेकी चोरी॥ बाजत ताल मृदग और किन्नरकी जोरी। गावति दै दै गारि परस्पर भामिनि भोरी ॥ चूका सुरँग अबीर उडावत भरि भरि झोरी। इत गोपिनको झुड उतहि हरि हलधर जोरी॥ नवल छबीले लाल तनी चोलीकी तोरी।राधाचली रिसाइ ढीठसो खेलै को री। खेलतमें कैसो मान सुनहु वृषभानुकिशोरी। सूर सखी उर लाइ हँसति भुजगहि झकझोरी॥ ८ ॥राग पूर्वी॥ऐसीको खेलै तोसो होरी।बारबार पिचकारी मारत तापर बॉह मरोरी॥ नँदरानाकी गऊ चरायो हमसो करो बरजोरी।छाकै छीनि खात ग्वालनकी करत रहे माखन दधि चोरी॥ चोवा चदन और अरगजा अविर लिए भरि झोरी। उडत गुलाल लाल भए बादर केसरि भरीहै कमोरी ॥ श्रीवृदावनकी कुजगलिनमे गावो मुरली राधा गोरी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चिरजीवो यहजोरी॥९॥राग सारग॥निकसि कुवर खेलन चले रँगहोहो होरी।मोहन नदकुमार लालरँग हो हो होरी ॥ कचन माट भराइकै रँग होहोहोरी।सौधे भरी कमोरीलालरग होहो होरी॥झाझ ताल सुरमडरे रँग होहो होरी। बाजत मधुर मृदग लाल रँग होहो होरी ॥ तिनमे परम सुहावनी रँग हो हो होरी।महुवरि बॉसुरी चग लाल रँग होहो होरी॥खेलतरँगीले लालजू रँग हो हो होरी।गए वृषभानुकीपौरि लाल रंग होहो होरी॥जिनजहुती किशोरी लाल रंगहोहोहोरी। ते सब आईंदौरिलाल रँग होहोहोरी॥सखियनसुख देखन मरने रगहोहोहोरी।गाठि दुहुँनकीजोरि

लाल रग होहो होरी ॥ जोपै फगुवा दियो न जाइ रँगहोहो होरी ।श्रीराधामृके लागो पांइलाल रग होहो होरी॥यह सुख सबके मनबसोरँग होहो होरी॥ सूरदास बलि जाइ लाल रँगहोहोहोरी ॥ १० ॥ राग सारंग ॥करलिए डफहि बजावे होहो सनाकखेलार होरीकी । संग सखा सब बनि बनि आवत छवि मोहन हलधर जोरीकी ॥१॥ तालमृदंग बजावत गावत भावत ध्वनि मुरली थोरीकी। लालगुलालसमूह उडावत फेंटकमेंअबीर झोरीकी ॥खेलनफाग करतकौतूहलमत्त फिरें मन्मथधोरीकी॥बरनबरन शिर पाग चौतनी कछि कटि छवि चंदन खोरीकी ॥ २ ॥ उतहि सुननि वृषभानुसुता लई तरुनि बोलि सब दिन थोरीकी । नीलांबर कंचुकी सुरँगतनु अति राजति राधा गोरीकी ॥ मनु दामिनि घनमध्य रहति दुरि प्रगट हँसनि चितवनि भोरीकी। नखशिख सजि शृंगार व्रजयुवती तनईडियाकुसुमी बोरीकी ॥३॥पानभरे मुख चमकत चौका भाल दिये बेंदी रोरीकी । कनककलश कोटिक भरि लीन्हें भरि फूले रँगरँग घोरीकी॥युवति-वृंद व्रजनारि संगले जाइ गहनि व्रजकी खोरीकी॥घरघरते धुनि सुनि उठिधाईं जे गुरुजनपुन्जन चोरीकी ॥ ४ ॥ हाथन लैभरिभरि पिचकारी नानारंग सुमन तोरीकी॥ कोउ मागति कोउ दौड़ निहारनि अरसपरस दोरा दोरीकी ॥ उतहि सखाकरजेरी लीन्हें गारीदेहि मकुचतोरीकी।इतहि सखी कर बांस लिए बिच मारु मची झोरा झोरीकी ॥ ५ ॥ पाछेतेललिताचंद्रावलि हरि पकरे भुजभरि कोरीकी । व्रजयुवती देखतही धाईं जहां तहां सब चहु ओरीकी ॥ इक पट पीतांबर गहि झटक्यो एक मुरली लई कर मोरीकी। इक मुखसों मुख जोरि रहति इक अंक भरति रति-पति ओरीकी॥६॥तब तुम चीरहरेयमुनातटसुधि बिसरे माखनचोरीकी। अबहमदावआपनोलैहे पायपरो राधा गोरीकी॥ अपने अपने मन सुख कारण सब मिलि झकझोरा झोरीकी। नीलांबर पीतांबरसो लेगांठिदई कसिके डोरीकी ॥ ७ ॥कनक कलश केशरि भरि ल्याई डारि दियो हरिपर ढोरीकी । अति आनद भरी व्रजयुवती गावति गीत सबै होरीकी॥अमर विमान चढेसुख देखत पुहुपवृष्टि जैध्वनि रोरीकी॥सूरदास सोक्योंकरि बरणै छविमोहन राधाजोरीकी॥८॥११॥ राग रागिनी ओहटी॥हरि संग खेलन फागु चली । चोवा चंदन अगर अरगजा छिरकति नगर गली ॥ राती पीरी अँगिया पहिरे नूतन झमक सारी । मुख तमोर नैनन भरि काजर देहिं भावती गारी ॥ऋतुवसंत रतिआगमनायक यौवनभार भरी । देखन रूप मदनमोहनको नँददुआर खरी ॥ कहि न जाइ गोकुलकी महिमा घर घर गोकुल माही । सूरदास सो क्योंकरि बरणै जो सुख तिहूँ पुर नाही ॥१२॥राग गौरी ॥ ठाढो हो व्रजखोरी ढोटाकौनको।लटिहि लकुट त्रिभंगि एकपद मनो मन्मथ गौनको । मोर मुकुट कछनी कसे री पीतांबर कटि शोभ। नैन चलावैफेरिकै री निरखि होत मन लोभ॥भौंहमरोरे मटकिके री यमुना रोकत घाट। चितै मद मुसुकायकै री जियकरिलेय उचाट॥हसत दशन चमकायकै री चकचौंधीसी होति।बगपगति नवजलदमै री उर माला गजमोति ॥ कर पिचकारी रत्न जरित री तकि तकि छिरकत अंग।टेसूके कुसुम निचोयकै री अरु केसरिको रग ॥फेंट गुलाल भराइके री डारत नैनन ताकि । एते पर मन हरत है री कहा कहौं गति वाकि॥ पुनि हाहा करि मिलत है अरु नाना रग बनाय । नंदसुवनकेरूपपर री जनसूरदास बलिजाय१३राग ओहटी॥सांवरो ढोटाकोहैरीमाइ जाकेवारिजनैनविशाल।

१ श्यामोवाद्ग चतुष्पेनसहित पीतांबरम्याग्यग शङ्खपोविद्धा ति बाणसहित रंगसंच घडनदाम् ॥ बामोदिरमणीयुत मियतम श्रीविष्णुपरसंदा सारमोमपशानि धनेसुरगणे सत्तुवमानोनरे ॥ १ ॥ राग सारग ॥

अधर धरे मुख मुरली बजावत गावत श्रीराग रसाल ॥ मंदमंद मुसकनि सरोजमुख शोभा बरणि न जाइ। बाँकी भौंहे तिरछी चितवनि चितवत लियो चुराइ ॥ अति लोने सोनेसे कुंडल कौने रचे हो सँवारि । मनो काम किल फंद बनाए फंदे मीन ब्रजनारि॥ शिर पगिया बीरामुखसोहै सरस रसीले बोल । अति आधीन भई ब्रजवनिता वश कीने बिनमोल ॥ कहा करौं देखे बिनुसजनी कल न परे पल प्रान। ग्वालन सग रग भरचो भावत गावत आछी तान॥ताते और कौन हितु मेरे सखिचलि नेकुदिखाय।मदनमोहनजूकी चरणरेणुपरसूरदासबलिजाय ॥१४॥ राग नटनारायण ॥ खेलत श्याम फाग ग्वालन सग ।एक गावत एक नाचत एक करत बहु रग ॥बीनमुरजडफंगमुरली झांझ झालरि ताल।पढत होरी बोलि गारी निरखिकै ब्रजबाल॥ कनककलशनघोरिकेसरिकरलिये ब्रजनारि । जबहिं आवत देखि तरुनिन भजत दे किलकारि॥ दुरिरही इक खोरि ललिता उतते आवत श्याम । धरे भरि अंकवारि औचक धाय आय ब्रजबाम ॥ बहुत ढीठो दैरहेहोजानवी अब आजु । राधिका दुरि हँसति ठाढी निरखि पियमुखलाजु॥ लियो काहूमुरलिकरतेकोउगह्यो पटपीत ।गूथि बेनी मांग पारे लोचन आँजि अनीति॥ गए करते छटकि मोहन नारि सब पछिताति । शीश ध्वनि कर मीजि बोलति भली लैगए भांति ॥ दाँवहमनहिंलेनपायोवसन लेती लाल । सूरप्रभु कहां जाउगे अबहम परीयहख्याल॥१५॥राग काफी॥मोहनगएआजुतुमजाहु दाँव हम लेहिंगीहो।लालन हमहिं करे जे हाल उहै फल देहिंगीहो॥आजुहिदाँवआपनोलेतीभले गएहो भागि। हाहा करते पाँइन परते लेहु पितांबर मांगि ॥ बेनी छोरत हँसत सखासँग कहत लेहु पट जाइ । सौंह करतहौं नंदबबाकी अपनी बिदति कराइ ॥ जो मैं लेहुँ पितांबरअबहीकहा देहुगे मोहिं ।इत उत युवती बितवन लागी ग्ही परस्पर जोहि ॥एक सखा हरि त्रियारूप करि पठै दियो तिन पास।गयो तहां मिलि सग त्रियनकै हँसति देखि पटवास ॥ मोहि देहु राखौं दुरायके श्यामहिं जिनि लै देहु । लियो दुराय गोदमें राख्यो दाँव आपनो लेहु॥पीतांबर जिनि देहु श्यामको यह कहि चमक्यो ग्वाल।सूर श्याम पट फेरत करसो चकितनिरखिब्रजबाल ॥१६॥ चकित भईहरिकी चतुराई।हमहिंछलीइनकुँवर कन्हाई॥ कहा ठगोरी देखत लाई। धिरवतिहैकहि भलीबनाई॥एक सखी हलधरवपु काछ्यो। चलीनीलपट ओढेआछ्यो ॥ श्याममिलनताकोतहां आए।अजग्र जानि चलेअतुराए॥ मिलि साँकरी ब्रजकी खोरी। ढूकीरहीजहाँतहँ गोरी ॥ गह्योधाइ भुज दोउ लपटानी । दौरि परी सब सखी सयानी॥निरखिनिरखि तरुनी मुसकानी॥गारि नारि सब देहि सुहानी ।नदमहरली जाति बखानी॥सूर श्याम उचरचो मुखबानी । गईं लिवाइ जह राधारानी ॥१७॥ राग धनाश्रीमला ॥ छैलछबीले मोहना जाके घुँघरारेकेशरी । गोरमुकुट कुंडल लसे करिलीन्हो नटवर भेष री॥राखेभौंह मरोरिकैरी सुदर नैनविशाल।निरखि हँसनिमुसकानिकी री अतिहि भई बेहाल ॥ कीर लजावनि नासिया अधर बिंबते लाल। दशनचमकदामिनिहूतेगी श्यामहृदय बनमाल॥ चिबुक चित्तको हरनहै री राजत ललित कपोल । मारग गहि ठाढो रहै री अरुबोलतमीठे बोल॥ चदनखौरि बिराजे री श्यामलभुजा सुचारु । ग्वालसग्रामवसग लिए री वह करत गुलालन मारु ॥ इक भाजत इक भगतहै री कुसुमरग रग घोरि।साँधिकीच मची भली री खेलत ब्रजकीखोरि॥ सुनत चलीमनधाइकैरीवे देखननदकुमार। फागमांझसी ह्वरही री उडिउडि गगन अपार ॥ मिलि तरुनी तहा जाइकै री जह विहरत फागु गोपाल। सूर श्याम सुख देखिकै री बिसरचो तनु तेहिकाल॥१८॥ राग गौरी ॥ घग्घरतेसुनिगोपीहरिमुख

देखन आई । निरखि श्याम ब्रजनारि हरपि सब निकट बुलाई ॥ सुनति नारि मुसकाय बांस लीन्हें कर धाई । ग्वालन जेरी हाथ गारि दें त्रिभन मोहाई ॥ शिलानाम ग्वालिनी अचानक गहे कन्हाई । सखिन बोलावति टेरि दौरि आवहु री माई ॥ एक सुनत गई धाइ बीस तीसक तहाँ आई । टूटिपरीं चहुँपास घेरि लीन्हों बलभाई ॥ इक पट लीन्हों छीनि मुरलिआ लई छिड़ाई । लोचन काजर आंजि भांतिसों गारी गाई ॥ जबहिं श्याम अकुलात गहति गाढ़े उर लाई ॥ चंद्रावलिसों कह्यो गूँथि कच सौंह दिवाई । ढाढ़ा करिए लाल कुँवरिके पाँय छुआई । यह सुख देखत नैन सूरजन बलिबलि जाई ॥१९ ॥ राग काफी ॥ ललना प्रगट भए गुण आज त्रिभंगी लाल ऐसे होउ । रोकत घाट बाट गृह बनहूं निवहति नहिं कोउ नारि । भली नहीं यह करत सांवरे हम देहैं अब गारि ॥ फागुनमें तो लखत न कोऊ फबति अचगरी भारि। दिन दश गए दिना दश और लेहु माघ सब सारि ॥ पिचकारी मोको जिन छिरको झरकिउठी मुसकाइ । सासु ननद मोको घर बैरिनि तिनहिं कहौं कहा जाइ ॥ ढाढ़ाकहि कहि नंददोहाई कहा परी यह बानि । तामें भिरहु तुमहिं जो लायक इह हेरनि मुसकानि ॥ अनलायक हमहें की तुम हौ कहौ न बात उघारि। तुमहूं नवल नवल हमहूं हैं बड़ी चतुर हो ग्वारि॥ यहकहिश्याम हँसे बाला हँसी मनहीमन दोउ जानी। सूरदास प्रभु गुणन भरे हो भरन देहु अब पानी ॥२०॥ राग काफी ॥ अरी माई मेरो मन हरि लियो नंदके ढुटोना। चितवनमें बाके कछु टोना॥ निरखत सुंदर अंग सलोना । ऐसी छवि कहूं भई न होना ॥ कालिह गहे यमुनातट जौना । देख्यो खोरि सांकरी तौना॥ बोलन नहीं रहत वह मौना । दधि लै छीनि खान रह्यो दोना ॥ घरघर माखन चोरन जौना । बाटन घाटन देन हैं घौना॥ खेलत फाग ग्वाल संग छौना । मुरलि बजाय बिमरावत मौना ॥ मो देखत अबहीं कियो गौना । नटवर अँग शुभ सजे मजौना ॥ त्रिभुवनमें वश कियो न कौना । सूर नंदसुत मदनलजौना ॥ २१॥ माई री मोहन मूरति सांवरो नँदनंदन जेहि नावरो। अबहिं गए मेरे द्वारह्वै रहत कहत ब्रजगाँवरो ॥ मैं यमुना जल भरि घर आवति मोहिं करि लागो तावरो । ग्वालसखासंगलीन्हेंडोलतकरतआपनोभावरो ॥ यशुमतिकोसुतगरुढुटौना खेलत फागु सुहावरो । सूर श्याम मुरलीध्वनि सुनरी चित न रहतकहु ठाँवरो॥२२॥ अरी माई सांवरो सलोनो अति नंदकुँवर री ॥ चंदनकी खोरि भाल भौंह हैं जेवर री ॥ कुंतल कुटिल छवि राजत झँवरे री । लोचन चपल तारे रुचिर भँवरे री ॥ मकर कुंडल गंडझलमल करे री । मनहु मुकुर बिच रवि छवि धरे री ॥ नासिका परम लोनी बिंबाधर तरे री। तहां धरे मुरली सो नाना रंग झरे री॥ यमुनाके तीर ग्वाल संगहि विहरे री। अबहीं मैं देखिआई बंसीवट तरे री ॥ पिचकारी कर लिएधाइ अंगधरे री।नैनन अबीर मारेकाहूसों न डरे री॥बातनहरतमन रंगह्वैढरे री। सूरजको प्रभु आली चितते न टरे री॥२३॥ नंदनंदन आली मोहिकीन्हीबावरी। कहा करौं चित क्योंहू रहत न ठाँव री ॥ विहरत हरि जहां तहां तुहू आवरी । निशिहू वासर आली मोको उहै चावरी ॥ यमुना जल भरन जाइ इहै करि दाँव री । गुरुजन पुरजनसों और न उपाव री ॥ काफी रागिनी मुख गावै मुरली बजाइ री । ध्वनिसुनितनुभूलीअतिहीसुहाइ री ॥ चंदनकपूर चूरि फेटन भराइ री । सौंधे भरि पिचकारी मारतहै धाइ री ॥ आतुर ह्वै चलि औरजाइकिनिजाइरी। चित न रहत ठौर और न सोहाइ री ॥ मिलि प्रभु सूरजको सकुच गँवाइ री । लाज डारि गारि खाइ कुल बिसराइ री॥२४॥ राग कल्याण खेलतहरिग्वालसंगफागुरंगभारि।एकमारतएकनारत

एक भाजत एक गाजत एक धावत एक पावत एक आवत मारि ॥ एक हर्षत एक लरखत एक करत घातहिको लोचन गुलाल डारि सौंधे ढरकावै । एक फिरत संगसंग एक एक न्यारे २ विहरत टरतदॉव दीवेको वे ज्यो नहिं पावै॥एकगावत एकभावत एकनाचत एकराचत एककरत मृदंग गति जति उपजावे । एक वीणा एक किन्नर एक मुरली एक उपंग एक तुंमर एक रवाब भांति सौ दुरावे ॥ एक पटह एक गोमुख एक आवझ एक झालरी एक अमृतकुंडली एक एक डफ एक कर धारे । सूरज प्रभु वल मोहन संग सखा बहु गोहन खेलत वृषाभानुपौरि लिए जात टारे ॥ २५ ॥ राग सावेरी ॥ सुनतहि वृषभानुसुता युवति सब बोलाई । आए बलराम श्याम आईं तजि काम वाम धामते आतुर सातनव बनाई ॥ हरषत सब ग्वालबाल अरसपरस करत ख्याल एक मारत एक भाजत राजतवह जोरी।उतते निकसी कुमारि संग लिए विपुलनारि कोउकोउ नवयौवन भरि कोउकोउ दिन थोरी ॥ इतउत मुख दरश भए पिय पूरण कामकिये मानो शशि उदय भयो आनंदित चकोरी । उत जेरी धरे ग्वाल बॉसन इत परी मार यह छबि नहिं वारपार सोर झोर झोरी॥उत होरीपढत ग्वार इत गारी गावति ए नन्दनाहिंजाए तुम महरि गुणनभारी । कुलटी उनते कोहे नन्दादिक मन मोहे बाबा वृषभानुकी वै सूर सुनहुप्यारी ॥२६॥ राग काफी ॥ श्रीराधा मोहन रंगभरेहो खेल मच्यो ब्रजखोरी । नागरिसंगनारिगणसोहैं श्याम ग्वाल सँग जोरी ॥ हरिलिए हाथ कनकपिचकारी सुरंग कुमकुमा घोरी।उतहि माट कंचन रँग भरि ले आईं तिरिया जोरी॥ आतुर ह्वै धाईं उत नागरि इत बिचले सब ग्वाल । घेरि लईं गहि खोरि साँकरी पकरे मदनगोपाल ॥ गह्यो धाइ चंद्रावलि हँसिके कह्यो भलेहो लाल । जिनि बल करौ रहौ नेक ठाढे जुरिआई ब्रजबाल॥ आई हँसति कहति हरि एई बहुत करतहैं गाल । क्यों जू खबरि कहौ यह कीन्ही करत परस्पर ख्याल ॥ काहू तुरत आइ मुख चूम्यो करसों छुयो कपोल । कोउ काजर कोउ वदन मॉडती हर्षहिं करहिं कलोल ॥ कोउमुरली लै लगीं बजावन मनभावनमुख हेरि । किनहूँ लियो छोरि पट कटिते वारति तनपर फेरि ॥ श्रवणन लागि कहति कोउ बातैं बसन हरे तइ आपु । कालि कह्यो करिहौं कहा मेरो प्रगटभयोसो पापु ॥ कोउ नयननसों नयनजोरिकै कहति न मोतन चाहो।अबहीं तुमअकुलातकहाहो जानहु-गे मनलाहो ॥ वेरिरहीं सखाकी नाहीं करति सवै मनलाहु । इक बूझति इक चिबुक उठावति वश पाए हरि नाहु ॥ पीतांबर मुरली लई तबहीं युवती स्वांग बनाइ। देखत सखा दूरि भए ठाढे निरखत श्याम लजाइ॥ नखछत छाप बनाय पठाए जानि मानि गुण येहु । सूर श्याम हमको जिनि बिसरौ चिह्न इहै तुम लेहु ॥ २७ ॥ राग गुंडमलार॥ खेलत रंग रह्यो एकओर ब्रजसुंदरि एक ओर मोहन । बरनबरन ग्वाल बने महर नंद गोपजने एक गावत एकनृत्यतएक रहत गोहन ॥ बजावत मृदंगताल अरसपरस करिविहार शोभाको बरनि पार एकएक दै सोहन। कनककलकुट करन लिए धाए सब हरपि हिए एक ब्रजललना सूरज प्रभु मनमन मिलि भौंहन॥ २८॥राग सारंग ॥ होहोहोहोहोरीकरत फिरतब्रजखोरी।मोहन हलधर जोरीसुवननंदकोरी॥ ग्वाल सखा सँग ढोरी लिए अबीर करिझोरी ॥ मारि भजत जेहिजोरी दावँलेत सोदौरी । एकगावतिहिं धमारी एक एकन देति गोग्गिारी । दई सबन लाज डारिबाल पुरुषतोरी॥सौंधे अरगजाकीच मची जहां तहां गलिनोरी। बिच एक एक ऊंच नीच करत रंग झोरी॥ एक उघटत एक नृत्यत एक तान लै तोरी । उपजाइ एक दै करताल हरपि गावतिहैं गोरी ॥ सूरदास प्रभुको सुख

निरखि हरषि होरी । सुरललना सुरनसहित थिथकति भईं बौरी ॥२९॥ रागनन्द ॥ वृंदावन परम सोहानो राधे खेलै फागु बारे कन्हैया । मोहन बँसिया बजावै भलानदीयमुनाकेतीरबारे कन्हैया ॥ श्रवण सुनत सब धावेहो झोरिन भरेअबीर बारेकन्हैया । उरमोतिन कीमालारी पहिरे रातुल चीर बारे कन्हैया ॥ ब्रजबधू सब सुंदरि श्रवणन झलके बीर बारे कन्हैया । चोवा चंदन अरगजा छिरकै सकल शरीर बारे कन्हैया ॥ एकतो राधा सुंदरी दुसरे परी अबीर बारे कन्हैया। सांकरि खोरिया ब्रजकी हो भई चोवाकी कीच बारे कन्हैया॥ वृंदावनके कुंजन भई दोउ दिश भीर बारे कन्हैया ॥ यहि विधि होरी खेलही गावै निशिदिन सूर बारे कन्हैया॥३०॥राग धमार॥ प्यारी नँदनंदन वृषभानुकुँवरि से खेलन रंग रह्यो । उडत गुलाल कुमकुमा मानो अनंग आली छाइ रह्यो ॥ अलिसुत युग बरण्यो वक्रट छवि अलसुत अधर लह्यो । खंजन मीनमुक्ताहलरा मन मनो रविरथ खैंचि रह्यो ॥ हँसि मुसकात सहज स्वारथको रसनिधि रूप थह्यो। दारिं दशनि अरुन अति शोभा मनु शशि ग्रहण गह्यो ॥ गोपी ग्वाल सिमटि सबसुंदरि सज्योशृंगार नह्यो। बरषत कंचन नीर कुसुमजल मानो घन गरज रह्यो ॥ सखि श्यामा श्याम सबै सुखदाई सुखसागर मगरो । सूरदास प्रभु मिलयो हो कृपा करि जिनि हृदये बिसरो ॥ ३१ ॥ राग सारंग ॥ होहो होरी खेलैं रसा ब्रजराजकुँवर वृषभानुपौरी । सुनि मुरली डफ ताल वेणु चढि अटा अटारी दौरि गोरी ॥ जो प्यारी न्यारी छवि सो देखति जलधरको छवि अपार । घनघटा अटा मंद छटके दे उदित चंद बादर बिदार ॥ सो प्यारेकी दृष्टि हती ते झरझोरे खेटक झक झाकझार । भौंहे मंद भेद भाव हरष बरषे रंग अपार ॥ इक प्यारी चंदन घसि छिरकै एक लिए लाल गुलाल । इक प्यारी केसरि छिरकतिहैं भनत सूर चलि गति मराल॥३२॥राग बिलावल॥खेलत मोहन फागु भरे रँग॥डोलत सखा समूह लिए संग॥१॥नंदरायसो विनती कीनी । श्याम एकको आज्ञा लीनी॥अगणित तब पिचकारी गढाये। कंचन रतनजरापे पाय॥२॥मन महसक केसरि लदीना॥अमित सुगंध अरगजा लीनो॥गोपिन बैठि औसेरकीनो। गाइ चरावनको संग दीनो ॥३॥तब अनंत सखा गन साजे । मनलसँवारि संग लिए बाजे ॥ घरघर ध्वजा पताका तानी । तोरन बारन बासस्थानी ॥४॥ अरन पचासक अविर सवारे।वीथिन छिरकितहा निस्तारे॥मोहनचरन धरत तहँ आवै॥द्वारेजुरि युवती मिलिगावै॥५॥निरखि भरनको सब मिलि धावै। मोहन इतते सखा सिखावै॥नाहिंगात वस्तर नहिं राखै।भारेंनीक करिमुखकछु भाष॥६॥बैठे जहा गोप सब राजे।आवत देखि सबै उठि भाजे॥ मोहनपै कोउ जानन पावै॥महा मत्त गजवर ज्यो धावै ॥ ७॥सब मिलि बोलत होहोहोरी । छिरकत चंदन बंदन रोरी ॥ एक धाम गोपी जुरि आय। घरहीमे घेरे हरि जाय॥ ८ ॥इक भीतर इकरही दुआरे। एक जाइलागी पिछवारे ॥ एक इहा चहुँदिशिते घेरे। एक पैठि मंदिरमे हेरे ॥९॥एक लिए कर कमल विराजे। परमे किरणि कोटि शशि भ्राजे ॥ एकलिए शिरसोंधे गागरि। फेटअबीर भरे बहु नागरि॥१०॥ सारी सुभग काउ सब दिये। पाटंबर गाती सब हिये ॥ एकन जाइ दुरे हरि पाये। सैन देइ राधिका बताये॥ ११ ॥ करति कुलाहल हरि गहि लाई। फूली ज्यो निधनी धन पाई ॥ एक गहे कर दोउ हरिके। हलधर देखि उतहिको सरके ॥ १२ ॥ केसरि अरु गुलाल मुख लायो । पूरनचंद्र उदयकरि आयो ॥ पीत अरुण रंगनाये शिरते । चली धातु मनो सावनगिरिते ॥१३॥ एक भरे पिचकारी तारे। देत श्रवणमें नंदलालके ॥ ब्रजजन सकल सुधारस पीते। ऐसी भाँति

पहर दुइ बीते ॥१४॥ देखी निकट राधिका प्यारी। तब हरि लीला और विचारी॥ तबहरिजाइ दुरे उपवनमें। लगी नायका कुंज सदनमे ॥१५॥ करत कुलाहल ब्रजकी नारी। देखत चढे कदंब विहारी ॥ कबहुँक मुरली मधुर बजावें । श्रवण सुनत जितहीतित धावें ॥ १६ ॥ जब हरि जानि निकटही आई । डरते तब हरि रहे लुकाई ॥ कुंज कुंज कोकिल ज्यो टेरैं। श्रवणनाद भृंगी त्यों हेरैं ॥१७॥ कबहूं फिरि आपुसमें खेलति । सकल सुगंध परस्पर मेलति ॥ झुकीं वचन कहती विनपाये । कहति कछू राधिका लगाए ॥१८॥ करनि लालवर वनु भै जैसे । जाइ डोलति वन वनमें तैसे ॥ तब हरि भेप धरचो युवतीको । सुंदर परम भावतो जीको॥ ॥ १९ सारी कंचुकि केसरि टीको । करि शृंगार सब फूलनहीको ॥ कर राजति कंदुक नौलासी । छुटि दामिनिसी ईपद हाँसी ॥ २० ॥ सकल भूमि वन शोभा पाइ । सुंदरता उमँगी न समाइ ॥ ता शोभा ब्रजनारी सोही। रही ठगीसी रूप विमोही॥२१॥एक कहति हरिकैसे नैना । एक कहति वैसेई बैना ॥ बूझति एक कौनकी नारी । विधिकी सृष्टि नहीं तू न्यारी ॥२२॥ तब हरि कहत सुनहु ब्रजबाला। बोलति हँसि हँसि वचन रसाला ॥ हम तुम मिलि खेलहिंसबजानति। राधाआली मोहिंपहिचानति ॥२३॥होहूँसंगतिहारेखेली। जानति होहु अजान सहेली ॥ अबही कीरति महरि पठाई। राधा इकली खेलन आई ॥ २४ ॥ अब एक बात कहौं हौं जीकी। हों जानति हौं हरिही पीकी ॥ सघन विपिन ऐसे कहँ पावहु। सब मिलि एक संग जिनि धावहु ॥२५॥ सुनत शोर कत रहिहैं नेरे। कोटि करौ पावहु नहिं हेरे ॥ द्वै द्वै न्यारीन्यारी डोलहु। तनक मूदि कर मुख जिनि बोलहु ॥२६॥ जाइ अचानकही गहि ल्यावहु। सखी एक ज्योंत्यो करि पावहु ॥ राधाको भुज गहिके लीनी। ऐसे सबको द्वैद्वै कीनी ॥२७॥ मौन किए प्रवेश कियो वनमें। हरिको रूप राखि निजमनमें॥ और सखी खोजति सब कुंजनि। राधा हरि विहरत सुखपुंजनि ॥ २८ ॥ राधा आवति देखि अकेली । फिरी बहुरि सब बैठि सकेली ॥ तब बूझति वृषभानुदुलारी । सखी संगकी कहाँ विसारी ॥ २९ ॥ अति गह्वरमें आइ परी हम। सूर्य न सूझत भयो निशातम॥ ता ठाहरते हौं भई न्यारी ॥ फिरिआई डरपी हौं भारी॥३०॥पुहुपवाटिका हौ फिरिआई। मुकुट पीठिते हो इतआई॥ता ठाहर जो ठाढे पावहिं। चलौ जाइधाइ गहि लावहिं ॥३१ ॥ नारीबात सुनतहीधाई। घेरिलिएकोकिलसुरगाई॥ जाहुकहाँ जुअकेले पाये । सकल सुगंध शीशते नाये॥३२॥एकरूप माधुरीनिहारहिं।एक कटाक्ष नयनशर मारहिं ॥ एक सुमन ले ग्रथितमाला। शोभित सुदर हृदय विशाला ॥३३॥ खेलत आए पुलिन सुहाए । बैठे तहँ मंडली बनाए ॥ मोहन नव शशि मध्य विराजे । देखि सुर कोटिक छवि छाजे ॥३४॥ राग काफी॥ खेलत फागु कुँवर गिरिधारी । अग्रजअनुज सुबाहु श्रीदामा ग्वाल बाल मन सखा अनुसारी ॥इत नागरि निकसी घरघरते दे आगे वृषभानुदुलारी । नवसत सजि ब्रजराज द्वार मिलि प्रफुलित बदन भीर भई भारी ॥ दुदुभि ढोल पखावज बाजन डफ मुरली रुचिकारी। मारत बाँस लिए उन्नत कर भाजत गोप प्रियजनिसो हारी ॥ एक गोप एक गोपी कर गहि मिलिगए हलधरसों भुजचारी । मिटि गई लाज मर्य्याद न कुचपट बहुत सुगंध दियो शिरढारी ॥ बाँह उँचाइ कहत हो हो हो ले ले नाम देत प्रभु गारी ।

इतहि राधिका निकसि यूथते सन्मुख पिय छांडत पिचकारी ॥ इक गोपी गोपाल पकरि कर चली आपने मेर उसारी। ऑजति ऑखि मनावति फगुवाहैंमति हमावति दै कर तारी ॥ सुर विमान नभ कौतुक भूले कोटि मनोज जाइ बलिहारी । सूरदास आनंदसिंधुमें मगन भए व्रजके नर नारी ॥३५॥ राग काफी ॥नँदनंदन वृषभानुकिशोरी राधा मोहन खेलत होरी।श्रीवृंदावन अतिहि उजागर बरनबरन नवदंपति भोरी ॥ एकन करहे अगरकुमकुमा एकनकर केसरिलयोरी॥एकअर्थसौं भाव दिखावति नाचति तरुनि बाल वृष भोरी ॥ श्यामा उतहि सकल व्रजवनिता इतहिश्यामरस रूपलह्यो री। कंचनकी पिचकारी छूटति छिरकति ज्यों मचुपावैं गोरी॥अतिहि ग्वाल दधि गोरस माते गारी देत कहो न करोगी। करत दुहाई नंदराइकी लै जु गयो कलबल छल जोरी ॥ झुंडनि जोरि रही चन्द्रावलि गोकुलमें कछु खेल मच्यो री।सूरदास प्रभु फगुवा दीजै चिरजीवो राधावर जोरी॥३६॥राग श्रीहठी॥श्यामा परवश परी हो विकाय मोहनके खेलन रस ग्योहो । खेलन चले फगुत अति तरके मारग पीक पगह।पेलि चली यौवन मदमाती अधरसुधा रसप्याइ। इत लिए कनक लकुटिया नागरि उत जरी धरे ग्वार। इत है रंगरँगीली राधा उत श्रीनंदकुमार ॥ १ ॥ खेलनमें रिस ना करि नागरिश्यामहिं लागी चोट। मोहन है अति माधुरि मूरति राखिये अंचल ओट ॥ मारि डगे जब फिरि चली सुदरि बेनी तुरे सुअंग । मनहु चदके वदनसुधाको उडि उडि लगत भुअंग ॥ २ ॥रुज मुरज डफ झाँझ झालरी यंत्र पखावज तार । मदन भेरि अरु राइगिरी गिरि मुरमंडल झनकार॥एक जु आई आन गावंते सुंदरि परम सुजान । यह ढोटा धौं आहि कौनको मारत मनमिज बान ॥ ३ ॥ यमुनाकूल मूल बसीवट गावत गोप धमारि। लैलै नाम गाउँ बरसानो देत दिवावत गारि॥खेलि फागु मिलिके मनमोहन फगुवा दियो मंगाय। हरषित भई सकल व्रजवनिता सूरदास बलिजाइ ॥४॥३७॥राग नटनारायण॥ हो हो हो हो लैलै बोलें । गोरस केरी माते डोलें॥व्रजके लरिकनि संग लिए डोलें।घरघरकेरी फरके खोलें॥गोपीग्वालमिले इक सारी । बचत नही बिन दीनें गारी॥आनिअचानकअँखियांमीचें। चंदन वंदनऊपरसीचें ॥ जो कोइ जाइ गृह घर बैसी । करि बरिआइ ततांऊ पैसी॥हाथन लिए कनक पिचकारी । तकिनकि छिरकत मोहन प्यारी ॥ कुमकुम कीच मची अति भारी । उडत अबीरन रँगी अटारी ॥ अति आनद भरे सब गावैं । नाना गति कौतुक उपजावें ॥ मोहन गहि आने मिलि धाय । फगुवा हमको देहु मँगाय ॥ भागत कुसुम हार उर टूटे। पीतांबर मोहन दै छूटे ॥ शोभा सिंधु बढ्यो अति भारी । छविपर कोटि काम बलिहारी ॥ सूरदास प्रभु करि रस होरी।वरणौ कहँलगि मोमतिथोरी॥३८॥ राग श्रीहठी॥नागरि राधापै मोहन लआयहो ।लोचन आजि भाल बेंदीके पुनिपुनि पाँइ परायहो॥बेनीगूथिमाँगशिरपारयोबधूवधू कहि गाइहो। प्यारी हँसति देखि मोहनमुख युवती वने वनाइहो ॥ श्यामअंग कुसुमीनईसारी अपने कर पहिरायहो।कोउ भुज गहति कहति कछु कोऊकोउ गहि चिबुक उठाइहो॥कोउ कपोल छुइ कहति लाल अति कोउ मुख मुखहि मिलाईहो।एक अधर गहि सुभग अँगुरिअन बोलत नहीं कन्हाइहो ॥ नीलांबर गहि खुटचूनरी हँसिहँसिगांठिजुराइहो॥युवतीहँसतिदेतिकरतारीभयोश्याम मनभायहो ॥ कनककलश अरगजा वोरिके हरिके शिरढरकायहो।श्रीवृंदावनअद्भुतहोरीकहत कही नहिं जाइहो॥नंदसुनत हँसि महरि पठाई यशुमति धाई आइहो।पटमें बाँध्यो श्यामछुडायोसूरदासबलिजायेहो३९॥राग बिलावल॥सौंधेकीउठतझकोरमोहनरंगभरे।चोवाचदनअगरकुमकुमसौंधे

माठ भरे ॥ रतनजडित पिचकारी कर गहे वालखरे।भरि पिचकारी प्रेमसों डारी सोमेरेप्राणहरे॥ सब सखियन मिलि मारग रोक्यो जब मोहन पकरे । अंजन ऑजिदियो आंखिनमें हाहा करि उबरे ॥ फगुवावहुतमँगाइसाँवरे करजोरेअरजकरे। धनिधनि भागसूरप्रभुताकेजाकेसँगविहरे॥४०॥ राग रानी टोडी॥ग्वाल हँसे मुख हेरिकै अति बने कन्हाई॥हलधरको लिएटेरि आजुअतिबनेकन्हाई। होहो करिकरि कहतहैं अतिबने कन्हाई। रहे चहूँघां हेरि आजु अति बने कन्हाई॥ ऐसेहि चलिए नंदपै अति बने कन्हाई॥ बलकी सौंह दिवाइ आजु अति वने कन्हाई॥भुजागहे तहांलैगई अति बने कन्हाई ॥ वह छबि वरनि न जाइ आजु अति वने कन्हाई ॥ इत युवती मन हरतिहैं अति बने कन्हाई॥ उतहि चले कै भोर आजु अति वने कन्हाई ॥ औरसखी आई तहां अतिबनेकन्हाई॥ करिकरि नयन चकोर आजु अति बने कन्हाई ॥ महर हँसे छबि देखिकै अति बने कन्हाई॥सुनि जननी तहं आइ आजु अति वने कन्हाई ॥ हँसि लीन्हों उर लाइकै अति बनेकन्हाई ॥ आनँदउर न समाय आजु अतिबने कन्हाई॥कछुक खिझी कछु हसि कह्यो अति वने कन्हाई॥ किन यह कीन्हों हाल आजु अति बने कन्हाई ॥ लेति बलैया वारिकै अति बने कन्हाई॥ ए ऐसियव्रजबाल आजु अति वने कन्हाई ॥ रंगरंग पहिरावनि दई अति वने कन्हाई॥ युवतिन महर बुलाय आजु अति वने कन्हाई ॥यह सुख प्रभुको देखिकै अति वने कन्हाई ॥ सूरदास बलि जाइ आजु अति वने कन्हाई॥ ४१ ॥राग कल्याण ॥ व्रजराज लँडतो गायहो मन मोहन जाको नाउं । खेलत फाग सुहावनी रंग भीजि रह्यो सब गाउँ॥ ताल पखावज बाजहीहो डफ सहनाई भेरे। श्रवण सुनति सब सुंदरी वे झुडन आयहो घेरे ॥ इतहि गोप सब राजहीं हो उत सब गोकुलनारि ।अति मीठी मनभावती हो देहिं परस्पर गारि ॥ चोवा चंदन छिरकही हो उडत अबीर गुलाल। मुदित परस्पर खेलही हो हो हो बोलत ग्वाल ॥ सब गोपिन मिलि हलधर पकरे छाडे पाइ लगाइ। दाऊ आजु भले वने जू आए ऑखि अँजाइ ॥ बहुरि सिमटि व्रजसुंदरी मिलि पकरे गोकुलनाथ । नव कुमकम मुख माडिकै रचि वेनी गुँथी हो माथ॥ तब नदरानी बीचकियो बहु मेवादियेमँगाय । पटभूषण पहिराइसबनकोनिरखिसूर बलि जाय॥४२॥ ॥राग गौरी॥ग्वालिनि जोबनगर्व गहेली । राधेके संग कदम सहेली ॥ १॥ कुमकुम उबटि कनक तनु गोरी।अंग सुगध चढाय किशोरी ॥ दक्षिण चीर तिपा को लहँगा।पहिरि विविध पट मोलन महँगा॥२॥कवरी कुसुम मांग मोतिअन मनु।केसरि आड लिलाट भ्रुकुटि धनु ॥ कज्जल रेख नैन अनिआरे। खजन मीन मधुप मृग हारे ॥३॥ श्रवणन कुडल रविसम ज्योती । नकवेसरि लटकै गजमोती ॥ दशन अनार अधर बिंब जानो । चिबुक चारु मृँग्यो मधु मानो ॥ ४ ॥ कंठ कपोत मुक्तावलि हार।जनु युग गिरि बिच सुरसरिधार॥ कुच चकवामुख शशि भ्रम भूलो। वैठे विधुरि दुहूँअनुकूले ॥५॥कर कंकण चूरो गजदंती । नख मणि माणिक मेटति दंती ॥ नाभी ह्रद तनु हाटकवरनी। कटि मृगराज नितंबिनि तरनी ॥ ६ ॥ कदली जंघ चरण कल नूपुर।गवन मराल करत धरणीपर ॥ भूषण अग सेज सत नारी।गावति फागु नंदकी पौरी ॥७॥

---

१ वीणा वामकराग्रेण दधती ताली तथा दक्षिणे मुक्ताहारललाटमध्यतिलका नेत्राद्ये कज्जलम् ॥ देव चन्दनकर्दमेन रचितं बिम्बाधर नूपुरी तांबूल करमोहिनी च मनछघोटी च मुक्तावली ॥ राग रानी टोडी।

२ मुक्तारत्नसुवर्णरचारचिते सिंहासने संस्थिते छत्र शोभितमस्तके परिजनैः सन्नोध्यते चामरै ॥तांबूलंवदने सुगंधितवपु कंठेषु मुक्तावली कल्याणो विशदांशुक कमलदलश्यामो भूभुजाम् ॥ राग कल्याण ।

सुनि सुंदर वर वाहिर आए। हलधर ग्वाल गोपाल बोलाए ॥ इकतन ग्वाल एकतन नारी। खेल मच्यो व्रजके विच भारी ॥ ८ ॥ कुमकुम चंदन अरगजा घोगी । हाथन पिचकारी ले दौरी ॥ गोपी गोप भए झकझोरे । अंचल गाँठि परस्पर जोरे ॥ ९ ॥ उडतगुलाल अरुणभए अंबर । कुमकुम कीच मची धरणीपर ॥ चंग मृदंग बाँसुरी बाजे। पकरत एक एक भरि भाजे ॥ १० ॥ राधा मिलि इक मंत्र उपायो । हलधर अपनी भीर बुलायो॥ कानलागिश्यामहिंमुझायो। संकर्षण गहि श्यामहिं ल्यायो ॥ ११ ॥ हरिके हाथ गहे चंद्रावलि । कज्जल ले आई मझावलि॥ ललिता लोचन आजन लागी । चद्रावलि मुरली ले भागी ॥ १२ ॥ इकले लावति हृदय कपोलनि । इक ले पोछति ललित पटोलनि ॥ इक अवलम्बन इक अवलोकति । चुंबन दान देति इक दंपति ॥ १३ ॥ मगन भई अपु वपु न सभारति । लालनभुजअपनेउरधारति॥ गुरुजनसंत सबै मिलि देखें । तिनहुको तरुणी तृण वर लेखें ॥ १४ ॥ एक कहे पिय को मुख माँडो। एक कहै फगुवा ले छाडो ॥ वाम लियो पट पीत छुडाई । राधा गखति कृष्ण बडाई ॥ ॥ १५ ॥ सिमदे सखा छोडावन आए। उन लियो ठेल न मोहन पाए॥ बासन मार मची कल आडे । ग्वाल टिके पग एक न छोंडे ॥ १६ ॥ बल कियो बीच ग्वाल समुझाए । मोहन मेवा मोल मगाए ॥ फगुवा ले लालन छिटकाए । ईसत गोपाल ग्वालतहँ आए॥ १७॥ तब मोहन हलधर पकराए । करहु तरुनि अपने मनभाए ॥ नाक नयन मुख कज्जल लायो । केसरि कलश हलधर शिरनायो ॥ ॥ १८ ॥ बहुत भरे बलराम सबन गहि । धौलागिरि मनो धातु चली बहि ॥ न्हान चले यमुनाके कूल । गोपी गोप भए अनुकूल ॥ १९ ॥ जो रस बाढ्यो खेलत होरी। शारद का वर्णे मति भोरी॥ सूरदास सो केसेगावै॥ लीलासिंधु पार नहिं पावै॥ २० ॥ ४३ ॥ राग गौरी॥ गारी होरी देत दिवावत । व्रजमें फिरत गोपिकन गावत॥ दूध दहीकेमाते डोलें। काहेनहोहो हो हो बोलें ॥ बगलनमें दावे पिचकारी । बावत फेंटे पाग सँवारी । रुकि गए नाटनि नारें पेंड । नवकेसरिके माट उलेडे । छननते छूटति पिचकारी । रंगि गई वालरि महल अटारी॥ नानारंग गएरंगि बागे । बलदाऊ इत उत है भागे ॥ न्हान चले यमुनाके तीर । मनमोहन हलधर दोउबीर॥ सूरदासप्रभु सबसुखदायक ॥ दुर्लभ रूप देखिबे लायक॥ ४४ ॥ रागिनी भैरवी॥ ऋतु बसतके आगमहि मिलि झूमकहो॥ सुरसदन मदन कोजोरमिलि झूमकहो॥ १ ॥ कोकिल वचन सोहावनो मिलि झूमकहो। हित गावत चातक मोरमिलि झूमकहो॥ वृन्दावन तरुमाल मिलि झूमकहो। सब फूलिरही वनराय मिलिझूमकहो॥ २ ॥ जहांनेवारी सेवती मिलि झूमकहो । बहु पांडरनिपुल गभीर मिलि झूमकहो ॥ खुझो मरुवो मोगरो मिलि झूमकहो । कुल केतकि करनि करील मिलि झूमकहो ॥ ३ ॥ वेलि चमेली माधवी मिलि झूमकहो । मृदुमञ्जुलबकुलनमालमिलिझूमकहो ॥ नववल्ली रस विलसही मिलिझूमकहो । मनो मुदित मधुपकी माल मिलिझूमकहो॥ ४ ॥ ताल पखावज बाजही मिलि झूमकहो । चिच डफ मुरलीकी घोरमिलिझूमकहो॥ चलहुतहांअलि जाइए मिलि झूमकहो । जहाँ खेलत नदकिशोर मिलिझूमकहो ॥ ५ ॥ यूथनियूथनिसुंदरीमिलि झूमकहो ॥ जिनि जोवत लजत अनग मिलि झूमकहो ॥ चोवा चदन अरगजा मिलिझूमकहो। मथिले निकसी एक संग मिलि झूमकहो ॥ ६ ॥ प्रति अग भूषण साजिकै मिलि झूमकहो। लिये कनक कलश भरि रंग मिलि झूमकहो ॥ जाइ परस्पर छिरकहीं मिलि झूम-

कहो ॥७॥ इतते गई ब्रजसुंदरी मिलि झूमकहो । उतते मोहन नवलन अहीर मिलि झूमकहो॥ बाँस धरे जेरी धरी मिलि झूमकहो । बिच मार मची भई भीर मिलि झूमकहो ॥ ८ ॥ एक सखि निकसी झुंडते मिलि झूमकहो । तिनि पकरि लई हरिहाथ मिलि झूमकहो ॥ बहुरि उठीं दशबीस मिलि झूमकहो । धरिलिये आय ब्रजनाथ मिलि झूमकहो ॥ ९ ॥ इक पट पीतांबर गह्यो मिलि झूमकहो।इक मुरली लई छिडाय मिलि झूमकहो ॥ एक मुख माँडहिं कुमकुमा मिलि झूमकहो । एकगारी दै उठीं गाइ मिलि झूमकहो ॥१०॥ प्यारी कर काजर लियो मिलि झूमकहो। हँसि आँजति पियकी आंखि मिलि झूमकहो॥ यहि विधि हरिको घेरि रहीं मिलि झूमकहो । ज्यों घेरिरहीं मधुमाखि मिलि झूमकहो ॥११॥ अब तो घात भली बनी मिलि झूमकहो । तब चीर हरे जलभीतर मिलि झूमकहो । सो परी हँसा हम सारिहैं मिलि झूमकहो । सुनि लेहु ललन बलवीर मिलिझूमकहो ॥ १२ ॥अब हम तुमहिं न गाइहैं मिलि झूमकहो । मुसकात कहा यदुराय मिलि झूमकहो ॥ की हमसों हाहा करौ मिलि झूमकहो । की परहु कुँवरिके पाँइ मिलि झूमकहो ॥ १३ ॥ बंकविलोकनि मन हरो मिलि झूमकहो । ठगि तुमहिं रही ब्रजबाल मिलि झूमकहो ॥ फगुवा बहुत मँगाय दियो मिलि झूमकहो। मधुमेवा मधुररसालमिलिझूमकहो॥ १४ ॥कहि मोहनब्रजसुंदरी मिलिझूमकहो। तब धाय धरे बल घेरि मिलि झूमकहो ॥ शंक सकुच सब छाँडिके मिलि झूमकहो।चहुँपास रहीं मुख हेरि मिलि झूमकहो ॥ १५॥ कनक कलश भरि कुमकुमा मिलि झूमकहो । धरि ढारिदिये शिर आनि मिलि झूमकहो॥चंदन वंदन अरगजा मिलि झूमकहो। सब छिरकति करति न कानि मिलि झूमकहो॥१६ ॥खेलि फागु अनुराग बढचो मिलि झूमकहो । फिर चले यमुनजलन्हान मिलि झूमकहो ॥ द्वितिया बैठि सिंहासने मिलि झूमकहो। दोउ देत रत्न मणिदान मिलि झूमकहो ॥ १७ ॥ यहि बिधि हरिसँग खेलहीं मिलि झूमकहो । गण गोकुलनारि अनंत मिलि झूमकहो ॥सूर सबनको सुख दियो मिलि झूमकहो। रमि रसिक राधिका कंत मिलि झूमकहो ॥ १८ ॥ ४५॥रागिनी काफी मनमोहनललनामनहरचो॥ गृहगृहते सुंदरि चलींदेखन ब्रजराजकुमार। देखिवदन विथकित भई बैठीहैं सिंहदुआर ॥ डिमिडिमि पटहढोल डफ बीणा मृदंग उपंग चंगतार । गावत प्रीति सहित श्रीदामा बाढचो है रंग अपार ॥ १ ॥ इत राधिका सहित चंद्रावलि ललिता घोष अपार। उत मोहन हलधर दोउ भैया खेल मच्यो दरबार। रत्नजटित पिचकारी करलिये छिरकति घोपकुमारि । मदनमोहन पिय रसमातेहैं कछुअन अंग सँभारि ॥२॥ मोहनप्यारी सैनदे हलधर पकराए जाय।आपुन हँसत पीतपट मुखदे आएहो आँखि अँजाय॥बहुरि सिमिटि ब्रजसुंदरी मनमोहन पकरेजाय।अधरपान रस करतिपियारी मुरली लई छिडाय॥३॥परिवा सिमिटि सकल ब्रजवासी चले यमुनजल न्हान।वारि कुँवारिपर पट नँदरानी देति विप्रन बहुदान॥ द्वितियपाट सिंहासनबैठे चमरछत्र शिरढार।सूरज प्रभुपर सकलदेवता बरपत सुमन अपार॥४॥४६॥ राग श्रीरठी॥श्यामसंग खेलन चली श्यामा सब सखियनको जोरि। चंदन अगर कुमकुमा केसरि बहुकंचनघट घोरि ॥ खेलत मोहन रंग भरे हो लाल प्यारो सुंदर सब सुखराशि ॥१॥ फूलनके गेंदुक नवला सजि कनक लकुटिया हाथ ।जाय गही ब्रजखोरि राधिका कोटिक युवती साथ ॥ उतते हरि आए जब खेलत हो हो होरी सँग । कानपरी सुनिए नाहीं बहुबाजत ताल मृदंग॥२॥ पहिले सुधि पाई नहीं तब घिरे सांकरी खोरि। अब हलधर उलटहु काहे तुम धावहु ग्वालन

जोरि ॥धरत भगत भाजत राजत गेंदुक नवला सन मागे। रमन वमन छूटत न सँभारे टूटतहै उरहार ॥ ३ ॥ जब मोहन न्यारे करि पाए पकरे चहुँदिश घेरि ॥बोलहु ज आ आनिऊँ वल मैयाको टेरि ॥ आजु हमारे वश परेहौ जेहो कहाँ छिडाइ । की वल छूटहु आपने की यशुमति माय बोलाइ॥४॥एक गहेकर एक फेंट गहि पीतांबर लियो छिडाय। राधा हँसति दूरि भइ ठाढी मखियन देति सिखाय ॥ एक श्रवणमें कहि कछु भाजति एकभरति अँकवारि।एक निहारति रूप माधुरी एक अपुनपौ वारि ॥ ५ ॥ एक चिवुक गहि वदन उठावति हमतन लाल निहारि । एक नैनकी सैन मिलावति एक उठति दै गारि॥ आईझूमि सकलव्रजवनिता हरिदेखी चहुँ ओर। राधा दृष्टि परे विनु मोहन तलफत नैन चकोर॥ ६ ॥ हरि तव अपने करवरसों घूँघट पट कीनो दूरि ।हँसत प्रकाश भयो चहुँ दिशिते सुधा किरनि भरि पूरि॥ आँखि दिगाय- तहाँ जु कहा तुम करिहो कहा रिसाय।हम अपनो भायो करि लैहें छुवहु कुँवरिके पाय ॥ ७॥ तब तुम अवर हरे हमारे कीन्हें कौनउपाय।अब तौ दाउँ परयो धरि पाए छाडहिं तुमहिं नगाय॥ मुखकी कहति सबै झूठी मनहीं मन वहुत सनेहकृटि करैगे वलभैया।अब हमहि छाँडि किनि देहु ॥ ८ ॥ तुमजो फगुवा देहो कहा चलि बोलहु साँचे बोलकी। हमसो हाहा करिए की देहु श्रीदामा ओल ॥ हँसि हँसि कहत सहत सवहीकी आभूषण अब लेहु । नासाको मुक्ता अरु मुरली पीतांबर मेंगे देहु ॥ ९ ॥एक वनाइ देति बीरी करवल्लभ जुवति कपोल । धन्यधन्य वडभाग सवहिके वश कीने विनुमोल॥ उडत गुलाल अवीर कुमकुमा छवि छाई जनु सांझ- नाही दृष्टि परत राधामुख,चन्द्र नीलांवर माझ॥१०॥ खेलि फाग अनुराग बढ्यो घर मची अर- गजा कीच।व्रजवनिता कुमुदिनी कुसुमगण हरि शशि गगन वीच ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि व्रज वीथिन डोलति घरघर द्वार। सदा वसंत वसत वृंदावन लता लटकि द्रुम डार॥ ११ ॥ देखि देखि शोभा सुरसपति यह जिय करति विचारि । व्रजवनिता हम किन न भई यो कहति सकल सुरनारि ॥ फागु खेलि अनुराग बढायो सबके मन आनंद। चले यमुन अस्नान करनको सखा सखी नँदनंद ॥ १२॥ दुष्टनदुरसतन सुखकारणव्रजलीला अवतार।जयजय ध्वनि समन- न सुर वर्षत निरखत श्यामविहार ॥ युगलकिशोर चरण रज माँगौं गाऊ सरल धमार । श्रीराधा गिरिवरधर ऊपर सूरदास वलिहार॥१३ ॥४७ ॥ राग नरनारायण॥खेलत फागु कहत हो होरी । उत नागरीसमाज विराजति इत मोहन हलधरकी जोरी॥१॥बाजत तालमृदंग झाँझ डफ रुंज मुरुज वासुरी ध्वनि थोरी । श्रवणसुनाइगारिदै गावति ऊची तान लेति प्रिय गोरी ॥कोटि मदन दुरि गयो देखि छवि तेउ मोहे जिनहूँ मति भोरी । मोहन नँदनंदन रस विथकित कोहू दृष्टि जात नहिं मोरी ॥ २ ॥ कुमकुम रंग भरी पिचकारी उत्तम छिरकति नवल किशोरी।यहि विधि उमगि चल्यो रँग जहँतहँ मनु अनुरागसरोवर फोरी ॥ कतहुक मिलि द्वग बीसक धावति लेति छिडाइ मुरलि झकझोरी।जाइ श्रीदामा लै आवततवदेमानिनि बहुभाँति पटोरी॥३॥भरि करआन अवी- र उडावत गोविंदनिकट जाय दुरि चोरी। मनहु प्रचंड पवनवश पंकज,गगन धारि शोभित चहुँ ओरी ॥ कनककलश कुमकुम भरि लीन्हो कस्तूरी मिलिकै घसि घोरी। खेल परस्पर कीच मची घर अधिक सुरंग भई व्रजखोरी ॥ ४ ॥ ग्वालवाल सब संग मुदित मन जाय यमुनजल न्हाइ हिलोरी । नए वसन आभूषण पहिरत औरन देत पीतांबर छोरी॥ द्वीज समाज समेत करत द्विज तिलक दूव दधि रोचन रोरी। सूरश्याम विप्रन बंदीजन देत रतन कचनकी बोरी ॥५॥४८॥

राग सारंग ॥ बनी रूप रंग रस राधिका ताते अधिक बने ब्रजनाथ हो। ललिता अरु चंद्रावली मिलि बन्यो छबीलो साथ हो॥ताल पखावज बाजहीं सँग डफ मुरलीकी घोर हो।नंदद्वार औसर रच्यो दोउ राजत नवल किशोर हो॥एककोंध ब्रजसुंदरी एककोंध ग्वाल गोविंद हो। सरस परस्पर गावही दैगारिनारिबहुवृंदहो॥आवहु री हमदुरिरहैबलभद्रकृष्णगहिदेहिंहो।लोचन उनके ऑजही अधरनको रस लेहिंहो॥ शीलानाम ग्वालिनी तेहि गहे कृष्ण धपि धाइहो ।उपरैना मुरली लई मुख निरखि हरपि मुसकाइहो ॥ गहे कृष्ण अचानक राधिका रही कंठ भुज लाइहो। मनके सब सुख भोगए जब पगसे यादवरायहो॥ दई कोटि कलश भरि वारुनी बहुत मिठाई पानहो। राधा माधव रस रह्यो सब चले यमुनजल न्हानहो ॥ द्वितिया सकल समाज सो पट बैठे आनँदकंद हो।दान देति ब्रजसुंदरी नगभूपण नवनिधिनंदहो॥बनवीथिनिभरी पुर गलीउमँग्योरंगअपारहो । सूर सुनभ सुर थकिरहे निरखत प्राणअधारहो॥४९॥राग सारंग ॥करत यदुनाथ जलधिजलकेलि। अवलन कर लिए अंबुज अमृत किए दिये नव नव सुख खेलि । जो राजत तिहिंकाल लाल ललना रसाल रसरंग मानहु न्हात मदन वधु सजनी गज गजिनी गज संग ॥ स्रवत सलिल शिव विदित अलकमिव राहु वदन विधुमत। मनहु पान करि भोजन सो अलि जु पिकबलरस बमत॥ध्वनिनकरतसिंधुउतरन धरत तरंग रह्योठहिराइ। पूजे कृष्णउजागर सागर वैरागर पहिराइ॥ भवन गवन यों नंदसुवन तब निकसि चढे रथ कूल। निरखत वरपत कुसुम त्रिदशजन सूर सुमति मनफूल ॥ ५० ॥ राग राड़ी बैवती ॥ यदुपति जलकीडतयुवतिन संग।सागरसकुचततजीत-रंग ॥ पोडशसहसदश अष्ट नारि।तिनमें अति शोभित श्रीमुरारि॥उडुगण समेत शशि सिंधुवारि। मनु पुनि आयो चितहित विचारि॥ मृगमद मलयज केसरि कपूर । कुमकुमा कलिन छत अगर चूर॥ जल ताकि परस्पर छपत दूर। मनु धनुप निपुण संग्राम शूर ॥ चलत चारु कल वलय चीर। अरु जलदवृंद छतभित समीर ॥ वदन निकट कच चुवत नीर । मनु मधुप निकर प्यावत न धीर ॥जह नारदादि मुनि करत गान । जश प्ररित हरियश सुर वितान ॥ सुर सुमन सुघन वर्षत विमान । जै सूरप्रभू सब सुखनिधान॥५१॥रागसारंग॥रवितनयाको सलिल गंभीर आवहुरे मिलि न्हाइये । यहँ अति श्रम गँवाइदेहु को पुनि अपने घर जाइये ॥ भीजे गात जातही नवतन जो जसुदापे जाइये । लै सबहीको स्वाद मनोहर मीठो हो सो खाइये ॥ ए भूपन ए वसन मनोहर सादर सुरहिं दिखाइये । हरि जानत हौ ब्रज वेगि विदा ह्वै विमुख जाइ चिताइये ॥ ॥ ५२ ॥ राग कल्याण ॥ यमुना तें हौं बहुत रिझायो । अपनी सौंह दिए नंददोहाई ऐसो सुख मैं कबहुँ न पायो ॥ मिले मातु पितु बंधु सजन सब सखन संग बन विहरन आयो । अज अनंत भगवंत धरणिधर सुबस कियो प्रिय गान सुनायो ॥ हौं भयो प्रसन्न प्रेमहित तेरे कलिमल हरे जु यह जल न्हायो।अबजियसकुच कछू मति राखहुमांगि सूर अपनेमन भायो॥५३॥राग बिलावल॥ श्यामा श्याम खेलन दोउ होरी । फागु मच्यो अति ब्रजकी खोरी ॥ १ ॥ इतहि बनी वृपभानु किशोरी । सँग ललिता चंद्रावलि जोरी ॥ ब्रजयुवती सँग राजति भोरी ॥ बनि शृंगार श्रीराधा गोरी ॥ २ ॥ उतहि श्याम हलधर दोउ जोरी ॥ वारौं कोटिकाम छवि थोरी ॥ ग्वाल अबीरनकी लिए झोरी । सुरंग गुलाल अरगजा रोरी ॥ ३ गावति मँधै मधुर सुर गोरी । तानलेति दैदै

१ माढाकरणकुंडले कनककेराभूषिता माधव सम्यग्दाड़िमबीजदंतरचिभि कुरवईमाना भूषम् ॥ ईपद्धास्यमुखी मनोह- मुखका रत्नांबर बिभ्रती वासन्ती परशोभ्णोवनखब्ढोद्यानगा सतते ॥ राड़ी वासन्ती ।

२ नेत्रे कज्जलरजितअतिरुचिते नासाप्रमुनाश्च भए भाति सुकुकुमस्य तिलक गौराग चित्राम्बरम् ॥ वेणीयपकतवी कुङ्कुमं सार्द्र करे वीटिका नानाशीरभगधिताप्यितमधुव्यायसी योषिता॥ राग बिलावल।

झकझोरी ॥ राधा सहित चंद्रावलि दौरी। आंचक लीनी पीन पिछौरी ॥ ४ ॥ देखतही लगई अजोरी। डारिगई शिरश्यामठगोरी॥ग्वाल देत होरीकीगारी। फिर कियोहमसों तुम भारी ॥५॥ हँसति परस्पर यौवनथोरी। लै आई हरि पीन पिछोरी ॥ बातकरति मन मुरलीको री। अधरन ते नहिं टारत जोरी ॥ ६ ॥ भली करी सब हम तुमसो री। मानवान अब होहुकह्यो री॥ श्याम चितै राधामुख ओरी। नैन चकोर चंद्र दरश्यो री ॥ ६ ॥ पियको प्रिय मोहनी लगाय। इहि अंतर गोपी हँसि धाय ॥ गह्यो हरषि भुज ललिता धाय। गई श्यामकी सब चतुराय ॥ ८ ॥ मनमाने सब करति बडाय। राधा मोहन गाँठि जुराय॥ कग्त मवै रुचिकी पहुनाय। नंदमहरको गारी गाय ॥ ९ ॥ फगुवा हमको देहु दिवाय।पचरँग सारी बहुतमँगाय ॥ लीन्ही जो जाके मन आय। तुरत सबै युवती पहिराय॥ १० ॥ खेलत फागु रह्योरसभारी। वृद्ध किशोरि बाल अरु नारी ॥ अतिश्रमजानिगएजलतीरा।ग्वाल ग्वालिहलधरहरिवीरा॥११॥ परम पुनीत यमुनजलराशी। क्रीडत जहांब्रह्म अविनाशी ॥ धन्यधन्य सब ब्रजके वासी । विहरतहैं हरिसँग करि हाँसी ॥ १२ ॥जलक्रीडातरुणिन मिलि कीनो।ब्रज नर नारिनकोसुखदीनो॥ करि अस्नान चले ब्रजधाम। करे सबनके पूरण काम ॥ १३ ॥ जो सुख नंद यशोदा पायो। सो सुख नाही प्रगट बतायो ॥ सुरवनिता यह साथ विचारैं। कैसे हरिसँग हमहु विहारैं ॥ १४ ॥ धन्य धन्य ए ब्रजकी बाला। धन्य धन्य गोकुलके ग्वाला ॥ सूर श्याम जनके सुखदायक। भुव प्रगटे हरि हलधर नायक॥ १५ ॥ ५४ ॥ राग गौरी ॥ कछु दिन ब्रज औररहोहरिहोरीहै। अब जिनि मथुरा जाहु अहो हरि होरीहै॥१॥ सब सुखको फल फागु अहो हरि होरी है॥प्रगट करो यह जानिके हरि होरी है। अंतरको अनुराग अहोहरिहोरी है ॥ २ ॥ गनहु द्वैजदिन शोधिके हरि होरी है। भूपति ह्वैहै काम अहो हरि होरी है॥ शशि रेखा शिर तिलक दै हरि होरी है॥ सबकोउ करै प्रणाम अहो हरि होरी है ॥ ३ ॥ कनक सिंहासन बैठिहै हरि होरी है ।युवतिनके उर आनि अहो हरि होरी है॥घूंघट आतपतानि अहो हरि होरी है ॥४॥तीज तिहू दिश प्रगट है हरि होरी है।अपनी आनन रेख अहो हरि होरी है॥सुनिपग मगडफ डिमिडिमी हरिहोरीहै ॥सोइकरिहै सब देशअहो हरि होरी है॥५॥चौथिचहूँदिश जानिहै हरि होरी है। यह अपनी इक रीतिअहो हरिहोरी है॥मैंजो कहोपिय निलज अहो हरिहोरीहै।छांडिसकुचकुलनीति अहो हरि होरी है ॥ ६॥ पांचै परिमिति परिहरै हरिहोरी है। चली सकलइक चाल अहो हरि होरी है॥नारिपुरुष सादर करैं हरि होरी है।वचन प्रीति प्रतिपालिअहोहरिहोरी है॥७॥छठि छ रागरसरागिनीहरिहोरीहै। ताल तान बंधान अहोहरि होरी है॥चटुलचारु रतिनाथके हरि होरीहैसीखत होइ औधान अहो हरि होरी है॥ ८ ॥सुनि बातैं सब सजग होइ हरि होरी है। सबन मतो मत एक अहो हरि होरी है ॥ नृपजो कहो सब कोउ करै हरि होरी है । को राखिहै विवेक अहो हरि होरी है। आठै सुनि सब साजि भए हरि होरी है। राजाकी रुचि जानि अहो हरिहोरी है॥ करहु क्रिया तैमी सेव हरि होरी है ।आयसु माथे मानि अहोहरि होरी है ॥ १० ॥नौमींनवसतसाजिकै हरि होरी है। उर सुगंध उपहार अहो हरि होरी है ॥ मनहु चली है नायके हरि होरी है। मनसिज भवन जोहार अहो हरि होरी है ॥ ११ ॥ दशै दशै दिशि शोधिके हरि होरी है।बोलेहो नारायण अहो हरि होरी है॥ काज करहुरुचिआपनीहरिहोरीहै।आवहुकाज सिराय अहो हरि होरी है ॥१२ ॥ सुनि आयसु एकादशी हरि होरीहै। बोले सब शिर नाइ

हरि होरी है ॥ गज जीतहु बल आपने हरि होरी है । ज्ञानविराग छँडायअहो हरिहोरीहै॥१३॥ देखि भले सुभट आपने हरि होरी है।दियो द्वादश द्योस विचारि अहो हरि होरी है ॥ करहु क्रिया तैसी सबै हरि होरी है । होइ निशंक नरनारि अहो हरि होरी है ॥१४॥ ढोलभेरिडफ बाँसुरी हरि होरी है ।बाजैं पटह निशान अहो हरि होरी है ॥ मिलहुलोकपति छाँडिकै हरि होरी है । नहि उबरिबो निदान अहो हरि होरी है ॥१५॥ रथ औचक बरात साजै हरि होरी है । खरन भए असवार अहो हरि होरिहै॥धूरि धातु घट रंग भरे हरि होरी है।धरे यन्त्रहथियार अहो हरि होरी है ॥१६॥ जहां तहां सैन्या चली हरि होरी है । मुक्त काछ शिर केश अहो हरि होरीहै॥आपो पर समुझै नहीं हरि होरी है । राजा रंक अवेश अहो होरी है ॥ १७ ॥ जे कबहूं देखे नहीं हरि होरी है । कबहूं सुनी न कान अहो हरि होरी है ॥ तिन कुलनारि निडर भई हरि होरी है । लागे लोग परान अहो हरि होरीहै ॥१८॥भस्मभरैं अंजन करै हरि होरीहै। छिरकैं चंदन वारि अहो हरि होरी है ॥ मर्यादा राखैं नहीं हरि होरी है । कटिपट लेहि उतारि अहो हरि होरीहै ॥ ॥१९॥जहां सुनहिं तप संयमी हरि होरी है । धर्म धीर आचार अहो हरि होरी है॥छेकहिं ताहि निशंक होइ हरि होरी है । पकरहिं तोरि किवाँर अहो हरि होरी है॥२०॥ शठपंडितवेश्या वधू हरि होरी है । सबै भये एकसारि अहो हरि होरी है ॥ तेरसि चौदसि दिवस द्वैक हरि होरीहै । जनु जीते जगझारि अहो हरि हो है॥ १२ ॥ पून्यो प्रगटी प्राणपती हरि होरी है । दुरेमिले पा-लागि अहोहरि होरी है॥जहां तहां होरी जरै हरि होरी है।मनहुँ मवासे आगि अहो हरिहोरी है ॥ २२ ॥ सब नाचहि गावहीं सबै हरि होरी है । सबै उडावहिं छार अहो हरि होरी है ॥ साधु असाधु न समुझहीं हरि होरी है । बोलहिं वचन विकार अहो हरि होरी है ॥२३॥ अति अनीति मिति देखिकै हरि होरी है । परिवा प्रगटी आनि अहो होरी है ॥ विमल वसन तनु साजहीं हरि होरी है । मर्यादाकी कानि अहो हरि होरी है ॥२४॥ आवतही आदर करै हरि होरी है। हँसि जोरहिं उठि हाथ अहो हरि होरी है॥बरन धर्म मिति राखही हरि होरी है।कृपा करौरतिनाथ ० हो हरि होरी है ॥ २५ ॥ सुनि विनती ऋतुराजकी हरि होरी है। प्रभु समुझे मनमाहँअहोहरि होरी है ॥जाय धर्म अपने रहो हरि होरी है। बसो हमारे बाँह अहो हरि होरी है ॥ २६ ॥ और कहां लौं बरनिए हरि होरी है । मनसिज के गुणग्राम अहो हरि होरी है ॥ सुनहु श्याम या मासमें हरि होरी है । कियो जु कारण काम अहो हरि होरीहै ॥ २७ ॥ सूर रसिकमणि राधिका हरि होरी है। कहि गिरिधर सो बात अहो हरि होरी है॥ श्याम कृपा करि ब्रज रहौ हरि होरी है। बरजति मधुबन जात अहो हरि होरी है ॥ २८ ॥ ५३ ॥

॥ राग जयजयवती ॥ माई फूले फूले हो फूलत श्रीराधे कृष्ण झूलत सरस रसही फूलडोल । फूले फूले फूल जोरत फूले निमिष नही मोरत संतन हितही फूलडोल ॥ १ ॥ फूल फटिक खँभ रचित कंचनही फूल खचित सरस रसही फूलडोल। पटुली नवरतन पचित हीरालाल मोती जटित संतन हितही फूल डोल॥ मरुवा मयारि सुठि ढरिरोल प्रवाल पिरोजा झूमका चहुँ ओलसरस रसही फूल डोल। डाँडी हेम हीने चारु गोल चुनी नहीं फूल लगे लोल संतन हितही फूलडोल ॥ २ ॥ फूले श्रीवृंदावन अनुकूल सघनलता सब फूले फूल सरस रसही फूल-डोल ॥ फूले श्रीयमुनाकूल विविध तरंगरंग फूले फूल संतन हितही फूलडोल ॥ ४ ॥ फूले हीन चंपक चारु चमेली फूले मलयज लवंगलता बेलि सरस रसही फूलडोल । फूलेवेल निवारी फूल

एलि फूले मरुवो मोगरो सेवती फूल वेलि सतन हितही फूलडोल ॥ ५ ॥ तहां हीन अब मौरेहैं फूले जहां निबुना सदाफल फूले सरस रसही फूलडोलातहो कमल केवरे फूले जहाँ घेत की कनेर फूले सतन हितही फूलडोल॥६॥फूली माधवी मालती बेलि फूलेहीमधुप करतहैं केलि सरस रसही फूलडोल । फूलेफलेहै आनंद वेलि फूले पिवत सुमन रस पेलि सतन हितही फूलडोल ॥ ७ ॥ फूलनके सँधिवार मानो मधुपछवि अपार सरस रसही फूलडोल । फूलनहीके हिएहै हार सुरसरी मानो धरेही धार सतन हितही फूलडोल ॥ ८ ॥ माथे मुकुट है रचित फूल फूलनकीहै वेनी शीशफूल सरस रसही फूलडोल।फूलनहीको है बेंदी भाल फूलनके सब नखशिख शृंगार सतन हितही फूलडोल ॥ ९ ॥ फूलेहै हो धेनु धाम सब ग्वालबाल फूले हैं हो नदजके लाल सरस रसही फूलडोल। फूली गोपी हीनतरुन वृद्ध बाल फूलीकरतिहै नाना विधि ख्याल सतन हितही फूलडोल ॥ १० ॥फूली रोहिणी यशोमति रानी फूलीहै देविहरिहीराजधानी सरस रसही फूलडोल ॥ फूले है नद संकर्षन सुख मानी फूले गोकुलही प्राणी सतन हितही फूलडोल ॥ ११ ॥ फूलेही बजावें डफ ताल मृदंगबजे महुवरि मुँहचंग सरस रसही फूलडोल ॥ फूले बजावें बाँसुरी सुर संग बजावें अमृतकुंडली उपंग सतन हितही फूलडोल ॥ १२ ॥ फूले बजावें किन्नरी यन तार गति सुर मंडल झनकार सरस रसही फूलडोल।फूले बजावत गिरि गिरी गार मदन भेरि घहराइ अपार सतन हितही फूलडोल ॥ १३ ॥ फूलेहिनबजावैरुंज मुरज फूले बजावें झांझि झालरी पुंज सरस रसही फूलडोल । फूलेसुर बजावें दुंदुभी घोरगुंजकूजत मोर मराल कोकिल कुंज सतन हितही फूलडोल ॥ १४॥ देखि डोल ब्रजजन सबफूले गोपी झुलावति गिरिधर भूले सरस रसही फूलडोल। फूलेहो मुदित मनोहर फूले रसिकनि रसिकशिरोमणि फूले सतन हितही फूल डोल। हरषि परस्पर गावे हो होरी बोलन मीठे बोल बोलनि सरस रसही फूलडोल।फूली प्रमुदित मनोहर भावें कमलनयनको लाड लडावें सतन हितही फूलडोल ॥ १६ ॥ फूली चोवा चदन वदन रोरी केसरिमृगमदमथिमथिघोरी सरस रसही फूलडोल। फूली छिरकनि नवलकिशोरी अबीर गुलाल भरे सब झोरी सतन हितही फूलडोल ॥ १७ ॥ फूली नाचति वृद्ध बाल यौवनभोरी फूले ग्वाल ग्वालिनि यूथ यूथनि जोरी सरस रसही फूलडोल।फूले करत कुलाहल तिहुँपुर खोरी फूलेहैं नरनारि किशोरी सतनहितही फूलडोल॥ १८॥ फूल फगुवा मँगायदियो रस राख्यो तट भूषण पहिराय रह्यो नहीं कास्यो सरसदिशही फूलडोल। फूल हरि हँसिहँसि अमृतभाष्यो फूलेहो जो जैसे तैसे सबको मन राख्यो सतन हितही फूलडोल ॥१९॥फूलेहिन नारद करतहो गान फूले हैं ऋषिमुनि गिर धरत ध्यान सरसरसही फूलडोल॥ फूलेहो बीणा बजावत हरियश बखान मारयो कस उग्रसेनको फिरे आन सतन हितही फूलडोल ॥ २० ॥ फूलेहिन कहत हरि मुनि कह्यो जाय तुरतही मोहिं तुम लेहु बोलाय सरस रसही फूलडोल। फूल्योहिन जघानो मैं असुर आय नदी यमुनामेंही देहु बहाय सतन हितही फूलडोल ॥ २१ ॥ फूलेहिन उग्रसेन शिर छत्र धराय फूले मथुरा नरनारि आनँद देहु बढाय सरस रसही फूलडोल। फूलेहिन पितु मातु मिल्यो स्यत बधाय दुसह दुख बिसराइ सुख देहु जाय सतन हितही फूलडोल ॥ २२ फूलेहिन मुनि सुनि ज्ञान हरषाय

सकल भूमि व्रजरत्नन छाय सरम रसही फूलडोल। फूले हैं त्रिदशपति सुर शची सहिताय नभ चढि विमान फूले सुमन वरषाय संतन हितही फूलडोल ॥ २३ ॥ फूलेहिन हरषत हो ऋषिराय फूले विदा भये मुनि वैकुंठ सिधाय सरस रसही फूलडोल। फूले हरषिहरषि हरिको यशगाय फूले पूँछत सुर मुनिकछु कह्यो न जाय संतनहितही फूलडोल ॥ २४॥ फूल्योहिन पढैं पढावैं सुनैं सुनावैं वसि वैकुण्ठ परमपद पावैं संतनहितही फूलडोल। सूरदास प्रभु कैसे करि गावै लीलासिंधुपारनहिंपावैं संतन हितही फूलडोल२५॥५४रागराज्ञी रामगिरी ॥हरि पिय तुमजिनिचलन कहो। यह जिनि मोहिं सुनावहु बलिजाउँ जिनिजिय गहनि गहो ॥ जब चलिहौ तबही कहियो अबहीं जिनिउरहिदहौ।औरहुजन्मप्राणमिलियतहैंपुनितुममिलतनहौ।जानिएईजियतानिमनिसुख अबकी बेर रहौ। यहसुनिसूरदासको लालचकबहूँ जिनिउमहौ॥५५॥राग कल्याण॥ श्रीगोकुलनाथ विराजत डोल। संग लिएवृषभानुनंदनी पहिरे नील निचोल॥ कंचनखचितलाल मणि मोतीहीरा जटित अमोल। झुलवहिं यूथ मिली व्रजसुंदरिहरपति करतिकलोल ॥ खेलति हँसतिपरस्परगावति होहोवोलतिमीठेबोल।सूरदास स्वामी पियप्यारीझूलतहैंझकझोल॥ ५६॥रागकल्याण॥श्रीझूलत नँदनंदन डोल। कनकखंभ जराय पटुली लगे रतन अमोल॥ सुभग सरल सुदेश डांडी रची विधना गोल। मनो सुरपति सुरसभाते पठैदियो हिंडोल॥जबहिंझंपतितबहिंकंपतिविहँसि लगति डगेल। त्रिदशपति सजि चढिबिमानन निरखि देंदें ओल॥ थके मुख कछु कहि न आवै सकलमख कृत झोल। सखी नवसत साजि लीन्हें कहत मधुरे बोल ॥ थक्यो रतिपति देखि यह छवि इन्द्र भयो भ्रमभोल।सूरयहसुख गोपगोपीपियत अमृत कलोल॥५७॥राग गौरी ॥डोलत देखि व्रजवासी फूलैं। गोपी झुलावैं गोविंद झूलैं॥नँदनंदनगोकुलमें सोहैं॥मुरलि मनोहरमन्मथ मोहैं॥ कमलनयनको लाड लडावैं। प्रमुदित मात मनोहर गावैं ॥रसिकशिरोमणि आनँदसागर। सूरदास मनमोहन नागर ॥ ५८ ॥ इति फागुक्रीडा समाप्ता। अध्याय। ३८॥अथ अक्रूरमस्तार कथावर्णन॥राग बिलावल ॥फागु रंग करि हरि रस राख्यो। रह्यो न मन युवतिनके काख्यो ॥ सखा संग सबको सुख दीनो। नर नारी मन हरि हारलीनो ॥ जो जेहिभाव ताहि हरि तैसे। हितको हित कंटकको तैसे॥ महरि नंद पितु मातु कहाए। तिनहीके हित तनु धरि आए ॥ युगयुग यह अवतार धरत हरि। हरता करता विश्व रहे भरि॥ धरणी पाप भार भई भारी। सुरन लिए सँग जाइ पुकारी॥ त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी। राखिलेहु मोहिं शरन उवारी ॥ राजस रीति सुरन कहि भाषी। भए चंद्र सूरज तहँ साखी ॥ क्षीरसिंधु अहि शयन मुरारी। प्रभु श्रवणन तहँ परी गुहारी ॥ तब जान्यो कमलाके कंता। दनुज भार पुहुमी मेंमंता ॥ सिंधुमध्य वाणी परकाशी। भुव अवतार कह्यो अविनाशी ॥ मथुरा जन्मि गोकुलहि आये। मातपिता सुत हेतु कहाए ॥ नारद कहि यह कथा सुनाई। व्रज लोगन सुख दियो कन्हाई ॥ नंद यशोदा बालक जान्यो। गोपी कामरूप करि मान्यो ॥ प्रथम पियत पय बकी विनाशी। तुरत सुनत नृप भयो उदासी ॥ यहि अंतर बहु दनुज सँहारे। यहि अंतर लीला बहु धारे॥ को माया कहि सके तुम्हारे। बाल तरुन सुख न्यारे न्यारे ॥ धन्य धन्य ए व्रजके वासी। वश कीन्हे जिनि ब्रह्म उदासी ॥ अकल कला निगमहुते न्यारे। तिन युवती वन वननि विहारे॥ आज्ञा इहै मोहिं प्रभु दीन्हों। यह अवतार जबहि भुवलीन्हो ॥ दैत्यदहन सुरके सुखकारी। अब मारो प्रभु कंस प्रचारी॥ यह सुनि हँसे सुरनके नाथा। जब नारद गाई यह गाथा॥ श्रीमुख कह्यो जाइ समुझावहु। नृप आयसु

१ धत्ते श्यामद्रक युग्मकयुगळ मुक्तावळीमशक शोणाभे वरकणानि करयोः पादद्वये नूपुरे। चन्द्रास्या मृगयिहृगा सरदणा भापां भृशं भाषती सेयं रामगिरी दिनांतसमये रामेण गीता पुरा॥ रामगिरी।

करि मोहिं बोलावहु ॥ अंजलि जोरि राज मुनि हरषे। कृपावचन तिनसों हरि बरषे॥तुरत चले नारद नृपवासा। इहैबुद्धि मन करत प्रकासा ॥ संकर्षण हृदये प्रगटाई। जो बाणी ऋषि गाइ सुनाई ॥ आदि पुरुष अज्ञात विचारी।शेषरूप हरिके सुखकारी ॥ हरिअंतर्यामी जगताता। अनुज हेतु जग मानत नाता॥ इहै वचन हलधर कहि भाष्यो।सुनिसुनि श्रवण हृदय हरि राख्यो॥तुम जन्मे भुवभार उतारन। तुम हो अखिल लोकके तारन॥ तुम संसार सारके सारा। जल थल जहाँ तहाँ विस्तारा ॥ तब हँसि कह्यो भ्रातसों बानी। जो तुम कहत बात में जानी ॥ कंसनिकंदन नाम कहाऊं।केश गहों पुहुमी विसटाऊं॥यहि अंतर मुनि गए नृपपासा॥मनमारे मुख करे उदासा। हरषि कंस मुनि निकट बोलाए। आदर करि आसन बैठाए॥कैसो मुख क्यों ऋषि मनमारे कह चिंता जिय बढ़ी तुम्हारे॥नारद कह्यो सुनो हो राऊ। कहा बैठ कछु करहु उपाऊ॥ त्रिभुवनमें तुम सरि को ऐसो। देख्यो नंद सुवन ब्रज जैसो॥करत कहा रजधानी ऐसी। यह तुमको उपजी कछु जैसी ॥ दिनदिन भयो प्रबल वह भारी। हम सब हितकी कहें तुम्हारी॥तब गर्वित नृप बोलो बानी।कहा बात नारद तुम गानी॥कोटिदनुज मोसरि मो पासा। जिनको देखि तरणितनु त्रासा॥ कोटिकोटि तिनके सँग योधा।को जीवे तिनके तनु क्रोधा॥ मल्लनके गुण कहा बखानों। जिनके देखत काल डरानों॥ कोटि धनुर्द्धर संतत द्वारे।बचै कौन तिनके जु हँकारे॥ एक कुवलिया त्रिभुवनगामी। ऐसे और कितिक हैं नामी॥ग्वालसुतनकी कहा चलावहु।यह वाणी कहिकहा सुनावहु॥ प्रजा लोग ब्रजके सब मेरे। सेवा करत सदा रहैं नेरे॥ताते सकुचतहौं उन काजा। बालक सुनत होइ जिय लाजा॥ भली करी यह बात सुनाई।सहज बुलाइलेउँ दोउ भाई॥और सुनहु नारद मुनि मोसों। श्रवणन लागि कहौं कछु गोसों॥कतिक बात बलराम कन्हाई। मोदेखत अति काल डेराई ॥ आजु कालि अब उनहि बोलाऊं। कहि पठऊं ब्रजसहित मँगाऊं॥ और प्रजा ब्रज आनि बसाऊं। अपने जियकी खुटक मिटाऊं॥ तिनपर क्रोध कहा में पाऊं। रंगभूमि गजचरण रूँदाऊं॥ मेरी समसरिको वह नाहीं। यह सुनिकै नारद मुसकाहीं ॥ सत्य वचन नृप कहत पुकारे। अब जानेउनि तो तुम मारे ॥ यह कहि मुनि बैकुंठ सिधारे। त्रिभुवनमें को बलहि तुम्हारे ॥ कंस परयो मन इहै विचारा। राम कृष्ण वध इहै सँवारा॥ दनुज हृदय हरि इहै उपायो। नारद कही सुनत जिय आयो॥ अब मारों नहिं गहरु लगाऊं। मथुरा जहां तहां बल छाऊं॥धकधकात [illegible] भु अविगत अविनाशी॥कंसकाल यह बुद्धि [illegible] । बसे नंदगृह गोकुल थानक दियो सुदिन नगए॥ तुमहूँको दुख बहुत जनमको रथ मारग आरोए। तादिनते शिशु सप्त देवकी तेरेही कर सोए॥जो परि राजकाज सुख चाहे वेगि बोलाइ न लीजे। हारि जीति दोउनकी विधि यह जैसे होइ सो कीजे ॥ ऐसी कहि बैकुंठ सिधारे कष्टनिशाविकराय। सूरश्याम कृत कीवे इच्छा मुनि मन इहै उपाय॥६०॥ राग सोरठ॥नृपति मन इहै विचार परो।क्यों मारों दोउ नंद ढोटा ना ऐसी अरनिअरो॥ कबहुंक कहत आपु उठि धावों यहै विचार करों। सात दिवसमें वधी पूतना यह गुनि मनहिं डरो ॥ पुनि साहस जियजिय करि गर्वो ताको काल सरो। सूर श्याम बलराम हृदयते नेक नहीं बिसरो॥ ६१॥ राग सारंग॥मधुराके निकट चरतिहैं गाई।दुष्टकंस भय करत मनहिमन ज्योंज्यों सुने कृष्ण प्रभुताई ॥ शीश धुनै नृप रिसन मनैमन बहुत उपाइ करै। घर बैठेहि दशन अधनर धरि चंपे श्वास भरै॥जानो असुर बाढिबो गोकुल ज्यों जन दीप पतंग परै।समुझि वचन कहे जे देवी अरु पहिले आकास परै॥नारदगिरा सम्हारी पुनिपुनि शिर धुनि आपु सरै। कालरूप देवकी नंदन

प्रगट भयो वसुधाके माहीं।कासों कहौ सूर अंतरकी सुफलकसुतको वचन कही॥६२॥राग सोरठ॥ महर ढोटौना शालिरहे।जन्महिते अपडाव करतहैं गुणि गुणि हृदय कहे ॥ दनुजसुता पहिले संहारी पय पीवत दिन सात। गयो प्रतिज्ञा करि कागासुर आइ गिरयो मुख छात॥ तृणा शकट छिनमें संहारे केशी हतो प्रचारि।जे जे गए बहुरि नहिं देखे सबहिन डारे मारि॥ ज्यों त्यों करि इन दुहुँन सँहारौं वात नही कछु और। सूर नृपति अति सोच परो जिय यहै करत मन दौर॥६३॥ राग रामकली॥नंदसुत सहज बुलाइ पठाऊं।श्याम राम अतिसुंदर कहियत देखन काज मँगाऊं ॥ जैहै कौन प्रेम करि ल्यावै भेद न जानै कोइ। महर महारसों हित करि ल्यावै महाचतुर जो होइ॥ इहि अंतर अक्रूर बुलायो अति आतुर महाराज। सूर चलो मन सोच बढायो कौनहै ऐसो काज६४ राग धनाश्री ॥अति आतुर नृप मोहिंबोलायो।कौन काजऐमोअटक्योहै मनमनसोचबढायो॥आ-तुर जाइ पँवरि भयो ठाढो कहो पँवरिआ जाइ। सुनत बुलाइ महलई लीनो सुफलकसुत गयो धाइ॥ कछु डर कछु जिय धीरज धारे गयो नृपतिके पास। सूर सोच मुख देखि डेरा-नो ऊरध लेत उसाँस॥६५॥ राग मारू॥सोच मुख देखि अक्रूर भरमे।माथ कर नाय करजोरि दोऊ रहे बोलि लीन्हों निकट वचन नरमे॥ आपुही कंस तहँ दूसरो कोउ नहीं त्रास अक्रूर जिय कहा कैहे। नृपति जिय सोच जान्यो हृदय आपने कहत कछु नही धौं प्राण लैहे॥ निकट बैठारि सब बात तेई कही गए जे भापि नारद सवारें।सूर सुत नंदके हृदय शालत सदा मंत्र यह उनहिं अब बनै मारें॥६६॥सुनो अक्रूरयह बात सांचीकरौ आजुमोहिंभोरते चेतनाहीं। श्याम बलराम यह नाम सुनि ताम मोहिं काहि पठवहुँ जाइ तिनहि पाहीं॥ प्रीति करि नंदसों सहज बातैं कहे तुरत लै आइ दुहुँ नृपति बोले। देखिबेकी साध बहुत सुनि गुण विपुल अतिहि सुंदर सुने दोउ अमोले॥ कमल जबते उरग पीठि ल्याए सुने वहै बकशीश अब उनहिं देहैं। सूर प्रभु श्याम बलरामको डर नहीं वचनइनकेसुनत हरपपैहें॥६७॥राग सोरठ॥यहवाणीकहिकंस सुनाइ। तब अक्रूर हिए भयो धीरज डर डारयो बिसराइ॥ मनमन कहत कहा चित बैठी सुनि सुनि वैसी बानी। अपनो काल आपुही बोल्यो इनकी मीचु तुलानी॥ हरपि वचनअक्रूरकहे तब तुरत काज यह कीजे।सूर जाहि आयसुकरिपाऊंभोरपठैतेहिदीजै॥६८॥राग बिलावल॥तब अक्रूर कहत नृपआगे धन्यधन्य नारदमुनि ज्ञानी। बडे शत्रु ब्रजमें दोउ हमको सुनहु देव नीकी चित आनी॥ महाराज तुमसरि को ऐसोजातेजगतयहचलतकहानी।अबनहिंयचैंक्रोधनृपकीन्हो जैहैं छनकि तवा ज्यों पानी॥ यह सुनि हर्ष भयो गर्वानो जबहि कही अक्रूरसयानी।कालिबुलाइ सूर दोउ मारौ बारबार यह भाषत बानी॥ ६९॥ इहै मंत्र अक्रूरसों नृप रैनि बिचारी। प्रातनंदसुत मारिहों यह कह्यो प्रचारी॥ करि बिचार युग यामलों मंदिरहि पधारे।कह्यो जाहु अक्रूरसों भए आलस भारे॥ तुरत जाइ पलका परयो पलकनि झपकानो। श्याम राम स्वपने खडे तहां देखि डरानो॥ अति कठोर दोउ कालसे भरम्यो अतिझझक्यो। जागिपरयो तहँ कोउ नहीं जियही जिय सुसक्यो॥ चौंकिपरयो सँग नारिके रानी सब जागीं। उठीं सबै अकुलायके तब बूझन लागी॥ महाराज झझके कहा सपने कह शंके। सूर अतिहि व्याकुल भए घरघर उरदंके॥७०॥ कंसस्वप्नभ्रमः॥ महाराज क्यों आजुही स्वप्नझझकाने। पौढे जबहीं आनिके देखे बिलखाने ॥ कहा सोच ऐसो परयो ऐसे भ्रमीको।काकी सुधि मनमें रही कहिये अपजीको॥रानीसबव्याकुल भई कछु भेद न पावै। तब आपुन सहजहि कह्यो यह नहीं जनावै॥ सावधान करिपौरिआप्रति-

हाग जगायो।सूर श्याम बल श्यामके नहिं पलक लगायो॥७१॥नंदस्वप्नभ्रम॥राग बिलावल॥उतनंदहि स्वप्नो भयो हरि कहूं हिराने । बल मोहन कोउ लै गयो सुनिकै बिलखाने ॥ ग्वाल बाल रोवत कहैं हरि तौ कहुँ नाहीं। संगहिसंग खेलत रहे यह कहि पछिताहीं॥दूत एक संग लै गयोबलराम कन्हाई । कहा ठगोरीसी करी मोहनी लगाई॥ बाहीके दोउ हैगये हम देखत ठाढे । सूरज प्रभु वे निठुरह्वै अतिही गएगाढे॥७२॥राग सोरठ॥व्याकुल नंदसुनतहैं बानी।धरणी मुरछिपरेअति व्याकुलविवश यशोदा रानी॥ व्याकुल गोप ग्वालसब व्याकुलव्याकुलब्रजकी नारी।व्याकुल सखा श्याम बलके जे व्याकुल अति जियभारी॥धरणी परत उठत पुनि धावत इहि अंतर नंद जागे। धकधकात उर नयन स्रवत जलसुत अँग परसन लागे ॥ सुसुकत सुनि यशुमति अतुराई कहा मंहर भ्रम पायो।सूर नंद घरनीके आगे यह भ्रम नहीं सुनायो ॥७३॥कंसकथावर्णन ॥ राग कल्याण॥एक याम नृपको निशि युगवत भई भारी ।आपुनहूं जाग्यो संग जागीं सब नारी ॥कबहुँ उठत बैठत पुनि कबहुं सेज सोवै ।कबहुँअजिर ठाढेह्वैऐसे निशि खोवै॥बारबार जोतिकसोंबरी बूझिआवै। एकजाइ पहुँचे नहिं और इक पठावै॥जोतिक जिय त्रास परयो कहा प्रात करिहै। सूर क्रोध भऱ्यो नृपति काके शिर परिहै ॥७४॥ व्याकुल टेरै निकट बूझै घरी बाकी।एक एक छिन याम याम ऐसी गति ताकी ॥ को जैहै ब्रजको मन करै केहि पठाऊं। जासों कहि नंदसुवन आजही मँगाऊं॥ अब नहिं राखौं उठाइ बैरी नहिं नान्हो । मारौ गजपै रुदाइ मनहि यह अनुमान्हो ॥ पठऊं अक्रूरहिको ऐसो नहिं कोऊ।सूर जाइ गोकुलतेल्यावै ढिग दोऊ॥७५॥राग बिलावल॥अरुणोदयउठि प्रातही अक्रूर बोलाए । आप कह्यो प्रतिहारसों डकसनि शत धाये ॥ सोवत जाइ जगायके चलिए नृप पासा । उहै मंत्रमन जानिकै उठि चले उदास ॥ नृपति द्वारही पै खरो देखत शिर नायो । कहि खवासको सैनदै शिरपाव मगायो॥ अपने कर करिकै दियो सुफलकसुत लीन्हों। लै आवहु सुत नंदके यह आयसु दीन्हो॥ मुख अक्रूर हर्षित भयो हृदयै बिलखानो । असुरत्रास अति जिय परयो कह कहै सयानो ॥ तुरतहि रथ पलनाइकै अक्रूरहि दीन्हों । आयसु शिरपर मानिकै आतुर ह्वै लीन्हों ॥विलम करौ जिनि नेकहू अबहीं ब्रज जाहू।सूरकाज करिआवहूजिनि रैनि बसाहू ॥ ७६ ॥ राग बिलावल ॥कंस नृपति अक्रूर बोलायो। बैठि एकांत मंत्र दृढकीन्हों राम कृष्ण दोउ बधु मंगायो ॥ कहूं मल्ल कहुँ गज दे राखे कहूंधनुषकहूँबीर।नंदमहरकेबालकमेरे कर्षत रहत शरीर॥ उनहिं बुलाय बीचहीं मारौ नगर न आवन पावै । सूर सुनत अक्रूर कहत नृप मन मन मौज बढावैं ॥७७॥ राग कल्याण ॥ तुम बिन मेरे हितू न कोऊ। सुन अक्रूर तुरत नृप भाषत नंदमहरसुत ल्यावहु दोऊ॥ सुनि रुचि वचन रोम हरषित गात प्रेमपुलकि मुख कछू नबोल्यो ।यह आयसु पूरब सुकृतवश सो काहूपै जाहि न तोल्यो ॥ मौन देखि परिहँसि नृप भीनो मनहु सिंह गो आय तुलानो । बयक्रमबिनु द्वै सुत अहीरकेरे कातर कत मन शकानो ॥ आयसु पाइ सुष्ठ रथ कर गहि अनुपम तुरंग साजि धृत जोह्यो । सूर श्यामकी मिलनि सुरति करि मनु निरधन धन पाय बिमोह्यो ॥ ७८ ॥ अक्रूरवचन कंससों राग बिलावल ॥सुनहु देव इकबातजनाऊं।आयसुभयो तुरत लैआवहु ताते फिरिहि सुनाऊं ॥ बल मोहन वन जात प्रातही जो उनको नहिं पाऊं ।रैहौं आजु नंदगृह बसिकै कालि प्रात लैजाऊं ॥ यह कहि चल्यो नृपतिहू मान्यो सुफलकसुत रथ हांक्यो ।सूरदास प्रभुध्यान हृदय धरि गोकुल तनको ताक्यो ॥ ७९॥ अक्रूर गोकुलगमन राग टोडी॥ सुफलकसुत मन परयो विचार। कंस निवंश होय हत्यार ॥डगरमांझरथकीन्होठाढो।सोचपरयो

मनमन अति गाढो ॥ मन्त्रकियो निशि मेरे साथ। मोहिं लेन पठयो व्रजनाथ॥ गजमुष्टिक चाणूर निहारयो । व्याकुल नयन नीर दोउ ढारयो॥ अति बालक बलराम कन्हाई।कहा करौंनहिं कछू बसाई।कैसे आनिदेउँमें जाई।मोदेखत मारे दोउभाई॥ मारे मोहिं बदि लै बोलै।आगेको रथ नेक न डोलै॥सूरदास प्रभु अतर्यामी।सुफलकसुत मन पूरण कामी॥८०॥राग कल्याण॥सुफलकसुत हृदय ध्यान कीन्हो अविनाशी।हरन करन समरथ वे सब घटके वासी ॥ धन्यधन्य कसहि कहि मोहिं जिन पठायो। मेरो करि काज मीच आपुको बोलायो ॥ यह गुणि रथ हांकि दियो नगर परयो पाछे। कछु सकुचन कछु हरषत चल्यो स्वांग काछे॥बहुरि सोच परयो दरश दक्षिण मृगमाला । हरष्यो अक्रूर सूर मिलिहैं गोपाला॥८१॥अक्रूर शकुनपरीक्षा॥राग धेर्ठा॥दक्षिणदरश देखि मृगमाला । अति आनद भयो तेहि काला॥बहु दिनके मेटौं जजाला।यहि वन मिलिहैं मोहिं गोपाला॥श्याम जलद तनु अग रसाला।ता दरशनते होउँ निहाला॥बहुदिनके मेटौं जजाला।मुख शशि नैन चकोर विहाला॥तनु त्रिभगसुदरनँदलाला।विविध सुमन हृदये शुभमाला॥ सारसहुते नैन विशाला।निहचै भयो कसको काला ॥ सूरज प्रभु त्रिभुवनप्रतिपाला ॥ ८२ ॥राग आसावरी॥दहिने देख मृगन-की मालहि । मनौ इन शकुन अबहिं यहि वन इन भुजभरि भेंटोगो गोपालहि॥ निरखि तनुत्रि-भग पुलक सकलअग अकुर धरनि जिमिपाय पावस कालहि। परिहौं पॉयन जाय भेंटिहौंअक-मलाइ मूलते जमी ज्यो बेली चढति तमालहि॥परसिपरमानद सीचिकै कामनाकद करिहैप्रगट प्रीति प्रेम प्रवालहि॥वचनरचनहास सुमन सुख निवासकरहिफलिहैफलअमोघ रसालहि॥स्फुरित शुभ सुबाहु लोचन मन उछाहु फलिकै सुकृतफल फली तेहि कालहि॥निगम कहतनेति शिव न सकत चेति सूर हृदये लगाइ लैहो ता दयालहि ॥ ८३ ॥ राग कान्हरो ॥आजु वे चरण देखिहौं जाय । जे पदकमल प्रिया श्री उरसे नेक न सकै भुलाइ॥ जे पदकमल सकलमुनिदुर्लभ मैदेखौं सतिभाव। जे पदकमल पितामह ध्यावत गावत नारद जाव ॥ जेपदकमल सुरसरीपरसेतिहूँभुवन यश छाव। सूर श्याम पदकमल परसिहौं मन अति बढ्यो उराव॥ ८४ ॥ आज्जु जाइ देखिहौं वे चरण । शीतल सुभग सकलसुख दाता दुसहदवन दुखहरण ॥ अकुशकुलिश कमलध्वजचिह्नित अरुण कजके रग। गउ चारत वन जाइ पाइहौ गोपसखनके स ॥ जाको ध्यान धरत मुनि नारद शिव विरचि अरुईश। तेई चरण प्रगट करि परसौं इन कर अपने शीश॥ देखि स्वरूप रहि न सकिहौ रथते धैहौं धरधाइ॥सूरदासप्रभु,उभयभुजाधरि हँसिभेटिहैं उठाइ॥८५॥राग नट॥जाय शिर चरण धरिहौं जाइ। कृपा करि मोहिं टेकिलैहैं करन हृदय लगाइ ॥ अग पुलकित वचन गदगद मनहिंमन सुख पाइ। प्रेमघट उच्छलित ह्वैहै नैन अशु बहाइ ॥ कुशल बूझत कहि न सकिहौं बारबार सुनाइ । सूर प्रभुगुण ध्यानअटक्योगयो पथ भुलाइ॥८६॥राग बिलावल॥ मथुराते गोकुल नहिं पहुँचे सुफलकसुतको सांझ भई । हरि अनुराग देहसुधि बिसरी रथ वाहनकी सुरति गई ॥ करा जात किनमोहिं पठायो कोहौं मै यहि सोचपरयो। दशहू दिशा श्यामपरि-पूरण हृदय हरषआनद भरयो॥हरि अतर्यामी यह जानी भक्तवछल बानो जिनको । सूर मिलै जो भाव भक्तके गहर नही कीन्होतिनको॥८७॥रागकल्याण॥ वृदावनग्वालन सँगगैयनहरिचारैं। अपने जनहेत काज व्रजको पगधारैं ॥ यमुना करि पार गाय श्याम देत हेरी। हलधरसँगसखा लए सुरभी गण घेरी॥ धेनु दुहन सखन कह्यो आपु दुहन लागे । वृदावन गोकुल बिचयमुनाके आगे ॥ भक्तहेतु श्रीगोपाल यह सुख उपजायो । सूरजप्रभुको दरशन सुफलकसुतपायो ॥८८॥

॥राग कल्याण॥ सुफलकसुत हरिदरशन पायो। रहि न सक्यो रथपर सुखव्याकुल भयोउहैमनभायो॥ भूपर दौरि निकट हरि आयो चरणन चित्त ध्यायो। पुलक अंग लोचन जलधारा श्रीगृह शिर परसायो। कृपासिंधु करि कृपा मिले हँसि लियो भक्त उर लाइ। सूरदास यह सुख सो जानै कहौं कहा मैं गाइ॥ ८९॥ राग शुद्धमलार॥ हरषि अक्रूर हरि हृदय लायो। मिले तेहि भाव जो भाव चितवनि चित्त भक्तवत्सल नाम तो कहायो॥ कुशल बूझत प्रसन वचन अमृत रसन श्रवण सुनि पुलक अँग अंग कीन्हो। चितै आनन चारु बुद्धि उर विस्तार दनुज अघ दलौं यह ज्ञान दीन्हों॥ भेदही भेद सब दई बाणी कहि तुरत बोले हेतु उहै वाके। सूर सँग श्याम बलरामअक्रूर सह निपट अति प्रेमके पंथ थाके॥ ९०॥राग बिलावल॥ श्याम इहै कहिकै उठे नृप हमैं बोलाये। अतिहि कृपा हमपर करी जो कालि मँगाए॥ संगसखा यह सुनतही चकृत मन कीन्हों। कहा कहत हरि सुनतहीं लोचन भरिलीन्हो॥ श्यामसखन मुख हेरिकै तब करी सयानी। कालिचलौ नृप देखिए शंका जिय आनी॥ हर्षभए हरि यह कहै मनमन दुखभारी। सूर संगअक्रूरकेहरिब्रज पगधारी॥ ९१॥ राग रामकली॥ अति कोमल बलराम कन्हाई॥ ढुँढुनि गोद अक्रूर लिए हँसि सुमनहुते हरुवाई॥ ग्वालसंग रथ लीन्हें आए पहुँचेब्रजकी खोरी। देखत गोकुल लोगजहाँतहँ नंद उठे सुनि शोरी॥ निशिसपनेके तृपित भएअति सुन्यो कंसकोदूत। सूरनारिनरदेखनधाए घरघर शोर अकूत॥ ९२॥ राग शुद्धमलार॥ कंस नृप अक्रूर ब्रज पठाए। गएआगे लेन नंदउपनंद मिलि श्यामबलराम उन हृदय लाए॥ उतरिसादर मिल्यो देखि हरप्यो हियो सोच मन यह भयो कहाँ आयो। राजके काजको नाम अक्रूर यह किधौं कर लेनको नृप पठायो। कुशल तेहि बूझि लैगए ब्रज निजधाम श्याम बलराम मिलि गए वाको॥ चरण पखराइकै सुभग आसन दियो विविध भोजन तुरत दियो ताको॥ कियो अक्रूर भोजन दुहुन संग लैनर नारिब्रजलोगसबै देखैं। मनो आए सग देखि ऐसे रंग मनहिमन परस्पर करत मेंप॥ सारि जेवनार अचवन कै भए शुद्ध दियो तंमोर नँद हर्षि आगे। सेज बैठारि अक्रूरसो जोरि कर कृपा करिकै तब कहन लागे॥ श्याम बलरामको कस बोले हेतसो नंद लै सुतन हमपास आवैं। सूर प्रभुदरशकी साधअतिहीकरतआ-तुही कह्यो जिनि गहरु लावैं॥ ९३॥ राग कान्हरो॥ सुन्यो ब्रजलोग कहत यह बात। चकृत भए नारि नर ठाढे पांव न आवै मात॥ चकित नंद यशुमति भई चकृत मनहीमन अकुलात। दैदै सैन श्याम बलरामहि सबै बुलावत जात॥ परब्रह्म अविगत अविनाशी मायारहित अतीत। मनो नहीं पहिचानि कहूंकी करत सबै मन भीत। बोलतनहीं नेकचितवतनहिं सुफलकसुतसो पागे। सूर हमहिं नृप हितकरि बोले इहै कहत ता आगे॥ ९४॥ राग बिहागरो॥ व्याकुल भए ब्रजके लोग। श्याम मन नहिं नेक आनत ब्रह्म पूरण योग॥ कौन माता पिता को है कौन पति को नारि। हँसत दोउ अक्रूरके सँग नवल नेह बिसारि॥ कोउ कहतियह कहां आयो क्रूर याकोनाम। सूरप्रभु लै प्रात जैहै औरसँग बलराम॥ ९५॥ गोपिकाविरहअवस्था वर्णन॥ चलनचलनश्यामकहतकोउलेनआयो। नंदभवन भनक सुनी कंस कहि पठायो॥ ब्रजकि नारि गृह बिसारि व्याकुल उठिधाईं। समाचार बूझनको आतुर ह्वै आईं॥ प्रीति जानि हेतु मानि बिलखि वदन ढाढी। मानहु वै अतिविचित्र चित्रलिखित काढी॥ ऐसी गति ठौरठौर कहत नवनिआवै। सूरश्याम बिछुरे दुखविरह काहि भावै॥ ९६॥ राग कान्हरो॥ चलत जानि चितवत ब्रजयुवती मानहु लिखी चितेरे। जहां तहां यकटक मग जोवत फिरत न लोचन कोरे॥ बिसरिगई गति भाँति देहकी सुनत न श्रवणन टेरे॥

मिलि जु गये मनोपथ पानी ह्वै निवरत नहीं निवेरे ॥ लागे संग मतंग मत्त ज्यों विरत न कैसेहु घेरे। सूर प्रेम अंकुर आशा जिय दै नहिं इत उत हेरे ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ सब मुरझानी री चलिबेकी सुनत भनक। गोपी ग्वाल नैन जल ढारत गोकुल ह्वैरह्यो मूँदचनक ॥ यह अक्रूर कहांते आयो दाहन लाग्यो देह दनक। सूरदास स्वामीके, बिछुरत घट नहिं रैहैं प्राण तनक ॥ ९८ ॥ राग रामकली ॥ अनलते विरह अग्नि अति ताती। माधो चलन कहत मधुवनको सुने तपै अतिछाती ॥ न्याइहि नागरि नारि विरहवश जरत दिया ज्यों बाती। जे जरि मरे प्रगट पावक परि ते त्रिय अधिक सुहाती ॥ ढारति नीर नयन भरिभरि सब व्याकुलता मद माती। सूर व्यथा सोई पै जानै श्याम सुभग रँगराती ॥९९॥ राग आसावरी ॥ श्याम गए सखि प्राण रहैंगे। अरसपरस ज्यों बातैं कहियत तैसेहि बहुरि कहेंगे ॥ इंदुवदन खग नैन हमारे जानति और चहैंगे। वासरनिशिकहुँ होत न न्यारे बिछुरन हृदय सहैंगे। एक कही तुम आगे बाणी श्याम नजाहिं रहैंगे। सूरदास प्रभु यशुमतिको तजि मथुराकहा लहैंगे ॥२५००॥ राग मलार ॥ हरि मोसों गौनकी कथा कही। मन गह्वर मोहिं उतर न आयो हौं सुनि सोचिरही। सुनि सखि सत्यभावकी बातैं विरह बेलि उलही ॥ करवत चिह्न कहे हरि हमको ते अब होत सही। आजु सखी सपने में देख्यो सागर पालि ढही। सूरदास प्रभु तुम्हरो गवन सुनि जलज्यों जाति बही ॥ १ ॥ राग मारू ॥ बहुतदुख पैयतुहै यहि बात। तुम जुसुनतहौ माधो मधुवन सुफलकसुत सँग जात ॥ मनसिजव्यथा दहति दावानल उपजीहै या गात। सुधौं कहो तब कैसे जीहौं निज चलिहौं उठि प्रात ॥ जो पै यही कियो चाहतहै मीचु विरहशरघात। सूरश्याम तौतबकत राखो गिरिकर लै दिनसात ॥ २ ॥ अक्रूरवचन ॥ राग रामकली ॥ देख अक्रूर नरनारि बिलख्यो। धनुभंजन यज्ञहेत बोलेइनहिं और डरनहिंसवनकाहेसँतोख्यो ॥ महरिव्याकुलदौरि पाँइ गहि लैपरी नंद उपनंद सँग जाहु लैकै। राजको अंश लिखिलेउ दूनो देउँ मैं कहा करौ सुत दुहुँनि दैकै ॥ कहतिं ब्रजनारि नैनन नीर ढारिकै इननको काज मथुराकहा है। सूर नृप क्रूर अक्रूर क्रूरै भयो धनुप देखन कहत कपटि महाहै ॥ ३ ॥ यशोदाविनय अक्रूरप्रति राग सारंग ॥ मेरे कमलनयन प्राणते प्यारे। इनको कौन मधुपुरी बैठत राम कृष्ण दोऊजन वारे ॥ यशुदा कहै सुनहु सुफलकसुत मैं पयपान जतन करि पारे। ए कहा जानहिं सभा राजकी ए गुरुजन विप्रौ न जुहारे ॥ मथुरा असुरसमूह बसतहैं करकृपाण योधा हथियारे। सूरदासस्वामीएलरिका इन कब देखे मल्ल अखारे ॥ ४ ॥ ब्रजवासिनके सरबस श्याम रेअक्रूर बडवारे जीकोजीमोहन बलराम ॥ अपनो लाग लेहु लेखो करि जे कछु राजअंशके दाम। और महर लै संगसिधारैं नगर कहा लरिकिनको काम। संतत साधु परम उपकारी सुनियत बडो तुम्हारो नाम ॥ ५ ॥ यशोदा वचन सखीप्रति ॥ राग मलार ॥ सखी री हौं गोपालहि लागी। कैसे जियें वदनबिनदेखेअनुदिनखिन अनुरागी ॥ गोकुल कान्ह कमल दल लोचन हरि सबहिनके प्राण। कौन न्याव अक्रूर कहे मथुरा लै जान ॥ ६ ॥ तुम अक्रूर बडेके ढोटा अति कुलीन मतिधीर। बैठत सभा बडे राजनके जानतहौ परपीर ॥ लीजे लागु यहांते अपनो जो कछु राजको अंश। नगर बोलि ग्वालनके लरिका कहा करैगो कंस ॥ मेरे तौ रामै धन माई माधोई सब अंग। बहुरिसूरहौंकापै मांगौंपैठि पराए संग ॥ ७ ॥ राग रामकली मेरो माई निधनीकोधन माधो। वारंवारनिरखिसुखमानततजतनहीं पल आधो ॥ छिनछिन परसत अंग मिलावत प्रेम प्रगट ह्वै लाधो। निशि दिन चंद्र चकोरकी छवि जनु मिटै न दरशकी साधो ॥ करिहै कहा अक्रूर हमारो दैहै प्राण अगाधो। सूर श्याम

॥राग कल्याण॥सुफलकसुत हरिदरशन पायो। रहि न सक्यो रथपर सुखव्याकुल भयोउहँमनभायो॥ भूपर दौरि निकट हरि आयो चरणन चित्त ल्गायो। पुलक अंग लोचन जलधारा श्रीमुख शिर परसायो। कृपासिंधु करि कृपा मिलेहँसि लियो भक्त उर लाइ। सूरदास यह सुख सो जानै कहौं कहा मैं गाइ ॥ ८९ ॥ राग गुंडमलार ॥ हरपि अक्रूर हरि हृदय लायो। मिले तेहि भाव जो भाव चितवनि चित्त भक्तवत्सल नाम तौ कहायो॥ कुशल बूझत प्रसन वचन अमृत रसन श्रवण सुनि पुलक अँग अंग कीन्हों। चित आनन चारु बुद्धि उर विस्तार दनुज अघ दलौं यह ज्वाब दीन्हों॥ भेदही भेद सब दई बाणी कहि तुरत बोले हेतु इहै याके। सूर सँग श्याम बलरामअक्रूर सह निपट अति प्रेमके पंथ थाके॥ ९० ॥राग बिलावल ॥श्याम इहै कहिकै उठे नृप हमें बोलाये। अतिहि कृपा हमपर करी जो कालि मँगाए॥ संगसखा यह सुनतही चकृत मन कीन्हों। कहा कहत हरि सुनतहीं लोचन भरिलीन्हों॥श्यामसखन मुख हेरिकै तब करी सयानी। कालिचलौ नृप देखिए शंका जिय आनी॥ हर्षभए हरि यह कहे मनमन दुखभारी। सूर संगअक्रूरकेहरिव्रज पगधारी॥ ९१॥ राग रामकली ॥अति कोमल बलराम कन्हाई॥ दुहुँनि गोद अक्रूर लिए हँसि सुमनहुते हरुवाई॥ ग्वालसंग रथ लीन्हें आए पहुँचेव्रजकी खोरी। देखत गोकुल लोग जहाँतहँ नंद उठे सुनि शोरी॥ निशिसपनेके तृपित भएअति सुन्यो कंसकोदूत। भूरनारिनदेखनधाए घरघर शोर अकूत॥ ९२ ॥ राग गुंडमलार॥कंस नृप अक्रूर व्रज पठाए। गएआगे लेन नंदउपनंद मिलि श्यामबलराम उन हृदय लाए॥उतरिसादर मिल्यो देखि हरष्यो हियो सोचमन यह भयो कहाँ आयो। राजके काजको नाम अक्रूर यह किधौं कर लेनको नृप पठायो। कुशल तेहि बूझि लैगए व्रज निजधाम श्याम बलराम मिलि गए वाको॥ चरण पखराइकै सुभग आसन दियो विविध भोजन तुरत दियो ताको॥कियो अक्रूर भोजन दुहुँन संग लै नर नारिव्रजलोगसबै देखै। मनो आए संग देखि ऐसे रंग मनहिंमन परस्पर करत मेष॥ सारि जेवनार अचवन कै भए शुद्ध दियो तमोर नँद हर्षि आगे।सेज बैठारि अक्रूरसों जोरि कर कृपा करिकै तब कहन लागे॥ श्याम बलरामको कंस बोले हेतसों नंद लै सुतन हमपास आवै। सूर प्रभुदरशकी साधअतिहीकरतआ-तुरही कह्यो जिनि गहरु लावै॥९३॥ राग कान्हरो ॥सुन्यो व्रजलोग कहत यह बात। चकृत भए नारि नर ठाढे पांव न आवै सात॥ चकित नंद यशुमति भई चकृत मनहीमन अकुलात। देव सन श्याम बलरामहि सबै बुलावत जात॥ परब्रह्म अविगत अविनाशी अगम्यपूर्ति अतीत। मनो नहीं पहिचानि कहूंकी करत सबै मन प्रीति॥भरोसोकान्हकोहैमोहिं॥सुनयशोदाकंसभयते। सूर हमहिं नृप हितकरि नदेत्यहेनाकपटकरिआईस्तननि विषपोहिं॥वसीज्योंप्रबलदुदिनकेबाल-श्याम मन अटि तोहि॥ अघबकधेनुतृणावर्तकेशीकोबल देख्योजोहिं॥सातदिवसगोवर्धनराख्यो मुरे गयो इंद्रपुछोहि॥ सुनिसुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि। सूरदासप्रभुजी कहिए कछु सो आवै सब सोहि ९५॥ राग बिहागरो ॥ यशुमति अतिहीभईबेहाल।सुफलकसुतयह तुमहि बूझि ए हरतही मेरे बाल॥ ए दोउ भैया व्रजके जीवन कहति रोहिणी रोइ। धरणीगिरतिउठति अति व्याकुल कहि राखत नहिं कोइ॥ निठुर भए जबते यह आयो घरहू आवत नाहिं। सूरकहा नृपपास तुम्हारे हम तुमबिनु मरिजाहिं॥९६॥ राग सोरठ॥कन्हैया मेरीछोहबिसारी।क्यों बलराम कहत तू नाहीं मैं तुम्हरी महतारी॥ तब हलधर जननी परबोधत मिथ्या यह संसारी। ज्यों सावनकी बेलि प्रफुल्लित फूलतिहै दिनचारी॥हम बालक तुमको कहा सिखवैं कहूं तुमहिते जात।

मिलि जु गये मनोपय पानी है निवरत नहीं निवेरे ॥ लागे संग मतंग मत्त ज्यों विरत न कैसेहु वेरे। सूर प्रेम अंकुर आशा जिय दे नहिं इत उत हेरे ॥ ९७ ॥ राग सारंग ॥ सब मुरझानी री चलिवेकी सुनत भनक । गोपी ग्वाल नैन जल ढारत गोकुल ह्वैरह्यो मूँदचनक ॥ यह अक्रूर कहांते आयो दाहन लाग्यो देह दनक । सूरदास स्वामीके, बिछुरत घट नहिं रैहैं प्राण तनक ॥ ९८ ॥ राग रामकली ॥ अनलते विरह अग्नि अति ताती। माधो चलन कहत मधुवनको सुने तपै अतिछाती ॥ न्याइहि नागरि नारि विरहवश जरत दिया ज्यों वाती।जे जरि मरे प्रगट पावक परि ते त्रिय अधिक सुहाती ॥ ढारति नीर नयन भरिभरि सब व्याकुलता मद माती।सूर व्यथा सोई पै जानै श्याम सुभग रँगराती ॥९९॥ राग आसावरी ॥ श्याम गए सखि प्राण रहैंगे । अरसपरस ज्यों बातैं कहियत तैसेहि बहुरि कहैंगे ॥ इंदुवदन खग नैन हमारे जानति और चहैंगे।वासरनिशि कहुँ होत न न्यारे बिछुरन हृदय सहैंगे।एक कही तुम आगे वाणी श्याम नजाहिं रहैंगे।सूरदास प्रभु यशुमतिको तजि मथुराकहा लहैंगे ॥२५००॥ राग मलार ॥ हरि मोसों गौनकी कथा कही। मन गह्वर मोहिं उतर न आयो हौं सुनि सोचिरही॥सुनि सखि सत्यभावकी बातैं विरह वेलि उलही ॥ करवत चिह्न कहे हरि हमको ते अब होत सही॥आजु सखी सपने में देख्यो सागर पालि ढही।सूरदास प्रभु तुम्हरो गवन सुनि जलज्यों जाति बही॥१॥ राग मारू॥ बहुतदुख पैयतु है यहि नात ।तुम जुसुनतहौ माधो मधुवन सुफलकसुतसँगजात॥मनसिजव्यथा दहति दावानल उपजी है या गात ।सुधौं कहो तब कैसे जीहौं निज चलिहौ उठि प्रात॥जो पै यही कियो चाहतहै मीचु विरहशरघात।सूरश्याम तौतबकत राखी गिरिकर लै दिनसात॥२॥ अक्रूरवचन॥ राग रामकली ॥ देख अक्रूर नरनारि विलख्यो । धनुभंजन यज्ञहेत बोलेइनहिं औरडरनहिंसबनकाहेसँतोख्यो ॥महरिव्याकुलदौरि पाँइ गहि लैपरी नंद उपनंदसँग जाहुलैकै। राजको अंश लिखिलेउ दूनो देउँ मैं कहा करौं सुत दुहुँनि दैकै ॥ कहति व्रजनारि नैनन नीर ढारिकै इननको काज मथुराकहा है। सूर नृप क्रूर अक्रूर भूरे भयो धनुप देखन कहत कपटि महा है ॥ ३ ॥ यशोदाविनय अक्रूरप्रति राग सारंग ॥ मेरे कमलनयन प्राणते प्यारे । इनको कौन मधुपुरी बैठत राम कृष्ण दोऊजन बारे॥ यशुदा कहै सुनहु सुफलकसुत मैं पयपान जतन करि पारे। ए कहा जानहिं सभा राजकी ए गुरुजन विप्रो न जुहारे ॥ मथुरा असुरसमूह वसतहैं करकृपाण योधा हथियारे। सूरदासस्वामीएलरिका इन कब देखे मल्ल अखारे॥४॥ व्रजवासिनके सरवस श्यामरेअक्रूरक्रूर बडवारे जीकोजीमोहन मैं चहत कह्यो सखीएकआई । बलमोहनरथवै ठसुफलतअंशके दाम । और महर ले संगसिधारैंनगर लगाई ॥धुकिधुकि सब धरणि परींज्वालाझर लता गिरीं मनो [illegible] नाम ॥ ५ ॥ यशोदा धाई सब नंदद्वार बैठे रथ दोउकुमार यशुमतिलोटतिभुवपरनिठुररूपदरसी [illegible] अनुदिनखिन आपु ब्रह्म जगधात राख्यो नहिं कछू नात नेकुहु मनमाहीं । आतुर अक्रूर चढे रथ [illegible] रटे सूरज प्रभु कोमल तनु देखि चैननाहीं॥२५॥ गोपीवचन मोहनप्रति ॥ राग सारंग ॥ विनतीएकसुनौ श्रीश्याम । चलन न देत चलौ चाहत मन चलन कहो सो सुनिए श्याम । तुम सर्वज्ञ सकलघट व्यापक जीवन पद सबके विश्राम । संतत रहत कहत ढीठो दै करते सब सोवत सुखधाम ॥ बाहर सरल प्रीति गोपिनको लिए रहत लैले गुणग्राम । सूरदास प्रभु सकल सुखदाता तिनते न्यारे न ग्राम॥२६॥ राग सारंग॥ बिनुपरवहिउपराग आजु हरितुमहैचलनकह्यो।कोजानैउहिराहु रमापति कत है शोध लह्यो ॥ बैतकिचुनित नीच नैनन मिलिअंजनरूपरह्यो।विरहसंधिवलपाइ

घन हीं नहिं पटऊं अबहिं कंस किन बांधों॥८॥राग गौड़ ॥मनहु प्रीति अति भई प्रातरी।अनुज सहित चले राम हमारे कमलनैन देखी मिलिन जात री॥ अरस परस कछु समुझत नाहीं या ब्रज पोच भलेकी बात री। कंचन कांच कपूर कपट सरी हीरा सम कैसे पोति बिकात री॥ वे दोउ हंस मानसरवरके छीलरे क्षुद्र मलिन कैसे न्हात री। सूर श्याम मुक्ताफल भोगी को रति करत ज्वारिकन खात री॥९॥राग सोरठ॥नहिं कोई श्यामहि राखे जाइ।सुफलकसुत वैरी भयो मोको कहति यशोदा माइ॥ मदनगुपाल बिना घर आंगन गोकुल काहि सुहाइ। गोपी रही ठगीसी ठाढ़ी कहा ठगोरी लाइ॥सुंदर श्याम राम लोचन भरि बिनु देखे दोउ माइ।सूर तिनहिं लै चले मधुपुरी हिरदय शूलबढ़ाइ॥१०॥राग सोरठ॥यशोदा वारवार यों भाषै।हैकोउ ब्रजमें हितू हमारो चलत गोपालहि राखै॥ कहा काज मेरे छगन मगनको नृप मधुपुरी बुलायो।सुफलकसुतमेरे प्राण हतनको कालरूप है आयो॥ वरु ए गोधन हरौ कंस सब मोहिं बंदि लै मेलो। इतनेही सुख कमलनैन मेरी अँखियन आगें खेलो॥वासर वदन बिलोकत जीवों निशि निज अंकम लाऊं॥ तेहि बिछुरत जो जिवों कर्मवश तौ हँसि काहि बोलाऊं॥ कमलनैन गुण टेरत टेरत अधर [illegible] कुम्हिलानी। सूर कहांलगि प्रगट जनाऊं दुखितनंदकीरानी॥११॥यशोदा वचन अक्रूरप्रति सोरठ॥ गोपालराइ केहि अवलंबों प्राण।निष्ठुर वचन कठोर कुलिशसे कहत मधुपुरी जान॥क्रूर नाम गति क्रूर क्रूरमति काहेको गोकुल आयो।कुटिल कंसनृप वैर जानिकै हरिको लैन पठायो॥जिहि मुख तात कहत ब्रजपतिसों मोहिं कहत है माइ। तिहि मुख चलन सुनत जीवतिहौं विधिसों कहा बसाइ॥ को कर कमल मथानी धरिहै को माखन अरि खैहै। बर्षत मेघ बहुरि ब्रजऊपर को गिरिवर कर लैहै॥ हौं बलि बलि इन चरणकमलकी इहई रहौ कन्हाई।सूरदास अवलोकि यशोदा धरणि परी मुरझाई॥१२॥मोहनइतनोमोहिचितधरिये।जननी दुखित जानिकै कबहूं मधुरागमन न करिये॥ यह अक्रूर क्रूरकृत रचिकै तुमहिं लेनहैआयो। तिरछे भए कर्म कृत पहिले विधि यह ठाट बनायो॥ वारवार जननी कहि मोसों माखन मांगत जौन। सूर तिनहिं लेवेको आए करिहौंसूनोभौन॥१३॥राग सही॥सुफलकसुतके संगते हरि होत न न्यारे॥वारवार जननी कहै मोहिं न तज्यो दुलारे॥ कहा ठगोरी यहि करी मेरेबालक मोसो। हाहा कहिकहि मरतिहौ मोतन नहिं जोसो॥ नंद कह्यो परबोधिकै संग मैं लै जैहौं।धनुषयज्ञ देखराइकै तुरतहि लैऐहौं॥ घरघर गोपनसों कह्यो करआए जुराव[illegible] सूर नृपतिके द्वारको उ[illegible]

मारि देखावत तोहि ॥ अघबकधेनुतृणावर्तकेशीकोबल देख्योजोहि।सातदिवसगोवर्धनराख्यो [illegible]गयो इन्द्रपुछोहि॥ सुनिसुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि। सूरदासप्रभुजी कहिए कछु सो आवै सब सोहि १५॥ राग बिलावल॥ यशुमति अतिही भईबेहाल।सुफलकसुतयह तुमहि बूझि ए हरतहौ मेरो बाल॥ ए दोउ भैया ब्रजके जीवन कहति रोहिणी रोइ।धरणीगिरतिदुरति अति व्याकुल कहि राखत नहिं कोइ॥ निठुर भए जबते यह आयो घरहु आवत नाहिं। सूरकहा नृपपास तुम्हारो हम तुमविनु मरिजाहिं॥१६॥ राग सोरठ॥कन्हैया मेरीछोहविसारी।क्यों बलराम कहत तू नाही मैं तुम्हरी महतारी॥ तब हलधर जननी परबोधत मिथ्या यह संसारी। ज्यों सावनकी बेलि प्रफुल्लित फूलतिहै दिनचारी॥हम बालक तुमको कहा सिखवैं कहू तुमहिते जात।

सूर हृदयधीरज अवधारों काहेको बिलखात१७॥राग सोरठ॥यहसुनि गिरी धरणि झुकि माता।कहा अक्रूर ठगोरी लाई लिए जात दोउ भ्रात॥ विरध समयकी हरत लकुटिया पाप पुण्य डर नाहीं। कछू नफा तुमको है यामें सो शोधौ मनमाहीं ॥ नाम सुनत अक्रूर तुम्हारो क्रूर भएहौ आइ ॥ सूर नंदघरनी अति व्याकुल ऐसेहि रैनि बिहाइ॥ १८॥गोपिकावचनपरस्पररामकली॥सुनेहैं श्याममधुपुरी जात। सकुचति कहि न सकति काहूसों गुप्त हृदयकी बात ॥ शंकित वचन अनागत कोऊ कहि जु गई अधरात। नींद न परै घटै नहिं रजनी कब उठि देखौं प्रात ॥ नँदनंदन तो ऐसे लागे ज्यों जल पुरइन पात। सूर श्याम सँगते बिछुरतहैं कब ऐहैं कुशलात॥ १९॥ राग सारंग॥सुने नँदलाल मधुपुरी जात।सकुचति कहि न सकति काहूसों गुप्त हृदयकी बात॥ सकृत वचन अनागत सखि कोऊ कहि जु गयो अधरात। रजनी घटै न सूर प्रकाशै कब उठि देखौं प्रात॥उर धकधकी तबहिते लागी अगम जनायो सीरे गात।सूरदास स्वामीके चलिबे ज्यों यंत्री बिनु यंत्र सकात॥२०प्रभात कथावदत॥सखावचन ॥राग भैरव ॥भोर भयो ब्रजलोगनको।ग्वाल सखा सखि व्याकुल सुनिकै श्याम चलतहैं मधुबनको॥सुफलकसुत स्यंदन पलनावत देखैं तहां बलमोहनको।यह सुनि घरघरते उठि धाई नंदसुवनमुख जोवनको॥रोरि परी गोकुलमें जहँतहँ गाइ फिरत पय दोहनको॥सूर बरस कर भार सजावत महरचलत हरिगोहनको२१रागरामकली चलन [illegible]

कारि

समुझि सहि रही हिये करि लाज।धीरजअवधिआशदै जननिहिंजातचलेब्रजराज॥करिये विनती कमलनयनसों सूरसमौ पहिचान।कौने कर्मभयो दुखदारुनरहतन मेरो कान २२चलत हरिधिग जु रहत ए प्रान। कहां वह सुख अब सहौं दुसहदुख उर करि कुलिशसमान ॥ कहांवहकंठश्यामसुंदर भुज करति अधररस पान। अचवत नयनचकोर सुधाविधु देखहु मुखछवि आन॥ जाकोजग उपहास कियो तबछाँड्योसबअभिमान।सूरसुनिधिहमतेहैंबिछुरतकठिनहैकरमनिदान॥२३॥राग कल्याण ॥ हौं सावरेके संग जैहौं। होनी होइ सु होइ उभैहठयशअपयशकाहूनडरैहौं॥कहारिसाइ करैगो कोऊ जो रोकिहै प्राण तिहि देहौं। देही छाँडि राखिहौं यह व्रत हरिहित बीजु बहुरि को बैहौं ॥ करिहौं सूर अजर अवनीतन मिलि अकास पियभौन समैहौं।वायबीजवापीजलक्रीडातेज मुकुरमुखसबसुखलैहौं॥२४॥याहि अंतर एक सखी आइ हरिके गवनको संदेश वदति राग कल्याण॥श्याम चलन चहत कह्यो सखीएकआई। बलमोहनरथबैठसुफलकसुतचढनचहतयहसुनिचकितभईविरहदौ लगाई ॥धुकिधुकि सब धरणि परींज्वालाझर लता गिरीं मनो तुरत जलद बरपिसुरतिनीरपरसी। धाई सब नंदद्वार बैठे रथ दोउकुमार यशुमतिलोटतिभुवपरनिठुररूपदरसी॥ कौनपिताकौनमात आपु ब्रह्म जगधात राख्यो नहिं कछू नात नेकुहु मनमाहीं। आतुर अक्रूर चढे रसना हरिनाम रटे सूरज प्रभु कोमल तनु देखि चैननाहीं॥२५॥गोपीवचन मोहनप्रति ॥राग सारंग ॥ विनतीएकसुनौ श्रीश्याम। चलन न देत चलौ चाहत मन चलन कहौ सो सुनिए श्याम। तुम सर्वज्ञ सकलघट व्यापक जीवन पद सबके विश्राम। संतत रहत कहत ढीठो दै करते सब सोवत सुखधाम ॥ बाहर सरल प्रीति गोपिनको लिए रहत लैले गुणग्राम। सूरदास प्रभु सकल सुखदाता तिनते न्यारे न ग्राम॥२६॥ राग सारंग॥ बिनुपरबहिउपराग आजु हरितुमहै चलनकह्यो।कोजानैउहिराहु रमापति कत ह्वै शोध लह्यो ॥ बैतकिंचुनित नीच नैनन मिलिअंजनरूपरह्यो।विरहसंधिबलपाइ

मैनअति है तिय वदन गह्यो ॥ दुसह दशन मनो धरत श्रमित अति परस परत न सह्यो। देखो देव अमृत अंतरते ऊपर जात बह्यो ॥ अव यह शशि ऐसो लागत ज्यों विन माखनहि मह्यो। सूर सकलगुणपतिदरशन विनुमुखछवि अधिक दह्यो ॥२७॥ राग धनाश्री॥ मिलि किनजाहु बटाऊ नाते।नंद यशोदाके तुम बालक विनतीकरतिहौं ताते ॥ तुम्हरी प्रीति हमारी सेवा गनियत नाहिंन काते। रूप देखि तुम कहा भुलाने मीत भए वन याते॥ तुमविछुरत घनश्याम मनोहर हम अवला सरघाते। कहा करौं जु सनेह न छूटै रूपज्योति गई ताते ॥ जब उठि दान मांगते हँसिकै संग गात लपटाते। सूरदास प्रभुकौन-प्रबलरिपुबीच परयो धौं जाते॥ २८॥ हरिकीप्रीति उरमांहि करकै। आय क्रूर लैचले श्यामको हित नाहीं कोउ हरकै ॥ कंचनको रथ आगे कीन्हों हरि हि चढाएवरकै।सूरदास प्रभु सुखके दाता गोकुल चलेउजरकै॥२९॥ राग सारंग॥ सवब्रजकीशोभा श्याम। हरिके चलत भई हम ऐसी मनहु कुसुम निरमायल दाम ॥ देखियतहौं तुम क्रूर विषमके-से सुनियतहौं अक्रूरहि नाम।विचरतिहौं न आन गृहगृहको शिशु लायक नृपको कह काम॥३० ॥. यशोदाविलाप राग बिलावल॥ गोपालहिराखहु मधुवन जात। लाजगए कछु काजन सरिहैं विछुरत नँदके तात ॥ रथ आरूढ होत वलिरगई होइआयो परभात॥सूरदास प्रभु वोलि न आयो प्रेमपुलकि सब गात॥३१॥ मोहन नेक वदन तनहेरो ॥ राखोमोहिंनातजननीको मदनगुपाललालमुखफेरो। पाछे चढो विमान मनोहर बहुरो यदुपति होत अँधेरो। बिछुरत भेंट देहु ठाढे ह्वै निरखौं घोष जन्मको खेरो ॥ माधो सखा श्याम इन कहिकहि अपने गाइ ग्वालसब घेरो।गए न प्राण सूर ता औसर नंदजतन करिरहेघनेरो॥३२॥ अथ श्रीकृष्णमधुरागमनहेतु अक्रूरसाथ॥ राग सोरठ॥ जबहीं रथ अक्रूरचढे। तब रसना हरिनाम भाषिकै लोचन नीर बढे ॥ महरि पुत्र कहि शोर लगायो तरु ज्यों धरनि लुटाइ।देखति नारि चित्रसी ठाढीं चितए कुँवर कन्हाइ॥ इतनेहिमें सुख दियोसवनकोमिलि हैं अवधि वताइ। तनक हंसे मनदे युवतिनको निठुर ठगोरी लाइ॥वोलतनहीं रहींसबठाढीं श्यामठगीं ब्रजनारी।सूरतुरत मधुवन पगधारे धरणीकेहितकारी॥३३॥ राग बिहागरो॥ चलतहरिफिरिचितयेब्रज पास।इतनेहि धीरज दियो सवनको अवधि गए दे आश।नंदहि कह्यो तुरत तुम आवहु ग्वालसखा लै साथ। माखन मधु मिष्टान्न महर लै दियो अक्रूरके हाथ ॥ आतुर रथहांक्योमधुवनकोब्रजजन भए अनाथ। सूरदास प्रभु कंसनिकंदन देवनकरन सनाथ ॥ ३४॥ राग नट॥ रहींजहांसोतहां सब ठाढी। हरिके चलत देखिअत ऐसी मनहुँ चित्र लिखि काढी ॥ सूखे वदन स्रवत नैननते जल-धारा उर वाढी। कंधनि वाँह धरे चितवति द्रुम मनहु वेलि दवडाढी॥ नीरस करि छाँडी सुफलक-सुत जैसे दूध बिन साढी। सूरदास अक्रूरकृपाते सही विपति तनु गाढी॥ ३५॥ राग सारंग॥ चलतहु फेरि न चितए लाल। रथ परवैठि दूरते देखे अंबुजनैन विशाल॥ मीडत हाथ सकल गोकुल-जन विरहविकल वेहाल। लोचन पूरि रहीं जल महियाँ दृष्टि परी जो काल ॥ सूरदास प्रभु फिरिकै चितयो अंबुजनैनरसाल॥३६॥ राग बिलावल॥ बिछुरे श्रीब्रजराज आजुतौ नैननतेपरतीतिगई। उठि नगई हरिसंग तवहिते ह्वै नगई सखि श्याममई॥ रूपरसिक लालची कहावत सो करनी कछु-वौन भई। साँचे क्रूर कुटिल ए लोचन व्यथा मीन छवि छीनि लई ॥ अब काहे जल मोचत सोचत समौ गएते शूल नए।सूरदास याहीते जडभये इनपलकनही दगा दए ॥३७॥ सखीवचन परस्पर॥ राग धनाश्री ॥ केतिक दूरिगयो रथ माई। नँदनंदनके चलत सखी री तिनको मिलननपाई॥ एकदिवस हौं द्वार नंदके नहीं रहति विनु आई आजु विधाना मति मेरी गई भौनकाज विरमाई ॥

जब हरि ऐसो ख्याल करत हे काहु नबात चलाई॥ब्रजही वसत विमुख भई हरिसों शूल न उरते जाई॥ सूरदास प्रभु बिनु ब्रज ऐसो एकौ पल न सोहाई ३८॥ राग मलार॥ सखी री वह देखौ रथ जात। कमल नैन काँधे पर न्यारो पीत बसन फहरात॥ लई जाइ जब ओट अटनकी चीरनरहतकृशगात। छत्र पत्र ध्वज कनकदल मनो ऊपर पवन विहात॥ मधु छुड़ाइ सुफलकसुतलैगए ज्यों माछी भईहीन। सूरदास प्रभु बिनु देखियतहैं सकल विरहआधीन॥ ३९॥ राग सारंग॥ पाछेही चितवत मेरे लोचन आगे परत न पाँइ। मन लै चली माधुरी मूरति कहा करौं ब्रजजाइ॥ पवन न भई पताका अंबर भई न रथके अंग। धूरि न भई चरण लपटाती जाती वहँलौं संग॥ ठाढी कहा करौं मेरी सजनी जिहि बिधि मिलहिं गोपाल। सूरदास प्रभु पठे मधुपुरी मुरझि परी ब्रजबाल॥ ४०॥ राग नट॥ तव न बिचारी री यह बात। चलत न फेंट गही मोहनकी अब ठाढी पछितात॥ निरखि निरखि मुख रही मौनहै थकित भई पलपात। जब रथ भयो अदृष्ट अगोचर लोचन अति अकुलात। सबै अजान भईं वहि औसर धिगहि यशोमति मात। सूरदास स्वामीके बिछुरे कौडी भरि न बिकात॥ ४१॥ रागसारंग॥ अब वे बातैं ईहँरहीं। मोहनमुखमुसकाइचलतकछुकाहूनहींकही॥ सखी लाजवश समुझि परस्पर सन्मुख सबै सहीं॥ अब वे सालतिहैं उरमहिंया कैसेहु कढति नहीं॥ ज्यों ज्यों सलिल करनको सजनी काहेको फिरति वही। हरि चुंबक जहां मिलहिं सूर प्रभु मो लैजाउँ तहीं॥ ४२॥ राग नट॥ मेरी वज्रकी छाती बिदरि नहिं जाति। हरिहि चलत चितवत मग ठाढी पछिताति॥ विद्यमान बिरह शूल उरमें जु समाति। आवनकी आश लागि अवधिही पत्याति॥ प्रेमकथा प्रगट भई शरद रासराति। प्राणनाथ बिछुरे सखि जीवत न लजाति॥ एकै पै सुरति रही वदन कमल कांति। ज्यों ठग निधिहि हरत की रंचक गुरदै काहू भाँति॥ इमि फिरिमुसकानिसूरमनसागईमाति। चितवनिमन मादकभईजागत अकुलाति॥ ४३॥ राग गौरी॥ आजु रैनि नहिं नींद परी। जागत गनत गगनके तारे रसना रटत गोविंद हरी॥ वह चितवनि वह रथकी बैठनि जब अक्रूरकी बाँह गही। चितवत रही ठगी सी ठाढी कहि न सकी कछु कामदही॥ इतनें मन व्याकुल भई सजनी आरज पंथ हुते बिडरी। सूरदास प्रभु जहाँ सिधारे कितिक दूरि मथुरा नगरी॥ ४४॥ राग सारंग॥ हरि बिछुरत फाट्यो न हियो। भयो कठोर वज्रते भारी रहिके पापी कहाकियो॥ बोरि हलाहल सुन री सजनी औसर तेहि न पियो। मन सुधि गई सँभारति नाहिंन पूरो दाँव अक्रूर दियो॥ कछु न सुहाइ गई सुधि तवते भवनकाजको नेम लियो। निशि दिन रटत सूरके प्रभु बिनु मरिबोतऊ नजात जियो॥ ४५॥ राग अडाने॥ सुंदर वदनरी सुखसदनश्यामको निरखि नैन मन थाक्यो। वारक इन बीथिन ह्वै निकसे मैं दुरि झरोखनि झांक्यो॥ उन कछु नेक चतुरई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो। वारैं लाज भई मोको वैरनि मैं गँवारि मुखढाक्यो॥ कछु करिगए तनक चितवनिमें याते रहत प्रेम मद छाक्यो। सूरदास प्रभु सर्वसु लैगए हँसत हँसत रथहाँक्यो॥ ४६॥ राग सारंग॥ अरी मोहिं भवन भयानक लागे माई श्यामविना। देखहिं जाइ काहि लोचन भरि नंद महरके अँगना॥ लै जु गए अक्रूर ताहिको ब्रजके प्राणधना। कौन सहाय करै घर अपने मेटै विधिन घना॥ काहि उठाइ गोद करिलीजे करि करि मन मगना। सूरदास मोहन दरशनबिनु सुख संपतिसपना॥ ४७॥ राग मलार॥ सब कोउ कहत गोपाल दोहाई। गोरसबेचन गई बबाकी सौं हौं मथुराते आई॥ जबते कह्यो कंससों मोहन जीवत मृत करि लेखो। जागत सोवत आश देवनकी कृष्ण कला सब देखो॥ करते ओघ प्रजा लोगे सब नृपकी शंक नमानि।

ठगई तकियो गिरिधरकी सूरदास जनजानी ॥४८॥ यशोदाविलाप ॥ राग धनाश्री ॥ है कोइ ऐसी भांति देखावे। किंकिणिशब्द चलत ध्वनि [illegible]
कोटि गति पावे। कचन मुकुट [illegible]
बाल सगलावे। सूरदास प्रभु कहति यशोदा भाग्य बडेते पावें ४९॥ राग सोरठ॥ मनों हों ऐसेही मरिजैहों। इहि आगन् गोपालललको कबहूँक कनियालैहों॥ कब यह मुख बहुरो देखोंगी कब वैसो सचुपैहों। कब मोपे माखनमागेंगे कब रोटी धरि देहों ॥ मिलन आश तनु प्राण रहतहै दिन दश मारग चैहों। जो नसूर कान्हा आइहै तौ जाइ यमुन धँसि लैहों॥५०॥ अध्याय ॥ ३९ ॥ तथा ॥ ४० ॥ अक्रूर दर्शनमाप्ति हेतु तथा श्रीकृष्णस्तुतिवर्णन ॥ राग गुडमलार ॥ मनहिं मन अक्रूर सोच भारी। जननि दुःखित करी इनहिं मै लैचल्यो भई व्याकुल सबै घोषनारी॥ अतिहिए बालभोजननवनीतकेजानितिन्हें लीन्हें जात दनुजपास। कुवलयामल्ल मुष्टिक चाणूरसे कियो मैं कर्म यह अति उदासा॥ फेरि लै जाउँ ब्रज श्याम बलरामको कसलै मोहि तन जीव मारै। सूर पूरण ब्रह्म निगम नाहीं गम्य तिनहिं अक्रूर मन यह विचारै॥५१॥ इहै सोच अक्रूरपरचो। लिए जात इनको मै मथुरा कसहिमहाडरचो॥ विगमो नृ को धिग मेरी करनी तबही क्यों न मरचो॥ मै देखौं इनको अब हनिहै अति व्याकुल हहरचो। यहि अतरयमुनातट आएनियो अस्नानलरचो॥ सूरदास प्रभु अन्तर्यामी भक्त सँदेह हरचो॥ ५२॥ ॥ राग धनाश्री ॥ सुफलकसुत दुख दूरि करचो। यमुनातीर कियो रथठाढो आपुहि प्रगट हरचो तिनहिं कह्यो तुम स्नान करौ ह्यां हमहि कलेऊ देहु। भूख लगी भोजन करिहें हम नेम सारि तुम लेहु॥ तालौं नद गोप सब आवें सग मिलै सब जेहैं॥ सूरदास प्रभु कहतहैं पुनि पुनि तब अतिही सुख पैहौं॥५३॥ राग गुडमलार ॥ सुनत अक्रूर यह बात हरषे। श्याम बलरामको तुरत भोजन दियो आपु अस्नानको नीर परसे॥ गए कटि नीरलौं नित्य सकल्प करि करत अस्नान इकभाव देख्यो। जैसोई श्याम बलराम स्यन्दन चढे वैहै छवि कुवर सर मांझ पेख्यो ॥ चकृत भए कबहुँ तीरपुनि जल निरखि घोष अक्रूर जिय भयो भारि। सूर प्रभु चरितमे थकित अतिही भयो तहां दरसे नित स्थल विहारी॥५४॥ राग कान्हरो॥ कमलपरयक्र धरति उर लाइ। राजति रमा कुभरस अतर पति निज थल जलसाइ॥ वैनतेय सपुट सनकादिक चतुरानन जय विजय सखाइ। औसर बाग विशारद हाहा जित गुण गाइ॥ कनक दड सारग विविध रव कीरति निगम सिद्ध सुर धाइ। तिनके चरण सरोज सूर अब किए गुरु कृपा सहाइ ॥ ५५ ॥ राग धनाश्री॥ हरष अक्रूर हृदय न माइ। नेम भूल्यो ध्यान श्याम बलरामको हृदय आनदसुख कहि न जाइ॥ ब्रह्म पूरण अकल कलातेरहित ए हरता करता समर्थ और नाही। कहा बपुरो कस मिटचो तब मन सस करतहै गम निरंश जाहीं ॥ हांकि रथ चढि चल्यो विलम्ब अब कहा प्रभु गयो सदेह अक्रूर जीको। नद उपनद सँग ग्वाल बहुभार लै आइ सदनहि मिले सूर पीको॥ ५६ ॥ अक्रूर श्रीकृष्णस्तुति॥ राग कल्याण ॥ बार बार श्याम राम अक्रूरहि गानें॥ अबही तुम हरष भए तबहीं मन मारि रहे चले जात रथहि बात बूझतहैं बानें॥ कहो नहीं सांची सो हमसो जिनि गोप करो सुनिकै अक्रूर विमल अस्तुति भानें। सूरज प्रभु गुण अथाह धन्य धन्य प्रियानाह निगमन अगाध सहसानन नहिं जानें॥५७॥ राग बिलावल॥ बार बार मोसो कहा बूझत तुमहो पूरण ब्रह्म गुसाईं ॥ तुम हर्ता तुम कर्ता एक तुमही अखिलभुवनके साईं॥ कहामल्ल चाणूरकुवलयाअरु जिय त्रासनहीं तिननैको। सूरदास प्रभु कस निपातहु गहरु न कीजे अरु वेसनैको ॥ ५८॥ राग धनाश्री॥ बूझतहैं अक्रूर

हि श्याम ।तरनि किरनि महलनि पर झाई इहै मधुपुरी नाम॥श्रवणन सुनत रहत जाको नित सो दरशन भए नैन। कंचन कोट कँगूरनकी छवि मानहु बैठे मेन ॥ उपवन वन्यो चहूँधा पुरके अतिही मोको भावत।सूरश्याम बलरामहिं पुनिपुनि करपल्लवनिदेखावत॥५९॥श्रीकृष्ण वचन अक्रूरमति॥राग कल्याण॥बार बार बलरामको मधुपुरी बतावत।छज्जे महलन देखिके मन हरप बढावत॥जन्म थान जिय जानिकै ताते सुख पावत।वन उपवन छाये सघन रथ चढे जनावत॥नगरशोर अकनतसुनत अति रुचि उपजावत।सुनत शब्द घरियारके नृपद्वारवजावत॥बरनबरनमंदिर बने लोचन ठहरावत सूरजप्रभु अक्रूरसों कहि देखि सुनावत॥६०॥अक्रूरवचन श्रीकृष्णप्रति राग कल्याण॥श्रीमधुरऐसी आजु बनी।देखहु हरि जैसेपति आगमसजति शृंगार घनी॥मानहुकोटि कसी कटिकिंकिणिउपधनवसन सुरंग। भूषण भवन विचित्र देखियत शोभित सुंदर अंग॥सुनत श्रवण घरियार घोरध्वनि पाँयन नूपुर बाजत । अति संभ्रम अंचल चंचलगति धामन ध्वजा विराजत॥ ऊँच अटनपर छत्रनकी छवि शीशनमानो फूली।कनक कलशकुचप्रगट देखियतआनँद कंचुकि भूली॥विद्रुमफटिकपची परदा छवि लाल रंध्रकी रेख।मनहु तुम्हारे दरशन कारण भूले नैन निमेष ॥ चितदै अवलोकहु नँदनंदन पुरी परमरुचि रूप । सूरदास प्रभु कंस मारिकै होहु यहांके भूप ॥६१॥ मथुरा हरषित आजु भई।ज्यों युवती पतिआवत सुनिकै पुलकित अंग मई॥ नवसत सजि शृंगार बनि सुंदरि आतुर पंथ निहारति ।उडत ध्वजा तनु सुरति बिसारे अंचलनहीं सँभारति॥उरजप्रगट महलनपर कलसा लसति पास बनसारी।ऊँचे अटनि छाजकी शोभा शीश उँचाइ निहारी॥जालरंध्र इकटक मग जोवति किंकिणि कंचनदुर्ग।वेनी लसति कहीं छवि ऐसी महलन चित्र उर्ग ॥ बाजत नगर बाजने जहँतहँ और बजत घरिआर ।सूर श्याम वनिता ज्यों चंचल पगनूपुर झनकार ॥ ६२ ॥ राग गुंडमलार ॥नगरके पास जब श्याम आए।देखि रथ चढे बलराम अरु श्यामको गए ॐ [illegible] । उठ्यो झझकारि कर ढ [illegible] चाणूरसों होहु तुम सजग घ [illegible] ह्हां आए।सूर प्रभु शहर पैठार पहुँचे आइ धनुपके पास जोधा रखाए॥६३॥पुरनारिश्रीकृष्णशोभा परस्पर वदति॥ रागधनाश्री॥मथुरा पुरमें शोर पर्‍यो । गजत कंस वंश सब साजे मुखको नीर हर्‍यो ॥ पीरो भयो फेफरी अधरन हिरदय अतिहि डर्‍यो। नंदमहरके सुत दोउ सुनिकै नारिन हर्ष भर्‍यो ॥ इंदुवदन नवजलद सुभग तनु दोउ खग नैन कह्यो।सूर श्याम देखत पुरनारी उरउर प्रेम भर्‍यो॥६४॥राग रामकली॥रथपर देखि हरि बलराम । निरखि कोमल चारु मूरति हृदयमुक्तादाम॥ मुकुट कुंडल पीतपट छवि अनुज भ्राता श्याम। रोहिणीसुत एक कुंडल गौरतनु सुखधाम ॥जननि कैसे धर्‍यो धीरज कहति सब पुरवाम। बोलि पठये कंस इनको करैं धौं कहा काम ॥ जोरि कर विधिसों मनावति लै अशीशै नाम। न्हात बार न खसै इनको कुशल पहुँचें धाम ॥ कंसको निर्वंश ह्वैहै करत इनपर ताम। सूर प्रभु नँदसुवन दोऊ हंस बाल उपाम६५राग कल्याण॥देख री आजु नैनभरिहरिजूके रथकीशोभा। योग यज्ञ जप तप तीरथव्रत कीजतहै जेहि लोभा ॥ चारु चक्र मणिखचित मनोहर चंचलचमर पताका॥ श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदय कियो निशि राका॥ घन तन श्याम सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला। जनु दामिनि घनरवि तारागण प्रगट एकही काला ॥ उपजत छवि कर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा। मानहु अरुण कमल मंडलमें कूजतहैं

फलहंसा । मदन गोपाल देखियत हैं सब अब दुख शोकबिसारी पैठे हैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहाँ सिधारी ॥ आनंदित जित जननि तात हित कृष्ण मिलन जिय भाए। सूरदास यदुकुल हित कारण माधो मधुपुरी आए॥६६॥ राग मलार॥ ये देखो आवत हैं व्रजते नंदे वनमाली। घन तन श्याम सुदेह पीतपट सुंदर नैन विशाली ॥ जिन पहले पलना पौढे पय पीवत पूतना दाली । अब बंक बच्छ आदि केशि मथि जलते काढचो काली॥ जिन हति शकट प्रलंब तृणाव्रत इंद्र प्रतिज्ञा टाली । एते पर मुष्टिक तजत अघोडी कपटी कंस कुचाली ॥ अब विधु बदन विलोकि सुलोचन श्रवण सुनतही आली धन्य सु गोकुल नारि सूर प्रभु प्रगटप्रीतिप्रतिपाली॥६७॥ रागभैरव॥ एई माधो जिन मधु मारे री। जन्मतही गोकुल सुख दीन्हों नंददुलार बहुत मारे री ॥ केशी तृणावर्त वृषभासुर हती पूतना जब बारे री। इन्द्र गोवर्धन गिरि धास्यो महाप्रलय व्रजके टारे री ॥ बल समेत नृपकंस बोलाए रचे रंग अति भारे री। सूर श्रीयशुदेति सब सुंदरि जीवहिं अपनी माँ प्यारे री ॥६८॥ राग बिलावल॥ भएसखि नैनसनाथहमारे।मदनगोपाल देखतहि सजनीजबदुखशोक बिसारे॥ पठएहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहां सिधारे। मल्लयुद्ध प्रति कंस कुटिल मति छल करि इहां हँकारे ॥ मुष्टिक अरु चाणूर शैलसम सुनियतहैं अतिभारे । कोमल कमल समान देखियत ये यशुमतिके बारे। ह्वै यह जीति विधाता इनकी करहु सहाय सबारे । सूरदासचिरजीवहु युग युगदुष्ट दले दोउ नंददुलारे॥६९॥ अथ दूसरीलीला अक्रूरकी रागमारू॥ यमुनतट आइ अक्रूर अन्हाए। श्याम बलरामको रूप जलमें निरखि बहुरि रथ देखि आचरज पाए॥ किधौं प्रतिबिंब यह जलहिमें देखतो किधौं निजरूप दोउ हैं सुहाए । चकित होइ नीरमें बहुरि बुडकी दई मह सुता सिंधु तई दरश पाए ॥ दोउ करजोरि करि विनयबहुविधि करी लियो जब रूप तब प्रभुदुहाई। निकसि कै नीरते तीर आयो बहुरि ताहिढिगबोलि बोले कन्हाई ॥ कहा तुम और देखत हुते तात तुमकह्यो सब जगत तुमहीं भुलायो। गति तुम्हारी न जानै कोऊ तुम बिना राख प्रभु राख मैं शरण आयो ॥ हरि कह्यो चलो मथुरापुरी देखिए सहित अक्रूर पुनि तहां आए। सूर प्रभु कियो विश्राम सब निशि तहां बोधि अक्रूर निजघर पठाए॥७०॥ अध्याय॥४१॥ श्रीकृष्ण मथुरापुरआगमनहेतु॥ रागभैरव॥ भोर भयो जागे नँदलाल । नंदराइ निरखत मुख हरषे पुनि आए सब ग्वाल ॥ देखि पुरी अति परम मनोहर कंचनकोट विशाल । कहन लगे सब सूर प्रभूसों होहु इहां भूपाल॥ ७१॥ राग गाज ॥ हरि बल शोभित यो अनुहार। शशि अरु सुर उदेभए मानो दोउ एकहि धार॥ ग्वालबाल सँगकरत कौतुहल नगनपुरी मंझार । नगरनारि सुनि देखन धाईं रतिपति गेहबिसार ॥ उलटि अंग आभूपण साजत रही न देहसँभार।सूरदास प्रभु दरश देखिकै भई चकृत न विचार ॥७२॥ रागधनाश्री वे देखो आवत दोऊजन । गौर श्याम नट नील पीत पट जनु दामिनी मिलीघन ॥ लोचन बंक विशाल चितैके हरत तबै सबके मन।कुंडल श्रवण कनकमणि भूपित जडित लाल अति लोलमीन तन॥ वंदन चित्रविचित्र अंग शिर कुसुमसुवास धरे नँदनंदन। बलिबलि जाउँ चलहिं जेहिमारग संग लगाइ लेत मधुकरगन ॥ धन्य सुभूमि जहां पग धारे जीतहिंगे रिपु आजु रंगरन। सूरदासबैनगर-नारि सब लेत बलाइ वारि अँचलसन ॥ ७३ ॥ अथ रजकबधेराग रामकली॥ नृपतिरजक अंबर नृप धोवत। देखे श्याम राम दोउ आवत गर्वसहित तिन जोवत॥ आपुसहीमें कहत हँसतहैं प्रभु हिरदय यह सालत।तनकतनकसे ग्वाल छोह [illegible]

मास्यो ताहि।बहुत अचगरीयहि क

हैं दोउ वीर।सूर नंद विनुपुत्र कहाए ऐसेजाएहीर॥७४॥राग विलावल॥अंतर्यामी जानिके सवग्वाल वोलाए।परखिलिए पाछेनको तेऊ सव आए॥ सखावृंद लै तहां गए वूझन तेहि लागे। नृपति पास हम जाहिंगे अंवर कछु माँगे॥हँसे श्याम मुख हेरिके धोवत गरवानो।मारत मारत सातके दोउ हाथ पिरानो॥ अवहीं देहैं आइके कछु हम लैहैं। पहिरावन जो पाइहैं सो तुमहू देहैं॥ की पहिलेही लेहुगे हम इहै विचारे।देहु वहुत गुण मानिहैं आधीन तुम्हारे॥मार मार कहि गारि दै धिग गाइ चरैया। कंसपासहै आइए कामरी वोढैया॥वहुरि अरसते आनिके तव अंवर लीजो। अरस नाम है महलको जहां राजा वैठागारी दैदै सव उठे भुज निजकर ऐंठे॥ पहिरावनकोजुरि चले पैहो मछनसों। सूर अजाके भोग ए सुनिलेहु नमोसों॥७५॥राग विलावल॥हममाँगतहैंसहज-सों तुम अति रिसकीन्हों। कहा करैं तो जाहिंगे जो तुम हमहिं न दीन्हों॥रिसकरियतक्योंसहज हौ भुज देखत ऐसे। करि आए नट स्वांगसे मोको तुम वैसे॥हमहिं नृपतिसों नात है ताते हम माँगे। वसन देहु हमको सवै कहैं नृपके आगे॥ नृप आगेलौं जाहुगेवीचहि मरिजैहो।नेक जिवनकी आश है ताहू विना हैहो॥ नृप काहेको मारिहै तुमहीं अव मारत। गहर करत हमको कहा मुख कहा निहारत॥ सूर दुहुँन मैं मारिहौं अति करत अचगरी। वसत तहांसुधिते सियवह गोकुल नगरी॥७६॥राग विलावल॥ श्याम गह्यो भुज सहजही क्यों मारतहमको।कंसनृपतिकी सौंह हैपुनिपुनि कही तुमको॥ पहुँचाकरसों गहिरहे जिय संकटमेल्यो। डारिदियोताहिशिलापर वालक ज्यों खेल्यो॥ तुरत गयो उडि स्वर्गको ऐसे गोपाला। जन्म मरनते रहिगयो वह कियो निहाला॥रजकभजेसवदेखिकै नृप जाइपुकारयो।सूरछोहरननंदकेनृपसेठिहि मारयो॥७७॥ गौरी यह सुनिकै नृप त्रास भरयो। सवन सुनाइ कही यह वाणी इह नँदनंद कह्यो॥ मारौ श्याम राम दोउ भाई गोकुल देउ वहाइ। आगे दैकै रजक मरायो स्वर्गहि देहु पठाइ॥ दिनदिन इनकी करौं वडाई अहिर गए इतराइ।तौ मैं जो वाहीसों कहिकै उनकी खाल कढाइ॥ सूर [illegible] इह करत प्रतिज्ञा त्रिभुवन नाथ कहाए॥७८॥रागविलावल॥ रजक मारि हरि प्रथमही नृपवसन लुटाए। रंग रंग वहु भाँतिके गोपन पहिराए॥ आए नगर लगारको सव वने वनाए॥ इकटक रहीं निहारिकै तरुणिन मनभाए॥ जैसी जाके कल्पना तैसेहि दोउ आए।सूर नगर नर नारिकै मन चित्त चोराए॥७९॥एइवसुदेवकेदोउढोटा।गौरश्याम नट नील पीत पट कलहंसनके जोटा॥ कुंडल एक काम श्रुति जाके श्रीरोहिणिको अंश। उर वनमाल देवकीको सुत जाहि डरतहै कंस॥ लैराखे व्रज सखा नंदगृह वालक भेप दुराइ। सम वल वैस विराट मैनसे प्रगट भएहैं आइ॥ केशी अघ पूतना निपाती लीला गुणनि अगाध। सूर श्याम खलहरन करन सुख अभयकरन सुरसाध॥८०॥राग रामकली॥ येइ कहियत वसुदेवकुमार। कंसत्रास मनमात पठाए कीन्हें नंददुलार॥ प्रथम पूतना इनहिं निपाती काग मरत उठि भाज्यो। शकटातृणा इनहिं संहारयो काली इनहिं निवाज्यो॥अघावका संहारन एई असुर सँहारन आए। सूरज प्रभु हितहेतुभावकैयशुमतिवालकहाए॥८१॥राग नट॥ वेहैंरोहिणीसुत राम। गौर अंग सुरंग लोचन प्रलयकैसे ताम॥ एक कुंडल श्रवणधारी दोत दरशीग्राम। नील अंवरअंगधारी श्याम पूरणकाम॥ महा जे खल तिनहुँते अति तरतहैं एक नाम। व्रह्म पूरण सकल स्वामी रहे व्रजनिशिधाम॥ताल वन इन वच्छ मारयो व्रह्म पूरणकाम।सूरप्रभु आकरपि ताते संकर्पणहै नाम॥८२॥ राग रामकली॥ एहैं देवकीसुत श्याम। मुकुट शिर शुभ श्रवणकुंडल करत पूरणकाम॥ महा जे खल

बात सुनत रिस भरचो महावत तुमहिं कहा इतनो रे गारो । बादत वडे शूरकी नाँई अबहिं लेतहौ प्राणतुम्हारो॥बारनहिं करौंबारनसहितपटकिहौं बावरेबातकहि मुखसँभारे॥बादिमरिजाइगो बारन-हिं छोडिदे वदत वलराम तोहिं बारवारें॥बात मेरी मान गर्वबोलैकहा काल किनिदेखि इतरात कोरावाम कर गहि शुंडि डारिहौ अमरपुर हांक दै तुरत गजको हँकारे॥ बाजसो टूटि गजराजहां-कत परचो मनो गिरि चरण धरि लपकिलीन्हें।वारि बांधे वीर चहूँघा देखतहि वज्रसमथाप बल कुंभ दीन्हों॥कूक पारचो लपकिधींचमनडरचो मनुगंडमधि रंध्र झरवोसुखानो॥क्रोधगजपालके ठिठकिहाथीरह्यो देतअंकुश मसकि कहा सकानो ।बहुरितातो कियोडारितिनपरदियोआयलपटे सुतहु नंदकेरे।सूर प्रभु श्यामबलराम दोउइतै उतबीच करि नाग इत उतहि टेरे९०॥राग गुंडमलार॥

क्रोध गजराज गजपाल कीन्हों। गरजि घुमरात मद मार गंडनि स्रवत पवनते वेग तेहि समै चीन्हों ॥ चक्र सो भ्रमत चकृत भए देखि सब चहूँघा देखिए नंद ढोटा । चमकि गए वीर सब चका चौंधीलगी चिंत डरपे असुरघटा घोटा॥नीलअंबर धौल बरन बलरामबनि पीतअंबर श्याम-अंग शोभा।सूर प्रभुचरित पुर नारि देखति खडीं महलपर आशिपा देतिलोभा॥९१॥कहतहलधर कह्यो मानि मेरो।अखिल ब्रह्मण्डके नाथ हैं ह्यॉखरे गज मारि जीव अब लेहुँ तेरो॥ यहसुनतरिस भरचो दौरिबेको परचो सूँडि झटकत पटकि कूक पारचो। घात मन करत लैडारिहौं दुहुंनि-पर दियो गज पेलि आपुन हँकारचो॥ लपकि लीन्हों धाइ दबकि उर रहे दोउ भ्रम भयो गजहि कहाँ गए वेधौं।अरचो दै दशन धरनी कढे वीरदोउ-कहत अवहीं याहि मारकैधौं।खेलिहैं संगदै हाँक ठाढे भए श्यामपाछे राम भेय आगे।उतहि वे पूंछ गहिजात ए शुंडि छैफिरतगज पास चहुँ हँसन लागे॥नारि महलन खरीसबै अतिही डरीं नंदकेनंदगज दोउ खिलावैं।सूरप्रभुश्यामबलराम देखति तृपित वचैं इक वेर विधिसों मनावैं ॥ ९२॥खेलतगज संग कुँवरश्यामरामदोऊ।क्रोधद्विरद व्याकुलअति इनको रिस नेक नही चकृत भए योधा तहँ देखत सबकोऊ ॥ श्याम झटकि पूछ लेत हलधर कर शुंडिदेत महलमहल नारि चरित देखत यह भारी । ऐसेआतुरगोपाल चपल नैन मुखरसाल लिए करन लकुट लाल मनो नृत्यकारी । सुरगण व्याकुल विमान मनमन यहकरत ज्ञान बोलत यह वचन अजहुँ मारचो नहिं हाथी । सूरज प्रभु श्याम राम अखिल लोकके विश्राम सुर पूरन काम करन नाम लेत साथी ॥ ९३ ॥ राग सोरठ ॥ तब रिस कियो महावत भारी । जो नहिं आजु मारिहौं इनको कंस डारिहै मारी ॥ अंकुश राखि कुंभपर करष्यो हलधर उठे हँकारी। धायो पवनहुते अति आतुर धरणी दंत खँभारी ॥ तबहारिपूंछ गह्योदक्षिणकरकयुकओरशिरवारी। पटक्यो भूमि फेरि नहिं मटक्यो लीन्हें दंत उपारी॥ दुहुँ कर द्विरददशन इकइक छवि निरखति पुर नरनारी । सूरदास प्रभु सुरसुखदायक मारचौ नाग पछारी ॥९४॥ दूसरी लीला हस्तीवध॥राग मारू

नवल नँदनंद रँगद्वार आए । तडितसे पीतपट काछनी कसे कटि खौर चंदन किये मुखसुहाए॥ निरख्यो रूप जिन भयो सोइ सोइ मगन मातु पितुको पुत्रभाव आयो । ब्रह्म पूरण मुनिन परम सुंदर त्रियन कालके रूप सुभटन जनायो ॥ मातुलको देखि हरि कह्यो यों विहँसिकरि पंथतेटारि गजको महावत ।दियो फटकारि उन धारि अभिमान मन शुंडते दौरि गह्यो ताहि आवत ॥ दंत युग विवि युग चरन भीतर निकसि युग करन पूँछको गहोजाई । महाकरिसिंहभेटतमहाउरगको महाबल गरुड ज्यों गहत धाई ॥ कबहुँ लैजात उत इतै ल्यावत कबहुं भ्रमत व्याकुल भयो मंतुल भारी।गयंद ज्यों गेंदको पटकि हरि भूमिसों दंतदोउ लये निजकर उपारी ॥ भभकिकै दंतते

तिनहूंतें अति तरत हैं इक नाम। ब्रह्मपूरण सकलस्वामीरहैब्रजवसिधाम॥ नंदपितुमातायशोदा बांधि ऊखलदाम। लकुट लैलै त्रास कीन्हों करचो इनपर ताम॥ ताहिमान्योहेतुकरिइनहँसति ब्रजकी वाम। सूर धनि नँद धन्य यशुमति धन्य गोकुल ग्राम॥ ८३ ॥अध्याय॥ ४२। हरि धनुष भूमि आगमन कुबरा उद्धार॥ राग मारू॥ धनुपशाला चले नंदलाला। सखा लिए संग प्रभु रंग नाना करत देव नर कोउ न लखहिं करत ख्याला॥ नृपतिके रजकसों भेंट मगमें भई कह्यो दे वसन हम पहरि जाहीं। वसन ए नृपतिके जासुके प्रजा तुम ए वचन कहत मनडरतनाहीं॥एकही मुष्टिका प्राण ताके गए लए सब वसन कछु सखन दीन्हें। आइ दरजी गयो बोलि ताको लयोसुभगअँग सजत उन विनय कीन्हें॥ यों सुदामा कह्यो गेह मम अति निकट कृपाकरि तहांहरिचरणधारी। धोइ पदकमल सो हार आगे धरी भक्तितें तासु सब काम सारी॥लिएचंदन वहुरिआनिकुविजा मिली श्यामअँग लेप कीयो वनाई। रीझि तेहि रूप दियो अंग सुधो कियो वचन शुभ मानि निजगृह पठाई॥ पुनि गए तहां जहं धनुप वोल सुभट हांस मन जिनि करो वन-विहारी। सूर प्रभु छुअत धनु टूटि धरणी परचो शोर सुनि कंस भयो भ्रमित भारी॥ ८४॥ कुबरी छोला धनुपयज्ञकी विस्तार वर्णन॥राग गुंडमलार॥ ॥ श्यामवलराम गए धनुपशाला। लियो रथतें उतरि रजक मारचो जहां कंदराते निकसि सिंह बाला॥ नंद उपनंद सँग सखा एक थल राखि दोउ पुनै आवहीं वीर जोटा। असुरसेना खडे देखि कें वे डरे धनुप चहुं पास रिपु घुटा बोटा॥घेरिलीन्हें श्याम वलरामको तहां वोलि सब उठे हरि हँसत हरि करचो यह वैर जोरा॥८५॥ राग विहाग॥ धनुप तोरो। सूर तुमको सुने भुजनिवलचंड अति॥ हमको नृप यहिहेतुबोलाए॥कहांधनुपकहँ हम अति वालक कहि आश्चर्य सुनाए॥ ठाढे शूर वीर अवलोकत तिनसों कहां न तोरें। हमसों कहां खेल कछु खेलें यह कहिकहि मुख मोरें॥कंस एकतहां असुर पठायो इहैकहतवहआयो। वन धनुप तोरे अब तुमको पाछे निकटबोलायो॥वालकदे खिगहनभुजलाग्यो ताहितुरतहीं मारचो। तोरि कोदंड मारि सब योधा तब वलभुजा निहारचो॥ एकअस्त्र तिनहिं तेहिमारचोच लैसाबुदौं खोरी। सूरसु कुबरी चंदनलीन्हेंमिलीश्यामकोदौरी॥८६॥ गह्यो श्यामकर कर अपनेसों लिए सदनको आई॥ धूप दीप राग धनाश्री॥ प्रभुतुमकोचंदनमैं नाई॥ चरण पखारि लियो चरणोदक धनिधनि कहि देत्यारी॥मेरो नैवेद्य साजिकैमंगलकरे विचारी। अंग। सूर श्यामजनके सुखदायक वँधे भावरंजु रंग॥८७॥ राग शुद्ध जनम कल्पना ऐसी चंदन परसों भावमें वास विनभाव नहिं पाइए जानि हिरदय हेतु मानिलीन्हीं॥ मलार॥ कूबरीनारि सुंदरीकीन्हीं। दियो उर्वशी रूप पटतरहि दीन्हीं। चित्त वाके इहै श्याम पति मिलै ग्रीव कर परसिपग पीठितापर जात चीन्ही॥ ताहि अपनी करी चले आगे हरी गए जहँ कुवलया गोहिं तुरत सोइ भई नहिं मिल्यो दौरि चरणन परचो पुहुपमाला श्याम कंठ धारचो॥ कुशल प्रेमि द्वारचो। वीच माली म लहि भक्तवत्सल नाम भक्त गावें। ताहि सुखदै चले पौरिहीं ह्वै खरे सूर ननि कहे तुरत मनकावे ॥८८॥ अध्याय४३कुवलयाहस्तीवधमुष्टिकचाणूरवध॥रागकान्हरो॥सुनहु महावत वात राजपालसोंकहि सुना संकर्षण भाषत लेत नहीं हाति गज टारी॥ मेरो कह्यो मानि रे मूरख गज समेत हमारी। वारवार द्वारखडे रहैहैं कवके जिनिरे गर्वकरे जियभारी॥न्यारोकरिगयंद तूअजहूँ जानदेहिप तोहि डारौंमारी। सूरदास प्रभु दुष्टनिकंदन धरणीभार उतारनकारी ८९॥ राग गुंडमलार॥ वारवार संकर्षेकाअंकुशभारी। वनि वारन करि न्यारो। वारन छाँडिदेत किन हमको तू जानतमतंग मतवारो॥ वाहैणभाषतवारन सुन मेरी त्रिभुवनपति जिनि जाने वारो। वादिहि मरिजैहै पल भीतर कहेदेत नहिं दोपहैं खडेवात मारो॥

बात सुनत रिस भरयो महावत तुमहिं कहा इतनो रे गारो । यादत वडे शूरकी नाँई अवहिं लेतहौं प्राणतुम्हारो॥वारनहिं करौंवारनसहितपटकिहौं वावरेयातकहि मुखसँभारो॥दिमरिजाइगो वारन-हिं छोडिदे वदत वलराम तोहिं वारवारो॥वात मेरी मान गर्ववोलेकहा काल किनिदेखि इतरात कोरावाम कर गहि शुंडि डारिहौं अमरपुर हांक दे तुरत गजको हँकारो॥ वाजसो टूटि गजराजहां-क्रत परयो मनो गिरि चरण धरि लपकिलीन्हें।वारि वांधे वीर चहूँघा देखतहि वज्रसमथाप वल कुंभ दीन्हों॥कूक पारयो लपकिर्घोंचमनडरयो मनुगंडमधि रंध्र झरवोसुखानो॥क्रोधगजपालके ठिठकिहाथीरह्यो देतअंकुश मसकि कहा सकानो ।वहुरितातो कियोडारितिनपरदियोआयलपटे सुतहु नंदकेरे।सूर प्रभु श्यामवलराम दोउइते उतवीच करि नाग इतउतहि टेरे९०॥राग गुंडमलार॥ क्रोध गजराज गजपाल कीन्हों। गरजि घुमरात मद मार गंडनि स्रवत पवनते वेग तेहि समै चीन्हों ॥ चक्र सो भ्रमत चकृत भए देखि सब चहूँघा देखिए नंद ढोटा। चमकि गए वीर सव चका चौंधीलगी चित डरपे असुरघटा घोटा॥नीलअंवर धौल वरन वलरामवनि पीतअंवर श्याम-अंग शोभा।सूर प्रभुचरित पुरनारि देखति खड़ी महलपर आशिषा देतिलोभा॥९१॥कहतहलधर कह्यो मानि मेरो।अखिल ब्रह्मण्डके नाथ हैं छाँवरे गज मारि जीव अब लेहुँ तेरो॥ यहसुनतरिस भरयो दौरिवेको परयो सूँडि झटकत पटकि कूक पारयो । वात मन करत लैडारिहौं दुहुँनि-पर दियो गज पेलि आपुन हँकारयो॥ लपकि लीन्हों धाइ दवकि उर रहे दोउ भ्रम भयो गजहि कहाँ गए वेधौं।अरयो दै दशन धरनी कढे वीरदोउ कहत अवहीं याहि मारकैधौं।खेलिहैं संगदै हाँक ठाढे भए श्यामपाछे राम भेय आगे।उतहि वे पूंछ गहिजात ए शुंडि छ्वैफिरतगज पास चहुँ हँसन लागे॥नारि महलन खरीसवै अतिही डरीं नंदकेनंदगज दोउ खिलावैं।सूरप्रभुश्यामवलराम देखति तृपित वचैं इक वेर विधिसों मनावैं ॥ ९२॥खेलतगजसंग कुँवरश्यामरामदोऊ।क्रोधद्विरद व्याकुलअति इनको रिस नेक नहीं चकृत,भएयोधा तहँ देखत सवकोऊ ॥ श्याम झटकि पूछ लेत हलधर कर शुंडिदेत महलमहल नारिचरित देखत यह भारी। ऐसेआतुरगोपाल चपल नैन मुखरसाल लिए करन लकुट लाल मनो नृत्यकारी । सुरगण व्याकुल विमान मनमन यहकरत ज्ञान बोलत यह वचन अजहुँ मारयो नहिं हाथी । सूरज प्रभु श्याम राम अखिल लोकके विश्राम सुर पूरन काम करन नाम लेत साथी ॥ ९३ ॥ राग सोरठ ॥ तब रिस कियो महावत भारी । जो नहिं आजु मारिहौं इनको कंस डारिहै मारी ॥ अंकुश राखि कुंभपर करष्यो हलधर उठे हँकारी। धायो पवनहुते अति आतुर धरणी दंत खँभारी ॥ तवहारिपूंछ गह्योदक्षिणकरकयुकओरशिरवारी। पटक्यो भूमि फेरि नहिं मटक्यो लीन्हें दंत उपारी॥ दुहुँ कर द्विरददशन इकइक छवि निरखति पुर नरनारी । सूरदास प्रभु सुरसुखदायक मारयो नाग पछारी ॥९४॥ दूसरी लीला हस्तीवध॥राग मारू नवल नँदनंद रँगद्वार आए । तडितसे पीतपट काछनी कसे कटि खौर चंदन किये सुखसुहाए॥ निरख्यो रूप जिन भयो सोइ सोइ मगन मातु पितुको पुत्रभाव आयो । ब्रह्म पूरण मुनिन परम सुंदर त्रियन कालके रूप सुभटन जनायो ॥ मातुलको देखि हरि कह्यो यों विहँसिकरि पंथतेटारि गजको महावत ।दियो फटकारि उन धारि अभिमान मन शुंडते दौरि गह्यो ताहि आवत ॥ दंत युग विवि युग चरन भीतर निकसि युग करन पूँछको गह्योजाई । महाकरिसिंहभेंटतमहाउरगको महावल गरुड ज्यों गहत धाई ॥ कवहुँ लेजात उत इते ल्यावत कवहुँ भ्रमत व्याकुल भयो मंतुल भारी।गयँद ज्यों गेंदको पटकि हरि भूमिसों दंतदोउ [लये] निजकर उपारी ॥ भभकिकै दंततें

रुधिरधारा चली छीट छवि वसनपर भई भारी। केसरी चीर पर अबिर मानो परयो खेलते फागु डारयो खिलारी॥ मातुलहु तजि प्राण गयो निर्वाणको सिद्ध गंधर्व जैजै उचारें। देखि लीलाललित सूरके प्रभूकी नारि नर सकल तन प्राण वारें॥९५॥ राग नट॥ नवल नँदनंद रँगभूमि आए। संग बलधमअभिराम शशिसुर ज्यों निरखिआपनेछबिसों सोहाए॥ द्वारगजराज लखि पीतपटकटि कसत मंद मृदु हँसत अति लखत भारी। कछु न कहिपरति तब जबहि फिरि हेरिके छबीली हरपि पति आसवारी॥ गर्वको गिरि मनो चलत पाँइन तेसें कुवलया प्रबल रिस सहित धायो। बालके मूस ज्यों पूंछ धरि खेलिए तैसे हरि हाथ हाथी गिरायो॥ गहि पटकि पुहुमिपर नेकनहिं मटकियो दंत मनु मृणालसे ऐंचि लीन्हें। कंध धरि चले दोउ वीर नीके बने निरखि पुरजन प्राण वारि दीन्हें॥ शैलसे मल्ल वे धाइ आए शरन कोउ लगे गोड पर थरथराने। कंसके प्राण भयभीत पिंजरा जैसे नव विहंगम मरत फरफराने॥ मधुपुरी युवति सब कहति अति रति भरी देखु री देखु अँग अँग लोनाई। सुनत श्रवणन रही देखि री तेइ सखी मधुर मूरति सुरतिपति न पाई॥ धन्य राधा केलि वृंदावन कुंज है सबै देखो माई हम अभागी। धन्य ब्रज बाल नंदलाल गिरिधरनको नित्य निरखि रहति प्रेम पागी। अबलसों अबल भए सबलसों सबल भए ललितसों ललित तनु मनु प्रकाशी॥ सूर प्रभु ज्ञान करि ध्यान जिन जैसि लई मात पितु दुःख डारे विनाशी॥९६॥ राग बिलावल॥ देखो री आवत वे दोऊ। मणि कंचनकी राशि ललितअति यह उपमा नहिं कोऊ॥ कैधौं प्रात मानसरवरते उडि आए दोउ हंस। इनको कपट करै मथुरापति तो ह्वैहै निर्वंस॥ जिनके सुने करत पुरुषारथ तेई हैं की और। सूर निरखि यह रूपमाधुरी नारि करतमनडोर॥९७॥ राग कन्हरो॥ सजनी येईहैंगोपालगुसाँई। नंदमहरके ढोटा जिनकी सुनियत बहुत बडाई॥ नैनन रूप निरखि देखौं बडभाग परम निधिपाई। चंद्रचकोर मेघ चातकलौं अवलोको मनलाई॥ सुंदर श्याम सुदेश पीतपट भुजचंदनचरचितकीन्हें। नटवर भेष धरे मनमोहन गज युग दशन कंध धरिलीन्हें॥ नूपुर चारुचरणकटिकिंकिणिवनमालाउरपर सोहै। कर कंकण मणि कंठ मनोहर सो को युवति जो न मनमोहै॥ परमरुचिर मणिकंठकिरनगन कुंडल मुकुट प्रभा न्यारी। विधुमुख मृदु मुसकानि अमृतसम सकल लोक लोचन प्यारी॥ सत्य शील संपन्न सु मूरति सुर नर मुनि भक्तन भाए। सूरदास प्रभु दुष्टविनाशन गोकुलतेमथुरा आए॥९८॥ राग बिलावल॥ एइ सुत नंदअहीरके। मारयोरजकवसनसबलूटेसंगसखाबलवीरके॥ कांधे धरि दोऊ जन आए दंत कुवलया धीरके। पशुपति मंडलमध्य मनो मणि क्षीरधि नीरधि नीरके॥ उडि आए तजि हंस मात मनो मानसरोवरतीरके। सूरदास प्रभु तापनिवारण हरन संत दुख पीरके॥९९॥ राग कल्याण॥ हँसतहँसत श्याम प्रबल कुवलया मारयो। तुरत दांत लिए उपारि कांधेपर चले धारि निरखत नर नारि मुदित चकृत गज संहारयो॥ अतिहीकोमलअजान सुनत नृपति जिय सकान तनु विनु जनु भयो प्राण मल्लनिपै आए। देखतही शंकि गए काल गुण विहाल भए कंसडरन घेरिलिए दोउ मन मुसकाए॥ असुर वरी चहूं पास जिनके बशभुव अकाश मल्लनपै आए करि नास जिय विचारे। सबै कहत भिरहु श्याम सुनत रहत सदा नाम हारिजीति घरहीकी कौन काहि मारे॥ हँसि बोले श्याम राम कहा सुनत रहे नाम खेलनको हमहिं काम बालकसंग डोले। सूर नंदके कुमार यह है राजस बिचार कहा कहत बार बार प्रभु ऐसें बोले॥ २६००॥ रंगभूमि आए अति नंदसुवन वारे। निरखति ब्रजनारि नेह उरते

न विसारे॥देखो री मुष्टिक चाणूर इनि हँकारे।कैसे ये बचैं नाथ साँस उरध डारे॥ रजक धनुष जोधा हति दंत गज उपारे। निर्दय इह कंस इनहिं चाहतहै मारे॥कहां मल्ल कहां अतिहिकोमल ए भारे। कैसी जननी कठोर कीन्हें जिन न्यारे॥ बार बार इहै कहति भरि भरि दोउ तारे। सूरज प्रभुबल मोहन उरते नहिं टारे॥१॥राग गुंडमलार॥बोलि लीन्होंकंस मल्ल चाणूरको कहारेकरत क्यों बिलम कीन्हों। वंश निर्वंश करिडारिहौं छिनकमें गारि देदे ताहि त्रास दीन्हों ॥ शत्रु नान्हों जानि रहे अबलौं बैठि जन आपनेको मारिडारो । द्विरदको दंत उपठायतुम लेतहै उहे बल आजु काहेन सँभारो॥भली नहिं करी तुम राखि राख्यो इनहिं इहै कहि तुरत वाको पठायो । कछु क्रोध कछु त्रास कछु सोच कछु शोक करे साहस रंगभूमि आयो ॥ परस्पर कहि सबन नृपति त्रास्यो मोहिं सुनहु रे वीर अबलौं न मान्यो । की मरौ की मारिडारियो दुहुँनिको होइ सो होइ यह कहत रान्यो॥निरखि दोउ वीर तनु डरे मनहीं महा इहै बुधि करे ज्यों नाशकीजै। लखति पुरनारि प्रभु सूर दोउ मारिहैं कहतिहैं नृपतिपै सुयश लीजै॥ २ ॥राग धनाश्री॥कहति पुर नारि यह मन हमारें। रजक मारचो धनुष तोरि द्वै खंड करि हत्यो गजराज त्यों इनहु मारैं॥ तृपित अति नारि सब मल्ल ज्योंज्यों कहैं लरत नहिं श्याम हमसंग काहे। परस्पर मत करत मारिडारो इनहिं लखत ए चरित निमिषौ न चाहे ॥ कहा हैहै दई होन चाहति कहा अबहिं मारत दुहुँन हमहि आगें।सूर करजोरिअंचल छोरि बीनवै बचैं ए आजुविधि इहैमांगें ३॥ ॥राग कल्याण॥देखो री मल्ल इनहिं मारनको लोरें।अतिही सुंदर कुमार यशुमति रोहिणी बार बिलखति यह कहति सबै लोचन जल ढोरें ॥ कैसेहु ए बचैं आजुपठए धौंकौनकाजनिठुरहियो घाम ताको लोभही पठाए। एतो बालक अजान देखो उनके सयान कहा कियो ज्ञान इहां काहेको आए ॥ कहाँ मल्ल मुष्टिकसे चाणूर शिलाभंजन कहत भुजा गहि पटकन नंदसुवन हरषैं । नगर नारि ब्याकुल जिय जानत प्रभु सूरश्याम गर्वहतन नामध्यान करिकरि वे हरषैं ॥४॥श्रीकृष्णवचन मल्लप्रति ॥ रागगुंडमलार॥ सुनौ हो वीर मुष्टिक चाणूर सबै हमहि नृप पास नहिं जान देहो। घेरि राखे हमहिं नाहिं बूझे तुमहिं जगतमें कहा उपहास लेहो ॥ सबै कैहैंइहै भली मति तुम यहै नंदके कुँवर दोउ मल्ल मारे। इहै यश लेहुगे जान नहिं देहुगे खोजही परे अब तुम हमारे॥ हम नहीं कहैं तुम मनहिं जो यह बसी कहतहौं कहा तें करैं कैसी। सूर हमतन निरखि देखिए आपुको बात तुम मनहिं यह बसी नैसी॥५॥रागगोंडी॥ जबही श्याम कही यह बानी। यह सुनिकै युवती बिलखानी॥मल्लन कह्यो हमहिं तुम देखौ । अपनो बल अपनो तनु पेखौ ॥ चितए मल्ल नंदसुत क्रोधा । कालरूप वज्रांगी जोधा॥ भुजा ऐंठि रज अंग चढायो । गांस धरे हरिऊपर आयो ॥ श्याम सहज पीतांबर बांधे।हलधर निरखत लोचन आधे॥तब चाणूर कृष्णपर धायो । भुजभुज जोरि अंग बल पायो ॥ प्रथम भए कोमल तन ताको।शिथिल रूप मनमें लस वाको॥तब चाणूर गर्व मन लीन्हों।दुर्गप्रहार कृष्णपर कीन्हों॥फूलहूते अति श्रम करिमान्यो।तेहि अपने जिय मारचो जान्यो॥हरष्यो मल्लमारि भयो न्यारो।कहनलग्यो मुख अहिर विचारो ॥ हँसत श्याम जब देखत ठाढे। सोच परचो तब प्राणनि गाढे॥फिरि कहिकहि हरि मल्ल हुंकारचो । मनु कंदरते सिंह पुकारचो ॥ हांक सुनत सब कोउ भुलान्यो । थरथराइ चाणूर सकान्यो ॥ सूरश्याममहिमा तब जान्यो । निहचै मीचु आपनो आन्यो॥६॥राग धनाश्री॥ भिरचो चाणूरसों नंदसुत बाँधि कटिपीतपट फेंट रणरंग राजे।द्विरद रद कर कलित भेष नटवर ललित मल्ल उर सच्छि तल ताल बाजें॥ पीन भुज लीन जे

शिर धराइ चमर अपने कर ढारे ॥ ठाढे आधीन भए देवदेव आपें । अपने जनकोप्रसाद सारी शिर राखें ॥ मोकों प्रभु इती कहा विश्वंभर स्वामी । घटघटकी जानतहो तुम अंतर्यामी ॥ तों नृप कहत कहातुमको यह कर्ता । सेवा तुम जिती करी पुनि देहों तेती ॥ रजक धनुष गजमछन कंस मारि काजा। सूरज प्रभु कीन्हों तब उग्रसेन राजा॥ राग बिलावल ॥ उग्रसेनको दियो हरि राज । आनँदमगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्रीव्रजराज॥ जहांतहांते यादव आए डरडरे जे गए पराइ। मागध सूर करत सब अस्तुति जै जै जै श्रीयादवराइ ॥ युगयुग विरद इहे चलिआयो भए बलिके द्वारे प्रतिहार।सूरदास प्रभु अज अविनाशीभक्तन हेतुलेतअवतार॥२०॥ राग बिलावल ॥ मथुरा लोगनि बात सुनी यह उग्रसेनको राज दियो । सिंहासन बैठारि कृपा करि आपु हाथसों चमरलियो ॥ मात पिताको संकट हरिहैं देवन जैध्वनि शब्द कियो । रानी सबै मरतते राखीं इनते प्रभु नहिं और बियो ॥ अबहीं सुनि वसुदेव देवकी हरषित हेहै दुहुँनि हियो । सूरदास प्रभु आइमधुपुरीदरशनतेपुरलोगजियो२१ ॥ राग रामकली ॥मथुराकेलोगनसुखपाए।नटवर भेषकाछनी काछे नँदनंदन सँग अक्रूरके आए ॥ प्रथमहिं रजक मारि अपनेकर गोपवृंद पहिरगए । तोरि धनुष लीला नटनागर तब गजखेल खिलाए।रंगभूमि मुष्टिक चाणूर हति भुजबल तार बजाए । नगरनारि देहिं गारि कंसको अजगुत युद्ध बनाए ॥ बरषहिं सुमन अकाश महाध्वनि देव दुंदुभी बजाए । चढिचढि अमर विमान परमसुख कौतुकअमर छाए ॥ कंस मारि सुरराज काज करि उग्रसेन शिरनाए।मात पिता बंदितेछोरिहैं सूर सुयशगुणगाए ॥२२ ॥ राग रामकली ॥मथुराघरघरनि यहबात। रजक धनुष गज मल्ल मरे तनकसे नँदतात ॥ धन्य माता पिता धनि वह धन्यधनि वह राति । जब लियो अवतार धरणी धन्य धनि सोभात ॥हंसकेसे जोट दोऊ असुर कियो निपात । सूर जोधा सबैमारे कहाजानतघात२३॥ अध्याय ॥४१॥ वसुदेवदर्शन छु बिजा गृह आगमन नंदविदा गुरुगुनदेहु॥ सुन्यो वसुदेव दोउ नंदसुवन आए । त्रियासों कहत कछु सुनतिहै री नारि रातिहू सुपन कछु ऐसे पाए ॥ गए अक्रूर तिहिं नृपति माँगे बोलि तुरत आए आनि कंस मारे । कहा पिय कहत सुनिहै बात पौरिया जाय कैहै रहौ मट धारे ॥ दिये लोचन ढारि नारि पति परस्पर कहां हम पाप करि जन्म लीन्हो । सात देखत बधे एक व्रज दुरि बच्यो इतेपरबोधिहमपंगुकीन्हो ॥मारि डारे.कहा बंदिको जीवन धिग मीचहमको नहीं मनन भूल्यो । मरे वह कंसनिबंसविधना करै सूरत्योंहू होइ निर्मूल्यो॥२४॥ राग [illegible]

दुःख सकल जग जोवहु हो ॥ जल [illegible]

दुख गर्व प्रहारी ॥ कबहुँ प्रगट यै होइँगे कृष्ण तुम्हारे तात। आजु कालिह हरि आइहैंयहसपनेकी बात ॥ अबजिनि होहि अधीर कंस यम आइ तुलानो । देखत जाइ बिलाइ झार तिनुका करि जानो ॥ ऐसो सपनो मोहिं भयो त्रिया सत्यकरिमानि । त्रिभुवनपति तेरे सुवनहैं तोहिं मिलेंगे आनि॥यह अंतर हरि कह्यो मात पितु कहां हमारे । तहां लैगए अक्रूर श्यामबलराम पधारे । वज्रशिला द्वारे दियो दरशनते गयो छूटि । सहज कपाट उघरिगए ताला कूंची टूटि ॥जोदेखे वसुदेव कुँवर दोउ काके ढोटा आए। दरश दियो तेहि प्रेम प्रथम जो दरश दिखाए ॥ धाइ मिले पितु मातको यह कहि में निजुतात।मधुरे दोउ रोवन लगे जिनि सुनि कंसडरात॥तुरत बंदिते छोरि कह्यो मैं [illegible] मार्यो [illegible] सुभट संहारि मल्ल कुवलया पछार्यो ॥ जिय अपने जिनि डर करौ [illegible] । दुख [illegible]रौ अब सुख करौ अब काहे

पछतात ॥ निहचै जननी जानि कंठधरि रोवन लागी । तब बोले बलराम मातु तुमते को भागी ॥ बारबार देवै कहै कबहूं गोद खिलाए नाहिं । द्वादश बरस कहांरहे मातपिताबलि जाहिं ॥ पुनि पुनि बोधत कृष्ण लिखीनहिं मेटै कोई । जोइ जोइ मनकी साध कहौ मैंकरिहौं सोई ॥ जे दिन गए सु ते गए अबसुख लूटहु माततात नृपति गर्ग जननि जाके मोमो तात॥ जो मन इच्छा होइ तुरत देओ मैं करिहौ । गगन धरणि पाताल जात कतहूं नहि डरिहौं ॥मात हृदयकी जब कही तब मन बढ्यो अनंद ।महर सुवन गेंतोनहीं मैं वसुदेवकोनंद॥राजकरौंदिन बहुत जानिको कहैं अब तुमको। अष्टसिद्धि नवनिद्धि देहूं मथुरा घर घरको॥रमा सेवकिनी देउं करि करजोरै दिन याम॥अब जननी दुख जिनिकरौ करौं जु पूरनकाम॥धनि यदुवंशी श्यामचहूं युग चलत बडाई । शेष रूप मैं राम कहत नहिं बात बनाई॥सूरज प्रभु दनुकुलदहन हरन करन संसार । ते पाए सुत तुमहिं करि करौं जु सुख विस्तार ॥२५॥राग देवगंधार॥ मेरे माथेराखोचरन। दीनदयालु कंस दुखभंजन उग्रसेन दुखहरन॥परम मुदित वसुदेव देवकी गई पाइन परन । मेरो दोष मेटि करुणा करि लैचल गोकुल घरन ॥ ते जन पार भए मनमोहन जे आए तुव शरन । आए सूरदासके जीवनभवजलनवका तरन॥२६॥रागरामकली॥ तब वसु देव हरषित गात।श्यामरामहिं कंठ लाए हरषि देवै मात । अमर देव दुंदुभि शब्द भयो जैजैकार ॥ दुष्टदलि सुखदियो संतन ए वसुदेवकुमार । दुखगयो बहि हरष पूरन नगरके नर नारि ॥ भयो पूरब फल संपूरन लह्योसुत देतारि।तुरत विप्रन बोलि पठए धेनुकोटि मंगाइ।सूरकेप्रभुब्रह्मपूरण पाइ हरषेराइ॥२७॥रागकाफी॥ आजुहो निसान बाजे वसुदेव राइके । मथुराके नर नारि उठे सुखपाइके॥अमर विमानसब कहैं हरषाइके । फूले मात पिता दोऊ आनंद बढायके॥ कंसको भँडार सब देत हैं लुटाइके । धेनु जे संकल्प राखीं दई ते गनाइके॥तांबे रूपे सोने सजि राखी वे बनाइके। तिलक विप्रन बंदि दई वे दिवाइके । मागध मंगन जन लेत मन भाइके॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि आगे ठाढी आइके। सब पुर नारि आई मंगलन गाइके ॥ अंबर भूषण पठै दई पहिरायके। अखिल भुवन जन कामना पुराइके । पुरजन गन धनु देतहैं लुटाइके ॥ सूरजन दीन द्वारे ठाढो भयो आयके।कछू कृपाकरि दीजेमोहूको दिवाइके॥२८॥ यज्ञोपवीतउत्सव ॥ राग बिलावल॥ विसर्‍योकुलव्यवहारविचार।हरिहल-धरको दियो जनेऊ करि षटरस जेवनार॥जाके श्वासउसास लेतमें प्रगटभए श्रुति चार। तिन गायत्री सुने गर्गसों प्रभु गति अगम अपार॥ विधिसो धेनु दई बहु विप्रन सहित सर्व लंकार । यदुकुल भयो परम कौतूहल जहां तहां गावत नरनार ॥ मात देवकी परम मुदितहै देत निछावर वारंवार। सूरदासकी इहै अशीशहै चिरजीवो दोउ नंदकुमार ॥ २९ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु परम दिन मंगलकारी । लोक लोकका टीको आयो मुदित सकल नर नारी ॥ शिव सुरेश शेष औरहु को गनै चतुरानन कर थारी ।हरकर पाट बंध नेवछावरि करत रतन पटमारी ॥ बाजतढोल निशान शंख रव होत कुलाहल भारी।अपने अपनेलो कचलेमन सूरदास वलिहारी ॥ ३० ॥ रागविलावल ॥जब यदुपतिकुलकंसहि मार्‍यो। तिहूंभुवन भयो शोर पमार्‍यो॥ तुरत माचते धरनि गिरायो । ऐसेहि मारत बिलम न लायो ॥ केश गहे पुहमीघिसटायो ।डारि यमुनके बीच बहायो ॥ जा कंसहि तिहु भुवन डराई ।ताको मार्‍यो हलधर भाई ॥ जाकेधनुष टँकोरत हाथा । आसन छाँडि भजे सुरनाथा ॥ मारत नाहि बिलंब न कीन्हो।उग्रसेनकोराजम दीन्हों ॥ जैहो जै वसुदेवकुमारा । जै होजै तुम नंद दुलारा ॥ सुर देवी देवै धनि मैया ।धनि

लक्ष रंजित हृदय नीलवन शीत तनु तुंग छाती । देखि रहीं भेष अति प्रेम पुरनारि सब वदति तजि भीर रतिरीतिराती ॥ मत्त मातंग बल अंग दंभोलि दल काछनी लाल गजमालसोहे । कमल-दलनैन मृदुवैन वंदित वदन देखि सुरलोक नरलोक मोहे ॥ बाहुसों बाहु उर जानुसों जानुकी चरणसों [illegible] पाणि धरि धरनिमेलें ॥ चित्तसों चित्त [illegible] पुहानि तजिकानियदुराजकी वचकि उठि फूलि वसुदेवरैया ॥ ऐसेही राम अभिराम सुर शेष वपु गहि वमुष्टिक महामल्लमारयो । तोरि निजजनक उर केश गहि कंसनर सूर हरि मंचते दुष्ट डारचो ॥ ७ ॥ राग भैरौं ॥ श्याम बलराम रँगभूमि आए । मली लखि रूप सुंदर परम देखि यों प्रबल बलजानि मनमें सकाए ॥ कह्यो गजकुवलिया हयो भयो गर्व तुम जानि परिहे भिरत सँग हमारे । कालसों भिरें हम कौन तुम बापुरे पै हृदय धर्म रहियो विचारे ॥ श्याम चाणूर बलवीर मुष्टिक भिरे शीशसों शीश भुजभुज मिलावैं । वेउनेगहत वे दौरि उनको गहत करत बल छल नहीं दांव पावैं ॥ धरि पछारयो दोउ वीर दुहुँ मल्लको हरषि कह्यो सुरनए नंद दोहाई । सूर प्रभु परस लहि लह्यो निर्वान तेहि सुरन आकाश जयध्वनि सुनाई ॥ ८ ॥ राग गुंडमलार ॥ गह्यो कर श्याम भुजमल्ल अपने धाइ झटकि लीन्हों तुरत पटकि धरनी । भटकअति शब्द भयो खुटक नृपके हिए अटक प्राणन परयो चटक करनी ॥ लटकि निरखन लग्यो मटक सब भूलिगयो हटकि गयो गटकि रह्यो मीचु जागी ॥ मुष्टिके मरदि चाणूर चुरकुट करयो कंसको कंप भयो उई रंगभूमि अनुरागरागी । मल्ल जेजे रहे सबै मार तुरत असुर जोधा सबै तेउ सँहारे ॥ धाइ दूतन कह्यो मल्लकोउ नहिं रहे सूर बलराम हरि सब पछारे ॥ ९ ॥ अध्याय ॥ ४४ ॥ कंसवधन उग्रसेनराजहेतु राग कल्याण ॥ मारे सब मल्ल नंदके कुमार दोऊ । कोट सदन भूलिगए हांकदेत चकृत भए लपकिलपकि हए तुरत उबरयो नहिं कोऊ ॥ जोधा चितवतहि मरे हहरि हहारि धरनि परे ज्वाला ज्यों जरे डरे सब भए बिनप्राना । तारागन लिपितहोत जैसे दिनके प्रकाश यह सुनि नृप भए निराश रह्यो नहीं ज्ञाना ॥ गलबल सब नगर परयो प्रगटे यदुवंशी । द्वारपाल इहै कही जाधाकोउ बचे नाहिं कांधेगजदंत धरे सूरब्रह्मअंशी ॥ १० ॥ राग गुंडमलार ॥ नंदके नंद सबमल्ल मारे निदरि पौरिया जाय नृपपै पुकारे ॥ सुनत ठाढो भयो हांकतिनको दयो दनुजकुल दहन तातन निहारे । सुभट बोले सबै आइहै पुनि कवै मारिडारे सबै मल्ल मेरे । अचगरी करि रहे वचन एई कहे डर नहीं करत सुत अहिरकेरे ॥ रंगमहलनि खरयो कहा रे तुम करयो ढाल कर खड्ग तहांते चलावे । जियत अब जाहुगे बहुरि करिहो राज नहीं जानत सूर कहि सुनावे ॥ ११ ॥ राग धनाश्री भले रे नंदके छोहरा डर नहीं कहा जो मल्ल मारे विचारे । बारही बार दे हांक ये गए कहां आपने सम असुर ते हँकारे ॥ पौरि गाढी करो द्वार वीरनि कहे आप ललकारि मुख गारि दैकै । बहुरि घर जाहुगे धेनु दुहि खाहुगे जान देहौं तुमहिं प्राण लैकै ॥ कोउ नहिं रे वहां लौटिआवत कहां पग द्वैक धरणि हरि सन्मुख आए । चकृत ह्वैकै गयो मीच दरशन भयो कहा रे मीच यह कहि सुनाए ॥ श्याम बलरामको नाम लैलै कहत मीच आई लेन तुमहिं वाजैं । सूर प्रभु देखि नृप क्रोध पूरी धरी कस्यो कटिपीतपट देवराजै ॥ १२ ॥ रागमारू ॥ कंध दंत धरि डोलत रंगभूमि बलहरि । उज्वल सांवल वपु शोभित अंग फिरत फरि ॥ द्वारे पैठत कुंजर मारयो डुलाय धरनी डारयो । मुष्टिक चाणूर शिल सौशल संहारयो ॥ जिहिं ज्यों जिय रूप विचारयो तैसोई रूप धारयो । देवकी वसुदेव जीयको संताप निवारयो ॥ मल्ल सुभट परे मगार कृष्णको

परिसाने। देखि यह पराक्रम तव कंस जिय बिलखाने ॥ दुःखदलन अभय दान करें करन दाने। जो जिहि जबहिं कहैं सबे गोवर्धनराने ॥ कंस सुनि अचेत भयो बजनलगेबाजा। कहि अशीश गगन उठे सिद्ध सुर समाजा ॥ सुभट रहे देखतही रोके दरवाजा। सूर नंदनंदन गए जहाँ कंस राजा॥ १३॥ राग मारू ॥ नवल नँदनंद रँगभूमि राजें। श्यामतन पीतपट मनो घनमें तडित मोरके पंख माथे विराजें॥ श्रवण कुंडल झलक मनो चपला चमकि दृग अरुण कमलदलसे विशाला। भौंह सुंदर धनुप बाणसम शिर तिलक केश कुंचित शोभित भृंगमाला॥ हिरदय वनमाल नूपुर चरण लोल चलत गजचाल अति बुद्धि राजै। हंस मनो मानसर अरुन अंबुज सुथल निरखि आनंद करि हरपि गाजे॥ कुवलिया मारि चाणूर मुष्टिक पटकि वीर दोउ कंध गजदंत धारे। ढाल तरवारि आगे धरी रहिगई महलको पंथ खोजत न पावंत ॥ लातके लगत शिरतेंगयोमुकुट गिरि केश धरि लेचले हरपि सावंत। चारिभुज धारि तेहि चारु दरशन दियो चारिआयुध चहूँ हाथ लीन्हें ॥ असुर तजि प्राण निर्वाणपदको गयो विमलगति भई प्रभुरूप चीन्हें। देखि यह पुहुपवर्पा करी सुरन मिलि सिद्ध गंधर्व जे धुनि सुनाई ॥ सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहिपरत सुर नकी गति तुरत अक्रूर पाई॥ १४॥ राग मारू॥ देखि नृपतमकिहरिचमकितहांइगएदमकि लीन्हों गिरह बाज जैसे। धमकि मारयो घाउ गुमकि हृदये रह्यो झमकि गहि केश लैचले ऐसे ॥ ठेलि हलधर दियो झेलि तब हरि लियो महलके तरे धरणी गिरायो। अमर जयध्वनि भई धाक त्रिभुवन भई कंस मारयो निदरि देवरायो ॥ धन्य वाणी गगन धरणि पातालधनिधन्यहो धन्य वसुदेवताता। धन्य अवतार सुर धरनि उपकारको सूर प्रभु धन्य बलराम भ्राता ॥ १५ ॥ राग बिलावल ॥ जय जय ध्वनि तिहुँलोक भई। मारयोकंसधरणिउद्धारयोओकओकआनंदमई॥ रजक मारिकै दंड बिभंज्यो खेल करत गज प्राण लियो। मल्ल पछारि असुर संहारे तुरत सबनि सुरलोक दियो ॥ पुर नरनारीको सुख दीन्हों जो जैसो फल सोई लह्यो। सूर धन्य यदुबंश उजागर धन्यधन्य ध्वनि घुमरि रह्यो ॥ १६॥ राग गुंडमलार ॥ हर्प नर नारि मथुरा पुरीके। सोच सबको गयो दनुजकुल हयो तिहुँ भवन जैजयो हरप कूवरी के ॥ निदरि मारयो कंस प्रगट देखत सबे अतिहि दिन अल्प नँद भए ढोटा। नैन दोउ ब्रह्मसे परम सोभातसे भक्तको जैसे शुभ हंस जोटा ॥ देवदुंदुभि बजी अमर आनँदभएपुहुपगण बरपहीं चैन जान्यो। सूरवसुदेवसुत रोहिणी नंद धनिधनिमिल्योभुवभारअखिलजान्यो॥ १७॥ राग रामकली॥ तुरत मारयो कंस देवनाथा। निदरि मारयो असुर पूतना आदिते धरणि पावन करी भई सनाथा ॥ लोक लोकन विदित कथा तुरतहि गई करन अस्तुतिहि जहँ तहां आए। देवदुंदुभि पुहुपवृष्टि जै ध्वनि करें दुष्ट यह मारि सुरपुर पठाए॥ केश गहि करपि यमुनाधार डारिदे सुन्यो नृपनारि पति कृष्ण मारयो। भई व्याकुल सबे हेतु रोवन लागीं मरनकी तुरत जोहत बिचारयो॥ गये तहं श्याम बलराम बोधी सबे कहति तब नारि तुम करी नैसी। नृप सुनहु बाम इह काम ऐसोइ रह्यो जानि यह बात क्यों कहति ऐसी ॥ मरति काहे कहा तुमहिंको यहभई जानि अज्ञान तुम होति काहे। सूर नृपनारिहरिवचन मान्यो सत्यहरप ह्वैश्यामसुखसवनिचाहे॥ १८॥ ॥ राग कल्याण ॥ रानिन परबोधि श्याम महलद्वार आए। कालनेमिवंश उग्रसेनसुनतधाए॥ झुकि चरण परयो आइ त्राहित्राहि नाथा। बहुतै अपराध परे छिनहुमें सनाथा॥ महाराज कहिश्रीमुख लियो उर लाई। हमको अपराध क्षमहु करी हम ढिठाई ॥ तबहींसिंहासन पाँउग्रसेनधारे। छत्र

शिर धराइ चमर अपने कर ढारे ॥ राढे आधीन भए देवदेव आपे । अपने जनको प्रसाद सारी शिर गरे ॥ मोको प्रभु इती कहा विश्वंभर स्वामी । घटघटकी जानतहौ तुम अंतर्यामी ॥ तौ नृप कहत कहातुमको यह कर्ती । सेवा तुम जिती करी पुनि देहौं तेती ॥ रजक धनुष गजमल्लन कंस मारि काजा । सूरज प्रभु कीन्हौ तब उग्रसेन राजा ॥ राग बिलावल ॥ उग्रसेनको दियो हरि राज । आनँदमगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्रीव्रजराज ॥ जहाँतहाँते यादव आए हरेहरे जे गए पराइ । मागध सूर करत सब अस्तुति जै जै जै श्रीयादवराइ ॥ युगयुग विरद इहै चलिआयो भए वलिके द्वारे प्रतिहार । सूरदास प्रभु [illegible]
मथुरा लोगनि बात सुनी यह उग्रसेनवं [illegible]
चमरलियो ॥ मात पिताको संकट हरि [illegible]
प्रभु नंदि ओर नियो ॥ अबहीं सुनि वसुदेव देवकी हरपित हृदै दुहूँनि हियो । सूरदास प्रभु आइमधुपुरीदरशनतेंपुरलोगजियो २१ ॥ राग रामकली ॥ मथुराकेलोगनसुखपाए नटवर भेप काछनी काछे नंदनंदन सँग अक्रूरके आए ॥ प्रथमहि रजक मारि अपनेकर गोपवृंद पहिराए । तोरि धनुष लीला नटनागर तब गजखेल खिलाए ॥ रंगभूमि मुष्टिक चाणूर हनि भुजबल तार बजाए । नगरनारि देहि गारि कंसको अजगुन युद्ध बनाए ॥ बरषहिं सुमन अकाश महाध्वनि देव दुंदुभी बजाए । चढिचढि अमर बिमान परमसुख कौतुकअमर छाए ॥ कंस मारि सुरराज काज करि उग्रसेन शिरनाए । मात पिता बंदितेछोरिहैं सूर सुयशगुणगाए ॥ २२ ॥ राग धनाश्री ॥ मथुराघरघरनि यहबात । रजक धनुष गज मल्ल मारे तनक से नंदतात ॥ धन्य माता पिता धनि यह धन्यधनि यह गाति । जब लियो अवतार धरणी धन्य धनि सोमान ॥ हंसकंस जोट दोऊ असुर कियो निपात । सूर जोधा सबैमारे कहाजानतबात २३ ॥ अध्याय ॥ ८५ ॥ वसुदेवदर्शन ह्वै बन्दी गृह आगमन नंदविदा युद्धप्रसंग ॥ सुन्यो वसुदेव दोउ नंदसुवन आए । त्रियासों कहत कछु सुननिहै री नारि रातिहू सुपन कछु ऐसे पाए ॥ गए अक्रूर तिहि नृपति माँगे बोलि तुरत आए आनि कंस मारे । कहा पिय कहत सुनिहै बात पौरिया जाय कैहै रहौ मए धारे ॥ दिये लोचन ढारि नारि पति परस्पर कहा हम पाप करि जन्म लीन्हों । सात देखत वधे एक व्रज दुरि बच्यो इतेपरयौ विहमपंगुकीन्हों ॥ मारि डारे कहा बंदिको जीवन धिग मीच हमको नहीं मनन भूल्यो । मरे वह कंस निवंस विधना करे सूरक्योंहू होइ निर्मूल्यो ॥ २४ ॥ राग जैतश्री ॥ इहै कहत वसुदेवत्रिया जिनि गेवहु हो । भाग्यविवशसुख दुःख सकल जग जोवहु हो ॥ जल दीन्हेंकरआनि कहतमुखधोवहुनारी । कहियतहैगोपालहरन दुख गर्व प्रहारी ॥ कवहुँ प्रगटवे होइँगे कृष्ण तुम्हारे तात । आजु काल्हि हरि आइहैंयहसपनेकी बात ॥ अबजिनि होहि अधीर कंस यम आइ तुलानो । देखत जाइ बिलाइ झार तिनुका करि जानो ॥ ऐसो सपनो मोहिं भयोत्रिया सत्यकरिमानि । त्रिभुवनपति तेरे सुवनहैं तोहिं मिलेंगे आनि ॥ यह अंतर हरि कह्यो मात पितु कहां हमारे । तहां लेगए अक्रूर श्यामबलरामे पधारे । वज्रशिला द्वारे दियो दरशनते गयो छूटि । सहज कपाट उघरिगए ताला कूंची टूटि ॥ जोदेखे वसुदेव कुँवर दोउ काके ढोटा आए । दरश दियो तेहि प्रेम प्रथम जो दरश दिखाए ॥ धाइ मिले पितु मातको यह कहि मैं निजुतात । मधुरे दोउ रोवन लगे जिनि सुनि कंसडरात ॥ तुरत बंदिते छोरि कह्यो मैं कंसहि मारयो । योधा सुभट संहारि मल्ल कुवलया पछारयो ॥ जिय अपने जिनि डर करौ मैं सुत तुम पितु मात । दुख बिसरौ अब सुख करौ अब काहे

पछतात ॥ निहचै जननी जानि कंठधरि रोवन लागी । तब बोले नलराम मातु तुमते को भागी ॥ बारबार देवै कहै कबहूं गोद खिलाए नाहिं । द्वादश बरस कहांरहे मातपिताबलि जाहिं ॥ पुनि पुनि बोधत कृष्ण लिखीनहि मेटै कोई । जोइ जोइ मनको साध कहौ मेंकरिहौं सोई ॥ जे दिन गए सु ते गए अवसुख लूटहु मात।तात नृपति रानी जननि जाके मोसो तात ॥ जो मन इच्छा होइ तुरत देओ मैं करिहौं । गगन धरणि पाताल जात कतहूं नहि डरिहौं ॥मात हृदयकी जब कही तब मन बढ्यो अनंद ।महर सुवन गेंतौनहीं मैं वसुदेवकोनंद॥राजकरौंदिन बहुत जानिको कहैं अब तुमको। अष्टसिद्धि नवनिद्धि देंहुं मथुरा घर घरको॥रमा सेवकिनी दई करि करजोरै दिन याम।अब जननी दुख जिनिकरौ करौ जु पूरनकाम॥धनि यदुवंशी श्यामचहूं युग चलत बडाई । शेप रूप मैं राम कहत नहिं बात बनाई॥सूरज प्रभु दनुकुलदहन हरन करन संसार । ते पाए सुत तुमहिं करि करौ जु सुख बिस्तार॥२५॥राग देवगंधार॥ मेरे माथेराखोचरन। दीनदयालु कंस दुखभंजन उग्रसेन दुखहरन॥परम मुदित वसुदेव देवकी गई पाइन परन । मेरो दोष मेटि करुणा करि लैचल गोकुल घरन ॥ ते जन पार भए मनमोहन जे आए तुव शरन । आए सूरदासके जीवनभवजलनवका तरन॥२६॥रागरामकली॥ तब वसु देव हरपित गात।श्यामरामहिं कंठ लाए हरपि देवै मात । अमर देव दुंदुभि शब्द भयो जैंजैंकार ॥ दुष्टदलि सुखदियो सतन ए वसुदेवकुमार। दुखगयो वहि हरप पूरन नगरके नर नारि ॥ भयो पूरब फल संपूरन लह्योसुत देतारि।तुरत विप्रन बोलि पठए धेनुकोटि मँगाइ।सूरकेप्रभुब्रह्मपूरण पाइ हरपेराइ॥२७॥रागकाफी॥ आजुहो निसान बाजे वसुदेव राइके । मथुराके नर नारि उठे सुखपाइके॥अमर विमानसब कहैं हरपाइके । फूले मात पिता दोऊ आनंद बढायके॥ कंसको भँडार सब देत हैं लुटाइके । धेनु जे संकल्प राखीं लईं ते गनाइके॥ताँबे रूपे सोने सजि राखी वै बनाइके। तिलक विप्रन बंदि दई वै दिवाइकै । मागध मंगन जन लेत मन भाइके॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि आगे ठाढी आइके। सब पुर नारि आई मंगलन गाइकै ॥ अंबर भूषण पठै दई पहिरायकै। अखिलभुवन जन कामना पुराइकै । पुरजन गन धनु देतहैं लुटाइकै ॥ सूरजन दीन द्वारे ठाढो भयो आयकै।कछु कृपाकरि दीजैमोहूको दिवाइकै॥२८॥ यज्ञोपवीतउत्सव ॥ राग बिलावल॥बिसरयोकुलव्यवहारविचार।हरिहल-धरको दियो जनेऊ करि षटरस जेवनार॥जाके श्वास उसास लेतमें प्रगटभए श्रुति चार। तिन गायत्री सुने गर्गसों प्रभु गति अगम अपार॥ विधिसों धेनु दई बहु विप्रन सहित सर्व लंकार। यदुकुल भयो परम कौतूहल जहां तहां गावत नरनार ॥ मात देवकी परम मुदितह्वै देत निछावर बारंबार। सूरदासकी इहै अशीशहै,चिरजीवो दोउ नंदकुमार ॥ २९ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु परम दिन मंगलकारी । लोक लोकको टीको आयो मुदित सकल नर नारी ॥ शिव सुरेश शेप औरहु कौ,गनै चतुरानन कर थारी ।हरकर पाट बंध नेवछावरि करत रतन पटमारी ॥ बाजतढोल निशान शंख रव होत कुलाहल भारी।अपने अपनेलो कचलेमन सूरदास बलिहारी ॥ ३० ॥ रागबिलावल ॥जब यदुपतिकुलकंसहि मारयो। तिहूंभुवन भयो शोर पसारयो॥ तुरत माचते धरनि गिरायो । एैसहि मारत बिलम न लायो ॥ केश गहे पुहुमी घिसटायो । डारि यमुनके बीच बहायो ॥ जा कंसहि तिहु भुवन,डराई ।ताको मारयो हलधर भाई ॥ जाकेधनुप टँकोरत हाथा । आसन छोडि भजे सुरनाथा ॥ मारत नाहि बिलंब न कीन्हों।उग्रसेनकोराजम दीन्हों ॥ जे हो जै वसुदेवकुमारा । जे होजै तुम नंद दुलारा ॥ सुर देवी देवै धनि मैया ।धनि

यशुमति त्रिभुवनपति धैया ॥ धन्य अक्रूर मधुपुरी ल्याए । सुर अंमर जै जै ध्वनि गाए॥ दनुज वंश निरवंश कराए । धरनी शिरते भार गँवाए॥ मात पिता वंदिते छोराए॥ यहवाणीसुरलोक- नि गाए ॥ जो जैसेतैसे तेहिभाए।सूरज प्रभुसबकोसुखदाए॥२१ ॥ रागधनाश्री ॥ मथुरादिनदिन अधिक विराजै। तेज प्रताप राइ केशोको तीनिलोक पर गाजै ॥ कोटिक तीरथ पग पग जाके मधु विश्रात विराजै । करिअस्नान प्रात यमुनाको जियत मरत भभाजै॥श्रीविट्ठल विपुलविनोद विहारन ब्रजको वसिवो छाजै॥सूरदाससेवक उनहींकोकहत सुनतगिरिराजै॥ २२ ॥ कंसमारिसुर कारज किए । माता पितावंदिते छोराए दुख बिसरयो आनंद हिए॥उग्रसेनको धाय मिले हरि अभय अचल करि राज्यदियो । असुरवंश निरवंश छिनकमें ऐसो नहिकोउ औरवियो॥मिली कूवरी चंदन लैकै ऐसेहि हरिको नामलियो।सुनहु सूर नृप पास जाति है बीच सुकृतिअतिदरश दियो ॥२३॥ राग रामकली ॥ कूवरी पूरब तपकरि राख्यो । आएश्याम भवन ताहीके नृपतिमहल सब नाख्यो॥ प्रथमहि धनुष तोरि आवत हैं वीच मिली यह धाइ । तेहि अनुरागवश्यभएताके सो हित कह्यो न जाइ ॥ देव काज करि आवन कहि गए,दीन्होरूपअपार।कृपा दृष्टि चितवतही श्रीभई निगम न पावत पार ॥ हमते दूरि दीनके पाछे ऐसे दीनदयाल । सूरसुरनकरिकाज तुर- तही आवत तहां गोपाल ॥ २४ ॥ कियो सुरकाज गृह चले ताके। पुरुष अरु नारिको भेद भेदा नहीं कुलिन अकुलीन आवतहीं काके ॥ दासदासी श्याम भजनते हूजिए रमा मम भई सो कृष्ण दासी। मिली वह सूर प्रभु प्रेमचंदन चरचिकैमनो कियोतपकोटिकासी॥२५॥रागरामकली॥ भक्त वछल श्रीयादवराइ । गेह कूवरीके पगधारे जाति पाँति बिसराई ॥ पूरब भाग मानि तिन अपने चरण गही उठि धाई। सुरति रही नहिं गेह देहकी आनँद उर न समाई॥प्रभुगहि बाँहपास बैठारी सो सुखकह्यो न जाइ।सूरदास प्रभु सदा भक्तवश रंक न गनहि न राइ ॥२६॥राग नट ॥ कुबिजासदन आए श्याम । कृपा करि हरि गए प्रथमहि भ[illegible] अनुपम धाम ॥ प्रीतिके वश दीनबंधु सु भक्तवत्सल नाम । मिली मारगमलयलेकरि भएपूरण काम ॥ उर्वशी पटतरहि नाहीं रमाके मनताम । सूर प्रभु महिमाअगोचर वसे दासीधाम॥२७॥ राग [illegible]

राग[illegible]

नार्श [illegible]

मिली कुबिजा चंदनले दहा श्याम तेहि कृपा चहै ॥ कहातपस्या करि यहराख्यो जहांतहां पुर इहे चहै । कछु नहिं कहि आवत हरिदेखी इहैकह्यो प्रभु हेत वहै॥तबहिं कृपाकरिसुंदरि कीन्ही यह महिमा मोहिं कहत न आवै ।सूरदास भाग कूवरीका कौनताहिको पटतर पावै ॥ ३९ ॥ कुबिजासी भागिनि को नारी । कंसहि चंदन लिए जातही बीचमिले ताको देतारी॥ हरि करि कृपा करी पटरानी कुबिज मिटायो डारि ।इहइ बात मधुपुरी जहँतहँ दासी कहत डरत जिय भारि॥कुबिजा कहन न भूल्यो कोऊ ताहि उटत दै दै मय गारि । सुनहु सूररानीसुनि पानेत्रास होतजिनमारेडारि॥४०॥राग धनाश्री॥कुबिजातौबडभागीहै। करुणाकरि हरिजाहिनिवाजीआपुरहे तहँ राजीहै ॥पूरब तप फल बिलसन लागी मनके भाव पुरावतिहै । मथुरा नर नारिन मुख बानी रह्यो जहँतहँ जैजै है ॥ दैत्य विनाशी तुम तहां आए यह लीला जानै पैवे । सूरदासप्रभु भावहिकै वशमिलतकृपाकेअतिसुखदैवे॥४१॥भीमसुंदर वचन राजा प्रति ॥ राग रामकली॥हरिकीकृपा

जापर होइ।ताहिकछु यह बात नाहीं हृदय देखो जोइ ॥ कहा संशय करत याको कितिक है यह बात। असुरसैन्य सँहारि डारे भक्तजनसों नात ॥ हरन करन समरथ येईहैं कहौं बारंबार । सूर हरि-की कृपाते खलत रिगएसंसार॥४२॥कंसवधलीला दूसरी॥राग बिलावल॥कृष्णकृपा सबहीते न्यारी।कोटि करै तप नहीं मुरारी ॥ भाव भजन कुबिजा भई प्यारी। दनुज भावबिनु मारे डारी॥प्रथमहि रजक मारि पुर आए। धनुषयज्ञकहँ कंस बोलाए॥तोरि कोदंड बीर सब मारे।हितकुबिजाकेधाम सिधारे ॥ रूपराशि निधि ताको दीन्हों। आवन कह्यो गमन तब कीन्हों ॥ तहां कुवलिया राख्यो द्वारे । जात श्याम बलराम विचारे॥माली मिल्यो मालशुचि लैकै।लीन्होंकंठ श्याम अति रुचिकै॥मनकामना तुरत फल पायो । कोटिकोटि मुख अस्तुति गायो॥आतुर गयो कुवलिया पासा।सूरज चंद्र धरणि परगासा॥बालक देखि महावत हरष्यो। कान्ह पूछ धरि तुच्छकरिपरष्यो॥ कौतुक करि मतंग तब मारयो । गहि पटक्यो तनु नेक न टारयो॥दुहुँन एक इक दंतउपारयो। जहाँ मल्ल तहँको पग धारयो॥ देखत रूप त्रास जिय आन्यो । मनमन काल आपनो जा-न्यो ॥तब कोमल दरशे यदुराई। तुरत गए आगे सब धाई ॥ मारे मल्ल एक नहिं उबरयो । पटक धरणि नृप श्रवणन घुमरयो ॥ क्रोधसहित तब कंस प्रचारयो।ताहि झगटि तुरतहिं तेहि मारयो॥अमर नाग नर कहिकहि भाखें।सदा आपने जनको राखें ॥राजा उग्रसेन कहवाए।मात पिता बंदिते छोडाए॥इतने काज किए हरि नीके।कुबिजाप्रेम बँधे हरि हीके ॥ आतुरहरि ताके गृह आए। रानिन बोधि महल नहिं भाए॥ चितवत मंदिर भए अवासा । महल महल लागे मणि पासा ॥ जबहिं सुने कुबिजा हरि आए। पाटम्बर पांवडे डसाये ॥ कुबिजाते भई राजकु-मारी। रूप कहा कहौं कृष्णपियारी ॥ टेढी जे हरि सूधी कीन्हीं । लक्षण अंगअंग प्रति दीन्हीं ॥ राजा हरि कुबिजा पटरानी। मथुरा घरघर सबही जानी ॥ गोप सखा यह सुनत न जाने । त्रासहिमें सब रहतसकाने॥मारयोकंस सुनत सब शंके । बलमोहन आए नहिं दंके॥ब्रजते चले भए पट यामा।व्याकुल महरि होति लैनामा ॥ प्रजा जानि मनमन डरपाहीं। कैसे बलमोहन ब्रज जाहीं ॥ यहि अंतर हरि आए तहंई। नंद गोप सब राखे जहंई ॥ नृप उद्धव अक्रूरहि लीन्हीं। तहां गवन प्रभु सूरज कीन्हों॥४३॥राग [illegible]
सुरन कियो निर्भय सु हियो॥घरघर [illegible]
मिलि मात पिताको हरष अनल करि दुखहि दहो ॥ उग्रसेन मथुरा कारि राजा ऐसो प्रभु रक्षक जनको। कहुँ जनमें कहुँ कियो पान पय राखि लेत भक्तन पनको ॥ आपुन गए नंद जहं बासा हलधर अग्रज संग लिए। सूर मिले नँद हरषवन्त ह्वै ब्रज चलिहैं अति हरष हिए ॥ ४४ ॥ अरसपरस सब ग्वाल कहैं। जब मारयो हरि रजक आवतहि मन जान्यो हम नहिं निबहैं ॥ वैसो धनुष तोरि सब योधा तिन मारत नहिं विलम करयो। मल्ल मतंग तिहूँपुर गामी छिनकहिमें सो धरणि परयो ॥ वैसे मल्लनि दांव विसारे मारि कंस निरवंश कियो। सुनहु सूर ये हैं अवतारी इनते प्रभु नहिं और बियो ॥ ४५ ॥ नंद गोप सब सखा निहारत यशुमतिसुतको भाव नहीं । उग्रसेन वसुदेव उपंगसुत सुफलकसुत वैसे सँगहीं ॥ जबहीं मन न्यारो हरि कीन्हों गोपन मन इह व्यापि गई। बोलि उठे यहि अन्तर मधुरे निश्र ज्योति जो ब्रह्मगई ॥ अति प्रतिपाल कियो तुम हमरो सुनत नन्द जिय झझकि रहे। सूरदास प्रभुकी लीला यह वसुदेव मोसों वचन कहे ॥ ४६ राग बिलावल॥ काहि कहत प्रतिपाल

कियो।मोमोंकहन होहि जिनि ऐसी नैन ढरत नहिं भरत हियो॥ थकित नंद निरमबानी सुनि विलम करत कहा क्यों न चलें। कंस मारि रजधानी दीन्ही ब्रजते बहुरों आनि मिलें॥ मनही मन ऐसी उपजावत ये सुत ब्रह्म ब्रह्मदरशी।सूर पिताको मात कौनके रहत सबनमेंवेपरशी॥४७॥ तब बोले हरि नंदसों मधुरे करि बानी। गर्ग वचन तुमसों कही नहिं निहचै जानी॥ मैं आयो संसारमें भुवभार उतारन। तिनको तुम धनिधन्य हौ कीन्हों प्रतिपारन॥ मात पिता मेरे नहीं तुमते अरु कोऊ। एक बेर ब्रजलोगको मिलिहौं सुनों सोऊ॥मिलन हिलन दिनचारिको तुम तोसब जानों। मोको तुम अतिसुख दियो सो कहा बखानों॥ मथुरा नर नारी सुनें व्याकुल ब्रजवासी।सूर मधुपुरी आइकै येभएअविनासी॥४८॥राग गौड़ी॥निठुर वचन जिनिकहौकन्हाई। अतिही दुसह सह्यो नहिंजाई॥ तुम हँसिकै बोलत ए बानी। मेरे नयन भरत हैं पानी॥ अब ए बोल कबहूँ जिनि बोलो। तुरत चलो ब्रज आँगन डोलो॥पंथ निहारत यशुमति ह्वैहै। तुमबिन मोको देखि दुखैहै॥ तब हलधर नंदहि समुझावत। कछु करि काज तुरतब्रज आवत॥ जननि अकेली व्याकुल ह्वैहै। तुमहि गए कछु धीरज लैहै॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो। जाइ कहौं उर ध्यान तुम्हारो॥ व्याकुल होन जननि जिनि पावै। बारबार कहिकहि समुझावै॥ व्याकुल नंद सुनत ए बानी। डसि मानो नागिनी पुरानी॥ व्याकुल सखा गोप भए व्याकुल। अंतकदशा भयो सब आकुल॥सूर श्याम मुखनिरखत ठाढे॥मनो चितेरे लिखि सब काढे॥४९॥राग सोरठ॥ गोपालराइ हौं न चरण तजि जैहौं। तुमहिं छोडि मधुबन मेरे मोहन कहा जाइ ब्रज लैहौं॥ कैहौं कहा जाइ यशुमतिसो जब सन्मुख उठि ऐहै। प्रातसमय दधि मथत छाँडिकै काहि कलेऊ दैहै। बारहवर्ष दया हम ढाढो यह प्रताप बिनुजाने।अब तुम प्रगट भए वसुदेवसुत गर्गवचन परमाने॥ कंत हमलागि महारिपु मारे कत आपदा बिनासी। डारि न दियो कमलकरते गिरि दबि मरते ब्रजवासी॥ बासर संग सखा सब लीन्हें टेरि न धेनु चरैहौ। क्यों रहिहैं मेरे प्राण दरशबिनु जब संध्या नहिं ऐहौ॥ अब तुम राज्य करौ कोटिक युग मातपिता सुख दैहौ। कबहुँक तात तात मेरे मोहन या मुख मोसो कैहौ॥ ऊरधश्वास चरणगति थाक्यो नैन नीर न रहाइ। सूर नंद बिछुरेकीवेदनमोपैकहिय न जाइ॥५०॥राग बिलावल॥ वेगिब्रजकोफिरियेनँदराइ।हमहिंतुमहिं सुत तातको नातो और परयो है आइ॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो सो नहिं जीते जाइ।जहाँ रहैंतहँ तहाँ तुम्हारे डारो जिनि बिसराइ॥मायामोह मिलनअरु बिछुरन ऐसेहीजगजाइ।सूरश्यामकेनिठुर वचन सुनि रहे नयन जल छाइ॥५१॥रागनट॥यह सुनि भए व्याकुल नंद। निठुर बाणी कही जब हरि परिगए दुखफन्द ॥ निरखि मुखमुख रहे चक्रत सखा अरु सब गोप। चरित ए अक्रूर कीन्हें करत मनमन कोप॥ धाइ चरणन परे हरिके चलहु ब्रजको श्याम। कंस असुरसमेत मारे सुर-नके करि काम॥ मोचि बन्धन राज दीनों हर्ष भए वसुदेव। सूर यशुमति बिनु तुम्हरेकौन जानै देव॥५२॥राग सोरठा॥ नंद बिदा ह्वै घोष सिधारो। बिछुरन मिलन रच्यो विधि ऐसो यह संकोच निवारो॥ कहियो जाइ यशोदाआगे नैन नीर जिनि ढारो। सेवा करी जानि सुत अपने कियो प्रतिपाल हमारो॥ हमें तुम्हें कछु अन्तर नाहीं तुम जिय ज्ञान बिचारो। सूरदास प्रभु यह विनती है उर जिनि प्रीति बिसारो॥५३॥ राग सोरठ॥ मेरे मोहन तुमहिं बिना नहिं जैहौं। महरि दौरि आगे जब ऐहै कहा ताहि मैं कैहौं॥ माखन मथि राख्यो ह्वैहै तुम हेतु चलो मेरे बारे। निठुर भए मधुपुरी आइकै काहे असुरन मारे॥ सुत पायो वसुदेव देवकी अरु सुख सुरन

दियो। यहै कहत नँद गोप सखा सब बिदरन चहत हियो ॥ तब माया जडता उपजाई ऐसे प्रभु यदुराई। सूर नंद परबोधि पठावत निठुर ठगोरी लाई॥ ५४॥ राग नट॥ नंदहि कहत हरि ब्रज जाहु। कितिक मथुरा ब्रजहि अंतर जिय कहा पछितांहु॥ कहा व्याकुल होत अतिही दूरिहूं कटु जात। निठुर उरमें ज्ञान बरन्यो मानिलीन्हों बात ॥ नंद भए कर जोरि ठाढे तुम कहे ब्रज जाउ। सूर मुख यह कहत बाणी चित नहींकहुँठाउ॥५५॥ राग बिलावल॥ तुममेरीप्रभुताबहुत करी। परम गँवार ग्वाल पशुपालक नीच दशा लें उच्च धरी ॥ रोग दोष संताप जनमके प्रगट-तही तुम सबे हरी॥अष्ट महासिधि और नवों निधि करजोरे मेरे[illegible] खरी ॥ तीनिलोक अरु भुवन चतुर्दश वेद पुराणन सही परी । सूरदास प्रभु अपने जनको देत परमसुख घरी घरी ॥ ५६॥ राग रामकली ॥ उठे कहिमायोइतनी बात।जितेमानसेवातुमकीन्हीबदलोदयोनजात॥पुत्र-हेतु प्रतिपाल कियो तुम जैसे जननी तात। गोकुल बसत सखावत खेलत दिवस न जान्यो जात॥ होहु बिदा घरजाहु गुसाईं माने रहियो नात। ठाढो थक्यो उतर नहिं आवे लोचनजलनसमात॥ भए बलहीन खीन तनुकंपित ज्यों बयारिवश पात। धकधकात मन बहुतसूरउठिचलेनंदपछिता-त ॥ ५७॥ राग नट ॥ फिरिकरि नंद न उत्तर दीन्हो। रोमरोमभरिगयोवचनसुनिमनहुँचित्रलिखि कीन्हों ॥ यहतो परंपरा चलिआई सुख दुख लाभ अरु हानि। हमपर बधा मयाकरि रहियोसुत अपनों जिय जानि ॥ को जलपे काकेपल लागे निरखि वदन शिर नायो। दुखसमूह हृदये परिपूरण चलत कंठ भरिआयो॥अधअध पद भुव भई कोटि गिरि जोलगि गोकुल पेठो।सूरदास अस कठिन कुलिशते अजहुं रहत तनु बैठो ॥ ५८ ॥ राग धनाश्री ॥ चले नंद ब्रजको समुहाइ।गोप सखा हरि बांधि पठाए सबे चले अकुलाइ॥काहू सुधि न रही तबकी कछु लटपटात परे पाइ । गोकुल जात फिरत पुनि मधुबन मन पुनि उतहि चलाई॥बिरहसिंधुमें परे चेतबिनु ऐसेहि चले बहाइ।सूरश्याम बलरामछांडिकेब्रज आयेनियराइ॥५९राग भैरव॥बारबारमगजोवतिमाता।व्याकुल बिन मोहन बल भ्राता ॥ आवत देखि गोप नँद साथा। बिबि बालक बिनु भई अनाथा ॥ धाई धेनु बच्छ ज्यों ऐसे। माखन बिना रहें धौं केसे॥ब्रजनारी हरषित सब धाई।महरि जहां तह आतुर आई ॥ हरषित मात रोहिणी धाई। उर भरि हलधर लेंहु कन्हाई ॥ देखे नँद गोप सब देखे। बल मोहनको तहां न पेखे॥आतुर मिलनकाजब्रजनारी।सूर मधुपुरी रहे मुरारी॥६०॥ अथ नंद ब्रजआगमन यशोदावचन नंद प्रति ॥ राग सोरठ॥ नंदहि आवत देखि यशोदा आगे लेनगई।अति आतुर गति कान्ह लैनको मन आनंद भई ॥कहं नवनीत चोर छोंड मेरे देखत नारि नई । तेहि खन घोष सरोवर मानो पुरइनि हेममई ॥ गर्ग कथा तब कहिजु सुनाई सो अब प्रगट भई।सूर मोहिं फिरिफिरि आवत गहिझगरत नेत रई॥६१॥राग कल्याण॥श्याम गममधुरातजि नंदब्रजहिआए।बारबार महरि कहति जनम धिग कहाए॥कहूंकहति सुनी नहीं दशरथकी करनी। यह सुनि नँद व्याकुल ह्वे परे मुरछि धरनी॥टेरि टेरि पुहुमि परति व्याकुल ब्रजनारी। सूरज प्रभु कौन दोष हमको जुबिसारी ॥६२॥राग सारंग॥उलटि पग कैसे दीन्हों नंद।छांडे कहाँ उभय सुत मोहन धिग जीवन मतिमंद ॥ के तुम धन यौवन मदमाते के तुम छूटे बंद। सुफलकसुत बैरी भयो हमको लेगयो आनंदकंद॥गमकृष्ण बिन कैसे जीजे कठिन प्रीतिके फंद।सूरदामप्रभु भई अभागिनि तुमबिनु गोकुलचंद॥६३॥राग मलार॥दोउढोटागोकुलनायकमेरे।काहेनंदछाँडितुमआए प्राणजिवनसबकेरे। तिनके जात बहुत दुख पायो रोरि परी यह खेरे। गोसुत गाइ फिरतहैं दहदिशबने चरिचनथोरे ॥

प्रीति न करी राम दशरथकी प्राण तजे छिन हरे। सूरनंदसों कहति यशोदा प्रबलपापसब मेरे ॥ ६४ ॥ राग बिहागरो ॥ यह गति करत नहिं छाजी। हरि बिन विकल भयो न गयो परि कुलकुठार जननी कत लाजी ॥ राम कृष्ण तजि गोकुल आए छतियां क्षोभ रही क्यों साजी। कहा अकाज भयो दशरथको लइ जु गयो अपनी जग बाजी ॥ याते पै रहि रहति कहनको मन जग जान काल्की खाजी। सूर यशोदा कहति सु:धिग मतिजो गिरि धरन बिमुख है भाजी ॥ ६५ ॥ राग गौंड ॥ यशोदा कान्ह कान्हके बूझे। फूटि न गई तिहारी चारो कैसे मारग सूझे ॥ इकनतु जरो जात बिन देखे अबतुम दीने फूंक। यह छतिया मेरे कुँवरकान्ह बिनु फाटि न गए द्वै टूक ॥ धिग तुम धिग वे चरण अहो पति अधबोलत उठि धाए। सूरश्याम बिछुरनकी हमपै देन बधाई आए ॥ ६६ ॥ नंद हरि तुमसों कहा कह्यो। सुनि सुनि निठुर बचन मोहनके क्योंकरि हृदय रह्यो ॥ ॥ छांडि सनेह चले मंदिर कत दौरि न चरन गह्यो। फाटि न गई वज्रकी छाती कत यह शूल सह्यो ॥ सुरति करत मोहनकी बातें नैनन नीर बह्यो। सुधि न रही अति गलित गात भयो जनु डसि गयो अह्यो ॥ कृष्ण छांडि गोकुल कत आए चाखन दूध दह्यो। तजे न प्राण सूर दशरथलौं हुतो जन्म निबह्यो ॥ ६७ ॥ मेरो अति प्यारो नँदनंद। आए कहा छांडि तुम उनको पोंच करी मतिमंद ॥ दल मोहन दोउ पीड नयनकी निरखतही आनंद। सखर घोष कुमोदिनि ब्रजजन श्यामवदन बिन चंद ॥ काहे न पांइ परे वसुदेवके घालि पाग गरे फंद। सूरदास प्रभु अबके पठवहु सकल लोक सुनिबंद ॥ ६८ ॥ अथ नंदवचन यशोदाप्रति ॥ राग रामकली ॥ तब तू मारिबोई करति। रिसनि आगे कहि जो आवत अब लै भांडे भरति ॥ रोस कैकर दाँवरी लै फिरति घर घर धरति। कठिन हिय करि तब जो बांध्यो अब वृथा करि मरति ॥ नृपति कंस बुलाइ पठयो बहुतकै जिय डरति। इह कछू बिपरीत मो मन मांझ देखी परति ॥ होनहारी होइ है सोइ अब यहां कत अरति। सूर तब किन फेरि राखे पाइ अब केहि परति ॥ ६९ ॥ यशोदा वचन नंदप्रति राग अडानो ॥ कहा ल्यायो तजि प्राण जिवन धन। रामकृष्ण कहि मुरछि परी धर यशुदा देखत लोगन ॥ विद्यमान हरिबचन श्रवण सुनि कैसे गए न प्राण छूटि तन। सुनी कथा दशरथकी तऊ नहिं लाज भई तेरे मन ॥ मंद हीन अति भयो नंद अति होत कहा पिछताने छिन छिन। सूर नंद फिरि जाहु मधुपुरी ल्यावहु सुत करि कोटि

कहां छाँडि कुमार। कैसे प्राण रहे सुत बिछुरत

नीर बहे असरार। चितवत नंद ठगेसे ठाढे मानो हारयो हेम जुआर ॥ मुरली नहिं सुनिअत है ब्रजमें सुर नर मुनि नहिं करत हैं बार। सूरदास प्रभुके बिछुरेते कोऊ नहीं झांकते द्वार ॥ ७१ ॥ अथ ग्वालवचन राग नट ॥ ग्वालन कही ऐसी जाइ। भए हरि मधुपुरी राजा बडे वंश कहाइ ॥ सूत मागध वदत बिरदहि बरणि वसुधौ तात। राजभूषण अंग भ्राजत अहिर कहत लजात ॥ मात पितु वसुदेव देवै नंद यशुमति नाहिं। यह सुनत जल नैन ढारत मीजि कर पछिताहिं ॥ मिली कुबिजा मलै लैकै सो भई अरधंग। सूर प्रभु बश भए ताके करत नानारंग ॥ ७२ ॥ अथ गोपीवचन कुबजाप्रीत परस्परतर्क वदत राग गौरी ॥ कुबिजा मिली कही यह बात। मात पिता वसुदेव देवकी मन दुख सुख हरषात ॥ सुंदरि भई अंग परसतहीं करी सुहागिनि भारी। नृपति कान्ह कुबिजा पटरानी हँसति कहति ब्रजनारी ॥ सौति शाल उरमें अति शाल्यो नखशिखलौं भहरानी। सूरदास प्रभु ऐसेहं भाई कहति परस्पर बानी ॥ ७३ ॥ राग कल्याण ॥ कुबिजाको नाम सुनत विरह अनल गूडी। रिसन नारि झहरि उठीं क्रोध मध्य बूडी ॥ आवनको आश मिटी ऊरध सब श्वासा ॥

कुबिजा नृपदासी हमसब करी निरासा॥लोचन जलधार अगम बिरहनदी बाढी। सूर श्याम गुण सुमिरत बैठी कोउ ठाढी॥ ७४ ॥ राग धनाश्री॥कुबिजा श्याम सुहागिनि कीन्ही।रूप अपार जाति नहिं चीन्ही॥ आपु भए पति वह अरधंगी। गोपिन नावँ धरचो नवरंगी॥ वे बहुखन नगरकी सोऊतिसोइ संगवन्यो अब दोऊ॥एक एकतेगुणन उजागर। वह नागरि वेतौअतिनागर॥वहजोइ कहत श्याम सोइ मानत। निशिदिन वाके गुणहि वखानत॥जानि अनोखी मनहिं चोरावै॥सूर प्रभु अब नहिं व्रज आवै॥७५॥ राग रामकली ॥कुबिजा नई पाई जाइ।नवल आपुन बनिनवेलीनगररही खेलाइ॥ दास दासी भाव मिलिगयो प्रेमते भए एक। निठुर ह्वै सखि गए हमते जानि साह अनेक॥ लेन अब अक्रूर आयो तुरत लग्यो कान। नई कुबिजा उन सुनाई सूर प्रभु मन मान॥ ७६॥ राग धनाश्री ॥केसेरीयहहरिकरिहैंराधाकोतजिहैं मनमोहन कहा कंसदासी धारिहैं॥ कहा कहति वह भई रानी वे राजा भए जाइ वहां। मथुरा बसत लखत नहिं कोऊ को आयो को रहत कहां॥ लाज वेंचि कूबरी बिसाही संग न छाँडतएकघरी। सूरताहि परतीति न काहू मन सिहात यह करनि करी॥७७॥कुबिजा नहिं तुम देखीहै। दधिबेचन जब जाति मधुपुरीमें नीकेकरि पेखी है॥महल निकट मालीकी बेटी देखत जेहि नर नारि हँसे। कोटि बार पीतरि ज्यों डाहो कोटियार जो कहा कसे॥ सुनियत ताहि सुंदरी कीन्ही आपु भए ताको राजी। सूर मिलै मन जाहि जाहिसों ताको कहा करै काजी॥७८॥ कोटि करो तनुप्रकृति न जाइ। एअहीरवहदासी पुरकी विधिना जोरी भली मिलाइ॥ ऐसेनको मुख नाम न लीजे कहाकरौं कहिआवतमोहिं। श्यामहिं दोष किधौं कुबिजाको इहै कहो मैं बूझति तोहिं॥ श्यामहिं कहा दोष कुबिजाको चेरी चपल नगर उपहास। टेढी टेकि चलत पग धरणी यह जानै दुख सूरज दास॥७९॥राग नट॥हरिहीं करी कुबिजा ढीठ। टहल करती महलमहलनि अब संग बैठी पीठ॥ नेकही मुँह पाइ भूली अति गई इतराइ। जात आवत नहीं कोऊ इहै कहँ पठाइ॥ वे दिना गए भूलि तोको दिवस दशकीबात। सूर प्रभु दासी लोभाने व्रजवधू अनखात॥८०॥राग नट॥देखो कूवरीके काम।अब कहावत पाटरानी वडे राजा श्याम॥ कहत नहिं कोउ उनहिं दासी वे नहीं गोपाल। वे कहावत राजकन्या वे भए भूपाल॥पुरुष केरी सबै सोहै कूवरी केहि काज।सूरप्रभुकी कहा कहिए वेंचि खाई लाज॥८१॥ यह सुनि हमहिं आवति लाज। जाय मथुरा कंस मारचो कूबरीके काज ॥ लोग पुरमें बसत ऐसेइ सबन इहै सोहात। कबहुँ कोऊ कहत नाहीं श्यामआगे बात॥ कहा चेरी नारि कीन्हीं कहा आपुन होत। तुम वडे यदुवंश राजा मिले दासी गोत॥अजहुँ कहै सुनाइ कोई करैकुबिजा दूरि। सूर डाहनि मरत गोपी कूवरीके झूरि॥८२॥राग बिलावल॥कंस वध्यो कुबिजाके काज।और नारि तुमको न मिली कहुँ कहा गँवाई लाज॥ जैसे काग हंसकी संपति लहसुन संगकपूर। जैसे कंचन कांच बराबरि गेरू काम सिंदूर॥ भोजन साथ शूद्र ब्राह्मणके तैसोइ उनको साथ। सुनहु सूर हरि गाइ चरैया तें भए कुबिजा नाथ॥८३रागगौरी॥ भामिनि कुबिजासों रँगराते।राजकुमारि नारिजो पवते तौ कबहिं न अंग समाते॥ रीझे जाइ तनक चंदन लै मधुवनमारगजाते। ताकी कहा बडाई कीजे ऐसे रूप लुभाते॥ ए अहीर वह कंसकी दासी जोरी करी बिधातें। व्रजवनिता त्यागी सूरज प्रभु बूझी उनकी बातें॥८४॥राग आसावरी॥वे कहा जानैंपीर पराई।सुंदर श्याम कमलदल लोचन हरि हलधरके भाई॥ मुख मुरली शिर मोर पखौआ वनवन धेनु चराई। जे यमुनाजलरंग रँगे हैं ते अजहूं नहिं तजत कराई॥ उहईं भूले देखि कूबरी हम सब गए बिसराई। सूर

चातकी बूँद भईहों हेरतहेरतरहीहिराई ८५॥ राग जैतश्री ॥सखीरीकाके मीतअहीर।काहेको भरिभरि ढारतिहौ नैन राहके नीर ॥ आपुन पियत पियावत दुहिदुहि इन धेनुनके क्षीर । निशिवासर छिन नहिं बिसरत हे जो यमुनाके तीर॥ मेरे हियरे दौ लागतिहै जारत तनुकोचीर।सूरदास प्रभु दुखितजानिकै छाँडिगए बेपीर॥ ८६॥ अथ श्यामअंगको वरनन राग मलार ॥सखीरीश्यामसवैइकसार। मीठे वचन सुहाये बोलत अंतर जारनहार॥भवंर कुरंग काग अरु कोकिल कपटिनकी चटसार। कमलनयन मधुपुरी सिधारे मिटिगयो मंगलचार ॥ सुनहु सखीरी दोष न काहू जो विधि लिखो लिलार।यह करतूति इन्हेंकीनाईपूरबविविध विचार॥इमंगि वदनापि अवि पावस

. . . .

कुलहि जव भए सयाने।सोईघात भई नंदमहरकीमधुवनतेजो आने॥तवतौ प्रेम विचारि न कीन्हों होत कहा अवके पछिताने।सूरदासजे मनके खोटे अवसर परे जाहिं पहिचाने॥८९॥राग धनाश्री॥ तवते मिटे सबे आनंद। या व्रजके सब भाग संपदालेजु गए नँदनंद॥ विह्वल भई यशोदा डोलति दुखित नंद उपनंद। धेनु नहीं पय स्रवति रुचिर मुख चरति नाहिं तृण कंद॥ विषम वियोग दहत उर सजनी वाढिरहे दुखद्वंद। शीतल कौन करे री माई नाहिं इहां हरिचंद॥रथचढिचलेगहे नहिं काहू चाहिरही मतिमंद।सूरदासअव कौनछोडावै परेविरहकेफंद॥९०॥राग कान्हरो॥ अव वह सुरति होत कत राजनि। दिनदश रहे प्रीति करि स्वारथ हित रहे अपने काजनि ॥सबै अजान भए सुनि मुरली वधिक कपटकी वाजनि। अव मन थक्यो सिंधुके खग ज्यों फिरिफिरि शरन जहाजनि ॥वह नातो तादिनते टूटयो सुफलकसुत मग भाजनि।गोपीनाथ कहाइ सूरप्रभुमारतहौकत लाजनि॥९१॥राग गौरी॥व्रज री मनो अनाथ कियो।सुन री सखीयशोदानंदनसुखसंदेह दियो॥ तव हम कृपा श्यामसुंदरकी कर गिरि टेकि लियो। अरु प्रति गाइ वच्छ ग्वालनकोजल कालिंदि पियो॥ यहसवदोष हमहिं लागतहै विछुरत फटयो न हियो।सूरदास प्रभुनंदनंदन विनु कारणकौनाजियो॥९२॥राग केदारो॥अवतौ हैं हम निपट अनाथ।जेसे मधु तोरेकीमाखी त्यों हम विनु व्रजनाथ॥ अधरअमृतकी पीर मुई हम वालदशातें जोरि। सो छिडाय सुफलकसुत लैगयो अनायासही तोरि॥ जौलगि पानि पलक मीडत रही तौलगि चलिगए दूरि। करिनिरंध निवहे दे माई आँखिन रथपद धूरि॥ हम निशिदिन करिकृपणकी संपति कियो न कबहूं भोग। सूर विधाता लिखिराखी वह कुविजाके मुख जोग॥ ९३॥ अथ नंदयशोदावचनपरस्पर रागरामकली॥ इक दिन नंद चलाई वात। कहत सुनत गुण राम कृष्णके ह्वैआयो परभात॥ वैसेहि भोर भयो यशुमतिको लोचन जलन समात। सुमिरि सनेह विहरि उरअंतर ढरिआवत ढरिजात॥यद्यपि वे वसुदेव देवकी हैं निज जननी तात। वार एक मिलि जाहु सूर प्रभुघाइहूनकेनात॥९४॥रागगौरी॥ चूक परी हरिकी सिवकाई। यह अपराधकहांलौ कहिएकहिकहि नंदमहरपछिताई॥कोमलचरण कमल कंटक कुश हम उनपे वनगाइ चराई। रंचकदधिकेकाज यशोदा वाँधे कान्ह उलूखल लाई॥ इंद्र कोप जानि व्रज राखे वरुनफांस मान मेरी निठुराई। सूर अजहुँ नातो मानतहैं प्रेमसहित करे नंद दोहाई॥ ९५॥राग सोरठ॥ हरिकी एकौ वात न जानी। कहौ कंत कहा

तज्यो श्यामको अतिहि विकल-पूछति नँदरानी॥ अब व्रजसूनो-भयोगिरिधरबिनु गोकुलमणि बिलगानी। दशरथ प्राण तज्यो छिन भीतर बिछुरत शारँगपानी॥ ठाढी रही ठगोरी डारी बोलत गदगद बानी। सूरदास प्रभु गोकुल तजि गए मथुराही मनमानी॥९६॥राग सारंग॥ लै आवहु गोकुल गोपालहि। पाइन परिकै बहु बिनती करि बलि छलि बाहुबिशालहि॥अबकीबारनेकदेख-रावहु यहि व्रज नन्द आपने लालहि।गाइनगनत ग्वालगोसुत सँगसिखवत वेणु रसालहि॥यद्यपि महाराज सुख संपति कौन गिनै मोती मणि लालहि। तदपि सूर वे छिन न तजतहैंवाघुँघुर्चीकी मालहि॥९७॥राग सोरठ॥सराहौं तेरो नंद हियो।मोहनसोसुतछाँडि मधुपुरीगोकुल आनिजियो॥ कहाकहौं मेरेलाल लडेते जब तू बिदाकियो। जीवन प्राणहमारे व्रजको बसुदेव छीनिलियो॥ कह्यो पुकार पारि पचिहारी बरजत गमन कियो। सूरदास प्रभु श्यामलाल धन लै परहाथ दियो॥९८॥ राग बिलावल॥यद्यपि मन समझावत लोग।शूलहोत नवनीत देखिमेरे मोहनके मुखयोग॥ निशिबासर छतियां लै लाऊं बालकलीला गाऊं। वैसे भाग बहुरि फिरि ह्वैहैं मोहन मोद खवाऊं॥ जा कारण मुनि ध्यान धरे शिव अंग विभूति लगावै। सो बालकलीला धरि गोकुल ऊखल साथ बँधावै॥ बिदरत नहीं वज्रको हिरदय हरि बियोग क्यों सहिए। सूरदास प्रभु कमल-नैनबिनुकौने विधि व्रज रहिए॥९९॥राग कान्हरो॥नंदव्रजलीजै ठोंकिबजाइ।देहु बिदामिलिजाहिं मधुपुरी जहँ गोकुलके राइ। नैनन पंथ गयो क्यों सूझ्यो उलटि दियो जब पाइ॥ रघुपति दशरथ सुनीहै पर मरिबे गुण गाइ॥भूमि मशान बिदिति ए गोकुल मनहु धाइ धइ खाइ।सूरदास प्रभुपास जाहिं हम देखैं रूप अघाइ॥२७००॥राग सोरठ॥माई हौं किन संग गई।हो ए दिन जानतही बूडी लोगनकी सिखई॥मोको बैरी भए कुटुँब सब फेरि२व्रज गाडी।जो हौं कैसेहु जान पावती तौ कत आवत छाँडि॥ अब हौं जाइ यमुनजल बहिहौं कहा करौ मोहिं राखी। सूरदास वा भाइ फिरतहौं ज्यों मधु तोरे माखी॥१॥राग मलार हौं तौ माई मथुराहीपै जैहौ।दासी ह्वै वसुदेवराइकी दरशन देखत रैहौं॥ राखि राखि एते दिवसन मोहिं कहा कियो तुम नीको। सोऊ तो अक्रूर गए लै तनक खिलौना जीको॥ मोहिं देखिकै लोग हँसैंगे अरु किन कान्ह हँसै।सूरअशीश जाइ देहौं जिनि न्हातहु बार खसै॥२॥राग सारंग॥पंथी इतनी कहियो बात।तुमबिनु इहां कुँवरवरमेरे होत जिते उतपात॥ बकी अघासुर टरत न टारे बालकबनहिं नजात। व्रजपिंजरी रुँधि मानो राखे निकसनको अकुलात॥ गोपी गाइ सकल लघु दीरघ पीत वरण कृश गात।परम अनाथ देखियत तुमबिनु केहि अवलंबिये तात॥कान्ह कान्ह कै टेरत तबधौं अब कैसे जिय मानत। यह व्यवहार आजुलौं है व्रज कपट नाट छल ठानत॥दशहुदिशितेउदित होतहैं दावानलके कोट।आँखिनमूँदि रहत सन्मुख ह्वै नाम कवच दै ओट॥ ए सब दुष्ट हते अरि जेते भए एकही पेट॥सत्वर सूर सहाइ करो अब समुझि पुरातन हेट॥३॥राग सारंग॥ कहियो श्यामसों समुझाय। वह नातो नहिं मानत मोहन मनो तुम्हारी धाइ॥ एकबार माखनके काजे राखे मैं अटकाइ। वाको बिलग मानु जिनि मोहन लागत मोहिं बलाइ॥बारहिबार इहै लवलागी गहे पथिकके पाँइ।सूर दासया जननीको जिय राखौ बदन देखाइ॥ ४ ॥राग बिलावल॥यद्यपि मन समुझावत लोग। शूल होत नवनीत देखि मेरे मोहनके मुखयोग॥ प्रातकाल उठि माखन रोटी को बिनमांगे देहै। अब उहि मेरे कुँ-वर कान्हको छिनछिन अंकम लैहै॥ कहियो पथिक जाइ घर आवहु राम कृष्णदोउ भैया। सूर श्याम कत होत दुखारी जिनके मोसी मैया॥५॥रागरामकली॥मेरो कहा करत ह्वैहै। कहियउ

जाइ वेगि पठवहिं गृह गाइनिको द्वैहै ॥ दीजे छाँडि नगरवारी सब प्रथम वोरि प्रतिपारो । हमहूँ जिय समुझें नहिं कोऊ तुम तजि हितू हमारो ॥ आजुहि आजु कालिह कालिहहि करि भलो जगत यश लीन्हों । आजहुँ कालिह कियो चाहतहो राज्य अटल करि दीन्हों ॥ परदा मूर वहुत दिन चलती दुहुँहुनि फवती लूटि । अंतहुकान्ह आयहो गोकुल जन्मजन्मकीखूटि ॥ ६ ॥ संदेशो देवकीसों कहियो । हो तो धाइ तुम्हारे सुतकी मया करति रहियो ॥ यदपि टेव तुम जानत उनकी तऊ मोहिं कहि आवे । प्रातहि उठत तुम्हारे कान्हको माखन रोटी भावे ॥ तेल उबटनो अरु तातो जल ताहि देखि भजिजाते । जोइजोइ मॉगतसोइसोइ देती क्रमक्रम करिकरिन्हाते ॥ सूरपथिक सुनि मोहिं रैनि दिन वढ्यो रहत उर सोच । मेरो अलक लडैतो मोहन ह्वैहै करत संकोच ॥ ७ ॥ राग सोरठ ॥ मेरो कान्ह कमलदल लोचन । अवकीवेर वहुरिफिरिआवहु कहालगेजियसोचन ॥ यह लालसा होत जिय मेरे वैठीदेखतरैहों । गाइचरावन कान्हकुँवरसों भूलि न कवहूँ कैहों ॥ करत अन्याय न वरजों कवहूं अरुमाखनकी चोरी । अपने जियत नैनभरि देखोंहरिहलधरकोजोरी ॥ एक वेर ह्वैजाहु इहाँलों अनत कहूँके उत्तर । चारिहुदिवसआनि सुख दीजे सूर पहुनई सूतर ॥ ८ ॥ अथ पथीवाक्य देवकीप्रति ॥ राग आसावरी ॥ हों इहां गोकुलहीते आई देवकी माई पाँइ लागतिहौंयशुमति इहां पठाई ॥ तुमसो महरि जुहार कह्यो है कहहु तो तुमहिं सुनाऊं । वारक वहुरि तुम्हारे सुतका कैसेहु दरशन पाऊं ॥ तुम जननी जग विदित सूर प्रभु हौं हरिकी हित धाइ । जा पठवहुतो पाहुन नाते आवहिं वदन दिखाइ ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ जो परि राखतहीपहिंचानि । तो अवके वह मोहनमूरति मोहिं देखावहु आनि ॥ तुमरानी वसुदेवगेहिनी हौं गँवारि व्रजवासी । पठैदेहु मेरो लाड लडैतो वारों ऐसी हाँसी ॥ भलो करी कंसादिक मारे सब सुरकाज किये । अब इन गैयन कौन चरावै भरिभरि लेतहिये ॥ खान पानपरिधान राजसुख जो कोउ कोटिलडावे । तदपि सूर मेरोवारे कन्हैया माखनही सचुपावै ॥ १० ॥ राग सोरठ ॥ मेरे कुँवर कान्ह विनु सब कछु वैसहि धरयो रहै । को उठि प्रात होत ले माखन को कर नेत गहै ॥ सूने भवनयशोदा सुतके गुनि गुनि शूल सहै । दिन उठि घेरतही घर ग्वारिनि उरहन कोउ न कहै ॥ जो व्रजमें आनंद होतो मुनिमनसाहू न गहै । सूरदास स्वामीविनु गोकुल कौडीहू न लहै ॥ ११ ॥ अथ गोपीविरह अवस्था परस्पर वर्णन ॥ राग सारंग ॥ चलत गुपालके चले । यह प्रीतमसो प्रीति निरंतरहै ना अरधपले ॥ धीरजपहिलकरी चलिवेकी जैसी करत भले । धीर चलत मेरे नैननदेखे तिहिछिन अंश हले ॥ अंश चलत मेरी वलयन देखे भए अंग शिथले । मन चालरह्यो हुतो पहिलेहो सबै चले विमले ॥ एक न चले अब प्राणसूर प्रभु असलेउसालसले ॥ १२ ॥ राग मलार ॥ लोगसबकहत सयानीवातें । सुनतहिसुगमकहत नहिं आवत वोलि जाइ नहिं तातें ॥ पहिले अग्नि सुनत चंदनसी सतीं बहुत उमहै । समाचारतातें अरु सार पाछे जाइ लहै । कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुमलता करिवार । सूरदास शिरदेत शूरमा सोइ जानै व्यवहार ॥ १३ ॥ वातनि सबकोइ जिय समुझावै । किहि विधि मिलनि मिलें वे माधौ सो विधि कोउ न बतावै ॥ यद्यपि जतन अनेक रचीविधि सारि अशन विरमावै । तद्यपिहठी हमारे नैनन और न देखो भावै ॥ वासर निशा प्राणवल्लभ तजि रसना और न गावै । सूरदास प्रभु प्रेमहि लगिके कहियें जो कहि आवै ॥ १४ ॥ राग नट ॥ सब मिलि करहु कछू उपाव । मार मारन चढेउ विरहिनि करहु लीनो चाव ॥ हुताशन ध्वज उमँगि उन्नत चलेउ हरि दिश वाउ । कुसुम शर रिपुनंद वाहन हरषि हरषित गाउ ॥ वारि भव सुत तात नावरि अब न करिहो काव । वार अवकी प्राण-

प्यारो विजय सखा मिलाउ ॥ रुचि विचारि न मान कीजै सोई किन वहिजाउ। सूर प्रभुकी शरण रहिहौं सकल त्रिभुवन राउ॥१५॥राग सारंग॥करिगए थोरे दिनकी प्रीति । कहँ वह प्रीतिकहांयह विछुरन कहँ मधुवनकी रीति । अवकी वेर मिलौमनमोहन वहुत भई विपरीति।कैसे प्राण रहत दरशनविन मनहुँ गए युग वीति ॥ कृपा करहु गिरिधर हमऊपर प्रेम रह्यो तनुजीति । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विन भई भुसपरकी भीति ॥ १६ ॥राग धनाश्री॥ प्रीतिकरिदीनीगरे छुरी।जैसेवधिक चुगाइ कपटकन पीछे करत वुरी ॥मुरली अधर चंप करकांपा मोरमुकुटलटवारि। वंक विलोकनि लगी लोभ सम सकति न पंख पसारि ॥ तलफत छांडि गए मधुवनको वहुरि न कीनी सार ।सूर श्याम सुख संग कल्पतरु उलटि न वैठी डार॥१७॥रागमलार॥देखी माधोकी मित्राई। आई उघरि कनक कलईसी दै निज गए दगाई ॥हम जानैंहरिहितूहमारेउनके चित्त ठगाई।छांडी सूरति सव व्रजकुलकी निठुर लोग भए माई ॥प्रेम निवाहि कहा वे जानैं सांचेअतिही राई।सूरदास विरहिनी विकलमति कर मींजै पछिताई॥१८॥एकहि वेर दई सव टेरी ॥ तव कत डोरि लगाइ चोरि मनु मुरलि अधर धरि टेरी॥वाटघाटवीथीव्रजघरवन संग लगाए फेरी। तिनकी यह करि गए पलकमें पारि विरहदुख वेरी ॥ जो परि चतुर सुजान कहावत कही समुझियो मेरी । वहुरि न सूर पाइहौ हमसी विनदामनकी चेरी ॥१९॥राग नट॥अवतौ ऐसेई दिन मेरे।कहा करौं सखि दोप न काहू हरिहित लोनन फेरे ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा ए सव संतत चेरे । मादप वन शशि कुसुम सकोमल तेउ देखियत जु करेरे ॥ वनवन वसत मोर चातक पिक आपुन दिए वसेरे । अव सोइ वकत जाहि जोइ भावै वरजे रहत न मेरे ॥ जे द्रुम सींचिसींचि अपने कर कियो वढाय वडेरे । तिन सुनि सूरकिसल गिरिवर भएआनि नैन मग वेरे ॥ २०॥ राग सारंग ॥ विनु गोपाल वैरिनि भई कुंजें।जेवेलतालगततनुशीतलअवभईविपमअनलकीपुंजैं॥ वृथा वहुत यमुनातट खगरो वृथा कमलफूलनि अलि गुंजैं। पवन पानि घनसारि सुमनदेदधिसुत किरनि भानु भै भुंजैं ॥ ए ऊधो कहियो माधोसों मदन मारि कीन्हीं हमलुंजैं।सूरदासप्रभुतुम्हरे दरशको मग जोवत अँखियन भई धुंजैं ॥२१॥ राग कान्हरो॥करकपोलभुजधरिजंघापरलेखति माई नखनकी रेखनि । सोचति विचार करति वैसी भाँति धरति ध्यान मदन मुख भेजनि॥नैन नीरभरि भारि जु लेतहै गोपी धिग दिन जात अलेखनि । कमलनैन मधुपुरी सिधारे जाके गुण जाने न सहसफन शेपनि॥ अवधि छुडाइ सुनोरी सजनीक्यों जीवहिंनिशिदामिनिदेखनि। सूरदास प्रभु चटकि गए ज्यों नानाविधिनाचतनटपेखनि॥२२॥राग कान्हरो॥सोचतिराधालिखति नखनमें वचन न कहत कंठ जलतास । छितिपर कमल कमलपर कदली पंकज कियो प्रकाश॥ तापर अलि सारँगपर सारंगप्रति सारँगरिपुलै कियो वास। तहां अरिपंथ पिता युग उदित वारिज विविध रंग भजो अभास ॥ सारंगमुखते परत अंवु ढरि मनशिवपूजतितपतिविनास।सूरदास प्रभु हरिविरहारिपु दाहतअंगदिखावतवास॥२३॥ राग नट॥मैंसवलिखिशोभाजुवनाई।सजलजलद तन वसन कनक रुचिउरवहुदाम रुराई ॥ उनतकंध कटिखीनविशदभुज अँगअंग प्रति सुखदाई। सुभग कपोल नासिका नैन छवि अलक लिहित धृतपाई ॥ जानतिहीयहलोललेखकरिऐसेहिदिन विरमाई । सूरदास मृदु वचन,श्रवणकोअतिआतुरअकुलाई॥२४॥राग गौरी॥सुरतिकरिवहांकीवात [illegible] ।लिलियो ॥कहिधौंवीरकहांतेआयोहमजुप्रणामकियो । [illegible] त्रियो ॥गदगदकंठ हियोभरिआयोवचनकहेनदियो । सूर श्यामअभिरामध्यानमनभरिभरिलेतहियो॥२५॥राग मलार॥कहियोपथिकजाइहारसोंमेरोमन

अटको नैननके लेखे । इहै दोष दैदै झगरतहै तब निरखत मुख लगी क्यों निमेखे ॥ केतो मोहि बताय दनकियो लगी पलक जड जाके पेखे । ते अब अब इनपैभरिचाहत विधि जो लिखे दरशन सुख रेखे ॥ यहिविधि अनुदिन जुगति जतनकरि गनत गए अँगुरिन अवसेखे । सूरदासमुनिइनि झगरनिते नहिं चित घटत वदन बिन देखे ॥ राग इमन ॥ नाथ अनाथनकी सुधि लीजै । गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहिदिन छीजै । नैन सजल धारा बाढी अति बूडत ब्रज किन कर गहिलीजै ॥ इतनी बिनती सुनहु हमारी बारकहू पतियां लिखि दीजै ॥ चरण कमल दरशन नवनौका करुणासिंधु जगत यश लीजै । सूरदासप्रभुआशमिलनकीएकबारआवन ब्रज कीजै २७॥ रागसारंग ॥ दिशिअति कालिंदीअतिकारी । अहोपथिक कहियोउनहरिसोंभई बिरहज्वरजारी ॥ मन पर्यकते परी धरणिधुकि तरंग तलफ नित भारी । नट बारूदपचार्चुरजलपरी प्रस्वेद पनारी ॥ बिगलित कच कुच कास कुलिन पर पंकज काजलसारी । मनमें भ्रमरते भ्रमन फिरतहै दिशिदिशि दीनदुखारी ॥ निशिदिन चकई वादि बकतहै प्रेम मनोहरहारी । सूरदास प्रभु जोई यमुनगति सोइ गति भई हमारी ॥२८॥ परेखो कौन बोलको कीजै । नाहरिजातिनपांतिहमारी कहामानिदुख लीजै ॥ नाहिन मोरचंद्रिकामाथे नाहिन उर बनमाल । नहिं शोभित पुहुपनके भूषण सुंदर श्यामतमाल ॥ नंदनंदन गोपीजन वल्लभ अब नहिं कान्ह कहावत । बासुदेव यादवकुल दीपक बंदीजन बर भानत ॥ बिसर्यो सुख नातो गोकुलको और हमारे अंग । सूर श्याम वह गई सगाई वा मुरलीके संग ॥२९॥ रटाक होहिनकाके मीत । संगरहतशिरमेलि ठगोरी हरत अचानक चीत ॥ मोहे नैन रूपदरशनके श्रवण मुरलिकागीत । देखतही हरि लै जु सिधारे बांधि पिछोरी पीत ॥ याहीते झुकति इहै मग चितवति सुख जु भए विपरीत । सूरदास यरुभलीपिंगला आशा तजि परतीत ॥ ३० ॥ राग मलार ॥ कहापरदेशीकोपतियारो । प्रीतिबढाइपरितहरिमिलिगेप्रीतिनढाड सिधारो ॥ ज्यों मृगनाद नादके बांधे लाग्यो बान बिसारे । प्रीतिके लिये प्राण वश कीनो हरि तुम यहै बिचारो ॥ बलि अरु बालि सुपनखा बपुरी हरिते कहा दुरायो । सूरदास प्रभु जानि भलेहो भर्योभरायो डरायो ॥ ३१॥ राग मलार ॥ कहा परदेशीको पतिआरो । प्रीति बढाय चले मधुबनको बिछुरि दियो दुख भारो ॥ ज्यों जलहीन मीन तरफत ऐसे बेकल प्राण हमारो । सूरदास प्रभुके दरशनबिनु ज्यों बिनुदीपक भौन अँधियारो ॥ ३२ ॥ राग आसावरी ॥ सखी री हरिको दोष जनि देहु । ताते मन इतनो दुख पावत मेरोई कपट सनेहु ॥ विद्यमान अपने इन नैननि सूनो देखति गेहु । तदपि सखी ब्रजनाथबिना उरफटिनहोतबडवेहु ॥ कहिकहि कथा पुरा [illegible]

न मेहु ॥ ३३ ॥ राग [illegible]

गृह कंदरा समान सेज भई चाहि सिंहहु थली । शीतल चंद सुतौ सखि कहियत तिनहू अधिक जली ॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा सींचति आनि अली । एक न फुरत बिरह ज्वरते कछुलागति नाहिं भली ॥ वह ऋतु अमृतलता सुनि सूरज अब बिषफलनि फली । हरि बिधु मुख नहिनहिनै फूलतिमनसाकुमुदकली ॥३४॥ राग सारंग ॥ इहिबिरियांबनतेंब्रजआवते । दूरहितेवहवेनअधरधरि बारबार बजावते ॥ कबहुँक काहू भाँति चतुर चित अति ऊंचे सुर गावते । कबहुँकलैलैनाममनोहर धवरी धेनु बुलावते ॥ इहि बिधि वचन सुनाय श्यामघन मुरछे मदन जगावते । आगमसुखउपचार बिरह ज्वर बासर ताप नशावते ॥ रुचिरुचि प्रेम पियासे नैनन क्रमक्रम बलहिं बढावते । सूरदास

स्वामी तिहिं अवसरपुनिपुनि प्रगटकरावते॥३५॥राग सारंग॥नहिंबिसरंतिवह रति ब्रजनाथ। हौं जु रही हठि रूठि मौन धरि सुखहीमें खेलत इक साथ॥ पचिहारे में मनायोनमानौंआपुनचरण छुए हरि हाथ।तबरिस धारसोईउतमुखकरिझुकि झाँक्यो उपरैनामाथ॥रह्योनपरे सुप्रेम आतुरअति जानी रजनी जात अकाथ।सूर श्याम हौं ठगी महा निशि पढि जु सुनाए प्रातके गाथ॥३६॥ राग बिलावल॥ माधौ इतने जतन तब काहेको किए। अपने जान जानि नँदनंदन अनेक भयनसों राखि लिए॥ अघ बक वृपभ बच्छ बधनते व्याकुल जीति दावानलहि पिए॥ इंद्र मान मेटे गिरि कर धरि छिनछिन प्रति आनंद हिए॥ हरि बिछुरत की पीर न जानी वचन मानि हम बादि जिए। सूरदास अब वा लालन बिन कहा न सहत एकठिन हिए॥३७॥राग गौरी॥यह कुमया जो तबहीं करते। तौ कत इन ये जिवत आजुलौं या गोकुलके लोग उबरते॥केशीतृणावर्तवृपभासुर कहौ कौनके मारे मरते। भूम प्रलंब व्याल दावानल हरि बिन बरहि निघाइ निवरते॥ शंखचूड बक बकी अघासुर सुरपति वरुन कौनते डरते। सूर श्याम तौ घोप कहातौ जो तुम इती निठुराई धरते॥३८॥ राग मलार॥हरि हम तब काहेको राखी। जब सुरपति ब्रज बोरन लीनो दियो क्यों न गिरि नाखी॥ अबलौं हमारी जगमें चलती नई पुरानी साखी। सो क्यों झूठो होय सखी री गर्ग कथा सो भाखी॥ तो हमको होती कत यह गति निशिदिन वर्षत आंखी। सूरदास यों भई फिरत ज्यों मधु दूहेकी मापी॥३९॥ हरिनू वै सुख बहुरि कहां। यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां॥ मुख मुरली शिर मोरपंख बने उर घुँघुचिनिको हारु। आगे धेनुरेनु तनु मंडित चितवनि तिरछी चारु॥ रातिदिवस अँगअँग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात। सूर देखि वा प्रभुताउनकीकही न आवै बात॥४०॥राग सारंग॥मधुबनतुमक्यों रहत हरे। विरहवियोग श्यामसुंदरके ठाढे क्यों न जरे॥ तुम हौ निलज न लज्जा तुमको फिर शिर पुहुप धरे। शश सियार अरु बनके पखेरू धिग धिग सबन करे॥ कौनकाज ठाढे रहे वनमें काहे न उकठि परे। कपट हेतु कीयो हरि हमसे खोटे होहिं खरे॥ गोविंदगुण उरते नहिं बिसरत रचिरचि कुसुम भरे। बिन देखे वा नंदनँदनको फूलत फेरि फरे॥ जब वे मोहन वेणु बजावत शाखा टेकि खरे। मोहे अस्थावरु जड जंगम मुनिगन ध्यान टरे॥ बिछुरत हियो बलि मोहनके चेत न कल्याण करे। सुख संपति बिछुरी मोहनकी फल फूलनसों करे॥ नैननते बिछुरे नँदनंदन चितते नहीं टरे। सूरदास प्रभु विरहदवानल नखशिखलौं पसरे॥४१॥राग केदारो॥ जो सखि नाहिंने ब्रज श्याम। वर्ष होत पलसम अब सो युगवर याम॥ उहै गोकुल लोग वेई उहै यमुनाठाम। उहै गृह जिहि सकल संपति वन भयो सोइ धाम॥ उहै रतिपति अछत मुरारिहि लैन सकतो नाम। सूर प्रभुबिनु अब कलेवर दहन लागे काम॥४२॥राग जैतश्री॥हरिनमिले माई जनम ऐसेही लागो जान। चितवत मग दिवस निशा जात युगसमान॥ चातक पिक वचन सखी सुनि न परत कान। चंदन अरु चंदकिरनि मनो अनेक भान॥ भूषण तनु पोत तज्यो रन आतुर त्रान। भीपमलौं सहत मदन अर्जुनके बान॥ सोखति तनुसेज सूर चलेनचपल प्रान। दक्षिण रवि अवधि अटल इतनी जिय आन॥४३॥राग सारंग॥अब योंहीं लागे दिन जान। सुमिरत प्रीति लाज लागतिहै उर भयो कुलिश समान॥ लोचन रहत वदन बिनु देखे वचन सुनें बिनु कान। हृदय रहत हरि पान परस बिन छिदि तन मनसिज बान॥ मानो सखी रहे नहिं मेरे वै पहिले तनु प्रान। विधि समेतरचि चले नंदसुत विरहव्यथा दे आन॥ विधि बछ हरे औंर

पुनि कीन्हें वैसेइ वेत, विपान।सूरदास ऐसीऐ कछु यह समुझतहैं अनुमान॥४४॥राग धनाश्री॥ऐसे कोउ नाहिंने सजनी जो मोहने मिलावै ।वारेक वहुरि नंदनंदनको यहोंलों ले आवै ॥ पांइन परि विनती करि मेरी यह सब दशा सुनावै। निशि निकुंज निशि केलिपरमरुचि रासरंगकी सुरति करावै॥और कौनहूं वातकी सकुच न सवविधिकी उपजावै।पुनिपुनि सूर इहै करि हरिसोंलोचन जरत बुझावै॥४५॥केदारो॥बहुरचोदेखिवो वहिभाँति।अशनबाँटतखातबैठे वालकनकीपाँति॥ एकदिन नवनीत चोरत हौं रही दुरिजाइ।निरखि मम छाया भजे मैं दौरि पकरेधाइ॥पोंछिकर मुख लिए कनियां तब गई रिसि भागि ।वह सुरति जिय जाति नाहीं रही छाती लागि॥ जिन घरनि वह सुख विलोक्योते लगत अवखान।सूरविनब्रजनाथ देखेरहत पापीप्रान॥४६॥रामकली॥ मरियत देखिवेकी हौंसनि।जिन सतकल्प,पलकवर जाते अब सु रही दुख मौसनि॥पलकभरेकी ओट न सहती अब लागे दिनजान।इतनेहूपर विन सासन घर घटनिकसतन हिप्रान॥ यदपिमोहिं वहुते समुझावत सकुचन लीजतु मानि। अंतर हेरि जरत विन देखे कौन बुझावै आनि॥कुविजापै आवन क्यों पावत अबतो परिहै जानि।लीनीवडी यहाऊँकीसव वात पाछिली ते सब गानि॥ आएसूरदिना द्वैतौकहा तौ मानिवो समोसो।कोटिवेर जल ओटिसिरावै तऊकहा पतिलौसो॥४७ ॥राग सोरंग॥जिय हिय हौंसे विच जे रही।सुन री सखीश्यामसुंदरहँसि बहुरि नबाँहगही॥अबवह दिवस बहुरि कबहैहै ऐसे जानिसंगही।कहांसु कान्ह कहांरी अवहम कौन वयारिवही॥कासोंकहौं कहत नहिं आवै कहत परे न कही ॥ जो कछु हुती हमारे हरिके हरिके संगनिवही।अपनेकहतहि हलुकी लागे गोविंदगुणनदही।सूरदास काटे तरुवरज्यों ठाढेरटतरही॥४८॥राग जैतश्री॥ कहांलौं मानो अपनी चूक। विन गोपाल सखी यह छतिया ह्वै न गई द्वै टूक॥तन मन धन यौवन ऐसे भए भुअंगमको फूक।हृदय जरतहै दावानल ज्यों कठिन विरहकी हूक॥ जाकी मणि शिरतेहरिलीनी कहा कहत अति मूक।सूरदास,ब्रजवास बसी हम मनो दाहिनो सूक॥ ४९॥राग मलार॥ भलो व्रज भयो धरणिते स्वर्ग। तब इनपर गिरि अव गिरिपर ए प्रीति किधौं यह दुर्ग॥सुरवासुर छलवोलवारी गढ अव अवधि मिति खूटी।प्रिय पतिविरह मदन गढ घेरचोएकौअलँग न टूटी॥ नैन तडाग श्रवण मूरति मठ यंत्र सकल वर वानी। रासकेलि वन पौरिकोट मनु देखि अमर रजधानी ॥ गोरंभन गोपाल गरजनिघन धूमिंदुदुभिन रोकी ।कंटक रोम कँगूरनि प्रति मनो अपनी अपनी चौकी॥चढत त्रिभंगी सौंज साजिसनधसतनहीं पल आंखी।देखहु सूरसनेह श्यामकोगगनमंडल हम राखी ॥५०॥सखी री हरि बिनु हरि दुख भारी।सिहको सुत हर भूपण ग्रासेसोइगति भई हमारी ॥ शिखर बंधु अरि क्यों न निवारत पुहुपधनुपके विशेप। चक्षुश्रवा उर हार ग्रसी ज्यों छिन द्वितिया वपुरेख ॥ घटसु अशन सगे सुत आनन अमी गलित जैसे मेत।जलधर व्योम अंबुकन मुंचत नैन होड वदि लेत ॥ द्विजपति प्रभु मिलि आनि मिलावहु हरिसुत आरति जानि । जैसे हरि कर वंध प्रगट भए हरी आरती मानि ॥ पटआनन वाहन काननमें घन रजनी [illegible] गणि सुनि चातक पिक त्रासी॥५१॥राग सोरठ॥ कहा दिन अव किन ग्वालन संग रैहैं ॥ कबहूँ जात पुलिन यमुनाके बहुविहार विधि खेलत । सुरत होत सुरभी सँग आवत बहुत कठिन करि झेलत ॥ मृदु मुसुकानि आनि राखो पिय चलत कह्योहै आवन । सूर सो दिन कबहूं तौ हैहै मुरली शब्द सुनावन ॥ ॥५२॥राग मलार॥श्याम सिधारे कौने देश।तिनको कठिन करेजोसखि री जिनकोपियपरदेश॥इन

ऊधो कछु भली न कीन्ही कौन तजनको वेश। छिन बिनु प्रान रहत नहिं हरिबिन निशिदिन अधिक अँदेश ॥ अजिहि निठुर पतिया नहिं पठई काहू हाथ सँदेश। सूरदास प्रभु यहां उपजत है धारिए योगिनवेश ॥५३॥ राग मलार ॥ गोपालहि पावौं धौं केहि देश। शृंगी मुद्रा कनक खपरकरि करिहौं योगिनि भेष॥ कंथा पहिरि विभूति लगाऊं जटा बँधाऊँ केश॥ हरिकारण गोरखहि जगाऊं जैसे स्वांग महेश ॥ तन मन जारों भस्म चढाऊं विरहिन गुरु उपदेश । सूर श्यामबिनु हम हैं ऐसी जैसे मणिबिन शेष॥५४॥ राग केदारो॥ फिरि व्रज आइए गोपाल। नंदनृपतिकुमार कहिहैंअब न कहिहैं ग्वाल ॥ गुरलिका सुर सप्त दिशि दिशि चले निशान बजाई। दिग्विजयको युवतिमंडल भूप परिहैं पाइ ॥ सुरभिसेन सु सखा भट सँग उठैगी खुर रैनु । आतपत्र मयूरचंद्रिका लसतिहै रवि ऐनु ॥ सदसपति मधुकरनिकर वर मदन आयसु पाइ। द्रुम लता वन कुसुम बानकु वसन कुटी बनाइ॥ सकल खगगण पेक पायक पौरिया प्रतिहार। समै सुख गोविंद व्रजकोकहतसूर विचार॥५५॥ राग जैतश्री॥ फिरिकैवसोगोकुलनाथ। अबनतुमहिं जगाय पठवैंगोधननकेसाथ॥ बरजै न माखन खात कबहूं दह्यो देत लुटाय। अब न दैहिं उराहनो यशुमतिहि आगे जाइ॥ दौरिदामन देहिंगी लकुटी यशोदा पानि । चोरी न देहिं उघारिकै अवगुण न कहिहैं आनि॥ कहिहैंनचरणन देन जावक गुहन बेनी फूल। कहिहैं न करन शृंगार कबहीं वसन यमुना कूल ॥ करिहैं न कबहीं मान हम हठिहैं न मांगत दान। कहिहैं न मृदु मुरली बजावन करन तुमसों गान ॥ देहु दरशन नंदनंदनमिलनहूंकी आश। सूर हरिकेरूपकारन मरतलोचन प्यास॥५६॥ राग जैतश्री॥ हरिसो प्रीतम क्यों बिसराइ। मिलन दूरि मन बसत चंद्रपर चितचकोर पछिताइ ॥ जलमें रहे जलहित उपजे जलही बिन कुँभिलाइ । जल तजि हंस चुगे मुक्ताफल मीन कहां उडिजाइ ॥ सोइ गोकुल गोवर्धन सोई सोइ किन करहि अब छाइ। प्रगट न प्रीति करै परदेशी सुख केहि देश समाइ ॥ धरणी दुखित देखि बादर अति वर्षाऋतु बरसाइ । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन दुख क्यों हृदय समाइ ॥ ५७ ॥ बारक जाइबो मिलि माधो ।को जानै तनु छूटि जाइगो शूल रहै जिय साधो॥ पहुनेहु नंद बबाके आवहु देखि लेउँ पलआधो। मिलेहीमें विपरीति करी विधि होत दरशको बाधो ॥ सो सुख शिव सनकादि न पावत जो सुख गोपिन लाधो। सूरदास राधा बिलपति है हरिको रूप अगाधो ॥५८॥ अथ नैनप्रसंगके पद ॥ राग मलार ॥ बारक नैनहूं मिलि जाहु। कमलनैन घन श्याम राधिकहि परसत जो न पत्याहु ॥ जानतहो कर कमल विरोधी बरन विरोधी बाहु । शशि मुखशत्रु पयोधर गिरि अति तहो तुम क्यों बसमाहु ॥ गज गति मंद मरालविरोधीहेम सुरुचि रिपु दाहु। जंघ कदलि कटि सिंह विरोधी न्याय निरखि सकुचाहु॥ चीन्हिलहे चितचोरि सकलअँग एकै सुपतनशाहु। तदपि सूर उनकी रुचि राखहु कत अधिकै ब डराहु ॥५९ ॥ राग सारंग ॥ नैननको मत सुनो सयानी। निशिदिन तपति सिरात न कबहूं यद्यपि उमँगि चलत पटरानी॥ हौ उपचार अमित आनत उर खल भयो लोक लाज कुलकानी। कछु न सोहाइ दही दरशनदो वारिजबदन मंद मुसकानी॥ रूपलकुटअभिमान मनहु उलटी उन माँझ समानी। आरजपथ गुरु ज्ञान कुपित करि सूरज विकल समानी ॥ ६० ॥ राग मलार ॥ सखि इन नैननते घन हारे। बिनहीऋतु बरषत निशिवासर सदा मलिन दोउ तारे॥ ऊरधश्वास समीर तेज अति सुख अनेक द्रुम डारे । दिशन सदन करि बसे वचन खग दुख पावसके मारे॥ ढुरिढुरि बूँद परत कंचुकिपर मिलि अंजनसों कारे। मानो परनकुटी शिव कीन्हीं बिबि मूरति धरि न्यारे ॥ सुमिरि सुमिरि गर्जत जल छौंडत अंशु सलिलके धारे।

बूडत ब्रजहि सूरको राखे विन गिरिवरधर प्यारे॥६१॥नैनासाधन मार्दाजीते।इनही विषे आनि राखे मनो समुदनिहू जलरीते॥ वे झरलाय दिनहि उघरत ए भूलि न मारग देत। वे वर्षत सबके सुख कारण ए नँदनंदन हेत॥ वे परिमान पुंजे दहमानत ए दिन धार न तोरत। यह विपरीति होति देखति हों विना अवधि जग वोरत॥ मेरे जिय ऐसी आवत भई चतुराननकी मांझ। सूर विन मिले प्रलय जानिवो इनहीं दिवसनि सांझ॥६२॥निशि दिन बरषत नैनहमारे। सदा रहत वर्षाऋतु हमपर जवते श्याम सिधारे॥ नैन अंजन न रहत निशि वासर कर कपोल भए कारे। कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर विच वहत पनारे॥ ऐसे सलिल सब भई काया पलन जातरिसटारे।सूरदासप्रभुगोकुल बूडत काहेनलेत उवारे॥६३॥राग सारंग॥नैननघौंनाधौंहेझर।ऊँच चढि टेरत अतिआतुर सुरकहि गिरधर गिरिधर॥ फिरत सदन दरशनके काजे ज्यों झप सूखे सर।कोनकोनकी दशा कहौं सुन सब ब्रज तिनते पर॥निशि दिन कलमलात सुन सजनी शिरपर गाजत मदन अर। सूरदास प्रभु रही मौन ह्वै कहि नहिं सकति मनके भर॥६४॥ अति रसलंपट मेरे नैन। तृप्ति न मानत पिवत कमल मुख सुंदरता मधु वैन॥ दिन अरु रैनि दृष्टि रसना रस निमिष न मानत चैन। शोभासिंधु समाइ कहांलौं हृदय सांकरे ऐन॥ अब यह विरह अजीरणह्वैके वमिलाग्यो दुखदेन।सूरवेदब्रजनाथमधुपुरीकाहिपठावौलेन॥६५॥राग बेहागे॥ हरि दरशनको तरसत अँखियां।झांकति झपति झरोखा बैठी कर मींडत ज्यों मखियां॥बिछुरी वदन सुधानिधि रिसते लागत नहीं पलखियां।इकटक चितवति उडि न सकति जनु थकित भई लखि सखियाँ॥ वारवार शिर धुनति विसूरति विरह ग्राह जन भखियाँ॥ सूर [illegible] मिले ते जीवहि काढिकिनारे न खियाँ॥६६॥राग सारंग॥लोचन व्याकुल दोऊ दीन।देखे [illegible] दरशविनदेखे विधु चकोर ज्यों लीन॥ विवरन भए खंज जों दावे वारिज ज्यों जलहीन। श्याम सिंधुसोंबिछुरिपरेहैं तरफगत ज्यों मीन॥ ज्यों रतिराज विमुख भृंगीको छिनुछिनु वाणी हीन। सूरदास प्रभु विनुगोपालहि कत विधने एई कीन॥६७॥महा दुखित दोउ मेरे नैन।जाहिनते हरि चले मधुपुरी नेकु न कबहूं कीनो सैन॥ भरेरहत अति नीर न निघटत जानत नहिं दिन रैन। महादुखित अतिही भ्रम माते विन देखे पावत नहिं चैन॥ जो [illegible] पलको नहिं खोलत चाहनचाहत मूरति मैन।छाँडत छिनमें ए जो शरीरहि गहिके व्यथा [illegible] ॥ रसना इहई नेम लियो है और नहीं भाषौ मुख वैन। सूरदास प्रभु जबते बिछुरे तबते सब लागे दुख देन॥ ६८॥अँखियाँ करति अति आर। सुंदरश्याम पाहुनेके मिसि मिल न जाहु दिनचार॥ बाँह थकी वायसहि उडावत कब देखौं उनहार। मैंतो श्याम श्याम के टेरति कालिंदीके करार॥कमलवदन ऊपर दुइ खंजन मानो बूडत वार।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश विनु सकें न पंख पसार॥६९॥राग धनाश्री॥लोचनलालच ते न टरें।हरिमुख ए रंगसंगविधे दाधौ फिरेंजरें॥ज्यों मधुकररुचिरच्यो केतकी कंटककोटिअरे। तैसोई लोभ तजत नहिं लोभी फिरिफिरि फिरी फिरे॥मग ज्यों सहत सहज सेरदारन सन्मुखते न टरें।जानत आहि हते तनु त्यागत तापर हितहि करें॥समुझि न परे कवन सच पावत जीवत जाइ मरें। सूर सुभट हठ छाँडत नाहीं काटो शीश लरें॥७०॥राग सारंग॥लोचन चातक जीवो न चाहत। अवध गए पावसकी आशा क्रमक्रम करि निरवाहत॥ सरिता सिंधु अनेक अवर सखि विलसत पति सजन सनेह। ए सब जल यदुनाथ जलद विनु अधिक दहतहैं देह॥ जबलगि नहिं बरसत ब्रजऊपर नौघन श्याम शरीर।तौइहं तृपा जायक्यों सूरज आनिओसकेनीर॥७१॥राग मलार॥ नैनन

नैननकी सुधि लीजै। गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहिं दिन छीजै ॥ नैन सजल जलधार बढे अति बूडत ब्रज किन कर गहिलीजै। इतनी बिनती सुनहु हमारी बारकहू पतिआ लिखि दीजै ॥ चरणकमल दरशन नवनौका करुणासिंधु जगत यश लीजै।सूरदास प्रभु आश मिलनकी एकबार आवन ब्रज कीजै ॥७२॥ राग केदारो ॥ मेरेनयनाबिरहकी बेलि बई। सींचत नीर नैनके सजनी मूल पताल गई॥ बिकसत लता सुभाइ आपने छाया सघन भई। अब कैसे निरुवारौं सजनी सबतन पसरि छई॥को जाने काहूके जियकी छिनछिन होत नई। सूरदास स्वामीके बिछुरे लागे प्रेम झई ॥७३॥ राग देवगंधार ॥ ब्रजबसिकाकेबोलसहौं। इह लोभी नैननके काजे परवश भई जो रहौं ॥बिसरि लाज गई सुधिनहिं तनुकी अबधौं कहा कहौं। मेरे जियमें ऐसी आवत यमुना जाइ बहौं ॥ एकबन ढूँढिसकल बन ढूँढ्यो कबहुँनश्याम लहौं।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको इह दुख अधिक सहौं ॥ ७४ ॥ राग केदारो ॥ नैना अब लागे पछितान। बिछुरत उमँगि नीर भरि आई अब न कछू अवसान॥ तब मिलिमिलि कत प्रीति बढावत अब सो भई विषवान ।तबतौ प्रीति करी उत्तर होइ समुझी कछु न अजान ॥ अब इह काम दहत निशिवासर नाहीं मेरे मान । भयो बिदेश मधुपुरी हमको क्योंहूं होत न जान ॥ अति चटपटी देखिबे चाहत अब लागी अकुलान। सूरदास प्रभु दीन दुखित ए लै न.गएसँगप्रान ॥७५॥ राग आसावरी ॥ हौं तादिन कजरा देहौं। जादिन नंदनँदनके नैनन अपने नैन मिलैहौं ॥ सुनरी सखी इहै जिय मेरे भूलिन और चितैहौं।अब हठ सूर इहै मत मेरो कौंकिरखै मरिजैहौं॥७६॥ राग मलार ॥ उपमा नैनन एक रही।कविजन कहतकहत सब आए सुधि करि नाहिं कही ॥ कहि चकोर विधुमुख बिन जीवत भँवर नहीं उडिजात। हरिमुख कमलकोश बिछुरेते ढोले कत ठहरात ॥ अघा बधिक व्याधा ह्वै आये मृगसम क्योंन पलात । भाजिजाहि बन सघन श्याममें जहां न कोऊ घात॥ खंजन मनरंजन न होहिं ए कबहिं नहीं अकुलात। पंख पसारि नहीं छिन चपला गति हरिसमीप मुकलात॥ प्रेम न होहि कौन विधि कहिए झूठेही तनु आडत। सूरदास मीनतौ कछुएक जल भरिकबहुं नछाँडत॥७७॥ राग गौरी ॥ कहाइन नैननकोअपराध। रसना रटत सुनत यश श्रवणन इतनी अगम अगाध॥भोजन किये बिनु भूँख क्योंभाजै बिनखाए सब स्वाध। इकटक रहत छुटत नहिं कबहू हरि देखनकी साध ॥ ये हग दुखी बिना वह मूरति कहो कहा अब कीजै। एकबेरब्रज आनि कृपाकरि सूर सो दरशन दीजै ॥७८॥ राग मलार॥ चितवतही मधुबन तन जात । नैननि नींद परति नहिं सजनी सुनि सुनि बात मनै अकुलात ॥ अब ए भवन देखिअत सूनो धाइ धाइ हमको ब्रज खात । कवन प्रतीति करैं मोहनकी जेहिं छाँडि निज जननी तात ॥ अनुदिन नैन तपत दरशनको दरदि समान देखिअत गात । सूरदास स्वामीके बिछुरे ऐसे भए हमारे घात॥७९॥ राग मलार ॥देख सखी उत है वह गाउँ।जहां बसत नँदलाल हमारे मोहन मथुरा नाउँ ॥ कालिंदीके कूल रहतहैं परम मनोहर ठाउँ । जो तनु पंख होइ सुनसजनी आजुअबहिं उडिजाउँ॥होनोहोउ होउसो अबहींयहि ब्रज अन्न न खाउँ। सूरदासनँदनंदनसोंरतिलोगन कहाडराउँ ॥८०॥राग गौरी ॥मथुराकेद्रुमदेखिअतन्यारे।वहई श्याम हमारे प्रीतम चितवत लोचन हारे॥ कितिकबीच संदशहु दुर्लभ सुनियत टेर पुकारे। तुव गुण सुमिरिसुमिरि हम मोहन मदन बान उर मारे।तुम बिन श्याम सबै सुख भूलो गृह बन भए हमारे। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु रैनि गनत गई तारे ॥८१॥स्वप्नदर्शनवर्णनं॥राग केदारो॥जबते बिछुरे

कुजविहारी। नींद न परै घटै नहिं रजनी व्यथा विरहज्वर भारी॥ हौं उठि सखिआँगनह्वैआई जगमगिरही जियारी।श्रवणशब्द सुहाइ नसखीरीयमचातकदुमडारी॥ उरतेसखीदूरिकरुहारहि ककन धरहु उतारी॥सूरदास प्रभुविनअतिव्याकुलकरि वह जतन जुहारी॥८२॥राग नट॥सुपनहुमें देखिये जो नैननि,नींद परै। विरहिनि अजनाथविन कहि कौन उपाइ करै॥चंदमंदसमीरशीतल सेज सदा जरै।कहा करौं कौनी भाँति मरौं मन धीरजन धरै॥बहुत उपाइ करै विरहिनि कछु न चाव सरै। सूर शीतल कृष्णविन कहौकौन तापहरै॥८३॥राग सारंग॥ इतनीदूरिगोपालहिकबहूँ न मिलि आई। कहिए कहा दोष दीजे किहि अपनीही जडताई॥ सोवत महा मनो सुपने सखि अवधि निधन निधि पाई। गनतहि आनि अचानक कोकिल उपवन बोलि जगाई॥जोजागौंतो कहा उठि देखौं विकल भई अधिकाई। किसले कुसुम नवनूत दशहु दिशि मधुकर मदनदोहाई॥ विछुरत तनुनाम ज्यों हठि तिहि छिन गई नहीं समुझाई। समुझि न परी सूर दोहेदिन हरि हँसि कठ लगाई॥८४॥राग धनाश्री॥तवहीं जैहै हेति कहां। जहँवे श्याम मदनमूरति चल मोहिं लिवाइ तहां॥कुटिल अलक मकराकृत कुंडल सुदर नैन विशाल।अरुन अधर नासिका मनोहर तिलक तरनि शशिभाल॥दशन ज्योति दामिनिज्यों दमकति बोलत वचन रसाल। उर विचित्र वनमाल बनी जनु कचन लता तमाल॥ घनतन पीत वसन शोभित अति अलिके बलेपराग॥विपुलबहू अति कृत परिरभन मनहुँ बसे द्रुम नाग।,सोवतिही सुपनेमहिं सोचति सत्य जानि जिय जागी।सूरदास प्रभु प्रगट मिलनको चातकज्यों ल्वलागी॥८५॥ राग मलार॥ सुपनेहरिआएहौ निलकी। नींद जो सौति भई रिपु हमको सहि न सकीरति,तिलकी॥ जो जागौं तोकोऊ नाही रोके रहति न हिलकी। तन फिरि जरनि भई नख शिखते दिआ बाति जनु मिलकी। पहिली दशा पलटि लीनी है त्वचा त्वचकि तनु पिलकी। अब कैसेमहिजातहमारी भई सूरगति सिलकी॥८६॥राग कान्हरो॥ मैंजान्योरीआएहैं हरि चौंकिपरेते रहिनानी। इते मान तन तलफत वहिते जैसे मीन विन पानी॥ सखी,सुदेहते जरति विरह ज्वर तनुपुनिपुनि नहिं सकुल्यो आनी॥कहा करो अपथिभईमिलिवाढी व्यथा दु:सदुहरानी॥ पठवौ पथिक मन समाचार लिखिविपतिविरह वपुअकुलानी।सूरदास प्रभुतुम्हरे दरशविना कैसे वढत कठिनकानी॥८७॥ राग मलार॥ज्योंजागोतो कोऊ नाहीअंत लगीपछितान। हौंजानौंसौंचे मिले माधौ भूलो यहि अभिमान॥ नींदमाहिं मुरझाइ रही हौं प्रथमपच मंघान।अब उरअंतर मेरी माई सपनें छुटी छलिवान॥ सूर सकति जैसे लछिमन तन विह्वल होइ मुरझान। ल्याउ मजीवन मूरि श्यामको तौ रहिहैं ए प्रान॥ ८८॥ राग कल्याण॥ हारिविछुरननिशिनींदगईरी।नन प्रिय विरह शिलीमुख मधुपति वचननि हौंअकुलाई री॥ वह जु दूती प्रतिमा समीपकी सुख नपति दूरत जई री। ताते भर हरि सुनरी मजनी सेज, सलिल दृगनीर मई री॥ अवट अधार जु प्राण रहत हैं इनि वशहिन मिलि कठिन ठई री।, सूरदास प्रभु सुधारस विना भई सकल तनु विरह रई री॥ ८९॥ राग केदारो॥ वहुरयो भूलि न आँखि लगी। सुपनेहूके सुख न सहि सकी नींद जगाइ भगी॥ वहुत प्रकार निमेष लगाए छूटि नहीं शठगी।जनु हीरा हरि लिए हाथते ढोल वजाइ ठगी॥कर मींडति पछिनति विचारति इहि विधि निशा जगी। वहमूरति वहसुखदिखरावैसोईसूर सगी॥ ९०॥ राग धनाश्री॥अवसखिनींदौतो गई। भागी जिय अपमान जानि जनु सकुचनि ओट लई॥ अति रिस अहनिशि कन किए वश

आगम अटक दई। सुपनेहू संयोग सहति नहिं सहचरि सौति भई॥ कहतहि पोच सोच मनहीं मन करत न बनति खई। सूरदासतनुतजेभले बनेविधिविपरीति ठई॥ ९१॥ राग नट ॥ पियकी बात सुनहि किन प्यारी। जो कछु भयो सोकहिहौं तुमसन होहु सखिनतेन्यारी॥ तववियोगशोक तौ उपज्यो कामदेव तनु जारी। भेषज अधर सुधाहै तुमपै चलिदै व्यथा निवारी॥ कठिन परे जु कुशल रिपु पूँछै मनकीकहा विचारी। सूरदासप्रभु हृदय है तेरे मानहु सार पुकारी॥ ९२॥ रागमलार॥ हमको सुपनेहूमें सोच। जादिनतेबिछुरेनँदनंदन इह ता दिनते पोच॥ मनो गोपाल आए मेरे गृह हँसिकरि भुजा गही। कहा करौं वैरिनि भई निद्रा निमिष न और रही॥ ज्यों चकई प्रतिविंब देखिकै आनंदे पियजानि। सूरपवन मिलिनिठुरविधाता चपलकियोजलआनि॥ ९३॥ रागविहागरो॥ हरिबिनु वैरिननींद वडी। हौं अपराधिनि चतुर विधाता काहे बनाइ गढी॥ तन मन धन यौवन सुख संपति बिरहाअनल दढी। नँदनंदनको रूप निहारतअहनिशि अटा चढी॥ जेहिंगोपाल मेरे वश होते सो विद्या नपढी। सूरदास प्रभु हरिन मिलै तौघरतेभली मढी॥ ९०॥ राग मलार ॥ सुनहु सखी ते धन्य नारि। जो अपने प्राणवल्लभकी सपनेहुँ देखतिहै अनुहारि॥ कहा करौं चलतश्यामके पहिलेहि नींद गई दिनचारि। देखि सखी कछु कहत नआवैझौंखिरही अपमानन मारि॥ जादिनते नैनन अंतर भयो अनुदिन अति बाढतिहै वारि। मनहुँ सूर दोउ सुभग सरोवर उमँगि चलेमर्यादा डारि॥ ९५॥ राग मलार॥ हमकोजागत रैनिविहानी। कमलनैनजगजीवनकीसखिगावतअकथकहानी विरह अथाह होत निशि हमको बिनु हरि समुद समानी। क्योंकरि पावहि विरहिन पारहि बिन केवट अगवानी॥ उदित सूर चकई मिलाप निशि अलि जो मिलै अरविंदहि। सूर हमैं दिन रात दुसह दुख कहा कहैं गोविंदहि॥ ९६॥ मोको माई यमुना जल होइरही। कैसे मिलौं श्यामसुंदरको वैरिनि बीच बही॥ केतिक बिच मथुरा औ गोकुल आवत हरिजो नहीं। हम अबला कछु मर्म न जान्यो चलत न फेट गही॥ अव पछितात प्राण दुख पावत जात नबात कही। सूरदास प्रभुसुमिरिसुमिरि गुणदिनदिन शूल सही॥ ९७॥ राग धनाश्री॥ नैनसलोनेश्यामहरिकब आवहिंगे। वे जो देखत रातेराते फूलन फूले डार। हरिबिनु फूलझरीसी लागत झरिझरि परत अँगार। फूल बिनन ना जाउँसखी री हरिबिन कैसे फूल। सुन री सखी मोहिं रामदोहाई लागतफूलत्रिशूल॥ जबते पनिघट जाउँ सखीरी, वा यमुनाके तीर। भरिभरि यमुना उमडि चलतहै इननैननके नीर॥ इन नैननके नीर सखी री सेज भई घर नाव। चाहत हौं ताहीपै चढिकै हरिजीकेढिग जाव॥ लाल पियारे प्राण हमारे रहे अधरपर आइ। सूरदास प्रभु कुंजविहारी मिलत नहीं क्यों धाइ॥ ९८॥ राग मलार॥ बहुरो गोपाल मिले सुखनेह कीजे। नैनन मग निरखि वदनशोभारस पीजे॥ मदनमोहन हृदय उर आसन दीजे। परैं न पलक आखिनके देखि देखि जीजे॥ मान छांडिप्रेम भजन अपनो करिलीजै। सूरसोई सुभगनारिजासोंमन भीजै॥ ९९॥ राग केदारो॥ सखीरी हरि आवें केहि हेत। वे राजा तुम ग्वाल बुलावत इहै परेखो लेत। अब शिर छत्र कनक राजतहै मोरपंख नहिं भावत। सुनि व्रजराज पीठिदै बैठत यदुकुल विरद बुलावत॥ द्वारपाल अति पौर विराजत दासी सहस अपार। गोकुल गाइ दुहत दुख गोयो सूर भए एबार॥ २८००॥ राग मलार॥ चलत न माधौकी गहि बाहें। वारवार पछिताति सबहिते इहै शूल मनमाहें॥ घर वन कछु न सुहाइ रैनि दिन मनहुँ मृगी दौ दाहें। मिटति न तपनि विना घनश्यामहिं कोटि घनी छन छाहें॥ विलपति अति पछिताति मनहिं मन चंद्र गहे जनु राहें। सूरदास प्रभु दूरि सिधारे दुख

कहिए केहि, पाहिं॥१॥ राग सारंग॥मनकी मनही मांझ रही । जब हरि रथ चढि चले मधुपुरी सब अज्ञान भही॥ मति बुधि हरी परी धरणी पर अति बेहाल खरी । अंकुश अलक कुटिल भए आशा ताते अवधि वरी ॥ ज्यों बिनु मणि अहि मृक फिरतहै यानिधि विधि विपरीतधरी। मन तो रह्यो पथ सूरज प्रभु माटी रही धरी ॥२॥ मेरो मन वैसे सुरति करे । मृदु मुसुकानि नेक अवलोकनि हृदयेते न टरे ॥ जब गोपाल गोधनसँग आवत मुरली अधरधरे । मुखकेरेणु झारि अंचलसो यशुमति अंग भरे ॥संझा समय घोषकी डोलन वह सुधि क्यों बिसरे । सूरदास प्रभु दरशनकारण नैनन नीर ढरे ॥ ३ ॥राग आसवरी॥जाको मन लग्यो नँदलालहि ताहि और क्यों भावे हो। जैसे मीन दूधमें डारे जलबिनु नहिं सचु पावे हो॥अति सुकुमार डोलत अंगनही परि,काहु न जनावे हो। जैसे सरिता मिलि सिंधुको उलटि प्रवाह न आवे हो॥ ऐसे सूरकमललोचनबिनु मन नहिं अनत लगावे हो॥४॥राग सारंग॥ कहां लौं रखिए मन बिरमाई। इकटक शिव धरे नैन लागत श्यामसुता सुत धनआई॥हर वाहन दिव वास सहोदर तिहि मति ठदित मुरछि मुहि जाई । गिरिजापति रिपु नखशिख व्यापत वंश सुधा पिय कथा सुनाई ॥ विरहिन विरह आपु वश कीन्हें लेउ कमल जिमि,पाइ छुआई। वेगिहि मिलो सूरके स्वामी उदधितनयापति मिलिहै आई॥५॥राग मारू॥कमलनैन अपने गुनन मन हमारो बाँध्यो।लागत तो जानों नहिंविषम बाण साध्यो॥कठिन पीरबाँध्यो शर मारि गयो माई। लागत तो जानो नहिं अब सहो न जाई॥ मंत्र तंत्र जेतिक करौं तउ पीरन जाई।है कोउ उपचार करे कठिन दरद माई॥ कैसेहुं नंदलाल पावों नेक मिलो धाई।सूरदास प्रेमफंद तोरी नहिं जाई॥६॥राग सोरठ॥ हरि हमसोंकरी री माई मीन जलकीप्रीति। इतनी दूरि दयालु माधो गई अवधि व्यतीति॥ तलफिके उन प्राण दीनों प्रेमकी परतीति । नीर निकट न पीर जानी व्यर्थगयो वपुबीति॥ चलन मोहन कही हमसों आइहैं रिपु जीति। सूर वा व्रजनाथके जिय सबै उलटी रीति॥७॥ राग धनाश्री ॥मतिकोईप्रीतिकेफंगपरे। मादर संत देखि मन मानो पेखे प्राण हरे ॥ या पतंग कहा कर्म कीन्हो जीवको त्याग करे। अपने मरवेते न डरतहै पावक पैठि जरे॥ भौं करत नहीं ताहि निपाते केतिक प्रेम धरे।शारँग सुनत नाद रस मोह्यो मरिवेते न डरे॥जैसे चकोर चंद्रको चाहत जल बिन मीन मरे। सूरज प्रभुसो ऐसेमिलिएतो कहो कानसरे॥८॥राग सारंग॥प्रीति करि काहू सुख न लह्यो।प्रीति पतंग करी दीपकसों आपेप्राण दह्यो ॥ अलिसुत प्रीति करी जलसुतसों संपति हाथ गह्यो। शारँग प्रीति करी जो नादसों सन्मुख बान सह्यो॥ हम जो प्रीति करी माधोसों चलन न कछू कह्यो। सूरदास प्रभुबिनु दुख दूनो नैनन नीर बह्यो ॥ ९ राग मलार ॥ प्रीति तौ मरनोऊ नविचारे॥प्रीति पतंग ज्योति पावक ज्यों जरत न आपु सँभारे ॥ [illegible] प्रीति परेवा उडत गगनते गिरत न आपु सँभारे॥ [illegible] पुकारे। सूरदास प्रभुदरशन कारन ऐसी भांति बिचारे ॥ १०॥ जिन कोउ काहूके वश होहि। ज्यों चकई दिनकरवश डोलति मोहि फिरावत मोहि॥हमतो रीझि लटू भई लालन महाप्रेम तिय जानि।बंध अबध अमति निशिवासरको सुरझावति आनि॥ उरझे संग अंगअंग प्रति विरह बेलिकी नाई। मुकुलिति कुसुम नयन निद्रा तजि रूपसुधा सियराई ॥अति आधीन हीन मति व्याकुल कहांलौं कहौंबनाइ।ऐसी प्रीति करी रचनापर सूरदासबलिजाइ॥११॥राग नट॥ दिनही दिन को सहे वियोग। यह शरीर नाहिन मेरो सखि इहै विरह ज्वर योग ॥ रचि ब्रह्म

कुसुम सुगंध सेजसजि वसन कुमकुमा बोरि।नलिनीदलनि दूरिकरि उनते कंचुकिकेबँदछोरि ॥ वन वन जाइ मोर चातकपिक मधुवनटेरिसुनाई।उचित चंद चंदन चढाइउर त्रिविधसमीरवहाई ॥ रटि सुख नाम श्यामसुंदरको तोहिं सुनाइ सुनाई।तो देखत तनु होमि मदनमुख मिलोंमाधवहि जाई ॥ सूरदास स्वामी कृपालु भए जानि युवति रसरीति । तिहि छिन प्रगट भए मनमोहन सुमिरि पुरातन प्रीति ॥ १२॥राग धनाश्री॥ वहुरि न कबहूँ सखी मिलैं हरि । कमलनयनके कारण सजनी अपनोसो जतन रही वहुते करि॥जेइजेइ पथिक जात मधुवनतन तिनहुँसोंव्यथा कहति पाँइनि परि । काहु न प्रगट करी यदुपतिसों दुसह दुरासा गई अवधि ढरि ॥ धीरनधरति प्रेमव्याकुल चित लेत उसाँस नीर लोचन भरि।सूरदास तनु थकित भई अब कृष्णविरहसों परि न सकति मरि॥१३॥पावससमयवर्णन राग मलार॥व्रजते पावस पै न टरी॥शिशिर वसंतशरद गत सजनी वीती औधि करी ॥ उनँउने घन वरपत चख उरसरिता सलिलभरी।कुमकुम कज्जल कीच बहै जनु कुचयुग पारि परी ॥ ताहुमें प्रगट विपम ग्रीपमऋतु इतयो ताप मरी।सूरदास प्रभु कुमुद चंद्रविनु विरहातरनि जरी ॥ १४ ॥ अब वर्षाको आगम आयो । ऐसे निठुर भये नँदनंदन संदेशो न पठायो ॥ वादर घोर उठे चहुँ दिशिते जलधर गरजि सुनायो।एकै शूल रही मेरे जिय वहुरि नहीं व्रज छायो ॥ दादुर मोर पपीहा वोलत कोकिल शब्द सुनायो । सूरदासके प्रभुसों कहियो नैनन है झर लायो ॥ १५ ॥ माई री ए मेघ गाजै।मनहुँ काम को पिचढोकोलाहल कटक चढ्यो वरहा पिकचातक जैजे निसान बाजै ॥ वरनवरन वादर वनाए तव जगत बिराजै । दामिनि करवार करनि कंपत सब गात,उरनि जलधर समेत सेन इंद्र धनुप साजै ॥ ऐसे अभिलाप धीर विगत विरत तेन लाजै । अवलनि अकेली करि अपनी कुलनीति विसरि अवधि संग सकल सूर भहराइ भाजै ॥ १६ ॥ व्रजपर वदरा आए गाजन । मधुवनको पटए सुनु सजनी फौज मदन लग्यो साजन ॥ ग्रीवारंध्र नैन चातकजल पिक मुख वाजे बाजन।चहुँदिशिते तनु विरहा घेरो अब कैसे पावतु भाजन॥कहियत हुते श्याम परपीरकआए शंकर काजन । सूरदास श्रीपतिकी महिमा मथुरा लागे राजन ॥ १७ ॥ देखियत चहुँदिशिते घन वोरे। मानोमत्त मदनके हथियन वलकरि वंधन तोरे॥ श्याम सुभगतनु चुअत गंडमदवरपत थोरेथोरे। रुकत न पौन महावतहूपे मुरत न अंकुशमोरे ॥ वलवेनी वल निकसि नयनजलकुच कंचुकि वंद वोरे ।मनो निकसि वगपाँति दांत उर अवधि सरोवर फोरे ॥ तव तेहि समे आनि ऐरापति व्रजपतिसों करजोरे। अब सुनि सूर कान्ह केहरिविन गरत गात जैसे वोरे॥१८॥व्रजपर सजि पावस दल आयो ।धुरवा धुंधि वढी दशहूँ दिशि गर्जि निसान वजायो॥चातक मोरइतरपै दागन करत अवाजें कोयल । श्याम घटा गज अशन वाजि रथ चित वगपांति सजोयल ॥ दामिनि कर करवार बूँद शर इहिविधि साजे सेन।निधरक भयो चल्यो व्रज आवत अग्र फौजपति मैन ॥ हम अवला जानिकै तुम वल कहौ कौन विधि कीजे।सूर श्याम अवके इहि औसर आनि राखि व्रज लीजे ॥१९॥ सखि री पावस सेन पलान्यो।पायो बीचइंद्र अभिमानीहरिविन गोकुल जान्यो ॥ दशहु दिशासों धूम देखियत कंपतिहै अति देह । मनहु चलत चतुरंगचमू नभ वाढी है खुर खेह ॥ वोलत मोर शैल द्रुम चढिचढि वग जु उडत तरु डारें । मनु सहनाफहराइ फिरावत भाजन कहत पुकारें ॥ गर्जत गगन गयंद गुंजरत अरु दादुर किलकार । सूरदास प्रभु अपने व्रजकी काहेन करत सँभार ॥२०॥ वदरिया वधन विरहिनी आई । मारुत मोर करत

चातक पिक अरु नग शिखर सुहाई ॥ नदिया सुनग संदेश क्यो पठऊं बाट तृणनहू छाये।इकहम
दीनहती कान्हर बिनु औ इन गरजि सुनाए॥ सुनो घोष वेर तकि हमसों इंद्र निसान बजाए।
सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि होति हमारे घाए॥२१॥वरु ए बदराऊ वर्षन आए।अपनी अवधि
जानि नँदनंदन गरजि गगन घन छाए॥ कहियतहे सुरलोक वसत सखि सेवक सदा पराए।
चातक पिककी पीर जानिके तेउ तहांते धाए॥ तृण किए हरित हरपि वेली मिलि दादुर मृतक
जिवाए। साजे निविड नीडतन सिंचि सजि पंछिनहू मन भाए॥समुझत नहीं चूक सखि अप-
नी बहुते दिन हरि लाए। सूरदास प्रभु रसिकशिरोमणि मधुवनवसि विसराए॥२२॥बहुरि हरि
आवहिंगे किहि काम।ऋतु वसंत अरु ग्रीषम बीते अव बादर भए श्याम॥तारे गनत गनतकेसज-
नी बीते चारों याम।औरोकथा सबै विसराईलैन तुम्हारोनाम॥छिन अंतर छिन द्वारेठाढी अरु
सूखतिहैवाम।सूर श्याम जादिनते विछुरेअस्थि रहीके चाम॥२३॥किधौं घन गर्जतनहिंउनदेशनि।
किधौं हरि हरपि इंद्र हठि वरजे कै धौं दादुर खाए शेषनि॥ किधौं उहि देशन गवन गम छांडे
घरनि न बूंद प्रवेशनि। चातक मोर कोकिला उहिवन वधिकन वधे विशेषनि॥किधौंउहिदेश
वाल नहिं झूलति गावतिसखिन सुदेशनि। सूरदास प्रभु पथिक न चलहीं कासो कहौं सँदेशनि
॥ २४ ॥ देखो माई श्यामसुरति अव आवे। दादुर मोर कोकिला बोलै पावस अगम जनावे॥
देखि घटा घनचाप दामिनी मदन शृंगार बनावे। विरहिनि देखि अनाथ नाथ विन चढिचढि
व्रजपर आवे॥ कानों कहौं जाइ को हरिपे यह वसुदेव सुनावे। सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि
व्रजवनिता सचुपावे॥ २५॥ तुम्हारो गोकुल हो व्रजनाथ। घेरयो है अरि चतुरंगिनि लै मन्मथ
सेना साथ॥ गर्जत अतिगंभीर गिरा मन मेगल मत्तअपार। धुरवा धूरि उडत रथ पायक घोर-
नकी खुरतार। चपला चमचमाति आयुध वग पंगति ध्वजा अकार। परत निसाननि घाव त-
मकि धनु तरपत जिहि जिहि वार। मारेमार करत भट दादुर पहिरे वहु- वरन सनाह। अरे
कवच उवरे देखियत मनो विरहिनि घाली आह॥करे तो गात अंग चातक पिक कहत भाजि
जिनि जाहु।उरनि उरनि वे परत आनि वे जोधा परम उछाहु॥ भयो अहंकार सुभार सूरवों स-
कति रही उर शालि। हम कत हाथ परे नाही गहि रहि न ढाल संभालि॥अति घायल धीरज
दुवाहिआतेज दुर्जन दालि। टूकटूककहे सुभट मनोरथ आने झोली घालि॥निशि वासरकेविग्रह
आयो अति संकेतहि धाउ।कापे करौं पुकार नाथ अब नाहिन तुम बिनु ठांउ॥नंदकुमारश्याम
घन सुंदर कमल नैन सुखधाम। पठवहु वेगि गोहार लगावन सूरदास जिहि नाम॥२६॥ऐसेमें
न सुध्यो करे अति निठुराई धरे उनेउने घटादेखो पावसकी आई है।चहुं दिशिघोर मोरलागी
है मदन रोर पिककी पुकार उरअरसी लगाईहै।दामिनिकी दमकनिबूंदनिकी झमकनि सेजकी
नलफ कैसे जीजियत माईहे।लागेहैं विसारे बान श्यामबिनु युग याम घायल ज्यों घूमेंमनो विप-
हर खाईहे॥ मिटे न जियको शूल जातहे यौवन फूल घरीघरी पलपल विरह सताईहै। जग-
तके प्रभुबिनु कलन परतछिनु ऐसे पापी पिय तोहिं पीर न पराई है॥ २७॥ ऐसो जो पावस
ऋतु प्रथम सुरति करि माधौजू आवहिं।वरनवरन अनेक जलधर अति मनोहर भेष।तिहि समय
सखि गगन शोभा सवहिंते सु विशेष॥उडत खग वगवृंद राजत रटत चातकमोर।बहुविविधविधि
रुचि घटानत दामिनी घनघोर॥ धरनि तृण तनु रोम पुलकित पिय समागम जानि। द्रुमनि
वरवल्ली वियोगिनि मिलतिहे पहिचानि॥ हंस शुक पिक सारिका अलि गुंज नाना नाद।

मुदित, मंडल भेक भेकी विगत विहँग विपाद॥कुटज कुमुद कदंब कोविद कनकआरि सुकंज।के-
तकी करवीर वेलउ विमल वहुविधिमंत॥ सघनदल किलकार अंकित सुमन सुकृतसुवास। निकट
नैन निहारि माधो मन मिलनकी आस॥मनुजमृग पशुपक्षिपरिमित औरअमितजुनाम ।सुमिरि
देश विदेश परिहरि सकल आवहिं धाम॥यहै अवधि उपाउ सोचति कछुन परै विचार।कौन
हित व्रजवास बिसरचो नीक नंदकुमार॥ परम सुहृद सुजान सुंदर ललित गति मृदु हास ।
वैनवर वहुविधि बजावन गोपशिशु चहुँपास॥ चारुकुंडल लोललसित सुकमलविमल विशाल।
सुदिन कव जव देखवी वन वहुत वाल विशाल ॥ वारवार सु विरहिनी अति विरह व्याकुल
होति। वातवेग विलोल ज्यों अलि दीन दीपकज्योति॥सुनि सँदेसहि हृदयसूरजदास करि पर-
तीति।दरश दे दुखदूरिकीजैप्रेमकीयह रीति॥२८॥राग मलार॥आजुघनश्यामकीअनुहारि। उनइ
आए साँवरेते सजनी देखि रूपकी आरि॥ इंद्रधनुपमानोपीत वसनछविदामिनिदशनविचारि।
जनु वगपांति माल मोतिनकी चितवत हितहि निहारि ॥ गर्जत गगन गिरागोविंदमिसु सुनत
नयन भरे वारि।सूरदास गुण सुमिरि श्यामके विकलभई व्रजनारि॥२९॥कैसेंकै भरिहैं री दिन साव-
नके।हरित भूमि भरेसलिलसरोवरमिटे मगमोहनआवनके॥ दादुर शोर मोर चातकपिकनिशहि
निशासुर पावनके।अव घन घुमडि उमडि दामिनि रूप मदन धनुपधरि धावनके ॥ पहिरि
कुसुमसारी कंचुकि तनु झुंडनि झुंडनि गावनके । सूरदास प्रभु दुसह घटत क्यों शोक त्रिगुण
शिररावनके॥३०॥राग केदारो॥हरिसुत पावकप्रगटभयोरी॥मारुतसुतवंधोप्रतिप्रोहित ताप्रतिपालन
छाँडि गयो री॥हरसुतवाहनअशन सनेही सो लागत अंगअनलमयो री। मृगमदस्वादमोदनहिं
भावत दधिसुत भानसमान भयो री॥वारिजसुत प्रतिक्रोध कियो सखिमेटिदकारसकारलयोरी ।
सूरदास विनु सिंधुसुतापति कोपि समर कर चाप लयो री॥३१॥ राग मलार॥ऐसेवादरतादिनआये
जा दिन श्याम गोवर्धन धारचो। गरजिगरजिघनवरपनलागे मनोसुरपतिनिजवैरसँभारचो॥ सबै
सँयोग जुरेहैं सजनी हठिकरि घोप उजारचो । अवकोसातदिवसराखैगोदूरिगयोव्रजकोरखवा-
रचो॥ जव वलराम हुते या व्रजमें काहू देव न ऐसो डारचो । अव यह भूमि भयानक लागे
विधिना वहुरि कंस अवतारचो ॥ अव इह सुरति करै को हमरी या व्रज कोऊ नाहिं
हमारचो । सूरदास अतिविकल विरहिनी गोपिन पिछलो प्रेम सँभारचो ॥ ३२ ॥ जोपैनंदसुवन
व्रज होते। तो पैनृप पावस सुनि विनती कहत न डरती सोते ॥ अव हम अवल जानिकै
सखि री हैं गैवररथ जोते। हमपर गरजि गरजि पठवतहैं लेत न सकल सवोते॥ सूरदास प्रभु
शैलधरनविनु कहा सवै अव तोते ॥ ३३॥ इहां नाहिन नंदकुमार ।उहै जानिअजानमघवाकरी
गोकुलआर ॥ नैन जलद निमेप दामिनि आँसु वर्पत धार ।दरश रवि शशि दुत्योधीरजश्वास
पवन अकार ॥उरज गिरिभे भरन भारी अगम काम अपार। गरजि विकल वियोग वाणी हरति
अवधि अधार ॥ पथिक मथुराजाइ हरिसों वात कहै विचार। शत्रुसेन सुधाम घेरचो सूर लगहु
गुहार॥ ३४ ॥मानो माई सवन इहै हैंभावत।अव वहिदेशनंदनंदनकहँकोउनसमोजनावत॥धरत
न वन नवपत्र फूल फल पिक वसंत नहिं गावत। मुदित न सर सरोज अलि गुंजत पवन पराग
उडावत ॥ पावस विविध वरन वर वादर उडि नहिं अंवर छावत ।चातक मोर चकोर शोर करि
दामिनि रूप दुरावत ॥ हमपर सकल कोप करि सजनी हठिकरि वलहि वढावत ।सूर श्याम
परपीर न जानत कत सर्वज्ञ कहावत॥३५॥सखि कोई नईवात सुनि आई। इह व्रजभूमि सकलसर/

संपति सो मदन मिलिक करिपाई ॥ घनदामिनि वगपाँति मनोवै वरषे तडित सुहाई । बोलत वग निकेत गरजे अति मानो फिरत दोहाई॥ गोकुल मोर चकोर मधुप शुक सुमनसमीरसोहाई। चाहत वास कियो वृंदावन विधिसों कछु न वसाई॥ सकत न जानत लागत सूनो कोउ हुते वल वीर कन्हाई। सूरदास गिरिधर विन गोकुल कौन कौन करिहैं ठकुराई॥३६॥ बहुरि वन बोलन लागे मोर। कर संभार नंदनंदनको सुनि बादरको घोर॥ जिनको पिय परदेश सिधारो सो तियपरी निठोर। मोहिं बहुत दुख हरि बिछुरेको रहत विरहको जोर ॥ चातक पिक चकोर पपीहा ए सवही मिलि चोर।सूरदासप्रभु वेगिन मिलहु जनम परतहै बोर॥३७॥ यहि वन मोर नहीं एकामवान। विरह खेद धनुपुहुप भृंग गुन करिल तरैया रिपुसमान॥ लयो घेरि मनो मृग चहुँदिशिते अचूक अहेरी नहिं अजान।पुहुपसेन घन रचित युगल तनुक्रीडत केसो वन निधान ॥ महामुदित मन मदन प्रेमरस उमँगिभरे में मेन जान।इहि अवस्था मिले सूरदास प्रभु वदरचो नानागदे जीवनदान॥३८॥आजु वन मोरन गायो आइ।जवते श्रवण सुन्यो सुन सखी री तवते रह्योन जाइ॥ व्रजते बिछुरे मुरलिमनोहर मनहुँ व्याल गयो खाइ।औषध वेद गरूरियो हारे नहिं मानि मंत्र दोहाइ॥चातकपिक दुखदेत रैनिदिन पियपियवचन सोहाइ।सूरदासप्रभुतौपैहै जीवहिंजो मिलिहैं हरि आइ॥३९॥शिखिन शिखर चढि टेर सुनायो।विरहिनि सावधानह्वै रहियो सजि पावस दल आयो॥ नव वादल वानैत पवन ताजी चढि चुटकि दिखायो॥ चमकत वीजु शैलकर मंडित गरजि निसान वजायो ॥ दादुर मोर चातक पिकके गण सव मिलि मारू गायो। मदन सुभट करवाण पंचलै व्रजतन सन्मुख धायो ॥ जानिविदेशनंदको नंदन अवलन त्रासदिखायो।सूर श्यामपहिले गुण सुमिरिरहि प्राण जात विरमायो ॥ ४० ॥ हमारे माई मोरवा वैर परे। घन गर्जत वरज्यो नहिं मानत त्यों त्यों रटत खरे॥ करि करि पंख प्रगट हरि इनको लैलै शीश धरे। ताही ते मोहन विरहिनिको एऊ ढीठ करे ॥ को जानै काहेते सजनी हमसों रहत अरे। सूरदास परदेश वसे हरि ए वनते न टरे॥४१॥ कोउ जाइ वरजो वोलत मोरनि।देरनि विरहछिनुनरह्योपरैसुनिदुखहोत करोरनि ॥ रटत पपीहा छिनु न रहाइ होत विरहकी रोरनि। चमकत चपल चहूँ दिशि दामिनि अंबर घनकी घोरनि॥ वर्षत बूँद वाण से लागत विरहाशरके जोरनि। चंद्र किरन नैनन भरि पीवत नाहिंन तृप्ति चकोरनि ॥ मन्मथ पीर अधिक तनु कंपित ज्यों मृग केहरि कोरनि। सूर दास तोहीपर वचिवो मिलिहौ नंदकिशोरनि॥४२॥राग सारंग॥अहोरे विहंगमवनवासी।तेरेबोल तरजनी वाढत श्रवन सुनत नीदउ नासी॥कहा कहौं कोउ मानत नाहीं इक चंदन औ चंद प्रासी। सूरदास प्रभु ज्यों न मिलेंगे लेहौं करवत कासी॥४३॥ शारंगश्यामहिसुरतिकराइ।पौढेहोहिंजहां नँदनंदन ऊंचे टेर सुनाइ॥ गयेग्रीषम पावसऋतु आई सव काहू चितचाइ। तुम विनु व्रजवासी ऐसे जीवें ज्यों करिया विननाइ॥ तुम्हरो कह्यो मानिहैं मोहन चरण पकरि लैआइ। अवकी वेर सूरके प्रभुको नैनन आनि देखाइ ॥ ४४॥ राग मलार ॥ सखी री चातक मोहिंजिआवत।जैसेहिंरैनि रटति हौं पिय पिय तैसही वह पुनि पुनि गावत॥अतिहिसुकंठ दाहु प्रीतमको तारूजीभ नलावत। आपु न पिवत सुधारस मजनी विरहिनि वोलि पिआवत॥जो ए पंछि सहायन होते प्राण बहुत दुख पावत। जीवन सफल सूर ताहीको काज पराए आवत॥४५॥ राग सारंग॥चातक न होइ कोउ विरहिनि नारि।अजहुँ पिय पिय रजनि सुरति करि झूठेहि मौंगत वारि॥अति कृशगात देखि सखि याको अहनिशिवाणी रटत पुकारि। देखो प्रीति वापुरे पशुकी आन जनम मानत नहिं हारि॥

अब पति बिनु ऐसो लागत यह ज्यों सरवर शोभित बिनवारि। त्योंही सूर जानिए गोपी जोन कृपाकरि मिलहुमुरारि॥४६॥राग आसावरी॥अब मेरी को बोलै साखि। कैसे हरिके संगसिधारेअब-लौं यह तनु राखि॥ प्राण उदान फिरत ब्रज बीथिनि अवलोकनि अभिलापि। रूप रंग रस रास परानो बचन न आवै भापि॥ सूर सजीवनि मूरिमुकुंदहि लैआईही आँखि।अब सोइ अंजन देतिसुरचिकरि जिहि जीजै मुख चाखि॥४७॥राग मलार॥बहुत दिनजीवो पपीहाप्यारो।वासररैनि नावँलै बोलत भयो बिरह ज्वर कारो॥आपु दुखितपरदुखितजानि जिय चातकनाउँ तुम्हारो। देखो सकल बिचारि सखी जिय बिछुरनको दुख न्यारो॥जाहि लगे सोई पै जानै प्रेम बाण अनियारो। सूरदासप्रभुस्वातिबूँदलगितज्यो सिंधुकरिखारो॥४८॥हौंतौमोहनकेविरहजरीरेतूकतजारत।रेपापी तू पंखि पपीहा पिउपिउपिउ अधरातिपुकारत॥सबजगसुखी दुखी तू जलबिनुतऊ न तनुकी बिथहि बिचारत।कहा कठिनकरतूतिन समुझत कहा मृतक,अबलनि शर मारत॥ तू शठ बकत सतावतकाहू होतउहै अपने उर आरत।सूर श्यामबिनु ब्रजपर बोलत हठि अगलेऊ जनम बिगारत॥४९॥राग नट॥ जो तू नेकहूँ उडि जाहि।कहा निशिवासर बकत बन बिरहिनीतनु चाहि॥ बिधिहि बचनसुदेश बाणी इहां रिझवत काहि।पति बिमुख पिक पुरुष बसु लौं एतो कहा रिसाहि॥नाहिनै सुख सुनत समुझत बिकल बिरह व्यथाहि।राखि यह तन या अवधिलौं मदनमुख जिनि खाहि॥ तहूँतो तनु दग्धरवलखि फिरि कहा समुहाहि।करि कृपा ब्रजसूरप्रभुबिनुमौनिमोहिं बिसाहि॥५०॥ ॥राग सारंग॥कोकिल हरिको बोल सुनाउ। मधुबनतै उपठारि श्यामकों इहि ब्रज लैकरि आउ॥ जा जस कारण देतसयानेतन मन धन सब साजु।सुयश बिकात बचनके बदले क्यों नबिसाहत आजु॥ काज कछू उपकार परायो यहै सयानो काज। सूरदास पुनि कहां यह औसर बन बसंत ऋतुराज॥५१॥ सुन री सखी समुझि शिख मेरी। जहां बसत यदुनाथ जगतमणि बारक तहां आउ दै फेरी। तू कोकिला कुलीन कुशल मति जानत व्यथा बिरहिनी केरी। उपवन बैसि बोलि बरबानी बचन सुनाय हमहि करि चेरी॥करियो प्रगट सुनाय श्यामसों अबला आनि अनंगरिपु घेरी। तोसी नहीं और उपकारिनि यह बसुधा सब बुधि करि हेरी॥प्राणनके बदले न पाइयतसैंति बिकाय सुवशकी ढेरी। ब्रज लेआउ सूरकेप्रभुको गाऊंगी कलकीरति तेरी॥५२॥राग मलार॥ अब इह बरषी बीति गई। जिनि सोचहु सुखमान सयानी भली ऋतु शरद भई॥ प्रफुल्लित सरज सरोवर सुंदर नवविधि नलनि नई। उदित चारु चंद्रिका अबर उर अंतर अमृत मई॥ घटी घटा सब अभिन मोह मद तमिता तेज हई। सरिता संयम स्वच्छ सलिल जल फाटी काम कई॥ हे सरघा संदेश सूर सुनि करुणा कहि पठई। यह सुनि सखी सयानी आई हरि रति अवधि दई॥५३॥राग मारू॥शरद समैहू श्याम न आए।को जानै काहेते सजनी कहुँ बिरहिनि बिर-माए॥अमल अकास कास कुसुमिन क्षिति लक्षण स्वाति जनाए।सर सरिता सागर जल उज्ज्वल अलिकुल कमल सुहाए॥ अहि मयंक मकरंद कंद हति दाहक गरल जिवाए॥ त्रिय सब रंग संग मिलि सुंदरि रचि सचि सींच सिराए॥सुनी सेज तुपार जमत चिरहास चंदन बाए। अबलहि आश सूर मिलिवेकी भए ब्रजनाथ पराए॥५४॥ अथ षट्मति तरकवदति॥ राग कान्हरो॥ छूटिगई शशि शीतलताई। मनु मोहि जारि भसम कियो चाहत साजत मनो कलंक तनु काई॥ याहीते श्याम अकास देखियेमानो धूम रह्यो लपटाई। ताऊपर दीदेत किरनि उर उडुगण कउनै चढि इत आई॥ राहु केतु दोउ जोरि एक करि कहि इहि समै जरावहि पाई। असे ते न पचि

जात पापमें कहत सूर विरहिनिदुखदाई॥५५॥राग केदारो॥यह शशि शीतल काहेते कहियत।मीनकेत अंबुज आनंदित ताते ताहित लहियत॥ विरहिनि अरु कमलनि त्रासत कहुँ अपकारी रथनहिं यत। सूरदास प्रभु मधुबन गौने तो इतनो दुख सहियत॥५६॥करधनु लिए चंद्रहि मारि।तबतोपै कछुवे न सिरेहे जब अतिज्वर जैहे तनु जारि॥ सूहरवाइ जाइ मंदिरचढि शशिसन्मुख दर्पण विस्तारि। ऐसी भाँति बुलाइ मुकुर महि अति बल खंड खंड करिडारि॥ सोई अवधि निकट आईहै चलतेंही जो दई मुरारि।सूरसो विनयकरति हिमकरसों अब तू उघो छाँडि दिनचारि॥५७॥ ॥राग सारंग॥हरको तिलक हरि विनु दहत। ये कहियत उडुराजअमृतमें तजि स्वभाव मोहिवहनि त्रहत॥कतरथ थकित भयो पश्चिम दिशि ग्राह ग्रसित जैसे ग्रहन ग्रहत। छयो न छीन होय सुन सजनी भूमि भवनरिपु कहां वसत॥ जाको ध्यान धरतिहौं दधिसुत मणि महेश जैसे रहनि रहत।सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विना प्राणतजति यह नाहिने सहत॥५८॥राग माल॥या बिन होय कहा यह सूनो। लै किन प्रगट कियो प्राचीदिशिविरहिनिकोदुख दूनो॥सबनिरदेसुर असुर शैल सखि सायर सर्प समेत। काहु न कृपाकरी इतननिमें त्रियतन बन दौ देत॥ धन्य कहूं वर्षा रवि तमचुर अरु कमलनको हेतु। युग युग जीवे जर वापुरी मिलै राहु अरु केतु॥चिते चंद्र तन सुरति श्यामकी विकलभई ब्रजवाल। सूरदास अजहूं इहि औसर काहे न मिलत गुपाल॥५९॥दूरिन करहि बीनको धरिबो। रथ थाक्यो मानो मृग मोहे नाहिन कहूं चंद्रको टरिबो॥जामें बीती सोई जाने कठिनसु प्रेम पाशको परिबो।प्राणनाथसंगहुते विछुरे रहत न नैननीरकोझरिबो॥ चंदनचरचि तनु दहत मलयानिल श्रवण विरहानल जरिबो। सूर सु कमलनैनके बिछुरे झूठो सब जतन- निको करिबो॥६०॥राग केदारो॥विधु वैरी शिरपरबसै निशिदिनपरई।हरि सुरभानसुभटविनाय- हि को वश करई॥गगन शिखर उतरे चढे गर्वे जिय धरई। किरनि सकति भुजभरि हनै डरते न निकरई॥ उडु परिवार पिशुनसभा अपयशहिन डरई। सोइ परपंच करै सखी अबला ज्योंबरई॥ घटै बढै यहि पापते कालिमा नटरई॥सूरदुसहसुझावही त्योंत्यों जियखरई॥६१॥राग मलार॥कोऊ बरजो री या चंदहि। अतिही कोध करत हमऊपर कुमुदिनि कुल आनंदहि॥ कहा कहोंबर्षारवि तमचुर कमलबलाहक कारे। चलत न चपल रहत थिरके रथ विरहिनिके तनु जारे॥ निंदत शैल उदधि पन्नगको श्रीपति कमठ कठोरहि। देति अशीश जरा देवीको राहु केतु किनि जोरहि॥ ज्यों जलहीन मीन तनु तलफति ऐसी गति ब्रजवालहि। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मोहन मदनगुपालहि॥६२॥अब हरि कौनसों रति जोरी।काके भए कौनकेहेहैं बँधे कौनकी डोरी॥ त्रेता युग इक पत्नी व्रत किए सोऊ विलपति छोरी।सूपनखा वन ब्याहन आई नाक निपाति बहोरी॥ पय पीवत जिन हती पूतना श्रुति मर्यादा फोरी। बहुते प्रीति बढाइ महरिसों बहुरो ना चितयो उन ओरी॥ आरजपंथ छिडाय गोपिकन अपने स्वारथ भोरी। सूरदास करि काज आपनो गुडी डोरि ज्यों तोरी॥६३॥अब यातनुहि कहो कहा कीजै।सुन री सखी श्यामसुंदर विन बाँटि विषम विष पीजै॥के गिरिए गिरि चढि सुनिसजनी शीश शंकरहि दीजै। कैदहिए दारुणदावानल जाइ यमुन धसि लीजै॥ दुसह वियोग विरह माधोको दिनही दिनही छीजै। सूर श्याम प्रीतम विनु राधे सोचिसोचि जियजीजै॥६४॥राग गोपाली॥हमहि कहा सखी तनके जतनकीअवयायशहि मनोहर लीजै। सकल त्रास सुख याही वपुलो छाँडि दियेते कछू न छीजै॥ कुसुमित सेज कुसुम सर सरवर हरिके प्राण प्राणपति जीजै। विरह थाइ ब्रजनाथ सवन दे निधरक सकल

मनोरथ कीजे ॥ सवन कहत मन रीस रिसाए नहिन वसाय प्राण तजि दीजे। सूर सु पतिसों चरचि चतुरइतुमयहजाइबधाईलीजे ॥६५॥ राग केदारो ॥जियहिक्योंकमलिनि काँदोहीन।जिनसों प्रीति हुती री सुन सखि तिनहुँ बिछुरि दुख दीन ॥ सागरकूल मीन तरफतहै हुलसि होत जल दीन । श्याम वारि विधि लई विरद तजि हमजु मरति लवलीन ॥ शशि चंदन अरुअंभछाँडि गुणवपुजुदहतमिलितीन।सूरदासप्रभुमोन सबैब्रज विन यंत्री बिन बीन६६॥राग सारंग॥ वैसी शारंग करहि लिये । शारँग कहतसुनत वे शारँगशारँग मनहिं दिये॥ शारँग पथिक वैठिवहशारँगशारंग विकल हिये । शारँग धुकि शारँग परे शारँग शारँग कोध किए॥ शारँग है भुज करहि विराजत शारँग रूप किए। सूरदासमिलहीं वेशारँगतौपरिसुफलजिये॥ ६७॥राग मलार॥सोसुनियतहैरी द्वै माह । इतनेमहिं सव वात समुझिवी चतुर शिरोमणि नाह॥ आवन कह्यो वहुत दिन लाए करी पाछिली गाह। हमहिं छाँडि कुविजा मन वाँध्यो कौन वेदकी राह ॥ एतेहुपर संतोप न मानत परे हमारे डाह। सूरदासप्रभुपूरोदीजैदिनदशमानी साह॥ ६८॥ राग सारंग॥ऐसोसुनियतहैद्वैसावन । उहै शूल फिरिफिरि सालत जिय श्याम कह्यो हो आवन॥ तव कत प्रीति करी अव त्यागी अपनो कीनो पावन । यह सुख सखीनिकसि तजिजइयेजहां सुनीए नावन॥एकहिवेर तजी मधुकर ज्यों लागेनेहबढावन।सूर सुरतिक्यों होति हमारी लागीनीकी भावन॥६९॥राग कान्हरो ॥ काहेको पिय पियहि रटतही पियको प्रेम तेरो प्राण हरैगो । काहेको लेति नयन जल भरिभरि नयन भरेते कैसे शूल टरैगो ॥ काहेको श्वास उसाँस लेतिहौ वैरी विरहको दवा जरैगो ॥ छाल सुगंध सेज पुहुपावलि हारु छुएते हियहारु जरैगो॥ वदन दुराइ वैठि मंदिरमें वहुरि निशापतिउदयकरैगो।सूरसखीअपने इन्ह नैननिचंद्रचितैजिनिचंद्र जरैगो॥७० ॥राग सारंग॥अव हरि हमको माई री मिलत नाहिंन नेकु । नित उठि जाइ प्रातले वनसँग आगे पाछेचलिनसकति सखी डगएकु॥वाँहा जोटी कुसुम चुनत दोउ द्रुमतन मेरे उर लगि एक दिन नख एक । रसन दशन धरि भरि लिए लोचन तोरन लखि सुधर वरषे एक॥ लावत हृदय खेंचि पुरतपट फरुहुरि लेत परिजन रेक। अव कोउ सोहैवसु सूर प्रभु कौनअधिकजिहिपरिनेक॥७१॥राग मलार॥ हौं कछु वोलति नाहीं लाजनि । एक दाइँ मरिवो पै मरिवो नंदनँदनके काजनि ॥ तजि ब्रजवाल आपनो गोकुल अव भाए सुखराजनि । कागज लिखि पतियांनहिंपठवतपायोजियकोमाजनि॥ जे गृह देखि परमसुख होतो विनगोपाल भए भाजन । कासों कहौं सुनै कोई दुख दूरि श्यामसो साजन ॥ कारी घटा देखि धुरवा जनु विरहलयो करताजनु। सूरदास नागरविन अव यह कौन सहै शिर गाजनु ॥ ७२ ॥ राग गौरी ॥ वहुदिन ऐसोई हतो री ।द्वैजातेमेरेआँगनमेंमोहन चरन चलि ऐसो री ॥ वालदशाकी प्रीति निरंतर परी रहतहीठोरी।राधाराधानँदनंदनमुखलागि रहो तिहिसोरी ॥ वेणु पाणि गहि मोको सिखावत मोहन गावन गौरी। सूरजदास श्याम शारँग तजि वहु सुख वहुरि न भोरी ॥७३॥ राग सारंग ॥ गौरिपूतरिपुतासुतआएप्रीतमताहिननारे।शिव विरंचि जाके दोउ वाहन तिन हरे प्राण हमारे॥मोहिं वरजत उठि गमन कियो उठि स्वादे लुवध रसाल। कुंती नंदतात मुख जोवत अरु वारत अतिचाल॥ उगवै सूर छुटेवे वंधन तो विरहिनि रति मानै । इहि विधि मिले सूरके स्वामी भक्त होइ सोजानै॥ ७४॥राग गौरी॥माधोजूदरशनको औसेरिलै जु गए मन संग आपने वहुरि न दीन्हों फेरि॥तुम्हरेभवननहींभावेमनुजनुराखेवेटेरि। कमल नयो हम हरी हेम अति कासों कहैं दुख टेरि॥ तुम विछुरे सुख कवहुँ न पायो सुव

जात पा

अंबुज

यत । सूरदास प्रभु मधुवन गोने तो इतनो दुख सहियत ॥५६॥ करधनु लिए चंद्रहि मारि।तवतोपे कछुवै न सिरैहे.जब अतिज्वर जैहे तनु जारि ॥ सूरखाइ जाइ मंदिरचढि शशिसन्मुख दर्पण विस्तारि । ऐसी भाँति बुलाइ मुकुर महिं अति बल खंड खंड करिडारि ॥ सोई अवधि निकट आईहै चलतैंही जो दई मुरारि।सूरसो विनयकरति हिमकरसों अव तू उयो छाँडि दिनचारि॥५७॥ ॥राग सारंग॥ हरको तिलक हरि बिनु दहत। ये कहियत उडुराजअमृतमें तजि स्वभाव मोहिंदहनि बहत ॥ कत रथ थकित भयो पश्चिम दिशि ग्राह ग्रसित जैसे ग्रहन महत। छयो न छीन होव सुन सजनी भूमि भवनरिपु कहाँ बसत ॥ जाको ध्यान धरतिहौं दधिसुत मणि महेश जैसे रहनि रहत।सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना प्राणतजति यह नाहिंने सहत ॥५८॥राग मारू॥ या बिन होव कहा यह सूनो । लै किन प्रगट कियो प्राचीदिशिविरहिनिकोदुख दूनो॥सवनिरदैसुर असुर शैल सखि सायर सर्प समेत। काहु न कृपाकरी इतननिमें नियतन वन दौ देत ॥ धन्य कहूं वर्षा रवि तमचुर अरु कमलनको हेतु । युग युग जीवे जर बापुरी मिलै राहु अरु केतु ॥चितै चंद्र तन सुरति श्यामकी विकलभई व्रजबाल। सूरदास अजहूं इहि औसर काहे न मिलत गुपाल॥५९॥ दूरिन करहि वीनको धरिबो । रथ थाक्यो मानो मृग मोहे नाहिन कहूं चंद्रको टरिबो॥जामें बीती सोई जाने कठिनसु प्रेम पाशको परिबो।प्राणनाथसंगहुते बिछुरे रहत न नैननीरकोझरिबो॥ चंदनचरचि तनु दहत मलयानिल श्रवण विरहानल जरिबो । सूर सु कमलनैनके बिछुरे झूठो सब जतननिको करिबो॥६०॥राग केदारो॥ विधु वैरी शिरपरबसै निशिदिनपरई।हरि सुरभानसुभटबिनायहि को वश करई॥गगन शिखर उतरे चढै गर्व जिय धरई। किरनि सकति भुजभरि हनै डरते न निकरई ॥ उडु परिवार पिशुनसभा अपयशहिन डरई। सोइ परपंच करे सखी अवला ज्योंबरई॥ घटे बढै यहि पापते कालिमा नटरई॥सूरदुष्टसमुझावही त्योंत्यों जियखरई॥६१॥राग मलार॥ कोऊ बरजो री या चंदहि । अतिही क्रोध करत हमऊपर कुमुदिनि कुल आनंदहि ॥ कहा कहौंवर्षारवि तमचुर कमलवलाहक कारे। चलत न चपल रहत थिरके रथ विरहिनिके तनु जारे॥ निंदत शैल उदधि पन्नगको श्रीपति कमठ कठोरहि । देति अशीश जरा देवीको राहु केतु किनि जोरहि॥ ज्यों जलहीन मीन तनुतलफति ऐसी गति व्रजबालहि । सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मोहन मदनगुपालहि॥६२॥अब हरि कौनसों रति जोरी।काके भए कौनकेह्वैहैं बँधे कौनकी डोरी॥ त्रेता युग इक पत्नी व्रत किए सोऊ विलपति छोरी।सूर्पनखा वन व्याहन आई नाक निपाति बहोरी॥ पय पीवत जिन हती पूतना श्रुति मर्यादा फोरी । बहुते प्रीति बढाइ महरिसों बहुरी ना चितयो उन ओरी ॥ आरजपंथ छिडाय गोपिकन अपने स्वारथ भोरी। सूरदास करि काज आपनो गुडी डोरि ज्यों तोरी॥६३॥अब या तनुहि कहो कहा कीजे।सुन री सखी श्यामसुंदर बिन बाँटि विषम विष पीजे॥कै गिरिए गिरि चढि सुनिसजनी शीश शंकरहि दीजे। कैदहिए दारुणदावानल जाइ यमुन धसि लीजे ॥ दुसह वियोग विरह माधोको दिनहीं दिनही छीजे।सूर श्याम प्रीतम बिनु राधे सोचिसोचि जियजीजे॥६४॥राग भोपाली॥ हमहि कहा सखी तनके जतनकीअबयायशहि मनोहर लीजे। सकल त्रास सुख याही वपुलौं छाँडि दियेते कछू न छीजे ॥ कुसुमित सेज कुसुम सर सरवर हरिके प्राण प्राणपति जीजे। विरह थाह व्रजनाथ सदन दे निधरक सकल

मनोरथ कीजे ॥ सबन कहत मन रीस रिसाए नहिंन वसाय प्राण तजि दीजे। सूर सु पतिसों चरचि चतुरइतुमयहजाइबधाईलीजे ॥६५॥ राग केदारो ॥जियहिक्योंकमलिनि काँदोहीन।जिनसों प्रीति हुती री सुन सखि तिनहूँ बिछुरि दुख दीन ॥ सागरकूल मीन तरफतहैं हुलसि होत जल दीन । श्याम वारि विधि लई विरद तजि हमजु मरति लवलीन ॥ शशि चंदन अरुअंभछाँडि गुणवपुजुदहतमिलितीन।सूरदासप्रभुमौन सबैब्रज बिन यंत्री बिन बीन६६॥राग सारंग॥ वैसीशारंग करहि लिये । शारँग कहतसुनत वे शारँगशारँग मनहिं दिये॥शारँग पथिक बैठिवहशारँगशारंग विकल हिये । शारँग धुकि शारँग परे शारँग शारँग क्रोध किए॥ शारँग है भुज करहि विराजत शारँग रूप किए। सूरदासमिलहीं वेशारँगतोपरिसुफलजिये॥ ६७॥राग मलार॥सोसुनियतहैरी द्वै माह । इतनेमहिं सव वात समुझिवी चतुर शिरोमणि नाह॥ आवन कह्यो वहुत दिन लाए करी पाछिली गाह। हमहिं छाँडि कुविजा मन वाँध्यो कौन वेदकी राह ॥एतेहुपर संतोप न मानत परे हमारे डाह। सूरदासप्रभुपूरोदीजैदिनदशमानी साह॥ ६८॥ राग सारंग॥ऐसोसुनियतहैद्वैसाव-न । उदै शूल फिरिफिरि सालत जिय श्याम कह्यो हो आवन॥ तव कत प्रीति करी अव त्यागी अपनो कीनो पावन । यह सुख सखीनिकसि तजिजइयेजहां सुनीए नावन॥एकहिवेर तजी मधुकर ज्यों लागेनेहवढावन॥सूर सुरतिक्यों होति हमारी लागीनीकी भावन॥६९॥राग कान्हरो ॥ काहेको पिय पियहि रटतही पियको प्रेम तेरो प्राण हरेगो । काहेको लेति नयन जल भरिभरि नयन भरेते कैसे शूल टरेगो ॥ काहेको श्वास उसाँस लेतिहो वैरी विरहको दवा जरेगो ॥ छाल सुगंध सेज पुहुपावलि हारु छुएते हियहारु जरेगो॥ वदन दुराइ वैठिमंदिरमें बहुरि निशापतिउदयकरेगो।सूरसखीअपने इन्ह नैननिचंद्रचितैजिनिचंद्र जरेगो॥७० ॥राग सारंग॥अव हरि हमको माई री मिलत नाहिंन नेकु । नित उठि जाइ प्रातलै बनसँग आगे पाछेचलिनसकति सखी डगएकु ॥वाँहा जोटी कुसुम चुनत दोउ द्रुमतन मेरे उर लगि एक दिन नख एक । रसन दशन धरि भरि लिए लोचन तोरन लखि सुघरवरपै एक॥ लावत हृदय खोंचि पुरतपट फरुहुरि लेत परिजन रेक। अव कोउ सोहेवसु सूर प्रभु कौनअधिकजिहिपरिनेक॥७१॥राग मलार॥हौं कछु वोलति नाहीं लाजनि । एक दाइँ मरिवो पै मरिवो नंदनँदनके काजनि ॥ तजि ब्रजवाल आपनो गोकुल अव भाए सुखराजनि । कागज लिखि पतियांनहिंपठवतपायोजियकोमाजनि॥ जे गृह देखि परमसुख होतो विनगोपाल भए भाजन । कासों कहौं सुनै कोई दुख दूरि श्यामसो साजन ॥ कारी घटा देखि धुरवा जनु विरहलयो करताजनु। सूरदास नागरविन अव यह कौन सहै शिर गाजनु ॥ ७२ ॥ राग गौरी ॥ वहुदिन ऐसोई हतो री ।द्वैजातेमेरेआँगनमेंमोहन चरन चलि ऐसो री ॥ बालदशाकी प्रीति निरंतर परी रहतहीठोरी।राधाराधानँदनंदनमुखलागि रहो तिहिसोरी ॥ वेणु पाणि गहि मोको सिखावत मोहन गावन गौरी। सूरजदास श्याम शारँग तजि वह सुख वहुरि न भोरी ॥७३॥ राग सारंग॥ गौरिपूतरिपुतासुतआएप्रीतमताहिननारे।शिव विरंचि जाके दोउ वाहन तिन हरे प्राण हमारे॥मोहिं वरजत उठि गमन कियो उठि स्वादे लुवध रसाल। कुंती नंदतात सुख जोवत अरु वारत अतिचाल॥ उगवै सूर छुटैवे बंधन तो विरहिनि रति मानै । इहि विधि मिले सूरके स्वामी भक्त होइ सोजानै॥ ७४॥राग गौरी॥माधोजूदरशनकी औसेरिलै जु गए मन संग आपने वहुरि न दीन्हों फेरि।तुम्हरेभवननहींभावैमनुजनुराखेवेटेरि। कमल नयो हम हरी हेम अति कासों कहैं दुख टेरि॥ तुम बिछुरे सुख कवहूँ न पायो सव

जग देखति हेरि। सूरदास सब नातो ब्रजको आए नंद निबेरि ॥ ऋतु बसंत कोकिल कल कूजहि मदनसांकली खेरि॥७५॥ राग आसावरी ॥ सखी री विरहा यह विपरीत। विरहिनी वासु क्यों करै पावसकाल प्रतीत ॥ नित नवला नवसात साजिके अरु यह भावक राखी । ना जानों नृपति प्राणपति कहां हैं रुचि आँखी ॥ सूरदास गोपालकी सब, अवधि गई व्यतीत । बहुरि कब देखिबो मुख तुम्हारो यह नीत॥७६ ॥ राग बिलावल ॥ तौऊ तौ गोपाल आहिं गोकुलवासी। ऐसी बातें बहुते कहि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथि मथि सिंधु सुरन कर पोषी शंभु भए विषुआसी। इमि हति कंसराज औरे दयो चाहि लई इक दासी॥ विसरो सूर विरहदुख अपनो अब चली चाल औरासी । ऐसे विहंगप्रीति निधि देखप्रगट न परखी खासी॥७७ ॥ राग ॥ उन ब्रजदेव नेकु चितु करते। कछु जिय आश रहति विधिवश जो बहुरहु फिरि२ मिलते॥ कहा कहिए हरि सब जानत हैं या तनुकी गति ऐसी। सूरदास प्रभु ताहि सुरुचि मिलि नातरु हमगरबैसी॥ ७८ ॥ राग बिलावल ॥श्यामचितोदीरे मधुबनियां। अपने हाथ पोहि पहिरावत कान्ह कनकके मनियां॥ बहुरि गोकुल काहेको आवत भावत नवजोबनियां । सूरदास प्रभु वाके वश परि अब हरि भए बिकनियां॥७९॥ देखोरी धौंलोग चतुर मधुबनको। वादत नहीं गोविंद विमोहे गुण जानो माधौंको॥ जब हरि गमन करो मधुबनको छाँडो हेतु सबनको। सूरदास प्रभुवेगि गिलायो गोविंद प्यारो निज प्राणनको ॥ ८० ॥ राग धमार॥ कहौं रीजो कहिवेकी होई। प्राणनाथ बिछुरेकी वेदन औरन जाने कोई। ज्यों २ अधर सुधारस लै लै मगन रही सुख जोई। जो रस शिव सनकादिक दुर्लभ सो रस बैठी खोई। कहा करौं कछु कहत न आवे सुख सपनो भयो सोई। हमसों कठिन भए कमलापति काहि सुनायौं रोई॥ विरह व्यथा अंतरकी वेदन सो जाने जेहि होई । सूरदास सुखमूरि मनोहर लैजो गयो मन गोई ॥ ८१ राग सारंग ॥ बिछुरे री मेरे बालसँघाती। निकसि न जात प्राण ए पापी फाटत नाहिं वज्रकी छाती॥ हौं अपराधिनि दहीमथति ही भरियौबनमदमाती। जौ हौं जानति हरिको चलिवो लाज छाँडि सँग जाती॥ ढरकत नीर नैन भरि सुंदर कछु न सोहात दिवस अरु राती। सूरदास प्रभु दरशनकारन सब सखिअन मिलि लिखिये पाती ॥८२॥ राग ॥ हरि परदेश बहुत दिन लाए। कारी घटा देखि बादरकी नैन नीर भरिआए ॥ बीर बटाऊ पंथी हौ तुम कौन देशते आए । इह पाती हमरी लै दीजो जहां साँवरे छाए ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत सोवत मदन जगाए। सूरदास गोकुलते बिछुरे आपुन भए पराए॥८३॥ हमारो हिरदै कुलिसै जीत्यो। फटत न सखी अजहुँ उहि आशा बरष दिवस परि बीत्यो ॥ हमहूं समुझि परी नीके करि यहै असित तनु रीत्यो। बहुरि न जीवन मरनसों साझो करी मधुपकी प्रीत्यो ॥ अबतौ यात घरी पहरन सखि ज्यों उदवसकी भीत्यो। सूरश्यामदासी सुखसो वहुभयो उभयमनचीत्यो॥८४॥ राग सारंग ॥ एक दिवस कुंजनमें माई नाना कुसुम लैलै अपने कर दिए मोहिं वह सुरति न जाई ॥ इतनेमें घन गर्जि वृष्टिकरि तनु भीज्यो मो भई जुड़ाई । कपत देखि उढाइ पीतपट लै करुणामय कंठ लगाई ॥ कहँ वह प्रीति रीति मोहनकी कहाँ अबधौं एती निठुराई । अब बलबीर सूर प्रभु सखि री मधुबन बसि सब रति बिसराई ॥ ८५ ॥ राग कान्हरे ॥ हौं जानौं मोको सखि माधो हितु हैं कियो । अतिआदर आतुर अलि ज्यों मिलि मुख मकरंद पियो ॥ बरु वह भली पूतना जाको पयसँग प्राण गयो। मन मधु अँचे निपट सूने तन यह दुख अधिक दयो ॥ देखि अचेत अमृत अवलोकनि चले जु सींचि हियो । सूरदास प्रभु वा अधारते अबलौ परत जियो ॥ ८६ ॥ राग सारंग॥ यागतिकी माई को जाने। पंकज-

सों पंकज गहि सींचे ए कबहूं न निदाने॥शिवि नृप अरु सनकादिक कपि मुनिराई पर रति-रंग मानै। करि हारी वह लोभनि सोए जु रहत इकता तानै॥ वपु विचारि अवगनि इनिइनतेभाव कुचित यह ठाने। सूरदास प्रभु शिशुलीलामै नावी रैनि जु वानै ॥ ८७ ॥ नाहिंनै ब्रज नंद-कुमार। परमचतुर सुंदर सुजान सखि या तनुको प्रतिहार ॥ रूप लकुट लिएही रहते अलि अनु-दिन नैननि द्वार। तादिनते डर भौन भयो सखि शिवरिपुको संचार॥ दुख आवन कछु अटक न मानत सूनो देखि अगार। अंशु सांस जात अंतरते करत न कछू विचार ॥ निशा निमेष कपाट लगे विन शशिभूपतसतसार।सूरप्राणलटि लाज नछाँडत सुमिरि अवधि आधार॥८८॥राग मलार॥ ऐसे जो हरि आवहिंगे। निरखि निरखि वह मदन मनोहर नैन वहुत सुखपावहिंगे॥ तैसिहि श्याम घटा घनघोरनि विच वगपांति दिखावहिंगे। तेसे मोर पिक करत कुलाहल हरपि हिं-डोलना गावहिंगे ॥ तैसीये दमकति दामिनि अरु मुरली मलार बजावहिंगे। अबके चलते जानि सूर प्रभुसवपहिले उठिधावहिंगे॥८९॥राग रामकली॥ब्रज कहाखोरी।छत अरु अछत एकरस अंतर मिटत नहीं कोई करहु कोरी॥बालकहीअभिलापनि लीला चकृत भई कुललाज न छोरी। विरुध विवेक गोपरस परि करि विरह सिंधु मारत ते वोरी॥ यद्यपि हौ त्रयलोकके ईश्वर परसि दृष्टि चितवतिनवहोरी। सूरदास प्रभु प्रीतिरीति कतते तुम सब अब रहे तोरी॥९०॥राग सारंग॥ हरि मोको हरिभपु कहि जु गयो। हरि दरशत हरि मुदित हरि ब्रज हरिजुलयो॥हरिरिपुतारिपु पतिको सुत हरि बिनु प्रजरि दहे। हरिको तात परस उर अंतर हरि बिनु अधिक वहे ॥ हरि तनया सुधि तहाँ बदति है हरि अभिमानन ढायो। अब हरि दवन दिवा कुविजाको सूरदास मन भायो॥९१॥राग सारंग॥हरि बिनु कौनसों कहिए।मनसिज व्यथा जराति अरनिलौंउरअंतरदहिए॥ कानन भवन रैनि अरु वासर कहूं न सच लहिए। मूके भये यह्कें पशुलौं कोलौं दुख सहिए॥ कबहुँक उपजे जियमें ऐसी जाइ मधुन वहिए।सूरदास प्रभु कमलनैन बिन कैसे ब्रज रहिए॥९२॥ राग मारू॥किते दिन हरि देखेबिन वीते। एको छुरत न श्यामसुंदरबिन विरह सबै सुखजीते ॥ मदनगोपाल बैठि कंचनरथ चितै किएतनु रीते। सुफलकसुत लैगए दगा दे प्राणनहींके प्रीते ॥ बहुरि कृपालु घोष कब आवहिं मोहन राग समीते।सूरदास प्रभुवहुरि कृपाकरि मिलहुसुदामामीते ॥९३॥राग सारंग॥कान्हयौं हमसों कहा कह्यो। निकस्यो वचन सुनाइ सखी री नाहिंन परतु रह्यो। मैं मतिहीन मर्म नहिं जान्यो भूली मथत मह्यो। अब कहा करौं घोष बसि सजनी दूत दूरि निवह्यो॥सवै अजान भई तजि औसरकाहू रथन गह्यो। सूरदास प्रभुवृथा लाजकरिदुसहवियोग सह्यो॥९४॥राग [illegible]

कर पल्लव रडुपति [illegible]

शारंग सुर सुनि भयो वियोगी हिमकर गर्व टरचो। सूरदास सायर सुतहित पति देखत मदन हरचो॥९५॥राग सारंग॥विरह भरयो घर अंगन कोने।दिनदिन वाढत जात सखी री ज्यों कुरखेतके डारे सोने ॥ तव वह दुख दीनो जब बाँधे ताहूको फलजानि। निजकृत चूक समुझि मनहींमन लेत परस्पर मानि ॥ हम अवला अति दीन हीनमति तुमही सब विधियोग। सूर वदन देखतही अछुटै या शरीरको रोग॥९६॥राग मलार॥जोपै कोउ माधोसों कहै। तो वह व्यथा सुनत नँदनंदन कत पशुपुरी रहै ॥ पहिलेही सब दशा बतावै पुनि कर चरण गहै। यह प्रतीति मेरे चितअंतर सुनत न प्रेम सहै ॥ यहै संदेश सूरके प्रभुको को कहि यशहि लहै। अबकी बेर दयालु दरश दै

यह दुख आनिदई॥९७॥राग सारंग॥माधो छांडिवेपहिचानि।तबतें विरह कुटिल या गोकुल कीनों है विजु खानि॥तनुगिरि जानि आनि अवनी डर इहि उड भीत रहे। गमन कान्ह क्षणक्षण तु काम शशि किरनि कुदार गहे॥ रेणु अंजन जलनैन द्वार ह्वै रह्यो हृदय भरिपूरि । निकसत नाहीं पापरतन ज्यों गयो श्यामसँग दूरि ॥तुमसों बात और अलि भाषे उलटि ध्यान वपु जीत्यो । द्वै नृप लरत जाइ इंद्रीगत कहो सूर को नीत्यो॥९८॥राग नट॥मेरे मन इतनीशूलरही।वेबतियांछतियां लिखि राखीजे नँदलाल कही॥ एक दिवस मेरे गृह आए होंही मथत दही। रति माँगत में मान कियो सखि सो हरि गुसा गही॥ सोचति अतिपछितानि राधिका मूर्छित धरणि ढही।सूरदास प्रभुके बिछुरेते व्यथा न जात सही ॥ ९९॥राग मलार॥हरि इते दिन लाए । आवन कहिगएअजहूँ न आए ॥ चलत चितै मुसुकायके मृदु वचन सुनाये । तेईढंगमोदक भए न धीरजहरितनछूछ करि छिटकाये ॥मोहनयदुनाथके गुणजानि पाए।मनहु सूर घनश्याम सुंदर बहुरि न चरणदिखाए॥ ॥२९००॥यह दुख कौनसों कहौं ।जोइ बीतति सोइकहतिसयानी तिन सब शूल सहौं॥जे सुख श्यामसंग सबकीने गहि राखे इहि गात। ते अब भए शीत या तनुको शाखा ज्यों द्रुम पात॥ जो हुती निकट मिलनकी आसा सो तो दूरि गई। यथा योग ज्यों होत रोगिया कुपथी करत नई॥ यह तनु त्यागि मिलन यों बनिहै गंगा सागर संग। अब सुन सूर ध्यान ऐसो है श्याम राम इक रंग॥ १॥राग सारंग॥हम सरघा ब्रजनाथ सुधानिधि राखे बहुत जतन करि सचि सचि। मन मुख भरिभरि नैन ऐन ह्वै उरमति:कमल कोशललों खचि खचि ॥ सुभग सुमन सब अंग अमृतमय तहां तहां राखति चित रचि रचि । मोहन मदन स्वरूप सुयशरस करत सु गुप्त प्रेमरस पचि पचि ॥ सूरजदास पियूष लागि रस पठयो नृपति तेउ गए बचि बचि । अब सोई मधु हरयो सुफलकसुत दुसह दाह जो उठत तन तचि तचि॥२ ॥ जबते नंदलाल चले काहू मुरली न बजाई ।उन बिना जिय कठिन पीर निकसिहू न जाई। वृंदावनमें भूलि काहू सारंगी न गाई॥ गोपिन कठिन हिये तरकिहू न जाई। सूरदास प्रभुकी लीलाऊधो कछुपाई॥३॥राग सारंग॥ माई वे दिना ये देह अछत विधना जो आने री। श्यामसुंदर रंग रंग युवति वृंद ठाने री॥यद्यपि अक्रूर मूल परमगति पढ़ावे री।प्राणनाथ कमलनैनबाँसुरी बजावे री॥सोई कहा कहौं कहतकठिन कहे कौन माने री। सूर सो नंद प्रेम पीर विरही मिले जाने री ॥४॥ सबकोउ कहत सयानी बातें ।समुझि नपरत बूझि नहिं आवत कही जात नहीं तातें॥ पहिले जानिअग्नि चंदनसी सती बहुत उमहै। समाचार ताते औ सीरे आगे जाय लहै ॥ कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुममाल करवार। सूरदास शिरदेत शूरमा सोइ जाने व्यवहार ॥ ५ ॥राग गूजरी॥ कुँवरिको बैरागी बैराग ।पलटति बसन करति निशि चोरी वपु बिलसुत भई जाग॥बेसरि बेह मूँदि मृगमद मथि नरस उर धुकधुकी खेद कीनी । चलत चरण चित गयो गलित झिर स्वेद सलिल भभीनी॥ छूटी भुजबल फुटी वलय कर छुटि उर फटी कंचुकी छीनी । मनहुँ प्रेमकी परा ने परेवाहीसे पढि लीनी ॥अवलोकत इहि भाँति रमापति जानो अहिमणि छीनी। सूरदास प्रभु कहि न जात कछु हौं जानी मतिहीनी॥६॥राग मलार॥हरिको मारग दिन प्रति जोवति। चितवति रहति चकोरि चंद्र ज्यों सुमिरिसुमिरि गुण रोवति ॥पतिआँ पठवत मसि नहिं खंडित लिखिलिखिमानहुँ धोवति।भूषण दिन निशि नींद दिरानी एको पल नहिं सोवति ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिनु वृथा जनमसुख खोवति ॥७॥ राग बिलावल॥अंतर्यामी कुँवरकन्हाईगुरुगृह पढत हुते जहाँ विद्या

तहां ब्रजकी सुधि आई ॥ गुरुसों कह्यो जोरि कर दोऊ दक्षिणा कहौ सो देउँ मँगाई । गुरुपत्नी कह्यो पुत्र हमारो मृतक भयो सो देहु जिवाई ॥ आनि दिए गुरुसुत यमपुरते तब गुरुदेव अशीश सुनाई । सूरदास प्रभु आइ मधुपुरी ऊधोको ब्रज दियो पठाई ॥ ८ ॥ अध्याय ॥ ॥४६॥ उद्धवब्रजआगमन हेतु॥ रागनट॥ यदुपति जानि उद्धव रीति । जिहिं प्रगट निज सखा कहियत करत भाव अनीति । विरहदुख जहां नाहिं जामत नहीं उपजे प्रेम । रेख रूप न बरन जाके यहि धरचो वह नेम॥ त्रिगुणतनु करि लखत हमको ब्रह्म मानत और। विना गुण क्यों पुहुमि उधरै यह करत मन डोर ॥ विरहरसके मंत्र कहिए क्यों चलै संसार । कछु कहत यह एक प्रगटत अति भरचो अहंकार ॥ प्रेमभजन न नेकु याके जाइ क्यों समुझाइ । सूर प्रभु मन इहै आनी ब्रजहि देउँ पठाइ॥९॥ राग नट॥ इहअद्वैत दरशीरंग। सदा मिलि एकसाथ बैठत चलत बोलतसंग ॥ बात कहत न बनत यासों निठुर योगी जंग । प्रेम सुनि विपरीत भाषतहोतहै रसभंग॥ सदाब्रज-को ध्यान मेरे रासरंग तरंग। सूर वह रस कहौ कासोंमिल्यो सखाभृंग॥ राग नट॥ संगमिलिकहौंका-सो बात । यह तो कथत योगकी बातें जामें रस जरिजात ॥ कहत कहा पितु मात कौनकोपुरुष नारि कहा नात । कहाँ यशोदासी है मैया कहां नंदसम तात ॥ कहाँ ब्रजभानुसुता सँगको सुख यह वासर वह प्रात । सखी सखा सुख नहिं त्रिभुवनमें नहिं बैकुंठ सुहात ॥ वै बातैं कहिए केहि आगेयह गुनि हरि पछितात। सूरदास प्रभु ब्रजमहिमा कहि लिखी वदत बल्भ्रात॥ १० ॥ राग धनाश्री॥ कहां सुख ब्रजकोसो संसार । कहां सुखद बंसीवट यमुना यह मन सदा विचार ॥ कहां बनधाम कहां राधासँग कहां संग ब्रजवाम । कहां रसरासबीच अंतरसुख कहां नारि तनु ताम ॥ कहां लता तरुतरु प्रति झूलनि कुंजरबनधाम । कहां विरहसुख बिनु गोपिनसँग सूर श्याम ममकाम ॥ सखा हमको मिले ऊधो वचनन मारत ताम ॥ भावभजन बिना नाही सुख कहां प्रेम अरु योग । काग हंसहि संग जैसो कहां दुख कहां भोग ॥ जगतमें यह संग देखो वचन प्रति कहै ब्रह्म । सूरब्रजकी कथा सो कहैयहकरैजो दंभ॥ ११॥ राग कान्हरो॥ हंसकागकोसंगभयो। कहांगोकुल कहांगोपगोपिका विधि यह संग दयो ॥ जैसे कंचन कांचसंग ज्यो चंदन संग कुगंधि । जैसे खरी कपूर एक सम यह भई ऐसी संधि॥ जलबिनु मीन रहत कहुँ न्यारे यह सो रीति चलावत । जब ब्रजकी बातें यहि कहियत तबहिं तबहिं उचटावत ॥ याको ज्ञान थापि ब्रज पठऊं और न याहि उपाव। सुनहु सूर याको वन पठऊं यहै बनैगो दाव॥ १२॥ राग धनाश्री॥ याहिऔरकछुनहीउपाइ। मेरोप्रगट कह्यो नहिं बदिहै ब्रजही देउँ पठाइ॥ गुप्तप्रीति युवतिनकी कहिकै याको करौं महंत। गोपिनको परबोधन कारण जैहै सुनत तुरंत ॥ अति अभिमान करैगो मनमेंयोगिनकीइहभाँति। सूर श्याम यह निहचै करिकै बैठतहै मिलि पाँति॥ १३॥ जबही यह कहौंगो वाहि। मोहिं पठवत गोपिकनपै हरष ह्वैहै ताहि॥ योगको अभिमान करिहै ब्रजहि जैहै धाइ। कहैगो मोहिं श्याममानत करौंयहचतु-राइ ॥ आइगए तेहि समय ऊधो सखा कहि लियो बोलि । कंध धरि भुजभएठाढेकरतवचननि-ठोलि ॥ बारबार उसोंस डारत कहत ब्रजकी बात । सूर प्रभुके वचन सुनिसुनि उपँगसुत मुसकात॥ १४॥ राग धनाश्री ॥ हरिगोकुलकी प्रीति चलाई। सुनहु उपँगसुत मोहिं नबिसरतब्रजवासी सुखदाई ॥ यह चित होत जाउँ मैं अबही यहां नही मन लागत। गोपी ग्वालगाइ बनचारणअति दुख पायो त्यागत ॥ कहाँ माखन रोटी कहांयशुमति जेवहुँ कहिकहि प्रेम । सूर श्यामके वचन हँसत सुनि थापत अपनो नेम ॥ १५॥ राग रामकली ॥ यदुपति लख्योतेहिमुसकात। कहत हम्मनरहे

यह दुख आनिदई॥९७॥राग सारंग॥माधो छांडिवेपहिचानि।तबतेविरह कुटिलया गोकुल कीनो है विज्ञ खानि॥तनुगिरि जानि आनि अवनी डर इहि रड भीत रहे.। गमन कान्ह क्षणक्षण तु काम शशि किरनि कुदार गहे॥ रेणु अंजन जलनैन द्वार है रखो हृदय भरिपूरि । निकसत नाहीं पापरतन ज्यों गयो श्यामसँग दूरि ॥तुमसों बात और अलिभाषे उलटि ध्यान वपु जीत्यो।द्वै नृप लरत जाइ इंद्रीगत कहौ सूर को नीत्यो॥९८॥राग नट॥मेरे मन इतनीशूलरही।वेबतियांछतियां लिखि राखीजे नँदलाल कही॥ एक दिवस मेरे गृह आए हौंही मथत दही। रति माँगत में मान कियो सखि सो हरि गुसा गही॥ सोचति अतिपछितातिं राधिका मूर्छित धरणि ढही।सूरदास प्रभुके बिछुरेते व्यथा न जात सही ॥ ९९॥राग मलार॥हरि इते दिन लाए। आवन कहिगएअजहुँ न आए ॥ चलत चिते मुसुकायके मृदु वचन सुनाये । तेईढँगमोदक भए न धीरजहरितनछूछ करि छिटकाये ॥मोहनयदुनाथके गुण जानि पाए।मनहु सूर घनश्याम सुंदर वहुरि न चरणदिखाए॥ ॥२९००॥यह दुख कौनसों कहौं।जोइ बीतति सोइकहतिसयानी तिन सब शूल सहौं॥जे सुख श्यामसंग सबकीने गहि राखे इहि गात। ते अब भए शीत या तनुको शाखा ज्यों द्रुम पात॥ जो हुती निकट मिलनकी आसा सो तो दूरि गई। यथा योग ज्यों होत रोगिया कुपथी करत नई ॥ यह तनु त्यागि मिलनयों बनिहै गंगा सागर संग। अब सुन सूर ध्यान ऐसो है श्याम राम इक रंग॥१॥राग सारंग॥हम सरघा ब्रजनाथ सुधानिधि राखे बहुत जतन करि सचि सचि। मन मुख भरिभरि नैन ऐन है उरप्रति:कमल कोशललौं खचि खचि ॥ सुभग सुमन सब अंग अमृतमय तहां तहांराखति चित रचि रचि । मोहन मदन स्वरूप सुयशरस करत सु गुरु प्रेमरस पचि पचि ॥ सूरजदास पियूष लागि रस पठयो नृपति तेऊ गए बचि बचि। अब सोई मधु हरयो सुफलकसुत दुसह दाह जो उठत तन तचि तचि॥२ ॥ जबते नंदलाल चले काहू मुरली न बजाई। उन बिना जिय कठिन पीर निकसिहू न जाई। वृंदावनमें भूलि काहू सारंगो न गाई॥ गोपिन कठिन हिये तरकिहू न जाई। सूरदास प्रभुकी लीलाऊधो कछुपाई॥३॥राग सारंग॥ माई वे दिना ये देह अछत विधना जो आनै री। श्यामसुंदर रंग रंग युवति वृंद ठानै री॥यद्यपि अक्रूर मूल परमगति पढावै री।प्राणनाथ कमलनैनवाँसुरी बजावै री॥सोई कहा कहौं कहतकठिन कहे कौन मानै री । सूर सो नंद प्रेम पीर विरही मिले जानै री ॥४॥ सबकोउ कहत सयानी बातें ।समुझि नपरत बूझि नहिं आवत कही जात नहीं तातें॥ पहिले जानिअग्नि चंदनसी सती बहुत उमहै। समाचार ताते औ सीरे आगे जाय लहै॥ कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुममाल करवार। सूरदास शिर देत शूरमा सोइ जानै व्यवहार॥ ५ ॥राग गूजरी॥ कुँवरिको वैरागी वैराग ।पलटति वसन करति निशि चोरी वपु विलसुत भई जाग॥वेसरि वेह मूँदि मृगमद मथि नख उर धुकधुकी खेद कीनी । चलत चरण चित गयो गलित झिर स्वेद सलिल भभीनी॥ छूटी भुजबल फुटी वलय कर छुटि लर फटी कंचुकी छीनी । मनहुँ प्रेमकी परनि परेवायाहीसें पढि लीनी ॥अवलोकत इहि भाँति रमापति जानौं अहिमणि छीनी। सूरदास प्रभु कहि न जाति कछु हौं जानी मतिहीनी॥६॥राग मलार॥हरिको मारग दिन प्रति जोवति। चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों सुमिरिसुमिरि गुण रोवति ॥पतिआँ पठवत मसि नहिं खंडित लिखिलिखिमानहु धोवति।भूषण दिन निशि नींद हिरानी एको पल नहिं सोवति ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिनु वृथा जनमसुख खोवति ॥७॥ राग बिलावल॥अंतर्यामी कुँवरकन्हाई।गुरुगृह पढत हुते जहाँ विद्य।

तहां ब्रजकी सुधि आई ॥ गुरुसों कह्यो जोरि कर दोऊ दक्षिणा कहो सो देउँ मँगाई। गुरुपत्नी कह्यो पुत्र हमारो मृतक भयो सो देहु जिवाई॥ आनि दिए गुरुसुत यमपुरते तब गुरुदेव अशीश सुनाई। सूरदास प्रभु आइ मधुपुरी ऊधोको ब्रज दियो पठाई॥ ८॥ अध्याय॥ ॥४६॥उद्धवब्रजआगमन हेतु॥रागनट॥यदुपति जानि उद्धव रीति। जिहिं प्रगट निज सखा कहियत करत भाव अनीति। विरहदुख जहां नाहिं जामत नहीं उपजै प्रेम। रेख रूप न बरन जाके यहि धरयो वह नेम॥त्रिगुणतनु करि लखत हमको ब्रह्म मानत और।बिना गुण क्यों पुहुमि उधरै यह करत मन डौर॥ विरहरसके मंत्र कहिए क्यों चलै संसार। कछु कहत यह एक प्रगटत अति भरयो अहंकार॥ प्रेमभजन न नेकु याके जाइ क्यों समुझाइ। सूर प्रभु मन इहै आनी ब्रजहि देउँ पठाइ॥९॥राग नट॥इहअद्वैत दरशीरंग।सदा मिलि एकसाथ बैठत चलत बोलतसंग॥ बात कहत न बनत यासों निठुर योगी जंग। प्रेम सुनि विपरीत भापतहोतहै रसभंग॥सदाब्रजको ध्यान मेरे रासरंग तरंग।सूर वह रस कहाँ कासोंमिल्यो सखाभुरंग॥राग नट॥संगमिलिकहौंकासों बात। यह तो कथत योगकी बातैं जामें रस जरिजात॥ कहत कहा पितु मात कौनकोपुरुष नारि कहा नात। कहाँ यशोदासी है मैया कहां नंदसम तात॥ कहाँ ब्रजभानुसुता सँगको सुख यह वासर वह प्रात। सखी सखा सुख नहिं त्रिभुवनमें नहिं बैकुंठ सुहात॥ वे बातैं कहिए केहि आगेयह गुनि हरि पछितात।सूरदास प्रभु ब्रजमहिमा कहि लिखी वदत बलभ्रात॥१०॥राग धनाश्री॥ कहां सुख ब्रजकोसो संसार। कहां सुखद बंसीवट यमुना यह मन सदा विचार॥ कहां वनधाम कहां राधासँग कहां संग ब्रजवाम। कहां रसरासबीच अंतरसुख कहां नारि तनु ताम॥ कहां लता तरुतरु प्रति झूलनि कुंज२वनधाम। कहां विरहसुख विनु गोपिनसँग सूर श्याम ममकाम॥सखा हमको मिले ऊधो वचनन मारत ताम॥भावभजन विना नाहीं सुख कहां प्रेम अरु योग। काग हंसहि संग जैसो कहां दुख कहां भोग॥ जगतमें यह संग देखो वचन प्रति कहै ब्रह्म।सूरब्रजकी कथा सो कहैयहकरैजो दंभ॥११॥ राग कान्हरो॥हंसकागकोसंगभयो।कहांगोकुलकहांगोपगोपिका विधि यह संग दयो॥ जैसे कंचन कांचसंग ज्यों चंदन संग कुगंधि। जैसे खरी कपूर एक सम यह भई ऐसी संधि॥ जलबिनु मीन रहत कहुँ न्यारे यह सो रीति चलावत। जब ब्रजकी बातैं यहि कहियत तबहिं तबहिं उचटावत॥ याको ज्ञान थापि ब्रज पठऊं और न याहि उपाव। सुनहु सूर याको वन पटऊं यहै बनैगो दाव॥१२॥ राग धनाश्री॥ याहिऔरकछुनहींउपाइ।मेरोप्रगट कह्यो नहिं वदिहै ब्रजही देउँ पठाइ॥गुतप्रीति युवतिनकी कहिकै याको करौं महंत।गोपिनको परबोधन कारण जैहै सुनत तुरंत॥ अति अभिमान करैगो मनमेंयोगिनकीइहभाँति। सूर श्याम यह निहचै करिकै बैठतहै मिलि पाँति॥१३॥जबहीं यह कहौंगो वाहि।मोहिं पठवत गोपिकनपै हरप हैहै ताहि॥योगको अभिमान करिहै ब्रजहि जैहै धाइ।कहैगो मोहिं श्याममानत करौंयहचतुराइ॥ आइगए तेहि समय ऊधो सखा कहि लियो बोलि। कंध धरि भुजभएठाढेकरतवचननिठोलि॥बारबार उसाँस डारत कहत ब्रजकी बात।सूर प्रभुके वचन सुनिसुनि उपँगसुत मुसकात॥१४॥ राग धनाश्री॥हरिगोकुलकी प्रीति चलाई।सुनहु उपँगसुत मोहिं नबिसरतब्रजवासी सुखदाई॥ यह चित होत जाउँ मैं अबहीं यहां नहीं मन लागत।गोपी ग्वालगाइ वनचारणअति दुख पायो त्यागत॥ कहां माखन रोटी कहांयशुमति जेवहुँ कहिकहि प्रेम। सूर श्यामके वचन हँसत सुनि थापत अपनो नेम॥१५॥ राग रामकली॥यदुपति लखोतेहिमुसकात। कहत हममनरहै

जोई सोइ भई यह बात ॥ वचन परकट करन कारण प्रेमकथा चलाइ।तुम ऊधो मोहिं ब्रजकी सुधि नहीं बिसराइ ॥ रैनि सोवत दिवस जागत नहीं है मन आन । नंद यशुमति नारि नरब्रज तहां मेरो प्राण । कहत हरि सुनि उपँगसुत यह कहनदी रसरीति । सूर चितते टरत नाहीं राधिकाकी प्रीति॥१६॥सखा सुन एक मेरी बात।नंद लताग्रह संग गोपिन सुधिकरतपछितात ॥ विधि लिखी नहिं टरत कैसेहु यह कहत अकुलात । हेमि उपँगसुत वचन बोले कहा हरि पछितात ॥ सदा हित यह रहत नाहीं सकल मिथ्या जात । सूर प्रभु यह सुनहु मोसो एकहीं-सों नात ॥१७ ॥ जब ऊधो यह बात कही । तब यदुपति अतिही सुख पायो मानी प्रगटसही॥ श्रीमुख कह्यो जाहु तुम ब्रजको मिलो जाइ ब्रजलोग।मोबिन विरहभरी ब्रजबाला जाइ सुनावहु योग ॥ प्रेम मिटाइ ज्ञान परबोधहु तुम हौ पूरण ज्ञानी।सूर उपँगसुत मन हरषाने यहमहिमाइन जानी॥१८॥राग गौरी॥ऊधो तुम यह निहचै जानो । मन वच क्रम मैं तुमहिं पठावत ब्रजकोतुरत पलानो ॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी ताके तुम हौ ज्ञाता । रेख न रूप जाति कुल नाहीं जाके नहिं पितु माता॥यह मत दै गोपिनको आवहु विरह नदीमें भासति।सूर तुरत तुम जायकहौयह ब्रह्म बिना नहिंआसति॥१९॥राग सारंग॥ऊधो तुम वेगही ब्रज जाहु।सुरतिसँदेशसुनाइमेटोवल्लभनिको दाहु ॥ काम पावक तुलित मनमें विरहश्वास समीर। भस्म नाहिन होन पावत लोचन-नके नीर॥ आजुलौं इहि भाँति है वा कछुक श्याम शरीर । एतेपर बिना समाधानहिं क्यों धरें तिय धीर ॥ बारनार कहा कहौं तुमसो सखा साधु प्रवीन।सूर सुमति विचारिए जिहि जियैजल-बिनु मीन ॥ २० ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो ब्रजको गमन करौ । हमहिबिनाविरहिनीगोपिकातिनके दुखहि हरौ॥योग ज्ञान परबोधि सबनको ज्यों सुख पावै नारि। पूरण ब्रह्म अलख परिचै करि मोहिं बिसारै डारि ॥सखा प्रवीन हमारे तुम हौ तुमते नहीं महन । सूर श्याम कारण यह पठवत ह्वै आवैगे सत ॥ २१ ॥ राग नट ॥ ऊधो मन अभिमान बढायो । यदुपति योग जानि जिय साचो ज्ञान अकाश चढायो ॥नारिनपै मोको पठवतहैं कहत सिखावन योग । मन-हीमन अपकरत प्रशंसा यह मिथ्या सुखभोग ॥आयसु मानि लियो शिर ऊपर प्रभु आज्ञा पर-मान ।सूरदास प्रभु गोकुल पठवत मैं क्यों कहौं कि आन॥२२॥ राग कान्हरो॥तुमपठवतगोकुलको जैहौं। जो मानिहैं ब्रह्मकी बातैं तौ उनसों मैं कैहौं ॥ गदगद वचन कहत मन प्रफुलित बारम्बार समुझैहौं।आजुइ नहीं करौं तब कारज कौनकाज पुनि लैहौं॥यह मिथ्या संसार सदाई यह कहि-कै उठि ऐहौं ।सूर दिना द्वै ब्रजजन [illegible]
प्राण मेरे नाहिंन सम तोहिं। कैसेहू [illegible]
वृथा गोपकुमारि । सालोक्य सामीप [illegible]
नहीं तनु ज्ञान । सोइ तुम उपदेशहू जो लहै पद निर्वान। जो न अबके कृत करैं तौ होइहौं ऋण दास । सूर गाइ चराइहौं हौं फेरि बसि ब्रजवास ॥२४॥ राग बिलावल॥तुरतब्रजजाहुउपँगसुतआजु। ज्ञान बुझाइ सबरि दै आवहु एक पंथ द्वै काजु ॥ जबते मधुबनको हम आए फेरि गयो नहिं कोई । युवतिनपै ताहीको पठवैं जो तुम लायक होई ॥ एक प्रवीन अरु सखा हमारे जानी तुम सरि कौन । सोइ कीजो जैसे ब्रजबाला साधन मीरा पौन ॥श्रीमुख श्याम कहत यह बाणी ऊधो सुनत सिहात।आयसु मानि सूरप्रभु जैहौं नारि मानिहैं बात॥२५॥ राग गौरी॥ ऊधोब्रजजिनिगह-रु लावहु । तुम ब्रजनारि जानि मन सकुचत कहियौ योग सुनावहु ॥ वाणी कहत समुझि वै लैहैं

कही हमारी मानो । विरहदाह यह सुनत बूझिहै मानहु अनलहि पानो ॥ अबहीं जाहु विकल सब गोपीयोगवचनकहिपोपो। सूरनंदबाबा जननी यशोमतिकोवेगिजाइ संतोपो॥२६॥राग सोरठ॥हल-धर कहत प्रीति यशुमतिकी। कहां रोहिणी ए तन पावै यह बोलन वह हितकी ॥ एक दिवस हरि खेलत मोसँग झगरो कीन्हों पेलि। मोको दौरि गोदकरि लीनो इनहिं दियो करठेलि॥ नँदबाबा तब कान्ह गोदकरि खीझन लागे मोको।सूर श्याम नान्हो तेरो भैया छोह न आवत तोको।॥२७॥ राग रामकली॥यशोमति करती मोको हेत।सुनत ऊधो कहतबनत न नैन भरि भरिलेत॥दुहूँकोकुशलात कहियो तुमहिं भूलत नाहिं । श्याम हलधर सुत तुम्हारे और कौन कहाहिं ॥ आइ तुमको धाइ मिलिहैं कछुक कारज और।सूर हमको तुमहिं विन सुख नहीं है कहुँ ठौर॥२८॥राग बिहागरो॥श्याम कर पत्री लिखी बनाइ। नंदबाबासों विनती करी करजोरि यशोदामाइ ॥ गोप ग्वाल सखन गहि मिलि मिलि कंठ लगाइ। और ब्रजनर नारिजेहैं तिनहि प्रीति जनाइ॥ गोपिकनिलिखियोग पठयो भाउ जान न जाइ ।सूरप्रभु मन और यह कहि प्रेम लेत हढाइ ॥ २९ ॥उपँगसुत हाथदई हरिपाती । यह कहियो यशुमति मैयासों नहिं बिसरत दिनराती॥ कहत कहा वसुदेवदेवकी तुमको हमहैं जाए। कंस त्रास शिशु अतिहि जानिकै ब्रजमें राखि दुराए॥ कहे बनाइ कोटि कोउ बातैं कहिबलराम कन्हाई।सूरकाज करिकै कछु दिनमें बहुरि मिलेंगे आई॥३०॥राग बिलावल॥ऊधोइतनो कहियो जाइ।हम आवैंगे दोऊ भैया मैया जिनि अकुलाइ॥याको बिलग बहुत हम मान्यो जब कहि पठयो धाइ।वह गुण हमको कहाबिसरिहै वडे किये पय प्याइ ॥ और जु मिल्योनंदबाबासों तब कहियो समुझाइ । तौलों दुखी होन नहिं पावैं धवरी धूमरि प्याइ॥यद्यपि यहाँ अनेक भाँति सुख तदपि रह्यो ना जाइ।सूरदास देखों ब्रजवासिन तबहींहियोसिराइ॥३१राग आसावरी ॥ ऊधो जननी मेरी को मिलिहौ अरु कुशलात कहोगे । बाबा नंदहिं पालागन कहि पुनि पुनि चरण गहोगे ॥ जादिनते मधुबन हम आए शोध नतुमही लीनोहो। दैदै सौंह कहोगे हिन करि कहा निठुरई कीन्हो हो ॥ यह कहियो बलराम श्याम अब आवैंगे दोउ भाईहो। सूरकर्मकीरेखमिटै नहिं यहैकह्योयदुराईहो॥३२॥राग केदारो ॥विधनाइहैलिख्योसंयोग । कहांतिमधुपुरीआए तज्यो माखन भोग ॥ कहां वे ब्रजके सखा सब कहां मथुरा लोग । देवकी वसुदेव सुत सुनि जननि कैहै सोग ॥ रोहिणी माता कृपा करि उछँग लेती रोग। सूर प्रभु मुख यह वचन कहि लिखि पठायो योग॥राग गौरी॥पाती लिखि ऊधोकर दीन्ही॥ नंद यशुदहि हेतुकहि दीजो हँसि उपंग-सुत लीन्ही ॥ मुख वचनन कहि हेतु जनायो तुमहौ हितू हमारे। बालक जानि पठे नृप डरते तुम प्रतिपालन हारे ॥ कुँबिजा सुन्यो जात ब्रज ऊधो महलइ लियो बोलाई। हाथनपातिलिखी राधाको गोपिन सहित बडाई ॥ मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास। झुकत कहा मोपर ब्रजनारी सुनहुनसूरजदास॥२४॥राग मलार ॥ हमपरकाहेकोझुकतब्रजनारी। साझे भाग नहीं काहूको हरिकी कृपा निनारी॥ कुबिजा लिखो संदेश सबनको अरु कीनी मनुहारी। हौंतौदासी कंसराइकी देखो हृदय बिचारी ॥ फलन मांझ ज्यों करुई तोमरी रहत घुरेपर डारी। अवतौ हाथ परी यंत्रीके बाजत रागदुलारी॥२९ ॥राग गौरी ॥ऊधोब्रजहिजाहुपालागौं।यहपातीराधाकर दीजो यह मैं तुमसों मांगौं ॥ गारी देहि प्रात उठि मोको सुनत रहत यह बानी। राजाभयेजाइ नँदनंदनमिलीकूवरी रानी॥ मोपर रिस पावत काहेको बरजि श्याम नहिं राख्यो । लरिकाईते बाँधति यशुमति कहा जु माखन चाख्यो ॥ रज्जु लै सबै हजूर होति तुम सहित सुता वृपभान ।

जोई सोइ भई यह वात ॥ वचन परकट करन कारण प्रेमकथा चलाइ॥सुनहु ऊधो मोहिं व्रजकी सुधि नहीं विसराइ ॥ रैनि सोवत दिवस जागत नहीं है मन आन । नंद यशुमति नारि नरव्रज तहां मेरो प्राण । कहत हरि सुनि उपँगसुत यह कहत हौं रसरीति । सूर चितते टरत नाहीं राधिकाकी प्रीति॥१६॥सखा सुन एक मेरी वात॥यह लतागृह संग गोपिन सुधिकरतपछितात ॥ विधि लिखी नहिं टरत कैसेहु यह कहत अकुलात । हँसि उपँगसुत वचन बोले कहा हरि पछितात ॥ सदा हित यह रहत नाहीं सकल मिथ्या जात । सूर प्रभु यह सुनहु मोसों एकही-सों नात ॥१७॥ जब ऊधो यह वात कही । तब यदुपति अतिही सुख पायो मानी प्रगट सही॥ श्रीमुख कह्यो जाहु तुम व्रजको मिलो जाइ व्रजलोग॥मोबिन विरहभरी व्रजवाला जाइ सुनावहु योग ॥ प्रेम मिटाइ ज्ञान परबोधहु तुम हौ पूरण ज्ञानी॥सूर उपँगसुत मन हरषाने यहमहिमाइन जानी॥१८॥राग गौरी॥ऊधो तुम यह निहचै जानो। मन वच क्रम मैं तुमहिं पठावत व्रजकोतुरत पलानो ॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी ताके तुम हौ ज्ञाता । रेख न रूप जाति कुल नाहीं जाके नहिं पितु माता॥यह मत दै गोपिनको आवहु विरह नदी में भासति॥सूर तुरत तुम जायकहौ यह ब्रह्म विना नहिंआसति॥१९॥राग सारंग॥ऊधो तुम वेगही व्रज जाहु॥सुरतिसँदेशसुनाइमेटोवल्लभनि-को दाहु ॥ काम पावक तुलिन मनमें विरहश्वास समीर। भस्म नाहिन होन पावत लोचन-नके नीर॥ आजुलौं इहि भाँति है वा कछुक श्वासशरीर । एतेपर विना समाधानहिं क्यों धरें त्रिय धीर ॥ वाग्वार कहा कहौं तुमसों सखा साधु प्रवीन॥सूरसुमति विचारिए जिहि जियैजल-विनु मीन ॥ २० ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो व्रजको गमन करौ । हमहिविनाविरहिनीगोपिकातिनके दुखहि हरौ॥योग ज्ञान परबोधि सजनको ज्यो सुख पावैं नारि। पूरण ब्रह्म अलख परिचै करि मोहिं विसारैं डारि ॥सखा प्रवीन हमारे तुम हौ तुमते नही महंत । सूर श्याम कारण यह पठवत है आवेंगे संत ॥ २१ ॥ राग नट ॥ ऊधो मन अभिमान वढायो । यदुपति योग जानि जिय सांचो नयन अकाश चढायो ॥नारिनपै मोको पठवतहैं कहत सिखावन योग । मन-हीमन अपकरत प्रशंसा यह मिथ्या सुखभोग ॥ आयसु मानि लियो शिर ऊपर प्रभु आज्ञा पर-मान ।सूरदास प्रभु गोकुल पठवतमैं क्यों कहौं कि आन ॥२२॥ राग कान्हरो॥तुमपठवतगोकुलको जैहौं। जो मानिहैं ब्रह्मकी वातैं तौ उनसों मैं कहौं ॥ गदगद वचन कहत मन प्रफुलित वारवार समुझैहौं॥आज्ञा नही करौं तब कारज कौनकाज पुनि लैहौं॥यह मिथ्या संसार सदाई यह कहि-कै उठि ऐहौं ।सूर दिना द्वै व्रजजन सुखदै आइ चरण पुनि गैहौं॥२३॥राग केदारो॥सुनसखाहित प्राण मेरे नाहिनें सम तोहिं। कैसेहू करि टक्करण कीजो व्रजवधुनते मोहिं॥त्याजियेमेंरतनदीन्हों वृथा गोपकुमारि । सालोक्यसामीप्य नामारोपिता भुजचारि ॥ अंगरही साजो चिंतासो संधि नही तनु ज्ञान । सोइ तुम उपदेशहू जो लहैं पद निर्वान। जौ न अबके कृत करैं तो होइहौं ऋण दास। सूर गाइ चराइहौं ह्वै फेरि वसि व्रजवास ॥२४॥ राग विलावल॥तुरतव्रजजाहुउपँगसुतआजु। ज्ञान बुझाइ खबरि दै आवहु एक पथ द्वै काजु ॥ जबते मधुवनको हम आए फेरि गयो नहि कोई। युवतिनपै ताहीको पठवें जो तुम लायक होई ॥ एक प्रवीन अरु सखा हमारे जानी तुम सरि कौन । सोइ कीजो जैसे व्रजबाला साधन सीखैं पौन॥श्रीमुख श्याम कहत यह वाणी ऊधो सुनत सिहात।आयसु मानि सूरप्रभु जैहौं नारि मानिहैं वात॥२५॥राग गौरी॥ ऊधोव्रजजिनिगह-रु लगावहु । तुम व्रजनारि जानि मन सकुचत कहियौ योग सुनावहु ॥ वाणी कहत समुझि वे लैहैं

कही हमारी मानो । विरहदाह यह सुनत बूझिहै मानहु अनलहि पानी ॥ अबहीं जाहु विकल सब गोपीयोगवचनकहिपोपो। सूरनंदबाबा जननी यशोमतिकोबेगिजाइ संतोपो॥२६॥ राग सोरठ॥ हलधर कहत प्रीति यशुमतिकी । कहां रोहिणी ए तन पावै वह वोलन वह हितकी ॥ एक दिवस हरि खेलत मोसँग झगरो कीन्हों पेलि। मोको दौरि गोदकरि लीनो इनहिं दियो करठेलि॥ नँदवावा तव कान्ह गोदकरि खीझन लागे मोको।सूर श्याम नान्हो तेरो भैया छोह न आवत तोको॥२७॥ राग रामकली॥ यशोमति करती मोको हेत।सुनत ऊधो कहतबनत न नैन भरि भरिलेत॥ दुहूंकोकुशलात कहियो तुमहिं भूलत नाहिं । श्याम हलधर सुत तुम्हारे और कौन कहाहिं ॥ आइ तुमको धाइ मिलिहैं कछुक कारज और।सूर हमको तुमहिं विन सुख नहीं है कहुँ ठौर॥२८॥ राग विहागरो॥ श्याम कर पत्री लिखी बनाइ । नंदबाबासों विनती करी करजोरि यशोदामाइ ॥ गोप ग्वाल सखन गहि मिलि मिलि कंठ लगाइ । और ब्रजनर नारिजेहैं तिनहि प्रीति जनाइ॥ गोपिकनिलिखियोग पठयो भाउ जान न जाइ । सूरप्रभु मन और यह कहि प्रेम लेत दृढाइ ॥ २९ ॥ उपँगसुत हाथलई हरिपाती । यह कहियो यशुमति मैयासों नहिं बिसरत दिनराती ॥ कहत कहा वसुदेवदेवकी तुमको हमहैं जाए । कंस त्रास शिशु अतिहि जानिकै ब्रजमें राखि दुराए॥ कहै बनाइ कोटि कोउ बातें कहिबलराम कन्हाई।सूरकाज करिकै कछु दिनमें वहुरि मिलेंगे आई॥३०॥ राग बिलावल॥ ऊधोइतनी कहियो जाइ। हम आवैंगे दोऊ भैया मैया जिनि अकुलाइ॥ याको विलग वहुत हम मान्यो जब कहि पठयो धाइ।वह गुण हमको कहाविसरिहै वडे किये पय प्याइ ॥ और जु मिल्योनंदबाबासों तब कहियो समुझाइ । तौलों दुखी होन नहिं पावैं धवरी धूमरि प्याइ॥ यद्यपि यहाँ अनेक भाँति सुख तदपि रह्यो ना जाइ। सूरदास देखौं ब्रजवासिन तबहीं हियोसिराइ॥३१ राग आसावरी ॥ ऊधो जननी मेरी को मिलिहौ अरु कुशलात कहोगे। बाबा नंदहिं पालागन कहि पुनि पुनि चरण गहोगे ॥ जादिनते मधुवन हम आए शोध न तुमही लीनोहो। दैदै सौंह कहोगे हिन करि कहा निठुरई कीन्हो हो ॥ यह कहियो वलराम श्याम अब आवैंगे दोउ भाईहो। सूरकर्मकीरेखमिटै नहिं यहैकह्योयदुराईहो॥३२॥ राग केदारो ॥ विधनाइहैलिख्योसंयोग । कहांतिमधुपुरीआए तज्यो मारवन भोग ॥ कहां वे ब्रजके सखा सब कहां मथुरा लोग । देवकी वसुदेव सुत सुनि जननि केहै सोग ॥ रोहिणी माता कृपा करि उछँग लेती रोग । सूर प्रभु मुख यह वचन कहि लिखि पठायो योग॥ राग गौरी॥ पाती लिखि ऊधोकर दीन्ही॥ नंद यशुदहि हेतुकहि दीजो हँसि उपंगसुत लीन्ही ॥ मुख वचनन कहि हेतु जनायो तुमहो हितू हमारे। बालक जानि पठै नृप डरते तुम प्रतिपालन हारे ॥ कुविजा सुन्यो जात ब्रज ऊधो महलइ लियो बोलाई। हाथनपातिलिखी राधाको गोपिन सहित वडाई ॥ मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास। झुकत कहा मोपर ब्रजनारी सुनहुनसूरजदास॥३४॥ राग मलार ॥ हमपरकाहेकोझुकतब्रजनारी। साझे भाग नहीं काहूको हरिकी कृपा निनारी॥ कुविजा लिखो संदेश सबनको अरु कीनी मनुहारी। हौंतौदासी कंसराइकी देखौ हृदय विचारी ॥ फलन मांझ ज्यों करुइ तोमरी रहत घुरेपर डारी । अबतौ हाथ परी यंत्रीके वाजत रागदुलारी॥३५ ॥ राग गौरी ॥ ऊधोब्रजहिजाहुपालागौं। यहपातीराधाकर दीजौ यह मैं तुमसों मांगौं ॥ गारी देहिं प्रात उठि मोको सुनत रहत यह बानी। राजाभयेजाइ नँदनंदनमिलीकूवरी रानी॥ मोपर रिस पावत काहेको बरजि श्याम नहिं राख्यो । लरिकाईते बाँधति यशुमति कहा जु माखन चाख्यो ॥ रजु लै सबै हजूर होति तुम सहित सुता वृषभान ।

सूर श्याम बहुरो व्रज जैहैं ऐसे भए अजान॥२६॥राग धनाश्री ॥ऊधो यह राधासों कहियो।जैसी कृपा श्याम मोहिं कीन्हीआपुकरतसोइरहियो॥मोपर रिस पावत वे कारणमैंहौंतुम्हरीदासी।तुमहीं मनमें गुणिधौं देखो बिन तप पायो कासी॥कहां श्यामकी तुम अर्धंगिनि मैं तुमसरकी नाहीं।सूरज प्रभुको यहन बूझिए क्यों न वहाँलौंजाहीं॥२७॥राग सारंग॥ऊधो जाइ कहियोराधिकाहीतुमइतनी-सी बात। आवनदिए कहो काहेको फिरि पाछे पछितात ॥ अब दुखमानि कहाधौं करिहौ हाथ रहैगी गारी।हमैं तुम्हैं अंतरहै जेतो जानतहैं बनवारी॥एतो मधुप सबैरस भोगी जहींजहींरस नीको। जो रस खाइ स्वाद करि छांडे सो रस लागत फीको॥एक कूबर हरि हरयो हमारो जगतमांझ यश लीनों । ताको कहा निहोरो हमको मैंत्रिभंग करि दीनो॥तुम सब नारि गँवारि अहीरी कहा चातुरी जानो।राखि न सकी आपुवशके तब अब काहे दुख मानो॥ सूरदास प्रभुकी ए बातें ब्रह्म लखे नहिं पारे।जाके चरण पाइके कमला गतिआपनी बिसारे॥२८॥राग केदारो ॥सुनियत ऊधो लये संदेशो तुम गोकुलको जात।पाछे करि गोपिनसों कहियो एक हमारीबात॥मात पिताको नेह समुझिके श्याम मधुपुरी आए । नाहिन कान्ह तुम्हारे प्रीतम ना यशुमतिके जाए ॥ देखो, बूझि, आपने जियमें तुम माधो कौने सुख दीने ।ए बालक तुम मत्तग्वालिनी सबै मुंडकरिलीने॥तनक दही माखनके कारण यशुदा त्रास दिखावे । तुम हँसि सब बाँधनको दौरी काहू दया न आवे ॥ जो वृषभानुसुता बन कीनीसो सब तुम जिय जानो । ताही लाजतज्यो व्रजमोहनअबकाहेदुख मानो ॥ सूरदास प्रभु सुनिसुनि बातें रहे श्याम शिरनाए। इत कुबिजा उत प्रेम गोपिका कहत न कछु बनि आए ॥ २९ ॥राग बिहागरो॥ऊधो जात व्रजहि सुने।देवकीवसुदेव सुनिकेहृदय हेत गुने॥ आपसे पाती लिखी कहि धन्य यशुमति नंद।सुत,हमारो पालि पठयो अति दियोआनंद॥ आइके मिलि जात कबहुँ न श्याम अरु बलराम।इहो कहति पठाइ देहैं तवहितविनगाम॥बाल सुख सब तुमहिंलूट्यो मोहिंमिले कुमार।सूर यह उपकारतुमते कहतबारंबार॥४०राग बिलावल ॥ तब ऊधो हरि निकट बुलायो।लिखि पाती दोउ हाथ दई तेहि ए मुख वचन सुनायो ॥व्रजवासी जावत नारी नर जल थल द्रुम बन पात । जो जेहिविधि तासों तैसेहि मिलि अरस परस कुश-लात॥जो सुख श्याम तुमहिते पावत सो त्रिभुवन कहुँ नाहिं। सूरदास प्रभुदे सौंहआपनी समुझत हौ के नाहिं ॥४१॥ राग सारंग॥पहिले प्रणाम नंदराइसों।ता पीछे मेरो पालागनकहियोयशुमति माइसों । बार एक तुम बरसानेंलों जाइ सबै सुधि लीजो। कहि वृषभानु महरसों मेरो समाचार सब दीजो ॥ श्रीदामाआदि सकलग्वालनको मेरेहित भेटियो । सुख संदेश सुनाइसबनको दिन दिनको दुख मेटियो ॥ मित्र एक मन बसत हमारे ताहि मिलि सुख पाइहो। करिकरि समाधान नीकी विधि मोहिंको माथो नाइहो ॥ डरियहु जिनि तुम सघन कुंजमें हैं तहँके तरुभारी। वृंदावन मति रहति निरंतर कबहुँ न होत निनारी॥ऊधोसों समुझाइ प्रगट करि अपने मनकी बीती।सूरदास स्वामीसो छलसों कही सकल व्रज प्रीती॥४२॥कही हरि ऊधोसों व्रजप्रीति।बोले चले योग गोपिनको तहां करनविपरीति ॥तुरत अंक भरि रथहि चढायो विनय कह्यो करिताहि। विरहा जाल भेटिगोपिनको आवहुकाज निबाहि॥लै रज चरण,शीशबंदनि करि व्रजरेहोंदिनद्वै-का।सूरज प्रभु श्रीमुख कहि पठवत तुमबिनु रहौंननेक॥४३॥राग गौरी॥गहरु जनिलावहुगोकुलजाइ। तुमहिं बिना व्याकुल हम ह्वैहैं यदुपति करी चतुराइ ॥ अपनोई रथ तुरत मँगायो दियो तुरत पलनाइ । अपने अंग आभूषण करिकरि आपुनही पहिराइ॥अपनो मुकुटपीतांबरअपनो देत

सबै सुख पाये।सूर श्याम तद्यपि उपंगसुत भृगुपद एक बचाये॥४४॥राग बिलावल॥ऊधो चले श्याम आयसु सुनि ब्रज नारिनको योग कह्यो।हरिके मन यह प्रेम लहैगो वहतो जिय अभिमान गह्यो॥ आतुर चल्यो हर्ष मन कीन्हें कृष्ण महंत करि पठैदियो। स्यंदन उहै श्याम सब भूषण जानि-परे नँदसुवन वियो॥युवती कहा ज्ञान समुझैंगी गर्गवचन मन कहत चल्यो।सूर ज्ञानको मान बढाये मधुवनके मारगहि मिल्यो॥४५॥राग बिलावल॥जबहिं चले ऊधो मधुवनते गोपिन मनहि जनाइ-गई।बारबार भौंरा लगे कानन कछु दुख कछु हिय हर्ष भई॥जहँतहँ काग उडावन लागीं हरि आवत उडि जाहि नहीं।समाचार कहि जबहिं सुनावत उडि वैठत सुनि अनत कहीं॥सखी परस्पर यह कहि बातें आजु श्यामके आवतहैं।किधौं सूर कोई ब्रज पठयो आजु खबरिके पावतहैं॥४६॥आजु कोउ नीकी बात सुनावै। कै मधुवनते नंदलाडिले कै व दूत कोउ आवै॥भौंरा इक चहुँदिशिते उडि उडि कान लागि कछु गावै।उत्तम भाषा ऊंचे चढिचढि अंगअंग सगुनावै॥सूरदास कोऊ ब्रज ऐसो जो ब्रजनाथ मिलावै॥४७॥राग धनाश्री॥तूतो उडहि नहीं रे काग।जो गोपालगोकुलको आवें तो ह्वैहै बडभाग॥ दधि ओदन भरि दोनो देहौं अरु अंचलकी पाग। मिलिहौं हृदय सिराइ श्रवण सुनि मेटि विरहके दाग॥ जैसे मात पिता नहिं जानत अंतरको अनुराग। सूरदास प्रभु करैं कृपा तब जबते देह सुहाग॥४८॥राग कल्याण॥मथुराते निकसिपरे गैलमांझ आइ,उहै मुकुट पीतांबर श्याम रूप काछे। भृगुपद एक वंचित उर और अंग आछे॥ज्ञानको अभिमान किए मोको हरि पठयो। मेरोई भजन थापि माया सुख झुठयो॥मधुवनते चल्यो तबहिं गोकुल नियरान्यो। देखत ब्रजलोग श्याम आयो अनुमान्यो॥ राधासों कहति नारि काग सगुन टेरो। मिलिहैं तोहिं श्याम आजु भयो वचन मेरो॥वैसोइ रथ देखति सब कहति हरप वानी। सूरज प्रभुसे लागत तरुनी मुसकानी॥ ४९॥ अध्याय॥४७॥भवँरगीत॥ राग बिलावल॥ राधेहि सखी बतावत री। वैसोई रथ लखौं सेत मैं को उतहीते आवत री॥ चढिआयो अक्रूर जाहिपर स्यंदन ब्रजतन धावत री।वैसिहि ध्वजा पताका वैसी घरघर सबन सुनावत री॥ कोउ कहै श्याम कहति को ऐहै ब्रजतरुनी हरपा-वत री। सूरश्याम जेहि मग पगधारे तेहि मारग दरशावत री॥५०॥सारंग॥है कोउ वैसीही अनुहारि, मधुवन तनते आवत सखि री देखहु नैन निहारि॥माथे मोरमुकुट कटि किंकिणि पीतवसन रुचि चारि।सूरदास प्रभुबिन सब ऐसी जैसे मीन बिनवारि॥५१॥राग कल्याण॥ वैसोइ रथ वैसोइ कोउ आवत उतहीते। झुरिझुरि सब मरति विरह गोपीजनकीते॥ देखो री मुकुटझलक कुंडलकी ओभा। वैसोइ पटपीत अंग सुंदर अतिशोभा॥ आए री नंदसुवन राधा हरपानी।सूर मरत मीन तुरत मिले अगम पानी॥५२॥राग नट॥देखत हरपभई ब्रजनारी।वे निहचै आए वनवारी॥जो जैसे सो तैसे धाई। घर घर लोगन सुने कन्हाई॥ रथहीतन सब निरखनलागे। सपनेको सुख लूटत आगे॥कृपा करी आए गोपाल। गोपिन जानी विरह विहाल॥ ज्योंही ज्यों रथ आतुर आवै। त्योंही त्योंही पट फहरावै॥ सूर भई सुखव्याकुल नारी। प्रेमविवशा अनँद उर भारी॥५३॥राग बिलावल॥ घरघर इहै शब्द परयो।सुनत यशुमति धाइ निकसी हर्पि हियो भरयो॥नंद हर्षित चले आगे सखा हर्षत अंग। झुंड झुंडन नारि हर्षत चली उदधितरंग॥गाइ हर्षत पय स्रवत थन हुंकरत गउ वाल।उमँगि अंगन मात कोऊ वृध तरुन अरु वाल॥ कोउ कहत बलराम नाहीं श्याम रथपर एक। कोउ कहति प्रभु सूर दोऊ रचित वात अनेक॥५४॥राग बिलावल॥सुने ब्रजलोग आवत श्याम।जहांतहँते सबै धाइं सुनत दुर्लभ नाम॥ मनो मृगी वन जरति व्याकुल तुरत वरष्यो नीर। वचन गदगद प्रेमव्याकुल

धरत नहिं मन धीर ॥ एकएक पल युग सबनको मिलनको अतुरात । सूर तरुनी मिलि परस्पर भईं हर्षितगात॥५५॥राग धनाश्री॥नंदगोप हर्षित ह्वै गए लेन आगे।आवत बलराम श्याम सुनत दौरि चलीं वाम मुकुट झलक पीतांबर मनगन अनुरागे ॥ निहचै आए गोपाल आनंदित भईं बाल मिट्यो विरह जंजाल जोवत तेहिकाल।गदगद तनु पुलक भयो विरहाको शूल गयो कृष्णदरश अतुर अति प्रेमके वेहाल ॥ रथ ज्योंज्यों निकट भयो मुकुट पीत वसन नयो मनमें कछु सोच भयो श्याम किधौं कोउ।सूरज प्रभु आवतहैं हलधरको नहीं लखत झंखति कहति तो होते संग बीर दोउ॥५६॥राग आसावरी॥ आजु कोइ श्यामकी अनुहारी।आवत उत उमँगि सुनि सबही देखिरूपकी वारी॥इंद्रधनुषसे उर वनमाला चितवत चित्त हरै।मनो हलधर अग्रज गोहनके श्रवणन शब्द परै॥ गईं चलि निकट न देखे मोहन प्राण किए बलिहारी । सूर सकल गुण सुमिरि श्यामके विकल भईं व्रजनारी ॥५७॥राग बिलावल॥कोउ माई आवतहै तनुश्याम।वैसे पट वैसेइ रथबैठनि वे भूषण वे दाम॥ जो जैसे तैसे उठिधाईं छाँडि सकल गृहकाम।पुलक रोम गद्गद तेही छिन शोभित अँग अभिराम । इतने बीच आइगए ऊधो रहीं ठगी सब वाम ॥ ज्यों निधि पाइ गँवाइ हाथते भईं व्याकुल तनुताम।सूरदास प्रभु कत आवतहैं वसे कूबरीधाम॥५८॥उमँगि व्रज देखनको सब धाए। एकहि एक परस्पर बूझति मोहन दूलह आए॥ सोई ध्वजा पताका सोई जा रथ चढि ता दिवस सिधाए । श्रुति कुंडल अरु पीत वसन सब वैसोइ साज बनाए ॥ जाइ निकट पहिचान्यो ऊधो नयन जलज जलछाए। सूर श्याम मिटी दरशनआशा नूतन विरह जगाए ॥५९॥ जबहिं कहो ए श्याम नहीं । परीं मुरछि धरणी व्रजवाला जो जहां रहीं सुतहीं॥ सपनेकी रजधानी ह्वैगई जो जागी कछु नाहीं । वारवार रथ ओर निहारहिं श्याम विना अकुलाहीं॥कहा आय करिहैं व्रज मोहन मिली कूबरी नारी।सूर कहत सब ऊधो आए गई श्यामशर मारी ॥६०॥राग रामकली॥तरुणी गईं सब विलखाइ । जबहिं आए सुने ऊधो अतिहि गईं झुराइ॥परी व्याकुल जहाँ यशुमति गईं तहँ सब धाइ । नीर नयनन बहत धारा लईं पोंछि उठाइ ॥ एक भई अब चलो मारग सखा पठयो श्याम । सुनो हरिकुशलात ल्यायो महरिसों कहैं वाम ॥ जबहिंलों रथ निकट आयो तबहुँते परतीति । वह मुकुट कुंडल पितांबर सूर प्रभु अँगरीति ॥६१॥राग बिलावल॥ भली भई हरि सुरति करी । उठो महरि कुशलात बूझिये आनँद उमँगि भरी ॥ भुजा गहे गोपी परबोधत मानहु सुफल घरी । पाती लिखि कछु श्याम पठायो यह सुनि मनहिं ढरी ॥ निकट उपंगसुत आइ तुलाने मानो रूप हरी।सूर श्यामको सखा इहै री श्रवणन सुनी परी॥६२॥राग धनाश्री॥ निरखति ऊधो सुख पायो । सुंदर सुजन सुवंश देखियत याते श्याम पठायो ॥ नीके हरि संदेश कहैगो श्रवण सुनत सुख पैहैं । यह जानति हरि तुरत आयहैं ए कहि हृदय सिरैहैं ॥ घेरि लिए रथ पास चहूँधा नंद गोप व्रजनारी । महर लिवायगए निजमंदिर हरषित लियो उतारी॥ अरघ देत भीतर तेहि लीन्हों धनिधनि दिन कहि आजु।धनिधनि सूर उपंगसुत आए मुदित कहत व्रजसाजु ॥६३॥ अथ नंदवचनउद्धवप्रति राग मलार॥ कबहिं सुधि करत गोपाल हमारी । पूछत नंद पिता ऊधोसों अरु यशुदा महतारी॥बहुतै चूक परी अनजानत कहा अबके पछिताने।वासुदेव घरभीतर आए मैं अहीरके जाने॥पहिले गर्ग कह्यो हुतो हमसों संग देत गयो भूली।सूरदास स्वामीके बिछुरे राति दिवस

[illegible]

खिलौना मेरो ॥ जादिनतेतुमसोंबिछुरे हम कोउ नकहत कन्हैया। भोरहिनाहिंकलेऊकीनो सांझ न पयपियोधैया ॥ कहत न बन्यो सँदेशोमोपै जननि जितो दुख पायो। अबहमसोंवसुदेवदेवकी कहत आपनो जायो ॥ कहिए कहा नंदबाबासों बहुत निठुर मन कीनों। सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी बहुरो शोधनलीनों॥६५॥ पुनःनंदवचन ॥ राग सारंग ॥ हमतेकछुसेवा नभई। धोखेधोखे रहे धोखही जाने नाहिं त्रिलोकमई ॥ चरण पकरि करि बिनती करिबो सब अपराध क्षमा कीबे। ऐसो भाग होइगो कबहूँ श्याम गोदमें लीबे॥ कहें नंद आगे ऊधोके एकबेर दरशन दीबे। सूरदास स्वामीमिलि अबकेसबैदोषगतकीबे॥६६॥ अथ सखावचन ॥ राग बिलावल ॥भलीबातसुनियतहैआज। कोऊ कमलनयन पठयो हैतन बनए अपनोसो साज॥ पूँछत सखा कहौ कैसे हैं अब नाहीं कछु करते लाज। कंस मारि वसुदेवगृह आए उग्रसेनको दीन्हों राज ॥ राजा भए ज्ञानही भयो सुख सुरभी सँग बन गोप समाज ॥ अब सुन सूर करे को कौतुक ब्रजमें नाहिं बसत ब्रजराज॥६७॥ ॥ अथ ब्रजनरनारीवाक्य ॥ राग सारंग ॥ वैसोइ रथ वैसोइ सब साज। मानहुँ बहुरि बिचारि कछू मन सुफलकसुत आयो ब्रज आज ॥ पहिलेइ गमन गयो लै हरिको परम सुमति साथो रतिराज। अजहुँ कहा कीयो चाहतहै याते अधिक कंसको काज ॥ व्याध जो मृगन वधत सुन सजनी सो शर काढि संग नहिं लेत। यह अक्रूर कठिन कीनो इहि ये इतनो दुख देत ॥ ऐसे वचन बहुत विधि कहिकहि लोचन भरि सींचत उरगात । सूरदासप्रभु अवधिजानिकैचलीं सबैपूँछन कुश-लात॥६८॥ राग रामकली ॥ब्रजघरघरसबहोतबधाए।कंचनकलश दूब दधि रोचन महरिमहरवृंदावन आए ॥ मिलि ब्रजनारि तिलक शिर कीनो करि प्रदक्षिणा पास।पूँछत कुशल नारि नर हरषत आए सब ब्रजवास ॥ सकसकात तन धकधकात उर अकबकात सब ठाढे। सूर उपंगसुत बोलत नाहीं अतिहिरदै ह्वै गाढे ॥ ६९॥ सखीवचन गोपीप्रति राग धनाश्री॥आजु ब्रजकोऊआयोहै।कैधौंबहुरि अक्रूर क्रूर ह्वै जियत जानि उठिधायो है॥मैं देख्यो ताको रथ ठाढो तुम सखी शोधन पायो है। कैकरि कृपा दुखित जानिकै हरिसँदेश पठायो है॥चलौं मिलि सिमिटि सखी पूछनकोऊधोदरश दिखायो है । तब पहिचानि सबै प्रभुको भृत करन जोरिशिरनायोहै॥हरिहैंकुशलकुशलहौतुमहूं कुशल लोग जेहि भायो है । है वह नगर कुशल सूरज प्रभु करि सुदृष्टि जहां छायो है॥ ७० ॥ ॥ राग धनश्री ॥ देख्यो नंदद्वार रथ ठाढो। बहुरि सखी सुफलकसुत आयो परचो सँदेह जिय गाढो ॥ प्राण हमारे तबहिं गयो लै अब किहि कारण आयो।मैं जानी यह बात सत्य कै कृपा करन उठि धायो ॥ इतने अंतर आनि उपंगसुत तिहि क्षण दरशन दीन्हों। तब पहिचानि जानि प्रभुको भृतु परम सुचित मन कीन्हों ॥ तब परणाम कियोअतिरुचिसोंअरु सबही करजोरे। सुनियत हुते तैसई देखे सुंदर सुमति सु भोरे ॥ तुम्हरो दरशन पाइ आपनो जन्म सुफल करि मान्यो । सूरज ऊधो मिलत भए सुख ज्योंखग पायोपान्यो॥७१॥रागधनाश्री॥ बोलक इनहूको सुनि लीजै। कैसी उठनि उठे धौं ऊधो तैसे उत्तर कीजै॥ यामेंकछू खरचियतु नाहीं अपनो मतो न दीजै । कहि री सखी भागिए किहि डर चलहु जाइमुखछीजै ॥द्वैकरजोरि भई सन्मुख ठाढी वचन कहो त्यों जीजै। सूर सुमति सोई दीजै हरि वदन सुधारस पीजै ॥७२॥ राग नट ॥ ऊधो कहो हरिकुशलात । । कहो आवन किधौं नाहीं बोलिए मुख बात॥ एक छिन युग जात हमको बिन सुने हरिप्रीति। आइ आपे कृपा कीनी अबकहो कछु नीति ॥ तब उपंगसुत सबनि बोले सुनो श्रीमुख योग। सूर सुनिसब दौरिआई हटकि-

धरत नहिं मन धीर ॥ एकएक पल युग मननको मिलनको अतुरात। सूर तरुनी मिलि परस्पर

मिट्यो विरद जंजाल जोवत तेहिकाल।गदगद तनु पुलक भयो विरहाको शूल गयो कृष्णदरश अतुर अति प्रेमके वेहाल॥ रथ ज्योंज्यों निकट भयो मुकुट पीत वसन नयो मनमें कछु सोच भयो श्याम किधौं कोउ।सूरज प्रभु आवतहैं हलधरको नहीं लखत झंखति कहति तो होते संग वीर दोउ॥५६॥ राग आसावरी॥ आजु कोइ श्यामकी अनुहारी।आवत उत उमँगि सुनि सबही देखिरूपकी वारी॥इंद्रधनुषसे उर धनमाला चितवत चित्त हरैं।मनो हलधर अग्रज मोहनके श्रवणन शब्द परैं॥ गईं चलि निकट न देखे मोहन प्राण किए बलिहारी। सूर सकल गुण सुमिरि श्यामके विकल भईं ब्रजनारी॥५७॥ राग बिलावल॥ कोउ माई आवतहै तनुश्याम।वैसे पट वैसइ रथबैठनि वै भूषण वै दाम॥ जो जैसे तैसे उठिधाईं छाँडि सकल गृहकाम।पुलक रोम गद्गद तेही छिन शोभित अँग अभिराम। इतने बीच आइगए ऊधो रही ठगी सब वाम॥ ज्यों निधि पाइ गँवाइ हाथते भईं व्याकुल तनुताम।सूरदास प्रभु कत आवतहैं बसे कूबरीधाम॥५८॥उमँगि ब्रज देखनको सब धाए। एकहि एक परस्पर बूझति मोहन दूलह आए॥ सोई ध्वजा पताका सोई जा रथ चढि ता दिवस सिधाए। श्रुति कुंडल अरु पीत वसन सब वैसोइ साज बनाए॥ जाइ निकट पहिचान्यो ऊधो नयन जलज जलछाए। सूर श्याम मिटी दरशनआशा नूतन विरह जगाए॥५९॥ जबहिं कह्यो ए श्याम नही। परीं मुरछि धरणी ब्रजबाला जो जहां रहीं सु तहीं॥ सपनेकी रजधानी ह्वैगई जो जागी कछु नाहीं। बारबार रथ ओर निहारहिं श्याम बिना अकुलाहीं॥कहा आय करिहैं ब्रज मोहन मिली कूबरी नारी।सूर कहत सब ऊधो आए गई श्यामशर मारी॥६०॥राग रामकली॥तरुणी गई सब बिलखाइ। जबहिं आए सुने ऊधो अतिहि गई झुराइ॥परी व्याकुल जहाँ यशुमति गईं तहँ सब धाइ। नीर नयनन बहत धारा लईं पोंछि उठाइ॥ एक भईं अब चलो मारग सखा पठयो श्याम। सुनो हरिकुशलात ल्यायो महरिसों कहैं बाम॥ जबहिंलौं रथ निकट आयो तबहुँते परतीति। वह मुकुट कुंडल पितांबर सूर प्रभुअँगरीति॥६१॥राग बिलावल॥ भली भई हरि सुरति करी। उठो महरि कुशलात बूझिये आनँद उमँगि भरी॥ भुजा गहे गोपी परबोधत मानहु सुफल घरी। पाती लिखि कछु श्याम पठायो यह सुनि मनहिं ढरी॥ निकट उपंगसुत आइ तुलने मानो रूप हरी।सूर श्यामको सखा इहै री श्रवणन सुनी परी॥६२॥धुर्न धनाश्री॥ निरखति ऊधो सुख पायो। सुंदर सुजन सुवंश देखियत याते श्याम पठायो॥ नीके हरि संदेश कहैगो श्रवण सुनत सुख पैहैं। यह जानति हरि तुरत आयहैं ए कहि हृदय सिरैहैं॥ घेरि लिए रथ पास चहूंघा नंद गोप ब्रजनारी। महर लिवायगए निजमंदिर हरषित लियो उतारी॥ अरघु देत भीतर तेहि लीन्हों धनिधनि दिन कहि आजु।धनिधनि सुर उपंगसुत आए मुदित कहत ब्रजराजु॥६३॥ अथ नंदवचनउद्धवप्रति राग मलार॥ कबहिं सुधि करत गोपाल हमारी। पूंछत नंद पिता ऊधोसों अरु यशुदा महतारी॥बहुतै चूकपरी अनजानत कहा अबके पछिताने।वासुदेव घरभीतर आए मैं अहीरके जाने॥पहिले गर्ग कह्यो हुतो हमसों संग देत गयो भूली।सूरदास स्वामीके बिछुरे राति दिवस

खिलौना मेरो ॥ जादिनतेतुमसोंबिछुरे हम कोउ नकहत कन्हैया। भोरहिनाहिंकलेऊकीनो सांझ न पयपियोधैया ॥ कहत न बन्यो सँदेशोमोपे जननि जितो दुख पायो। अवहमसोंवसुदेवदेवकी कहत आपनो जायो ॥ कहिए कहा नंदवावासों वहुत निठुर मन कीनों। सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी बहुरो शोधनलीनों॥६५॥ पुनःनंदवचन ॥ राग सारंग ॥ हमतेकछुसेवा नभई। धोखेधोखे रहे धोखही जाने नाहिं त्रिलोकमई ॥ चरण पकरि करि विनती करिबो सब अपराध क्षमा कीवे। ऐसो भाग होइगो कबहूँ श्याम गोदमें लीवे॥ कहें नंद आगे ऊधोके एकवेर दरशन दीबे। सूरदास स्वामीमिलि अवकेसबैदोपगतकीवे॥६६॥अथ सखावचन ॥ राग बिलावल ॥भलीवातसुनियतहेआज। कोऊ कमलनयन पठयो हैंतन बनए अपनोसो साज॥ पूँछत सखा कहो केसे हैं अब नाहीं कछु करते लाज। कंस मारि वसुदेवगृह आए उग्रसेनको दीन्हों राज ॥ राजा भए ज्ञानही भयो सुख सुरभी सँग वन गोप समाज॥ अव सुन सूर करें को कौतुक व्रजमें नाहिं बसत व्रजराज॥६७॥ ॥ अथ व्रजनरनारीवाक्य ॥ राग सारंग ॥ वैसोइ रथ वैसोइ सब साज। मानहुँ बहुरि विचारि कछू मन सुफलकसुत आयो व्रज आज ॥ पहिलेइ गमन गयो ले हरिको परम सुमति राथो रतिराज। अजहुँ कहा कीयो चाहतहै याते अधिक कंसको काज ॥व्याध जो मृगन वधत सुन सजनी सो शर काढि संग नहिं लेत। यह अक्रूर कठिन कीनो इहि ये इतनो दुख देत ॥ ऐसे वचन बहुत विधि कहिकहि लोचन भरि सींचत उरगात । सूरदासप्रभु अवधिजानिकेचलीं सबैपूँछन कुश-लात॥६८॥राग रामकली ॥व्रजघरघरसवहोतवधाए कंचनकलश दूब दधि रोचन महरिमहरवृंदावन आए ॥ मिलि व्रजनारि तिलक शिर कीनो करि प्रदक्षिणा पास।पूँछत कुशल नारि नर हरषत आए सब व्रजवास ॥ सकसकात तन धकधकात उर अकवकात सब ठाढे। सूर उपंगसुत बोलत नाहीं अतिहिरदे ह्वै गाढे ॥ ६९॥सखीवचन गोपीप्रति राग धनाश्री॥आजु व्रजकोऊआयोहै।कैधौंबहुरि अक्रूर क्रूर है जियत जानि उठिधायो है।।मैं देख्यो ताको रथ ठाढो तुम सखी शोधन पायो है। कैकरि कृपा दुखित जानिके हरिसँदेश पठायो है॥चलीं मिलि सिमिटि सखी पूछनकोऊधोदरश दिखायो है । तब पहिंचानि सबै प्रभुको भृत करन जोरिशिरनायोहै॥हरिहैंकुशलकुशलहोतुमहूं कुशल लोग जेहि भायो है । है वह नगर कुशल सूरज प्रभु करि सुदृष्टि जहां छायो है॥ ७० ॥ ॥ राग धनश्री ॥ देख्यो नंदद्वार रथ ठाढो। बहुरि सखी सुफलकसुत आयो पर्यो सँदेह जिय गाढो ॥ प्राण हमारे तबहिं गयो ले अब किहि कारण आयो।मैं जानी यह वात सत्य कै कृपा करन उठि धायो ॥ इतने अंतर आनि उपंगसुत तिहि क्षण दरशन दीन्हो। तब पहिचानि जानि प्रभुको भृतु परम सुचित मन कीन्हों ॥ तब परणाम कियोअतिरुचिसोंअरु सबही करजोरे।सुनियत हुते तैसई देखे सुंदर सुमति सु भोरे ॥ तुम्हरो दरशन पाइ आपनो जन्म सुफल करि मान्यो। सूरज ऊधो मिलत भए सुख ज्यों खग पायोपान्यो॥७१॥रागधनाश्री॥ बोलक इनहूको सुनि लीजे। कैसी उठनि उठे धौं ऊधो तैसे उत्तर कीजे॥ यामेंकछू खरचियतु नाहीं अपनो मतो न दीजे। कहि री सखी भागिए किहि डर चलहु जाइमुखछीजे ॥द्वैकरजोरि भई सन्मुख ठाढी वचन कहो त्यों जीजे। सूर सुमति सोई दीजे हरि वदन ॥७२॥ राग नट ॥ ऊधो कहो हरिकुशलात। । कहो आवन किधौं नाहीं सुख वात॥ एक छिन युग जात हमको बिन सुने हरिप्रीति। आइ आपे कृपा कछु नीति ॥ तब उपंगसुत सबनि बोले सुनो श्रीमुख योग। सूर सुनिसब

दीनोलोग॥७३॥ अथ उद्धववचन॥ राग सारंग॥गोपीसुनहुहरिकुशलात।कंसनृपकोमारिछोरयोआपनो पितु मात ॥ बहुत विधि व्यवहार करि दियो उग्रसेनहि राज । नगर लोग सुखी बसतहैं भए सुरनके काज ॥इहै पाती लिखी अरु मुख कह्यो कछु संदेश । सूरनिर्गुण ब्रह्म धरिके तजहु सकल अँदेश ॥ ७४ ॥ राग केदारो ॥ गोपीसुनहुहरिसंदेश।गए संग अक्रूर मधुवन हत्यो कंस नरेश॥रजक मारयो बसन पहिरे धनुष तोरे जाइ । कुवल्या चाणूरमुष्टिक दये धरणि गिराइ॥मातपितुके बंदि छोरे वासुदेवकुमार।राज्य दीन्हों उग्रसेनहि चमर निजकर ढार ॥ कह्यो तुमको ब्रह्म ध्यावो छाँडि विषै विकार।सूर पातीदई लिखिमोहि पढौगोपकुमार॥७५॥अथ पातीवाचनअवस्था।राग सारंग॥ पाती मधुवनहीते आई । सुंदर श्याम कान्ह लिखि पठई आइ सुनो री माई॥ अपने अपने गृहते दौरीं लै पाती उर लाई। नैननिरखि निमेष न खंडितप्रेमव्यथा न बुझाई ॥ कहा करौं सूनो यहगोकुल हरिबिन कछु न सोहाई ।सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरति बिसराई ॥ ७६ ॥ निरखत अंक श्याम सुंदरके बारबार लावत लै छाती । लोचनजल कागजमसि मिलिकरि ह्वैगइ श्याम श्यामजूकी पाती ॥ गोकुल बसत नंदनंदनके कबहुँ बयारि न लागी ताती। अरुहम उती कहा कहैं ऊधो जब सुनि वेणुनाद सँग जाती॥ प्रभुके लाड बदति नहिं काहू निशिदिन रसिक रास रस राती । प्राणनाथ तुम कबहुँ मिलहुगे सूरदास प्रभु बालसँघाती॥ ७७ ॥ पाती मधुवनते आई । ऊधो हरिके परमसनेही ताके हाथ पठाई ॥कोउ पूछत फिरिफिरि ऊधोको आपुन लिखी कन्हाई। बहुरो दईफेरि ऊधोकोतब उन बाँचि सुनाई॥ मनमें ध्यान हमारो राखो सूरदास सुखदाई॥ ७८ ॥राग मारू॥ लिखिआईब्रजनाथकीछाप। ऊधोबाँधेफिरतशीशपरदेखेआवैताप॥ उलटी रीति नंदनंदनकी घरि घरि भयो संताप । कहियो जाययोग आराधं अविगतअकथ अमाप। हरिआगे कुविजा अधिकारिनि को जीवे इहि दाप । सूर सँदेश सुनावनलागेकहौ कौनयहपाप ॥७९॥ राग मलार ॥ कोउब्रज बाँचतनाहिंनपाती। कतलिखिलिखिपठवतनँदनंदनकठिनबिरहकी कांती ॥ नैनसजलकागज अति कोमल कर अँगुरी अतिताती ।परसेजरैविलोकेभीजे दुहू भाँति दुख भाती ॥ क्यों ए बचन सु अंक सूर सुनि बिरह मदन शर घाती । मृदु मुख बचन बिना सींचे अब जिवहिं प्रेमरस माती॥काहेको लिखि पठवत कागर। मदनगोपाल प्रगटदरशनबिनु क्यों राखहिं मन नागर ॥ ऊधो योग कहा लै कीबो बिनु जल सूखो सागर॥कहियौ मधुप संदेश सुचितदै मधुवन श्यामउजागर।सूरश्यामबिनु क्यों मन राखौ तन योवनके आगर॥८०॥ राग धनाश्री॥ऊधो कहा करें लै पाती। जब नहिं देख्यो गुपाललालको बिरह जरावत छाती॥ जानतिहौं तुम मानति नाहीं तुमहू श्यामसँघाती । निमिष २ मो बिसरत नाहीं शरद सुहाई राती ॥ यह पाती लैजाहु मधुपुरी जहं बसें श्याम सुजाती । मनजु हमारे उहांलैगए काम कठिन शरघाती ॥ सूरदास प्रभु कहा चलतहै कोटिक बात सुहाती। एकबेर मुख बहुरि दिखावहु रहैं चरणरज राती ॥८१॥राग मलार॥ सँदेशन मधुवन कूप भरे । अपने तौ पठवत नँदनंदन हमरे फिरि न फिरे । जेइ जेइ पथिक दुते ब्रजपुरके बहुरि न शोध करे । कै वह श्याम सिखाय प्रबोधे कै वह बीच बरे ॥ कागज गरे मेघ मसि खूटी शरदौ लागि जरे। सेवक सूरलिखेतेआधो पलक कपाट खरे ॥८२॥राग मलार॥ आए नंदनँदनके भेव । गोकुलमांझ योग बिस्तारयो भली तुम्हारी जेव॥ जब वृंदावन रास रच्यो हरि तबहिं कहां तुमहेव । अब यह ज्ञान सिखावन आए भस्म अधारी सेव॥अबलनको लैसोव्रतठान्यो जोयोगिनिको योग।सूरदास ए सुनतनजीवहिं

आतुर विरह वियोग॥८३॥राग सारंग॥यहि अंतर मधुकर इक आयो।निजस्वभाव अनुसार निकट होइ सुंदर शब्द सुनायो॥पूँछन लागीं ताहि गोपिका कुविजा तोहिं पठायो । कीधौं सूर श्याम-सुंदरको हमैं सँदेशो ल्यायो॥८४॥राग मलार॥मधुकरकहायहांनिर्गुणगावहि।ए प्रियकथानगरनारि-नसों कहहि जहाँ कछु पावहि॥जिनि परसहि अव चरन हमारे विरहताप उपजावहि। सुंदर मधु आनन अनुरागी नैनन आनि मिलावहि॥जानति मर्म नंदनंदनकोऔरप्रसंग चलावहि।हमनाहिंन कमलासी भोरी करि चातुरी मनावहिं ॥ अतिविचित्र लरिकाकी नाईंगुर देखाइबौरावहिं । ज्यों अलि कितव सुमन रसलै तजि जाइ वहुरि नहिं आवहि॥नागर रतिपति सूरदास प्रभु किहि विधि आनि मिलावहि॥८५॥राग बिलावल॥मधुप तुम कहाँ कहांते आए हो।जानतिहैं अनुमान आपने तुम यदुनाथ पठाये हो॥वैसहि वरनबसन तनु वैसेवैभूपणसजिलाएहो।लै सरवसु संगश्यामसिधारेअव कापर पहिराए हो॥अहोमधुप एकै मन सवको सुतौ उहाँ लैछाए हो।अव यह कौन सयानवहुरिब्रज जाकारण उठि आए हो ॥ मधुवनकी मानिनी मनोहरतहीं जाहु जहाँ भाएहो।सूर जहांलौं श्याम गात हौ जानि भले करि पाये हो॥८६॥राग गौरी॥मधुकर जो हरि कहोसो कहिए।तवहम अवहन-हींकी दासी मौन गहे क्यों रहिए॥जो तुम योग सिखावन आए निर्गुण क्यों करि गहिए। जो कछुलिखो सोइ माथेपर आनिपरे सव सहिए ॥ सुंदर रूप लाल गिरिधरको विनु देखे क्यौं लहिए । सूरदास प्रभु समुझि एकरसअव कैसे निरवहिए॥८७॥ऊधो वचन राग धनाश्री॥ सुनहु गोपी हरिको संदेश । करि समाधि अंतर्गति ध्यावहु यह उनको उपदेश ॥ वे अविगत अविनाशीपूरण सब घट रहे समाइ । निर्गुणज्ञान विनु मुक्ति नहीं है वेद पुराणन गाइ ॥ सगुण रूप तजि निर्गुण ध्यावो इकचित इक मन लाइ । यह उपाव करि विरह तरौ तुम मिलै ब्रह्म तव आइ ॥ दुसह सँदेश सुनत माधोको गोपीजनबिलखानी।सूरविरहकी कौनचलावै बुडतमीनविनपानी ॥८८॥ ॥गोपीवचन ॥ राग मलार ॥मधुकर हमहीं क्यों समुझावत। वारंवार ज्ञान गीता ब्रज अवलनि आगे गावत॥नँदनंदन विनु कपटकथा ए कत कहि रुचि उपजावत । स्रक चंदन जो अंग क्षुधारत कहि कैसे सुख पावत ॥ देखि विचार तहीं जिय अपने नागर हौ जु कहावत। सब सुमननपर फिरत निरखिकरि काहे कमल वँधावत ॥ चरणकमल कर नयनकमल कर वदन कमल वर भावत।सूरदासमनुअलिअनुरागीकेहि विधिहौंवहरावत॥८९॥राग मलार॥ रहुरहुमधुकर मधुमतवारे। कौन काज या निर्गुणसों चिरजीवहु कान्ह हमारे ॥ लोटत पीत पराग कीचमें नीच न अंग सम्हारे । वारंवार सरक मदिराकी अपसर रटत उघारे ॥ द्रुमवेली हमहूं जानतहौ जिनके हौ अलि प्यारे । एक बास लैकै बिरमावत जेते आवत कारे ॥ सुंदर वदन कमलदल लोचन यशु-मति नंद दुलारे। तन मन सूर अर्पिरही श्यामहिं कापै लेहिंउधारे॥९०॥मधुकर कौनदेशते आए। व्रजवाते अक्रूर गए लै मोहन तातेभए पराए ॥ जानी सखा श्यामसुंदरके अवधि वन्धन उठि धाए । अंगविभाग नंदनंदनके यह स्वामित हैं पाए॥ आसन ध्यान वाइ आराधन अलि मन चित तुम ताए।अतिहि विचित्र सुबुद्धि सुलक्षण गुंजयोग मति गाए॥मुद्रा भस्म त्रिपान त्व[illegible] मृग ब्रजयुवतिन मनभाए। अतसीकुसुम वरन मुरलीमुखसूरज प्रभु किन ल्याए॥९१॥ मधुक[illegible] काके मीत भए । त्यागे फिरत सकल कुसुमावलि मालति भोरै लए ॥ छिवुके बिछुरे रति मानी केतकि कत विधए । छांडन नेहु नाहिं मैं जान्यो लै गुण प्रगट नए॥ [illegible] तमाल बकुल वट परसत जनम गए । भुजभरि मिलनि उडत उदास है मन

समए ॥ भटकतफिरत पात द्रुम वेलिन कुसुम करंज भए॥सूर विमुख पदअंबुज छाडे विषयनिविष वर छए ॥९२॥राग जैतश्री॥मधुकर काके मीत भए । दिवस चारि करि प्रीति सगाई रसलै अनत गए ॥ डहकत फिरत आपने स्वारथ पाखंड अग्र दए ॥ चाँडसरे पहिचानत नाहिन प्रीतम करत नए॥मुंडइ वाँटि मेलि वौराए मन हरि हरि जु लए । सूरदास मधु दूत धर्म ढिग दुखके बीज वए ॥ ९३ ॥राग सारंग॥मधुकर हम न होहिं वे वेली । जिनभजि तजि तुम फिरत और रँग करत कुसुमरत केली ॥ वारेते वर वारि वढी हैं अरु पोपी पिय पानि । विनु पिय परस प्रात उठि फूलत होतिसदा हितहानि ॥ ए वेली विरहा वृंदावन उरझी श्याम तमाल । पुहुपवास रसरसिक हमारे विलसत मधुप गोपाल ॥ योग समीर धीर नहिं डोलत रूप डार ढिगलागी । सूर पारीगनि तजति हिएते श्रीगुपाल अनुरागी ॥ ९४ ॥मधुकर कहाँ पढी यह रीति । लोक वेद श्रुतिपंथ रहित सब कथा कहति विपरीति ॥जन्मभूमि व्रज सखी राधिका कहि अपराध तजी। अतिकुलीन गुणरूपअमित सुख दामी जाइ भजी ॥ योग समाधि वेद गुण मारग क्यों समुझे जु गँवारि । जो पै गुण अतीत व्यापकहै तोहि कहाहै प्यारि॥ रहि अलि ढीठ कपट स्वारथहित तजिवहुवचन विशेषि॥मन क्रम वचन वचति यहि नाते सूर श्यामतन देखि॥९५॥राग मलार॥ मधुकर काहेको गोकुल आए॥हमवे-सीही सब अपनेमें दूने विरह जगाए॥हम जानतिहैं जिनहि पठाए श्याम सँदेशो ल्याए । जन्म जन्मके दूत तिरोवन को नहि लार लगाए॥ कहा करहिंकिहाँ जाहिं सखी री हरिविनु कछु नसो-हाए॥जन्म सुफलसूरज तिनको जो काज पराए धाए॥९६॥राग मलार॥आए माई दुंग श्यामके संगी। जे पहिले रँग रंगे श्यामरँग तिनहीकी वुधिरंगी ॥ हमरी उनकीसी मिलवतहो ताते भएविहंगी। सूधी कहे सवन समुझावत ते सांचे सरवगी ॥ औरनको सरवसु लै मारत आपुन भए अभंगी। सूर सु नाम शिलीमुख पीवें जे घनकवचउपंगी॥९७॥ सखीवाक्य परस्पर॥राग मलार॥हेकोऊमधुवन-ते आयो । सुनो सुमति सब सखी सयानी हितकरि कान्ह पठायो ॥ जामोहनविछुरननेगोकुल इते दिवस दुख पायो॥सो इहि,कमलनैन करुणामय हृदही माँझ वतायो॥ जो जहँ योगी जतन करतहें नेकहु ध्यान न आयो । सो यह परमउदार मधुपव्रजवीथिन माँझ वहायो॥ अतिकृपालु आतुर अवलनिको व्यापक अंग गहायो । समुझिसूर सुख होतश्रवणसुनिनेति जुनिगमन गायो ॥९८॥राग सारंग॥परी पुकार द्वार गृहगृहते सुनहुसखी इक योगीआयो। पवनसधावनभवन छो-डावन नवल रिसाल गोपाल पठायो॥आशा अवधि परमऊरध जो तिनहिंकहा हितल्यायो॥कनक वेलि कामिनि व्रजवाला योगअगिन देवेको धायो॥भवभयहरन असुर मारन हित कालमधुपुरी आयो ॥ व्रजमें यादव एको नाहीं काहेको उलटो सुयश हरायो ॥ सुथल श्यामधाममेंवैठो मृत अधिकार जनायो । सूरविसारीप्रीतिसाँवरेभलीचतुरता जगतहँसायो॥९९॥राग सारंग॥दैवे आए ऊधो मत नीको॥आयोरी मिलिसुनहु सयानीलिएसुयशकोटीको॥तजन कहत अंवर आभूपण गेह नेह सुतहीको । अग भस्म करि शीश जटाधरि सिखवत निर्गुण फीको॥ मेरेजानइहैयुवति-नको देत फिरत दुख पीको । ता शरापते भए श्याम तन तउ न गहत डरजीको ॥जाकी प्रकृति परी जिय जैसी सोचनभली वुरीको॥जौलगि सूरव्यालडसिभाजेसुखनहिंहोतअमीको॥४३००॥ ॥राग नट॥ ऊधो तनक सुयश हरिको श्रवणन सुनि । कंचन काँच कपूरकररस समदुख सुख गुण औगुन॥नामउनकोसुनिगृह कुटुंब तजि जाइ वसतपरकानन॥परमहस विहंग देखतहिआवत भिक्षा माँगन ॥ वालकपनको राउ संहारयोलोकलाजडर डारी । शूर्पनखाकीनाकनिवारयो त्रियवश

भए मुरारी ॥ वलिको बाँधि पताल पठायो कीन्हें यज्ञनि आई।सूरप्रीतिजानीतेहरिकी कथातजा नहिं जाई ॥१॥ राग सोरठ ॥ ऊधो श्यामसखा तुम साँचे। कीकरिलियोस्वांगवीचहितेंवैसेहिलागत कांचे॥जैसीकहीहमहिंआवतहीऔरनकहिपछिताते। अपनोपतितजिऔरवतावतमोहिंमानि कछुखाते। तुरत गमनकीजैम वनकोइहां कहांमहल्याए।सूरसुनतगोपिनकीवाणीऊधोशीशनवाए ॥२॥ राग नट ॥ऊधो वेगि मधुवन जाहु।हम विरहिनी नारिहरिविनु कौनकरैनिवाहु ॥ तहींदीजै मुरपरैना नफो तुम कछुखाहु। जोनहींव्रजमेंविकानो नगरनारीसाहु॥ सूरवेसवसुनतलेहैंजिय कहा पछिताहु ॥३॥ राग धनाश्री॥ऊधोऔरकछूकहिवेको। मनमानैसोऊकहिडारोपालागैंहमसुनिसहिवेको॥ यह उपदेश आजुलौं ऐसो काननसुन्योनदेख्यो। निरपतपटेकटुकअतिजीरनचाहतमहि उर लेख्यो ॥ निशिदिन वसत नेक नहिं निकसत हृदय मनोहर ऐन।याको इहां ठौर नाहिंन है लै राखो जहां चैन॥व्रजवासी गोपालउपासी हमसों वातें छाँडि। सूर योगधन राखुमधुपुरी कुविजाके घर गाडि॥४॥ राग नट॥जाहुजाहुऊधो जाने हो पहिचानेहो।जैसे हरि तैसे तुमसेवक कपटचतुरई साने हो ॥ निर्गुण ज्ञान कहां तुम पायो कौने सिखे व्रज आने हो। यह उपदेश देहु लैकुविजहि जाके रूप लुभाने हो॥कहांलगि कहौं योगकीवातें बाँचत नैन पिराने हो ।सूरदास प्रभुहम पर खोटी तुमतौ वारहवाने हो ॥५॥ राग गौरी ॥ ऊधोजाहु तुमहिंहमजाने।श्यामतुमहिंह्यांकोनहिं पठए तुम हो वीच भुलाने ॥व्रजनारिनसों योग कहतहौ वात कहत न लजाने। वडेलोग न विवेक तुम्हारे ऐसे भए अयाने ॥ हमसों कही लई हम सहिकै जिय गुणिलेहु सयाने। कहां अवला कहां दिशा दिगंवर मष्ट करो पहिचाने ॥ साँच कहौ तुमको अपनी सौं वूझति वात निदाने। सूर श्याम जव तुमहिं पठायो तव नेकहु मुसकाने ॥ ६ ॥ राग गौरी ॥ कहति कहा ऊधोसों तुम वौरी। जाको सुनत रहे हरिके ढिग श्यामसखा यह सोरी॥कहति कहा री मैं पत्याति नहिं तूही कहा वनावति। हमको योग सिखावन आए यह तेरे मन आवति ॥ करनी भली भलेई जानैं कुटिल कपटकी वानी।हरिको सिखाव नहीं री माई इह मन निहचैजानी॥कहां शशिमुखरस कहाँ योगघर इतने अंतर भाषत।सूर सबै तुम भई वावरी याकीपतिकहाराखत॥७॥ राग कान्हरो॥ऐसेहीजन धूत कहावत।मोको एकअचंभो आवत यामें वे कछु पावत ॥ वचन कठोर कहत कहि दाहत अपनो महत गवाँवत। ऐसिउ प्रकृति परी कान्हाको युवतिनज्ञान वतावत ॥ आपुन निलज रहत नख शिखलौं एतेपर पुनि गावत। सूर करत परशंसा अपनी हारेहु जीति कहावत॥८॥ राग मलार॥ऐसे जन वेशरम कहावत। सोच विचार कहूँ इनके नहिं कहि डारत जो आवत ॥ अहिके गुण इनमें परिपूरण यामें कछू न पावत । लघुता लहत महति करि यों हँसि नारिन योग वतावत॥व्रजमें हीन भए अव जेहे अनतहु ऐसेहि गावत॥९॥ राग कान्हरो॥प्रकृतिजो जाके अंग परी। श्वान पूँछको कोटिक लागे सुधी कहुँ नकरी॥जैसे सुभख नहीं भखछाँडेजन्मत जौन घरी। धोए रंग जात नहिं कैसेहु ज्यों कारी कमरी ॥ ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसीधरनिधरी।सूरहोइसो होइ सोचनहिं तैसेहैं एऊरी॥१०॥ राग सारंग॥ऊधो होहुआगेतेन्यारे। तुमहि देखि तन अधिक जरतहै अरु नैननके तारे ॥ अपनो योग सैंति धरि राखो यहां देत कत डारे। सो को जानत अपने मुख हैं मीठे ते फल खारे ॥ हमरे गिरिधरके जु नाम गुण वसे कान्ह उरवारे। सूरदास हम सवे एकमतए सव खोटे कारे॥११॥ राग कल्याण॥जाहुजाहुआगेते ऊधो पति राखतिहौं तेरी। काहेको अवरोप दिखावत देखति आँखि वरतहै मेरी ॥ तुम जो

कहतहो संत हैं गोविंद कहियत है कुबिजा उन चेरी। दोऊ मिले तैसेई तैसे वह अहीर वे कंसकी चेरी ॥ तुम सारिखे वसीठि पठाए कहिये कहा बुद्धि उनकेरी। सूर श्याम वह सुधि विसराई गावत हे ग्वालन संग हेरी॥ १२॥ राग सारंग ॥ समुझिन परत तुम्हारी ऊधो। ज्यों त्रिदोषउपजेजक लागन बोलति वचन न सूधो॥ आपुनको उपचार करौ कछु तब औरन शिख देहु। बडो रोगउपज्यो है तुमको भौन सवारे लेहु ॥ वहां भेषज नाना विधिको अरु मधुरिपुसे हैं वैद। हम कातर डरपत अपने शिर यह कलंक है केद॥ सांची बात छोंडि कत झूठी कहो कौनविधिसुनहीं। सूरदास मुकुताहलभोगी हंस ज्वारि क्यों चुनहीं॥ १३॥ राग सोरठ ॥ हमअलिगोकुलनाथअराध्यो। मन वच क्रम हरिसो धरि पतिव्रत प्रेमयोग तप साध्यो ॥ मात पिता हित प्रीति निगम पथ तजि दुख सुख भ्रम नास्यो। मानापमान परम परितोषन सुस्थल थिति मन राख्यो ॥ सकुचासन कुल शील करषि करि जगत वद्य कर वंदन। मौनऽपवाद पवन आरोधन हित क्रम काम निकंदन ॥ गुरुजन कानि अग्नि चहुं दिशि नभ तरनि ताप विनु देखे। पिवत धूम उपहास जहां तहं अपयश श्रवण अलेखे ॥ सहज समाधि विसारि वपु करी निरखि निमिष न लागत। परमज्योति प्रतिअंग माधुरी धरत इहै निशि जागत ॥ त्रिकुटी संगभ्रूभंगतराटकनैन नैन लगि लागे। हँसनि प्रकाश सुमुख कुंडलमिलिचंद्रसूरअनुरागे॥ मुरलीअधरश्रवणध्वनिसो सुनि शब्दऽनहद करि काने। वरषत रस रुचि वचन संग सुखपद आनंद समाने ॥ मंत्रदियो मनजात भजन लगि ज्ञान ध्यान हरिहीको। सूर कहौगुरुकौनकरैअलिकौनसुनैमतफीको॥ १४॥ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो हम आजु भई बडभागी। जिन अँखियनतुम श्याम बिलोकेतेअँखियँहम लागी ॥ जैसे सुमन वास लेआवत पवन मधुप अनुरागी। अति आनंद होतहै तैसे अंगअंग सुखरागी। ज्यों दर्पणमें दरशन देखत दृष्टि परमरुचिलागी॥ तैसे सूर मिले हरि हमको विरह व्यथा तनु त्यागी॥ १५॥ राग सारंग॥ विलगजिनि मानोहमारी बात। डरपत वचनकठोरकहतमतिविनु पानी रहिजात॥ जो कोउ कहै जरे कछु अपने फिरिपाछे पछितात। जोप्रसाद तुम पावत ऊधो कृष्णनाम लै खात ॥ मन जो तिहारो हरिचरननतर चलतरहतदिनरात। सूर श्यामते योगअधिकहै कासो कहिआवै यह बात॥ १६॥ राग सारंग॥ अलिहो कैसे करि कहौहरिके रूपके रसहि। अपनेतनमें भेद बहुत विधि रसना न जानै इन नैनकेदशहि॥ बारवार पछताति इहै कहि कहा करों जो विधि नरसहि॥ विनुवाणी ए उमँगि सजल होइ सुमिरिसुमिरि वा सगुणयशहि। जेदेखत ते वचनरहित जिनहिंवचनतेदरशनदेखहि। सूरसकलअंगनकीइहगतिक्योसमुझावैंषटपद पेखहि॥ १७ राग सारंग। सुको जेहि नाहिन सचुपायो बल गोपालके राज। ऊधो इहै सम्पदा हरिकी आवै सबके काज॥ धनुष तोरि गजमारि मल्ल मथि किए निडर यदुवश। इन औरन अमरन सुख दीनो करषि केश शिरकंस॥ कुबिजहि रूप दियो यदुनंदन मालीको हितकाम। उग्रसेनवसुदेव देवकी आने अपने धाम ॥ दीनदयालु दयानिधि मोहन हैं हमरे इह आश। सूर श्यामहरिहैं जु कृपाकरि इननैननकी [illegible] बिछुरतहम कितेसहेहैंजिते विरहकेघाऊ॥ [illegible] भु गोपवेष व्रज धरिके कत ए सुख उपजाए॥ कत गिरि धरयो इंद्रमद मेट्यो कत बन रास बनाए। अब कहा निठुर भए अबलनिको लिखिलिखि योग पठाए ॥ तुम परवीन सबै जानतहौ ताते इह कहि आई॥ अपनी को चालै सुनि सूरज पिता जननि बिसराई॥ १९॥ उद्धववचन ॥ राग धनाश्री॥ जानिकरि बावरी जिनि होहु तत्त्व

भजे ऐसी ह्वैजैहौ ज्यों पारस परसे लोहु ॥ मेरो वचन सत्य करि मानहु छाँडो सबको मोहु ।जौ लगि सब पानी कीचु परी तौलगि अस्तुति होहु ॥अरे मधुप बातैं ए ऐसी क्योंकहिआवततोहि। सूरसुबस्तुहिछाँडिअभागेहमहिंबतावतखोहि॥२०॥ गोपी वचन ॥ राग सारंग॥कहिवे जीयनकछुश-क राखौ। लावा मेलिदए हैं तुमको बकत रहौ दिन आखौ ॥ जाकी बात कही तुम हमसों सो धौं कहौ को कांधी।तेरो कहो सो पवन भूस भयो वहो जात ज्यों आंधी॥ कत श्रम करत सुनत को इहां है होत जो बनको रोयो। सूर इतेपर समुझत नाहीं निपट दईको खोयो॥२१॥॥राग सारंग॥ मधुकर भली सुमति मति खोई । हाँसी होन लगी है व्रजमें योगहि राखहु गोई ॥ आतमब्रह्म लखावत डोलत घटघट व्यापक जोई। चापे काँख फिरत निर्गुण गुण,इहां गाहक नहिं कोई ॥ प्रेमकथा सोई पै जानै जामें बीती होई । अति रस एतो कहा कोइ जानै बूझि देखावै ओई॥बडो दूत तू बडी उमरको बडिए बुद्धि बडोई। सूरदासपूरोदैपटपदकहतफिरतहौसोई ॥२२॥राग धनाश्री॥ मधुप कहि जानत नाहिंन बात। फूंकिफूंकि हियरो सुल्गावत उठि किन यहांतेजात॥जेहिउरबसत यशोदानंदन तेहि निर्गुण क्यों समात। कत डोलतभटकत पुहुपनको पान करत किनपात॥यद्य-पि बहु बेली बन बिहरत बसत जाइ जलजात ।सूरदास अब मिलबनआए मौन किए कुशलात ॥२३॥ मधुकर छाँड अटपटी बातैं । फिरिफिरि बारबार सोइ सिखवत हमदुखपावत जातैं ॥हम दिन देत अशीश प्रात उठि बार खसो मत न्हातैं। तुम निशिदिन उरअंतर सोचत व्रजयुवति-नकी घातैं॥पुनिपुनि तुमहिं कहत कत आवै कछुक सकुचहे नातै । सूरजदास श्याम रँग राचेफिरि न चढै रँगरातै ॥२४॥ राग मलार ॥क्यों मन मानतहै इन बातन।पाये जानि सकल सुनि मधुकरजे गुण साँवरे गातन ॥प्रथम प्रेम निशिहू न तजत अब सकुचतहै जलजातनि । निरस जानि निकटहु नहिं आवत देखि पुराने पातनि ॥ सुनियत कथा कान कोकिलकी कपट रंगकी रातनि । निशिदिन श्रम सेवा कराइ उठि अंत मिले पितु मातनि ॥ तब व्रज बसत वेणुरव ध्वनि करि बन बोली अधरातनि॥अति रतिलोभ तजत नहिं इक क्षण पठे सकत नहिं मातनि॥ बालि जीति जिन बलि बंधन किये लुब्धक कैसी हातनि । को पतियाइ सुधौ कहि सूरज संकर्षणके भ्रातनि ॥२५॥राग सारंग॥ उलटी रीति तिहारी ऊधो सुनै सु ऐसी को है। अल्पवयस अबला अहीरि शठ तिनहिं योग कत सोहै॥कचसुवि आँधरि काजर कानीनकटी पहिरे वेसरि।मुंडली पटिया पारि सँवारे कोढी लावै केसरि ॥ वहिरी पतिसों बात करै तौ तैसोई उत्तर पावै । सो गति होइ सबै ताकी जो ग्वारिनि योग सिखावै ॥ सिखई कहत श्यामकी बतियां तुमको नाहीं दोषु । राजकाज तुमते न सरैगो काया अपनी पोषु॥ जाते भूलि सबै मारगमें इहां आनि कहा कहते। भली भई सुधि रही सूर तौ मोह धारमें बहते ॥ २६ ॥राग सारंग॥राखो सब इह योग अटपटो ऊधो पाँइ परौं ।कहां रसरीति कहां तनु शोधन सुनिसुनि लाज मरौं ॥ चंदन छाँडि विभूति बतावत यह दुख क्यों न जरौं ।नासा कर गहि योग सिखावत बेसरिकहां धरौं ॥ सर्गुण रूप रहत उर अंतर निर्गुण कहा करौं । निशि दिन रटना रटत श्याम गुण का करि योग मरौं ॥ मुद्रा न्यास अंग अंग भूषण पतिव्रतते न टरौं।सूरदास याही व्रत मेरे हरि मिलि नहिं बिछुरौं॥२७॥ राग सारंग॥मधुकर हम अयान मति भोरी।जानैं तेइ योगकी बातैं जेहैं नवल किशोरी॥कंचनको मृग कवनै देख्यो किन बांध्यो गहि डोरी ।बिनही भीत चित्र किन कीनो किन नभ हठ करिबा-ल्यो झोरी ॥ कहिधौं मधुप बारि मथि माखन काढि जो भरो कमोरी। कहो कौनपै कढो जाइ

कन बहुत सरास पछोरी॥सबते ऊंचो ज्ञान तुम्हारो हम अहीरि मति थोरी । सूरज कृष्णचंद्रको चाहत अँखिआं तृपित चकोरी॥२८॥ अथ नेत्र अरदासवर्णन राग धनाश्री॥अँखियांहरिदरशनकीभूँखी। अब कैसे रहति श्यामरंग राती ए वातें सुनि रूखी ॥ अवधि गनत इकटक मगजोवत तबएइत्यो नहिं झूखी । इते मान इहियोग सँदेशन सुनि अकुलानी दूखी ॥ सूर सकत हठ नाव चलावत ए सरिता हैं सूखी।बारकवह मुख आनिदेखावहूदुहिपैपिवत पतूखी॥२९॥ राग धनाश्री॥ अँखियाँहरि दरशनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमलनैनको निशिदिन रहत उदासी ॥ आए ऊधो फिरिगए आँगन डारि गए गर फांसी । केसरिको तिलक मोतिनकीमाला वृंदावनकोवासी॥काहूकेमनकी कोउ न जानत लोगनके मनहाँसी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको जाइ करवट ल्यों कासी॥३०॥ राग धनाश्री ॥ नैनन उहै रूप जो देख्यो । तौ ऊधो यह जीवन जगको साँचहु सफलकरिलेख्यो॥ लोचन चपल चारु खंजन मनरंजन हृदय हमारे।सुरंग कमल मीन मनोहर श्वेत अरुनअरुकारे ॥ रत्न जडित कुंडल श्रवणन वर गंड कपोलनि झाई। मनु दिनकर प्रतिविंव मुकुरमहँ ढूंढत यह छवि पाई ॥ मुरली अधर विकट भौंहैं करि ठाढी होनि त्रिभंग। मुक्तमाल उर नील शिखरते धसी धरणि जनु गंग॥ और वेस को कहे वरणि सब अंगअंग केसरि खौर । देखे वने कहत रसना सों सूर विलोकत और ॥३१॥ राग धनाश्री ॥ नैननंदनंदनध्यान।तहांले उपदेशदीजेजहांनिर्गुणज्ञान॥ पानि पल्लव रेख गनि गुनि अवधि विविध विधान । एतेपर कहि कटुक वचनन हते जैसे प्रान॥ चंद्रकोटि प्रकाश मुख अवतंस कोटिक भान । कोटि मन्मथ वारि छविपर निरखि दीजत दान ॥ भ्रुकुटि कोटि कोदंड रुचि अवलोकननि संधान । कोटि वारिज वक्र नयन कटाक्ष कोटिक वान । मणि कंठहार उदार उर अतिशय वन्यो निर्मान । शंख चक्र गदा धरे कर पदुम सुधा निधान॥ श्याम तनु पट पीतकी छवि करै कौन वखान। मनहु नृत्यत नील घनमें तडित देती मान । रासरसिक गुपाल मिलि मधु अधर करती पान। सूर ऐसे श्याम विन को यहां रक्षक आन॥३२॥ राग गूजरी॥ऊधो इन नैनन नेम लियो।नदनंदनसों पतिव्रतारख्यो नाहिन दरश वियो ॥ चंद्र चकोर चित्त चातक जलधरसों बँधो हियो। ऐसेहि इन नैननगोपाल-हि इकटक प्रेम दियो ॥ आयो पुहुप ज्ञान ले ए दृग मधुपन रुचि न कियो । हरिमुख कमल अमीरस सूरज चाहत उहै पियो॥३३॥ राग कान्हरो॥ऊधो जू नैनन यह मत लीन्हों।स्वातिविनाऊपर सब भरियत ग्रीव रंध्र मत कीन्हों ॥ मुरली गरज तात मुकुतातन मेघ ध्यान जल हीनो । वरुए प्राण जाहिं ऐसेही वचन होय क्यों हीनों ॥ तुमआए ले योग सिखावन सुनत महादुख दीन्हों। कैसे सूरअगोचर लहिएनिगमनपावत चीन्हों ॥३४॥ राग सारंग॥जवतेसुंदरवदननिहारचो। तादिनते मधुकर मन अटक्यो वहुत करी निकरै न निकारचो ॥ मात पिता पति वंधु सजन जन तिनहूको कहिवो शिर धारचो। रही न लोकलाज मुख निरखत दुसह क्रोध फीटो करि डारचो ॥ ह्वैवो होइ सु होइ कर्मवश अब जीको सब सोच निवारचो । दासी सूरदास परमानँद भलो पोच अपनो न विचारचो ।।३५॥ हरिमुख निरख निमेष विसारे ।तादिनते ए भए दिगंवर इन नैननके तारे ॥ तजी सीख सब सास ससुरकी लाज जनेऊ जारे। घर घूंघुट छोडीवनवीथि-नि अहनिशि रहत उघारे ॥ सहज समाधि रूपरस इकटक करत न टकते टारे । ताके बीच निग्र करिवेको मातु पिता पचिहारे ॥ कहत सुनत समुझत मन ;महिआँ ऊधो वचन तुम्हारे। सूरदास ए हटक न मानत लोचन हठी हमारे ॥ ३६॥ राग केदारो॥नैनन निपट कठिन व्रत ठानी।जा

दिनते बिछुरे नँदनंदन तादिनते नहिं नेक सिरानी । पलक न लावत रहत ध्यान धरि वारंवार ढुरावत पानी । लाल गोपाल मिले ऊधो में कर्महीन कछुओ नहिं जानी । समुझि समुझि उनहार श्यामकी अतिसुंदर वर शारंगपानी । सूरदास ए मोहि रहे अति हरि मूरति मनमाँझ समानी॥३७॥राग सारंग॥ऊधो क्योंराखौंएनैननि।सुमिरि सुमिरि गुण अधिकतपतहैं सुनततुम्हारे बैननि ॥ ए जु मनोहर वदन इंदुके शारद कुमुद चकोर । परम तृषारत सजल श्यामघन तनके चातक मोर॥मधु मराल युगपद पंकजके गति विलास जलमीन । चक्रवाक द्युति मन दिनकरके मृग मुरली आधीन॥ सकल लोक सूनो लागत है विन देखे वहरूप । सूरदास प्रभु नँदनंदनके नखशिख अंग अनूप॥३८॥राग धनाश्री॥और सकल अंगनते ऊधोअँखियाँ बहुत दुखारी।अधिक पिरात सिराति न कबहूं अनेक जतन करि हारी ॥ चितवत मग सु निमेष न मिलवत विरह बिकल भई भारी। भरिगई विरहवाइ माधोके इकटक रहत उघारी।अलिआली गुरुज्ञान शलाका क्यों सहि सकति तुम्हारी।सूर सु अंजन आँजि रूप रस आरति हरो हमारी॥३९॥राग रामकली॥ ऊधो इन नैनन अंजन देहु । आनहु क्यों न श्याम रँग काजर जासों जुरयो सनेहु ॥ तपति रहति निशि वासर मधुकर नहिं सुहात वन गेहु। जैसे मीन मरत जल बिछुरत कहा कहौं दुख एहु॥सब विधि वानि ठानि करि राख्यो खरी कपूरको रेहु।वारक श्याम मिलावहु सूर सुनि क्यों न सुयश यश लेहु॥४०॥राग मलार॥नैना नाहिंने ये रहतायदपि मधुपतुमनंद नँदनको निपटहि निकट कहत ॥ हृदय माँझ जो हरिहि वतावत सीखो नाहिं गहत।अधपरही संदेशअवधिको उलटे उलटि गहत ॥ परी जु प्रकृति प्रगट दरशनकी देखोइ रूप चहत । सूरदास प्रभु विन अवलोके सुख कोई न लहत॥ ४१ ॥पूरनता ए नैन पुरे।तुम पुनि कहत श्रवण हहिं समुझत दुख अति मरत विसूरे॥ ए अलि चपल मोद रस लंपट कटु संदेश कथत कत क्रूरे । कहां मुनि ध्यान कहां व्रजवासिन कैसे जात कुलिश कर चूरे ॥ हरि अंतर्यामी सब बूझत बुद्धि विचार सु वचन समूरे । वे हरि रत्न रूप सागरके क्यों पाइए खनावत धूरे ॥ देखि विचारि प्रगट सरिता सर शीतल सजल स्वाद रुचि रूरे। सूर स्वाति की बूँद लगी जिय चातक चित लागत सबझूरे॥४२॥राग मलार॥ऊधो अँखियां अति अनुरागी।इकटकमगजोवतिअरुरोवतिभूलेहु पलक न लागी॥विन पावस पावसऋतु आई देखतहैं विदमान।अवधौं कहा कियोचाहतहैंछाँडहु निर्गुण ज्ञान॥ सुनि प्रिय सखा श्यामसुन्दरके जानतु सकल सुभाइ । जैसे मिलें सूरके स्वामी तैसी करहु उपाइ॥४३॥राग बिहागरो॥मधुकर सुनो लोचन वात।रोकिराखीअंगअंगन तऊउडि उडि जात ॥ जो कपोत वियोग व्याकुल जाति है तजि धाम । जात यों दृग फिरि न आवत विना दरशन श्याम ॥ मूँदि नैन कपाट पट दे उभे घूंघट ओट । स्वाति सुत ज्यों जाति कीतहूँ निकसि मणि नग फोट॥ श्रवण सुनि यश रहत हरिको मन रहत हरि ध्यान।रहतिरसना नाम रटि रटि कंठ करि गुण गान ॥ कछुक दियो सुहाग इनको तो सबै ए लेत । सूरदास प्रभु विना देखे नैन चैन न देत ॥ ४४ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर ए नैना पै हारे । निरखि निरखि मग कमल नयनके प्रेममगन भए भारे॥ तादिनते नींदौ पुनि नाशी चौंकि परति अधिकारे। सपने तुरिए जागत पुनि वोई वसत जो हृदय हमारे॥यह निर्गुण लै ताहि वतावो जो जानै यांकीसारे।सूरदास गोपाल छाँडिकै चूसें टेंटा खारे॥४५॥राग धनाश्री॥अँखियांअवलागीं पछितान।जवमोहन उठिचलेमधुपुरी तव क्यों दीनो जान॥पंथन चले सँदेश न आवे धीरजधरे नप्रान। जादिनके विछुरेनँदनंदनअँग अँग लागे वान॥ ऊधो अव तुम जाइ सुनावहु आवहिं शारंगपानि । सूरदास चातक भइं गोपी

अंतरगतिकी जानि॥४६॥राग जैतश्री॥कमलनैन कान्हरकी शोभा नैननितें न टरै।ऊधो आए योग सिखावन को जंजाल करै॥जब मोहन गाइनले आवत ग्वालन संग धरै।बलदाऊ अरुसंग सखा मिलि कहो कैसे बिसरै॥ वंसीवट यमुनातट ठाढे मुरली अधर धरै। सुख समूह विनोद जे कीन्हे को तेहि घरनि धरै॥ये ब्रजवासी भये उदासी को संताप हरै। सूरदासके प्रभुबिनु ऊधो को तनुतप्त हरै॥ ४७॥ राग नट॥ सुंदर श्यामके सँग आँखि। प्रथम ऊधो आनिंदे हम सगुन डारें नाखि॥ द्वै तीन सत अनंग तजे श्रुति स्मृति कही जो भाषि। हृदय विद्या ज्ञान धरम सु लोचननि अभिलाष॥ जहां जहांकी केलि पिय हरि सोई सर चकई पाँखि। हारि हारि अहेरिया हरि रही झुकि झखि झाँखि॥ कमल कुमुदनि इंदु उडुगन मिलन सूरज साखि। राति ज्यों अक्रूर दिन अलि मदन दह मधु माखि॥ ४८॥ राग मलार॥ सखी री मथुरामें द्वै हंसा वे अक्रूर ए ऊधो सजनी जानत नीके गंस॥एदोऊ नीर खीर निरवारत इनहि वधायो कंस। इनके कुल ऐसी चलि आई सदा उजागर वंस॥अब इन कृपाकरीब्रजआए जानि आपनो अंस। सूर सु ज्ञान सुनावत अबलनि सुनत होत मतिभ्रंस॥४९॥राग सारंग॥मानो दोउ एकहि मते भए। ऊधो अरु अक्रूर बधिक मति ब्रज आखेट ठए॥ वचन पासि विषयमृग माधो उन रथ नाइ लए।इन् हियहेरिमृगीसब गोपी सायक ज्ञानहए।योगअग्निकीदवादेवियत चहुं दिश लाइ दए॥५०॥ मानो भरे दोउ एकहि सांचे। नख शिख कमलनयनकी शोभा एके भृगुपद बांचे॥ दारुजात कैसे गुण इनमें ऊपर अंतर श्याम। हमको हे गजदंत प्रचारित वचन कहत नहिं काम॥ एई सब असित देह धरे जेते ऐसेई सब जानि। सूर एकते एक आगरे वा मथुराकी खानि॥५१॥सबै खोटे मधुवनके लोग॥जिनके संग श्यामसुंदर सखी सीखे सबअप- योग॥ आए हैं कहियत ब्रज ऊधो युवतिनको लै योग।आसन ध्यान नैन मूँदे सखि कैसे कटे वियोग। हम अहीरि इतनी का जानें कुबिजासों संयोग।सूर सु बैद कहा लै कीजे कहे नजाने रोग॥५२॥ राग नट॥मधुवनके लोगन को पतिआइ।मुख औरे अंतर्गतिऔरेपतियाँ लिखिपठवत जो बनाइ॥ज्यों कोइल सुत काग जिवाए भक्षअभक्ष खवाइ।कुहुकुहानि सुनि ऋतु वसंतकी अंत मिले कुल अपने जाइ॥ ज्यों मधुकर अंबुज रस चाख्यो बहुरि न बूझी बातें आइ। सूर जहाँ लगि श्यामगातहैं तिनसे कतकीजे सगाइ॥५३॥माई री मधुवनकी यह रीति। नीरसजानितजत छिन भीतर नवल कुसुम रस प्रीति॥तिनहूंके संगिनको कैसे चित आवति परतीति। हमहिं छाँडि विरमहिं कुबिजा सँग आए न रिपुरण जीति॥ जिनि पतियाहु मधुर सुनि बातें लागे करन समीति।सूरदास श्यामसँग ऐसो ज्योंभुसपरकी भीति॥५४॥राग मलार॥मधुवनके सबकृतघ्न धर्मीले। अति उदार परहित डोलतहैं बोलत वचन सुशीले॥ प्रथम आइ गोकुल सुफलकसुत लै मथुरापुहि सिधारे। उहां कंस इहां हम दीननिको दूनो काज सँवारे॥हरिको सिखे सिखावन हमको अब ऊधो पगधारे। उहां दासी रतिकी कीरतिकै इहां योग विस्तारे॥ अब तेहि विरह समुद्र सबै हम बूडी चहत नहीं। लीला सगुन नावही सुनु अलितेहि अवलंब रही॥ अब निर्गुण- हि गहैं युवतीजन पारहि कहो गईको। सूर अक्रूर छपदके मनमें नाहिंन त्रास दईको॥ ५५॥ ॥राग धनाश्री॥ अब नीके कै समुझि परी। जिनि लगि हुती बहुत उर आशा सोऊ बातनिवरी॥ वे सुफलकसुत ए सखी ऊधो मिली एक परिपाटी। उनतौ वह कीन्ही तव हमसों ए रतन छँडाइ गहावत माटी॥ ऊपर मृदु भीतरसे कुलिशसम देखतके अति भोरे। जोइ जोइ आवत वा मधु-

राते एक डार केसे तोरे ॥ यह सखी मैं पहिले कहि राखी असित न अपने होहीं । सूर कोटि जो माथो दीजै चलत आपनी गोहीं ॥५६॥ ऊधो प्रेम रहित योग निरस काहेको गायो हम अबलनिको निठुर वचन कहे कहा पायो ॥ जिन नैनन कमलनैन मोहन मुख हेर्यो ॥ मूँदन ते नैन कहत कौन ज्ञान तेर्यो॥ तामें सुनि मधुकर हमकहा लेन जाहीं । जामें प्रियप्राणनाथ नंदनँदन नाहीं । जिनके तुम सखा साधु बात कहो तिनकी ।जीवत कहि प्रेम कथा दासी हम उनकी ॥ अविनाशी निर्गुण मत कहा आनि भाख्यो ।सूरदास जीवन प्रभु कान्ह कहां राख्यो ॥५७॥ राग सारंग ॥जिनिचालहि अलि बात पराई। नहिंकोउ सुनै न समुझतब्रजमेंनईकीरति सब जात हिराई ॥ जाने समाचार सुखपाए मिलि कुलकीआरति बिसराई । भले ठौर वसि भली भई मति भले ठौर पहिंचानि कराई ॥ मीठी कथा कटुकसी लागति उपजतहैं उपदेश खराई। उलटे न्याउ सूरके प्रभुके वहेजातमाँगत उतराई॥५८॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो योगसिखावनआएअब केसे धीरज धरौं।जोरि जोरि चित जोरि जुरीनो जोरी जोरि न जानौ॥पहिलोयोग कहा भयो ऊधो अब यह योग दृढानो॥उन हरि हमसों प्रीति करी जो जैसे मीन अरु पानी । तलफि तलफि जिय निकसनलागे पापी पीर न जानी॥निशिवासर मोहिं पलकन लागे कोटि जतनकरि हारी। ज्यों भुंवग तजि गयो केंचुली सो गति भई हमारी ॥एकदिवस हरि अपने हाथन करनफूल पहिराए । ते मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए॥ वेनीसुभगगुहीकरअपनेहाथनचरणन जावक दीनो । कहा कहो वा श्यामसुंदरसों निपट कठिन मन कीनो ॥ तुम जो बसत हौ मथुरा नगरी हम जो बसत या गाँव । ऊधो हरिसों यों जाइ कहियो प्राण तजहिं या ठाँव ॥ प्रीतम प्यारे प्राण हमारेरहे अधरपर आइ। सूरदास हरिजीके आगे कौन कहे दुखजाइ॥५९॥ जैतश्री ऊधो योग सिखावन आए। शृंगी भस्म अधारी मुद्रा दै यदुनाथ पठाए ॥ जो पै योग लिखो गोपिनको कत रसरास खिलाए। तबहीं क्यों न ज्ञान उपदेशो अधर सुधारस प्याए ॥ मुरली शब्द सुनत बनगवनी पति सुत गृह बिसराए । सूरदास सँग छाँड स्वामिको हमहिं भले पछिताए ॥ ॥६०॥ राग धनाश्री॥बहुत दिन गए ऊधो चरणकमल बिनु देखे।दरशनहीन दुखित दिनही दिन छिन छिन विपतिविशेषे॥रजनीमें अति प्रेम पीर वन गृह मन धरैनधीर।वासर मग जोवत उरसरिताभए नैनकेनीर॥जौलौं रही आशसोइ गानगति।घटि रही श्वास । अतिवियोग विरहिनि तनु तजिहै कहि सो सूरज दास॥६१॥ऊधोवचन॥रागधनाश्री॥ज्ञान विना कहुँ वे सुखनाहीं। घट घट व्यापक दारु अग्निज्यों सदा बसे उर माहीं ॥निर्गुण छाँडि सगुणको दौरति सोचि कहो किहि चाहीं । तत्त्व भजौ ज्योंनिकट न छूटे त्यों तनुके सँग छाहीं॥तिनके कहो कौन जस पायो जे अबलौं अवगाहीं। सूरदास ऐसे कर लागत ज्योंकृपि कीन्हे पाहीं॥६२॥ राग सोरठ॥ऊधो प्यारे कही सो बहुरिनकहिए। जो तुम हमैं जिवायो चाहत अनबोले होइ रहिए॥ प्राण हमारे घात होतहैं तुमरे भावे हांसी । या जीवनते मरन भलोहै करवट लेवो कासी ॥ पूरवप्रीति सँभारि हमारे तुमको कहन पठायो । हमतो जरिवरि भस्म भए तुम आनि मसान जगायो ॥ कै हरि हमको आनि मिलावहु कै ले चलिए साथे। सूरश्याम बिन प्राण तजतहैं दोष तुम्हारे माथे ॥ ६३ ॥ राग धनाश्री॥ रे मधुकरकहा सिखावन आयो ।एतो नैन रूप रस राचे कह्यो न करत परायो ॥ योग युक्ति हम कछुवनजानैं ना कछु ब्रह्मज्ञानो। नवकिशोर मोहन मृदुमूरति तासों मन उरझानो ॥ भली करी तुमआए ऊधो देखो दशा बिचारी । दाइ उपाइ मिलाइ सूर प्रभु आरति हरहुहमारी॥६४॥ राग कल्याण॥मधुकरकहा

कियो अब चाहत। ए सब भईं चित्रकी पुतरी सून शरीरहि डाहत॥ हमसों तोसों बैर कहा अलि श्याम अजा भयो राहत। झारि झारि मनतो तू लै गयो बहुरिपयारहि गाहत॥ अब तौ है मारुत-को गहिबो का सस मूकी लेहे। सूरज जोउन हमहिंदहते तूअपनोकीयो पैहे॥६५॥ राग केदारो॥ ऊधो तुम अपनो जतन करो। हितकी कहत कुहितकी लागत इहां बेकाज अरो॥ जाइ करो उपचार आपनो हाँ ज्ञ देत शिख नीको। कछुवेकहतकछुकहिनहिं आवत ध्वनिदेखतनहिंनीको॥ साधु होइ तिहि उत्तरदीजे तुमसों मानी हारि। यह जिय जानि नँदनंदन तुम इहांपठाएढारि॥ मथुरा गहाँ वेगिइनपाँइन उपज्योहैतनुरोग। सूरसुवैद वेगि ढोहोकिन भएमरनकेयोग॥ ६६॥ राग नट॥ कह्यो तुम्हारो लागत काहे। कोटिक जतन कहौ जो ऊधो हम नचहकिहैं वाहे॥ काहेको अपने जीमें री तू सतलै मनलाहे। यह भ्रमतौ अवहीं भजिजैहे ज्यों पयारके गाहे॥ काशीके लोगनलै सिखयो जे समझे या माहे। सूर श्याम विहरत ब्रज भीतर जीजतुहैसुखचाहे॥६७॥ सारंग॥ आप देखि परदेखि रे मधुकर तब औरन सिख देह। बीतेगी तबहीं जानोगे महाकठिनहैनेह॥ मनजु तुम्हारे हरिचरणनहै तन लै गोकुल आयो। नँदनंदनके सँगके बिछुरे कहिकोने सच पायो॥ गोकुल रहौ जाहु जनि मथुरा झूठोमायामोहु। गोपी कहैं सूर सुन ऊधो हमसे तुमहू होहु॥६८॥ तू अलि कहा परचो कहि पैडे ब्रज तू श्याम अजा भयो हमको इहईब्रचतनवेड॥ यह उपदेश सेतहू भाए जो चढि कहो बरेडे। राजति जतन यशोदा नंदहि हृदय माँझ सब मेडे॥ छांडि राजमारग यह लीला कैसेचलहि कुपेडे। याआदर परअजहूंबैठो टरतनसूरपलेडे॥६९॥ राग सारंग॥ घरहीके वाढेहो रावरे। नाहिन मीत वियोग वशपरे अनब्योगे अलिवावरे। अधरसुधा मुरलीको पोषे योग जहर कत प्याव रे॥ अबला कही योग हम जानें ज्यों जल सूखे नावरे॥ वरु मारिजाइ चरे नहितिनका सिंहकोइहै सुभाइरे॥ जानत सूरदसकंठहरियो तजिअनत न ठाँवरे॥७०॥ राग सारंग॥ तुम अलि कासों कहत बनाई। बिनु समुझे हम [illegible] नरे बूझतिहैं बारक बहुरो गाई॥ किहियौं गमन कीन्हों रथंदनचढि सुफलकसुतके संग॥ किहि बि[illegible] रजक लिए नानापट पहिरे अपने अंग॥ किहि हति चाप निदरि गज निजबल किहि बल मल्ल मथिजाने। उग्रसेन वसुदेव देवकी [illegible] निगडते आने। तू काकीहै करत प्रशंसा कौने घोष पठायो॥ किहि मातुल हति कियो ज[illegible] वंश कौन मधुपुरी छायो॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा सुखमुरली कलबाजै। सूरदास यशुदानँद नंदन गो-कुलकान्ह विराजै॥७१॥ राग सारंग॥ हमकोहरिकी कथासुनाउ। ए आपनी ज्ञानगाथा अलि मधुराही लै जाउ॥ वे नर नारि नीके समुझेंगी तेरो वचन बनाउ। पालागों ऐसी इन बातनि उनहीं जाइ रिझाउ॥ जो शुचि सखी श्यामसुंदरको अरु जिय अति सतिभाउ॥ तौ बारक आतुर इन नैनन वह मुख आनि देखाउ॥ जो कोट कोटि करेकैसेहू विधि विद्या ब्यौसाउ। तो सुन सूर मीनके जलबिनु नाहिन और उपाउ॥७२॥ राग गौपाली॥ ऊधो हरि बिनु ब्रज रिपु बहुरि जिये। जे हमरे देखत नँदनंदन हति हति हुते सो दूरि किये॥ निशिको रूप बकी बनि आवत अति भय करत सु कंप हिए। तापदते तनु प्राण हमारे रविहू छिनक छँडाइ लिए॥ उर ऊंचे उसाँस तृणावर्त तिहि सुख सकल उडाइ दिए॥ कोटिक कालीसम कालिंदी परसत सलिल न जात पिए॥ बन बकरूप अघासुर समघर कतहूँ तौ न चिते सकिए॥ कैसो कठिन कर्म कैसो विन काको सूर शरन तकिए॥ ७३॥ राग सोरठ॥ ऊधो तुम ब्रजकी दशा विचारो। ता पाछे यह सिद्धि आपनी योगकथा विस्तारो॥ जाकारण तुम पठए माधो सो सोचो जियमाहीं। कितोक बीच विरह परमारथ जानु-

हो किधौं नाहीं ॥ तुम परवीन चतुर कहियतहौ संतन निकट रहतहौ । जल बूडत अवलंब फेनको फिरिफिरि कहा गहतहौ ॥ वह मुसकानि मनोहर चितवनि कैसे उरते टारौं।योग युक्ति अरु मुक्ति परमनिधि वा मुरलीपै वारौं ॥ जिहि उर कमलनैन जु वसतहैं तिहि निर्गुण क्यों आवै। सूरदास सो भजन वहाऊं जाहि दूसरो भावै ॥७४॥राग आसावरी ॥ ऊधो कहांकी प्रीति हमारी अजहूँ रहत तन हरिके सिधारे ॥ छिदि छिदि जात विरहशर मारे । पुरि पुरि आवत अवधि विचारे ॥ फटत न हृदय सँदेश तुम्हारे । कुलिशते कठिन धुकत दोउ तारे ॥ वर्षत नैन महा जलधारे । उर पषाण विदरत न विदारे ॥ जीवन मरन दोउ दुखभारे।कहियत सूर लाज पतिहारे ॥७५॥राग सारंग॥ऊधोइतनोमोहिं सतावत।कारीघटा देखिबादरकीदामिनि चमकिडरावत॥हेम-सुतापतिको रिपु व्यापै दधिसुत रथनचलावत। अंबुखंडनशब्द सुननहीचित चकृत उठिधावत॥ कंचनपुर पतिको जो भ्राता ते सव वलहिं न आवत।शंभुसुतको जो वाहनहै कुहके असलसलावत॥यद्यपि भूषण अंग बनावत सोइ भुजंग होइ धावत । सूरदास विरहिन अति व्याकुलखगपति चढि किन आवत ॥७६॥राग धनाश्री॥ हमको तुमविन सबै सतावत।लखौ न मधुप चतुरमाधौसो तुमहू सखा कहावत॥ताको तनु हरि हरयो दीनसो कुलसर्वागतदीनी।सोइ मारत करि वारपार करि हमको कानन कीनी ॥ सिंधुते काढि शंभुकर सौंप्यो गुनहगारकी नाई । सोशशि प्रगट प्रधान कामको चहुँदिशि देत दोहाई ॥ अमरनाथ अपराध क्षमा करि तवहिं भोगसुकरायो।प्रात इंद्र कोपित जलधरलै व्रजमंडलपर छायो ॥ पूंछपूंछ सरदार सखनके इहि विधि दई वडाई। तिन अतिवोल झोल तनु डारयो अनल भँवरकी नाई॥ पंछ छोरि अलि सूझ पंछ धरि तिनहू कापि जनायो। परयो जो रेख ललाट और सुख मेटि दुकार वनायो । कौनकौनकोविनयकीजिएकहि जेतिक कहि आई । सूर श्याम अपनेया व्रजको इहिविधिकानकटाई॥७७॥राग नट॥ ऊधोयहहित लागत काहे । निशिदिन नैन तपत दरशनको तुम जु कहत हृदमाहे ॥ पलकनपरतचहूंदिशि चितवत विरहानलके दाहे । इतनी आरति काहे न मिलहीं जो पर श्याम इहांहे॥पालागौंएसेहीरहनदे अवधिआश जल थाहैं । जिनि वोरहि निर्गुण समुद्रमें पुनि पाई विन चाहें ॥ उपजि परी जासों तिहि अँगअँग सो अँग बँन निवाहे।सूर कहा लैकरे पपीहा एते सरसरिताहें॥७८॥राग मलार॥ह्यांतुम कहत कौनकी बातें ।सुन ऊधो हम समुझत नाहीं फिरि बूझतिहैं तातें ॥ कोनृपभयोकंसकिनमारयो को वसुदेवसुत आहि। ह्यांयशुदासुतपरममनोहरजीजतुहैंमुखचाहि॥ नितप्रतिजातधेनुवनचारन गोपसखनके संग । वासरगत रजनीमुख आवत करत नैनगति पंग ॥ को अविनाशी अगम अगोचर को विधि वेद अपार। सूर वृथा बकवाद करत कत इहि व्रज नंदकुमार ॥ ७९॥ ऊधो हरि काहेके अंतर्यामी ।अजहुं न आइ मिलइहिऔसरअवधिवतावतलामी॥ कीन्ही प्रीति पुहुप शुंडाकी अपने काजके कामी ॥ तिनको कौन परेखो कीजे जे हैं गरुडके गामी॥ आईउघरिप्रीति कलईसी जैसी खाटी आमी। सूर इते पर सुनसनि मरियत ऊधो पीवत मामी ॥ ८० ॥ मधुकर वह जानी तुम साँची। पूरण ब्रह्म तुम्हारो ठाकुर आगे माया नाची ॥ यह इहि गावें न समुझत कोऊ कैसो निर्गुण होत। गोकुल वाट परे नँदनंदन वहै तुम्हारो पोत ॥ को यशुमति ऊखलसों बाँध्यो को दधि माखन चोरे।को ए दोऊ रूख हमारे यमलाअर्जुन तोरे ॥ को लै वसन चढयो तरुशाखा मुरली मन आकरषै। को रसरास रच्यो वृंदावन हरषि सुमन सुर बरषे ॥ ज्यों डाक्यों तन कत विन बूंड काहेको जीभ पिरावत । तव जु सूर प्रभु गये कूर लै अव क्यों

कियो अब चाहत। ए सब भईं चित्रकी पुतरी सून शरीरहि डाहत॥ हमसों तोसों वैर कहा अलि श्याम अजा भयो राहत। झारि झूरि मनतो तू ऊले गयो बहुरिपयारहि गाहत॥ अब तौ है मारुत-को गहिवो का सस मूकी लेहै। सूरज जोउन हमहिंहते तूअपनोकीयो पैहै॥६५॥ राग केदारो॥ ऊधो तुम अपनो जतन करो। हितकी कहत कुहितकी लागत इहां वेकाज अरो॥ जाइ करो उपचार आपनो हौं जु देत शिख नीकी। कछुवेकहतकछुकहिनहिं आवत ध्वनिदेखतनहिंनीकी॥ साधु होइ तिहि उत्तरदीजे तुमसों मानी हारि। यह जिय जानि नंदनंदन तुम इहांपठाएढारि॥ मथुरा गहौ वेगिइनपाँइन उपज्योहैतनुरोग। सूरसुवेद वेगि ढोहोकिन भएमरनकेयोग॥ ६६॥ राग नट॥ कह्यो तुम्हारो लागत काहे। कोटिक जतन कहौ जो ऊधो हम नवहकिहैं वाहे॥ काहेको अपने जीमें री तू सतले मनलाहे। यह भ्रमतो अवहीं भजिजेहै ज्यों पयारके गाहे॥ काशीके लोगनले सिखयो जे समझे या माहे। सूर श्याम विहरत ब्रज भीतर जीजतुदेसुखचाहे॥६७॥ सारंग॥ आप देखि परदेखि रे मधुकर तब औरन सिख देह। वीतेगी तवहीं जानोगे महाकठिनहैनेह॥ मनजु तुम्हारे हरिचरणनहै तन ले गोकुल आयो। नँदनंदनके सँगके विछुरे कहिकोने सच पायो॥ गोकुल रहो जाहु जनि मथुरा झुठोमायामोहु। गोपी कहैं सूर सुन ऊधो हमसे तुमहू होहु ६८॥ तू अलि कहा परयो कहि पैडे।ब्रज तू श्याम अजा भयो हमको इहऊबचतनवेडे॥ यह उपदेश सेतहू भाए जो चढि कहो वरेडे। राजति जतन यशोदा नंदहि हृदय माँझ मन मेडे॥ छांडि राजमारग यह लीला कैसेचलहि कुपेडे।याआदर परअजहूंवेठो टरतनसूरपलेडे॥६९॥ राग सारंग॥ घरहीके वाढेदो रावरे।नाहिन मीत वियोग वशपरे अनव्योगे अलिबावरे। अधरसुधा मुरलीकी पोपे योग जहर कत प्याव रे॥ अवला कहा योग हम जानें ज्यों जल सूखे नावरे॥ वरु मारिजाइ चरै नहितिनका सिंहकोइहै सुभाइरे॥ जानत सूरदसुकंठहरियो तजिअनत न ठॉवरे॥७०॥ राग सारंग॥ तुम अलि कासों कहत बनाई। विनु समुझे हम [illegible]रि बूझतिहैं वारक वहुरी गाई॥ किहिधौं गमन कीन्हों स्यंदनचढि सुफलकसुतके संग॥ किहि वि[illegible] रजक लिए नानापट पहिरे अपने अंग॥ किहि हति चाप निदरि गज निजवल किहि वल मल्ल मथिजाने। उग्रसेन वसुदेव देवकी [illegible] निगडते आने। तू काकीहै करत प्रशंसा कौने घोप पठायो॥ किहि मातुल हति कियो ज[illegible] अंश कौन मधुपुरी छायो॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुखमुरली कलवाजे। सूरदास यशुदानँद नंदन गो-कुलकान्ह विराजे॥७१॥ राग सारंग॥ हमकोहरिकी कथासुनाउ।ए आपनी ज्ञानगाथा अलि मधुराही ले जाउ॥ वे नर नारि नीके समुझेंगी तेरो वचन बनाउ। पालागौं ऐसी इन वातनि उनहीं जाइ रिझाउ॥ जो शुचि सखी श्यामसुंदरको अरु जिय अति सतिभाउ॥ तो वारक आतुर इन नैनन वह मुख आनि देखाउ॥ जो कोउ कोटि करैकैसेहू विधि विद्या व्यौसाउ।तो सुन सूर मीनके जलविनु नाहिन और उपाउ॥७२॥ राग भोपाली॥ ऊधो हरि विनु ब्रज रिपु बहुरि जियेजे हमरे देखत नँदनं-दन हति हति हुते सो दूरि किये॥ निशिको रूप वकी वनि आवत अति भय करत सु कंप हिए। तापहते तनु प्राण हमारे रविहू छिनक छँडाइ लिए॥ उर ऊंचे उसाँस तृणावर्त तिहि सुख सकल उडाइ दिए॥ कोटिक कालीसम कालिंदी परसत सलिल न जात पिए॥ वन वकरूप अघासुर समघर कतहूँ तौ न चितै सकिए॥ कैसो कठिन कर्म केसो विन काको सूर शरन तकिए॥ ७३॥ राग सोरठ॥ ऊधो तुम ब्रजकी दशा विचारो। ता पाछे यह सिद्धि आपनी योगकथा विस्तारो॥ जाकारण तुम पठए माधो सो सोचो जियमाहीं। कितोक बीच विरह परमारथ जानु-

हो किधौं नाहीं ॥ तुम परबीन चतुर कहियतहौ संतन निकट रहतहौ । जल बूडत अवलंब फेनको फिरिफिरि कहा गहतहौ ॥ वह मुसकानि मनोहर चितवनि कैसे उरते टारौ।योग युक्ति अरु मुक्ति परमनिधि वा मुरलीपै वारौ ॥ जिहि उर कमलनैन जु वसतहैं तिहि निर्गुण क्योंआवै। सूरदास सो भजन वहाऊं जाहि दूसरो भावै ॥७४॥राग आसावरी ॥ ऊधो कहांकी प्रीति हमारे। अजहुं रहत तन हरिके सिधारे ॥ छिदि छिदि जात विरहशर मारे । पुरि पुरि आवत अवधि बिचारे ॥ फटत न हृदय सँदेश तुम्हारे । कुलिशते कठिन धुकत दोउ तारे ॥ वर्षत नैन महा जलधारे । उर पषाण विदरत न विदारे ॥ जीवन मरन दोउ दुखभारे।कहियत सूर लाज पतिहारे ॥७५॥राग सारंग॥ऊधोइतनोमोहिं सतावत।कारीघटा देखिवादरकीदामिनि चमकिडरावत॥हेम-सुतापतिको रिपु व्यापै दधिसुत रथनचलावत। अंबूखंडनशब्द सुनतहीचित चकृत उठिधावत॥ कंचनपुर पतिको जो भ्राता ते सब बर्लहिं न आवत।शंभुसुतको जो वाहनहै कुहकै असलसला-वत॥यद्यपि भूषण अंग बनावत सोइ भुजंग होइ धावत । सूरदास विरहिन अति व्याकुलखगपति चढ़िकिन आवत ॥७६॥राग धनाश्री॥ हमको तुमबिन सबै सतावत।लखौ न मधुप चतुरमाधौसो तुमहूं सखा कहावत॥ताको तनु हरि हरयो दीनसो कुलसर्वागतदीनी।सोइ भारत करि वारपार करि हमको कानन कीनी ॥ सिंधुते काढि शंभुकर सौंप्यो गुनहगारकी नाईं । सोशशि प्रगट प्रधान कामको चहुँदिशि देत दोहाई ॥ अमरनाथ अपराध क्षमा करि तबहिं भोगमुकरायो।प्रात-इंद्र कोपित जलथरल ब्रजमंडलपर छायो ॥ पूंछपूंछ सरदार सखनके इहि विधि दई वडाई। तिन अतिबोल झोल तनु डारयो अनल भँवरकी नाईं॥ पंछ छोरि अलि सूझ पंछ धरि तिनहु कापि जनायो। पत्यो जो रेख ललाट और सुख मेटि दुकार बनायो । कौनकौनको विनयकीजिएकहि जेतिक कहि आई । सूर श्याम अपनेया ब्रजको इहिविधिकानकटाई॥७७॥राग नट॥ ऊधोयहहित लागत काहे । निशिदिन नैन तपत दरशनको तुम जु कहत हृदमाहे॥ पलकनपरतचहूंदिशि चित-वत बिरहानलके दाहे । इतना आरति काहे न मिलहीं जो पर श्याम इहांहैं॥पालागौएसेहीरहनदे अवविआरा जल थाहैं । जिनि बोरहि निर्गुणसमुद्रमे पुनि पाई बिन चाहैं ॥ उपजि परी जासों तिहि अँगअँग सो अँग बनै निबाहैं।सूर कहा लैकरे पपीहा एते सरसरिताहैं॥७८॥राग मलार॥ह्यांतुम कहत कौनकी बातैं ।सुन ऊधो हम समुझत नाही फिरि बूझतिहैं तातैं ॥ कोनृपभयोकंसकिनमा-रयो को वसुदेवसुत आहि। ह्यांयशुदासुतपरममनोहरजीजतुहैमुखचाहि॥ नितप्रतिजातधेनुवनचा-रन गोप सखनके संग । वासरगत रजनीमुख आवत करत नैनगति पंग ॥ को अविनाशी अगम अगोचरको विधि वेद अपार। सूर वृथा बकवाद करत कत इहि ब्रज नंदकुमार ॥ ७९॥ ऊधो हरि काहेके अंतर्यामी ।अजहुं न आइ मिलइहिऔसरअवधिवतावतलामी॥ कीन्ही प्रीति पुहुप शुडाकी अपने काजके कामी ॥ तिनको कौन परेखो कीजे जे हैं गरुडके गामी॥ आईउघरिप्रीति कलईसी जैसी खाटी आमी। सूर इते पर सुनसनि मरियत ऊधो पीवत मामी ॥ ८० ॥ मधुकर वह जानी तुम साँची। पूरण ब्रह्म तुम्हारो ठाकुरआगे माया नाची ॥ यह इहि गाउँ न समुझत कोऊ कैसो निर्गुण होत। गोकुल बाट परे नँदनंदन उहै तुम्हारो पोत ॥ को यशुमति ऊखलसो बाँध्यो को दधि माखन चोरे। को ए दोऊ रूख हमारे यमलाअर्जुन तोरे ॥ को लै बसन चढ्यो तरुशाखा मुरली मन आकरषै। को रसरास रच्यो वृंदावन हरषि सुमन सुर वरषै ॥ ज्यो डाक्यो तन कत विन बूंड काहेकोजीभ पिरावत । तब,जु सूर प्रभु गये भूर लै अब क्यों

नैनसिरावत॥८१॥राग ...॥निर्गुणकौनदेशको वासी।मधुकर कहि समुझाइ सौंहदै बूझतिसांचनि हासी॥काहे जनक कौन जननी कौन नारिकोदासी।कैसोबरन भेषहै कैसो केहि रसमें अभिलासी॥पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे कहैगो गासी।सुनत मौन ह्वैरह्यो ठगरो सूरसबै मतिनासी॥८२॥राग ...॥ऊधो हमैं हरि ... निसराए।एक दिवस वृंदावनभीतरे कान्ह पत्र उमाए॥ सुमिरिसुमिरि गुण गाऊं श्यामके नैन सजल ह्वै आए।पलछिन ... दिन बीते प्रीतमभए पराए ॥ शीतल पथ जोवति हम निशिदिन किन विरहिन निरमाए । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना मदनकी ताप सताए ॥८३॥ अथ गोपी कुबिजा ... ॥ ऊधो अब चित भए कठोर । पूरब प्रीति बिसारी गिरधर नौतम रचि ओर ॥ जन्मजन्मकी दासी तुम्हरी नागर नंदकिशोर ।।प्रीतिके बाण लगाए मधुकर निकसिगए दोउ ओर ॥जब हरि मधुवनको सिधारे धीरज धरत न ढोर।सूरदास चातक भई गोपी कैसे बाण चितचोर॥ ८४ ॥राग मलार॥ ऊधो हमहिं न जान्यो श्यामहिं । सेवा करत करी कछु औरै गई जाति कुल नामहिं॥ तन मन चोरि प्रीति जो जोरत कौन भलाई तामहिं । ते क्या जानैं पीर पराई लुब्धक अपन कामहिं॥ अतहु सूर सोई पै प्रकटे होइ प्रकृति जो जामहिं।नागरिनारि गनिकै ... तिनागर रीचे कुबिजा नामहिं ॥८५॥ राग गौरी ॥ मधुकर उनकी बात हम जानी।कोऊ ...ती कंसकी दासी कुपात्र ... ॥ कुबिजा नाउँ मधुपुरी बैठी ले सुवास मन मानी।कुटिल कुचील जन्मकी टेढी सुंदरि करिवर आनी ॥ अब वर नवल वधू ह्वै बैठी ब्रजकी कहैं कहानी।सूरश्याम ऊधव कैसे पय लोंमी मिली सयानी॥८६॥राग मलार ॥...

हियो ॥ जाको हरि मनहर ...

हँसिहँसि लोग जियो ॥ ...

को दासी दाँन लियो ॥ ...

चापक दाम चलावै॥ उन कछु मन फेरयो चंदनस सात श्यामहिं भावै॥आपनेही रंग रचोमानरी शुकज्यों बैठि पढावै ॥ दासी हुती असुर दैयतकी अब कुलवधू कहावैत्यों नटनी कर लिए लकुटिया कपि ज्यों नाच नचावै ॥ ...

हमहि निदरि दाधेपर लौना ...

दिकके ठाकुर करी कमकी दासी॥इन्द्रादिककी कौन चलावै शिव फिर करत खिवासी। निगम आदि वदीजन जाके शेष शीशके वासी॥जाके कमला रहत निरंतर कौन गनै कुबिजासी।सूरदासप्रभु दृढकरि बाँधे प्रेमपुंजिकी पासी ॥८९॥ राग मलार॥तबतैं मधुरिदाम मिहि दीन्हों।ऊधोहरिमधुरा कुबिजाघर इहै नाम मन लीन्हों॥ चारि मास वर्षाके लोन्हें पुनिहु रहत इक ठौरा।दासी वामपनित्र जानिकैं नहि देखत उठि ओर॥ जिनासौं सब ग्वाल कहत नैं फले ब्रज छाँडि गए । सूर सगुनई जात मधुपुरी निर्गुण नाम ...॥९०॥राग ...॥कुबरीमन न्यारही प्यारी सो जिय बोले।जिनसो कृपा करी नँदनंदन कहत एटी डोले ॥ कारोकारो कुटिल अति कान्हर अतरग्रंथि न खोलै। हम बौरी बकवाद करतें वृथा अगति यह जोलै ॥ प्रीति पुरातन पोगे उनसा,नेह कसादी ताले। सूर श्याम उपहास चल्यो रज आप आपने टोले॥ ९१॥रामगँवारीसों चपरयो।रूपहीनकुलहीन कुबरीतासों मन जो टरयो॥ उनको मदा स्वभाव सलिलको सगुनी सहज उतरयो । सकुचो नहीं जानि कछु तनु उमगति मन पसरयो॥फिरे फिरत अजिर दासीके, जनु जड मोह भरयो ।

सूरदास गोपालरसिकमणि अकरन करन करचो॥९२॥राग मलार॥काहेको गोपीनाथ कहावत।जुपै मधुप हरि हित हमारे काहेन गोकुल आवत ॥ सुपनेकी पहिचानि जीयमहिं हमहि कलंक लगावत।जो परि कृष्ण कुबरिहि रीझे सोइ किन नाम धरावत ॥ ज्यो गजराज काजके औसर औरे दशन देखावत।ऐसे हम कहिवे सुनवेको सूर अनत विरमावत ॥९३॥ कहियत कुबिजा कृष्ण [illegible] मिटि नवसत कंचुकि साजी॥मिली जाइ आगे दरवाजे चंदन [illegible] सुहाग सबनकों हरि मिलि प्रीति उपराजी ॥ सुफल भयो पछिलो तप कीन्हो देखि स्वरूप कामरति भाजी॥जगतके प्रभु वश किए सूर सुनि सबहि सुहागिनिके शिर गाजी ॥९४॥राग सारंग॥ऊधो जाके माथे भाग।अबलन योग सिखावन आए चेरिहि चपरि सोहाग॥ आए बचन योगकी तेली काढ़ि प्रेमकी बाग । कुबिजहि करिआए पटरानी हमहिं देत बैराग॥ लौंडीकी डौंडी बाजी जग बढ्यो श्याम अनुराग॥ कुबिजा कमलनैन मिलि खेलत बारहमासी फाग॥ मिल्यो सोहायो साथ श्यामको कहाँ हंस कहां काग । सूरदास प्रभु उख छोडिके चतुर चकोरन आग॥९५॥राग गौरी॥ऊधोजू जाइ कहौ दूरि करै दासी।नागरनरजिय निचारि करत हैं सब हासी॥हेम कांच हंस काग खरि कपूर जैसो कुबिजा अरु कमलनैन संग बन्यो ऐसो॥जातिहीन कुलविहीन कुबिजा कान्हदोऊ जो एमिनके संग लागे सूर तैसो सोऊ॥९६॥राग मलार॥ ऊधो कहा हमारी चूकके गुण अवगुण सुनिसुनि हरिके हृदय उठति है कूक॥वेही काज छांडि गए मधुपन हग घटि कहा करी।तन मन धन आतमा निवेदन सोउन चितहि धरी॥रीझे जाइ सुंदरी कुबिजहि यहि दुख आवै हासी ।यद्यपि कूर कुरूप कुढंग्स तद्यपि हैम ब्रजवासी॥एते ऊपर प्राण रहत है घाट कहा कहा कहिए। पूरब कर्म लिखे विधि अक्षर सूर सबै सो सहिए॥९७॥ मलार॥ अलि हमहिं कान्हको इहै परेखो आवै। तबवह प्रीति चरणजावक शिरअब कुबिजा मन भावै॥तबकन पाणि धरो गोवर्धन कत ब्रजपति छिड़टावै।अब वह रूप अनूप कृपाकरि नैनन क्यो न दखावै॥तब कत बैन अधर धरि मोहन लैले नाम बुलावै । अरु कत लाड़ लडाइ रंग रस हँसिहँसि कंठ लगावै ॥ जेहि मुख संग समीप राति दिन तेहि क्यो योग सिखावै। जेहिमुख अमृत पिउ रसना भरि तेहि क्यो विषहि पिआवै॥ कर मीडति पछिताति मनहिं मन क्रमक्रम करि समुझावै ।सोइ सुनि सूरदास अब विरहिनि यहि दुख दुख अति पावै ॥९८॥राग सोरठ॥मेरे जिय इहै परेखो आवै। सरनसलट हिमारो लीनो राज कूबरी पावै॥तापर एक सुनो री अजगुत लिखिलिखि योग पठावै। सूर कुटिल कुबिजाके हितको निर्गुणवद सुनावै॥९९॥राग मलार॥ ऊधो आवै इहै परेखो । जनयारे तब वैसी मिलनी बड़े भए इहै देखो॥ योग यज्ञ तप नेम दान व्रत इनै करत तन जात ।क्योंतु बालसुत चढे कुशलसो कठिन मोहकी बात ॥ करि निज प्रगट कपट पिक कीरति अपने काज लगि धीर । काज सरे दुख गए कहौ धौ का वायसकी पीर॥जहंजहं रहतु राज्य करैं तहंतह लैहु कोटिकोभार। इहै अशीश सूर प्रभु सो कहि न्हात खिसै जिनि वार॥१००॥राग मलार॥हरि ब्रजकब हिंब धौं हो आवन। वेगि सुवचन सुनाइ मधुप जो मोहिं व्यथा बिसरावन॥ हाथ स्थान कहा जानौं प्रभु जात मधुपुरी छावन । पछिली चूक समुझि उरअंतर अब लागी पछितावन॥ मन निशि सूर सेज भई बैरनि शशि सीखो तनु तावन।अब यह कर कच धरनि टपर दशहू दिशि वनसावन॥१॥राग सारंग॥ तुम्हारी प्रीति रिधौ गिरधारि। हथियार धरि रती जु पहिले नायकरूप ब्रजनारि॥गिरि सुमार खेत वृंदावन रण मानी मन हारि॥विह्वल विकल सभागति छिनछिन मदन सुधानिधि नारि॥अब यह

मोऊं तौ मोहिं हरि मिलि जागो देइ अतिदाइ॥ कमलनैन मधुपुरी सिधारे हमहुँ न संग
इ। अब यह व्यथा कौन विधि भरिहैं कोऊ देइ बताइ॥ उदमद यौवन आनि ठाढिफैकैसे
1 जाइ।सूरदास स्वामीकेमिलिबेतनुकीतपतबुझाइ॥ १३॥राग मलार॥गोपालहिवारेहीकी टेव।
ति नहीं कहाते सीखे चोरीके छल छेव॥ तब कछुदूधदह्योलैखाते करिरहती हौं कानि।
सही परत अब मोपै मनमाणिककी हानि॥ऊधोनँदनदनसों कहियो राजनीति समुझाइ।
भए तजत नहिं लोभहि गुत नहीं यदुराइ॥बुद्धिविवेक अरु वचनचातुरी पहिलैलई चुराइ।
स प्रभुके गुण ऐमे कासोकहिएजाइ॥१४॥राग सारंग॥बिसरतक्यों गिरिधरकीवातैं।अवधि
लगि रह्यो मधुप मन तजि न गयो घट तातैं॥ हरिके विरह छीन भई ऊधो दोउ दुख परे
तै। तन रिपु काम चित्त रिपु लीला ज्ञानगम्य नहिं यातै॥श्रवणशुन्यो चाहतगुणहरिकोजोवे
पुगते। लोचन रूप ध्यान धर्यो निशिदिन कहो घटैको कातै॥ ज्यो नृप प्राण गए सुत
बिरचि रह्यो जो जाते। सूर सुमतितौरी पै उपजे हरिआवैं मधुरातै॥१५॥राग मलार॥ऊधो
भई यह छाती। मेरे मन रसिक लग्यो नँदलालहि झपत रहत दिन राती॥ तजि ब्रज
पिता अरु जननी कठ लाइ गए कार्ती। ऐसे निठुर भए हरि हमको कबहुँ न पठई पाती॥
पिय कहत रहै जिय मेरो होइ चातककी जाती।सूरदास प्रभु प्राणहि राखहु होइकरि बृद
ी॥१६ राग गौरी॥हम तौ कान्हकेलिकी भूँखी। कहा करौं लैनिर्गुणतुम्हरो बिरहिनिबिरह
नी॥ कहिए कहा इहै नहिं जानत कहो योगही योग। पालागौं तुमसे अपने पुर बसतबाबुरे
॥ चदन अभरन चीर चारु वरु नेकु आपु तनुकीजै॥ दड कमडलभस्मअधारीतौ युवतिन
जि। इहै देखि दृष्टि धौ गोपिन क्यो धौ दृढ व्रत पायो। सूरदास यदुनाथ मधुप को प्रेमहि
पठायो॥१७॥राग गौरी॥तुमहिं मधुप गोपालदुहाई।कबहुँक श्याम करत इहांको मन कैधौं
सुध्यो बिसराई॥हम अहीरि मतिहीन बावरी हटकतहू हठि करहि मिताई। धौ नागर
निर्मोही अगअँग भरे कपट चतुराई॥ सोची कहहु देखश्रवणनसुख छाडहु छिया कुटिल
नाई। सूरदास प्रभु विरदलाज धरिमेटहु इहांके लोगहसाई॥ १८ ॥उद्धववचन॥रागबिलावल॥
सुनहु हरिसदेश।कह्यो पूरण ब्रह्म ध्यावो त्रिगुण मिथ्या भेश॥ मैं कहौं सो सत्यमानहु त्रिगुण
नाखि।पंचत्रिय गुण सकल देहीजगत ऐसो भाखि॥ज्ञान बिनु नरमुक्ति नाही यहविषैससार।
रूप न नाम कुल गुण वरण अवरन सार॥मात पितु कोउ नाहिं नारी जगत मिथ्या लाइ।सूरसुख
नाहिं जाके भजोताकोजाइ॥१९राग सारंग॥ऐसी बातकहौ जिनि ऊधो।नँदनदनकीकानकरत
आवत आखर मुखते सूधो॥ बातनहीं उडिजाहिं और ज्यो त्यो हम नाहिंन काची। मन
वचन विशुद्ध एकमत कमलनैन रँगराची॥ सो कछु जतन करौ पालागौ मिटै हृदयको
। मुरलीधरै आनि दिखरावो बाढै प्रीति दुकूल॥इनही बातन भए श्याम तनु अजहुँमिला-
वतहौ गढि छोलि।सूर वचन सुनि रह्योठग्योसो बहुरि नआयोबोलि॥२०॥राग सोरठ॥ फिरिफिरि
कहा बनावत बातैं।प्रातकाल उठि देखत ऊधो घरघर माखन खातैं॥जिनकीबात कहतहौ हमसो
सो हैं हमसो दूरि।इहां न निकट यशोदानंदन प्राण सजीवनमूरि॥ बालक संग लिएदधि चोरत
खात खवावत डोलत।सूर शीशनीच्योक्योंनावत अबकाहेनहिंबोलत॥२१॥राग सारंग॥फिरिफिरि
कहा सिखावत मौन। वचन दुसह लागत अलि तेरे ज्यो पजरेपर लौन॥ सीगी मुद्रा भस्म
अधारी अरु आराधन पौन। हम अबला अहीर शठ मधुकर धरि जानहिं कहि कौन॥यह मत

कृपा योग लिखि पठए मनसिज करी गुहारि। कछुइक शेष बच्योहै मृग प्रभु सोउ सुधानिगोंचकि गारि॥२॥राग सारंग॥कहांतोजोकहिवेकी होई।प्राणनाथ बिछुरेकी वेदन जानतनाहिन रसलेंअभिला- अधर सुधारस लेल रही मदन गति भोई । कहा करौं कछु कहत न आवै तन मन गर्वपतिनागी विरह व्यथा वेदन उरअंतरजामें विते जानै सोई। सुरज शिव सनकादिक लोभे गि पत्र डसाए॥ खोई ॥३॥नट॥ ऊधो तुम व्रजमें पैठ करी।लै आपहो नफा जानिके सबै वस्तु अक नीति प्रीतमभए मासन मथि बेचै मधन टेक पकरी ।इह निर्गुण निर्मोलकी गठरी अब किन करत धप्रभु तुम्हरे मिलन वहां जो समातो इती बडीनगरी। सूरदास गाहक नहिं कोऊ दिखिअत गरे परी ॥ऊधो अब चित ऊधो योग ठगौरी व्रज न बिकैहै। मूरीके पातनके बदले को मुक्ताहल दैहै ।यह सो तुम्हरी नागर ऊधो एसहि भरचो रहि जैहै। जिनपैते लै आए ऊधो तिनहिके पेट समैहै॥ दार मधुवनकों कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै।गुणकरि मोहि सूर सावरेको निर्गुणही निबरैहै॥८९॥ ॥रागमलार॥ मीठी बातनमें कहा लीजै।जोपै वे हरि होहिं हमारे करन कहें सोइ कीजै॥ जि नामदि॥ तन मन कर कानन कर्णफूल पहिराए।तिन मोहन माटीके मुद्रा मधुकरहाथ पठाए ॥ कि अपने कामहिं॥ वृंदावन रचि पचि बिबिध बनाई।ते अब कहत जटा माथेपर बदलो नाम कन्हाई कुबिजावांमहिं घनाइ अभूषण अरु कीनी अर्धग। सो वे अब कहिकहि पठवतहैं भस्म चढाए कृपाकरी अंकरानी॥ करी दूरि नदनंदन तुमजो मधुपमधुपाती।सूर न होइ श्यामके मुखको जाहु न टेढी सुंदरि कारिघर राग सारंग॥ऊधो भूलि भले भटके । कहत कही कछु बात लडेत तुम ताही अक्रैसे पय जासोंमिली सयान निहारो लीन छरि फटके। तुमहिं दियो यहराह इतेको वे कुबिजासों अमधुकर अधिकजुडात सभारि आपनो जाहु तहींतटके । सूरश्यामतजिकोउन लैहै या योगहिकटुके॥ो मन हरतनजान्यो तुम हौ निकटके वासी । यह निर्गुण लै ताहि सुनावहु जे मुडिया बसैं कासीसकलनागरिनागरि- सकल अंग सुंदर रूपसिंधुकी रासी । योग कटोरे लिए फिरतहौ मजनारि दरसोंतिहमारेकुबिजा कुमार भले हम जानें घरमें कसकी दासी । सूरदास यदुकुलहि लजावत भलीपनेहीं रँग रचोसांवरी ॥ राग सारंग॥ ऊधो तुम जो निकटके वासी। यह परमारथ बूझि कहां यौं मिटनी कर लिए लकु- योग रु ज्ञान ध्यान अवराधन साधन मुक्ति उदासी। नाम प्रकार कहा रथोंगे पठावै । सूरदासप्रभु उपासी ॥ परमारथी जहां लौं जेते निरहिनिके दुखदाई । सूरदास प्रभु आवतहीमैं।पहांनेमला- मगाई ॥९॥राग मलार॥ मधुप विराने लोगबटाऊ। दिनदशरहेआपनेकारणतसेखिचासी। निगम आदि भीतम हरि हमको सुधि पठई आयो योग अगाऊ । हमको योग भोगहैंने कुबिजामीसन्देसुस्त्र- छमाऊ ॥ जान्यो योग नंदनंदनको कीजै कौन उपाऊ। सूर श्यामकेहितेंदुर्नहहिंमाणरहे की जाऊ ॥ १० ॥ दिनदिन प्रीति देखिअत थोरी । सुनहु मधुप मधुबन बसि मधुरिपु कुल मर्यादा छोरी ॥गोकुलके मणि त्रिभुवननायक दासीसों रति जोरी । तापर लिखिलिखि योग पठावत बिसरी माखनचोरी ॥ काको मान परेखो कीजै बँधी प्रेमकी डोरी। सूरदास विरहिनि निरहा जरि भई सावरीगोरी॥११ ॥ राग आसावरी ॥जादिनतेगोपालचलेतादिनतेऊधोया व्रजके सुभाइ बदले ॥ घटे अहार विहार हर्ष हितु सुख शोभा गुणगान । उतल तेज सब रहित विधि आरति असम समान ॥ बाढी निशा वलय आभूषण उर कंचुकी उसांस।नैननजल अंजन अचलप्रति आवत मनधिकी आस ॥ अब यह दशा प्रगटके तनुकी कहवीजाइ सुनाइ । सूरदास प्रभुमोकीबोजिहिवो गिमिलहिंअब आइ॥१२॥राग गौरी ॥हमारीऊधोपीरनहरिबिन जाइ।

सूरदास गो: तौ मोहिं हरि मिलि जागौ देइ अतिदाइ ॥ कमलनैन मधुपुरी सिधारे हमहुँ न संग
मधुप हरि अब यह व्यथा कौन विधि भरिहै कोऊ देइ बताइ ॥ उदमद, यौवन आनि ठाढिकैकैसे
वता। जो ऽइ। सूरदास स्वामीकेमिलिवेतनुकीनपतबुझाइ॥ १३॥ राग मलार॥ गोपालहिवारेहीकी टेव।
दर्शन देन्याही कहाते सीखे चोरीके छल छेव ॥ तब कछुदूधदह्योलै खाते करिरहती हौं कानि।
नेवाजी। छु परन अब मोपे मनमाणिकही हानि॥ ऊधोनँदनंदनसो कहियो राजनीति समुझाइ।
देत ठगी करि जत नहिं लोभहि गुत नही यदुराइ॥ बुद्धिविवेक अरु वचनचातुरी पहिलैलई चुराइ।
पछिलो तप दके गुण ऐसे कासोकहिएजाइ॥ १४॥ राग सारंग ॥ बिसरतक्यों गिरिधरकीबातें। अवधि
गिनिके शिर रह्यो मधुप मन तजि न गयो घट तातें॥ हरिके विरह छीन भई ऊधो दोऊ दुख परे
नपरि सोहागरिपु काम चित्त रिपु लीला ज्ञानगम्य नहिं याते॥ श्रवणसुन्यो चाहतगुणहरिकोजोवे
हमहिं देव नेन लोचन रूप ध्यान धर्यो निशिदिन कहो घटैको काते॥ ज्यों नृप प्राण गए सुत
खेलन वारहमास रह्यो जो जाते। सूर सुमतितौही पै उपजै हरिआवैं मथुराते॥ १५ ॥ राग मलार॥ ऊधो
मुख छाडिकै लई छाती। मेरे मन रसिक लग्यो नँदलालहि झपत रहत दिन राती॥ तजि व्रज
विचारि करतहै रु जननी कठ लाइ गए काती। ऐसे निठुर भए हरि हमको कबहुँ न पठई पाती॥
ऐसो॥ ज्ञानिहीन रहै जिय मेरो होइ चातककी जाती। सूरदास प्रभु प्राणहि राखहु होइकरि बूँद
ऊधो कहा हमारी। गौरी ॥ हम तौ कान्हकेलिकी भूखी। कहा करैं लैनिर्गुणतुम्हरो विरहिनिविरह
पन हम घटि कन कहा इहै नहिं जानत कहो योगही योग। पालागौं तुमसे अपने पुर बसतबापुरे
यहि दुख आवे भरन चीर चारु बरु नेकु आपु तनु कीजै॥ दंड कमंडलुभस्मअधारीतौ युवतिन
कहहु कहा कहिए। ख दृष्टि धौ गोपिन क्यों धौं दृढ व्रत पायो। सूरदास यदुनाथ मधुपाते प्रेमहि
इहै परेखो आवे। ७॥ राग गौरी॥ तुमहिं मधुप गोपालदुहाई। कबहुक श्याम करत इहांको मन कैधौं
कत नगपति निठुराई॥ हम अहीरि मतिहीन बावरी हटकतहू हठि करहि मिताई। यो नागर
धरि मोहन लैल ना अँग भरे कपट चतुराई ॥ साँची कहहु देखश्रवणनसुख छाँडहु छिया कुटिल
संग समीप राति दिन प्रभु विरदलाज धरि मेटहु इहांके लोगहसाई ॥ १८ ॥ उद्धववचन॥ रागविहागरो॥
पिआवे॥ करु मीडति कह्यो पूरण ब्रह्म ध्यावो त्रिगुण मिथ्या भेश॥ मैं कहौं सो सत्यमानहु त्रिगुण
विरहिनि यहि दुख हु गुण सकल देहीजगत ऐसो भासि॥ ज्ञानबिनु नरमुक्ति नाही यहविपससार।
लीनो राज कुबरी पाव। णवरण अवगन सार॥ मात पितु कोउ नाहिं नारी जगत मिथ्या लाइ। सूरसुख
जाके हितको निर्गुणबेद कोजाइ॥ १९ राग सारंग॥ ऐसी बातकहौ जिनि ऊधो। नँदनंदनकीकानकरत
नतु आवन है कैसो॥ र सूधो ॥ बातनही उडिजाहिं और ज्यो त्यो हम नाहिन काची। मन
क्रम वचन विशुद्ध योगमत कमलनैन रँगराची॥ सो कछु जतन करौ पालागौं मिटै हृदयको
शूल। मुरलीधरै आनि दिखरावो बाढै प्रीति दुकूल॥ इनही बातन भए श्याम तनु अजहुँ मिल-
बतहौ गढि छोलि। सूर वचन सुनि रह्योठग्योसो बहुरि नआयोबोलि॥ २०॥ राग सोरठ॥ फिरिफिरि
कहा बनावत बातें। प्रातकाल उठि देखत ऊधो घरघर माखन खातें॥ जिनकीबात कहतहौ हमसों
सो है हमसों दूरि। इहां न निकट यशोदानंदन प्राण सजीवनमूरि ॥ बालक संग लिएदधि चो
खात खवावत डोलत। सूर शीशनीच्योंक्योनानत अनकाहेनहिंबोलत॥ २१॥ राग सारंग॥ फिरिफि
कहा सिखावत मौन। वचन दुसह लागत अलि तेरे ज्यों पजरेपर लौन ॥ सींगी मुद्रा
अधारी अरु आराधन पौन। हम अबला अहीर शठ मधुकर घरि जानहिं कहि कौन॥

जाइ तिनहिं तुम,सिखवहु जिनहिं यहै मत सोहत॥सूर आजलौं सुनी न देखी,पोत सूतरी पोहत
॥२२॥केदारा ॥रहिरहि,देख्यो तेरो ज्ञान।सुफलकसुत मधुपुर रसलंपट नोत्रकहन आयोज्ञान॥कृपा
पर अपलोक लागत कहत यह उपदेश।रूपकीरति होहु जानिन कहतचैन नरेश ॥ योगमत
अति निशद संगति होहि वांछित आम। सदा तनु श्राप भरें वे पुरुष तुमधाम॥ रसचरन कुन
सवास लैले जितति ऐसी रीति। कहन तिनसन धूम घोटन नाहिं चाहत प्रीति॥ आजहूं नाहिन
कहि सिरानो यह कथाको छेव।सूरधौखोतनकहरमदेसिलीन्ह्यो गेव ॥२३॥राग धनाश्री ॥ऊधोजी
हमहिं न योग सिखैए।जेहि उपदेश मिलै हरि हमको सोव्रतनेम वतैए॥ मुक्ति रहौ घर बैठि
आपने निर्गुण सुनि दुख पैए। जिहि शिर केश कुसुम भरि गूंद तहि कैसे भसम चढैए॥ जानि
जानि सव मगन भए हैं आपुनआपु लखैए।सूरदास प्रभु सुनहु नवौनिधि बहुरि कि या व्रज
अइए२४॥राग सारंग॥हम तो तबहीतेयोग लियो।जबहीतेमधुबनमधुबनको मोहनगवन कियो॥
रहित सनेह सरोरुह सततन श्रीखंड भस्म चढाए।पहिरि मेखला चीर विगतन पुनि पुलि फेरि
सिआए॥ श्रुति ताटंक नैन मुद्रावलि और अधार अधारी। दरशनभिक्षा मांगत डोलत
लोचनपत्र पसारी॥ नाथौं बेनु कंठ-शृंगी पिय सुमिरिसुमिरि-गुणगावत।नखव ..न-दटव..
तन सुनत,श्रवन दुख पावत॥गोरख शब्द पुकारत आवत रस बन ॥ अनुराग।भोग जुगति ...
गावनहिं भरी विरहबैराग ॥ भूली भई फिरति भ्रम,भ्रमक वननीभिन दिन रातिं । पारु
आवत कुबुबयारी सो ऊन सोगाति॥ परम गुरू रतिनाथ शार्थगहदियोप्रेम उपदेश। चतुर
भेटकी मथुरानाथसा कहियो जाइ आदेश॥ भोगीकोदेखहु यातजमे योग देनजोहिआए। देखी
सिद्धि तिहारे सिद्धकी जिन तुम इहां पठाए ॥ सूर सुमति प्रभु तुमहिं लावायो ... सोई ध्यान।
अलि चलि,और ठौर देखावहु अपनोफीकट ज्ञान॥२५॥राग मलार॥ऊधो कहिरहौ ... तबयोग।कहा
एतो नाद ठाने देखि,गोपीभोग ॥ शीश नेली केश मुद्रा कनकवीरी चीर। विरहभस्म चढाइ
बैठी सहज कथा चीर ॥ हृदय सींगी टेर मुरली नैन खप्पर हाथ । चाहते हरिदरश भिक्षा देहु
दीनानाथ ॥ योगकी गति युक्ति हमपै सूर देखौ जोइ ।कहत हमको करन योग सोयोग कैसो
होइ॥२६॥ऊधो योग तबहिते जान्यो।जादिनते सुफलकसुतके सँग रथ व्रजनाथपलान्यो॥तादि
नते सब छोह मोह गयो सुत पितु हेतु भुलान्यो। तजि मायासंसार तर्क जिय व्रजवनिता व्रत
ठान्यो॥ नैन मूंदि सुख मौन रहो धरि तनु तपतेज सुखान्यो। नंदनंदन मुरलीमुकुटधारि ह्वै
ध्यान हृदय आन्यो ॥ सोइ रूप योगी जेहि भूले जोतम योग बखान्यो।नखशिखमुख ध्यानकर-
तही अंत उनहिं,पहिचान्यो ॥ कहौ सुयोग कहांलै कीजे निर्गुणही नहिं जान्यो । सूरहि निज
रूप श्यामको हमनसाहसमान्यो॥२७॥जैत॥अलि कहा योगमें नीको।तजि रसरीतिनंदनंदनकी
सिखवत निर्गुण फीको॥देखति सुनति नाहिन कछु ... पानिज्योनिज्योंति करि धानति।सुंदरश्याम
कृपालु दयानिधि कैसे होविसरावति॥ सुनिरसालमुरलीकीसुरध्वनि सुरमुनिकौतुक भूले।अपनी
भुजा ग्रीवपर मेली गोपिनके मन फूले ॥ लोककानि कुलके भ्रम छाँडिप्रभुसंग वरवनस्थली। जब
तुम सूर सिखावन आएयोग जहरकी पली॥२७॥गौरी॥ऊधोयोग कहतहौ कहायोगकिय।श्याम
कमलनयन वसो मेरे जिय ॥ योग युगति साधिके जे तप योगिनि,योग,सिखायो।नाहकोफल
सगुण मूरती प्रगटहि दरशन पायो ॥ मकराकृत कुंडल छवि राजत लोल कपोलै । मोर
मुकुट पीत,वसन,वासुरी कर वोलै॥ऐसे प्रभु गुणनिधान कहा दखि जीजे ।राम श्याम निधि

पियूष नयनन भरि पीजै ॥ जो

ण क्यों गावे॥ २९ ॥ राग मलार

न शीश ॥ योगिन जाइ योग उपदेशहु जिनके मन दश बीस । एक चितएकेवहमूरतिपलनलगे दिन तीस ॥ काहेको निर्गुण ज्ञान गनत हौ जितजित डारत खीस । सूर हृदयमें बसत निरंतर त्रिभुवनपति जगदीस ॥ ३० ॥ राग

जरति हीं तुम आनि फूंकिदई॥योग

तिनकोसुनीयातु नई॥ध्यान धरत न

सिद्धिभई ॥ ३१

माती ॥ जब गिरि

न सो नहि हमहि

धरिकि मंगल मा

जो कोउ आवतज

प्रेमकी फाँसी ॥

लागेगाँसी ॥३३॥ राग

चलो लिवाइ ॥ सब उ

वह ओगाह्यो जाइ ॥

सँग कहत जाउ चतुराई

क्यों करि जो पतिनत

परिवारके धावत ॥ सुनिहै कथा कौन निर्गुणकी रचिपचि बात बनावत । सगुन सुमेर प्रगट देखियत तुम तृणकी ओट दुरावत ॥ हम जानत परपंच श्यामके बातनहीं बौरावत। देखी सुनी न अबलगि कबहूं जल मथि माखन आवत॥ योगी योग अपार सिंधुमें ढूंढेहू नहि पावत॥इहां हरि प्रगट प्रेम यशुमतिके ऊखल आप बँधावत ॥ चुप करिरहो ज्ञान ढकि राखो कत हो विरह बढावत ॥ नंदकुमार कमलदललोचन कहि को जाहि न भावत॥काहेको विपरीत बातकहि रावके प्राण गँवावत॥ सोहै सकित सूर अबलनि जिहि निगम नेति यश गावत ॥३५॥अथ मन अवस्थावर्णन राग मलार॥ मधुकर कहि कैसे मन मानै । जिनके एक अनन्य व्रत सूझे क्यों दूजो उर आनै ॥ यहतो योग स्वाद अलि ऐसो पाय सुधा खरिसानै । कैसे धौं यह बात पतिव्रतसुनि शठ पुरुष बिगनै ॥ जैसे मृगिअन ताकि वधिक दृग कर कोदंडगहि तानै॥हिंसाकरि पोषत तन गन सुख शिर अपराधनआनै॥बड विचित्र कुबिजाके रँगरंग

निर्गुण रतिभानीमधुप प्राण जिनि छानै ॥३६॥ राग मलार॥कहाँ

अपनेइननैनन अनदेखे बलबीर॥बरआंगननसुहात रैनिदिन बिसरे भोजन नीर॥दाहतदेहचंदचंदन है अरु वह मलयसमीर॥पुनिपुनि उठै सुरति आवतिचित चितवत यमुनातीर॥सूरदास कैसे बिसरतहै सुंदर श्यामशरीर॥३७॥राग देवगंधार॥बिनदारे क्यों राखेमनधीर॥एकबेर हरि दरश देखावहु सुंदर श्याम शरीर ॥ तुम जो दयालु दयानिधि कहियत जानतहो परपीर । बिछुरे प्राणनाथ ब्रज अबहींकत इग कतयदुबीर॥मत अपयशआनदुशिरअपने कठिन मदनकीपीर॥सूरदास प्रभु मिलन कहतहैं रवितनयाके तीर॥३८॥राग नट॥मेरोमन अनत कहां सचुपावै॥जैसे उड़ि जहाँ

जको पंछी उडि जहाज पर आवै ॥ जिहिमधुकरअमृतरसचाख्योक्योंकरीलफलभावै॥सूरदासप्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥ ३९ ॥राग सारंग॥ मनतोमधुपहीजोगह्यो।नवकोगयोबहुरिनहि आयो गहे गुपाल गह्यो॥राख्यो रूप चुराइ निरंतर सो हरि शोधु लह्यो।आए ओगमिलावन ऊधो मनदे लेहु मह्यो ॥ निर्गुण साटि गुपालहि माँगत क्यों दुख जात महयो। यह तनु यदि आधार आजुलगि ऐसेही निबह्यो ॥ सोई लेन छुडाइ सूर अब चाहत हृदयदह्यो॥४०॥राग सारंग॥ कहा भयो हरि मथुरा गये । अब अलि हरि कैसे सुख पावत तनु दोउ भाँति भए॥ इहां अटक अनि प्रेम पुरातन वहां अति नेह नए । उहां सुनियत नृपभेष इहां दिन देखिअत वेणु लए॥कहा हाथ परयो शठ अक्रूरके यह ठगठाट ठए॥अब क्यों कान्ह रहत गोकुल बिन योगनके सिखए॥राजा राज्य करो गृह अपने माथे छत्र दए॥चिरंजीव रहौ सूर नंदसुत जीजत मुख चितए॥४१॥अपनीसी कठिन करत मन निशिदिन । कहिकहि कथा मधुप समुझावत तदपि न रहत नंदनंदनबिन ॥ श्रवणसंदेश नयन बरषत जल मुख बतियां कछु और चलावत । अनकभाँति चित धरनि निठुरता मन तजि सुरति उहै जिय आवत ॥ कोटिस्वर्ग सम सुखउ न मानत हरिसमीप समता नहि पावत। थकित सिंधु नौकाके खग ज्यों फिरिफिरि फेरि वेई गुण गावत ॥ जेजे ज्ञान बिचारत अंतर तेइ तेइ अधिक अनल उरदाहत । सूरदास परिहरि न सकत तन वारक बहुरि मिलो है चाहत ॥४२॥ मधुकर ह्यांनाहिन मन मेरो ।गयोजुसंगनदंनदनकेबहुरि नकीन्होंफेरो॥ उनननन मुसकानि मोलले कियो परायो चेरो । जाके हाथ परयो ताहीको बिसरयोवासबसेरो॥ कोसीखि ता बिनु सुन सूरज योगजकाहू केरो ।भंदो परयो सिसाउ अनतले यदि निर्गुण मत तेरो॥ ४३ ॥ युक्तिआनि मंदमो मेली।समुझि सगुन ले चले न ऊधो यह तुमपे सब पुजी अकेली॥ के लगाइ अनतही येचो के लैराख जहाँ विषवेली।याहि लागिको मरे हमारे वृंदावन चरणनसोंढेली॥धरे शीश घगचर डोलनहो एक मति सब भई सहेली । सूरदास गिरिधरन छबीलोजिनकीभुजाकंठ गहि खेली॥४४॥ऊधो मनतौएकै आहि।लै हरि संग सिधारे ऊधो योग सिखावत काहि ॥ सुनि शठनीति प्रसून रस लपट अवलनिको पांचाहि।अब काहेको लोनलगावत विरहअनलकेदाहि ॥ परमारथ उपचार करतहो विरहव्यथाहै जाहि।जाको राजरोग कफ बाटत दह्यो खवावनताहि॥ अबलगि अवधि अलंबनकरिकरि राख्योमनहि मनाहि।सूरदास या निर्गुणसिंधुहि कौनसकेअवगाहि॥४५॥ऊधोमननभएदशबीस।एकहुतोसो गयो श्यामसगको अवराधे ईश॥इंद्री सिथिलभई केशोबिन ज्यों देही बिनशीश॥आशा लगी रहत तनु श्वासा जीजो कोटि वरीस॥तुमतोसखा श्यामसुंदरके सकल योगके ईश।सूरदास वा रसकी महिमा जो पूँछे जगदीश॥४६॥ऊधो जो मनहोन दियो।तो तुम्हरे निर्गुणको दीजे सो विधनानदियो॥एक जु हुतो मदनमोहनकोसो छविछीनि लियो ॥ अब वा रूपराशि बिनु मधुकर कैसे परतु जियो।जो तुम कह्यो सोइ शिरऊपरसूरश्याम पठयो । नाहिन मीन जिवत जल बाहर जो घृतमें मजियो॥४७॥ ऊधो यह मन औरनहोई। पहिलेही चढि रह्यो श्यामरँग छूटत नहि देख्यो धोई।कि तुम बचन कहे अलि हमसोंसोईकह जो मूल । करत केलि वृंदावन कुंजन वा यमुनाके कूल॥योग हमहि ऐसो लागत ज्यों तोचपेको फूल। अब क्यों मिटत हाथकी रेखे कहो कौन विधि कीजे॥सूर श्याम सुख आनि देखावहुजेहि देखे दिन जीजे ॥४८॥मधुकर मो मन

किशोर ॥ प्रेम बनिज कीन्हो हुतो नेह

जो हम प्रीति रीति नहि जानति तौ ब्रजराज तजी। हमरे प्रेम नेमकी ऊधो मिलिरसरीति लजी॥ हमते भली जलचरी वपुरी:अपनोनेम निवाह्यो॥ जलते विछुरि तुरत तनु त्याग्यो तउ कुलजलको चाह्यो॥ अचरज एक भयो सुन ऊधो जलविन मीन रह्यो। सूरदास प्रभु अवधिआश लगि मन विश्वास गह्यो॥ ४९॥राग मलार॥मधुकर ए मन विगरि परे। समुझत नहीं ज्ञानगीताको हरि मुसुकानि अरे॥ हरिपद कमल विसारत नाहिंन शीतलउर सचरे। योग गँभीर अंधकूपनसों ताहि जु देखि डरे॥बालमुकुंद रूपरसराते ताते वक्र परे। सूधे होहिं न श्वानपूँछ ज्यों कोटिक वेद मरे॥ हरि अनुराग सुहाग भरि अमीके गागर रे। सूरदास प्रभु ऐसी रहनदे कान्ह वियोग भरे॥ ५०॥ इहि उर माखनचोर गडे। अव कैसे निकसत सुनु ऊधो तिरछे ह्वै जो अडे॥ यदपि अहीर यशोदानंदन कैसे जात छंडे। वहां यादवपति प्रभु कहियत है हमें न लगत बडे॥ को वसुदेव देवकीनंदन को जानै को बूझे। सूर नंदनंदनको देखति और न कोई सूझे॥५१॥ राग केदारो॥ मनमें रह्यो नाहिंन ठौर। श्रीनंदनंदन अछत कैसे आनिये उर और॥ चलत चितवत द्योस जागत सपने सोवत राति। हृदयते वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति॥ कहत कथा अनेक ऊधो लोग लोभ दिखाइ। कहाकरौं मन प्रेमपूरण घट न सिंधु समाइ॥ श्यामगातसरोज आनन ललित गति मृदु हास। सूर इनके दरशको यलि मरत लोचन प्यास॥ ५२॥ राग सारंग॥ मधुकर श्याम हमारे चोर। मन हरिलियो तनक चितवनिमें चपल नैनकी कोर॥ पकरे हुते और, उर अंतर प्रेम प्रीतिके जोर। गए छँडाइ तोरि सब बंधन देगये हँसनि अकोर॥ औंझकि परी रैनि सो बीती दूत मिल्यो मोहिं भोर। सूरदास प्रभु सर्वसु लूट्यो नागर नवलकिशोर॥ ५३॥ अली अब ब्रजनाथ कछू करो। जा कारण ये देहधरी है तिहिके लेखे परौ॥ प्रथमहिं अर्पिदियो हम सर्वसु ए विरहिनि यों जरो॥ कोटि मुक्त वारौं मुसकनि पर योग वापुरो सरो॥सूर सगुन बाँटि दियो गोकुलमें अब निर्गुण को निसरोताकी छ्या छार कँटहरिया जो ब्रज जानों दुसरो॥ ॥ ५४॥ऊधो भली करी गोपाल। आपुनपे हरि आवत नाहीं विरमि रहे यहि काल॥ चंदन चंदहुते तव शीतल कोकिल शब्द रसाल। अव समीर पावक सम लागत सब ब्रज उलटी चाल॥ हार चीर कंकन कंटक भए तरनि तिलक भए भाल। सेज सिंधु गृह तिमिर कंदरा सर्प सुमन भए माल॥ हमतो न्याय इतौ दुख पावैं ब्रज वसि गोपी ग्वाल।सूरदास स्वामी सुखसागर भोगी भँवर मृणाल॥५५॥मलार॥हमको इतौ कहा गोपाल। नंदकुमार कमलदललोचन सुंदरबाहु विशाल॥ इक ऐसीही विरह रही लटि विन घनश्याम तमाल। तापर अलि पठएहैं सिखवन अवलन उलटी चाल॥लोचन मूदि ध्यान चित चितवनि धरि आसन मृगछाल।क्यों सहिजाइ जरे पर चूनो दूनो दुख तिहि काल॥डारि न दिए कमल करते गिरि दवि रहतीं ब्रजवाल। सूर श्याम अव यह न वूझिए विछुरि करी वेहाल॥ ५६॥ जब यह सुरति होतिहै वात। सुनो मधुप या वेदनकी रतिमन जानैं के गात॥रहत नहीं अंतर अति राखे कहत नहीं कहिजात। भई रीति हठि उरग छछूंदरि छोडे बने न खात॥ एकहि भाँति सदा या ब्रजमें वीततहै दिन रात। सूरदास प्रभुके मिलि विछुरन समुझिसमुझि पछितात॥५७॥सारंग॥यहबात हमारीकौन सुनै।जिन चाह्यो हरिरूप सुरति करि भूलि अँगारनि को चुनै॥इहां सेवनको ठौर न देखति ताते सुनि मनमें गुनै। कैमुख विग्रह वयारि पैनकी बैठे ठानै को धुनै॥ तव उन भाँतिन लाड लडाए अव बूझिए न यह उनै। थालि छाडिकै सूर हमारे अव नखाई को लुनै॥ ५८॥ ऊधो कहिए काहि सुनाइ।

हरि बिछुरे हम जिती सहतहैं तिते विरहके घाइ ॥ वरु मायो मधुवनहीं रहते कत यशुमतिके आए। कत प्रभु गोपवेष व्रज धारयो कत ए सुख उपजाए ॥ कत गिरि धरयो इंद्रगण मेटयो कत वन रास बनाए। अब कह निठुर भए अवलनिपर लिखिलिखि योग पठाए ॥ तुमपरवीन सबै जानतहौ ताते यह कहि आई। आदन कौन चलावै सूर जिनमात पिता बिसराई॥८९राग नट॥ ऊधो बात कही नहिं जाइ। मदनगोपाललालके विछुरे प्राण रहे मुरझाइ ॥ जब स्यंदन चढि गमन कियो हरि फिरि चितए गोपाल। तबहीं परम कृतज्ञ सबै सुठि संग लगीं व्रजबाल ॥ अब यह और सृष्टि विरहनकी बकतबाइ बौरानी। तिनसों कहा होत फिरि उत्तर तुम हौ पूरण ज्ञानी॥ अब सो साधन घट का कीजे को उपजै परतीति ॥ सूरदास कछु वरणि न आवे कठिन विरहकी रीति ॥ ९० ॥राग सारंग॥मधुकर जो तू हितू हमारो। पिवहि न रे यह वदन सुधारस छोडि योग जल खारो॥सुन शठ नीति सुरभि पयदायक क्यों व लेति हल भारो। जे भयभीत होहिं शृंग देखे क्यों व छुवहिं अहि कारो॥ निजकृत समुझि वेणु दशनन हति धाम सजत नहिं हारो। तावल अछत निशा पंकज-भ्रम दल कपाट नहिं टारो॥रे अलि चपल मूढ रस-लंपट कतहिबकतबेकाज।सूरश्यामछबिक्योंबिछुरतिहैनखशिख अंग बिराज ॥९१॥राग बिलावल॥ तुम्हारी प्रीति ऊधो पूरब जनमकी अब जु भए मेरे तनहुके गरजी। बहुत दिननते बिरमिरहे हो सँगते बिछोहि हमहिं गए बरजी॥ जादिनते तुम प्रीति करीही घटति न बढति तूलिलैहु नरजी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनबिनातनु भयोब्योंतबिरह भयोदरजी॥९२॥राग सारंग॥हमहिंबोलबोले-की परतीति। सुनु ऊधो हम नाहिंन जानत तुम्हरे गाँवकी रीति ॥ हमरे प्रीतम तुम जो लै गये आवन कह्यो रिपु जीति। तुम्हरी बोलनि कौन पतीजै ज्यों भुसपरकी भीति ॥ आवन अवधि बदी हरि हमसों सोऊ दिन गए बीति।सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि सुमिरि पुरातन प्रीति॥९३॥ राग सारंग॥ऊधो जो तुमहमहिं सुनायो।सोहम निपटकठिनई हठ करि या मनको समुझायो॥ युक्ति जतन जिति योग अंगहुगहि अपथ पंथ लेआयो।भटकिभ्रम्यो बोहितके खगज्यों पुनिपुनिहरि-जीपे आयो॥हमको सबै अहित लागतहैं तुम अतिहितहि जनायो। सर सरिता जल होम किएते कहा अग्नि सचुपायो॥अब सोई उपाउ उपदेशो जिहि जियजाइ जिवायो। वारक मिलै सूरके स्वामी कीजहु अपनो भायो ॥९४॥राग मलार॥ऊधो हरि कहिये प्रतिपालक। जे रिपु तुम पहि-ले हति छोडि बहुरि भए मम शालक ॥ अघ बकबकी तृणावर्त केशी ए सब मिलिव्रज घेरत । सूनो जानि नंदनंदन बिनु बैर आपनो फेरत ॥ अरु अपने परिहस मेटनको इन्द्र रह्यो करि घात। सत्वर सूर सहाय करै को रही छिनककी बात॥९५॥राग कल्याण॥ ऊधो तुम जानत गुन-हि यारी। सबकाहूके मनकी बूझो बांचो मूढ फिरो ढिग वारी ॥ पीत ध्वजा उनकी मनरंजन लाल ध्वजा कुबिजा बिबिचारी। यशकी ध्वजा श्वेत व्रजबांधि अपयशकी ऊधोपै कारी॥वे तोप्रेम पुंज मनरंजन हमतो शीशयोग व्रतधारी। सूर शपथमिथ्या लँगराई ए बातेंऊधोकी प्यारी॥९६॥ ॥राग मलार॥श्याम अब न हमारे। मथुरा गए पलटिसे लीन्हें मायोमधुपतुम्हारे॥अबमोहिंआ-वन पतु पछितावो कैसे वे गुण जात बिसारे। कपटी कुटिल काग अरु कोकिल अंत भए उडि न्यारे॥ करिकरि मोह मगन व्रजवासी प्रेम प्रतीति प्राण धन वारे। सूर श्यामको कौन पत्यैहै कुटिल गात तनु कारे ॥ ९७ ॥ अथ श्यामरंग वर्ण बरनते राग धनाश्री ॥ मधुकर कहा कारेकी जाति। ज्यों जल मीन कमल मधुपनको छिन नहिं प्रीति खटाति ॥ कोकिल

कपट कुटिल वायस छलि फिरि नहिं वह बन जाति। तैसेही रसकेलिरस अंचयो बैठि एकही पाँति॥सुतहित योग यज्ञ व्रत कीजतु बहुविधि नीकी भांति। देखहु अहि मन मोह मया तजि ज्यों जननी जनि खाति॥ तिनको क्यों मन विषयमें कीजे अवगुण लौं सुखसांति। तैसेसूरसुने यदुनंदन-बजी एकरस तांति ॥ ६८ ॥ राग धनाश्री ॥ श्याम सखी कारेहुमें कारे। तिनसों प्रीति कहाकहि कीजे मारग छांडि सिधारे ॥ लोक चतुर्दश विभव कहतहै पटहि पत्र जल न्यारे।सर-वर त्यागि विहंग उडे ज्यों फिरि पाछे न निहारे॥ तव चितचोर भोर ब्रजवासिन प्रेमनेमव्रतटारे। लै सरबस नहिं मिले सूर प्रभु कहिअत कुल्ट विचारे ॥ ६९ ॥ राग नट ॥ऐसे नंदराइके वारे। इतननि जिनि पतियाहु सखी री जितनेहैं तनुकारे ॥खेलतरंगसंग वृंदावन निमिषनहोतनिनारे। पहिले सुख दारुणभए हमको देइजु गए दुखभारे ॥ उरऊपर भीजत सारंगरिपुनैननीरवहुढारे। सूरदास प्रभु वेगि मिलहु किमि टरत नहीगुण टारे॥ राग सारंग ॥ मधुकर यहकारेकीरीति।मन दै हरत परायो सरवस करै कपटकी प्रीति ॥ ज्यों षटपदअंबुजकेदलमेंवसतनिशारतिमानि। दिनकर उए अनत उडिबैठे फिरि न करत पहिचानि ॥भवन भुजंग पिटारेपाल्योज्योंजननीजियतात। कुलकरतूति जाति नहिं कबहूं सहज सुडसि भजिजात॥ कोकिल काग कुरंग श्याम घन हमहि न देखे भावें। सूरदास अनुहारि श्यामकी छिनुछिनु सुरति करावें ॥ ७१॥राग मलार॥मधुकरदेखि श्यामतनु तेरो। या मुखकी सुनि मीठी वातें डरपतुहै मन मेरो ॥ कत ए चरण छुअत रसलंपट वरजतही वेकाज ।परसत गात स्रवत कुच कुंकुम यहउ करी कछुलाज॥ बुधि विवेक बल वचन-चातुरी सरवस चितै चुरायो। ऐसो धौ उन कहा विचारो जालगि तू ब्रज आयो॥अबकहिकहि आशा गावतहौ हमआगे ए गीत। सूर इतेपरि द्वार कहांहैजो परित्रिगुणअतीत ॥७२॥राग मलार॥ मधुप तुम दिखियतहौ अतिकारे। कालिंदीतट पार वसतहौ सुनियत श्याम सखारे ॥ मधुकर चिकुरभुअंग कोकिला,अवधि नहीं दिन टारे। वे अपने मुखहीके राते जियत उहे उनिहारे ॥ कपटी कुटिल निठुर निर्मोही दुखदे दूरि सिधारे। वारक वहुरि कबहुँ आवहुगे नैननि साध नि-वारे ॥ उनकी सुनै सु आपु विगोवै चितचोरत वटपारे। सूरदास प्रभु क्यों मन मानै सेवक करत ननारे ॥ ७३ ॥सारंग॥भूलतहौकतमीठीबातनि।एतोअलिउनहीकेसंगीचंचलचितसाँवरेगातनि॥ वे मुरलीध्वनि जगमन मोहत इनकी गुंज सुमन मधुपातनि। ए षटपद वे द्विपद चतुर्भुज काहूभाँ-ति भेद नहिं भ्रातनि ॥ वे नव निशि मानिनिगृह वासी एहु वसत निशि नव जलजातनि। वे उठि प्रात अनत मन रंजत एउडि करत अनत रसरातनि॥ स्वारथनिपुण सब रस भोगी जिनि पतिआहु विरह दुख दातनि। वे माधव ए मधुप सूर कहि दुहुँमें नहिंन कोउ घटि घातनि ॥ ७४ ॥ राग मलार ॥ विलग मति मानो ऊधो प्यारे। वह मथुरा काजरकी उबरी जे आवैं ते कारे॥तुम कारे सुफलकसुत कारे कारे मधुप भवारे। तिनहूंमांझ अधिक छवि उपजत कमलनैन मणिपारे ॥ मानो नीलमांटमें वोरे लै यमुना जु पखारे। तागुण श्याम भई का-लिंदी सूर श्यामगुण न्यारे ॥७५॥ ऊधो तुम सब साथी भोरे। मेरे कहे विलगु मानहुगे कोटि कुटिल लै जोरे ॥वे अक्रूर क्रूरकृत जिनके रीते भरे भरे गहि ढोरे। आपुन श्याम श्याम अंतर मन श्यामकाममें वोरे॥तुममधुकर निर्गुण निज नीके देखे फटकि पछोरे। सूरदास कारणके संगी कहां पाइयत गोरे ॥ ७६॥ राग भोपाली ॥ ऊधो हम दूबरी वियोग।प्रीतम हुते सोउ गएमधुवन र-वटाऊ लोग ॥ जो तुम वूझो व्यथा हमारी कहे वनै तुम आगे। देह विहार शृंगार नभावैमनत

हरिकाजे ॥ कारीघटा देखि अँधियारी सारंगशब्द नभावै। दिवसरैनिमोहिंविरहसतावैकबगोपाल घरआवै ॥ सूरदास स्वामी मनमोहन अब करिगए अनाथ । मन क्रम वचन वहांई वसतहैं जहां वसत यदुनाथ ॥ ७७॥ राग सोरठ ॥ऊधो यहहरिकहाकरयो। राजकाजचितदियोसाँवरेगोकुलक्यों विसरयो ॥ कत गिरि धरयो इंद्रमद मेटयो कत वै सुख उपजाए । अब कह निठुर भए अबलनिपर लिखि लिखि योग पठाये ॥ परमप्रवीन सकल विधि सुंदर ताते यह कहिआवत ।हमरी कहा चलै सुन सूरज मात पिता विसरावत ॥ ७८ ॥ राग नट॥यदपि मैं वहुतेयतन करे । तदपि मधुप हरि प्रिया जानिकै काहु न प्राण हरे ॥ सौरभ युत सुमनन ले निजकर संतत सेज धरे। सन्मुख सहति दरश शशि सजनी तिहिहूँ न अंग जरे ॥ मधुकर मोर कोकिला चातक सुनिसुनि श्रवण भरे । सादरह्वै निरखति रतिपति दृग नेक न पलक परे॥ निशिदिन रटत नंदनंदनको उरते छिन न टरे। अतिआतुर गुणसहित चमू सजि अंगन शर सचरे ॥ जानत नहीं कौन गुण यहितन जाते सबविडरे। सूरदासमकुचनश्रीपतिकी सुभटन वलविसरे७९॥ राग केदारो ॥जिहिदिनतजीब्रजकोभीर। कहाँएअलिलेखितुमसांससासुंदर धीर ॥ काम नृप शशि नेब अवलनि दूत दुर्ग समीर । सजै सेना विपुल बादर बदत बंदीकीर ॥ लता लघु जनु कुसुम सर कर कली कोटि तुणीर । वरुनवान वसंत करले वधतहै आभीर॥ मध्य द्रुम है फूल मानो कवच कंचन चीराकरि कुंभ कुंजर विटप भारी चमर चारु मयीर॥चमू चंचल चंचल नाहिन रहीहै पुरतीर समर मारुडु कीटकी रट सहत त्रिया अधीर । जन्म जातक व्याध व्यापक कहाँ कासों पीर सूर रसिकशिरोमणिहिबिन जरत यमुनानीर ॥ ८० ॥ रागकान्हरो ॥ हरिबिछुरनकी शूल न जाई। बलिबलि जाउं मुखारविंदकी वहमूरतिचितरहीसमाई ॥ एक समय वृन्दावनमहियां गहि अंचल मेरी लाज छिडाई । कबहुँकारहसि देत आलिंगन कबहुँक दौरि वहोरत गाई ॥ वे दिन ऊधो विसरत नाहीं अंबर हरे यमुनतट जाई।सूरदास स्वामी गुण- सागर सुमिरिसुमिरि राधे पछिताई ॥ ८१ ॥ राग नट ॥ मोहन माँग्यो अपनोरूप। यह ब्रज वसत अचे तुम बैठी ताविन उहां निरूप॥ मेरो मन मेरो अलि लोचन ले जु गये धुपिधूप । हमसों वदलो लेन उठिधाएमनो धारि कर सूप ॥ अपनो काज सँवारि सूर सुनि हमहिं बतावत कूप। लेवादेइ धराधरमें है कौन रंक को भूप ॥ राग सारंग ॥ पठवत योग कछू जियलाजन । तब ज्यों जतन तंत्र मृग मोहत अब कपटरूपकी बाजन ॥ जिय गहिलई कूरकै सिखए मोह होत कहुँ राजन। सब सुधि परी वचन कन ढोए ढके रहो मुखभाजन ॥ यह नृपनीति रह्यो कौनेहु युग नेह होत जस थानन । ताहू तजी सुरति नहिं आवति दुखपाए जन माजन ॥ करि दासी दुलहिनि भयो दूल्ह फिरत व्याहके साजन।सूर बडे भुव भूप कंस हतेबाकुविजाकेकाजन॥८२॥ राग मलार ॥ संदेशनि विरहव्यथा क्यों जाति । जबते दृष्टिपरी वहमूरति कमलवदनकी कांति ॥ अबतो जिय ऐसी बनि आई कहो कोउ केहु भांति । जोइ यह कहै सोई सो सुनो सखी युगवर रैनि विहाति॥ जौलौं न भेटों भुजभरि हरिको उर कंचुकि न सोहाति। सूरदास प्रभु कमलनयन विनु तलफति अरु अकुलाति॥८४ ॥ राग मलार ॥ संदेशनि क्योंनिघटतिदिनराति।कबहुंकश्याम कमलदललोचन कब मिलिहैं इहि भाँति ॥ खंजरीट मृग मीन सबै मिलि उपमाको अकुलाति। वारवार मैं वरजति ग्वालनि अपने मारग जाति ॥ सहस भाँति आपित कीरन सब एकौ चित न सुसमाति।सूरदास प्रभु संततहितते कहे सुनत नहिं बात॥ ८५॥गोपालहिं ले आवहु मनाइ।अबकी

बेर कैसेहू ऊधो करि छल बल गहि पाइ ॥ दीजो उनहिं सु सारि उरहनो संधिसंधि समुझाइ। जिनहिं छाँडि बदिआमहँ आए ते बिकल भए यदुराइ॥तुमसो कहा कहौंहो मधुकर बातैं बहुत बनाइ। बहियां पकरि सूरके प्रभुकी नंदकी सौह दिवाइ॥८६॥केदारा॥ ऊधो श्याम इहां लै आवहु। ब्रजजन चातक मरत पियासे स्वातिबूंद बरपावहु॥इहँते जाहु बिलंब करहु जिनि हमरी दशा जनावहु। घोप सरोज भए हैं संपुट होइ दिनमणि बिगसावहु॥जो ऊधो हरि इहां न आवहि तौ हमैं वहाँ बुलावहु। सूरदास प्रभु हमहि मिलावहु तब तिहुँ पुर यश पावहु॥ ८७ ॥ कहहु कहा हमते बिगरी। कौनै न्याइ योग लिखि पठए हम सेवा कछुऐ न करी॥पाखंड प्रीति करी नंद-नंदन अवधि अधार हुतीसो टरी॥मुद्रा जटा ऊधो लै आए ब्रजबनिता पहिरो सगरी॥जातिस्वभाउ मिटै नहिं सजनी अंत तऊबरी कुबरी॥सूरदास प्रभु बेगि मिलहु किनि नातरु प्राण जात निकरी ॥८८॥केदारा॥बिरही कहालौं आपु सँभारै।जबते गंग परी हरिपगते बहिबो नही निवारै॥नैननते बिछुरी भौहैं भ्रमि शशि अजहू तनु गारे। रोमते बिछुरी कमल कठ भए सिंधु भए जरि छारे ॥ बैनते बिछुरी बिधि अवधि भई बेदहिको निरवारे। सूरदास जाके सब अँग बिछुरे केहि बिधा उपचारे॥८९॥ राग मलार॥बहुत दिन गए माई हरिदरशन बिनु देखे।गनतहिगनत गई सुनिसजनी कर अँगुरिनकी रेखे ॥ अब इहि बिरह अगर जो करी हम बिसरी नैन निमेषे।होड परति सुनि सूरदास जनि पारहु उनहिंके लेखे॥९०॥राग धनाश्री॥ऊधो भली भई अब आए।बिधि कुलाल कीने काचे घट ते तुम आनि पकाए॥रँग दीनो हो काम श्याम लै अगअग चित्र बनाए।याते गरे न नैन मेहते अवधि अटापर छाए ॥ ब्रज करि अवाँ योग ईंधनसम सुरति आगि सुलगाए॥ फूंक उसास बिरह परजारनिसंग ध्यान दर शीश अराए॥ भरे सपूरण कलश प्रेमजल छुअन न काहू पाए। राजकाजतेगए सूरप्रभुनँदनंदन करलाए ॥ ९१ राग मलार ॥ऊधोभलीकरीइहांआए। तुम देखे जनु माधो देखे दुख त्रय ताप नशाए॥ नँद यशुदाको नातो नछूटत बेद पुराणन गाए । हम अहीरि तू अहिर लाख दश का भयोनिर्गुण गाए॥तबयहिघोप खेलावहु खेलहुऊखलभुजा बँधाए। सूरदास प्रभु इहै शूल जिअ बहुरि न दरश देखाए ॥ ९२ ॥ मधुकर कहि मधुवनकी रीति। राजा है यदुनाथ तिहारे कहा चलावत नीति॥ निशिलौं करत दाह दिनकर ज्यों हुतो सदा शशि शीति। पूरब पवन कहो नहिं मानत गयो सहज वपु जीति। कंसकाज कुबिजाके मारयो भई निरंतर प्रीति॥सूर बिरह ब्रज भलो न लागत जहीब्याहु तहीगीति॥९३॥राग केदारा॥ हरि बिनु नाहिंन परत रहो। उत गिरि दुर्ग इतहि दव दारुण क्योदुरा जात सहो ॥ उठन बिरहा धूम पावक जरि वरि बाउ बहो।हरि नागरि फिरि फूंक प्रजारनि पलकनि हृदय दहो॥ यद्यपि घृत लै आयो ऊधो योग सँदेश कहो।तद्यपि भस्म न होत सूर सुनि चलत गुपाल चहो॥९४॥राग मलार॥माधोजी नेक देखाईदेहु।जोयातनमेताकेयदलेंजोचाहोसोलेहु॥भूलीफिरत ठगीसी तबते बिनु वल्मति गुण गेहु। जबतेइनअपराधी नयनन वरजत कियो सनेहु ॥ कहियो जाइ मधुप पालागी बिरह कियो तनु गेह।रहत आग सुनिसूरदरशके निशिदिनइहैसँदेहु ॥९५ ॥ गौरा॥ब्रज होइहै कब हरिको आनन। नीके बचन सुनाउमधुपमोहिं बिरहव्यथा बिसरावन ॥ हौं इहबात कहा जानौ प्रभु जातमधुपुरी छावन । अपनीचूकमानिउरअंतरअबलागीदुखपावन ॥ अहनिशि सूरज घरी भई हो तनु श्वासै शशि तानन। या ब्रजकरपिअम्बिरऊपररहो दुमह घन सावन॥९६॥सारंग॥ऊधो जोहरिआवैंतोप्राणरहैआवत जातउलटिफिरिबैठत जीवतऔधिगहै ॥

जब बइ दामन ऊखल बँधि वदन नवाइ रहोचुभि जु रही नवनीतचोर छवि क्यों भूलति ज्ञानकहे॥ तिनसों ऐसी क्यों कहि आवति जो कुल त्रास सहोसूर श्याम गुणरसनिधि तजिकै क्यों घट नीर वहे॥९७॥उद्धववचन॥रागनट॥जबलगि ज्ञान हृदयनहिं आवोतोलगिकोटिजतन करे कोऊ विन विवेक नहिं पावे॥ विना विचार सबै सुपनेसो मैं देख्यों सो जोईानाना दारु बसे ज्यों पावक प्रगट मथेते होई॥तुम इक कहत सकल घट व्यापक अरु सबहीते नीरे । नखशिखलों तनु जरत निशादिन निकसि करत किन सीरे॥वातें कहत सबै सांचीसी मुँहमें लेहो तुरसी । सूर सो औषध हमहिं वतावत ज्यों पितज्वरपर गुरसी. ॥९८ ॥गोपीवचन ॥राग सारंग॥ तुम जो कहत हरि हृदय रहतहैं। कैसे होइ प्रतीति मधुप सुनि ए इतनी जु सुनतहैं ॥ वासर रैनि कठिन विरहागिन अंतरप्राणदहत हैं ।प्रजरि प्रजरि मनु निकसि धूम अति नैनन नीर वहतहैं॥ कठिन अवज्ञाहोतदेहदुखमर्यादा न गहतहैं। कहे व क्यों माने मन सूरज ए वातें जु कहतहैं॥९९॥राग सारंग॥ जोपै हिरदयमाँझहरी। तोपै इती अवज्ञा उनपे कैसे सही परी ॥ तव दावानल दहन न पायो अब यहि विरह जरी । वरते निकसिनंदनंदन हम शीतल क्यों न करी॥ दिनप्रतिइंद्रनैनजलवरषत घटतन एक परी। अतिहीं शील भीत भीजत तनु गिरि कर क्यों न धरी ॥ कर कंकन दर्पण ले देखौ इहि अति अनख भरी। क्योंजीवहिंसुयोग सुनि सूरज विरहिनिविरहभरी॥८९०० ॥राग सारंग.॥तुमघटहीमों श्याम वताए । लीजे सँभारि सकल सुख अपने रासरंग जे पाए॥ जो सम दृष्टि आदि निर्गुणपद तौकत चित्त चोराए। मोहन वदन विलोकि मानि रुचि हँसिहाँरकंठलगाए॥ हम मतिहीनअजान अल्प मति तुम अनुभौ पद ल्याए । सूरदास तेहि वनिज कवन गुण मूलहुमांझ गवाँए ॥ १ ॥ राग सारंग॥ इनि वातनके मारे मरियत । निर्गुण ज्ञान मधुप लेआए विनिगोपालकैसेनिशितरिचत॥ सबै अटपटी कहरे मधुकर सुनि देखी मधुवनकी रीति। कौन हाल हमरेब्रजवनितन जानतनहीं विरहकी रीति ॥ वुझी अगिनि वहुरी सुलगाई अंतर्गति विरहानल जारत । सूरदास स्वामी सुखसागर मिलि काहे न तनु ताप निवारत ॥ २ ॥ राग नट ॥ वातें कहत वनाइवनाइ। रंचक विरह इते यह गोकुल मधुकर मेटयो आइ ॥ कमलनैनकी मोहन लीला रहति रहीं गुण गाइ । ओछी पूँजी हरे ज्यों तस्कर रंक मरे पछिताइ ॥ भली करी हमको लेआए पठये योग सिखाइ । सूरदास स्वामी यह घाली निर्गुण कथा सुनाइ ॥ ३ ॥ राग बढ़ोस ॥ ऐसो योग न हमपै होई। सुनिकै वचन तुम्हारो ऊधो नैना आवत रोई ॥ कुटिल कुंतल मुकुट कुंडल रही छवि छवि पोई ॥ सूर प्रभुविन प्राण रहे नहिं कोटि करे किन कोई ॥४॥ राग सारंग॥ मधुकर कह्यो संदेश सिधारो। विनु उपदेश सहजही योगी सुधारि रह्यो ब्रज सारो॥ जाको ध्यान धरत गौरीपति योग युक्ति करि हारो। सो हरि वसतसदाहृदयमें नेक टरतनहिंटारो ॥ इहउपदेश आपनो ऊधो राखो ढाँपि सवारो । सूर श्याम जानतभलेजियकी जोनिजहितू हमारो॥५॥राग सारग ॥ ऊधो हमें कहा समुझावहु। पशु पंछी सुरभी ब्रजकी सब देखि श्रवण सुनि आवहु॥तृण न चरत गो पिवत न सुत पै ढूंढत वनवन डोलें।अलि कोकिल दे आदि विहंगम भीतभयानक बोलें॥ यमुना भई श्याम श्याम विनु अंध छीन जे रोगी ।तरुवर पत्र वसन न सँभारत विरह वृक्ष भए योगी॥गोकुलके सब लोग दुखित हैं नीरविना ज्यों मीन । सूरदास प्रभु प्राण नछूटत अवधि आशमें लीन ॥ ६ ॥ राग नट ऊधो अवधिआश गई। योगकी गति सुनतमेरेअंगआगिनई ॥धरत हृदय न टरत मूरति तिहूँताप तई। हम सुलगिसुलगि रहतही तुम फूँकि आनि दई ॥ सिंह गज

तजि चरत तृण ते सुनत बात नई। अब भोग कुविजा सुंदरीसों कौन बुद्धि दई॥ नैननीर प्रवाह सरिता ज्वालजाल छई।सूर प्रभुकी कृपा जाको सकल सिद्धि भई॥७॥हमसों उनसों कौनसगाई। हम अहीर अबला ब्रजवासी वैयदुपति यदुराई॥कहा भयो जु भए नँदनंदन अब इहपदवी पाई। सकुच न आवत घोष बसतकी तजि ब्रज गए पराई॥ऐसे भए वहां यादवपति गए गोप बिसराई। सूरदास यह ब्रजको नातो भूलिगए बल भाई॥८॥ राग सोरठ ॥हरिनिर्मोहियासोंप्रीतिकीनी काहेन दुख होई। कपटकी करि प्रीति कपटी लैगयो मन गोई॥सींचिआ मजीठ जैसो निकट काटी पोई।हमारे मनकी सोई जानैं जामें बीती होई॥कालवदनते राखिलीन्हीं इंद्रगर्व जे खोई। सूर गोपिन ऊधोआगे डहकिदीन्हों रोई॥९॥ऊधो तुम यह मत ले आए। इकहम जरें खिझावन आए मानो सिखै पठाए॥ तुम उनके वे नाथ तुम्हारे प्राण एक इकसारे। मित्रके मित्र सजनके सज्जन ताते कहत पुकारे॥ रे सुन मूढ जरत अबलनको परदुख तू नहिं जाने। निपट गँवार होइ जो मूरख सो तेरी बातैं मानैं॥ हम रुचिकरी सूरके प्रभुसों दूजो मन न सुहाई। उलटि जाहि अपने पुरमाहीं बादिहि करत लराई॥१०॥मारू॥हरिमुखदेखहीपरतीति।जोतुम कोटिभांति परबोधो योग ध्यानकी रीति॥ नहिंनें कछू सयान ज्ञानमें इह नीके हम जानें।कहो कहा कहिये वा प्रभुसों कैसे मनमें आनें॥ इहै मन एक एक वह मूरति भृंगी कीट समानें।सूर शपथदै ऊधो पूंछो इहि ब्रज कौन सयानें॥११॥ऊधो बात तिहारी को सुनें।हरिपदपंकज मन मधुकर गह्यो मनबिन बात कछू न बनें॥ योग युक्तिको बडो बिस्तारहै ऐसे ठौर नहिं अपने। ब्रजबासिनको इतनो हियोहै कृष्णलेत संकोच बनें॥ तहांजाउ जहां बैठे योगी इहां कामरस रहो धनें। हम अहीर कृष्णमदमाती मुखसों क्यों मित्रपनें॥ जो तुम जानत तत्त्व कृपाला मौन रहो तुम घर अपने। घर घर फिरत लेव लेव नाही वस्तुको मोलहनें॥ भूख न प्यास नीद गई हरिबिनु पति सुत गृहकी कौन तनें। माया और छूटगए यमुना अधिक कहालौं योग बनें॥ सो हरि प्राण प्रणत वल्लभ मोहनलीला हैं अकनें। आवत है कछु कह्यो सूरप्रभु नहितो रहो तुम मौन बनें॥१२॥ राग मलार॥ बातन को परतीति करै। को अब कमलनयन मूरति तजि निर्गुण ध्यान धरै॥ जो मत वेद कहत युग बीते रूप देख बिन जाने। सो मति मूढ कहत अबलनिसों नहिं सो हृदय समानें॥जो रस काज देवमुनि चिंतत ध्यान पलक नहिं आवत।सोइरस सूरगाइग्वालन सँग मुरलीलेकरगावत॥१३॥राग सारंग॥ नहीं हम निर्गुण पहिंचानि। मन मन सार स्वरूप सिंधुमें आपनो हम सानि॥ यद्यपि अलि उपदेशत ऊधो पूरण ज्ञान बखानि। चित चुभिरही मदनमोहनकी जीवन मृदु मुसुकानि॥ जुरचो सनेह नंदनंदनसों तजि परमिति कुलकानि। छूटत सहज न सूरज प्रभु दुख सुखहि लाभ करिहानि॥ १४ ॥ ऊधो जाइ बहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नंदकुमार। इह न होइ उपदेश श्यामको कहत लगावन छार॥ निर्गुण ज्योति कहां उनपाई सिखवत बारंबार। कालिहिकरतहुते हमरे अंग अपने हाथ शृंगार॥ व्याकुलभई गोपालहि बिछुरे गयो गुन ज्ञान सँभार। ताते जो भावे सो वकतहौ नाहिन दोष तुम्हार॥बिरह सहनको हम सरजी है पाहन हृदय हमार।सूरदास अंतर्गति मोहन जीवन प्राण अधार॥१५॥ अलि तुम योग बिसरि जनि जाहु। बांधो गाँठि छूटि परिहै कहूँ बहुरि वहां पछिताहु॥ ऐसी वस्तु अनूपम मधुकर मन जिनि जानहु और। ब्रजबनिताके नाहिं कामको हैतु म्हरे पै ठौर॥ जो हितु करि पठए मनमोहन सो

हम तुमको दीन्यो। सूरदास ज्यों विप्र नारि पर करहि वंदना कीन्यो ॥१६॥ ज्ञान योग अबलनि अहीरिसों कहत न आवे लाज। ऊधो सखा श्यामके कहियत पठए हो वे काज॥ जा लायक जो बात होइ सो तैसिये तासों कहिये। विना नाद संगीत सुधानिधि मूढहि कहा सुनइये॥ हम जानी जु विचार पठाए सखा अंग परवीन। सुखदेहैं मोहन कहि बतियां करत योग आधीन॥ मुरली अधर मोरके पाखें जिन इह मूरति देखि। सोच कहा जानें निर्गुणको सोहै भीति चित्र अवरेखि॥ पालागौं तुम बडे सयाने अनबोलेही रहियो। सिखये योग सूरके प्रभुको उनहींसों फिरि कहियो॥१७॥ राग धनाश्री॥ऊधो काहेकोभक्त कहावत।जोपैयोग लिखि पठयोहमकोतुमहु न भस्म चढावत॥ सींगीमुद्रा भस्म अधारी हमहीको कहा सिखावत।कुविजा अधिकश्यामकी प्यारी ताहि नहीं पहिरावत॥यहतौ हमको तबहिं न सिखयो जब तेगाइ चरावत।सूरदास प्रभुको कहियोअबलिखि लिखि कहापठावत॥१८॥न्ट॥ऊधो न विरहिनि न हम तुमदास।कहतसुनत घट प्राण रहतहैं हरि तजि भजहु अकास॥ विरही मीन मरे जल बिछुरे छाँडि जीवनकीआस। दासभाव नहिं तजत पपीहा बरुसहि रहत पियास॥ पंकज परम कमलमें विहरत विधि कियो नीर निरास। राजिव रविको दोष न मानत शशिसों सहज उदास॥ प्रगट प्रीति दश रथ प्रतिपाली प्रीतमको बनवास। सूर श्याम सो पतिव्रत कीन्हों छाँडि जगत उपहास॥ १९ ॥ ऊधो विनती सुनो इक मेरी। तबके बिछुरि गए नँदनंदन कामवेन्दली घेरी॥ देखो हृदय विचारि तुमहिं अब प्रीति रीति सबकेरी। जहां जाकी निधि तहां सब सौंपे ज्यों मृगनाद अहेरी॥ वेदशमास रतन रस बसते शशि बिनरैनिअँधेरी।सूरदास स्वामी कब आवेंबास करनब्रजफेरी॥२०॥ ॥राग सारंग॥ मधुकर कहा प्रवीन सयाने।जानत तीनि लोककी महिमा अबलनि काजअयाने॥ जे कच कनक कटोरा भरिभरि मेलत तेल फुलेल। तिन केशनको भस्म चढावत टेसू कैसे खेल॥ जिन केशन सबरोगहि सुंदर अपने हाथ बिनाइ। तिनको जटा कहा नीकी हैं कहु कैसे कहि आइ॥ जिन श्रवणन ताटंक सुभी औ करनफूल खुटिलाऊ। तिन श्रवणन कश्मीरी मुद्रा ले ले चित्र झुलाऊ॥भालतिलक अंजन चख नासा बेसरि नथमें फूली। ते सबतजिअलि कहत मलनमुख उज्ज्वल भस्म सुली॥जिहि मुख गीत सुभाषित गावत कहति परस्पर गास। ता मुख मौन गहे क्यों जीजे छूटत ऊरध श्वास॥कंठ सुमाल हार मुक्ताके हीरा रत्न अपार।ताहू कंठ बाँधिबे कारण सींगी योग शृंगार॥ कंचुकि छीन छीन पटसारी चंदन सरस सुछंद।अब कंथा एके अति गुदरी क्यों उपजी मतिमंद॥ ऊधो ऊधो सब पालागें देखो ज्ञान तुम्हारो। सूर सु प्रभु मुख फेरिदेखिहैं चिरजीवे कान्हहमारो॥२१॥हमतो दुहूँ भाँति फल पायो।जो गोपाल मिलें तो नीको नातो जगत यश गायो॥ कहा हम या गोकुलकी गोपी वरणहीन घटि जाति। कहँ वे श्रीकमलाके वल्लभ मिलि बैठी इकपांति।निगम ज्ञान मुनि ध्यान अगोचर सो भए घोष निवासी। ता ऊपर अब कहीं देखियो मुक्ति कौनकी दासी॥ योग कथा ऊधो पालागों नाकहु बारंबार।सूर श्याम तजि और भजे जो ताकी जननी छार॥२२॥रागमारू॥मोहिं अलि दुहूँ भांति फल होति। तब रस अधर लेत जो मुरली अब भइ कुविजा सौति॥तुम जो योग मत सिखवन आए भस्म चढावन अंग। इन विरहिनिमें कहूं तू देखी सुमन गुहाए मंग॥ कानन मुँद्रा पहिरि मेखला धरेंजटा योग अधारी। इहां तरल तरिवना काके अरु तन सुखकी सारी॥ परमवियोगनि रटत रैनिदिनधरिमनमोहनध्यान।तुमतौचलौबेगि मधुबनको जहाँ योगकोज्ञान॥

निशिदिन जीजतुहै या ब्रजमें देखि मनोहर रूप।सूर योग ले घरघरडोलौ लेहुलेहु ज्योंसूप॥२३॥ राग नट॥जोपै अलि मथुराहू लैजाहु।आरति हरौ श्रवण नैननकी मेटहु उरके दाहु॥ बुधि बलवचन जहाज बांह गहि विरह सिंधु अवगाहु।पार लगावहु मधुरिपुके तट चंद्र तज्यो जनु राहु॥ देखहु जाइ रूप कुबजाको सहि न सकत यहु घाहु।जीवन जनम सफल करि लेखहिं सूर सबनउत्साहु॥२४॥ लै चल ऊधो अपने देश। मदनगोपाल मिलन मन उमह्यो कौन बसै इह यदपि सुदेश ॥ वह सूरति मेरे हृदय बसतहै मुरली अधरपुट कुंतल केश।कुंडल लोल तिलक मृगमद रचि गावत नृत्यत नटवर वेश॥ कहा करौं मोपै रह्यो न जाइ छिन सब सुखदायक बसत विदेश। सूरज श्याम मिलन कब ह्वैहै दूरि गमन ब्रजनाथ नरेश॥२५॥राग बिहागरो॥ ऊधोलै चलु रे लै चलु रे।जहां बसैं सुंदर श्यामबिहारी लैचलु रेतहांलै चलु रे॥आवनआवन,कहिगएऊधो करिगए हमसोंछलुरे।हृदय-की प्रीति श्यामजी जानत केतिक दूरि गोकुल रे॥ आपुन जाइ मधुपुरी छाए वहां रहे हिलि-मिलि रे।सूरदास स्वामीके बिछुरे नैन नीरपर वलुरे॥२६॥राग सारंग॥गुप्त मतेकी बातकहो जिनि काहूके आगे। कै हम जानैं कै तुम ऊधो इतनी पावहिं मांगे॥ एक वेर खेलत वृंदावन कंटक चुभि-गयो पांइ। कंटेकसों कंटक लै काढ्यो अपने हाथ सुभाइ॥ एकदिवस विहरत बन भीतर मैं जु सुनाई भूँख।पाके फल वे देखि मनोहर चढे कृपाकरि रूख॥ ऐसी प्रीति हमारी उनकीबसते गोकुल वास।सूरदास प्रभु सब बिसराई मधुवन कियो निवास॥२७॥राग मलार॥ऊधो कत ए बातें चाली। कछु मीठी कछु मधुरी हरिकी वे अंतर सब शाली ॥ तब ए बेली सींचि श्याम घन अपनी करि प्रतिपाली। अब ए वेली सूखत हरिबिनु छाँडिगए वनमाली॥ जबहीं कृपा हुती यदुपतिकी रहसि रंग रसरास सुखाली।सूरदास प्रभु तब न मुई हम जिवहिं बिरहकी जाली॥८२॥ रागनट॥ऊधो इहै बिचार गहो। कै तन गए भलो,मानै मन कै हरि ब्रज आइ रहो॥ कानन देह विरहदौ लागी इंद्री जीव जरै। बूझि श्यामघन प्रेम कमलमुख मुरलीवृंद परै॥ चरणसरोवर माहिं मीन मन रहत एक रसरीति। तुम निर्गुणबश तामैं डारत सूर कौन यह नीति॥२९॥ऊधो हम लायक शिख दीजै। यह उपदेश अग्निते तातो कहो कौन बिधि लीजै॥ तुमहीं कहो इहां इतननमहिं सीखनहारी को है। योगी यती रहित मायाते तिनहीं यह मत सोहै॥ कहा,सुनत विपरीति लोकमहिं यह सबकोई कैहै॥ देख्यो धौं अपने मन सबकोइ तुमहीं दूषण दैहै। स्रक चंदन बनिता विनोदरस क्यों बिभूति वपु माजे। सूरदास शोभा क्यों पावत आंखि आंधरीऑजे॥३०॥राग धनाश्री॥ऊधो हम लायक हमसों कहो।बात विचारि सोहाती कहिए कै अन-बोले ह्वै रहो॥ भली कहे तुमको अतिशोभा अरु सबही पाइ लहो। यह बिपरीति बूझिए तुमको कंध जूव सुरभिनहो॥ एतेपर पुनिपुनि शिखवतहौ योगरत्न हढकरि गहो।सूर कहै अलि पूरो दीजै निपटहि बातनि मति बहो॥३१॥सारंग॥ कबहूं वै ऊधो बात कहो।तजहुसोच मिलिहैंनँदनंदन हितकरि दुखनि दहो॥तुम हरि समाधानको पठए हमसों कहन सँदेश। अधिक आनि आरति उपजाई कहि निर्गुण उपदेश॥ इक अति निकट रहत अरु निजयुत जानत सकल उपाई। सोइ करहु जिहि पावहिं दरशन छाँडहु अगम सुभाई॥ हम किंकरी कमललोचनकीबशकीनीमृदुहास। सूरदास अब क्यों विसरतहै नखशिख अंग बिलास॥३२॥राग मलार॥ सब जल तजे प्रेमके नाते। चातक स्वाति बूँद नहिं छाँडत प्रगट पुकारत ताते॥ समुझत मीन नीरकी बातें तजत प्राण हठि हारत। जानि कुरंग प्रेम नहिं त्यागत यदपि व्याध शर मारत॥ निमिष चकोर नैन नहिं

लागत शशि जावत युग वीते। ज्योति पतंग देखि चहु जारत भए न प्रेमवटरीते॥ कहियअलिवयों विसरति वे बातें सँग जो करी ब्रजराजे। कैसे सूर श्याम हमें छाँडें एक देहके काजे॥२३॥ ऊधो जो हरि हितू तुम्हारे। तौ तुम कहियो जाइ कृपा करि ए दुख सबै हमारे॥ तनु तरुवर उर श्वास पवनमें विरह दवा अति जारे। नहिं सिरात नहिं जात छार ह्वै सुलगिसुलगि भए कारे॥ यद्यपि प्रेम उमँगि जल सींचे वरपिवरपि घन हारे। जो सींचे यहिभाँति जतन करि तो एते प्रतिपारे॥ कीर कपोत कोकिला चातक वधिक वियोग विडारे॥ क्यों जीवें यहि भाँति सूर प्रभु ब्रजके लोग विचारे॥२४॥ राग धनाश्री॥ हमें तो इतने हीसों काज॥ केसेहुं अलि कमलनैनको ब्रज लै आवहु आज॥ और अनेक उपाव तुम्हारे सकल करहु सुख राज। कैसे हैं निवहत अवलनपै कठिन योगके साज॥ नखशिख सुभग श्यामघन तनको दरशन हरति विथाज। सूरदास मत रहत कौन विधि वदनविलोकनि वाज॥२५॥ अब हरि कौनके रस गीधे। सकत नहीं निरवारि ऊधो शशि वदरी ज्यों वीधे॥ वरतहीन नवल डुलाई तजी सकल कुलकानि। अंधकरि छाँडी भए गहिल वान फून लकुट विनपानि॥ जतन धुरि निर्गुणभए सव नरकी अभिलाषविनाचरणसरोज देखे॥२६॥ राग कान्हरा॥ हरि ठाकुर लोगनसों मधुकरकहो काहेकी प्रीति। ज्यों कीजे तो होइजलधर रविकी ऐसी रीति॥ जैसे मीन कमल चातकही ऐसे दिन गए वीति। तरफत जरतपुकारत निशिदिन नाहिन कछु इहां नीति॥ मन हठ परयो कमंद जोधालौं हारेहु नाहीं जीति। रुकत न प्रेम समुद्र सूर वल वारूहीकी भीति॥२७॥ राग सारंग॥ को गोपाल कहांके वासी कासों हैं पहिचानि। तुम संदेश कौनके पठये कहत कौनके आनि॥ अपनी चोप मधुप उडि वैठत भौर भले रस जानि। पुनि वह वेलि वढो के सूखो ताहि कहा हितहानि॥ प्रथम वैन मन हरयो अहिरनको राग रागिनी ठानि। पुनिवह वधिक विश्वासघाती हनत विषम शरतानि॥ पय प्यावत पूतना विनाशी छले जु वलिसे दानि। शूर्पनखा ताडका निपाती सूरदास यह वानि॥२८॥ राग मलार॥ मधुकर कौन मनायो मानै। अविनाशी हरि अंग तुम्हारो कहा प्रीतिरस जानै॥ सिखवहु जाइ समाधि योग रस जे सव लोग सयाने। हम अपने ब्रज ऐसेहि रहिहैं विरह वाइ वौराने॥ जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि रहिहैं रूप पराने। वारक वालकिशोरी लीला शोभा समुद समाने॥ जिनके तन मन प्राण सूर सुनि मुखमुसकानि विकानै। परी जु पयनिधि अल्प बूँद जल सु पुनि कौन पहिचानै॥२९॥ राग सारंग॥ हरिसुत सुत हरिके तनु आहि। तहांको कहै कौनकी वातें ज्ञान ध्यान सुमिरै को काहि॥ को मुख ममतारस युवतीको को जिनि कंसहते। हमरे तो गोपतिसे अधिपति वनिता औरनते॥ गोरज रंध्र रूप रुचिकारी चितैचितै हरिहोत। कवहुंक करनी समेतिले नैकन मानके सोत॥ ता रिपु सभे संग शिशु लीन्हें पय आवत तनुघोप। सूरदास स्वामी मनमोहन कत उपजावत दोप॥४०॥ अब हरि और भए माई इतनी दूरि। मधुकर हाथ सँदेशो पठयो चतुर चातुरी धूरि॥ रूपराशि सो सबै गुण परमिति श्याम सजीवन मूरि। तिनसों कहत मनहि मन समझहु हैं सबही भरिपूरि॥ इक सुनि सूर ऐसेहि या तनको रहो विरह झकझूरि। तापर छपद कियो चाहत है कोइलाहूते धूरि॥४१॥ राग कान्हरो॥ कहा जानैं कोऊ परपीर। नँदनंदनके विछुरे सखि री जैसी सहो शरीर॥ कहिकहि कथा मधुप समुझावत मन राखहु धरि धीर। नैनमीन कैसे सचुपावत विनदरशन हरिनीर॥ योगसमाधि कहा हम जानैं ब्रजवासिनी अहीर। सोइ कीजे जो मिलैं सूर प्रभु भव ऋतु रंगनितीर॥४२॥ हम प्रिय मृतक

जिवत शशि साखी।तुम अलि रविहित कमल विशेषी हरे विकल मधुमाखी॥ मुरलीअधरसुधा ध्वनि सुनि सुख संच्यो श्रवणदुआर। मधुहारी अक्रूर वधिक मुख अवधि लगाई छार ॥ मनको विरह नैन कहा जानै श्रुति मत तुही सुनावै। सूर भस्म अँग लगी कुटिलता तरु योगै गुण गावै ॥ ४३ ॥ राग रामकली ॥ हमारी सुरति लेत नहिं माधो। तुम अलि सब स्वारथके गाहक नेह न जानत आधो ॥ निशिलौं मरत कोशअभ्यंतर जो हित कहो सु थोरी।भ्रमत भोर सुख ओर सुमनसँग कमल देत नहिं कोरी ॥ राकारास मास ऋतु जेती रजनि प्रीति नहिं थाही। वैस संधि सुख तजी सूर हरि गए मधुपुरीमांहीं ॥४४॥राग धनाश्री ॥ कैसे जीवें ऊधो हरि परदेश रहे।गरजि गरजि घन बरषन लागे नदिया नार बहे ॥ किहि पठवौं मधुपुरी सखीरी मेरो ह्वै चरण गहे। बासर गए निहारत मारग चातक रैनि डहे ॥ कासों कहौं तपत मन निशिदिन को इह पीर लहै। हमहूं किन लै जाहि सूर प्रभु को ब्रज दुखहि सहै॥ ४५ ॥ हरि हम काहेको योग बिसारी ।प्रेमतरंग बुडत ब्रजबासी तरत श्याम सोइ हारी॥रिपु माधव पिक वचन सुधाकर मरुत मंदगति भारी। सहि न सकत अति विरहत्रास तनु आगि सलाकनि जारी॥ ज्यों जलथाके मीन कहा करे तेउ हरि मेलि अडारी। विजय अधोमुख लन सूर प्रभु कहियहु विपति हमारी ॥ ४६ ॥ जो पै इहै हुती उनके मन। तो तब कमलनयन हम कारण कहा किये ब्रज एते जतन ॥ विष जल व्याल वरुन वर्षानल अनेक अशुभ हति राखे।संतत संग रहत काहूमिस निठुर वचन नहि भाषे ॥ उन विपदनि कुंचित जो करते कछुअ न जीव सराहती। विधि बश नाउं बहुरि फिरि मिलती एतो विलंब कत सहती ॥ कहिये कहाजोसब जानतहैं यातनुकी मति ऐसी। सूरदास प्रभु हित रुचित्त के वेगि प्रगट कीवो तैसी ॥ ४७ ॥ मोहनसों मुख बनत न मोरे। जिन नैनन सुखचंद्र विलोक्यो जात तरणि नहिं जोरे॥ मुनिमनमडन योगकर्म ऋतु मंदिर भार सहत कहिकोरे। बनत नहीं है कमलके बंधन कुंजर क्यों व रहत विनु तोरे ॥ नीलांबुज तनु नील बसन मणि चित न जात धूमके भोरे। सूरदास जे कमलके विरही चंपकबन लागत चित थोरे॥४८॥राग सोरठ॥ विलग हममानें ऊधो काको। तरसत रहे वसुदेव देवकीनहिं हितु मात पिताको॥काको मात पिता को काको दूध पियो हरि जाको। नंदयशोदा लाड लडायो नाहिन भयो हरि ताको॥ कहिवो जाइ बनाइ बात यहको हित है अबलाको। सूरदासप्रभु प्रीतिहै कासोंकुटिल नीच कुबिजाको॥४९॥उघरिआये कान्हकपटकी खानि।सरबसहरो बजाय बाँसुरी अब छाँडि पहिचानि॥ जिन पय पियत पूतना मारी दालत करी न हानि।बलिछलिबांधि पताल पठाये नेक न कीनी कानि ॥ जैसे वधिक अधिकमृग विषवत राग रागनीठानि। अवधि आश परतीति ओटदै हनत विषमशरतानि।जैसे नाट सरु टरत न उरते तुम ऊधो अति जानी। सूरदास प्रभुके जियभावे आयसु माथे मानी॥५०॥सारंग॥जीवनमुखदेखेकोनीको।दरशपरशदिन रीति पाइअत श्यामपियारे पीको॥सुनो योग कहि काम हमारे जहां ज्यान हैजीको। नैनमूंदिकै मृतक देखि वर मधुप ध्यान पोथीको ॥ आछे सुंदर श्याम हमारे और जगत सब फीको। खाटी मही कहारुचि मानै सूरखवैया घीको॥५१॥मधुकर को मधुवन रहियो। काके कहे सँदेशोल्याये किनिलिखि लेख दयो ॥ कोवसुदेव देवकीनंद को को यदुवंश उजागर। इहां तिन्हसों पहिचानि न काहू फिरि लेइजेंए कागर। गोपीनाथ राधिकावल्लभ यशुमतिसुवन कन्हाई॥दिन प्रति लेत दान वृंदावन दूनी रीति चलाई ॥ मधुकरहो तुम भये सयाने कहत औरकी औरा।सूर सुपथ का-

हू वहिकायो के भूली यहि ठौर॥५२॥इहां तुमकहत कौनकी बातें।विना कहे हम समुझत नाहीं फिरिफिरि बूझति तातें॥कोनृप भयो कंस किन मारयो को वसुदेवसुत आहि। इहां यशुमतिसुत परम मनोहर जीजतहै सुख चाहि ॥दिन उठि जात धेनुवन चारन गोप सखनके संग ।वासरगत रजनीमुख आवत करत नैनगति पंग॥को परिपूरण कोअविनाशी को विधि वेद अपार।सूरविरथ बकवादकरतहौयहिव्रजनंदकुमार॥५३॥राग गूजरी॥डसीरीमाईश्यामभुअंगमकारे।चितवनिफिरि मुसुकानि महाविप लागतज्यों शर डारे।तंत्र नफुरे मंत्र नहि लागे चले गुणीगुणहारे।प्रेमप्रीतिकी व्यथा तत्त तनु सो मोहि डारत मारे ॥ भलीभई तुम आए ऊधो वंद दै चलेहमारे। आनु वेगि गारुगी गोविंदहि जो यहि विपहि उतारे॥आवतल्हरि मदन विरहाकी को हरिवेद हँकारे।सूरदास गिरिधरजोआवहि हम शिर गारुड टारे॥५४॥राग केदारो॥नेह न होइ पुरानोरेअलि।जल प्रवाह ज्यों शोभासागर नित नवतन व्रजनाथ इहां वलि॥जीवतहै आनंदरूप रस विन प्रतीतिकोमीन चढो थलि।अमी अगाध सिंधु सरविहरत पीवतहू नअघात इतेजलि॥दिनदिन वढतनीरनलिनी ज्योंश्यामरंगमें नैनरहे पलि [illegible]

अपने सगुन गोपाल माई [illegible]

अर्थ कामना सुनावत सव सुख मुक्ति समेति । काकी भूँख गई मनलाड़ू सो देखहु चित चेति। जाको मोक्ष विचारत वर्णत निगम कहतहै नेति। सूर श्याम तजि को भुस फटके मधुप तुम्हारे हेति॥५६॥हमरी सुधिहु भूलि अलिआए।अव कछु कान्ह कहत औरै हैं समुझि सखा गुण गाए॥ निज स्वारथ रसरीति समुझि उर विकल निमेप न चाहे।कहतहि सुगम सवैकोउजानत कठिनहेतु निरवाहे ॥ अव परतीति वातकी मानैं कहतहैं श्याम पराए । कवलौं चले कपटको नातो सूरसनेह वनाए॥५७॥मधुकर हम सव कहा करें। पठए हैं गोपाल हेतु करि आयसुतेनदरें॥रसनाडरवारौं ऊधोपर इहि निर्गुणके साथ॥यह पै नेकु विलगु जिनि मानो अँखियांनाहिन हाथ॥कवनभाँति गुण कहौं तिहारे हितको धीर धरावो । महाविचित्र नीरविनु नौका विन जल मीन जिआवो॥ सेवा हीन अपूरव दरशन कव आवहुगे फेरि।सूरदास प्रभुसों यों कहियो केलापोप।सँग उवरीवेरि५८ राग गौरी॥ए अलि जन्म कर्म गुण गाए।हम अनुरागी यशुमतिसुतकी नीरस कथा वहाए॥ कैसे कर गोवर्धन धारयो कैसे केशी मारयो। कालीदमन कियो कैसेअरु वकको वदन विदारयो ॥ कैसे नंद महोत्सव कीनो कैसे गोपी धाए । पट भूपण नाना भाँतिनके व्रजयुवतिन पहिराए ॥ दधि माखनके भाजन कैसे गोप सखा लै धाए। वनको धातु चित्र अँग कीनो नाचत भेप सुहाए ॥ तवते कछु न सुहाइ कान्ह विनु;युगसम वीतत याम । सूर मरहिंगी विरह वियोगिनि रटिरटि माधो नाम ॥५९॥राग नट॥ मधुप आए योग गथ लै दुख अरु हांसी को सदे। कान मुद्रा भस्म कंथा मृगतुचा आसन ढदे ॥ कान्ह तौ वे निठुर कहिए सखा तिनके गवरे ।जरेऊपर लोन लावहि कोहै उनते वावरे॥श्यामके गुण हम जु जानैं मातु वाँधि नल कियो- संग खेलि खवाइ अपने सोच तौ इतनो दियो ॥ एक दिन वैकुंठवासी रास वृंदावन रच्यो।सोइ स्वरूप विलोकि माधो आइ इन विधिनतु खच्यो ॥ शरद यामिनि इंदुराका लाज तजि कुंजनि गई । वांसुरीको शब्द सुनिकै वधिककी मृगिनीभई॥मुरलिकाहै मदनमूरति मो हृदयमनरमिरई । याहिते हम जगत जानी वेद मेटो दृढ भई॥मंदमति हम कर्महीनी दोप काहि लगाइए।प्राणपति- सोंनेह धाय्यो कर्म लिख्यो सो पाइए॥ हम न जानैं जन्मऐसो रैनिको सपनो भयो।अञ्जरिनजल

घटत जैसे तैसही यातन गयो ॥ भेदिआसो भेद कहिबो छेदसो छाती परौ । अंत नाहिंन ओर आवै सुख सवै कुविजा करौ ॥ योग जपतप ध्यान पूजा इह तु हृदय न आवई । सुधारस जेहि स्वाद चाख्यो तिनहिं और न भावई ॥ ज्ञान दृढ तप ध्यान पूजा हरिचरण जिनके हिए । विमुख हैं जेसूरस्वामीफल कहातिनकेजिए॥६०॥ उद्धववचन ॥ रागमलार ॥ वे हरि सकलठौरकेवासी॥पूरण ब्रह्म अखंडित मंडित पंडित मुनिनि विलासी ॥ सतपताल अध ऊर्ध्व पृथ्वीतल जल नभ वरुन बयारी । अभ्यंतर दृष्टी देखनको कारण रूप मुरारी ॥ मन बुधि चित अहंकार दशेन्द्रिय प्रेरक थमनकारी । ताके काज वियोग विचारत येअवलाव्रजनारी॥जाकोजैसोरूपमनरुचैसोअपवस करि लीजै । आसन वैसन ध्यान धारणा मन आरोहण कीजै ॥ षटदल अष्ट द्वादशदल निर्मल अजपा जाप जपाली।त्रिकुटी संगम ब्रह्म द्वार भिदि यो मिलिहै वनमाली॥ एकादशगीता श्रुति साखी जिहि विधि मुनि समुझाए । ते संदेश श्रीमुख गोपिनकोसूरसुमधुपजनाए॥६१॥अथ गोपी वचन ॥ कर्णाटी ॥देखि रे प्रेम प्रगट द्वादश मीन । ऊधो एकवार नंदलाल राधिका वनते आवत सखिहीं सहित गिरिधर रसभीन॥ गए नव कुंज कुसुमनिके पुंज अलि करैं गुंज सुखहमदेखिभई लवलीन ॥ पट उडुगण पट मनिधर राजत चौवीस धात केहि चित्र कीन। पट इंदु द्वादश पतंग मनो मधुप सुनि खग चौअन माधुरी दशपीन । द्वादश विंबाधरसोवानवे वज्रकनमानोपददामिनि पट जलज हँसि दीन ॥ द्वादश धनुष द्वादशे विष्का मनमोहन पटे चिबुक चिह्न चित चीन। द्वादश व्यालअधोमुख झूलत मधुमानो कंजदलसो वीसद्वै वसीन ॥ द्वादशे मृणाल द्वादशकदली खंभ मानो द्वादश दारिम सुमन प्रवीन । चौवीस चतुष्पद शशि सौ वीस मधुकर अंगअंग रस कंद नवीन॥ नील नीले मिलि घटाविविधिदामिनिमनोषोडशशृंगारशोभितहरिहीन।फिरिफिरि चक्र गगनमें अमी वतावत युवती योग मौनकहुँ कीन ॥ वचन रचन रसरासनंदनंदनतेवहीयोग पौन हृदयेलवलीन । नंद यशोदा दुखित गोपी गाय ग्वाल गोसुत सब मलिन गातदिनहीदिन दुखीन ॥ वकी वका शकटा तृणकेशीवच्छवृषभरासभे अलिविनुगोपालइनिवैरकीन।उद्धवयहां मिलाइपरैं पाँयतेरे सूरप्रभु आरति हरैंभईतनुछीन॥६२॥राग गौरी॥मधुकरल्याएयोगसंदेशो।भली श्याम कुशलात सुनाई सुनतहि भयो अंदेशो ॥ आशरहीजियकबहुँमिलैकोतुमआनतहीनाशी। युवतिनि कहत जटा शिर बांधौ तौ मिलिहैं अविनाशी॥ तुमको जिन गोकुलहि पठाए ते वसुदेव कुमार । सूर श्याम हमते कहुँ न्यारे होत न करत विहार ॥ ६३ ॥ राग मलार॥मधुकर वादि वचन कत बोलै । आपुन चपल चपलके संगी चपल चहूँ दिश डोलै ॥ इन वातनकोकौनपत्यैहैअंतर कपट न खोलै । कंचन काच कपूर कटुखरी एकहि संग क्यो तोलै ॥ अवअपनीसीहमहिदिखावत मति भूलहु यहु जोलै । सूर श्याम विन रटत विरहिनी विरह दाग जनिछोलै॥६४॥राग नट॥ ऊधो सुनत तिहारे वोल । ल्याए हरि कुशलात,धन्य तुम घर घर पारचो गोल ॥ कहन देहु कहा करै हमारो बरु उठि जैहै झोल । आवतही याको पहिचान्यो निपटहिओछोतोल॥जिनकेसोच नहीं कहिबेको ए बहुगुणनि अमोल । जानी जात सूर हम इनकी वतचल चंचल लोल ॥६५ ॥ राग धनाश्री ॥ मीठी बात हमारे आगे वारवार अलि कहा सुनावहु।हमहिंरिझाइआपुपतिखोवत यामें कहो कहा तुम पावहु॥ कहो नजाइ नगर नारिनसोवैसुनिहैंतिनहेंसमुझावहु।व्रजवासिनी अहीरिनि विरहिनि तिन आगे तुम काहे गावहु ॥ लोचन गए श्याम संगही वडे चतुर तौ वोनहीं बुलावहु ।सूर चकोर चंद्र दरशन तजि कैसेजीवै तरनि दरशावहु ॥ ६६॥ राग धनाश्री॥

मधुकर कहा करन व्रज आए। योग ज्ञान हमको परबोधन हरितौ नहीं पठाए॥जा मुख मुरली धरि अद्भुत सुर गाइ बजाइ रिझावत॥ तेहिमुख श्याम कहैंगे ऐसे यह तौ तुमहिं बनावत। अंगअंग आभूषण अपने कर करि हमहिं बनावै। सूरदास प्रभु कैसे तुमकर कथा जोरि पठावै॥ ६७॥ कहा कहत रे मधुमतवारे। आयो धाइ योग उपदेशन प्रेमभजन गहिडारे॥जेहि मुख सुधा श्याम रस अचवत अब पीवें जल खारे। यहअभूरहितेअतिखोटोडारतिहौअरिकारे॥ हम जान्यो यह श्याम सखाहै यहतो औरे न्यारे॥सूर कहा याकेमुखलागतकौनयाहिअबगारे६८ रे अलि कासों कहत बनाइ। बिन समुझे फिरि फिरि बूझतहै बारक बहुरोगाइ॥कौनेगमनकियो स्यंदनचढि सुफलकसुतके संग। किन बधिरजक लिये नानापट पहिरे अपने अंग॥ केहि हति चापि निदरि गज मारयो केहि बल मल्ल मथि भाने। उग्रसेन बसुदेव देवकी केहि व निगडहति आने॥ काकी करत प्रशंसा निशिदिन कौने घोष पठाए। केहिमातुल बधिलियोजगतयशकौन मधुपुरी छाए॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुख मुरली कल गाजै॥सूरजदासयशोदानंदनगोकुलसदा बिराजै॥ ६९॥ राग सारंग॥ तै अलि कत्यं पढीयहनीति॥लोकवेदश्रुतिज्ञानरहितसनकहतकथा विपरीति॥ जन्मभूमि व्रजजननि यशोदा केहिअपराधतजे॥अतिकुलनिर्गुणरूपजोअतिसुखदामी जाइ भजे॥ योगसमाधि मूढ मुनि मारग क्यो समुझैं हम ग्वारी॥जो वैगुणअती तिव्यापक्ततौहम काहे न्यारी॥ रहि मधु ढीठ कपट स्वारथहित जिय ये वचन विरोधे॥मनक्रमवचनबचतिबानाते सूर श्याम तनु धोखे॥७०॥ राग सारंग॥मधुकरजाहिकहोसुनिमेरो॥पीतवसनतनुश्यामजालकी राखत परदा तेरो॥ यहि व्रजको उपदेशन आयो कत जो रहो करि डेरो। एते मान यह सखी महाशठ छाडत नाहिन खेरो॥ऐसी बात कहो तुम तिनसो होड जो कहिने लायक। इहां यशोदा कुंवर हमारे छिनु छिनु प्रति सुखदायक॥ज्यों तू पुहुप पराग छाँडिके करहि ग्राम बसवास। तौ हम सूर इहै करि देखहिं निमिष न छाडहिं पास॥७१॥ राग रामकली॥ ऊधोमौने साधिरहे। योग कहि पछितात मन मन बहुरि कछु न कहे॥ श्यामकोयह नहीबूझेअतिहिरह्यो सिखाइ॥कहा मैं कहि कहि लजानो नैन रह्यो नवाइ॥ प्रथमही कहि वचन एकै लियो गुरु करि मानि। सूर प्रभु मोको पठायो इहै कारण जानि॥७२॥ राग कल्याण॥ कहा न कीजे अपने काजे। अबदिन दश ऐसो करि देखो जो हरि मिलें योगके साजे॥ माथे जटा पहिरिउरकथालबहुभस्मअंगमुख माजे। सींगी बजाइ पहिरि मृगछाला लोचन मूँदि रहौ किन आजे॥सन्मुखहैशरसहोसयानी नाहिन वचन आजुके भाजे। योग विरहके बीच परमदुख मरियतुहै यह दुसह दुराजे॥ ऊधो कहै सत्य करि मानो वर्षा बदत पंचमी गाजे। ज्यों यमुना जल छाँडि सूर प्रभु लीन्हें वसन तजी कुल लाजे॥७३॥ राग सारंग॥ ऊधो कहा मति दीनो हमहिं गोपाल। आवहु री सखीसन मिलि सोचैं जो पावैं नँदलाल॥ बरबाहरते बोलि लेहु सब जावदेक व्रजबाल। कमलासनबैठहरी माई मूदहु नैन बिशाल॥षटपद कही सोऊ करि देखी हाथ कछू नहिं आई। सुंदर श्याम कमलदल लोचन नेकु न देत दिखाई॥ फिरि भई मगन विरहसागरमें काहूहि सुधि न रही। पूरण प्रेम देखि गोपिनको मधुकर मौन गही॥ कछु ध्वनि सुनि श्रवणन चातककी प्राणपलटि तनु आए। सूर सो अबकेटेरि पपीहैं विरही मृतक जिवाए॥७४॥ राग सारंग॥ मधुकरभलेहिआएवीर। दुर्लभ दरशन सुलभ पाए जानिहौ परपीर॥ कहत वचन बिचारि बिनवहु शोधि हो मनमाहिं। प्राणपतिकी प्रीति ऊधो हैकि हमसो नाहिं॥ कोए तुमसो कहै मधुकर कहन योगी नाहिं।

प्रीतिकी कछु रीति न्यारी जानिहौ मनमाहिं ॥ नैन नीद न परै निशिदिन विरह डाढी देह। कठिन निर्दय नंदके सुत जोरि तोरो नेह॥कौन तुमसों कहै मधुकर गुप्त प्रगटित वात। सूरके प्रभु क्यों वनै ज्यो करै अवलाघात॥७५॥ राग सारंग॥ऊधो तैं कत चतुर कहावत।जेनहिं जानैं पीर पराई है सर्वज्ञ जनावत॥ जो पै मीन नीरते बिछुरै को करि जतन जियावत। प्यासे प्राण जातहैं जल विनु सुधा समुद्र वतावत ॥ हम विरहिनी श्यामसुदरकी तुम निर्गुणहि वतावत । योग भोग रस रोग शोग सुख जाने जगत सुनावत ॥ ए दृग मधुप सुमन सव परिहरि कमल वदन रस भावत।सोवत जागत स्वप्न रैनि दिन वह मूरति मोहिं भावत॥कहि कहि कपट सँदेशन मधुकर कत बकबाद वढावत । कारो कुटिल निठुर चित अतर सुरदास कवि गावत ॥ ७६ ॥ मधुकर एमन ऐसो वैरन । अहो मधुप निशिदिन मरियतु है कान्ह कुँवर अनसेरन ॥ चित चुभि रही मनोहर मूरति चपल दृगनके हेरन । तन मन लियो चुराइ हमारो वा मुरलीकी टेरन ॥ कहत न वनै काध कामरि छवि वन गैयनकी घेरन । वरणि न जाइ सुभग उर शोभा पीतांवरकी फेरन॥ तुम प्रवीन हरि हमहिं वतावत अगहि गहत भट भेरन।नदकुमार छौंडि को लैहै योग दुखनकी टेरन ॥ जहां न परम उदार नदसुत मुक्ति परो किन झेरन॥सूर रसिक बिनु को जीवतिहै निर्गुण कठिन करेरन ॥७७॥ राग बिलावल ॥ काहेको रोकत मारग सूधो । सुनहु मधुप निर्गुण कटकटे राजपथ क्यो रूधो॥ के तुम सिखे पठाए कुविजा कही श्याम,घन जूधो । वेद पुराण स्मृति सव ढूँढो युवतिन योग कहूधो॥ताको कहा परेखो कीजै मॉगत छाँछ न दूधो । सूर सूर अक्रूर गयो ले व्याज निवेरत ऊधो ॥७८॥ राग सारंग॥मधुकर समुझि कहो किन वात । काहेको हियरा सुलगावत उठि न इहाते जात ॥ जहि उर वसत यशोदानदन निर्गुण कहां समात । कत भटकत डोलत कुसुमनि सँग तुम कित पातन पात यद्यपि सकल वेलि वन विहरत जाइ वसत जलजात । सूरदास व्रज मिलवत आए दासीकी कुशलात॥७९॥ राग धनाश्री॥ तुमतो अपनेही मुख झूठे । निर्गुण छवि हरि विनु को पावै ज्यो आगुरी अँगूठे ॥ निकट रहतपुनिदूरि वतावत द्वोरस-माह अपूठे । दुइ तरग दुइ नाव पॉव धरिते कहि कवनन मूठे॥हमसो मिले वर्ष द्वादश दिन चा-रिक तुमसो टूठ।सूर आपने प्राणन खेलै ऊधो खलें रूठे॥८०॥ राग मलार ॥ऊधोवूझति है अनुमान। देखिअतनाहिं जतन जीवेका इत विरहा उत ज्ञान ॥ इतहि चन्द्र चदन समीर मिलि लागत अनल निधान। उत निर्गुण अवलोकन मनका कठिन विरोधी प्रान ॥ इत भूषण भै करत अगको सव निशि जागि विहान । उत कहुँ सुनत समाधि कछू नहिंमूढ कठिनको जान॥ दुसहदुराइ विपत्ति वियोगहि नृप वडे दोउ समान।को राखे सूरज यहि अवसरकमलनैनविनआन॥८१॥ राग सारंग॥ मधुकर राख योगकी वात । कहिकहिकथा श्यामसुदरकी शीतल करि सवगात॥जेइनिर्गुण गुण-हीन गनैगो सुनि सुदरि अलसात । दीरघ नदी नाउ कागरकी को देखो चढिजात ॥ हम तन हेरिचितै अपनोपटदेखि पसारहिलात।सूरजदासनासगुणवसिकै कैसेकल्पविहात॥८२॥ राग मलार ॥ योगसो कौने हरि पाए । निज आज्ञा तप कियोविधाताकन रस रासखिलाए ॥ योग युक्तिशकर आराधी परम तत्त्व नवलाए।भुज धरि ग्रीव कवहिं नँदनदन हिलिमिलिकल सुर गाए॥नगदालभ्य महान्दपि कवहू तृण छाया न कराए। वर्षत दुखित जानि मन मोहन कव गिरिवर कर छाए ॥ अति तपपुज विप्र दुर्वासा दूर्वा तृण विन खाए । चक्र सुदर्शन तपन महामुनि कव मुख अनल समाए॥ वहु तप कियो मार्कंडे द्विजआय सिंधु भरमाए । सतकल्प वीती कव कहि

हरि वरुणपासमों ल्याए॥भक्त विरह कातर करुणामय वेद निरंतर गाए। कोहै योग सुनत इह ऊधो सूर श्याम मन भाए॥८३॥राग [illegible]
आराधे॥जाको कहूँ थाह नहिं [illegible]
पठायो पाँधे॥सुनु मधुकर जिन सर्वस चाख्यो सो अव क्यों सचु पावत आंधे॥सूरदास मणि श्याम छांडिके धुंघुचि गांठिको बांधे॥८४॥जिहि तनु गोकुलनाथ भज्यो॥ऊधो हरि बिछुरतते विरहिनी सो तनु तवहिं तज्यो ॥ अव या औरे सृष्टि विरहकी वकत वाइ वौरानी।तिनसों उत्तर कहा देतहो तुमतो पूरण ज्ञानी ॥ जव स्यंदन चढि गमन कियो हरि फिर चितयो गोपाल।तवहीं परम कृतज्ञ प्राणसँग उठिलागे तेहिकाल ॥ अव औसान घटत कहि केसे उपजी मन परतीति।सूरदास कछु कहत न आवे कठिन विरहकी रीति॥८५॥राग गौरी॥मधुप वार वार काहेको और कथा कहत।प्रभु-की प्रतीति गए नाहिंन कछु रहत॥पवन तेज अरु अकाश पृथ्वी अरु पान्यो। तामें ते नंद-नँदन कहा घालि सान्यो॥कमलनेन श्याम सुंदर कौन नाहिं भावे। ताको तू गुप्त करे आने कछु गावे॥सूरसो नंद प्रभु दयालु लीला वपुधारी। निर्गुणते सगुणभए संतन हितकारी ॥८६॥ राग सारंग॥कहिये तासों जो होइ विवेकी।तुमतो अलि उनहींके संगी अपनीगोंके टेकी॥ऐसीको ठाली वैसीहै तोसों मूँड चढावे॥झूठी वात तुसीसी विन कन फटकत हाथ न आवे ॥अजहूँ लों अंगद नहिं छाँडत यह मूरख मतिभोरे। मन क्रम वचन सूर अभ्यंतर नँदनंदन हितमोरे॥८७॥ कहिये तासों जो होइ विवेकी। एतो अलि उनहींके संगी अपने वातके टेकी॥ऐसी वात कहो तुम उनसों जो नहिं जाने वूझे।सूरदास प्रभु नंदनँदन विनु देखे और न सूझे॥८८॥राग कान्हरो॥ऊधो निर्गुण कहत हो तुमही धौं नेहु । सगुणमूरति नंदनंदन हमहिं आनिय देहु॥ अगमपंथपरमकठिन गमन तहां नाहिं । सनकादिक भूलि फिरे अवला कहां जाहिं ॥ पंचतनु परमकान्ह अपर कैसे जानी। मन वच करि कर्मरहित वेदहूकीवानी ॥ कहिए जो निवहिये अकथन कहूँ सोही।सूर श्याम मुख सु चंद्रलीनी युवतिमोही ॥८९ ॥ ऊधोसूधेनेकु निहारो । हम अवलनिको सिखवन आए सुनो सयान तिहारो॥ निर्गुण कहो कहा कहियतहे तुम निर्गुण अतिभारी। सेवत सगुण श्यामसुंदरको मुक्ति लही हम चारी ॥ हम सालोक्य स्वरूप सयुज्यो रहत समीप सदाई।सो तजिकहत औरकी औरे तुम अलिवडे अदाई ॥ हम मूरख तुम वडे चतुरहो वहुत कहा अव कहिए। वेही काजफिरतभटकत कतअव मारगनिज गहिए॥ अहो अज्ञान कतहि उपदेशत ज्ञानरूप हमही। निशिदिन ध्यान सूर प्रभुको अलि देखति जित तितही ॥९०॥ ऊधो कोउ नाहिन अधिकारी॥ ले न जाहु यह योग आपनो कत तुम होत दुखारी॥यहतौवेद उपनि-षदको मत महापुरुष व्रतधारी। हम अवला अहीरिव्रजवासिनि देख्यो हृदय विचारी॥ को है सुनत कहत कासोंहो कौनकथा अनुसारी॥सूरश्याम सँगजातभयोमनअहिकांचुलीउतारी॥९१॥ ॥राग केदारो॥ ऊधो राखिए यहवात।कहतहो अनगढिन अनहदसुनतहो चपिजात॥योगअलि कूष्मांड जैसो अजा मुख न समात। वार वार न भापिए कोउ अमृत तजि विष खात॥ नैन प्यासे रूपजलके दिये नहिंन अघात। सूर प्रभु मन हर्यो जवलौं तौलगितनुकुशलात॥९२॥ ॥राग सारंग॥ ऊधो औरे कथा कहो। तजियेज्ञान सुनत तावत तनुवरगहिमौन रहो॥रुचि द्रुम प्रीति रीति नैननजल सींचि ध्यान झर लागी। ताके प्रेम सुफल मुनि श्रावत श्याम सुरँग अनुरागी ॥ ग्रीषम अलि आए उपजी व्रज कठिन योग रवि हेरो। घन मुरझात सूर को राखे

महानेह विन तेरो॥९३॥राग सोरठ॥कै तुमसों छूटैं लरि ऊधो कै रहिए गहि मौन।इकहमजरैंजरे पर जारत बोलहु वकुची कौन॥ एक अंग मिलि दोऊ कारे काको मन पतिआए।तुमसीहोइसो तुमसों बोलै लीने योगहि आए॥ जा काहूको योग चाहिए सो ले भस्मलगावै।जिनउरध्यान नंदनंदनको तहँ क्यों निर्गुण भावै॥कहो सँदेश सूरके प्रभुके यह निर्गुण अँधियारो।अपनो वोयो आप लोनिये तुम आपहि निरुवारो॥९४॥राग केदारो॥कहा रस वरिआईकी प्रीति।जो न गडै उर अंतर ऊधो भुसपर कीसी भीति॥ नैन वैन अरु हृदय मिलत तब वाढत प्रेम प्रतीति।ए दोउ हंस होत जब सन्मुख लेत मनहि मन जीति॥ ऊधो यहै सँदेशो कहियो मधुबन कैसी रीति। सूरदास सोई जन जानै गई जाहिमहिं वीति॥९५॥राग मलार॥जौपै इहै प्रीतिकी वात। तौ ऊधो तुम निकट रहत कत निरख साँवरे गात॥ बात कहत भरिलेत नैनजल सुरति करत अकुलात। जो घटघट हरि रहत निरंतर तौ कत मधुपुरी जात॥ सगुण प्रीति ऐसी प्रतिपालत दुखित होत तनुगात।तुम निर्गुणसों प्रीति करनको सूर समुझि पछितात॥ ९६॥ राग सारंग॥ ऊधो जनि मधुवनतन देखो।कछुक दिवस औरौ ब्रज वसिकै जन्मसफल करि लेखो॥कहाजाइ लेइहौ ह्वाँ जामें राजकाजकी वात। वाल किशोर कुमार निरखि मुख घरघर माखन खात॥तुम निर्गुण नित कहत निरंतर निगम नेति यहनीति।प्रगट रूप मदमत्त नयन क्यों छाँडे दरशनप्रीति॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनि मन संतत जाको धावत।सूरदास प्रभु गोप सुतन सँग गोधनवृंद चरावत॥९७॥राग मलार॥ऊधो जीवन धन हम पैए। सोइ होइ जो रचो विधाता औरन दोष लगैए॥ कीजै कहा कहत नहिं आवै सोचि हृदय पछितैए।मोहनसो वर कुविजा पायो हमको योग वतैए॥ आज्ञा होइ सोइ पै कीजै विनती इहै सुनैए।सूरदास प्रभु तृपा वढी अति दरशन सुधा पियैए॥ ९८॥ राग केदारो॥ ऊधो खरी जरी हरिके शूलनकी। कुंज किलोल किये वनही वन सुधि विसरी उन वोलनकी॥ अरु यह प्रीति कहांलो वरणी या यमुनाजल कूलनकी॥ वह छवि छाके अतिहैं दोऊ लोचन वहि गहि झूलनकी। सूरदास प्रभु दरशन दीजै अरु लीजै अनुकूलनकी॥९९॥राग सारंग॥हरिविनुयहिविधि हैं ब्रज रहियत।पर पीरहि तुम जानत ऊधो तातै तुमसों कहियत॥ चंदन चंद किरनि पावक सम मिलिमिलि है तन दहियत। जागत यामजात युगयामिनि जतन नहीं निरवहियत॥ वासरहू या विरह सिंधुको केसेहु पार न लहियत। फिरि फिरिवहै अवधि अवलंबन बूडत ज्यों तृण गहियत॥ एकजु हरिदरशनकी आशा तालगि यहु दुख सहित। मन क्रम वचन शपथ सुन सूरज और नहीं कछु चहियत॥२२००॥ हरिविनु यहि विधि हैं ब्रज जीजतु। पंकज वरपिवरपि उर ऊपर सारँगरिपु जल भीजतु॥वायस अजा शब्दकी मिलवनि याही दुखतनु छीजतु। चन्द्रनचौथि जातगोपिनको मधुपपरखियशलीजतु॥तारापति अरिके शिर ठाढी निमिप चैन नहिं कीजतु। सूरदास प्रभु वेगि कृपा करि प्रगट दरशमोहिं दीजतु॥ १॥हमारे धन जीवन कृष्ण मुकुन्द। परमउदार कृपानिधि कोमल पूरण परमानंद॥ निठुर वचन सुनि फटतु हियो यों रहु रे अलि मतिमंद। ब्रजयुवतिनको सुगम जनावत योग युक्ति सुखद्वंद॥ यहतौ जाइ उन्है उपदेशो सनकादिक स्वच्छंद। वारक हमें दरश देखरावो सूर श्याम नँदनंद॥ २॥ राग सारंग॥ वे वातैं यमुनातीरकी। कबहुँक सुरति करतहैं मधुकर हरन हमारेचीरकी॥ लीने वसन देखि ऊँचे द्रुम रवँकि चढनि वलवीरकी। हम ठाढी जलमाहिंगुसांई खरी जुडाई नीरकी॥ दोऊ हाथ जोरिकै माँगौं दोहाई नंद अहीरकी।सूरदासप्रभु सवसुखदाता

जानतहैं परपीरकी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ अब हरि क्यों बसैं गोकुल गवई । बसत नगर नागर लोगनमें नई पहँचानि भई ॥ इक हरि चतुर हुते पहिलेही अब बहुते इन गुरु सिखई । हम सब गवैंगँवारि जानि जड अधपर छाँडि दई॥ऊधो सुख जोवत कुबिजाको ब्रजवनिता सब बिसरि गई । याहीते चतुर सुजान सूर प्रभु औ ए ग्वाली सँगनलई ॥४॥ राग गौरी॥प्रेम न रुकत हमारे चूते। किहि गयंद बाँध्यो सुन मधुकर पद्मनालके काचे सूते॥ सोवत मनसिज आनि जगायो पठै सँदेश श्यामके दूते । विरहसमुद्र सुखाइ कवन विधि फिरत्यक योग अग्निके लूते । सुफलक-सुत अरु तुम दोऊ मिलि लेजेये मुक्ति हमारेहूते । चाहति मिलन सूरके प्रभुको क्यों पतियाहिं तुम्हारे धूते ॥५॥ राग मलार ॥वे गोपाल गोकुलके वासी । ऐसी बातें बहुतै सुनिसुनि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथिमथि सिंधु सुधा सुर पोपे शंभु भए विषआसी । इमि हति कंस गज औरहि दे आपु चढ़े हैं दासी ॥ बिसरयो हमहिं विरह दुख अपनो सुनत चाल ए रासी । जैसे ठग अवलोकि गुप्त निधि प्रगट न परखै फांसी ॥ आरजपंथ छुडाइ गोपिका कुलमर्यादा नासी । आप करत सुख राज सूर प्रभु हमैं देत दुख गासी ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ इह कछु नाहिन नेह नयो । अहो मधुप माधवसों इह ब्रज विधिते पहिल भयो ॥ बीज मन माली मदन चुर आल-बाल बयो । प्रेमपय सींचो पहिलहीं सुभग जिवरि दयो॥इते श्रम तन श्यामसुंदर बिरव बिमल बढ्यो । मुरली मुख छवि पत्र शाखा दृग दुरेफ चढ्यो ॥ कमल तजि तनु रचत नाहीं आकको आमोद । सूर जो गुण वचन परसत बिनु गोपाल विनोद ॥७॥राग मलार॥ ऊधो अब यह समुझि भई । नँदनंदनके अंग अंग प्रति उपमा न्याइ दई ॥ कुंतल कुटिल भँवर भामिनि वर मालति भुरै लई । तजत न गहरु कियो तन कपटी जानि निराश गई ॥ आननइंदु बरन संपुट तजि करखेते न नई । निर्मोही नवनेह कुमुदिनी अंतहु हेममई ॥ तन घन सजल सेइ निशिवासर रटि रसना छिजई । सूर विवेकहीन चातकमुख बूँदौतौ न सई॥८॥ राग सारंग॥ऐसो माई एक कोदको हेतु।जैसे बसन कुसुमरँग मिलिकै नेक चटक पुनि श्वेत॥जैसे करनि किसान बापुरो नौनौं बाहै देत।एतेहू-पर नीर निठुर भयो उमँगि आपुही लेत ॥ सब गोपी पूछहिं ऊधोको सुनियो बात सुचेत । सूर-दास प्रभु जनते बिछुरे ज्यों कृत राईरेत ॥ ९ ॥ राग सारंग॥मुख देखेकी कौन मिताई । जैसे कृपणहि दीन मँगनो लालच लीने करत बडाई॥प्रीतम सो जो रहै एकरस निशिवासर बढि प्रेम सचाई। चितमहिं और कपट अंतर्गति ज्यों फल खीर नीर चिकनाई ॥ तब वह करी नंदनंदन अलि घनबेली रसरास खिलाई । अब यह कितनी दूरि मधुपुरी ज्यों उडि भँवर बेलितजि जाई॥ योग सिखाए क्यों मन मानै क्यों व ओसकण प्यास बुझाई । सूरदास उदास भई हम पाखंड प्रीति उघरि निज आई ॥१०॥ राग मलार॥मधुकर मन सुनि योग डरै । तुमहू चतुर कहावत अतिही इतनी न समुझि परै॥ और सुमन जो अनेक सुगंधिक शीतल रुचि जो फरै । क्यों तुमको कहि बनै सरै ज्यों और सबै अनरै॥दिनकर महाप्रताप पुंज वर सबको तेज हरै । क्यों न चकोर छाँडि मृग-अंकहि वाको ध्यान धरै ॥ उलटोइ ज्ञान सकल उपदेशत सुनिसुनि हृदय जरै । जंबू वृक्ष कहो क्यों लंपट फलवर अंब फरै॥मुक्ता अवधि मराल प्राणमें अवलगि ताहि चरै । निघटत निपट सूर ज्यों जल बिनु व्याकुल मीन मरै ॥ ११ ॥ राग आसावरी॥ ऊधो योगयोग हम नाहीं । अबला सार ज्ञान कहा जानैं कैसे ध्यान धराहीं ॥ ते ये मूँदन नैन कहतहैं हरिमूरति जामाही । ऐसी कथा कपटकी मधुकर हमते सुनी न जाहीं ॥ श्रवण चीर अरु जटा बँधावहु ए दुख कौन

समाहीं ॥ चंदन तजि अँग भस्म बतावत विरह अनल अति दाहीं । योगी भरमत जेहि लगि भूले सो तो है अपुमाहीं । सूर श्यामते न्यारे न पल छिन ज्यों घटते परछाहीं ॥ ॥१२॥ राग मलार ॥ ऊधो कहिए बात जो हुती । जाहि ज्ञान सिखवन तुम आए सो कहो ब्रजमेंको हुती ॥ अंतहु सिखवन सुनहु हमारी कहियत बात विचारी । फुरत न वचन कछू कहिबेको रहेबैन सो हारी ॥ देखियतहै करुणाकी मूरति सुनियतहै परपीरक । सोइ करौ जो मिटै हृदयको दाहु परै उर सीरक ॥ राजपंथते टारि बतावत उज्ज्वल कुचल कुपैंडो । सूरदास सो समाइ कहांलौं अजावदनमें कुम्हडो ॥ १३ ॥ राग सारंग ॥ हमतो नंदघोषके वासी । नाम गोपाल जाति कुल गोपक गोप गोपाल उपासी ॥ गिरिवरधारी गोधन चारी वृंदावन अभिलासी । राजा नंद यशोदा रानी जलहि नदी यमुनासी ॥ मीत हमारे परममनोहर कमलनयनसुखरासी । सूरदास प्रभु कहौं कहांलौं अठसिधि नवनिधि दासी ॥ १४ ॥ राग सारंग ॥ गोकुल सब गोपाल उपासी । जे गाहक साधनके ऊधो ते सब वसत ईशपुर कासी ॥ यद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि तऊ रहति चरणनरसरासी अपनी शीतलता नहिं तजई यद्यपि विधु भयो राहुगरासी ॥ किहि अपराध योग लिखि पठवत प्रेमभक्तिते करत उदासी । सूरदास सो कौन विरहिनी माँगि मुक्तिछाँडै गुणरासी ॥ १५ ॥ राग मलार ॥ ब्रजजन सकल श्यामव्रतधारी । विना गोपाल और जेहि भावत ते कहिहैं व्यभिचारी ॥ योगमोट शिरबोझ आनि तुम कतधौं घोष उतारी । इतनिक दूरि जाहु चलि काशी जहां विकतहै प्यारी ॥ यह संदेश सुनै को मधुकर अति मंडली अनन्य हमारी । जो रसरीति कही हरि हमसों सो क्यों जाति विसारी ॥ महामुक्ति कोऊ नहिं बाँछै यदपि पदारथ चारी । सूरदास स्वामी मनमोहनमूरति-की बलिहारी ॥ १६ ॥ राग धनाश्री ॥ कहांलौं कीजैबहुतबडाई । अति अगाधमनअगमअगोचर मनसो तहाँ न जाई ॥ जाके रूप न रेख वरन वपु नाहिंन संगति सखा सहाई । ता निर्गुणसों नेह निरंतर क्यों निबहै री माई ॥ जलविन तरंग भीतिबिन लेखन बिन चेतहि चतुराई । या ब्रजमें कछु नहीं चाह है ऊधो आनि सुनाई ॥ मन चुभि रही माधुरी मूरति अंगअंग उरझाई । सुंदर श्याम कमलदल लोचन सूरदाससुखदाई ॥ १७ ॥ राग नट ॥ ऊधोकछुक समुझिपरी । तुम जु हमको योगल्याए भली करनि करी ॥ इक बिरह जरिरही हरिके सुनत अतिही जरी । जाहु जिनि अब लोन लावहु देखि तुमहिं डरी ॥ योगपाती दई तुमकर बडे चतुर हरी । सूरदास स्वामीके रँग रुचि कहँ धरैं गठरी ॥ १८ ॥ राग कान्हरो ॥ कहत अलि तेरेमुख बातौ । कमलनयनकी कपटकहानी सुनिन भयोतातौ ॥ कत ब्रजराज काज गोकुलको सबै किए गहिनातौ । तब नहिं निमिष वियोग सहति उरकरत काम नहिं हातौ । मधुबन जाइकान्ह कुबिजासंग मतिभूलहु सुधिसातौ ॥ ज्यों गजयूथ नेक नहिंविछुरतशरद. मदन मदमातौ । सूर श्याम बिन हमसबअबला या तन कहाँ समातौ ॥ १९ ॥ राग धनाश्री ॥ तुमअलि कमलनयनके साथी । देखत भले काजको जैसे होत धूमके हाथी ॥ सुंदर श्याम गंड मद लंकृत सम श्रम जलकन छाजे । योग ज्ञान दोउ दशन भोग रद करनी कुंभ विराजे ॥ जब शिशु हुते कुमार असुर हति याते प्रीतम जाने । अब भए जाइ विवश दासीके ब्रजते प्रगट पराने ॥ करिकै कपट तुच्छ विद्यावश भगन करत अँग भट ज्यों । सूर अवधि पढि मंत्र सजीवन मरि जीवतहै नटज्यों ॥ २० ॥ राग सारंग ॥ ऐसो सुनियत द्वै वैशाख । जानतहौं जीवन काहेको जतन करौ जो लाख ॥ मृगमद मिलै कपूर कुमकुमा केसरि मलया खाख । जरति अग्निमें ज्यों घृत नायो तनु जरि ह्वैहै राख ॥ ता ऊपर लिखि योग पठावत खाहु नींब तजि दाख । सूरदास ऊधोकी बतियां उडि

उडि बैठीं ताख ॥२१॥राग नट॥जानी ऊधोकी चतुराई। वारवार तुम कहत अध्यातम पावत कौन बडाई ॥ जो तुम कहत अगाध अगोचर हरिरस तजो न जाई। कौतुक कहत उक्ति अपनीतें को तुम कहत कहाई ॥ वाहर भीतर ध्यान सगुन बिनु सुनियत दूरि भलाई । सूरदास प्रभुविरह जरी हैं बिनु पावक दौं लाई ॥ २२ ॥ राग सारंग॥ जानी अलि ऊधो चतुराई। व्रजमंडलकी दशा देखिके कथा सबै बिसराई॥ परमप्रिया पथ देखन पठए कहि गति योग बनाई। इनको आन भाव विछुरनको लै बाजनि हम लाई ॥कहा कह्यो हरि कहा सुन्यो इनि कहि लीला मुख गाई। यद्यपि विवुध बडे यदुकुलके नेक न बढी बडाई ॥ गुणमहि मंत्र मदा श्रीपतिके मुक्तिपुरी अब गाई।नहिं देखी व्रजवनकी लीला सूर श्याम लरिकाई॥२३॥राग मल्हार॥ इहिविधि पावस सदा हमारे ।पूरव पवन श्वास उर ऊरध आनि जुरे एकठारे॥बादर श्याम श्वेत नयननमें वरषि आँसु जलढारे।अरुनप्रकाश पलक दुति दामिनि गर्जन नाम पिप्यारे ॥ चातक दादुर मोर प्रगट व्रज बसत निरंतर धारे। ऊधो ए तबते अटके जब श्याम रहे हिततारे॥ कहिए काहि सुनै कत कोऊ या व्रजके व्यवहारे। तुमहींसों कहिके पछितानी सूर विरहके धारे ॥ २४ ॥ ॥राग केदारो॥जोपै कोऊ मधुवनहूंलौं जाइ। पतियां लिखौं श्यामसुंदरको कंकन देहौं ताहि ॥ नयननीर सारंगरिपु भीजत युगसम रैनि विहाइ। अव यहभवन भयो पावकसम हरि विन मोहिं न सुहाइ॥पछिली प्रीति कहा भई ऊधो मिलते वेणु बजाइ। सूरदास प्रभु वेगिमिलहुकिन पुनि कहा करोगे आइ ॥ २५॥राग विलावल॥ ऊधो कोकिल कूजत काननतुम हमको उपदेश करतहो भस्म लगावन आनन॥औरो सोंगी सखी संगलै टेरत चढै पषाननबहुरो आइ पपीहा-के मिस मदन दहत निज वानन॥ हमतो निपट अहीरि वावरी योग दीजिए जानन। कहा कथन मौसीके आगे जानत नानी नानन॥तुमतो हमहिं सिखावन आए मुक्ति होइ निर्वाननसूर मुक्ति कैसे पूजतिहै वा मुरलीके तानन ॥२६॥ राग सारंग॥ऊधो हरिके अवरै ढंग। जहां न अनंग रस रूप नेहको तहाँ दई गति जो अनंग ॥ आपु विषमता तजि दोउ सम भे बानक ललित त्रिभंग। मानो मरिचि देखि तनु भूली भूपथ सुरभि सुरंग ॥ तजे कुसुम कर कंटक वन भ्रमि नहिं कामो भ्रूभंग। कनकवेलि शतदल सर मंडित ढढतर लता लवंग ॥ श्यामासदन विसारि भजे पुर चंचल नारि पलंग॥ ते सुख बहुत बहुत पावहिंगे जे करिहैं अँगसंग। काके होहिं जो नहिं गोकुलके सूरज प्रभु श्रीरंग॥२७॥राग आसावरी॥ऊधो हम दोउ कठिनपरी।जो जीवें तोसुनिजडज्ञा-नी तनु तजि रूप हरी ॥ गुण गावें तो शुक सनकादिक धाय लीला फरी।आशा अवधिविचारि रहें तो धर्म न व्रजसुंदरी ॥ सखीमंडली सब जो सयानी विरहाप्रेम भरी। शोक समुद तरिवेको नौका जे दुख मुरली धरी॥निशिवासर निरअंकुश अति बड मातो मदन करी। ढाहत धाम सूर प्रभु चितवत गमन करै केसरी ॥ २८ ॥राग केदारो॥ऊधो सुनिहो वात नईसी। प्रेमबानिकी चोट कठिन है लागी होइ कहो कत ऐसी॥ तुमहि विचारि कहा कहि दीजे आनि कहतरे जैसी। जानै कहा बाँझ ब्यावर दुख जातक जनहिं पीरहै कैसी ॥ हम बावरिन आनि बौरावत कहत न तुम्हें बूझिए ऐसी। सूरदास न्याइ कुबिजाको सरबसु लेइ हमारो वैसी ॥२९॥पद्म मातं वचन॥केदारो॥ऊधो उदित भई सब दुखकी करनी।व्रजवेली सब सूखन लागीं बात कही नँदघरनी॥ कमलवदन कुँभिलात सबनके गोवन छाँडी तृणके चरनी। सुख संपति विति गयो सबन की लागी अलि अनजलकी झरनी। देखो चारु चन्द्रमुख शीतल विन दरशन क्यों मिटती जरनी।सुतसनेह समुझति सु सूर प्रभु फिरिफिरि यशुमति परती धरनी ॥ ३० ॥

राग सारंग॥ ऊधो पूंछति ते बावरी । गोकुल तजो कूबरी कारण नेहनहोतिजोरावरी॥जैसोबीज बोइए तैसो लुनिए लोग कहत सब बावरी। सूरदास प्रभु पारस परसे लोहोकनकबराबरी॥३१॥ राग गौरी ॥ मधुकर देखो दीनदशा।इतनी बातें तुमसो कहतिहैं जो तुम श्याममखा॥जेकारेतेमवै कुटिलहैं मृतकनके जेहता । तुम विरहिनी विरहदुख जानत कही यह गूढ कथा ॥ मन वश भयो श्रवण सुनि मुरली कुजनि कुज बसी । अबतो एक न भए सूर प्रभु घर वन लोग हँसी ॥३२॥ राग सारग ॥ जैसे कियो तुम्हारे प्रभु अलि तैसो भयो ततकाल।ग्रथितमृतधरततेंहिंग्रीवाजहांधरते बनमाल ॥ टेरि देत श्रीदामा द्रुम चढि सरस वचन गोपाल । ते अब श्रवण अक्रूरप्रमुख सब कहत कंस कुशलात ॥ कोमल नील कुटिल अलकावलि रेखी राजत भाल । ऐसे शर त्यागे सुन सूरज फंदा न्याइमराल॥ ३३ ॥राग मलार॥ विरचिमनबहुरि राचोआइ।टूटीजुरैबहुतजतननिकरितऊ दोप नहिं जाइ ॥कपट हेतुकी प्रीति निरतर नोथि चोखाई गाइ।दूध फाटि जैसे भइ कांजी कौन स्वाद करि खाइ॥ केरा पासि ज्यो वेरि निरतर हालत दुख देजाइ । स्वातिबूंद जैसे परे फनिक-मुख परत विषै ह्वजाइ ॥एती केती तुमरी उनकी कहत बनाइ बनाइ । सूरजदास दिगंवरपुरते रजक कहा ब्योसाइ॥ ३४॥ ऊधो तुम हौ अति बडभागी। अपरस रहत सनेह तगाते नाहिन मन अनुरागी ॥ पुरइनि पात रहत जल भीतर ता रस देह न दागी। ज्यो जल-माँह तेलकी गागरि बूँदन ताको लागी॥ प्रीतिनदीमहँ पाँव न बोरयो दृष्टि न रूप परागी । सूरदास अवला हम भोरी गुरचेंटी ज्यो पागी॥ ३५॥राग धनाश्री ॥ हमतें हरिकवहीनउदास।रास खिलाइ पिआइ अधररस क्यो विसरत व्रजबास ॥ तुमसो प्रेमकथाको कहियो मनहु काटियो घास । वहिरो तान स्वाद कहा जानै गूगो खात मिठास ॥ सुन री सखी बहुरि हरि ऐहैं वह सुख वहै विलास । सूरदास ऊधो हमको अब भए तेरहौं मास ॥ ३६ ॥ तेरो बुरो नकोईमानै।रसकीबात मधुप नीरस सुनि रसिक होइ सो जानै॥ दादुर वसे निकट कमलनकेजन्मनरसपहिचानै।अलि अनुराग उडत मन बाँध्यो कही सुनत नहिं कानै ॥ सरिता चली मिलन सागरको कूलसबेद्रुम भानै । कायर बकै लोभते भागै लरै सो सूर बखानै ॥ ३७ ॥ हम सब जानत हरिकी घातैं। तुम जो कहत वो राज्य करत नहिं जानत हौ कछु कातैं ॥ मारे कस सुरन सुख दीनो असुर जरे पिर पातैं। उग्रसेन बैठारि सिंहासन लोग कहत कुलनातैं ॥ तपते राज राजते आगे तुमसब समुझत बातैं । सूर श्याम यहि भाँति सयाने हमहीको बहु सातैं॥ ३८ ॥ राग नट॥ ऊधो हैवूहरिके हितको। हम निर्गुण तबहीते जान्यो गुण मेटयो जब पितुको ॥ समुझहु नेक श्रवण दै सुनिएप्रगट बखानौ नितको । कृपरत्न घटकहु क्योनिकसैबिनुगुनबहुतेवितको॥ पूरणतातोतबहीबूडीसगगए लै चितको । हमतो खगहि सूर सुनि षटपद लोक बटाऊहितको॥३९॥राग काफी॥आयोघोषबडो व्यापारी । लादि पोपि गुणज्ञान योगकी व्रजमें आनिउतारी॥फाटकदैकेहाटकभागत भोरोनिपट सुधारी । धुरहीते खोटो खायो है लिये फिरत शिर भारी ॥ इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अनारी ।अपनो दूध छाँडि को पीवै खारे कूपको वारी ॥ ऊधो जाहु सवेरे ह्यांते वेगि गहर जनि लावहु। मुखमागोपैहोसूरजप्रभुसाहुहिआनिदिखावहु॥४०॥राग धनाश्री॥ऊधोयोगकहाहैकी-जतु। ओढिअतहै की डसिअतहै किधौं कहियतकिधौं पतीजत॥ कीकछुभलोऐलसनीसुंदरिकी कछु भूषण नीको । हमरे नँदनंदन जो कहियत जीवनजीवन जीको । तुम जो कहत हरि निगम निरतर निगम नेति है रीति । प्रगट रूपकी राशिमनोहरक्योंछडिपरतीति॥गाइचरावनगएघोषते

अवहीं हैं फिरि आवत। सोई सूर सहाय हमारे वेणुरसालबजावत॥४१॥ राग मलार॥मधुकरजानो ज्ञान तिहारो। जानेंकहा राजलीलाको अंतअहीरविचारो॥एकभलीहमसबैसयानीएकमयानीसों मनमानो।लाज लए प्रभु आवत नाहीं हे जो रहे खिमिआनो॥ लेआवोहमकछूनकेहैमिलिहैं प्राण पियारे। व्याहो वीस धरो दश कुविजा अंतहु श्याम हमारे॥सुन री सखी कहूं नहिं कहिए माधो आवनदीजे। सूरदास प्रभु आनि मिलें जो हांसी करिकरि लीजे॥४२मधुकरतुमहौंश्याम सखाई। पालागों यह दोष वकसियो सन्मुख करत ढिठाई॥ कोनेरंक संपदाविलसीसोवतसपने पाई। धाम धुआँको कहो कवनके कवनें धामउठाई॥ अरु कनकी माला कर अपनें कोने गूँथि बनाई। कहि कागजकी तरनी कीन्हे कोन तरयो सर जाई॥ किन अकाशतेतोरितरैआ आनि धरी घरमाई। औरकोन अवलन व्रत धारचो योग समाधि लगाई॥ इहि उर आनि रूपदेखेकी आगि उठै अगिआई। सुन ऊधो तुम फिरिफिरि आवत यामें कौन वडाई॥ सूरदास प्रभु व्रज युवतिनको प्रेम कह्यो नहिं जाई॥ ४३॥ राग गौरी॥मनकीमनहीमांझरही।कहिएजाइकोनपैऊधो नाहिन परत कही॥ अवधि अधार आश आवनकी तन मन व्यथा सही। चाहतिहुती गोहारि जितहिते तितहिते धारवही॥ अब इन योग संदेशन सुनिसुनि विरहिनिविरहदही। सूरदासअब धीर धरहिं क्यो मर्यादा न लही॥४४॥ राग गौरी॥तुमहिंदोपनहिंहमअतिवोरी।रूपनिरखिदृग लागेहैं ढोरी॥ चित चोराइ लियो मूरति सौंरी। सुभग कलेवर कुमकुम खौरी॥गुंजमालउरपीत पिछौरी। यहिते जोनेकुवुधियो री॥ गहत सोइ जो समात अँकोरी।सूरश्यामसोंकहियोएक ठौरी॥ यह उपदेश सुनहिं ते औरी॥ ४५॥ राग नट॥ श्याम तुम ठगसों प्रीति करी। काटे नाक पछोरे पूँछत ताते मव सुधरी॥ ह्यां ऊधो काहेको आए कौनसी अटक परी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विनु सब पाती उघरी॥ ४६॥ राग सारंग॥ऊधो नवतन राजभयो। नए गोपाल नई कुविजा वनी नौतन नेह ठयो॥ नएसखा जोरे यादवकुल अरु नृप कंस हयो।नवतननारि नए पुर कीन्हों तिन अपनाइ लयो॥ विसरे रासविलास कुंज सव अपनी जातिगयो। सूरदास प्रभु वहुत पटोरी दिनदिन होतनयो॥ ४७॥ अब तुम कापर कपट बनावत।नाहिनकंसकान्ह नहिंगोकुल को पठवत कहां आवत॥ जिन मोहन वंसी वारिज करि सुखतन सींचि वढायो। सो पुनि ऊधोकर कारनको योगकुठार पठायो॥ इतनो तो मातुपही जानें जिनकेहैं मतिथोरी। धोखेहू विरवा लगाइके काटत नाहिं वहोरी॥ वे प्रवीन ऊधो अति नागर जानिपरस्परप्रेमकैसे-के पठवतवे आवत टारनको हित नेम॥ स्वर्गहु गए कंस अपराधी परचो हमारेखोज।हरिहितेदारि ध्यानहुते टारत वाऊ सबको चोज॥ विद्यमान आए जे छल करि तिनअपनो फलपायो। ह्याँ है हिरदय सूर श्याम प्रभु वनत न स्वांग वनायो॥ ४८॥ अपने स्वारथके सबकोऊ। चुप करि रहो मधुप सुन लंपट तुम देखेअरु ओऊ॥जो कछु कहो कह्यो चाहतहौ करि निरवारो सोऊ।अव मेरे मन ऐसी पटपद होवे होउ सु होऊ॥तव कतरासरच्योवृंदावनज्योंज्ञानीहू तोऊ। लीने योग फिरत युवतिनमें वडे सुपथ तुम दोऊ॥ छुटिगयो मान परेखो रे अलि हृदय हतो वह जोऊ। सूरदास प्रभु गोकुल विसरो चित चिंतामणि खोऊ॥ ४९॥ राग नट॥ कहत कन परदेशीकी वात॥ मंदिर अरध अवधि वदी हमसो हरिअहार चलिजात॥ शशि-रिपु वरप सूररिपु युगवर हररिपु किए फिरे घात। मघ पंचम लैगए श्यामघन ताते जिय अकुलात॥ नखत वेद ग्रह जोरिअर्घ करि वनि आवे सोइ खात। सूरदासप्रभु तुम-

हिं मिलनको कर मींडत पछितात ॥ ५० ॥ राग मलार ॥ ऊधो जानी न हरि यह बात। बैठे रथपर चढे भोरही हँसत मधुपुरी जात ॥ सुफलकसुत मिलि ढँग ठान्यो है साधे विपमन घात । जेतक बडे धर्मध्वज नामी संग प्रेम पथ पात ॥ यदुकुलमें दोउ संग सबै कहें तिनके ए उतपात। एकन हरे प्राण गोकुलके यापर योग कुशलात॥ यद्यपि सूर प्रताप श्यामको दानव दूरि दुरात। तद्यपि भवन भाव नहिं व्रज विनु खोजो दीपे सात॥ ५१ ॥ हम अलि कैसेकै पतिआहिं। वचन तुम्हारे हृदय न आवत क्योंकरि धीरधराहिं ॥ वपु आकार भेप नहिं जाको कौन ठौर मन लागे। हौं करिरही कंठमें मनिक्षां निर्गुण कहा रसहिते काज ॥ सूरदास सगुण मिलि मोहन रोमरोम सुखराज ॥५२॥ राग मलार ॥ मधुकरजानतहैंसबकोऊ। जैसे तुमअरुसखातिहारे गुणन आगरे दोऊ ॥ सुफलकसुत कारे नखशिखते कारे तुम अरु बोऊ । सरबस हरन करत अपनेसुख कोउ किते गुण होऊ ॥ प्रेम कृपण थोरे वित वपुरी उवरत नाहिंन सोऊ। सूर सनेह करे जो तुमसों सो पुनि आपु बिगोऊ ॥ ५३ मधुकर तुम रसलंपट लोग।कमलकोश नित रहत निरंतर हमहिं सिखावत योग ॥ अपने काज फिरत बन अंतर निमिप नहीं अकुलात ।पुहुप गए वहुरो बछिनके नेक निकट नहिं जात ॥ तुम चंचल अरु चोर सकल अँग बातन को पतिआत । सूर विधाता धन्यरचे एइमधुपसाँवरे गात॥५४॥राग सारंग ॥ मधुप रावरीयेपहिंचानि।बासरसमय अनत उठि बैठत पुहुपनकी तजि कानि॥ वाटिका बहु विपिन जिनके एक वै कुम्हिलानि।तहां अगणित फूल फूले कौन ताके हानि॥ काम पावक जरत छाती लोन लायो आनि ।योगपाती हाथ दीनी विप लगायो सानि ॥शीशकीमणि हरीजाकीकौन जामें बानि 'निठुरहौतुमसूरके प्रभुव्रज तज्यो यह जानि ॥ ५५ ॥ को कहिहै हरिसों बात हमारी।यहतौ हमतबतेजियजानी जबतें भए मधुप अधिकारी। एकै प्रकृति एकई तबगति जे मनसिज असितहि [illegible] भावै। प्रगटेनितनवकंजमनोहर व्रजकी सरक करन कत आवै॥ कुटिल खान चंपक चंचल मति सबहीते जु निनारी ।ता अलिकी संगति बसि मधुपुरी सूरदास प्रभु सुरति बिसारी॥५६॥ मधुकर तुमअतिचतुरसुजान। जे पहिले मनरँगे श्यामरँग अब न चढै रँग आन॥ए दोऊ लोचन विराटके विधिकियेएकसमान। भेद चकोर कियो ताहूमें विधु प्रीतम रिपुभान॥ विरहा भेद भयो पालागौंतुमहौपूरणज्ञान।दादुर जलबिन जिवे:पवन भख मीन तजे हठिप्रान॥वाजिवदननैनमेरे पटपद कब करिहैं मधुपान। सूरदास गोपिन परतिज्ञा छुवहिं नयोगबिरान॥ ५७॥ऊधोविरहीप्रेमकरै। ज्यों,विन पुट पट गहत न रँगको रंगनरसे परै॥ज्यों धर देह बीज अंकुर गिरि तौ सतफरनि फरै। ज्योंवटअनलदहततनअपनो पुनि पय अमी भरै॥ज्यों रण शूर सहत शर सन्मुख तौ रविरथहि ररै। सूर गोपाल प्रेमपथ चलिकरि क्यों दुख सुखन डरै ॥५८॥राग मलार॥ मधुकर प्रीति किए पछितानी । हम जानी ऐसेहि निवहैगी उन कछु औरैठानी॥या मोहनको कौन पतीजे बोलतमधुरीबानी॥हमको लिखि लिखि योग पठावत आपु करत रजधानी ॥ अबतोसेज सुहाइ न हरिबिन चितवत रैनि बिहानी। जबते गमन कियो मधुवनको नैनन वरपत पानी ॥ कहियो जाइ श्यामसुंदरको अंतरगतिकी जानी । सूरदास प्रभु मिलिके बिछुरे ताते भई दिवानी ॥ ५९ ॥ हमरे हरि हारिलकी लकरी । मन क्रम वचन नंदनंदन उर यह दृढ करि पकरी ॥ जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि कान्ह कान्ह जकरी। सुनत योग लागत हमें ऐसो ज्यों करुई कँकरी॥ सुतौ व्याधि हमको लै आए देखी सुनी न करी । यह तौ सूर ताहि लै सौंपो जिनके मन चकरी ॥ ६० ॥ राग सारंग ॥ बात

हमारी मानो जीतो।आवन कह्यो हुतोहमजीवति ताते उनही कीतो॥एक बोलके लीन्हेंसोईअपनी खोई देवति । ताते खरी मरत इहि टाहर बाढी वचनहि सेवति ॥ इतनो कह्यो करी धरि गखो योग आपने घरको । पेज खेंचि मेटनआए हो तनक रजागे खरको ॥ नँदनंदन लगए हमारी सब व्रजकुलकी ऊब । सूर श्यामतजि औरै सूझे ज्यों खेरेकी दूब॥६१॥ राग मलार ॥ श्यामसुख देखेही परतीति । जो तुम कोटि जतन करि सिखवहु योग ध्यानकी रीति॥नाहिं न कछू सयान ज्ञानमहिं यह हम कैसे मानें । कहो कहा गहिए अनुभवको कैसे उरमें आनें॥एही मन इक इक वह मूरति भृंगी कीट समानें । सूर शपथ दे पूँछो ऊधो यहव्रज लोग सयानें ॥६२॥ राग सारंग ॥ हरि हैं राजनीति पढिआए ।समुझी बातकहत मधुकरसे समाचारसब पाए॥ पहिलेही अति चतुर हुते अरु गुरुसब ग्रंथ दिखाए । बाढी बुद्धि कहत युवतिनको योग सँदेश पठाए॥आगेहूके लोग भलेहो परहित डोलत धाए । अब अपने मन फेरि पाइहें चलत जो होहिं पराए ॥ ते क्यों नीति करें आपुन जिन औरन अपथ छुडाए ।राजधर्म सुनि इहै सूर जिहि प्रजा न जाहिंसताए॥६३॥ बारक मिलत कहा दे होत । इतनेहुं मान कहा उहि कुबिजा पाएहें परिपोत॥ इतनिक दूरि भए कछु औरे बिसरयो गोकुल गोत । कैसे जियहिं बदन बिनु देखे बिरहिनि बिरहिनि सोत ॥ आए योग देन अबलनिको सुरभिकंठ वृष जोत । सूरदास प्रभु तौ पे जीवहिं देखहिं रविहि उद्योत ॥ ६४ ॥ राग मलार ॥ मधुकर नाहिन काज सँदेशो । इहि व्रज ल्याने योग लिख्यो है कोटि जतन उपदेशो ॥ रविके उदय मिलन चकईको शशिके समय अँदेशो । चातक क्यों बन बसत बापुरो बधिकहि काज बधेसों॥ नगरआहि नागर बिनु सुनो कौन गजब सिबेसों। सूर स्वभाव मिटे क्यों कारे फनिकहि काज डसेसों ॥ ६५॥ ऊधो हम वह कैस मानें । धूत धील लंपट जैसे हरि तैसे औरन जानें ॥ सुनत सँदेश अधिक तनु कंपत जनि कोउ डर तहां आनें । जैसे बधिक गँवहिते खेलत अंत धनुहियां तानें॥ निर्गुणवचन कहहु जनि हमसों ऐसी करटि न कानें ॥ सूरदास प्रभुकी हों जानों और कहें औरे कछु ठानें॥ ६६ ॥ राग मलार ॥ ऊधो अब कछु कही न जाइ।रानीभइ कूबरीदासी कापे बरणीजाइ ॥ जोइजोइमंत्रकहतकुबिजाहैसोइसोइ लिखत बनाइ ।अंत अहीर प्रीति दासीसों मिटत न सहज सुभाइ।' छुटत नहीं गुण अवगुण जाकोकीजे कोटि उपाइ।सूर सुभाइ तजे नहिं कारोकीजेकोटिउपाइ॥६७॥ राग मलार ॥ बदलेकोबदलोलैजाहु। उनकी एक हमारी दोइ तुम बडे जनेओ आहु॥तुम अलि जानि अतिहि भोरेसंसारोचाहतदाव। अपनी त्रेर मुकरिके भागत हिए,चौगुने चाव॥अब तुम साखि बँधो तहाँजाई काहेको पछिताहु । सूरदास वह न्याव निबेरहु हम तुम दोऊ साहु॥६८॥ राग मलार ॥ऊधोजी यहि व्रज बिरह बढे। घर बाहर सरिता सर बन उपवन देखहु द्रुमन चढे॥दिन अरु रैनि सधूम भवनके दिशिदिशि तिमिर मढे। द्वंदकरत अतिप्रबल बलीबल जीवन अनल डढे ॥ जरि नहिं भई भसम तेही छिन जब हरि वचन ग्ढे । सूरदास बिपरीति बिधाते यहितनु फेरि ठढे॥ ६९ ॥ ऊधो जो तुम बात कही। ताको कछुअ न उत्तर आवे समुझि बिचारि रही॥ पालागों तुमही बूझतहीं तुमपर बुधि उमही। कैसे शीतल होइ,पवन जल पिए बियोग दही ॥ कुबिजासों पढि तुमहिं पठाए नागर नवल लही। अब जोइ पद देहिं कृपा करि सोइ हम करें सही ॥ बिछुरत बिरहअग्नि नाहीं जरी नैनन जलन बही। अब सुनि शूल सहति सब सूरज कुलमर्याद ढही॥ ७० ॥ योग मिटि पतिआहू ब्योहारु॥ मधुवन बसि मधुरिपु सुनु मधुकरछाँडि भ्रज आभारु ॥ धरणीधर गिरिधर कर धरिके मुरली धर

सुखसारु।अब लिखि योगसँदेशो पठवत व्यापक अगम अपारु॥हाँसीअरु दुख सुनहुसखीसुठि श्रवण दशा संचारु।सूर प्राण तनतजतन याते सुमिरिअवधिआधारु॥७१॥राग सारंग॥मधुकर जो हरि कही सो करो।राजकाज चित दियो साँवरे गोकुल क्यो बिसरो॥जेजे घोपरहे हमतेहिली संतत सेवा कीनी। वारक कबहुँ उलूखल बाँधे उदै बाँधिजिय लीनी॥जो हमसो कोटि करैंब्रज- नायक बहुते राजकुमारी। तौ ए नंद कहाँ मिलिहैं औ यशुमतिसी महतारी॥ गोवर्धन कहँ गोपवृंदसचुकहाँगोरससचपैबो।सूरदासअवसोईकरिएबहुरिगोकुलहि ऐबो॥७२॥राग सोरठ॥ऊधो हरि यह कहा विचारी।सदा समीप रहत वृन्दावन करत विहार विहारी॥एकतौ रंग रचे कुबिजाके विसरिगए सब नारी।कछुइक मंत्र कियोउन दासी तेहि विनोद अधिकारी॥ दिनदशऔररहौतुम इहां देखो दशा विचारी।प्राण रहतहैं आशा लागे कब आवैं गिरिधारी॥ तुमतौकहतयोगहैनीको कहो कवन बिधिकीजे।हमतन ध्याननंदनंदनको निरखिनिरखिसो जीजे॥सुदरश्यामकंठवैजती माथे मुकुट विराजे। कमलनैन मकराकृतकुंडल देखतही भवभाजे॥याते योगनआवैमनमेंतूनीके करि राखि।सूरदास स्वामीके आगे निगम पुकारत साखि॥७३॥राग बिहागरो॥मधुकर वहुरि न कबहुँ मिलें हरि। कमलनयन मिलबेके कारण अपनोसो जतन रही बहुते करि॥ जेजे पथिक जात मधुबनको तेहिसों व्यथा कहति पाँयन परि। काहे न प्रगट करो यदुपतिसो दुसह दोपकी अवधि गई ढरि॥ धीर न धरत प्रेमव्याकुल मन लेत उसाँस नीर लोचन भरि।सूरदास तनु थकित भयो अति इह वियोग सायर न सकत तरि॥७४॥राग सारंग॥मधुकर अब भया नेह बिरानी। बाहर हेत हतो कहवावत भीतर काज सयानी॥ ज्यों शुक पिंजरमाहँ उचारत ज्यो ज्यो कहत बखानी। छूटतही उडि मिलै अपुन कुलप्रीति न पल ठहरानी॥ यद्यपि मन नहिं तजत मनोहर तद्यपि कपटी जानी। सूरदास प्रभु कवन काजको माखी मधु लपटानी॥७५॥राग सोरठ॥ हरिते भलो सुरपति सीताको। जाके विरह जतन ए कीने सिंधु कियो मीताको॥ लंका जारि सकल रिपु मारे देखतही मुख ताको। दूत हाथ उन लिखि जो पठयो ज्ञान कह्यो गीताको॥ तिनको कहा परेखो कीजे कुबिजाके मीताको। चढे सेज सो तो सुधि विसरी जो सब सुख चीताको॥ चढिचढि सेज सातहू सिंधू बिसरी जो चीताको॥ करि अति कृपा योग लिखि पठयो देखो डराई ताको। सूरदास प्रभु हम कहा जानें अब लोभी बनिताको॥ ७६॥ राग नट॥ ऊधो हम ब्रजनाथ बिसारी। जबते गमन कियो मथुराको चितवत लोचन हारी॥ महाप्रलय तब काहेको राखी इद्रत्रास भवटारी। छूटत नहीं त्रास हृदयेते तब न मुई अब मारी॥ अवधि बदी हरि ते सब वीती आवन कहि जो सिधारी। सूरदास प्रभु कबधौं मिलैंगे लगए प्राण हमारी॥७७॥ राग मलार॥प्रीति उन देखन को उत जानत। तो यों बात कहत अलि ऐसे व्यथा नहीं पहिचानत॥ जे गोपाल गृहगृह ब्रजमेंते चोर दूध दधि खात। ते अब दुखित देखि ब्रजवासिन निठुर भए ते जात॥सूर कुटिलना जे सुनियतहैं लोग पुराननि गावत।नखशिरलौं विपरूप बसतपै मधुवन नाम कहावत॥ ७८॥ तू अलि बात नहीं कहि जानत। निर्गुणकथा बनाइ कहत नहिं विरहव्यथा उर आनत॥ प्रफुलित कमल देखि उठि धावत सब कुल संग लिए। और सुमन सों बधु याचतहौ फाटि न जात हिए॥ चातक स्वाति बूँद जो गाहक सदा रहत इकरूप। कहा जानें दादुर जल परत सागर औ समकूप॥बात कहौसजि ऐसीजासोजाकेजियतुम भावहु।सूर बचन जैसो उपदेशत तैसोही तुम पावहु॥७९॥सारंग॥कुटिलबिनु औरनकोईआवै।तौ मैंजराज प्रेमकी बातैंताकेहाथ पठावै॥प्रीति

पुरातन सुमिरि सांवरे सुरति सँदेशो दीनी। तें अलि कहत औरकी औरे श्रुति मतिकी उर लीनी ॥ ये हो सखा कहे नहि मानत गहे योगकी टेक। ऐसे सूर बहुत मधुवनमें कहा दोष है एक ॥८०॥ राग धनाश्री॥ बतिअन सबकोऊ समुझावे। ऐसो कोउ नाहिंने प्रीतम लें, व्रजनाथ मिलावे ॥ आयो दूत कपटको वासी निर्गुण ज्ञान बतावे। सखा हमारे श्याम मनोहर नैनन भरि न देखावे॥ज्ञान ध्यानको मर्म न जाने चतुरहि चतुर कहावे। सूरजदास सबैकाहूको अपनो ही हित भावे ॥८१॥ राग मलार ॥ ऊधो क्यों बिसरत वह नेह। हमरे हृदय आनि नँदनंदनरचि रचि कीन्हे गेह॥ एक दिवस गई गाइ दुहावन तहां जो बरषो मेह। लिये ओढाय कामरी मोहन निज करि मान्यो देह ॥ अब हमको लिखिलिखि पठवतहैं योगयुक्ति तुम लेहु। सूरदास विरही क्यों जीवै कौन सयानप येहु॥८२॥ ऊधो नंदको गोपाल गिरिधर गयो तृण ज्यों तोर। मीन जलकी प्रीति कीनी नाहिं निबही ओर। अबकि जब हम दरश पावें देहिं लाखकरोर। हारसो हीरा खोइकेहौं रहि समुद्र ढंढोर ॥ ऊधो हमारो कछु दोष नाहीं वे प्रभु निपट कठोर। हौं जपौं तुम नाम निशि दिन जैसे चंद्रचकोर॥हम दासी बिनमोलकी ऊधो ज्यों गुड्डीवश डोर। सूरको प्रभु दरश दीजै नहीं मनसा और ॥८३॥राग सोरठ॥ऊधो अबरे कान्ह भए।जबते यह व्रज छाँडि मधुपुरी कुबिजाधाम गए॥ के वह प्रीतिरीति गोकुल बसि दुख सुख प्रीति निबाहत। अब इह करत वियोग देह द्रुम सुनत काम दव डाहत॥ जहां स्वारथ हरिगुण साँवरो निर्गुण कपट सुनावत। सूर सुमिरिव्रजनाथ आपने कत न परेखो आवत॥८४॥ राग मारू॥ऊधो जो तुम हमहिं पतायो। सो हम निपट कठिनई करिकरि या मनको समुझायो॥योग याचना जबहिंअगह गहि तबहीं है सो ल्यायो। भटक परचो बोहितके खग ज्यों फिरि हरिहीपे आयो ॥ अबके तो सोई उपदेशो जेहि जिय जाइ जिआयो।बारक मिलैं सूरके प्रभु तो करौ आपनो भायो॥८५॥राग धनाश्री॥ ऊधो मन मानेकी बात। दाख छोहारा छाँडि अमृतफल विषकीरा विष खात॥ जो चकोरको देइ कपूर कोउ तजि अंगार अघात। मधुप करत घर कोरे काठमें बँधत कमलके पात ॥ ज्यों पतंग हित जानि आपनो दीपकसों लपटात। सूरदास जाको मन जासों सोई ताहि सुहात॥८६॥राग सोरठ॥ बातें कहत सयाने कीसी। कपट तिहारे प्रगट देखिअत ज्यों जल नाए सीसी ॥ हाँतो कहति तिहारे हितकी एतेमां कत भरमति। हाँहू मया तिहारे हितकी कछु न्यारोसो भरमति॥ छाइ बसाइ गए सुफलकसुत नेकहु लागी बारन।सूर कृपा करि आए ऊधो तापर लागे टारन॥८७॥राग बिलावल ॥ ऊधो हम ऐसे गोपाल बिनु। सबही ये जैसे हरुओ तनु ॥ सोचत गनत जाइ यहि विधि दिनु। युग निशि होत हमहिंएका छिनु॥ कहियो सूर संदेश श्याम तिनु। जिनि राखी प्रभु पोच बचन ऋनु॥हरिकित भये व्रजके चोर।तुम्हरे मधुप वियोगउनके मदनकीडाकझोर॥८८॥इक कमलपर धरंगजरिपु एक कमलपर शशिरिपु जोर। दोउ कमल एक कमल ऊपर जगी एकटक भोर॥ इक सखी मिलि हँसति पूछन खैंचि करकी कोर। तज सुवाइ सु भखत नाहीं निरखि उनकी ओर ॥ बिरस रासनि सुरति करिकरि नैन बहु जल तोर। तीन त्रिवली मनो सरिता मिली सागर छोर ॥ पट कंघ अधरनि माल ऊपर अजयारिपुकी घोर। सूर अबलनि मरत ज्यावो मिलो नंदकिशोर॥८९॥ राग कान्हरा॥मधुकर तोहिं कौनसोंहितु।जोपैचढत रंगतोऊपर त्यों पैहोव श्यामता सेतु॥ मोहनमणिनिडारमोलीतकरि आए सुखप्रीति।अतिशठ ढीठ वसीठ श्यामको हमें सुनावत गीति॥जो करिखतनुमेटो चाहत तो कमलनदनतनुचाहि। सूर गोपाल सुधारसमें मिलि आवन संग समाहि ॥९० ॥ राग ढढो ॥ ऊधो सुनौवृथातनुतात।

पारधी मारि भालक्यों काढै है उरझी हृदयगात॥ऐसे बधिक मृगन मारनको माथे बांधे पात। सुंदर श्याम नाद वंसीके बँधी काम शर घात।यह तौ पीर विरहिनी जानै बहुत जियैं दिनसात। सूर अबै न आपने जानै क्यों पूँछै कुशलात ॥९१॥राग नट॥जोपै मोहिं कृष्ण जिय भावहिं। तो सुन मधुप यशोदानंदन अबहीं गोकुल आवहिं ॥ जिन नैनन मोहन मुख निरख्यो निशिदिन रूप विचारयो। ते नैना जो रहत सूने गृह प्रीति न हृदय विदारयो॥जेहि तनु आसन शयन संग सुख हरि समीप रुचि मानी।जिहि तनु विरह न छुटत सुमिरि गुण नेकहु व्यथा नजानी॥ जिनिश्रवणन सुनि वचन मनोहर मुरली कल मुख बाजति। तिन श्रवणन हरि सुनत मधुपुरीदेतसँदेशनलाजति॥ अतिप्रचंड यह अंड महाभट जाहि सबै जग जानत। सो मदहीन दीनह्वै बपुको कोपि धनुष सर तानत॥सर सौरभ शशि अनिल त्रिविध गुण वेसिय प्रकृति निबाहत।विषम विरह निजजानि मानिमिति तौ या तनुहि न दाहत॥ वन विलास ब्रजवास रास रस देखि देखि दुख पावत। सूरदास बहुरो वियोग गति कुकवि निलज ह्वै गावत॥९२॥राग धनाश्री॥अबहरि औरहि रंग राचे।तुमसमसखा श्यामसुंदरके परम सयानप काचे ॥ बालापनते निकट रहतहो सुन्यो न एक पखानो ।जैसे बास वसतहै कोऊ तैसो हो तुम सयानो॥अरु अपने मुख तुम जु कहतहो प्रभु सबही भरिपूर। आवा-गमन करतहो कापे को लागत को दूर॥ अरु उपमा पटतर ले दीजे ते सब इनहिंन लायक।जोपै अलख रह्यो चाहत तौ बादि भए ब्रजनायक ॥ अरु जो जतन करहुगे हमको ते सब हमहिं अलेखें।सूर सुमनसा तब सुख मानै कमलनैन मुख देखें॥९३॥राग मलार॥हरिविनु जान लगे दिनही दिन। कैसेके राखें प्राण कान्ह विन॥करत जतन कतहि छिनही छिन। सिंहकैसे जीभधरे हरे तृण॥ जोपै नाहीं मानत प्रभु वचन ऋन।तौ का कहिए सूरश्याम सिन॥९४॥अब कोउ ऐसी बातकहो। छाँडहु सकुच मिलहु नँदनंदन हितकरि दुखन दहो॥तुम प्रभु समाधानके कारण पठएकहनसँदेश। अधिक आय आरति उपजाई मेटहु विरह कलेश ॥ इक तुम निकट रहत उनके अरु जानत सकल सुभाइ। सोई करहु प्रगट दरशन जेहि बेगि मिलैं यदुराइ ॥ हम किंकरी कमललोचनकी वश कीनी मृदुहास । सूरदास प्रभु क्यों विसरतहैं नख शिख अंग प्रकास ॥ ९५ ॥ इहै प्रकृति परिआई ऊधो अनुदिन या मन मेरे। जो कोउ कोटि जतन करौ कैसेहुँ फिरत नहीं मति फेरे॥ जादिनते यशुदा गृह जनमें सुंदर यादवराई। तादिनते या दरश परस विनु. और न कछू सुहाई ॥ क्रीडत हँसत कृपा अवलोकत छिन समान दिन जाते । परमतृप्ति सबही अँग होती लोचन पै न अघाते ॥ जागत सोवत स्वप्न श्याम घन सुंदर तनु अति भावै । सु कहि सूर ता कमलनयन बिन बातन क्यों बनिआवै ॥९६॥ ऐसी नियत हृदये माँह। याहीमें सब बात बूझबी चतुर शिरोमणि नाह ॥ आवन कह्यो बहुत दिन लायो करी पाछिली गाह। हमहि छाँडि कुविजहि मन दीनों मेटि वेदकी राह ॥ एते पर लिखि योग पठावत सिद्ध बतावत थाह। सूर श्याम अब ब्रज किन आवहु दिनदश मानहु साह॥९७॥यहि डर बहुरि न गोकुल आए।सुन री सखी हमारी करनी समुझि मधुपुरी छाए॥ आधीरातको उठि बालक सब मोहिं जगो हैं आइ। बिन पह्लव बन बहुरि पठैहैं मोहि चरावन गाइ ॥सूने भवन जाइ रोकत हो अध चोरत नवनीत। पकरि यशोदा पै लइ जैहें नाचहु गावहु गीत ॥ जानो मोहिं बहुरो बाँधैगी कैतव वचन सुनाइ। वे दुख सुमिरि सूर मनहीं मन बहुरि सहै को जाइ॥९८॥ ऊधो वेदवचन प्रमान । कमल मुख पर नैन खंजन निरखि है को आन ॥श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान। अधर सुधा

पिआइ विछुरे पठे दीनो ज्ञान॥ ए नहीं हैं कृपालु केशव पहें हिए समान।निकरि क्यों न गोपाल बोलत दुखिन के दुख जान॥रूप रेख न देखिए तहां मूठ सुमिरि भुलान। इनहि देह अडारि हरि गुण योगज्ञान बखान ॥ वीतराग सुज्ञान योगिन भक्त जनन निवास।निगमवाणीमेटि कहि क्यों सकें सूरजदास ॥ ९९ ॥ आवन आनन कहि गए पै ऊधो अजहूं नहिं आए। इतनी दूरि गोपाल सँदेशन मधुवन दये पठाए ॥ चलत चितै मुसकाइके मृदु वचन सुनाए। तेही टगमोदक भए मनधीर न हरि तन छूछो छिटकाए॥जगमोहन यदुनाथकेगुण जानिहु पाए। मनहु सूर यदि लाजते घनश्याम सुंदर वर बहुरि न चरण देखाए॥२४००॥माधो मन मर्याद तजी। ज्यों गजमत्त जानि हरि तुमसों बात विचारि सजी॥माथे नहीं महावत सतगुरु अंकुश ध्यान कर टूटो। धावत अध अवनी आतुर तजि सोंकर सगुण सु छूटो ॥ इहे यूथ संग लए विहरत त्रिया काननहु माहिं।क्रोध सोच जलसों रतिमानी कामभक्त हित जाहिं ॥ अयुत अपार नहीं कछु समुझन भ्रम गहि गुहा रहे। सूर श्याम के हरि करुणामय कवनहि विरदु गहे ॥ १ ॥राग नट॥सखी री पुर-वनिता हम जानी।याहीते अनुमान करतहैं पटपदसे अगवानी॥अब तौ राज तहां सुनियतहैकुबि-जामी पटरानी। प्रथम ग्वाल गाइन संग रहते भए छांछकेदानी ॥अर्धनिशा ब्रजनारिसंगले वन वंसी लीला ठानी।मन हरिलियो बजाइ बाँसुरी अब होइ बैठे ज्ञानी॥महामछ मारतमनमोहन नाहीं ममता आनी। सूरदास ए कलपत नैना कहै कौनअब बानी ॥ २ ॥ राग बिलावल॥ जिन केई वशपरो बरिआए। सरवस दियो आपनो उनको तऊ न कछू कान्हके भाए॥सहज समाधि रहत योगी ज्यों मुद्रा जटा विभूति लगाए।राज करो इह दान तिहारो जोपै देहु बहुतहरिध्याए॥ ना जानौं अब भलो मानिहैं ऊधो नाचे गाए।सूरदास प्रभुदरशन कारण मानो फिरत धतूराखाए॥ ॥३॥राग मलार॥जोपै कोउ विरहिनको दुख जानै।तौतजिसगुण साँवरी मूरति कत उपदेशेज्ञानै॥ कुमुद चकोर मुदित विधु निरखत कहा करे ले भानै ॥चातक सदा श्वातिको सेवक दुखित होत विनपानै॥भवँर कुरंग काक कोयलको कविजन कपटबखानै।सूरदास जोसरवसदीजैकारे कृतहि न मानै ॥ ४ ॥राग मलार॥श्याम बिनु क्यों जीवें ब्रजवासी।इहि घट प्राण रहत क्योंऊधो बिछुरे कुंजविलासी॥कुबिजा वर पायो मोहनसो मनो तपकियो कासी।सूर श्यामकोइहै परेखो इक दुख दूजी हाँसी॥५॥राग गौरी॥ऊधो कैसे जीवें कमलनैन बिनु।तबतौ पलक लगत दुखपावत अब जो निरखि भरिजात अंग छिनु ॥ जो ऊजर खेरेके देवन को पूजे को मानै। तो हम बिनु गोपाल भए ऊधो कठिन प्रीति को जानै॥तुमते होइ करो सो ऊधो हम अबला बलहीन। सूर वदन देखे हम जीवेंज्यों जलमीनरमीन॥६॥राग धनाश्री॥ लरिकाईको प्रेमकहो अलिकैसे छूटत। कहा करौं ब्रजनाथ चरित अंतरगति लूटत॥वह चितवन वहचाल मनोहर वहमुसुक्यानि जोमंद ध्वनि गावन।नटवर भेष नंदनंदनको वह विनोदजोवनकोआवन॥चरणकमलकीसौंहकरतहौं इह संदेश मोहि विषसों लावत।सूरदास मोहि पलक न विसरत मोहन मूरति सोवतजागत ॥ ७॥ उद्धव वचन राग धनाश्री॥यह उपदेश कह्योहै माधो। करि विचार सन्मुख ह्वै साधो॥इंगला पिंगला सुषमना नारी। सून्यो सहजमें बसहि मुरारी ॥ ब्रह्मभाव करि मैं सब देखो । अलख निरंजन ही को लेखो ॥ पद्मासन इक मन चित ल्यावो। नैन मूँदि अंतरगति ध्यावो ॥ हृदयकमलमें ज्योति प्रकाशी। सो अच्युत अविगति अविनाशी ॥ याहिप्रकार विषम तम तरिये। योगपंथ क्रम क्रम अनुसरिए । दुसह सँदेश सुनत ब्रजबाला। मुरछि परीं धरणी

वेहाला ॥ अरे मधुप लंपट अनिआई। यह संदेश कत कहैं कन्हाई ॥ नंदभवनमें सदाविराजैं। नटवर भेष सदा हरि राजैं ॥ रासविलास करैं वृंदावन। विच गोपी विच कान्ह श्यामघन ॥ अलि आयोहै योग सिखावन। देखिप्रीति लागे शिर नावन ॥ भवँरगीत जो दिन दिन गावै। ब्रह्मानंद परमपद पावै ॥ सूर योगकी कथा वहाई। शुद्ध भक्ति गोपी जन पाई ॥ सांचो मतो जो जिहि विधि धावै। तैसो भाव हरि हियभरि पावै॥८॥अथ गोपी वचन ॥ राग धनाश्री॥इहांहरिजीवहु क्रीडा करी। सोतो चितते जात न टरी ॥ इहां पय पीवत वकी संहारी। शकटतृणावर्तइहांहरि मारी ॥ वत्सासुरको इहां निपात्यो। वका अघा इहांहरिजी घातो ॥हलधरमार्‍योधेनुककोइहां। देखो ऊधो हत्यो प्रलंव जहां ॥ इहाँते ब्रह्म हमको गयो हरि। और किए हरिलगीनपलकघरि॥ ते सब राखे संपति नरहरि। तब इहां ब्रह्मा आय अस्तुति करि॥इहां हरि काली उरग निकास्यो। लगेउ जरावन अनल सो नाश्यो॥वस्त्र हमारे हरि जु इहां हरि। कहांलगि कहिए जे कौतुक करि॥ हरिहलधर इहां भोजन किए। विप्रतियनको अति सुख दिए ॥ इहां गोवर्धन कर हरि धार्‍यो। मेघ वारिते हमें निवार्‍यो॥ शरद निशामें रास रच्यो इहां। सो सुख हमपैवरण्योजातकहां॥वृषभ असुरको इहां संहार्‍यो। भ्रुम अरु केशी इहां पछार्‍यो ॥ इहँ हरि खेलत आँखिमुचाई।कहांलगि वरनैं हरिलीला गाई ॥ सुनि सुनि ऊधो प्रेम मगन भयो। लोटत धर पर ज्ञान गर्व गयो ॥निरखत ब्रज भूमि अतिसुख पावै।सूर प्रभूकोपुनिपुनि गावै॥९॥ राग धनाश्री॥ऊधोजोकरिकृपापाउँधरत हरि तौ मैं तुमहिं जनावों। मौन गहे तुम वैठिरहो हौं मुरली शब्द सुनावों॥ अवहिं सिधारे वन गोचारन हौंवैठी यश गावों। निशि आगम श्रीदामाके सँग नाचत प्रभुहि देखावों॥ को जानै दुविधा संकोचमें तुम डर निकट न आवैं। तव इह द्वंद्व वढै पुनि दारुणसखियन प्राणछोडावैं॥ छिन न रहै नंदलाल इहां विनु जो कोउ कोटि सिखावै। सूरदास ज्यों मनते मनसा अनत कहूं नहिंधावै॥१०॥इति उद्धववचन राग सारंग॥मैंब्रजवासिनकी वलिहारी। जिनकेसंगसदाहैंक्रीडत श्रीगोवर्द्धन धारी ॥ किनहूंके घर माखन चोरतकिनहूंकेसँगदानी। किनहूंकेसंग धेनुचरावतहरिकी अकथ कहानी ॥ किनहूंके सँग यमुनाके तट वंसी टेर सुनावत। सूरदास वलि वलि चरणनकी इह सुख मोहिं नित भावत ॥११॥ रागसारंग॥ होंइहि मोरनकीवलिहारी।वलिहारीवावाँसवंशकी वंसीसी सुकुमारी। सदा रहतहै करज श्यामके नेकहु होत न न्यारी॥ वलिहारी वा कुंजजातकी उपजी जगत उजियारी। सदा रहत हृदये मोहनके कवहूँ टरत न टारी ॥ वलिहारी कुल शैल सर्व विधि कहत कलिंदि दुलारी। निशि दिन कान्ह अंग आली गण आपुनहू भई कारी ॥ वलिहों वृंदावनके भूमिहि सो तो भागकि सारी। सूरदास प्रभु नांगे पाँयन दिनप्रति गैया चारी ॥ १२॥ ॥अथ गोपी वचन राग मारू॥अलि तुम जाहु फिरि वहि देस। चीर फारि करिहौं भगौं हौं शिखनि शिखि लवलेश॥ भाल लोचन चंद्र चमकनि कठिन कंठहि सेस। नाद मुद्रा बिभूति भारो कसैं रावर भेष। वहां जाइ सँदेश कहियो जटा धारैं केश। कौन कारण नाथ छाँडी सूर इहै अँदेश॥ ॥ १३ ॥ राग मलार॥हमपर हेतु किए रहिवो। वा ब्रजको व्यवहार सखा तुम हरिसों सवकहिवो॥ देखे जात अपनी इन अँखिअन या तनको दहिवो। वरनौ कहा कथायातनुकी हिरदेकोसहिवो॥ तव न कियो प्रहार प्राणनिको फिरि फिरि क्यों चहिवो। अव न देह जरिजाइ सूर इन नैननको वहिवो ॥ १४ ॥ अपने जिय सुरति किए गहिवो। ऊधो हरिसों इहै वीनती समो पाइकहिवो॥ घोष बसतकी चूक हमारी कछू नचित गहिवो। परमदीन यदुनाथ जानिके गुण विचारि

सहिवो ॥ अवकी वेर दयालु दरशदे दुखकी राशि दहिवो । सूर श्याम हम कहैं कहाँ लग वचन, लाज वहिवो ॥ १८ ॥ राग कल्याण॥ यदुपतिको संदेश सखी रीकैसेकैकहौं।विनहींकहेआपनेहि मनमें कबलग शूल सहौं ॥ जो कछु वात वनाऊं चितमें रचि पचि सोचिरहौं।मुखआननऊधो तन चितवत नवहु विचार वहौं ॥ सो कछु सीख देहु मोहि सजनी जाते धीर गहौं । सूरदास प्रभुके सेवकसों विनती करि निवहौं ॥ १६ ॥ राग बिलावल॥ करकंकनते भुजटाडभई ॥ मधुवन चलत श्याममनमोहन आवन अवधि जु निकटदई॥जोअति पंथ मनावत शंकर निशिवासर भो गनत गई । पाती लिखत विरह तनु व्याकुल कागर ह्वै गयो नीर मई ॥ ऊधो मुखके वचनन कहियो हरिकी नितप्रति शूल नई । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको विरह वियोगिनि विकल भई ॥ १७ ॥ राग कल्याण॥ कहियो मुख सँदेस हाथले दीजे पाती।समयपाइब्रजवातचलाईसुखहीं माँझ सुहाती ॥ हम प्रतीत करि सरवस अरप्यो गन्यो नहीं दिनराती। नँदनंदनयहछुगतनहोई लेजु रहे मनु थाती ॥ जो तब साधि दीज तौ कोऊ तो अब कत पछताती । सूरदास प्रभु सुकुर जानती तौ सँग लीन्हें जाती ॥ १८॥ राग धनाश्री॥ ऊधो नँदनंदनसोंइतनीकहियो।यद्यपिब्रज अनाथ करि डारचो तदपि सुरति चित किये रहियो ॥ तिनकी तोर करहु जिनि हमसों एक सिवकी लाजनि वहियो ।गुण अवगुणन देखि नहिं कीजतु दासन दासकी इतनी सहियो॥तुम विन प्राण त्याग हम करिहैं यह अवलंब न सुपनेहु लहियो। सूरदास प्रभु लिखिदे पठयो कहां योग कहाँ पियनंदहियो ॥ १९॥ राग नट॥ ऊधो इतनी जाइ कहो।सबैविरहिनीपाँइलगतिहैं मथुरा कान्ह रहो ॥ भूलिहु जिनि आवहिं यहि गोकुल तप्त रैनि ज्यों चंद । सुंदर वदन श्याम कोमलतनु क्यों सहिहैं नँदनंद ॥ मधुकर मोर प्रबल पिक चातक बन उपवन चढि बोलत । मनहुँ सिंहकी गर्ज सुनत गो वत्स दुखित तनु डोलत ॥ आसन भये अनल विष अहि सम भूषण विविध विहार । जित जित फिरत दुसह द्रुम द्रुम प्रति धनुष धरे मनु मार ॥ तुमहो संत सदा उपकारी जानतहौ सब रीति । सूरदास ब्रजनाथ बचे तौ ज्यों नहिंआवैईति॥२०॥राग मलार॥ मधुकर इतनी कहियहु जाइ । अति कृश गात भई ए तुम विनुपरमदुखारीगाइ॥जलसमूहवर-पति दोउ आंखें हूँकति लीने नाउँ । जहां तहां गोदोहन कीनो सूँघति सोई ठाउँ॥परतिपछार खाइ छिनही छिन अति आतुरह्वै दीन।मानहु सूरकाढि डारीहैंवारिमध्यतेमीन॥२१॥राग नट॥ तुम विनु हम अनाथ ब्रजवासी । इतनो सँदेशो कहियो ऊधो कमलनैन विनु त्रासी ॥ जादिनते तुम हमसों विछुरे भूँख नींद सब नासी । विह्वल विकल कलऊ न परत तनु ज्यों जल मीन निकासी॥ गोपी ग्वाल वाल वृन्दावन खग मृग फिरत उदासी। सबई प्राण तज्यो चाहतहैं को करवत को कासी ॥ अंचल जोरे करत बीनती मिलिवेको सबदासी।हमरोप्राण घात ह्वै निवरे तुम्हरे जाने हाँसी ॥ मधुकर कुसुम न तजत सखी री छाँडि सकलअविनाशी। सूर श्याम विन यह वन सूनो शशि विनु रैनि निरासी॥ २२ ॥ राग धनाश्री॥सबै करति मनु-हारि ऊधो कहियो हो जैसे गोकुल आवें । दिन दश रहेसुभलीकीन्हींअब्जनिगहरुलगावें ॥ नहिन सोहात कछू हरि तुम विनु कानन भवन न भावें। वेनु विकल सो चरत नहीं तृण वछा न पीवन धावें ॥ देखत अपनी आँखि तुमहिं तन और कहा वातनसमुझावें।सूरदासप्रभुकठिन हीन तन कत अब वे ब्रजनाथ कहावें॥२३॥ राग गौरी ॥ ऊधोहरिवेगहिदेहुपठाय।नँदनंदनदरशन विनु रटि मरौं ब्रज अकुलाइ ॥ मातु यशुमति सहित ब्रजपति परे धरणिमुरझाइ।अतिविकलतनु

प्राणत्यागत करैं कछु गति आइ ॥ सकल सुरभी यूथ दिनप्रति रुदति पुर दिश धाइ। जहांजहँ दुहि वन चराई मरति तहां बिललाइ॥ परमप्यारी शरद राधिका लईगृह दुख छाइ। तजत चक्र न वक्र चखबिनु करैं कोटि उपाइ ॥ योगपदलै देहुयोगिहिहमहियोग मिलाइ। मधुप बिछुरेवारि मीनहि अनत कहां सोहाइ ॥ आजु जेहि विधि श्यामआवैंकहोतेहि बिधिजइ। सूरदास विरह व्रज जन जरत लेहु बुझाइ ॥ २४ ॥ राग जैतश्री ॥ अलि मलीन वृषभानुकुमारी। हरि श्रमजल अंतर तनु भीजे तालालच न धुआवत सारी॥अधोमुख रहति ऊरध नहिं चितवति ज्योगथहारे थकित जूथ आरी। छूटे चिहुर वदन कुम्हिलाने ज्यो नलिनी हिमकरकी मारी॥ हरि सँदेश सुनि सहज मृतक भईएक विरहिनि दूजे अलिजारी। सूर श्याम बिन यो जीवतिहैं व्रजवनिता सब श्याम दुलारी॥२५॥ राग सारंग ॥ ऊधो देखेही व्रज जात।जाइकहियो श्यामसोयोविरहकेउतपात॥ नैन कछू न सूझई अरु श्रवण कछु न सोहात। श्याम विन सब,व्रजहि सूनो दुसह सरवन घात ॥ आइवौ तौ आइधौ हरि बहुरिशरीर समात। सूरप्रभुपछिताहुगेतुमअंतहू गएगात॥२६॥ राग मलार॥ हरिजीसो कहियो हो जैसे गोकुल आवहिं। दिनदश रहे भली कीनी वहांअवजिनि गहरु लगावहि॥नाहिंन कछू सुहात तुमहिं विनु कानन भवन न भावहिं।बालविलखमुख गो न चरति तृण बछ पय पियन न धावहिं॥देखत अपनी अँखिअनऊधोहमकहिकह।जनावहिं। सूर श्याम विनु तपत रैनि दिन मिले भलेहि सचपावहिं॥२७॥ राग बिहागरे ॥ऊधो तुमहिंश्यामकी सौंहै। मुख देखत कहियो तुमसो जित तित लगी मदनकी दौंहै॥ जो मन योग जुगुति आराधै सो मनतो सबको उनपै है। जैसे वसन तजतहैं पंगन सो गति कान्ह करी हमको है ॥ हम बावरी त्यो न चलि जान्यो ज्यो गज चलत आपनी गोंहै।सूरदास कपटी चित माधो कुबिजा मिलि कपटीकी खोहै ॥ २८॥ राग केदारो ॥ ऊधो एक मेरी बात। बूझियो हरखाइ हरिसो प्रथम कहि कुशलात। तुम जोइह उपदेश पठयो आनियो मन ज्ञान। सत्यहू सब वचन झूंठो मानिये मनन्यान॥और व्रज कहि दूसरोहू सुन्यो कहा बलवीर। जाहि बरजन इहां पठयो कारिहमारी पीर॥आपु जबतेगए मथुरा कहत तुमसो लोग। सहजही ता दिवसते हम भूलियो भय भोग॥ प्रगट पति पितुमात प्रभु जन प्राण तुम आधीन। ज्यों चकोरहि संग चकोरी चित्त चदहि लीन॥रूप रसन सुगंध परसन रुचि न इंद्रिन आन॥होनि हाँस न ताहि विपकीकियोजिन मधुपान॥हैगयोमनआपुहीसबगिनत गुनगन ईश।ज्ञानकी अज्ञान ऊधो तृणतोरि दीजै शीश॥बहुत कहा कहैहि केशोराइपरमप्रवीन। सूर सुमत न छाँडिहै जहां जिवत जल विन मीन ॥ २९ ॥ राग सारंग॥ मधुकर कहियो सुचित सँदेशो । समै पाइ समुझाइ श्यामसो हम जिय बहुत अँदेशो॥एक वार रसरास हमारे मुरली मन जो हरेसो। तबउनवेणु बजाइ बोलाई अबनिर्गुण उपदेशो॥ औरबार उनि योग जुगतिकोभेद न कहो परेसो। तब पतिव्रत तुम करन कहत अब उखरो ज्ञान गडेसो ॥औरकहालौंहमकहैं ऊधो अबलनको दुख ऐसो। सूरदास इनपर हँसिमरियतु कुबिजाकेशव कैसो ॥३०॥ पुन ऊधोवचन ॥ राग नट॥ अब अति चकितवत मन मेरो।आयो हो निर्गुण पदेशन भयो सगुनको चेरो ॥ मैं कछु ज्ञान कह्यो गीताको तुमहिं न परहो नेरो।अतिअज्ञान जानिकै अपनोदूतभयोउनकेरो॥ निजजन जानिहरि इहां पठायो दीनो वोझघनेरो।सूर मधुप उठिचले मधुपुरी बोरियोगकोवेरो॥ ॥३१॥ गोपीवचन राग केदारो ॥ऊधो तिहारे मैं चरणन लागौं वारक यहिव्रज करियो विभावरी।निशि न नींद आवै दिवस न भोजन भावै चितवत मगभई दृष्टि झावरी ॥ एक श्याम बिन कछूनभावै

सहिवो ॥ त जैसे बकत बावरी। या वृंदावन मघन श्याम विन तहां यमुना वहै सुभग सांवरी ॥ लाज वा होति उहँ चलिजाती। चलि न सकति आवे विरह तावरी। सूरदासप्रभु आनि मिलावहु मनमें ग रतिहोइरावरी॥२२॥ अथ यशोमती संदेशउद्धवप्रति ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधोतिहारे पाँइ लागतिहौं तन यो श्यामसों इतनी बात।इतनीदूरबसतक्यों विसरेअपनीजननीतात॥जादिनतेमधुपुरी सिधारे प्रभु म मनोहर गात। तादिनते मेरे नेन पपीहा दरश प्यास अकुलात॥ जहाँ खेलनको ठौर तुम्हारे च द देखि मुरझात।जोकबहूं उठिजात खरिकलों गाइ दुहावनप्रात॥ दुहत देखि औरनके लरिका प्राण निकसि नहिं जात। सुरदास बहुरो कब देखो कोमल कर दधिखात ॥ २३ ॥ राग मलार ॥ तब तुम मेरे काहेको आए। मथुरा क्यों न रहे यदुनंदन जोपे कान्ह देवकी जाए॥ दूध दही काहेको चोरयो काहेको बन गाइ चराए। अघ अरिष्ट काली नहिं काढ्यो विष जलते सब सखा जिआए। सूरदास लोगनके भोरए काहे कान्ह अब होत पराए ॥ २४ ॥ राग सोरठ ॥ ऊधो हम ऐसे नहिं जानी। सुनके हेत मर्म नहिं पायो प्रगटे शारँगपानी ॥ निशिवासर छातीसों गई बालकलीला गाई। ऐसे कबहू भाग होहिंगे बहुरो गोद खेलाई॥ को अब ग्वाल सखा सँग लीन्हें सांझ समै व्रज आवे। को अब चोरिचोरि दधि खैहै मैया कवन बोलावे ॥ विदरत नाहिं वज्रकी छाती हरि वियोग क्यों सहिए। सूरदास अब नँदनंदन विनु कहो कौन विधि रहिए॥२५॥ राग धनाश्री ॥ऊधो जो अबकान्हनऐहैं। जिय जानी अरु हृदय विचारो हम अतिही दुख पैहैं ॥ पूँछो जाइ कवनको ढोटा तब कहा उत्तर देहैं ॥ खायो खेले संग हमारे याको कहा बतेहैं ॥ गोकुल अरु मथुराके बासी कहांलों झूठे केहे।अब हम लिखि पठयो चाहत हैं उहां पता नहिं पैहैं॥इन गायन चरबो छाँडो है जो नहिं लाल चरैहैं।इतनेपर नहिं मिलत सूर प्रभु फिरि पाछे पछितेहैं ॥२६॥ राग सारंग॥तबते छीन शरीर सुभाहु।आयोगोजनसुनलकगतहैग्वालनकेउरदाहु॥ नंद गोप पिछवारे डोलत नैनन नीर प्रवाहु।आनँद मिटयो मिटी सब लीला काहुनमन उत्साहु॥ एक बेर बहुरो व्रज आवहु दूध पतूखी खाहु।सूर सुपथगोकुल जो बैठहुउलटि मधुपुरी जाहु ॥२७॥ ॥राग नट ॥कहियोयशुमतिकीआशीस।जहाँ रहो तहांनंदलाडिलेजीवोकोटिवरीस।मुरलीदईदोहनी घृत भरि ऊधो धरि लई शीश। इह घृत तौ उनही सुरभिनको जो प्यारी जगदीश ॥ ऊधो चलत सखा मिलि आए ग्वाल बाल दश बीश। अबके इहां व्रज फेरि बसावो सूरदासके ईश॥ २८ ॥ अथ सखा बचन राग बिलावल ॥ ऊधो देखतहो जैसे व्रजबासी। लेत उसाँस नैन जल पूरित सुमिरि सुमिरि अविनासी ॥भूलि न उठत यशोदा जननी मनो भुअगम डासी। छूटत नहीं प्राण क्यों अटके कठिन प्रेमकी फाँसी॥ आवत नहीं नंद मंदिरमें बच्यो फिरत पनियासी। प्रेम न मिले धेनु दुर्बल भई श्यामविरहकी त्रासी। गोपीग्वाल सखा बालक सब कहूँ न सुनियत हांसी।काहे दियो सूर सुख में दुखकपटी कान्ह ब्वासी॥२९॥उद्धवबचन राग सारंग॥धन्यनंदधनि यशुमति रानी।धन्य कान्ह प्रकटेसुखदानी॥धन्य ग्वालधन्यधन्यगोपिकाजेहिसेलाए शारँगपानी॥ धनि व्रज भूमि धन्य वृंदावन जहाँ अविनाशी आए॥धन्यधन्यसूर आजुहमहूंजो तुम सब देखे आए ॥३०॥अथ दूसरी लीला ॥ भ्रमरगीत ॥ गोपीवचन॥ राग आसावरी॥ छन्द त्रिभंगी ॥ हरिरथर तनजरयो अनूप दिशाते आवे। जेहि मग कृष्ण गयो तेहि मगते दर्शावे ॥ वे मगते आवे सखन बोले देखो नैन विचारी। मुकुट कुंडल तनु पीत बसन कोउ गोविंदको अनुहारी॥ वैतो भूषण परन लागी तन लगि निअरे आए। ऊधो जिय जानी मन कुँभिलानी कृष्ण संदेश पठाए॥१॥ च

चली पूँछें कछु वातें।कहि कहि ऊधो हरि कुशलातें॥छंद॥कहि कुशलातें सांचीवातेंआव
हरि नाथैं । के गरवाने राजसभा अव जीवत हम न सुहाथैं ॥ठाढी तनु कांपै टेरै झांके वा
अकुलाई । अव जिय कछू कपट जिनि राखौ बूझें सौंह दिवाई ॥२॥ कहो ऊधो तुम क्यों
आए ।तव हेसि कह्यो हम कृष्ण पठाए॥ छंद ॥कृष्ण पठाये तो ब्रज आए कहत मनोहरवानं
सुनहु सँदेशो तजहु अँदेशो ही तुम चतुर सयानी॥गोप सखा जिय हिय जिनि राखौअविग
है अविनासी । मोह न माया वैर न दाया सव घट आपु निवासी ॥३॥ ऊधो जिनि इह कहो
तुम प्रभुकी प्रभुताई । सुनि जिय अंगहि वढ्यो रिसि सही न जाई॥रिसि सही नजाई अंगहि
वाढी अति इह तुमरी चतुराई । दासी कुविजा सेजकी संगत कवन वेद मति पाई ॥
तुमहुं भली कहनको आए हमको भली सु वानी । जो कछु वस्तु देखिअत नैनन सो क्यों
नहिं मनमानी ॥ ४ ॥ गोविंदकी वाणी सवकोई जानी । परवश भई कहत अव सोई मानी ॥
राग छंद॥सव कोइ जानै क्यों मनमाने अव न कछू कहिआवे ।जो कछु कुविजाकेमनभावैसोइ
सोइ नाच नचावे ॥ वाको न्याउ दोप सवहमको कर्मरेख कोजानै।गोरसदेखि ,गोराख्योगाहक
विधिनाकी गति आनै ॥५॥ ऊधो कमलनयनसों कहियो जाइ।एक वेर ब्रजदेखोआइ॥राग छंद॥
जिहिके प्रीति निरंतर मनमें सो मन क्यों समुझावे । शंकर ब्रह्म शेप अरु सुरपति कोउ हरिदर-
श न पावे ॥ वैसे राज विलास कोलाहल घरघर माखन हरई।सूरदास प्रभु मिलत वहुतसुख विरह
श्वास कत जरई॥६॥११॥उद्धव वचन राग भैरव॥मैं तुमपै ब्रजनाथ पठायो।आतमज्ञान सिखावन
आयो॥आपुहि पुरुप आपुही नारी।आपुहि वानप्रस्थ ब्रह्मचारी॥आपुहि पिता आपुही माता ।
आपुहि भगिनी आपुहि भ्राता ॥ आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी।आपुहि राजा आपुहि रानी ॥
आपुहि धरती आपु अकासा । आपुहि स्वामी आपुहि दासा ॥ आपुहि ग्वाल आपुही गाइ।
अपुहि आप चरावन जाइ ॥ आपुहि भँवरा आपुहि फूल । आतमज्ञान विना जगभूल ॥ राव रंक
दूजा नहिं कोई । आपहि आप निरंजन सोई ॥इहि प्रकार जाको मनलागै ।जरा मरनसे भवभय
भागै ॥ योगसमाधि ब्रह्म चित लावहु । ब्रह्मानंद तवहि सुख पावहु ॥ ७ ॥ गोपी उद्धवप्रति उत्तर ॥
योगी होइ सो योग वखाने।नौधा भक्ति दास रति माने ॥भजनानंद अली हम प्यारो । ब्रह्मानंद
सुख कौन विचारो ॥ वतियां रचिपचि कहत सयानी । अँखिया हरिके रूप लोभानी ॥
व्यावरि विथा न वंझा जानै। विन देखे कैसे रतिमाने ॥ पुनिपुनिपुनिवोही सुधि आवे।कृष्णरूप
विन और न भावै ॥ नवकिशोर जेहि नैन निहाऱ्यो ।,कोटि योग वा छविपर वाऱ्यो॥शीश
मुकुट कुंडल वनमाला।क्यों विसरैं वे नैन विशाला ॥ मृगमद मलय अलक घुँघुरारे।उन मोहन
मन हरे हमारे॥ भ्रुकुटी कुटिल नासिका राजै । अरुन अधर मुरली कल वाजै ॥दाडिमदशन
दामिनि दुति सोहैं । मृदु मुसकान जो तन मन मोहै ॥ चंद्रझलक कंठामणि मोती॥दूर करत
उडुगणकी ज्योती ॥ कंकन किंकिणि पदिक विराजे । गजगति चाल नूपुर कल वाजे। वनके
धातु चित्र तनु किए।श्रीवत्स चिह्न राजत अति हिए॥पीतवसन छवि वरणि नजाई।नखशिख
सुंदर कुँवर कन्हाई ॥ रूपराशि ग्वालनको संगी । कव देखैं वह ललित त्रिभंगी॥जोतू हितकी
वात वतावै । मदनगोपालहि क्यों न मिलावै ॥ ८ ॥ उद्धववचन ॥ जाके रूप वरन वपु नाहीं।
नैन मूँदि चितवो चितमाही ॥ हृदय कमलमें ज्योति विराजे । अनहद नाद निरंतर वाजे ॥
इडा पिंगला सुपमन नारी । सहज सु तामें वसे मुरारी ॥ माता पिता न दारा भाई ॥

जल थल घटघट रह्यो समाई ॥ इहि प्रकार भवदुख सरि तरहू । योगपंथ क्रमक्रम अनुसरहू ॥ ॥ ९ ॥ उत्तर गोपिका॥ हम ब्रजवाल गोपाल उपासी । ब्रह्म ज्ञान सुनि आवै हाँसी ॥ ब्रजमें योगकथा तैं ल्यायो।मनो कुबिजा कूबर मोंह दुरायो॥श्यामसो गाहक पाइ देखायो।सो माधो तुम हाथ पठायो ॥हम अबला ठगि अल्प अहीरी। वहां भलो ठग्यो कंसकी चेरी ॥ राम जन्म सीता जदुराई । भली भई कुबिजा वधु पाई ॥ तब सीता वियोग दुख पायो । अब कुबिजा पाइ हियो सिरायो॥इह नीरस ज्ञान कहा लै कीजै।योगमोट दासीशिर दीजै॥१०॥उद्धववचन॥ वे परब्रह्म अच्युत अविनाशी । त्रिगुणरहित प्रभु धरे न दासी॥नहिं दासी ठकुराइन कोई । जहां देखो तहां ब्रह्म है सोई॥अपने औरे ब्रह्महि जानो।ब्रह्मविना दूजोनहिं मानो॥११॥गोपिकावचन॥ खरे करव अलि योग सँवारो । भक्तिविरोधी ज्ञान तुम्हारो॥कहा होत उपदेशे तेरे । नैन सुवस नाही अलि मेरे ॥ हरिपथ जोवैं छिनछिन रोवैं । कृष्णवियोगी निमिष न सोवैं ॥ नँदनंदनको देखे जीवैं । योग पंथ याते नहिं पीवैं ॥ जब हरि आवैं तब सचुपावैं । मोहन मूरति कंठ लगावैं ॥ दुःसह वचन हमें नहिं भावैं । योगकथा वोढें कि बिछावैं ॥ १२ ॥ उद्धववचन ॥ ऊधो कहिकहि धनि ब्रजवाला । जिनके सर्वस मदनगोपाला । ॥ मैं जो कही सो आँवन न पाई । तुमरेदरशभक्ति निजमाई ॥ तुम मम गुरु मैं दास तिहारो । भक्ति सुनाइ जगत निस्तारो॥ भवँरगीत जो सुनै सुनावै । प्रेमभक्ति गोपिनका पावै॥सूरदास गोपी वडभागी । हरिदरशनकी ढवरी लागी ॥१३॥४२॥ अथ दूसरी लीला भँवरगीत ॥ गोपिवचन जतभी॥ ऊधोको उपदेश सुनो किन कान दे । निर्गुण सँदेशो श्याम पठायो आन दे ॥ कोउ आवत ओहि ओर जहां नंदसुवन पधारे । सरस वेणुध्वनि होइ मनो आए ब्रजप्यारे ॥ धाये सब गलगाजिकै ऊधो देखे जाइ । लै आए ब्रजराज गृह आनँद उर न समाइ ॥ अर्घ्य आरती तिलक दूब दधि माथे दीनी । कंचन कलश भराइ और परिकर्मा कीनी ॥ गोपभीर आँगन भई जुरि बैठे इकजाति । जलझारी आगे धरे पूँछत हरिकुशलाति ॥ कुशल क्षेम वसुदेव कुशल देवै कुबिजाऊ । कुशल क्षेम अक्रूर कुशल नीके बलदाऊ ॥ पूँछि कुशल गोपालकी रहे सकल गहि पाँइ । प्रेम मगन ऊधो भए पेखत ब्रजके भाइ॥ मनमें ऊधो कहै ऐसि बूझियन गोपालहि ।ब्रजके हेतु विसारि योग सिखवैं ब्रजवालहिं ॥ इनकी प्रीति पतंगलों जारतहै सब देह । वे हरि दीपक ज्योति ज्यों नेक न उनके नेह ॥ तब ऊधो कर लै लिखी हरिजूकी पाती । पढी परत नहिं नेक रहे गंभीर करि छाती ॥पाती वाँचि न आवई रहे नयन जल पूरि।देखि प्रेम गोपिनकेऊधोज्ञान गर्व गयो दूरि॥फिरिइतउत वहराइ नीर नैननके शोधे।ठानी कथाप्रबाधितवहिंफिरिगोपसमोधे॥ जो व्रतमुनिवर ध्यानहीं पावहिं नर अवतार । ते व्रत सिख सब गोपिका देहीं विषयविसार॥ सुनि ऊधोके वचन रही नीचे कै तारे । मानो माँगति सुधा आनि व्यालनि विष जारे ॥ हम अबलो कहा जानई योग युक्ति की रीति । नँदनंदनव्रत छाँडिकै को लिखि पूजे भीति ॥ अगमते अगह अपार आदि अविगत है सोऊ। आदि निरंजन नाम ताहि रंजे सब-कोऊ ॥ नयन नासिका अग्र है सोऊ तहाँ ब्रह्मको वास । अविनाशी विनशै नहीं सहज ज्योति परगास ॥ ऊधो जो पग पानि नही ऊखल क्यों बांधे । नयन नासिका मुख-न चोरिदधि कौने खाधे।तब जो खिलायो गोदमें बोलि तोतरेबैन ।ऊधोताको बतावहीजाहिन सूझै नैन॥माया अनित्य अधारी ता लोचन दुइ नाखे।ज्ञानी नयन अनंत ताहि सूझे परमाखे॥

बूझो निगम बोलाइके कहैं भेद समुझाइ। आदि अंत जाको नहीं कौन पिता को माइ॥ऊधो घर लागे अरु घूर कहो मन कहँ २ धावै। अपनो घर परिहरै कहो को घूरबतावै॥मूरखयादवजाति हैं हमहिं सिखावहिं योग। हमसों भूली कहतहैं हम भूली धौं लोग ॥ प्रेम प्रेमते होइ प्रेमते परहै हिए। प्रेम बंधो संसार प्रेम परमारथ लहिए॥ एकैनिश्चयप्रेमकोजीवनमुक्तिरसाल।सांची निश्चय प्रेमकी जिहिरे मिलैं गोपाल ॥ ऊधो कहि सतभाव न्याय तुम्हरे मुख सांचे। योगप्रेमरसकथा कहो कंचनकी कांचे ॥ जाके परहै हूजिए गहिए सोई नेम। मधुप हमारी सों कहो योग भलो किधौं प्रेम ॥ सुनि गोपीके वयन नेम ऊधोके भूले। गावत गुण गोपाल फिरत कुंजनमें फूले ॥ खन गोपी के पॉइ परे धन्य सोइहै नेम। धाइ धाइ द्रुम भेंटई ऊधो छाके प्रेम ॥ धनि गोपी धनि ग्वाल धन्य सुरभी वनचारी। धनिइहां पावन भूमि जहां गोविंद अभिसारी॥उपदेशन आये हुते मोहिं भयो उपदेश। ऊधो यदुपतिपै चले धरे गोपकी भेप ॥ भूले यदुपति नावँ कहो गोपाल गोसाई। एकवार व्रज जाहु देहु गोपिन देखराई॥ वृन्दावन सुख छाँडिके कहां वसेहोआइ॥ गोवर्धन प्रभु जानिके ऊधोप करेपाँइ। ऊधो व्रजको प्रेम नेम वरणो सब आई। उमँग्यो नैनन नीर बात कछु कह्यो न जाई ॥ सूर श्याम भूलत भए रहे नैन जल छाइ। पोंछि पीतपटसोंकह्योभलेआए योगसिखाइ ४३ ॥ तिमँवरगीत ॥ अध्याय॥४८॥अथ उद्धव मथुरा आए श्रीकृष्णमाति वदति ॥ राग सारंग ॥ ऊधो जब व्रज पहुँचे जाइ। तबकी कथा कृपा करि कहिए हम सुनिहैं मन लाइ ॥ बाबानंद यशोदा मइया मिले सबन हित आइ। कबहूं सुरति करत माइनकी किधौं रहे विसराइ ॥गोप सखा दधिखात भात वन अरु चाखते चखाइ।गऊवच्छमुरलीसुनिउमडतअबहिं रहत केहि भाइ ॥ गोपिन गृह व्योहार विसारे मुख सन्मुख सुखपाइ। पलकवोट निमिपर अनखाती यह दुख कहां समाइ ॥ एक सखी उनमें जो राधा जब हौं इहँते गयो। तबव्रजराजसहित सब गोपिन आगे है जो लयो ॥ उतरे जाइ नंदबाबाके सबही शोध लह्यो। मेरीसौं सांचीकहु ऊधो मैया कछू कह्यो ॥ वारंवार कुशल पूँछी मोहिं लै लै तुम्हरो नाम।ज्यों जल तृपा घटी चातक चित कृष्ण कृष्ण वलराम ॥ सुंदर परम विचित्र मनोहर वह मुरली देइ घाली। लई उठाइ उर लाइ सूर प्रभु प्रीति आनि उर शाली ॥ ४४ ॥ सुनिए व्रजकी दशा गोसाई। रथकी ध्वजा पीतपट भूपण देखतही उठि धाई ॥ जो तुम कही योगकी बातें ते मैं सबै सुनाई। श्रवण मूँदि गुणकर्म तुम्हारे प्रेम मगन मन गाई॥ औरो कछु संदेश सखी इक कहत दूरि लौ आई। हुतो कछू हमहूँसों नातो निपट कहा विसराई ॥ सूरदास प्रभु वनविनोद करि जो तुम गऊ चराई।ते गायग्वालन हेरी देय हरति मानों भई पराई॥४५॥राग सारंग॥व्रजके विरही लोग दुखारे। विन गोपाल ठगेसे ठाढे अतिदुर्वल तनुकारे ॥ नंद यशोदा मारगजोवत नित उठि साँझ सवारे। चहुँ दिशि कान्ह कान्ह करि टेरतअँसुवनवहतपनारे॥गोपीगाइग्वाल गोसुत सब अतिही दीन विचारे।सूरदास प्रभु विन योंशोभित चंद्र विना ज्यों तारे॥४६॥राग केदारो॥ हरिजी सुनो वचन सुजान।विरह व्याकुल छीन तनमनहीनलोचनप्राण॥इहैहैसंदेशव्रजको माधो सुनहु निदान। मैं सबै व्रज दीनदेखे ज्यों विना निर्मान॥तुमविनाशोभा न ज्यों गृह विना दीप भयान। आस श्वाश उसांस घटमें अवध आशा प्रान॥ जगत जीवन भक्तपालन जगतनाथ कृपाल। करि जतन कछु सूरके प्रभु जो जिवै व्रजबाल ॥ ४७॥ राग जैतश्री॥ सुनहु श्याजू ये व्रजवनिता विरह तुम्हारे भई वावरी। नाहिन नाथ और कहि आवत छांडि

जहां लगि कथा रावरी ॥ कबहुँ कहत हरि माखन खायो कौन बसैयाकठिनगाँवरी। कबहुँ कहत हरि ऊखल बांधे घर घर ते लै चली दाँव री ॥ कबहुँ कहत ब्रजनाथ बनगए जोवत मगभईदृष्टि झाँवरी । कबहुँ कहत या मुरली महियाँ लै लैबोलत हमरो नाँवरी ॥ कबहुँकहतब्रजनाथसाथते चंद्र उग्योहै एहि ठाँवरी । सूरदासप्रभुतुम्हरेदरशविनुअबवहमूरतिभईसाँवरी॥४८॥राग बिहागरो ॥ हरि आए सो भलीकीन्ही । मोहिं देखत कहि उठी राधिका अंक तिमिरको दीन्ही ॥ तनु अति कँपति विरह अति व्याकुल उर धुकधुकी खेद कीनी। चलत चरणगहि रही गई गिरि खेद सलिल भयभीनी ॥ छूटी बट भुज फूटी बलया टूटी लर फटी कंचुकी झीनी । मानो प्रेमके परन परेवा याहीते पढ़ि लीनी ॥ अवलोकति इहिभाँति रमापति मानो छूटीअहिमणिछीनी। सूरदास प्रभु कहाँ कहांलगि है अयान मति हीनी॥४९॥ मलार॥सुनोश्यामयहबातऔरकोउक्योंसमुझायकहै। दुहुँदिशिकी रति विरह विरहिनी कैसेकै जो सहै।जब राधे तबहीं मुख माधोमाधो रटतरहै । जब माधो होइजात सकल तनु राधा विरह दहै । उभयअग्र दौंदारु कीट ज्यों शीतलताहि चहै। सूरदास अतिविकलविरहिनीकैसेहु सुखनलहै॥५०॥ राग केदारो॥चितदैसुनोश्यामप्रवीन।हरितुम्हारे विरह राधा मैं जु देखी छीन ॥ तज्यो तेल तमोल भूषण अंग वसन मलीन । कंकना करबाम राख्यो गढी भुजगहि लीन ॥ जबसँदेशाकहनसुंदरिगवनमोतनकीन।खसिमुद्रावलिचरनअरुझी गिरि धरनि बलहीन ॥ कंठवचन न बोल आवै हृदय परिहस भीन।नैनजलभरिरोइदीनोग्रसित आपद दीन ॥ उठी बहुरि सँभारि भट ज्यों परम साहस कीन । सूर प्रभु कल्याण ऐसे जिवहि आशालीन ॥ ५१ ॥ भरि भरि लेत ऊरध श्वास । साँवरेब्रजनाथतुमबिनुदुखितपंचशरत्रास॥अमित पीर अधीर डोलत समर मीन विलास । तेई सुख दुख भए दारुण मिलि गए रस रास ॥ निगम गुरुजन लोग न डरत जगकरत उपहास।सूर श्याम विनु विकल विरहिनी मरत दरश बिन प्यास ॥ ५२ ॥ राग धनाश्री ॥उमँगि चले दोउ नैनविशाल।सुनिसुनि यहसंदेशश्यामघनसुमिरि तुम्हारे गुण गोपाल॥ आनन वपु उरजनिके अन्तर जलधारा बाढी तेहिकाल।मनु युगजलज सुमेर शृंगते जाइ मिलि सम शशिहि सनाल ॥ भींजे विय अंचर उर राजित तिनपर वर मुकुतनकी माल।मनों इंदु आये नलिनी दल लंकृत अमी ओस कण जाल॥कहां वह प्रीति रीति राधासों कहां यह करनी उलटी चाल । सूरदास प्रभु कठिन कथनते क्यों जीवैविरहिनिवेहाल॥५३॥राग मारू॥तुम्हरे विरह ब्रजनाथ राधिका नैनन नदी बढी।लीने जाति निमेषकूलदोऊ एतेयानचढी॥ गोलकनाउ निमेष न लागत सो पलकनि बर बोरति । ऊरध श्वास समीर तरंगि नितेजतिलकतरु तोरति ॥ कज्जलकीच कुचील किए तट अंवर अधर कपोल । थकि रहे पथिक सुयशहितहीके हस्त चरण मुख बोल॥ नाहिंन और उपाय रमापति बिन दरशन जो कीजै।अंशुसलिलबूडतसब गोकुल सूर सुकरगहिलीजै॥५४॥राग मलार॥नैन घट घटतनएकवरी।कबहुं न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी॥ विरह इंद्र बरषत निशिवासर इहि अति अधिक करी। उरध उसाँस समीर तेज जल उर भुवि उमँगि भरी॥बूडति भुजा रोमद्रुम अंवर अरुकुच उचथरी।चलिनसकतपथिक रहे थकि चंद्रकी चखरी ॥ सब ऋतु मिटी एक भई ब्रज महिं यहि विधि उलटि धरी । सूरदास प्रभु तुम्हरेबिछुरे मिटिमर्यादटरी॥५५॥राग केदारो॥देखीमैंलोचनचुवतअचेत। मनहुँकमल शशि त्रास ईशको मुक्ता गनिगनि देत ॥ द्वारखडी इकटक मग जोवत ऊरध श्वासन लेत । मानहुँ मदन मिलि चाहति है मुंचत मरुत समेत ॥ श्रवण न सुनत चित्र पुतरी लौं समुझावत

जितनेत। कहु ककन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटक कहुँ नेत॥ मनहु बिरह दव जरत विश्व सब राधा रुचिर निकेत।धुज होइ सूखिरही सूरज प्रभु वेंधी तुम्हारे हेत ॥५६॥राग मलार॥नैननि होड वदी वरपासो। राति दिवस वरसत झर लाए दिन दूरी करखासो ॥ चारि मास वरपे जल खूटे हारि समुझि उनमानी।एतेहूपर धार न खडित इनकी अकथ कहानी॥॥एते मानचढाइचढीअति तजी पलककी सीव। में दिन दिन उनमानो महाप्रलयकी नीव ॥ तुमपे होइ सो करहु कृपा-निधि ए व्रजके व्यवहार।अबकी वेरपाछिले नाते सूर लगावहु पार॥५७॥राग गौरी॥व्रजते द्वैऋतु पैनगई। ग्रीपम अरु पावस प्रवीन हरि तुम विनु अधिक भई॥ उरध उसाँस समीर नैन घन सव जल योग जुरे। वरपि प्रगट कीन्हें दुख दादुर हुते जु दूरि दुरे॥ तुम्हरो कठिन वियोग विपम दिनकर सम उदो करे।हरिपद विमुख भएसुनु सूरज को इहि ताप हरे॥५८॥राग कान्हरो॥नाहिनकछु सुधि रही हिए।सुनो श्याम वै सखिहि राधिकहि जुगवति जतन किए॥कर कंकन कोकिला उडावत बिनुमुख नाम लिए। सैन सूचनानखनि नितवै किसलय श्रवणनशवद दिए॥शशिशकानि गिजाल-निके मग वसन वनाइ किये।दिशि दिशि शीत समीरहि रोकत अंतर ओट दिए॥मृगमदमलेपरस तनु तलफत जनु विप विपम पिए॥जो न इतेपर मिलहु सूरप्रभुतो जानबीजए॥५९॥राग गौरी॥ कहालौं कहिए व्रजकी वात। सुनहु श्याम तुम विनु उन लोगइ जैसे दिवस विहात॥ गोपी गाइ ग्वाल गोसुत वे मलिन वदन कृशगात। परमदीन जनु शिशिरहिमीहत अंबुज गन निनपात॥ जाकहुँ आवत देखिदूरते सब पूँछति कुशलात।चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरणन लपटात॥ पिकचातक वन वसन न पावहिं वाइस वलिहि न खात। सूर श्याम सदेशनके डर पथिक न उहि मग जात॥६०॥राग मलार॥व्रजकीकही न परतिहैवातें।गिरितनयापतिभूपण जैसे विरहजरी दिनरा-तैं॥मलिन वसन हरिहित अतगति तनु पीरो जनु पाते। गदगदवचन नैन जल पूरित विलखिवदन कृशगाते॥ मुक्तो ताते भवनते विछुरे मीन मकर बिललाते। सारगरिपु सुत सुहृदपति विना दुख पावति वहु भाते॥ हरि सुर भपन विना विरहाने छीन भई तनु ताते। सूरदास गोपिन परतिज्ञा मिलहु पहिलके नाते॥६१॥राग कल्याण॥ रहति रैनि दिन हरि हरि हरि रट। चितवत इकटकमग चकोर लौं जवते तुम विछुरे नागर नट॥भरि भरि नैन नीर ढारतिहैं सजल करतिअतिकचुकिके पट। मनहुँ विरहकी ज्वरता लगि लियो नेम प्रेम शिव शीशसहसघट॥जैसे युगके अग्र ओसकण प्राण रहत ऐसे अवधिहिके तट।सूरदास प्रभु मिलौ कृपाकरि जोदिनकहे तेउ आए निकट॥६२॥ ॥राग सारग॥दिनदश घोप चलहु गोपाल। गानइके अवसेर मिटावहु लेहु आपने ग्वाल॥ नाचत नहीं मोरतादिनते बोलेन वर्षाकाल॥मृग दूवरे तुम्हारे दरश विनु सुनत न वेणु रसाल॥ वृंदावन हरयो होत न भावत देखोश्याम तमाल।सूरदास मइया अनाथहै घरचलिए नँदलाल॥६३॥राग सोरठ॥ ऊधो भलो ज्ञान समुझायो। तुमसो अव यों कहा कहतहैं मैं कहि कहा पठायो॥ कह-वावतहो वडे चतुरपै वहां न कछु कहि आयो। सूरदास व्रजवासिनको हित हरि हियमांझदुरायो॥ ॥६४॥राग सारग॥मैं समुझाई अति अपनोसो॥तदपि उन्हें परतीति न उपजी सबै लखोमपनो-सो॥कह्यो तुम्हारो सबै कही मैं और कछूअपनी।श्रवण न वचन सुनतहैं उनके जोवटमहँअक-नी॥कोई कहेवातवनाइ पचामक उनकी वात जो एक। धन्य धन्य जो नारी व्रजकी विन दरशन इहि टेक॥ देखत उमँग्यो प्रेम यहाके धरी रहीमन रोयो। सूर श्याम हौं रहौं ठगोसोज्यों मृग चौंको भोयो॥ ६५॥ वातैं सुनहु तो श्याम सुनाऊंवे उमँगी जलनिधि तरग ज्यों तामेंथाह

नपाऊं ॥ कौन कौन को उत्तर दीजे ताते भग्यो अगाऊं वे मारे शिर पटिया पारे कंथा काढि उढाऊं ॥ एक अँधेरो हियेकी फूटी दौरत पहिर खराऊं । सूर सकल षटदरशन वे हैं बारहखरी पढाऊं ॥६६ ॥ सुनि लीन्हों उनहींको कह्यो । अपनी चाल समुझि मनहीं मन गुनि अरगाइ रह्यो ॥ अवलनि सों कही परि जापे बात तोरि कनि क्रानि। अनबोले पूरो दै निबह्यो बहुत दिननको जानि। जानि बूझिके हौं कत पठयो शठ बावरो अयानो। तुमहूं बूझि बहुत बातनको वहां जाहु तौ जानो॥ आज्ञाभंग होय क्यों मोपै गयउ तुम्हारे ठीले। सूर पठावनहीकी बोरी रह्यो जु गजसोंलीले ॥६७॥ राग मलार॥ हो हरि बहुत दाँउ दै हारचो । आज्ञा भंग होइ क्यों मोपै वचन तुम्हारो पारयो॥ हारि मानि उठि चल्यो दीन ह्वै जानि आपुन पै के । जानिलेहु हरि इतनेहीमें कहा करे नीमनको वैद्यु॥ उत्तरको उत्तर नहिं आवत तब उनहीं मिलि जातु । मेरी किती बात ब्रह्माको अर्धवचन मेंमातु। अपनी चाल समुझि मनहीं मन चल्यो बसीठी तोरि। सूर एकहू अंग न काची मैं देखी टकटोरि ॥६८॥ कहिबेमें न कछू शक राखी। बुधि विवेक उनमान आपने मुख आई सो भाखी ॥ हौं मरि एक कहौं पहरकमें वे छिनमांझ अनेक । हारि मानि उठि चल्यो दीन ह्वै छाँडि आपनी टेक ॥ हौं पठयो कत कौने काजै शठ मूरख जो अयानो । तुमहिं बुझावहु ते बातनकी वहां जाहु तौ जानो ॥ श्रीमुखकी सिखई ग्रंथोकति ते सब भई कहानी । एक होइ तौ उत्तर दीजे सूर सु मठी उभानी ॥६९॥ राग सोरठ॥ माधोजी में योगको बोझा भरयो । श्याम उन मुखविधु वचन सुधारस सुनि सुनि कछु न कह्यो ॥ तौलौं भार तरंग मो उदधि सखि लोचन उमह्यो । तुम जो कह्यो ज्ञानको मारग सो बातें जो बह्यो॥ मोहिं आश्चर्य एक जो लागत तौ कैसे जात सह्यो। सूरदास प्रभु सखी सयानी लै भुज बीच गह्यो ॥७०॥ राग नट॥ कोऊ सुनत न बात हमारी। कहा माने योग युक्ति यादवपति प्रगट प्रेम ब्रजनारी ॥ कोऊ कहति इंद्र जब बरषो टेकि गोवर्धन लेत॥ कोउ कहति हरि गए कुंजबन शीश घाम वे देत॥ कोऊ कहत नाग कारे सुनि गएहरियमुनातीर । कोउ कहै गए अघासुर मारन संग लिए बलवीर ॥ कोउ कहै ग्वाल बाल सँग खेलत बनमें जाइ लुकाने । सूर सुमिरि गुण माधो तुम्हारे कोउ कह्यो ना मानै॥७१॥ राग सारंग॥ हरि तुम्हें वारंवार सँभारें । कहहु तौ सब युवतिनके नाम्र कहौं जे हितसों उर धारें॥ कबहुँक आँखि मूँदिकै चाहति सब सुख अधिक तिहारे । तब प्रसिद्ध लीला सँग विहरत अबचित डोर विहारे ॥ जाको कोऊ जेहि विधि सुमिरे सोउ तेही हित मानै । उलटी रीति सबै तुम्हरे हे हमतो प्रगट कहि जाने॥ जो पतिआंहो तुम पठवत लिखि बीच समुझि सब पाउ। सूर श्याम है पलक घाममें लखि चित कत बिललाउ ॥ ७२ ॥ माधोजू कहा कहौं उनकी गति । देखत बने कहत नहिं आवे परम प्रीति तुमते रति ॥ यद्यपि हौं षडमास रह्यो ढिग लही नहीं उनकी मति । कासों कहौं सबे एकै बुधि परबोधी माने नाहीं अति ॥ तुम कृपालु करुणामय कहियत ताते मिलत कहा क्षति। सूर श्याम सोई पै कीजे जाते तुम पावहु पति ॥७३॥ तुम्हारोइ चित्र बनाउ कियो । तब को इंदु सम्हारि तुरतही मनसिज साजि लियो ॥ नलि गहि युग अंगुलीके बीचे उग भरि पानि पियो । पुरप्रति करति लेखको प्रारंभ तबहि प्रहार कियो ॥ वे पथ विकल चकित अति आतुर भर्मन हेतु दियो । भृति बिलंबि पृष्टि दै श्यामा श्यामै श्याम बियो॥ या गति पाइ रही राधा अब चाहति अमृत पियो। सूरदास प्रभु प्रीतउलटि परी है कैसे जात जियो॥७४॥ राग केदारो॥ अब जिनि बाँधि वेहि डराहु। दूध दधि माखन मनोहर डारि देहु अरु खाहु॥ सदा बैठे घोष रहियो बन न देहें जा-

न। पलकहू भरि दुख न देहैं राखिहैं ज्यों प्रान॥ सब तिहारो कहे करिहैं वचन माथे मानि। परम चतुर सुजान ईते मांझ लीजो जानि॥ अब न कौनो चूक करिहैं यह हमारेबोल। किंकिरिनिकी लाज धरि ब्रज सुबस करहु निटोल॥ समुझ निज अपराध करनी नारि नावति नीचि। बहुत दिनते बरति हैं के आंखि दीजे सीचि॥ मन वचन अरु कर्मना कछु कहति नाहिंन राखि। सूर प्रभु यह बोल हृदय सातराजासाखि॥७५॥राग सारंग॥कहत न बनै ब्रजकीरीति। नाथ मम शठको पढचो भयो देखिउनकीप्रीति॥युवतिवश्य भक्त कहावतकरतसकलअनीति। मोहितो यह कठिन औरो क्यों करिहै परतीति॥ सुनों धौं दै कान अपनी लोक लोकनि कीति। सूरप्रभु अपनी एचाई रही निगमन जीति॥७६॥राग नट॥परम वियोगिनी सब ठाढी। ज्यों जलहीन दीन कुमुदिनि बन रविप्रकाशकीडाढी॥जिहि विधिमीनसलिलतेबिछुरेतिहि अतिगति अकुलानी। सूखे अधरकहि न आवै कछु वचन रहितमुखबानी॥उन्नतश्वासविरह विरहातुरकमलवदनकुम्हिलानी। निदति नैननिमेष छिनहि छिन मिलनकठिनजिय जानी॥बिनु बुधि बल विचित्र कृत शोभित चलि न सकी पचिहारी। सूरदासप्रभुअवधिगयोनतोप्राणतजतब्रजनारी॥७७॥रागमारू॥ सब ब्रज घर घर एकै रीति। ज्यों कुरुखेत गडेको सोनों त्यों प्रभु तुम्हरी प्रीति॥ वै सब परम विचित्र सयानी अरु सबही जगकीति। उनको ज्ञान सुनतही शठ भयो ज्योंबहुदिनकीभीति॥ एकै गहन धरी उन हठ करि मेटि वेदविधिनीति। गोपवेषनिज सूरश्याम ले रहीविश्वबर जीति॥७८॥राग केदारो॥व्रजजन दुखित अति तनछीन। रटत इकटकचित्रचातक श्याम घनतन लीन॥ नाहिं पलटत वसन भूषन दृगन दीपक तात। मलिन वदन बिलखि रहत जिमि तरनि हीन जलजात॥ कहन जो तुम कहेउ सो रति मति पच्यो करि उपदेश। धरत नलनी बूंद ज्यों जल वचन नहिं परवेश॥ धरे मुरली मोर चंद्रिका पीतपट वनमाल। रही वह छबि एक अंगनि लपट श्याम तमाल॥ दिवस बितवति सकल जन मिलि कथति गुण बलवीर। रैनि उडुपति निरखि तलफति मीन ज्यों जलतीर॥ हौंहो करुणानाथ बंधो कहेउ ऊधो गहि पाइ। सूर प्रभु अब दरश दैकरि लेहु मरति जिआइ॥७९॥राग सारंग॥तबते इनसबहिनसचुपायो। जबते हरिसंदेश तुम्हारो सुनत तवारो आयो॥फूले व्याल दुरेते प्रगटे पवन पेट भरि खायो॥कुचोयशमूचोकोचरणन तेहु तो सब बिसरायो॥ निकसि कंदराहूते केहरि शिरपर पूंछ हिलायो। गह्वरते गजराज आइ अंगही सर्व गर्व बढायो॥ऊंचे बैसि विहंगमभामेशुक बनराइ कहायो। किलकिकिलकि कुलसहित आपनी कोकिल मंगलगायो॥ अब जिनि गहर करोहो मोहन जो चाहतहो ज्यायो। सूर बहुरि ह्वैहै राधाको सब वैरिनिको भायो॥८०॥राग धनाश्री॥ आजु विरहिनी विरह तुम्हारे केसोरटतरही। चारि याम निशि तुम्हरोई सुमिरन और न बात कही॥ बासर कथाकठिनमन करिकरि क्रम क्रम व्यथा सही। संध्या शशि देखि उठि चलीजब अंकन रहत गही॥ मृगमद मलय कुमकुमा उरजल सरिता सेज बही। ते क्योंशीतलहोहिंसूरप्रभुपिय जू विरहदही॥ ८१॥रागसारंग॥ कान्ह तुम्हारी विकलविरहिनी विलपतिविरह वियोग। अतिआरत न सम्हारत तन मन इकटक लोमग योग॥ कतर मिलो लोचन बरषत अति दुख मुखके छबिरोयो। राहु केतु मानो सुमीडि विधु आंक छुटावत धोयो॥ अबला कहा योग मत जानैमन्मथ व्यथाबिगोयो। सूरदास ज्योंनीर चुवतहै नीरस वसन निचोयो॥८२॥राग सोरठ॥माधोजू सुनोब्रजकोप्रेम। बूझि मैं षटमास देख्यो गोपिकनको नेम॥ हृदयते नहिं टरत उनके श्याम नाम सुहेत। अँसुव सलिल प्रवाह उर मनों

अरघ नैनन देत॥ चमर अंचल कुच कलश मनों पाय पाणि चढाइ। प्रगट लीला देखि इनकी कर्म उठती गाइ॥देह गेह सनेह अर्पण कमललोचन ध्यान। सूर इनको भजतदेखत फीकोलागत ज्ञान॥८३॥ माधोजू सुनिये व्रजव्यवहार। मेरो कह्यो पवनको भुसभयो गावतनंदकुमार॥ एक ग्वालि गोसुत ह्वै रेंगति एकलकुट कर लेति। एक ग्वालि मंडली करि बैठति छाँक बाँटिके देति॥ एक ग्वालि नटवत बहुलीला एक कर्मगुण गावति। बहुत भाँति करि मैं समुझाई नेकु न उरमें आवति॥ निशिवासर याही ढँग सब व्रज दिन दिन नवतन प्रीति। सूर सकल फीको लागत इँ देखत वह रँगरीति॥८४॥ राग मल्हार॥ बातें बूझति यों बहरावति।सुनहु श्याम वे सखी सयानी पावसऋतु रायहि न सुनावति॥ घन गर्जत मनु कहत कुशलमति कूजत गुहासिंह समुझावति। नहिं दामिनि द्रुम दवा शैलचढि फिरिबयारि उलटी झर धावति॥ नाहिन मोर बकत पिक दादुर ग्वालमंडली खगन खिलावत। नहिं नभ वृष्टि झरन झरऊपर बूँद उचटि इत आवत॥ कबहुँक प्रगट पपीहा बोलत कहि कुवेप करतारि बजावत। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन सो बिरहिनि इतनो दुख पावत॥८५॥राग नट॥ नेकहूकाहू सोचन,कीन्हों। सुन व्रजनाथसबनके अवगुण मिलि मिलिहैं दुख दीन्हों॥ऋतुबसंत अनसमै अवममति पिक सहाउ ले धावत। प्रीतम संग न जानि युवति रुचि बोलेहु बोल न आवत॥सदाशरदऋतुसकलकलालैसन्मुखरहत जुन्हाइ। सो सितपक्ष कुहू सम बीतत कबहुँ नदेत देखाइ॥ त्रिविध समीर सुमनसौरभमिलिमत्त मधुपगुंजार। जोइ जोइ रुचे सु कियोबाँधि बल तजि मन सकुच बिचार॥ रतिपतिअतिअनीति कविकोकोटिधूमध्वजमानो।लैकरधनुपचितै तुम्हरोमुख अवबोलतब जानों॥ इहिविधिसबनवीन पायोव्रजकाढतबैरदुरासी।सूरदास प्रभु वेगि मिलहु अब पिशुन करत सब हाँसी॥८६॥राग सारंग॥ सबते परम मनोहर गोपी। नँदनंदनके नेह मेह जिनि लोक लीक लोपी॥ बरि कुबिजाके रंगहि राचे तदपि तजी सोपी। तदपि न तजे भजे निशि वासर नेकहू न कोपी॥ज्ञानकथाकीमथि मन देखो ऊधो बहुवोपी। टरति घरी छिन नेक न अँखिया श्यामरूप रोपी॥ जे तिहि तिहि हरिके अवगुणकी ते सबई तोपी। सूरदास प्रभु प्रेम हेम ज्यों अधिक ओप ओपी॥८७॥राग सारंग॥ मोमन उनईको भयो। परचो प्रभु उनके प्रेमको सँमै तुमहू बिसारि गयो॥ तुमसों शपथ करि गयो माधव वेगि कह्योहो आवन। तिनहिं देखि वैसोई ह्वैगयो लग्यो उनहिं मिलि गावन- समुझि परी षटमास वितैते कहां हुतो हों आयो।सूरअनकही देंगोपिनसों श्रवणमूँदिउठिधायो॥ ॥८८॥राग गंधार॥उनमेंपांचोदिनजोवसिए। नाथतुम्हारीसौंजियउपजतफेरिअपनोचोंकसिए॥ वह बिनोदलीला वह रचना देखेही बनि आवै। मोको कहां बहुरि वैसे सुखबडभागीसो पावै॥ मनसा वचन कर्मना अबहैं कहत नहीं कछु राखी। सूर काढि डारचो व्रजते ज्यों दूध मांझते माखी॥८९॥राग सोरठ॥ माधोजू मैं अतिहीसचुपायो। अपनोजानिसँदेश साजि करिव्रजमेंमिलन पठायो॥ क्षमा करो तो करौं बीनती उनहिं देखि जो आयो। सकलनिगमसिद्धान्त जन्मकर श्याम उन सहज सुनायो॥ नहिं श्रुति शेष महेश प्रजापति जो रस गोपिन गायो। कथा गंग लागी मोहिं तेरी उह रस सिंधुउमहायो॥ तुम्हरीअकथकथा तुमजानौहमैंजिननाथ बिसरायो। सूर श्याम सुंदरि इहसुनिसुनि नैनन नीरबहायो॥९०॥राग मल्हार॥जोपैप्रभुकरुणाके आले तौ कत कठिन कठोर होत मन मोहिं बहुत दुख शाले॥ बडो बिरदकी लाज दीनपति करि सुदृष्टि देखो। मोसों बात कहत किन सन्मुख कहा अवनि अवलेखो। निगमकहत वश होत भक्तित

सोऊ है उन कीनी।सूर उसाँस छाँडि हाहाब्रज जल अँखियां भरिलीनी ॥९१॥ राग मारू॥ सुनु ऊधोमोहिं नेकन बिसरतवे ब्रजवासी लोग।तुम उनको कछुभलीनकीनीनिशिदिनदियो वियोग॥ यद्यपि वसुदेव देवकी मथुरा सकल राज सुखभोग। तद्यपि मनहि बसत बंसीबट ब्रज यमुना संयोग ॥ वै उत रहत प्रेम अवलंवन इतते पठयो योग। सूर उसाँस छाँडि भरि लोचन वढ्यो विरहज्वर शोग ॥ ९२ ॥ ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं। वृंदावन गोकुल तन आवत सघन तृणनकी छाहीं॥ प्रात समय माता यशुमति अरु नंद देखि सुख पावत। माखन रोटी दह्यो सजायो अतिहित साथ खवावत॥ गोपी ग्वाल वालसँगखेलत सब दिन हँसत सिरात। सूरदास धनिधनि ब्रजवासी जिनसों हँसत ब्रजनाथ॥ ९३ ॥ भक्तवछल वसुदेवकुमार।चले एकदिन सुफलकसुतके गृह पंडवहेत बिचार॥ मिलो सो आयपाय सुधि मगमें बारबार परि पाइ।गयो लिवाय सुभग मंदिरमेंप्रेम नबरनो जाइ॥चरण पखारि धारि जल शिरपर पुनिपुनि दृगन लगाइ॥ विविधसुगंध चीर आभूपन आगे धरेवनाइ॥धन्यधन्यमें गृह धनि २मम धनिधनि भाग हमारे।जो प्रभुज्ञान ध्यान नहिं आवत तिनममगृह पगधारे॥प्रभु तव माया अगम अमोघहै लहि न सकत कोउ पार। दीजै भक्ति अनन्य कृपा करि होइ सोमन उद्धार ॥ अरु जेहि कारन प्रभु पगधारे कहिये सोउबिचारि।करहुँ ताहि तुमरी किरपातें आयसु माथे धारि ॥ यह अक्रूरदशा जो सुमिरे सिखे सुनै अरु गावै। अर्थ धर्म कामना मुक्तिफलचारि पदारथ पावै॥ हरिजी कह्यो मनोरथ तुम्हरो करिहैं श्रीभगवान। जो जानत सोई सो पावत यह निश्चय जिय जान॥ तुम जानतहौ पाण्डवके सुत हैं अति हितू हमारे। कुरुपति अंध मोहवश तिनको देत सदा दुख भारे॥ तात जाइ उनको तुम भेंटो हमरी कुशल सुनावहु। वहुरो समाचार सब उनके लै हमपै चलिआवहु ॥ यह कहि श्याम राम ऊधो मिलि अपने भवन सिधारे।सुफलकसुत आयसु माथे धरि पंडवगृह पगधारे ॥ पहिले कौरवपतिसोंभेंट्यो पुनिपंडवगृहआए। पकरि चरन कुंतीके पुनिपुनि सुनै गले लगए॥ कुशल भापि सब यादवकुलकी प्रभुको कह्यो संदेश॥ भयो परम संतोष तबहिं सुनि कह्यो हम शरन तुम्हारी।कुरुपति अंध मोह पुत्रनकेदेत सदा दुख भारी॥पुनि कुरुपतिसों मिलि सुफलकसुत कह्यो वहुत समुझाइ।चारि दिवसके जीवन ऊपर तुम कत करत अन्याइ ॥ अन्याईको वास नरकमों यह जानत सब कोइ। गर्वप्रहारी हैं त्रिभुवन पति जो कछु करैं सो होइ॥ कुरुपति कह्यो मैं हू यह जानतपै मोहन न बसाय।नमसकार मेरो यदुपतिसों कहिवो गहिकै पाय॥ सुफलकसुत सब कथा तहांकी आइ श्यामसोंभाखी। सूरदास प्रभु सुनिकै तासों हृदय आपनी राखी॥ ३४९४ ॥

॥ इति श्रीसूरसागर दशमस्कन्ध पूर्वार्ध समाप्त ॥



॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर ।

दशमस्कन्धोत्तरार्धः ।

जरासंध आगमनं द्वारकाहेतु ।

॥राग मारू ॥ श्याम बलराम जबकंस मारयो।सुनि जरासंध वृत्तान्त अस सुतासेयुद्ध हितकटक अपनो हँकारयो॥जोरि दल प्रबल सोचल्यो मधुरापुरी सुन्योभगवान जब निकट आयो।तबदुहूँ वीर दल साजिके आपनो नगरतेनिकसिरणभूमिछायो॥दुहूँदिशिसुभट बाँकेविकट अति छुरेमनो दोउ दिशिघटा उमडि आई। सूर प्रभु सिंहध्वनि करत,जोधा सकल जहां तहँ करन लागे लराई॥१॥ मलार॥ मानहु मेघ घटा अति गाढी। बरषत बाण बूँद सेनापति महानदी रण बाढी॥ जहां बरन बरन बादर बानैत अरुदामिनि करि करिवार।उडत धूरि धुरवाधुर दीसत शूल सकल जलधार॥ गर्जनि पणव निसान शंखरव हय गज हींस चिकार।प्रगटत दुरत देखियत रविसम द्वैवसुदेवकुमार॥कुंजर कूल रमित अतिराजत तहँ शोणित सलिल गँभीर।धनुप तरंग भँवर स्यंदनपग जलचर सुभट शरीर ॥ उडत ध्वजा पताकरु छत्र रथ तरुवर टूटत तीर । परमनिशंक समर सरिता तट क्रीडत यादव वीर॥ सूने किये भुवन भूपतिके सुबस किए सुरलोक। छिनकमध्य हरि हरयो कृपा करि उन सबहिनके शोक ॥ आनंदे मधुवनके वासी गई नगरकी रोक। जरासंधको जीति सूर प्रभु आये अपने ओक॥२॥ अध्याय ॥ ५१ ॥ कालयवनदहन ॥ मुचुकुंद उद्धार ॥ राग सारंग॥बार सत्रह जरासंध मधुरा चढिआयो । गयो सो सबदिन हार जात घर बहुत लजायो॥तब रिसिआइके कालयवन अपने सँग ल्यायो । हरिजी कियो विचार सिंधुतट नगर बसायो ॥ उग्रसेन सब कुटुंबलै ता ठौर सिधायो।अमरपुरीते अधिक सुख तहाँ लोगन पायो॥कालयवन मुचुकुंदसों हरि भस्म करायो । बहुरि आइ भरमाइ अचल सब ताहि जरायो ॥ जरासंध बहेति बहुरि निजदेश सिधायो। श्याम राम गये द्वारका सूरज यश गायो॥३॥ अथ द्वारकाप्रवेश ॥ राग कल्याण॥ देख री आजु नैन भरि हरिजूके रथ की शोभा। योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत कीजतहै जेहि लोभा॥ चारु चक्र मणि खचित मनोहर चंचल चमर पताका। श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदै कियो निशि राका ॥ स्यन तन श्याम सुदेश पीतपट शीश मुकुट उर माला । जनु दामिनि घन रवि तारागणप्रगट एकही काला॥ उपजत छबिकर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा। मानहु अरुसित कमल मंडलमें कूजतहै कलहंसा ॥ मदन गोपाल

देखियतहै अब सबदुख शोक बिसारी।बैठेहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो वहाँ सिधारी॥ आनंदित चित जननि तातहित कृष्ण मिलनजिय भाए। सूरदास दुहुँ कुल हित कारण माधो मधुपुरी आए॥४॥अध्याय॥५२॥ द्वारकाकी शोभा॥ राग कल्याण॥ दिन द्वारावति देखन आवत। नारदादि सनकादि महामुनि ते अवलोकि प्रीति उपजावत॥ विद्रुम फटिक पची कंचन खचि मणिमय मंदिर बने बनावत। जितने तर नर नारि उपर खग सबहिनको प्रतिबिंब दिखावत॥जल थल रंग विचित्र बहुत बिधि अवलोकत आनंद बढावत। भूलिरहे अति चतुर चितै चित कौन सत्य कछु मर्म न पावत॥ बन उपवन फल फूल सुभग सर शुक सारिका हंस पारावत। चातक मोर चकोर बदत पिक मनहु मदन चटसार पढावत॥ धाम धाम संगीत सरस गति वीणा वेणु मृदंग बजावत। अतिआनंद प्रेम पुलिकित तनु जहां तहां यदुपतियश गावत॥ निशिदिन रहत विमान रूढ रुचि सुखनितानि संग सब आवत।सूर श्याम क्रीडत कौतूहल अमरन अपनो भवन न भावत॥५॥राग सारंग॥श्रीमनमोहन खेलत चौगान।द्वारावती कोट कंचनमें रच्यो रुचिर मैदान॥ यादव वीर बराइ बटाई,इकहलधरइकआपे ओर। निकसे सबै कुँवर असवारीउच्चैःश्रवाके पोर॥ लीले सुरंग कुमैत श्याम तेहि परदे सब मन रंग। बरन अनेक भांति भांतिनके चमकति चपला वेग॥ जीन जराइ जु जगमगाइरहे देखत दृष्टि भ्रमाइ। सुर नर मुनि कौतुक सब लागे इकटक रहे लुभाइ॥जबहीं हरि लैचले गोइ कुदासो लाइ॥तबहीं औचकही बेल हलधरपाइ॥कुँवर सबै घेरि फेरे फेरत छुडत नहिंने गुपाल। बलै अछत छल बल करि सूरदास प्रभु हाल॥६॥ रुक्मणीपत्रिका आवन॥ राग बिलावल॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणार्विंद उर धरो॥ हरि सुमिरण जब रुक्मिणि करयो। हरि करि कृपा ताहि तब बरयो॥ कहौं सो कथा सुनो चितलाई। कहै सुने सो रहै सुखपाई॥कुंदनपुरको भीषम राई। विष्णुभक्तिको तामन चाई॥ रुक्म आदि ताके सुत पांच। रुक्मिणि पुत्री हरिरँग राच॥नृपति रुक्मसों कह्यो सुनाई। कुँवरियोग्यवर श्रीयदुराई॥ रुक्म रिसाइ पितासों कह्यो। सुनि ताको अंतर्गत दह्यो॥ रुक्म चँदेरी विप्र पठायो। व्याहकाज शिशुपाल बुलायो॥ सो बरात जोरि तहां आयो।श्रीरुक्मिणिके जिय नहिं भायो॥कह्यो मेरोपति श्रीभगवान।उनहि बरों के तजों प्रान॥ भीषमसुता रुक्मिणी वाम। सूर जपति निशिदिन वहनाम॥७॥राग कान्हरो॥द्विज पतिया दै कहियो श्यामहिं।कुंदनपुरकी कुँवरि रुक्मिणी जपति तुम्हारे नामहिं॥ पालागों तुम जाइ द्वारावति नँदनंदनके ग्रामहिं।कंचन चीर पटंबर देहीं करकंकन जे नामहिं॥यह शिशुपालमंजेत श्रीदीनबंधु भजनाथ कबैसुखदेखिहौं। कहि रुक्मिणि मनमाहैं सबै सुख लेखिहौं॥गावहिं सब सहचरी कुँवरि तामसकरि हेरयो।सबदिन सुखसाथिनी आज कैसे मुख फेरयो॥मेरे मन कछु और है तुम कछु गावति और। प्राणतजोंगी आपनोदेखि असुर शिरमौर॥तिहूँलोकके धनी मनीतुमहीकी सोहै।सत्यकीर्तिओपुरुषहि समरथ सब मोहै॥ पर पुरुषारथ काग हंसनीके घर आवै। कामधेनु खर लेइ काल अमृत उपजावै॥ कुँटुब वैर मेरे परे बरनि बरे शिशुपाल। करनि सिंह तुम्हरी धरी कैसे चपै शृगाल॥भुवन चतुर्दश राज सकल सुर नर मुनि देवा। कर जोरे शशि सूर पवन पानी करें सेवा॥ अबहिं औरकी ओर होति कछु लागै बारा। ताते मैं पाती लिखी तुम प्राणअधारा॥ कतहि भूँख औ नींदजिवन हौं जानति नाहीं। अनदेखे ये नैन लगे लोचन पथवाहीं॥ के यदुपति लै आवहू करौं प्राणलगिघाउ। बाजे शंख जानिहौं सांची आयो यादवराउ॥ जो मांगों सो देउँ लेहु माधो सँग आए। कोटि

यज्ञफल होइ पिता यदि दरशन पाए॥ रोइ रुक्मिणी यों कह्यो धरो पाणि में माथ। यह पाती लै पिता दीजियो प्राणनाथके हाथ॥ विप्रभवन रथ चढ्यो चलत तब बार न लाई। छपनकोटिकेमधि राजतहैं यादवराई॥ छाडि सकुच पाती दई तब पूँछी कुशलात। जानि चीन्ह पहिचानि कुँवर मन फूले अंग न मात॥ आपुन झारी माँगि विप्रके चरण पखारे। इती दूरि श्रम कियो गज द्विज भए दुखारे॥ पाती बाँचिन आवई माँग्यो तुरत विमान। लोचनभरिभरि आवहीं मानहु कर जलपान॥ लीन्हों विप्रचढाइबोलिबलसों कहि साग। सकल सभा जियजानिकसे साजे हथिआर॥ कहहुनाथ कहाँ आवहीं कियो कौनपर छोहु। भीषमकेरुक्मिणिहरण सावधान सब होहु॥ आवतदेख्योविप्र जोरिकर रुक्मिणिधाई। कहाकहैगोआनि हियेधकधकी लगाई॥ विप्रआनिमाला दएकहकुशलके बैन। कुँवरि पत्यारो तब कियो जब रथ देख्योनैन॥ गए कंचुकि बंद टूटि लूटिहृदय सो पाइ। करति मनहिमन सेव निकट रथ दयो देखाइ॥ तिहूंलोकके कंतहौं हों दासीप्रभु जानि। रुक्मिणिविनती करतिहै लाजहि आपुहि मानि॥ बैठि असुर सब सभा रुक्मसों मतो विचारयो। आयो सुन्यो अहीर मनों यहिकाल हँकारयो॥ गाइ चरावन ग्वालहै आयो मुजरा देन। देखहु ढीठो दूरिते आयो भातहि लेन॥ सब दल होहु हुसियार चलहु मठ घेरहि जाई। परपंचीहै कान्ह कछू मति करे ढिठाई॥ कुँवरि गौरिपाँयन परी मनवांछित फल जानि। हौं यदुपति वर पाइहौं वदन धरों दोउ पानि॥ गौरिकहै सु कुँवरि पांयमेरेजिनि लागहि। कहाकुटुंबकेबैननैन श्रीमतिवैरागहि। आयो श्रीवृषभानुको आयोदीन्हौंतोहि॥ राजसोहाग बढोसवै कहानिहोरोमोहि॥ अबगावहुकरि सगुन बोलि मुख अमृत बानी। दूलह श्रीनंदलाल दुलहिनी रुक्मिणिरानी॥ याकोजननी दीजियो करत सखिनसों नेह। हौं यदुपति घर जाति हौं जाको है यह देह॥ अंबर वाणी भई सजल बादर दल छाए। देव तेतीसौं कोटि जो यज्ञ तवासे आए॥ हरन रुक्मिणी होत है दुहुँ ओर भई भीर। अति अघात कछु नाहिन सूझत बज्र चलिहि ज्यों नीर॥ लागे रुक्म गोहारि संग शिशुपाल न छोडे। छांडहि बान विशाल युद्ध ऐसोको बोडै॥ चक्र धरे हरि आवहीं सुनि असुरन जियगाज। टेरि कह्यो शिशुपालसों कीजो कंकन लाज॥ सकल सेन संहारि रुक्म हलधर गहि लीन्हों। आगे इहि सों काम रुक्मिणी सों प्रण कीन्हों॥ सात शिखा शिर राखिकै तब बूझी कुशलात। कंचनराजको काज सँवारयो भूपनको यह काज॥ नगर बधाई बाजि नाथ यदुते सुख मान्यो। पूरण कीन्हों नेह रुक्मते सत्यहि जान्यो॥ कंकन छोरयो द्वारका बाज्यो अनंद निसान। भुक्ति मुक्ति न्यवछावरी पाई सूर सुजान॥ ८॥ राग कान्हरो॥ पतियां दीजै श्याम सुजानहि। मुख संदेश बनाइ विप्र ज्यों प्रभु न झूठ करि मानहि॥ श्रीहरि योग्य रुक्मणी लिखितं विनती सुनहि प्रभोधारि कानहि। बाँचत वेगि आइयो माधव जात धरे मेरे प्रानहि॥ समुझत नहीं दीन दुख कोऊ सिंह भखहि शृगालके पानहि। मणि मर्कट कर देत मूढमति मृगमद रजमें सानहि॥ कबलगि सहौं दुख दरश दीन भई मीन बिना जलपानहि। सूरदास प्रभु अधर सुधाघन बरषिदेहु जियदा-नहि॥ ९॥ राग सारंग॥ द्विज कहियो हरिसों समुझाइ। सकत शृगाल सिंहको भोजन दुर्बल देखिकै छीने खाइ॥ परमिन गए लाज तुमहीको हंसिनि व्याहि काग लै जाइ। काहेको नेमधर्म व्रत कीन्हों माघमास जल शीत अन्हाइ॥ श्वान संग सिंहिनि रति अजगुत वेद विरुद्ध असुर करै आइ। सूरदास प्रभु वेगि न आवहु प्राणगए कहा लेहौ आइ॥ १०॥ द्विज कहियो यदुपति सन बात। वेदविरुद्ध होत कुंदनपुर हंसको अंश कागले परात॥ जिनि हमरो अपराध विचारो कन्या

लिख्यो मेटि गुरु तात। ताते यह द्विज वेगि पठायो नेम धर्म मर्यादा जात ॥ तनु आत्मा समर्पित तुम कहँ पाछे उपजि परी यह बात । कृष्णसिंह बलि धरी तिहारी लेबेको जंबुक अकुलात॥ कृपा करहु उठि वेगि चढहु रथ लग्न समे आवहु परभात । सूरदास शिशुपाल पानि गहे पावक जारि करों तनुघात॥ ११ ॥ राग धनाश्री ॥ हौं प्रभु जन्मजन्मकी चेरी।भीषमभवन रहतहौंमैंज्यों लुब्धक असुर सैन्य मिलि घेरी ॥ प्रातकाल शिशुपाल कालते यदुपति आवें वेगि सवेरी ।कछु विपरीति बात नहिं आवे उपजी प्रीति ग्राह गज केरी ।सूरदास प्रभु कृष्णप्रीति बिनु प्राणबिना तनु लागत पेरी॥ १२॥ राग मारू ॥ द्विज वेग धावहु कहि पठावहु द्वारकाते जाइ। कुंदनपुर एक होत अजगुत बाघ घेरी गाइ ॥ दीन ह्वैकरि करहुँ विनती पाती दीजहु जाइ ।रुक्म बरबस ब्याहि देहै गने पितहि न माइ ॥लग्न ले जु बरात साजी उनत मंडप छाइ। पेज करि शिशुपाल आए जरासंध सहाइ ॥ हंसको मैं अंश राख्यो काग कत मँडराइ । गरुडवाहन कृष्ण आवहु सूर बलि बलि जाइ ॥ १३ ॥ अथ द्विजसंदेश कृष्णप्रति वदथ ॥ राग आसावरी ॥ बाल मृगीसी भूली आँगन ठाढी। नवल विरहिनी चित चिंताबाढी॥ तुम्हरो पंथ निहारेस्वामी। कबहिंमिलहुगेअंतर्यामी॥मंडपपुर देखे डर थरथर करै। मनु चहुँदिशि दौ लागी धीरज तन न धरै ॥ अपने विवाहके दुंदुभी सुनि सुनि। चकृत मन मानो महासिंह ध्वनि॥ सखिनकी माल जाल जिय जानति।व्याधरूप शिशुपालहि मानति ॥ सूरदास युगभरि बीतत छिनु ।हरि नवरंग कुरंग पीव बिनु ॥ १४ ॥ अध्याय ॥ ५ ॥ कुंदनपुर श्रीकृष्णगमन ॥ राग सारंग ॥ सुनत हरि रुक्मिणिको संदेश । चढि रथ चले विप्रको संगले कियो न गेह प्रवेश ॥ वारंवार विप्रको पूँछत कुवँरि वचन सो सुनावत। दीनवचन करुणानिधान सुनि नयननीर भरिआवत॥ कह्यो हलधरसों आवहु दलले मैंपहुँचतहौंधाई।सूरप्रभु कुंडिनपुर आए विप्रजुजाइसुनाइ॥ १५॥ कुँवरिसुनिपायो अतिआनंदन। मनहींमनहिंबिचारकरत इह कब मिलिहैं नँदनंदन ॥ हार चीर पाटंबर देकरि विप्रहि गेह पठायो । पै इह भेद रुक्मिणी निज मुख काहू कहि न सुनायो ॥ हरि आगमन जानिकें भीषम आगे लेन सिधायो ।सूरदास प्रभु दरशन कारन नगर लोग सब धायो ॥ राग आसावरी ॥ १६ ॥ देख रूपसब नगरके लोग । वारंवार अशीश देत सब यह वर बन्यो रुक्मिणी योग ॥ जो कछु चतुराई विधनामें जानत युगरस रीति। तौ अजहूं लौं राजसुतापति हरि ह्वैहै शिशुपालहि जीति॥जो राजा कौतुक चलिआए ते मुख निरखि कहतहैं बात ।परत न पलक चकोर चंद्रलौं अवलोकत लोचन अकुलात॥ मनसाको हीता जगजीवन सुंदर वर वसुदेव कुमार । सूरदास जाके जिय जैसी हरि कीन्हें तैसो व्यवहार॥ १७॥सखी वचन रुक्मिणीप्रति सुहो ॥ राग बिलावल ॥सोचसोचतूद्वारउठि देख दीनदयालु आयो । निरखि लोचन प्रणत मोचन कुँवरिफल वांछोसोपायो॥सुनतभइ अकुलाइ ठाढी ज्यों मृतक विधि दे जिवायो । चढि सदन वह वदनकी छविपरखिदीनोदवबुझायो॥ ले वलाइ सुकर लगायो निरखि मंगलचार गायो । नैनआरति अर्घ्य आँसू पुहुप तन मन धन चढायो ॥ जानि हौं व्रजनाथ जियकी कियो सो जो तुम बतायो। अपहरन पुन वरन वश हरि जानि हौं केहि योग भायो ॥ भक्तके वशभक्तवत्सल विदुर सातो साग खायो ॥ मुदित ह्वै गई गौरि मंदिर जोरि कर बहु विधि मनायो ॥प्रगट तेहि छिन सूरके प्रभु वाँह गहि कियो वाम भायो।कृपासागर गुणन आगर दासि दुखदीनहिविहायो॥१८॥रुक्मिणी हरन ॥ आसावरी॥ रुक्मिणी देवी मंदिर आई ।धूप दीप पूजा सामग्री अलीसंग सब ल्याई ॥ रखवारीको बहुत महाभट

दीन्हें रुक्म पठाई । ते मन सावधान भए चहुँदिशि पंछी इहाँ न जाई॥ कुँवरि पूजि गौरी विनती करि वर देहु यादवराई । मैं पूजा कीन्ही या कारण गौरी सुनि मुसुकाई ॥ पाद प्रसाद अंबिका मंदिर रुक्मिणि बाहर आई । सुभट देख सुंदरता मोहे धरणि गिरे मुरझाई ॥ यहिअंतर यादवपति आए रुक्मिणि रथ बैठाई । सूर प्रभु पहुँचे अपने घर तब सबहिन सुधिपाई॥ १९॥ राग आसावरी॥ याहीतेंशूलरहीशिशुपालहि।सुमिरिसुमिरिपछितातसदावह मान भंगके कालहि ॥ दुलहिनि कहति दौरि दीजहु द्विज पाती नंदकेलालहि।वरसुवरातबुलाइचडेहित मनमि मनोहर बालहि ॥ आये हरषि हरन रुक्मिणि सिर लगी दनुज उर शालहि । सूरज दास सिंहवलिअपुनोलीनी दलकिशृगालहि॥२०॥अध्याय॥५४॥ श्रीकृष्ण रुक्मणीविवाह॥राग सोरठ॥ श्याम जव रुक्मिणि हरि लै सिधारे । सुनि जरासंध शिशुपाल धाए ॥ शाल्व दंतवक्र बनारसीको नृपति चढे दल साजि मानो रविहि छाए । साँगकी झलक चहुँदिशि चपला चमकि गजगर्ज सुनत दिग्गज डेराए ॥ श्याम बलराम सुधिपाइ सन्मुख भये वाणवर्षा करन लगे सारे। रुक्मिणी भय कियो श्याम धीरज दियो वानसों वान तिनके निवारे॥ राम हल मूशल संभारि धायो बहुरि विपुलरथ औ सुभट सब संहारे॥रुंडपर रुंड धुकि परे धरि धरणिपर गिरत ज्यौंसंग कर वज्रमारे ॥ जरासंग जीवते भजो रणखेतते शाल्व दंतवक्र याविधि . पगई । प्रातके समै ज्यों भानुके उदयते भले होइ जात उडगन नशाई ॥ गह्यो भगवान शिशुपालको जीवते ताहिसों वचन याविधि उचारे ।रुक्मिणी लिये मैं जात तुम देखतहि पै नहीं हरप कछु मन हमारे ॥ पुरुपको भाजिवते मरनहै भलो जाइ सुरलोक द्वारे उघारे । पुरुपको हार अरु जीत दोउ होतहै हर्ष अरु सोच नहिं चित्तधारे ॥ बीज बोइये जोइ अंतलोनिये सोइ समुझि यहवात नहिंचित्तधरई।करन कारण महाराजहैं आपही तिनहिं चित राखि नित धर्म्म करई॥ बहुरि भगवान शिशुपालको छाँडिदियो गयो निज देशको सो खिसाई। शस्त्र धनु छाँडिके भाजि नरपति गये यादवनहेत हरिदे लुटाई॥रुक्म यह सुनि चल्यो सौंह करि नृपनपै श्याम बलरामको बाँधि ल्याऊं।आइहहां कह्यो शिशुपाल सो मैं नहीं आपनो वल तुम्हैं अव दिखाऊं ॥वाणवर्षा लग्योकरनयाभाँतिकहि कृष्ण ज्यो तिनहिं मगमें निवारयो। आपनें बाणसों काटि ध्वज रुक्मके असुर औ सारथी तुरत मारयो॥रुक्म भू परयो उठि युद्ध हरिसों करयो हरिसकल शस्त्र ताके निवारे। बहुरि खिसिआइ भगवानके ढिग चल्यो ज्यो चलत पतंग दीपक निहारे॥ खड्ग लै ताहि भगवान मारन चले रुक्मिणी जोरि कर विनय कीयो ।दोष इन कियो मोहि क्षमा प्रभु कीजिए भद्र करि शीश जिवदान दीयो ॥राम अरु यादवन सुभट ताके हते रुधिरके नहर सरिता बहाई । सुभट मनो मकर अरु केश सेवारज्यों धनुष त्वच चर्म कूरम बनाई ॥बहुरि भगवानके निकट आयेसकल देखिके रुक्मको हँसे सारे। कह्यो भगवानसों कहा यह कियो तुम छाँडिबो हुतो या भलो मारे ॥ मरते अप्सरा आइ ताको वरति भाजिहै देखि अव गेह नारी । रुक्मिणीसों कह्यो सोच नहिं कीजिए होत है सोइ जो होनि हारी॥ रुक्म शिरनाइ या भाँति बिनती करी नाथमें मर्म तुम्हरो न जान्यो। ब्रह्म तुम अनंत तुमहिं कारण करण मैं कौन भाँति तुमको पहिचान्यो॥ दीनबंधु कृपासिंधु करुणाकर सुनि विनय दयाकरि ताहिको छाँडि दीन्हों । बहुरि निज नगर पैठ्यो न सो लाज करि वनहि तिन आपनो वास कीन्हों॥ आइ भीषम दियो दाइज ताठौर बहु श्याम आनंद सहित पुर सिधाये। सुनत द्वारावती मारु उत्सों भयो सूर जन मंगलाचार गाये ॥२१॥

॥राग आसावरी॥देखहिं दौरि द्वारकावासी। सुनत सकल पुरजीतरुक्मिणीलैआएयदुपति अविनासी॥ लेति बलाइ करत नवछावरि वलि भुज दंड कनक अतिन्नासी।नर नारीकेनैन निरखि करिचातक तृपित चकोरी प्यासी॥कर आरती कलशलेधाई चीन्हि न परति कुलवधू दासी। देश देश भयो रहसि सूर प्रभुजरासंध शिशुपालकी हाँसी॥२२॥राग धनाश्री॥आवहुरीमिलि मंगल गावहु।हरिरुक्मिणिहि लिये आवतहैं इह आनँद यदुकुलहि सुनावहु॥बाँधो वंदनवारमनोहर कनक कलश भरिनीर भरावहु।दधि अक्षत फल फूल परमरुचि अंगन चन्दनचौकपुरावहु॥कदलीयूथ अनूप कुशल दल सुरंग सुमन लै मंडल छावहु।हरद दूब केशर मग छिरकौ भेरी मृदंग निसान वजावहु॥जरासंध शिशुपाल नृपतिते जीतेहैं उठि अर्घ्य चढावहु।वल समेत तनु कुशल सूर प्रभु हरि आये आरती सजावहु॥२३॥विवाह वर्णन॥ राग बिलावल॥ छंद त्रिभंगी॥ श्री यादवपति व्याहन आयो।धनि धनि रुक्मिणि हरिवर पायो॥छंद॥हरिश्याम घनतनपरमसुंदर तडित वसनविराजई। अँग अंग भूषण सुरस शशि पूरणकलामनोंभ्राजई॥ कमल मुख कर कमल लोचन कमलमृदुपद सोहहीं।कमल नाभिः कमल सुंदरनिरखि सुर मुनिमोहहीं॥ १॥सुधा सरोवर छिटकि अनूपम।ग्रीव कपोत मनो नासा कीरसम॥छंद॥कीरनासाइंद्रधनु भ्रू भँवरसेअलकावली। अधर विद्रुम वज्रकन दाडिम किधौं दशनावली॥ खौर केशरिअति विराजत तिलक मृदमदको दियो।कामरूप विलोकि मोह्यो वास पद अंबुज कियो॥२॥ वसुदेवनंदनत्रिभुवन मनहरन। मुकुट तरुन मनो मकर कुंडल श्रवन॥छंद॥मकरकुंडल जटित हीरालाल शोभा अतिवनी। पन्ना पिरोजा लगे विच विच चहूँदिशि लटकत मनी॥ सेहरो शिर पर मुकुट लटक्यो कंठ माला राजई। हाथ पहुँची वीर कानग जरित मुंदरी भ्राजई॥ ३॥उर वैजंती माल शोभा अतिवनी। चरणन नूपुर कटितट किंकिनी॥ छंद॥ किंकिनी कटि चरण नूपुर शब्द सुंदर कुंजही। कोकिला कलहंस वाल रसालते नहिं पुंजही॥ तुरई वाजनि बीना ताजनि चपलचपला सेहरी। जोनजरित जराव वागहि लगे सब मुकुतासरी॥४॥ चढि यदुनंदन वनित वनाइकै। साजि वरात चले यादव चाइकै॥ छंद॥चले साजि वरात यादव कोटि छप्पन अतिवली। उग्रसेन वसुदेव हलधर करत मन मन अति तली॥ शंख भेरि निशान वाजहिं नचहिं शुद्ध सोहावनी। भाट वोलें विरद नारी वचन कहें मन भावनी॥ ५॥ सुरपति आयो संगहे शची।शुद्धमुहूरतचौरी विधिरची॥ छंद॥ रचीचौरीआपु ब्रह्माजरितखंभ लगाइकै। इंद्र सुरदारनि सहित वैठे तहां सुखपाइकै॥ चौक मुक्ताहल पुरायो आइ हरिवैठे तहां। निरखि सुर नर सकल मोहे रहिगए जहँके तहां॥ ६॥ कुँवरि रुक्मिणी कमला अवतरी।शशिषोडश कला शोभा तनुधरी॥छंद॥ कुँवरि शशि षोडशकला शृंगारकरिल्याईअली।विविधविधि कियो व्याह विधि वसुदेव मन उपजी रली॥ सुर पुहुप वरसें हरपिकै गंधर्व किन्नर गावहीं। शारदा नारद आदि सुयश उचार जयति सुनावहीं॥ ७॥ विप्रगणउदिए वहु युगुतिसुरति करि। किए अयाची याचक जन वहुरि॥ छंद॥ वहुरि निज मंदिर सिधारेकरिसुभद्राआरती।देवकीपीवोवार नारददई अशीशा भारती॥युवा युवति खेलाइ कुल व्यवहार सकल कराइवो॥जनन मन भयो सूर आनँद हरपि मंगल गाइवो॥८॥ रागसारंग॥ तोसों गारिकहाकहिदीजे होयदुनंदन।जग वपु नाउँ कौनको लीजे हो यदुनंदन॥छंद॥ वपु जगतकाको नाउँ लीजेहोयदुज्ञाति गोतन जानिए। गुणरूप कछु अनुहारि नाहीं का वखान वखानिए॥ सब शोधि रह्यो न शोधपायो विन सुने का

कीजिए। बलिजाउँ यादवपति तुम्हारी गारिका कहि दीजिए ॥ तेरी मैया सब जगखोयो। सोकी-जो वल न विछोयो ॥ छंद ॥ सो कीजो नवल करि विगोयो फिरत निशि वासर बनी। शिर श्वेत पट कटि नील लहँगा लाल चोली बिन तनी ॥ कछु मंद मुख मुसुकाइ सुर नर नाग भुज भीतर लए। बलि जाउं यादवपति तुम्हारी माया कुल विनु तुम किए ॥ कछु कहि न जाइ गनि ताकी। नित रहत मदनमद छाकी ॥ नित रहत मन्मथ मदहि छाकी निलज कुच झाँपत नहीं। तब देखि देखि जु छयल मोहित विकल ह्वै धावत तहीं ॥ इक परत उठत अनेक अरुझत मोह अति मनसा मही। यहि भाँति कथा अनेक ताकी कहतहू न परै कही ॥ वहतो नित नवतनु रति जोरै । चित चितवनिही मँह है चोरै ॥ ॥छंद ॥अति चतुर चितवनि चित चुरावति चलत धर धीर न धरै। फिरि चमक चोप लगाइ चंचल तनहिं तब अंतर करै॥ कछु भौंहकी छवि निरखि नैननि सु को जन वरते टरै । इहि भाँति चतुर सुजान समधिनि सकति रति सबसों करै ॥ इनही भूलि रहे सब भोगी। वश कीने ब्राह्मण जे योगी ॥ वश किये ब्राह्मण बहुत योगी छत्रपति केते कहौं। औंर अग जग जीव जल थल गनत सुनत न सुधि लहौं ॥ ते परमआतुर काम कातुर निरखि नित कौतुक नए। यहि भाँति समधिन संग निशिदिन फिरत भ्रम भूले भए ॥ अब तुम हीं परम सयाने। तुम ठाकुर सब जग जाने ॥ छंद ॥ ठाकुर सबनके कृपानिधि हरि सुयश सब जग गाइए। या लोकके उपहास आपुन ताहि बरजि मिटाइए ॥ कहि एकहीभल पांच माधो औंर अनत न सूझिए। सुनिसुर श्यामसुजान इहिकुल अब न ऐसी कीजिए॥ २४ ॥ अध्याय ॥ ५५ ॥ प्रद्युम्नजन्म॥राग बिलावल ॥ प्रद्युम जन्म शुभघरी होऊ। काम अवतारलीन्हों विदित बात यह तासु सम दूल नहिं रूप दोऊ ॥ पृथ्वीपर असुर शंबर भयो अति प्रबल तिन्ह उदधि मोह तेहि डारि दीन्हों। मत्स लियो भक्ष सो भक्ष गह्यो असुर तब कौनसों लेइके भेंट कीन्हों ॥ मत्सके उदरते बाल परकटभयो असुर मायावती हाथ दीन्हों । कह्यो तेहि काम पर माण नारद वचन सुमिरि अति हर्षसों ताहि लीन्हों ॥ भयो जब तरुण तब नारि तासों कह्यो रुक्मिणी मात हरि तात तेरो। नाम ममरति विदित बात जानत जगत कामतुअ नाम पुनि पुरुष मेरो ॥ असुरको मार परिवारको देहि सुख देउँ विद्या तोको मैं बताई। बिना विद्या असुर जीत सकही नहीं भेदकी बात सब कहि सुनाई ॥ प्रद्युमन सकल विद्या समुझि नारिसों असुरसों युद्ध माँग्यो प्रचारी। काटि करवारि लियो मारि ताको तुरत सुरन आकाश जयध्वनि उचारी ॥ बहुरि आकाश मधि जाइ द्वारावती मातमन मोद अतिहीबढायो।भयो यदुवंश अति रहसमनो जन्म भयो सुर जन मंगलाचार गायो॥२८॥अध्याय ॥ ५६ ॥ मणिहेतु सत्यभामा जाम्बवतीविवाहसारंग॥ हरिदर्शन सत्राजित आयो। लोगन जान्यो आवत आदित हरिसों जाइ सुनायो ॥ हरि कह्यो रवि न होइ सत्राजित मणि है ताके पास । रवि प्रसन्न होइ दीन्ही ताको यह ताको परकाश ॥ आइ गयो सोऊ तेहि अवसर तेहि हरि कह्यो सुनाइ। यह मणि अति अनुपम है सो सुनि रहि न सक्यो ललचाइ॥ एक दिन ताते अनुज सो माँगी ले गयो अखेटक काजा। ताको मारि सिंहमणि ले गयो सिंह हत्यो रिछराजा ॥ ऋच्छराज वह मणि तासों ले जाम्बवतीको दीन्हों॥प्रसमनको विलंब भयो तब सत्राजित सुध लीन्ही॥ जहां तहांको लोगपठा-यो काहू खोज न पायो। सूरदास सत्राजितभ्रमसों चोरी हरिहि लगायो॥२६॥अध्याय ॥५७॥शत धन्वा वध अक्रूर संवाद ॥राग सोरठ ॥ शुकदेव कहत सुनहु हो राजा।ज्ञानीलोभ करतनहिंकबहुँ लोभ

बिगारत काजा ॥ करिके लोभ अमृत जो पीवै विप समान सो होई। विपअमृतहोइजाइलोभ विन यह जानत जन कोई ॥ एक समय यदुपति औ हलधर पंडवगृह पगधारी । शतधन्वा अरु सुफलकसुत मिलि कीन्यों मंत्र विचारी ॥ सत्राजितको हति मणि लीजे ज्यों जाने नहिं कोई । ऐसो समय वहुरि फिरि नाहीं पाछे होइ सो होई ॥ निशि अँधियारि जाइ शतधन्वामारिताहि मणि ल्यायो । फैलगई यह बात नगर सब तब मनमें पछितायो ॥ सतभामा करिशोक पिताको यदुपतिपास सिधाई । शतधन्वा जो कृत्य करी सो हरिसों कहि समुझाई ॥ सुनि यदुपति हलधर उठि धाये वेगि विलंब न लाई। लैहैं वैर पिता तेरेको जैहै कहां पराई ॥ तब मणि डारिअक्रूरपास वह मिथिलापुरको धायो । शत योजन मग एक दिवसमें तुरँग जाइ पहुँचायो ॥ द्वारावति पैठत हरिसों सब लोगन खबरि जनाई । मिथिलापुरी जाइ तिन मारचो पै मणि वहांनपाई॥तब हरि कह्यो हत्यो विन दूपण हलधर भेद बतायो । वहां जाइ खोज तुम कीजो द्वारावति घरिआयो॥ हलधर रहे गदायुध सीखन हरि द्वारावति आये । सतभामा मन हरप भयो जब समाचार सब पाये॥सुफलकसुत मनहीं मन सकुच्यो करों कहा अब काजा । देत न वनै वनैनहिं राखत उरडेरात उठि भाजा । सव यादव मिलि हरिसों इह कह्यो सुफलकसुत जहां होइ । अनावृष्टि अतिवृष्टि होति नहिं इह जानत सबकोइ ॥ कीजे दोप क्षमा अव ताको हरि तव ताहि बुलायो । कह्यो कहा कहिए अब तुमसों तिन शिर नीचो नायो ॥ पुनि कह्यो मणि सतभामाकोदै यातेभयभयो तोहीं । मणि उनदै वहुरो तेही दइ कह्यो लोभ नहिं मोहीं ॥ लोभ भलो नाहीं दूनो पुर लोभ किये तप जाई । सूर लोभ कीनो सो विगोयो शुक यह कहि समुझाई ॥ २७ ॥ अध्याय ॥ ५८ ॥ पंचपटरानीनका विवाह श्रीकृष्णसोंभयो॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई । हरि हरि सुमिरत सब सुख होई॥हरि हरिसुमिरचो है जिन जहां। हरि तेहि दरशनदीन्हों तहां ॥ हरि सुमिरन कालिन्दी कीन्हों । हरि वहँ जाइ दरशतेहिदीन्हों॥ पाणिग्रहणपुनिताको कीन्हों । सबै भाँति ताको सुख दीन्हों॥हरिहि मित्रविंदा चित ध्यायो । हरि तहां जाइ विलंब न लायो॥ करि विवाह ताही लै आयो । तासु मनोरथ सकल पुजायो ॥ हरिचरणन सीता चित दीन्हों। ताको पिता परण यह कीन्हों ॥ सात बैल इह नाथै जोइ । सीता व्याह ताहि सँग होइ ॥हरितहँ जाइ तासु प्रण राख्यो । धन्यधन्य सबकाहू भाष्यो ॥ ताके पिता व्याह जब कियो । दायजबहु प्रकार पुनि दियो ॥ वहुरो भद्रा सुमिरो हरी । गये पास तब बिलम न करी॥ऐसेही त्रिभुवनपति राई । ताके मनकी आश पुराई ॥ वहुरि लछमना सुमिरन कीन्हों। ताहि स्वयंवरमें हरिलीन्हों॥ पांचों वारि व्याहि घर आये । सूरदास यश मंगलगाये ॥२८॥ द्वारकामेंरथशोभा वर्णन ॥राग मलार ॥ देखो माई हरिजूके रथकी शोभा । योग यज्ञ तप कठिन कर्म्म सब कीजतहै जिहि लोभा ॥ चारु चक्र मणि पानि विराजत चंचल चमर पताका । श्वेत छत्र मनु शशि प्राचीदिशि प्रगटचो रजनी राका ॥ उपजत छबि कर अधर शंख निश सुनियत दुष्ट प्रशंसा। मानहु अरुन कमल मंडलमें कूजतहैं कलहंसा ॥ सुंदर श्याम सुदेश पीतपट शीश मुकुट उरमाला।जनुघन दामिनि रवि तारागण उदित एकही काला ॥ आनंदित सुत बंधु जननि पितु कृष्णमिलन पियभावे। सूरदास प्रभु द्वारकावासिनि प्राणनाथ हिय भावे॥२९॥ अध्याय ॥ ५९ ॥ भौमासुरवध ॥ नृपकन्यामोक्ष ॥ सुरतरु आगमन ॥ पोडशसहस्र रानी विवाह ॥ राग गौरी॥ सतभामासों इती बात जबते न कही री । कितिक कठिन सुरतरु प्रसूनकीया कारण तू रूठि रही री॥परसुखसुखजनाउनदीनेविनकाजे रिस देह दही री । अपनीसों सुनि सतभामा तें मैं मन वच यह सांचे न रही री ॥ सूनोनिपटअकेलो मंदिर चंद्रकला जनु राहु गही री । तुवबियोगकी पीर,कठिन अति सु कहि सूर क्यों जातिसहीरी ॥ ३० ॥ राग आसावरी ॥ रटत कृष्ण गोविंद हरि हरिमुरारी।भक्तभयहरनअसुरअंतकारी॥पटदश

सहस कन्या असुर बंदिमें नींद अरु भूख अहनिशि बिसारी । प्रीति तिनकी सुमिरि भये अनुकूल हरि सत्यभामा हृदय यह उपाई ॥ कल्पतरु देखिवेकी भई साध मोहिं कृपा करि नाथ ल्यावहु देखाई । सत्यभामा सहित बैठे हरि गरुडपर भौमासुर नगर गए तुरत धाई ॥ एकही थान पापानको कोट सब हुतो चहुँओर सो दियो ढहाई । गरुड चहुँपासके नाग लियो निगलि जल बरषिके अग्नि ज्वाला बुझाई ॥ करे हरि शंखध्वनि जग्यो तब असुर सुनि कोपकरि भवनते निकसि धायो । देखिके गरुडको लगोताहृदय दव कठिन तिरशूल तब गहि चलायो ॥ असुर शिर टेक तब कह्यो निज नृपतिसों नहिं तिहुंभुवन कोउ सम तुम्हारे । युद्धको करत छाजत नहीं है तुम्हें सुनो महाराज चाहत हमारे ॥ कियो तब युद्ध उन क्रुद्ध होइ श्यामसों हरि कह्यो गरुड याहति प्रचारी। गरुड सुनिधाइ गह्यो जाइ ताका तुरत ननहु शीश डारे प्रहारी॥ तासु पुत्रन बहुरि युद्ध हरिसों कियो मारते सोउ कादर डेराने । असुर कटिकटि परे कोउ उठिउठि लरे कोउ डर डर विदिश दिश पराने ॥ तब असुर अग्नि जल थान डारन लग्यो तासु माया सकल हरि निवारी । असुरके तनहिंको लग्यो कलपन तुरंग गज उडि चले लागी बयारी ॥ असुर अजरूढ होइ गदा मारै फटकि श्यामअँग लागि सो गिरै ऐसे। बाल केहाथते कमलअमलनाल युत लागि गजराजतन गिरत जैसे ॥ आप जगदीश सबशीश ता असुरको मारि तिरशूल सोइ काटिडारे। छाँडि सो प्राण निर्वाणपदको गयो सुर पुहुप वर्षि जैजै उचारे॥ पृथ्वी गहि पाइ माला कुंडल छत्र ले जोरि कर बहुरि बिनती सुनाई । नाथ मम पुत्रको दीजिए परमगति हरि कह्यो पुत्रको मुक्ति पाई ॥ बहुरि गये तहां कन्या हुतीं सब जहां निरखि हरिरूप सोसब लुभाई । चरणहीं लागि बडभागि लांख आपने कृपाकरि हरि सो निजपुर पठाई ॥ बहुरि गयो इंद्रपुर इंद्र रह्यो पाँइपरि कल्पतरु वृक्ष तासों मँगाई । त्रिदशपति मोति अरु रत्नकुंडलदईवृक्षलेआपनिज-पुरी आई ॥ बहुरि बहु रूप धरिगए हरिसबन घर व्याह करि सबनकीआश पूरी। सबनकेभौनहरि रहहिं सब रैन दिन सबनसों नेक नहिं होत दूरी॥ सबनको पुत्र दशदश कुंवरि एकएकदे सकल धर्म गृह किए सिखाई । कोटि ब्रह्मांड नायक सो वसुदेवसुत सूर सोइ नंदनंदन कहाई ॥ ॥ ३१ ॥ अध्याय ॥ ३० ॥ रुक्मिणभक्तिपरीक्षा॥ राग बिलावल ॥ भक्तवछल हरिभक्त उधारन । भक्ति परीक्षाके हित कारन ॥ रुक्मिणिसों बोले सति भाई । हम जानी तुमरी चतुराई ॥ राउ चंदेरीको शिशुपाल । जाको सेवत सब भूपाल॥ तासों तेरी भई सगाई। तैं पाती क्यों हमहिं पठाई ॥ जाति पाति उन सम हम नाहीं ।हम निर्गुण सब गुण उनपाहीं॥ उन सम नहिं हमरी ठकुराई । पुरुष भलेते नारि भलाई ॥ निःकंचन जिनमें मम बासा । नारिसंगमें रहौं उदासा ॥ जो कहै मोहिं काहे तुम ल्याये। ताको उत्तर द्यो समुझाये॥ कुंडिनपुर बहु भूपति आये। तिनके हृदय गर्बसों छाये ॥ बरजोरी में तोहिं हरिल्यायो ।उनके मनकेगर्वनशायो ॥ इह सुनिरुक्मिणिभई बेहाल।जानि परचो नहिं हरिको ख्याल ॥ ले उसांस नैनन जलढारे।मुखतेवचननकछुकउचारे॥ ताकी दशा देखिहरि जानी । इन मग भक्ति भली पहिंचानी ॥ हँसि बोले तब शारंगपानी। प्राणप्रिया तुम क्यों बिलखानी ॥ मैं हाँसी करि बात चलाई । तुम्हरे मन यह सांची आई ॥ आंसु पोंछि निकट बैठारी । हँसी जानि बोलीतब प्यारी ॥ कहँ तुम त्रिभुवनपति गोपाल। कहाँबापुरो नर शिशुपाल॥ कहँचंदेरीकहँद्वारावति। जाकेसरवर नहिं अमरावति ॥ तुम अमरवह जनमें मरै। मूरख उन तुम सरवर करै ॥ तुमसन और नहीं यदुराई । यही जानि मैं शरणन आई ॥ इह सुनि हरि रुक्मिणिसों कह्यो ।ज्यों तुम मोको चितमें चह्यो ॥ त्योंही हम चित चाहत तुमको । नहिं अंतर कछु हमसोंतुमसों॥यदुपतिको यहसहज सुभाउ॥जो कोउ भजै भजतितेहि भाउ। जोइहलीला हितकरि गावै।सूर सो प्रेमभक्तिको पावै ॥ ३२ ॥ अध्याय ॥ ६१॥ प्रद्युम्नविवाह रुक्म वधअनिरुद्धआरंभ माह ॥

श्याम बलरामको सदा गाऊं । यही मम यज्ञ जप इहै तप नेम व्रत यहै मम प्रेम फल यही पाऊं॥ श्याम बलराम प्रद्युम्नके व्याहहित रुक्मकेदेशजबहीं सिधाये। कलिंगको राउ अरु रुक्म बलभद्र-सों कपट करिसारि पासा खिलाये ॥ दांव बलरामको देखि उन छल कियो रुक्म जीत्यो कहन लगे सारे । देववाणी भई जीत भई रामकी ताउपे मूढ नाहीं सम्हारे ॥ कलिंगको राउ करिहँसी लाग्यो करन वनवसनहार कहा खेल जानो । सभाके लोगहू लगे हाँसी करन राम तब हृदयमें क्रोध आन्यो ॥ रुक्म औ कलिंगको राउ मारयो प्रथम वहुरि तिनके वहुत सुभट मारे। सूर प्रभु राम बलराम रणजीत भये प्रद्युम्न व्याहि निजपुर सिधारे ॥२३ ॥ ॥अध्याय॥६२॥ ऊषाअनिरुद्धविवाह वर्णन ॥राग मारू॥कुँवर तन श्याम मनो कामहै दूसरो सपनमें देखि ऊषालोभाई। चित्ररेखा सकल जगतके नृपनकी छिनकमें मुरति तव लिखि देखाई ॥ निरखि यदुवंशको रहस मनमें भयो देखिअनिरुद्धसों युद्ध माँडचो । सूर प्रभु ठटी ज्यों भयो चाहै सो त्यों फांसि करि कुँवर अनिरुद्ध बाँध्यो॥२४॥अनिरुद्धव्याह ॥ अध्याय॥६३राग मारू ॥ श्याम बलराम यह सुनत धाये । आइ नारद कह्यो द्वारकानाथसों वाणसुर चोर अनिरुध बँधाये॥छोंहनीदोइदशहुतो हरिसँग कटक जातही नगर ताको लुटायो । देखि यह असुरसन्मुख भयो श्यामके रुद्र निजसैन ले तहां आयो ॥ रुद्र भगवान अरु वान सांवक भिरे राम कुंभांड मांडी लराई । सैनपति कोपि प्रद्युम्नजूसों भिरयो सांतुकुंवर दोऊ भिरत धाई॥तेजभगवानको पाय जलावन लगेअसुर-दल चल्यो सबही पराई । रुद्र तब कोपि करि अग्निवरषाकरी श्याम जल वर्षि डारयो बुझाई ॥ पुनि महादेव जो वाण संधान लियो आप भगवान ताको प्रहारयो।देखियहयुद्धसुरअसुरचकृतभये लख्यो तब वाण जो रुद्र धारयो ॥ वाण तब आइ भगवानसन्मुख भयो वाण वर्षा करन लग्यो भारी। एकहू वाण आयो न हरिके निकट तव गह्यो धनुष सारंगधारी॥एकही वाण संधान रथके तुरग ध्वजा अरु धनुष सब काटिडारी।शंखको शब्द करि लिय असुरतेज हरि ध्वनि रहीफैलि नभ पृथ्विसारी॥देखि यह असुरकी मातु धाई नगन तुरत भगवानके निकट आई । नगन त्रिय देखिवे जगत नाहिंन कह्यो जानि इह हरि रहे मुख फिराई ॥ असुर यह घात तकि गयो रणतें सटकि विपतिज्वर दियो तब शिव पठाई ।सतज्वर युद्ध करि कियो विह्वल तिसे तिन तवहिं आइ विनती सुनाई ॥ प्राणदाता तुहीं स्थल छूछिमतुही सर्वआत्मा तुही धर्मपालक।ज्ञान तुही कर्म्म तुही विश्वकर्मा तुही अनत शक्ति प्रभु असुर शालक ॥ संपत्ति अरु विपतिको मिलि चलै प्रभु तहां जहां नहिं होइ सुमिरन तिहारो । करत दंडवत में तुम्हें करुणाकरन कृपा करि ओर मेरे निहारो ॥ सुनत यह वचन हरि कह्यो अब मौन करि कृपाकारे तोहिं परवीर धारी । संपति रु विपतिको भय न होइहै तिसे सुनैजो यह कथा चित्त धारी ॥ विपति ज्वर कह्यो शिर नाइ हरिको तुरत वाणसुर वहुरि रणभूमि आयो। चक्रपरिहार हरि कियो ताको निरखिरुद्र शिर नाइ तब कहि सुनायो॥प्रगट तुम कपट तुम तुमहि सब आत्मा निकारयो अग्नि रुद्रक ति-हारी ।बुद्धि विधि चंद्रमा मन अहंकारमें धरि चरण रोम तू पृथ्वि सारी॥ शीशआकाशअरुश्रवण दशहू दिशा इंद्र कर लोकनृप वपु तिहारो। वाण जगदीश मोहिं जान मम ईश तुम राखि तेहिअव नाथ हाथचारो॥विहँसि जगदीशकह्योरुद्र जो तोहिभजे तहां में जाउँ यहप्रण हमारो।कियोप्रह्लाद कुल अभै मैं प्रथमहीवाणकियो अमर भाषे तिहारी।करैजो सेव तुम्हरी सो मम सेव देविष्णुशिव ब्रह्म ममरूप सारी॥ वाण अभिमान मनमांह धारचो हुत्यो यों विदित हाथ ताते सँहारी।रुद्रअरु वान अनिरुद्ध सन्मान करि तुरत भगवानके निकट ल्याये ।वहुरिऊषा दई व्याहिदाइजसहितकरै सुमिरन तिसे भै न होई।कह्यो जो व्यास शुकदेव भागवतमें कही अबसूरजन गाइ सोई ॥ २५ ॥ अ०यायद६४ नृग राजा उद्धार राग सारंग॥अविगति गति जानी न परे। राईते पर्वत करिडारे राई

मेरुकरै ॥ नृग राजा नित सहस गऊ दै करत हुत्यो जलपान । नृगते गिरगिट कीन्ह ताको कोकरि सकै बखान ॥ कूपमाहिं तेहि देखि बालकन हरिसों कह्यो सुनाई । कृपानिधान जानि अपनो जनआये तहँ यदुराई ॥ अंधकूपते काढि बहुरि तेहि दरशन दै निस्तारो । सूरदास सब तजि हरि भजिये जब तबकरै उधारो ३६॥ आध्यायाई ६० बलभद्र ब्रंदावन आये ॥ राग बिलावल ॥ श्याम रामके गुण नित गावौं श्यामरामहीसों चित लावौं ॥ एक बार हरि निजपुर छये । हलधरजी वृन्दावन गये ॥ यह देखत लोगन सुख पाये । जान्यो राम श्याम दोउ आये ॥ नंद यशोमतिजब सुधिपाई । दुंद गेहकी सुरति भुलाई ॥ आगे ह्वै लेबेको धाई । हलधर दौरि चरण लपटाई ॥ बलको हित करि गले लगाय । दै अशीश बोली ता भाय ॥ तुमतो भली करी बलराम । कहाँरहे मनमोहन श्याम ॥ देखी कान्हरकी निठुराई । कबहूँ पातीहू न पठाई ॥ आपु जाइ वहां राजा भए । हमको निठुरि बहुत दुख दये ॥ कहो कबहु हमरी सुधि करत । हमतो उन बिनु बहु दुख भरत ॥ कहा करैं वहां कोउ न जात । उन बिनु पलपल युगसम जात ॥ यहि अंतर आए सब ग्वार । बैठे सबन यथा व्यवहार ॥ नमस्कार काहूको कियो । काहूको भरि अंकम लियो ॥ गोपी जुरीं मिलीं बन आई । अतिहित साथ अशीश सुनाई ॥ हरि करि सुध सुधि बुधि बिसराई । तिनको प्रेम कह्यो नहिं जाई ॥ कोउ कहै हरि ब्याही बहु नार । तिनके बढ्यो बहुत परिवार ॥ उनको इह हम देत अशीस । सुखसों जीवैं कोटि बरीस ॥ कोऊ कहैं हरिहि नहिं चीन्हों । बिन चीन्हैं उनको मन दीन्हों ॥ निशिदिन रोवत हमैं बिहाइ । कहोकहा हम करैं उपाइ ॥ कोउ कहै इहां चरावत गाइ । राजा भये द्वारका जाइ ॥ काहेको वे आवैं इहां । भोग बिलास करत नित उहां ॥ कोउकहै हरि रीत सब नई । और मित्रनको सब सुख दई ॥ बिरह हमारो कहां रहि गयो । जिन हमको अतिही दुख दयो ॥ कोउ कहै जे हरिजीकी रानी । कौन भांति हरिको पतियानी ॥ कोउ कहै चतुरनारिजो होई । करिहे नहीं निवारो सोई ॥ कोउ कहै हम तुम क्यों पतिआई । उनके हित कुललाज गवांई ॥ हरिकछु ऐसो टोना जानत । सबको मन अपने बश आनत ॥ कोउ कहै हम हरि सबबिसराइ । कहा करैं कछु

हरिको गुण गाये ॥ ३७॥ राग सारंग ॥ वारुणी बल घूमलोचन बिहरतबन सचुपाए । मनहु महा गजराज बिराजत करनि यूथ सँग लाए ॥ मुकुलित केश सुदेश देखियत नीलबसन लपटाये । भरि अपने कर कनक कटोरा पीवति प्रियहि चुखाए ॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत तरसत भौंह चढाए । उदित मुदित उठि चलत डगमगत अनुज सुरति जिय आये ॥ इंद्र धनुप भुव चाप अधिक छबिबरबनितनकेभाये । सबमरीझिदेत अपने रस सूर श्याम गुण गाये ॥ ३८ ॥ सारंग ॥ वारुणी बलराम पियारी । गौलमसुता भगीरथ बीवर सबदिनते सुंदरि सुकुमारी ॥ ग्रीवाँ बाहु गला रन गाजत सुखसजनी सतिभाय सचारी ॥ संकर्षणके सदा सुहागिनि अति अनुराग भाग बहुभारी ॥ बसुधा धर जु बाम गिरिराजत भ्राजति सकल लोक सुखकारी । प्रथम समागम आनँद आगम दूलह वर दुलहिनी दुलारी ॥ रतिरस रीति प्रीति परगटकरि राम कामपूरणप्रतिपारी । सूर सु भाग उदित गोपिनके हरिजू रति भेंटे हलधारी ॥ ३९ ॥ कालिंदी सुन कह्यो हमारो । बोली वेगि चलहि बन विहरत न्हाहिं शरीर भयो श्रम भारी ॥ अतिही सतर होइ जिनि सरिता छोडि गर्व या गुणको गारो । आपनि सौंह कृष्णकी कानी राखतहौं यश मान तुम्हारो ॥ इतहु महातम मोहिं देखावत भवँर तरंग प्रवाह पसारो । इन खुनसन गोपाल दोहाई हल करि खैंचि करों नदि नारो ॥ शिवविरंचिसनकादिसकल मुनि बोलवचनको ऊधो

टारो । सूर सुभद्र श्यामके भैयहि निपट नदी जानत मतवारो ॥ ४० ॥ यमुना आइगई बलदेव । जो तुमको हौं सौंह करीहौं संतत सादर सेव ॥ सुर नर मुनि जन गन गधर्व ए सव वचननके देव । सूर भनो यह मातु करतहो अवलंवनकी टेव ॥ ४१ ॥ कालिंदीहै हरिकी प्यारी । जैसे मोपै श्याम करतहैं तैसी तुम करहुकृपा निनारी ॥ यमुना यशकी राशि चहू युग यम जेठी जगकीमहतारी॥सूरकछूजियजिनिदुखपायोकहाकरौयहटेव तिहारी॥ ४२ ॥ राग रामकली॥ श्रीयमुनाजी तिहारो दरश मोहिं भावे । बंशीवटके निकटवसतहौलहरनिकी छवि आवे॥दुखह-रनी सुखदेनी श्रीयमुना प्रातहिं जो यश गावे। मदनमोहनजूकी अधिक पियारी पटरानीजूकहावै॥ वृंदावनमें रास विलासेमुरलीमधुरवजावै॥सूरदासदंपतिछविनिरखत विमलविमलयशगावै॥ ४३॥ अध्याय ॥ ६६ ॥ पुंडरीकउद्धार ॥ राग विलावल ॥ हरि हरिहरि सुमिरहु सब कोय।हरिके शत्रु मित्र नहिं दोय॥ज्यों सुमिरै त्योंहीं गति होइ। हरिहरिहरिसुमिरहु सवकोइ॥पुंडरीक काशीकोराइ।हरिको सुमिरै वैर सुभाइ॥ अहनिशि रहै एहि ल्वलाई।क्यों करि जीतौं यादवराई ॥ द्वारावति तिन दूत पठायो।ताको ऐसे कहि समुझायो ॥ चारिभुजा मम आयुध धारा।वासुदेव मैंही निरधारा ॥ योंही कह्यो यदुपतिसो जाई।कपट तजो की करो लराई॥ दूत आइ हरिसो सवकह्यो । हरिजी तेहि यह उत्तर दयो॥जोतैं कही सो हम सव जानी।पुंडरीककी आयु सिरानी॥कहोजाइकरै युद्ध विचार।सांच झूंठ होइहैनिरुआर॥ दूत आइ निज नृपहिं सुनायो।तव उन मनमेंयुद्धठहरायो॥ जहां तहांते सवन बुलाइ।तव लगि यदुपति पहुँचे आइ॥पुंडरीक सुनि सन्मुख आयो । पांच क्षोहनी दल सँग ल्यायो॥सेना देखि अस्त्र संभारी।यदुपतिकेलोगनपरडारी॥हरिकह्योवू आजहूं संभारी।सांच झूंठ जिय देख विचारी॥ताकी मृत्यु आइ नियरानी॥जोहरि कहीसो मन नहिं आनी॥ यदुपति तव निज चक्र सँभारयो । ताकीसेना ऊपर डारयो ॥ ऐसे हैं त्रिभुनपति राई । जाकी महिमा देवन गाई॥ कोऊ भजो काहूपरकारा। सूरदास सो उतरैपारा ॥४४॥ अध्याय ॥६७॥ द्विविद सुतीक्षण वध॥राग मारू ॥द्विविद करि क्रोध हरिपुरी आयो।नृप सुदक्षिणजरयो जरी वारा-णसी धाइ धावन जवहिं यह सुनायो ॥ द्वारकामाँह उत्पात वहुभाँति करि बहुरि रैवत अचल गयो धाई । तहां हूँदेखि वलरामकी सभाको करन लागो निडर ह्वै ढिठाई ॥ लख्यो वलराम यह सुभटवंत हैकोऊ हल मुशल शस्त्र अपनो सँभारयो । द्विविद लै शालवृक्ष सन्मुख भयो फुरत करि राम ततु फेंकि मारयो ॥ राम दल मारि सो वृक्ष चुरकुट कियो द्विविद शिर फटगयो लगत ताके । वहुरि तरु तोरि पाषाण फटकन लग्यो हल मुशल करन परहार वांके ॥ वृक्ष पाषाणको जव वहां नाश भयो मुष्टिकायुद्ध दोऊ प्रचारी। रामकी मुष्टिका लगे गिरयो सो धरणिपर निकसिगयोप्राण सुधिबुधि बिसारी॥ सुरन आकाश-से पुहुप वर्षा करी करि नमस्कार जैजै उचारे । देवता गये सव आपने लोकको सूर प्रभु राम निजपुरसिधारे॥ ४५ ॥अध्याय ॥ ६९ ॥ साव विवाह ॥ राग आसावरी ॥श्यामबलरामकोसदागाऊं।श्या बलराम विनु दूसरे देवको स्वप्नहूँमाहिं नहिंशीशनाऊं॥श्यामसुनि सांवगयो हस्तिनापुर तुरत लक्ष्मणा जहँ स्वयवर रचायो ।देखते सबनके ताहि वैठारि रथआपने देशकोपलटिधायो॥ कर्ण दुर्योधनादिक लियो घेरि तेहि कर्ण ढिग आइ वहुवाणमारे।सांवतेहिकाटिनिजवाणसधान करि तुरँग रथ नाशकरि सब सहारे॥हतेउ पुनिसारथीएकहीवाणकरि परयोसो धरणिगिरिसुधि वि-सारी।एक इक वाण भेज्यो सकल नृपनपे मनोसवसाथकीन्हें जोहारी॥देखियहसुरनधनि धन्य सवहिन करयो पुनि करण अश्वरथके सहारे। सांबपे कोपि वैठारि रथ आपने सुभट सव हस्तिनापुर सिधारे ॥ आइ नारद कही तुरत भगवानसों चले भगवान हलधर वोलाई । कह्यो मैं जाइके ल्याइहौ सांवको कौरवनसो सदा हित हमारो। प्रीतिकी रीति समुझाइके नतरु मैं

एकही मुशल सबको सँहारों। जाइ बलराम भेंट सकल कौरवन बहुरि तिन सवन पुनि कहि सुनायो। सबिसों चूक जो भई बालक हुतो तुम्हें नहिं बूझिये जो बँधायो ॥ कह्यो दुर्योधन अति कोप तेहि दोप नहिं दोप सब लगे पुर गये हमारे।जोमने कियो सन्मान निज सभामेंबहुरि इन ओर हित करि निहारे ॥ कहां जाम्बवंतसुतासुत कहां मम सुता बुधिवंत पुरुप यह सब सँभारे। अरु सदा देत यादवसुता कौवरन कहत अब बात बलसुनि बिचारे॥ कह्योबलराम यह सांब सुत श्यामको रुद्र विधि रेणु जाकी न पावें। इंद्र सुर सकल दरबार ठाढे रहें सिद्ध गंधर्व गुण सदा गावें॥ बहुरि करि कोप हल अग्रपर चक्र धर कटक भे दरर चाहत डुबाय। कौरवन मिलि बहुतिभांति बिनती करी दोप तिनको द्विजन मिलिक्षमायो॥ सांबको लक्ष्मना सहित ल्याये बहुरि दियो दाइज अगिन गिन नजाई। सूर प्रभुरामबलरामअतुल कौतुहल करें आनंद निजपुरी आई॥२६॥अध्याय ॥७०॥नारदसंशय द्वारका आगमन ॥राग धनाश्री ॥हरिकी लीलदेखि नारद चकृत भये। मन यह करत विचार गोमती तर गये॥अलख निरंजन निर्विकार अच्युत अविनाशी। सेवत जाहि महेश शेप सुर माया दासी॥ धर्म स्थापन हेतुपुनि धारयो नर अवतार। ताको पुत्र कलत्रसों नहिं संभवत पियार॥ हरिके पोडश सहस रहीं पतिव्रतानारी। सबसों हरिको हेत सबै हरिजीकी प्यारी॥ जाके गृह दुइ नारि होंइ ताहि कलह नित होइ। हरि विहार केहि विधि करत नेनन देखों जोइ॥ द्वारावति ऋपि पैठ भवन हरि जूके आयो। आगे होइ हरि नारिसहित चरणन शिर नायो॥ सिंहासन बैठारिके प्रभु धोये चरण बनाइ। चरणोदक शिर धरि कह्यो कृपा करी ऋपि राइ॥ तब नारद हँसि कह्यो सुनो त्रिभुवनपतिराई। तुम देवनके देव देतहो मोहिं बडाई॥ विधि महेश सेवत तुम्हें मैं बपुरो केहिमाहीं। कहत तुम्हें ब्रह्मण्य देवता यामें अचरज नाहीं॥ और गेह ऋपि गये तहां देखे यदुराई। चमर ढोरावत नारि करत दासी सेवकाई॥ ऋपिको रूखे देखि हरि बहुरि कियो सन्मान। उहँऊते नारद चले करत ऐसो अनुमान॥ जागृहमें मैं जाउँ श्याम आगेही आवत। ताते छाँडि सुभाउ जाउँ अब कैसे धावत॥ जहां नारद श्रम करि गये तहां देखे घनश्याम। पालनहू क्रीडा करत करजोरे खडी बाम॥ नारद जहँ जहँ जाइँ तहँ तहँ हरिको देखे। कहुँ कछु लीला करत कहू कछु लीला पेखे॥ योंहीं सब गृहमें गये भयो न मन विश्राम। तब ताको व्याकुल निरखि हँसि बोले घनश्याम॥ नारद मनकी भर्म तोहिं यतनो भरमायो। मैं व्यापक सब जगत वेद चारों मुख गायो॥ मैं कर्ता मैं भोक्ता मोहिं बिनु और न कोइ। जो मोको ऐसो लखे ताहि नहीं भ्रम होइ॥ बूझो सब घर जाइ सबै जानत मोहिं योंहीं। हरिकी हमसों प्रीति अनत कहुं जात न क्योंहीं॥ मैं उदास सबसों रहों इह मम सहज सुभाइ। ऐसो जानै मोहिं जो मम माया नरचाइ॥ तब नारद करजोरि कह्यो तुम अज अनंत हरि। तुमसे तुम बिन द्वितिय कोउ नाहीं इतमडुरि॥ तुम माया तुम कृपा बिनु सके नहींतरिकोइ।अब मोको कीजे कृपा ज्यों न बहुरि भ्रम होइ॥ऋपि चरित्रमम देखिकछू अचरज मतिमानो। मोते द्वितिया और कोऊ मनमाहिं न आनो॥ मैंहीकर्ता मैंहीभुक्तानहिं यामें संदेह। मेरे गुण गावत फिरों लोगनको सुख देहु॥ नारद करि परमाण चले हरिके गुण गावत। बारबार उरहेत ध्याइ हृदयमेंध्यावत॥ इह लीला करि अचरजकी सूरदास कहिगाइ। ताको जो गावै सुनै सो भवजल तरिजाइ॥२७॥अध्याय ॥७१॥ भगवान हस्तिनापुर चले जरासंध बधहेत ॥ राग मारू॥ चले हरिधर्मसुअनके देश। बंदित जन भूभारउतारन काटन बंदी कठिन नरेश। जब प्रभु जाइ शंखध्वनि कीनी ठाढ नगर प्रवेश। सुनि नृपवधूसकल उठिधाईं द्वारिचरण

रज्जु केश ॥ शीशनाइ करजोरि कह्यो तब नारद सभासहेस । तत्क्षण भीम धनंजयमाधो धन्य द्विजनको भेस ॥ पहुँचे जाइ राजगिरि द्वारे धुरे निसान सुदेश । यांच्यो जाइ अतिथि रूप ह्वै आशिश युद्ध नरेश ॥ जरासंधको युद्ध अथरवल रहत न क्षत्रीलेश। सूर श्यामदिन सातबीत तिन तोरिब काटि कलेश ॥४८॥ राग कान्हरो ॥ राजखनि गावत हरिको यश । रुदनकरतसुतको समुझावति राखति श्रवणन प्यार सुधारस ॥ तुम जिनि जीव डरहु रे बालक कृपासिंधुके शरन सदावसु । तजि जिय सोच तातअपनेको करिप्रतीति निश्चय ह्वै है हँसु॥ जिन प्रभुजनकसुताप्रण राख्यो अरु रावणके शीश सकल नशु।सोईसुरसहायतुम्हारोमोचनगोप गयंदमहापशु॥ ४९ ॥ ॥राग धनाश्री॥इहां और कासों कहौं गरुडगामी।दीनवंधुदयासिंधु अशरनके शरन सत्य सुखधाम सर्वज्ञ स्वामी॥ इन जरासंध मदअंध मम मान मथि वाँधि विनु काज बलइहांआने।भए आरूढ अति क्रोध जिनि गिरि गुहा रहत भृंगी कीट ज्यों त्रासमाने ॥ नाहिंने नाथ जिय सोच धन धरणिको मरनते अधिक यह दुख सतावे ॥ भृत्यकी रीति तजि होत मागध सकलनाथजिनि दमत उद्वेग पावे ॥ मधु कैटभ मथन मुर भौम केशी भिदन कंस कुल काल अनुसाल हारी जानि युगजूपमें भूप तद्रूपता वहुरि करिहै कलुप भूमि भारी ॥ वदत नृप देत भैभीत उर भीरत सुनत हरि सूर सारथि बोलायो । भयो आरूढ तकि ताहि उत्तर दियो जाइ सुख देहु या हेतु आयो ॥ ५० ॥ अध्याय ॥ ७२ ॥जरासंधवध राग मारू ॥ कंसखलदलन रन राम रावणहतन सँहारी। दीन दुखहरन गज मुक्तकारी ॥ नृपति चहुँदेशके वंदि जरासंधके रैनि दिनरहत जिय दुखित भारी सुने यदुनाथ इह वात तव पथिकसों धर्मसुतके हृदय यह उपाई । राजसूयज्ञकोकियोआरंभमें जानिके नाथ तुमको सहाई ॥ भीम अर्जुन सहित विप्रको रूप धरि हरि जरासंधसों युद्ध मांग्यो । दियो उनपे कह्यो तुम कोऊ क्षत्रिआ कपटकरि विप्रको स्वांग स्वांग्यो ॥हरि कह्यो भीम अर्जुन दोऊ सुभट ये कृष्ण मैं देखि लोचन उघारी।वचन जो कह्यौ प्रतिपाल ताकोकरो कै सभामाँह सत जाहु हारी॥पार्थ अरु तुम सामर्थ सम युद्धको भीमसों उनय कह सुनादिई वीस औसतदिन यों गदायुद्धकियो दोउबलवंतकोउलियोनजाई॥श्याम तृणचीरहरदेखरायदियो भीमकोभीम तव हर्पि ताको संहारचो।जरा जरासंधकी संधि जोरचो हुत्यो भीम ता संधिको चीरडारचो । नृपनको छोरि सहदेवको राज्यदियो देव नर सकल जैजै उचरचो। सूर प्रभुभीम अर्जुन सहित तहांते धर्मसुत देशको पुनि सिधारचो॥५१॥अध्याय ॥ ७३ हस्तिनापुरआये ॥ राग सारंग॥ जीत्यो जरासंध वंदिछोरी।युगल कपाटविदारिवाटकरिलतनि जुही संधियोरी॥विपमजालवल वांधि व्याधलौं नृप खग अवलि वटोरी। जनुसुअहेरो हति यादवपति गुहापींजरीतोरी॥निकसे देत अशीश एकमुख गावत कीरति कोरी।जनु उड चले विहंगमकोगन कटी कठिनपगडोरी॥ मिटिगए कलह कलेश कुलाहल जनुकरिवीतीहोरी॥सूरदास प्रभुअतुलित महिमा जो कछुकह्यो सो थोरी॥राग मारू॥जीत्यो जीत्यो होयदुपतिरिपुदल मारचो।तउनतजतहठ परम शठना जानी कुबुद्धि जड के वारहे विदारचो । वारवारमूढ उठि खेलत वालक सुठि आनितइधन दौरि दौरि संचराचो।ऐसे इहु नृप नरसकलसकेलि घरके साककरन हदरस वकुल जारचो॥कह्योनकाहूको करे वहुरि वहुरि अरे एकही पाइदे इक पग पकरिपछारचो॥सूर स्वामीअतिरिसभीमकी भुजाके मिसज्यौंततवसनज्यों तासुतन फारचो॥५२॥सप्तद राजा विनती॥राग विलावल॥जाहिं कहां अपराधभरे। तुम माता तुम पिता जगतगुरु तुमहिं सहोदर वंधु हरे ॥ वसन कुचील देह अति दुर्वल उमँगि प्रेम जल सिथिल भरे । राजा सबे वंदिते छोडे आइ कृष्णके पाँइ परे॥सावधानकरि विदादई हरिउठे कमल कर शीशधरे।सूरदास प्रभु तुम्हरीकृपातेभवसागरकेमांझतरे॥५३॥अध्याय ॥ ७४॥

पाडवपक्ष शिशुपालगति ॥ राग बिलावल ॥ हरिहरि हरि सुमरो सबकोइ।शत्रु मित्र हरिगिनत न दोइ॥ जो सुमिरै ताकी गति होइ। हरि हरि हरि सुमिरो सबकोइ ॥ बैरभाव सुमिरयो शिशुपाल। ताहि राजसूमें गोपाल ॥ चक्र सुदर्शन करि संहारयो। तेज तासु निज मुखमें डारयो ॥ भक्त भाव भक्तन उद्धारत। बैरभाव असुरन निस्तारत ॥ कोऊ सुमिरो काहु प्रकार। सूरदास हरिनाम उधार॥२४॥अध्याय ॥ ७५ ॥ पांडवसभादुर्योधन क्रोध॥राग बिलावल॥भक्तकाज हरि जित कित सारे। यज्ञराजसू माहिं आप हरि सबकेपाँइ पखारे॥अष्टनायका द्रुपदसुताकी करें तहाँ सेवकाई।दुर्योधन यह रीति देखिके मनमें रह्यो खिसाई॥ भक्त संग हरि लागे डोलत भक्तवत्सल प्रभु भोरी। सब विधि काज करत भक्तनके गनत नहीं हम कोरी ॥ जीवेजीवत भक्तअपनकी हारहारविच रत। सूरदास प्रभु रीति सदा यह प्रणयुगयुग प्रतिपारन॥२५॥अध्याय॥७६ ॥तथा ॥ ७७ ॥शाल्वद्वारका आक्रमणप्रद्युम्नशाल्वयुद्ध शाल्ववध राग मारू॥सुभटशाल्वकरिकोप हरिपुरीआयो। हत्योशिशुपालको राजसू मांह हरि धाइ धावन जबहिं इह सुनायो॥ वृक्ष वन काटि महलान ढाहन लग्यो नगरके द्वार दीनों गिराई। सर्व पापाणकी वृष्टि करि लोगपर पाइअतिपलक बीते जराई॥ प्रद्युमन सांब रणनिकसि सन्मुख भयेनंदनंदन सुनततुरतधाई। तहाँचारिदेश दिशसाजिदल मिलिसकल हाँकि रथ तुरग ता ठौर आई।सुमिरिगोपाल तब शाल्व मारयो फटकि प्रद्युमनबाण दिशितें चलायो। मिटयो अंधकारतब बाणवर्षा करी तुरंगरथसारथीसो गिरायो॥सैन्यके लोग पुनि बहुत घायल किये लरयो ध्वज धारि धर परयो मुरछाई।शाल्व इह देखिके चकृत सो होइ रह्यो शस्त्रकेगहन-की सुध भुलाई ॥ अस्त्र विद्या समर बहुरि लाग्यो करन कबहुँ लघु कबहुँ दीरघसोहोई।गुप्त कबहुँ कबहुँ प्रगट तेहि देखिकेधरती रहहि कबहुँ आकाशसोई॥अग्निकबहुँकबरखिवारिवर्षा करैप्रद्युमन सकलमाया निवारी। शाल्व परधान द्युमान मारी गदा प्रद्युमन मुरछित भये सुधि बिसारी ॥ धर्मपति सारथी गयो एकांत लै उहां जब चेत है सुधि संभारी। खीझ कह्यो ताहि क्यों इहां ल्यायो मुझे मम पिता मातको लगे गारी॥कहा कहिहैं हमें राम भगवान सुनि नारि मम सुनत अति दुखित होई। मरे रण सुयश त्रैलोक सुख पाइये मंदमति तैं दोऊ बात खोई। धर्मपतिकह्यो करि विनय मम शोक नहिं सारथी धर्म मोहिं गुरु सिखायो। मूर्च्छित सुभट नहीं राखिये खेतमें जानि यह बात मै इहां ल्यायो ॥ प्रद्युमन कह्यो जो भई सो भई अब बातनहिं जिन कोऊसों सुनैये।ताहिदै शपथ करि आचमन यों कह्यो चलो रणभूमि अब वेगि जैये।आइरणभूमिमेंसबन धीरज दियो शाल्वरथतुरग चारो संहारे। छत्र ध्वज तोरि मारयो बहुरि सारथी देखि यह दूर कियो सुभट सारे॥हस्तिनापुर गये हते हरि पांडु गृह तहांते चले यह बात जानी। शाल्वउत्पात कियो द्वारका मांह बहु हांकि रथ कह्यो सारंगपानी ॥ सारथी पाय रुख दये सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई। शाल्वके भटन लखि कटक भगवानको आपने नृपतिसों कह्यो जाई ॥ सुनि सो भगवानके आइ सन्मुख भयो सारथी दौरि बर्छी चलाई।ताहि आवत निरखि श्यामनिज सांगको काटिकरि शाल्वकी सुधि भुलाई ॥ बहुरि तिन कोपि निज बाण संधान करि धनुप भगवानको काटि डारयो। टूटते धनुपकेशब्द आकाश गयो शाल्व निज जिय समुझि पुनि उचारयो ॥ रुक्मिणी माँगि शिशुपालकी तुम हरी बहुरि तेहि राजसूमें संहारयो। जाइहौ अब कहां दाँव लैहौं इहां छाँडितीजार आपा संभारयो॥कह्यो भगवान सुनु शाल्व जे शूरनर ते नहीं करत निज मुख बडाई। जंगमें शूर तिनको नहीं जानिये भापि यह गदा ताको चलाई ॥ गदाके लगतही गयो सो गुप्त होइ धारि धावन रूप यह सुनायो। कह्यो वसुदेव जगदीश सुनु अग्रजे तुम अछत शाल्व मोहिं बांधि ल्यायो ॥ बहुरि करि कपट वसुदेव तहां

प्रगट कियो कह्यो तिन नाथ में दुखित भारी । शाल्व करवार ले श्यामके देखते डारि दियो ताको शीश उतारी ॥ कह्यो भगवान करि कपट इन यह कियो तासु माया तुरत हरि निवारी । भागि निज पुर चल्यो श्याम पहिलेहि पहुँचि पुनि गदा खैंचि ता शीशमारी। शाल्व कियो युद्ध वहु वेरलौं गदाकी वहुरि हरि सांग ताको चलाई । लगत ताके गए प्राण वाके निकसि सुरन आकाश दुंदुभि वजाई ॥शीश ताको बहुरि काटि करवालसों नगरसवसमुद्र-मों डारिदीन्हों॥सूर प्रभु रहे ताठौर दिन और कछु मारि दंतवक्र कुर गवन कीन्हों॥ ९६॥अध्याय॥ ९८॥दंतवक्रपरमगति॥राग मारू॥हरि निकटे सुभट दंतवक्र आयो । कह्यो शिशुपाल तुम राज-सूमें हत्यो धनि सो यह हेत सुनि दरश पायो॥भृत्य तुमहनें संशय नहीं कछ हमें दोउ विधि आइ प्रभु हित हमारी। जीवें तो राज सुख भोग पावै जगत मुये निर्वाण नीरस तुम्हारी॥वहुरि लैगदा प्रहार कियो श्यामपर लगे ज्योंलकुट अंबुजप भारी । हरि गदा लगतगयेप्राणताकेनिकसि वहुरि हरि निजबदन माँह धारी॥अनुज ताको वडो रथ लग्यो फिरन यों चक्रसो शीश ताकोप्रहारयो । सूरप्रभु युद्ध भयो मुनी जन हरपिये सुर पुहुप वरपि जै जैउचारयो ॥९७॥ अध्याय ॥ ७९ ॥वल्वल वध रामतीर्थगमन॥राग मारू॥श्याम वलरामको सदा गाऊं । यही मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यही इहै स्नान फल इहै पाऊं ॥ श्याम दंतवक्र अरु शाल्वको जीत करि करत आनंद निज पुरी आये॥राम गंगा और यमुना स्नानकरि नैमिपारण्यमें जाइन्हाये॥सूततहांकथा भागवतकी कहत हैं ऋपि अठासी सहस हुते श्रोता। रामको देखिसन्मान सवही कियो सूतनहिं उठ्यो निजजानि वक्ता॥रामतेहि हत्यो तव सवऋपिन मिलि कह्यो विप्रहत्या तुम्हें लगी भाई । वाहिनिमित्त सकल तीर्थ स्नान करो पाप जो भयो सो सव नशाई ॥ पुनि कह्यो ऋपिनदानवमहाप्रवल इहां हमें दुख देत सोई सदाई । ताहि जो हतौ तो होइ कल्याण तुम्हें हम करें यज्ञ सुखसों सदाई ॥ राम दिन कइक ता ठौर अवरो रहे आइ वल्वल तहां दई देखाई । रुधिर औ माँसकी लगो वर्पा करन ऋपि सकल देखिके गये डेराई॥राम हलसों पकरि मुशलसों हत्यो तेहि प्राण तजि तिन सकल सुधि विसारे । सुरन आकाशते पुहुप वर्पा करी ऋपिन आशीश दे जै ध्वनि उचारी ॥ वहुरि वलभद्र परणाम करि ऋपिन्हको पृथ्वी परदक्षिणाको सिधाये । प्रभु रची ज्योंहिंज्यों होइ सो त्योंहिं त्यों सूर जन हरि चरित कहि सुनाये ॥ ९८ ॥ ॥अध्याय॥ ८० ॥ तथा ॥ ८१॥ सुदामा दारिद्रभंजन॥ राग विलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ विप्र सुदामा सुमिरे हरी। ताकी सकल आपदा टरी ॥ कहौं सो कथा सुनो चितधार।कहै सुनै सो लहै सुखसार॥विप्रसुदामापरमकुलीन।विष्णुभक्त सोअतिलवलीन॥ भिक्षा वृत्ति उदर नित भरे। निशिदिन हरि हरि सुमिरन करै॥ नाम सुशीला ताकी नारी। पति-व्रता अति आज्ञाकारी॥ पति जो कहै सो करै चितलाइ। सूर कह्यो इक दिन या भाइ॥राग बिला-वल ॥कहि न सकति सकुचति इक वात। केतिक दूरि द्वारका नगरी काहे न द्विज यदुपति लौं जात॥जाके सखा श्यामसुन्दरसे श्रीपति सकल सुखनके दात।उनके अछत आपने आलसकाहे कंत रहत कृशगात॥कहियत परप उदारकृपानिधि अंतर्यामी त्रिभुवन तात।द्रवत आपुदेतदास-नको रीझत हैं तुलसीके पात ॥ छाँडो सकुच बाँधिपट तंदुल सूरज संग चलो उठि प्रात। लोचन सफल करो प्रभु अपने हरि मुख कमल देखि विलसात ॥ ९९ ॥ ॥राग नट॥श्रीकंत सिधारो मधुसूदनपै सुनियतहै वे मीत तुम्हारे।बाल सखाकी विपति विहंडन संकट हरन मुरारे ॥ और जु अति आदरहु सुन्यो हम निज जन प्रीति बिचारे। यद्यपि तुम संतोप भजतहो दरश निकट सुख भारे॥सूरदास प्रभु मिले सुदामें सबहिं

भाँति सुख देहु नारे॥६०॥राग बिलावल॥दूरिहिते देखे बलबीराअपने बाल सखा सुदामामलिन वसन अरु छीन शरीर॥पौढे हुते प्रयंक परम रुचि रुक्मिणि चमर डोलावत तीर। उठि अकुलाइ अगमने लीने मिलत नैन भरि आये नीर॥ तेहि आसन बैठारि श्याम घन पूँछी कुशल करी मन धीर। ल्यायेहौ सु.देहु किन हमको अब कहा राखि दुरावत चीर॥दरशन परसि दृष्टि संभाषन रही न उर अंतर कछु पीर। सूर सुमति तंदुल चबातही कर पकरयो कमला भइ भीर॥ ॥६१॥राग धनाश्री॥यदुपति देखिसुदामा आये।विह्वल विकलछीनदारिदवश करि प्रलापरुक्मिमणि समुझाये॥ दृष्टि परेते दिये संभाषण भुजा पसारि अंक लै आये। तंदुल देखि बहुत दुख उपज्यो मांगु सुदामा जो मन भाये॥भोजन करत गह्योकर रुक्मिणि सोइ देहु जो मन न डुलावे। सूरदास प्रभु नवनिधिदाता जापरकृपासोइ जनपावै॥६२॥राग बिलावल॥ऐसी प्रीतिकीबलिजाउँ। सिंहासन तजि चले मिलनको सुनत सुदामा नाउँ॥ गुरुबांधव अरु विप्र जानिकै चरणन हाथ पखारे। अंकमाल दै कुशल बूझिकै अर्धासन बैठारे॥अर्धंगीबूझत मोहनको कैसे हितू तुम्हारे। दुर्बल दीन क्षीन देखतिहौं पाँउ कहांते धारे॥ संदीपनकेहम औ सुदामा पढे एक चटसार। सूर श्यामकी कौन चलावै भक्त न कृपाअपार॥६३॥राग धनाश्री॥गुरुगृहजबहमवनको जात। तुरत हमारे बदले लकरी ये सहि दुख निजगात॥एक दिवस वर्षाभई वनमें रहिगयेताही ठौर। इनकी कृपा भयो नहिं मोहिं श्रम गुरु आये भये भोर॥ सो दिन मोहिंबिसरतनसुदामा जो कीन्हों उपकार। प्रतिउपकार कहाकरौं सूर अब भाषत आप गुवार॥ ६४॥ हरिकोमिलन सुदामा आयो। विधि करि अरघ पाँवडे दीने अंतर प्रेम बढायो॥आदरबहुतकियोयादवपति मर्दन करि अन्हवायो। चोवा चंदन अगर कुमकुमा परिमल अंग चढायो॥ पूरब जन्म अदात जानिकै ताते कछू मँगायो। मूठिक तंदुल बाँधि कृष्णको बनिता विनय पठायो॥ समदे विप्र सुदामा घरको सर्वसु दै पहुँचायो। सूरदास बलि बलि मोहनकी तिहूँ लोक पद पायो॥ ६५॥ वह सुधि आवत तोहिं सुदामा। जब हमतुमवन गएलकरियन पठए गुरुकी भामा॥ चपल समीर भयो तेहिरजनी भीजे चारो यामा। कांपत हृदय वचन नहिं आवे आए सत्वर धामा॥ तबहिं अशीश दई परसन ह्वै सफल होहुतुमकामा।सूरदासप्रभुकोजो मिलन यश गावत सुर नर नामा॥ ६६॥राग बिलावल॥सुदामागृहकोगमनकियो।प्रगटविप्रको कछु न जनायो मनमें बहुत दियो॥ वोई चीर कुचील वोई विधि मोकोकहाकियो।धरिहौंकहा जाइ त्रिय आगे भरि भरि लेत हियो॥ भयो संतोष भाव मनहीं मनआदरबहुतकियो।सूरदास कीन्हें करनी बिन को पतिआइ बियो॥६७॥ सुदामामंदिरदेखिडरयो।शीशधुनैदोऊकरमीडे अंतर सोच परयो॥ ठाढी त्रिया मार्ग जो जोवे ऊंचे चरण धरयो। तोहिं आदरयो त्रिभुवनको नाथक अब क्यों जान फिरयो॥ इहां हुती मेरी तनिक मडैआ को नृप आनि छरयो।सूरदास प्रभु करि यह लीला आपद विप्र हरयो॥६८॥ देखत भूलि रह्यो द्विज दीन।ढूंढतफिरैनपूंछन पावै आपुन गृह प्राचीन॥ किधौं देवमाया बौरायो किधौं अनतही आयो। तृणकी छाँह गई निधि मांगत अनेक जतन करि छायो॥ चितवत चकित चहूँदिशि ब्राह्मण अद्भुत रचना रीति। ऊंचे भवन मनोहर छाजा मणि कंचनकी भीति॥ पति पहिचानि धरी मंदिरते सूर त्रिया अभिराम। आवहु कंत देखि हरिकी हित पाउ धारिये धाम॥ ६९॥ भूली द्विज देखत अपनो घर। औरहि भाँति रची रचना रुचि देखतही उपज्यो हिरदय डर॥ कै यह ठौर छिनाइ लियो कहुँ आइ रह्यो कोऊ समरथ नर। कै हौं भूलि अनतखंड आयो यह कैलास जहां सुनियत हर॥ बुधजन कहत दुबल घातक विधि सोइ न आजु टह्यो यह पटतर। ज्यों

-नलनी वन छाँडि वसी जल दाही हेम जहां पानी सर ॥ जगजीवन जगदीश जगतगुरु अवि-
गति जानि भरयो । आवो चले मंदिर अपनेही कमलाकंत धरयो ॥ ता पीछे त्रिय उतरि
कह्यो पति चलिए घरहि गहे करसे कर । सूरदास यह सव हित हरिको रोप्यो द्वार सुभगति
कलपतर ॥ ७० ॥ कहा भयो मेरो गृह माटीको । हौं तोगयोगुपालहि भेंटन औरखचेतंडुलगांठी
को ॥ विनु ग्रीवा कलसुभग न आन्यो हुतोकमंडलु दृढ काठीको । घुनो वाँसगतवुन्यो खटोला
काहूको पलंग कनक पाटीको ॥ नौतन चीरे दिकुयुगतीपै भूपण हुते न लोह माटीको । सूरदास
प्रभु कहा निहोरो मानतुरंक त्रास टाटीको॥७१ ॥ राग धनाश्री ॥कहोकैसेमिलेश्यामसंघाती।कैसे
गए सु कंत कौन विधि परसे हुते वस्तर कुचिलकुजाती ॥ सुनि सुंदरिप्रतिहारजनायोहरिसमीप
रुक्मिणी जहाती । उभै मुठी लीनी तंदुलकी संपति संचि करीही थाती ॥ सूर सु दीनवंधु
करुणामय करतवहुतजो श्रीनरिसाती॥७२॥ राग [illegible]
दीनवंधू विन कौन मिताई माने ॥ कहां हम कृ [illegible]
भेंटे हृदय लगाइ अंक भरि उठि अग्रजकी नाई ॥ निज आसन वैठारि परमरुचिनिजकर चरण
पखारे ।पूँछी कुशल श्याम घन सुंदर सव संकोच निवारे ॥लीन्हें छोरि चीरतेचाउरकरगहिमुख-
में मेले।पूरव कथा सुनाइ सूर प्रभु गुरुगृह वसे अकेले ॥७३ ॥ राग धनाश्री ॥हरि विन कौन दारि-
द्र हरै।कहत सुदामा सुन सुंदरि जिय मिलन न हरि विसरै॥ औरमित्र ऐसे समयामहँ कतपहिंचा-
न करै ।विपति परे कुशलात न वूझै वात नहीं विचरै। उठिकै मिले तंदुल हरि लीनेमोहन वचन
फुरै।सूरदास स्वामीकी महिमा टारी निधि न टरै ॥७४॥औरकोजानैरसकीरीति।कहांहौंदीनकहां
त्रिभुवनपति,मिले पुरातन प्रीति॥ चतुरानन तन निमिप न चितवत इती राजकी नीति । मोसों
वात कही हृदयकी गए जाहि युगवीति ॥ विनु गोविंद सकल सुख सुंदरि भुसपरकीसीभीति ।
हौंकहा कहों सूर प्रभुकेगुन निगम करत जाकी कीर्ति ॥७५॥गोपाल विना और मोहिं ऐसो कौन
सँभारै।हँसत हँसत हरि दौरि मिले सु उरते नहिं टारे ॥ छीन अंग जीरन वस्त्र दीन मुख नि-
हारे ममतन रज पथ लागी पीतपटसों झारे॥ सुखद सेज आसन दीन्होंसु हाथ पायँ पखारे । हरि
हित हर गंग धरे पदजल शिर ढारे ॥ कहि कहि गुरु गेह कथा सकल दुख निवारे ।न्यायनिजवपु
सूरदास हरिजी ऊपर वारे ॥ ७६ ॥ राग केदारो॥ दीन द्विज द्वारे आइ रह्यो ठाढो। नामसुदामा
कहत नाथ जो दुखी आहि अति गाढो॥ सुनतहि वचन कमलदल लोचन कमला तज उठि
धाए ।त्रिभुवन नाथ देखि अपनो प्रिय हितसों कंठ लगाए ॥ आदर करि मंदिर लै आने कनक
पलँग वैठाए। कथा अनेक पुरातन कहि कहिगुरुके धाम वताए ॥ खइवेको कछु भाभी
दीन्हों श्रीपति श्रीमुख वोले। फेंटउपरते अंजुल तंदुल वलकरि हरिजू खोले ॥ दुइ मूठी तंदुल
मुखमें लै वहुरो हाथ पसारयो। त्रिभुवन देकरि कह्यो रुक्मिणी अपुनो दान निवारयो ॥
विदा कियो पहुँचे निज नगरी हेरतभवनन पायो । मंदिर रही नारिपहिंचान्योप्रेमसमेतवुलायो॥
दीनदयाल देवकीनंदन वेद पुकारत चारो । सूर सु भेंटि सुदामाको दुख हरि दारिद्र मिटारो॥
॥ ७७॥ श्रीकृष्ण द्वारका गमन पंथीप्रति व्रजनारी वदंति ॥ राग मलार॥तवते वहुरि न कोऊ आयो । उहै
जु एकवेर ऊधोसों कछु संदेशो पायो ॥ छिन छिन सुरतिकरतयदुपतिकीपरतनमनसमुझायो।
गोकुलनाथ हमारे हितलगि लिखिहू क्यो न पठायो ॥ यहै विचार करहु धौं सजनी इतो गहर
क्योंलायो।सूरश्यामअववेगिनमिलहूमेघनिअंवरछायो॥७७॥राग गौरी॥वहुरयोव्रजवातनचाली।
वहै सु एक वेर ऊधोकर कमलनैन पाती दै घाली ॥ पथिक तुम्हारे पाँइन लागतिमथुराजाउ
जहां वनमाली । कहियो प्रगट पुकार द्वार ह्वै कालिंदी फिरि आयो काली ॥ तवहू कृपा हुतीनँद-
नंदन रचि रचि रसिक प्रीति प्रतिपाली। माँगत कुसुम देखिऊंचेद्रुमलेवउछंगगोदकरिआली॥

जब यह सुरति होत उर अंतर लागति काम बाणकी भाली । सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन सुमिरत उरहिशूलअति शाली॥७९॥ राग धनाश्री॥ तुम्हरे देशकागरमसिछूटी । भूकप्यासअरुनींदगईसब हरि बिन विरह लयो तनु लूटी ॥ दादुर मोर पपीहा बोले अवधि भई सब झूठी।हमअपराधिनि मर्म न जान्यो अरु तुमहूते छूटी ॥ सूरदास प्रभु कबहुँ मिलहुगे सखी कहत सब झूठी॥८०॥ अध्याय ॥ ८२ ॥ कुरुक्षेत्र यशोमति गोपी मिलन ॥पथिककहियो ब्रज जाइ सुने हरि जात सिंधु तट।सुनि सब अंग शिथिल गयो नाहीं वज्र हियो फट ॥ नर नारी घर घर सबै इह करति विचारा। मिलिहैं केसी भांति हमें अब नंदकुमारा ॥ निकटबसत हुती आस कियो अब दूरपयाना।विना कृपा भगवान उपाउ न सूर अपाना॥८१॥राग गौरी॥हमारे श्याम चलन कहत हैं दूरि।मधुवन वसत आशहुती सजनी अब मरिहैं जु विसूरि ॥ कौने कहा कौन सुनि आई किहि रुख रथकी धूरि । संगहि सबै चली माधवके नातो मरिहौं झूरि ॥ दक्षिणदिशि यह नगर द्वारका सिंधु रह्यो जलपूरि। सूरदास प्रभु बिनु क्यों जीवों जात सजीवन मूरि॥ ८२ ॥ गोपिका विरह ॥राग धनाश्री ॥ नैना भये अनाथ हमारे। मदनगोपाल वहांते सजनी सुनियत दूरि सिधारे ॥ वे जलहर हम मीन बापुरी कैसे जिवहिं निनारे। हम चातक चकोर श्यामघन वदन सुधानिधि प्यारे ॥ मधुवन वसत आश दरशनकी जोइ नेन मग हारे।सूरज श्याम करी पिय ऐसी मृतकहुते पुनि मारे॥८३॥राग धनाश्री॥अब निज नेन अनाथ भये।मधुवनहूतेमाधो सजनी कहियत दूरि गये॥ मथुरा वसत हुती जिय आशा यह लागत व्यवहार । अब मन भयो भीमके हाथी सुपने अगम अपार ॥ सिंधुकूल इक नगर बतावत ताहि द्वारका नाउँ। यह तनु सौंपि सूरके प्रभुको और जन्मधरि जाउँ ॥ इतौं दूरते को आवे री । जासों सदेशो कहि पठऊं इहांते सो कहि कहां पावे री ॥ कंचनके बहु भवन मनोहर राजा रंक न तृण छावे री । वहांके वासी लोगनको क्यों ब्रजको बसिवो भावे री ॥ सिंधुकूल इक देश वसतहे देख्यो सुन्यो न मन धावे री।बहुविधि करत विलाप विरहिनी अनेक उपायदुखपावे री॥कहाकरों कहां जाउंसूर प्रभु को हरि पियपे पहुँचावेरी॥८४॥ ॥राग सारंग॥ हौं कैसेके दरशन पाऊं। सुनहु पथिक वहिदेश द्वारका जो तुम्हरे संग आऊं ॥ बाहिर भीर बहुत भूपनकी बूझत वदन दुराऊं । भीतर भीर भोग भामिनिकी तेहिठां कौन पठाऊं ॥ बुधि बल युक्ति जतन करि बहिपुर हरि पियपे पहुँचाऊं। अब यन बसी निकुंजरसिक बिन कौनहिं दशा सुनाऊं ॥ श्रमके सूर जाउँ प्रभुपासहि मनमें भले मनाऊं। नवकिशोर मुख मुरली विनाइननैननकहा देखाऊँ॥ ८५ ॥ रागनट ॥मानो विधि अब उलटि रचीरी। जानति नहीं सखीकाहेते वहि दिनतेजु तजीरी॥बूडि न मुईनीर नैननके प्रेम नप्रजरि पचीरी।विरह अग्नि अरु जलप्रवाहते क्यों दुहुँ बीचबची री ॥ जो कछु सकल लोककी शोभा लेद्वारकासचीरी। वहां कि वारिधि बडवानलमेंरतन आनिबची री॥कहियेसंकर्षणके भ्राता कीटनि कितन मची री। सूर श्याम या जग मोह्यो सोईमुखनिरखिनचीरी ॥८६॥राग मारू ॥ औनहींमाईकोइतो।सुन री सखी संदेशदुर्लभ भए नैन थक मग जोइतो।गोकुलछोडि निवास सिंधु कियो प्राणजिवन धनसोइतो ॥ द्वारावतीकठिन अति मारगक्योंकरि पहुँचे लोइतो । मिती मिलनकी आशअवधि गई ब्रजवनिता कहि रोइतो ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको विपति कहूं नहिं होइतो ॥ ८७ ॥ ॥ राग मलार॥ ताते अब अति मारियत अपसोसनि । मथुराहूते गए सखी री अब हरि कारे कोसनि ॥ यह अचरज सु बडो मेरे जिय यह छांडनि वह पोसनि । निपट निकाम जानि हम छांडी ज्यों कमान बिन गोसनि ॥ इक हरिके दरशन बिनु मारियत अरु कुबिजाकेठोसनि। सूर सु जरनि कहा उपजी जो दूरिहोतकरि वोसनि ॥८८॥ राग मारू॥जोपै लेजाइ कोऊ मोहिं:

द्वारका देश । संग ताके चलौं सजनी जटाहू करि केश ॥ बोलिपैँ हर वाइ पूछहु आपने समेस॥ जैसेही जो कहै कोऊ बनै तैसे भेस॥यदपिहमव्रजनाथयुवती यूथनाथ नरेश।तदपिशशि कुमुद-नी सूरज रची प्रीति परेस ॥ ८९॥रागसारंग॥ उघरिआयोपरदेशीको नेह।तवजोसबैमिले कान्ह कारे भूलतही अवलेहु ॥ काहेको सखी अपनो सरवस हाथपराये देहु।लहियोमहिमाभगमथुरा छाँडि जाइ समुद्र कियो गेहु॥कहा अब करी अग्नि तनु उपजी बाढ्यो अतिहि संदेहु । सूरदास विह्वल भई गोपी नैनन वर्षत मेहु॥९०॥राग मलार॥कैसेहै बनत इहि व्रज हरिको अवन । कहियतहै मधुवनते सजनी कहूँ कान्ह कियो दूरि गवन॥निकट बसत मतिहानि भई हम मिलिहु न आई सु त्यागि भवन।अब अपने यदुकुल समेतले दूरि सिधारे जीति जवन॥अगम सुपंथ दूरि दक्षिणदि-शितहँ सुनियत सखी सिंधुलवन । सूरदास तरसत मन निशिदिन यदुपति लौं लेजाइ कवन॥९१॥ ॥राग धनाश्री॥सुनियत कहुँ द्वारका बसाई।पश्चिम देश तीर सागर के कचन कोट गोमती सों खाई॥ पंथ न चलत संदेश न आवत उहां लगि नर कोऊ नहिं जाई । शत योजन मथुराहूते कहियत यह हम सुधि निगमहूपे पाई ॥ वन उपवनमें जन मंदिर छवि कोकिल कीर हंस ध्वनि लाई । द्वारपाल चातक द्रुम सुपचनि माँझ कोट निधि पाई ॥ घोप ग्वाल पशुपाल अधम कुल ईश एकको कौन सगाई। सूर श्याम व्रजवास बिसारे बाबानंद यशोदा माई॥९२॥ राग मारू॥उडुपति-सों बिनवति मृगनैनी ॥ तुम कहियत उडुराज अमृतमय तजि सुभाउ वर्षत कत बहनी॥उमयापति रिपु अधिक दहतहै हरि रिपु प्रीतम सूखत तोनी। छपा न छीन होत सुन सजनी भूमि डसन रिपु कहां दुरौनी ॥ श्याम संदेश बिचार करतिहै कहां रहे हरि छाइ वछौनी । सूर श्याम विनु भवन भयानक जो अति रहति गोपालकी अवनी ॥ ९३ ॥ दधिसुत जातिहो वहि देश। द्वारकामें श्यामसुंदर सकल भुवन नरेश॥ परम शीतल अमृतदाता करतहैं उपदेश। श्यामसुंदर वियोगिनीको लेहु यह संदेश॥ नंदनंदन जगतवंदन धरे नटवर भेप। काज अपनो सारि स्वामी रहे जाइ विदेश ॥ भक्तवत्सल बिरद तुमरो मोहिं इह अंदेश।अबकी बेर तुम मिलहु कृपाकरि कहें सूर सुदेश॥९४राग मलार॥वीर बटाऊ पाती लीजो। जब तुम जाहु देश द्वारका हमरेइ लाल गोपालहि दीजो ॥ रंगभूमि रमणीक मधुपुरी वारि चढाइ कहो दृढ कीजो। खारे समुद्र छाँडि किन आवत निर्मलजल यमुनाको पीजो ॥ या गोकुलकी सकल ग्वालिनी देत अशीश बहुत युग जीजो । सूरदास प्रभु हमरेकोते नँदनंदनके पाँइ परीजो॥ ९५॥राग सारंग॥ हौं तो आइ मिलत गोपालहि । सिंधु धरनि यह उघुतान तेरी दुख दीनो व्रजबालहि॥ कहा करों पट नील पीत वर दुइते भये भुज चारि । वहु सुख कहा जु तब मन हातो भटत श्याम मुरारि ॥ संतत सूर रहत पति संगम सब जानति रुचि जीकी। तुक्यों नहीं धरति याभेपहि जोपै मुक्ति अति नीकी॥ ९६ ॥ राग मलार ॥ श्याम बिन भई शरदनिशि भारी। हमें छाँडिप्रभु गये द्वारका व्रजभूमि कैसे बिसारी ॥ निर्मल जल यमुनाको छाँड्यो सेवत समुद्रजलखारी।कहियो जाइ पथिक जैसे आवैं चरणनकी बलिहारी ॥ अवलाकहा योगकरजानैव्रजवासीजोबिसारी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको रटत राधिका प्यारी ॥ ९७॥ राग मलार॥व्रजपरमदरकरतहै काम। कहियो पथिक जाइ श्यामसों राखहिंआइ आपनो धाम ॥ जलधि कमानवारिदारूभरि तडित पलीता देत। गर्जन औ तर्पन मानो गो पहरकमें गढ लेत ॥लेहु लेहुसवकरतबंदिजनकोकिल चातक मोर। दादुर नगर करि जीवन ढोवा अलग बिलग चहुँ ओर ॥ ऊधो मधुप जमूस देखि कर कह्यो लुटाऊं धीरजपारन। रखिवेहोइतोआनिराखियेसुरलोक निज जारन॥९८॥राग मलार॥ व्रजपर बहुरो लागे गाजन । ज्यों क्योंहू पति जात बडेकी मुख नदेखावत लाजन॥ चहुँदिशिते

दल बादल उमडे सूने लागे बाजन। घोषके लोग कान्ह बल तिन अब जित कित लागे भाजन॥ आपुन जाइ द्वारका छाये लागे श्याम विराजन। सूरदास गोपी क्यों जीवें निठुरे हरिजी साजन॥ ९९॥ रागमारू॥ अब मोहिं निशि देखत डर लागे। बारबार अकुलाइ देहते निकसि निकसि मन भागे॥ प्राची दिशा पेखि पूरण शशि ह्वै आयो तन तातो। मानहुमदनमदनविरहिनिको करिलीनी रिसरातो॥ भृकुटी कुटिल कलंक चाप मानों अति रिसिसों शरसाधे। चहुँघा किरनि पसारे पासिनि हठिकर योगिनि बाँधे॥ सुनि शठसहे प्राणपतिमेरोजाकोयशजग जाने। सूर सिंधु बूडतते राख्यो ताहू कृतहि न माने॥१००॥ रुक्मिणि वचन श्रीभगवानप्रति॥ राग धनाश्री॥ रुक्मिणि बूझतहे गोपालहिं। कहो बात अपने गोकुलकी कतिक प्रीति ब्रजबालहिं॥ कहा देखि रीझे राधासों चंचल नैन विशालहिं। तब तुमगाय चरावनजाते उरधरते वनमालहिं॥ इतनी सुनी नैन भरि आये प्रेमनंदके लालहिं। सूरदास प्रभु रहे मौनह्वै घोष बातजनिचालहि॥ १॥ राग धनाश्री॥ रुक्मिणि मोहिं निमेष न बिसरत वे ब्रजबासी लोग। हम उनसों कछु भली न कीनी निशिदिन मरत वियोग॥ यदपि कनकमय रची द्वारका सखा सकलसंभोग। तद्यपि मनजोहरतवंसीवट ललिताके संयोग॥ मैं ऊधो पठयो गोपिनपे देइ सँदेशो योग। सूरजदासदेखि उनकी गति किन्ह उपदेशे योग॥२॥ राग मलार॥ रुक्मिणि मोहि ब्रज बिसरतु नाहीं। वा क्रीडा खेलत यमुनातट विमल कदमकी छाहीं॥ गोपवधूकी भुजा कंठधरि विहरत कुंजनमाहीं। अनेकविनोद कहांलौं बरणौं मोमुख बरणि न जाहीं॥ सकल सखा अरु नंद यशोदा वे चितते न टराहीं। सुत हित जानि नंद प्रतिपाले बिछुरत विपति सहाहीं॥ यद्यपि सुखनिधानद्वारावतितोउमनकहुँनरहाहीं। सूरदास प्रभु कुंजविहारी सुमिरि सुमिरि पछिताहीं॥ ३॥ राग धनाश्री॥ रुक्मिणि चलहु जनम भूमि जाहीं। यदपि तुम्हारो हतो द्वारका मथुराके सम नाहीं॥ यमुनाके तट गाय चरावत अमृत जल अचवाहीं। कुंजकेलि अरु भुजा कंधधरि शीतल द्रुमकी छाहीं॥ सरस सुगंध मंद मलया गिरि विहरत कुंजनमाहीं। जो क्रीडा श्रीवृंदावनमें तिहूंलोकमेंनाहीं॥ सुरभीग्वालनंदअरुयशुमति मम चितते न टराहीं। सूरदास प्रभु चतुरशिरोमणिसबातिनकीकराहीं॥४॥ श्रीकृष्णकुरुक्षेत्रआवन॥ राग सारंग॥ ब्रजबासिनको हेतु हृदयमें राखि मुरारी। सब यादवसोंकह्योबेठिकेंसभामँझारी॥ बडो पर्व रवि गहन कहा कहों तासु बडाई। चलौ सबै कुरुक्षेत्र तहां मिलि न्हैये जाई॥ तात मात निज नारिले हरिजी सब संगा। चले नगरके लोग साजि रथ तरलतुरंगा॥ कुरुक्षेत्रमेंआइ दियो [illegible]॥५॥ [illegible]॥

राग सारंग॥ वायस गहगहात शुभवाणीविमलपूर्वदिशि बोली। आजुमिलाओंश्याम मनोहरतू सुनु सखी राधिके भोली॥ कुचभुज अधर नयन फरकतहें बिनहिबातअंचलध्वज डोली। सोचनिवार करो मन आनँद मानो भाग्यदशा विधि [illegible]

किगई चोली। सूरदास अभिलाप नंदसुत [illegible]

आवनहार भये। अंचल उडत, मन होत [illegible]

चितवत सगुन दये। ऋतुबसंत फूली द्रुमवल्ली उलहे पात नये॥ करति प्रतीति आपु आपुनते [illegible] अवधिहु पूजिगये॥७॥ श्रीभगवान दूत वचन नंद यशोम-

[illegible] यो। तेरीसों सुन जननि यशोदा हठि गोपाल [illegible] माता जायो॥ खान पान परिधानसबै सुख तेंही लाड लडायो। इतो हमारो राज द्वारका मो जी कछू नभायो॥ जब जब सुरति होत उहि हितकी बिछुर बच्छ ज्यों धायो॥ अब वे हरि कुरुक्षेत्रमें आये सो मैं तुम्हें सुनायो। सबकुलसहित नंदसु रज प्रभुहितकरिवहां बोलायो॥८॥ राधिकावचन सखींप्रति॥ सारंग॥ राधानेननीरभारेआई। कबधौंश्याम

मिलें सुंदर सखी यदपि निकटहैआई॥कहाकरौंकेहिभाँति जाउँअब पेपहिनहिंतिनपाई॥सूरश्याम सुंदरघनदरशे तनुकी तापनशाई॥९॥सखीवचनराधिकाप्रतिराग केदारो॥अब हरि आइहैंजिनसोचै।सुन विधुमुखी वारि नयनन ते अब तू काहे मोचै॥सत्य जानि चित चेत आनि तू अवनख क्यों तनु नोचै।मदनमुरारिसँभारिसुमिरि सुखतुमसमीपकोवोचै॥लैलेखनि मसिकरिकर अपने लिखि संदेश छाँडि संकोचै।सूर सुविरहजनाउकरत कितप्रबल मदनरिपु पोचै॥१०॥गोपीसंदेशश्रीभगवानप्रति ॥ राग सारंग ॥ पथिक कहियो हरिसों यह बात। भक्तवछल है बिरद तिहारोहमसबकियेसनाथ॥ प्राण हमारे संग तुम्हारे हमहू हैं अब आवत। सूर श्यामसों कहत संदेशोनयननंनीर बहावत॥ ॥११॥कुरुक्षेत्र श्रीभगवान मिलन ॥राग सारंग ॥नंद यशोदा सबब्रजवासी। अपनेअपनेशकटसाजिकै मिलन चले अविनाशी॥कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ उतावल धावत।हरिदरशन लालसा कारन विविध मुदित सब आवत॥ दरशन कियो आइ हरिजीको कहत सपन की साँची। प्रेम मानि कछु सुधि न रही अँग रहे श्याम रँग राची॥ जासों जैसी भाँतिचाहियेताहिमिल्यो त्यों धाइ। देश देशके नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाइ॥ उमँग्यो प्रेम समुद्रदशहुँदिशिपरमिति कही न जाइ। सूरदास यह सुखसोजानैजाकेहृदय समाइ॥१२॥राग कान्हरो॥तेरीजीवनिमूरिमिलहि किन माई। महाराज यदुनाथ कहावत तबहिं हुते शिशु कुँवर कन्हाई॥पानि परे भुज धरे कमल मुख पेखत पूरब कथा चलाई। परमउदार पानि अवलोकत हीन जानिकछु कहत नजाई॥ फिरि फिरि अब सन्मुखही चितवति प्रीति सकुच जानी न दुराई। अबहँसिभेटहुकहिमोहिंनिज जन बाल तिहारो हो नंद दोहाई॥रोम पुलकि गदगद तनु तिहि छिन जलधारा नैननवरपाई।मिले सु तात मात बंधू सब कुशल कुशल करि प्रश्न चलाई॥आसन देइ बहुत करि विनती सुत धोखे तब बुद्धि हेराई।सूरदास प्रभु कृपाकरी अब चितहि धरे पुनि करी बडाई॥१३॥ राग मलार॥माधव या लगि है जग जीजतु। जाते हरिसों प्रेम पुरातन बहुरि नयो करि कीजतु॥ कहँ रवि राहु भयो रिपु मति रचि विधि संयोग बनायो।उहि उपकार आज यहि औसर हरि दरशन सचुपायो॥कहाँ बसहिं यदुनाथ सिंधु तट कहँ हम गोकुलवासी। वह वियोग यह मिलनि कहां अब काल चाल औरासी॥ सूरदास मुनि चरण चरचि करि सुरलोकनि रुचि मानी।तब अरु अब यह दुसह प्रमानी निमिषो पीर न जानी॥१४॥श्रीभगवान रुक्मिणी प्रत्युत्तर॥राग कान्हरो॥ हरिजूसों बूझत है रुक्मिणि इनमें को वृषभानु किशोरी। वारेक हमें देखावो अपने बालापनकी जोरी॥ जाके हेतु निरंतर लीये डोलत ब्रजकी खोरी। अति आतुर होइ गाइ दुहावन जाते पर घर चोरी॥ रजनी सेज सु करि सुमननकी नवपल्लव पुट तोरी। बिनु देखे ताके मन तरसे छिन बीते युग मोरी॥सूर सोच सुख करि भरि लोचन अंतर प्रीति न थोरी। शिथिल गात मुख वचन फुरत नहिं ह्वै जो गई मति भोरी॥ ॥१५॥राग धनाश्री॥बूझति है रुक्मिणि पिय इनमेंको वृषभानुकिशोरी।नेक हमैंदेखरावहुअपनीबालापनकी जोरी॥ परमचतुर जिन कीने मोहन अल्प वैसही थोरी। बारेते जिहि यहै पढायो बुधि बल कलविधि चोरी॥ जाके गुणगनि गुथति माल कबहूं उरते नहिं छोरी। सुमिरन सदा बसतहीं रसना दृष्टि न इत उत मोरी॥ वह देखो युवतिवृंदमें ठाढी नीलवसन तनु गोरी। सूरजदास मेरो मन वाकी चितवन देखि हरयोरी॥१६॥ राग मारू॥गोविंद परम कृपा मैं जानी। निगम जु कहत दयालु शिरोमणि सत्य सु निधि वानी॥ अब ये श्रवन वरन कर स्वारथ तुम जु दरश सुख दीनो। या फल योग सुकृत नहिं सबुझत दीन देखि हित कीनो॥ यह दिन धन्य धन्य जीवन जस धन्य

भाग्य प्रभु पाये॥ शिव मुनि मन दुर्लभ चरणांबुज जनहि प्रगट परसाए॥ हरषित सुजन सखा त्रिय बालक कृष्णमिलन जिय भाये॥सूरजदास सकल लोचन जनु शशि चकोर कुलपाए॥ १८॥ राग सारंग॥हरिजी इते दिन कहाँ लगाये॥तबहि अवधि में कहत न समुझी गनत अचानक आये॥ भली करी जु अवहि इन नैनन सुंदर चरण दिखाये। जानी कृपा राजकाजहुँ हम निमिष नहीं बिसराए॥ विरहिनि विकल बिलोकि सूर प्रभु धाइ हृदय कर लाए। कछु मुसुकाइ कह्यो सारथि सुन रथके तुरंग छुराए॥ १८॥ राग मलार॥हरिजू वे सुख बहुरि कहां। यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां॥ मुख मुरली शिर मोरपखौवा गर घुंघुचनिको हार। आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवन तिरछी चाल॥राति दिवस अंग अंग अपने हित हँसिमिलि खेलन खात। सूर देखि या प्रभुता उनकी कहि नहिं आवे बात॥ १९॥राग धनाश्री॥ रुक्मिणि राधा ऐसे बैठी। जैसे बहुत दिननकी बिछुरी एक बापकी बेटी॥एक सुभाउ एकले दोऊ दोऊ हरिकी प्यारी। एक प्राण मन एक दुहुनको तनु करि देखिअत न्यारी॥ निज मंदिर ले गई रुक्मिणी पहुनाई विधि ठानी॥सूरदास प्रभु तहँ पगधारे जहां दोऊ ठकुरानी॥ २०॥राग धनाश्री॥राधा माधव भेंट भई। राधा माधव माधव राधा कीट भृंग गति होइ जो गई॥माधव राधाके रँग राचे राधा मवाध रंग रई। माधो राधा प्रीति निरंतर रसना कहि न गई॥ बिहँसि कह्यो हम तुम नहिं अंतर यह कहि व्रज पठई।सूरदास प्रभु राधामाधव व्रजविहार नित नई नई॥२१॥राग धनाश्री॥राधावचन सखी प्रति॥ करत कछु नाहीं आजु बनी। हरि आए हों रही ठगीसी जैसे चित्त धनी॥ आसन हर्षि हृदय नहिं दीन्हों कमलकुटी अपनी। न्यवछावरि उर अरघ न अंचल जलधारा जोवनी॥ कंचुकी ते कुचकलश प्रगट ह्वे टूटि न तरक तनी। अब उपजी अतिलाज मनहिमन समुझत निजकरनी॥ मुख देखत न्यारेसी रहिहौं बिनु बुधिमति सजनी। तदपि सूर मेरी यह जडता मंगल माँझ गनी॥ २२॥भगवान वचन व्रजवासिप्रति॥राग सारंग॥ व्रजवासिनसों कह्यो सबनते व्रजहित मेरे। तुमसों मैं नहिं दूर रहतहौं सबहिनके नियरे॥ भजे मोहिं जो कोइ भजों मैं तिनको भाई। मुकुरमांह ज्यों रूप आपनो आपुन सम दरशाई॥ यह कहिके समदे सकल जननयनरहेजलछाई।सुरश्यामकोप्रेमकछूमोपे कह्योन जाई॥२३॥राग सारंग॥ सबहिनते सबहे जन मेरो। जन्म जन्म सुन सुभल सुदामा निबह्यो इह प्रण मेरो॥ ब्रह्मादिक इंद्रादि आदि दे जानत बलि बसि केरो। इक उपहास त्रास उठि चलते तजिके अपनो खेरो॥ कहा भयो जो देश द्वारका कीन्हों दूरि बसेरो। आपुनहीं या व्रजके कारण करिहौं फिरि फिरि फेरो॥यहां वहां हम फिरत साधहित करत असाध अहेरो। सूर हृदयते टरत न गोकुल अंग छुअतहौं तेरो॥ २४॥वचन अक्रूरप्रति राग सारंग॥हमतो इतनेही सचुपायो। सुंदर श्याम कमलदल लोचन बहुरो दरश देखायो॥कहा भयो जो लोग कहतहैं कान्ह द्वारका छायो। सुनि यह दशा विरह लोगनकी उठि आतुर होइ धायो॥ रजक धेनु गज कंस मारिके कियो आपनो भायो॥ महाराज होय मातु पिता मिलि तऊन व्रजबिसरायो॥गोपीगोप अरु नंद चले मिलि प्रेम समुद्र बहायो। येते मान कृपालु निरंतर नैननीरढरिआयो॥यद्यपि राज बहुत प्रभुता सुनि हरि हित अधिक जनायो। वेसहि सूर बहुरि नँदनंदन घर घर माखन खायो॥२५॥अध्याय॥७२॥अष्टनायिका द्रौपदी प्रश्न॥राग बिलावल॥हरि हरि हरिसुमिरहु दिनराति॥नातरुजन्म अकारथ जाति॥ सौ बातनकी एकै बात। हरि हरि हरि सुमिरो दिन रात॥ हरि कुरुक्षेत्र अन्हान सिधाये। तब सब

भूपति दरशन आये ॥ हरि तेहि सबको आदर कियो । भयो संतुष्ट सबहिनको हियो ॥ तब भूपहि हरिको शिरनाइ । करनलगे अस्तुति या भाइ ॥ परमहंस तुम सबके ईश । वचनतुम्हारे श्रुति जगदीश ॥ तुम अच्युत अविगति अविनाशी । परमानंद सदा सुखरासी ॥ तुम तनु धारि हरचो भुवभार । नमो नमो तुम्हें बारंबार ॥ पुनि रानी रानिनपै आई।द्रुपदसुता तब बात चलाई ॥ ज्यों करि भयो तुम्हारो ब्याह । कहो सो तिनको मोहिं उत्साह ॥ कह्यो सबन्ह हरि अज अविनाशी । भक्तवछल सब जगत निवासी ॥ ना हम कोनहिं सुंदरताई। भक्त जानिकै सब अपनाई ॥ ब्याह सबनको ज्यों ज्यों भयो। बहुरो तिन्हते वहि त्यों कह्यो ॥ द्रुपदसुता सुनि मन हरषाई।कह्योधन्यतुम धनि यदुराई॥ धन्य सकल पटरानी रानी । जिन वर पायो शारँगपानी॥ धन्य जो हरिगुण अहनिशिगावै। सूरदास तिनकी रज पावै ॥ २६॥अध्याय॥८६॥ऋषिस्तुति॥राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई । बिनु हरि सुमिरन मुक्ति न होई ॥ श्री शुक व्यास कह्यो यह गाई। सोइ अब कहौं सुनो चित लाई ॥ सूरज गहन पर्व हरि जान।कुरुक्षेत्रमें आए न्हान ॥ तहां ऋषि हरि दरशन हित आये। हरि आगे होइ लेन सिधाये ॥आसन दे पूजा हित करी । हाथ जोरि विनती उच्चरी॥ दरश तुम्हारे देवन दुर्लभ । हमको भयो सो अतिही सुल्लभ ॥ यों कहि पुनि लोगन समुझायो । जैसे वेद पुराणन गायो ॥ हरिजीको पूजै हरि जान। ताको होइ तुरत कल्यान॥गुरुपूजा बहु बिधिसों कीजे । तीरथ जाइ दान बहु दीजे ॥ यह सब किये होइ फल जोइ । संत संगसों छिनमें होइ ॥ यह सुनिकै ऋषि रहे लजाइ।पुनि हरिसे बोले या भाइ॥ तुम सबके गुरुसबके स्वामी ।तुम सबहिनके अंतर्यामी॥तुम्हें वेद ब्राह्मणहि बखानत। ताते हमरी अस्तुति ठानत॥ हम सेवक तुम जगतअधार।नमो नमो तुम्हें बारंबार॥ तुम परब्रह्म जगत करतारा।नरतनु धरचो हरन भूभारा ॥ सुरपूजा औ तीर्थ बतावत । लोगनके मतिको भरमावत॥ तुम रूपहि यहिभाँति छिपायो ।काठ माँह ज्यों अग्नि दुरायो ॥ वसुदेव तुमको जानत नाहीं । और लोग बपुरे किन माहीं ॥ कोउ न मानत कोउ न जानत।कोऊ शत्रु मित्रकरि मानत॥ सर्व शक्तितुमसर्व अधार । तुम्हें भजै सो उतरै पार ॥ जैसे नींद माहिं कोइ होय। बहुबिधि सपनो पावै सोय ॥ पै तेहि वहां न कछू सम्हार । केहि देखत को देखनहार॥त्यों जिय रहैविपरस भोइ।तेहिकेसुद्धि बुद्धि नहिं कोइ॥ जापर कृपा तुम्हारी होइ।रूप तुम्हारो जानै सोइ॥ घटघटमांह तिहारो वास। सर्व ठौर ज्यों दीप प्रकाश॥ इहि विधि तुमको जानै जोइ।भक्तिरु ज्ञानी कहिये सोइ॥ नाथ कृपा अब हमपर कीजे । भक्ति आपनी हमको दीजे ॥प्रेम भक्ति बिन कृपा न होइ।सर्व शास्त्रमें देखे जोइ ॥ तपसी तुमको तपकरि पावै । सुनि भागवत गृहीगुणगावै॥कर्मयोगकरिसेवतकोई।ज्यों सेवै त्योंही गति होई ॥ ऋषि यहि बिधि हरिके गुण गाइ । कह्यो होइ आज्ञा यदुराइ ॥ हरि तिनकी पुनि पूजा करी । कीरति सकल जगत विस्तरी ॥ वेद पुराण सबनको सार। व्यास कह्यो भागवत विचार ॥ बिनु हरि नाम नहीं उद्धार । वेद पुराण सबनको सार । सूर जानि यह भजो मुरार ॥ २७ ॥ अध्याय ॥८५॥ श्रीकृष्ण देवकी षट्पुत्र आनयन॥ रागबिलावल ॥ श्रीगोपाल तुम कहो सो होइ । तुमहीं कर्त्ता तुमहीं हर्त्ता तुमते और न कोइ ॥ अबलौं मैं तुमको नहिं जान्यो पुत्रभावकरि मान्यो । तुमहो देव सकल देवनके अब तुमको पहिचान्यो ॥ गुरुसुत आनि दिये तुम जैसे कृपाकरी यदुराई। ममसुतहू जे कंस सँहारे

ते प्रभु देहु जिवाई ॥ मेरे जिय यह बडी लालसा देखों नैनन जोई। दूधपिवाइहृदयसोंलावौं पाछे होइ सो होई ॥ यह सुनि हरि पाताल सिधारे जहांहुतेवलिराइ। करिप्रणामबैठारिसिंहासनहितकरि धोये पाइ ॥ तासों कह्यो देवकीके सुत षष्ट कंस जे मारे। नेक मँगाइदेहुतेहमकोंहैंबेलोकतुम्हारे॥ तहँते आनि दिये हरि बालक माता लाड लडाये। सूरदास प्रभु दरशपरसकेतेवैकुंठसिधाये॥२८॥ अध्याय ॥ ८६ ॥ ॥ वेदस्तुति वर्णन राग बिलावल॥ हरि हरिहरि हरि सुमिरनकरो।हरिचरणारविन्दउरधरो। हरिके रूप रेख नहिं राजा। अरु हरि सम द्वितिया न विराजा॥ अलखरूप हरि कह्यो न जाई। देवन कछु वेद उक्ति बताई ॥ हरिजीके हिरदय यह आई। देवन सबन निरूप देखाई॥तीनलोक हरि करि विस्तार।ज्योति अपनिको कियो उजियार ॥ जैसे कोऊ गेह सँवार। दीपकबारिकरैउ-जिआर ॥ त्यों हरि ज्योति अपनी प्रगटाइ। घट घटमें सोई दरशाइ॥तीनलोकसरगुणतबुजान्यो। ज्योति स्वरूप आपनो मान्यो ॥ श्वासा तासु भये श्रुतिचार। करि सो अस्तुति या परकार॥नाथ तुम्हारी ज्योति अभास। करत सकल जगमें परकास ॥ थावर जंगम जहँलों भयो। ज्योति तुम्हारी चेतन कियो ॥ तुम सब ठौर सबनते न्यारे। को लखि सके चरित्र तुम्हारे ॥ सो प्रकाश तुम साजे सदा। जीव कर्म्म करि बंधन बँधा॥ सर्वव्यापी तुम सब ठाहर ॥ तुमहिं दूर जानत नर नाहर ॥ तुम प्रभु सबके अंतर्यामी। बिसरि रह्यो जिव तुमको स्वामी ॥ तुम्हरी लीला अगम अपार। युगप्रमान कीन्हो व्यवहार॥तुम्हरीमायाजगतउपाया।जैसेकोतैसेमगलाया॥ अद्भुत सगुण चरित्र तुम्हारे। जो करिके भुवभार उतारे ॥ तेहिको समुझि सकत नहिंजोइ। निर्गुण रूप लखै क्यो सोइ॥नरतन भक्ति तुम्हारे होइ। जीव तनुमे जिव आसरे सोइ॥करिये भक्ति उतरिये पार। नमो नमो तुम्हें वारंवार॥ शुक जैसे वेद अस्तुति गाई। तैसेही मैं करिसमुझाई ॥ जो पदअस्तुति सुनै सुनावै। सूर सु ज्ञान भक्तिको पावै॥२९॥ राग बिलावल॥ नमोनमस्ते वारंवार। मदन सुदन गोविंद मुरार ॥ माया मोह लोभ अरु मान। ए सब त्रयगुण फांस समान ॥ काल सदा शर साधे रहै।क्यो करि नर तुव सुमिरन कहै॥ तुम निर्गुण उदय निराकार। सूर अमर हम रहे पचिहार ॥ तुमरो मर्म न जानैं सार। नर बपुरो क्यों करै विचार॥ अरुणअसितसितवपुउन-हार। करत जगतमें तुम अवतार॥ सो जगको मिथ्या कहिजाइ। जहां तरै तुमरे गुण गाइ॥ प्रेम-भक्ति बिनु मुक्ति न होइ। नाथ कृपाकरि दीजे सोइ ॥ और सकल हम देखों जोइ। सुम्हरी कृपा होइ सो होइ ॥ इह तनुहै प्रभु जैसे ग्राम। यामें शब्दादिक विश्राम॥ अधिष्ठाता तुमहो भगवान। जान्यो जगत न तुम अस्थान॥ तुम श्वासाते पुहुमी नाथ। श्वासरूप हम लख्यो नयात॥कहाकहि तुम्हरी अस्तुति करैं।वाणी नमो नमो उच्चरैं ॥ जगतपिता तुमहीं होईश।यातेहमविनवतजगदीश॥ तुम सम द्वितिया और न आहि। पटतर देहिं नाथ हम काहि ॥ शुक जैसे वेदअस्तुति गाई। तैसेही मैं कहि समुझाई ॥सूर कह्यो श्रीमुखउच्चार।कहैसुनैसोतरैभवपार॥३०॥नारद अस्तुति॥ रागधनाश्री ॥ प्रभु तुअ मर्म समुझि नहिं परयो। जगसिरजत पालत संहारत पुनि क्यो बहुरि करयो॥ ज्यों पानीम होत बुदबुदा पुनि तामाहिं समाई। त्योंही सब जग कुटुम्बतुमतेपुनि तुममाहिंबिलाई ॥ माया जलधि अगाध महाप्रभु तरि न सकै तेहि कोई। नाम जहाज चढे जो कोई तुवपद पहुँचै सोई ॥ पापी तरयो तरयो सबहीसम प्रभुजी नाही तासु निबाही। काठ उतारतनारिवोहिमें नाम तुम्हारो ताही ॥ पारस परसि होत ज्यों कंचन लोहपना मिटजाई।ज्यो अज्ञानी ज्ञानहिं पावत नाम तुम्हारे गाई ॥ अमरहोत ज्यों संशयनाशे रहत सदा सुखपाइ। याते होत अधिक सुख

भक्तन चरणकमल चितलाइ ॥ थावर जंगम सब तुम आश्रित सनक सनंदन बानी । ब्रह्मा शिव अस्तुति न सकैं करि मैं वपुरो केहिमाहीं ॥ योग ध्यान करि देखत योगी भक्त सदा मोहिं प्यारो।ब्रजवनिता भज्यो मोहिं नारद मैं तेहि पार उतारो ॥ नारद ज्योंहीं अस्तुति कीनी शुक त्यों कहि समुझाई।सूर प्रेम भक्तिकी महिमा श्रीपतिश्रीमुखगाई॥२१॥ अध्याय.॥ ८७ ॥ सुभद्राविवाह वर्णन ॥ राग बिलावल॥भक्तवछलश्रीयादवराई।भक्तकाज हरिकृतसुखदाई॥अर्जुनतीरथयात्रासिधाये। फिरत फिरत द्वारावति आये ॥ सुन्यो विचार करत बलदेइ। दुर्योधनहिं सुभद्रा देइ ॥ तब अर्जुनके मन इह आई ।याको मैं लेजाउँ दुराई ॥ भेष तापसीको तिन गह्यो ।चारिमासद्वारावति रह्यो ॥ बलदेव ताको नेवत बुलायो । भोजन हेतु सो बल गृह आयो ॥ लख्यो सुभद्रा इह संन्यासी।राजकुँवर कियो भेष उदासी ॥ मेरे मनमें इह उत्साह । मेरो या सँग होहि विवाह ॥ इकदिन सो हरिमंदिर गई । वहां भेंट पारथसों भई॥ देखि ताहि रथ ठाढो कियो । हरि दोउको चेहरो लिखिलियो ॥धनुषबाण अपनों तब दियो।अर्जुन सावधान होइ लियो॥यहसुनिकै हलधर उठिधायो ।तब हरि अर्जुन नाम सुनायो ॥ बल कह्यो जों तुम मन ऐसी आइ।तौतुमक्योंकीन्हीं न सगाइ ॥ हरि कह्यो अबहूँ बुलावहु ताहि ।भली भाँतिको करो विवाहि ॥ तब बलपारथ तुरत बुलायो ।शुद्ध मुहूरत लग्न धरायो॥ करि विवाह अर्जुन घर आयो।सूरदास जनमंगलगायो॥२२॥ ॥ राग नट ॥ विनती करत गोबिंद गोसांई । देसबसौंज अनंतलोकपतिनिपटरंककीनाईं॥धनि धन धाम सजनके आगे श्याम सकुचि कर जोरें ।टहलयोग यह कुँवरि सुभद्रा तुमसम नाहीं कोरे॥ इतनी सुनत पंडुनंदन कह यहै वचन प्रभु दीजे। सूरज दीनबंधु अब इहि कुल कन्या जन्म न कीजे ॥ २३ ॥ अध्याय ॥ ८८॥ जनकदेवमिलाप परमारथ ॥ हरिहरिहरिसुमिरहुसबकोई।रावरंक हरि गनत न दोई ॥ जो सुमिरै ताकी गति होई । हरिहरि हरि सुमिरहु सबकोई ॥श्रुतदेव ब्राह्मण सुमिरचो हरी। ताकी भक्ति हृदयमें धरी॥ राउ जनक हरि सुमिरन कीन्हों । हरिजू सोउ हृदय धरि लीन्हों ॥ तब हरि ऋषिहि पथिक सँग किये। तिनके देश प्रीतिवश गये ॥ दोउरूप हरि दोउनको मिले । तोपि तेहि पुनि निजपुर चले॥ हरिजीको यह सहज सुभाव ।रंक होइ भावैकोउ राव॥जो हित करै ताहि हितकरै।सूरप्रभुनहिंअंतरधरै॥२४॥ राग कान्हरो॥घरहीबैठेदोऊदास।ऋधि सिधि मुक्ति अभयपद दायक आइ मिले प्रभु हरि अनयास ॥ आयेसुनेश्यामउपवनमेंभेटलई भुज परमसुवास ॥ चर्चित गात चंद्रमुख चितवत उरसरवर भयो कमल विगास॥ भूपतिचमर विप्र कर वस्तर करत बाउ अति अंग हुलास । आनँद उमंगि चल्यो नैनन जल सुरत देव द्रिज नृप बहुलास ॥ जाको ध्यान धरत मुनि शंकर शीश जटा दिग अंबर तास । कामदहन गिरिकंदर आसन वा मूरतिकी तऊ पिआस ॥ भक्तबछलता प्रगट करीहै भयो विप्र घरकरकलियास। सूरदास स्वामी सुमिरन वश अछत निरंजन सेवा पास ॥२५॥ अध्याय ॥८९॥ भस्मासुर वध॥धनाश्री॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी । जिनके वशअनमुख अनेक गन अनुचर आज्ञाकारी ॥ महादेव वर दियो असुरको जब उन निज तनु जारचो । शिवके शीश धरन लाग्यो कर शिव वैकुंठ सिधारचो॥ विप्ररूप हरि कह्यो असुरसों इह वर सत्य न होइ । शिर अपनेपर धरो असुर कर भस्म होइगयो सोइ ॥ शिव कैलास गये अस्तुति करि आनँद उपज्यो भारी । सूरदास हरिको यश गायो श्रीभागवत अनुसारी ॥ २६ ॥ अध्याय॥९०॥भृगुपरीक्षा अर्जुन निजरूपदर्शन ॥ मवचूड पुत्रल्यावन ॥ राग बिलावल॥हरिसो ठाकुर और नजनको।तिहूंलोकभृगुजाइआइकह्योयाविधि

सब लोगनको॥ब्रह्मा राजसगुण अधिकारी शिव तामसअधिकारी। विष्णु सत्य केवल अधिकारी विप्रलात उरधारी॥ मुख प्रसन्न शीतल सुभाव नित देखत नैन सिराई। इह जिय जानि भजो सब कोई सूर प्रभू यदुराई॥३७॥ राग बिलावल॥ हरि हरिहरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उरधरो॥हरि इकदिन निज सभा मझार। बैठे हते सहित परिवार॥ अर्जुनहू ता ठौर सिधायें। शखचूड तब वचन सुनाये॥द्वारावती बसत सब सुखी। मही एक अह अरु निशि दुखी॥मेरे पुत्र होतनै जबहीं। अतर्ध्यान होत सो तबहीं॥ अर्जुन कह्यो द्वारका माहीं। ऐसो कोउ धनुधारी नाहा॥ जो तुअ सुतकी रक्षा करे। अरु तेरो पर दुख परिहरे॥ मैं तुअ सुतकी रक्षा करौं। अरु तेरो इह दख परिहरो॥ यह प्रतिज्ञा जो न निवाहौं। तौ तन अपनो पावक दाहौं॥ विप्र कह्यो तुम श्यामकि राम। के प्रद्युमन अनिरुद्ध अभिराम॥अर्जुन कह्यो मैं उनमें नाहीं। पै हौं उनके दासन माहीं॥ अर्जुन है मेरो निजनाम।धनुष काम दियो मम अभिराम॥तू निहचित बैठ गृहजाइ।समै होय कह मोसों आइ॥ पुत्र प्रसूति समय जब आयो।विप्र अर्जुनसों आनि सुनायो॥अर्जुन तन शर पंजर कियो। पवन सचार रहन नहिं दियो॥गृहको द्वारो राख्यो जहां। अर्जुन सावधान भयो तहां॥ब्राह्मण कह्यो समय अब भयो।अर्जुन धनुष बाण तब गह्यो॥बालक ह्वै भयो अतर्धान। अर्जुन ह्व्यो चकृत समान॥ विप्र नारि तब गारी दई। लख्यो प्रतिज्ञा कहा होइ गई॥तैं पुरुपारथ कहांते पायो। मिथ्याही कहि वाद बढायो॥ हरिसों दुःख अब कहिहौं जाई। अर्जन कह्यो तासों या माई॥ तेरे सुतको मैं अब ल्याऊं। तेरो सब संताप नशाऊं॥ अर्जुन तिहूंलोक फिरि आयो। ऐसो बालक कहूं न पायो॥अर्जुन वीर श्याम तन आए।हरि अर्जुनसों वचन सुनाए॥ तुम्ह बालक काहीं नहिं राख्यो। सो वृत्तांत हमें तुम भाष्यो॥ कह्यो जो मैं परतिज्ञा करी।सो मोसों पूरण नहिं परी॥बालक होत कौन लेगयो।मोकोकछू ज्ञान न भयो॥मैंदेख्यो तेहि त्रिभुवन जाइ। पै ताकी कहूँ सुधि नहिं पाइ॥ विप्रकाज प्रभु अब तुम करो। नातरु मोको जानो मरो॥ हरि रथपर अर्जुन बैठाइ। पहुँचे लोकालोकहि जाइ॥ उतहूते जब आगे धाई। दारुक हरिसों वचन सुनाई॥ अधकार मग नहिं दरशाइ। याते रथ नहिं सकत चलाइ॥ चक्र सुदर्शन आगे कियो। कोटिकरवि परकाशित भयो॥ तब हरि अर्जुन पहुँचे तहां। गतिनाहीं काहूकी जहां॥ तहां जाइ देख्यो इक रूप। तासम और न द्वितिय स्वरूप॥ नैन निरखि चकृत होइगये। मन वाणी दोऊ थकिरये॥ कहिवे योग होइ तौकहै। तहांकछू आकार न लहै॥ शयननागफन मुकुट स्थान। नैन प्रभा मानो कोटिक भान॥ हरि अर्जुन कियो निरखि प्रणाम। सुन्यो तहां एक शब्द अभिराम॥ तुम्हरे हेतु चरित्र यह कियो। बोझ पृथ्वीको हरवो भयो॥ आवहु अब तुम अपने धाम। पूरण भये सुरनके काम॥ दशोपुत्र ब्राह्मणके दीन्हें। हरि अर्जुन प्रणाम तब कीन्हें॥ नहिं जान्यो मैं कहां सिधायो। और यहां मैं कैसे आयो। हरि अर्जुनको निज जन जान।लैगये तहां न जहां शशि भान॥निजस्वरूप अपनो दरशायो। जो कछु देख्यो वा नहिं पायो॥ ऐसे हैं त्रिभुवनपति राई। कहा सकै रसना गुणगाई॥ ज्यों शुकनृपसों कहि समुझायो। सूरदास ताही विधि गायो॥ ३८॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते दशमस्कन्धोत्तरार्द्धः समाप्तः॥ १०॥

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर ।

एकादशस्कन्ध ।

॥ राग नटनारायण ॥ तुम्हरो वचन न मेटयोजाइ । प्राणनाथ कृपालु परमगुरु सुजान यादवराइ ॥ कहत पठवन बद्रिका मोहिं गूढज्ञान सिखाइ । सकुच साहस करत मनमें चलत परत न पाँइ॥पता-काके दंडलौं मन लेत संग लगाइ । कहा करों चित चरण सन्मुख वसन सदृश उडाय॥मेरही या, हृदयकी हरि कठिन सकल उपाइ । सूर सुनत जु गयो तबहीं खंड खंड नशाइ॥१॥राग सारंग॥ हरिसो हौ कहा कहौं । प्रभु अंतर्यामी सब जानत यह मुनि सोचि रहौं । बिनु बुधि मनुज देह दयानिधि क्यों करि लै निबहौं । समुझि आपनी करनी गोसाईं काहे न शूल सहौं ॥ मैं यहज्ञान छली ब्रजवनिता दियो सु क्यों न लहौं । प्रकट पाप तनुताप सूर प्रभु केहिपर हठहि गहौं ॥ ॥२॥राग नट॥ कैसे करि आवत श्याम इती । मन क्रम वचन और नहिं मेरे पद्दरज त्यागि हिती ॥ अंतर्यामी यहौ न जानत जो मो उरहि बिती । ज्यों कुञ्जवारि रस बींधि हारि गयु सोचतु पटकि चिती ॥ रहत अवज्ञा होइ गुसाईं चलत न दुखहि मिती । क्यों विश्वास करहिंगो कौरौ सुनि प्रभु कठिन कृती ॥ इतर नृपति जिहि उचत निकट करि देत न मूठि रिती । छुटत न अंश सु नितहि कृपिणके प्रीति न सूर रिती ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ क्यों करि सकौं आज्ञा भंग । करुणामय पद कमल लोलच नाहिन छूटत संग ॥ यह रजायसु होत मोसन कहत बदरी जान । कहा करौं मम पाप पूरण सुनि न निकसतप्रान॥मैं अपराधी ब्रजवधू सों कहे वचन विष तूल ॥ मोहिं तजि अवर को विय सहै ऐसे शूल॥ अब न जो तुम जाहु ऊधो मिटै युग भृत रीति ॥ हौ जु तेरीसकल जानत महा मोसनप्रीति॥सकलज्ञान प्रबोधि उनसों कहि कथा समुझाइ । यादवनको प्रलय सुनि वे मरहिंगीअकुलाइ॥अतिविषाद सुहृदय करि करि उठि चल्यो ह्वै दीन । सूर प्रभु तू कृपासागर किनभयो हौं मीन॥४ ॥राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरिचरणारविंद उर धरो ॥ नारायण जब भये अवतार।कहौं सो कथा सुनो चितधार । धर्म पिता अरु मूरति माई। भये नारायण सुततेहि आई ॥ बदरिका-श्रम रहे पुनि जाइ । योग अभ्यास समाधि लगाइ ॥ उनके और कामनानाहिं। सुखपावे त्रिभु-वन मन नाहिं ॥ सुरपति देखत गयो डेराइ । कामसेन सँग दियो पठाइ ॥ ऋतुबसंत फूली फुलवाइ । मंद सुगंध बयार बहाइ ॥ करत गान गंधर्व सुहाइ । नृत्य भलीअप्सरा देखाइ॥ काम बाण पाँचौं सधाने । नारायणते मनहिं न आने॥तब तिन सबन तहां भय पायो । कह्यो इन्द्र हमें कहां पठायो॥तबनारायण आँख उघारी । उन सबकी कीन्होंमनुहारी॥तुमकछुमनमेंभय मति

धरो।अभय हमारे आश्रम करो॥दोष तुम्हारो है कछु नाहिं।तुमहिं पठायोहैसुरनाहिं॥ इन्द्रहुको कछु दूषण नाहीं।राजहेतु डरपत मनमाहीं॥ उन कर जोर बीनती उचारी।नारायण हरि हरि बनवारी॥ उधरत लोग तुम्हारे नाम। क्यों करि मोह सकै तुम काम॥जे न शरण प्रभु तुम्हरे करें। तिनको अंतराइ हम करें॥ और संसारि मनोरथ धरें। ते मनहमकोअहनिशिडरें॥ कहूं पुत्र मोह उपजावें। कहूं त्रियाके रूप लोभावें॥ भूंख प्यास होइ कबहुँ संतापें। ऐसे विधि हम उनको व्यापें॥ जो कोउ तुम्हरे शरणन आवै। सुख संसार सकलबिसरावै॥तासोंहमरो कछु न बसावै। होय चेत सो तुमपै आवै॥नारायण तहां प्रगट करी।इन्द्रअपसरासोभगिरी॥ सहस अप्सरा सुंदर रूप।एक एकते अधिक अनूप॥ काम देखि चकृतहोइगयो।रूपअवनिहमदेख्यो नयो॥ कौन जितै सबहीं इन माहिं।इनसम इन्द्रलोक कोउ नाहिं॥ तब नारायण आज्ञाकरी। इनमें लेहु एक सुन्दरी॥पुनिप्रणाम हरिकोतिनकीन्हीं।नामउरबंशीइकउनलीन्हीं॥ सोसुरपतिको दीन्हीं जाइ।कह्यो सकल वृत्तांत सुनाइ॥पुनि भयो नारायणअवतार।सूरकह्यो भागवत अनुसार ॥८॥हंस अवतार वर्णन॥राग बिलावल॥हरिहरिहरिहरि सुमिरन करो।हरि चरणारबिंद उर धरो॥हरि ज्यों धरयो हंस अवतार। कहौं सो कथा सुनो चितधार॥सनकादिकब्रह्मापैगये।नमस्कार कर पूंछत भये॥ किधौं विषयको चित गहि रह्यो।की विषहीमें चितको गह्यो॥ नीरक्षीर ज्यों दोउ मिलिगये। न्यारे होत न न्यारे कये॥हमतो जतन करी बहु भाइ।तुम अब कहो सो करें उपाइ॥ ब्रह्माको उत्तर नाहिं आयो।तब सनकादिक गर्व बढायो॥ ज्ञानहमारो अतिशय जोइ। ब्रह्मा रह्यो निरउत्तर होइ॥ब्रह्म हरिपद ध्यान लगाय।तब हरि हंस रूप धरि आय॥ सबहिन रूप देखि सुख पायो। सबहिन उठिकै माथो नायो॥ सनकादिकन कह्योयामाइ। हमको दीजे प्रभु समुझाइ॥ को तुम क्यों करिइहां पधारे।परमहंस तब बचन उचारे॥यहतोप्रश्न योग है नाहीं। एकइ आतम हम तुममाहीं॥जो तुम देह देखिके पूंछे।तोहू प्रश्न तुम्हारे छूंछे॥ पंचभूतते सब तनु भए। कहा देखिकै तुम भ्रमिगए॥ यह कहि उनको गर्व निवारयो। बहुरो या विधि बचन उचारयो॥विषय चिता दोऊहैमाया। दोऊ चपरिज्यों तरुवर छाया॥तरुवर डोलै डोलै सोइ। त्यों जिन लगि चित चेत न होइ॥बहुरि चित चेत विषैतनुजोवै।चित्त विषय संयोग तब होवै। ऐसी भांति रहै दोउ गोइ।तिन्हें न्यारे करिसकै न कोइ॥ ज्यों सुपनेमें सुख दुख जोइ। जानि सत्य राखे चित लोइ॥जब जागे तब मिथ्या जानै।ज्ञानी इनको नित,यों मानै॥ विषय चित्त दोऊ भ्रम जानो।आतमरूप सत्य करि मानो॥ श्रवणादिकमें चित्त लगावहु।प्रेम सहित मम रूपहि ध्यावहु॥ ऐसे करत विषयहू होइ।अरु मम चरण रहै चित गोइ॥जोऐसे विधि साधन करै। सो सहजहि मम पद अनुसरै॥ और जो बीचहि तनु छुटिजाय। तो ले जन्म भक्तगृह आय॥ वहांहू प्रेम भक्ति को थान। पावै मेरो परम स्थान॥ सनकादिकसों कहि यहै ज्ञान। परमहंस भये अंतर्धान॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सूर सो प्रेम भक्तिको पावै॥ ९॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवरसूरदासकृते एकादशः स्कन्धः समाप्तः॥ ११॥

॥ श्रीः ॥

अथ सूरसागर।

द्वादशस्कन्ध।

राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो॥ शुकदेव हरि चरणन शिरनाइ। राजासों बोल्यो या भाइ॥ कहौं हरि कथा सुनो चितलाय। सूर तरो हरिकेगुणगाय॥ ॥ १ ॥ बौद्धावतारवर्णन राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरिचरणारविंद उरधरो॥ बौद्धरूप जैसे हरि धार्‍यो। अदिति सुतनको कारज सार्‍यो॥ कहौंसो कथा सुनोचितधार॥ कहै सुनै सो तरै भवपार॥ असुर एक समय शुकपै जाइ। कह्यो सुरन जीतैं केहि भाइ॥ शुक्र कह्यो तुम जग विस्तरो। करिकै यज्ञ सुरनसों लरो॥ याही विधि तुमरी जय होइ॥ या बिनु और उपाय न कोइ॥ असुर शुक्रकी आज्ञा पाइ। लागे करन यज्ञ बहु भाइ॥ तब सुर सब हरिजू पै जाइ। कह्यो वृत्तांत सकल शिर नाइ॥ हरि जू तिनको दुःखित देख। कियो तुरत सेवरिको भेप॥ असुरन पास बहुरि चलि गए। तिनसों वचन ऐसी विधि कए॥ यज्ञमाहिं तुम पशुन यों मारत। दया नहीं आवत संहारत॥ अपनोसो जीव सबनको जानि। कीजै नहिं जीवनकी हानि॥ दया धर्म पालै जो कोइ। मेरी मति ताकी जय होइ॥ यह सुन असुरन यज्ञ त्यागि। दया धर्म मारग अनुरागि॥ या विधि भयो बुद्ध अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ २ ॥ भविष्य कल्की अवतार वर्णन॥ राग बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो॥ हरि करिहैं कलंक अवतार। जेहि कारण सो कहो चित धार॥ कलिमें नृप होइहैं अन्याई। कृपी आइ लेहैं बरिआई॥ झूँठे नरसों लेहिं अंकोर। लावहिं साँचे नरको खोर॥ प्रजा धर्मरत होइ न कोइ। बरन धर्म न पहिचानै सोइ॥ दूरितीर्थन श्रम करि जाहिं। जहां रहैं तहां लख्यो न ताहिं॥ जाके गृहमें प्रतिमा होइ। तिन तजि पूजै अनतै सोइ॥ ब्राह्मण पूँछे जान्यो जाइ। संन्यासी फिरै भेप बनाइ॥ गृही न अपनो धर्म पहिचानै। उन नहिं आए को सन्मानै॥ दया सत्य संतोप नशाइ। दया धर्मकी रीति बिलाइ॥ फल सुधर्मको जानै सोइ। पै सुधर्मको करै न कोइ॥ पापनको फल चाहै नाहीं। अहनिशि पाप करतही जाहीं। वर्षा समै न वर्षा होइ। बिना अन्न दुख पावै लोइ॥ दान देहिं तो यशके काज। कलि न होइ पृथ्वीपति राज॥ मन इन्द्रिय वश करैं न लोग। ज्यों त्यों कीन्हों चाहैं भोग॥ शत संवत आयुःकुल होइ। सोऊ जीवै बिरला कोइ॥ नृप ऐसे आयुर्दा पाइ। पृथ्वीहित नितकरैं उपाइ॥ पृथ्वी देखि तिन हाँसी करही। ऐसो को जो मोपर रहही॥ मन्वंतर लगि कियो जेहि राज। तेऊ नृपति गये मोहिं त्याज॥ पृथुसे पृथ्वीपति जग भए। तेऊ नृपति छाँडि मोहि गए॥ तुच्छ आयु परिश्रम करत। आयु आयुमें लरि लरि मरत॥ इनहिं देखि मोहिं हांसी आवत। इनको इतनी समुझि न आवत॥ सतयुग सत त्रेता जग करते। द्वापर पूजा मैं धरते॥ कलियुग एक बडो उपकार। जो हरि कहै सो उतरै पार॥ कलिमें पाप करै नित इमें इ। कहंलगि कहिये अंत न होइ॥ हरिहरि कहत पाप धुनि जाइ। पवन लागि ज्यों रूइ

उड़ाइ ॥ अजामेल सुत हित हरि भाष्यो । यमदूतनते तेहि हरि राख्यो ॥ कलिमें राम कहे जो

आधार ॥ शुक नृपसों कह्यो जा परकार । सूर कह्यो ताही अनुसार ॥३॥ राजा परीक्षित हरिपद प्राप्ति

आवत जात चहूं मे लोइ ॥ युग परलय तो तुमसों कही । तीन और कहिवे को रही ॥ चतु-युगी बीते एकहत्तर । करे राज तब लगि मन्वंतर ॥ चौदह मनु ब्रह्मा दिन माहिं । बीतत तासों कल्प कहाहिं ॥ रात होइ तब परलय होइ । निशि मर्यादा दिन सम होइ ॥ प्रात भए जब ब्रह्मा जागे । बहुरो सृष्टि करन को लागे ॥ दिन सौ तीन साठ जब जाहिं । सो ब्रह्माको वरष कहाहिं ॥ वर्ष पचाश परारध गए । प्रलय तीसरी यो विधि लए ॥ बहुरो ब्रह्मा सृष्टि उपावे । जबलों परारध दूजो आवे ॥ शत संवत भये ब्रह्मा मरे । महाप्रलय नित प्रभुजू करे ॥ माया माहिं नित्य लै पावे । माया हरिपद माहिं समावे ॥ हरिको रूप कह्यो नहिं जाइ । अलख अखंड सदा इक भाइ ॥ बहुरि जब हरिको इच्छा होइ देखे मायाके दिशि जोइ ॥ माया सब तबहीं उपजावे । ब्रह्मासों पुनि सृष्टि उपावे । तब हम

हरिपद पावे जन्म मरन तेहि ठौर

बसायो ॥ मुक्ति माहिं संशय नहिं

चरणारविंद चित लाउ ॥ इह अह

दृष्टि सोइ दृष्टि टारि । काको । मिथ्या तनुको

मोह पसारि ॥ नृप कह्यो इ ॥ मोहि अब

सर्व ब्रह्म दरशावे । तक्षक भय छूटि अमिथ्या

देह अभिमान ॥ अब मैं नाहिं ॥ शुक जान्यो

नृपको जो ज्ञान । आज्ञा लैकरि कियो पयान ॥ तक्षक नृप शरीरको डस्यो । तब तनु तजिके पदमें बस्यो ॥ सूत शौनकनि कहि समुझायो । मैंहू ता अनुसार सुनायो ॥ अंत समय हरिपद चित लावे । सूरदास सो हरिपद पावे ४ ॥ जन्मेजय कथा ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ जन्मेजय जब पायो राज । एकबार निज सभा बिराज ॥ पिता बैर मनमें सो विचार । विप्रनसों यों कह्यो उचार ॥ मोको तुम अब यज्ञ करावहु । तक्षक कुटुंब समेत जरावहु ॥ विप्रन सब कुली जब जारी । तब राजा तिनसों उच्चारी ॥ तक्षक कुल समेत तुम जारो ॥ कह्यो इन्द्र निज शरन उबारी ॥ नृप कह्यो इन्द्र सहित तेहि जारो ॥ विप्रनहू इह मंतो बिचारो ॥ आसतीक तहि अवसर आयो । राजासों यह बचन सुनायो ॥ कारण करनहार भगवान । तक्षक डसनहार मति जान ॥ बिनु हरि आज्ञा द्वितिय न बात । कौन सके काहू संताप ॥ हरि जो चाहे त्योंही होइ । नृप तामें संदेह न कोइ ॥ नृपकेमन यह निश्चय आयो

यह छं यो सूरदास त्योंहीं करि गायो ॥५॥

स्कन्धः समाप्तः ॥ १२ ॥